

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



# सहीह बुखारी

मय तर्जुमा व तपसीर

जिल्द सोम (तीसरी)

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस सैयदुल फ़क़हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी



प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअत

जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

## © सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित

अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज (रह.) के खलीफा नजीर अहमद बिन मुहम्मद दाऊद राज ने सहीह बुखारी की उर्दू शरह के हिन्दी अनुवाद सम्बंधित समस्त अधिकार जमीयत अहले हदीष जोधपुर (प्रकाशक) के नाम कर दिये हैं। इस किताब में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है। कोई व्यक्ति/संस्था/समूह/प्रकाशन आदि इस पुस्तक की आंशिक अथवा पूरी सामग्री किसी भी रूप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्जे-खर्चे के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब	: सहीह बुखारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़सीर)
मुरत्तिब (अरबी)	: अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह	: अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-घ़ानी	: सलीम ख़िलजी
तस्हीह (Proof Checking)	: जमशेद आलम सलफ़ी
कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग एवं लेज़र टाइपसेटिंग	: ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.) khaleejmedia78@yahoo.in # 91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग	: मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन	: मुहम्मद निसार ख़िलजी, बिलाल ख़िलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव	: फैसल मोदी
ता'दाद पेज	(जिल्द-3) : 608 पेज
प्रकाशन	(प्रथम संस्करण) : रमज़ान 1432 हिजरी (अगस्त 2011 ईस्वी)
ता'दाद	(प्रथम संस्करण) : 2400
कीमत	(जिल्द-3) : 450/-
प्रिण्टिंग	: अनमोल प्रिण्टर्स, जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक	: जमीयत अहले हदीष जोधपुर (राज.)

## मिलने के पते

## मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़

तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1

(फ़ोन): 99296-77000, 92521-83249,

93523-63678, 90241-30861

## अल किताब इण्टरनेशनल

जामिया नगर, नई दिल्ली-25

(फ़ोन): 011-6986973

93125-08762

# फेहरिस्ते-मज़ामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

मिना में नमाज़ पढ़ने का बयान	21
अरफ़ा के दिन रोज़ा रखने का बयान	22
सुबह के वक़्त मिना से अरफ़ात जाते हुए .....	23
अरफ़ात के दिन ऐन गर्मी में .....	24
अरफ़ात में जानवर पर सवार होकर बुकूफ़ करना	25
अरफ़ात में दो नमाज़ों को मिलाकर पढ़ना	25
मैदाने-अरफ़ात में खुत्बा मुख़्तसर पढ़ना	26
मैदाने-अरफ़ात में ठहरने का बयान	27
अरफ़ात से लौटते वक़्त किस चाल से चले	28
अरफ़ात और मुज़दलिफ़ा के दरमियान उतरना	29
अरफ़ात से लौटते वक़्त सुकून की हिदायत	30
मुज़दलिफ़ा में नमाज़ें एक साथ मिलाकर पढ़ना	31
जिसने कहा हर नमाज़ के लिए अज़ान .....	33
औरतों और बच्चों को मुज़दलिफ़ा की रात में .....	34
फज़्र की नमाज़ मुज़दलिफ़ा ही में पढ़ना	37
मुज़दलिफ़ा से कब चला जाए?	38
दसवीं तारीख़ सुबह को तकबीर और लब्बैक कहते रहना	39
सूरतुल-बक़रह की एक आयत की तपसीर	40
कुर्बानी के जानवर पर सवार होना जायज़ है	41
उस शख्स के बारे में जो अपने जानवर साथ कुर्बानी का...	43
उस शख्स के बारे में जिसने कुर्बानी का जानवर .....	44
जिसने जुलहुलैफ़ा में इशआर किया	45
गाय-ऊँट वगैरह कुर्बानी के जानवरों के क़लादे	47
कुर्बानी के जानवर का इशआर करना	48
उसके बारे में जिसने अपने हाथ से क़लादे पहनाए .....	48
बकरियों को हार पहनाने का बयान	49
ऊन के हार बटना	50
जूतों का हार डालना	51
कुर्बानी के जानवरों के लिए झूल का होना	51
उस शख्स के बारे में जिसने अपनी हदी रास्ते में .....	52

किसी आदमी का अपनी बीवियों की तरफ़ से	
उनकी इजाज़त .....	53
मिना में नबी (ﷺ) ने जहाँ नहर किया वहाँ नहर करना	54
अपने हाथ से नहर करना	55
ऊँट को बाँधकर नहर करना	55
ऊँटों को खड़ा करके नहर करना	56
क़साब को मज़दूरी में कुर्बानी .....	57
कुर्बानी की खाल ख़ैरात कर दी जाए	57
कुर्बानी के जानवरों के झूल भी सदका कर दिये जाएँ	58
सूरह हज़्ज की एक आयत की तपसीर	59
कुर्बानी के जानवरों में से क्या खाएँ	59
सर मुँडाने से पहले ज़िबह करना	60
उसके मुता'ल्लिक जिसने एहराम के वक़्त सर के	
बालों को .....	63
एहराम खोलते वक़्त सर मुँडवाना या तरशवाना	63
तमत्तोअ करने वाले ज़मरह के बाद बाल तरशवाएँ	66
दसवीं तारीख़ को त़वाफ़ुज़्ज़ियारत करना	67
किसी ने शाम तक रमी न की .....	68
जमरह के पास सवार रह कर लोगों में मसला बताना	59
मिना के दिनों में खुत्बा सुनाना	70
मिना की रातों में जो लोग मक्का में पानी पिलाते हैं	74
कंकरियों मारने का बयान	75
रम्ये-जिमार वादी के नशीब से करने का बयान	76
रम्ये-जिमार सात कंकरियों से करना	76
इस बयान में कि (हाजी को) हर कंकरी मारते वक़्त	77
उसके मुता'ल्लिक जिसने जमरह-ए-उक्बा की रमी की	78
जब हाजी दोनों जमरह की रमी कर चुके .....	78
पहले और दूसरे जमरह के पास जाकर दुआ के लिए	
हाथ रठाना	79
रम्ये-जिमार के बाद खुशबू लगाना	83

## फेहरिस्ते-मज़ामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

तवाफ़े-विदाअ का बयान	83
अगर तवाफ़े-इज़ाफ़ा के बाद औरत हाइज़ा हो जाए	84
उसके मुता'ल्लिक जिसने खानगी के दिन	
अम्र की नमाज़.....	87
वादी-ए-मुहम्मद का बयान	87
मक्का में दाख़िल होने से पहले जीतवा...	88
उसके मुता'ल्लिक जिसने मक्का से वापस होते हुए...	89
आराम लेने के बाद वादी-ए-मुहम्मद आख़िरी	
रात में चल देना...	90

### किताबुल-उम्ह

उम्ह का वुजुब और उसकी फ़ज़ीलत..	91
उस शख्स का बयान जिसने हज्ज से पहले उम्ह किया	92
नबी करीम (ﷺ) ने कितने उम्ह किए हैं	93
रमज़ान में उम्ह करने का बयान	95
मुहम्मद की रात उम्ह करना.....	96
तनईम से उम्ह करना....	97
हज्ज के बाद उम्ह करना और कुर्बानी न देना	98
उम्ह में जितनी तकलीफ़ हो उतना षबाब है	99
उम्ह करने वाला उम्ह का तवाफ़ करके मक्का से चल दे	100
उम्ह में उन्हीं कामों का परहेज़ है....	101
उम्ह करने वाला एहराम से कब निकलता है	103
हज्ज, उम्ह या जिहाद से वापसी पर क्या दुआ पढ़ी जाए	105
मक्का आने वाले हाजियों का इस्तिफ़ाल करना	106
मुसाफ़िर का अपने घर में सुबह के वक़्त आना	106
शाम में घर का आना	107
आदमी जब अपने शहर में पहुँचे तो घर में रात में न जाए	107
जिसने मदीना-तय्यिबा के पास पहुँचकर अपनी	
सवारी तेज़ कर दी	107
अल्लाह तआला का ये फ़र्माना कि घरों में दरवाज़ों से...	108
सफ़र भी गया एक किसिम का अज़ाब है	109
मुसाफ़िर जल्द चलने की कोशिश कर रहा हो....	110

मुहरिम के रोके जाने और शिकार का	
बदला देने का बयान	111
अगर उम्ह करने वाले को रास्ते में रोक दिया गया?	111
हज्ज से रोके जाने का बयान	113
रुक जाने के वक़्त सर मुँडाने से पहले कुर्बानी करना	114
जिसने कहा कि रोके गये शख्स पर क़ज़ा ज़रूरी नहीं	115
एक आयते-शरीफ़ा की तफ़्सीर	117
सदके से मुराद मिस्कीनों को खिलाना है	117
फ़िदया में हर फ़क़ीर को आधा साअ गल्ला देना	118
कुर्आन मजीद में नस्क से मुराद बकरी है	119
सूरह बक़रह में अल्लाह का ये फ़र्माना कि	
हज्ज में शहवत..	120
अल्लाह तआला का सूरह बक़रह में फ़र्माना कि हज्ज में	
गुनाह और .....	121
अगर बे-एहराम वाला शिकार करे.....	121
एहराम वाले लोग शिकार देखकर हँस दें ....	123
शिकार करने में एहराम वाला ग़ैर-मुहरिम की कुछ	
भी मदद न करे....	124
ग़ैर-मुहरिम के शिकार करने के लिए ....	125
अगर किसी ने मुहरिम के लिए ज़िन्दा गोरख़र	
तोहफ़े में भेजा हो ....	126
एहराम वाला कौन-कौन से जानवर मार सकता है	126
इस बयान में कि हरम शरीफ़ के दरख़त न काटे जाए...	129
हरम के शिकार हाँके न जाएँ	130
मक्का में लड़ना जायज़ नहीं है	131
मुहरिम का पछना लगवाना कैसा है?	134
मुहरिम निकाह कर सकता है	135
एहराम वाले मर्दों और औरतों को खुशबू लगाना मना है	135
मुहरिम को गुस्ल करना कैसा है?	137
मुहरिम को जब जूतियाँ ना मिले	138
जिसके पास तहबन्द न हो तो वो पाजामा पहन सकता है	139



## फेहरिस्ते-मजामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

मुहरिम का हथियारबन्द होना दुरुस्त है	139
हरम और मक्का शरीफ में बगैर एहराम के दाखिल होना	140
अगर नावाक़फ़ियत से कोई कुर्ता पहने हुए एहराम बाँधे	141
अगर मुहरिम अरफ़ात में मर जाए....	142
जब मुहरिम वफ़ात पा जाए तो उसका कफ़न-दफ़न....	142
मय्यत की तरफ़ से हज्ज और नज़र अदा करना	143
उसकी तरफ़ से हज्जे-बदल जिसमें ....	144
औरतों का मर्द की तरफ़ से हज्ज करना	144
बच्चों का हज्ज करना	145
औरतों का हज्ज करना	147
अगर किसी ने का'बा तक पैदल सफ़र करने की मन्नत मानी	139

### किताब फ़ज़ाइले-मदीना

मदीना के हरम होने का बयान	150
मदीना की फ़ज़ीलत	157
मदीना का एक नाम तैबा भी है	158
मदीना के दोनों पथरीले मैदान	158
जो शख़्स मदीना से नफ़रत करे	159
इस बारे में कि ईमान मदीना की तरफ़ सिमट आएगा	160
जो शख़्स मदीना वालों को सताना चाहे	160
मदीना के मुहल्लों का बयान	160
दज्जाल मदीना में नहीं आ सकेगा	161
मदीना बुरे आदमी को निकाल देता है	163
मदीना का वीरान करना नबी करीम (ﷺ) को नागवार था	164

### किताबुस्सियाम

रमज़ान के रोज़ों की फ़र्ज़ियत का बयान	169
रोज़े की फ़ज़ीलत का बयान	170
रोज़ा गुनाहों का कफ़ारा होता है	171
रोज़ेदारों के लिए रय्यान (नामी दरवाज़ा).....	171

रमज़ान कहा जाए या माहे-रमज़ान	173
जो शख़्स रमज़ान के रोज़े ईमान के साथ .....	174
नबी करीम (ﷺ) रमज़ान में सबसे ज़्यादा सज़ावत...	175
जो शख़्स रमज़ान में झूठ बोलना .....	175
कोई रोज़ेदार को अगर गाली दे ....	176
जो मुज़र्द हो और ज़िना से डरे तो वो रोज़े रखे	176
नबी करीम (ﷺ) का इश्राद जब तुम (रमज़ान का) चाँद ..	177
ईद के दोनों महीने कम नहीं होते	179
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि हम लोग हिसाब-किताब...	180
रमज़ान से एक या दो दिन पहले ....	181
सूरतुल-बकरह की एक आयत की तफ़सीर	181
अल्लाह तआला का फ़र्माना कि सेहरी खाओ सुबह की सफ़ेद धारी तक .....	182
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि बिलाल की अज़ान तुम्हें सेहरी खाने .....	183
सेहरी खाने में देर करना	184
सेहरी और फ़ज़्र की नमाज़ में कितना फ़ासला होता था	184
सेहरी खाना मुस्तहब है वाजिब नहीं है	185
अगर कोई शख़्स रोज़े की नियोत दिन में करे....	185
रोज़ेदार सुबह जनाबत में उठे तो क्या हुक्म है	186
रोज़ेदार का अपनी बीवी से मुबाशरत.....	188
रोज़ेदार का रोज़े की हालत में .....	188
रोज़ेदार का गुस्ल करना जायज़ है	189
अगर रोज़ेदार भूलकर खा-पी ले तो रोज़ा नहीं टूटता	190
रोज़ेदार के लिए तर या खुश्क मिस्वाक....	191
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि जब कोई वुजू करे तो नाक....	192
अगर किसी ने रमज़ान में क़स्दन जिमाअ किया	194
रोज़ेदार का पछने लगवाना और क़ै करना कैसा है	196

## फेहरिस्ते-मज़ामीन

## मज़मून

## सफा नं.

## मज़मून

## सफा नं.

सफ़र में रोज़ा रखना और इफ़तार करना	197
जब रमज़ान में कुछ रोज़े रख कर कोई सफ़र करे	199
सफ़र में रोज़ा रखना कोई नेकी नहीं	200
अस्हाबे-किराम (रज़ि.) सफ़र में रोज़ा रखते भी थे	201
और नहीं भी रखते थे	201
सफ़र में लोगों को दिखाकर रोज़ा इफ़तार कर डालना	201
सूरतुल-बक्रह की आयत की तफ़सीर	202
रमज़ान के क़ज़ा रोज़े कब रखे जाएँ	203
हैज़ वाली औरत न नमाज़ पढ़े और न रोज़े रखे	204
अगर कोई शख्स मर जाए और उसके ज़िम्मे रोज़े हों	205
रोज़ा किस वक़्त इफ़तार करे	207
पानी बग़ैरह जो चीज़ भी पास हो उससे रोज़ा इफ़तार....	208
रोज़ा खोलने में जल्दी करना	210
एक शख्स ने सूरज ग़रूब समझकर रोज़ा खोल लिया	211
बच्चों के रोज़ा रखने का बयान	212
पे दर पे मिलाकर रोज़े रखना मना है	213
जो तै के रोज़े बहुत रखे	215
सहरी तक विज्ञाल का रोज़ा रखना	216
किसी ने अपने भाई को नफ़ली रोज़ा तोड़ने के लिए क़सम दी....	216
माहे-शा'बान में रोज़े रखने का बयान	218
नबी करीम (ﷺ) के रोज़े रखने .....	219
मेहमान की खातिर से नफ़ल रोज़े न रखना	220
रोज़े में जिस्म का हक़	220
हमेशा रोज़े रखना	221
रोज़े में बीवी और बाल-बच्चों का हक़	222
एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ़तार करने का बयान	223
हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा	224
अय्यामे बीज़ के रोज़े रखना	225
जो शख्स किसी के यहाँ बतौर-मेहमान मुलाक़ात के लिए गया.....	226

महीने के आख़िर में रोज़े रखना	227
जुम्'आ के दिन रोज़े रखना	228
रोज़े के दिन कोई दिन मुक़रर करना	230
अरफ़ा के दिन रोज़ा रखना	230
ईदुल-फ़ितर के दिन रोज़ा रखना	231
ईदुल-अज़हा के दिन रोज़ा रखना	232
अय्यामे-तशरीक़ के रोज़े रखना	235
इस बारे में कि आशूरा के दिन का रोज़ा कैसा है?	236

## किताब मलातुत्तरावीह

रमज़ान में तरावीह पढ़ने की फ़ज़ीलत	239
------------------------------------	-----

## किताब लैयलतुलक़द्र

शबे-क़द्र की फ़ज़ीलत	244
शबे-क़द्र को रमज़ान की आख़िरी ताक़ रातों में	245
रमज़ान के आख़िरी अशरे में ज़्यादा मेहनत करना	251

## किताबुल ए'तिकाफ़

रमज़ान के आख़िरी अशरे में ए'तिकाफ़ करना	251
अगर हैज़ वाली औरत.....	253
ए'तिकाफ़ वाला बग़ैर ज़रूरत घर में न जाए	245
ए'तिकाफ़ वाला सर या बदन धो सकता है	245
सिर्फ़ रातभर के लिए ए'तिकाफ़ करना	255
औरतों का ए'तिकाफ़ करना	255
मस्जिदों में ख़ेमों लगाना	256
क्या मुख़्तलिफ़ ज़रूरत के लिए मस्जिद के दरवाज़े....	257
ए'तिकाफ़े-नबवी का बयान	257
औरत ए'तिकाफ़ की हालत में .....	259
ए'तिकाफ़ वाला अपने ऊपर किसी बदगुमानी....	260
ए'तिकाफ़ से सुबह के वक़्त बाहर आना	261
शव्वाल में ए'तिकाफ़ करने का बयान	262
ए'तिकाफ़ के लिए रोज़ा ज़रूरी न होना	262
अगर किसी ने जहालत में ए'तिकाफ़ की नज़र मानी....	263

## फेहरिस्ते-मजामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

रमज़ान के दरमियानी अशरे में.....	263	खरीद व फ़रोख़्त में क़सम खाना मकरूह है	295
ए'तिकाफ़ का क़स्द किया लेकिन फिर.....	264	सुनारों का बयान	296
ए'तिकाफ़ वाला सर धोने के लिए .....	264	कारीगरों और लोहारों का बयान	297
<b>किताबुल बुयूअ</b>		दर्जी का बयान	298
सूरह जुम्आ की एक आयत की तशरीह	266	कपड़ा बुनने वाले का बयान	299
हलाल खुला हुआ है और हुराम भी .....	271	बढ़ई का बयान	300
मिलती-जुलती चीज़ें यानी शुब्हा वाले.....	272	अपनी ज़रूरत की चीज़ें हर आदमी खुद .....	301
मुश्तबह चीज़ों से परहेज़ करना....	275	चौपाए जानवरों की तिजारत	302
दिल में वस्वसा आने से शुब्हा न करना चाहिए	276	जहालत के बाज़ारों का बयान	304
सूरह जुम्आ में फ़र्माने-इलाही	277	जब मुसलमानों में आपस में फ़साद न हो.....	305
जो रुपया कमाने में हलाल या हुराम की परवाह न करे..	278	पछना लगाने वाले का बयान	306
ख़ुश्की में तिजारत करने का बयान	278	उन चीज़ों की सौदागरी जिनका पहनना....	307
तिजारत के लिए घर से बाहर निकलना	280	सामान के मालिक को क़ीमत कहने का ज़्यादा हक़ है	308
समन्दर में तिजारत करने का बयान	280	अगर बायेअ और मुश्तरी .....	309
सूरह जुम्आ की आयत की तशरीह	281	जब तक ख़रीदने और बेचने वाले जुदा .....	310
अल्लाह तआला का फ़र्माना कि अपनी पाक		ख़रीदो-फ़रोख़्त में धोखा देना मकरूह है	315
कमाई से ख़र्च करो	282	बाज़ारों का बयान	315
जो रोज़ी में कुशादगी चाहता हो .....	283	बाज़ारों में शोरगुल मचाना मकरूह है	318
नबी करीम (ﷺ) का उधार ख़रीदना	283	नाप-तोल करने वाले की मज़दूरी	319
इन्सान का कमाना और अपने हाथों से मेहनत करना	284	अनाज का नाप-तोल करना मुस्तहब है	321
ख़रीद व फ़रोख़्त के वक़्त नरमी .....	287	नबी करीम (ﷺ) के साअ व मुद की बरकत का बयान	321
जो शख्स किसी मालदार को मोहलत दे .....	287	अनाज का बेचना और एहतिकार करना	322
जिसने किसी तंगदस्त को मोहलत दी .....	288	ग़ल्ला को अपने क़ब्ज़े में लेने से पहले...	324
जब ख़रीदने वाले और बेचने वाले दोनों साफ़ .....	288	जो शख्स ग़ल्ले का ढेर...	325
मुख्तलिफ़ क़िस्म की ख़जूर मिलाकर बेचना....	290	अगर किसी शख्स ने कुछ अस्बाब या .....	325
गोश्त बेचने वाले	290	कोई मुसलमान अपने किसी मुसलमान भाई की .....	326
बेचने में झूठ बोलने और .....	291	नीलाम करने का बयान	328
सूद की मज़म्मत का बयान	291	नजश यानी धोखा देने के लिए क़ीमत बढ़ाना....	329
सूद खाने वाला और उस गवाह.....	292	दूध की बैअ और हमल की बैअ...	330
सूद खिलाने वाले का गुनाह	293	बैअ मुलामसा का बयान	330
अल्लाह सूद को मिटा देता है.....	294	बैअ मुनाबज़ह का बयान	331

## फेहरिस्ते-मजामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

कूँट या बकरी या गाय के थन में .....	332
खरीदार अगर चाहे तो मिस्रत को वापस कर सकता है..333	
ज़ानी गुलाम की बैअ का बयान	334
औरतों से खरीदो-फ़रोख़्त करना	335
क्या कोई शहरी किसी देहाती का ....	337
जिन्होंने इसे मकरूह रखा .....	338
इस बयान में कि कोई बस्ती वाला .....	338
पहले से आगे जाकर .....	339
क्राफ़िले से कितनी दूर आगे जाकर	341
अगर किसी बैअ में नाजायज़ शर्तें लगाई	342
खजूर को खजूर के बदले में बेचना	343
मुनक्का को मुनक्का और अनाज को अनाज के बदले बेचना	343
जौ के बदले जौ की बैअ का .....	344
सोने को सोने के बदले में बेचना	345
चाँदी को चाँदी के बदले में बेचना	345
अशरफ़ी को अशरफ़ी के बदले उधार बेचना	346
चाँदी को सोने के बदले उधार बेचना	348
बैअ मुजाबना का बयान	349
दरख़्त पर फल सोने और चाँदी के बदले बेचना	342
अराया की तफ़सीर का बयान	345
फलों की पुख़्तगी मालूम होने से पहले.....	355
जब तक खजूर पुख़्ता न हो.....	357
अगर किसी ने पुख़्ता होने से पहले ही .....	358
अनाज उधार ख़रीदना	359
अगर कोई शख़्स ख़राब खजूर के बदले अच्छी खजूर..	359
जिसने पैवन्द लगाई हुई खजूरें	360
खेती का अनाज जो अभी दरख़्तों पर हो .....	362
खजूर के दरख़्त को जड़ समेत बेचना	362
बैअ मुखाज़रह का बयान	362
खजूर का गाभा बेचना	363

खरीदो-फ़रोख़्त व इज़ारे में .....	364
एक साझी अपना हिस्सा .....	366
ज़मीन, मकान अस्बाब का हिस्सा ....	367
किसी ने कोई चीज़ दूसरे के लिए ....	367
मुश्रिकों और हर्बी क़ाफ़िरों के साथ .....	369
हर्बी क़ाफ़िर से लौण्डी-गुलाम ख़रीदना ....	370
दबागत से पहले मुर्दार की खाल .....	372
सुअर का मार डालना	377
मुर्दार की चर्बी गलाना .....	379
ग़ैर-जानदार चीज़ों की तस्वीर .....	380
शराब की तिजारत करना हराम है	381
आज़ाद शख़्स को बेचना कैसा गुनाह है?	381
यहूदियों को जलावतन करते वक़्त ....	381
गुलाम के बदले गुलाम और .....	382
लौण्डी-गुलाम बेचना	383
मुदब्बर का बेचना	383
अगर कोई लौण्डी ख़रीदे ....	385
मुर्दार और बुतों का बेचना	387
कुत्ते की कीमत के बारे में	389

### किताबुससलम

माप मुक़र्रर करके सलम करना	390
बैअ सलम मुक़र्ररह वज़न के साथ जायज़ है	391
उस शख़्स से सलम करना .....	393
दरख़्त पर जो खजूर लगी हुई हो .....	395
सलम या क़र्ज़ में जमानत देना	396
बैअ-सलम में गिरवी रखना	396
सलम में मीआद मुअय्यन होनी चाहिए	397
बैअ-सलम में यह मीआद लगाना ....	399

### किताबुशुफ़आ

शुफ़आ का हक़ उस जायदाद में .....	399
----------------------------------	-----

## फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.	मज़मून	सफ़ा नं.
शुफ़आ का हक़ रखने वाले .....	8	400	
कौन पड़ोसी ज़्यादा हक़दार है		401	
<b>किताबुल इज़ारह</b>			
किसी भी नेक मर्द को मज़दूरी .....	9	402	
चन्द क़ीरात की मज़दूरी पर बकरियाँ चराना .....		405	
जब कोई मुसलमान मज़दूर न मिले .....		406	
कोई शख्स किसी मज़दूर को .....		408	
जिहाद में किसी को मज़दूर करके ले जाना		410	
एक शख्स को एक मीआद के लिए .....		411	
अगर कोई शख्स किसी को .....		411	
आधे दिन के लिए मज़दूर लगाना		412	
अन्न की नमाज़ तक मज़दूर लगाना		413	
उस अन्न का बयान कि मज़दूर की मज़दूरी			
मार लेने का गुनाह...		415	
अन्न से लेकर रात तक मज़दूरी करना		416	
अगर किसी ने कोई मज़दूर किया .....		417	
जिसने अपनी पीठ पर बोझ .....		419	
दलाली की उजरत लेना		420	
क्या कोई मुसलमान दारुल हरब में .....		421	
सूरह फ़ातिहा पढ़कर .....		422	
गुलाम और लौण्डी पर रोज़ाना .....		426	
पछना लगाने वाले की उजरत		426	
उसके मुता'ल्लिक़ जिसने किसी गुलाम के मालिकों से		427	
ज़ानिया और फ़ाहिशा लौण्डी .....		427	
नर की जुफ़ती पर उजरत लेना		428	
अगर कोई ज़मीन को ठेके पर ले .....		428	
<b>किताबुल हवालात</b>			
हवाला यानी क़र्ज़ को .....		430	
जब क़र्ज़ किसी मालदार के हवाला .....		431	
अगर किसी मय्यत का क़र्ज़ .....		431	
<b>किताबुल किफ़ालत</b>			
क़र्ज़ों वग़ैरह की हाज़िर जमानत .....		434	
सूरह निसा की एक आयत		438	
जो शख्स किसी मय्यत के क़र्ज़ का .....		440	
नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.)		442	
क़र्ज़ का बयान		446	
<b>किताबुल वकालत</b>			
तक्सीम वग़ैरह के काम में .....		447	
अगर कोई मुसलमान दारुल हरब .....		448	
सर्राफ़ी और माप-तोल में वकील करना		449	
चराने वाले ने या किसी वकील ने ....		450	
हाज़िर व ग़ायब दोनों को वकील बनाना		451	
क़र्ज़ अदा करने के लिए .....		452	
अगर कोई चीज़ किसी क़ौम के .....		453	
एक शख्स ने किसी दूसरे शख्स को ....		456	
कोई औरत अपना निकाह करने के लिए .....		459	
किसी ने एक शख्स को वकील बनाया .....		460	
अगर वकील कोई ऐसी बैअ करे .....		463	
वक्फ़ के माल में वकालत .....		464	
हद लगाने के लिए किसी को वकील करना		464	
कुर्बानी के ऊँटों में वकालत		465	
अगर किसी ने अपने वकील से कहा .....		466	
ख़जान्ची का ख़जाने में वकील होना		467	
<b>किताबुल हर्ब वल मज़ारअत</b>			
खेत बोन और दरख़त लगाने की फ़ज़ीलत....		468	
खेती के सामान में बहुत ज़्यादा मसरूफ़ रहना....		470	
खेती के लिए कुत्ता पालना		472	
खेती के लिए बैल से काम लेना		474	
बाग़ वाला किसी से कहे .....		475	
मेवेदार दरख़त काटना.....		476	

## फेहरिस्ते-मज़ामीन

### मज़मून

### सफ़ा नं.

### मज़मून

### सफ़ा नं.

आधी या कम ज़्यादा पैदावार पर बटाई करना	477
अगर बटाई में सालों की तादाद मुकर्रर न करे?	480
यहूद के साथ बटाई का मामला करना	481
बटाई में कौनसी शर्तें लगाना मकरूह है	481
जब किसी के माल से .....	482
सहाबा-किराम (रज़ि.) के औकाफ़ .....	484
उस शख्स का बयान जिसने बंजर ज़मीन को	
आबाद किया	486
अगर ज़मीन का मालिक .....	488
नबी करीम (ﷺ) के सहाबा-किराम खेतीबाड़ी .....	489
नक़दी लगान पर सोने-चाँदी के बदले ज़मीन देना	492
दरख़्त बोने का बयान	493

### किताबुल मसाक्रात

9

खेतों और बाग़ों के लिए पानी .....	495
पानी की तक्सीम	496
उसके बारे में जिसने कहा कि पानी का मालिक .....	497
जिसने अपनी मिल्क में कोई कुआँ खोदा	498
कुएँ के बारे में झगड़ना	499
उस शख्स का गुनाह जिसने किसी मुसफ़िर को पानी...	500
नहर का पानी रोकना	501
जिसका खेत बुलन्दी पर हो .....	502
बुलन्द खेत वाला टखनों तक पानी भर ले	503
पानी पिलाने के इवाब का बयान	504
जिनके नज़दीक हौज़ वाला और मशक का मालिक ....	505
अल्लाह और उसके रसूल के सिवा .....	508
नहरों में से आदमी और जानवर .....	508
लकड़ी और घास बेचना	510
क्रिआते अराज़ी बतौर जागीर देने का बयान	513
जागीरों की सनद लिखना	513
ऊँटनी को पानी के पास दुहना	514
बाग़ में से गुज़रने का हक़ .....	514

### किताबुल इस्तिफ़राज

जो शख्स कोई चीज़ क़र्ज़ ख़रीदे .....	524
जो शख्स लोगों का माल .....	524
क़र्ज़ों का अदा करना	525
ऊँट क़र्ज़ लेना	527
तक्राज़े में नर्मी करना	527
क्या बदले में क़र्ज़ वाले ऊँट .....	528
क़र्ज़ अच्छी तरह से अदा करना	528
अगर मकरूज़-क़र्ज़ ख़्वाह .....	529
अगर क़र्ज़ अदा करते वक़्त .....	529
क़र्ज़ से अल्लाह की पनाह माँगना	531
क़र्ज़दार की नमाज़े-जनाज़ा	531
अदायगी में मालदार की तरफ़ से ढाल-मटोल करना...	532
जिस शख्स का हक़ निकलता हो .....	532
अगर बैअ या क़र्ज़ या अमानत का माल ....	533
अगर कोई मालदार होकर .....	534
दिवालिया या मुहताज का माल बेचकर .....	534
एक मुअय्यन मुद्त के वादे पर क़र्ज़ देना या बैअ करना	535
क़र्ज़ में कमी करने की सिफ़ारिश	535
माल को तबाह करना .....	537
गुलाम अपने आका के माल का निगराँ है	538

### किताबुल ख़ुसूमात

क़र्ज़दार को पकड़कर ले जाना	539
एक शख्स नादान या कम अक्ल हो .....	543
मुद्ई और मुद्आ अलैह एक-दूसरे की निस्बत	545
जब हाल मालूम हो जाए तो मुजरिमों ....	548
मय्यत का वज़ी उसकी तरफ़ से दा'वा कर सकता है...	549
अगर शरात का डर हो तो मुल्ज़िम का बाँधना .....	550
हरम में किसी को बाँधना और कैद करना .....	551
क़र्ज़दार के साथ रहने का बयान	552

## फेहरिस्ते-मज़ामीन

## मज़मून

## सफ़ा नं.

## मज़मून

## सफ़ा नं.

तकाज़ा करने का बयान 552

### किताबुल लुक्ता

जब लुक्ता का मालिक उसकी सहीह ....	554
भूले-भटके ऊँट का बयान	556
गुमशुदा बकरी के बारे में	557
पड़ी हुई चीज़ का मालिक .....	558
अगर कोई समन्दर में लकड़ी .....	559
कोई शख्स रास्ते में खजूर पाए?	560
अहले-मक्का के लुक्ता का क्या हुक्म है?	560
किसी जानवर का दूध .....	562
पड़ी हुई चीज़ों का मालिक अगर .....	563
पड़ी हुई चीज़ों का उठा लेना बेहतर है .....	563
लुक्ता को बतलाना लेकिन .....	565

### किताबुल मज़ालिम

जुल्मों का बदला किस-किस तौर पर लिया जाएगा	569
ज़ालिमों पर अल्लाह की फ़टकार है	569
कोई मुसलमान किसी मुसलमान पर जुल्म न करे .....	570
हर हाल में मुसलमान भाई की मदद ....	571
मज़लूम की मदद करना वाजिब है	571
ज़ालिम से बदला लेना	572
ज़ालिम को मुआफ़ कर देना	573
जुल्म, क़यामत के दिन अंधेरे होंगे	573
मज़लूम की बद-दुआ से बचना .....	574
अगर किसी शख्स ने दूसरे पर .....	574
जब किसी ज़ालिम को मुआफ़ कर दिया	575
अगर कोई शख्स किसी दूसरे को इजाज़त दे .....	576
उस शख्स का गुनाह जिसने किसी की ज़मीन ....	576
जब कोई शख्स किसी दूसरे को .....	578
एक आयत की तफ़्सीर	579
उस शख्स का गुनाह, जो जानबूझ कर .....	579

उस शख्स का बयान कि जब उसने झगड़ा....	580
मज़लूम को अगर ज़ालिम का माल....	581
चौपालों के बारे में	583
कोई शख्स अपने पड़ोसी को	583
रास्ते में शराब का बहा देना	584
घरों के सेह्न का बयान	585
रास्तों में कुआँ बनाना...	586
रास्ते में से तकलीफ़ .....	587
ऊँचे और पस्त बालाखानों .....	587
मस्जिद के दरवाज़े पर .....	594
किसी क़ौम की कोड़ी के पास ठहरना .....	594
उसका ष्वाब जिसने शाख़ या ....	595
अगर आम रास्ते में इख़ितलाफ़ हो.....	595
मालिक की इजाज़त के बग़ैर .....	596
सलीब का तोड़ना और खिन्ज़ीर का मारना	597
क्या कोई ऐसा मटका तोड़ा जा सकता है	598
जो शख्स अपना माल बचाने के लिए लड़े	599
जिस किसी शख्स ने किसी दूसरे .....	600
अगर किसी ने किसी की दीवार .....	601

### किताबुशिरकत

खाने और सफ़र खर्च और अस्बाब में शिरकत.....	603
जो माल दो साझियों के साझे का हो.....	606
बकरियों का बाँटना	606
दो-दो खजूरें मिलाकर खाना	607

# फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

तकरीज अज मुफ्ती-ए-आजम शेख अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह इब्ने बाज (रह.)	17
तकरीज अज इमामे-हरम शेख अब्दुल्लाह बिन सुबैल (रह.)	18
मिना में हजरत इमाम (रजि.) के नमाजे-कस्र .....	21
हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्रूद (रजि.) की तरफ से इज्हार-तअस्सुफ	22
अरफा के दिन रोजे पर जरूरी .....	23
हज्जाज बिन यूसुफ पर एक इशारा	24
उलमा-ए-किराम की खिदमत में एक जरूरी अपील	26
कुरेश के एक गलत रिवाज का बयान	27
मैदाने-अरफात की तशरीह	28
हजरत शाह वलीउल्लाह का एक फलसफियाना बयान	33
दीन में असलूल-उमूल का बयान	34
औरतों और बच्चों के लिए एक ख़ास रिआयत का बयान	35
हनफिय्या और जुम्हूर उलमा का एक इखितलाफी मसला	36
प्रबीर पहाड़ का बयान	38
तक्लीदे-शख़सी का मर्ज यहूदियों में पैदा हुआ था	40
एक कुर्बानी आयत की तफ़सीर	41
ज़मान-ए-जाहिलियत के ग़लत तरीकों का बयान	42
तवाफ़ करते वक़्त रमल करने की हिक्मत	44
इशआर और हजरत अबू हनीफ़ा (रह.)	45
तक्लीदे-जामिद पर कुछ इशारात	46
हनफिय्या की एक बहुत कमज़ोर दलील का बयान	49
हजरत इमाम बुख़ारी मुज्ताहिदे-मुतलक़ थे	49
तक्लीद के लुग्वी मा'नी का बयान	50
हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) और हज्जाज बिन यूसुफ	53

गाय की कुर्बानी के लिए मुल्क के क़ानून का याद रखना..	54
बग़ैर इजाज़त के कुर्बानी जायज़ नहीं	54
शौखेन के नज़दीक किसी सहाबी का काम	56
मर्फूअ के हुक्म में है	58
चमैं-कुर्बानी गुरबा तलब-ए-इस्लामिया का हक़ है	62
यौमुन्नहर में हाजी को चार काम करने जरूरी है	62
मुफ़्तियाने-इस्लाम से एक गुज़ारिश	64
मुहल्लिकीन के लिए तकरारे-दुआ का सबब	65
हजरत मुआविया (रजि.) पर एक तफ़्सीली बयान	71
हज्ज का मक़सदे-अज़ीम	71
अल्लाह के लिए जेहते-फोक्क और	74
इस्तवा अलल-अर्श प्राबित है	75
हज्जे-अकबर और हज्जे-असगर का बयान	78
उमराए-जोर की इताअत का बयान	80
हज्जाज बिन यूसुफ के बारे में	81
नाकिदीने इमाम बुख़ारी (रह.) पर एक बयान	83
हिक्मते-रमी ज़िमार पर एक बयान	84
मुक़त्लिदीने-जामिदीन पर एक बयान	90
मुन्किरीने-इदीष की तरदीद	91
अहदे-अहालत की तिजारती मण्डियाँ	93
तनईम से उमरह का एहराम	106
हजरत अब्दुल्लाह बिन मुबारक के कुछ हालात	106
हाजियों के लिए फूलों के हार जायज़ नहीं	108
फ़त्हे-मक्का पर आप (ﷺ) का मक्का में	109
शानदार दाख़िला	109
वतन से मुहब्बत मशरूअ है	109
आयते-शरीफ़ा 'वातुलबुयूत' की तशरीह	109
सफ़र नमूना-ए-सकर क्यों है	109



## فہرست تشریہ-مجامین

## مجموع

## صفحہ

## مجموع

## صفحہ

حالات ہجرت محمد بن شہاب جہری	114
امام بخاری (رہ.) کی ہجرت-بغداد کا ایک نمونہ	120
ہجرت امام نافع کے حالات	125
پانچ مہاجرین کے قتل کا حکم کیوں ہے؟	128
حالات-جندیہ ہجرت عبداللہ بن جبر	130
مکہ مکرمہ پر ایک اسلامی مکتبہ	132
مکہ مکرمہ کی روشنی میں	132
ہجرت میں اورتوں کو منہ پر کتا ب ڈالنا ممان ہے	136
کند یا ریسستان کا جہاز	137
مناجرات-سہابہ (رہ.) پر ایک روشنی	138
بغداد میں مدد کا بیان	141
جندیہ ما'جر کی طرف سے ہجرت-بغداد کا بیان	145
اورتوں میں جندیہ کے ساتھ جا سکتی ہیں	147
رمضان میں ہجرت کا بیان	148
مدینہ منورہ-رسول کے کچھ تاریخی حالات	152
مدینہ-شہر کی وجہ-تسمیہ	152
یہودیہ میں اسلام کیوں پہنچا	153
ہرم مدینہ شہر کا	154
ہرم-نہی کا بیان	155
گمبہ-ہجرت کے حالات	156
حالات امام مالک (رہ.)	157
جندیہ-بغداد کے حکم-سجودیا عربیہ	157
دجال ملحد کا بیان	162
بغداد میں ہجرت بلال (رہ.) کے احکام	166
شہادت ہجرت فاروق-احمد (رہ.)	167
راکیم-ہرم اور ہجرت-ع-مدینہ	168
سوم کے لکھی ما'نی	168
فجلیہ ہجرت ابوبکر سیدیہ (رہ.)	173
فجلیہ-رمضان کا فلاح	174
مروا جہ تکریم پر احکام-شہر جاری نہیں ہو سکتے	178
'شہر ایدین لا یکنو' کا مکتبہ	179

مناجرت-فجرت کو اقل وقت میں ادا کرنا	184
ہی مسنون ہے	185
ہجرت کتا ب کے مکتبہ حالات	189
شہادت ایک آسان جہاز کتا ب ہے	198
رہا ہجرت کرنے کی دوا	202
حالات تارکس بن کسان	205
ہجرت پر ایک ولیدہ مکتبہ	207
حالات ہجرت مسعد بن مسعد	209
رہا جندیہ خولہ کی تشریح	210
شہاد ہجرت کی ایک غلطی کی نشان دہی	212
بغداد کو آدھ ڈالنے کے لیے رہا رکھنا	213
ہجرت ہرم (رہ.) کا ایک شہر پر ہد لگانا	214
سوم-بغداد کا بیان	215
ایک مکتبہ-ع-نہی کا بیان	216
نہی رہا کی کتا ب کا بیان	217
ہجرت-بغداد کے مکتبہ لکھ کچھ غلط تفسیرات	218
ماہ-شا'بان کی وجہ-تسمیہ	221
سومہ کے مکتبہ لکھ تفسیرات	224
رہا رکھنے اور بخت-کوتا کے بارے میں	225
سوم-بغداد کی تفسیرات تفسیرات	226
ایک-بغداد کی تفسیرات	227
دوا-ع-نہی کی ایک ہجرت کا بیان	228
جندیہ کے دن رہا رکھنے کی تفسیرات	229
بغداد لوگوں کی ایک غلط آدھ کی تفسیرات	234
تین اہم ترین چیزوں کا بیان	234
بغداد-بغداد کی طرف شہ-بغداد ہرم ہے	235
مکتبہ کا رہا	237
ہجرت امیر مکتبہ (رہ.) کا ایک بخت	242
لہجہ تارکس کی تشریح	242
بغداد دلیہ	242

## फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

### मजमून

### सफा नं.

### मजमून

### सफा नं.

तफ्हीमुल-बुखारी देवबन्दी का आठ रकआत

तरावीह पर तब्सर

242

तरावीह में बीस रकआत वाली रिवायत की हकीकत

243

फैसला अज कलम उलम-ए-अहनाफ

243

ख्वाबों की कद्रो-मन्जिलत का बयान

245

वजूदे लैलतुल-कद्र बरहक है

246

दलाइल वजूदे-लैलतुल-कद्र

247

ए'तिकाफ का तफ्सीली बयान ए'तिकाफ

252

ए'तिकाफ के मुता'ल्लिक ज़रूरी मसाइल

252

किसी भी बदगुमानी का इज़ाला ज़रूरी है

257

एक हदीष के तफ्सीली फ़वाइद

260

ए'तिकाफ सुन्नते-मुवकिदा है

264

तशरीह लफ़्जे-बुयूअ

266

फ़ज़ाइले-तिजारत

266

कुरैश तिजारत-पेशा थे

267

मदीना के एक रईस तुज्जार सहाबी

270

लफ़्ज चरागाह पर एक तशरीह

272

शुब्हा की एक मिघाल

272

'अल्वलदु लिल्फिराश' की वज़ाहत

274

शिकारी कुत्ते के बारे में तफ्सीलात

275

लफ़्ज वरअ पर तफ्सीली मक़ाला

276

शाने-नुजूल आयत 'व इज़ा रऔ'

278

सोने-चाँदी की तिजारत के मुता'ल्लिक

279

गैर-मुसलमानों से लेन-देन जायज़ है

284

अफ़ज़ल कस्ब कौनसा है

284

सौदागरों को ज़रूरी हिदायात

290

सूदख़ोरों का इबरतनाक अंज़ाम

292

इमाम ज़ैनुल आबिदीन का ज़िक्रे-ख़ैर

292

हालात खब्बाब बिन अरत (रज़ि.)

298

महबूबतरीन सब्जी कद्दू और उसके ख़साइस

299

एक अज़ीम मोअजज़ा-ए-नबवी का बयान

301

आयते-कुर्आन 'फ़शारिबून शिर्बा इलैहिम' की तफ्सीर

304

हिदायत बराए ताजिराने सालेहीन

304

मुश्क की तिजारत और उसकी तम्पील

306

औरतों के मकरूह लिबास का बयान

307

बायए व मुश्तरी के मामले पर एक मुफ़त्सल मक़ाला

310

हालात हकीम बिन हेज़ाम (रज़ि.)

310

तमहुनी तर्कियात के लिए इस्लाम

हिम्मत अफ़ज़ाई करता है

316

बाज़ारों में आने-जाने के आदाब

319

बरकाते-मदीना के लिए दुआ-ए-नबवी

322

एहतकार पर तफ्सीली मक़ाला

322

नीलाम करना जायज़ है

328

घोखा की बैअ और उसकी तफ्सीलात

329

बैअ मुसरात की वज़ाहत

332

क्या हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) फ़कीह नहीं थे

333

बैअ पर बैअ का मतलब

341

हाअ व हाअ की लुगवी तहक्कीक

345

हदीष के मुकाबले पर राए-क्यास का छोड़ना

347

बैअ मुहाक़ला की वज़ाहत

349

बैअ मुजाबना की तशरीह

350

बैअ अराया के बारे में अहले-क़फ़ा का मज़हब

352

बैअ अराया के बारे में

355

'ज़हू' की वज़ाहत

357

ज़रूरत के वक़्त कोई चीज़ गिरवी रखना

359

फलों का पैवन्दी बनाना

361

शुफ़आ का बयान

366

हज़रत सलमान (रज़ि.) और अम्मार (रज़ि.)

के कुछ हालात

370

हज़रत सुहैब बिन सौबान के कुछ हालात

371

हज़रत बिलाल (रज़ि.) के हालात

371

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का सफ़रे-कनआन

373

## फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

हजरत हाजरा लौण्डी नहीं थी	373
यहूद के कौले-बाविल की खुद तौरात से तर्दीद	374
'हिबा' के बारे में कुछ तफसीलात	374
सुहैब रूमी (रज़ि.) का कुछ ज़िक्रे-खैर	376
हजरत ईसा अलैहिस्सलाम का कुर्बे-क़यामत	
नाज़िल होना	377
हयाते-ईसा अलैहिस्सलाम पर एक मुफ़्फ़्फ़ल मक़ाला	378
किताबुल-हियल की याददहानी	380
हालात हजरत दहिया कलबी (रज़ि.)	383
उम्मुल-मोमिनीन हजरत सफ़िय्या (रज़ि.) के हालात	386
हुस्मते-ख़मर वग़ैरह पर एक वलीडल्लाही मक़ाला	388
बैअ सलम की तज़रीफ़	390
हालात हजरत वकीअ बिन ज़रअ (रज़ि.)	392
हालात हजरत अब्दुल्लाह बिन अबी ऊफ़ी (रज़ि.)	393
हालात इमाम शुअबी कूफ़ी (रह.)	393
मज़ीद वज़ाहत बैअे सलम	394
लफ़्ज़े-अन्बात की तहक़ीक़	394
अगर मुतलक़ ख़ज़ूर में कोई सलम करे	395
खेत के गल्ले में सलम करना	397
शाफ़िइय्या की तर्दीद	397
हालात इमाम हसन बसरी (रह.)	397
शुफ़आ की तफ़सीलात	399
ब-सिलसिला इज़ारह हजरत मूसा का ज़िक्रे-खैर	403
दुख़्तरे हजरत शुऐब अलैहिस्सलाम का ज़िक्रे-खैर	404
बकरियों चराना कोई मज़मूम काम नहीं, बल्कि	
सुन्नते-अंबिया है	405
वादी-ए-मिना की याद अज़ मुतर्जिम	405
हजरत अली ने एक ग़ैर-मुस्लिमा की मज़दूरी की	407
जबले-घ़ौर का ज़िक्र और ग़ारे-घ़ौर पर हाज़िरी	409
ग़ज़व-ए-तबूक का एक ज़िक्र	411
हजरत मूसा और ख़िज़र अलैहिस्सलाम का ज़िक्रे-खैर	412

नमाज़े-अस्र का एक ज़िम्नी ज़िक्र	413
अहले-बिदअत की इफ़रात-तफ़रीत का बयान	414
तीन मुजरिमों का बयान	415
चौदहवीं सदी का एक ज़िक्र	417
वसीला का बयान	419
नाचीज़ मुतर्जिम अज़हाबे-सुफ़ा के चबूतरे पर	421
सूरह फ़ातिहा पढ़कर दम करना	424
मुख़वजा ता'वीज़-गण्डों की तर्दीद	425
मकरूज़ मय्यत की नमाज़े-जनाज़ नहीं जब तक .....	432
बिदआते-मुख़वजा की तर्दीद	433
एक इसाईली अमानतदार का ज़िक्रे-खैर	437
तवक्कल अलल्लाह की एक अहम मंज़िल	437
अरबों का एक जाहिली दस्तूर और उसकी तर्दीद	439
मवाखात तारीख़े-इस्लामी का एक शानदार वाकिआ	439
सिद्दीक़े-अक़बर (रज़ि.) मालिक इब्ने दग़िना	
की पनाह में	445
वाकिआ हिजरत से मुता'ल्लिक	445
उमय्या बिन ख़ल्फ़ काफ़िर के क़त्ल का वाकिआ	449
औरत का ज़बीहा	451
सलअ पहाड़ की याद अज़ मुतर्जिम	451
ग़ज़वा-ए-हुनैन का एक बयान	455
फ़वाइद हदीषे-जाबिर (रज़ि.)	457
हजरत अबू हुरैरह (रज़ि.) और शैतान का वाकिआ	462
हालात हजरत आइशा सिद्दीका (रज़ि.)	466
ज़राअत के फ़ज़ाइल का बयान	468
ततबीक़ दर मदह वज़म ज़राअत	470
शिकार के लिए कुत्ता पालना जायज़ है	472
एक बैल के गुफ़्तगू करने का बयान	474
एक भेड़िये के गुफ़्तगू करने का बयान	474
तरगीबे-तिजारत	475
बंज़र ज़मीनों को आबाद करना	475

## फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

## मजमून

## सफा नं.

## मजमून

## सफा नं.

यहूदे-खैबर से मामल-ए-आराज़ी का बयान	488
बटाई पर ज़राअत करने का बयान	489
मसाक़ात और मज़ारअत का फ़र्क	495
बीरे हज़रत उप्मान (रज़ि.)	496
पानी भी तक्सीम और हिबा किया जा सकता है	497
तीन लअनती शख़्सों की तफ़्सील	500
तर्दीद राए-क़यास और तक्लीदे-जामिद	502
हज़रत जुबैर (रज़ि.) और एक अन्सारी का झगड़ा	502
प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने का प्रवाद	504
एक लतीफ़ा बाबत तर्जुमा-ए-हदीष	505
चाहे ज़मज़म के बारे में एक हदीष	507
लकड़ी और घास बेचना	510
हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) के बारे में एक बयान	512
फ़ालतू ज़मीन पब्लिक में तक्सीम होगी	513
हिन्दुस्तान में शाहाने-इस्लाम की अज्ञात	514
तशरीहते-मुफ़ीदा अज़ मौलाना अब्दुररुफ़ साहब	
रहमानी झण्डानगरी	516
सूद लेना-देना हुराम है	524
क़र्ज़ अदा करने की फ़िर्क करना ज़रूरी है	526
क़र्ज़ लेकर ख़ैरात करना	526
एक मालदार की एक मौजबे-मफ़िहत नेकी	527
एक मोअजज़ा-ए-नबवी का बयान	530
इस्लामी हुक्मत ही हकीकी जम्हूरियत है	532
इलाल माल बड़ी अहमियत रखता है	537
माल बर्बाद करने का मतलब	538
एक हदीष बाबत तमदुने असलुल-उसूल	539
मुतअस्सिब मुकल्लिदीन को नज़ीहत	540
फ़ज़ीलते-अंबिया पर एक नोट	542
ख़ैरात कब बेहतर है	544
एहतारामे-अदालत का बयान	542
किराते सबअ पर एक इशारा	548

एक रईसे-अरब का इस्लाम कुबूल करना	550
कूफ़ा की वजहे-तस्मिया	554
लफ़्जे लुक्ता की तशरीह	554
लुक्ता की मज़ीद तफ़्सीलात	555
ज़ालिम की मदद किस तौर पर करनी चाहिए	571
काश! हर मुसलमान इस हदीष को याद रखे	572
किसी की ज़मीन नाहक़ दबा लेने का गुनाह	577
ज़मीनें भी सात हैं	577
इल्मे-ग़ैब खास्स-ए-बारी तज़ाला है	580
एक हदीष की इल्मी तौहीहत	582
वाकिआ सक्तीफ़ा बनू सअदह	583
आदाबुत तरीक़ मन्ज़ूम	586
तरक्की-ए-मदीना ज़माना-ए-सऊदी में	587
एक ईमान अफ़रोज़ तक्रीर	592
इस्लाम में लूटमार की मज़म्मत	596
सलीब का तोड़ना और खिन्ज़ीर का मारना	597
नुज़ूले-ईसा अलैहिस्सलाम का धुबूत अह्दादीषे-सहीहा	
की रोशनी में	598
गधे के गोस्त की हुरमत	598
खान-ए-का'बा के चारों तरफ़ 360 बुत थे	599
बनी इस्राईल के एक बुजुर्ग़ ज़ुरैज का बयान	601
वालदैन की इत्ताअत और फ़र्माबरदारी का बयान	602
एक अहम मोअजज़ा-ए-नबवी का बयान	605
अक्फ़अतु का ग़लत	607

# तकरीज़

(अज़ शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह इब्ने बाज़ रह.)

## بکلمات افتتاحیہ طیات

فضيلة الشيخ عبد العزيز بن عبد الله بن باز ادام الله فيوضهم  
 نائب رئيس الجامعة الاسلامية بالمدينة المنورة المملكة العربية السعودية

الحمد لله

من عبد العزيز بن عبد الله بن باز الى حضرة الاخ المكرم فضيلة الشيخ محمد داؤد راز حفظه الله السلام عليكم ورحمة الله وبركاته وبعد فقد وصل الينا كتابكم الكريم وسرنا ما تضمنه من الافادة عن قيا مكتم بترجمة وشرح الجامع الصحيح مع ترجمة رسائلنا الى اللغة الاردوية وانا لنشكركم على هذا العمل الجليل الطيب ونسال الله عز وجل ان يعينكم على اتمامه وان يضاعف لكم الاجر والمثوبة وان ينفع بالجميع انه خير مسئول والله يوفقكم ويتولاكم والسلام عليكم ورحمة الله وبركاته

**نائب رئيس الجامعة الإسلامية**

عبد العزيز بن عبد الله بن باز

١١ صفر المظفر ١٣٨٩ هـ

# تقریج

(اچڑ ایمامہ - ہرم شہر ابداللاہ بین سوبیل)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

کلمات طبیات فضیلة الشیخ محمد بن سبیل

امام الحرم الشریف مکة المكرمة زادها الله شرفا وكرامة

بسم الله الرحمن الرحيم

اتصل بنا فضيلة الشيخ محمد داؤد راز وقدّم لنا ترجمة صحيح البخاري في لغة الاردية وبناء على قراءة فضيلة الشيخ عبد الحق المدرس بالمسجد الحرام لهذا الكتاب بتلك اللغة وانه اجاد فيه وافاد فانا نشكره على ذلك ونرجوه بتوفيقه لخدمة العلم والسنة المطهرة فجزاه الله خيرا .

املاه الفقير الى الله

محمد سبیل

امام الحرم الشریف ورئيس المدرسين بمكة ١٠/١٠/١٣٩٠ هـ

الرئاسة العامة للاشراف الديني رئيس المدرسين والمراقبين

### बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वस्सलामु वस्सलामु अला रसूलिहिल करीम.

ये अल्लाह रब्बुल इज़्जत का एहसानो-करम है कि 'सहीह बुखारी शरह मुहम्मद दाऊद राज (हिन्दी)' की तीसरी जिल्द आपके हाथों में है। मुझे यकीन है कि पहली दो जिल्दों के मुतालआ से आपके इल्म में इज़ाफ़ा ज़रूर हुआ होगा। इस तीसरी जिल्द में जहाँ हज्ज, इमरा, मदीना के फ़ज़ाइल, रोज़ा, नमाज़े-तरावीह, लैलतुल क़द्र और ए'तिकाफ़ जैसे इल्मी मसाइल के बारे में सहीह अह्दादीष मौजूद हैं वहीं कुछ ऐसे अहम मसलों पर सहीह अह्दादीष आपके मुतालआ में आएंगी जिनके बारे में जानकारी होना आज के दौर में बेहद ज़रूरी है। मित्राल के तौर पर ख़रीदो-फ़रोख़्त के मसाइल, उजरत (मज़दूरी) के मसाइल, किफ़ालत और वकालत के मसाइल, खेती-बाड़ी, क़र्ज़, लोगों पर जुल्म करने और उनका माल हड़प कर लेने के बारे में, गिरी पड़ी चीज़ों और आपसी झगड़ों के मसाइल। मेरी गुज़ारिश है कि आप बहुत ग़ौर से इसका मुतालआ करें, अगर कोई मसला समझ में न आए तो आलिम हज़रात से राबिता करें। अपनी दुआओं में उन तमाम हज़रात को भी याद रखें जिन्होंने सहीह बुखारी (हिन्दी) आप तक पहुँचाने का फ़रीजा अंजाम दिया है।

अब्दुर्रहमान ख़िलजी

अमीर जमइयत अहले हदी़ राजस्थान

### बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दुलिल्लाहिल अलिम्बिल अज़ीम वस्सलामु वस्सलामु अला रसूलिहिल करीम.

अल्लाह तआला का बेहदो-हिसाब शुक्र है कि उसकी तौफ़ीके ख़ास से 'सहीह बुखारी : शरह मुहम्मद दाऊद राज' हिन्दी की तीसरी जिल्द शाये होकर आपके हाथों में है। अल्लाह के तवक्कल और मुहिब्बाने रसूल (ﷺ) और अहले इल्म के तआवुन से यह अज़ीम काम मुकम्मल हो पाया है। जिस तरह पहली दो जिल्दों को आपने हाथों हाथ लिया और हमारी हौसला अफ़ज़ाई की उसके लिए हम तहेदिल से शुक्रगुज़ार हैं और उम्मीद रखते हैं कि आइन्दा भी आप इससे ज़्यादा जोश व ख़रोश के साथ अपनी अह्दादीष के अनमोल ख़ज़ाने से मुहब्बत का मुज़ाहिरा फ़र्माते रहेंगे। हमारी ये कोशिश भी है कि इस काम का मे'यार बरकरार रखा जाए चुनौचे एक बार के बजाय दो दफ़ा प्रूफ़ रीडिंग की गई है तीसरी बार नज़रेप्राणी की है ताकि ग़ल्लियों का इर्तिकाब कम से कम हो। फ़ारेईने किराम से गुज़ारिश है कि वे खुद भी इल्मे-अह्दादीष के इस ख़ज़ाने से फ़ैज़याब हों और दूसरे लोगों को भी तर्गीब दिलाएं कि वे सहीह बुखारी का सेट ख़रीदकर उसके कुछ हिस्से का रोज़ाना मुतालआ करके अल्लाह तआला की रहमत के मुस्तहिक़ बनें।

वस्सलाम,

मुहम्मद फ़ारूक़ कुरैशी (अबाबील होटल)

खादिम जमइयत अहले हदी़ जोधपुर

# अर्ज-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुजारिशत)

करेईने किराम! अल्लाह रब्बुल-इज्जत के फज़ल व एहसानो-क़रम से सहीह बुखारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की तीसरी जिल्द आपके हाथों में सौंपी जा रही है। पहली व दूसरी जिल्द से यक़ीनन आपने फ़ैज़ हासिल किया होगा। इस तीसरी जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी हासिल करेंगे, जिनकी हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है। पहली जिल्द के पेज नं. 23-24 पर इसी कॉलम में काफी-कुछ वज़ाहत की जा चुकी है चन्द अहम व ज़रूरी बातें इसलिये दोहराई जा रही हैं ताकि शुरुआती दो जिल्द पढ़ चुके करेईन व मुअतरिज़ीन के सवालात के तसल्लीबख़्श जवाब मिल सकें।

01. बेहद सावधानी के साथ इसकी तस्हीह व नज़रे-ख़ानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अरबी के माहिर आलिम मौलाना जमशेद आलम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही हैं। कुछ हज़रात ने अरबी हर्फ़ (ب) के लिये हिन्दी अक्षर 'ब' इस्तेमाल पर ए' तिराज़ जताया है, सहीह बुखारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर हदीष 'इन्नमल अमालु बिन्नियात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अमल का दारोमदार निव्यत पर है।' हमारी निव्यत यह है कि अरबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुजारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालाआ करें।

02. इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास हफ़्ज़ों को अलग तरह से लिखा गया ह मिसाल के तौर पर :- (1) के लिये अ, (ع) के लिये अ; (ب) के लिये ब, (س) के लिये स, (ش) के लिये श, (ص) के लिये स; (ح) के लिये ह, (ه) के लिये ह, (خ) के लिये ख़, (غ) के लिये ग़, (ف) के लिये फ़, (ك) के लिये क, (ق) के लिये क़ लिखा गया है। (ج) के लिये ज का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ز) ज़े (ز) ज़ाद (ض) ज़ोय (ظ) के लिये मज़बूरी में एक ही हुरूफ़ ज़ का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हफ़्ज़ों के लिये सहीह विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; असीर, अलिफ़ (ا) - सीन (س) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है क़ैदी। अज़ीर, अलिफ़ (ا) ये (ی) रे (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है ख़ालिस। असीर अैन (ع) सीन (س) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है मुश्किल। अज़ीर अैन (ع) साद (ص) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है अंगूर की घाशनी (शीरा)। अज़ीर अैन (ع) ये (ی) रे (ر) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है धूल। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में सहीह तलफ़्फ़ूज़ (उच्चारण) के लिये हद-दर्जा कोशिश की गई है।

03. मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मेटर की एडिटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस्हीह (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाईनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी है, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरक़तें व सलामती नाज़िल हों। ऐ अल्लाह! मेरे ख़ालिद-वालदा क्रो अपने अर्श के साथे तले, अपनी रहमत की पनाह नसीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने-इस्लाम का फ़हम अता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़ताओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअमतेँ अता फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है। आमीन! तक्ब्बल या रब्बल आलमीन!!

व सल्लल्लहु तआला अला नबि्यिना व अला आलिही व अस्हाबिही व अत्बाइहि व बारिक व सल्लिम.

सलीम ख़िलजी.



## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### सातवां पारा

#### बाब 84 : मिना में नमाज़ पढ़ने का बयान

1655. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनस ने इब्ने शिहाब से खबर दी, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपने बाप से खबर दी कि रसूले करीम (ﷺ) ने मिना में दो रकआत पढ़ीं और अबूबक्र (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) भी ऐसा करते रहे और इब्मान (रज़ि.) भी खिलाफत के शुरू अय्याम में (दो) ही रकआत पढ़ते थे। (राजेअ 1082)

**तशरीह:** बाब का मतलब ये कि मिना में भी नमाज़ क़स्र करनी चाहिये। ये बाब उन अहदादीष के साथ पीछे भी गुज़र चुका है। हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने अपनी खिलाफत के छठे साल मिना में नमाज़ पूरी पढ़ी। लेकिन दूसरे सहाबा ने उनका ये फ़ैअल खिलाफ़े सुन्नत समझा। हज़रत इब्मान (रज़ि.) के पूरी पढ़ने की बहुत सी वजहें बयान की गई हैं जिनमें एक ये भी है कि आप सफ़र में क़स्र करना और पूरी नमाज़ पढ़ना दोनों काम जाइज़ जानते थे, इसलिये आपने जवाज़ पर अमल किया, मिना की वजह तस्मिया और और उसका पूरा बयान पहले गुज़र चुका है।

1656. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया कहा कि हमसे शुअबा ने अबू इस्हाक़ हम्दानी से बयान किया और उनसे हारिषा बिन वहब ख़ुज़ाई (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मिना में हमें दो रकआत पढ़ाई, हमारा शुमार उस वक़्त सब वक़्तों से ज़्यादा था और हम इतने बे-ख़ौफ़ किसी वक़्त में न थे (उसके बावजूद हमको नमाज़ क़स्र पढ़ाई)। (राजेअ: 1083)

1657. हमसे क़बैसा बिन उक्बाने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान शौरी ने, उनसे अअमश ने, उनसे इब्राहीम नख़्ख़ी ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन

#### ٨٤- بَابُ الصَّلَاةِ بِمِنَى

١٦٥٥- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنِي وَرَكْعَتَيْنِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَغُفَّانُ صَدْرًا مِنْ غِلَافِهِ».

[راجع: ١٠٨٢]

١٦٥٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الْهَمْدَانِيِّ عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ الْخَزَاعِيِّ قَالَ: «صَلَّى بِنَا النَّبِيُّ ﷺ وَتَعَزَّزْنَا أَكْثَرَ مَا كُنَّا قَطُ وَأَمَنَةً - بَيْنِي وَرَكْعَتَيْنِ».

[راجع: ١٠٨٣]

١٦٥٧- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ بْنُ عُقْبَةَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ

मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ मिना में दो रकअत नमाज़ पढ़ी और अबूबक्र (रज़ि.) के साथ भी दो ही रकअत पढ़ी और उमर (रज़ि.) के साथ भी दो ही रकअत, लेकिन फिर उनके बाद तुममें इख़्तिलाफ़ हो गया तो काश उन चार रकअतों के बदले मुझको दो रकअत ही नसीब होतीं जो (अल्लाह के यहाँ) कुबूल हो जाएँ। (राजेअ : 1084)

عَنْ قَالَ: «صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ رَكْعَتَيْنِ، وَمَعَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَكْعَتَيْنِ، وَمَعَ عُمرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ تَفَرَّقْتُ بِكُمْ الطَّرِيقَ، فَمَا لَيْتَ حَظِّي مِنْ أَرْبَعِ رَكْعَتَانِ مُتَّفَعَتَانِ»۔ [راجع: ١٠٨٤]

**तशरीह:** हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बतौर इन्हारे नाराज़गी फ़र्माया कि काश मेरी दो रकअत ही अल्लाह के यहाँ कुबूल हो जाएँ। ज़ाहिर है कि इस किसम की फुर्रूई और इज्तिहादी इख़्तिलाफ़ की बिना पर किसी को भी मौरिदे तअन (तानाकशी का निशाना) नहीं बनाया जा सकता। हज़रत इब्मान (रज़ि.) के सामने कुछ मसलहतें रही होंगी जिनकी वजह से उन्होंने ऐसा किया वरना शुरू ख़िलाफ़त में वो भी क़स्र ही किया करते थे। क़स्र करना बहरहाल औला (अपेक्षाकृत बेहतर) है कि ये रसूल करीम (ﷺ) की सुन्नत है, आपकी सुन्नत हर हाल में मुक़दम है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के इश्राद के फ़यालैत हज़ी मिन अर्बइन् रकअताने मुतक़ब्बलतानि के मुता'ल्लिक़ फ़र्माते हैं, 'वल्लज़ी यज़हरु अन्नहू क़ाल ज़ालिक अल्ला सबीलित्तफ़वीज़ि इलल्लाहि लिअदमि इत्तिलाइही अलल ग़ैबि व हल यक्बलुल्लाहु सलातहू अम ला फ़तमन्ना अंध्यक्बल मिन्हु मिनल अर्बइल्लती युमल्लीहा रकअतानि व लौला यक्बलुज़ाइद व हुव युशइरू बिअन्नल मुसाफ़िर इन्दहू मुखय्यिरून बैनल क़स्रि वल इत्माभि वरकअतानि ला बुह मिन्हुमा व मअ ज़ालिक फ़कान यखाफ़ु अल्ला युक्बल मिन्हु शौउन फ़हासिलुहू अन्नहू क़ाल इन्नमा अतम्म मुताबअत लिइब्मान व लैतल्लाह कबिल मिन्नी रकअतैनि मिनल अर्बइ' या'नी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने जो फ़र्माया ये आपने अपना अमल अल्लाह को सौंपा इसलिये कि आपको ग़ैब पर इत्तिला न थी कि अल्लाह पाक आपकी नमाज़ कुबूल करता है या नहीं, इसलिये तमन्ना की कि काश अल्लाह मेरी चार रकअत में से दो रकअत को कुबूल कर ले अगरचे वो ज़ाइद रकअत को कुबूल न करे और ये इसलिये भी कि मुसाफ़िर को नमाज़ पूरी करने और क़स्र करने का आपके नज़दीक इख़्तियार था और दो रकअत के बग़ैर तो गुज़ारा ही नहीं है। उसके बावजूद वो डरते थे कि शायद कुछ भी कुबूल न हो पस हासिले बहज़ ये कि आपने हज़रत इब्मान (रज़ि.) की मुताबअत में नमाज़ को पूरा फ़र्माया और ये कहा कि काश अल्लाह पाक इन चार रकअत में से मेरी दो रकअत ही को कुबूल कर ले। अल्लाह वालों की यही शान है कि वो कुछ नेकी करें कितने ही तक्वा शिआर हों मगर फिर भी उनको यही ख़तरा लाइक़ रहता है कि उनकी नेकियाँ दरबारे इलाही में कुबूल होती हैं या रद्द हो जाती हैं। ऐसे अल्लाह वाले आजकल दुर्लभ हैं जबकि अक़्बरियत रियाकारों बज़ाहिर तक्वा शिआरों व बबातिन दुनियादारों की रह गई है।

### बाब 85 : अरफ़ा के दिन रोज़ा रखने का बयान

1658. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने ज़ुहरी से बयान किया और उनसे सालिम अबुन-नस्र ने बयान किया, कहा कि मैंने उम्मे फ़ज़ल के गुलाम ज़मेर से सुना, उन्होंने उम्मे फ़ज़ल (रज़ि.) से कि अरफ़ा के दिन लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) के रोज़े के मुता'ल्लिक़ शक हुआ, इसलिये मैंने आपके पीने को कुछ भेजा जिसे आपने पी लिया।

(दीगर मक़ाम : 1661, 1988, 8604, 5618, 5636)

### 85- بابُ صَوْمِ يَوْمِ عَرَفَةَ

١٦٥٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا سَالِمٌ قَالَ : سَمِعْتُ عُمَرَ مَوْلَى أُمِّ الْقُضَيْلِ عَنْ أُمِّ الْقُضَيْلِ ((شَكَ النَّاسُ يَوْمَ عَرَفَةَ فِي صَوْمِ النَّبِيِّ ﷺ، فَبَعَثْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِشَرَابٍ فَشَرِبَهُ)).

[أطرافه في : ١٦٦١، ١٩٨٨، ٨٦٠٤]

[٥٦٣٦، ٥٦١٨]

**तशरीह :** अरफा का रोज़ा बहुत ही बड़ा वसील-ए-प्रवाब है दूसरी अहदीष में उसके फज़ाइल मज़कूर हैं। हदीष मज़कूरा उम्मुल फ़ज़ल के ज़ेल शैख़ुल हदीष हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब मुबारकपुरी फ़र्माते हैं, 'क़ालल हाफ़िज़ु क़ौलुहु फ़ी सियामि रसूलिल्लाहि (ﷺ) हाज़ा युश़ाइरु बिअन्न सौम यौमि अरफ़त कान मअरूफ़न इन्दहुम मुअतादन लहुम फिल्हज़ि व कान मन जज़म बिही बिअन्नहु साइमुन इस्तनद इला मा अलफ़हु मिनल इबादति व मन जज़म बिअन्नहु ग़ैर साइमिन क़ामत इन्दहु क़रीनतुन कौनुहु मुसाफ़िरन व क़द अरफ़ नहयहु अन सौमिल फ़र्ज़ि फ़िस्सफ़रि फ़ज़लमिन्नफ़िल' (मिअत) लोगों में रसूले करीम (ﷺ) के रोज़े के बारे में इख़्तिलाफ़ हुआ। इससे ज़ाहिर है कि यौमि अरफ़ा का रोज़ा उन दिनों उनके यहाँ मअरूफ़ (जाना-पहचाना) था और हज़रत में उसे बतौर आदत सब रखा करते थे, इसलिये जिन लोगों को आपके रोज़ेदार होने का यक़ीन हुआ वो इस बिना पर कि वो आँहज़रत (ﷺ) की इबादतगुज़ारी की उत्फ़त से वाकिफ़ थे और जिनको न रखने का ख़याल हुआ वो इस बिना पर कि आप मुसाफ़िर थे और ये भी मशहूर था कि आपने सफ़र में एक दफ़ा फ़र्ज़ रोज़े ही से मना कर दिया था तो नफ़िल का तो ज़िक्र ही क्या है। इस रिवायत में दूध भेजने वाली हज़रत उम्मुल फ़ज़ल बतलाई गई है मगर मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में हज़रत मैमूना का जिक्र है कि दूध उन्होंने भेजा था। इस पर हज़रत मौलाना शैख़ुल हदीष महज़िल्लुहु फ़र्माते हैं, 'फ़यहतमिलुत्तअहुद व यहतमिलु अन्नहुमा अर्सलता मअन फ़नुसिब ज़ालिक इला कुल्लिमिन्नुमा लिअन्नहुमा कानता उख़्तैनि व तकूनु मैमूनत अर्सलत बिसुवालि उम्पिल फ़ज़िल लहा फ़ी ज़ालिक लिक्श़िफ़ल हालि फ़ी ज़ालिक व यहतमिलुल अक्स' (मिअत) या'नी एहतिमाल है कि दोनों ने अलग-अलग दूध भेजा हो और ये हर एक की तरफ़ मन्सूब हो गया इसलिये भी कि वो दोनों बहन थीं और मैमूना ने उस वक़्त भेजा हो जबकि उम्मुल फ़ज़ल ने उनसे तहकीक़े हाल का सवाल किया और उसका अक्स भी मुहतमिल है और दूध इसलिये भेजा गया कि ये ग़िज़ा और पानी दोनों का काम देता है, इसलिये खाना खाने पर आप ये दुआ पढ़ा करते थे, 'अल्लाहुम्म बारिकली फ़ीहि व अतइम्नी ख़ैरमिन्हु' (या अल्लाह! मुझको इसमें बरकत बरख़श और इससे भी बेहतर खिलाइयो) और दूध पीकर आप (ﷺ) ये दुआ पढ़ते थे, 'अल्लाहुम्म बारिकली फ़ीहि व ज़िदनी मिन्हु' (या अल्लाह! मुझे इसमें बरकत दे और मुझे ज़्यादा नसीब फ़र्माइयो)। अबूक़तादा (रज़ि.) की हदीष जिसे मुस्लिम ने रिवायत की है उसमें मज़कूर है कि अरफ़ा का रोज़ा अगले और पिछले सालों के गुनाह माफ़ करा देता है। दोनों अहदीष में ये तब्दीक़ दी गई है कि ये रोज़ा अरफ़ात में हाजियों के लिये रखना मना है ताकि उनमें वुकूफ़े अरफ़ा के लिये जुअफ़ पैदा न हो जो हज्ज का असल मक्क़द है और ग़ैर हाजियों के लिये ये रोज़ा मुस्तहब और बाअिषे प्रवाब मज़कूर है, व क़ाल इब्ने क़दामा (स. 176) 'अक्व़रु अहलिल इल्मि यस्तहिब्बूनल फ़ित् यौम अरफ़त व कानत आइशतु वब्नुजुबैर यसूमानिही व क़ाल क़तादा ला बास बिही इज़ा लम यज़अफ़ अनिहुआइ' (मिअत) या'नी अक़्ब़र अहले इल्म ने उसी को मुस्तहब क़रार दिया है कि अरफ़ात में ये रोज़ा न रखा जाए और हज़रत आइशा (रज़ि.) और इब्ने जुबैर (रज़ि.) ये रोज़ा वहाँ भी रखा करते थे और क़तादा ने कहा कि अगर दुआ में कमज़ोरी का ख़तरा न हो तो फिर रोज़ा रखने में हाजी के लिये भी कोई हर्ज नहीं है मगर अफ़ज़ल न रखना ही है। हदीष उम्मुल फ़ज़ल को हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने हज्ज और सियाम और अशिरबा में भी जिक्र फ़र्मा कर उससे अनेक मसाइल को प्राबित किया है।

## बाब 86 : सुबह के वक़्त मिना से अरफ़ात जाते हुए लब्बैक और तक्बीर कहने का बयान

1659. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने मुहम्मद बिन अबी बक्र प्रक़फ़ी से ख़बर दी कि उन्होंने ने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा कि वो दोनों सुबह को मिना से अरफ़ात जा रहे थे कि रसूले करीम (ﷺ) के साथ आप लोग आज के दिन किस तरह करते थे? अनस (रज़ि.) ने बतलाया कोई हममें से लब्बैक पुकारता होता, उस पर कोई

٨٦- بَابُ التَّكْبِيرِ وَالْتَّكْبِيرِ إِذَا غَدَا مِنْ مِّنَى إِلَى عَرَفَةَ

١٦٥٩- حَدَّثَنَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ الثَّقَفِيِّ (رَأَاهُ سَأَلَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ - وَهُمَا غَدَايَانِ مِنْ مِّنَى إِلَى عَرَفَةَ - كَيْفَ كُنْتُمْ تَصْنَعُونَ فِي هَذَا الْيَوْمِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ

ए' तिराज न करता और कोई तक्बीर कहता, उस पर भी कोई इंकार न करता (इस हदीस से मा'लूम हुआ कि हाजी को इखितयार है लब्बैक पुकारता रहे या तक्बीर कहता रहे) (राजेअ: 970)

### बाब 87 : अरफ़ात के दिन ऐन गर्मी में ठीक दोपहर को खाना होना

या'नी वुकूफ के लिये नम्रह से निकलना। नम्रह वो मक़ाम है जहाँ हाजी नवीं तारीख को उहरते हैं वो हद्दे हरम से बाहर और अरफ़ात से मुत्तसिल (जुड़ा हुआ) है।

1660. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने और उनसे सालिम ने बयान किया कि अब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज्जाज बिन यूसुफ़ को लिखा कि हज्ज के अहकाम में अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के ख़िलाफ़ न करे। सालिम ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) अरफ़ा के दिन सूरज ढलते ही तशरीफ़ लाए मैं भी उनके साथ था। आपने हज्जाज के ख़ैमे के पास बुलन्द आवाज़ से पुकारा, हज्जाज बाहर निकला उसके बदन पर एक कसम में रंगी हुई चादर थी। उसने पूछा अबू अब्दुर्रहमान! क्या बात है? आपने फ़र्माया अगर सुन्नत के मुताबिक़ अमल चाहते हो तो जल्दी उठकर चल खड़े हो जाओ। उसने कहा क्या इसी वक़्त? अब्दुल्लाह ने फ़र्माया कि हाँ, इसी वक़्त। हज्जाज ने कहा कि फिर थोड़ी सी मोहलत दो कि मैं अपने सर पर पानी डाल लूँ या'नी गुस्ल कर लूँ फिर निकलता हूँ। उसके बाद अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) (सवारी से) उतर गए और जब हज्जाज बाहर आया तो मेरे और वालिद (इब्ने इमर) के बीच चलने लगा तो मैंने कहा कि अगर सुन्नत पर अमल का इरादा है तो ख़ुल्बे में इख़िताम और वुकूफ़ (अरफ़ात) में जल्दी करना। इस बात पर वो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) की तरफ़ देखने लगा हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि ये सच कहता है। (राजेअ : 1666, 1663)

قَالَ: كَانَ يُهْلُ مِنْ الْمَهْلِ فَلَا يُكْزِرُ عَلَيْهِ، وَيُكْزِرُ مِنَ الْمَكْزِرِ فَلَا يُكْزِرُ عَلَيْهِ. [راجع: ٩٧٠]

### 87- بابُ التَّهَجُّرِ بِالرُّوَّاحِ يَوْمَ عَرَفَةَ

١٦٦٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ قَالَ: ((كَتَبَ عَبْدُ الْمَلِكِ إِلَى الْحُجَّاجِ أَنْ لَا يُخَالَفَ ابْنَ عُمَرَ فِي الْحَجِّ. فَجَاءَ ابْنُ عُمَرَ وَأَنَا مَعَ يَوْمَ عَرَفَةَ حِينَ زَالَتِ الشَّمْسُ، فَصَاحَ عِنْدَ سَرَادِقِ الْحُجَّاجِ، فَخَرَجَ وَعَلَيْهِ مِلْحَفَةٌ مُعَصْفَرَةٌ فَقَالَ: مَا لَكَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ؟ فَقَالَ: الرُّوَّاحُ إِنْ كُنْتُ تُرِيدُ السَّنَةَ. قَالَ: هَلِهِ السَّاعَةُ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَأَنْظِرْنِي حَتَّى أُلْبِسَ رَأْسِي ثُمَّ أَخْرَجَ. فَتَزَلَّ حَتَّى خَرَجَ الْحُجَّاجُ، فَسَارَ بَيْنِي وَبَيْنَ أَبِي، فَقُلْتُ إِنْ كُنْتُ تُرِيدُ السَّنَةَ فَأَقْصِرِ الْعُطْبَةَ وَعَجِّلِ الْوُقُوفَ. فَجَعَلَ يَنْظُرُ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ، فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: صَدَقَ. [طرقه في: ١٦٦٦، ١٦٦٣].

**तशरीह:** हज्जाज, अब्दुल मलिक की तरफ से हिजाज़ का हाकिम था, जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) पर फ़तह पाई तो अब्दुल मलिक ने उसी को हाकिम बना दिया। अबू अब्दुर्रहमान हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) की कुत्रियत है और सालिम उनके बेटे हैं। इस हदीस से मा'लूम हुआ कि वुकूफ़े अरफ़ा ऐन गर्मी के वक़्त दोपहर के बाद ही शुरू कर देना चाहिये। उस वक़्त वुकूफ़ के लिये गुस्ल करना मुस्तहब है और वुकूफ़ में कसम में रंगा हुआ कपड़ा पहनना मना है। हज्जाज ने ये भी ग़लती की, जहाँ और बहुत सी ग़लतियाँ उससे हुई हैं, ख़ास तौर पर कितने ही मुसलमानों का खूने नाहक उसकी

गर्दन पर है। उसी सिलसिले की एक कड़ी अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) का कत्ले नाहक भी है जिसके बाद हज्जाज बीमार हो गया था और उसे अक़्फ़र ख़्वाब में नज़र आया करता था कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) का ख़ूने नाहक (अकारण हत्या का गुनाह) उसकी गर्दन पर सवार है।

### बाब 88 : अरफ़ात में जानवर पर सवार होकर वुकूफ़ करना

1661. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे अबुन्नज़्म ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के गुलाम इमैर ने, उनसे उम्मुल फ़ज़ल बिनते हरिष (रज़ि.) ने कि उनके यहाँ लोगों का अरफ़ात के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) के रोज़े से मुता'ल्लिक कुछ इख़ितलाफ़ हो गया कुछ ने कहा कि आप (ﷺ) (अरफ़ा के दिन) रोज़े से हैं और कुछ कहते हैं कि नहीं इसलिये उन्होंने आपके पास दूध का एक प्याला भेजा आँहज़रत (ﷺ) उस दस्त कैंट पर सवार होकर अरफ़ात में वुकूफ़ फ़र्मा रहे थे आपने वो दूध पी लिया। (राजेअ: 1658)

आप कैंट पर सवार होकर वुकूफ़ फ़र्मा रहे थे। इससे बाब का मतलब प्राबित हुआ, इससे ये भी मा'लूम हुआ कि अरफ़ात में हाजियों के लिये रोज़ा न रखना सुन्नते नबवी है।

### बाब 89 : अरफ़ात में दो नमाज़ों (ज़ुहर व अस्र) को मिलाकर पढ़ना

और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) की अगर नमाज़ इमाम के साथ छूट जाती तो भी जमा करते।

1662. लैष ने बयान किया कि मुझसे अक़ील ने इब्ने शिहाब से बयान किया, उन्होंने ने कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी कि हज्जाज बिन यूसुफ़ जिस साल अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) से लड़ने के लिये मक्का में उतरा तो उस मौक़े पर उसने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से पूछा कि अरफ़ा के दिन वुकूफ़ में आप क्या करते हैं? इस पर सालिम (रह.) बोले कि अगर तू सुन्नत पर चलना चाहता है तो अरफ़ा के दिन नमाज़ दोपहर ढलते ही पढ़ लेना। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि सालिम ने सच कहा, सहाबा आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत के मुताबिक़ ज़ुहर व अस्र एक

### ٨٨- بَابُ الْوُقُوفِ عَلَى الدَّائِيَةِ بِعَرَفَةَ

١٦٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ عُمَرَ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ ((عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْخَارِثِ أَنَّ نَاسًا اسْتَلْفُوا حَيْدَهَا يَوْمَ عَرَفَةَ فِي صَوْمِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ بَعْضُهُمْ هُوَ صَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ لَيْسَ بِصَائِمٍ. فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ بِقَدَحٍ لَبَنٍ وَهُوَ وَقِفٌ عَلَى بَيْعَرٍ فَشَرِبَهُ)). [راجع: ١٦٥٨]

### ٨٩- بَابُ الْجَمْعِ بَيْنَ الصَّلَاتَيْنِ بِعَرَفَةَ

وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا إِذَا لَاقَتْهُ الصَّلَاةُ مَعَ الْإِمَامِ جَمَعَ بَيْنَهُمَا ١٦٦٢- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي غَقْبِلُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ الْحُجَّاجَ بْنَ يُوسُفَ - هَامَ تَزَلَّ بِابْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - سَأَلَ عَبْدَ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: كَيْفَ تَصْنَعُ فِي الْوُقُوفِ يَوْمَ عَرَفَةَ؟ فَقَالَ سَالِمٌ: إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ السَّنَةَ فَهَجُزْ بِالصَّلَاةِ يَوْمَ عَرَفَةَ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: صَدَقَ، إِنَّهُمْ كَانُوا

ही साथ पढ़ते थे। मैंने सालिम से पूछा कि क्या सलूल्लाह (ﷺ) ने भी इसी तरह किया था। सालिम ने फ़र्माया और किसी की सुन्नत पर इस मसले में चलते हो। (राजेअ : 1660)

يَجْمَعُونَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ فِي السَّنَةِ.  
فَقُلْتُ لِسَالِمٍ: أَفَعَلَّ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ  
(ﷺ)؟ فَقَالَ سَالِمٌ: وَهَلْ تَتَّبِعُونَ فِي ذَلِكَ  
إِلَّا مَنَاسِكَ؟ (راجع: ١٦٦٠)

या'नी अरफ़ात में जुहर और अस्त्र में जमा (इकट्ठा) करना आहज़रत (ﷺ) ही की सुन्नत है, आप (ﷺ) के सिवा और किसका फ़ेअल सुन्नत हो सकता है और आपकी सुन्नत के सिवा और किस सुन्नत पर तुम चल सकते हो कुछ नुस्खों में तत्तबिऊन के बदल यत्तबिऊन है; या'नी आपके सिवा और किसका तरीका ढूँढते हैं (वहीदी)। मुहक्किनीने अहले हदीष का यही कौल है कि अरफ़ात में और मुजदलिका में मुतलकन जमा करना चाहिये ख़्वाह आदमी मुसाफ़िर हो या न हो, इमाम के साथ नमाज़ पढ़े या अकेले पढ़े। चुनाँचे अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, 'अजमअ अहलुलइल्मि अला अन्नल इमाम यजमउ बैनज्जहरि वलअस्त्रि बिअरफ़ात व कज्जालिक मन मल्लना मअल्इमामि' या'नी अहले इल्म का इस पर इज्माअ है कि अरफ़ात में इमाम जुहर और अस्त्र में जमा करेगा और जो भी इमाम के साथ नमाज़ी होंगे सबको जमा करना होगा। (नैनुल औतार)

**बाब 90 : मैदाने अरफ़ात में ख़ुत्बा मुख़्तसर पढ़ना**

1663. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि अब्दुल मलिक बिन मरवान (ख़लीफ़ा) ने हज्जाज को लिखा कि हज्ज के कामों में अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) की इत्तिदा करे। जब अरफ़ा का दिन आया तो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) आए मैं भी आपके साथ था, सूरज ढल चुका था, आपने हज्जाज के डेरे के पास आकर बुलन्द आवाज़ से कहा हज्जाज कहाँ है? हज्जाज बाहर निकला तो इब्ने इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया चल जल्दी कर वक़्त हो गया। हज्जाज ने कहा अभी से! इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा कि हाँ। हज्जाज बोला कि फिर थोड़ी मोहलत दे दीजिए, मैं अभी गुस्ल करके आता हूँ। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) (अपनी सवारी से) उतर गए। हज्जाज बाहर निकला और मेरे और मेरे वालिद (इब्ने इमर) के बीच में चलने लगा, मैंने उससे कहा कि आज अगर सुन्नत पर अमल की ख़्वाहिश है तो ख़ुत्बा मुख़्तसर पढ़ और वुकूफ़ में जल्दी कर। हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि सालिम सच कहता है। (राजेअ : 1660)

٩٠- بَابُ قَصْرِ الْخُطْبَةِ بِمَرْقَةٍ  
١٦٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ  
أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ  
بْنِ عَبْدِ اللَّهِ (أَنَّ عَبْدَ الْمَلِكِ بْنَ مَرْوَانَ  
كَتَبَ إِلَى الْحُجَّاجِ أَنْ يَأْتِمَ بِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ  
عُمَرَ فِي الْحَجِّ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمَ غَرْفَةَ جَاءَ  
ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا وَأَنَا مَعَهُ حِينَ  
رَأَيْتُ الشَّمْسَ - أَوْ رَأَيْتُ - فَصَاحَ  
عِنْدَ فُسْطَاطِهِ: أَيْنَ هَذَا؟ فَخَرَجَ إِلَيْهِ،  
فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: الزَّوْجَ. فَقَالَ: الْآنَ؟  
فَالَ: نَعَمْ. قَالَ: أَنْظِرْنِي أُلْبِضُ عَلَى مَاءٍ.  
فَقَرَأَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا حَتَّى  
خَرَجَ، فَسَارَ بَيْنِي وَبَيْنَ أَبِي، فَقُلْتُ: إِنْ  
كُنْتُ تُرِيدُ أَنْ تُصِيبَ السَّنَةَ الْيَوْمَ فَاقْصُرِ  
الْخُطْبَةَ وَغَبِلِ الْوُقُوفَ. فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ

(صدق). (راجع: ١٦٦٠)

ख़ुत्बा मुख़्तसर पढ़ना ख़त्बीब की समझदारी की दलील है, ईदैन हो या जुम्आ; फिर हज्ज का ख़ुत्बा तो और भी मुख़्तसर होना चाहिये कि यही सुन्नते नबवी (ﷺ) है। जो मुहतरम उलम-ए-किराम ख़ुत्बाते जुम्आ व ईदैन में तवील-तवील (लम्बे-लम्बे)

खुब्रात देते हैं उनको सुन्नते नबवी का लिहाज करना चाहिये जो उनकी समझ बूझ की दलील होगी। वबिल्लाहि तौफ़ीक़।

### बाब 91 : मैदाने अरफ़ात में ठहरने का बयान

1664. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने, उनसे उनके बाप ने कि मैं अपना एक ऊँट तलाश कर रहा था (दूसरी सनद)

और हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इमर बिन दीनार ने, उन्होंने मुहम्मद बिन जुबैर से सुना कि उनके वालिद जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने बयान किया मेरा एक ऊँट खो गया था तो मैं अरफ़ात में उसको तलाश करने गया, ये दिन अरफ़ात का था, मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) अरफ़ात के मैदान में खड़े हैं। मेरी जुबान से निकला क्रसम अल्लाह की! ये तो कुरैश हैं फिर ये यहाँ क्यों हैं।

### ९१- بَابُ الْوُقُوفِ بِعَرَفَةَ

١٦٦٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرُو حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَبْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : (( كُنْتُ أَطْلُبُ بَعِيرًا لِي. ))  
وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ مُحَمَّدُ بْنُ جَبْرِ عَنْ أَبِيهِ جَبْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ : (( أَضَلْتُ بَعِيرًا لِي، فَلَدَيْتُ أَطْلُبُهُ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَأَقْفًا بِعَرَفَةَ، فَقُلْتُ : هَذَا وَاللَّهِ مِنَ الْحُمْسِ، فَمَا شَأْنُهُ هَاهُنَا؟ ))

### तशरीह :

जाहिलियत में दूसरे तमाम लोग अरफ़ात में वुकूफ़ करते लेकिन कुरैश कहते कि हम अल्लाह तआला के अहलो-अयाल हैं, इसलिये हम वुकूफ़ के लिये हरम से बाहर नहीं निकलेंगे। आँहज़रत (ﷺ) भी कुरैश में से थे मगर आप और तमाम मुसलमान और ग़ैर कुरैश के इम्तियाज़ के बग़ैर अरफ़ात ही में वुकूफ़ पज़ीर हुए (ठहरे)। अरफ़ात, हरम से बाहर है इसलिये रावी को हैरत हुई कि एक कुरैश और इस दिन अरफ़ात में। लफ़ज़ हुम्स हमसत से मुश्तक़ है। कुरैश के लोगों को हिम्स इस वजह से कहते थे कि वो अपने दीन में हिमासत या 'नी सख़ती रखते थे।

1665. हमसे फ़र्वा बिन अबिल मरआ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अली बिन मुस्हिर से बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि हुम्स के सिवा बक्रिया सब लोग जाहिलियत में नंगे होकर तवाफ़ करते थे, हुम्स कुरैश और उसकी आल-औलाद को कहते थे, (और बनी किनान वग़ैरह, जैसे खुज़ाआ) लोगों को (अल्लाह के वास्ते) कपड़े दिया करते थे (कुरैश) के मर्द दूसरे मर्दों को ताकि उन्हें पहनकर तवाफ़ कर सकें और (कुरैश की) औरतें दूसरी औरतों को ताकि वो उन्हें पहनकर तवाफ़ कर सकें और जिनको कुरैश कपड़ा न देते वो बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे होकर करते। दूसरे सब लोग तो अरफ़ात से वापस होते लेकिन कुरैश मुज़दलिफ़ा ही से (जो हरम में था) वापस हो जाते। हिशाम बिन इर्वा ने कहा कि

١٦٦٥- حَدَّثَنَا قُرُؤَةُ بْنُ أَبِي الْمُرَّاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مَسْهَرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ قَالَ عُرْوَةُ : (( كَانَ النَّاسُ يَطُوفُونَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ عَرَاةَ إِلَّا الْحُمْسُ - وَالْحُمْسُ قُرَيْشٌ وَمَا وَلَدَتْ - وَكَانَتِ الْحُمْسُ يَخْتَبِئُونَ عَلَى النَّاسِ، يُعْطِي الرَّجُلُ الرَّجُلَ الثَّيَابَ يَطُوفُ فِيهَا، وَتُعْطِي الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ الثَّيَابَ تَطُوفُ فِيهَا، فَمَنْ لَمْ يُعْطِهِ جَمَاعَةٌ طَافَ بِأَيْتِ عُرَيْنَا. وَكَانَ يُفِيضُ حِمَالَةَ النَّاسِ مِنْ عُرَفَاتِ

मेरे बाप उर्वा बिन जुबैर ने मुझे उम्मुल मोमिनीन हजरत आइशा (रज़ि.) से खबर दी कि ये आयत कुरैश के बारे में नाज़िल हुई कि (फिर तुम भी (कुरैश) वहीं से वापस आओ जहाँ से और लोग वापस आते हैं (या'नी अरफ़ात से, सूरह बक्रर) उन्होंने बयान किया कि कुरैश मुज़दलिफ़ा ही से लौट आते थे इसलिये उन्हें भी अरफ़ात से लौटने का हुक्म हुआ। (दीगर मक़ाम: 4520)

وَيُفِيضُ الْخَمْسُ مِنْ جَمْعٍ. قَالَ: وَأَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ هَذِهِ الْآيَةَ نَزَلَتْ فِيهِ الْخَمْسُ هُنَا يُفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ قَالَ: كَانُوا يُفِيضُونَ مِنْ جَمْعٍ فَلْيُفِيضُوا إِلَيَّ غَرَفَاتٍ. [طرفه ٧: ٤٥٢٠].

**तशरीह:** का'बा शरीफ से मैदाने अरफ़ात तकरीबन 15 मील के फ़ासले पर बाँके अ है, ये जगह हरम से ख़ारिज (बाहर) है, इस अत़राफ़ में वादी-ए-अरफ़ा, क़र्य-ए-अरफ़ा, जबले अरफ़ात, मशिरकी सड़क बाँके अ हैं, यहाँ से ताइफ़ के लिये रास्ता जाता है। जब हजरत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम), ख़लीलुल्लाह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को मनासिक (ए-हज्ज) सिखलाते हुए इस मैदान तक लाए तो कहा, हल अरफ़ात आपने मनासिके हज्ज को जान लिया? उस वक़्त से उसका नाम मैदान अरफ़ात हुआ (दुरै मन्शूर)। ये जगह मिल्लते इब्राहीमी में एक अहम तारीख़ी जगह है और उसमें वुकूफ़ करना ही हज्ज की जान है अगर किसी का ये वुकूफ़ फ़ौत हो जाए (ठहरना छूट जाए) तो उसका हज्ज नहीं हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर फ़र्माया था, किफ़ूअला मशाइरिकुम फ़इन्नकुम अला इर्वि अबीकुम इब्राहीम या'नी मैदाने अरफ़ात में तुम जहाँ उतर चुके हो वहाँ पर ही वुकूफ़ करो, तुम सब अपने बाप इब्राहीम (अ) की मौलूषा ज़मीन पर हो, आँहज़रत (ﷺ) ने इस्लाम के क़ानूने असासी का ऐलान इसी मक़ाम पर फ़र्माया था। हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर आपका मशहूर खुत्बा अरफ़ात उसी की यादगार है।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) कहते हैं, कुन्तु रदिफ़न्नबिद्यि (ﷺ) बिअरफ़ात फ़रफ़अ यदैहि यदऊ फ़मालत नाक़तुहू फ़सक़त इब्रितामुहा फ़तनावललिब्रिताम बिइहदा यदैहि व हुव राफ़िउन यदैहि यदहुल उख़रा (रवाहुन्नसई) या'नी अरफ़ात में आँहज़रत (ﷺ) की ऊँटनी पर मैं आप (ﷺ) के पीछे सवार था, आप (ﷺ) अपने दोनों हाथों को उठाकर दुआएँ मांग रहे थे, अचानक आप (ﷺ) की ऊँटनी झुक गई और आप (ﷺ) के हाथ से उसकी नकेल छूट गई, आप (ﷺ) ने अपना एक हाथ उसके उठाने के लिये नीचे झुका दिया और दूसरा हाथ दुआओं में बदस्तूर उठाए रखा। मैदाने अरफ़ात में यही वुकूफ़ यानी खड़ा होना और शाम तक दुआओं के लिये अल्लाह के सामने हाथ फैलाना यही हज्ज की रूह है, ये फ़ौत हुआ तो हज्ज फ़ौत हो गया और अगर इसमें कोई शख्स शरीक हो गया उसका हज्ज अदा हो गया।

जुम्हूर के नज़दीक अरफ़ात का ये वुकूफ़ जुहर अस्त्र की नमाज़ जमा करके नम्रह में अदा कर लेने के बाद होना चाहिये हज़रत अल्लामा शौक़ानी (रह.) फ़र्माते हैं, अन्नहू (ﷺ) वलख़ुल्फ़ाअराशिदीन बअदहू लम यक्रिफ़ इल्ला बअदज्जवालि व लम युनक़ल अन अहदिन अन्नहू वक़फ़ क़ब्लहू (नैल) या'नी आँहज़रत (ﷺ) और आप (ﷺ) के बाद ख़ुल्फ़-ए-राशिदीन सबका यही अमल रहा है कि ज़वाल के बाद ही अरफ़ात का वुकूफ़ किया है, ज़वाल से पहले वुकूफ़ करना किसी से भी प्राबित नहीं है। वुकूफ़ से जुहर व अस्त्र मिलाकर पढ़ लेने के बाद मैदाने अरफ़ात में दाख़िल होना और वहाँ शाम तक खड़े खड़े दुआएँ करना मुराद है, यही वक़्फ़े हज्ज की जान है, इस मुबारक मौक़े पर जिस क़दर भी दुआएँ की जाएँ कम हैं क्योंकि आज अल्लाह पाक अपने बन्दों पर फ़ख़्र कर रहा है जो दूर-दराज़ मुल्कों से जमा होकर आसमान के नीचे एक खुले मैदान में अल्लाह पाक के सामने हाथ फैलाकर दुआएँ कर रहे हैं। अल्लाह पाक हाजी साहिबान की दुआएँ कुबूल करे और उनको हज्जे मबरूर नसीब हो, आमीन! जो हाजी मैदाने अरफ़ात में जाकर भी हुक्काबाज़ी करते रहते हैं वो बड़े बदनसीब हैं अल्लाह उनको हिदायत बख़्शे। (आमीन)

१२- بَابُ السَّيْرِ إِذَا دَفَعَ مِنْ عَرَفَةَ

बाब 92: अरफ़ात से लौटते वक़्त किस चाल से चले

या'नी धीमी चाल से या जल्दी चूँकि मुज़दलिफ़ा में आकर मरिब और इशा की नमाज़ें मिलाकर पढ़ते हैं अरफ़ात से लौटते



वक़्त जल्द चलना मसनून है जैसे हदीष आगे मौजूद है।

1666. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने हिशाम बिन इर्वा से ख़बर दी, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से किसी ने पूछा (मैं भी वहीं मौजूद था) कि हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर अरफ़ात से रसूलुल्लाह (ﷺ) के वापस होने की क्या चाल थी? उन्होंने जवाब दिया कि आप (ﷺ) पांव उठाकर चलते थे, ज़रा तेज़ लेकिन जब जगह पाते (हुजूमन होता) तो तेज़ चलते थे, हिशाम ने कहा कि अनक़ तेज़ चलना और नस्र अनक़ से तेज़ चलने को कहते हैं। फ़ज्वा के मा'नी कुशादा जगह इसकी जमा फ़ज्वात और फ़ुजाआ है जैसे ज़कात, ज़िकाअ इसकी जमा और सूरह सौद में मनास्र का जो लफ़्ज़ आया है उसके मा'नी भागना हैं। (दीगर मक़ाम : 2999, 4413)

तो इससे नस्र मुशतक़ नहीं है जो हदीष में मज़कूर है, ये तो एक अदना आदमी भी जिसकी अर्बियत से ज़रा सी इस्तिअदाद हो समझ सकता है कि मनास्र को नस्र से किया अलाका, नस्र मुजाअफ़ है और मनास्र मुअतल है। अब ये ख़याल करना कि इमाम बुखारी (रह.) ने मनास्र को नस्र से मुशतक़ समझा है इसलिये यहाँ उसके मा'नी बयान कर दिये जिसे ऐनी ने नक़ल किया है ये बिलकुल कमफ़हमी है और अज़ल ये है कि अक़षर नुस्खों में ये इबारत ही नहीं है और जिन नुस्खों में मौजूद है उनकी तौजीह यूँ हो सकती है कि कुछ लोगों को कम इस्तिअदादी से ये वहम हुआ होगा कि मनास्र और नस्र का मादा एक ही है इमाम बुखारी (रह.) ने मनास्र की तफ़सीर करके इस वहम का रद्द किया है।

### बाब 93 : अरफ़ात और मुज़दलिफ़ा के बीच उतरना

हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे मूसा बिन इब्बबा ने उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के गुलाम कुरैब ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि जब रसूले करीम (ﷺ) अरफ़ात से वापस हुए थे तो आप (ﷺ) (राह में) एक घाटी की तरफ़ मुड़े और वहाँ क़ज़ा-ए-हाजत की फिर आप (ﷺ) ने वुजू किया तो मैंने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या (आप ﷺ मरिब की) नमाज़ पढ़ेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, नमाज़ आगे चलकर पढ़ी जाएगी। (या'नी अरफ़ात से मुज़दलिफ़ा आते हुए क़ज़ा-ए-हाजत वगैरह के लिये रास्ते में रुकने में कोई हर्ज नहीं है। (राजेअ : 139)

1668. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुवैरिया ने नाफ़ेअ से बयान किया, उन्होंने कहा कि

١٦٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ غُرَوةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ: ((سُئِلَ أَسَمَةُ وَأَنَا جَالِسِينَ: كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَسِيرُ الْعَنَقَ، فَإِذَا رَجَدَ فَجَوَّةَ نَمْرٍ)). قَالَ هِشَامٌ: وَالنَّصَ فَوْقَ الْعَنَقِ. فَجَوَّةٌ: مُسَعٌ، وَالْجَمْعُ فَجَوَاتٌ وَفَجَاءٌ، وَكَذَلِكَ رَكْوَةٌ وَرِكَاءٌ. مَنَاصِرٌ لَيْسَ خِيْنٌ لِرَوَّارٍ. [طرفاه في: ٢٩٩٩، ٤٤١٣].

٩٣- بَابُ النُّزُولِ بَيْنَ عَرَفَةَ وَجَمْعٍ  
١٦٦٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ مُوسَى بْنِ عُفَةَ عَنْ كُرَيْبِ مَوْلَى أَبِي عَبَّاسٍ عَنْ أَسَمَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَيْثُ أَفَاضَ مِنْ عَرَفَةَ مَالَ إِلَى الشَّعْبِ فَقَضَى حَاجَةً قَوْمًا. فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُصَلِّي؟ فَقَالَ: ((الصَّلَاةُ أَفَامَك)). [راجع: ١٣٩]

١٦٦٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((كَانَ عَبْدُ

अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) मुजदलिफा में आकर नमाज़ मरिब व इशा मिलाकर एक साथ पढ़ते, अल्बत्ता आप उस घाटी में भी मुड़ते जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) मुड़े थे। वहाँ आप क़ज़ा-ए-हाजत करते फिर वुजू करते लेकिन नमाज़ न पढ़ते नमाज़ आप मुजदलिफा में आकर पढ़ते थे। (राजेअ: 1091)

اللّٰهُ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَجْمَعُ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ بِجَمْعٍ، غَيْرَ أَنَّهُ يَمُرُّ بِالشُّغْرِ الَّذِي أَخَذَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَيَدْخُلُ فَيَنْتَفِضُ وَيَتَوَضَّأُ وَلَا يُصَلِّي حَتَّى يُصَلِّيَ بِجَمْعٍ)). [راجع: ١٠٩١]

**तशरीह:** ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) की कमाले मुताबअते सुन्नत (सुन्नत से समरूपता) थी हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) इन्सानी ज़रूरत व हाजत के लिये उस घाटी पर ठहरे थे, कोई हज्ज का रुकन न था मगर अब्दुल्लाह (रजि.) भी वहाँ ठहरते और हाजत से फ़ारिग होकर वहाँ वुजू कर लेते जैसे आँहज़रत (ﷺ) ने किया था। (वहीदी)

1669. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन हर्मला ने उनसे इब्ने अब्बास (रजि.) के गुलाम कुरैब ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रजि.) ने कि मैं अरफ़ात से रसूलुल्लाह की सवारी पर आप (ﷺ) के पीछे बैठा हुआ था। मुजदलिफा के करीब बाएँ तरफ़ जो घाटी पड़ती है जब आँहज़रत (ﷺ) वहाँ पहुँचे तो आप (ﷺ) ने कैंट को बिठाया फिर पेशाब किया और तशरीफ़ लाए तो मैंने आप (ﷺ) पर वुजू का पानी डाला। आप (ﷺ) ने हल्का सा वुजू किया, मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! और नमाज़? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ तुम्हारे आगे है। (या'नी मुजदलिफा में पढ़ी जाएगी) फिर आप (ﷺ) सवार हो गए जब मुजदलिफा में आए तो (मरिब और इशा की नमाज़ मिलाकर) पढ़ी। फिर मुजदलिफा की सुबह (या'नी दसवीं तारीख़) को रसूलुल्लाह (ﷺ) की सवारी के पीछे फ़ज़ल बिन अब्बास (रजि.) सवार हुए (राजेअ: 139)

١٦٦٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ أَبِي حَرْمَةَ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ أَسَمَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: ((رَوَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنْ عَرَفَاتٍ، فَلَمَّا بَلَغَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الشُّغْبَ الْأَيْسَرَ الَّذِي دُونَ الْمُزْدَلِفَةِ آتَاخَ قَبَانَ، ثُمَّ جَاءَ فَصَبَّتْ عَلَيْهِ الْوُضُوءُ تَوَضَّأَ وَضُوءًا خَفِيفًا، فَقُلْتُ: الصَّلَاةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: ((الصَّلَاةُ أَمَّا لَكَ)). فَوَكَّبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَتَّى أَتَى الْمُزْدَلِفَةَ فَصَلَّى، ثُمَّ رَوَيْتُ الْفَضْلُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ غَدَاةَ جَمْعٍ)).

[راجع: ١٣٩]

1670. कुरैब ने कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.) ने फ़ज़ल (रजि.) के ज़रिये से ख़बर दी कि आँहज़रत (ﷺ) बराबर लम्बैक कहते रहे यहाँ तक कि जम्-ए-इब्बा पर पहुँच गए (और वहाँ आप (ﷺ) ने कंकरियाँ मारीं)। (राजेअ: 1544)

١٦٧٠- قَالَ كُرَيْبٌ: فَأَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ الْفَضْلِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمْ يَزَلْ يُلَيِّحُ حَتَّى بَلَغَ الْحُمْرَةَ)). [راجع: ١٥٤٤]

**तशरीह:** हल्का वुजू ये कि अअज़ा-ए-वुजू एक एक बार धोया या पानी कम डाला। इस हदीष से ये भी निकला कि वुजू करने में दूसरे आदमी से मदद लेना भी दुस्त है। नीज़ इस हदीष से ये मसला भी जाहिर हुआ कि हाजी जब रम्ये

जिमार के लिये जम्-ए उक्बा पर पहुँचे उस वक्त लम्बेक पुकारना मौकूफ करे।

**बाब 94 : अरफात से लौटते वक्त रसूले करीम (ﷺ) का लोगों को सुकून व इत्मीनान की हिदायत करना और कोड़े से इशारा करना**

۹۴- بَابُ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ بِالسَّكِينَةِ عِنْدَ الْإِفَاضَةِ، وَإِشَارَتِهِ إِلَيْهِمْ بِالسُّوطِ

1671. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सुवैद ने बयान किया, कहा मुझसे मुत्तलिब के गुलाम अमर बिन अबी अमर ने बयान किया, उन्हें वालिया कूफी के गुलाम सईद बिन जुबैर ने खबर दी, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अरफा के दिन (मैदाने अरफात से) वो नबी करीम (ﷺ) के साथ आ रहे थे। ओहज़रत (ﷺ) ने पीछे सख्त शोर (कैट हाँकने का) और कैटों की मार-धाड़ की आवाज़ सुनी तो आपने उनकी तरफ अपने कोड़े से इशारा किया और फ़र्माया लोगों ! आहिस्तगी व वक्रार अपने ऊपर लाज़िम कर लो (कैटों को) तेज़ दौड़ाना कोई नेकी नहीं है। इमाम बुखारी (रह.) फ़र्माते हैं कि (सूरह बकर में) अवज़र के मा'नी रेशा दवानियाँ करें, खिलालकुम का मा'नी तुम्हारे बीच में इसी से (सूरह कहफ़) में आया है फ़जरना खिलालहुमा या'नी उनके बीच में।

۱۶۷۱- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سُوَيْدٍ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ جَبْرِ مَوْلَى وَالِيَةِ الْكُوفَةِ حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ دَفَعَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ وَرَأَاهُ زَجْرًا شَدِيدًا وَصَوْتًا لِلْإِبِلِ، فَأَشَارَ بِسُوطِهِ إِلَيْهِمْ وَقَالَ: ((أَيُّهَا النَّاسُ، عَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ، فَإِنَّ الْبِرَّ لَيْسَ بِالِإِضَاعِ)). أَوْصَوْا: أَمْرُغُوا. خِلَالَكُمْ مِنَ التَّغَلُّلِ بَيْنَكُمْ. ﴿وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا﴾ يَتْنَهُمَا.

चूँकि हदीष में ईजाअ का लफ़्ज़ आया है तो इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ कुर्आन की इस आयत की तफ़सीर कर दी जिसमें वला अवज़र खिलालकुम आया है और उसके साथ ही खिलालकुम के भी मा'नी बयान कर दिये फिर सूरह कहफ़ में भी खिलालकुम का लफ़्ज़ आया था उसकी भी तफ़सीर कर दी (वहीदी) हज़रत इमाम बुखारी (रह.) चाहते हैं कि अह्दादीष में जो अल्फ़ाज़े कुर्आनी मस़ादिर से आएँ साथ ही आयात कुर्आनी उनकी भी वज़ाहत फ़र्मा दें ताकि मुतालआ करने वालों को हदीष और कुर्आन पर पूरा-पूरा उबूर (प्रभुत्व) हासिल हो सके। जज़ाहुल्लाहु ख़ैरन अन् साइरिल मुस्लिमीना

**बाब 95 : मुज़दलिफ़ा में दो नमाज़ें एक साथ मिलाकर पढ़ना**

۹۵- بَابُ الْجَمْعِ بَيْنَ الصَّلَاتَيْنِ بِالْمُزْدَلِفَةِ

1672. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने कहा, उन्हें मूसा बिन इक्बा ने खबर दी, उन्हें कुरैब ने उन्होंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को ये कहते सुना कि मैदाने अरफ़ात से रसूलुल्लाह (ﷺ) खाना होकर घाटी में उतरे (जो मुजदलिफ़ा के पास है) वहाँ पेशाब किया, फिर वुजू किया और पूरा वुजू नहीं किया (ख़ूब पानी नहीं बहाया हल्का वुजू किया) मैंने नमाज़ के बारे में अर्ज किया तो फ़र्माया कि नमाज़ आगे है। अब आप (ﷺ) मुजदलिफ़ा तशरीफ़ लाए वहाँ फिर वुजू किया और पूरी तरह किया फिर नमाज़ की तक्बीर कही गई और आप (ﷺ) ने मरिब की नमाज़ पढ़ी फिर हर शख्स ने अपने कैंट डेरों पर बिठा दिये फिर दोबारा नमाज़े इशा के लिये तक्बीर कही गई और आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी आप (ﷺ) ने उन दोनों नमाज़ों के बीच कोई (सुन्नत या नफ़िल) नमाज़ नहीं पढ़ी थी। (राजेअ: 139)

इस हदीस से मुजदलिफ़ा में जमा करना प्राबित हुआ जो बाब का मतलब है और ये भी निकला कि अगर दो नमाज़ों के बीच में जिनको जमा करना हो आदमी कोई थोड़ा सा काम कर ले तो क़बाहत नहीं। ये भी निकला कि जमा की हालत में सुन्नत वग़ैरह पढ़ना ज़रूरी नहीं ये जमा शाफ़िइया के नज़दीक सफ़र की वजह से है और हनफ़िया और मालिकिया के नज़दीक हज्ज की वजह से है।

### बाब 96 : मरिब और इशा मुजदलिफ़ा में मिलाकर पढ़ना और सुन्नत वग़ैरह न पढ़ना

1673. हमसे आदम बिन अबिल अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी जिब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने उनसे सालिब बिन अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुजदलिफ़ा में नबी करीम (ﷺ) ने मरिब और इशा एक साथ मिलाकर पढ़ी थीं हर नमाज़ अलग अलग तक्बीर के साथ न उन दोनों के प हले कोई नफ़िल व सुन्नत पढ़ी थी और न उनके बाद। (राजेअ: 1091)

ऐनी ने इस सिलसिले में इलमा के छह क़ौल नक़ल किये हैं, आखिरी क़ौल ये कि पहली नमाज़ के लिये अज़ान कहे और दोनों के लिये अलग-अलग इक़ामत कहे। शाफ़िइया और हनाबिला का यही क़ौल है इसी को तरजीह (प्राथमिकता) है।

1674. हमसे ख़ालिद बिन मुखलद ने बयान किया, उन्होंने कहा

١٦٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ كُرَيْبٍ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ ((دَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ عَرَفَةَ، فَتَزَلَّ الشَّعْبُ قَبَالَ، ثُمَّ نَوَضًا وَلَمْ يُسَبِّحِ الْوُضُوءَ. فَقُلْتُ لَهُ: الصَّلَاةُ. فَقَالَ: ((الصَّلَاةُ أَمَامَكَ)). فَجَاءَ الْمُزْدَلِفَةَ فَوَضًا فَاسْتَبَحَّ، ثُمَّ أَقْبَمَتِ الصَّلَاةُ فَصَلَّى الْمَغْرِبَ، ثُمَّ آتَا كُلَّ إِنْسَانٍ بَيْتَهُ فِي مَنْزِلِهِ، ثُمَّ أَقْبَمَتِ الصَّلَاةُ فَصَلَّى، وَلَمْ يُصَلِّ بَيْنَهُمَا)). [راجع: ١٣٩]

### ٩٦- بَابُ مَنْ جَمَعَ بَيْنَهُمَا وَلَمْ يَطُوعَ

١٦٧٣- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنُبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((جَمَعَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ يَجْمَعُ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا بِأَقَامَةٍ وَلَمْ يُسَبِّحْ بَيْنَهُمَا، وَلَا عَلَى إِبْرٍ كُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا)). [راجع: ١٠٩١]

١٦٧٤- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا

कि हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन अबी सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अदी बिन प्राबित ने खबर दी, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन यजीद खत्मी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) ने कहा कि हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुजदलिफ़ा में आकर मरिब और इशा को एक साथ मिलाकर पढ़ा था।

(दीगर मक़ाम : 4414)

मुजदलिफ़ा को जमा कहते हैं क्योंकि वहाँ आदम और हव्वा जमा हुए थे। कुछ ने कहा कि वहाँ दो नमाज़ें जमा की जाती हैं, इब्ने मुज़िर ने इस पर इज्माअ नक़ल किया है कि मुजदलिफ़ा में दोनों नमाज़ों के बीच में नफ़ल व सुन्नत न पढ़े। इब्ने मुज़िर ने कहा जो कोई बीच में सुन्नत या नफ़ल पढ़ेगा तो उसका जमा सहीह न होगा। (वहीदी)

हज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहदिष देहलवी (रह.) फ़र्माते हैं, व इन्नमा जमअ बैनजहरि वलअस्मि व बैनल्मरिबि वलइशाइ लिअन्न लिन्नसि यौमइजिन इज्तिमाअन लम यअहद फ़ी ग़ैरि हाज़ल्मौतिनि वल्जमाअतुल वाहिदतु मत्लूबतुन व ला बुद्दिन इक़ामतिहा फ़ी मिस्लि हाज़ल्जमइ लियराहु मिन हुनालिक व ला तुस्डरू इज्तिमाउहुम फ़ी वक्तैनि व अयज़न फ़ुलानुन लिन्नसि इश्तिआलन बिज्जिकि वहुआइ व हुमा वज़ीफ़तु हाज़ल्यौम व रिआयतुल्इक़ामति वज़ीफ़तु जमीइस्सुन्नति व इन्नमा युरज्जहु फ़ी मिस्लि हाज़ल्शैल्बदीइन्नादिर घुम्म रकिब हत्ता अतल्यौकिफ़ वस्तक्वलल्किबलत फ़लम यज़ल वाकिफ़न हत्ता गरबतिश्शम्सु व जहबतिस्सुफ़रतु क़लीलन घुम्म दफ़अ (हज्जतुलहिल् बालिगा) यौमे अरफ़ात में जुहर और अस्र को मिलाकर पढ़ा और मुजदलिफ़ा में मरिब और इशा को उस रोज़ उन मक़ामाते मुक़दसा में लोगों का ऐसा इज्तिमाअ होता है जो बजुज उस मक़ाम के और कहीं नहीं होता और शारेअ (अलैहिर्रहमा) को एक जमाअत का होना मतलूब है और ऐसे इज्तिमाअ में एक जमाअत का कायम करना ज़रूरी है ताकि सब लोग उसको देखें और दो वक्तों में सबका मुज्तामअ होना मुश्किल था। नीज़ उस रोज़ लोग जिक्क और दुआ में मशगूल होते हैं और वो उस रोज़ का वज़ीफ़ा है और औक़ात की पाबन्दी तमाम साल का वज़ीफ़ा है और ऐसे वक्त में बदीअ और नादिर चीज़ को तरजीह दी जाती है। फिर आप (ﷺ) वहाँ से (नम्रह से नमाज़े जुहर व अस्र से फ़ारिग होकर) अरफ़ात में मौक़िफ़ में तशरीफ़ लाए, पस आप (ﷺ) वहीं खड़े रहे यहाँ तक कि आफ़ताब ग़रूब हुआ और ज़दी कम हो गई फिर वहाँ से मुजदलिफ़ा को लौटे। खुलासा ये कि यहाँ उन मक़ामात पर उन नमाज़ों को मिलाकर पढ़ना शारेअ को ऐन मेहबूब है। पस जिस काम से मेहबूब राज़ी हो वही काम दावेदाराने मुहब्बत को भी बज़ोक्क व शौक्क अंजाम देना चाहिये।

**बाब 97 : जिसने कहा कि हर नमाज़ के लिये अज़ान और तक्बीर कहना चाहिये, उसकी दलील**

1675. हमसे अमर बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे जुहर ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ अमर बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन यजीद से सुना कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने हज्ज किया, आपके साथ तक्बीरन इशा की अज़ान के वक्त हम मुजदलिफ़ा में भी आए, आपने एक शख्स को हुक्म दिया उसने अज़ाने तक्बीर

سَلِمَانَ بْنِ بِلَالٍ حَدَّثَنَا يَعْقَى بْنُ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ الْخَطْمِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيُّ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ جَمَعَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءَ بِالْمُزْدَلِفَةِ)).

[طرفه في : ٤٤١٤].

٩٧- بَابُ مَنْ أَذَّنَ وَأَقَامَ لِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا

١٦٧٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ يَقُولُ: ((حَجَّ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَأَذَّنَا الْمُزْدَلِفَةَ حِينَ الْأَذَانِ بِالْعَمَةِ أَوْ قَرَيْتَا مِنْ ذَلِكَ، فَأَمَرَ

कही और आपने मरिब की नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअत (सुन्नत) और पढ़ी और शाम का खाना मंगवाकर खाया। मेरा ख्याल है (रावी-ए-हदीष जुहैर का) कि फिर आपने हुक्म दिया और उस शख्स ने अज़ान दी और तक्बीर कही अमर (रावी हदीष) ने कहा मैं यही समझता हूँ कि शक जुहैर (अमर के शौख) को था, उसके बाद इशा की नमाज़ दो रकअत पढ़ी। जब सुबह सादिक हुई तो आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) इस नमाज़ (फ़ज़्र) को इस मक़ाम और इस दिन के सिवा और कभी उस वक़्त (तुलूअे फ़ज़्र होते ही) नहीं पढ़ते थे, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने ये भी फ़र्माया कि ये सिर्फ़ दो नमाज़ें (आज के दिन) अपने मा'मूली वक़्त से हटा दी जाती हैं। जब लोग मुज़दलिफ़ा आते हैं तो मरिब की नमाज़ (इशा के साथ मिलाकर) पढ़ी जाती है और फ़ज़्र की नमाज़ तुलूअे फ़ज़्र के साथ ही। उन्होंने फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसी तरह करते देखा था।

(दीगर मक़ाम : 1682, 1683)

رَجُلًا فَأَذَّنَ وَأَقَامَ، ثُمَّ صَلَّى الْمَغْرِبَ، وَصَلَّى بَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ دَعَا بِخَشَانِهِ فَتَعَشَى، ثُمَّ أَمَرَ - أَرَى - فَأَذَّنَ وَأَقَامَ» قَالَ غَمَرُو : لَا أَعْلَمُ الشَّكَّ إِلَّا مِنْ زُهَيْرٍ ((ثُمَّ صَلَّى الْعِشَاءَ رَكْعَتَيْنِ . فَلَمَّا طَلَعَ الْفَجْرُ قَالَ : إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ : لَا يُصَلِّي هَذِهِ السَّاعَةَ إِلَّا هَذِهِ الصَّلَاةَ فِي هَذَا الْمَكَانِ مِنْ هَذَا الْيَوْمِ . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ : هُمَا صَلَاتَانِ يُحَوَّلَانِ عَنْ وَثَبَيْهِمَا : صَلَاةُ الْمَغْرِبِ بَعْدَ مَا يَأْتِي النَّاسُ الْمُرْدَلِفَةَ، وَالْفَجْرِ حِينَ يَبْزُغُ الْفَجْرُ، قَالَ : رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَفْعَلُهُ)).

[طرمه ن : ١٦٨٢، ١٦٨٣]

**तशरीह :** इस हदीष से ये भी निकला कि नमाज़ों का जमा करनेवाला दोनों नमाज़ों के बीच खाना भी खा सकते हैं या और कुछ काम कर सकता है। इस हदीष में जमा के साथ नफ़ल पढ़ना भी मज़कूर है। फ़ज़्र के बारे में ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का ख्याल था कि आँहज़रत (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ उसी दिन तारीकी (अंधेरे) में पढ़ी और शायद मुराद उनकी ये हो कि उस दिन बहुत तारीकी में पढ़ी। या'नी सुबह सादिक होते ही वरना दूसरे बहुत स हाबा (रज़ि.) ने रिवायत किया है कि हुज़ूर (ﷺ) की आदत यही थी कि आप (ﷺ) फ़ज़्र की नमाज़ अँधेरे में पढ़ा करते थे और हज़रत इमर (रज़ि.) ने अपने आमिलों को परवाना लिखा कि सुबह की नमाज़ उस वक़्त पढ़ा करो जब तारे गहने हों या'नी अँधेरी हो और ये भी सिर्फ़ इब्ने मसऊद (रज़ि.) का ख्याल है कि आँहज़रत (ﷺ) ने सिवा उस मक़ाम के और कहीं जमा नहीं किया और दूसरे सहाबा (रज़ि.) ने सफ़र में आप (ﷺ) से जमा करना नक़ल किया है। (वहीदी)

आप (ﷺ) ने नमाज़े मरिब आर इशा के बीच नफ़िल भी पढ़े मगर रसूले करीम (ﷺ) से न पढ़ना प्राबित है, लिहाज़ा तरजीह फ़ेअले नबवी ही को होगी। हाँ! कोई शख्स हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की तरह पढ़ भी ले तो ग़ालिबन वो गुनहगार नहीं होगा अगरचे ये सुन्नते नबवी के मुताबिक़ न होगा। इन्नमल आमातु बिन्नियायत

दीन में असलूल उसूल (सबसे बड़ा नियम या सब नियमों की बुनियाद) यही है कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की रज़ामन्दी बहरहाल मुक़द्दम रखी जाए। जहाँ जिस काम के लिये हुक्म फ़र्माया जाए उस काम को किया जाए और जहाँ उस काम से रोक दिया जाए वहाँ रुक जाए, इत्ताअन का यही मफ़हूम है, इसी में ख़ैर और भलाई है। अल्लाह सबको दीन पर कायम रखे, आमीन!

**बाब 98 : औरतों और बच्चों को मुज़दलिफ़ा की रात में आगे मिना खाना कर देना, वो मुज़दलिफ़ा**

٩٨ - بَابُ مَنْ قَدَّمَ صَعِفَةَ أَهْلِهِ بِلَيْلٍ، فَيَقْفُونَ بِالْمُرْدَلِفَةِ وَيَدْعُونَ،

में ठहरें और दुआ करें और चौद डूबते ही चल दें

1676. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने यूनुस से बयान किया और उनसे इब्ने शिहाब ने कि सालिम ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) अपने घर के कमज़ोरों को पहले ही भेज दिया करते थे और वो रात ही में मुज़दलिफ़ा में मशअरे हुराम के पास आकर ठहरते और अपनी ताक़त के मुताबिक़ अल्लाह का ज़िक्र करते थे, फिर इमाम के ठहरने और लौटने से पहले ही (मिना) आ जाते थे, कुछ तो मिना फ़ज़्र की नमाज़ के वक़्त पहुँचते और कुछ उसके बाद, जब मिना पहुँचते तो कंकरियाँ मारते और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माया करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन सब लोगों के लिये ये इजाज़त दी है।

وَيَقْدُمُ إِذَا غَابَ الْقَمَرُ

١٦٧٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْرَجٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ سَالِمٌ : ((وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ هُرَيْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقْدُمُ صُفْعَةَ أَهْلِهِ لِقِفْوَنَ عِنْدَ الْمُشْعَرِ الْحَرَامِ بِالْمَزْدَلِفَةِ بَلِيلٍ فَيَذْكُرُونَ اللَّهَ مَا بَدَأَهُمْ ثُمَّ يَرْجِعُونَ قَبْلَ أَنْ يَقِفَ الْإِمَامُ وَقِيلَ أَنْ يَذْلَعُ، لِمَنْهُمْ مَنْ يَقْدُمُ مِنِّي لِصَلَاةِ الْفَجْرِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَقْدُمُ بَعْدَ ذَلِكَ، فَإِذَا قُضِيَ رَمَوْا الْحُمْرَةَ. وَكَانَ ابْنُ هُرَيْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: أَوْحَى فِي أَوَّلِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ)).

**तशरीह:** या'नी औरतों और बच्चों को मुज़दलिफ़ा में थोड़ी देर ठहरकर चले जाने की इजाज़त दी है उनके सिवा, और दूसरे सब लोगों को रात में मुज़दलिफ़ा में रहना चाहिये। शुअबी और नख़्ख़ी और अलक़मा ने कहा कि जो कोई रात को मुज़दलिफ़ा में न रहे उसका हज़्र फ़ौत हुआ (छूट गया) और अत्ता और जुहरी कहते हैं कि उस पर दम लाज़िम आ जाता है और आधी रात से पहले वहाँ से लौटना दुरुस्त नहीं है। (वहीदी)

1677. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सख़ितयानी ने, उनसे इकिमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे मुज़दलिफ़ा से रात ही में मिना खाना कर दिया था। (दीगर मक़ाम: 1678, 1856)

١٦٧٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَغِنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَمْعَ بَلِيلٍ)). [طرفاء: ١٦٧٨، ١٨٥٦].

1678. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अबी यज़ीद ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) को ये कहते सुना कि मैं उन लोगों में था जिन्हें नबी करीम (ﷺ) ने अपने घर के कमज़ोर लोगों के साथ मुज़दलिफ़ा की रात ही में मिना भेज दिया था।

١٦٧٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَيْتُ اللَّهِ بْنُ أَبِي يَزِيدَ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((أَنَا مِمَّنْ قَدَّمَ السَّبِيَّ ﷺ ثَلَاثَةَ الْمَزْدَلِفَةِ فِي صُفْعَةِ أَهْلِهِ)).

1679. हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद बिन क़त्तान ने, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया कि उनसे अस्मा के गुलाम अब्दुल्लाह ने बयान किया कि उनसे अस्मा

١٦٧٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ مَوْلَى أَسْمَاءَ عَنْ أَسْمَاءَ ((أَنَّهُ تَوَلَّتْ ثَلَاثَةَ جَمْعٍ

बिन्ते अबूबक्र (रज़ि.) ने कि वो रात में ही मुजदलिफ़ा पहुँच गई और खड़ी होकर नमाज़ पढ़ने लगी कुछ देर तक नमाज़ पढ़ने के बाद पूछा बेटे! क्या चाँद डूब गया! मैंने कहा कि नहीं! इसलिये वो दोबारा नमाज़ पढ़ने लगी कुछ देर बाद फिर पूछा क्या चाँद डूब गया? मैंने कहा हाँ, उन्होंने कहा कि अब आगे चलो (मिना को) चुनौचे हम उनके साथ आगे चले वो (मिना में) रम्ये-जिमार करने के बाद फिर वापस आ गई और सुबह की नमाज़ अपने डेरे पर पढ़ी मैंने कहा, ये क्या बात हुई कि हमने अँधेरे ही में नमाज़ सुबह पढ़ ली। उन्होंने कहा बेटे! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने औरतों को इसकी इजाज़त दी।

عِنْدَ الْمُزْدَلِفَةِ فَقَامَتْ تُصَلِّي، فَصَلَّتْ سَاعَةً ثُمَّ قَالَتْ: يَا بُنَيَّ هَلْ غَابَ الْقَمَرُ؟ قُلْتُ: لَا. فَصَلَّتْ سَاعَةً ثُمَّ قَالَتْ: هَلْ غَابَ الْقَمَرُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَتْ: فَارْتَحِلُوا، فَارْتَحَلْنَا وَمَضَيْنَا حَتَّى رَمَتِ الْجِمْرَةَ، ثُمَّ رَجَعَتْ فَصَلَّتِ الصُّبْحَ فِي مَنْزِلِهَا. فَقُلْتُ لَهَا: يَا هَتَاهُ، مَا أَرَأَاكَ إِلَّا لَدَى خَلَّتْنَا. قَالَتْ: يَا بُنَيَّ، إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَدِنَ لِلطُّعْمِ)).

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि सूरज निकलने से पहले भी कंकरियाँ मार लेना दुरुस्त है, लेकिन हन्फिया ने इसको जाइज़ नहीं रखा और इमाम अहमद और इस्हाक़ और जुम्हूरे उलेमा का ये कौल है कि सुबह सादिक से पहले दुरुस्त नहीं अगर कोई इससे पहले मारे तो सुबह होने के बाद दोबारा मारना चाहिये और शाफ़े'अी के नज़दीक सुबह से पहले कंकरियाँ मार लेना दुरुस्त है। (वहीदी)

1680. हमसे मुहम्मद बिन क़थीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफ़यान श़ौरी ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अब्दुरहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से मुजदलिफ़ा की रात आम लोगों से पहले खाना होने की इजाज़त चाही आप (रज़ि.) भारी-भरकम बदन की औरत थीं तो हुज़ूर (ﷺ) ने इजाज़त दे दी। (दीगर मक़ाम: 1681)

١٦٨٠ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ - هُوَ ابْنُ الْقَاسِمِ - عَنِ الْقَاسِمِ ابْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَأْذَنْتُ سَوْدَةَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةَ جُمُعٍ - وَكَانَتْ نَقِيلَةً تَبْطَأُ - فَأَذِنَ لَهَا)).

[طرفه ن: ١٦٨١].

1681. हमसे अबू नईम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अफ़लह बिन हुमैद ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि जब हमने मुजदलिफ़ा में क़याम किया तो नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत सौदा (रज़ि.) को लोगों के इज्दिहाम (भीड़) से पहले खाना होने की इजाज़त दे दी थी, वो भारी-भरकम बदन की ख़ातून थीं, इसलिये आपने इजाज़त दे दी चुनौचे वो भीड़ से पहले खाना हो गई। लेकिन हम लोग वहीं ठहरे रहे और सुबह को आप (ﷺ) के साथ गए अगर मैं भी हज़रत सौदा

١٦٨١ - حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا الْفَلَحُ بْنُ خُمَيْدٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((نَزَلْنَا الْمُزْدَلِفَةَ، فَاسْتَأْذَنْتِ النَّبِيَّ ﷺ أَنْ تَذْفَعَ قَبْلَ خَطْمَةِ النَّاسِ - وَكَانَتْ امْرَأَةً بَطِيئَةً - فَأَذِنَ لَهَا، فَذَلَعَتْ قَبْلَ خَطْمَةِ النَّاسِ، وَأَقَمْنَا حَتَّى أَصْبَحْنَا نَحْنُ، ثُمَّ ذَفَعْنَا بِذَفْعِهِ، فَلَا أَكُونُ اسْتَأْذَنْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ



(रज़ि.) की तरह आप (ﷺ) से इजाज़त लेती तो मुझको तमाम खुशी की चीज़ों में ये ही पसन्द होता।

كَمَا اسْتَأْذَنَتْ مَوْدَةَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ مَفْرُوحٍ (٩٩)

**बाब 99 : फ़ज्र की नमाज़ मुजदलिफ़ा ही में पढ़ना**

1682. हमसे अमर बिन हफ़स बिन ग़ियास ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि हमसे अमर श ने बयान किया, कहा कि मुझसे अम्मार ने अब्दुरहमान बिन यज़ीद से बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) ने कि दो नमाज़ों के सिवा मैंने नबी करीम (ﷺ) को और कोई नमाज़ बग़ैर वक़्त पढ़ते नहीं देखा, आप (ﷺ) ने मरिब और इशा एक साथ पढ़ीं और फ़ज्र की नमाज़ भी उस दिन (मुजदलिफ़ा में) मा'मूली वक़्त से पहले अदा की। (राजेअ: 1675)

٩٩- بَابُ مَنْ يُصَلِّيُ الْفَجْرَ يَجْمَعُ  
١٦٨٢- حَدَّثَنَا غَمْرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ:  
حَدَّثَنِي عُمَارَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: ((مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى صَلَاةً بِغَيْرِ مِيقَاتِهَا، إِلَّا صَلَاتَيْنِ: جَمَعَ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ، وَصَلَّى الْفَجْرَ قَبْلَ مِيقَاتِهَا)). [رَاجِع: ١٦٧٥]

या'नी बहुत अक्वल वक़्त ये नहीं कि सुबह सादिक होने से पहले पढ़ ली जैसे कुछ ने गुमान किया और दलील उसकी आगे की रिवायत है जिसमें साफ़ ये है कि सुबह की नमाज़ फ़ज्र तुलूअ होते ही पढ़ी। (वहीदी)

1683. हमसे अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अब्दुरहमान बिन यज़ीद ने कि हम अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) के साथ मक्का की तरफ़ निकले (हज्ज शुरू किया) फिर जब हम मुजदलिफ़ा आए तो आपने दो नमाज़ें (इस तरह एक साथ) पढ़ीं कि हर नमाज़ एक अलग अज़ान और एक अलग इक्रामत के साथ थी और रात का खाना दोनों के बीच में खाया, फिर तुलूअ सुबह के साथ ही आपने नमाज़े फ़ज्र पढ़ी, कोई कहता था कि अभी सुबह सादिक नहीं हुई और कुछ लोग कह रहे थे कि हो गई। उसके बाद अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था ये दोनों नमाज़ें इस मक़ाम से हटा दी गई हैं, या'नी मरिब और इशा, मुजदलिफ़ा में उस वक़्त दाख़िल हों कि अँधेरा हो जाए और फ़ज्र की नमाज़ उस वक़्त। फिर अब्दुल्लाह उजाले तक वहीं मुजदलिफ़ा में ठहरे रहे और कहा कि अगर अमीरुल मोमिनीन हज़रत इब्मान (रज़ि.) इस वक़्त चलें तो ये सुन्नत के मुताबिक़ होगा। (हदीस के रावी अब्दुरहमान बिन यज़ीद ने कहा) मैं नहीं कह सकता कि ये अलफ़ाज़ उनकी जुबान से पहले निकले या हज़रत इब्मान (रज़ि.) की खानगी

١٦٨٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: ((خَرَجْنَا مَعَ عَبْدِ اللَّهِ إِلَى مَكَّةَ، ثُمَّ قَدِمْنَا جَمْعًا فَصَلَّى الصَّلَاتَيْنِ: كُلَّ صَلَاةٍ وَخَدَعَا بِأَذَانٍ وَإِقَامَةٍ، وَالْعِشَاءَ بَيْنَهُمَا، ثُمَّ صَلَّى الْفَجْرَ حِينَ طَلَعَ الْفَجْرُ - وَلَقَبِلْ يَقُولُ لَمْ يَطْلُعِ الْفَجْرُ - ثُمَّ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ هَاتَيْنِ الصَّلَاتَيْنِ حَوَّلْنَا عَنْ وَقْعِهِمَا لِي هَذَا الْمَكَانِ: الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ، فَلَا يَفْدُمُ النَّاسُ جَمْعًا حَتَّى يَغْتَمُوا، وَصَلَاةَ الْفَجْرِ هَذِهِ السَّاعَةَ)). ثُمَّ وَقَفَ حَتَّى اسْتَفْرَ ثُمَّ قَالَ: لَوْ أَنَّ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَفَاضَ الْآنَ أَصَابَ السُّنَّةَ. لَمَّا أَذْرَى أَلْوَلُهُ كَانَ أَسْرَعَ أَمْ دَلَعُ غُثْمَانٍ

पहले शुरू हुई, आप दसवीं तारीख तक जम्-ए-उक़बा की रमी तक बराबर लम्बैक पुकारते रहे।

(राजेअ: 1675)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَلَمْ يَزَلْ يَلْهِىَ حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ يَوْمَ النَّحْرِ).

[راجع: ١٦٧٥]

या'नी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ये कह ही रहे थे कि हज़रत उम्मान (रज़ि.) मुज़दलिफ़ा से लौटे सुन्नत यही है कि मुज़दलिफ़ा से फ़ज्र की रोशनी होने के बाद सूरज निकलने से पहले लौटें। फ़ज्र की नमाज़ से मुता'ल्लिक इस हदीष में जो वारिद है कि वो ऐसे वक़्त पढ़ी गई कि लोगों को फ़ज्र के होने में शुबहा (शक) हो रहा था, इसकी वज़ाहत मुस्लिम शरीफ़ की हदीष में मौजूद है जो हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मरवी है कि नबी करीम (ﷺ) ने मस्जिद और इशा की नमाज़ को मिलाकर पढ़ा, फिर आप (ﷺ) सो गए घुम्म इज़तजअ हत्ता तलअल्फ़ज्र फ़मल्लल्फ़ज्र हीन तबीनु लहुस्सुब्हु बिअज़ानिन व इक्रामतिन इला आख़िरिल्हदीषि फिर सोकर आप (ﷺ) खड़े हुए जबकि फ़ज्र तुलूअ हो गई। आप (ﷺ) ने सुबह खुल जाने पर नमाज़े फ़ज्र को अदा किया और उसके लिये अज़ान और इक्रामत हुई। मा'लूम हुआ कि पिछली हदीष में रावी की मुराद ये है कि आप (ﷺ) ने फ़ज्र की नमाज़ को अँधेरे में बहुत अव्वल वक़्त या'नी फ़ज्र ज़ाहिर होते ही फ़ौरन पढ़ ली, यूँ आप (ﷺ) हमेशा ही नमाज़े फ़ज्र ग़लस या'नी अँधेरे में अदा किया करते थे जैसा कि अनेक अहदादीष से प्राबित है मगर यहाँ और भी अव्वल वक़्त तुलूअे फ़ज्र के फ़ौरन बाद ही आप (ﷺ) ने नमाज़े फ़ज्र को अदा फ़र्मा लिया।

### बाब 100 : मुज़दलिफ़ा से कब चला जाए?

1684. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्होंने अमर बिन मैमून को ये कहते सुना कि जब इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने मुज़दलिफ़ा में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी तो मैं भी मौजूद था, नमाज़ के बाद आप ठहरे और फ़र्माया कि मुश्रिकीन (जाहिलियत में यहाँ से) सूरज निकलने से पहले नहीं जाते थे कहते थे ऐ प्रबीर! तू चमक जा। नबी करीम (ﷺ) ने मुश्रिकों की मुखालफ़त की और सूरज निकलने से पहले वहाँ से खाना हो गए। (दीगर मक़ाम: 3838)

١٠٠ - بَابُ مَتَى يُدْفَعُ مِنْ جَمْعٍ

١٦٨٤ - حَدَّثَنَا حِجَاجُ بْنُ سَهْلٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ مَيْمُونٍ يَقُولُ: ((سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ صَلَّى بِجَمْعِ الصُّبْحِ، ثُمَّ رَأَى لَفَافًا: إِنَّ الْمُشْرِكِينَ كَانُوا لَا يَخْرُجُونَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ وَيَقُولُوا: اخْرُجْ نَبِيْرًا، وَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ عَالَفَهُمْ، ثُمَّ أَفَاضَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ)).

[طرفه ٣ : ٣٨٣٨]

**तस्रीह:** प्रबीर एक पहाड़ का नाम है, मुज़दलिफ़ा में जो मिना को आते हुए बाएँ जानिब पड़ता है। हाफ़िज़ इब्ने क़ज़ीर फ़र्माते हैं, जबलुन मअरुफ़ुन हुनाक व हुव अला यसारिजाहिब इला मिना व हुव आजमु जिबालि मक़त उरिफ़ बिही मिन हुज़ैल इस्मुहु प्रबीर दुफ़िन फ़ीहि या'नी प्रबीर मक्का का एक अज़ीम पहाड़ है जो मिना जाते हुए बाएँ तरफ़ पड़ता है और ये हज़ील के एक आदमी प्रबीर नामी के नाम से मशहूर है जो वहाँ दफ़न हुआ था। मुज़दलिफ़ा से सुबह सूरज निकलने से पहले मिना के लिये चल देना सुन्नत है। मुस्लिम शरीफ़ में हदीष जाबिर (रज़ि.) से मज़ीद तफ़्सील यूँ है। घुम्म रकिबल्क़स्बा हत्ता अतल्मशअरल हुराम फ़स्तक्बलल्किबलत फ़दअल्लाह तअ़ाला व कब्बरहु व हल्ललहु व व्हहदहु फ़लम यज़ल वाकिफ़न हत्ता अस्फ़र फ़दफ़अ कबल अन तल्लुअशशम्सु या'नी अरफ़ात से लौटते वक़्त आप (ﷺ) अपनी कैंटनी कस्वा पर सवार हुए, यहाँ से मुज़दलिफ़ा में मशअरल हुराम में आए और वहाँ आकर किब्ला रू होकर तक्बीर व तहलील कही और आप (ﷺ) खूब उजाला होने तक ठहरे रहे, मगर सूरज तुलूअ होने से पहले आप (ﷺ) वहाँ से खाना हो गए। अहदे जाहिलियत में मक्का वाले सूरज निकलने के बाद यहाँ से चला करते थे, इस्लाम में सूरज निकलने से पहले चलना क़रार पाया।

बाब 101 : दसवीं तारीख सुबह को तक्बीर और लब्बैक कहते रहना जम्ह-ए-उक्बा की रमी तक और चलते हुए (सवारी पर किसी को) अपने पीछे बिठा लेना

۱۰۱- بَابُ التَّلْبِيَةِ وَالتَّكْبِيرِ عِدَّةَ

النَّحْرِ حِينَ يَرْمِي الْجَمْرَةَ،

وَالْإِزْدَاقِ فِي السَّيْرِ

**तशरीह :**

दसवीं जिल्हेज्ज को मिना में जाकर नमाज़ फ़ज्र से फ़ारिश होकर सूरज निकलने के बाद रम्ये-जिमार करना ज़रूरी है। अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़रमति हैं, क़ाल इब्नुल्मुज़िर अस्सुन्नतु अल्ला युमा इल्ला बअद तुलू इष्मासि कमा फ़अलन्नबिय्यु (ﷺ) व ला यज्जुर्ग्यु क़बल तलू इल्फ़जि लिअन्न फ़ाइलहू मुखालिफ़ुलिस्सुन्नति व मन रमा हीन इज़िन ला इआदत अलैहि इज़ ला आसमु अहदन क़ाल ला यज़िउहू (फ़तह) या'नी इब्ने मुज़िर ने कहा कि सुन्नत यही है कि रम्ये-जिमार सूरज निकलने के बाद करे जैसा कि आहज़रत (ﷺ) के फ़ैअल से प्राबित है और तुलूअे फ़ज्र से पहले रम्ये-जिमार दुस्त नहीं, उसका करने वाला सुन्नत का मुखालिफ़ है। हाँ अगर किसी ने उस वक़्त रम्ये-जिमार कर लिया तो फिर उस पर दोबारा करना ज़रूरी नहीं है। इसलिये कि मुझे कोई ऐसा शख्स मा'लूम नहीं जिसने उसे ग़ैर काफ़ी कहा हो। हज़रत अस्मा (रज़ि.) से रात में रम्ये-जिमार करना भी मन्कूल है जैसा कि उसको खुद इमाम बुखारी (रह.) ने भी नक़ल किया है जिसका मतलब ये है कि कमज़ोर मर्दों व औरतों के लिये इजाज़त है कि वो रात ही में मुजदलिफ़ा से कूच करके मिना आ जाएँ और आने पर ख़्वाह रात ही क्यों न हो, रम्ये-जिमार कर लें। आहज़रत (ﷺ) ने मुजदलिफ़ा की रात में हज़रत अब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया था इज्हाब बिज़ अफ़ाइन व निसाइन फ़ल्युसल्लुम्सुब्ह बिमिना व यम जम्तल्अक़बति क़बल अन तुसीबहुम दफ़अतुन्नसि (फ़तहूल बारी) या'नी आप हमारे जईफ़ों और औरतों व ग़ैरह को मुजदलिफ़ा से रात ही में मिना ले जाएँ ताकि वो सुबह की नमाज़ मिना में अदा कर लें और लोगों के भीड़ से पहले पहले जम्ह उक्बा की रमी से फ़ारिश हो जाएँ। वल्लाहु अअलमु बिस्सवाब।

1685. हमसे अबू आसिम ज़हहाक बिन मुखलद ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें अत्ता ने, उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (मुजदलिफ़ा से लौटते वक़्त) फ़ज़ल (बिन अब्बास रज़ि.) को अपने पीछे सवार कराया था। फ़ज़ल (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आहज़रत (ﷺ) रम्ये-जिमार तक बराबर लब्बैक कहते रहे। (राजेअ: 1524)

۱۶۸۵- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مُخْلَدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ

ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ

ﷺ أَرْدَفَ الْفَضْلَ، فَأَخْبَرَ الْفَضْلُ أَنَّهُ لَمْ

يَزَلْ يَلْمِي حَتَّى رَمَى الْجَمْرَةَ)).

[راجع: ۱۵۲۴]

1686, 87. हमसे जुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे यूनस ऐली ने, उनसे जुहरी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) अरफ़ात से मुजदलिफ़ा तक नबी करीम (ﷺ) की सवारी पर आप (ﷺ) के पीछे बैठे थे, फिर आप (ﷺ) ने मुजदलिफ़ा से मिना जाते वक़्त फ़ज़ल बिन अब्बास (रज़ि.) को अपने पीछे बिठा लिया था। उन्होंने कहा कि उन दोनों हज़रात ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जम्ह उक्बा की सवारी तक मुसलसल

۱۶۸۶، ۱۶۸۷- حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَبْرِ حَدَّثَنَا أَبِي

عَنْ يُونُسَ الْأَيْلِيِّ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَتِيدِ

اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ ((أَنَّ

أَسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ

رَدَفَ النَّبِيَّ ﷺ مِنْ عَرَفَةَ إِلَى الْمُزْدَلِفَةِ،

لَمْ أَرْدَفِ الْفَضْلَ مِنَ الْمُزْدَلِفَةِ إِلَى مِنَى،

فَقَالَ فَكِلَاهُمَا قَالَا: لَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ

लम्बेक कहते रहे।

(राजेअ: 1543, 1544)

يَلْمِي حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ)).

[راجع: ١٥٤٣، ١٥٤٤]

### बाब 102 :

सूरह बकर: की इस आयत की तफसीर में पस जो शख्स तमत्तोअ करे हज्ज के साथ इम्रा का या'नी हज्जे तमत्तोअ करके फायदा उठाए तो उस पर है जो कुछ मयस्सर हो कुर्बानी से और अगर किसी को कुर्बानी मयस्सर न हो तो तीन दिन के रोजे अथवा मे हज्ज में और सात दिन के रोजे घर वापस होने पर रखे, ये पूरे दस दिन (के रोजे) हुए ये आसानी उन लोगों के लिये है जिनके घर वाले मस्जिद के पास न रहते हों। (अल बकर: 196)

باب

﴿لَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْحُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ، لَمَنْ لَمْ يَجِدْ لِحْيَامَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَتَمَتَّعَ إِذَا رَجَعْتُمْ بِلَاكِ عَشْرَةِ كَامِلَةٍ، ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلَهُ خَاصِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾ [البقرة: 196]

1688. हमसे इस्हाक बिन मन्सूर ने बयान किया, उन्हें नज्र बिन शुमैल ने खबर दी, उन्हें शुअबा ने खबर दी, उनसे अबू जम्ह ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रजि.) से तमत्तोअ के बारे में पूछा तो आप (ﷺ) ने मुझे उसके करने का हुक्म दिया, फिर मैंने कुर्बानी के बारे में पूछा तो आप (ﷺ) ने फर्माया कि तमत्तोअ में एक ऊँट, या एक गाय या एक बकरी (की कुर्बानी वाजिब है) या किसी कुर्बानी (ऊँट या गाए भैंस की) में शरीक हो जाए, अबू जम्ह ने कहा कि कुछ लोग तमत्तोअ को नापसन्दीदा करार देते थे। फिर मैं सोया तो मैंने ख्वाब में देखा कि एक शख्स पुकार रहा है ये हज्जे मबरूर है और ये मक्कबूल तमत्तोअ है। अब मैं इब्ने अब्बास (रजि.) के पास गया और उनसे ख्वाब का जिक्र किया तो उन्होंने फर्माया अल्लाहु अकबर! ये तो अबुल कासिम (ﷺ) की सुन्नत है। कहा कि वहब बिन जरीर और गुन्दर ने शुअबा के हवाले से यूँ नक़ल किया है इम्रतुन मुतकब्बलतुन, वहज्जुन मबरूरुन (इसमें इम्रह का जिक्र पहले है या'नी ये इम्रह मक्कबूल और हज्ज मबरूर है)। (राजेअ: 1567)

١٦٨٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو جَمْرَةَ قَالَ: ((سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ الْمُتَمَتِّعِ فَأَمَرَنِي بِهِمَا، وَسَأَلْتُهُ عَنِ الْهَدْيِ فَقَالَ فِيهَا جَزُورٌ أَوْ بَقَرَةٌ أَوْ شَاةٌ أَوْ شِرَازٌ فِي دَمٍ. قَالَ: كَانَ نَاسًا كَرِهَوهَا، فَبُيِّنَتْ لَوَأَيْتُ فِي النِّسَامِ كَانَ إِنْسَانًا يُنَادِي: خُجْ مَبْرُورٌ، وَمُنْعَةً مُنْقَبَلَةً. فَأَنْتِ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَحَدَّثْتُهُ، فَقَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ، سَأَلْتُ أَبِي الْقَاسِمِ، ((. قَالَ: وَقَالَ آدَمُ وَوَهَبُ بْنُ جَرْجَرٍ وَغُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ ((عُمْرَةٌ مُنْقَبَلَةٌ، وَخُجْ مَبْرُورٌ)).

[راجع: ١٥٦٧]

**तशरीह:** हजरत उमर और उस्मान गनी (रजि.) से तमत्तोअ की कराहियत मन्कूल है लेकिन उनका क़ौल अहादीसे सहीहा और खुद नस्से कुर्आनी के बरखिलाफ़ है, इसलिये तर्क किया गया और किसी ने उस पर अमल नहीं किया। जब हजरत उमर और हजरत उस्मान (रजि.) की राय जो खुल्फ़ाए राशिदीन में से हैं हदीष के ख़िलाफ़ मक्कबूल न हो तो और मुज्ताहिद या मौलवी किस शुमार में हैं, उनका फ़त्वा हदीष के ख़िलाफ़ लचर और पोच (कमज़ोर) है (वहीदी)। इसलिये हजरत शाह वलीउल्लाह मरहूम ने फर्माया है कि जो लोग सहीह मफूअ अहादीष के मुकाबले पर क़ौले इमाम को तरजीह देते हैं और समझते

हैं कि उनके लिये यही काफी है पस अल्लाह के यहाँ जिस दिन हिसाब के लिये खड़े होंगे उनका क्या जवाब हो सकेगा। सद अफसोस कि यहूद व नसारा में तक्लीदे शखसी की बीमारी थी जिसने मुसलमानों को भी पकड़ लिया और वो भी इत्तखज़ अहबारहुम व रुहबानहुम अरबाबम्मिन दूनिल्लाहि (अतौबा: 31) के मिसदाक बन गए। न! उन लोगों ने अपने मौलवियों दुरवेशों को अल्लाह के सिवा अपना ख उहरा लिया, या'नी अल्लाह की तरह उनकी फर्माबरदारी को अपने लिये लाज़िम करार दे लिया। इसी का नाम तक्लीदे जामिद है जो सब बीमारियों की जड़ है।

### बाब 103 : कुर्बानी के जानवर पर सवार होना (जाइज़ है)

क्योंकि अल्लाह तआला ने सूरह हिज्ज में फर्माया, हमने कुर्बानियों को तुम्हारे लिये अल्लाह के नाम की निशानी बनाया है, तुम्हारे वास्ते उनमें भलाई है सो पढ़ो उन पर अल्लाह का नाम क्रतार बाँधकर, फिर वो जब गिर पड़ें अपनी करवट पर (या'नी ज़िबह हो जाए) तो खाओ उनमें से और खिलाओ सब से बैठने वाले और मांगने वाले फ़क़ीरों को, इसी तरह तुम्हारे लिये हलाल कर दिया हमने इन जानवरों को ताकि तुम शुक्र करो। अल्लाह को नहीं पहुँचता उनका गोश्त और न उनका खून, लेकिन उसको पहुँचता है तुम्हारा तक्वा इस तरह उनको बस में कर दिया तुम्हारे कि अल्लाह की बड़ाई करो इस बात पर कि तुमको उसने राह दिखाई और बशारत सुना दे नेकी करनेवालों को। मुजाहिद ने कहा कि कुर्बानी के जानवर को बटना, उसके मोटा-ताज़ा होने की वजह से कहा जाता है, क़ानेअ साइल को कहते हैं, और मुअत्तर जो कुर्बानी के जानवर के सामने साइल की मूरत बनाकर आ जाए ख़वाह ग़नी हो या फ़क़ीर, शआइर के मा'नी कुर्बानी के जानवर की अज़मत को मल्हज़ रखना और उसे मोटा बनाना है। अतीक (ख़ान-ए-क़ा'बा को कहते हैं) बवजह ज़ालिमों और जाबिरों से आज़ाद होने के जब कोई चीज़ ज़मीन पर गिर जाए तो कहते हैं वजबत। उसी से वजबतुशशम्स आता है या'नी सूरज डूब गया।

**तशरीह :** हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, क़ौलुहु वल्क़ानिउ अस्साइलु वल्मुअतरूल्लज़ी यअतरूबिल्बुदुनि मिन ग़निघ्यिन औ फ़क़ीरिन अय यतीफ़ बिह्ना मुअतरिज़न लहा व हाज़त्तअलीकु अख़रजहू अयज़न अब्दुब्नु हुमैदमिन तरीक़ि उम्मान इब्निल्अस्वद कुल्लु लिमुजाहिद मल्कानिउ क़ाल ज़ारक़ल्लज़ी यन्ताज़िस्सु मा दख़ल बैतक वल्मुअरूल्लज़ी यअतर बिबाबिक व युरीक नप्सहु व ला यस्अलुक शैअन व अख़रज इब्नु हातिम मिन तरीक़ि सुफ़यानब्नि उययनत अनिब्नि अबी नजीह अन मुजाहिद क़ाल अल्क़ानिउ हुवत्तामिउ व क़ाल मुरा हुवस्साइलु व मय्यस्अलुक व मिन तरीक़िज़ौरी अन फ़ुरात अन सईदिब्नि जुबैर अल्मुअतरूल्लज़ी यअतरूबिक यज़ूरुक व ला यस्अलुक व मिन तरीक़ि इब्नि ज़रीअ अन मुजाहिद अल्मुअतरूल्लज़ी यअतरूबिल्बुदुनि मिन ग़निघ्यिन औ फ़क़ीरिन व क़ालल्ख़लीलु फ़िल्लेनि अल्क़नुउ अल्मुअतज़लु लिस्सुवालि क़नअ इलैहि माल व ख़ज़अ व हुवस्साइलु वल्मुअतरूल्लज़ी यअतरिज़ु व ला यस्अलु व युक़ालु क़नुअ बिकस्त्रून इज़ा रज़िय व क़नअ बिफ़तहिहा इज़ा सअल व क़रअल्हसनु अल्मुअतरी व हुव बिमअनल्मुअतरि (फ़तहल बारी) या'नी क़ानेअ

### १०३- يَابُ رُحُوبِ الْبَذَنِ

يَقُولُ : ﴿وَالْبَذَنُ جَعَلَهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ، فَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ، فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا لَكُمْ كُلُّوْهَا وَأَطْعِمُوا الْفُقَرَاءَ وَالْمُعْتَرَّ، كَذَلِكَ سَخَرْنَاهَا لَكُمْ لِتُكْثِرُوا بِهَا الْحِلَالَ، لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومَهَا وَلَا دِمَافُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ الْقَوْلُ مِنْكُمْ، كَذَلِكَ سَخَرْنَاهَا لَكُمْ لِتُكْثِرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ وَتَشْرُو الْمُحْسِنِينَ﴾ [الحج : 36] . قَالَ مجاهدٌ : سَمِعْتُ الْبَذَنَ يَبْذِيهَا. وَالْفُقَرَاءُ : السَّائِلُ. وَالْمُعْتَرُّ : الَّذِي يَمُرُّ بِالْبَذَنِ مِنْ غَنِيٍّ أَوْ فُقِيرٍ. وَشَعَائِرُ اللَّهِ : اسْتِغْفَامُ الْبَذَنِ وَاسْتِحْسَانُهَا. وَالْقِيْقُ : عَقَّةٌ مِنَ الْجَبَابِرَةِ. وَقَالَ وَجَبَتْ : سَقَطَتْ إِلَى الْأَرْضِ، وَمِنْهُ وَجَبَتْ الشَّمْسُ.

से साइल मुराद है (और लुगातुल हदीष) में कनूअ के एक मा'नी मांगना भी निकलता है और मुअत्तर वो ग़नी या फ़कीर जो दिल से तालिब होकर वहाँ घूमता रहे ताकि उसको गोश्त हासिल हो जाए जुबान से सवाल न करे। मुअत्तर वो फ़कीर जो सामने आए उसकी झूरत सवाली की हो लेकिन सवाल न करे। लुगातुल हदीष इस तअलीफ़ को अब्द बिन हुमैद ने तरीके इम्मान बिन अस्वद से निकाला है मैंने मुजाहिद (रह.) से कानेअ की तहकीक़ की कहा कानेअ वो है जो इतिज़ार करता रहे कि तेरे घर में क्या क्या चीज़ें आई हैं। (और काश उनमें से मुझको भी कुछ मिल जाए) मुअत्तर वो है जो वहाँ घूमता रहे और तेरे दरवाज़े पर उम्मीदवार बनकर आए जाए मगर किसी चीज़ का सवाल न करे और मुजाहिद से कानेअ के मा'नी लालची के भी आए हैं, और एक बार बतलाया कि साइल मुराद है उसे इब्ने अबी हातिम ने रिवायत किया है और सईद बिन जुबैर से मुअत्तर के वही मा'नी निकल हुए जो ऊपर बयान हुए और मुजाहिद ने कहा कि मुअत्तर वो जो ग़नी हो या फ़कीर ख़वाहिश की वजह से कुर्बानी के जानवर के आसपास फिरता रहे (और ख़लील ने कनूअ के मा'नी वो बताया जो ज़लील होकर सवाल करे कनअ इलैहि के मा'नी माल वो उसकी तरफ़ झुका व शफ़अ इलैहि और उसने उसकी तरफ़ जिससे कुछ चाहता है चापलूसी की, मुराद आगे साइल है और कनअ बिकस्ति नून रज़िय के मा'नी के है और कनअ फ़तहे नून के साथ इज़ा सअल के मा'नी में और हसन की क़िरअत में यहाँ लफ़्ज़े मुअत्तर पढ़ा गया है वो भी मुअत्तर ही के मा'नी में है।

1689. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअरज और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक शख्स को कुर्बानी का जानवर ले जाते देखा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर सवार हो जा। उस शख्स ने कहा कि ये तो कुर्बानी का जानवर है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर सवार हो जा। उसने कहा कि ये कुर्बानी का जानवर है तो आप (ﷺ) ने फिर फ़र्माया, अफ़सोस! सवार भी हो जाओ (बयलक आप (ﷺ) ने) दूसरी या तीसरी बार फ़र्माया।

(दीगर मक़ाम : 1716, 2755, 6160)

١٦٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزَّوَاوَرِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَأَى رَجُلًا يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ: ((ارْكَبْهَا)). فَقَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ. فَقَالَ: ((ارْكَبْهَا)). فَقَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ. قَالَ: ((ارْكَبْهَا وَتِلْكَ)) لِيَ الْغَائِبَةِ أَوْ لِيَ الْغَائِبَةِ.

[أطرافه في: ١٧١٦, ٢٧٥٥, ٦١٦٠.]

**तशरीह:** ज़मान-ए-जाहिलियत में अरब लोग साइबा वगैरह जो जानवर मज़हबी न्याज़ो-नज़्र के तौर पर छोड़ देते उन पर सवार होना मअयूब (बुरा) जाना करते थे। कुर्बानी के जानवरों के बारे में भी जो का'बा में ले जाई जाएँ उनका ऐसा ही तसव्वुर था। इस्लाम ने इस ग़लत तसव्वुर को ख़त्म किया और आँहज़रत (ﷺ) ने इसरार के साथ हुक्म दिया कि इस पर सवारी करो ताकि रास्ते की थकान से बच जाओ। कुर्बानी के जानवर होने का मतलब ये हमिज़ नही कि उसे मुअत्तरल करके छोड़ दिया जाए। इस्लाम इसीलिये दीने फ़ितरत है कि उसने क़दम-क़दम पर इंसानी ज़रूरियात को मलहूजे नज़र रखा है और हर जगह ऐन ज़रूरियाते इंसानी के तहत अहकामात सादिर किये हैं खुद अरब में अतराफ़े मक्का से जो लाखों हाजी आजकल भी हज के लिये मक्का शरीफ़ आते हैं उनके लिये यही अहकाम है। बाक़ी दूर-दराज़ ममालिके इस्लामिया से आने वालों के लिये कुदरत ने रेल, मोटर, जहाज़ वज़ूद पज़ीर कर दिये हैं। ये सिर्फ़ अल्लाह का फ़ज़ल है कि आजकल सफ़रे-हज बेहद आसान हो गया है फिर भी कोई दौलतमन्द मुसलमान हज को न जाए तो उसकी बदबख़्ती में क्या शक है।

1690. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम और शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ)

١٦٩٠- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ وَشُعْبَةُ قَالَا حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَجُلًا

ने एक शख्स को देखा कि कुर्बानी का जानवर लिये जा रहा है तो आप (ﷺ) ने फर्माया कि इस पर सवार हो जा उसने कहा कि ये तो कुर्बानी का जानवर है आप (ﷺ) ने फर्माया कि इस पर सवार हो जा उसने फिर कहा कि ये तो कुर्बानी का जानवर है। लेकिन आप (ﷺ) ने तीसरी बार फिर फर्माया कि सवार हो जा। (दीगर मकाम : 2754, 6159)

आपके बार-बार कहने का मकसद ये है कि कुर्बानी के ऊँट पर सवार होना उसके शआइरे इस्लाम के मनाफ़ी नहीं है।

## बाब 104 : उस शख्स के बारे में जो अपने साथ कुर्बानी का जानवर ले जाए

1691. हमस यह्या बिन युकेर ने बयान किया, कहा हमसे लैय़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज्जतुल बिदाअ में तमत्तोअ किया या'नी इमरह करके फिर हज्ज किया और आप (ﷺ) जुलहुलैफ़ा से अपने साथ कुर्बानी ले गए। औहज़रत (रजि.) ने पहले इमरह के लिये एहराम बाँधा, फिर हज्ज के लिये लब्बैक पुकारा। लोगों ने भी नबी करीम (ﷺ) के साथ तमत्तोअ किया या'नी इमरह करके हज्ज किया, लेकिन बहुत से लोग अपने साथ कुर्बानी का जानवर ले गए थे और बहुत से नहीं ले गए थे। जब औहज़रत (रजि.) मक्का तशरीफ़ लाए तो लोगों से कहा कि जो शख्स कुर्बानी साथ लाया हो उसके लिये हज्ज पूरा होने तक कोई भी चीज़ हलाल नहीं हो सकती जिसे उसने अपने ऊपर (एहराम की वजह से) हराम कर लिया है लेकिन जिनके साथ कुर्बानी नहीं हैं तो वो बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लें और सफ़ा-भरवा की सई करके बाल तरशवा लें और हलाल हो जाएँ, फिर हज्ज के लिये (नये सिरे से आठवीं ज़िल्हिज्ज को एहराम बाँधें) ऐसा शख्स अगर कुर्बानी न पाए तो तीन दिन के रोज़े हज्ज ही के दिनों में और सात दिन के रोज़े घर वापस आकर रखे। जब औहज़रत (रजि.) मक्का पहुँचे तो सबसे पहले आप (ﷺ) ने तवाफ़ किया फिर हजे अस्वद को बोसा दिया तीन चक्करों में आप (ﷺ) ने रमल किया और बाक़ी चार में मा'मूली रफ़्तार से चले, फिर बैतुल्लाह का तवाफ़ पूरा करके

سَوْقُ بُدْنَةَ فَقَالَ: ((ارْكَبْهَا)). قَالَ: إِنَّهَا بُدْنَةٌ. قَالَ: ((ارْكَبْهَا)). قَالَ: إِنَّهَا بُدْنَةٌ. قَالَ: ((ارْكَبْهَا)) ثَلَاثًا.

[طرفاء ن : ٢٧٥٤، ٦١٥٩]

## ١٠٤ - بَابُ مَنْ سَاقَ الْبُذْنَ مَعَهُ

١٦٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْثَرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((مَتَّعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي خَبَةِ الْوَدَاعِ بِالْمَرْوَةِ إِلَى الْحَجِّ، وَأَهْدَى لَسَاقٍ مَعَ الْهَدْيِ مِنْ ذِي الْخُلْفَةِ، وَبَدَأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَهْلَ بِالْمَرْوَةِ، ثُمَّ أَهْلَ بِالْحَجِّ، فَمَتَّعَ النَّاسَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِالْمَرْوَةِ إِلَى الْحَجِّ، فَكَانَ مِنَ النَّاسِ مَنْ أَهْدَى لَسَاقٍ الْهَدْيِ، وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ يَهْدِ. فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ قَالَ لِلنَّاسِ: ((مَنْ كَانَ مِنْكُمْ أَهْدَى فَإِنَّهُ لَا يَجُوزُ لِيَنْتَهِيَ حَرَمٌ مِنْهُ حَتَّى يَقْعِيَ خَبَهُ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَهْدَى فَلْيَطْفُئْ بِالنِّتِ وَبِالصَّمَا وَالْمَرْوَةِ وَتَقَصِّرْ وَتَحْلِلْ ثُمَّ يَهْلِ بِالْحَجِّ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ هَدْيًا فَلْيَصُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَقَةَ إِذَا رَجَعَ إِلَى أَهْلِيهِ)). فَطَافَ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ، وَاسْتَلَمَ الرُّسْنَ أَوَّلَ حَيْهٍ. ثُمَّ

मक़ामे इब्राहीम के पास दो रकअत नमाज़ पढ़ी सलाम फेरकर आप (ﷺ) सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ आए और सफ़ा और मरवा की सई भी सात चक्करों में पूरी की। जिन चीज़ों को (एहराम की वजह से अपने पर) हाराम कर लिया था उनसे उस वक़्त तक आप (ﷺ) हलाल नहीं हुए जब तक हज पूरा न कर लिया और योमुन्नहर (दसवीं ज़िल् हिज्ज) में कुर्बानी का जानवर भी ज़िब्ह न कर लिया। फिर आप (ﷺ) (मक्का वापस) आए और बैतुल्लाह का जब तवाफ़ इफ़ाज़ा कर लिया तो हर वो चीज़ आपके लिये हलाल हो गई जो एहराम की वजह से हाराम थी जो लोग अपने साथ हदी लेकर आए थे उन्होंने भी उसी तरह किया जैसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था।

1692. इब्ना से रिवायत है कि आइशा (रज़ि.) ने उन्हें आँहज़रत (ﷺ) के हज और इम्रह एक साथ करने की ख़बर दी और लोगों ने भी आपके साथ हज और इम्रह एक साथ किया था, बिलकुल उसी तरह जैसे मुझे सालिम ने इब्ने इमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से ख़बर दी थी।

**तशीह:** नबी ने कहा कि तमतोअ से यहाँ किरान मुराद है, हुआ ये कि पहले आप (ﷺ) ने सिर्फ़ हज का एहराम बाँधा था फिर इम्रह उसमें शरीक कर लिया और किरान को भी तमतोअ कहते हैं (वहीदी)। इसी हदीस में आँहज़रत (ﷺ) के ख़ान-ए-का'बा का तवाफ़ करने में रमल का ज़िक्र भी आया है या'नी अकड़कर पैदों को हिलाते हुए चलना ये तवाफ़ के पहले तीन फेरों में किया और बाक़ी चार में मा'मूली चाल से चले ये इस वास्ते किया कि मक्का के मुशिकों ने मुसलमानों की निस्बत ये ख़याल किया था कि मदीना के बुखार से वो नातवाँ (कमज़ोर) हो गए हैं तो पहली बार ये फ़ैअल उनका ख़याल ग़लत करने के लिये किया गया था, फिर हमेशा यही सुन्नत कायम रही (वहीदी)। हज में ऐसे बहुत से तारीख़ी यादगारी उमूर (ऐतिहासिक काम) हैं जो पिछले बुजुर्गों की यादगार हैं और इसीलिये उनको अरकाने हज समझें और उससे सबक़ हासिल करें, रमल का अमल भी ऐसा ही तारीख़ी अमल है।

### बाब 105 : उस शख़्स के बारे में जिसने कुर्बानी का जानवर रास्ते में ख़रीदा

1693. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने अपने वालिद से कहा, (जब वो हज के लिये निकल रहे थे) कि आप न जाइए क्यों कि मेरा ख़याल है कि (बदअम्नी की वजह से) आपको बैतुल्लाह तक पहुँचने से रोक दिया जाएगा। उन्होंने फ़र्माया मैं भी

عَبْ ثَلَاثَةَ أَطْوَابٍ وَمَشَى أَرْبَعًا، فَوَسَّعَ حِزْنَ قَضَى طَوَافَهُ بِالنِّسَاءِ عِنْدَ الْمَقَامِ رَكَعَتَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ فَانصَرَفَ فَآلَى الصَّفَا، فَطَافَ بِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبْعَةَ أَطْوَابٍ ثُمَّ لَمْ يَخْلُلْ مِنْ شَيْءٍ حَرَمٍ مِنْهُ حَتَّى قَضَى حَجَّهُ وَنَحَرَ هَدْيَهُ يَوْمَ النَّحْرِ وَأَقَامَ لُطَافَ بِالنِّسَاءِ، ثُمَّ خَلَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ حَرَمٍ مِنْهُ، وَقَعَلَ، وَقَعَلَ مَا فَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ أَهْدَى وَسَاقِ الْهَدْيِ مِنَ النَّاسِ)).

١٦٩٢- وَعَنْ غُرُورَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي تَمَتُّعِهِ بِالْمَرْوَةِ إِلَى الْحَجِّ، فَتَمَتَّعَ النَّاسُ مَعَهُ بِجِوَالِ اللَّيْلِ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنْ ابْنِ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

### ١٠٥ - بَابُ مَنْ اشْتَرَى الْهَدْيَ مِنَ الطَّرِيقِ

١٦٩٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَعْدَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا لَا يُبَيِّدُ أَقَمَ فَرَأَى لَا آمَنَهَا أَنْ تُصَدَّ عَنْ النَّيْتِ. قَالَ: إِذَا أَقَمْتُ كَمَا فَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، وَقَدْ



वही काम करूँगा जो (ऐसे मौके पर) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था अल्लाह तआला फ़र्माता है कि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है। मैं अब तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने ऊपर इम्रह वाजिब कर लिया है, चुनौचे आपने इम्रह का एहराम बाँधा उन्होंने बयान किया कि फिर आप निकले और जब बीदा पहुँचे तो हज्ज और इम्रह दोनों का एहराम बाँध लिया और फ़र्माया कि हज्ज और इम्रह दोनों तो एक ही हैं उसके बाद क़दीद पहुँचकर हदी ख़रीदी फिर मक्का आकर दोनों के लिये तवाफ़ किया और दरम्यान में नहीं बल्कि दोनों से एक ही साथ हलाल हुए। (राजेअ: 1639)

## बाब 106 : जिसने जुलुहुलैफ़ा में इशआर किया और क़लादा पहनाया फिर एहराम बाँधा

और नाफ़ेअ ने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) जब मदीना से कुर्बानी का जानवर अपने साथ लेकर जाते तो जुलुहुलैफ़ा से उसे हार पहना देते और इशआर कर देते इस तरह कि जब ऊँट अपना मुँह फ़िब्ले की तरफ़ किये बैठा होता तो उसके दाहिने कोहान में नेज़े से ज़ख़म लगा देते।

1694, 1695. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें इब्ना बिन जुबैर ने, और उनसे मुसब्विर बिन मख़रमा (रज़ि.) और मरवान ने बयान किया कि नबी (ﷺ) मदीना से तन्नरीबन अपने एक हज़ार साथियों के साथ (हज्ज के लिये निकले) जब जुलुहुलैफ़ा पहुँचे तो नबी (ﷺ) ने हदी को हार पहनाया और इशआर किया फिर इम्रह का एहराम बाँधा।

(दीगर मक़ाम: 2711, 2732, 4157, 4179, 4180)

قال الله: وَلَقَدْ تَمَنَّاهُ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُخْرَىٰ حَسَنَةً فَإِنَّا آنهتكم أَنىٰ لَدَا رَجَبْتِ عَلَىٰ نَفْسِي الْفَضْرَةَ. فَأَخْلَىٰ بِالْفَضْرَةِ. فَإِن: لَمْ يَخْرُجْ عَلَىٰ إِذَا تَمَّ بِالْإِدَامِ أَخْلَىٰ بِالْحَجِّ وَالْفَضْرَةَ. فَإِن: مَا كَانَ الْحَجِّ وَالْفَضْرَةَ وَإِلَّا وَاحِدًا. لَمْ يَخْرُجْ الْهَدْيُ مِنْ لَدُنْهِ. لَمْ يَدِمْ لَطَافٌ لِّهَذَا طَرِيقًا وَاحِدًا. فَلَمْ يَجِئْ عَلَىٰ خَلِّ يَنْهَكَ حَبِيلًا. (راجع: 1639)

1694 - 1695 - بَابُ مَنْ أَشَارَ وَقَلَّدَ بِبَدْيِ الْخِلْفَةِ لَمْ يَحْرَمِ

وَقَالَ نَافِعٌ: كَانَ ابْنُ هُرَيْرٍ وَهَبُ بْنُ الْخَثِيمَةِ إِذَا أَخَذَ مِنَ التَّنْبِيَةِ لِلدَّاءِ وَالْفَضْرَةَ بِبَدْيِ الْخِلْفَةِ يَطْلُقُ فِي هَذِهِ سَنَامِ الْأَيْمَنِ بِالْخِلْفَةِ. وَوَعَلَيْهَا قَبْلُ الْخِلْفَةِ تَارَةً.

1694, 1695 - حَدَّثَنَا الْخَلْفَةُ بْنُ غُثَيْمٍ أَخْبَرَنَا خُفَيْرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ هُرَيْرَةَ ابْنِ الرَّائِظِ عَنْ الْيَشْتَرِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَثِيمَةِ أَنَّ نَبِيَّ (ﷺ) (مَنْزَعًا النَّبِيَّ ﷺ) مِنَ التَّنْبِيَةِ فِي بَيْتِ الْخِلْفَةِ بَائِقًا مِنْ أَمْتَابِهِ عَلَىٰ إِذَا تَمَّ بِبَدْيِ الْخِلْفَةِ لَدُنْ النَّبِيِّ ﷺ الْهَدْيِ وَالْفَضْرَةَ وَالْحَرَمَ بِالْفَضْرَةِ.

الطَّرِيقَةُ فِي: 1694, 1695, 1696, 1697, 1698, 1699, 1700, 1701, 1702, 1703, 1704, 1705, 1706, 1707, 1708, 1709, 1710, 1711, 1712, 1713, 1714, 1715, 1716, 1717, 1718, 1719, 1720, 1721, 1722, 1723, 1724, 1725, 1726, 1727, 1728, 1729, 1730, 1731, 1732, 1733, 1734, 1735, 1736, 1737, 1738, 1739, 1740, 1741, 1742, 1743, 1744, 1745, 1746, 1747, 1748, 1749, 1750, 1751, 1752, 1753, 1754, 1755, 1756, 1757, 1758, 1759, 1760, 1761, 1762, 1763, 1764, 1765, 1766, 1767, 1768, 1769, 1770, 1771, 1772, 1773, 1774, 1775, 1776, 1777, 1778, 1779, 1780, 1781, 1782, 1783, 1784, 1785, 1786, 1787, 1788, 1789, 1790, 1791, 1792, 1793, 1794, 1795, 1796, 1797, 1798, 1799, 1800, 1801, 1802, 1803, 1804, 1805, 1806, 1807, 1808, 1809, 1810, 1811, 1812, 1813, 1814, 1815, 1816, 1817, 1818, 1819, 1820, 1821, 1822, 1823, 1824, 1825, 1826, 1827, 1828, 1829, 1830, 1831, 1832, 1833, 1834, 1835, 1836, 1837, 1838, 1839, 1840, 1841, 1842, 1843, 1844, 1845, 1846, 1847, 1848, 1849, 1850, 1851, 1852, 1853, 1854, 1855, 1856, 1857, 1858, 1859, 1860, 1861, 1862, 1863, 1864, 1865, 1866, 1867, 1868, 1869, 1870, 1871, 1872, 1873, 1874, 1875, 1876, 1877, 1878, 1879, 1880, 1881, 1882, 1883, 1884, 1885, 1886, 1887, 1888, 1889, 1890, 1891, 1892, 1893, 1894, 1895, 1896, 1897, 1898, 1899, 1900, 1901, 1902, 1903, 1904, 1905, 1906, 1907, 1908, 1909, 1910, 1911, 1912, 1913, 1914, 1915, 1916, 1917, 1918, 1919, 1920, 1921, 1922, 1923, 1924, 1925, 1926, 1927, 1928, 1929, 1930, 1931, 1932, 1933, 1934, 1935, 1936, 1937, 1938, 1939, 1940, 1941, 1942, 1943, 1944, 1945, 1946, 1947, 1948, 1949, 1950, 1951, 1952, 1953, 1954, 1955, 1956, 1957, 1958, 1959, 1960, 1961, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 1981, 1982, 1983, 1984, 1985, 1986, 1987, 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 2681, 2682, 2683, 2684, 2685, 2686, 2687, 2688, 2689, 2690, 2691, 2692, 2693, 2694, 2695, 2696, 2697, 2698, 2699, 2700, 2701, 2702, 2703, 2704, 2705, 2706, 2707, 2708, 2709, 2710, 2711, 2712, 2713, 2714, 2715, 2716, 2717, 2718, 2719, 2720, 2721, 2722, 2723, 2724, 2725, 2726, 2727, 2728, 2729, 2730, 2731, 2732, 2733, 2734, 2735, 2736, 2737, 2738, 2739, 2740, 2741, 2742, 2743, 2744, 2745, 2746, 2747, 2748, 2749, 2750, 2751, 2752, 2753, 2754, 2755, 2756, 2757, 2758, 2759, 2760, 2761, 2762, 2763, 2764, 2765, 2766, 2767, 2768, 2769, 2770, 2771, 2772, 2773, 2774, 2775, 2776, 2777, 2778, 2779, 2780, 2781, 2782, 2783, 2784, 2785, 2786, 2787, 2788, 2789, 2790, 2791, 2792, 2793, 2794, 2795, 2796, 2797, 2798, 2799, 2800, 2801, 2802, 2803, 2804, 2805, 2806, 2807, 2808, 2809, 2810, 2811, 2812, 2813, 2814, 2815, 2816, 2817, 2818, 2819, 2820, 2821, 2822, 2823, 2824, 2825, 2826, 2827, 2828, 2829, 2830, 2831, 2832, 2833, 2834, 2835, 2836, 2837, 2838, 2839, 2840, 2841, 2842, 2843, 2844, 2845, 2846, 2847, 2848, 2849, 2850, 2851, 2852, 2853, 2854, 2855, 2856, 2857, 2858, 2859, 2860, 2861, 2862, 2863, 2864, 2865, 2866, 2867, 2868, 2869, 2870, 2871, 2872, 2873, 2874, 2875, 2876, 2877, 2878, 2879, 2880, 2881, 2882, 2883, 2884, 2885, 2886, 2887, 2888, 2889, 2890, 2891, 2892, 2893, 2894, 2895, 2896, 2897, 2898, 2899, 2900, 2901, 2902, 2903, 2904, 2905, 2906, 2907, 2908, 2909, 2910, 2911, 2912, 2913, 2914, 2915, 2916, 2917, 2918, 2919, 2920, 2921, 2922, 2923, 2924, 2925, 2926, 2927, 2928, 2929, 2930, 2931, 2932, 2933, 2934, 2935, 2936, 2937, 2938, 2939, 2940, 2941, 2942, 2943, 2944, 2945, 2946, 2947, 2948, 2949, 2950, 2951, 2952, 2953, 2954, 2955, 2956, 2957, 2958, 2959, 2960, 2961, 2962, 2963, 2964, 2965, 2966, 2967, 2968, 2969, 2970, 2971, 2972, 2973, 2974, 2975, 2976, 2977, 2978, 2979, 2980, 2981, 2982, 2983, 2984, 2985, 2986, 2987, 2988, 2989, 2990, 2991, 2992, 2993, 2994, 2995, 2996, 2997, 2998, 2999, 3000, 3001, 3002, 3003, 3004, 3005, 3006, 3007, 3008, 3009, 3010, 3011, 3012, 3013, 3014, 3015, 3016, 3017, 3018, 3019, 3020, 3021, 3022, 3023, 3024, 3025, 3026, 3027, 3028, 3029, 3030, 3031, 3032, 3033, 3034, 3035, 3036, 3037, 3038, 3039, 3040, 3041, 3042, 3043, 3044, 3045, 3046, 3047, 3048, 3049, 3050, 3051, 3052, 3053, 3054, 3055, 3056, 3057, 3058, 3059, 3060, 3061, 3062, 3063, 3064, 3065, 3066, 3067, 3068, 3069, 3070, 3071, 3072, 3073, 3074, 3075, 3076, 3077, 3078, 3079, 3080, 3081, 3082, 3083, 3084, 3085, 3086, 3087, 3088, 3089, 3090, 3091, 3092, 3093, 3094, 3095, 3096, 3097, 3098, 3099, 3100, 3101, 3102, 3103, 3104, 3105, 3106, 3107, 3108, 3109, 3110, 3111, 3112, 3113, 3114, 3115, 3116, 3117, 3118, 3119, 3120, 3121, 3122, 3123, 3124, 3125, 3126, 3127, 3128, 3129, 3130, 3131, 3132, 3133, 3134, 3135, 3136, 3137, 3138, 3139, 3140, 3141, 3142, 3143, 3144, 3145, 3146, 3147, 3148, 3149, 3150, 3151, 3152, 3153, 3154, 3155, 3156, 3157, 3158, 3159, 3160, 3161, 3162, 3163, 3164, 3165, 3166, 3167, 3168, 3169, 3170, 3171, 3172, 3173, 3174, 3175, 3176, 3177, 3178, 3179, 3180, 3181, 3182, 3183, 3184, 3185, 3186, 3187, 3188, 3189, 3190, 3191, 3192, 3193, 3194, 3195, 3196, 3197, 3198, 3199, 3200, 3201, 3202, 3203, 3204, 3205, 3206, 3207, 3208, 3209, 3210, 3211, 3212, 3213, 3214, 3215, 3216, 3217, 3218, 3219, 3220, 3221, 3222, 3223, 3224, 3225, 3226, 3227, 3228, 3229, 3230, 3231, 3232, 3233, 3234, 3235, 3236, 3237, 3238, 3239, 3240, 3241, 3242, 3243, 3244, 3245, 3246, 3247, 3248, 3249, 3250, 3251, 3252, 3253, 3254, 3255, 3256, 3257, 3258, 3259, 3260, 3261, 3262, 3263, 3264, 3265, 3266, 3267, 3268, 3269, 3270, 3271, 3272, 3273, 3274, 3275, 3276, 3277, 3278, 3279, 3280, 3281, 3282, 3283, 3284, 3285, 3286, 3287, 3288, 3289, 3290, 3291, 3292, 3293, 3294, 3295, 3296, 3297, 3298, 3299, 3300, 3301, 3302, 3303, 3304, 3305, 3306, 3307, 3308, 3309, 3310, 3311, 3312, 3313, 3314, 3315, 3316, 3317, 3318, 3319, 3320, 3321, 3322, 3323, 3324, 3325, 3326, 3327, 3328, 3329, 3330, 3331, 3332, 3333, 3334, 3335, 3336, 3337, 3338, 3339, 3340, 3341, 3342, 3343, 3344, 3345, 3346, 3347, 3348, 3349, 3350, 3351, 3352, 3353, 3354, 3355, 3356, 3357, 3358, 3359, 3360, 3361, 3362, 3363, 3364, 3365, 3366, 3367, 3368, 3369, 3370, 3371, 3372, 3373, 3374, 3375, 3376, 3377, 3378, 3379, 3380, 3381, 3382, 3383, 3384, 3385, 3386, 3387, 3388, 3389, 3390, 3391, 3392, 3393, 3394, 3395, 3396, 3397, 3398, 3399, 3400, 3401, 3402, 3403, 3404, 3405, 3406, 3407, 3408, 3409, 3410, 3411, 3412, 3413, 3414, 3415, 3416, 3417, 3418, 3419, 3420, 3421, 3422, 3423, 3424, 3425, 3426, 3427, 3428, 3429, 3430, 3431, 3432, 3433, 3434, 3435, 3436, 3437, 3438, 3439, 3440, 3441, 3442, 3443, 3444, 3445, 3446, 3447, 3448, 3449, 3450, 3451, 3452, 3453, 3454, 3455, 3456, 3457, 3458, 3459, 3460, 3461, 3462, 3463, 3464, 3465, 3466, 3467, 3468, 3469, 3470, 3471, 3472, 3473, 3474, 3475, 3476, 3477

ने कहा कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने अफ़ल इश्आर को मकरूह नहीं कहा बल्कि उसमें मुबालागा करने को मकरूह कहा है जिससे ऊँट की हलाकत का डर हो और हमारा यही गुमान हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) से है जो मुसलमानों के पेशवा हैं, यही है। अफ़ल इश्आर को वो कैसे मकरूह कह सकते हैं उसका सुन्नत होना अह्मदीय सहीह से प्राबित है। (वहीदी) क़लादा जूतियों का हार जो कुर्बानी के जानवरों के गलों में डालकर गोया उसे बैतुल्लाह में कुर्बानी के लिये निशान लगा दिया जाता था, क़लादा ऊँट बकरी गाय सबके लिये है और अश्आर के बारे में हज़रत अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, व फ़ीहि मशरूइयतुल्लइश्आरि व हुब अय्यकशुत जिल्दलबदनति हत्ता यसील दमुन शुम्म यस्कूहु फ़यकूनु ज़ालिक अलामतुन अला कौनिहा हदयन व बिज़ालिक क़ालल जुम्हूरु मिनस्सलफ़ि वल ख़ल्फ़ि व ज़करतहावी फ़ी इख़ितलाफ़िल उलमाइ कराहियतहु अन अबी हनीफ़त व ज़हब ग़ैरुह इला इस्तिहबाबिही लि इत्तिबाइ हत्ता साहिबाहु अबू यूसुफ़ व मुहम्मद फ़क़ाला हुब हसनन व क़ाल मालिक युख़्तस्सुल्लइश्आरु बिमन लहा सिनामुन क़ालत्तहावीषबत अन आइशात व इब्नि अब्बासिन अत्तइईस् फ़िल्इश्आरि व तर्किही फ़दल्ल अला अन्नहु लैस बिनुस्किन लाकिन्नहु ग़ैर मक्कूहिन लिषुबूति फ़िअलिही अनिअबिय्यि (ﷺ) इला आख़िरिही (फ़तुल बारी) या'नी इस हदीस से इश्आर की मशरूइयत प्राबित है वो ये कि हदी के चमड़े को ज़रा सा ज़ख़मी करके उससे खून बहा दिया जाए बस वो उसके हदी होने की अलामत है और सलफ़ और ख़ल्फ़ से तमाम जुम्हूर ने इसकी मशरूइयत का इक्कार किया है और इमाम तहावी ने इस बारे में उलम-ए-किराम का इख़ितलाफ़ जिक्र करते हुए कहा कि इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने इसे मकरूह करार दिया है और दूसरे लोग उसके मुस्तहब होने के क़ाइल हैं। यहाँ तक कि इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के दोनों शागिर्दोंने रशीद हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ और हज़रत इमाम मुहम्मद (रह.) भी उसके बेहतर होने के क़ाइल हैं। हज़रत इमाम मालिक (रह.) का क़ौल है कि इश्आर उन जानवरों के साथ ख़ास है जिनके कोहान हैं। तहावी ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से प्राबित है कि उसके लिये इख़ितयार है कि या तो इश्आर करे या न करे, ये उसी अम्र की दलील है कि इश्आर कोई हज्ज के मनासिक से नहीं है लेकिन वो ग़ैर मकरूह है इसलिये कि उसका करना ओहज़रत (ﷺ) से प्राबित है। मुत्तकन इश्आर को मकरूह कहने पर बहुत से मुत्तकदिमीन ने हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) पर जो ए'तिराज़ात किये हैं उनके जवाबात इमाम तहावी ने दिये हैं, उनमें से ये भी कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने मुत्तलकन इश्आर का इन्कार नहीं किया बल्कि ऐसे मुबालिग़ों के साथ इश्आर करने को मकरूह बतलाया है जिससे जानवर ज़ईफ़ होकर हलाकत के करीब हो जाए। जिन लोगों ने इश्आर को मुफ़ला से तश्बीह दी है उनका क़ौल भी ग़लत है। इश्आर सिर्फ़ ऐसा ही है जैसे कि ख़त्मा और हजामत और निशानी के लिये कुछ जानवरों के कान चीर देना है, ज़ाहिर है कि ये सब मुफ़ले के ज़ेल में नहीं आ सकते, फिर इश्आर क्योंकर आ सकता है। इसीलिये अबू साइब कहते हैं कि हम एक मजलिस में इमाम वकीअ के पास थे। एक शख़्स ने कहा कि इमाम नख़्दी से इश्आर का मुफ़ला होना मन्कूल है। इमाम वकीअ ने ख़फ़ी के लहजे में फ़र्माया कि मैं कहता हूँ कि रसूल करीम (ﷺ) ने इश्आर किया और तू कहता है कि इब्राहीम नख़्दी ने ऐसा कहा, हक़ तो ये है कि तुझको कैद कर दिया जाए (फ़तह) कुआन मजीद की आयत शरीफ़ा या अय्युहल्लज़ीन आमनू ला तुक़हिमू बयना यदयिल्लाहि वरसूलिही..... (अल् हुजरात : 1) का मफ़हूम भी यही है कि जहाँ अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) से कोई अम्र सहीह तौर पर प्राबित हो वहाँ हरिज क़ौल व क़ाल व आरा को दाख़िल नहीं किया जा सकता कि ये अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) की सख़्त बेअदबी है। मगर सद अफ़सोस है कि उम्मत का जम्मे ग़फ़ीर (बड़ा शुण्ड) इसी बीमारी में मुत्तला है, अल्लाह पाक सबको तक्लीद जामिद से शिफ़ा-ए-कामिल अत्ता करे आमीन। हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से ये भी मरवी है कि आप जब किसी हदी का इश्आर करते तो उसे क़िब्ला रख कर लेते और बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहकर उसके कोहान को ज़ख़मी कर देते थे।

1696. हमसे अबू नु'एम ने बयान किया, कहा कि हमसे अफ़लह ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के कुर्बानी के जानवरों के हार मैंने अपने हाथ से खुद बटे थे, फिर आप (ﷺ) ने उन्हें हार

۱۶۹۶ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا أَفْلَحُ عَنْ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: (قُلْتُ فَلَا يَذَنُ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيَّ، ثُمَّ

पहनाया, इश'आर किया, उनको मक्का की तरफ खाना किया फिर भी आपके लिये जो चीजें हलाल थीं वो (एहराम से पहले सिर्फ हदी से) हराम नहीं हुई।

(दीगर मक़ाम : 1698, 1699, 1700, 1701, 1702, 1703, 1704, 1705, 2317, 5566)

**तशरीह :** ये वाक़िया हिजरत के नव्वे साल का है, जब आप (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र सिद्दिक (रज़ि.) को हाजियों का सरदार बनाकर मक्का खाना किया था, उनके साथ कुर्बानी के ऊँट भी आप (ﷺ) ने भेजे थे। नववी ने कहा कि इस हदीस से ये निकला कि अगर कोई शख्स खुद मक्का को न जा सके तो कुर्बानी का जानवर वहाँ भेज देना मुस्तहब है और जुम्हूरे इलमा का यही क़ौल है कि सिर्फ़ कुर्बानी का जानवर खाना करने से आदमी मुहरिम नहीं होता जब तक कि खुद एहराम की निय्यत न करे। (वहीदी)

### बाब 107 : गाय, ऊँट वगैरह कुर्बानी के जानवरों के क़लादे बटने का बयान

1697. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यहा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने कि मुझे नाफ़े अने खबर दी उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि हफ़सा (रज़ि.) ने बयान किया, कहा मैं ने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! और लोग तो हलाल हो गए लेकिन आप (ﷺ) हलाल नहीं हुए, इसकी क्या वजह है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने अपने सर के बालों को जमा लिया है और अपनी हदी को क़लादा पहना दिया है, इसलिये जब तक हज्ज से भी हलाल न हो जाऊँ मैं (दरम्यान में) हलाल नहीं हो सकता, (गूंद लगाकर सर के बालों को जमा लेना उसको तल्बीद कहते हैं।) (राजेअ : 1566)

1698. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैस ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इर्वा और अम्मा बिनते अब्दुर्रहमान ने कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना से हदी साथ लेकर चलते थे और मैं उनके क़लादे बटा करती थी फिर भी आप (एहराम बाँधने से पहले) उन चीज़ों से परहेज़ नहीं करते थे जिनसे एक मुहरिम परहेज़ करता है। (राजेअ : 1696)

قُلْدَعًا، وَاسْتَحْرَمَهَا وَاسْتَحْرَمَهَا، فَمَا حَرَّمَ عَلَيْهِ شَيْءٌ كَانَ أَحِلَّ لَهُ)).

أَطْرَافُهُ فِي : ١٦٩٩، ١٦٩٨، ١٧٠٠

١٧٠١، ١٧٠٢، ١٨٠٣، ١٧٠٤

[١٧٠٥، ٢٣١٧، ٥٥٦٦]

### ١٠٧- بَابُ قَتْلِ الْقَلَائِدِ لِلْبُذْنِ وَالْبَقَرِ

١٦٩٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ حَفْصَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَتْ: ((قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا شَأْنُ النَّاسِ حَلُّوْا وَلَمْ تَحْلُلْ أَنْتَ؟ قَالَ: ((إِنِّي لَكِدْتُ رَأْسِي وَقُلْدَتُ هَذِي فَلَا أَحِلُّ حَتَّى أَحِلَّ مِنْ الْحَجِّ)). (راجع: ١٥٦٦)

١٦٩٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ ابْنُ شِهَابٍ عَنْ غُرُوْةَ وَعَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَهْدِي مِنَ الْمَدِينَةِ، فَأَلْفَلَّ قَلَائِدَ هَذِي، ثُمَّ لَا يَخْتَبِ شَيْءًا مِمَّا يَخْتَبِيهِ الْمُحْرِمُ)).

[راجع: ١٦٩٦]

दोनों हदीसों में कुर्बानी का लफ्ज़ है वो आम है ऊँट और गाय दोनों को शामिल है तो बाब का मज़लब प्राबित हो गया या'नी

किरान के ऊँट और गायों के लिये हार बटना ये भी मा'लूम हुआ कि हज़रत आइशा (रज़ि.) अपने हाथों से ये हार बटा करती थीं पस औरतों के लिये इस किस्म के सन्न'अत हिफ्त के काम करना कोई अम्मे मअयूब नहीं है जैसा कि नामो-निहाद शुरफ़ाए इस्लाम के तसव्वुरात हैं जो औरतों के लिये इस किस्म के कामों को अच्छा नहीं जानते ये इतिहाई कम फ़हमी की दलील है।

### बाब 108 : कुर्बानी के जानवर का इश'आर करना

और इवाँ ने मिस्वर से रिवायत किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हदी को हार पहनाया और उसका इश'आर किया, फिर इम्रह के लिये एहराम बाँधा था।

1699. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अफ़्लह बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे कासिम ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) की हदी के क़लादे खुद बटे थे, फिर आप (ﷺ) ने उन्हें इश'आर किया और हार पहनाया, या मैंने हार पहनाया फिर आप (ﷺ) ने बैतुल्लाह के लिये उन्हें भेज दिया और खुद मदीना में ठहर गए लेकिन कोई भी ऐसी चीज़ आप (ﷺ) के लिये हाराम नहीं हुई जो आप (ﷺ) के लिये हलाल थी। (राजेअ: 1696)

कोई शख्स अपने वतन से किसी के साथ मक्का शरीफ़ में कुर्बानी का जानवर भेज दे तो वो हलाल ही रहेगा उस पर एहराम के अहकाम लागू नहीं होंगे।

### बाब 109 : उसके बारे में जिसने अपने हाथ से (कुर्बानी के जानवरों को) क़लादे पहनाए

1700. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अमर बिन हज़म ने ख़बर दी, उन्हें अम्मा बिन्ते अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि ज़ियाद बिन अबी सुफ़यान ने आइशा (रज़ि.) को लिखा कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया है कि जिसने हदी भेज दी उस पर वो तमाम चीज़ें हाराम हो जाती हैं जो एक हाजी पर हाराम होती हैं यहाँ तक कि उसकी हदी की कुर्बानी कर दी जाए, अमर ने कहा कि इस पर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया है, मैंने नबी करीम (ﷺ) के कुर्बानी के जानवरों के क़लादे अपने हाथ से खुद बटे हैं, फिर आइशा (रज़ि.) ने अपने हाथों से उन जानवरों को क़लादे पहनाया और मेर

### ١٠٨ - بَابُ إِشْعَارِ الْبَدَنِ

وَلَقَدْ غَرَّوْهُ عَنِ الْمَسْوَِرِ ((قُلْتُ النَّبِيُّ الْهَذِي وَأَشْعَرَهُ وَأَحْرَمَ بِالْعَمْرَةِ)).

١٦٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا الْفَلَحُ بْنُ خُمَيْدٍ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قُلْتُ فَلَايَةَ هَذِي النَّبِيُّ ﷺ، ثُمَّ أَشْعَرَهَا وَقُلْتُهَا - أَوْ قُلْتُهَا - ثُمَّ بَعَثَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ وَأَقَامَ بِالْمَدِينَةِ لَمَّا حَرَّمَ عَلَيْهِ شَيْءٌ كَانَ لَهُ حَالًا)). [راجع: ١٦٩٦]

### ١٠٩ - بَابُ مَنْ قُلَّدَ الْقَلَادَةَ يَدِيهِ

١٧٠٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَمْرٍو بْنِ حَزْمٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ ((أَنَّ زَيَْادَ بْنَ أَبِي سَفْيَانَ كَتَبَ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَنْ أَهْدَى هَذِي حَرَّمَ عَلَيْهِ مَا يَحْرُمُ عَلَى الْحَاجِّ حَتَّى يَنْحَرَّ هَذِي. قَالَتْ عَمْرَةُ: فَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: لَيْسَ كَمَا قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ،

वालद मुहतरम (अबूबक्र रज़ि.) के साथ उन्हें भेज दिया लेकिन उसके बावजूद आप (ﷺ) ने किसी भी ऐसी चीज़ को अपने ऊपर हaram नहीं किया जो अल्लाह ने आप (ﷺ) के लिये हलाल की थी, और हदी की कुर्बाना भी कर दी गई। (राजेज़: 1696)

أَنَا قُلْتُ فَلَايَةَ هَذِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ قُلْتُ هَذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَّبِعُ، ثُمَّ نَعَتْ بِهَا مَعَ أَبِي، فَلَمْ يَعْزَمْ عَلَيَّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، شَيْءٌ أَخْلَعَ اللَّهُ حَتَّى نُجِرَ (الْهَذِي)). [راجع: ١٦٩٦]

ये सन् 09 हिजरी का वाकिया है उस साल रसूले करीम (ﷺ) ने अपने नाइब की हैषियत से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को हज्ज के लिये भेजा था, आइन्दा साल हज्जतुल विदाअ किया गया। इस बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का फ़त्वा दुरुस्त न था, इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उसकी तरदीद कर दी। मा'लूम हुआ कि ग़ल्लि'यों का इम्कान बड़ी शख़्सियतों से भी हो सकता है मुन्किन है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इस ख़याल से बाद में रूजूअ कर लिया हो। ये भी मा'लूम हुआ कि अम्मे हक़ जिसे भी मा'लूम हो जाहिर कर देना चाहिये और इस बारे में किसी भी बड़ी शख़्सियत से मरज़ुब (प्रभावित) न होना चाहिये क्योंकि अल्हक्कु य अलू वला युअला या'नी अम्मे हक़ हमेशा ग़ालिब रहता है उसे मज़्लूब नहीं किया जा सकता।

## बाब 110 : बकरियों को हार पहनाने का बयान

(लेकिन बकरियों का इश्आर करना बिल्इत्तिफ़ाक़ जाइज़ नहीं)

## ١١٠ - بَابُ تَقْلِيدِ الْغَنَمِ

**तशरीह:** हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं क़ाल इब्नुल मुज़्ज़िर अन्कर मालिक व अस्हाबुराय तक्लीदहा ज़ाद ग़ैरुहू व कअन्नहुम लमयब्लुगहुमल हदीषु व लम नजिद लहुम हुज्जतन इल्लल क़ौलु बअज़िहिम अन्नहा तज़अफ़ु अनित्तक्लीदि व हिय हुज्जतुन ज़ईफ़तुन लिअन्नल मक्सूद मिनत्तक्लीदि अल अलामतु व क़द इत्तफ़क़ू अन्नहा ला तशउरू लिअन्नहा तज़अफ़ु अन्हु फ़तुकल्लद बिमा ला युज़इफ़ुहा वल हनफ़िय्यतु फ़िल अस्लि यक़ूलू लैसतिल ग़नमु मिनल हदीषु फ़ल हदीषु हुज्जतुन अलैहिम मिन जिहतिन उख़रा (फ़तुल बारी) या'नी इब्ने मुज़्ज़िर ने कहा कि इमाम मालिक और अस्हाबुराय ने बकरियों के लिये हार से इन्कार किया है गोया कि उनको हदीषे नबवी पहुँची ही नहीं है और हमने उनके पास कोई दलील भी नहीं पाई सिवाए, इसके कि वो कहते हैं कि बकरी हार लटकाने से कमज़ोर हो जाएगी। ये बहुत ही कमज़ोर दलील है क्योंकि हार लटकाने से उसको निशानज़दा बराए कुर्बानी हज्ज करना मक्सूद है, बकरी का मुतफ़क़ा तौर पर इश्आर जाइज़ नहीं है। इसी से वो फ़िल्वाक़ेअ कमज़ोर हो सकती है और हार लटकाने से कमज़ोर होने का कोई सवाल ही नहीं उठता और इन्फ़िया उसूलन कहते हैं कि बकरी हदी ही नहीं है पस ये हदीष उन पर दूसरे तरीक़ से भी हुज्जत है। कुछ ने कहा कि बकरी हदी इसलिये नहीं है कि नबी करीम (ﷺ) ने मक्का शरीफ़ को बकरी बतौर हदी नहीं भेजी ये ख़याल ग़लत है क्योंकि हदीषे बाब दलील है कि आप (ﷺ) ने हज्ज से पहले क़तई (यक़ीनी) तौर पर बकरी को बतौर हदी भेजा था पस ये ख़याल भी सहीह नहीं है।

ग़ालिबन हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ऐसे ही हज़रात के ख़याल की इस्लाह के लिये बाब तक्लीदुल ग़नम मुनअकिद फ़र्माया है जो हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की इल्मी इस्लाही बज़ीस्ते कामिला की दलील है। अल्लाह पाक ऐसे इमामे हदीष को फ़िर्दौस बरी में बेहतरीन ज़ाएँ अत्ता करे और उनको क़वट क़वट ज़न्नत नज़ीब फ़र्माए और जो लोग ऐसे इमाम की शान में गुस्ताख़ाना कलिमात मुँह से निकालते हैं अल्लाह पाक उनको नेक समझ अत्ता करे कि वो उस दरीदा दहनी से बाज़ आएँ या जो हज़रात उनकी शाने इज्तिहाद का इन्कार करते हैं अल्लाह उनको तौफ़ीक़ दे कि वो अपने इस ग़लत ख़याल पर नज़रे पानी कर सकें।

1701. हमसे अबूनुएम ने बयान किया, उनसे अज़मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा

١٧٠١ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ

(रज़ि.) ने बयान किया कि एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुर्बानी के लिये (बैतुल्लाह) बकरियाँ भेजी थीं। (राजेअ: 1696)

اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : «أَهْذَى النَّبِيِّ ﷺ مَرَّةً  
[راجع: 1696]

गो इस हदीष में बकरियों के गले में हार लटकाने का जिक्र नहीं है जो बाब का मतलब है लेकिन आगे की हदीष में उसकी सराहना मौजूद है।

1702. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उनसे अब्दुल बाहिद ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि मैं नबी करीम (ﷺ) के कुर्बानी के जानवरों के लिये क़लादे बटा करती थी, और हज़रत (ﷺ) ने बकरी को भी क़लादा पहनाया था और आप (ﷺ) खुद अपने घर में इस हाल में मुक़ीम थे कि आप (ﷺ) हलाल थे। (राजेअ: 1696)

١٧٠٢- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا عَبْدُ  
الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ  
عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا  
قَالَتْ : «كَانَتْ الْجِلَّ الْفَلَايِدَ لِلنَّبِيِّ ﷺ،  
فَيَقْلُدُ الْقَتَمَ وَيُعِيْمُ لِي أَهْلِيهِ خَلَالًا».  
[راجع: 1696]

1703. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उनसे हम्माद ने बयान किया, उनसे मन्सूर बिन मुअतमिर ने (दूसरी सनद) और हमसे मुहम्मद बिन क़प्पीर ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें मन्सूर ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की बकरियों के क़लादे खुद बटा करती थी, और हज़रत (ﷺ) उन्हें (बैतुल्लाह के लिये) भेज देते और खुद हलाल ही होने की हालत में अपने घर ठहरे रहते।

١٧٠٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا  
حَمَّادٌ حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ الْمُعْتَمِرِ. ح  
وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ  
مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ  
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : «كَانَتْ  
الْجِلَّ فَلَائِدَ الْقَتَمِ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَيَنْتِ بِهَا، ثُمَّ  
يَمُكِّتُ خَلَالًا».  
[راجع: 1696]

1704. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़करिया ने बयान किया, उनसे आमिर ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की कुर्बानी के लिये खुद क़लादे बटे हैं। उनकी मुराद एहराम से पहले के क़लादों से थी। (राजेअ: 1696)

١٧٠٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا  
عَنْ عَامِرٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : «قُلْتُ لِيَهْذِي النَّبِيُّ ﷺ  
- نَعْيِي الْفَلَايِدَ - قَبْلَ أَنْ يُحْرِمَ».  
[راجع: 1696]

तक्लीद कहते हैं कुर्बानी के जानवरों के गलों में जूतियों वगैरह का हार बनाकर डालना, ये अरब के मुल्क में निशान था हदी का। ऐसे जानवर को अरब लोग न काटते थे न उससे मुतअर्रिज़ होते और इश्आर के मा'नी खुद किताब में मज़कूर हैं, या'नी ऊँट के कोहान दाहिनी तरफ़ से ज़रा सा चीरा देना और खून बहा देना ये भी सुन्नत है और जिसने इससे मना किया उसने ग़लती की।

### बाब 111 : ऊन के हार बटना

1705. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे

١١١- بَابُ الْفَلَايِدِ مِنَ الْيَمِينِ  
١٧٠٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا

मुआज़ बिन मुआज़ ने बयान किया, उनसे इब्ने औन ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने बयान किया, उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे पास जो ऊन थी उसके हार मैंने कुर्बानी के जानवरों के लिये ख़ुद बटे थे। (राजेअ : 1696)

इससे भी प्रामित हुआ कि कुर्बानी के जानवरों के गलों में ऊन की रस्सियों के हार डालना सुन्नत है और ये ऊँट, गाय बकरी सबके लिये है जो जानवर भी कुर्बानी किये जाते हैं।

### बाब 112 : जूतों का हार डालना

1706. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल आला ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें यह्या बिन अबी कबीर ने, उन्हें इक्रिमा ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक आदमी को देखा कि वो कुर्बानी का ऊँट लिये जा रहा है आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस पर सवार हो जा, उसने कहा कि ये तो कुर्बानी का है तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि सवार हो जा, अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैं ने देखा कि वो उस पर सवार है और नबी करीम (ﷺ) के साथ चल रहा है और जूते (का हार) उस ऊँट की गर्दन में है। इस रिवायत की मुताबअत मुहम्मद बिन बशशार ने की है।

हमसे इब्मान बिन इमर ने बयान किया, हमको अली बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यह्या ने उन्हें इक्रिमा ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से (मिस्ल साबिक हदीस के)।

इस हदीस में इशारा भी है कि एक जूती लटकाना काफ़ी है और ख़ है उसका जो कि कम से कम दो जूतियाँ लटकाना ज़रूरी कहता है और मुस्तहब यही है कि दो जूतियाँ डाले, (यहीदी) मगर एक भी काफ़ी हो जाती है। (राजेअ : 1689)

### बाब 113 : कुर्बानी के जानवरों के लिये झोल का होना

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) सिर्फ़ कोहान की जगह के झोल को फाड़ते और जब उसकी कुर्बानी करते तो इस डर से कि कहीं उसे ख़ून ख़राब न कर दे झोल को उतार देते और फिर उसको भी स़दका कर देते।

مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قُلْتُ فَلَا يَبْقَا مِنْ عَوْنٍ كَانَ حَنْدِي)). [راجع: ١٦٩٦]

### ١١٢- بَابُ تَقْلِيدِ النُّعْلِ

١٧٠٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَنْهُ الْأَعْلَى عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ الْفَلَاكِيَّ مِنَ الْيَهُنِ رَأَى رَجُلًا يَسُوقُ بَدَنَةً قَالَ: ((ارْكَبْهَا)), قَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ. قَالَ: ((ارْكَبْهَا)), قَالَ: فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ رَاكِبَهَا يَسَاقِرُ النَّبِيَّ ﷺ وَالنُّعْلُ لِي عَنْهَا)). فَأَبَقَهُ مُحَمَّدٌ بْنُ بَشَّارٍ. حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عَمَرَ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ١٦٨٩]

### ١١٣- بَابُ الْجَلَالِ لِلْبِذَن

وَكَانَ ابْنُ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا لَا يَشُقُّ مِنَ الْجَلَالِ إِلَّا مَوْضِعَ السَّنَامِ وَإِذَا نَحَرَهَا نَزَعَ جِلَالَهَا مَخَافَةَ أَنْ يَفْسِدَهَا الدَّمُ ثُمَّ يَتَصَدَّقُ بِهَا

1707. हमसे कबीसा ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन कुर्बानी के जानवरों के झोल और उनके चमड़े को सद्का करने का हुक्म दिया था जिनकी कुर्बानी मैंने कर दी थी।

(दीगर मक़ाम : 1716, 1717, 1718)

۱۷۰۷- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ  
ابْنِ أَبِي نُجَيْجٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ  
الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ  
أَتَصَدَّقَ بِجِلَالِ الْبُذْنِ الَّتِي نَحَرْتُ  
وَبِجُلُودِهَا)).

[أطرافه في : ۱۷۱۶، ۱۷۱۷، ۱۷۱۸]

मा' लूम हुआ कि कुर्बानी के जानवरों की हर चीज़ यहाँ तक कि झोल तक भी सद्का कर दी जाए और क़साई को उनमें से उज्रत में कुछ न दिया जाए, उज्रत अलग देनी चाहिये।

### बाब 114 : उस शख्स के बारे में जिसने अपनी हदी रास्ते में खरीदी और उसे हार पहनाया

1708. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू ज़मरह ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्बबा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने इब्ने जुबैर (रज़ि.) के अहदे खिलाफ़त में हज्जतुल हूरिया के साल हज्ज का इरादा किया तो उनसे कहा गया कि लोगों में बाहम क़त्ल व ख़ून होने वाला है और हमको ख़तरा इसका है कि आपको (मुफ़ि सद लोग हज्ज से) रोक दें, आपने जवाब में ये आयत सुनाई कि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है। उस वक़्त मैं भी वही करूँगा जो आँ हज़रत (ﷺ) ने किया था। मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने ऊपर उम्रह वाजिब कर लिया है, फिर जब आप बीदा के बालाई इलाक़े तक पहुँचे तो फ़र्माया कि हज्ज और उम्रह तो एक ही है मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि उम्रह के साथ मैंने हज्ज को भी जमा कर लिया है, फिर आपने एक हदी भी साथ ले ली जिसे हार पहनाया गया था। आपने उसे ख़रीद लिया यहाँ तक कि आप मक्का आए तो बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा व मरवा की सई की, उससे ज़्यादा और कुछ न किया जो चीज़ें (एहराम की वजह से उन पर) हराम थीं उनमें से किसी से कुर्बानी के दिन तक वो हलाल नहीं हुए, फिर सर मुँडवाया और कुर्बानी की वजह से

### ۱۱۴- بَابُ مَنْ اشْتَرَى هَدْيَهُ مِنَ الطَّرِيقِ وَقَلَّدَهَا

۱۷۰۸- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ  
حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ  
عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((أَرَادَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا الْحَجَّ، عَامَ حَجَّةِ الْحَوَرِيَّةِ فِي  
عَهْدِ ابْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، فَقِيلَ  
لَهُ: إِنَّ النَّاسَ كَانُوا يَنْهَوْنَهُمْ فَقَالَ وَتَخَافُ  
أَنْ يَصُدُّوكَ، فَقَالَ: «لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي  
رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ»، إِذَا أُنْصَحَ  
كَمَا صَنَعَ، رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَشْهَدُكُمْ أَنِّي  
لَقَدْ أَوْجَبْتُ غُمْرَةً حَتَّى كَانَ بِظَاهِرِ  
الْيَبَدِّ، قَالَ: مَا شَأْنُ الْحَجِّ وَالْغُمْرَةِ إِلَّا  
وَاحِدٌ، أَشْهَدُكُمْ أَنِّي جَمَعْتُ حَجَّةً مَعَ  
غُمْرَةٍ. وَأَهْدَى هَدْيًا فَقَلَّدَا اشْتَرَاهُ، حَتَّى  
قَدِمَ فَلَمَّافَ بِأَثْيَتٍ وَبِالصَّفَاءِ، وَلَمْ يَزِدْ  
عَلَى ذَلِكَ وَلَمْ يَخْلِلْ مِنْ شَيْءٍ حَرَّمَ مِنْهُ  
حَتَّى يَوْمِ النَّحْرِ، فَعَلَّقَ وَنَحَرَ، وَرَأَى أَنْ



समझते थे कि अपना पहला तवाफ़ करके उन्होंने हज्ज और उम्ह्र दोनों का तवाफ़ पूरा कर लिया है फिर आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने भी इसी तरह किया था। (राजेअ : 1639)

فَدَقَضَى طَوَافَهُ الْحَجِّ وَالْعُمْرَةَ بِطَوَافِهِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ قَالَ: كَذَلِكَ صَنَعَ النَّبِيُّ ﷺ. [راجع: ١٦٣٩]

इस रिवायत में हज्जतुल हूररिया से मुराद उम्मत के तामी हज्जाज की हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के खिलाफ़ फ़ौज कशी (आक्रमण) है। ये 73 हिज्री का वाक़िया है, हज्जाज खुद ख़ारजी नहीं था लेकिन ख़ारजियों की तरह उसने भी दावा—ए—इस्लाम के बावजूद हरम और इस्लाम दोनों की हुर्मत पर चोट की थी। इसलिये रावी ने उसके इस हमले को भी ख़ारजियों के हमले के साथ मुशाबिहत दी और उसको भी एक तरह से ख़ारजियों ही का हमला तसब्बुर किया कि उसने इमामे हक़ या नी हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के खिलाफ़ जंग की। हज्जतुल हूररिया ये कहने से हिज्व और ख़वारिज के—से अमल की तरफ़ इशारा मक़सूद है। ख़ारजियों ने 64 हिज्री में हज्ज किया था, एहतेमाल (सम्भावना) है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने उन दोनों सालों में हज्ज किया हो। बाब और हदीष में मुताबक़त य़ूँ है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने रास्ते में कुर्बानी का जानवर ख़रीद लिया और उम्ह्र के साथ हज्ज को भी जमा कर लिया और फ़र्माया कि अगर मुझको हज्ज से रोक दिया गया तो आँ हजरत (ﷺ) को भी मुश्किं ने हुदैबिया के साल हज्ज से रोक दिया था और आप (ﷺ) ने उसी जगह एहराम खोलकर जानवरों को कुर्बान कर दिया था, मैं भी वैसा ही करूँगा। मगर हजरत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के साथ ऐसा नहीं हुआ बल्कि आपने बर वक़्त जुम्ला अरकाने हज्ज को अदा फ़र्माया।

**बाब 115 : किसी आदमी का अपनी बीवियों की तरफ़ से उनकी इजाज़त के बग़ैर गाय की कुर्बानी करना**

1709. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद ने, उनसे अमर बिनते अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि मैंने आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बतलाया कि हम रसूले करीम (ﷺ) के साथ (हज्ज के लिये) निकले तो ज़ीक़अदा में से पाँच दिन बाक़ी रहे थे हम सिर्फ़ हज्ज का इरादा लेकर निकले थे, जब हम मक्का के पास पहुँचे तो रसूले करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया कि जिन लोगों के साथ कुर्बानी न हो वो जब तवाफ़ कर लें और सफ़ा व मरवा की सई कर लें तो हलाल हो जाएँगे, हजरत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि कुर्बानी के दिन हमारे घर गाए का गोश्त लाया गया तो मैंने कहा कि ये क्या है? (लाने वाले ने बतलाया) कि रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी बीवियों की तरफ़ से ये कुर्बानी की है, यह्या ने कहा कि मैंने अमर की हदीष क़ासिम से बयान की उन्होंने कहा अमर ने ये हदीष ठीक ठीक बयान की है।

(राजेअ : 294)

١١٥- بَابُ ذَبْحِ الرَّجُلِ الْبَقَرِ عَنْ بَنَاتِهِ مِنْ غَيْرِ أَمْرِهِنَّ

١٧٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ تَقُولُ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لِحُمْسٍ بَيْنَ مَنْ ذِي الْقَعْدَةِ لَا نُرَى إِلَّا الْحَجَّ فَلَمَّا دَنَوْنَا مِنْ مَكَّةَ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَذِي إِذَا طَافَ رَسَمَى بَيْنَ الصُّفَا وَالْمَرْوَةِ أَنْ يَحِلَّ. قَالَتْ: فَدَخَلْ عَلَيْنَا يَوْمَ النَّحْرِ يَلْحَمُ بَقَرًا، فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالَ: نَحْرُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَنْ أَزْوَاجِهِ. قَالَ يَحْيَى: فَذَكَرْتُهُ لِلْقَاسِمِ فَقَالَ: أَتَيْتُكَ بِالْحَدِيثِ عَلَى وَجْهِهِ. [راجع: ٢٩٤]

**तशरीह :**

यहाँ ये ए' तिराज हुआ है कि बाब के तर्जुमा में तो गाय जिब्ह करना मज़कूर है और हदीष में नह का लफ्ज़ है तो हदीष बाब से मुताबिक नहीं हुई। उसका जवाब ये है कि हदीष में नह से जिब्ह मुराद है; चुनाँचे इस हदीष के दूसरे तरीक में जो आगे मज़कूर होगा जिब्ह का लफ्ज़ है और गाय का नह करना भी जाइज़ है मगर जिब्ह करना इलमा ने बेहतर समझा है और कुआन शरीफ में भी अन् तजब्हू बक़र (अल् बक़र : 67) वारिद है (वहीदी)। हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने अनेक रिवायात नक़ल की हैं जिनसे पाबित है रसूल करीम (ﷺ) ने हज्जतुल विदाअ में अपनी तमाम अज़्वाजे मुतहहरात की तरफ़ से गाय की कुर्बानी फ़र्माई थी, गाय में सात आदमी शरीक हो सकते हैं जैसा कि मुसल्लम है, हज्ज के मौक़े पर तो ये हर मुसलमान कर सकता है मगर ईदुल अज़्हा पर यहाँ अपने यहाँ के मुल्की क़ानून (भारतीय क़ानून) के आधार पर बेहतर यही है कि सिर्फ़ बकरे या दुम्बे की कुर्बानी की जाए और गाय की कुर्बानी न की जाए जिससे यहाँ बहुत से मफ़ासिद (दंगों) का ख़तरा है, ला युक्लिलफुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुसूअहा कुआनी उसूल है, हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, अम्मतअबरीरु बिज्जिबिह मअअन्न हदीषिलबाबि बिलफ़िज़न्नहरि फ़इशारतुन इला मा वरद फ़ी बअज़ि तुरूकिही बिज्जिबिह व सयाती बअद सबअति अब्बाब मिन तरीकि सुलैमानब्नि बिलालिन अन यहा इब्नि सअदिन नहरुल्बक़रि जाइज़ुन इन्दल उलमाइ इल्ला अन्नजिब्ह मुस्तहब्बुन इन्दहुम लिक्वौलिही तआला इन्नल्लाह यामुरूकुम अन्तजब्हू बक़रतन व ख़ालफ़ल हसनुब्नु सालिहिन फ़स्तहब्ब नहरुहा व अम्मा क़ौलुहु मिन ग़ैरि अम्पिहिन्न फ़उरिबज्जहू मिन इस्तिफ़हामि आइशत अनिल्लहमि लम्मा दुरिखल बिही अलैहा व लौ कान जुबिहहू बिइल्मिहा लम तहतज्ज इलल इस्तिफ़हामि लाकिन लैस ज़ालिक दाफ़िअन लिल इहतिमालि फ़यजूजु अय्यकून इल्मुहा बिज़ालिक तक्रहुमुन बिअय्यकून इस्ताज़नुहुन्न फ़ी ज़ालिक लाकिन्न लम्मा उदरिखल्लहम अलैहा इहतमल सनदुहा अय्यकून ग़ैर ज़ालिक फ़स्तफ़हमत अन्हु लिज़ालिक 85/फ़तह) या'नी हदीषुल बाब में लफ्ज़े नह को जिब्ह से ता'बीर करना हदीष के कुछ दीगर तरीक़ की तरफ़ से इशारा करना है जिसमें बजाए नह के लफ्ज़ जिब्ह ही वारिद हुआ है जैसा कि अन्क़रीब वो हदीष आएगी। गाय का नह करना भी इलमा के नज़दीक जाइज़ है मगर मुस्तहब जिब्ह करना है क्योंकि बमुताबिक़ आयते कुआनी (बेशक अल्लाह तुम्हें गाय के जिब्ह करने का हुक्म देता है) यहाँ लफ्ज़ जिब्ह के लिये इस्तेमाल हुआ है, हसन बिन स़ालेह ने नह को मुस्तहब करार दिया है और बाब में लफ्ज़ मिन ग़ैरि अम्पिहिन्न हज़रत आइशा (रज़ि.) के इस्तिफ़हाम से लिया गया है कि जब वो गोश्त आया तो उन्होंने पूछा कि ये कैसा गोश्त है अगर उनके इल्म से जिब्ह होता तो इस्तिफ़हाम की हाज़त न होती, लेकिन इस तौजीह से एहतिमाल दफ़ा नहीं होता, पस मुम्किन है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) को पहले ही उसका इल्म हो जबकि उनसे इजाज़त लेकर ही ये कुर्बानी उनकी तरफ़ से की गई होगी। उस वक़्त हज़रत आइशा (रज़ि.) को ख़याल हुआ कि ये वही इजाज़त वाली कुर्बानी का गोश्त है या उसके सिवा और कोई है इसीलिये उन्होंने पूछा, इस तौजीह से ये ए' तिराज भी दफ़ा हो गया कि जब बग़ैर इजाज़त के कुर्बानी जाइज़ नहीं जिनकी तरफ़ से की जा रही है तो ये कुर्बानी अज़्वाजुन्नबी (ﷺ) की तरफ़ से क्यों कर जाइज़ होगी। पस उनकी इजाज़त ही से की गई मगर गोश्त आते वक़्त उन्होंने तहक्कीक के लिये पूछा।

**बाब 116 : मिना में नबी करीम (ﷺ) ने जहाँ****नह किया वहाँ नह करना**

۱۱۶- بَابُ النُّحْرِ فِي مَنْحَرِ النَّبِيِّ

بِسْمِ اللَّهِ

**तशरीह :**

आँहज़रत (ﷺ) का नह मक़ाम मिना में जम्-ए-उत्रबा के नज़दीक करीब मस्जिद ख़ैफ़ के पास था, हर चन्द सारे मिना में कहीं भी नह करना दुरुस्त है मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को इतिबाअे सुन्नत मे बड़ा तशहूद था वो दूँढकर उन्ही मक़ामात में नमाज़ पढ़ा करते थे जहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने पढ़ी थी और उसी मक़ाम में नह करते जहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने नह किया था। (वहीदी)

1710. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम बिन राहवे ने बयान किया, उन्होंने ख़ालिद बिन हारिष से सुना, कहा हमसे उबैदुल्लाह इब्ने उमर ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) नह

۱۷۱۰- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ خَالِدَ بْنَ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا عُيَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ: ((أَنَّ عُيَيْدَ اللَّهِ كَانَ

करने की जगह नह करते थे। अब्दुल्लाह ने बताया कि मुरादनबी करीम (ﷺ) के नह करने की जगह से थी।

1711. हमसे इब्राहीम बिन मुंजिर ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन इयाज़ ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन इब्रबा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने इमर (रज़ि.) अपनी कुर्बानी के जानवर को मुज़दलिफ़ा से आख़िर रात में मिला भिजवा देते, ये कुर्बानियाँ जिनमें हाजी लोग नीज़ गुलाम और आज़ाद दोनों तरह के लोग होते, उस मक़ाम में ले जाते जहाँ आँहज़रत (ﷺ) नह किया करते थे। (राजेअ: 982)

इसका मतलब ये है कि कुर्बानियाँ ले जाने के लिये कुछ आज़ाद लोगों की तख़सीस न थी बल्कि गुलाम भी ले जाते।

### बाब 117 : अपने हाथ से नह करना

1712. हमसे सहल बिन बक्कार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़लाबा ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उन्होंने मुख़तसर हदीस बयान की और ये भी बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सात ऊँट खड़े करके अपने हाथ से नह किये और मदीना में दो चितकबरे सींगदार मेंढों की कुर्बानी की। (राजेअ: 1089)

मक़सदे बाब ये कि नबी करीम (ﷺ) ने खुद अपने हाथ से ऊँटों को नह किया इससे बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ।

### बाब 118 : ऊँट को बाँधकर नह करना

1713. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अम्बी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे यूनस ने, उनसे ज़ियाद बिन जुबैर ने कि मैंने देखा कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) एक शख़्स के पास आए जो अपना ऊँट बिठाकर नह कर रहा था, अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उसे खड़ा करके और बाँध दे, फिर नह कर कि यही रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत है। शुअबा ने यूनस से बयान किया कि मुझे ज़ियाद ने ख़बर दी।

मा'लूम हुआ कि ऊँट को खड़ा करके नह करना ही अफ़ज़ल है और इन्फ़िया ने खड़ा और बैठा दोनों तरह नह करना बराबर

يَنْحَرُ لِي الْمَنْحَرِ. قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ: مَنْحَرُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. (راجع: ٩٨٢)

١٧١١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ: ((أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يَتَحْتَّ بِهَذَيْنِ مِنْ جَمْعٍ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ حَتَّى يُدْخَلَ بِهِ مَنْحَرُ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ خُجَّاجٍ فِيهِمُ الْمَحْرُ وَالْمَمْلُوكُ)).

(راجع: ٩٨٢)

### ١١٧- بَابُ مَنْ نَحَرَ بِيَدِهِ

١٧١٢- حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ يَكْظَرٍ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي لَيْلَى عَنْ أَنَسٍ - وَذَكَرَ الْحَدِيثُ - قَالَ: ((وَنَحَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ سَبْعَ بُذُنٍ قِيَامًا، وَصَحَى بِالْمَدِينَةِ كَبْشَتَيْنِ أَمْلَحَتَيْنِ الْقَرْنَيْنِ، مُقْتَصِرًا)). (راجع: ١٠٨٩)

### ١١٨- بَابُ نَحْرِ الْإِبِلِ مُقْبِدَةً

١٧١٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ زِيَادِ بْنِ جَبْرِ قَالَ: ((رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَمَى عَلَى رَجُلٍ لَدَى أَنَاخَ بَدَنَتُهُ يَنْحَرُهَا، قَالَ: ابْتَنَاهَا قِيَامًا مُقْبِدَةً مَنَةً مُحْتَمِلًا)). وَقَالَ شُعْبَةُ عَنْ يُونُسَ: أَخْبَرَنِي زِيَادُ.

रखा है और इस हदीष से उनका रद्द होता है क्योंकि अगर ऐसा होता तो इब्ने उमर (रज़ि.) उस शख्स पर इंकार न करते उस शख्स का नाम मा'लूम नहीं हुआ (वहीदी)। हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़मति हैं, वफ़ीहि अन्न क़ौल इस्माही मिन सुन्नति कजा मफ़ूअन इन्द शैख़ैनि लिइहति जाजिहिमा बिहाज़ल हदीषि फ़ी सहीहैन (फ़तह) या'नी इस हदीष से ये भी प्राबित हुआ कि किसी सहाबी का किसी काम के लिये ये कहना कि ये सुन्नत है ये शैख़ैन के नज़दीक मफ़ूअ हदीष के हुक्म में है इसलिये कि शैख़ैन ने उससे हुज्जत पकड़ी है अपनी सहीहतरीन किताबों बुखारी व मुस्लिम में।

### बाब 119 : ऊंटों को खड़ा करके नह करना

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की यही सुन्नत है इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (सूरह हज्ज में) जो आया है फ़ज़्कुरुस्मल्लाहि अलैहा सवाफ़क के मा'नी यही हैं कि वो खड़े हों सफ़े बाँधकर।

1714. हमसे सहल बिन बक्कार ने बयान किया, कहा कि हमसे बुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जुहर की नमाज़ मदीना में चार रक़अत पढ़ी और अम्र की जुलहुलैफ़ा में दो रक़आत। रात आप (ﷺ) ने वहीं गुज़ारी, फिर जब सुबह हुई तो आप (ﷺ) अपनी ऊंटनी पर सवार होकर तहलील व तस्बीह करने लगे। जब बैदा पहुँचे तो आप (ﷺ) ने दोनों (हज्ज और उम्ह) के लिये एक साथ तल्बिया कहा जब मक्का पहुँचे (और उम्ह अदा कर लिया) तो सहाबा (रज़ि.) को हुक्म दिया कि हलाल हो जाएँ। ओहूज़ूर (ﷺ) ने खुद अपने हाथ से सात ऊँट खड़े करके नह किये और मदीना में दो चितकबरे सींगों वाले मेंढ़े जिब्ह किये। (राजेअ: 1089)

### ١٩- بَابُ نَحْرِ الْبُذْنِ قَائِمَةً

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: سُنَّةُ مُحَمَّدٍ ﷺ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ﴿صَوَافٌ بِقِيَامَةٍ﴾.

١٧١٤- حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ بَكَّارٍ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قَلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الظُّهْرَ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا، وَالْعَصْرَ بِذِي الْخَلِيفَةِ رَكْعَتَيْنِ قِيَامًا بِهَا، فَلَمَّا أَصْبَحَ رَكِبَ رَاحِلَتَهُ فَجَعَلَ يَهْلُلُ وَيُسَبِّحُ. فَلَمَّا غَلَا عَلَى الْيَدَاءِ لَبَّى بِهِمَا جَيْعًا. فَلَمَّا دَخَلَ مَكَّةَ أَمَرَهُمْ أَنْ يَحْلُوا، وَنَحَرَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ سَبْعَ بُذْنٍ قِيَامًا، وَضَعَى بِالْمَدِينَةِ كَبْشَيْنِ أَمْلَحَيْنِ أَقْرَنَيْنِ)).

[راجع: ١٠٨٩]

यही हदीष मुख्तसरन अभी पहले गुजर चुकी है हदीष और बाब में मुताबकत ज़ाहिर है।

1715. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन अलिय्या ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जुहर की नमाज़ मदीना में चार रक़अत और अम्र की जुलहुलैफ़ा में दो रक़अत पढ़ी थीं। अय्यूब ने एक शख्स के वास्ते से बरिवायत अनस (रज़ि.) कहा फिर आप (ﷺ) ने वहीं रात गुज़ारी। सुबह हुई तो फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ी और अपनी ऊंटनी पर सवार हो गए, फिर जब मक्कामे बैदा पहुँचे तो उम्ह और हज्ज दोनों का नाम लेकर लब्बैक पुकारा।

١٧١٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قَلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الظُّهْرَ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا، وَالْعَصْرَ بِذِي الْخَلِيفَةِ رَكْعَتَيْنِ)). وَغَنَّ أَيُّوبَ عَنْ رَجُلٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((كُفُّمُ بَاتٍ حَتَّى أَصْبَحَ فَصَلَّى الصُّبْحَ، ثُمَّ رَكِبَ رَاحِلَتَهُ، حَتَّى إِذَا اسْتَوَتْ بِهِ الْيَدَاءُ أَهْلَ بَعْمُرَةَ

(राजेअ: 1089)

وَحَجَّةُ)) [راجع: 1089]

अय्यूब की रिवायत में रावी मज्हूल है अगर इमाम बुखारी (रह.) ने मुताबअत के तौर पर इस सनद को जिक्र किया तो उसके मज्हूल होने में कबाहत नहीं कुछ ने कहा कि ये शख्स अबू किलाबा है। (वहीदी)

## बाब 120 : क़स्साब को बतौर मज़दूरी उस कुर्बानी के जानवर में से कुछ न दिया जाए

1716. हमसे मुहम्मद बिन क़थीर ने बयान किया, कहा हमको सुफयान घौरी ने ख़बर दी, कहा मुझको इब्ने अबी नजीह ने ख़बर दी, उन्हें मुजाहिद ने, उन्हें अब्दुरहमान बिन अबी लैला ने और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे (कुर्बानी के ऊँटों की देखभाल के लिये) भेजा। इसलिये मैंने उनकी देखभाल की, फिर आप (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया तो मैंने उनके गोश्त तक्सीम किये, फिर आप (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया तो मैंने उनके झोल और चमड़े भी तक्सीम कर दिये। सुफयान ने कहा कि मुझसे अब्दुल करीम ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अब्दुरहमान बिन अबी लैला ने और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि मैं कुर्बानी के ऊँटों की देखभाल करूँ और उनमें से कोई चीज़ क़साई की मज़दूरी में न दूँ।

(राजेअ: 1707)

जैसे कुछ लोगों की आदत होती है कि क़साई की उज्रत में खाल या ओझड़ी या सिरी पाए हवाले कर देते हैं बल्कि उज्रत अपने पास से देनी चाहिये अल्बत्ता अगर क़स्साब को लिह्लाह कोई चीज़ कुर्बानी में दें तो उसमें कोई कबाहत नहीं (वहीदी)। सहीह मुस्लिम में हदीषे जाबिर में है कि उस दिन रसूले करीम (ﷺ) ने 63 ऊँट नह फ़र्माए फिर बाक़ी पर हज़रत अली (रज़ि.) को मामूर फ़र्मा दिया था।

## बाब 121 : कुर्बानी की खाल ख़ैरात कर दी जाएगी

1717. हमसे मुसहद ने बयान किया, हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझे हसन बिन मुस्लिम और अब्दुल करीम जुज़ई ने ख़बर दी कि मुजाहिद ने उन दोनों को ख़बर दी, उन्हें अब्दुरहमान बिन अबी लैला ने ख़बर दी, उन्हें अली (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया था कि आप (ﷺ) की कुर्बानी के

## ١٢٠ - بَابُ لَا يُعْطَى الْجَزَارُ مِنَ الْهَدْيِ شَيْئًا

١٧١٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَنِي النَّبِيُّ ﷺ فَقَسَمْتُ عَلَى الْبَدَنِ، فَأَمَرَنِي فَقَسَمْتُ لُحُومَهَا ثُمَّ أَمَرَنِي فَقَسَمْتُ جَلَالَهَا وَجُلُودَهَا)). قَالَ سُفْيَانُ وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْكَرِيمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنْ أَقُومَ عَلَى الْبَدَنِ، وَلَا أُعْطِيَ عَلَيْهَا شَيْئًا فِي جَزَارِهَا)).

[راجع: ١٧٠٧]

## ١٢١ - بَابُ يَتَصَدَّقُ بِجُلُودِ الْهَدْيِ

١٧١٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُسْلِمٍ وَعَبْدُ الْكَرِيمِ الْحَجَرِيُّ أَنَّ مُجَاهِدًا أَخْبَرَهُمَا أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ:

ऊँटों की निगरानी करें और ये कि आप (ﷺ) के कुर्बानी के जानवरों की हर चीज़ गोश्त चमड़े और झोल ख़ैरात कर दें और क़साई की मजदूर उसमें से न दें।

(राजेअ: 1707)

«أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ أَنْ يَقُومَ عَلَى بُدْنِهِ، وَأَنْ يَفْسِمَ بُدْنَهُ كُلَّهَا لِعُومِهَا وَجُلُودِهَا وَجِلَالِهَا، وَلَا يُعْطِيَ فِي جِزَارَتِهَا شَيْئًا».

[راجع: ١٧٠٧]

ये वो ऊँट थे जो आँहज़रत (ﷺ) हज्जतुल विदाअ में कुर्बानी के लिये ले गए थे, दूसरी रिवायत में है कि ये सौ ऊँट थे उनमें से 63 ऊँटों को तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपने दस्ते मुबारक से नह किया, बाक़ी ऊँटों को आप (ﷺ) के हुक्म से हज़रत अली (रज़ि.) ने नह कर दिया। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, शुम्म आता अलिथ्यिन फ़नहर व अशरकहू फ़ी हदयिही शुम्म अमर मिन कुल्लि बदनतिन बीज़अतन जुइलत फ़ी क्रिदरिन फ़तुबिख़त फ़अकला मिन लहमिहा व शरिबा मिम्मक्रिहा या' नी आप (ﷺ) ने बकाया ऊँट हज़रत अली (रज़ि.) के हवाले कर दिये और उन्होंने उनको नह किया और आप (ﷺ) ने उनको अपनी हदी में शरीक किया फिर हर हर ऊँट से एक-एक बोटी लेकर हाँडी में उसे पकाया गया; पस आप दोनों ने वो गोश्त खाया और शोरबा पिया। ये कुल सौ ऊँट थे जिनमें से आँहज़रत (ﷺ) 63 ऊँट नह फ़र्माये बाक़ी हज़रत अली (रज़ि.) ने नह किये। क़ाललब्बगवी फ़ी शर्हिस्सुन्नति व अम्पा इज़ा आता उज्जतहू कामिलतन शुम्म तसद्क अलैहि इज़ा कान फ़क़ीरन कमा तुसद्क अलल फ़ुक्राइ फ़ला बास बिज़ालिक (फ़तह) या' नी इमाम बावी ने शर्हुस्सुन्ना में कहा कि क़साई को पूरी उज्जत देने के बाद अगर वो फ़क़ीर है जो बतौर सदका कुर्बानी का गोश्त दे दिया जाए तो कोई हर्ज नहीं है। व क़द इत्तफ़कू अला अन्न लहमहा ला युबाउ फ़लिज़ालिकल जुलूदि वलजलाल व अजाजहुल औज़ाई व अहमद व इस्हाक़ व अबू शौर (फ़तह) या' नी इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि कुर्बानी का गोश्त बेचा नहीं जा सकता उसके चमड़े और झोल का भी यही हुक्म है मगर उन चीज़ों को इमाम औज़ाई और अहमद व इस्हाक़ और अबू शौर ने जाइज़ कहा है चमड़ा और झोल बेचकर कुर्बानी के मुस्तहिक़ीन में ख़र्च कर दिया जाए।

## बाब 122 : कुर्बानी के जानवरों के झोल भी

### सदका कर दिये जाएँ

1718. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उनसे सैफ़ बिन अबी सुलैमान ने बयान किया, कहा मैंने मुजाहिद से सुना, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने अबी लैला ने बयान किया और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) सौ ऊँट कुर्बान किये, मैंने आप (ﷺ) के हुक्म के मुताबिक़ उनके गोश्त बांट दिये, फिर आप (ﷺ) ने उनके झोल भी तक्सीम करने का हुक्म दिया और मैंने उन्हें भी तक्सीम किया, फिर चमड़े के लिये हुक्म दिया और मैंने उन्हें भी बांट दिया।

(राजेअ: 1707)

## ١٢٢ - بَابُ يُصَدَّقُ بِجِلَالِ الْبُذْنِ

١٧١٨ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سَيْفُ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا يَقُولُ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي لَيْلَى أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ: «رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْتِي بُدْنَهُ، فَأَمَرَنِي بِلُحُومِهَا فَتَسْمِنُهَا، ثُمَّ أَمَرَنِي بِجِلَالِهَا فَتَسْمِنُهَا، ثُمَّ بِجُلُودِهَا فَتَسْمِنُهَا».

[راجع: ١٧٠٧]

कुर्बानी के जानवर का चमड़ा, उसका झोल सब ग़ुरबा व मसाकीन में अल्लाह की रज़ा के लिये तक्सीम कर दिया जाए या उनको फ़रोख़्त करके मुस्तहिक़ीन को उनकी क़ीमत दे दी जाए, चमड़े का खुद अपने इस्तेमाल में मुसल्ला या ढोल वग़ैरह बनाने के लिये लाना भी जाइज़ है। आजकल मदारिसे इस्लामिया के ग़रीब तल्बा भी उस मद से इम्दाद किये जाने के मुस्तहिक़ हैं जो अपना वज़न और मुता'ल्लिक़ीन को छोड़कर दूर-दराज़ मदारिसे इस्लामिया में ख़ालिफ़ दीनी ता'लीम हासिल करने के लिये

सफ़र करते हैं और जिनमें अक़षरियत ग़रीबों की होती है, ऐसे मद से उनकी इमदाद बहुत बड़ा कारे प्रवाब है।

### बाब 123 : (सूरह हज्ज) में

अल्लाह तआला ने फ़र्माया और जब मैंने बतला दिया इब्राहीम को ठिकाना इस घर का और कह दिया कि शरीक न कर मेरे साथ किसी को, और पाक रख मेरा घर तवाफ़ करने वालों और खड़े रहने वालों, और रुकूअय सज्दा करने वालों के लिये और पुकार लोगों में हज्ज के वास्ते कि आरै तेरी तरफ़ पैदल और सवार होकर, दुबले-पतले ऊँटों पर, चले आते राहों दूर-दराज़ से कि पहुँचे अपने फ़ायदों की जगह पर और याद करें अल्लाह का नाम कई दिनों में जो मुक़रर हैं, चौपाये जानवरों पर जो उसने दिये हैं, सो उनको खाओ और खिलाओ बुरे हाल फ़क़ीर को, फिर चाहिये कि दूर करें अपना मैल—कुचैल और पूरी करें अपनी नज़ें और तवाफ़ करें उस क़दीम घर (का'बा) का, ये सुन चुके और जो कोई अल्लाह की इज़्जत दी हुई चीज़ों की इज़्जत करे तो उसको अपने मालिक के पास भलाई पहुँचेगी। (अल हज्ज : 30-36)

### باب ١٢٣

﴿وَإِذْ يَوَاتُكَ لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا، وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ. وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ. لِيَشْهَدُوا مَنَاقِبَ لَّهُمْ، وَيُذَكِّرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَفْلُوحَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَيْعَتِهِ الْأَنْعَامِ، فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا أَمْرَ اللَّهِ وَالْفَقِيرَ، ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوُّرُوا بِالْبَيْتِ الْعَمِيقِ. ذَلِكَ وَمَنْ يُعْظَمْ حُرْمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ عَزِيزٌ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾  
[الحج : ٢٦ - ٣١]

**तशरीह :** इस बाब में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने सिर्फ़ आयते कुआनी पर इख़्तिसार किया और कोई हदीष बयान नहीं की, शायद उनकी शर्त पर इस बाब के मुनासिब कोई हदीष उनको न मिली हो या मिली हो और का'बा का इतिफ़ाक़ न हुआ हो, कुछ नुस्खों में उसके बाद का बाब मज़कूर नहीं बल्कि यूँ इबारत है व मा चाकुलु मिनल्बुदनि व मा यतसहक़ बिही के साथ इस सूत्र में आगे जो हदीषें बयान की हैं वो उसी बाब से मुता'ल्लिक होंगी। गोया पहली आयते कुआनी से प्राबित किया कि कुर्बानी के गोश्त में से खुद भी खाना दुस्त है, फिर हदीषों से भी प्राबित किया (वहीदी)। मक़सूदे बाब आयत का टुकड़ा फ़कुलु मिन्हा व अतइमुल बाइसल फ़क़ीर (अल्हज्ज : 28) है या'नी कुर्बानी का गोश्त खुद खाओ और ग़रीब व मसाकीन को खिलाओ।

### बाब 124 : कुर्बानी के जानवरों में से क्या खाएँ और क्या ख़ैरात करें

और अब्दुल्लाह ने कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा कि एह़राम में कोई शिकार करे और उसका बदला देना पड़े तो बदला के जानवर और नज़्र के जानवर से खुद कुछ न खाए और बाक़ी सब में से खा ले और अत्ता ने कहा तमतोअ की कुर्बानी में से खाए और खिलाए।

1719. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने,

### باب ١٢٤ - يَأْكُلُ مِنَ الْبُذْنِ وَ مَا يَتَصَدَّقُ

وَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْكَلْبِ اللَّهُ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : لَا يُؤْكَلُ مِنْ جَزَاءِ الصَّيْدِ وَالنَّذْرِ وَيُؤْكَلُ مِمَّا مِوَىٰ ذَلِكَ. وَقَالَ عَطَاءٌ : يَأْكُلُ وَيُطْعَمُ مِنَ الْمُتَعَةِ.

١٧١٩ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ

उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अत्ता ने, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि हम अपनी कुर्बानी का गोشت मिना के बाद तीन दिन से ज़्यादा नहीं खाते थे, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने हमें इजाज़त दे दी और फ़र्माया कि खाओ भी और तौशा के तौर पर साथ भी ले जाओ चुनाँचे हमने खाया और साथ भी लाए। इब्ने जुरैज ने कहा कि मैंने अत्ता से पूछा क्या जाबिर ने ये भी कहा था कि यहाँ तक कि हम मदीना पहुँच गये, उन्होंने कहा कि नहीं ऐसा नहीं फ़र्माया। (दीगर मक़ाम: 2980, 5424, 5567)

**तशरीह:** या'नी जाबिर (रज़ि.) ने ये नहीं कहा कि हमने मदीना पहुँचने तक उस गोشت को तौशा के तौर पर रखा, लेकिन मुस्लिम की रिवायत में यूँ है कि अत्ता ने नहीं के बदले यहाँ कहा, शायद अत्ता भूल गए हों पहले नहीं कहा हो फिर याद आया तो हों कहने लगे। इस हदीष से वो हदीष मन्सूख है जिसमें तीन दिन से ज़्यादा कुर्बानी का गोشت रखने से मना फ़र्माया गया है। (वहीदी)

1720. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन हिलाल ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, कहा मुझसे अमर ने बयान किया, कहा मैंने आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि हम मदीना से रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले तो ज़िक्रअदा के पाँच दिन बाक़ी रह गए थे, हमारा इरादा सिर्फ़ हज ही का था, फिर जब मक्का के करीब पहुँचे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिनके साथ हदी न हो वो बैतुल्लाह का तवाफ़ करके हलाल हो जाएँ। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फिर हमारे पास बकर ईद के दिन गाय का गोشت लाया गया तो मैंने पूछा कि ये क्या है? उस वक़्त मा'लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवियों की तरफ़ से कुर्बानी की है। यह्या बिन सईद ने कहा कि मैंने इस हदीष का क़ासिम बिन मुहम्मद से ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि इमरह ने तुमसे ठीक-ठीक हदीष बयान कर दी है। (दोनों अहदीष से मक्क़दे बाब ज़ाहिर है) कि कुर्बानी का गोشت खाने और बतौर तौशा रखने की आम इजाज़त है, खुद कुर्आन मजीद में फकुलू मिन्हा का सैगा मौजूद है कि उसे गुरबा मसाकीन को भी तक्सीम करो और खुद भी खाओ। (राजेअ: 294)

ابن جُرَيْجٍ حَدَّثَنَا عَطَاءُ مَسْعٍ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((كُنَّا لَا نَأْكُلُ مِنْ لَحْمٍ يُدِينَا فَوْقَ ثَلَاثِ أَمْنِي، فَرَعِمُ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((كُلُوا وَتَزَوَّدُوا)) فَآكَلْنَا وَتَزَوَّدْنَا قُلْتُ لِعَطَاءٍ: أَقَالَ حَتَّى جِئْنَا الْمَدِينَةَ؟ قَالَ: لَا. [أطرافه في: ٢٩٨٠، ٥٤٢٤، ٥٥٦٧].

١٧٢٠- حَدَّثَنَا عَلِيدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنِي عُمَرُو قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: ((عَزَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لِخَمْسِ بَقَيْنَ مِنْ ذِي الْقَعْدَةِ وَلَا تُرَى إِلَّا الْحَجُّ، حَتَّى إِذَا ذَنُونَا مِنْ مَكَّةَ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَدْيٌ إِذَا طَافَ بِأَيْتِ ثَمُ يُحِلُّ. قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: فَذُعِلَ عَلَيْنَا يَوْمَ النَّحْرِ بِلَحْمٍ بَقَرٍ، فَقُلْتُ مَا هَذَا؟ فَقِيلَ ذَبَحَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ أَزْوَاجِهِ)). قَالَ يَحْيَى: فَذَكَرْتُ هَذَا الْحَدِيثَ لِلْقَاسِمِ فَقَالَ: أَتَتَكَ بِالْحَدِيثِ عَلَى وَجْهِهِ. [راجع: ٢٩٤]

बाब 125 : सर मुँडाने से पहले जिब्ह करना

1721. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया,

١٢٥- بَابُ الذَّبْحِ قَبْلَ الْخُلُقِ

١٧٢١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ



उनसे हुशैम बिन बशीर ने बयान किया, उन्हें मन्सूर बिन ज़ाज़ान ने खबर दी, उन्हें अत्ता बिन अबी रिबाह ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस शख्स के बारे में पूछा जो कुर्बानी का जानवर ज़िबह करने से पहले ही सर मुँडवा ले, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कोई क़बाहत नहीं, कोई क़बाहत नहीं। (तर्जुमा और बाब में मुवाफ़क़त ज़ाहिर है) (राजेअ: 84)

1722. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमको अबूबक्र बिन अयाश ने खबर दी, उन्हें अब्दुल अज़ीज़ बिन रफीअ ने, उन्हें अत्ता बिन अबी रिबाह ने और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक आदमी ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि हुज़ूर! कुर्बानी करने से पहले सर मुँडवा लिया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कोई हर्ज नहीं, फिर उसने कहा और कुर्बानी को रमी से पहले कर लिया औहज़रत (ﷺ) ने फिर भी यही फ़र्माया कि कोई हर्ज नहीं और अब्दुरहीम राज़ी ने इब्ने खुषेम से बयान किया, कहा कि अत्ता ने खबर दी और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से और कासिम बिन यह्या ने कहा कि मुझसे इब्ने खुषेम ने बयान किया, उनसे अत्ता ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। अफ़फ़ान बिन मुस्लिम सिरार ने कहा कि मेरा ख़याल है कि वुहैब बिन ख़ालिद से रिवायत है कि इब्ने खुषेम ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। और हम्माद ने कैस बिन सअद और अब्बाद बिन मन्सूर से बयान किया, उनसे अत्ता ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया।

1723. हमसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से एक आदमी ने मसला पूछा कि शाम होने के बाद मैंने रमी की है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई हर्ज नहीं। साइल ने कहा कि कुर्बानी करने से पहले मैंने सर मुँडा

حَوْشِبِ حَدَّثَنَا هُثَيْمٌ أَخْبَرَنَا مَنْصُورٌ عَنْ غَطَاءٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ مَنْ حَلَقَ قَبْلَ أَنْ يَذْبَحَ وَلَمْ يَحْوِهِ فَقَالَ: ((لَا حَرَجَ، لَا حَرَجَ)). (راجع: ٨٤)

١٧٢٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: زُرْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ فَقَالَ: ((لَا حَرَجَ)). قَالَ: خَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ أَذْبَحَ، قَالَ: ((لَا حَرَجَ)). قَالَ: ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ، قَالَ: ((لَا حَرَجَ)). وَقَالَ عَبْدُ الرَّحِيمِ الرَّازِيُّ عَنْ ابْنِ خُثَيْمٍ أَخْبَرَنِي غَطَاءٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ الْقَاسِمُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنِي ابْنُ خُثَيْمٍ عَنْ غَطَاءٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ عَفَّانُ: أَرَاهُ عَنْ وَثْبِ بْنِ حَدَّثَنَا ابْنُ خُثَيْمٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ حَمَّادٌ عَنْ قَيْسِ بْنِ مَعْدٍ وَعَبَادِ بْنِ مَنْصُورٍ عَنْ غَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ.

١٧٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا الْأَعْلَى حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: رَمَيْتُ بَعْدَ مَا أَمْسَيْتُ، فَقَالَ: ((لَا حَرَجَ)). قَالَ: خَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ

लिया, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कोई हर्ज नहीं। (राजेअ: 84)

أَنْحَرُ، قَالَ: ((لَا حَرْجَ)). [راجع: ٨٤]

**तशरीह:** कस्तलानी ने कहा रमी करने का अफ़ज़ल वक़्त ज़वाल तक है और गुरुबे आफ़ताब से पहले तक भी उम्दा है और उसके बाद भी जाइज़ है और हलक़ और क़सर और तवाफ़े ज़ियारत का वक़्त मुतअय्यन नहीं, लेकिन यौमुन्नहर से उनकी ताख़ीर करना मकरूह है और अय्यामे तशरीक़ से ताख़ीर करना सख़्त मकरूह है। गर्ज़ यौमुन्नहर के दिन हाजी को चार काम करने होते हैं रमी और कुर्बानी और हलक़ या क़सर इन चारों में तर्तीब सुन्नत है, लेकिन फ़र्ज़ नहीं अगर कोई काम दूसरे से आगे—पीछे हो जाए तो कोई हर्ज नहीं जैसे कि इन हदीषों से निकलता है। इमाम मालिक और शाफ़िई और इस्हाक़ और हमारे इमाम अहमद बिन हम्बल सबका यही क़ौल है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) कहते हैं कि उस पर दम लाज़िम आया और अगर क़ारिन है तो दो दम लाज़िम आएँगे (वहदीदी)। जब शारेअ अलैहिस्सलाम ने खुद ऐसी हालतों में ला ह़रज फ़र्मा दिया तो ऐसे मवाक़ेअ पर एक या दो दम लाज़िम करना सहीह नहीं है आजकल मुअल्लिमीन हाजियों को उन बहानों से जिस क़दर परेशान करते हैं और उनसे रुपया ऐंठते हैं ये सब हरकतें सख़्त नापसन्दीदा हैं। फ़िल् वाक़ेअ कोई शरई कोताही काबिले दम हो तो वो अपनी जगह पर ठीक है मगर ख़वाह मख़वाह ऐसी चीज़ें अज़ख़ुद पैदा करना बहुत ही मअयूब है।

इस हदीष से मुफ़्तियाने इस्लाम को भी सबक़ मिलता है जहाँ तक मुम्किन हो फ़त्वा पूछा करने वालों के लिये किताबो—सुन्नत की रोशनी में आसानी व नमी का पहलू इख़्तियार करें मगर हूदूदे शरइया में कोई भी नमी न होनी चाहिये।

1724. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे बाप इज़्मान ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें क्रैस बिन मुस्लिम ने, उन्हें तारिक़ बिन शिहाब ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में जब हाज़िर हुआ तो आप बट्हा में थे। (जो कि मक्का के क़रीब एक जगह है) आप (ﷺ) ने पूछा क्या तूने हज्र की निय्यत की है? मैंने कहा कि हाँ, आप (ﷺ) ने पूछा कि तूने एहराम किस चीज़ का बाँधा है? मैंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के एहराम की तरह एहराम बाँधा है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तूने अच्छा किया अब जा। चुनौचे (मक्का पहुँचकर) मैंने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और सफ़ा व मरवा की सई की, फिर मैं बनू क्रैस की एक ख़ातून के पास आया और उन्होंने मेरे सर की जूँ निकाली। उसके बाद मैंने हज्र की लब्बैक पुकारी। उसके बाद मैं उमर (रज़ि.) के अहदे ख़िलाफ़त तक उसी का फ़त्वा देता रहा फिर जब मैंने उमर (रज़ि.) से इसका ज़िक़्र किया तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हमें किताबुल्लाह पर भी अमल करना चाहिये और उसमें पूरा करने का हुक्म है, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत पर भी अमल करना चाहिये और आँहज़रत (ﷺ) कुर्बानी से पहले हलाल नहीं हुए थे। (राजेअ: 1559)

١٧٢٤ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قُتَيْبِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَفَوْ بِالطَّحَاءِ فَقَالَ: ((أَحْبَبْتُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((بِمَا أَهْلَلْتُ؟)) قُلْتُ: كَيْسَ يَاهَلَالُ كَيْهَلَالِ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: أَحْسَنْتَ، أَنْطَلِقْ لَطَلْتُ بِالنَّيْتِ وَبِالصَّلَاةِ وَالْمَرْوَةِ. ثُمَّ أَتَيْتُ امْرَأَةً مِنْ بَنَاءِ بَنِي قُتَيْبٍ فَقُلْتُ رَأْسِي، ثُمَّ أَهْلَلْتُ بِالْحَجِّ، فَكُنْتُ الْفِي بِهِ النَّاسَ حَتَّى عِلَافَةَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَلَذَكْرَتُهُ فَقَالَ: إِنْ تَأَخَّلْتُ بِكِتَابِ اللَّهِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُنَا بِالنِّسَامِ، وَإِنْ تَأَخَّلْتُ بِسُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمْ يَجْعَلْ حَتَّى يَنْلِغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ)).

**तशरीह :**

हुआ ये कि अबू मूसा (रज़ि.) के साथ कुर्बानी न थी। जिन लोगों के साथ कुर्बानी न थी गो उन्होंने मीकात से हज्ज की नियत की थी मगर आँहज़रत (ﷺ) ने हज्ज को फ़रस्ख करके उनको उम्रह करके एहराम खोलने का हुक्म दिया और फ़र्माया अगर मेरे साथ में हदी न होती तो मैं भी ऐसा ही करता, अबू मूसा (रज़ि.) उसी के मुताबिक़ फ़त्वा देते रहे कि तमतोअ करना दुस्त है और हज्ज को फ़रस्ख करके उम्रह बना देना दुस्त है, यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ि.) का ज़माना आया तो उन्होंने तमतोअ से मना किया (वहीदी)। इस रिवायत से बाब का मतलब ये निकला कि जब आँहज़रत (ﷺ) ने उस वक़्त तक एहराम नहीं खोला जब तक कुर्बानी अपने ठिकाने नहीं पहुँच गई या नो मीना में ज़िबह या नह नहीं की गई तो मा'लूम हुआ कि कुर्बानी हलक़ पर मुक़द्दम है और बाब का यही मतलब था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अल्लाह की किताब से ये आयत मुराद ली, **वअतिम्मूल हज्ज वल उम्रत लिह्लाहि** (सूरह : बकर 196) और इस आयत से इस्तिदलाल करके उन्होंने हज्ज को फ़रस्ख करके उम्रह बना देना और एहराम खोल डालना जाइज़ समझा हालाँकि हज्ज को फ़रस्ख करके उम्रह करना आयत के खिलाफ़ नहीं है क्योंकि उसके बाद हज्ज का एहराम बाँधकर उसको पूरा करते हैं और हदी से भी इस्तिदलाल सहीह नहीं इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) हदी साथ लाए थे और जो शख्स हदी साथ लाए उसको बेशक एहराम खोलना उस वक़्त तक दुस्त नहीं जब तक ज़िबह न हो ले लेकिन कलाम उस शख्स में है जिसके साथ हदी न हो (वहीदी)। मुताबक़तुहु लिन्न ज़ुमति मिन क़ौलि उमर फ़ी हि लम यहिल्ल हत्ता बल ग़ाल्ह दयु महिल्ल हूलि अन्न बुलू ग़ाल्ह दयि महिल्ल हू यदुल्लु अला ज़बिह ल्ह दयि फ़लौ तक्रह मल्ह क़ु अ लैहि लमर मुतहल्ल लन क़रल बुलू ग़ाल्ह दयि महिल्ल हू ब हाज़ा हुवल अल्लु व हुव तकदी मुज़िबि अलल्ल हल्लि व अम्मा ताखीरुहु फ़हुव रुख़सतुन (फ़तह)

**बाब 127 : उसके बारे में जिसने एहराम के वक़्त सर के बालों को जमा लिया और एहराम खोलते वक़्त सर मुँडा लिया**

۱۲۷- بَابُ مَنْ كَبَدَ رَأْسَهُ عِنْدَ الْإِحْرَامِ وَخَلَقَ

या'नी गोंद वगैरह से ताकि गर्दो-गुबार से महफूज़ रह सके इसको अरबी जुबान में तल्बीद कह सकते हैं।

1725. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि हफ़्सा (रज़ि.) ने अर्ज की या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या वजह हुई कि और लोग तो उम्रह करके हलाल हो गए और आप (ﷺ) ने उम्रह कर लिया और हलाल नहीं हुए? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने अपने सर के बाल जमा लिये थे और कुर्बानी के गले में क़लादा पहनाकर मैं (अपने साथ) लाया हूँ, इसलिये जब तक मैं नह न कर लूँगा मैं एहराम नहीं खोलूँगा। (राजेअ : 1566)

۱۷۲۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ حَفْصَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّهَا قَالَتْ : ((يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَا كَانَ النَّاسُ يَخْلَوْنَ بِعُمْرَةٍ وَلَمْ يَخْلُلْ أَنْتَ مَنْ عُمْرَتِكَ؟)) قَالَ : ((إِنِّي كَبَدْتُ رَأْسِي وَقَلَدْتُ هَذِينَ، فَلَا أُحِلُّ حَتَّى أُنَحِّسَ)). [راجع: ۱۵۶۶]

**बाब 128 : एहराम खोलते वक़्त बाल मुँडाना या तरशवाना**

۱۲۸- بَابُ الْخَلْقِ وَالْتَقْصِيرِ عِنْدَ الْإِحْلَالِ

1726. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब बिन अबी हम्ज़ह ने ख़बर दी, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माया करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर अपना सर मुँदाया था।

۱۷۲۶- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ بْنُ أَبِي حَزْرَةَ قَالَ نَافِعٌ كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : ((خَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِي حَجَّتَهُ)).

(दीगर मक़ाम : 4410, 4411)

[طرفاء في : ٤٤١٠، ٤٤١١.]

मा'लूम हुआ कि सर मुँडवाना या बाल तरशवाना भी हज्ज का एक अहम रुकन है।

1727. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ की ऐ अल्लाह! सर मुँडाने वालों पर रहम फ़र्मा! सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज किया और कतराने वालों पर? आँहज़रत (ﷺ) ने अब भी दुआ की ऐ अल्लाह! सर मुँडाने वालों पर रहम फ़र्मा! सहाबा (रज़ि.) ने फिर कहा और कतराने वालों पर? अब आप (ﷺ) ने फ़र्माया और कतराने वालों पर भी, लैष ने कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह ने सर मुँडाने वालों पर रहम किया एक या दो बार, उन्होंने बयान किया कि अब्दुल्लाह ने कहा मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि चौथी बार आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कतरवाने वालों पर भी।

١٧٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ وَحَدَّثَنَا اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «اللَّهُمَّ ارْحَمِ الْمُخَلْفِينَ». قَالُوا: وَالْمُقَصِّرِينَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: «اللَّهُمَّ ارْحَمِ الْمُخَلْفِينَ». قَالُوا: وَالْمُقَصِّرِينَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: «وَالْمُقَصِّرِينَ». وَقَالَ الثَّالثُ حَدَّثَنِي نَافِعٌ: «رَحِمَ اللَّهُ الْمُخَلْفِينَ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ». قَالَ: وَقَالَ غَبِيْدُ اللَّهِ حَدَّثَنِي نَافِعٌ: «وَقَالَ لِي الرَّابِعُ: «وَالْمُقَصِّرِينَ»».

**तशरीह:** या'नी लैष को इसमें शक है कि आप (ﷺ) ने सर मुँडाने वालों के लिये एक बार दुआ की या दो बार, और अक़्बर रावियों का इतिफ़ाक़ इमाम मालिक की रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने सर मुँडाने वालों के लिये दो बार दुआ की और तीसरी बार कतरवाने वालों को भी शरीक कर लिया। अब्दुल्लाह की रिवायत में है कि कतरवाने वालों को चौथी बार में शरीक किया। बहरहाल हदीष से ये निकला कि सर मुँडाना बाल कतरवाने से अफ़ज़ल है, इमाम मालिक और इमाम अहमद (रह.) कहते हैं कि सारा सर मुँडाए और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक चौथाई सर मुँडाना काफ़ी है। और इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक तीन बाल मुँडाना काफ़ी हैं कुछ शाफ़िअिया ने एक बाल मुँडाना भी काफ़ी समझा है और औरतों को बाल कतराना चाहिये उनको सर मुँडाना मना है (वहीदी)। सर मुँडाने या बाल कतरवाने का वाक़िया हज्जतुल विदाअ से मुता'ल्लिक है और हुदेबिया से भी जबकि मक्का वालों ने आप (ﷺ) को उम्रह से रोक दिया था, आप (ﷺ) ने मैदाने हुदेबिया ही में हलक़ और कुर्बानी की अब भी जो लोग रास्ते में हज्ज उम्रह से रोक दिये जाते हैं उनके लिये यही हुक्म है।

हाफ़िज़ अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, व अम्मस्सबबु फ़ी तक्ररीरिहुआइ लिमुहल्लिक़ीन फ़ी हज्जतिल विदाइ फ़क़ाल इब्नु अज़ीर फ़िन्निहायति कान अक़्रुमन हज्ज मअ रसूलिल्लाहि (ﷺ) लम यसुक्लिहदय फ़लम्मा अमरहुम अय्यप्सखुल्हज्ज इललउम्रति पुम्म यतहल्ललू मिन्हा व यहलिकू रूऊसहुम शक्क अलैहिम पुम्म लम्मा लम यकुन लहुम बुद् मिनत्ताअति कानत्तक्सीरु फ़ी अन्फुसिहिम अख़प्फु मिनल्हल्लिक़ि फ़फ़अलहू अक़्रुहुम फ़रज्जहज़बिय्यु (ﷺ) फ़िअलम्मन हलक़ लिक़्ौनिही फ़ी इम्तिषालिलअम् इन्तिहा मुहल्लिक़ीन या'नी सर मुँडाने वालों के लिये आप (ﷺ) ने बक़रत दुआ की क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) के साथ अक़्बर हाज़ी वो थे जो अपने साथ हदी लेकर नहीं आए थे पस जब आँहज़रत (ﷺ) ने उनको हज्ज के फ़सख़ करने और उम्रह कर लेने और एहराम खोल देने का हुक्म दिया और सर मुँडाने का हुक्म फ़र्माया तो ये अम् उन पर बार गुज़रा फिर उनके लिये इम्तिषाले अम् भी ज़रूरी था इसलिये उनको हलक़ से तक्सीर में कुछ आसानी नज़र आई, पस अक़्बर ने यही किया। पस आँहज़रत (ﷺ) ने सर मुँडाने वालों के काम को तरजीह दी इसलिये कि ये इम्तिषाले अम् में ज़्यादा ज़ाहिर बात थी अरबों की आदत भी अक़्बर वालों को बढ़ाने उनसे जीनत हासिल करने की थी और सर मुँडाने का रिवाज उनमें कम ही था वो बालों को अज़्मियों की शोह्रत का ज़रिया भी गरदानते

और उनकी नकल अपने लिये बाड़िषे शोह्शत समझते थे, इसलिये उनमें से अकषर सर मुँडाने को मकरूह जानते और बाल कतरवाने पर किफायत करना पसन्द करते थे। हदीषे बाला से ऐसे लोगों के लिये दुआ करना भी प्राबित हुआ जो बेहतर से बेहतर कामों के लिये आमादा हों और ये भी प्राबित हुआ कि अम्मे मरजूह पर अमल करने वालों के लिये भी दुआ-ए-खैर की दरख्वास्त की जा सकती है ये भी प्राबित हुआ कि हलक की जगह तकसीर भी काफी है मगर बेहतर हलक ही है।

1728. हमसे इयाश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फुजैल ने बयान किया, उनसे अम्मारा बिन केअक्राअ ने बयान किया, उनसे अबू जुआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! सर मुँडाने वालों की मरिफिरत फर्मा! सहाबा ने कहा और कतरवाने वालों के लिये भी (यही दुआ कीजिए) लेकिन आँहजरत (ﷺ) ने इस बार भी यही फर्माया ऐ अल्लाह! सर मुँडाने वालों की मरिफिरत फर्मा! फिर सहाबा (रजि.) ने कहा और कतरवाने वालों की भी! तीसरी बार आँहजरत (ﷺ) ने फर्माया और कतरवाने वालों की भी मरिफिरत फर्मा।

۱۷۲۸- حَدَّثَنَا عُمَارُ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ الْقُعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُخَلَّفِينَ)) قَالُوا وَلِلْمَقْصَرِينَ، قَالَ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُخَلَّفِينَ)) قَالُوا وَلِلْمَقْصَرِينَ، قَالَ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهَا ثَلَاثًا)) قَالُوا: ((وَلِلْمَقْصَرِينَ)).

1729. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने, उनसे नाफेअ ने कि अब्दुल्लाह बिन डमर (रजि.) ने फर्माया कि नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के बहुत से अस्हाब ने सर मुँडवाया था लेकिन कुछ ने कतरवाया भी था। (राजेअ : 1639)

۱۷۲۹- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ قَالَ ((حَلَّقَ النَّبِيُّ ﷺ وَطَائِفَةٌ مِنْ أَصْحَابِهِ وَقَصَّرَ بَعْضُهُمْ)).

[راجع: ۱۶۳۹]

1730. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे हसन बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे ताऊस ने बयान किया, उनसे हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.) और उनसे मुआविया (रजि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाल कैंची से काटे थे।

۱۷۳۰- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ: ((قَصَّرْتُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

**तशरीह:** अराकाने हज्ज की बजाआवरी के बाद हाजी को सर मुँडाने हैं या कतरवाने, दोनों सूर्तें जाइज हैं, मगर मुँडाने वालों के लिये आप (ﷺ) ने तीन बार मरिफिरत की दुआ की और कतरवाने वालों के लिये एक बार, जिससे मा' लूम होता है कि अल्लाह के पास इस मौके पर बालों का मुँडवाना ज्यादा महबूब है। इस रिवायत में हजरत मुआविया का बयान वारिद होता है, उसके वक्त की तअय्युन करने में शारेहीन के मुख्तलिफ अक्वाल हैं। ये भी है कि ये वाकिया हज्जतुल विदाअ के बारे में नहीं है; मुम्किन है कि ये हिजरत से पहले का वाकिया हो क्योंकि अस्हाबे सियर के बयान के मुताबिक आँहजरत (ﷺ) ने हिजरत से पहले भी हज्ज किये हैं। अल्लामा हाफिज़ इब्ने हजर (रह.) फर्माते हैं, व अख्रजइब्नु असाकिर फ़ी तारीख़ दमिश्क

मिन तर्जुमति मुआवियत तसरीहु मुआवियत बिअन्नहु अस्लम बैनल हुदैबियति वल क़ज़ियति व अन्नहु कान युख़्फ़ी इस्लामहु ख़ौफ़मिन अबवैहि व कानन्नबिय्यु (ﷺ) लम्मा दख़ल फ़ी इम्तिल्क़ज़ियति मक़त हज्ज अवशरु अहलिहा अन्हा हत्ता ला यन्जुरुनहु व अस्हाबुहु यतफ़ून् फ़िल्बैति फ़लअल्ल मुआवियत कान मिम्मन तख़ल्लफ़ बिमक़त लिसबबि इन्तिजाहु व ला युआरिज़ुहु अयज़न क़ौलु सज़ादिब्नि अबी वक्कास (रज़ि.) फ़ीमा अख़रजहु मुस्लिम व ग़ैरहा फ़अल्लाहा यअनी अलउम्त फ़िशहाहिल हज्जि व हाज़ा यौमइज़िन काफ़िरून बिल अर्शि बिजिम्मतेनि यअनी बुयूत मक़त युशीरु इला मुआवियत लिअन्नहु यहमिलु अला अन्नहु अख़बर बिमस्तहब मिन ख़ालिही व लम यत्तलिअअला इस्लामिही लिअन्नहु कान यख़्फ़ीहि व युन्किरु अला मा जव्वज़ुहु अन्न तक्सीरहु कान फ़ी उम्मिही अल्लिअरानतु अन्नबिय्य (ﷺ) रकिब मिनल्लिअरानति बअद अहरम बिउम्ततिन व लम यस्तहब अहम्मअहु इल्ला बअज़ु अस्हाबिही अल्मुहाज़िरीन फ़क़दिम मक़त फ़ताफ़ व सज़ा व हलक़ व रजअ इलल जिअरानति फ़अस्बह बिहा कबाइतिन फ़ख़फ़ियत इम्तुहु अला क़षीरिम्मिन्नासि कज़ा अख़रजहुत्तिर्मिज़ी व ग़ैरहु व लम यउद मुआवितु फ़ीमन कान सहिबहु हीनइज़िन व ला कान मुआवियतु फ़ीमन तख़ल्लफ़ अन्हु बिमक़त बल कान मिनल क़ौमि व आताहु मा उतिय अबाहु मिनल ग़नीमत मअ जुमलतिल मुअल्लफ़ति व अख़जल हाकिम फ़िल अवलील फ़ी आख़िरि किस्सति ग़ज्वति हुनैन अन्नलज़ी हलक़ रासहु (ﷺ) फ़ी इम्तिहिल्लती इअतमरहा मिनल जिअरानति अबू हिन्द अब्दु बनी बयाज़ा फ़इन षबत हाज़ा व षबत इन्न मुआवियत कान हीनइज़िन मअहु औ कान बिमक़त फ़क़सर अन्हु बिल मर्वति अम्कनलजम्ज़ बिअय्यकून मुआवियतु कसर अन्हु अव्वलन व कान इहलाक़न ग़ाइबन फ़ी बअज़ि हाज़तिही शुम्म हज़र व अमरहु अय्यकमल इज़ालत शशअरि बिल्हलिक्क लिअन्नहु फ़ज़लु फ़फ़अल व इन षबत अन्नहु (ﷺ) हलक़ फ़ीहा जाअ हाज़ल इहतिमालु बिऐनिही व हसलतौफ़ीक़ बैनल अख़बारि कुल्लिहा व हाज़ा मिम्मा फ़तहल्लाहु अलय्य बिही फ़ी हाज़ल्फ़हि व लिल्लाहिल हम्द शुम्म लिल्लाहिल हम्द अबदन. (फ़तह)

ख़ुलासा इस इबारत का ये है कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) हुदैबिया के साल और इम्तुल क़ज़ाअ के साल के बीच इस्लाम ला चुके थे, मगर वो वालिदेन के डर से अपने इस्लाम को ज़ाहिर नहीं कर रहे थे, इम्तुल क़ज़ाअ में जबकि आँहज़रत (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाब तवाफ़े का'बा में मशगूल थे तमाम कुफ़्रारे मक्का शहर छोड़कर बाहर चले गए ताकि वो अहले इस्लाम को देख न सकें। उस मौक़े पर शायद हज़रत मुआविया (रज़ि.) मक्का शरीफ़ ही में रह गए हों (और मुम्किन है कि मज़क़ूर बाला वाक़िया भी उसी वक़्त से ता'ल्लुक़ रखता हो) और सज़द बिन वक्कास (रज़ि.) का वो क़ौल जिसे मुस्लिम (रह.) ने रिवायत किया है उसके ख़िलाफ़ नहीं है जिसमें ज़िक़्र है कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) इम्तुल क़ज़ाअ के मौक़े पर मक्का शरीफ़ के किसी घर में छत पर छुपे हुए थे। ये इसलिये कि वो अपने इस्लाम को अपने रिश्तेदारों से अभी तक पोशीदा रखे हुए थे और जिसने इस वाक़िये को उम्-ए-जिअराना से मुता'ल्लिक़ बताया है वो भी दुरुस्त नहीं मा'लूम होता क्योंकि उस मौक़े पर जो सहाबा आँहज़रत (ﷺ) के साथ थे उनमें हज़रत मुआविया (रज़ि.) का शुमार नहीं है और ग़ज्व-ए-हुनैन के मौक़े पर तो उन्होंने अपने वालिद के साथ माले ग़नीमत से मुअल्लिफ़ीन में शामिल होकर हिस्सा लिया था। ग़ज्व-ए-हुनैन के किस्से के आख़िर में हाकिम ने नक़ल किया है कि उस मौक़े पर आप (ﷺ) का सर मूँडने वाला ही ब्याज़ा का एक गुलाम था जिसका नाम अबू हिन्द था, अगर ये प्राबित है और ये भी प्राबित हो जाए कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) उस दिन आप (ﷺ) के साथ थे या मक्का में मौजूद थे तो ये इम्कान है कि उन्होंने पहले आप (ﷺ) के बाल कैंची से कतरे हों और हल्लाक़ उस वक़्त ग़ायब हो फिर उसके आ जाने पर उससे कराया हो क्योंकि हलक़ अफ़ज़ल है और अगर ये इम्तुल क़ज़ा में प्राबित हो जबकि वहाँ भी आप (ﷺ) का हलक़ प्राबित है तो ये एहतिमाल सहीह है कि उस मौक़े पर उन्होंने ये ख़िदमत अंजाम दी हो। मुख़्तलिफ़ रिवायात में तल्बीक़ की ये तौफ़ीक़ महज़ अल्लाह के फ़ज़ल से हासिल हुई है, वलिल्लाहिल हम्द।

बाब 128 : तमत्तोअ करने वाला इम्ह के बाद

बाल तरशवाए

1731. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, उनसे

۱۲۸- بَابُ تَقْصِيرِ الْمُتَمَتِّعِ بَعْدَ

الْعُمَرَةِ

۱۷۳۱- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ

फुजैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्बान ने, उन्हें कुरैब ने खबर दी, उनसे इब्ने अब्बास (रजि.) ने कहा कि जब नबी करीम (ﷺ) मक्का में तशरीफ लाए तो आप (ﷺ) ने अपने अरहाब को ये हुक्म दिया कि बैतुल्लाह का तवाफ और सफा व मरवा की सई करने के बाद एहराम खोल दें फिर सर मुंडवा लें या बाल कतरवा लें। (रजिअ: 1545)

حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ أَخْبَرَنِي كُرَيْبٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ أَمَرَ أَصْحَابَهُ أَنْ يَطُوفُوا بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ يَحْلُوا وَيَحْلِفُوا أَوْ يَفْصِرُوا)). [راجع: 1040]

आप (ﷺ) ने दोनों के लिये इख्तियार दिया जिसका मतलब ये है कि दोनों उमूर जाइज़ हैं।

### बाब 129 : दसवीं तारीख में तवाफुजियारह करना

और अबुजुबैर ने हज़रत आइशा (रजि.) और इब्ने अब्बास (रजि.) से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तवाफुजियारत में इतनी देर की किरात हो गई और अबू हस्सान से मन्कूल है उन्होंने इब्ने अब्बास (रजि.) से सुना कि आँहज़रत (ﷺ) तवाफुजियारत मिना के दिनों में करते।

١٢٩- بَابُ الزِّيَارَةِ يَوْمَ النَّحْرِ  
وَقَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَخَّرَ النَّبِيُّ ﷺ الزِّيَارَةَ إِلَى اللَّيْلِ)) وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي حَسَّانَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَزُورُ الْبَيْتَ أَيَّامَ مِنًى)).

अबुजुबैर वाली रिवायत को तिमिज़ी और अबू दाऊद और इमाम अहमद (रह.) ने वस्ल किया है। मज़कूर अबू हस्सान का नाम मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह अदी है, उसको तबरानी ने मुअज्जम कबीर में और बेहकी ने वस्ल किया है।

1732. और हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उनसे सुफयान ने बयान किया, उनसे इब्ने दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने इमर (रजि.) ने सिर्फ़ एक तवाफुजियारत किया फिर सवेरे से मिना को आए, उनकी मुराद दसवीं तारीख से थी। अब्दुरज़ाक्र ने इस हदीष का रफ़अ (रसूलुल्लाह ﷺ तक) भी किया है। उन्हें इब्ने दुल्लाह ने खबर दी।

١٧٣٢- وَقَالَ لَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُثَيْبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ طَائِفَ طَوَافِهَا وَاجِدًا، ثُمَّ تَمَّ بِقَبْلِ تَمَّ بِأَيِّ مَنًى)) يَغِي يَوْمَ النَّحْرِ. وَرَفَعَهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ.

1733. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उनसे लैष ने बयान, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने, उनसे अअरज ने कि मुइसे अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रजि.) ने कि हमने जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हज किया तो दसवीं तारीख को तवाफ़े जियारत किया लेकिन सफ़िया (रजि.) हाइज़ा हो गई। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे वही चाहा जो शौहर अपनी बीवी से चाहता है, तो मैंने कहा या

١٧٣٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ عَنْ الْأَعْرَجِ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((حَاجَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَأَلْفَضْنَا يَوْمَ النَّحْرِ لِمَا حَاضَتْ صَفِيَّةُ فَأَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْهَا مَا

रसूलल्लाह (ﷺ)! वो हाइज़ा हैं, आप (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि इसने तो हमें रोक दिया फिर जब लोगों ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इन्होंने दसवीं तारीख़ को तवाफ़े ज़ियारत कर लिया था, आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर चले चलो।

(राजेअ: 294)

क्रासिम, उर्वा और अस्वद से बवास्ता उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) रिवायत है कि मफ़िया उम्मुल मोमिनीन मफ़िया (रज़ि.) ने दसवीं तारीख़ को तवाफ़े ज़ियारत कर लिया था।

**तशरीह:**

इसको तवाफ़ुल इफ़ाज़ा और तवाफ़ुस्सद्र और तवाफ़ुल्कन भी कहा गया है, कुछ रिवायतों में है कि आप (ﷺ) ने ये तवाफ़ दिन में किया था। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हज़रत अबू हस्सान की हदीस लाकर अहादीसे मुख्तलिफ़ा में इस तरह तब्दीक़ दी कि जाबिर और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का बयान यौमे अब्वल से मुताल्लिक़ है और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीस का ता'ल्लुक बक्राया दिनों से है, यहाँ तक भी मरवी है कि अन्ननबिय्य (ﷺ) कान यज़ूरुलबैत कुल्ल लैलतिन माअक्राम बिमिना या'नी अय्यामे मिना में आप (ﷺ) हर रात मक्का शरीफ़ आकर तवाफ़े ज़ियारत किया करते थे। (फ़तुहल बारी)

**बाब 130 : किसी ने शाम तक रमी न की या कुर्बानी से पहले भूलकर या मसलान जानकर सर मुँडा लिया तो क्या हुक्म है?**

1734. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे बुहैब ने बयान किया, उनसे इब्ने त़ाऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) से कुर्बानी करने, सर मुँडाने, रम्ये—जिमार करने, और उनमें आगे—पीछे करने के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई हर्ज नहीं। (राजेअ: 84)

1735. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) से यौमुन्नहर में मिना में मसाइल पूछे जाते और आप (ﷺ) फ़र्माते जाते कि कोई हर्ज नहीं, एक शख्स ने पूछा था कि मैंने कुर्बानी करने से पहले सर मुँडा लिया है तो आप (ﷺ) ने उसके जवाब में

يُرِيدُ الرَّجُلُ مِنْ أَهْلِهِ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهَا خَالِصٌ. قَالَ: «خَالِصَتَا هِيَ» (۹) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا نَحْنُ يَوْمَ النَّحْرِ. قَالَ: «أَعْرُجُوا».

[راجع: ۲۹۴]

وَيَذْكُرُ عَنِ الْقَاسِمِ وَغُرُورَةَ وَالْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا «أَلَا نَحْنُ صَبِيَّةٌ يَوْمَ النَّحْرِ».

۱۳۰- بَابُ إِذَا رَمَى بَعْدَ مَا أَمْسَى، أَوْ خَلَقَ قَبْلَ أَنْ يَذْبَحَ، نَاسِيًا أَوْ جَاهِلًا

۱۷۳۴- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا «أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قِيلَ لَهُ فِي الذَّبْحِ وَالْخَلْقِ وَالرَّمْيِ وَالْقُدِيمِ وَالْأَجِيرِ فَقَالَ: «لَا حَرَجَ»». [راجع: ۸۴]

۱۷۳۵- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا عَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُسْأَلُ يَوْمَ النَّحْرِ بِمَنْ يَقُولُ: «لَا حَرَجَ»». فَسَأَلَهُ رَجُلٌ فَقَالَ:



भी यही फ़र्माया कि जाओ कुर्बानी कर लो कोई हर्ज नहीं और उसने ये भी पूछा कि मैंने कंकरियाँ शाम होने के बाद ही मार ली हैं, तो भी आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई हर्ज नहीं। (राजेज़: 84)

خَلَفْتُ قَبْلَ أَنْ أَذْبَحَ، قَالَ: «اذْبَحْ وَلَا خَرْجَ». وَقَالَ: رَمَيْتُ بَعْدَ مَا أَمْسَتْ، فَقَالَ: لَا ((لَا خَرْجَ)). [راجع: ٨٤]

आप (ﷺ) ने उन सूरतों में न कोई गुनाह लाज़िम किया न फ़िदया। अहले हदीष का यही मज़हब है और शाफ़िइया और हनाबिला का यही मज़हब है और मालिकिया और हन्फ़िया का क़ौल है कि उनमें तर्तीब वाज़िब है और उसका ख़िलाफ़ करने वालों पर दम लाज़िम होगा, ज़ाहिर है कि उन हज़रत का ये क़ौल हदीषे हाज़ा के ख़िलाफ़ होने की वजह से क़ाबिले तवज़ोह नहीं क्योंकि होते हुए मुस्तफ़ा की गुफ़्तार, मत देख किसी का क़ौल व किरदार।।

### बाब 131 : जम्ह के पास सवार रहकर लोगों को मसला बताना

### ١٣١ - بَابُ الْفَتْيَا عَلَى الدَّابَّةِ عِنْدَ الْجَمْرَةِ

1736. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें ईसा बिन तलहा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर (अपनी सवारी) पर बैठे हुए थे और लोग आप (ﷺ) से मसाल मा'लूम किये जा रहे थे, एक शख्स ने कहा हुज़ूर मुझे मा'लूम न था और मैंने कुर्बानी करने से पहले ही सर मुँडा लिया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया अब कुर्बानी कर लो कोई हर्ज नहीं, दूसरा शख्स आया और बोला हुज़ूर मुझे ख़याल न रहा और रम्ये-जिमार से पहले ही मैंने कुर्बानी कर ली, आप (ﷺ) ने फ़र्माया अब रमी कर लो कोई हर्ज नहीं, उस दिन आप (ﷺ) से जिस चीज़ के आगे-पीछे करने के बारे में सवाल हुआ आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया अब कर लो कोई हर्ज नहीं। (राजेज़: 83)

١٧٣٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَقَفَ فِي حَبَّةِ الْوَدَاعِ فَحَقَلُوا يَسْأَلُونَهُ، فَقَالَ رَجُلٌ: لَمْ أَشْفُرْ فَخَلَفْتُ قَبْلَ أَنْ أَذْبَحَ، قَالَ: «اذْبَحْ وَلَا خَرْجَ»). فَجَاءَ آخَرُ فَقَالَ: لَمْ أَشْفُرْ فَخَرْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ، قَالَ: «ارْمِ وَلَا خَرْجَ»). فَمَا سُئِلَ يَوْمَئِذٍ عَنْ شَيْءٍ قُلَّمْ وَلَا آخَرُ إِلَّا قَالَ: ((الْفَعْلُ وَلَا خَرْجَ)).

[راجع: ٨٣]

हदीष और बाब में मुताबकत ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) अपनी सवारी पर तशरीफ़ फ़र्मा थे और मसाल बतला रहे थे।

1737. हमसे सईद बिन यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे ईसा बिन तलहा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) दसवीं तारीख को मिना में ख़ुत्बा दे रहे थे तो वो वहाँ मौजूद थे। एक शख्स ने उस वक़्त खड़े होकर पूछा मैं इस ख़याल में था कि फ़लाँ काम फ़लाँ से पहले है फिर दूसरा खड़ा हुआ और कहा कि मेरा ख़याल था कि फ़लाँ काम फ़लाँ से पहले है, चुनाँचे मैंने

١٧٣٧ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ ((أَنَّهُ شَهِدَ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ النَّحْرِ لِقَامِ إِلَيْهِ رَجُلٌ فَقَالَ: كُنْتُ أَحْسِبُ

कुर्बानी से पहले सर मुँडा लिया, रम्ये—जिमार से पहले कुर्बानी कर ली, और मुझे उसमें शक हुआ। तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया अब कर लो। उन सबमें कोई हर्ज नहीं। इसी तरह के दूसरे सवालात भी आप (ﷺ) से किये गए आप (ﷺ) ने उन सब के जवाब में यही फ़र्माया कि कोई हर्ज नहीं अब कर लो। (राजेअ: 83)

1738. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि हमें यअकूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, उनसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे झालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे ईसा बिन तलहा बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि.) से सुना उन्होंने बतलाया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी सवारी पर सवार होकर ठहरे रहे, फिर पूरी हदीस बयान की उसकी मुताबअत मअमर ने जुहरी से रिवायत करके की है। (राजेअ: 83)

أَنْ كَذًا قَبْلَ كَذًا، ثُمَّ قَامَ آخَرُ فَقَالَ: كُنْتُ أَحْسِبُ أَنْ كَذًا، خَلَفْتُ قَبْلَ أَنْ آتَخُو، نَحَرْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِي، وَأَجَبَا ذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «(الْفَعْلُ وَلَا خَرَجَ لَهُنَّ كُلُّهُنَّ)»، لَمَّا سِيلَ يَوْمَيْهِ عَنْ شَيْءٍ إِلَّا قَالَ: «(الْفَعْلُ وَلَا خَرَجَ)». [راجع: ٨٣] ١٧٣٨ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَلَاحِ بْنِ أَبِي هِشَابٍ حَدَّثَنِي عِيْسَى بْنُ طَلْحَةَ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو بْنَ الْعَاصِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «وَقَفَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى نَاقَتِهِ.. فَلَذَكَّرَ (الْحَدِيثُ)». تَابَعَهُ مَقَرَّمُ بْنُ الزُّهْرِيِّ.

[راجع: ٨٣]

**तशरीह:** शरीअत की उस स़ादगी और आसानी का इज़हार मक्सूद है जो उसने ता'लीम, तअल्लुम, इफ़्ता व इश़ाद के सिलसिले में सामने रखी है। कुछ रिवायतों में ऐसा भी है कि आप (ﷺ) उस वक़्त सवारी पर न थे बल्कि बैठे हुए थे और लोगों को मसाइल बतला रहे थे। सो तब्दीक़ ये है कि कुछ वक़्त सवारी पर बैठकर ही आप (ﷺ) ने मसाइल बतलाए हों, बाद में आप (ﷺ) उतरकर नीचे बैठ गए हों। जिस रावी ने आप (ﷺ) को जिस हाल में देखा बयान कर दिया।

### बाब 132 : मिना के दिनों में ख़ुत्बा सुनाना

1739. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे फ़ज़ल बिन ग़ज़्वान ने बयान किया, उनसे इकिरमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि दसवीं तारीख़ को रसूले करीम (ﷺ) ने मिना में ख़ुत्बा दिया, ख़ुत्बा में आप (ﷺ) ने पूछा लोगों! आज कौनसा दिन है? लोग बोले ये हुर्मत का दिन है, आप (ﷺ) ने फिर पूछा और ये शहर कौनसा है? लोगों ने कहा ये हुर्मत वाला शहर है, आप (ﷺ) ने फिर पूछा ये महीना कौनसा है? लोगों ने कहा ये हुर्मत वाला महीना है, फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया बस

### ١٣٢ - بَابُ الْخُطْبَةِ أَيَّامَ مِنَى

١٧٣٩ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا قُتَيْبٌ بْنُ غَزْوَانَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ أَبِي هِشَابٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَطَبَ النَّاسَ يَوْمَ النَّحْرِ فَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ، أَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟ قَالُوا: يَوْمٌ حَرَامٌ. قَالَ: «(فَأَيُّ بَلَدٍ هَذَا؟) قَالُوا: بَلَدٌ حَرَامٌ. قَالَ: «(فَأَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟) قَالُوا: شَهْرٌ حَرَامٌ. قَالَ:

तुम्हारा खून तुम्हारे माल और तुम्हारी इज्जत एक-दूसर पर उसी तरह हराम हैं जैसे इस दिन हुर्मत, इस शहर और इस महीने की हुर्मत, इस कलिमे को आप (ﷺ) ने कई बार दोहराया और फिर आसमान की तरफ सर उठाकर कहा, ऐ अल्लाह! क्या मैंने (तेरा पैगाम) पहुँचा दिया ऐ अल्लाह! क्या मैंने पहुँचा दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बतलाया कि उस ज्ञात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है औ हज़रत (ﷺ) की ये वसियत अपनी तमाम उम्मत के लिये है कि हाज़िर (और जानने वाला) ग़ायब (और न जानने वाले को अल्लाह का पैगाम) पहुँचा दे। आप (ﷺ) ने फिर फ़र्माया, देखो मेरे बाद एक दूसरे की गर्दन मारकर काफ़िर न बन जाना। (दीगर मक़ाम : 7079)

((لَئِنْ دَعَاكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَهْوَالَكُمْ وَأَهْرَاسَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحَرَمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا، فِي بَلَدِكُمْ هَذَا، فِي شَهْرِكُمْ هَذَا)). فَأَعَادَهَا مِرَارًا. ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ : ((اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ؟ اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : فَوَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّمَا لَوْ حَبِثْتُ إِلَى أُمِّي فَلَيَلِغَ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، ((لَا تَرْجِعُوا بَعْدِي كَفَارًا يَحْتَرِبُ بَعْضُكُمْ دِمَاءَ بَعْضٍ)).  
[طرفه ب : ٧٠٧٩]

ये खुत्बा यौमुन्नहर के दिन सुनाना सुन्नत है उसमें रमी वगैरह के अहकाम बयान करना चाहिये और ये हज्ज के चार खुत्बों में से तीसरा खुत्बा है और सब नमाज़े इंद के बाद हैं मगर अरफ़ा का खुत्बा नमाज़ से पहले है उस दिन दो खुत्बे पढ़ने चाहिये। क़स्तलानी (रह.)। (वहीदी)

हज्ज का मक़सदे-अज़ीम दुनिय-ए-इस्लाम को खुदातरसी और इतिफ़ाक़े बाहमी की दा'वत देना है और उसका बेहतरीन मौक़ा यही खुत्बात हैं, लिहाज़ा ख़तیب का फ़र्ज़ है कि मसाइले हज्ज के साथ-साथ वो दुनिय-ए-इस्लाम के मसाइल पर भी रोशनी डाले और मुसलमानों को खुदातरसी किताब व सुन्नत की पाबन्दी और बाहमी इतिफ़ाक़ की दा'वत दे कि हज्ज का यही मक़सूदे आज़म है। औ हज़रत (ﷺ) ने इस खुत्बे में अल्लाह पाक को पुकारने के लिये आसमान की तरफ सर उठाया, इससे अल्लाह पाक के लिये जहते फ़ौक़ और इस्तिवा अलल अर्श प्राबित है। ज़िल् ह़िज्ज की दसवीं तारीख़ को यौमुन्नहर/आठवीं को यौमुल् तर्विया नवीं को यौमे अरफ़ा और ग्यारहवीं को यौमुल क़ुरा और बारहवीं को यौमुन्नफ़् अव्वल और तेरहवीं को यौमुन्नफ़् शानी कहते हैं और दसवीं ग्यारहवीं बारहवीं तेरहवीं को अय्यामे तशरीक़ कहते हैं।

1740. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अमर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने जाबिर बिन ज़ैद से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, आप (रज़ि.) ने बतलाया कि मैदाने अरफ़ात में रसूले करीम (ﷺ) का खुत्बा मैंने ख़ुद सुना था। उसकी मुताबअत इब्ने ज़ययना ने अमर से की है।

(दीगर मक़ाम : 1812, 1841, 1842, 1843, 5804, 5853)

١٧٤٠ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي غُمَرُو قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ زَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْرُجُ فَيَقُولُ : تَابَعَهُ ابْنُ عَيْنَةَ عَنْ غُمَرَ .

[أطرافه ب : ١٨١٢ ، ١٨٤١ ، ١٨٤٢]

[٥٨٥٣ ، ٥٨٠٤ ، ١٨٤٣]

**तशरीह :** ये यौमे अरफ़ा का खुत्बा है और मिना का खुत्बा बाद वाला है, जो दसवीं तारीख़ को दिया था उसमें साफ़ यौमुन्नहर की वज़ाहत मौजूद है। फ़ हाज़ल हदीमुल्लज़ी वक़अ फ़िस्सहीह अन्नहू (ﷺ) ख़तब बिही यौमुन्नहरि

वक्रदण्डवत अन्नहू खतब बिही कबल ज़ालिक यौम अर्फ़त (फ़तुल बारी) या'नी सहीह बुखारी की हदीष में साफ़ मज़कूर है कि आप (ﷺ) ने यौमुन्नहर में खुत्बा दिया और ये भी श्राबित है कि उससे पहले आप (ﷺ) ने यही खुत्बा यौम अरफ़ात में भी पेश फ़र्माया था।

1741. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर ने बयान किया, उनसे कुर'ह ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने कहा कि मुझे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने और एक और शख्स ने जो मेरे नज़दीक अब्दुर्रहमान से भी अफ़ज़ल है या'नी हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि अबूबक्र (रज़ि.) ने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) ने दसवीं तारीख़ को मीना में खुत्बा सुनाया, आप (ﷺ) ने पूछा लोगों! मा'लूम है आज ये कौनसा दिन है? हमने अर्ज़ किया अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानते हैं, आप (ﷺ) इस पर खामोश हो गए और हमने समझा कि आप (ﷺ) उस दिन का कोई और नाम रखेंगे लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या ये कुर्बानी का दिन नहीं है? हम बोले हाँ ज़रूर है, फिर आप (ﷺ) ने पूछा ये महीना कौनसा है? हमने कहा अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप इस बार भी खामोश हो गए और हमें ख़याल हुआ कि आप (ﷺ) इस महीने का कोई और नाम रखेंगे, लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या ज़िल्हिज्ज का महीना नहीं है? हम बोले क्यूँ नहीं, फिर आप (ﷺ) ने पूछा ये शहर कौनसा है? हमने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानते हैं, इस बार भी आप (ﷺ) इस तरह खामोश हो गए कि कि हमने समझा कि आप (ﷺ) इसका कोई और नाम रखेंगे, लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये हुर्मत का शहर नहीं है? हमने अर्ज़ किया क्यूँ नहीं ज़रूर है, उसके बाद आप (ﷺ) ने इशारा फ़र्माया बस तुम्हारा खून और तुम्हारे माल तुम पर उसी तरह हुराम हैं जैसे इस दिन की हुर्मत इस महीने की हुर्मत और इस शहर में है, यहाँ तक कि तुम अपने रब से जा मिलो। कहो क्या मैंने तुमको अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया? लोगों ने कहा कि हाँ आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना और हाँ! यहाँ मौजूद ग़ायब को पहुँचा दे क्योंकि बहुत से लोग जिन तक ये पैग़ाम पहुँचेगा सुनने वालों से ज़्यादा (पैग़ाम को) याद रखने वाले श्राबित होंगे और मेरे बाद का फिर न बन जाना कि एक-दूसरे

۱۷۴۱- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا قُرَّةٌ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ سِيرِينَ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، وَرَجُلٍ أَفْضَلُ لِي نَفْسِي مِنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((حَطَبْنَا النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ قَالَ: ((أَنْتَرُونَ أَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟ قُلْنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ. فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيَسْمِيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ، قَالَ: ((الْيَسَ يَوْمَ النَّحْرِ؟)) قُلْنَا بَلَى. قَالَ: ((أَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟ قُلْنَا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيَسْمِيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ، فَقَالَ: ((الْيَسَ ذُو الْحِجَّةِ؟)) قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: ((أَيُّ بَلَدٍ هَذَا؟)) قُلْنَا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيَسْمِيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ، قَالَ: ((الْيَسَ بِالْبَلَدَةِ الْحَرَامِ؟)) قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: ((لَيْسَ دِمَاءُكُمْ وَأَمْوَالُكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا لِي شَهْرِكُمْ هَذَا لِي بَلَدِكُمْ هَذَا إِلَى يَوْمٍ تَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ، أَلَا هَلْ بَلَّغْتُ؟)) قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: ((اللَّهُمَّ اشْهَدْ، فَتَلْبِغِ الشَّاهِدَ الْغَائِبَ، فَرُبُّ مَبْلَغٍ أَوْعَى مِنْ سَامِعٍ، فَلَا تَرْجِعُوا بَعْدِي كَفَرًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ

की (नाहक) गर्दनें मारने लगे। (राजेअ: 67)

[بعضی: (راجع: ٦٧)]

**तशरीह:** ये हज्जतुल विदाअ में आप (ﷺ) का वो अजीमुशान खुत्बा है जिसे असासुल इस्लाम (इस्लाम की बुनियाद) होने की सनद हासिल है और ये काफ़ी तवील है जिसे मुख्तलिफ़ रावियों ने मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में नक़ल किया है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब के तर्जुमे के तहत ये रिवायत यहाँ नक़ल की है, पूरे खुत्बे का इहसास मक्क़र नहीं है। व अरादल बुखारी अरहु अला मन ज़अम अन्न यौमन्नहर ला खुत्बत फ़ीहि लिलहाजि व अन्नल मज़कूर फ़ी हाज़ल हदीथि मिन क़बीलिल वसायल आम्मति ला अला अन्नहू मिन शिआरिल हजि फ़अरादल बुखारी अय्युबय्यिन अन्नरवी सम्माहा खुत्बतन कमा सुम्मियल्लती वक़अत फ़ी वफ़ाति खुत्बतिन (फ़तह) या 'नी कुछ लोग यौमुन्नहर के खुत्बे के काइल नहीं हैं और ये खुत्बा वसाया से ता'बीर करते हैं, इमाम बुखारी (रह.) ने उनका रद्द किया और बतलाया कि रावी ने उसे लफ़्ज़े खुत्बा से ज़िक़र किया है, कि अरफ़ात के खुत्बे को खुत्बा कहा ऐसा ही उसे भी, लिहाज़ा यौमुन्नहर को भी खुत्बा देना सुन्नते नबवी है।

1742. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, कहा हमको आसिम बिन मुहम्मद बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें उनके बाप ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मीना में फ़र्माया कि तुमको मा'लूम है! आज कौनसा दिन है? लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये हुर्मत का दिन है और ये भी तुमको मा'लूम है कि ये कौनसा शहर है? लोगों ने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये हुर्मत का शहर है और तुमको ये भी मा'लूम है ये कौनसा महीना है, लोगों ने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये हुर्मत का महीना है फिर फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा खून, तुम्हारा माल और इज्जत एक-दूसरे पर (नाहक) इस तरह हराम कर दी हैं जैसे इस दिन की हुर्मत इस महीने और इस शहर में है। हिशाम बिन गाज़ ने कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने इब्ने उमर (रज़ि.) के हवाले से ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हज्जतुल विदाअ में दसवीं तारीख़ को जम्मात के बीच खड़े हुए थे और फ़र्माया था कि ये देखो (यौमुन्नहर) अकबर का दिन है, फिर नबी करीम (ﷺ) ये फ़र्माने लगे कि ऐ अल्लाह! गवाह रहना, आँहज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर चूँकि लोगों को रुझसत किया था (आप समझ गए कि वफ़ात का ज़माना आन पहुँचा) जबसे लोग इसे हज्जतुल विदाअ कहने लगे। (दीगर मक़ाम: 4403, 6043, 6166, 6785, 6868, 7077)

١٧٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنِي : ((أَلْتَدْرُونَ أَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟)) اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ، فَقَالَ : ((لَيْلَانِ هَذَا يَوْمَ حَرَامٍ، أَلْتَدْرُونَ أَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟)) قَالُوا : اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ، قَالَ : ((شَهْرُ حَرَامٍ)). قَالَ : ((لَيْلَانِ اللَّهُ حَرَمٌ عَلَيْكُمْ دِمَاءُكُمْ وَأَمْوَالُكُمْ وَأَعْرَاضُكُمْ كَحَرَمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا، فِي شَهْرِكُمْ هَذَا، فِي بَلَدِكُمْ هَذَا)) وَقَالَ هِشَامُ بْنُ الْعَلَاءِ : ((أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا)) وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ بَيْنَ الْجَمَرَاتِ فِي الْحَجَّةِ الَّتِي حَجَّ بِهَذَا، وَقَالَ : هَذَا يَوْمُ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ. فَطَفِقَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ : ((اللَّهُمَّ اشْهَدْ)). وَوَدَّعَ النَّاسَ فَقَالُوا : هَلِوْ حَجَّةٌ الْوَدَاعِ)).

[أطرافه في : ٤٤٠٣، ٦٠٤٣، ٦١٦٦، ٦٧٨٥، ٦٨٦٨، ٧٠٧٧].

तशीह:

हजे अकबर, हज्ज को कहते हैं और हजे अस्फ़र, उम्ह को और अवाम में जो ये मशहूर है कि नवीं तारीख जुम्आ को आ जाए तो वो हजे अकबर है, उसकी सनद सहीह हदीष से कुछ नहीं अल्बत्ता चन्द जईफ़ हदीषें इस हज्ज की ज्यादा फ़ज़ीलत में वारिद हैं, जिसमें नवीं तारीख जुम्आ को आन पड़े। कुछ ने कहा यौमुल हज्जिल अस्फ़र नवीं तारीख को और यौमुल हज्जिल अकबर दसवीं तारीख को कहते हैं। कहते हैं कि उन ही दिनों में आप (ﷺ) पर सूरह इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि नाज़िल हुई और आप (ﷺ) समझ गये कि अब दुनिया से खानगी करीब है। अब ऐसे इज्तिमाअ का मौक़ा न मिल सकेगा और बाद में ऐसा ही हुआ, फ़ीहि दलीलुन लिमंय्यकूनु अन्न यौमल हज्जिल अकबरि हुव यौमुन्नहर या'नी इस हदीष में उस शख्स की दलील मौजूद है जो कहता है कि हजे अकबर के दिन से मुराद दसवीं तारीख है बस अवाम में जो मशहूर है कि अगर जुम्आ के दिन हज्ज बाक़ेअ हो तो उसे हजे अकबर कहा जाता है, ये ख़याल क़बी (मज़बूत) नहीं है, अन्नहू नब्बह (ﷺ) फ़िल्खुत्बतिल मज़कूरति अला तअज़ीमि यौमिन्नहरि व अला तअज़ीमि शहरि जिल्हिज्जति व अला तअज़ीमिल बलदिल हरामि या'नी आहज़रत (ﷺ) इस ख़ुत्बे में यौमुन्नहर और माहे ज़िल्हिज्ज और मक़तुल मुकर्रमा की अज़मतों पर तम्बीह फ़र्माई कि उम्मत उन अश्याए मुक़द्दसा (पवित्र चीज़ों) को याद रखे और जो नज़ायेह व वसाया (नज़ीहतें और वसियतें) आप (ﷺ) दिये जा रहे हैं उम्मत उनको ता-अबद फ़रामोश न करे।

**बाब 133 : मिना की रातों में जो लोग मक्का में पानी पिलाते हैं या और कुछ काम करते हैं वो मक्का में रह सकते हैं**

1743. हमसे मुहम्मद बिन इब्नेद बिन मैमून ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ईसा बिन यूनस ने, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने इजाज़त दी। (दूसरी सनद)

(राजेअ: 1634)

1744. और हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बक्र ने बयान किया, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने इजाज़त दी।

(राजेअ: 1634)

1745. और हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से मिना की रातों में (हाजियों) को पानी पिलाने के लिये मक्का में रहने की इजाज़त चाही तो आप (ﷺ) ने उनको इजाज़त दे दी। इस

۱۳۳- بَابُ هَلْ يَبْتَئِ اصْحَابُ السَّقَايَةِ اَوْ غَيْرُهُمْ بِمَكَّةَ لَيْلِي مِئِي؟

۱۷۴۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ بْنِ مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ ((رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ)) ح. (۱۰۰)

[راجع: ۱۶۳۴]

۱۷۴۴- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ)) ح. (۱۰۰)

[راجع: ۱۶۳۴]

۱۷۴۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ الْعَبَّاسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ اسْتَأْذَنَ النَّبِيَّ ﷺ لَيْلَتِ بِمَكَّةَ لَيْلِي مِئِي مِنْ أَجْلِ سَقَايَتِهِ،

रिवायत की मुताबअत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के साथ अबू उसामा इब्न बाबिन खालिद और अबू जम्हर ने की है। (राजेअः 1634)

فَإِنْ لَّهُ). تَابَعَهُ أَبُو أُسَامَةَ وَغُفْبَةُ بْنُ خَالِدٍ وَأَبُو ضَمْرَةَ. [راجع: ١٦٣٤]

**तशरीह:** मा' लूम हुआ कि जिसको कोई उज्र न हो उसको मिना की रातों में मिना में रहना वाजिब है, शाफ़िइया और हनाबिला और अहले हदीथ का यही क़ौल है और कुछ के नज़दीक ये वाजिब नहीं सुन्नत है (वहीदी)। व फ़िल हदीथि दलीलुन अला वुजूबिल मबीति बिमिना व अन्नहू मिम्मनासिकिल हज्जि लिअन्नतअबीर बिरिखसति यवत्तज़ी अन्न मुक्काबलिहा व अन्नल इज्ज वक्रअ लिल इल्लतिल मज़कूरति व इज़ा लम तूजद औ मा फ़ी मअनाहा लम यहसुलिल इज्जु व बिल वुजूबि क़ालल जुम्हूर (फ़तह) या' नी मिना में रात गुज़ारना वाजिब और मनासिके हज्ज से है, जुम्हूर का यही क़ौल है। हज़रत अब्बास (रज़ि.) को इल्लते मज़कूरा की वजह से मक्का में रात गुज़ारने की इज़ाज़त ही दलील है कि जब ऐसी कोई इल्लत न हो तो मिना में रात गुज़ारना वाजिब है और जुम्हूर का यही क़ौल है।

### बाब 134 : कंकरियाँ मारने का बयान

और जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने दसवीं ज़िल हिज्ज को चाशत के वक़्त कंकरियाँ मारी थीं और उसके बाद की तारीखों में सूरज ढल जाने पर।

١٣٤- بَابُ رَمَى الْجِمَارِ وَقَالَ جَابِرٌ: رَمَى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ ضَعْفَى، وَرَمَى بَعْدَ ذَلِكَ بَعْدَ الزُّوَالِ.

1746. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मिस्रर ने बयान किया, उनसे वब्रह ने कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से पूछा कि मैं कंकरियाँ किस वक़्त मारूँ? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम्हारा इमाम मारे तो तुम भी मारो, लेकिन दोबारा मैंने उनसे यही मसला पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि हम इतिज़ार करते रहते और जब सूरज ढल जाता तो कंकरियाँ मारते।

١٧٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ حَدَّثَنَا مِسْرَرٌ عَنْ وَبْرَةَ قَالَ: ((سَأَلْتُ ابْنَ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: مَتَى أَرْمَى الْجِمَارَ؟ قَالَ: إِذَا رَمَى إِمَامُكَ فَارْمِهِ. فَأَعِدْتُ عَلَيْهِ الْمَسْأَلَةَ، قَالَ: كُنَّا تَصْنَعُ لَهَا إِذَا رَأَتْ الشَّمْسُ رَمَتْهَا)).

**तशरीह:** अफ़ज़ल वक़्त कंकरियाँ मारने का यही है कि यौमुन्नहर को चाशत के वक़्त मारे और जाइज़ है, दसवीं शब की आधी रात के बाद से और गुरुबे आफ़ताब तक दसवीं तारीख को उसका आखिरी वक़्त है और 11वीं या बारहवीं को ज़वाल के बाद मारना अफ़ज़ल है, जुहर की नमाज़ से पहले कंकरियाँ सात से कम न हों, जुम्हूर इलमा का यही क़ौल है फ़ीहि दलीलुन अला अन्नसुन्नत अय्यमियल जिमार फ़ी ग़ैर योमिल अज्हा बअदअजवाजि व बिही क़ालल जुम्हूर (फ़तहल बारी) या' नी इस हदीथ में दलील है कि दसवीं तारीख के बाद सुन्नत ये है कि रम्ये-जिमार ज़वाल के बाद हो और जुम्हूर का यही फ़त्वा है जब इमाम मारे तुम भी मारो, ये हिदायत इसलिये फ़र्माई ताकि उमर-ए वक़्त की मुख़ालफ़त की वजह से कोई तकलीफ़ न पहुँच सके, अगर उमर-ए वक़्त जोर हों तो ऐसे अहक़ाम में मजबूरन उनकी इत्ताअत करनी है जैसा कि नमाज़ के लिये फ़र्माया कि ज़ालिम अमीर अगर देर से पढ़ें तो उनके साथ भी अदा कर लो और उनको नफ़ल करार दे लो, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के उस दौर में हज्जाज बिन यूसुफ़ जैसे सफ़फ़ाक़ ज़ालिम का ज़माना था। इस आधार पर आप (रज़ि.) ने ऐसा फ़र्माया, नेक आदिल उमरा की इत्ताअत नेक कामों में बहरहाल फ़र्ज़ है और प्रवाब का हक़दार है और ये चीज़ उमरा ही के साथ ख़ास नहीं बल्कि नेक अमर में अदना से अदना आदमी की भी इत्ताअत लाज़िम है। व इन कान अब्दन हबिशियन का यही मतलब है।

### बाब 135 : रम्ये—जिमार वादी के नशीब से करने का बयान

1747. मुहम्मद बिन कप्रीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफयान प्रौरी ने खबर दी, उन्हें अअमश ने, उन्हें इब्राहीम ने और उनसे अब्दुरहमान बिन ज़ैद ने बयान किया कि अब्दुल्लाह (रजि.) ने वादी के नशीब (बतने वादी) में खड़े होकर कंकरी मारी तो मैंने कहा, ऐ अबू अब्दुरहमान! कुछ लोग तो वादी के बालाई हिस्से से कंकरियाँ मारते हैं, उसका जवाब उन्होंने ये दिया कि उस जात की कसम! जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं, यही (बतने वादी) उनके खड़े होने की जगह है (रम्ये—जिमार करते वक़्त) जिन पर सूरह बक्रर: नाज़िल हुई थी (ﷺ)। अब्दुल्लाह बिन वलीद ने बयान किया कि उनसे सुफयान प्रौरी ने और उनसे अअमश ने यही हदीस बयान की।

(दीगर मक़ाम: 1748, 1749, 1750)

### बाब 136 : रम्ये—जिमार सात कंकरियों से करना. इसको अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है

1748. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे ह कम बिन इत्बाने, उनसे इब्राहीम नख़्ज़ी ने, उनसे अब्दुरहमान बिन यज़ीद ने कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजि.) जम्-ए-कुबरा के पास पहुँचे तो का'बा को आपने बाएँ तरफ़ किया और मिना को दाएँ तरफ़ फिर सात कंकरियों से रमी की और फ़र्माया कि जिन पर सूरह बक्रर नाज़िल हुई थी (ﷺ) उन्होंने भी इसी तरह ही रमी की थी। (या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ)। (राजेअ: 1747)

### ۱۳۵- بَابُ رَمَى الْجِمَارِ مِنْ بَطْنِ الْوَادِي

۱۷۴۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: ((رَمَى عَبْدُ اللَّهِ مِنْ بَطْنِ الْوَادِي، فَقُلْتُ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، إِنَّ نَاسًا يَرْمُونَهَا مِنْ لَوْحِهَا، فَقَالَ: وَالَّذِي لَا إِلَهَ غَيْرُهُ، هَذَا مَقَامُ الْبَيْتِ أَنْزَلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ ﷻ)). وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ بِهَذَا.

[إطراعه في: ۱۷۴۸، ۱۷۴۹، ۱۷۵۰.]

۱۳۶- بَابُ رَمَى الْجِمَارِ بِسَبْعِ حَصَا بَذَرَهُ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ۱۷۴۸- حَدَّثَنَا حَفِصُ بْنُ غُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى الْجَمْرَةِ الْكُفْرَى جَعَلَ الْبَيْتَ عَنْ يَسَارِهِ وَبَيْنَ عَنْ يَمِينِهِ، وَرَمَى بِسَبْعٍ وَقَالَ: هَكَذَا رَمَى الْبَيْتِ أَنْزَلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ ﷻ)).

[راجع: ۱۷۴۷]

**तरीह:** हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वस्तुदिल्ल बिहाज़ल हदीसि इश्राति रम्यिल जमाराति वाहिदतन वाहिदतन लिक्कौलिही युक्कबुरु मअ कुल्लि हसातिन व क़द क़ाल (ﷺ) खुजू अत्री मनासिककुम व ख़ालफ़ फ़ी ज़ालिक अता व साहिबुहू अबू हनीफ़त फ़क़ाला लौ रुमियस्सबउ दफ़अतन वाहिदतन अज़ाहू (फ़तह) या'नी इस हदीस से दलील ली गई है कि रमी ज़मात में शर्त ये है कि एक एक कंकरी अलग अलग फेंकी जाने के बाद हर कंकरी पर तक्बीर कही जाए, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझसे मनासिके हज्ज सीखो और आप (ﷺ) का यही तरीक़ा था कि आप (ﷺ) हर कंकरी पर तक्बीर कहा करते थे। मगर अज़ा और आपके साहब इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने इसके ख़िलाफ़ कहा है वो कहते हैं कि सब कंकरियों का एक बार ही मार देना काफी है। (मगर ये क़ौल दुस्त नहीं है)



बाब 137 : उस शख्स के बारे में जिसने जम्-ए-अक्रबा की रमी की तो बैतुल्लाह को अपनी बाईं तरफ किया

1749. हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हकम बिन इत्बा ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख्ज़ी ने, उनसे अब्दुरहमान बिन यज़ीद ने कि उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के साथ हज्ज किया उन्होंने देखा कि जम्-ए-अक्रबा की सात कंकरियों के साथ रमी के वक़्त आपने बैतुल्लाह को तो अपनी बाईं तरफ और मिना को दाईं तरफ किया फिर फ़र्माया कि यही उनका भी मक़ाम था जिन पर सूरह बक्र नाज़िल हुई थी या'नी नबी करीम (ﷺ)। (राजेअ : 1747)

**तशरीह :** कस्तलानी (रह.) ने कहा कि ये दसवीं तारीख की रमी है ग्यारहवीं बारहवीं तारीख को ऊपर से मारना चाहिये और जम्ह उक्बा जिसको आजकल अवाम बड़ा शैतान कहते हैं चार बातों में और जमरात से बेहतर है, एक तो ये कि यौमुन्नहर को फ़क़्त उसी की रमी है दूसरे ये कि उसकी रमी चाश्त के वक़्त है, तीसरे ये कि नशीब में उसको मारना है, चौथे ये कि दुआ वग़ैरह के लिये उसके पास नहीं ठहरना चाहिये और दूसरे जम्रों के पास रमी के बाद ठहरकर दुआ करना मुस्तहब है। जमरात की रमी करना ये उस वक़्त की यादगार है जबकि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को बहकाने के लिये इन मक़ामात पर बतौर शैतान ज़ाहिर हुआ था और हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को इशदि इलाही की ता'मील से रोकने की कोशिश की थी। इन तीनों मक़ामात पर बतौर निशान पत्थरों के मिनारे से बना दिये हैं और उन ही पर मुकररा शराइत के साथ कंकरियाँ मारकर गोया शैताने मरदूद को रजम किया जाता है और हाजी गोया इस बात का अहद करता है कि वो शैताने मरदूद की मुखालिफ़त और इशदि इलाही की इत्ताअत में आगे-आगे रहेगा और जिन्दगी भर इस यादगार को फ़रामोश न करे अपने आपको मिल्लते इब्राहीमी का सच्चा पैरोकार प्रबित करने की कोशिश करेगा। जम्ह उक्बा को जम्ह कुब्बा भी कहते हैं और ये जहते मक्का में मिना की आख़िरी हद पर वाक़ेअ है आप (ﷺ) ने हिज़रत के लिये अंसार से उसी जगह बैअत ली थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) जम्ह उक्बा की रमी से फ़ारिग होकर ये दुआ पढ़ा करते थे। अल्लाहुम्मज्जल्हु हज्जन मब्रूरन व जम्बन मग़फ़ूरन।

बाब 138 : इस बयान में कि (हाजी को) हर कंकरी मारते वक़्त अल्लाहु अकबर कहना चाहिये

इसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

1750. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन जियाद मिस्री ने बयान किया, उनसे सुलैमान अअमश ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़ाज से सुना। वो मिम्बर पर सूरतों का यूँ नाम ले रहा था वो सूरह जिसमें बक्र (गाय) का

۱۳۷- بَابُ مَنْ رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ

فَجَعَلَ النَّيْتِ عَنْ يَسَارِهِ

۱۷۴۹- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا الْحَكَمُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ ((أَنَّهُ حَجَّ مَعَ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَرَأَاهُ يَرْمِي الْجَمْرَةَ الْكُبْرَى بِسَبْعِ حَصَيَّاتٍ، فَجَعَلَ النَّيْتِ عَنْ يَسَارِهِ وَمِنَى عَنْ يَمِينِهِ ثُمَّ قَالَ : هَذَا مَقَامُ الَّذِي أَنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ)). [راجع: ۱۷۴۷]

۱۳۸- بَابُ يُكَبِّرُ مَعَ كُلِّ حَصَاةٍ.

قَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ

۱۷۵۰- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ عَبْدِ الْوَاحِدِ

حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: ((سَمِعْتُ الْأَعْمَاجَ

يَقُولُ عَلَى الْمَيْمَنَةِ: السُّورَةُ الَّتِي يَذْكُرُ

ज़िक्र है, वो सूरह जिसमें आले इमरान का ज़िक्र है, वो सूरह जिसमें निसाअ (औरतों) का ज़िक्र है, अअमश ने कहा मैंने इसका ज़िक्र हज़रत इब्राहीम नख़्ज़ी (रह.) से किया तो उन्होंने फ़र्माया कि मुझसे अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद ने बयान किया कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने जम्-ए-अक्रबा की रमी की तो वो उनके साथ थे, उस वक़्त वो वादी के नशीब में उतर गए और जब दरख़्त के (जो उस वक़्त वहाँ पर था) बराबर नीचे उसके सामने होकर सात कंकरीयों से रमी की हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहते जाते थे। फिर फ़र्माया क्रसम है उस ज़ात की कि जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं यहाँ वो ज़ात भी खड़ी हुई थी जिस पर सूरह बक्रर: नाज़िल हुई (ﷻ)।

(राजेअ: 1747)

فِيهَا الْبَقَرَةُ، وَالسُّورَةُ الَّتِي يُذَكَّرُ فِيهَا آلُ  
عِمْرَانَ، وَالسُّورَةُ الَّتِي يُذَكَّرُ فِيهَا النِّسَاءُ.  
قَالَ فَلَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ: حَدَّثَنِي  
عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ يَزِيدَ أَنَّهُ كَانَ مَعَ ابْنِ  
مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حِينَ رَمَى جَمْرَةَ  
الْعَقَبَةِ، فَاسْتَنْطَقَ الْوَادِيَّ، حَتَّى إِذَا حَادَى  
بِالشَّجَرَةِ اشْتَرَحَتْهَا فَرَمَى بِسَبْعِ حَصَيَّاتٍ،  
يُكَبِّرُ مَعَ كُلِّ حَصَاةٍ، ثُمَّ قَالَ: مِنْ هَا هُنَا  
- وَاللَّيْلِ لَا إِلَهَ غَيْرُهُ - قَامَ اللَّيْلُ أَنْزَلَتْ  
عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ (ﷻ).

[راجع: ١٧٤٧]

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि कंकरी जुदा-जुदा मारनी चाहिये और हर एक के मारते वक़्त अल्लाहु अकबर कहना चाहिये। रिवायत में हज्जाज बिन यूसुफ का ज़िक्र है कि वो सूरतों के मजूजा नामों का इस्तेमाल छोड़कर इज़ाफ़ी नामों से उनका ज़िक्र करता था जैसा कि रिवायत मज़कूर है। इस पर हज़रत इब्राहीम नख़्ज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की इस रिवायत का ज़िक्र किया कि वो सूरतों के मजूजा नाम ही लेते थे और यही होना चाहिये इस बारे में हज्जाज का ख़याल दुरुस्त न था, उम्मत मुस्लिमा में ये शख्स सफ़्फ़ाक बेरहम ज़ालिम के नाम से मशहूर है कि उसने ज़िन्दगी में अल्लाह जाने कितने बेगुनाहों का ख़ूने नाहक ज़मीन की गर्दन पर बहाया है और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है क़ाल इब्नुल मुनीर ख़स्स अब्दुल्लाहि सूरतल बक्ररति बिज़िक्कि लिअब्रहल्लाली जक्ररल्लाहु फ़ीहा अरम्य फ़अशार इला अन्न फ़िअलहू (ﷻ) मुबय्यिन लिमुरादि किताबिल्लाहि तआला (फ़ल्हल बारी) या'नी इब्ने मुनीर ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने ख़ुसूसियत के साथ सूरह बक्रर का ज़िक्र इसलिये फ़र्माया कि उसमें अल्लाह ने रमी का ज़िक्र फ़र्माया है पस आपने इशारा किया कि नबी (ﷺ) ने अपने अमल से किताबुल्लाह की मुराद की तफ़्सीर पेश कर दी गोया ये बतलाना कि ये वो जगह है जहाँ औहज़रत (ﷺ) पर अहकामे मनासिक का नुज़ूल हुआ। उसमें यहाँ तम्बीह है कि अहकामे हज्ज तौफ़ीकी हैं जिस तरह शारेह अलैहिस्सलाम ने उनको बतलाया, उसी तरह उनकी अदाएगी लाज़िम है कमी-बेशी की किसी को मजाल नहीं है। वल्लाहु आलम।

**बाब 139 : उसके बारे में जिसने जम्-ए-अक्रबा की रमी की और वहाँ**

ठहरा नहीं। इस हदीष को इब्ने उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (ये हदीष अगले बाब में आ रही है)

**बाब 140 : जब हाजी दोनों जम्रों की रमी कर चुके तो हम्वार ज़मीन पर क़िब्ला रुख खड़ा हो जाए**

1751. हमसे इप्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने

١٣٩- بَابُ مَنْ رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ  
وَلَمْ يَقِفْ، قَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

١٤٠- بَابُ إِذَا رَمَى الْجَمْرَتَيْنِ  
يَقُومُ وَيُسْهَلُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ

١٧٥١- حَدَّثَنَا عُفَّانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ

कहा कि हमसे तलहा बिन यह्या ने बयान किया, उनसे यूनुस ने जुहरी से बयान किया, उनसे सालिम ने कि हजरत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) पहले जम्ह की रमी सात कंकरीयों के साथ करते और हर कंकरी पर अल्लाहु अकबर कहते थे, फिर आगे बढ़ते और एक नरम हम्वार ज़मीन पर पहुँचकर क़िब्ला रुख़ खड़े हो जाते उसी तरह देर तक खड़े दोनों हाथ उठाकर दुआ करते, फिर जम्ह-ए-वुस्ता की रमी करते, फिर बाएँ तरफ़ बढ़ते और एक हम्वार ज़मीन पर क़िब्ला रुख़ होकर खड़े हो जाते, यहाँ भी देर तक खड़े-खड़े दोनों हाथ उठाकर दुआएँ करते रहते, उसके बाद वाले नशीब से जम्ह-ए-अक़बा की रमी करते उसके बाद आप खड़े न होते बल्कि वापस चले आते और फ़र्माते कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को इसी तरह करते देखा था।

(दीगर मक़ाम : 1752, 1753)

حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ  
الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّهُ كَانَ يَوْمِي الْجَمْرَةِ الدُّنْيَا  
يَسْتَعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ عَلَى إِبْرَ كُلِّ حَصَاةٍ،  
ثُمَّ يَتَقَدَّمُ حَتَّى يَسْتَهْلَ فَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ  
الْقِبْلَةِ، فَيَقُومُ طَوِيلًا، وَيَدْعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ،  
ثُمَّ يَرْمِي الْوُسْطَى، ثُمَّ يَأْخُذُ ذَاتَ الشَّمَالِ  
فَيَسْتَهْلُ وَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ، فَيَقُومُ  
طَوِيلًا وَيَدْعُو، وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ ثُمَّ يَرْمِي  
جَمْرَةَ ذَاتِ الْعَقَبَةِ مِنْ بَطْنِ الْوَادِي، وَلَا  
يَقِفُ عِنْدَهَا، ثُمَّ يَنْصَرِفُ فَيَقُولُ : هَكَذَا  
رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَفْعَلُ)).

[طرفاه : 1752, 1753].

ये आखिरी रमी ग्यारहवीं तारीख़ में सबसे पहले रमी की है ये जम्हा मस्जिदे खैफ़ से करीब पड़ता है यहाँ न खड़ा होना है न दुआ करना, ऐसे मौक़े पर अक़ल का दख़ल नहीं है, सिर्फ़ शारेअ अलैहिरहमा की इतिबाअ ज़रूरी है। ईमान और इताअत इसी का नाम है जहाँ जो काम मन्कूल हुआ हो वहाँ वही काम सरअंजाम देना चाहिये और अपनी नाक़िस अक़ल का दख़ल हर्गिज़ हर्गिज़ नहीं होना चाहिये।

### बाब 141 : पहले और दूसरे जम्ह के पास

#### जाकर दुआ के लिये हाथ उठाना

### ١٤١- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ عِنْدَ

#### الْجَمْرَتَيْنِ الدُّنْيَا وَالْوُسْطَى

जुम्हूर इलमा के नज़दीक हाथ उठाकर जम्ह ऊला और जम्ह वुस्ता के पास दुआएं मांगना मुस्तहब है, इब्ने कुदामा ने कहा कि मैं उसमें किसी का इख़िलाफ़ नहीं पाता मगर इमाम मालिक से इसके खिलाफ़ मन्कूल है, क़ाल इब्नुल मुनीर ला आलमु अहदन अन्कर रफ़अल यदैनि फ़िहुआइ इन्दल जम्ति इल्ला मा हकाहु इब्नुल क़ासिम अन मालिक इन्तिहा (फ़तह)

1752. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे भाई (अब्दुल हमीद) ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) पहले जम्ह की रमी सात कंकरीयों के साथ करते और हर कंकरी पर अल्लाहु अकबर कहते थे, उसके बाद आगे बढ़ते और एक नरम हम्वार

١٧٥٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ:  
حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ  
عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ ((أَنَّ عَبْدَ  
اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يَوْمِي الْجَمْرَةِ  
الدُّنْيَا يَسْتَعِ حَصَيَاتٍ، يُكَبِّرُ عَلَى إِبْرَ كُلِّ حَصَاةٍ،  
ثُمَّ يَتَقَدَّمُ فَيَسْتَهْلُ، فَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ قِيَامًا

जमीन पर क़िब्ला रुख खड़े हो जाते, दुआएँ करते रहते और दोनों हाथों को उठाते फिर जम्ह वुस्ता की रमी भी उसी तरह करते और बाएँ तरफ़ आगे बढ़कर एक नरम जमीन पर क़िब्ला रुख खड़े हो जाते, बहुत देर तक उसी तरह खड़े होकर दुआएँ करते रहते, फिर जम्ह-ए-अक्रबा की रमी बतने वादी से करते लेकिन वहाँ ठहरते नहीं थे, आप फ़र्माते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसी तरह करते देखा है। (राजेअ: 1751)

طَوِيلًا، فَيَذْعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ. ثُمَّ يَرْمِي الْجَمْرَةَ الْوُسْطَى كَذَلِكَ، فَيَأْخُذُ ذَاتَ الشَّمَالِ فَيَسْهَلُ، وَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ قِيَامًا طَوِيلًا: فَيَذْعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ. ثُمَّ يَرْمِي الْجَمْرَةَ ذَاتَ الْعَقَبَةِ مِنْ بَطْنِ الْوَادِي وَلَا يَقِفُ، وَيَقُولُ: هَكَذَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ (ﷺ) يَفْعَلُ)). [راجع: ١٧٥١]

ये हदीस कई जगह नक़ल हुई है और इससे हज़रत मुज्ताहिदे मुतलक़ इमाम बुखारी (रह.) ने बहुत से मसाइल निकाले हैं जो आपके तफ़्क़ुह की दलील है उन लोगों पर बेहद अफ़सोस जो ऐसे फ़कीहे अज़ाम, फ़ाज़िले मुकर्रम, इमामे मुअज़्ज़म (रह.) की शान में तन्कीस करते हुए आपकी फ़ुकाहत और दिरायत का इंकार करते हैं और आपको सिर्फ़ नाकिले मुतलक़ कहकर अपनी नासमझी या तअस्सुबे बातिनी का षुबूत देते हैं। कुछ उलमा, अइम्मा दीने मुज्ताहिदीन की तन्कीस करते हैं। इमाम बुखारी (रह.) को अल्लाह पाक ने जो मक़ामे अज़मत अता किया है वो ऐसी वाही तबाही बातों से गिराया नहीं जा सकता। हाँ ऐसे कोरे बातिन नामो-निहाद उलमा की निशानदेही ज़रूर कर देता है।

## बाब 142 : दोनों जम्रों के पास दुआ करने के बयान में

(दोनों जम्रों से जम्ह-ए-ऊला और जम्ह-ए-वुस्ता मुराद हैं)

1753. और मुहम्मद बिन बश्शार ने कहा कि हमसे इम्रान बिन इमर ने बयान किया, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी और उन्हें जुहरी ने कि रसूले करीम (ﷺ) जब उस जम्हे की रमी करते जो मीना की मस्जिद के पास है सात कंकरियों से रमी करते और हर कंकरी के साथ तक्बीर कहते, फिर आगे बढ़ते और क़िब्ला रुख खड़े होकर दोनों हाथ उठाकर दुआएँ करते थे, यहाँ आप (ﷺ) बहुत देर तक खड़े रहते थे फिर जम्ह षानिया (वुस्ता) के पास आते यहाँ भी सात कंकरियों से रमी करते और हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहते, फिर बाएँ तरफ़ नाले के करीब उतर जाते और वहाँ भी क़िब्ला रुख होकर खड़े होते और हाथों को उठाकर दुआ करते रहते, फिर जम्ह उक्रबा के पास आते और यहाँ भी सात कंकरियों से रमी करते और हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहते, उसके बाद वापस हो जाते यहाँ आप दुआ के लिये ठहरते नहीं थे। जुहरी

## ١٤٢- بَابُ الدُّعَاءِ عِنْدَ

### الْجَمْرَتَيْنِ

١٧٥٣- وَقَالَ مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا غُفَمَانُ بْنُ غَمْرٍ أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ الزُّهْرِيِّ ((رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا رَمَى الْجَمْرَةَ الَّتِي تَلَى مَسْجِدَ مِنَى يَرْمِيهَا بِسَبْعِ حَصَيَّاتٍ، يُكَبِّرُ كُلَّمَا رَمَى بِحَصَاةٍ، ثُمَّ تَقْدَمُ أَمَامَهَا فَوَلِّفَ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ، وَرَافِعًا يَدَيْهِ يَذْعُو، وَكَانَ يُطِيلُ الْوُقُوفَ. ثُمَّ يَأْتِي الْجَمْرَةَ الْآخِيَةَ فَيَرْمِيهَا بِسَبْعِ حَصَيَّاتٍ، يُكَبِّرُ كُلَّمَا رَمَى بِحَصَاةٍ، ثُمَّ يَتَخَذِرُ ذَاتَ الْيَسَارِ مِمَّا تَلَى الْوَادِي، فَيَقِفُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ رَافِعًا يَدَيْهِ يَذْعُو. ثُمَّ يَأْتِي الْجَمْرَةَ الَّتِي عِنْدَ الْعَقَبَةِ فَيَرْمِيهَا بِسَبْعِ حَصَيَّاتٍ، يُكَبِّرُ عِنْدَ كُلِّ حَصَاةٍ، ثُمَّ يَنْصَرِفُ وَلَا

ने कहा कि मैंने सालिम से सुना वो भी इसी तरह अपने वालिद (इब्ने उमर रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की हदीष बयान करते थे और ये कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) खुद भी इसी तरह किया करते थे। (राजेअ: 1751)

يَقِفُ عِنْتَهَا) قَالَ الزُّهْرِيُّ: سَمِعْتُ  
سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يُحَدِّثُ بِمِثْلِ هَذَا عَنْ  
أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقُولُ.

[راجع: ١٧٥١]

**तशरीह:** हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व फिलहदीषि मशरूइयतु तवबीरि इन्द रम्यि कुल्लि हसातिन व कद अज्मऊ अला मन तरकहू ला यलज़िमुहू शैउन इल्लि शौरी फ़क़ाल युतइमु व अन्न जबहू बिदमिन अहब्बु इलध्थ व अलरम्यि बिसब्ड़न व क़द तक्रहम मा फ़ीहि व अला इस्तिक्बालिल क़िबलति बअदरम्यि वल क्रियामि तवीलन व क़द वक्र अत्तप्सरीरु फ़ीमा रवाहु इब्नु अबी शैबत बिइस्नादिन सहीहिन अन अता कान इब्नु उमर यकूम इन्दल जम्तैनि मिक्दारम्मा युक्उर सूरतुल फ़ातिहति व फ़ीहि तबाउद मिम्मा ज़िर्म्यि इन्दल क्रियामि लिहुआइ हत्ता ला युसीबु रम्यु गैरिही व फ़ीहि मशरूइयतुन रफ़उल यदैनि फ़िहुआइ व तकिहुआइ वल क्रियामि इन्द जम्तिल अकबति (फ़तुहल बारी)

या'नी इस हदीष में हर कंकरी को मारते वक़्त तवबीर कहने की मशरूइयत का ज़िक्र है और इस पर इज्माअ है कि अगर किसी ने इसे तर्क किया तो उस पर कुछ लाज़िम नहीं आएगा मगर शौरी कहते हैं कि वो मिस्कीनों को खाना खिलाएगा और अगर दम दे तो ज़्यादा बेहतर है और इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि सात कंकरियों से रमी करना मशरूअ है और वो भी प्राबित हुआ कि रमी के बाद क़िब्ला रुख़ होकर काफ़ी देर तक खड़े खड़े हुआ मांगना भी मशरूअ है। यहाँ तक कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) जम्तैन के नज़दीक इतनी देर तक क्रियाम फ़र्माते जितनी देर में सूरह बक़र ख़त्म की जाती है। इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि उस वक़्त दुआओं में हाथ उठाना भी मशरूअ है और ये भी कि जम्ह इक्बाल के पास न तो क्रियाम करना है न दुआ करना वहाँ से कंकरियाँ मारते ही वापस हो जाना चाहिये।

**मज़ीद हिदायात:** ग़ारहवीं ज़िलिह्ज तक ये तारीख़ें अय्यामे तशरीक़ कहलाती हैं, तवाफ़ इफ़ाज़ा जो दस को किया है उसके बाद से तारीख़ों में मिना के मैदान में मुस्तक़िल पड़ाव रखना चाहिये। ये दिन खाने-पीने के हैं, इनमें रोज़ा रखना भी मना है। इन दिनों में हर रोज़ ज़वाल के बाद जुहर की नमाज़ से पहले तीनों शैतानों को कंकरियाँ मारनी होंगी जैसा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) रिवायत करती हैं, क़ालत अफ़ाज़ रसूलल्लाहि (ﷺ) मिन आख़िर यौमिही हीन मल्लजुहर वुम्म रजअ इला मिना फ़मक़ष बिहा लयाली अय्याम तशरीकि यर्मिल जम्त इज़ा जालतिशशम्सु कुल्लु जम्तिन बिसब्ड़ हसयातिन युक्बिरु मअ कुल्लि हसातिन व यकिफ़ु इन्दल ऊला वष़ानियति फ़युतीलुल क्रियाम व यतफ़रउ व यर्मिष़ालिष़त फ़ला यकिफ़ु इन्दहा (रवाहु अबू दाऊद) या'नी नबी करीम (ﷺ) जुहर की नमाज़ तक तवाफ़े इफ़ाज़ा से फ़ारिग़ हो गये फिर आप (ﷺ) मिना वापस तशरीफ़ ले गए और अय्यामे तशरीक़ में आप (ﷺ) ने मिना में ही रात को क्रियाम किया। ज़वाले शम्स (सूरज डूबने) के बाद आप (ﷺ) रोज़ाना रम्ये-जिमार करते हर जम्ह पर सात-सात कंकरियाँ मारते और हर कंकरी पर ना'रा-ए-तवबीर बुलन्द करते जम्ह ऊला जम्ह प़ानिया के पास बहुत देर तक आप (ﷺ) क्रियाम करते और बारी तअाला के सामने गिरया वज़ारी फ़र्माते जम्ह-ए-प़ालिष़ा पर कंकरी मारते वक़्त यहाँ क्रियाम नहीं फ़र्माते थे। पस तेरह ज़िलिह्ज के वक़्त ज़वाल तक मिना में रहना होगा। उन अय्याम में तवबीरात भी पढ़नी ज़रूरी हैं, कंकरियाँ बाद नमाज़े जुहर भी मारी जा सकती हैं।

**रम्ये-जिमार क्या है?** कंकरियाँ मारना, सफ़ा व मरवा की सई करना, ये अमल ज़िक़रुल्लाह को क्रियाम रखने के लिये हैं जैसा कि तिर्मिज़ी में हज़रत आइशा (रज़ि.) से मफूअन् मरवी है। कंकरियाँ मारना शैतान को रजम करना है, ये हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम की सुन्नत है। आप जब मनासिके हज्ज अदा कर चुके तो जम्-ए-उक्बा पर आपके सामने शैतान आया आप (अलैहिस्सलाम) ने उस पर सात कंकरियाँ मारीं जिससे वो ज़मीन में धंसने लगा। फिर जम्-ए-धानिया पर वो आप (अलैहिस्सलाम) के सामने आया तो आपने वहाँ भी सात कंकरियाँ मारी जिससे फिर वो ज़मीन में धंसने लगा। फिर जम्-ए-मालिषा पर आप (अलैहिस्सलाम) के सामने आया तो भी आपने सात कंकरियाँ मारीं जिससे वो एक बार फिर ज़मीन में धंसने लगा। ये उसी वाकिये की यादगार हैं।

कंकरियाँ मारने से मुहलिकतरीन गुनाहों में से एक गुनाह मुआफ़ होता है। नीज़ कंकरियाँ मारने वाले के लिये क़यामत के रोज़ वो कंकरी बाअिषे रोशनी होगी। जो कंकरियाँ बारी तअाला के दरबार में कुबूलियत के दर्जे को पहुँचती हैं, वो वहाँ से उठ जाती हैं अगर ये बात न होती तो पहाड़ों के ढेर लग जाते (मिशकात मज्मअुज्जवाइद) अब तीनों जम्मात की तफ़्सील अलग-अलग लिखी जाती है।

**जम्-ए-ऊला :** ये पहला मिनारा है जिसको पहला शैतान कहा जाता है। ये मस्जिदे ख़ैफ़ की तरफ़ बाज़ार में है। ग्यारह तारीख़ को उसी से कंकरियाँ मारनी शुरू करें, कंकरियाँ मारते वक़्त क़िब्ला शरीफ़ को बाईं तरफ़ और मिना दाएँ हाथ करना चाहिये। अल्लाहु अकबर कहकर एक एक कंकरी पीछे बतलाए तरीक़े से फेंके। जब सातों कंकरियाँ मार चुकें तो क़िब्ला की तरफ़ चन्द क़दम बढ़ जाएँ और क़िब्ला रुख़ होकर दोनों हाथ उठाकर तस्बीह, तहमीद व तहलील व तक्बीर पुकारें और ख़ूब दुआएँ मांगें। सुन्नत तरीक़ा ये है कि उतनी देर तक यहाँ दुआ मांगें और ज़िक्र करें जितनी देर सूरह बक़र की तिलावत में लगती है इतना न हो सके तो जो कुछ हो सके उसको ग़नीमत जानें।

**जम्-ए-वुस्ता :** ये दरम्यानी मिनारा है जिस तरह जम्-ए-ऊला को कंकरियाँ मारी थीं उसी तरह इसको भी मारें और चन्द क़दम बाएँ तरफ़ हटकर नशीब में क़िब्ला रुख़ खड़े होकर पहले की तरह दुआएँ मांगें और बक़दे तिलावत सूरह बक़र, हम्द व शना-ए-इलाही में मशगूल रहें। (बुखारी)

**जम्-ए-उक्बा :** ये मिनारा बैतुल्लाह की जानिब है इसको बड़े शैतान के नाम से पुकारा जाता है इसको भी उसी तरह कंकरियाँ मारें। हाँ इसको कंकरियाँ मारकर यहाँ ठहरना नहीं चाहिये और न यहाँ ज़िक्र—अज़्कार और दुआएँ होनी चाहिये। (बुखारी)

ये तेरह ज़िल्हिज्ज के ज़वाल तक का प्रोग्राम है या'नी 13 की ज़वाल तक मिना में रहकर रोज़ाना वक़्ते मुकर्ररह पर रम्ये—जिमार करना चाहिये हाँ ज़रूरतमन्दों मज़लन ऊँट चराने वालों और आबे ज़मज़म के खादिमों और ज़रूरी काम—काज करने वालों के लिये इजाज़त है कि ग्यारहवीं तारीख़ ही को ग्यारह के साथ बारह तारीख़ की भी इकट्ठी चौदह कंकरियाँ मारकर चले जाएँ, फिर तेरह की तेरह की कंकरियाँ मारकर मिना से रुख़सत होना चाहिये अगर कोई बारह ही को 13 की भी मारकर मिना से रुख़सत हो जाए तो जवाज़ के दर्जे में है मगर बेहतर नहीं है। दौराने क़याम मिना में नमाज़ बाजमाअत मस्जिदे ख़ैफ़ में अदा करनी चाहिये। यहाँ नमाज़ जमा नहीं कर सकते हाँ क़स्र कर सकते हैं।

जम्मा के पास वाली मस्जिदों की दाखिली और उनका तवाफ़ करना बिदअत है, मिना से तेरहवीं तारीख़ को ज़वाल के बाद तीनों शैतानों को कंकरियाँ मारकर मक्का शरीफ़ को वापसी है, कंकरियाँ मारते हुए सीधे वादी मुह्रसब को चले जाएँ ये मक्का शरीफ़ के करीब एक घाटी है जो एक संगरेज़ा ज़मीन है इसीबुल बह्र और बह्रा और ख़ैफ़ बनी किनाना भी इसी के नाम हैं, यहाँ उतरकर नमाज़े जुहर, अ़स्र, मसिब और इशा अदा करें और सो रहें। सुबह सवेरे मक्का शरीफ़ में चौदह की फ़ज्र के बाद दाखिल हों। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसा ही किया था अगर कोई इस वादी में न उठे तो भी कोई हज़्र नहीं है, मगर सुन्नत से मेहरूमी रहेगी यहाँ ठहरना अरकाने हज़्ज में से नहीं है लेकिन हमारी कोशिश हमेशा यही होनी चाहिये जहाँ तक हो सके सुन्नत तर्क न हो, जैसाकि एक शाइरे सुन्नत फ़मति हैं :-

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे थड़क। जन्नतुल फिरदौस को सीधी गई है ये सड़क॥

## बाब 143 : रम्ये-जिमार के बाद खुशबू लगाना और तवाफ़ जियारत से पहले सर मुँडाना

۱۴۳- بَابُ الطَّيِّبِ بَعْدَ رَمْيِ  
الْجِمَارِ، وَالْحَلْقِ قَبْلَ الْإِفَاحَةِ

इमाम बुखारी (रह.) ने बाब की हदीस से ये मज़मून इस तरह निकाला कि दूसरी रिवायत से ये प्राबित है कि आप (ﷺ) जब मुजदलिफ़ा से लौटे तो हज़रत आइशा (रज़ि.) आपके साथ थीं और ये भी प्राबित है कि आप (ﷺ) जम्-ए-उक़बा की रमी तक सवार रहे। पस ला-मुहाला उन्होंने रमी के बाद आपको खुशबू लगाई होगी। जुम्हूर उलमा का यही कौल है कि रमी और हलक़ के बाद खुशबू लगाना और सिले हुए कपड़े पहनना दुरुस्त हो जाते हैं, सिर्फ़ औरतों से सुहबत करना दुरुस्त नहीं होता, तवाफ़े जियारत के बाद वो भी दुरुस्त हो जाता है। बैहक़ी ने ये मज़मून मर्फूअन रिवायत किया है, गो वो हदीस ज़ईफ़ है और निसाई की हदीस यूँ है, इज़ा रमैतुल जम्रत फ़क़द हल्ल लकुम इल्लनत्रिसाड या'नी जब तुम जम्-ए-उक़बा की रमी से फ़ारिग हो गए गो अब औरतों के सिवा हर चीज़ तुम्हारे लिये हलाल हो गई।

1754. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, वो फ़र्माती थीं कि मैंने खुद अपने हाथों से रसूलुल्लाह (ﷺ) के, जब आपने एहराम बाँधना चाहा, खुशबू लगाई थी इस तरह एहराम खोलते वक़्त भी जब आपने तवाफ़े जियारत से पहले एहराम खोलना चाहा था (आपने हाथ फैलाकर खुशबू लगाने की कैफ़ियत बताई) (राजेअ : 1539)

۱۷۵۴- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْقَاسِمِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ - وَكَانَ الْفَضْلُ أَهْلَ رَمَاهِ - يَقُولُ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: ((طَبِثْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِيَدَيَّ خَاتَمَيْنِ جَيْنِ أَخْرَمَ، وَلِخَلْوٍ جَيْنِ أَحَلَّ قَبْلَ أَنْ يَطُوفَ. وَتَسَطَّتْ يَدَيْهَا)).

[راجع: ۱۵۳۹]

## बाब 144 : तवाफ़े विदाअ का बयान

इसको तवाफ़े स़द्र भी कहते हैं अक़बर उलमा के नज़दीक ये तवाफ़ वाजिब है और इमाम मालिक वग़ैरह इसको सुन्नत कहते हैं मगर स़हीह हदीस से प्राबित है कि हैज़ निफ़ास के इज़ से इसका तर्क कर देना और वतन को चले जाना जाइज़ है।

1755. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे इब्ने त़ाऊस ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि लोगों को इसका हुक्म था कि उनका आख़िरी वक़्त बैतुल्लाह के साथ हो (या'नी तवाफ़े विदाअ करें) अल्बत्ता हाइज़ा से ये मुआफ़ हो गया था। (राजेअ : 329)

۱۷۵۵- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَمَرَ النَّاسُ أَنْ يَكُونَ آخِرُ عَهْدِهِمْ بِالنِّبْتِ، إِلَّا أَنْ لَّهُ خُفَّ عَنْ الْحَالِصِ)). [راجع: ۳۲۹]

**तशरीह :** कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का फ़त्वा हाइज़ा और निफ़ास वाली औरतों के बारे में पहले ये था कि वो हैज़ और निफ़ास का खून बन्द होने तक इंतज़ार करें और पाक होने पर तवाफ़े विदाअ करके रुख़्सत हों, मगर जब उनको नबी करीम (ﷺ) की ये हदीस मा'लूम हुई तो उन्होंने अपने इस मसलक से रुजूअ कर लिया। इससे प्राबित होता है कि स़हाबा किराम (रज़ि.) का आम दस्तूरल अमल यही तो था कि वो हदीसे स़हीह के सामने अपने ख़्यालात को छोड़

देते थे और अपने मसलक से रुजूअ कर लिया करते थे, न जैसा कि बाद के मुकल्लिदीने जामिदीन का दस्तूर बन गया है कि हदीष सहीह जो उनके मज़हब मसलक के खिलाफ़ हो उसे बड़ी बेबाकी के साथ रद्द कर देते हैं और अपने मज़हब इمام के क़ौल को हर हालत में तरजीह देते हैं। आयते करीमा इत्तरख़जू अहबारहुम व रुहबानहुम अब्बाबम्मिन दूनिस्लाहि (अत्तीबा : 31) के मिस्दाक़ दर हकीकत यही लोग हैं जिनके बारे में हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष मरहूम ने फ़र्माया कि अहदीषे सहीहा को रद्द करके अपने इمام के क़ौल को तरजीह देने वाले उस दिन क्या जवाब देंगे जिस दिन दरबारे इलाही में पेशी होगी। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा)

1756. हमसे अम्बग बिन फ़रज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको उनसे वहब ने ख़बर दी, उन्हें अमर बिन हारिष ने, उन्हें क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जुहर, अम्र, मरिब और इशा पढ़ी, फिर थोड़ी देर मुहम्मसब में सोये रहे, उसके बाद सवार होकर बैतुल्लाह तशरीफ़ ले गए और वहाँ तवाफ़े ज़ियारत अम्र बिन हारिष के साथ किया, इस रिवायत की मुताबअत लैज़ ने की है, उनसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

(दीगर मक़ाम : 1764)

۱۷۵۶- حَدَّثَنَا اصْبَغُ بْنُ الْفَرَجِ أَخْبَرَنَا  
ابْنُ وَهْبٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْخَارِثِ عَنْ  
قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
حَدَّثَهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى الْظَهْرَ وَالْعَصْرَ  
وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ، ثُمَّ رَقَدَ رَقْدَةً  
بِالْمُخْصَبِ، ثُمَّ رَكِبَ إِلَى النَّبْتِ لَطَافٍ  
بِهِ)). فَابْتَعَهُ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي خَالِدٌ عَنْ سَعِيدٍ  
عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ حَدَّثَهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرنه ۱ : ۱۷۶۴].

### बाब 145 : अगर तवाफ़े इफ़ाज़ा के बाद औरत हाइज़ा हो जाए?

### ۱۴۵- بَابُ إِذَا حَاضَتِ الْمَرْأَةُ

بَعْدَ مَا أَفَاضَتْ

1757. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमें इمام मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुरहमान बिन क़ासिम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा सफ़िया बिन्ते हज़िय (रज़ि.) (हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) हायज़ा हो गई तो मैंने उसका ज़िक्र आँहज़रत (ﷺ) से किया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तो ये हमें रोकेगी, लोगों ने कहा कि उन्होंने तवाफ़े इफ़ाज़ा कर लिया है, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर कोई फ़िक्र नहीं। (राजेअ : 294)

۱۷۵۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ أَخْبَرَنَا  
مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ  
عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ  
صَفِيَّةَ بِنْتَ حُصَيْنٍ زَوَّجَ النَّبِيَّ ﷺ، حَاضَتِ  
فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ:  
«أَحَابِسْتَنَا هِيَ؟» قَالُوا: إِنِّهَا لَذَ  
أَفَاضَتْ، قَالَ: ((فَلَا إِذَا)). [راجع: ۲۹۴]

**तशरीह :** यहाँ ये इश्काल (पेशानी) पैदा होती है कि एक रिवायत में पहले गुज़र चुका है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत सफ़िया (रज़ि.) से सुहबत करनी चाही तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि वो हाइज़ा हैं। पस अगर आपको ये मा'लूम न था कि तवाफ़े ज़ियारत कर चुकी हैं, जैसे इस रिवायत से निकलता है तो फिर आप (ﷺ) ने उनसे सुहबत करने का इरादा क्योंकर किया और इसका जवाब ये है कि सुहबत का क़स्द करते वक़्त ये समझे होंगे कि और बीवियों के साथ वो भी तवाफ़े ज़ियारत कर चुकी हैं क्योंकि आप (ﷺ) ने सब बीवियों को तवाफ़ का इज़्ज दिया था और चलते वक़्त आप (ﷺ) को



इसका ख्याल आया कि शायद तवाफ़े ज़ियास्त से पहले उनको हँज आया था तो उन्होंने तवाफ़े ज़ियास्त भी नहीं किया (वहीदी)। बहरहाल उस सूरत में दोनों अह्दादीष में तत्बीक हो जाती है, अह्दादीषे सहीह्मा मुख्तलिफ़ा में इस तौर पर तत्बीक देना ही मुनासिब है न कि उनको रद्द करने की कोशिश करना जैसा कि आजकल मुन्किरीने अह्दादीष दस्तूर से अपनी नाक़ि़स अक्ल के तहत अह्दादीष को परखना चाहते हैं उनकी अक्लों पर अल्लाह की मार हो कि ये कलाम रसूल (ﷺ) की गहराईयों को समझने से अपने का क़ाज़िर पाकर ज़लालत व ग़वायत का ये ख़तरनाक रास्ता इख़्तियार करते हैं। इस शक व शुब्हा के लिये एक ज़र्रा बराबर भी गुंजाईश नहीं है कि अह्दादीष सहीह्मा का इन्कार करना, कुआन मजीद का इन्कार करना है, बल्कि इस्लाम और इस जामेअ शरीअत का इन्कार करना है, इस हकीक़त के बाद मुन्किरीने हदीष को अगर दायर-ए-इस्लाम और रोज़मर्मा अहले ईमान से क़तअन ख़ारिज़ क़रार दिया जाए तो ये फैसला ऐन हक़ बजानिब है। बल्लाह अला मा नक़ल वकील

1758, 59. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इकिस्मा ने कि मदीना के लोगों ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से एक औरत के बारे में पूछा कि जो तवाफ़ करने के बाद हाइजा हो गई थीं, आपने उन्हें बताया कि (उन्हें ठहरने की ज़रूरत नहीं बल्कि) चली जाएँ। लेकिन पूछने वालों ने कहा हम ऐसा नहीं करेंगे कि आपकी बात पर अमल तो करें और ज़ैद बिन स़ाबित की बात छोड़ दें, इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब तुम मदीना पहुँच जाओ तो ये मसला वहाँ (अकाबिरे स़हाबा रज़ि. से) पूछना। धुनौचे जब ये लोग मदीना आए तो पूछा, जिन अकाबिर से पूछा गया था उनमें उम्मे सुलैम (रज़ि.) भी थीं और उन्होंने (उनके जवाब में वही) स़फ़िया (रज़ि.) की हदीस बयान की इस हदीस को ख़ालिद और क्रतादा ने भी इकिस्मा से रिवायत किया है।

١٧٥٨، ١٧٥٩ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ  
حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ ((أَنَّ  
أَهْلَ الْمَدِينَةِ سَأَلُوا ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا عَنْ امْرَأَةٍ طَلَّتْ ثُمَّ حَاضَتْ، قَالَ  
لَهُمْ: تَفَرُّوا، قَالُوا: لَا نَأْخُذُ بِقَوْلِكَ وَنَدْعُ  
قَوْلَ زَيْدٍ، قَالَ: إِذَا قَدِمْتُمُ الْمَدِينَةَ  
فَسَأَلُوا، فَقَدِمُوا الْمَدِينَةَ فَسَأَلُوا، فَبَكَتْ  
فَيَمْنُ سَأَلُوا أُمَّ سَلِيمٍ، فَذَكَرَتْ حَدِيثَ  
صَفِيَّةَ)) رَوَاهُ غَالِيزٌ وَقَتَادَةُ عَنْ عِكْرِمَةَ.

1760. हमसे मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने त्ताऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि औरत को इसकी इजाज़त है कि अगर वो तवाफ़े इफ़ाज़ा (तवाफ़े ज़ियारत) कर चुकी हो और फिर (तवाफ़े विदाअ से पहले) हैज़ आ जाए तो (अपने घर) वापस चली जाए। (राजेअ: 329)

١٧٦٠- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا وَهْبٌ  
حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((رُفِعَ لِلْحَبَشِيِّ  
إِنْ تَغَيَّرَ إِذَا أَفَاضَتْ)). [راجم: ٣٢٩]

1761. कहा मैंने इब्ने इमर को कहते सुना कि इस औरत के लिये वापस नहीं। उसके बाद मैं ने उनसे सुना आप फ़र्माते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने औरतों को उसकी इजाज़त दी है। (राजेअ: 330)

١٧٦١- قَالَ: وَسَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: إِنَّهَا لَا تَنْفِرُ، ثُمَّ سَمِعْتُهُ يَقُولُ بَعْدَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَخِصَ لَهَا. [راجع: ٣٣٠]

ऐसी मा'जूर (असमर्थ, मजबूर) औरतों के लिये त्वाफ़े विदाअ मुआफ़ है, और वो इसके बग़ैर अपने वतन लौट सकती हैं।

1762. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे

١٧٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو

अबू अवाना ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे इब्राहीम नख्छी ने, उनसे अस्वद ने और उनसे हजरत आइशा (रजि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ निकले, हमारी नियत हज्ज के सिवा और कुछ न थी। फिर जब नबी करीम (ﷺ) (मक्का) पहुँचे तो आप (ﷺ) ने बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा और मरवा की सई की, लेकिन आप (ﷺ) ने एहराम नहीं खोला क्योंकि आपके साथ कुर्बानी थी आप (ﷺ) के साथ आप (ﷺ) की बीवियों ने और दीगर अम्हाब ने भी तवाफ़ किया और जिनके साथ कुर्बानी नहीं थी उन्होंने (उस तवाफ़ व सई के बाद) एहराम खोल दिया लेकिन हजरत आइशा (रजि.) हाइजा हो गई थीं, सबने अपने हज्ज के तमाम मनासिक अदा कर लिये थे, फिर जब लैलतुल हस्बा या 'नी रवानगी की रात आई तो आइशा (रजि.) ने अर्ज की या रसूलुल्लाह (ﷺ) आप (ﷺ) के तमाम साथी हज्ज और इम्रह दोनों करके जा रहे हैं सिर्फ़ मैं इम्रह से मुह्रूम हूँ, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा जब हम आए थे तो तुम (हज्ज की वजह से) बैतुल्लाह का तवाफ़ नहीं कर सकी थीं? मैंने कहा कि नहीं, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर अपने भाई के साथ तन्ईम चली जा और वहाँ से इम्रह का एहराम बाँध (और इम्रह कर) हम तुम्हारा फ़लाँ जगह इतिज़ार करेंगे, चुनौचे मैं अपने भाई (अब्दुर्रहमान रजि.) के साथ तन्ईम गई और वहाँ से एहराम बाँधा। इसी तरह सफ़िया बन्ते हथिय (रजि.) भी हाइजा हो गई थीं नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें (अज़राहे मुहब्बत) फ़र्माया अक़्रा हल्कड़, तो तू हमें रोक लेगी, क्या तूने कुर्बानी के दिन तवाफ़े ज़ियारत नहीं किया था? वो बोलीं कि किया था, इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर कोई हर्ज नहीं, चली चलो। मैं जब आप तक पहुँची तो आप (ﷺ) मक्का के बालाई इलाक़े पर चढ़ रहे थे और मैं उतर रही थी या ये कहा कि मैं चढ़ रही थी और हुज़ूर (ﷺ) उतर रहे थे। मुसहद की रिवायत में (रसूलुल्लाह ﷺ के कहने पर) हाँ के बजाए नहीं है, उसकी मुताबअत जरीर ने मन्सूर के वास्ते से नहीं के ज़िक्र में की है। (राजेअ : 294)

عَوَانَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ  
الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا  
قَالَتْ: «خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَلَا نَرَى  
إِلَّا الْحَجَّ، فَقَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ فَطَافَ بِالنِّبْتِ  
وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ وَلَمْ يَحِلَّ، وَكَانَ  
مَعَهُ الْهِنْدِيُّ فَطَافَ مَنْ كَانَ مَعَهُ مِنْ  
بَنَاتِهِ وَاصْحَابِهِ، وَحَلَّ مِنْهُمْ مَنْ لَمْ يَكُنْ  
مَعَهُ الْهِنْدِيُّ، فَخَاضَتْ هِيَ، فَسَكَنَّا  
مَنَابِكَا مِنْ حَبْنًا. فَلَمَّا كَانَ لَيْلَةُ  
الْحَضَبَةِ لَيْلَةُ النَّفَرِ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ  
كُلُّ اصْحَابِكَ يَرْجِعُ بِحَجٍّ وَحُمْرَةٍ غَيْرِهِ.  
قَالَ: «مَا كُنْتُ تَطُوفِي بِالنِّبْتِ لِيَأْتِي  
قَدِيمًا؟» قُلْتُ: لَا. قَالَ: «فَاخْرُجِي مَعَ  
أَخِيكَ إِلَى التَّيْمِمِ فَأَهْلِي بِعُمْرَةٍ،  
وَمَوْعِدُكَ مَكَانٌ كَذَا وَكَذَا». فَخَرَجْتُ  
مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِلَى التَّيْمِمِ فَأَهْلَلْتُ  
بِعُمْرَةٍ. وَخَاضْتُ صَفِيَّةَ بِنْتُ حَسٍّ، فَقَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: «عَفَرَى خَلْقِي، إِنَّكَ لَخَائِسَتَا  
أَمَّا كُنْتُ طَلُفْتُ يَوْمَ النَّحْوِ؟» قَالَتْ: بَلَى،  
قَالَ: «(فَلَا بَأْسَ الْفَرِيَّ)). فَلَقِيْتُهُ مُصْعِدًا  
عَلَى أَهْلِ مَكَّةَ وَأَنَا مُنْهَبِطَةٌ، أَوْ آتَا  
مُصْعِدَةً وَهُوَ مُنْهَبِطٌ. قَالَ مُسَدَّدٌ  
«قُلْتُ: لَا)). تَابَعَهُ جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ فِي  
قَوْلِهِ «(لَا)). [راجع: ٢٩٤]

अक़्रा के लफ़्ज़ी तर्जुमा बांझ और हल्कड़ का तर्जुमा सरमुँडी है ये अल्फ़ाज़ आप (ﷺ) ने मुहब्बत में इस्तेमाल किये, मा'लूम हुआ कि ऐसे मौकों पर ऐसे लफ़्ज़ों का इस्तेमाल जाइज़ है।

## बाब 146 : उसके बारे में जिसने खानगी के दिन अस्त्र की नमाज़ अब्तह में पढ़ी

1763. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे सुफयान शौरी ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन रुफ़ैअ ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा, मुझे वो हदीस बताइये जो आपको रसूलुल्लाह (ﷺ) से याद हो कि उन्होंने आठवीं ज़िहिल्ज के दिन जुहर की नमाज़ कहाँ पढ़ी थी, उन्होंने कहा मीना में, मैंने पूछा और खानगी के दिन अस्त्र कहाँ पढ़ी थी उन्होंने फ़र्माया कि अब्तह में और तुम उसी तरह करो जिस तरह तुम्हारे हाकिम लोग करते हैं। (ताकि फ़िल्ना वाक़ेअ न हो) (राजेअ : 1653)

1764. हमसे अब्दुल मुतआल बिन तालिब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अमर बिन हारिष ने ख़बर दी, उनसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया जुहर, अस्त्र मरिब और इशानबी करीम (ﷺ) ने पढ़ी और थोड़ी देर के लिये मुहस्सिब में सो रहे, फिर बैतुल्लाह की तरफ़ सवार होकर गए और तवाफ़ किया। (यहाँ तवाफ़े ज़ियारत मुराद है)

(राजेअ : 1756)

किसी ने क्या खूब कहा है

अमर अलहियारि दियारु लैला  
व मा हुब्बुदियारि शगफ़न कल्बी  
अक़बल जा जिदारिन व ज़ल्जिदारा  
व लाकिन हब्ब मन सकनदियारा

## बाब 147 : वादी मुहस्सिब का बयान

मुहस्सिब एक खुला मैदान मक्का और मीना के बीच वाक़ेअ है उसको अब्तह और बत्हा और ख़ैफ़ बनी किनान भी कहते हैं।

1765. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफयान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वाने, उनसे उनके वालिद

## ١٤٦- بَابُ مَنْ صَلَّى الْعَصْرَ يَوْمَ النَّفَرِ بِالْأَبْطَحِ

١٧٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رَجِيعٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ: أَخْبَرَنِي بِشَيْءٍ عَقَلْتُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّنِي صَلَّى الظُّهْرَ يَوْمَ التَّرْوِيَةِ؟ قَالَ: بَعْنِي. قُلْتُ: فَأَيَّنَ صَلَّى الْعَصْرَ يَوْمَ النَّفَرِ؟ قَالَ: بِالْأَبْطَحِ، أَعْمَلُ كَمَا يَفْعَلُ أَمْرَاؤُكَ)). [راجع: ١٦٥٣]

١٧٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمُتَعَالِ بْنِ طَالِبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ أَنَّ قَتَادَةَ حَدَّثَهُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ ((أَنَّهُ صَلَّى الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ وَرَقَدَ وَرَقَدَ بِالْمُحَصَّبِ، ثُمَّ رَكِبَ إِلَى الْيَتْرِ فَطَافَ)). [راجع: ١٧٥٦]

## ١٤٧- بَابُ الْمُحَصَّبِ

١٧٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ

ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि औहज़रत (ﷺ) मीना से कूच करके यहाँ मुहम्मद में इसलिये उतरे थे ताकि आसानी के साथ मदीना को निकल सकें। आप (ﷺ) की मुराद अब्दुल्लाह में उतरने से थी।

1766. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अमर ने अता बिन अबी रिबाह से बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुहम्मद में उतरना हज्ज की कोई इबादत नहीं है, ये तो सिर्फ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़याम की जगह थी।

मुहम्मद में ठहरना कोई हज्ज का ख़ून नहीं। आप (ﷺ) वहाँ आराम के लिये इस ख़्याल से कि मदीना की ख़ानगी वहाँ से आसान होगी ठहर गए थे चुनाँचे अरैयन व मग़िबैन आपने वहाँ अदा की, इस पर जब आप (ﷺ) वहाँ ठहरे तो ये ठहरना मुस्तहब हो गया और आप (ﷺ) के बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत उमर (रज़ि.) भी वहाँ ठहरा करते थे।

**बाब 148 : मक्का में दाख़िल होने से पहले ज़ीतुवा में क़याम करना और मक्का से वापसी में जुलुहुलैफ़ा के कंकरीले मैदान में क़याम करना**

1767. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू ज़म्ह्र अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) मक्का जाते वक़्त ज़ीतुवा की दोनों पहाड़ियों के बीच रात गुज़ारते थे और फिर उस पहाड़ी से होकर गुज़रते जो मक्का के ऊपर की तरफ़ है और जब मक्का में हज्ज या उम्रह का एहराम बाँधने आते तो अपनी कैंटनी मस्जिद के दरवाज़े पर लाकर बिठाते फिर हज़रे अस्वद के पास आते और यहीं से तवाफ़ शुरू करते, तवाफ़ सात चक्करों में ख़त्म होता जिसके शुरू के तीन में रमल करते और चार में मा'भूल के मुताबिक़ चलते, तवाफ़ के बाद दो रक़अत नमाज़ पढ़ते फिर डेरा पर वापस होने से पहले सफ़ा व मरवा की सई करते। जब हज्ज या उम्रह करके मदीना वापस होते तो जुलुहुलैफ़ा के मैदान में सवारी बिठाते, जहाँ नबी करीम (ﷺ) भी (मक्का से मदीना वापस होते हुए)

عَنْهَا قَالَتْ : ((إِنَّمَا كَانَ مَنَزَلُ نَزْلَةِ النَّبِيِّ ﷺ لِيَكُونَ أَسْمَحَ لِمَنْ رُوحَهُ)) يَخْبِي بِالْأَنْطَحِ.

١٧٦٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرُو عَنْ عَطَاءٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((لَيْسَ التَّخَصُّيبُ بِشَيْءٍ، إِنَّمَا هُوَ مَنَزَلُ نَزْلَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

١٤٨- بَابُ النَّزُولِ بِبَيْتِ طُوى قَبْلَ أَنْ يَدْخُلَ مَكَّةَ وَالنَّزُولُ بِالْبَطْحَاءِ الَّتِي بِبَيْتِ الْخَلِيفَةِ إِذَا رَجَعَ مِنْ مَكَّةَ

١٧٦٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَبُو حَضْرَةَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ ((أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يَبِيتُ بِبَيْتِ طُوى بَيْنَ الشَّجَرَيْنِ، ثُمَّ يَدْخُلُ مِنَ الْبَيْتِ الَّتِي بِأَعْلَى مَكَّةَ. وَكَانَ إِذَا قَلِمَ مَكَّةَ حَاجًّا أَوْ مُعْتَمِرًا لَمْ يُبْغِ نَاقَتَهُ إِلَّا عِنْدَ بَابِ الْمَسْجِدِ، ثُمَّ يَدْخُلُ قِبْلَتِي الرُّكْنِ الْأَسْوَدَ قَبْلَ أَنْ يَبْغِ، ثُمَّ يَطُوفُ سِتْمًا: ثَلَاثًا سَعْيًا، وَارْتِمًا مَشًّا. ثُمَّ يَنْصَرِفُ فَيُصَلِّي سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ يَنْطَلِقُ قَبْلَ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى مَنَزِلِهِ فَيَطُوفُ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ. وَكَانَ إِذَا صَنَرَ عَنِ الْحَجِّ أَوْ

अपनी सवारी बिठाया करते थे।

(राजेअ: 491)

1768. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे खालिद बिन हारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह से मुहम्मद के बारे में पूछा गया तो उन्होंने नाफ़ेअ से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और हज़रत इमर और इब्ने इमर (रज़ि.) ने मुहम्मद में क्रयाम फ़र्माया था।

नाफ़ेअ से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) मुहम्मद में जुहर और अमर पढ़ते थे। मेरा ख़याल है कि उन्होंने मरिब (पढ़ने का भी) ज़िक्र किया, ख़ालिद ने बयान किया कि इशा में मुझे कोई शक नहीं। उसके पढ़ने का ज़िक्र ज़रूर किया फिर थोड़ी देर के लिये वहाँ सो रहते नबी करीम (ﷺ) से भी ऐसा ही मज़कूर है।

**बाब 149 : उसके बारे में जिसने मक्का से वापस होते हुए जीतुवा में क्रयाम किया**

1769. और मुहम्मद बिन ईसा ने कहा कि हमसे हम्माद बिन सलमा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) जब मदीना से मक्का आते तो जीतुवा में रात गुज़ारते और जब सुबह होती तो मक्का में दाख़िल होते। इसी तरह मक्का से वापसी में भी जीतुवा से गुज़रते और वहीं रात गुज़ारते और फ़र्माते कि नबी करीम (ﷺ) भी इसी तरह किया करते थे। (राजेअ: 491)

आजकल ये मक़ाम शहरी आबादी में आ गया है अल्हम्दुलिल्लाह 52 ईस्वी के सफ़र में यहाँ गुस्ल करने का मौक़ा मिला था।  
वल्हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक

**बाब 150 : ज़मान-ए-हज्ज में तिजारत करना और जाहिलियत के बाज़ारों में ख़रीद व फ़रोख़्त का बयान**

الْمُزْمَرَةُ أَنَاخَ بِالطَّحَاءِ الَّتِي بِلَدِي الْحُلَيْفَةِ  
الَّتِي كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُبْنِي بِهَا)).

[راجع: 491]

١٧٦٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ  
الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ:  
سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الْمُحَصَّبِ، لَحَدَّثَنَا  
عَبْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((تَوَلَّى بِهَا رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ وَغَمَرُ وَابْنُ غَمَرَ)).

وَعَنْ نَافِعٍ: ((أَنَّ ابْنَ غَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا كَانَ يُصَلِّي بِهَا - بَيْنَ الْمُحَصَّبِ  
- الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ - أَحْسَبُهُ قَالَ:  
وَالْمَغْرِبَ - قَالَ خَالِدٌ: لَا أَشْكُ فِي  
الْمِثْلِ، وَتَهَجَّعَ فَجَعَلَهُ، وَتَذَكَّرُ ذَلِكَ مِنَ  
النَّبِيِّ ﷺ)).

١٤٩- بَابُ مَنْ تَوَلَّى بِلَدِي طَوًى

إِذَا رَجَعَ مِنْ مَكَّةَ

١٧٦٩- وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى حَدَّثَنَا  
حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ غَمَرَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّكَ كَانَ إِذَا الْبَلَّ  
بَاتَ بِلَدِي طَوًى، حَتَّى إِذَا أَصْبَحَ دَخَلَ،  
وَإِذَا لَفَزَ مَرَّ بِلَدِي طَوًى وَبَاتَ بِهَا حَتَّى  
يُصْبِحَ. وَكَانَ يَذْكُرُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ  
يَفْعَلُ ذَلِكَ)). [راجع: 491]

١٥٠- بَابُ التِّجَارَةِ أَيَّامَ الْمَوْسَمِ  
وَالْتَّبَعِ فِي أَسْوَاقِ الْجَاهِلِيَّةِ

1770. हमसे इब्मान बिन हैशम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इब्ने जुरैज ने खबर दी, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जुल मजाज़ और उकाज़ अहदे जाहिलियत के बाज़ार थे जब इस्लाम आया तो गोया लोगों ने (जाहिलियत के उन बाज़ारों में) खरीद व फ़रोख़्त को बुरा ख़याल किया उस पर (सूरह बक्रर की) ये आयत नाज़िल हुई, तुम्हारे लिये कोई हर्ज नहीं अगर तुम अपने रब के फ़ज़ल की तलाश करो, ये हज्ज के ज़माने के लिये था।

(दीगर मक़ाम : 2050, 2098, 4519)

١٧٧٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ دِينَارٍ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((كَانَ ذُو الْمَجَازِ وَعُكَاظُ مَتَجَرِّ النَّاسِ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَلَمَّا جَاءَ الْإِسْلَامُ كَانَهُمْ كَرِهُوا ذَلِكَ حَتَّى نَزَلَتْ [البقرة : 198] لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْعُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فِي مَوَاسِمِ الْحَجِّ)).

[أطرافه في : ٢٠٥٠، ٢٠٩٨، ٤٥١٩.]

जाहिलियत के ज़माने में चार मण्डियाँ मशहूर थीं उकाज़, जुल मजाज़, मजिन्ना और हबाशा, इस्लाम के बाद बस हज्ज के दिनों में इन मण्डियों में खरीद व फ़रोख़्त और तिजारात जाइज़ रही। अल्लाह ने खुद कुआन शरीफ़ में इसका जवाज़ उतारा है कि तिजारात के ज़रिये नफ़ा हासिल करने को अपना फ़ज़ल क़रार दिया। जैसा कि आयते मज़क़ूर से वाज़ेह है। तिजारात करना अस्लाफ़ का बेहतरीन शुग़ल था जिसके ज़रिये वो अत्राफ़े आलम में पहुँचे, मगर अफ़सोस कि अब मुसलमानों ने इससे तवज्जह हटा ली जिसका नतीजा इफ़्लास (ग़रीबी) व ज़िल्लत की शक़ल में ज़ाहिर है।

### बाब 151 : (आराम कर लेने के बाद) वादी मुहम्मद से आख़िरी रात में चल देना

1771. हमसे अमर बिन हफ़स ने बयान किया, कहा कि हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे अमर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़्दी ने बयान किया, उनसे अस्वद ने और उनसे हजरत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मक्का से खानगी की रात सफ़िया (रज़ि.) हाइज़ा थीं, उन्होंने कहा कि ऐसा मा'लूम होता है मैं उन लोगों के रोकने का बाज़ि़ बन जाऊँगी फिर नबी करीम (ﷺ) ने कहा अक़्रा हल्क़इ क्या तूने कुर्बानी के दिन तवाफ़े ज़ियारत किया था? उसने कहा कि जी हाँ कर लिया था, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर चलो। (राजेज़ : 194)

1772. अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी ने कहा, मुहम्मद बिन सलाम ने (अपनी रिवायत में) ये ज़्यादती की है कि हमसे मुहाज़िर ने बयान किया, उनसे अमर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़्दी ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (हज्जतुल विदाअ) में मदीने से निकले तो हमारी जुबानों पर सिर्फ़ हज्ज का

### ١٥١- بَابُ الْإِدْلَاجِ مِنَ الْمُحَصَّبِ

١٧٧١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((حَاضَتْ صَفِيَّةُ لَيْلَةَ النَّفْرِ فَقَالَتْ: مَا أَرَانِي إِلَّا حَابِسَكُمْ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَفْرَى حَلَقَى أَطَافَتْ يَوْمَ النَّفْرِ؟)) قِيلَ: نَعَمْ. قَالَ ((فَأَنْفِرِي)). [راجع: ٢٩٤]

١٧٧٢- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَزَادَنِي مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي حَبِيبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لَا نَذْكُرُ إِلَّا الْحَجَّ،

जिफ़्र था। जब हम मक्का गए तो आप (ﷺ) ने हमें एहराम खोल देने का हुक्म दिया (अफ़आले उमरह के बाद जिनके पास कुर्बानी नहीं थी) खानगी की रात सफ़िया बन्ते हथिय (रज़ि.) हाइज़ा हो गई, औ हज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया अक्रा-हलक़इ ऐसा मा'लूम होता है कि तुम हमें रोक्ने का बाअिष बनोगी, फिर आप (ﷺ) ने पूछा क्या कुर्बानी के दिन तुमने तवाफ़े ज़ियारत कर लिया था? उन्होंने कहा कि हाँ, इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर चली चलो! (आइशा (रज़ि.) ने अपने बारे में कहा कि) मैंने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने एहराम नहीं खोला है। आपने फ़र्माया तुम तन्ईम से उमरह का एहराम बाँध लो (उमरह कर लो) चुनाँचे आइशा (रज़ि.) के साथ उनके भाई गए (आइशा रज़ि. ने) फ़र्माया कि हम रात के आख़िर में वापस लौट रहे थे कि आप (ﷺ) से मुलाक़ात हुई, आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि हम तुम्हारा इतिज़ार फ़र्मा लेंगे। (राजेअ: 294)

मा'लूम हुआ कि मुहम्मद सबसे आख़िर रात में कूच करना मुस्तहब है। अक्रा का लफ़्ज़ी तर्जुमा बाँझ और हलक़इ का सरमुँडी, आप (ﷺ) ने मुहब्बत के तौर पर ये लफ़्ज़ इस्ते'माल किये जैसा कह दिया करते हैं सरमुँडी, ये बोलचाल का आम मुहावरा है। ये हदीस भी बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल है, ख़ास तौर पर सिन्फे नाजुक के लिये पैराम्बरे इस्लाम (ﷺ) के क़ल्बे मुबारक में किस क़दर राफ़्त और रहमत थी कि आपने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) की ज़रा सी दिलशिकनी भी ग़वारान की बल्कि उनकी दिलजोई के लिये उनको तन्ईम जाकर वहाँ से उमरह का एहराम बाँधने का हुक्म फ़र्माया और उनके भाई हज़रत अब्दुरहमान (रज़ि.) को साथ कर दिया, जिससे ज़ाहिर है कि सिन्फे नाजुक को तन्हा छोड़ना मुनासिब नहीं है बल्कि उनके साथ बहरहाल कोई ज़िम्मेदार निगारों होना ज़रूरी है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के हाइज़ा हो जाने की ख़बर सुनकर आप (ﷺ) ने मुहब्बत के नाते उनके लिये अक्रा हलक़इ के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल फ़र्माए, इससे भी सिन्फे-नाजुक के लिये आपकी शफ़क़त टपकती है। नीज़ यह भी कि मुफ़्ती हज़रत को उस्वते हस्ना की पैरवी ज़रूरी है कि हुदूदे शरइया में हर मुम्किन नरमी इख़्तियार करना उस्व-ए-नुबुव्वत है।

## 24. किताबुल उमरति

# किताब उमरह के मसाल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## उसकी फ़ज़ीलत

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि (साहिबे इस्तिज़ाअत) पर हज्ज और उमरह वाजिब है, इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि किताबुल्लाह में उमरह हज्ज के साथ आया है, 'और पूरा करो हज्ज और उमरह को अल्लाह के लिये।' (अल बकर: : 196)

का'बा शरीफ़ की मख़सूस आ'माल के साथ ज़ियारत करना, इस अमल को उमरह कहते हैं, उमरह साल भर में किसी भी वक़्त किया जा सकता है, हाँ चन्द दिनों में मना है जिनका ज़िक्र हो चुका है अक़बर इलमा का क़ौल है कि उमरह उम्रभर में एक बार वाजिब है, कुछ लोग सिर्फ़ मुस्तहब मानते हैं।

1773. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान के गुलाम सुमय ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलामह सिमान ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया एक उमरह के बाद दूसरा उमरह दोनों के बीच के गुनाहों का कफ़फ़ारा है और हज्जे मबरूर की जज़ा (बदला) जन्नत के सिवा और कुछ नहीं।

अल्लाह पाक ने कुआन मजीद में और रसूले करीम (ﷺ) ने अपने कलामे बलाग़ते निज़ाम में हज्ज के साथ उमरह का ज़िक्र किया है, जिससे उमरह का वुजुब प्राबित हुआ, यही इमाम बुखारी (रह.) बतलाना चाहते हैं आपने उमरह का वुजुब आयत और हदीष दोनों से प्राबित किया। हज्जे मबरूर वो जिसमें शुरू से लेकर आख़िर तक नेकियाँ ही नेकियाँ हों और आदाबे हज्ज को पूरे तौर पर निभाया जाए ऐसा हज्ज यकीनन जन्नत में दाख़िल होने का हक़दार का है। अल्लाहुम्मर्रज़्ज़िना (आमीन)

## बाब 2 : उस शख़्स का बयान जिसने हज्ज से पहले उमरह किया

1774. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी कि इकिमा बिन ख़ालिद ने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से हज्ज से पहले उमरह करने के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कोई हर्ज नहीं, इकिमा ने कहा हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज्ज करने से पहले उमरह ही किया था और इब्राहीम बिन सअद ने मुहम्मद बिन इस्हाक़ से बयान किया, उनसे इकिमा

## وَفَضَّلَهَا

وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: لَيْسَ أَحَدٌ إِلَّا وَعَلَيْهِ حَجَّةٌ وَعُمْرَةٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: إِنَّهَا لَقَرْنَتُهُمَا لِي كِتَابِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَابْتَغُوا الْخَيْرَ وَالْعُمْرَةَ فَهِيَ بِالْبَقَرَةِ: ١٩٦﴾.

١٧٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «الْعُمْرَةُ إِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا، وَالْحَجُّ الْمَتْرُودُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةُ».

٢- بَابٌ مَنِ اعْتَمَرَ قَبْلَ الْحَجِّ  
١٧٧٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ ((أَنَّ عِكْرَمَةَ بْنَ خَالِدٍ سَأَلَ ابْنَ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ الْعُمْرَةِ قَبْلَ الْحَجِّ فَقَالَ: لَا بَأْسَ. قَالَ عِكْرَمَةُ قَالَ ابْنُ عُثْمَرَ: اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ قَبْلَ أَنْ يَحُجَّ)). وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي عِكْرَمَةُ بْنُ



बिन खालिद ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से पूछा फिर यही हदीष बयान की।

हमसे अम्र बिन अली फ़लस ने बयान किया, उनसे अबू आसिम ने बयान किया, उन्हें इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी, उनसे इकिस्मा बिन ख़ालिद ने बयान किया कि मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से पूछा फिर यही हदीष बयान की।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक मरवज़ी हैं, बनी हन्ज़ला के आज़ादकर्दा हैं, हिशाम बिन उर्वा, इमाम मालिक, शैरी, शुअबा और औज़ाई और उनके हवाले से बहुत से लोगों से हदीष को सुना और उनसे सुफ़यान बिन उययना और यह्या बिन सईद और यह्या बिन मुईन वगैरह रिवायत करते हैं, उन इलमा में से हैं जिनको कुआन मजीद में इलमा—ए—रब्बानिय्यीन से याद किया गया है। वे अपने ज़माने के इमाम और पुख्ताकार फ़कीह और हाफ़िज़े हदीष थे, साथ ही ज़ाहिदे कामिल और क़ाबिले फ़ख़ सख़ी और अख़लाके फ़ाज़िला की जीती—जागती तस्वीर थे, इस्माईल बिन अयाश ने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि रूए ज़मीन पर उनके ज़माने में कोई उन जैसा आलिम न था। ख़ैर की कोई ख़सलत नहीं जो अल्लाह तआला ने उनको न बख़शी हो, उनके शागिर्दों की भी क़रीर ता'दाद है। एक लम्बे अर्से तक बग़दाद में दस हदीष दिया। इनकी पैदाइश 118 हिजरी में हुई और 181 हिजरी में वफ़ात पाई। अल्लाह पाक फिरदौसे बरी में आपके बेहतरीन मक़ामात में इज़ाफ़ा करे और हमको ऐसे बुजुर्गों के साथ महशूर करे, आमीन! अफ़सोस की बात यह है कि आज ऐसे बुजुर्गों और अल्लाह वाले हज़रत से उम्मत—मुस्लिमा महरूम है, काश! अल्लाह पाक फिर ऐसे बुजुर्ग पैदा करे और उम्मत को फिर ऐसे बुजुर्गों के इलूम से नूरे ईक़ान अता करे आमीन।

**बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) ने कितने उम्रे किये हैं**

**۳- بَابُ كَمْ اغْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ؟**

किसी रिवायत में चार उम्रे मज़कूर हैं, किसी में दो उनकी जमा यूँ है कि अख़ीर की रिवायत में वो उमरह जो आप (ﷺ) ने हज्ज के साथ किया था। उसी तरह वो उमरह जिससे आप (ﷺ) रद्द किये गये थे, शुमार नहीं किये। सईद बिन मंसूर ने निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने तीन उम्रे किये दो तो ज़ीक़अदा में और एक शव्वाल में और दूसरी रिवायतों में ये है कि आप (ﷺ) ने तीनों उम्रे ज़ीक़अदा में किये थे।

1775. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि मैं और उर्वा बिन जुबैर मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए, वहाँ अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज़्जे के पास बैठे हुए थे, कुछ लोग मस्जिदे नबवी में इशराक़ की नमाज़ पढ़ रहे थे। उन्होंने बयान किया कि हमने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से उन लोगों की उस नमाज़ के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि बिदअत है, फिर उनसे पूछा कि नबी करीम (ﷺ) ने कितने उम्रे किये थे? उन्होंने कहा कि चार, एक उनमें से रजब में किया था लेकिन हमने पसन्द नहीं किया कि उनकी इस बात की तदीद करें। (दीगर मक़ाम : 4253)

۱۷۷۵- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا جُرَيْجٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: ((دَخَلْتُ أَنَا وَعُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ الْمَسْجِدَ فَلَإِذَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا جَالِسَ إِلَى خُجْرَةِ عَائِشَةَ، وَإِذَا أَنَسٌ يُصَلُّونَ فِي الْمَسْجِدِ صَلَاةَ الضُّحَى، قَالَ: فَسَأَلْنَاهُ عَنْ صَلَاتِهِمْ فَقَالَ: بِذَعَةٍ. ثُمَّ قَالَ لَهُ: كَمْ اغْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَ: أَرْبَعٌ، إِخْدَاثُنْ لِي رَجَبٍ. فَكَرِهْنَا أَنْ نَرُدَّ عَلَيْهِ)). [طهره 3: 4253].

1776. मुजाहिद ने बयान किया कि हमने उम्मुल मोमिनीन

۱۷۷۶- وَقَالَ وَسَمِعْنَا امْرَأَتَيْنِ عَائِشَةَ أُمِّ

हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज़े से उनके मिस्वाक करने की आवाज़ सुनी तो इर्वा ने पूछा ऐ मेरी माँ! ऐ उम्मुल मोमिनीन! अबू अब्दुर्रहमान की बात आप सुन रही हैं? आइशा (रज़ि.) ने पूछा वो क्या कह रहे हैं? उन्होंने कहा, कह रहे हैं कि रसूले करीम (ﷺ) ने चार उमरे किये थे जिनमें से एक रजब में किया था, उन्होंने फ़र्माया कि अल्लाह अबू अब्दुर्रहमान पर रहम करे! आँहज़रत (ﷺ) ने तो कोई उमरह ऐसा नहीं किया जिसमें वो खुद मौजूद न रही हों, आप (ﷺ) ने रजब में तो कभी उमरह ही नहीं किया।

(दीगर मक़ाम : 1777, 4253)

الْمُؤْمِنِينَ فِي الْخُمْرَةِ فَقَالَ غُرُوةً: يَا أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ أَلَا تَسْمَعِينَ مَا يَقُولُ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ؟ قَالَتْ: مَا يَقُولُ؟ قَالَ يَقُولُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، اخْتَمَرَ أَرْبَعَ غُمَرَاتٍ اخْتَدَاهُنَّ فِي رَجَبٍ. قَالَتْ: يَرْحَمُ اللَّهُ أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، مَا اخْتَمَرَ غُمَرَةً إِلَّا وَمَوْ شَاهِدَةً، وَمَا اخْتَمَرَ فِي رَجَبٍ قَطُّ.﴾

[طرفاء بی : ۱۷۷۷، ۴۲۵۴]

**तशरीह:** हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के नज़दीक इश्राक़ की नमाज़ के बारे में मा'लूमात न होंगी इसलिये उन्होंने इसे बिदअत कह दिया हालाँकि ये नमाज़ अहादीष में मज़कूर है या आपने इस नमाज़ को मस्जिद में पढ़ना बिदअत करार दिया जैसा कि हर नमाज़ घर में पढ़ने ही से मुता'ल्लिक है। जुम्हूर के नज़दीक इस नमाज़ को मस्जिद या घर हर जगह पढ़ा जा सकता है। उमरह—ए—नबवी के बारे में माहे रजब का ज़िक्र सहीह नहीं है जैसा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने वज़ाहत के साथ समझा दिया। आप इर्वा की ख़ाला हैं इसलिये आपने उनको या अम्मा कहकर पुकारा।

1777. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा कि हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अता बिन अबी रबाह ने ख़बर दी, उनसे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आइशा (रज़ि.) से पूछा तो आपने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रजब में कोई उमरह नहीं किया था। (राजेअ : 1776)

۱۷۷۷- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ غُرُوةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: «سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا اخْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي رَجَبٍ.» [راجع: ۱۷۷۶]

1778. हमसे हस्सान बिन हस्सान ने बयान किया कि हमसे हम्माय बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा कि नबी करीम (ﷺ) ने कितने उमरे किये थे? तो आपने फ़र्माया कि चार, उमरह—ए—हुदैबिया ज़ीक़्रअदा में ज़हाँ पर मुश्किन ने आप (ﷺ) को रोक दिया था, फिर आइन्दा साल ज़ीक़्रअदा ही में एक उमरह कज़ा जिसके बारे में आप (ﷺ) ने मुश्किन से सुलह की थी और तीसरा उमरह जो अराना जिस मौक़े पर आप (ﷺ) ने ग़नीमतें, ग़ालिबन हुनैन की तक्सीम की थी चौथा हज के साथ मैंने पूछा और आँहज़रत (ﷺ) ने हज कितने किये थे? फ़र्माया कि एक। (दीगर मक़ाम : 1779, 1280, 3066, 4147)

۱۷۷۸- حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا هَمَامٌ عَنْ قَتَادَةَ «سَأَلْتُ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَمْ اخْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ أَرْبَعٌ: غُمَرَةُ الْحَنْظَلِيَّةِ فِي ذِي الْقَعْدَةِ حَيْثُ صَدَّ الْمُشْرِكُونَ، وَغُمَرَةُ مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ فِي ذِي الْقَعْدَةِ حَيْثُ صَالَحَهُمْ، وَغُمَرَةُ الْيَجْرَانَةِ إِذْ قَسَمَ غَنِيمَةً - رَأَى - خَبْرِي. قُلْتُ كَمْ حَجٌّ؟ قَالَ: (وَاحِدَةً).»

[اسر مدی : ۱۷۷۹، ۱۷۸۰، ۳۰۶۶، ۴۱۴۷]

1779. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माय ने बयान किया, उनसे क़तादा ने

۱۷۷۹- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ هِشَامٌ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ حَدَّثَنَا هَمَامٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ:

बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से आँहज़रत (ﷺ) के उमरा के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक उमरा वहाँ किया जहाँ से आप (ﷺ) को मुश्रीकीन ने वापस कर दिया था और दूसरे साल (ﷺ) उमरह हुदैबिया (की क़ज़ा) की थी और एक उमरह ज़ीक़अदा में और एक अपने हज़ के साथ किया था। (राजेज़: 1778)

जिन रावियों ने हुदैबिया में आप (ﷺ) के एहराम खोलने और कुर्बानी करने को उमरह करार दिया उन्होंने आप (ﷺ) के चार उमरे बयान किये और जिन्होंने उसे उमरा करार नहीं दिया उन्होंने तीन उमरे बयान किया और रिवायत में इख़ितलाफ़ की वजह यही है और इन तौजीहात की बिना पर किसी भी रिवायत को ग़लत नहीं कहा जा सकता।

1780. हमसे हुद्बा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, इस रिवायत में यूँ है कि जो उमरह आँहज़रत (ﷺ) ने अपने हज़ के साथ किया था उसके सिवा तमाम उमरे ज़ीक़अदा ही में किये थे। हुदैबिया का उमरह और दूसरे साल उसकी क़ज़ा का उमरह किया था। (क्योंकि आप (ﷺ) ने क़िरान किया था और हज़ तुल विदाअ से मुता'ल्लिक है) और जिअराना का उमरह जब आप (ﷺ) ने जंगे हुनैन की ग़नीमत तक्सीम की थी। फिर एक उमरह अपने हज़ के साथ किया था। (राजेज़: 1778)

1781. हमसे अहमद बिन इब्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुरैह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने मसरूक़, अता और मुजाहिद (रह.) से पूछा तो उन सब हज़रात ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़ से पहले ज़ीक़अदा ही में उमरे किये थे और उन्होंने बयान किया कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने माहे ज़ीक़अदा में हज़ से पहले दो उमरे किये थे।

(दीगर मक़ाम: 1844, 2698, 2699, 2700, 3184, 4251)

سَأَلْتُ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: ((اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى رَدُّوا، وَمِنَ الْقَابِلِ غَمْرَةَ الْحُدَيْبِيَّةِ، وَغَمْرَةَ لِي فِي الْفَقْدَةِ، وَغَمْرَةَ مَعَ حَجَّيْ)).

[راجع: ١٧٧٨]

١٧٨٠ - حَدَّثَنَا هُدْبَةُ حَدَّثَنَا هُمَامٌ وَقَالَ: ((اعْتَمَرَ أَرْبَعُ غَمَرٍ لِي فِي الْفَقْدَةِ، إِلَّا أَنِّي اعْتَمَرْتُ مَعَ حَجَّيْ: غَمْرَةَ مِنَ الْحُدَيْبِيَّةِ وَمِنَ الْقَابِلِ الْغَمْرَةَ، وَمِنَ الْجَمْرَانِ حَتَّى لَسَمْتُ غَلَابِمَ حَتَيْنِ، وَغَمْرَةَ مَعَ حَجَّيْ)). [راجع: ١٧٧٨]

١٧٨١ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَفَّانٍ حَدَّثَنَا شَرِيعُ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُونُسَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَأَلْتُ مَسْرُوقًا وَعَطَاءَ وَمُحَاجِجًا فَقَالُوا: ((اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِي فِي الْفَقْدَةِ قَبْلَ أَنْ يَخُجَّ. وَقَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِي فِي الْفَقْدَةِ قَبْلَ أَنْ يَخُجَّ مَرَّتَيْنِ)).

[أطرافه ن: ٢٦٩٩، ٢٦٩٨، ١٨٤٤]

[٢٧٠٠، ٣١٨٤، ٤٢٥١].

٤ - بَابُ ٤ فِي رَمَضَانَ

बाब 4 : रमज़ान में उमरे का बयान

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने तर्जुम-ए-बाब में इसकी फ़ज़ीलत की तशरीह नहीं की और शायद उन्होंने इस रिवायत की तरफ़ इशारा किया जो दारे कुत्नी ने निकाली, हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि मैं आँहज़रत (ﷺ) के साथ रमज़ान के इमरे में निकली, आप (ﷺ) ने इफ़्तार किया और मैंने रोज़ा रखा। आपने क़स्र किया, मैंने पूरी नमाज़ पढ़ी कुछ ने कहा ये रिवायत ग़लत है क्योंकि आप (ﷺ) ने रमज़ान में कोई इमरा नहीं किया, हाफ़िज़ ने कहा शायद मतलब ये हो कि रमज़ान में इमरा के लिये मदीना से निकली है क्योंकि फ़तहे मक्का का सफ़र रमज़ान ही में हुआ था। (वहीदी)

1782. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अता बिन अबी रबाह ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने हमें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक अंसारी ख़ातून (उम्मे सिनान रज़ि.) से (इब्ने अब्बास रज़ि. ने उनका नाम बताया था लेकिन मुझे याद न रहा) पूछा कि तू हमारे साथ हज़ नही करती? वो कहने लगी कि हमारे पास एक ऊँट था जिस पर अबू फ़लौ (यानी उसका शौहर) और उसका बेटा सवार होकर हज़ के लिये चल दिये और एक ऊँट उन्होंने छोड़ा है, जिससे पानी लाया जाता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा जब रमज़ान आए तो इमरह कर लेना क्योंकि रमज़ान का इमरह एक हज़ के बराबर होता है या उसी जैसी कोई बात आप (ﷺ) ने फ़र्माई।

(दीगर मक़ाम : 1863)

۱۷۸۲- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ  
ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ  
عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُخْبِرُنَا يَقُولُ :  
« قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِامْرَأَةٍ مِنَ الْأَنْصَارِ  
- سَمَّاها ابْنُ عَبَّاسٍ قَسِيْتُ اسْمَهَا -  
(مَا مَنَعَكَ أَنْ تَحُجِّيَنَ مَعَنَا؟ ) قَالَتْ :  
كَانَ لَنَا نَاضِحٌ ، فَرَكِبَهُ أَبُو فَلَانٍ وَأَبْنُهُ -  
لِزَوْجِهَا وَابْنُهَا - وَتَرَكَ نَاضِحًا تَنْضَحُ  
عَلَيْهِ . قَالَ : ( لِإِذَا كَانَ رَمَضَانُ اغْتَمِرِي  
بِهِ ، فَإِنَّ عُمْرَةً لِي رَمَضَانَ حَجَّةً ) أَوْ  
نَحْوًا مِمَّا قَالَ . [ طرفه ب : ۱۸۶۳ ]

इमाम बुखारी (रह.) की दूसरी रिवायत में उस औरत का नाम उम्मे सिनान (रज़ि.) मज़कूर है, कुछ ने कहा वो उम्मे सुलैम (रज़ि.) थीं जैसे इब्ने हिब्वान की रिवायत में है और निसाई ने निकाला है कि बनी असद की एक औरत। मुअज़िल ने कहा मैंने हज़ का क़स्द किया लेकिन मेरा ऊँट बीमार हो गया, मैंने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि रमज़ान में इमरा कर ले रमज़ान का इमरा हज़ के बराबर है। हाफ़िज़ ने कहा अगर ये औरत उम्मे सिनान थी तो उसके बेटे का नाम सिनान होगा और अगर उम्मे सुलैम थी तो उसका बेटा ही कोई ऐसा न था जो हज़ के क़ाबिल होता। एक अनस थे वो छोटी उम्र में थे और शायद उनके शौहर अबू तलहा का बेटा मुराद हो वो भी गोया उम्मे सुलैम का बेटा हुआ क्योंकि अबू तलहा उम्मे सुलैम के शौहर थे।

**बाब 5 : मुहम्मद की रात इमरह करना या उसके अलावा किसी दिन भी इमरह करने का बयान**

1783. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा कि हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना से निकले तो ज़िल्हिज्ज का चाँद निकलने वाला था, आप (ﷺ)

۵- بَابُ الْعُمْرَةِ لَيْلَةَ الْحَصْبَةِ  
وغيرها

۱۷۸۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ أَخْبَرَنَا  
أَبُو مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا شَيْبَانٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ  
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : « خَرَجْنَا  
مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مُوَالِينَ لِجَلَالِ ذِي  
الْحِجَّةِ ، فَقَالَ لَنَا : « مَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ

ने फ़र्माया कि अगर कोई हज्ज का एहराम बाँधना चाहता है तो वो हज्ज का बाँध ले और अगर कोई उमरह का बाँधना चाहता है तो वो उमरह का बाँध ले। अगर मेरे साथ हदीन होती तो मैं भी उमरह का एहराम बाँधता। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हममें कुछ ने तो उमरह का एहराम बाँधा और कुछ ने हज्ज का एहराम बाँधा। मैं भी उन लोगों में थी जिन्होंने उमरह का एहराम बाँधा था, लेकिन अरफ़ा का दिन आया तो मैं उस वक़्त हाइज़ा थी, चुनौचे मैंने उसकी हुज़ूर (ﷺ) से शिकायत की आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उमरह छोड़ दे और सर खोल दे और उसमें कँधा कर ले फिर हज्ज का एहराम बाँध लेना। (मैंने ऐसा ही किया) जब मुहम्मद के क़याम की रात आई तो हुज़ूर (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान को मेरे साथ तन्ज़ीम भेजा, वहाँ से मैंने उमरह का एहराम अपने उस उमरे के बदले में बाँधा। (जिसको तोड़ डाला था) (राजेअ: 294)

## बाब 6 : तन्ज़ीम से उमरह करना

ये ख़ास हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से किया था बाक़ी किसी सहाबी से मन्कूल नहीं कि उसने उमरह का एहराम तन्ज़ीम से बाँधा हो; न आँहज़रत (ﷺ) ने कभी ऐसा किया, इमाम इब्ने क़य़ीम ने ज़ादुल मज़ाद में ऐसा ही कहा है। हाफ़िज़ ने कहा कि जब हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बहुक्मे नबवी (ﷺ) से ऐसा किया तो उसका मशरूअ होना प्राबित हो गया अगरचे इसमें शक नहीं कि उमरह के भी ख़ास अपने मुल्क से सफ़र करके जाना अफ़ज़ल और आला है और सल्फ़ का इसमें इख़िलाफ़ है कि हर साल एक उमरह से ज़्यादा कर सकते हैं या नहीं, इमाम मालिक ने एक से ज़्यादा करना मकरूह जाना है और जुम्हूर इलमा ने उनका ख़िलाफ़ किया है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने अरफ़ा और यौमुन्नहर और अय्यामे तशरीक में उमरह करना मकरूह रखा है। (वहीदी)

1784. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उन्होंने अम्र बिन औरस से सुना, उनको अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने ख़बर दी किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया था कि आइशा (रज़ि.) को अपने साथ सवारी पर ले जाएँ और तन्ज़ीम से उन्हें उमरह करा लाएँ। सुफ़यान बिन इययना ने कहीं यूँ कहा मैंने अम्र बिन दीनार से सुना। कहीं यूँ कहा मैंने कई बार इस हदीष को अम्र बिन दीनार से सुना। (दीगर मक़ाम: 2985)

1785. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्न ने बयान किया, उनसे अब्दुल वहहाब बिन अब्दुल मजीद ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अम्हाब ने हज्ज का एहराम बाँधा था और आँहज़रत (ﷺ) और

بُهْلٌ بِالْحَجِّ فَلِلْهَلِّ، وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَهْلَ بِعُمْرَةٍ فَلِلْهَلِّ بِعُمْرَةٍ، فَلَوْ لَا أَنِّي أَخَذْتُ لِأَهْلَلْتُ بِعُمْرَةٍ)). قَالَتْ: فَمِمَّا مِنْ أَهْلِ بِعُمْرَةٍ، وَمِمَّا مِنْ أَهْلِ بِحَجٍّ، وَكُنْتُ مِنْ أَهْلِ بِعُمْرَةٍ، فَأَطْلَفُو يَوْمَ عَرَفَةَ وَأَنَا خَائِضٌ، فَشَكَوْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((ارْأَيْتُ عُمْرَتَكَ، وَارْأَيْتُ رَأْسَكَ وَارْأَيْتُ طَيْبِي، وَأَهْلِي بِالْحَجِّ)). فَلَمَّا كَانَ لَيْلَةُ الْخَمِيسَةِ أُرْسِلَ مِنِّي عَبْدُ الرَّحْمَنِ إِلَى التَّنِيمِ، فَأَهْلَلْتُ بِعُمْرَةٍ مَكَانَ عُمْرَتِي)). [راجع: ٢٩٤]

## ٦- بَابُ عُمْرَةِ التَّنِيمِ

١٧٨٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُمَرُو سَمِعَ عُمَرُو بْنُ أَوْسٍ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَهُ أَنْ يُزِدَ غَائِشَةً وَيُغَيِّرَهَا مِنَ التَّنِيمِ)). قَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً: سَمِعْتُ عُمَرُوًا، كَمْ سَمِعْتُهِ مِنْ عُمَرُو. [طرقه ٤: ٢٩٨٥].

١٧٨٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ عَبْدِ الْمُجِيدِ عَنْ حَبِيبِ الْمُثَنَّى عَنْ غَطَاءٍ حَدَّثَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ

तलहा (रज़ि.) के सिवा कुर्बानी किसी के पास नहीं थी। उन ही दिनों में हज़रत अली (रज़ि.) यमन से आए तो उनके साथ भी कुर्बानी थी, उन्होंने ने कहा कि जिस चीज़ का एहराम रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बाँधा है मेरा भी एहराम वही है। औहज़रत (ﷺ) ने अपने अम्हाब को (मक्का में पहुँचकर) इसकी इज़ाजत दे दी थी कि अपने हज़्ज को उमरह में तब्दील कर दें और बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा मर्वा की सज़ी करके बाल तरशवा लें और एहराम खोल दें, लेकिन वो लोग ऐसा न करें जिनके साथ हदी हो। इस पर लोगों ने कहा कि हम मीना से हज़्ज के लिये इस तरह से जाएँगे कि हमारे ज़कर से मनी टपक रही हो। ये बात रसूलुल्लाह (ﷺ) तक पहुँची तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो बात अब हुई अगर पहले से मा'लूम होती तो मैं अपने साथ हदी न लाता और अगर मेरे साथ हदी न होते तो (अफ़आले उमरह अदा करने के बाद मैं भी एहराम खोल देता) आइशा (रज़ि.) (उस हज़्ज में) हाइज़ा होगई थीं, इसलिये उन्होंने अगरचे तमाम मनासिक अदा किये लेकिन बैतुल्लाह का तवाफ़ नहीं किया। फिर जब वो पाक हो गईं और तवाफ़ कर लिया तो अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! सब लोग हज़्ज और उमरह दोनों करके वापस हो रहे हैं लेकिन मैं सिर्फ़ हज़्ज कर सकी हूँ, आप (ﷺ) ने उस पर अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) से कहा कि इन्हें साथ लेकर तन्ज़ीम जाँएँ और उमरह करा लाएँ, ये उमरह हज़्ज के बाद ज़िल्हिज्ज के ही महीने में हुआ था। औहज़रत (ﷺ) जब जम्-ए-उक़्बा की रमी कर रहे थे तो सुराक्का बिन मालिक बिन जअशम आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या ये (उमरह और हज़्ज के दरम्यान एहराम खोल देना) सिर्फ़ आज ही के लिये है? औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं बल्कि हमेशा के लिये है। (राजेअ: 1557)

اللّٰهُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَهْلَ وَأَصْحَابَهُ بِالْحَجِّ وَلَيْسَ مَعَ أَحَدٍ مِنْهُمْ هَدْيٌ غَيْرَ النَّبِيِّ ﷺ وَطَلْحَةَ، وَكَانَ عَلَى قَدِيمٍ مِنَ الْيَمَنِ وَمَعَ الْهَدْيِ فَقَالَ: أَهْلَنْتُمْ بِمَا أَهْلَ بِهِ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ، وَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَذِنَ لِأَصْحَابِهِ أَنْ يَجْعَلُوهَا عُمْرَةً يَطُوفُوا ثُمَّ يَقْضُوا وَيَجْلُوا، إِلَّا مَنْ مَعَ الْهَدْيِ، فَقَالُوا: نَنْطَلِقُ إِلَى مَنَى وَذَكَرُوا أَحَدًا يَقْطُرُ. فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُمْ، وَلَوْ لَا أَنْ مَعِيَ الْهَدْيِ لَأَخْلَلْتُ)). وَأَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا خَاصَتْ فَسَكَتِ الْمَنَاسِكَ كُلَّهَا، غَيْرَ أَنَّهَا لَمْ تَطُفْ بِالنِّبْتِ. قَالَ: فَلَمَّا طَهَّرَتْ وَطَافَتْ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ، أَتَنْطَلِقُونَ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ وَأَنْطَلِقُ بِالْحَجِّ؟ فَأَمَرَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ أَنْ يَخْرُجَ مَعَهَا إِلَى التَّنْعِيمِ، فَاعْتَمَرَتْ بَعْدَ الْحَجِّ فِي ذِي الْحِجَّةِ. وَأَنَّ سُرَاقَةَ بْنَ مَالِكٍ بْنِ جَعْفَرٍ لَقِيَ النَّبِيَّ ﷺ بِالْعَقَبَةِ وَهُوَ يَرْمِيهَا، فَقَالَ: أَلَكُمْ هَذِهِ خَاصَّةٌ يَا رَسُولَ اللّٰهِ؟ قَالَ: ((لَا، بَلْ لِلْأَبْدِ)). [راجع: 1007]

**तशरीह:** यज़ीद की रिवायत में यूँ है क्या ये हुक्म खास हमारे लिये है, इमाम मुस्लिम की रिवायत में यूँ है सुराक्का खड़ा हुआ और कहने लगा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या ये हुक्म इसी साल के लिये खास है। आपने उँगलियों को उँगलियों में डाला और दोबारा फ़र्माया उमरह और हज़्ज में हमेशा के लिये शरीक हो गया। नववी (रह.) ने कहा इसका मतलब ये है कि हज़्ज के महीनों में उमरह करना दुस्त हुआ और जाहिलियत का काइदा टूट गया कि हज़्ज के महीनों में उमरह करना मकरूह है। कुछ ने कहा मतलब ये है कि क़िरान यानी हज़्ज और उमरे को जमा करना दुस्त हुआ इसबाब के लाने से इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि तमतोअ, जिसमें कुर्बानी है वो ये है कि हज़्ज से पहले उमरह करे और जो लोग हज़्ज के महीनों में सारे ज़िल्हिज्ज

को शामिल करते हैं और कहते हैं कि ज़िल्हिज्ज में हज्ज के बाद भी उमरह करे तो वो भी तमत्तोअ है और उसमें कुर्बानी या रोज़े वाजिब नहीं, वो इस हदीष का जवाब ये देते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी बीवियों की तरफ़ से कुर्बानी की थी। जैसे एक रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने अपनी बीवियों की तरफ़ से एक गाय कुर्बान की और मुस्लिम की रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की तरफ़ से कुर्बानी दी और शायद हज़रत आइशा (रज़ि.) को उसकी ख़बर न हो।

## बाब 7 : हज्ज के बाद उमरह करना और कुर्बानी न देना

1786. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद उर्वा ने ख़बर दी कहा कि मुझे आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी उन्होंने कहा कि ज़िल्हिज्ज का चौद निकलने वाला था कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना से हज्ज के लिये चले आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो उमरह का एहराम बाँधना चाहे वो उमरह का एहराम बाँध ले और जो हज्ज का बाँधना चाहे वो हज्ज का बाँध ले, अगर मैं अपने साथ कुर्बानी न लाता तो मैं भी उमरह का ही एहराम बाँधता। चुनौचे बहुत से लोगों ने उमरह का एहराम बाँधा और बहुतों ने हज्ज का। मैं भी उन लोगों में थी जिन्होंने उमरह का एहराम बाँधा था। मगर मैं मक्का में दाख़िल होने से पहले हाइज़ा हो गई, अरफ़ा का दिन आ गया और अभी मैं हाइज़ा ही थी, उसका रोना मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने रोई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उमरह छोड़ दे और सर खोल ले और कँघा कर ले फिर हज्ज का एहराम बाँध लेना। चुनौचे मैंने ऐसा ही किया, उसके बाद जब मुहस्सब की रात आई तो आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे साथ अब्दुर्रहमान को तन्ज़ीम भेजा वो मुझे अपनी सवारी पर पीछे बिठाकर ले गए वहाँ से आइशा (रज़ि.) ने अपने (छोड़े हुए) उमरे के बजाए दूसरे उमरे का एहराम बाँधा इस तरह अल्लाह तआला ने उनका भी हज्ज और उमरह दोनों ही पूरे कर दिये न तो इसके लिये उन्हें कुर्बानी लानी पड़ी न सद्का देना पड़ा और रोज़ा रखना पड़ा। (राजेअ: 294)

## बाब 8 : उमरह में जितनी तकलीफ़ हो उतना ही प्रवाब है

## ٧- بَابُ الْاِغْتِمَارِ بَعْدَ الْحَجِّ بِغَيْرِ هَذِي

١٧٨٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي قَالَ أَخْبَرَنِي عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مُوَافِقِينَ لِهَيْلَالِ ذِي الْحِجَّةِ فَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَهْلُ بِعُمْرَةٍ، فَلْيَهْلُ وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَهْلُ بِحَجَّةٍ فَلْيَهْلُ وَلَوْ لَا أَنِّي أَهْلَيْتُ لَأَمَلْتُ بَعُمْرَةٍ)). فَمِنْهُمْ مَنْ أَهْلَ بِعُمْرَةٍ وَمِنْهُمْ مَنْ أَهْلَ بِحَجَّةٍ، وَكُنْتُ مِمَّنْ أَهْلَ بِعُمْرَةٍ، فَحِضْتُ قَبْلَ أَنْ أَدْخُلَ مَكَّةَ، فَأَذْرَكْنِي يَوْمَ عَرَفَةَ وَأَنَا حَائِضٌ، فَشَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ ((دَعِي عُمْرَتَكَ وَانْقَضِي رَأْسَكَ وَامْتَشِطِي، وَأَهْلِي بِالْحَجِّ))، فَفَعَلْتُ. فَلَمَّا كَانَتْ لَيْلَةُ الْخَبَةِ أَرْسَلَ نَعِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِلَى التَّعِيمِ، فَأَرَادَهَا، فَلَمَلْتُ بِعُمْرَةٍ مَكَانَ عُمْرَتِهَا، فَقَضَى اللَّهُ حَجَّهَا وَعُمْرَتَهَا، وَلَمْ يَكُنْ فِي شَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ هَذِي وَلَا صَدَقَةٌ وَلَا صَوْمٌ)). [راجع: ٢٩٤]

## ٨- بَابُ أَجْرِ الْعُمْرَةِ عَلَى قَدْرِ النَّصَبِ

1787. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा उनसे यज़ीद बिन जुरैअ ने बयान किया, उनसे इब्ने औन ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और दूसरी (रिवायत में) इब्ने औन, इब्राहीम से रिवायत करते हैं और वो अस्वद से, उन्होंने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! लोग तो दो निस्क (हज्ज और उमरह) करके वापस लौट रहे हैं और मैंने सिर्फ़ एक निस्क (हज्ज) किया है? इस पर उनसे कहा गया कि फिर इंतज़ार करें और जब पाक हो जाएँ तो तन्-ओम जाकर वहाँ से (उमरह का) एहराम बाँधें, फिर हमसे फ़लाँ जगह आ मिलें और ये कि उस उमरे का प्रवाब तुम्हारे ख़र्च और मेहनत के मुताबिक़ मिलेगा। (राजेअ: 294)

١٧٨٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، وَعَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْأَسَدِ، قَالَا: ((قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، يَصْنُرُ النَّاسُ بِنِسْكَينِ وَأَصْنُرُ بِنِسْكَ؟ فَقِيلَ لَهَا: ((اتَّظِرِّي، فَإِذَا طَهَرْتَ فَأَعْرِجِي إِلَى التَّمِيمِ فَأَهْلِي، ثُمَّ إِنِّي بِمَكَانٍ كَذَا، وَلَكِنَّهَا عَلَى قَنْبَرٍ نَفَقِكَ أَوْ نَفْسِكَ)).

(راجع: ٢٩٤)

**तशरीह:** इब्ने अब्दुस्सलाम ने कहा कि ये क़ायदा-ए-कुल्लिया नहीं है, बाज़ इबादतों में दूसरी इबादतों से तकलीफ़ और मशक़त कम होती है लेकिन प्रवाब ज़्यादा मिलता है, जैसे शबे क़द्र में इबादत करना रमज़ान की कई रातों में इबादत करने से प्रवाब में ज़्यादा है या फ़र्ज़ नमाज़ या फ़र्ज़ ज़कात का प्रवाब नफ़ल नमाज़ों और नफ़ल स़दकों से बहुत ज़्यादा है।

**बाब 9 : (हज्ज के बाद) उमरह करने वाला उमरह का तवाफ़ करके मक्का से चल दे तो तवाफ़े विदाअ की ज़रूरत है या नहीं है**

1788. हमसे अबू नुरैम ने बयान किया, कहा हमसे अफ़्लह बिन हमीद ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज्ज के महीनों और आदाब में हम हज्ज का एहराम बाँधकर मदीना से चले और मक़ामे सरिफ़ में पड़ाव किया, नबी करीम (ﷺ) ने अपने अस्हाब से फ़र्माया कि जिसके साथ कुर्बानी न हो और वो चाहे कि अपने हज्ज के एहराम को उमरह से बदल दे तो वो ऐसा कर सकता है, लेकिन जिसके साथ कुर्बानी है वो ऐसा नहीं कर सकता। नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के कुछ मक़दूर वालों के साथ कुर्बानी थी, इसलिये उनका (एहराम सिर्फ़) उमरह का नहीं रहा, फिर नबी करीम (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए तो मैं रो रही थी। आप (ﷺ) ने पूछा कि रो क्यों रही हो? मैंने कहा आप (ﷺ) ने अपन

٩- بَابُ الْمُتَعَمِّرِ إِذَا طَافَ طَوَافَ الْعُمْرَةِ ثُمَّ عَرَجَ، هَلْ يُجْزِئُهُ مِنْ طَوَافِ الْوَدَاعِ؟

١٧٨٨- حَدَّثَنَا أَبُو نَعْمٍ حَدَّثَنَا الْفُحَيْشِيُّ عَنْ خَمْدَةَ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: عَرَجْنَا مُهْلَيْنِ بِالْحَجِّ فِي أَشْهُرِ الْحَجِّ وَحُرْمِ الْحَجِّ، فَتَزَلْنَا سَوَافَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَذِي فَأَحَبُّ أَنْ يَجْعَلَهَا عُمْرَةً فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ كَانَ مَعَهُ هَذِي فَلَا)). وَكَانَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَرِجَالٌ مِنْ أَصْحَابِهِ ذَوِي قُوَّةٍ الْهَذِي فَلَمْ تَكُنْ لَهُمْ عُمْرَةً. فَدَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَأَنَا أَبْكِي، فَقَالَ:



अम्हाब से जो कुछ फर्माया मैं सुन रही थी अब तो मेरा उमरह हो गया आप (ﷺ) ने पूछा क्या बात हुई? मैंने कहा कि मैं नमाज़ नहीं पढ़ सकती, (हैज़ की वजह से) औहज़रत (ﷺ) ने इस पर फर्माया कि कोई हर्ज नहीं, तू भी आदम की बेटियों में से एक है और जो उन सबके मुकद्दर में लिखा है वही तुम्हारा भी मुकद्दर है, अब हज्ज का एहराम बाँध ले शायद अल्लाह तआला तुम्हें उमरह भी नज़ीब करे। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हज्ज का एहराम बाँध लिया फिर जब हम (हज्ज से फ़ारिग होकर और) मीना से निकलकर मुहम्मद में उतरे तो औहज़रत (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान को बुलाया और उनसे कहा कि अपनी धहन को हद्दे हरम से बाहर ले जा (तन्ज़ीम) ताकि वो वहाँ से उमरह का एहराम बाँध लें, फिर तवाफ़ व सअी करो हम तुम्हारा इतिज़ार यहीं करेंगे। हम आधी रात को आपकी ख़िदमत में पहुँचे तो आप (ﷺ) ने पूछा क्या फ़ारिग हो गए? मैंने कहा हाँ, औहज़रत (ﷺ) ने उसके बाद अपने अम्हाब में कूच का ऐलान कर दिया। बैतुल्लाह का तवाफ़े विदाअ करने वाले लोग सुबह की नमाज़ से पहले ही ख़ाना हो गए और मदीना की तरफ़ चल दिए। (राजेअ: 294)

हाफ़िज़ ने कहा इस रिवायत में ग़लती हो गई है सहीह यूँ है लोग चल खड़े हुए फिर आप (ﷺ) ने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। इमाम मुस्लिम और अबू दाऊद की रिवायतों में ऐसा ही है।

## बाब 10 : उमरह में उन ही कामों का परहेज़ है जिनसे हज्ज में परहेज़ है

1789. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन अबी रबाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सफ़वान बिन यअला बिन उमय्या ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) जिअराना में थे, तो आप (ﷺ) की ख़िदमत में एक शख्स हाज़िर हुआ जुब्बा पहने हुए और उस पर ख़लूक या ज़र्दी का निशान था। उसने पूछा मुझे अपने उमरह में आप (ﷺ) किस तरह करने का हुक्म देते हैं? इस पर अल्लाह तआला ने नबी करीम (ﷺ) पर वह्य नाज़िल की और आप (ﷺ) पर कपड़ा डाल दिया गया, मेरी बड़ी आरजू थी कि हुज़ूर (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हो रही हो तो मैं आप (ﷺ) को

((مَا يَكْنِيكَ؟)) قُلْتُ: سَمِعْتُكَ تَقُولُ لِأَصْحَابِكَ مَا قُلْتُ، فَمِيعَتُ الْعُمْرَةِ، قَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قُلْتُ: لَا أَصَلِّي. قَالَ: ((فَلَا يَصْرُوكَ، أَنْتَ مِنْ بَنَاتِ آدَمَ، كُتِبَ عَلَيْكَ مَا كُتِبَ عَلَيْهِنَ، فَكُونِي فِي حَجِّكَ، هَسَى اللَّهُ أَنْ يَرْزُقَكِيهَا)).  
قَالَتْ: فَكُنْتُ، حَتَّى نَفَرْنَا مِنْ مَبْنَى فَزْرَةَ الْمُحَصَّبِ، فَذَاعَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، فَقَالَ: ((اغْرُجْ بِأَخِيكَ الْحَرَمَ، فَتَقْبَلُ بِغُمْرَةٍ، ثُمَّ الْفُرْطَا مِنْ طَوَائِفِكُمَا، أَنْتَ طَرُ كَمَا هَهُنَا)). فَاتَيْنَا فِي جَوْفِ اللَّيْلِ، فَقَالَ: ((فَرُغْتُمَا؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَنَادَى بِالرَّحِيلِ فِي أَصْحَابِهِ، فَارْتَحَلَ النَّاسُ، وَمَنْ طَافَ بِأَثْنَيْتَيْ قَبْلِ صَلَاةِ الصُّبْحِ، ثُمَّ خَرَجَ مُوْجَّهًا إِلَى الْمَدِينَةِ)). [راجع: 294]

## ۱۰- بَابُ يَفْعَلُ فِي الْعُمْرَةِ مَا يَفْعَلُ فِي الْحَجِّ

۱۷۸۹- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا عَطَاءٌ قَالَ: حَدَّثَنِي سَفْوَانُ بْنُ يَعْقَى بْنِ أُمَيَّةَ يَقِي عَنْ أَبِيهِ ((أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ بِالْجَعْرَانَةِ، وَعَلَيْهِ جَبَّةٌ وَعَلَيْهِ أَثَرُ الْخُلُقِ - أَوْ قَالَ صَفْرَةٌ - فَقَالَ: كَيْفَ تَأْمُرُنِي أَنْ أَصْنَعَ فِي عُمْرَتِي؟ فَانْزَلَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَسَيَّرَ بِوَجْهِ، وَوَدِدْتُ أَنِّي لَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَقَدْ أُنْزِلَ

देखूँ। इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया यहाँ आओ नबी करीम (ﷺ) पर जब वह नाज़िल हो रही हो, उस वक़्त तुम हुज़ूर (ﷺ) को देखने के आरज़ूमन्द हो? मैंने कहा हाँ! उन्होंने कपड़े का किनारा उठाया और मैंने उसमें से आप (ﷺ) को देखा आप ज़ोर ज़ोर से खरटि ले रहे थे, मेरा खयाल है कि उन्होंने बयान किया, जैसे ऊँट के सांस की आवाज़ होती है, फिर जब वह उतरनी बन्द हुई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि पूछने वाला कहाँ है जो इमरे का हाल पूछता था? अपना जुब्बा उतार दे, ख़लूक के अन्न को धो डाल और (जा' फ़रान की) ज़र्दी साफ़ कर ले और जिस तरह हज्ज में करते हो उसी तरह इसमें भी करो। (राजेअ: 1536)

1790. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके वालिद (इर्वा बिन जुबैर) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहह्रा आइशा (रज़ि.) से पूछा..... जबकि अभी मैं नौ-उम्र था..... कि अल्लाह तआला का इश्राद है, सफ़ा और मर्वा दोनों अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं इसलिये जो शख़्स बैतुल्लाह का हज्ज या इमरह करे उसके लिये उनकी सज़ी करने में कोई गुनाह नहीं, इसलिये मैं समझता हूँ कि अगर कोई उनकी सज़ी न करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। ये सुनकर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हर्गिज़ नहीं। अगर मतलब ये होता जैसा कि तुम बता रहे हो फिर तो उनकी सज़ी न करने में बाक़ेई कोई हर्ज नहीं था, लेकिन ये आयत तो अंज़ार के बारे में नाज़िल हुई है जो मनात बुत के नाम का एहराम बाँधते थे जो क़दीद के मुकाबिल में रखा हुआ था वो सफ़ा और मर्वा की सज़ी को अच्छा नहीं समझते थे, जब इस्लाम आया तो अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि सफ़ा और मर्वा दोनों अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं इसलिये जो शख़्स बैतुल्लाह का हज्ज या इमरह करे उसके लिये उनकी सज़ी करने में कोई गुनाह नहीं सुफ़यान और अबू मुआविया ने हिशाम से ये ज़्यादती निकाली है कि जो कोई

عَلَيْهِ الْوَحْيُ. فَقَالَ عُمَرُ : تَعَالَى، أَيْسَرُكَ أَنْ تَنْظُرَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَحْيُ؟ قُلْتُ : نَعَمْ، فَرَفَعَ طَرَفَ الثَّوْبِ، فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ لَهُ غَطِيطٌ - وَأَحْسِبُهُ قَالَ: كَغَطِيطِ الْبَكْرِ - فَلَمَّا سُرِّي عَنْهُ قَالَ: ((أَيُّ السَّائِلِ عَنِ الْغَمْرَةِ؟ اخْلَعْ عَنْكَ الْحَبَّةَ، وَأَغْسِلْ أَوْرَ الْخُلُوقِ عَنْكَ وَأَنْتِ الصَّفْرَةَ، وَاصْنَعِ لِي غَمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فِي حَجَّكَ)). [راجع: ١٥٣٦]

١٧٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ: ((قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ - وَأَنَا يَوْمَئِذٍ حَدِيثُ السِّنِّ - أَرَأَيْتَ قَوْلَ اللَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَابِرِ اللَّهِ، فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطُوفَ بِهِمَا﴾. فَلَا أَرَى عَلَى أَحَدٍ شَيْئًا أَنْ لَا يَطُوفَ بِهِمَا. فَقَالَتْ عَائِشَةُ : كَلَّا، لَوْ كَانَتْ كَمَا تَقُولُ كَانَتْ - فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ لَا يَطُوفَ بِهِمَا، نَمَا أَنْزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ فِي الْأَنْصَارِ، كَانُوا يَهْلُونَ لِمَنَاةَ، وَكَانَتْ مَنَاةَ حَذَوُ قُدَيْدٍ، وَكَانُوا يَتَحَرَّجُونَ أَنْ يَطُوفُوا بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَلَمَّا جَاءَ الْإِسْلَامُ سَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنْ ذَلِكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى : ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَابِرِ اللَّهِ، فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ

सफ़ा मर्वा का फेरा न करे तो अल्लाह उसका हज्ज और उमरह पूरा न करेगा। (राजेअ: 1643)

عَلَيْهِ أَنْ يَطُوفَ بِهِمَا. زَادَ سُفْيَانُ وَأَبُو  
مُعَاوِيَةَ عَنْ هِشَامٍ: مَا أَتَمَّ اللَّهُ حَجَّ  
أَمْرِيءَ وَلَا عُمرَتَهُ مَا لَمْ يَطُفَ بَيْنَ الصَّفَا  
وَالْمَرْوَةِ. [راجع: ١٦٤٣]

ये इसलिये कि अल्लाह पाक ने सफ़ा और मर्वा पहाड़ियों को भी अपने शआइर करार दिया है और उस सअी से हज़ारों साल पहले के उस वाकिये की याद ताज़ा होती है जबकि हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) ने अपने नूरे नज़र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के लिये यहाँ पानी की तलाश में चक्कर लगाए थे और उस मौक़े पर चश्म ए-ज़मज़म का जुहूर हुआ था।

**बाब 11: उमरह करने वाला एहराम से कब निकलता है?**

और अता बिन अबी रबाह ने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने अम्हाब को ये हुक्म दिया कि हज्ज के एहराम को उमरह से बदल दें और तवाफ़ (बैतुल्लाह और सफ़ा व मर्वा) करें फिर बाल तरशवाकर एहराम से निकल जाएँ।

١١ - بَابُ مَتَى يَحِلُّ الْمُعْتَمِرُ؟

وَقَالَ عَطَاءٌ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَصْحَابَهُ أَنْ يَجْعَلُوا  
عُمْرَةً وَيَطُوفُوا، ثُمَّ يَقْصُرُوا وَيَحِلُّوا)).

**तशरीह:** इब्ने बत़ाल ने कहा मैं तो इलमा का इख़ितलाफ़ इस बाब में नहीं जानता कि उमरह करनेवाला उस वक़्त हलाल होता है जब तवाफ़ और सअी से फ़ारिग हो जाए, मगर इब्ने अब्बास (रज़ि.) से एक शाज़ कौल मन्कूल है कि सिर्फ़ तवाफ़ और सअी करने से हलाल हो जाता है और इस्हाक़ बिन राहवै (उस्ताज़े इमाम बुखारी रह.) ने उसी को इख़ितयार किया है और इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मज़हब की तरफ़ इशारा किया और काज़ी अयाज़ ने कुछ अहले इल्म से नक़ल किया है कि उमरह करने वाला जहाँ हरम में पहुँचा वो हलाल हो गया गो तवाफ़ और सअी न करे मगर सहीह बात वही है जो बाब और हदीष से ज़ाहिर है।

1791. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे जरीर ने, उनसे इस्माईल ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उमरह भी किया और हमने भी आप (ﷺ) के साथ उमरह किया, चुनाँचे जब आप (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए तो आप (ﷺ) ने पहले (बैतुल्लाह का) तवाफ़ किया और आप (ﷺ) के साथ हमने भी तवाफ़ किया, फिर सफ़ा और मर्वा आए और हम भी आप (ﷺ) के साथ आए। हम आप (ﷺ) की मक्का वालों से हिफ़ाज़त कर रहे थे कि कहीं कोई काफ़िर तीर न चला दे, मेरे एक साथी ने इब्ने अबी औफ़ा से पूछा क्या आँहज़रत (ﷺ) का'बा में अंदर दाख़िल हुए थे? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं। (राजेअ: 1600)

١٧٩١ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ  
جَرِيرٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي  
أَوْفَى قَالَ: ((اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ  
وَاعْتَمَرْنَا مَعَهُ، فَلَمَّا دَخَلَ مَكَّةَ طَافَ  
وَطَفْنَا مَعَهُ، وَأَتَى الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ وَأَتَيْنَاهَا  
مَعَهُ، وَكُنَّا نَسْتُرُهُ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ أَنْ يَرَوْهُ  
أَحَدًا. فَقَالَ لَهُ صَاحِبِي لِي: أَكُنَّا دَخَلْنَا  
الْمَكَّةَ؟ قَالَ: لَا)). [راجع: ١٦٠٠]

1792. कहा उन्होंने फिर पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत खदीजा (रज़ि.) के बारे में पूछा था? उन्होंने बयान किया कि

١٧٩٢ - قَالَ فَحَدَّثَنَا مَا قَالَ لِخَدِيجَةَ  
قَالَ: ((بَشُرُوا خَدِيجَةَ بِنَيْتِي لِي الْحُجَّةِ

आपने फर्माया था खदीजा (रज़ि.) को जन्नत में एक मोती के घर की बशारत हो जिसमें न किसी क्रिस्म का शोरो-गुल होगा न कोई तकलीफ़ होगी। (दीगर मक़ाम : 3819)

1793. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने कहा कि हमने इब्ने उमर (रज़ि.) से एक ऐसे शख्स के बारे में पूछा जो उमरह के लिये बैतुल्लाह का तवाफ़ तो करता है लेकिन सफ़ा व मर्वा की सज़ी नहीं करता, क्या वो (सिर्फ़ बैतुल्लाह के तवाफ़ के बाद) अपनी बीवी से हमबिस्तर हो सकता है? उन्होंने उसका जवाब ये दिया कि नबी करीम (ﷺ) (मक्का) तशरीफ़ लाए और आप (ﷺ) ने बैतुल्लाह का सात चक्करों के साथ तवाफ़ किया, फिर मक़ामे इब्राहीम के पास आकर दो स्कअत नमाज़ पढ़ी, उसके बाद सफ़ा और मर्वा की सात बार सज़ी की, और रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना है। (राजेअ : 395)

1794. उन्होंने बयान किया कि हमने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से भी उसके बारे में सवाल किया तो आपने फर्माया सफ़ा और मर्वा की सज़ी से पहले अपनी बीवी के करीब भी न जाना चाहिए। (राजेअ : 396)

1795. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उनसे गुन्दर मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क्रैस बिन मुस्लिम ने बयान किया उनसे तारिक बिन शिहाब ने बयान किया, और उनसे अबू मूसा अशअरी ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बतहा में हाज़िर हुआ आप वहाँ (हज्ज के लिये जाते हुए उतरे हुए थे) आप (ﷺ) ने पूछा कि क्या तुम्हारा हज्ज ही का इरादा है? मैंने कहा, जी हाँ। आप (ﷺ) ने पूछा और एहराम किस चीज़ का बाँधा है? मैंने कहा मैंने उसी का एहराम बाँधा है, जिसका नबी करीम (ﷺ) ने एहराम बाँधा हो, आप (ﷺ) ने फर्माया तू ने अच्छा किया, अब बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा और मर्वा की सज़ी कर ले फिर एहराम खोल डाल। चुनाचे मैंने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और सफ़ा—मर्वा की सज़ी की; फिर मैं बनू क्रैस की एक

مِنْ لَصَبٍ، لَا مَخَبَ فِيهِ وَلَا نَصَبَ)).  
[طرفه ي : 3819]

1793- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ قَالَ : ((سَأَلْنَا ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ رَجُلٍ طَافَ بِالنِّبْتِ فِي عُمْرَةٍ وَلَمْ يَطْفِئِ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ أَبَدَى امْرَأَتَهُ فَقَالَ : قَلِيمُ النَّبِيِّ ﷺ لَطَافٌ بِالنِّبْتِ سَبْعًا، وَصَلَّى خَلْفَ الْمَقَامِ رَكَعَتَيْنِ، وَطَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبْعًا، فَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ)).

[راجع : 395]

1794- قَالَ وَسَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ : ((لَا يَفْرَتُهَا حَتَّى يَطُوفَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ)).

[راجع : 396]

1795- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((قُلِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِالطَّحَاءِ وَهُوَ مُبْتَغٍ فَقَالَ : ((أَحْبَبْتُ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ : ((بِمَا أَهْلَلْتُ؟)) قُلْتُ : لَيْلٍ يَهْلُلُ كَهْلَالِ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ : ((أَحْسَنْتُ))، طَفَافَ النَّبِيِّ ﷺ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ أَحَلَّ. لَطَفْتُ بِالنِّبْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، ثُمَّ أَتَيْتُ امْرَأَةً مِنْ قَيْسٍ فَقُلْتُ رَأْسِي، ثُمَّ

औरत के पास आया और उन्होंने मेरे सर की जूँ निकाली, उसके बाद मैंने हज्ज का एहराम बाँधा। मैं (औँहज़रत ﷺ की वफ़ात के बाद) उसी के मुत्ताबिक़ लोगों को मसला बताया करता था, जब उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त का दौर आया तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हमें किताबुल्लाह पर अमल करना चाहिए कि उसमें हमें (हज्ज और उमरह) पूरा करने का हुक्म हुआ है और रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत पर अमल करना चाहिए कि उस वक़्त आप (ﷺ) ने एहराम नहीं खोला था जब तक हदी की कुर्बानी नहीं हो गई थी। लिहाज़ा हदी साथ लाने वालों के वास्ते ऐसा ही करने का हुक्म है। (राजेअ: 1559)

1796. हमसे अहमद बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्हें अमर ने ख़बर दी, उन्हें अबुल अस्वद ने कि अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) के गुलाम अब्दुल्लाह ने उनसे बयान किया, उन्होंने अस्मा (रज़ि.) से सुना था, वो जब भी हज़ून पहाड़ से होकर गुज़रतीं तो ये कहतीं रहमतें नाज़िल हों अल्लाह की मुहम्मद (ﷺ) पर, हमने आप (ﷺ) के साथ यहीं क़याम किया था, उन दिनों हमारे (सामान) बहुत हल्के—फुल्के थे सवारियाँ और ज़ादे—राह की भी कमी थी, मैंने, मेरी बहन आइशा (रज़ि.) ने ज़ुबैर, और फ़लौं फ़लौं (सहाबा रज़ि.) ने उमरह किया और जब बैतुल्लाह का तवाफ़ कर चुके तो (सफ़ा और मर्वा की सज़ी के बाद) हम हलाल हो गए, हज्ज का एहराम हमने शाम को बाँधा था। (राजेअ: 1615)

## बाब 12 : हज्ज, उमरह या जिहाद से वापसी पर क्या दुआ पढ़नी चाहिये

1797. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हे नाफ़ेअ ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी ग़ज़्वे या हज्ज व उमरह से वापस होते तो जब भी किसी बुलन्द जगह का चढ़ाव होता तो तीन बार अल्लाहु अकबर और दुआ पढ़ते, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी का है और हम्द उसी के लिये है वा

أَهْلْتُ بِالْحَجِّ، لَكُنْتُ أَلْفِي بِهِ. حَتَّى كَانَ لِي عِلَاقَةٌ عَمَرَ فَقَالَ : إِنْ أَخَذْنَا بِكِتَابِ اللَّهِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُنَا بِالنَّمَامِ، وَإِنْ أَخَذْنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ فَإِنَّهُ لَمْ يَحِلْ حَتَّى يَتْلَغِ الْهَدْيُ مَجْلَةً)). (راجع: 1009)

۱۷۹۶- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنَا عَمْرُو عَنْ أَبِي الْأَسْوَدِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ مَوْلَى أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَهُ ((أَنَّهُ كَانَ يَسْمَعُ أَسْمَاءَ تَقُولُ كُلَّمَا مَرَّتْ بِالْحِجْزِ: صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ، لَقَدْ نَزَّلْنَا مَعَهُ مَا هُنَا وَنَحْنُ يَوْمَئِذٍ خِفَافٌ، قَلِيلٌ ظَهَرْنَا، قَلِيلَةٌ أَرْوَادُنَا. فَاعْتَمَرْتُ أَنَا وَأَخِي عَائِشَةُ وَالزُّبَيْرُ وَفُلَانٌ وَفُلَانٌ، فَلَمَّا مَسَحْنَا الْيَدَيْنِ أَخْلَلْنَا ثُمَّ أَهْلَلْنَا مِنَ الْغَيْثِ بِالْحَجِّ)). (راجع: ۱۶۱۵)

۱۲- بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا رَجَعَ مِنَ الْحَجِّ أَوِ الْعُمْرَةِ أَوِ الْغَزْوِ؟

۱۷۹۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَفَلَ مِنْ غَزْوٍ أَوْ حَجٍّ أَوْ عُمْرَةٍ يُكَبِّرُ عَلَى كُلِّ شَرْفٍ مِنَ الْأَرْضِ ثَلَاثَ تَكْبِيرَاتٍ ثُمَّ يَقُولُ : ((لَا إِلَهَ إِلَّا

हर चीज़ पर क़ादिर है हम वापस हो रहे हैं, तौबा करते हुए इबादत करते हुए अपने रब के हुज़ूर सज्दा करते हुए और उसकी हम्द करते हुए, अल्लाह ने अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया अपने बन्दे की मदद की और सारे लश्कर को तन्हा शिकस्त दे दी। फ़तहे मक्का की तरफ़ इशारा है।

(दीगर मक़ामात : 2995, 3086, 4116, 6385)

اللَّهُ وَخَذَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.  
آيُون، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، سَاجِدُونَ، لِرَبِّنَا  
خَامِدُونَ. صَدَقَ اللَّهُ وَغَدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ،  
وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَخَذَهُ.))

[أطرافه في : 2995, 3086, 4116, 6385]

[7380]

### बाब 13 : मक्का आने वाले हाजियों का इस्तिक्बाल करना और तीन आदमियों का एक सवारी पर चढ़ना

### ١٣- بَابُ اسْتِيقْبَالِ الْحَاجِّ الْقَادِمِينَ، وَالْفَلَاحَةِ عَلَى الدَّابَّةِ

1798. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्दिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मक्का तशरीफ़ लाए तो बनू अब्दुल मुत्तलिब के चन्द बच्चों ने आप (ﷺ) का इस्तिक्बाल किया, आप (ﷺ) ने एक बच्चे को (अपनी सवारी पर) आगे बिठा लिया और दूसरे को पीछे। (दीगर मक़ाम : 5965, 5966)

١٧٩٨- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا  
يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ  
عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ:  
(لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ اسْتَقْبَلْتُهُ أُغْلِيلَةً  
بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، فَحَمَلَ وَاحِدًا مِنْ  
يَدَيْهِ وَآخَرَ خَلْفَهُ.))

[طرفاه في : 5965, 5966]

मा'लूम हुआ कि हाजी का आगे जाकर इस्तिक्बाल करना भी सुन्नत है मगर हार-फूल का प्रचलित रिवाज ऐसा है जिसका शरीअत में कोई घुबूत नहीं और उससे रिया, नमूद, अजब का भी ख़तरा है। लिहाज़ा अच्छे हाजी को उन चीज़ों से ज़रूर परहेज़ करना लाज़िम है वरना ख़तरा है कि सफ़रे हज के लिये जो कुर्बानियाँ दी हैं वो राएगाँ चले जाएँ और बजाय प़वाब के हज उलटा अज़ाब न बन जाए क्योंकि रिया, नमूद, अजब ऐसी बीमारियाँ हैं जिनसे नेक आमाल अकारथ हो जाते हैं। हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि कूँट वग़ैरह पर बशर्ते कि उन जानवरों में ताक़त हो बयक वक़्त तीन आदमी सवारी कर सकते हैं, बनू अब्दुल मुत्तलिब के लड़के आप (ﷺ) के इस्तिक्बाल को आए उससे ख़ानदानी मुहब्बत जो फ़ितरी चीज़ है उसका भी घुबूत मिलता है। नौजवान ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब के लिये उससे बढ़कर क्या खुशी हो सकती है आज उनके बुजुर्गतरीन फ़दरसूले मुअज़्ज़म, सरदार बनी आदम, फ़ख़रे-दो-आलम (ﷺ) की शान में मक्का शरीफ़ में दाख़िल हो रहे हैं। आज वो क़सम पूरी हुई जो कुर्आन मजीद में इन लफ़्ज़ों में बयान की गई थी ला उक़्सिमु बिहाज़ल् बलद तौरात का वो नविश्ता पूरा हुआ जिसमें ज़िक्र है कि फ़ारान से हज़ारों कुदुसियों के साथ एक नूर ज़ाहिर हुआ। इससे ये भी प़ाबित होता है कि बच्चों से प्यार, मुहब्बत, शफ़क़त का बर्ताव करना भी सुन्नत नबवी (ﷺ) है।

### बाब 14 : मुसाफ़िर का अपने घर में सुबह के वक़्त आना

1799. हमसे अहमद बिन हज़ाज ने बयान किया, उन्होंने हमसे

### ١٤- بَابُ الْقُدُومِ بِالْعَدَاةِ

١٧٩٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْحَجَّاجِ

अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब मक्का तशरीफ़ ले जाते तो मस्जिद शजरह में नमाज़ पढ़ते। और जब वापस होते तो जुलुहुलैफ़ा की वादी के नशीब में नमाज़ पढ़ते। आप (ﷺ) सुबह तक सारी रात वहीं रहते। (राजेअ : 484)

حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ إِلَى مَكَّةَ يُصَلِّي فِي مَسْجِدِ الشَّجَرَةِ، وَإِذَا رَجَعَ صَلَّى بِوَادِيِ الْخَلِيفَةِ بَيْطِ الْوَادِي، وَتَابَتْ حَتَّى يُصْبِحَ)). [راجع: 484]

फिर मदीना में दिन में तशरीफ़ लाते लिहाज़ा मुनासिब है कि मुसाफ़िर खास तौर पर सफ़रे हज्ज से वापस होने वाले दिन में अपने घरों में तशरीफ़ लाएँ कि उसमें भी शारेअ (अलैहिस्सलाम) ने बहुत से मसलों को मद्देनज़र रखा है।

### बाब 15 : शाम में घर को आना

1800. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्मान ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (सफ़र से) रात में... घर नहीं पहुँचते थे या सुबह के वक़्त जाते या दोपहर के बाद (जवाल से लेकर गुरुबे आफ़ताब तक किसी भी वक़्त तशरीफ़ लाते।

### ١٥- بَابُ الدُّخُولِ بِالْعِشِيِّ

١٨٠٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَطْرُقُ أَهْلَهُ، كَانَ لَا يَدْخُلُ إِلَّا غَدَاةً أَوْ عَشِيَّةً)).

### बाब 16 : आदमी जब अपने शहर में पहुँचे तो घर में रात में न जाए

1801. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे महारिब बिन दक्षार ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (सफ़र से) घर रात के वक़्त उतरने से मना करते। (राजेअ : 443)

### ١٦- بَابُ لَا يَطْرُقُ أَهْلَهُ إِذَا بَلَغَ الْمَدِينَةَ

١٨٠١- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِیْهِم حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُخَارِبٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَطْرُقَ أَهْلَهُ لَيْلًا)). [راجع: 443]

ये इसलिये कि घर में बीवी साहिबा न मा'लूम किस हालत में हों, इसलिये अदब का तकाज़ा है कि दिन में घर में दाख़िल हो ताकि बीवी को घर के साफ़ करने, खुद को साफ़ करने का मौक़ा हासिल रहे, अचानक रात में दाख़िल होने से बहुत से मफ़ासिद का ख़तरा हो सकता है। इदीष जाबिर (रज़ि.) में फ़र्माया लितम्तशितशशअषतु ताकि परेशान बाल वाली अपने बालों में कैंधी करके उनको दुरुस्त कर ले और अंदरूनी सफ़ाई की ज़रूरत हो तो वो भी कर ले।

### बाब 17 : जिसने मदीना तय्यिबा के करीब पहुँचकर अपनी सवारी तेज़ कर ली (ताकि जल्द से जल्द उस पाक शहर में दाख़िला नसीब हो)

### ١٧- بَابُ مَنْ أَسْرَعَ نَاقَتَهُ إِذَا بَلَغَ الْمَدِينَةَ

1802. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा कि मुझे हुमैद तवील ने ख़बर दी, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि आप (रज़ि.) ने कहा कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) सफ़र से मदीना वापस होते और मदीना के बालाई इलाक़ों पर नज़र पड़ती तो अपनी ऊँटनी को तेज़ कर देते, कोई दूसरा जानवर होता तो उसे भी ऐड़ लगाते। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हारिश् बिन इमैर ने हुमैद से ये तलफ़ुज़ ज़्यादा किये हैं कि मदीना से मुहब्बत की वजह से सवारी तेज़ कर देते थे।

हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने (दरजात के बजाए) जुदुरात कहा, उसकी मुताबज़त हारिश् बिन इमैर ने की। (दीगर मक़ामात : 1886)

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) के इस तर्ज़े अमल से वतन की मुहब्बत की मशरूइयत प्राबित होती है इंसान जहाँ पैदा होता है, उस जगह से मुहब्बत एक फ़ितरी ज़रूबा है, सफ़र में भी अपने वतन का इश्तियाक़ (शौक़) बाक़ी रहता है। अल् ग़रज़ वतन से मुहब्बत एक कुदरती बात है और इस्लाम में ये मज़मूम नहीं है मशहूर मक़ूला है, हुब्बुल वतनि मिनल् ईमान वतन की मुहब्बत भी ईमान में दाख़िल है।

जुदुरात यानी मदीना के घरों की दीवारों पर नज़र पड़ती तो आप (ﷺ) सवारी को तेज़ कर देते थे। कुछ रिवायतों में देहात का लफ़ज़ आया है। यानी मदीना से दरख़त नज़र आने लगते तो आप (ﷺ) अपने वतन की मुहब्बत में सवारी तेज़ कर देते। आप हज़ के या जिहाद वग़ैरह के जिस सफ़र से भी लौटते उसी तरह इज़हारे मुहब्बत करते थे।

## बाब 18 : अल्लाह तआला का ये फ़र्मांना कि घरों में दरवाज़ों से दाख़िल हुआ करो

1803. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि मैंने बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा कि ये आयत हमारे बारे में नाज़िल हुई अंसार जब हज़ के लिये आए तो (एहराम के बाद) घरों में दरवाज़ों से नहीं जाते बल्कि दीवारों से कूदकर (घर के अंदर) दाख़िल हुआ करते थे फिर (इस्लाम लाने के बाद) एक अंसारी शख़्स आया और दरवाज़े से घर में दाख़िल हो गया इस पर लोगों ने लअनत मलामत की तो ये वह्य नाज़िल हुई कि ये कोई नेकी नहीं है कि घरों में पीछे से (दीवारों पर चढ़कर) आओ बल्कि नेक वा

١٨٠٢ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: «كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ لَأَبْصَرَ دَرَجَاتِ الْمَدِينَةِ أَوْضَعَ نَاقَتَهُ، وَإِنْ كَانَتْ ذَاتَهُ حَرَكَةً». قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: زَادَ الْحَارِثُ بْنُ غُمَيْرٍ عَنْ حُمَيْدٍ «حَرَكَةً مِنْ حَبَّهَا». حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: «جُنُرَاتٍ». فَاهَهُ الْحَارِثُ بْنُ غُمَيْرٍ. [طرحه في: ١٨٨٦].

١٨ - بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى ﴿وَأَنْتُمْ أَكْبَرُ﴾  
الْثُبُوتُ مِنْ أَبْوَابِهَا [البقرة: ١٨٩]  
١٨٠٣ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ شُعْبَةُ عَنْ أَبِي اسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: «نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ فَبَيْنَا كَانَتِ الْأَنْصَارُ إِذَا حَجُّوا فَجَاءُوا لَمْ يَدْخُلُوا مِنْ قِبَلِ أَبْوَابِ بُيُوتِهِمْ، وَلَكِنْ مِنْ ظُهُورِهَا، فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَدَخَلَ مِنْ قِبَلِ بَابِهِ، فَكَانَتْهُ غَيْرَ بِذَلِكَ، فَنَزَلَتْ: ﴿وَأَنْتُمْ أَكْبَرُ﴾ بَانَ تَأْتُوا الثُّبُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا، وَلَكِنْ



शख्स है जो तक्वा इखितयार करे और घरों में उनके दरवाजों से आया करो। (दीगर मक़ाम : 4512)

الْبُرِّ مِنَ اتَّقَى، وَاتَّقَى الْبُورَ مِنَ  
أَتَاها... [طرفه في : ६०१२]

**तशरीह :** अहदे जाहिलियत में कुरैश के अलावा आम गरीब लोग हज्ज से वापसी पर घरों के दरवाजों से आना मअयूब (बुरा) समझते और दरवाजे का साया सर पर पड़ना मन्हूस समझते, इसलिये घरों की दीवारों से फांदकर आते। कुआन मजीद ने इस ग़लत ख़याल की तर्दीद की है। वो आने वाला अंसारी जिसका रिवायत में ज़िक्र है क़त्तिबा बिन आमिर (रज़ि.) अंसारी थे। इब्ने ख़ुज़ैमा और हाकिम की रिवायत में उसकी स़राहत मौजूद है उसका नाम रफ़ाआ बिन ताबूत बताया है। कुआन मजीद की आयते मज़कूरा बहुत से इस्लामी असासी उमूर के बयान पर मुश्तमिल है। आने वाले बुजुर्ग की तपस्यीलात के सिलसिले में हाफ़िज़ इब्ने हज़र का बयान ये है, फ़ी महीहिमा मिन तरीकि अम्मार इब्नि ज़रीक अनिल्आमश अन अबी सुप्थान अन जाबिर क़ाल कानत कुरैश तुदअल्हिम्स व कानू यदख़ुलून मिनल अब्बाबि फिल इहरामि व कानतिल अनस़ारु व साइरुल अरबि ला यदख़ुलून मिनल अब्बाबि फ़बैनमा रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी बुस्तानि फ़ ख़रज मिन बाबिही फ़ख़रज मअहू क़त्बा इब्नु आमिर अल अनस़ारी फ़क़ालू या रसूलुल्लाहि (ﷺ) इन्न क़ब्त् रजुलुन फ़ाजिरुन फ़इन्नहू ख़रज मअक़ मिनल्बाबि फ़क़ाल मा हमलक़ अला ज़ालिक फ़क़ाल राइतुक़ फ़अल्तहू फ़फ़अल्तु कमा फ़अल्त क़ाल इन्नी अहमिस्सु क़ाल फ़इन्न दीनी दीनुक़ फ़अन्जलल्लाहु अल्अख़ (फ़तहल बारी) यानी कुरैश को हिम्स के नाम से पुकारा जाता था और सिर्फ़ वही हालते एहराम में अपने घरों में दरवाजों से दाख़िल हो सकते थे, ऐसा अहदे जाहिलियत का ख़याल था और अंसार बल्कि तमाम अहले अरब अगर हालते एहराम में अपने घरों को आते तो दरवाजे से दाख़िल न होते बल्कि पीछे की दीवार फांदकर घर आया करते थे। एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बाग़ के दरवाजे से बाहर तशरीफ़ लाए तो आपके साथ ये क़त्तिबा बिन आमिर अंसारी (रज़ि.) भी दरवाजे से ही आ गए। इस पर लोगों ने उनको लअन तअन किया बल्कि फ़ाजिर तक कह दिया, आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा कि तुमने भी ऐसा किया क्यूँ तो उन्होंने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) आपने किया तो आपके इत्तिबाअ में मैंने भी ऐसा किया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तो हिम्सी हूँ उन्होंने कहा कि हुज़ूर दीने इस्लाम जो आपका है वही मेरा है। इस पर ये आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

**बाब 19 : सफ़र भी गोया एक किस्म का अज़ाब है**

١٩ - بَابُ السَّفَرِ قِطْعَةً مِنَ الْعَذَابِ

इब्ने तैमिया ने कहा इस बाब को लाकर इमाम बुखारी ने इशारा किया कि घर में रहना मुजाहदा से अफ़ज़ल है, हाफ़िज़ ने कहा इस पर ए'तिराज़ है और शायद इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद ये हो कि हज्ज और उमरे से फ़ारिग़ होकर आदमी अपने घर वापस होने के लिये जल्दी करे। घर वालों से ज़्यादा दिन तक ग़ैर-हाज़िर होकर रहना अच्छा नहीं।

1804. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम कअम्बी ने बयान किया, उनसे सुमय ने, उनसे अबू सालेह ने और उनसे अबू हु़रैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सफ़र अज़ाब का एक टुकड़ा है, आदमी को खाने-पीने और सोने (हर एक चीज़) से रोक देता है, इसलिये जब कोई अपनी ज़रूरत पूरी कर चुके तो फ़ौरन घर वापस आ जाए।

(दीगर मक़ाम : 3001, 5429)

١٨٠٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ الْعَذَابِ: يَنْفَعُ أَحَدَكُمْ طَعَامًا وَشَرَابًا وَتَوَمُّةً. فَإِذَا قَضَى نَهْمَتَهُ فَلْيَبْغِلْ إِلَى أَهْلِهِ)).

[طرفاه في : ३००१, ५४२९]

ये उस ज़माने में फ़र्माया गया जब घर से निकलकर क़दम क़दम पर बेहद तकलीफ़ों और ख़तरों का सामना करना पड़ता था।

आजकल सफ़र में बहुत सी आसानियाँ मुहय्या हो गई हैं मगर फिर भी रसूले बरहक (ﷺ) का फ़र्मान अपनी जगह पर हक़ है, हवाई जहाज़ मोटर जिसमें भी सफ़र हो बहुत सी तकलीफ़ों का सामना करना पड़ता है, बहुत से नामुवाफ़िक़ हालात सामने आते हैं जिनको देखकर बेसाख़्ता मुँह से निकल पड़ता है, सफ़र बिल वाक़ेअ अज़ाब का एक टुकड़ा है। एक बुजुर्ग से पूछा गया कि सफ़र अज़ाब का टुकड़ा है फ़ौरन जवाब दिया लिअन्न फ़ीहि फ़िराकुल अहबाब इसलिये कि सफ़र में अहबाब से जुदाई हो जाती है और ये भी एक तरह से रूहानी अज़ाब है। इमाम बुखारी (रह.) का मन्श-ए-बाब ये है कि हाजी को हज के बाद जल्दी वतन को वापस लौटना चाहिये।

## बाब 20 : मुसाफ़िर जल्द चलने की कोशिश कर रहे हो और अपने अहल में जल्दी पहुँचना चाहे

1805. हमसे सईद बिन मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे जैद बिन असलम ने ख़बर दी, उनसे उनके बाप ने बयान किया कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ड्रमर (रज़ि.) के साथ मक्का के रास्ते में था कि उन्हें (अपनी बीवी) मफ़िया बिन्ते अबी इबैद की सख़्त बीमारी की ख़बर मिली और वो निहायत तेज़ी से चलने लगे, फिर जब सुर्खी गुरुब हो गई तो सवारी से नीचे उतरे और मरिब और इशा एक साथ मिलाकर पढ़ीं, उसके बाद फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि जब जल्दी चलना होता तो मरिब में देर करके दोनों (इशा और मरिब) को एक साथ मिलाकर पढ़ते थे। (राजेअ: 1091)

٢٠- بَابُ الْمُسَافِرِ إِذَا جَدَّ بِهِ

السَّيْرُ يُعْجِلُ إِلَى أَهْلِهِ

١٨٠٥- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((كَثُرْتُ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا بِطَرِيقِ مَكَّةَ، فَلَمَّا عَنْ مَنَافَةِ بَيْتِ أَبِي عُثَيْرٍ شَدَّةٌ وَجَعٌ، فَاسْتَرْعَ السَّيْرَ، حَتَّى إِذَا كَانَ بَعْدَ غُرُوبِ الشَّمْسِ لَزَلْنَا لَمَنَى الْمَغْرَبِ وَالْعَصَا - جَمَعَ بَيْنَهُمَا - ثُمَّ قَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ إِذَا جَدَّ بِهِ السَّيْرُ أَخْرَجَ الْمَغْرَبَ وَجَمَعَ بَيْنَهُمَا)).

[راجع: ١٠٩١]

ये इसलिये कि इस्लाम सरासर दीने फ़ितरत है, ज़िन्दगी में बसा औकात ऐसे मौके आ जाते हैं कि इंसान वक़्त पर नमाज़ अदा करने से सरासर मजबूर हो जाता है ऐसी हालत में ये सहूलत रखी गई कि दो नमाज़ें मिलाकर पढ़ ली जाएँ, अगली नमाज़ मग़लन इशा को पहली यानी मरिब में मिला लिया जाए या फिर पहली नमाज़ को देर करके अगली नमाज़ के साथ यानी इशा में मिला लिया जाए दोनों अमर जाइज़ हैं मगर ये सख़्त मजबूरी की हालत में है वरना नमाज़ का अदा करना उसके मुक़रर वक़्त ही पर फ़र्ज़ है। इशादि बारी तआला है, इन्नइस्लामात कानत अलल मूमिनीन किताबम्पौक़ूता अहले ईमान पर नमाज़ का बरवक़्त अदा करना फ़र्ज़ करार दिया गया है।

मसाइल व अहकामे हज के सिलसिले में आदाबे सफ़र पर रोशनी डालना ज़रूरी था। जबकि हज में शुरू से आख़िर तक सफ़र ही सफ़र से साबिक़ा पड़ता है, अगरचे सफ़र अज़ाब का एक टुकड़ा है मगर सफ़र वसील ए ज़फ़र भी है जैसा कि हज है। अगर इन्दल्लाह ये कुबूल हो जाए तो हाजी इस सफ़र से इस हालत में घर वापस होता है कि गोया वो आज ही माँ के पेट से पैदा हुआ है। ये इस सफ़र ही की बरक़त है कि मग़ि़रते इलाही का अज़ीम ख़ज़ाना नसीब हुआ। बहरहाल आदाबे सफ़र में सबसे अव्वलीन अदब फ़र्ज़ नमाज़ की मुह्राफ़िज़त है। पस मर्द मुसलमान की ये ऐन सआदतमन्दी है कि वो सफ़र व हज़र में हर जगह नमाज़ को उसके आदाब व शराइत के साथ बचा लाए, साथ ही इस्लाम ने इस सिलसिले में बहुत सी आसानियाँ भी

दीं ताकि सफ़र व हज़रत में हर जगह ये फ़र्ज़ आसानी से अदा किया जा सके, मज़लन हर नमाज़ के लिये वुजू करना फ़र्ज़ है मगर पानी न हो तो मिट्टी से तयम्मुम किया जा सकता है, मुसलमानों के लिये सारी ज़मीन को काबिले इबादत करार दिया गया है कि जहाँ भी नमाज़ का वक़्त आ जाए वो उसी जगह नमाज़ अदा कर सकें। यहाँ तक कि दरयाओं में, पहाड़ों की चोटियों पर, लक़ व दक़ बयाबानों (घने जंगलों) में, ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर नमाज़ अदा की जा सकती है। और ये भी आसानी दी गई जिस पर मुज्ताहिदे मुतलक़ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब में इशारा किया है कि मुसाफ़िर ख़वाह वो हज्ज ही के लिये क्यूँ न सफ़र कर रहा हो दो-दो नमाज़ों को बयक-वक़्त (एक ही समय में) मिलाकर अदा कर सकता है जैसा कि हदीष के बाब में मज़कूर हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपनी अहलिया मुहतरमा की बीमारी की ख़बर सुनी तो सवारी को तेज़ कर दिया ताकि जल्द से जल्द घर पहुँचकर मरीज़ा की तीमारदारी कर सकें। नीज़ नमाज़े मरिब और इशा को जमा करके अदा कर लिया, साथ ही ये भी बतला दिया कि रसूले करीम (ﷺ) भी सफ़र में नमाज़ों को इस तरह मिलाकर अदा फ़र्मा लिया करते थे। एक ऐसे दीन में जो क़यामत तक आलमगीर शान के साथ बाक़ी रहने का दावे'दार हो, ऐसी तमाम आसानियों का होना ज़रूरी था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) तआरुफ़ (परिचय) के मोहताज नहीं, उनकी जलालते शान के लिये यही काफ़ी है कि वे फ़ारूके आज़म उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के साहबज़ादे हैं, आपकी अहलिया मुहतरमा हज़रत सफ़िया बिनते अबू उबैद बनु षक्रीफ़ से ता'ल्लुक रखती हैं, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को पाया और आपके इश़ादात तथ्यिबात सुनने का मौक़ा उनको अनेक बार मिला। आपकी मर्वियात हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के तवस्सुत से हैं और हज़रत नाफ़ेअ जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के आज़ादकर्दा गुलाम हैं, वो उनसे रिवायत करते हैं। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज़मअीन

## बाब 27 : किताबुल मुहसर; मुहरिम के रोके जाने और शिकार का बदला देने के बयान में

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया, पस तुम अगर रोक दिये जाओ तो जो कुर्बानी मयस्सर हो वो मक्का भेजो और अपने सर उस वक़्त तक न मुँडाओ (यानी एहराम न खोलो) जब तक कि कुर्बानी का जानवर अपने ठिकाने (यानी मक्का पहुँचकर ज़िबह न हो जाए) और अत्ता बिन अबी रबाह (रह.) ने कहा कि जो चीज़ भी रोके उसका यही हुक्म है।

**तशरीह:** लफ़्ज़े मुहसर इस्मे मफ़रुल का सेगा है जिसका मसदर इह़सार है जो लुगत में रुकावट के मा'नी में इस्ते'माल होता है, वो रुकावट मर्ज़ (बीमारी) की वजह से हो या दुश्मन की वजह से सफ़रे हज्ज में अगर किसी को कोई रुकावट पैदा हो जाए जैसा कि हुदैबिया के मौक़े पर मुसलमानों को का'बा में जाने से रोक दिया गया था उस मौक़े पर ये आयते करीमा नाज़िल हुई, ऐसी हालत के लिये ये हुक्म बयान फ़र्माया गया कुछ बार दौराने सफ़र में मौत भी वाक़ेअ हो जाती है ऐसे हाज़ी साहिबान क़यामत के दिन लब्बैक पुकारते हुए खड़े होंगे और अल्लाह के पास उनको हाज़ियों के जुम्रह (जमाअत) में शामिल किया जाएगा। हज़रत अत्ता का क़ौल लाने से इमाम बुखारी (रह.) का मक्सद ज़ाहिर है कि इह़सार आम है और इमाम शाफ़िई (रह.) का ख़याल सहीह नहीं उन्होंने इह़सार को दुश्मन के साथ ख़ास किया है। इह़सार कुछ बार बीमारी मौत जैसे अहम हवादिष की वजह से भी हो सकता है।

## बाब 1 : अगर उमरह करने वाले को रास्ते मे रोक दिया गया, तो वो क्या करे?

इमाम बुखारी (रह.) का मक्सद उन लोगों पर रद्द करना है जो मुहसर के लिये हलाल होना हज्ज के साथ ख़ास करते हैं, हदीष

## ٢٧- کتاب المَحْصَر

وَجَزَاءُ الصَّيْدِ وَقَوْلُهُ اللَّهُ: [البقرة: ١٩٦].  
﴿فَإِنْ أَحْصَرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ، وَلَا تَخْلُقُوا رُؤُوسَكُمْ حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ﴾.  
وَقَالَ عَطَاءٌ: الْإِحْصَارُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يَحْبُسُهُ.  
قَالَ أَبُو عُبَيْدٍ اللَّهُ: حَصُورًا: لَا يَأْتِي النِّسَاءَ.

## ١- بَابُ إِذَا أَحْصَرَ الْمُحْصَرُ

बाब में साफ़ मौजूद है कि आँहजरत (ﷺ) ने उमरह का एहराम बाँधा था और आप (ﷺ) ने हूदैबिया में इहसार की वजह से वो खोल दिया था।

1806. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़साद के ज़माने में उमरह करने के लिये जब मक्का जाने लगे तो आपने फ़र्माया कि अगर मुझे का'बा शरीफ़ पहुँचने से रोक दिया गया तो मैं भी वही काम करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हम लोगों ने किया था, चुनौचे आपने भी सिर्फ़ उमरह का एहराम बाँधा क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी हूदैबिया के साल सिर्फ़ उमरह का एहराम बाँधा था।

1807. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्माने बयान किया, कहा हमसे जुवेरिया ने नाफ़ेअ से बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह और सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि जिन दिनों अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) पर हज्जाज की लश्करकशी होरही थी तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से लोगों ने कहा (क्योंकि आप मक्का जाना चाहते थे) कि अगर आप इस साल हज्ज न करें तो कोई नुक़सान नहीं क्योंकि डर इसका है कि कहीं आपको बैतुल्लाह पहुँचने से रोक न दिया जाए। आप बोले कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ गए थे और कुफ़्फ़ार कुनैश हमारे बैतुल्लाह तक पहुँचने में हाइल हो गए थे। फिर नबी करीम (ﷺ) ने अपनी कुर्बानी नहर की और सर मुँडा लिया, अब्दुल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने भी इंशाअल्लाह उमरह अपने पर वाजिब करार दे लिया है। मैं ज़रूर जाऊँगा और मुझे बैतुल्लाह तक पहुँचने का रास्ता मिल गया तो तवाफ़ करूँगा, लेकिन अगर मुझे रोक दिया गया तो मैं भी वही काम करूँगा जो नबी करीम (ﷺ) ने किया था, मैं उस वक़्त भी आप (ﷺ) के साथ मौजूद था। चुनौचे आपने जुलहुलैफ़ा से उमरा का एहराम बाँधा और फिर थोड़ी दूर चलकर फ़र्माया कि हज्ज और उमरह तो एक ही हैं, अब मैं भी तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उमरह के साथ हज्ज भी अपने ऊपर वाजिब करार दे लिया है, आपने हज्ज और उमरह दोनों से एक साथ फ़ारिग होकर ही दसवीं ज़िलहिज्ज को एहराम खोला और कुर्बानी की। आप फ़र्माते थे कि जब तक हाजी मक्का पहुँचकर एक तवाफ़े ज़ियारत न कर ले तो पूरा एहराम न

۱۸۰۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ : ( أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا حِينَ عَرَجَ إِلَى مَكَّةَ مُعْتَمِرًا فِي الْفَيْتَةِ قَالَ : إِنْ صُدِّدْتُ عَنْ الْبَيْتِ صَنَعْتُ كَمَا صَنَعْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ . فَأَقْلَ بِعُمْرَةٍ ، مِنْ أَجْلِ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ . كَانَ أَقْلَ بِعُمْرَةٍ عَامَ الْحُدَيْبِيَّةِ ) .

۱۸۰۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ وَسَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَاهُ ( أَنََّّهُمَا كَلَّمَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا لَبَّيْ تَزَلُّ الْخَبَشُ بِابْنِ الزُّبَيْرِ فَقَالَا : لَا يَضُرُّكَ أَنْ لَا تَحُجَّ الْعَامَ ، وَإِنَّا نَخَافُ أَنْ يُحَالَ بَيْنَكَ وَبَيْنَ الْبَيْتِ . فَقَالَ : ( عَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ، فَحَالَ كَفَارٌ قَرَيْشِي دُونَ الْبَيْتِ ، فَخَرَّ النَّبِيُّ ﷺ هَلْدَةً ، وَخَلَقَ رَأْسَهُ . وَأَشْهَدُكُمْ أَنِّي قَدْ أُوجِبْتُ الْعُمْرَةَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ ، أَنْطَلِقُ ، فَإِنْ خَلَى بَيْنِي وَبَيْنَ الْبَيْتِ طَفْتُ ، وَإِنْ حِيلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ فَعَلْتُ كَمَا فَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ . وَأَنَا مَعَهُ . فَأَقْلَ بِالْعُمْرَةِ مِنْ ذِي الْحُلْفَةِ ، ثُمَّ سَارَ سَاعَةً ، ثُمَّ قَالَ : إِنَّمَا شَأْنُهُمَا وَاحِدٌ ، أَشْهَدُكُمْ أَنِّي قَدْ أُوجِبْتُ حَجَّةً مَعَ عُمْرَتِي . فَلَمْ يَحِلَّ مِنْهُمَا حَتَّى حَلَّ يَوْمَ النَّحْرِ وَأَخَذِي ، وَكَانَ يَقُولُ : لَا يَحِلُّ حَتَّى يَطُوفَ طَوَافًا وَاحِدًا يَوْمَ

खोलना चाहिए। (राजेअ : 1639)

يَدْخُلُ مَكَّةَ. [راجع: ١٦٣٩]

हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रजि.) पर हज्जाज की लश्करकशी और इस सिलसिले में बहुत से मुसलमानों का नाहक खून यहाँ तक कि का'बा शरीफ की बेहुमती ये इस्लामी तारीख के वो दर्दनाक वाकियात हैं जिनके तस्व्वुर से आज भी जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उनका खामियाजा पूरी उम्मत आज तक भुगत रही है, अल्लाह अहले इस्लाम को समझ दे कि वो इस दौर तारीकी में इतिहादे बाहमी से काम लेकर दुश्मनाने इस्लाम का मुकाबला करें जिनकी रोशा दवानियों ने आज बैतुल मुकद्दस को मुसलमानों के हाथ से निकाल लिया है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, अल्लाहुम्म उन्सुरिल् इस्लाम वल् मुस्लिमीन आमीन।

1808. हमसे मूसा इब्ने इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफेअ ने कि अब्दुल्लाह (रजि.) के किसी बेटे ने उनसे कहा था काश आप इस साल रुक जाते (तो अच्छा होता। उसी ऊपर वाले वाकिये की तरफ इशारा है। (राजेअ : 1639)

١٨٠٨ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ : (أَنَّ بَعْضَ بَنِي عَبْدِ اللَّهِ قَالَ لَهُ: لَوْ أَقَمْتُ بِهَذَا).

[راجع: ١٦٣٩]

1809. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सलाम ने बयान किया, उनसे मुआविधा बिन सलाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़रीर ने बयान किया, उनसे इकिमा ने बयान किया कि इब्ने अब्बास (रजि.) ने उनसे फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब हुदैबिया के साल मक्का जाने से रोक दिये गये तो आपने हुदैबिया ही में अपना सर मुँडाय़ा और अज़वाजे मुतहरात के पास गए और कुर्बानी को नहर किया, फिर आइन्दा साल एक दूसरा इमरह किया।

١٨٠٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ سَلَامٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ جُكْرَمَةَ قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((لَقَدْ أَحْمَرَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَحْلَقَ رَأْسَهُ، وَجَامَعَ بِسَاءَةِ، وَنَحَرَ هَدْيَهُ، حَتَّى اغْتَمَرَ غَامًا فَلَبَّاهُ)).

इसका मतलब ये नहीं कि आप (ﷺ) ने अगले इमरे की क़ज़ा की बल्कि आप (ﷺ) ने अगले साल दूसरा इमरह किया और कुछ ने कहा कि इहस़ार की हालत में इस हज्ज या इमरे की क़ज़ा वाजिब है और आप (ﷺ) का ये इमरह अगले की क़ज़ा का था।

बाब : 2 हज्ज से रोके जाने का बयान

٢ - بَابُ الْإِحْصَارِ فِي الْحَجِّ

और हजरत (ﷺ) का इहस़ार सिर्फ़ इमरह से था, लेकिन इलमा ने हज्ज को भी इमरह पर क़यास कर लिया और अब्दुल्लाह बिन इमर (रजि.) का यही मतलब है कि आपने जैसा इमरे से इहस़ार की सूरत में अमल किया तुम हज्ज से इहस़ार होने में भी उसी पर चलो।

1810. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी, कहा कि इब्ने इमर (रजि.) फ़र्माया करते थे क्या तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत काफ़ी नहीं है कि अगर किसी को हज्ज से रोक दिया जाए तो हो सके तो वो बैतुल्लाह का तवाफ़ कर ले और सफ़ा व मर्वा की सज़ी, फिर वो हर चीज़ से हलाल हो जाए, यहाँ तक कि वो दूसरे

١٨١٠ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((أَلَيْسَ حَسْبَكُمْ سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، إِنْ حَبَسَ أَحَدُكُمْ عَنِ الْحَجِّ طَافَ بِالنِّسَاءِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ

साल हज्ज कर ले फिर कुर्बानी करे, अगर कुर्बानी न मिले तो रोज़ा रखे, अब्दुल्लाह से रिवायत है कि हमें मअमर ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझसे सालिम ने बयान किया, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने उसी पहली रिवायत की तरह बयान किया। (राजेअ: 1639)

خَلَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى يَخُجَّ عَامًا قَابِلًا  
فَيُهْدِي أَوْ يَصُومَ إِنْ لَمْ يَجِدْ هَدْيًا)).  
وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ  
قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ.. نَحْوَهُ.

[راجع: ١٦٣٩]

**तशरीह:** बज़ाहिर मा'लूम होता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के नज़दीक हज्ज व उमरह के एहराम में शर्त लगाना दुरुस्त न था, शर्त लगाना ये है कि एहराम बाँधते वक़्त यूँ कह ले कि या अल्लाह! मैं जहाँ रुक जाऊँ तो मेरा एहराम वहीं खोला जाएगा, जुम्हूरे सहाबा और ताबेअीन ने उसे जाइज़ रखा है और इमाम अहमद और अहले हदीस का यही क़ौल है (वहबीदी)। और ऐसी हालत में मिश्राल सामने है आज भी ऐसे हालात पैदा हो सकते हैं पस शारेअ अलैहिरहमा की सुन्नत मुस्तक़बल में आने वाली उम्मत मुस्लिमा के लिये उस्व-ए-हस्ना है। इहसास की तफ़सील पीछे भी गुज़र चुकी है। हज़रत मुहम्मद बिन शिहाब जुहरी, जुहरा बिन किलाब की तरफ़ मन्सूब हैं, कुन्नियत अबूबक्र है, उनका नाम मुहम्मद है, अब्दुल्लाह बिन शिहाब के बेटे। ये बड़े फ़क़ीह और मुहदिष हुए हैं और ताबेअीन से बड़े जलौलुलक़दर ताबेअी हैं, मदीना के ज़बरदस्त फ़क़ीह और आलिम हैं, उलूमे शरीअत के मुख्तलिफ़ फ़ूनून में उनकी तरफ़ रूजूअ किया जाता था। उनसे एक बड़ी जमाअत रिवायत करती है जिनमें से क़तादा और इमाम मालिक बिन अनस हैं, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं उनसे ज़्यादा आलिम जो उस ज़माने में गुज़रा है उनके सिवा और किसी को नहीं पाता। मक्हूल से पूछा गया कि उन इलमा में से जिनको आपने देखा है कौन ज़्यादा आलिम है फ़र्माया कि इब्ने शिहाब हैं, फिर पूछा गया कि उनके बाद कौन है? फ़र्माया कि इब्ने शिहाब है। फिर कहा गया कि इब्ने शिहाब के बाद, फ़र्माया कि इब्ने शिहाब ही हैं। सन् 124 हिजरी में माहे रमज़ानुल मुबारक वफ़ात पाई रहिमहुल्लाहु रहमतुन वासिआ. (आमीन)

### बाब 3 : रुक जाने के वक़्त सर मुँडाने से पहले कुर्बानी करना

### ٣- بَابُ النَّحْرِ قَبْلَ الْحَلْقِ فِي الْخَصْرِ

1811. हमसे महमूद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुरज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा कि हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें इर्वा ने और उन्हें मुसव्विर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (सुलह हुदैबिया के मौक़े पर) कुर्बानी सर मुँडाने से पहले की थी और आप (ﷺ) ने अज़्हाब को भी उसी का हुक्म दिया था। (राजेअ: 1494)

١٨١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنِ الْمُسَوِّرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَحَرَ قَبْلَ أَنْ يَحْلُقَ، وَأَمَرَ أَصْحَابَهُ بِذَلِكَ)). [راجع: ١٤٩٤]

मा'लूम हुआ कि पहले कुर्बानी करना फिर सर मुँडाना ही मस्नून तर्तीब है।

1812. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अबूबद्र शुजाअ बिन वलीद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमसे मअमर बिन मुहम्मद इमरी ने बयान किया, और नाफ़ेअ ने बयान किया कि अब्दुल्लाह और सालिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से गुप्तगू की, (कि वो इस साल मक्कान जाएँ)

١٨١٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا أَبُو بَنْدَرٍ شَجَاعُ بْنُ الْوَلِيدِ عَنْ عُمَرَ بْنِ مُحَمَّدٍ الْقُمَرِيِّ. قَالَ: وَحَدَّثَنَا نَافِعٌ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ وَمَسْلَمًا كُلَّمَا عَبْدَ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ

तो उन्होंने फ़र्माया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ उमरह का एहराम बाँधकर गए थे और कुफ़फ़रे कुरैश ने हमें बैतुल्लाह से रोक दिया था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी कुर्बानी को नहर किया और सर मुँडाय़ा। (राजेअ: 1639)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَا: «مَخَرَجًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مُغْتَمِرِينَ فَحَالَ كَفَارُ قُرَيْشٍ دُونَ أَيْتِهِ، فَخَرَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَدَنَهُ وَخَلَقَ رَأْسَهُ» [راجع: 1639]

इस हदीस से जुम्हूर इलमा के क़ौल की ताईद होती है। वो कहते हैं कि इहस़ार की सूत में जहाँ एहराम खोले वहीं कुर्बानी कर ले; ख़्वाह हिल्ल में हो या हरम में और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) कहते हैं कि कुर्बानी हरम में भेज दी जाए और जब वहाँ जिब्ह हो ले तब एहराम खोले फ़क्रालल जुम्हूर यज़्बहुल मुहस़र अल हदय हैषु यहिल्लु सवाअन कान फिल्लिल्लि औ फ़िलहरमि (फ़तह) यानी जिसे हज्ज से रोक दिया जाए वो जहाँ एहराम खोले, हिल्ल में हो या हरम में उसी जगह कुर्बानी कर डाले।

बाब 4 : जिसने कहा कि रोके गए शख्स पर क़ज़ा ज़रूरी नहीं

٤ - بَابُ مَنْ قَالَ : لَيْسَ عَلَى الْمُخَصَّرِ بَدَلٌ

अय क़ज़ाउन लम्मा उहसिर फ़ीहि मिन हजिन औ उमतिन व हाज़ा हुव क़ौलुल जुम्हूर (फ़तह) यानी जब वो हज्ज या उमरह से रोका गया हो और जुम्हूर का क़ौल यही है जो हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का फ़त्वा है कि मुहस़र के लिये क़ज़ा ज़रूरी नहीं।

और रौह ने कहा, उनसे शिब्लि बिन अयाद ने, उनसे इब्ने अबी नजीह ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि क़ज़ा उस सूत में वाजिब होती है जब कोई हज्ज में अपनी बीबी से जिमाअ करके निय्यते हज्ज को तोड़ डाले लेकिन कोई और उज़्र पेश आ गया या उसके अलावा कोई बात हुई तो वो हलाल होता है, क़ज़ा उस पर ज़रूरी नहीं और अगर साथ कुर्बानी का जानवर था और वो मुहस़र हुआ और हरम में उसे न भेज सका तो उसे नहर कर दे, (जहाँ पर भी उसका क़याम हो) ये उस सूत में जब कुर्बानी का जानवर (कुर्बानी की जगह) हरम शरीफ़ में भेजने की उसे ताक़त न हो लेकिन अगर उसकी ताक़त है तो जब तक कुर्बानी वहाँ जिब्ह न हो जाए एहराम नहीं खोल सकता। इमाम मालिक वग़ैरह ने कहा कि (मुहस़र) ख़्वाह कहीं भी हो अपनी कुर्बानी वहाँ नहर कर दे और सर मुँडा ले। उस पर क़ज़ा भी लाज़िम नहीं क्योंकि नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अरुहाब (रिज़वानुल्लाहि अलैहिम) ने हुदैबिया में बग़ैर तवाफ़ और बग़ैर कुर्बानी के बैतुल्लाह तक पहुँचे हुए नहर किया और सर मुँडाय़ा और वो हर चीज़ से हलाल हो गए, फिर कोई नहीं कहता कि नबी करीम (ﷺ) ने किसी को भी क़ज़ा का या किसी भी चीज़ के

وَقَالَ رَوْحٌ عَنْ شَيْبَةَ بْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِنَّمَا الْبَدَلُ عَلَى مَنْ نَقَضَ حَجَّهُ بِالْأَذَى، فَإِنَّمَا مَنْ حَسَمَ غُلَزَّ أَوْ غَيْرَ ذَلِكَ فَإِنَّهُ يَحِلُّ وَلَا يُوجِبُ، وَإِنْ كَانَ مَعَ هَذِي وَهُوَ مُخَصَّرٌ نَحْرَهُ إِنْ كَانَ لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يَبْعَثَ، وَإِنْ اسْتَطَاعَ أَنْ يَبْعَثَ بِهِ لَمْ يَحِلَّ حَتَّى يَبْلُغَ الْهَذِي مَجْلَةً. وَقَالَ مَالِكٌ وَغَيْرُهُ: يَنْحَرُ هَذِيَّةً وَيَخْلُقُ فِي أَيِّ مَوْضِعٍ كَانَ وَلَا قَضَاءَ عَلَيْهِ، لِأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَصْحَابَهُ بِالْحُدَيْبِيَّةِ نَحَرُوا وَخَلَقُوا وَحَلُّوا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ قَبْلَ الطَّوَافِ وَقَبْلَ أَنْ يَصِلَ الْهَذِي إِلَى الْاَيْتِ، ثُمَّ لَمْ يُذَكَّرْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ أَحَدًا أَنْ يَقْضُوا شَيْئًا وَلَا يَقُودُوا لَهُ. وَالْحُدَيْبِيَّةُ خَارِجٌ مِنَ

दोहराने का हुक्म दिया हो और हुदैबिया हरम से बाहर है।

الْحَرَمُ.

**तशरीह:** मौता में इमाम मालिक की रिवायत यूँ है, अन्नहु बलगाहु अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) हल्ल हुव व अन्हाबुहु बिल हुदैबियति फ़नहरुल हदय व हलकू रुऊसहुम व हल्लौ मिन कुल्लि शैइन क़ब्ल अय्यतूफू बिल्बैति व क़ब्ल अय्यसिल इलैहिल हदयु पुम्म लम नअलम अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) अमर अहदन मिन अन्हाबिही व ला मिम्मन कान मअहु अय्यकजू शैअन व ला अय्यऊदुशैअ व सुइल मालिक अम्मन उहसिर बअदुव्विन यहिल्लु मिन कुल्लि शैइन व यन्हरु हदयहु व यहलिकु रासहु हैषु हुबिस व लैस अलैहि कज़ाउन (फ़तहुल बारी) यानी उनको ये ख़बर मिली है कि रसूले करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अन्हाबे किराम हुदैबिया में हलाल हो गए थे पस उन्होंने अपनी कुर्बानियों को नहर कर दिया और सरो को मुँडा लिया और वो बैतुल्लाह का तवाफ़ करने से पहले ही हर चीज़ से हलाल हो गए उससे भी पहले कि का'बा तक उनकी हदी पहुँच सके। फिर हम नहीं जानते कि रसूले करीम (ﷺ) ने अपने किसी भी सहाबी को किसी भी चीज़ के कज़ा करने का हुक्म दिया हो और न किसी काम के दोबारा करने का हुक्म दिया और इमाम मालिक (रह.) उसे उसके बारे में पूछा गया जो किसी दुश्मन की तरफ़ से रोक दिया जाए आपने फ़र्माया कि वो हर चीज़ से हलाल हो जाए और अपनी कुर्बानी को नहर कर दे और सर मुँडा ले जहाँ भी उसको रोका गया है उस पर कोई कज़ा लाज़िम नहीं। अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ील गरज़ुल मुसत्रिफ़ि बिहाज़ हिज्रुमति अरहु अला मन क़ाल अतहल्लुल बिल इहसारि ख़ास्सुन बिल्हाज़ि बिख़िलाफ़िल मुअतमरि हत्ता यतूफ़ बिल्बैकत लिअन्नस्सुन्नत कुल्लहा यक़्तुन लिल इम्मति फ़ला यख़शा फ़वातुहा बिख़िलाफ़िल हज़ि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की गरज़ इस बाब से उस शख़्स की तदीद करनी है जिसने कहा कि रोकने की सूत में हलाल होना हाज़ियों के साथ ख़ास है और मोअतमरि के लिये ये सज़ात नहीं है; पस वो हलाल न हो बल्कि जब तक वो बैतुल्लाह का तवाफ़ न कर ले अपनी हालते एहराम पर कायम रहे इसलिये कि सारे साल उमरह का वक़्त है और हज्ज के ख़िलाफ़ उमरह के वक़्त के फ़ौत होने का कोई डर नहीं है, इमाम बुख़ारी (रह.) के नज़दीक ये क़ौल सहीह नहीं है बल्कि सहीह यही है कि इहसार की सूत में हाज़ी और उमरह करने वाला सबके लिये हलाल होने की इजाज़त है।

1813. हमसे इस्माइल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि फ़ित्ने के ज़माने में जब अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) मक्का के इरादे से चले तो फ़र्माया कि अगर मुझे बैतुल्लाह तक पहुँचने से रोक दिया गया तो मैं भी वही करूँगा जो (हुदैबिया के साल) मैंने रसूले करीम (ﷺ) के साथ किया था। आपने उमरह का एहराम बाँधा क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी हुदैबिया के साल उमरह ही का एहराम बाँधा था। फिर आपने कुछ ग़ौर करके फ़र्माया कि उमरह और हज्ज तो एक ही है, उसके बाद अपने साथियों से भी यही फ़र्माया कि ये दोनों तो एक ही हैं। मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि उमरह के साथ अब हज्ज भी अपने लिये मैंने वाजिब करार दे लिया है फिर (मक्का पहुँचकर) आपने दोनों के लिये एक ही तवाफ़ किया। आपका ख़याल था कि ये काफ़ी है और आप कुर्बानी का जानवर भी साथ ले गए थे। (राजेअ : 1639)

١٨١٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ جِئْتُ خُرُوجَ إِلَى مَكَّةَ مُقْتَمِرًا فِي الْبَيْتَةِ: ((إِنْ صَبَدْتُ عَنْ التَّيْتِ صَنَعْنَا كَمَا صَنَعْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَمَلُ بِعُمَرَةَ مِنْ أَجْلِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ أَهْلًا بِعُمَرَةَ عَامَ الْحُدَيْبِيَّةِ - ثُمَّ إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ نَظَرَ فِي أَمْرِهِ فَقَالَ: مَا أَمْرُهُمَا إِلَّا وَاحِدٌ. فَالْتَفَتَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: مَا أَمْرُهُمَا إِلَّا وَاحِدٌ. أَشْهَدُكُمْ أَنِّي لَقَدْ أَوْجَبْتُ الْحَجَّ مَعَ الْعُمَرَةِ. ثُمَّ طَافَ لَهُمَا طَوَافًا وَاحِدًا. وَرَأَى أَنَّ ذَلِكَ مُجْزِيًا عَنْهُ. وَاهْتَدَى)). [راجع: ١٦٣٩]



जुम्हूर उलमा और अहले हदीस का यही कौल है कि क़ारिन को एक ही तवाफ़ और एक ही सज़ी काफ़ी है।

### बाब 5 : अल्लाह तआला का फ़र्मान

कि अगर तुममें कोई बीमार हो या उसके सरमें (जूओं की) कोई तकलीफ़ हो तो उसे रोज़े या स़दक़े या कुर्बानी का फ़िदया देना चाहिए यानी उसे इख़्तियार है और अगर रोज़ा रखना चाहे तो तीन दिन रोज़ा रखे। (अल बकर : 196)

1814. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हमीद बिन क़ैस ने, उन्हें मुजाहिद ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने और उन्हें क़अब बिन इज़ह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, ग़ालिबन जूओं से तुमको तकलीफ़ है, उन्होंने कहा कि जी हाँ! या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर अपना सर मुँडा ले और तीन दिन के रोज़े रख ले या छः मिस्कीनों को खाना खिला दे या एक बकरी जिह्द कर।

(दीगर मक़ामात : 1815, 1816, 1817, 1818, 4159, 4190, 4191, 4517, 5665, 5703, 6808)

### बाब 6 : अल्लाह तआला का क़ौल, या स़दक़ा (दिया जाए) ये स़दक़ा छः मिस्कीनों को खाना खिलाना है

1815. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मुजाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, उनसे क़अब बिन इज़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) हुदैबिया में मेरे पास आकर खड़े हुए तो जूएँ मेरे सर से बराबर गिर रही थीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ये जूएँ तो तुम्हारे लिये तकलीफ़ देने वाली हैं। मैंने कहा जी हाँ! आप

۵- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿فَمَنْ

كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ﴾ [البقرة: 196].

وَهُوَ مُخَوَّرٌ، فَأَمَّا الصَّوْمُ فَثَلَاثَةُ أَيَّامٍ

۱۸۱۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((لَعَلَّكَ أَذَاكَ هَوَامُكَ؟)) قَالَ: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اخْلُقْ رَأْسَكَ، وَصُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ أَوْ أَطْعِمْ سِتَّةَ مَسَاكِينَ أَوْ أَنْسُكْ بِشَاةٍ)).

[أطرافه في : ۱۸۱۵، ۱۸۱۶، ۱۸۱۷،

۱۸۱۸، ۴۱۵۹، ۴۱۹۰، ۴۱۹۱،

۴۵۱۷، ۵۶۶۵، ۵۷۰۳، ۶۸۰۸].

۶- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَأَوْ

صَدَقَةٍ﴾ وَهِيَ إِطْعَامُ سِتَّةٍ مَسَاكِينَ

۱۸۱۵- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سَيْفٌ

قَالَ: حَدَّثَنِي مُجَاهِدٌ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى أَنَّ كَعْبَ بْنَ عُجْرَةَ حَدَّثَهُ قَالَ: ((وَقَفَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْحُدَيْبِيَّةِ وَرَأْسِي يَتَهافتُ أَفْئادًا، فَقَالَ:

(ﷺ) ने फ़र्माया फिर सर मुँडा ले या आप (ﷺ) ने सिर्फ़ ये लफ़्ज़ फ़र्माया कि मुँडा ले। उन्होंने बयान किया कि ये आयत मेरे ही बारे में नाज़िल हुई थी कि अगर तुममें कोई मरीज़ हो या उसके सर में कोई तकलीफ़ हो आख़िर तक फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तीन दिन के रोज़े रख ले या एक फ़िरक़ ग़ल्ला से छः मिस्कीनों को खाना दे या जो मयस्सर हो उसकी कुर्बानी कर दे।

(राजेअ: 1814)

एक फ़िरक़ ग़ल्ला का वज़न तीन साअ या सौलह रतल होता है। इससे उन लोगों का रद्द होता है जो एक साअ का वज़न आठ रतल बतलाते हैं। कुर्बानी जो आसान हो यानी बकरा हो या और कोई जानवर जो भी आसानी से मिल सके कुर्बान कर दो।

### बाब 7 : फ़िदया में हर फ़क़ीर को आधा साअ ग़ल्ला देना

1816. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन अस्बहानी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मुअज़िल ने बयान किया कि मैं कअब बिन इज्जह (रज़ि.) के पास बैठा हुआ था, मैंने उनसे फ़िदये के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि (कुर्आन शरीफ़ की आयत) अगरचे इज़ाज़ मेरे बारे में नाज़िल हुई थी लेकिन उसका हुक्म तुम सबके लिये है। हुआ ये कि मुझे रसूलुल्लाह की ख़िदमत में लाया गया तो जूएँ सर से मेरे चेहरे पर गिर रही थीं। आप (ﷺ) ने (ये देखकर फ़र्माया) मैं नहीं समझता था कि तुम्हें इतनी ज़्यादा तकलीफ़ होगी या इस हद तक होगी, क्या तुझको एक बकरी का मक्दूर है? मैंने कहा कि नहीं, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तीन रोज़े रख या छः मिस्कीनों को खाना खिला, हर मिस्कीन को आधा साअ खिलाइयो। (राजेअ: 1814)

((يُؤْذِنُكَ هَؤُلَاءِ)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((لَا خَلْقَ رَأْسَكَ - أَوْ قَالَ: ((اِخْلُقْ)) - قَالَ: فِي نَزَلَتْ عَلَيْهِ الْآيَةُ: ﴿فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ﴾ إِلَى آخِرِهَا. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، أَوْ تَصَدَّقْ بِفَرَقِ ثَلَاثَةِ مِائَةٍ، أَوْ أَنْسَلِكْ بِمَا تَسِيرُ)). (راجع: ١٨١٤)

### ٧- بَابُ الإِطْعَامِ فِي الْفِدْيَةِ بِصَفِّ صَاعٍ

١٨١٦- حَدَّثَنِي أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْأَصْبَهَانِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَعْقِلٍ، قَالَ: ((جَلَسْتُ إِلَى كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَسَأَلْتُهُ عَنْ الْفِدْيَةِ، فَقَالَ: نَزَلَتْ فِي خَاصَّةٍ وَهِيَ لَكُمْ خَاصَّةٌ. حُمِلَتْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَالْقَمَلُ يَتَسَابَرُ عَلَى وَجْهِهِ، فَقَالَ: ((مَا كُنْتُ أَرَى الْوَجَعَ بَلَغَ بِكَ مَا أَرَى. أَوْ مَا كُنْتُ أَرَى الْمَجْهَدَ بَلَغَ بِكَ مَا أَرَى. تَجِدُ شَاةً)) قُلْتُ: لَا. فَقَالَ: ((لَكُمْ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ، أَوْ أَطْعِمَ مِائَةَ مَسَاكِينَ لِكُلِّ مِسْكِينٍ بِصَفِّ صَاعٍ)). (راجع: ١٨١٤)

**तशरीह:** ये भी उसी सूरत में कि मयस्सर हो वरना आयत करीमा ला युक्ल्लिफुल्लाहु नप्सन इल्ला वुस्रहा (अल बकर 286) के तहत फिर तो तौबा-इस्तिफ़ार भी कफ़ारा हो जाएगा, हॉ मक्दूर (सामर्थ्य रखने) की हालत में ज़रूर ज़रूर हुक्मे शरअी बजा लाना ज़रूरी होगा, वरना हज्ब में नुक्स रहना यक्नीनी है। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, अय लिक्ल्लि मिस्कीनिन मिन कुल्लि शैइन युशीरु बिज़ालिक इलररहि मन फ़रक़ फ़ी ज़ालिक बैनल्कुम्हि व ग़ैरिही क़ाल इब्नु अब्दिल बर्र क़ाल अबू हनीफ़त वल कूफ़ियून निस्फ़ु साइन मिन कुम्हिन व साउमिन तमरिन व अन अहमद रिवायतन तज़ाही क़ौलुहुम क़ाल अयाज़ व हाज़ल हदीथु यरुहु अलैहिम (फ़तहुल बारी) व फ़ी हदीथि कअब मिन उज्रत मिनल

फ़वाइदि मा तक्रहम अत्रसुन्नत मुबय्यनतुन लिमुज्मलिल किताबि लिइत्लाक़िल फ़िदयति फ़िल कुआनि व तक्वदिहा फ़िस्सुन्नति व तहरीमि हल्किरीसि अलल महरमि वरससतु फ़ी हल्किहा इज़ा अज़ाहुल्कुम्मलु औ ग़ैरहु मिनल औजाइ व फ़ीहि तलत्तफ़ुल कबीरि बिअस्हाबिही व इनायतिही बिअहवालिहिम व तफ़क्रदुहलहुम व इज़ा राअ बिबअज़ि इत्तिबाइही ज़ररन सअल अन्हु व अर्शदहु इलल माख़जि मिन्हू यानी हर मिस्कीन के लिये हर एक चीज़ से उसमें उस शख़्स के ऊपर रद्द करना मक्सूद है जिसने इसके बारे में गेहूँ व ग़ैरह का फ़र्क़ किया है। इब्ने अब्दुल बर्र कहते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और अहले कूफ़ा कहते हैं कि गेहूँ का निस्फ़ (आधा) साअ और खजूरों का एक साअ होना चाहिए। इमाम अहमद का क़ौल भी तक्रीबन उसी के मुशाबेह है। क़ाज़ी अयाज़ ने फ़र्माया कि हदीषे कअब बिन इज़रह उनकी तर्दीद कर रही है और इस हदीष के फ़वाइद में से ये भी है कि कुआन के किसी इज्माली हुक्म की तफ़सील सुन्नते रसूल बयान करती है। कुआन मजीद में मुल्लक़ फ़िदया का ज़िक्र था सुन्नत ने उसे मुकय्यिद (निर्धारित) कर दिया और इस हदीष से ये भी ज़ाहिर हुआ कि मुहरिम के लिये सर मुँडाना हुराम है और जब उसे जूओं व ग़ैरह की तकलीफ़ हो तो वो मुँडा सकता है और इस हदीष से ये भी ज़ाहिर हुआ कि बड़े लोगों को हमेशा अपने साथियों पर नज़रे इनायत रखते हुए उनके दुख तकलीफ़ का ख़याल रखना चाहिए किसी को कुछ बीमारी व ग़ैरह हो जाए तो उसके इलाज के लिये उनको नेक मशिवरा देना चाहिए।

### बाब 8 : कुआन मजीद में नुसुक से मुराद बकरी है

### ٨- بَابُ النَّسْكَ شَاةً

यानी आयते करीमा फ़फ़िदयतु मिन् सियामिन् अब सद्कतिन् अब नुसुकिन् में बकरी मुराद है।

1817. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे शिब्लि बिन अब्बाद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नजीह ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि मुझसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने बयान किया और उनसे कअब बिन इज़रह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें देखा तो जूएँ उनके चेहरे पर गिर रही थीं, आप (ﷺ) ने पूछा क्या उन जूओं से तुम्हें तकलीफ़ है? उन्होंने कहा जी हाँ, आप (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि अपना सर मुँडा लें। वो उस वक़्त हुदैबिया में थे। (मुलह हुदैबिया के साल) और किसी को ये मा'लूम नहीं था कि वो हुदैबिया ही में रह जाएंगे बल्कि सबकी ख़्वाहिश ये थी कि मक्का में दाख़िल हों। फिर अल्लाह तआला ने फ़िदया का हुक्म नाज़िल फ़र्माया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया कि छः मिस्कीनों को एक फ़िरक़ (यानी तीन साअ ग़ल्ला) तक्सीम कर दिया जाए या एक बकरी की कुर्बानी करे या तीन रोज़े रखे।

(राजेअ : 1814)

١٨١٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا زَوْجٌ حَدَّثَنَا شَيْبَلٌ عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي ثَلْيٍ عَنْ كَثْبِ بْنِ عَجْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَأَاهُ وَإِنَّهُ يَسْتَقْطُ عَلَى وَجْهِهِ الْقَمَلُ، فَقَالَ: ((أَلَا ذِيكَ هَوَامُكُ؟)) قَالَ: نَعَمْ. فَأَمَرَهُ أَنْ يَخْلُقَ وَهُوَ بِالْحُدَيْبِيَّةِ، وَلَمْ يَتَّخِذْ لَهُمْ أَنْهُمْ يَجْلِسُونَ بِهَا، وَهُمْ عَلَى طَمَعٍ أَنْ يَدْخُلُوا مَكَّةَ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ الْبَدْيَةَ، فَأَمَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يُطْعِمَ قَرْنًا بَيْنَ مَيْتَةٍ أَوْ يُهْدِيَ شَاةً، أَوْ يَصُومَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ)).

[راجع: ١٨١٤]

1818. और मुहम्मद बिन यूसुफ़ से रिवायत है कि हमको वरक़ाअ ने बयान किया, उनसे इब्ने नजीह ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने ख़बर दी और उन्हें कअब बिन इज़रह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह

١٨١٨- وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُوسُفَ حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ ابْنِ نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي ثَلْيٍ عَنْ

(ﷺ) ने उन्हें देखा तो जूँ उनके चेहरे पर गिर रही थी, फिर यही हदीष बयान की।

(राजेअ: 1814)

كَتَبَ بَنِي عُقْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَأَى وَاقِلَةَ يَسْقُطُ عَلَى وَجْهِهِ)) وَمِثْلَهُ. [راجع: ١٨١٤]

यानी आयते कुर्बानी में मज़कूर नुसुक से बकरी मुराद है।

### बाब 9 : सूरह बक्र में अल्लाह का ये फ़र्मांना कि हज्ज में शहवत की बातें नहीं करना चाहिए

1819. हमसे सुलैमान बिन हरब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख्स ने उस घर (का'बा) का हज्ज किया और उसमें न रफ़ष (यानी शहवत) की बात मुँह से निकाली और न कोई गुनाह का काम किया तो वो उस दिन की तरह वापस होगा जिस दिन उसकी माँ ने उसे जना था। (राजेअ: 1521)

٩- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَلَا رَفَثَ﴾ [البقرة: ١٩٧].

١٨١٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ حَجَّ هَذَا الْبَيْتَ فَلَمْ يَرَفَثْ وَلَمْ يَفْسُقْ، رَجَعَ كَمَا وَلَدَتْهُ أُمُّهُ)). [راجع: ١٥٢١]

यानी तमाम गुनाहों से पाक होकर लौटेंगा। कुआन मजीद में रफ़ष का लफ़ज़ है। रफ़ष जिमाअ को कहते हैं या जिमाअ के मुता'ल्लिक शहवतअंगेज़ (वासनाभरी) बातें करने को (फ़हश कलाम को) सफ़रे हज्ज सरासर रियाज़त व मुजाहिदे (नफ़्स कशी का सफ़र) है। लिहाज़ा उसमें जिमाअ करने बल्कि जिमाअ की बातें करने से परहेज़ करना लाज़िम भी है।

### बाब 10 : अल्लाह तआला का सूरह बक्र: में फ़र्मांना कि हज्ज में गुनाह और झगड़ा न करना चाहिये

1820. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने उस घर का हज्ज किया और न शहवत की फ़हश बातें की, न गुनाह किया तो वो उस दिन की तरह वापस होगा जिस दिन उसकी माँ ने उसे जना था।

(राजेअ: 1521)

١٠- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ﴾ [البقرة: ١٩٧].

١٨٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ حَجَّ هَذَا الْبَيْتَ فَلَمْ يَرَفَثْ وَلَمْ يَفْسُقْ رَجَعَ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ)). [راجع: ١٥٢١]

हदीष के बाब में झगड़े का ज़िक्र नहीं है, इस के लिये इमाम बुखारी ने आयत पर इक्तिफ़ा किया और फ़िस्क की मुज़म्मत के लिये हदीष को नक़ल किया, बस आयत और हदीष दोनों को मिलाकर आपने बाब के मज़मून को मुदल्लल (तर्कसंगत) किया इससे हज़रत इमाम (रह.) की दिक्कत नज़र (सोच की गहराई) भी प्राबित होती है। स़द अफ़सोस उन लोगों पर जो ऐसे बज़ीरत वाले इमाम की फुक्राहत और फ़िरासत से इकार करें और इस वजह से उनकी तन्क़ीस करके गुनहगार बनें।

## बाब 28 : किताबु जज़ाउस्सैद; अल्लाह का ये फ़र्माना सूरह माइदा में कि एहराम की हालत में

शिकार न मारो। और जो कोई तुममें से उसको जानकर मारेगा तो उस पर उस मारे गए शिकार के बराबर बदला है मवेशियों में से, जो तुममें से दो मोतबर आदमी फ़ैसला कर दें इस तरह से कि वो जानवर बदला का बतौर नियाज़ का' बा पहुँचाया जाए या उस पर कफ़ारा है चन्द मोहताजों को खिलाना या उसके बराबर रोज़े ताकि अपने किये की सज़ा चखे, अल्लाह तआला ने मुआफ़ किया जो कुछ हो चुका और जो कोई फिर करेगा अल्लाह तआला उसका बदला उससे ले लेगा और अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है, हालते एहराम में दरिया का शिकार और दरिया का खाना तुम्हारे फ़ायदे के वास्ते हलाल हुआ और सब मुसाफ़िरों के लिये और ह़राम हो। तुम पर जंगल का शिकार जब तक तुम एहराम में रहो और डरते रहो अल्लाह से जिसके पास तुम जमा होओगे। (अल माइदा : 95)

**तशरीह :** इस बाब में इमाम बुखारी (रह.) ने सिर्फ़ आयत पर इक्तिफ़ा किया और कोई हदीष बयान नहीं की। शायद उनको अपनी शर्त के मुवाफ़िक़ कोई हदीष इस बाब में नहीं मिली। इब्ने बत्ताल ने कहा इस पर अक़षर उलेमा का इतिफ़ाक़ है कि अगर मुहरिम शिकार के जानवर को अमदन (जान-बूझकर) या सद्हन (भूल से) क़त्ल करे हर हाल में उस पर बदला वाजिब है और अहले ज़ाहिर ने सद्हन क़त्ल करने में बदला वाजिब नहीं रखा और हसन और मुजाहिद से उसके बरअक्स मन्कूल है, इस तरह अक़षर उलेमा ने ये कहा है कि उसको इख़्तियार है चाहे कफ़ारा दे चाहे बदला दे दे; घौरी ने कहा अगर बदला न पाए तो खाना खिलाए अगर ये भी न हो सके तो रोज़े रखे। (वहीदी)

हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, क़ील अस्सबबु फ़ी नूज़ूलि हाज़िहिल आयति अन्न अबल्युस्सति क़तल हिमास वहाशिन व हुव मुहरमुन फ़ी उम्मतिल हुदैबियति फ़नज़लत हकाहु मुकातिल फ़ी तप्सीरिही व लम यज्कुरिल मुसन्निफ़ फ़ी रिवायति अबी ज़रिन फ़ी हाज़िहित्तर्जुमति हदीषन व लअल्लहु अशार इला अन्नहु लम यज़्बुत अला इब्नु बत्ताल इत्तफ़क़ अइम्मतुल्फ़त्वा मिन अहलि हिजाज़ि व लइराक़ि व ग़ैरहुम अला अन्नल मुहरिम इज़ा क़तलस्सैद अमदन औ ख़तअन फ़अलैहिल जज़ाउ (फ़तुल बारी) यानी ये आयत एक शख्स अबुल युस्सह के बारे में नाज़िल हुई जिसने उमरह ए-हुदैबिया के मौक़े पर एहराम की हालत में एक जंगली गधे को मार दिया था। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब में कोई हदीष़ फ़िक़्र नहीं फ़र्माई। शायद उनका ये इशारा है कि उनकी शर्त पर इस बारे में कोई सहीह मफ़ूअ हदीष़ नहीं मिली, इब्ने बत्ताल ने कहा कि फ़त्वा देने वाले इमामों का इतिफ़ाक़ है जो हिजाज़ और इराक़ से ता'ल्लुक रखते हैं कि मुहरिम जानकर या ग़लती से अगर किसी जानवर का शिकार करे तो उस पर जज़ा लाज़िम आती है।

## बाब 2 : अगर बिना एहराम वाला शिकार करे और एहराम वाले को तोहफ़ा भेजे तो वो खा सकता है

और अनस और इब्ने अब्बास (रज़ि.) (मुहरिम के लिये) शिकार के सिवा सारे जानवर मघ़लन ऊँट, बकरी, गाए, मुर्गी और घोड़े के ज़िबह करने में कोई हर्ज नहीं समझते थे। कुआन में लफ़ज़

## ٢٨ - کتاب جزاء الصيد

### ١ - بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ، وَمَنْ قَتَلَ مِنْكُمْ مَتَعَمَّدًا فَجَزَاءٌ مِثْلَ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ ..... إِلَى قَوْلِهِ ..... اتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُخْشَرُونَ﴾ [المائدة: ٩٥].

### ٢ - بَابُ إِذَا صَادَ الْحِلَالُ فَأَمْدَى

#### لِلْمُحْرِمِ أَكْلَهُ

وَلَمْ يَرِ ابْنُ عَبَّاسٍ وَانْسٌ بِالنَّبْعِ بَأْسًا. وَهُوَ غَيْرُ الصَّيْدِ، نَحْوُ الْإِبِلِ وَالْفَرَسِ وَالذَّجَاجِ وَالْعَمَلِ يُقَالُ عَمِلَ ذَلِكَ: مِثْلُ.

अदल (फ़तह ऐन) मिस्ल के मा'नी में बोला गया है और अदल (ऐन को) जब ज़ेर के साथ पढ़ा जाए तो वज़न के मा'नी में होगा, क़यामन क़वामा (के मा'नी में है, क़यिम) य़अदिलून के मा'नी हैं मिस्ल बनाने के।

1821. हमसे मुआज़ बिन फुज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे य़ह्या इब्ने क़षीर ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने बयान किया कि मेरे वालिद सुलह हुदैबिया के मौक़े पर (दुश्मनों का पता लगाने) निकले। फिर उनके साथियों ने तो एह्राम बाँध लिया लेकिन (खुद उन्होंने अभी) नहीं बाँधा था (असल में) नबी करीम (ﷺ) को किसी ने ये ख़बर दी थी कि मक्कामे ग़ैय़क़ा में दुश्मन आपकी ताक में है, इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने (अबू क़तादा और चन्द सहाबा रज़ि. को उनकी तलाश में) रवाना किया मेरे वालिद (अबू क़तादा रज़ि.) अपने साथियों के साथ थे कि ये लोग एक-दूसरे को देखकर हंसने लगे (मेरे वालिद ने बयान किया कि) मैंने जो नज़र उठाई तो देखा कि एक जंगली गधा सामने है। मैं उस पर झपटा और नेज़े से उसे ठण्डा कर दिया। मैंने अपने साथियों की मदद चाही थी लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया था, फिर हमने गोश्त खाया। अब हमें ये डर हुआ कि कहीं (रसूलुल्लाह ﷺ से) दूर न रह जाएँ चुनौचे मैंने आपको तलाश करना शुरू कर दिया कभी अपने घोड़े तेज़ कर देता और कभी धीरे, आख़िर रात गए बनू ग़िफ़ार के एक शख़्स से मुलाक़ात हो गई। मैंने पूछा रसूलुल्लाह (ﷺ) कहाँ हैं? उन्होंने बताया कि जब मैं आपसे जुदा हुआ तो आप (ﷺ) मक्कामे तअहन में थे और आपका इरादा था कि मक्कामे सुक़िया में पहुँचकर दोपहर को आराम करेंगे। गरज़ मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और मैंने अज़्र किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपके अज़हाब आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत भेजते हैं। उन्हें ये डर है कि कहीं वो बहुत पीछे न रह जाएँ इसलिये आप ठहरकर उनका इंतज़ार करें, फिर मैंने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने एक जंगली गधे का शिकार किया था और उसका कुछ बचा हुआ गोश्त अब भी मेरे पास मौजूद है, आप (ﷺ) ने लोगों से खाने के लिये फ़र्माया हालाँकि वो सब एह्राम

لَإِذَا كَسِرَتْ عِدْلُ فَهُوَ زَنْةٌ ذَلِكَ. قِيَامًا :  
قَوَامًا يَغْدِلُونَ : يَجْعَلُونَ عِدْلًا.

١٨٢١- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ قُسَيْطٍ حَدَّثَنَا  
هِيَّامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي  
قَتَادَةَ قَالَ: ((أَنْطَلَقَ أَبِي عَامَ الْخَيْبَةِ،  
فَأَحْرَمَ أَصْحَابُهُ وَلَمْ يُحْرِمِ. وَحَدَّثَ النَّبِيُّ  
ﷺ أَنْ عَدُوًّا يَغْزُوهُ، بِفَيْقَةٍ لَأَنْطَلَقَ  
النَّبِيُّ ﷺ، فَبَيْنَمَا أَنَا مَعَ أَصْحَابِي تَضَحِكُ  
بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ، فَتَنَظَرْتُ فَإِذَا أَنَا بِحِمَارٍ  
وَخَشٍ، فَحَمَلْتُ عَلَيْهِ لَفَطَتُهُ فَأَلْبَسَهُ،  
وَأَسْتَفْتُ بِهِمْ فَأَبَوْا أَنْ يُعَيِّرُونِي. فَأَكَلْنَا  
مِنْ لَحْوِهِ، وَخَشِينَا أَنْ نَقْطَعَ، فَطَلَبْتُ  
النَّبِيَّ ﷺ أَرْفَعُ فَرَسِي شَاوًا وَأَسِيرُ شَاوًا،  
فَلَقِيتُ رَجُلًا مِنْ بَنِي غِفَارٍ فِي جَوْرِ  
الْأَيْلِ، قُلْتُ: أَيْنَ تَرَكْتَ النَّبِيَّ ﷺ؟ قَالَ:  
تَرَكْتُهُ بَيْنَهُنَّ، وَهُوَ قَائِلُ السُّقْيَا. قُلْتُ:  
يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ أَهْلَكَ يَفْرَوُونَ عَلَيْكَ  
السَّلَامَ وَرَحْمَةَ اللَّهِ، إِنَّهُمْ قَدْ خَشَوْا أَنْ  
يُقْطَعُوا دُونَكَ، فَاتَّظَرُّهُمْ.

قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَصَبْتُ حِمَارَ وَخَشٍ  
وَعَيْدِي مِنْهُ فَاصِلَةً. فَقَالَ لِلْقَوْمِ:  
((كُلُوا)). وَهُمْ مُخْرِمُونَ.

[أطرافه ن: ١٨٢٢, ١٨٢٣, ١٨٢٤]

٢٥٧٠, ٢٩١٤, ٤١٤٩, ٥٣٠٦

[٥٤٩٢, ٥٤٩١, ٥٤٩٠, ٥٤٠٧]

बाँधे हुए थे। (दीगर मक़ाम : 1822, 1823, 1824, 2570, 2914, 4149, 5306, 5407, 5449, 5491, 5492)

**बाब 3 : एहराम वाले लोग शिकार देखकर हंस दें और बिना एहराम वाला समझ जाए फिर शिकार करे तो वो एहराम वाले भी खा सकते हैं**

1822. हमसे सईद बिन रबीअने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यहा बिन अबी कप्पीर ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क्रतादा ने, कि उनसे उनके बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हम सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) के साथ चले उनके साथियों ने तो एहराम बाँध लिया था लेकिन उनका बयान था कि मैंने एहराम नहीं बाँधा था हमें ग़ैयक़ा में दुश्मन के मौजूद होने की इत्तिला मिली इसलिये हम उनकी तलाश में (नबी करीम ﷺ के हुक्म के मुताबिक़ निकले फिर मेरे साथियों ने गोरखर देखा और एक-दूसरे को देखकर हंसने लगे मैंने जो नज़र उठाई तो उसे देख लिया घोड़े पर (सवार होकर) उस पर झपटा और उसे ज़ख़मी करके ठण्डा कर दिया, मैंने अपने साथियों से कुछ इमदाद चाही लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया फिर हम सबने उसे खाया और उसके बाद मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ (पहले) हमें डर हुआ कि कहीं हम आँहुज़ूर (ﷺ) से दूर न रह जाएँ इसलिये मैं कभी अपना घोड़ा तेज़ कर देता और कभी आहिस्ता आख़िर मेरी मुलाक़ात एक बनी ग़िफ़ार के आदमी से आधी रात में हुई मैंने पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कहाँ है? उन्होंने बताया कि मैं आप (ﷺ) से तअहन नामी जगह में अलग हुआ था और आप (ﷺ) का इरादा ये था कि दोपहर को मक़ाम सुक्रिया में आराम करेंगे फिर जब मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपके अज़हाब ने आपको सलाम कहा है और उन्हें डर है कि कहीं दुश्मन आपके और उनके बीच हाइल न हो जाए इसलिये आप उनका इत्तिज़ार कीजिए चुनौचे आपने ऐसा ही किया मैं ने ये भी अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह! मैंने एक गोरखर का शिकार किया और कुछ बचा हुआ गोश्त अब भी मौजूद है उस

۳- بَابُ إِذَا رَأَى الْمُخْرِمُونَ صَيْدًا فَضَحِكُوا لَفِطْنِ الْحَلَالِ

۱۸۲۲- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ قَالَ: ((أَنْطَلَقْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَامَ الْحُدَيْبِيَّةِ، فَأَحْرَمَ أَصْحَابَهُ وَلَمْ أَحْرَمِ، فَأَنْبَتَا بَعَثُوا بِغَيْقَةٍ، فَتَوَجَّهْنَا لِحَوْثِهِمْ، فَبَصُرَ أَصْحَابِي بِحِمَارٍ وَخَشِيَ، فَجَعَلَ يَغْنَضُهُمْ يَضْحَكُ إِلَى بَعْضٍ، فَظَنَرْتُ قَرَأْتُهُ، فَجَعَلْتُ عَلَيْهِ الْقُرْسَ، لَطَمْتُهُ فَأَنْبَتَهُ، فَاسْتَمْتَهُمْ فَأَبْرَأَ أَنْ يُعْثِرُونِي، فَأَكَلْنَا مِنْهُ. ثُمَّ لَحِقْتُ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَخَشِينَا أَنْ نَقْطَعَ، أَرْقَعَ قُرْسِي شَاوًا وَامْسِرُ عَلَيْهِ شَاوًا. فَلَقِيتُ رَجُلًا مِنْ بَنِي غِفَارٍ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ قُلْتُ: أَنْتَ تَرَكْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ؟ فَقَالَ: تَرَكْتُهُ بَعْضُهُمْ، وَهُوَ قَائِلُ السَّقْيَا. فَلَحِقْتُ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ حَتَّى أَتَيْتُهُ، قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَصْحَابَكَ أَرْسَلُوا يَقْرَءُونَ عَلَيْكَ السَّلَامَ وَرَحْمَةَ اللَّهِ، وَإِنَّهُمْ قَدْ خَشَوْا أَنْ يَقْطَعَهُمُ الْعَدُوُّ ذَوْنَكَ، لَأَنْظُرَهُمْ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا أَصْدَانَا حِمَارٌ وَخَشِيَ، وَإِنْ عِنْدَنَا مِنْهُ لَأَصِيلَةٌ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِأَصْحَابِهِ:

पर आप (ﷺ) ने अपने अम्हाब से फ़र्माया कि खाओ, हालाँकि वो सब एहराम बाँधे हुए थे। (राजेअ: 1822)

#### बाब 4 : शिकार करने में एहराम वाला ग़ैर मुहरिम की कुछ भी मदद न करे

1823. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ज़ययना ने बयान किया, कहा हमसे सलालेह बिन कैसान ने बयान किया, उनसे अबू मुहम्मद ने, उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) के गुलाम नाफ़ेअ ने, उन्होंने अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना, आपने फ़र्माया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मदीना से तीन मंज़िल क़ाहा में थे (दूसरी सनद इमाम बुखारी ने) कहा कि हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे सलालेह बिन कैसान ने बयान किया, उनसे अबू मुहम्मद ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मक्का मे क़ाहा में थे, कुछ तो हमसे मुहरिम थे और कुछ ग़ैर मुहरिम मैं ने देखा कि मेरे साथी एक-दूसरे को कुछ दिखा रहे हैं, मैंने जो नज़र उठाई तो एक गोरख़र सामने था, उनकी मुराद ये थी कि उनका कोड़ा गिर गया, (और अपने साथियों से उसे उठाने के लिये उन्होंने कहा) लेकिन साथियों ने कहा कि हम तुम्हारी कुछ भी मदद नहीं कर सकते क्योंकि हम मुहरिम हैं। इसलिये मैंने वो ख़ुद उठाया उसके बाद मैं उस गोरख़र के नज़दीक एक टीले के पीछे से आया और उसे शिकार किया, फिर मैं उसे अपने साथियों के पास लाया, कुछ ने तो ये कहा कि (हमें भी) खा लेना चाहिए लेकिन कुछ ने कहा कि न खाना चाहिए। फिर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आया। आप हमसे आगे थे, मैंने आपसे मसला पूछा तो आपने बताया कि खा लो ये हलाल है। हमसे अमर बिन दीनार ने कहा कि सलालेह बिन कैसान की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस हदीष और उसके अलावा के बारे में पूछ सकते हो और वो हमारे पास यहाँ आये थे। (राजेअ: 1821)

((كُلُوا، وَهُمْ مُحْرِمُونَ)).

[راجع: ١٨٢٢]

#### ٤- بَابُ لَا يُعِينُ الْمُحْرِمُ الْحَلَائِلَ فِي قَتْلِ الصَّيْدِ

١٨٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ سَمِعَ أَبَا قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِالْقَاحَةِ مِنَ الْمَدِينَةِ عَلَى ثَلَاثٍ)) ح. وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِالْقَاحَةِ، وَمِنَا الْمُحْرِمُ وَمِنَا غَيْرُ الْمُحْرِمِ)). فَرَأَيْتُ أَصْحَابِي يَتَرَاءَوْنَ شَيْئًا، فَنَظَرْتُ فَإِذَا جِمَارٌ وَخَشْيٌ - يَعْنِي وَقَعَ سَوْطُهُ - فَقَالُوا: لَا تُعِينُكَ عَلَيْهِ بِشَيْءٍ، إِنَّا مُحْرِمُونَ، فَتَأَوَّلْتُ فَأَخَذْتُهُ، ثُمَّ أَتَيْتُ الْجِمَارَ مِنْ وَرَاءِ أَكْمَةٍ فَعَقَرْتُهُ، فَاتَيْتُ بِهِ أَصْحَابِي، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: كُلُوا، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَا تَأْكُلُوا. فَاتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ أَمَامًا فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: ((كُلُوا حَلَائِلَ)). قَالَ لَنَا عُمَرُو: اذْهَبُوا إِلَى صَالِحٍ فَسَلُّوهُ عَنْ هَذَا وَغَيْرِهِ. وَقَدِمَ عَلَيْنَا هَا هُنَا.

[راجع: ١٨٢١]

साथियों ने हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) का कोड़ा उठाने में भी मदद न की इससे बाब का मतलब साबित हुआ कि हालते एहराम में किसी ग़ैर मुहरिम शिकारी की शिकार के सिलसिले में कोई मदद न की जाए। उसी सूत्र में उस शिकार का गोश्त एहराम वालों



को भी खाना दुरुस्त है, इससे हलालते एहराम की रूहानी अहमियत और भी ज़ाहिर होती है। आदमी मुहरिम बनने के बाद एक खालिस व मुख़िलस फ़कीर इल्लाह बन जाता है। फिर शिकार या उसके बारे में और उससे उसको क्या वास्ता। जो हज्ज ऐसे ही नेक जज़्बात के साथ होगा वही हज्जे मबरूर है।

नाफ़ेअ बिन मरज़िस अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के आज्ञादकर्दा गुलाम हैं। ये देलमी थे और अकाबिरे ताबेअीन में से हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) और हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से हदीष की समाअत की है। उनसे बहुत से अकाबिर उलम-ए-हदीष ने रिवायत की है जिनमें इमाम जुहरी, इमाम मालिक बिन अनस शामिल हैं। हदीष के बारे में ये बहुत ही मशहूर फ़न हैं। नीज़ उन फ़िक़ा रावियों में से हैं जिनकी रिवायत शक व शुब्हा से ऊपर उठकर होती है और जिनकी हदीष पर अमल किया जाता है। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष का बड़ा हिस्सा उन पर मौकूफ़ है। इमाम मालिक फ़र्माते हैं कि मैं जब नाफ़ेअ के वास्ते से इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष सुन लेता हूँ तो किसी और रावी से सुनने से बेफ़िक़्र हो जाता हूँ। 117 हिजरी में वफ़ात पाई सरजिस में सीन मुत्मला अव्वल मफ़तूह रा साकिन और जीम मकसूर है।

## बाब 5 : ग़ैर—मुहरिम के शिकार करने के लिये एहराम वाला शिकार की तरफ़ इशारा भी न करे

1824. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे इब्माम बिन मोहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्बी क़तादा (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद अबू क़तादा ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (हज का) इरादा करके निकले। सहाबा (रज़ि.) भी आपके साथ थे। आप (ﷺ) ने सहाबा की एक जमाअत को जिसमें अबू क़तादा (रज़ि.) भी थे ये हिदायत देकर रास्ते से वापस भेजा कि तुम लोग दरिया के किनारे किनारे होकर जाओ, (और दुश्मन का पता लगाओ) फिर हम से आ मिलो। चुनौचे ये जमाअत दरिया के किनारे-किनारे चली, वापसी में सबने एहराम बाँध लिया था मगर अबू क़तादा (रज़ि.) ने अभी एहराम नहीं बाँधा था। ये क़ाफ़िला चल रहा था कि कई गोरखर दिखाई दिये, अबू क़तादा ने उन पर हमला किया और एक मादा का शिकार कर लिया, फिर एक जगह ठहरकर सबने उसका गोश्त खाया और साथ ही ये ख़याल भी आया कि क्या हम मुहरिम होने के बावजूद शिकार का गोश्त खा भी सकते हैं? चुनौचे जो कुछ गोश्त बचा वो हम साथ लाए और जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे तो अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम सब लोग तो मुहरिम थे लेकिन अबू क़तादा (रज़ि.) ने एहराम नहीं बाँधा था फिर हमने गोरखर देखे और अबू क़तादा (रज़ि.) ने उन पर हमला करके एक मादा का शिकार कर लिया, उसके बाद एक जगह हमने क़याम

## ٥- بَابُ لَا يُشِيرُ الْمُحْرِمُ إِلَى الصَّيْدِ لِكَيْ يَضْطَادَّهُ الْخِلَالُ

١٨٢٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَرَاتَةَ حَدَّثَنَا عُمَانُ - هُوَ ابْنُ مَوْهَبٍ - قَالَ : أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ : (( أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَرَجَ حَاجًّا فَخَرَجُوا مَعَهُ، فَصَرَفَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ إِلَيْهِمْ أَبُو قَتَادَةَ فَقَالَ : «رَحَلُوا مَاجِلَ الْبَحْرِ حَتَّى نَلْتَقِيَ»، فَأَعْلَوْا مَاجِلَ الْبَحْرِ، فَلَمَّا انْصَرَفُوا أَخْرَمُوا كُلَّهُمْ إِلَّا أَبُو قَتَادَةَ لَمْ يُحْرِمِ. فَبَيْنَمَا هُمْ يَسِيرُونَ إِذَا رَأَوْا حُمْرَ وَخْشٍ، فَحَمَلَ أَبُو قَتَادَةَ عَلَى الْحُمْرِ فَعَقَّرَ مِنْهَا اثْنَانِ، فَزَلَّوْا فَأَكَلُوا مِنْ لَحْمِهَا وَقَالُوا: إِنَّا كُلُّنَا نَحْمُ صَيْدٍ وَنَحْنُ مُحْرِمُونَ؟ فَحَمَلْنَا مَا بَقِيَ مِنْ لَحْمِ الْإِثْنَيْنِ. فَلَمَّا أَتَوْا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا كُنَّا أَخْرَمْنَا، وَقَدْ كَانَ أَبُو قَتَادَةَ لَمْ يُحْرِمِ، فَرَأَيْنَا حُمْرَ وَخْشٍ، فَحَمَلَ عَلَيْهَا أَبُو قَتَادَةَ فَعَقَّرَ مِنْهَا

किया और उसका गोश्त खाया फिर ख़याल आया कि क्या हम मुहरिम होने के बावजूद शिकार का गोश्त खा भी सकते हैं? इसलिये जो कुछ गोश्त बाक़ी बचा है वो हम साथ लाए हैं। आपने पूछा क्या तुममें से किसी ने अबू क़तादा (रज़ि.) को शिकार करने के लिये कहा था? या किसी ने उस शिकार की तरफ़ इशारा किया था? सबने कहा, नहीं! इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर बचा हुआ गोश्त भी खा लो। (राजेज़: 1821)

मा'लूम हुआ कि हालांते एहराम वालों के वास्ते ये भी जाइज़ नहीं कि वो शिकारी को इशारों से उस शिकार के लिये रहनुमाई कर सकें।

### बाब 6 : अगर किसी ने मुहरिम के लिये ज़िन्दा गोरखर तोहफ़ा भेजा हो तो उसे कुबूल न करे

1825. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन मसऊद ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने और उन्हें स़अब बिन ज़न्नामा लैघी (रज़ि.) ने कि जब वो अब्बा या विदान में थे तो उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक गोरखर का तोहफ़ा दिया तो आपने उसे वापस कर दिया था, फिर जब आपने उनके चेहरों पर नाराज़गी का रंग देखा तो आपने फ़र्माया वापसी की वजह सिर्फ़ ये है कि एहराम बाँधे हुए हैं। (दीगर मक़ाम: 2573, 2596)

أَتَا، فَاتَّكَتْنَا مِنْ لَحْمِهَا، ثُمَّ قُلْنَا : أَتَاكُلُ لَحْمَ صَيْدٍ وَنَحْنُ مُحْرِمُونَ؟ فَحَمَلْنَا مَا بَقِيَ مِنْ لَحْمِهَا. قَالَ: ((أَمِنَكُمْ أَحَدُ امْرَأَةٍ أَنْ يَحْمِلَ عَلَيْهَا أَوْ أَشَارَ إِلَيْهَا؟)) قَالُوا: لَا، قَالَ: ((فَكُلُوا مَا بَقِيَ مِنْ لَحْمِهَا)).

[راجع: ١٨٢١]

### ٦- بَابُ إِذَا أَهْدَى لِلْمُحْرِمِ حِمَارًا وَخَشِيًا حَيًّا لَمْ يَقْبَلْ

١٨٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُمَيْدٍ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ عَنِ الصَّغْبِيِّ بْنِ جُنَّامَةَ اللَّيْثِيِّ ((أَنَّ أَهْدَى لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ حِمَارًا وَخَشِيًا وَهُوَ بِالْأَبْوَاءِ - أَوْ بِوَدَّانَ - فَرَدَّهُ عَلَيْهِ، فَلَمَّا رَأَى مَا لِي وَجْهِهِ قَالَ: إِنَّا لَمْ نَرُدَّهُ إِلَّا أَنَا حُرْمٌ)).

[طرفاء في: ٢٥٧٣، ٢٥٩٦].

**तशरीह:** इब्ने ख़ुज़ैमा और अबू अवाना की रिवायत में यूँ है कि गोरखर का गोश्त भेजा, मुस्लिम की रिवायत में रान का ज़िक्र है या पट्टे का जिनमें से खून टपक रहा था। बैहक्की की रिवायत में है कि स़अब ने जंगली गधे का पट्टा भेजा, आप (ﷺ) जोहफ़ा में थे। आप (ﷺ) ने उसमें से फ़ौरन खाया और दूसरों को भी खिलाया। बैहक्की ने कहा कि अगर रिवायत महफूज़ हो तो शायद पहले स़अब ने ज़िन्दा गोरखर भेजा होगा आपने उसको वापस कर दिया फिर उसका गोश्त भेजा तो आपने उसे ले लिया। अब्बा एक पहाड़ का नाम है और विदान एक मौज़अ है जोहफ़ा के करीब। हाफ़िज़ ने कहा कि अब्बा से जुहफ़ा तक तेईस मील और विदान से जुहफ़ा तक आठ मील का फ़ासला है। बाब के ज़रिये इमाम बुखारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि उस शिकार को वापस करने की वजह सिर्फ़ ये हुई कि वो ज़िन्दा था, हज़रत इमाम ने दूसरे क़राइन की रोशनी में ये तत्बीक़ दी है।

### बाब 7 : एहराम वाला कौन-कौन से जानवर मार सकता है?

1826. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा

### ٧- بَابُ مَا يَقْتُلُ الْمُحْرِمُ مِنَ الدَّوَابِّ

١٨٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ

कि हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें नाफेअ ने खबर दी, और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया पाँच जानवर ऐसे हैं जिन्हें मारने में मुहरिम के लिये कोई हर्ज नहीं है।

(दूसरी सनद) और इमाम मालिक ने अब्दुल्लाह बिन दीनार से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (जो ऊपर मज़कूर हुआ) (दीगर मक़ाम : 3315)

1827. (तीसरी सनद) और हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन जुबैर ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना आपने फ़र्माया कि मुझसे नबी करीम (ﷺ) की कुछ बीवियों ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुहरिम (पाँच जानवरों को) मार सकता है (जिनका ज़िक्र आगे आ रहा है) (दीगर मक़ाम : 1828)

1828. (चौथी सनद) और हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे सालिम ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे हफ़सा (रज़ि.) ने बयान किया था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि पाँच जानवर ऐसे हैं जिन्हें मारने में कोई गुनाह नहीं, कच्चा, चील, चूहा, बिच्छू और काट खाने वाला कुत्ता।

1829. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझे यूनुस ने खबर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने खबर दी, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने खबर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया पाँच जानवर ऐसे हैं जो सबके सब मूजी (नुक्सान दायक) हैं और जिन्हें हरम में भी मारा जा सकता है, कौआ, चील, चूहा, बिच्छू और काटने वाले कुत्ता।

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((عَمَسَ مِنَ الدَّوَابِّ لَيْسَ عَلَى الْمُحَرِّمِ لِي قَتْلُهُنَّ جُنَاحٌ)).

ح: عَنْ مَالِكٍ بْنِ أَنَسٍ وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: . [طرفه ب: 3315].

1827 - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ زَيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((حَدَّثَنِي إِحْدَى بَنَاتِ النَّبِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: يَقْتُلُ الْمُحَرِّمُ.)). [طرفه ب: 1828].

1828 - حَدَّثَنَا أَصْبَغُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ حَفْصَةُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((عَمَسَ مِنَ الدَّوَابِّ لَا حَرَجَ عَلَى مَنْ قَتَلَهُنَّ: الْفَرَابُ وَالْحِدَاةُ وَالْفَأْرَةُ وَالْعَقْرَبُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ)).

1829 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((عَمَسَ مِنَ الدَّوَابِّ كُلُّهُنَّ فَاسِقٌ يَقْتُلُهُنَّ فِي الْحَرَمِ: الْفَرَابُ وَالْحِدَاةُ وَالْعَقْرَبُ وَالْفَأْرَةُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ)).

**तशरीह :**

ये पाँचों जानवर जिस क़दर भी मूजी हैं ज़ाहिर है उनकी हलाकत के हुक्म से शारेअ अलैहिर्रहमा ने बनी नोअे इंसान के माली, जिस्मानी, इक्तिसादी, ग़िज़ाई बहुत से मसाइल की तरफ़ रहनुमाई की है, कौआ और चील डाका ज़नी में मशहूर हैं और बिच्छू अपनी नेशज़नी (डंक मारने में), चूहा इंसानी सेहत के लिये मुज़िर, फिर ग़िज़ाओं के ज़ख़ीरों का दुश्मन और काटने वाला कुत्ता सेहत के लिये इतिहाई ख़तरनाक। यही वजह है जो उनका क़त्ल हर जगह जाइज़ हुआ।

1830. हमसे इमर बिन हफ़स बिन ग़ियाथ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम ने अस्वद से बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मिना के ग़ार में थे कि आप (ﷺ) पर सूरह बल् मुसल्लात नाज़िल होनी शुरू हुई। फिर आप (ﷺ) उसकी तिलावत करने लगे और मैं आपकी जुबान से उसे सीखने लगा, अभी आप (ﷺ) ने तिलावत ख़त्म भी नहीं की थी कि हम पर एक सांप गिरा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे मार डालो चुनौचे हम उसकी तरफ़ लपके लेकिन वो भाग गया। इस पर औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस तरह से तुम उसके शर से बच गए वो भी तुम्हारे शर से बचकर चला गया। हज़रत अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि इस हदीष से मेरा मक़सद सिर्फ़ ये है कि मिना हरम में दाख़िल है और सहाबा ने हरम में सांप मारने में कोई हर्ज नहीं समझा था।

(दीगर मक़ाम: 3318, 4930, 4931, 4934)

١٨٣٠- حَدَّثَنَا غَمْرُ بْنُ خَفْصٍ بْنُ عِيَّاشٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنِي إِبرَاهِيمُ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَيْنَمَا نَحْنُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَارٍ بِمِنَى إِذْ نَزَلَ عَلَيْهِ ﴿وَالْمُرْسَلَاتُ﴾ وَإِنَّهُ يَتْلُوها، وَإِنِّي لَأَتَلَّهَا مِنْ لَدُنِّهِ، وَإِنْ لَأَهْ لَطُوبُ لَهَا، إِذْ وَكَّثَ عَلَيْنَا حَتَّى لَقَانَا النَّبِيُّ ﷺ: ((اقْلُوهَا)). فَأَبْتَرْنَاها فَلَحَقَتْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَلَيْتَ شَرُّكُمْ كَمَا وَلَيْتُمْ شَرُّها)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ إِنَّمَا أَرَدْنَا بِهَذَا أَنْ يَنْبَغِيَ مِنَ الْحَرَمِ وَ إِنْهُمْ لَمْ يَرَوْا بِقَتْلِ حَتَّى بَأْسًا.

وأمره في: ٣٣١٨، ٤٩٣٠، ٤٩٣١،

[٤٩٣٤]

यहाँ ये इश्काल (अन्देशा) पैदा होता है कि हदीष से बाब का मतलब नहीं निकलता क्योंकि हदीष में ये कहाँ है कि सहाबा एहराम बाँधे हुए थे और उसका जवाब ये है कि इस्माईल की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि ये वाकिया अरफ़ा की रात का है और ज़ाहिर है कि उस वक़्त सब लोग एहराम बाँधे हुए होंगे। परस बाब का मतलब निकल आया क़ाला अबू अब्दुल्लाह अल्ख़ ये इबारत अक़बर नुस्रों में नहीं है अबुल वक़्त की रिवायत में है। इस इबारत से भी वो अन्देशा दूर हो जाता है जो ऊपर बयान हुआ।

1831. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा बिन जुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने छिपकली को मूजी कहा था लेकिन मैंने आपसे ये नहीं सुना कि आपने उसे मारने का भी हुक्म दिया था।

١٨٣١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا رَوَى النَّبِيُّ ﷺ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ لِلْوَزَغِ: ((فَوَيْقٍ))، وَلَمْ أَسْمَعْهُ أَمَرَ بِقَتْلِهِ)).

(दीगर मक़ाम : 3306)

[طرفه 3 : 3306]

**तशरीह :** इब्ने अब्दुल बर ने कहा इस पर इलमा का इतिफ़ाक़ है कि छिपकली मार डालना हिल्ल और हरम दोनों जगह दुस्त है, वल्लाहु आलम। हाफ़िज़ ने कहा कि इब्ने अब्दुल हक़म ने इमाम मालिक से उसके खिलाफ़ नक़ल किया कि अगर मुहरिम छिपकली को मारे तो स़दक़ा दे क्योंकि वो उन पाँच जानवरों में नहीं है जिनका क़त्ल जाइज़ है और इब्ने अबी शैबा ने अत्रा से निकाला कि बिच्छू वग़ैरह पर क़यास किया जा सकता है और हिल्ल और हरम में उसे मारना भी दुस्त कहा जा सकता है।

**बाब 8 :** इस बयान में कि हरम शरीफ़ के दरख़त न काटे जाएँ (और) इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि हरम के काटे न काटे जाएँ

1832. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैज़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद मज़बरी ने, उनसे अबू शुरैह अदवी (रज़ि.) ने कि जब अमर बिन सईद मक्का पर लश्कर क़शी कर रहा था तो उन्होंने कहा अमीर इजाज़त दे तो मैं एक ऐसी हदीष सुनाऊँ जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दूसरे दिन इशाद फ़र्माई थी, इस हदीषे मुबारक को मेरे इन कानों ने सुना और मेरे दिल ने पूरी तरह उसे याद कर लिया था और जब आप इशाद फ़र्मा रहे थे तो मेरी आँखें आपको देख रही थीं। आप (ﷺ) ने अल्लाह की हम्द और उसकी पना बयान की, फिर फ़र्माया कि मक्का की हुर्मत अल्लाह ने क़ायम की है, लोगों ने नहीं; इसलिये किसी ऐसे शख्स के लिये जो अल्लाह और यौमे आज़िज़त पर इमान रखता हो ये जाइज़ और हलाल नहीं कि यहाँ ख़ून बहाए और कोई यहाँ का एक दरख़त भी न काटे लेकिन अगर कोई शख्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़िताल (फ़तहे मक्का के मौक़े पर) से उसका जवाज़ निकाले तो उससे ये कह दो कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को अल्लाह ने इजाज़त दी थी लेकिन तुम्हें इजाज़त नहीं है और मुझे भी थोड़ी सी देर के लिये इजाज़त मिली थी फिर दोबारा आज उसकी हुर्मत ऐसी ही क़ायम हो गई जैसे पहले थी और हौं जो मौजूद हों वो ग़ायब को (अल्लाह का ये पैग़ाम) पहुँचा दें, अबू शुरैह से किसी ने पूछा कि फिर अमर बिन सईद ने (ये हदीष सुनकर) आपको क्या जवाब दिया था? उन्होंने बताया कि अमर ने कहा अबू शुरैह! मैं ये हदीष तुमसे भी ज़्यादा जानता हूँ मगर हरम किसी मुज़िम को पनाह नहीं देता और न ख़ून करके और न किसी जुर्म करके भागने वाले को पनाह देता है। ख़ुरबा से मुराद ख़ुरबा

۸- بَابُ لَا يُغَضَّدُ شَجَرُ الْحَرَمِ  
وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ  
النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا يُغَضَّدُ شَوْكَةً)).

۱۸۳۲- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ  
سَعِيدٍ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي  
شُرَيْحٍ الْأَعْدَوِيِّ أَنَّهُ قَالَ يَغْمُرُونِ سَعِيدَ  
وَهُوَ يَتَعَثُّ الثُّغُوثَ إِلَى مَكَّةَ: ((الَّذِينَ لِي  
أَيُّهَا الْأَمِيرُ أَخَذْتُكَ قَوْلًا بِرَسُولِ اللَّهِ  
ﷺ الْغَدَّ مِنْ يَوْمِ الْفَتْحِ، فَسَمِعْتُهُ أَذْنًا  
وَوَعَاهُ قَلْبِي وَأَنْصَرْتُهُ عَنَّا حِينَ تَكَلَّمَ  
بِهِ، أَنَّهُ حَمَدَ اللَّهَ وَأَتَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ:  
«إِنَّ مَكَّةَ حَرَمُهَا اللَّهُ وَلَمْ يُحَرِّمْهَا النَّاسُ،  
فَلَا يَحِلُّ لِأَمْرِيءٍ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ أَنْ يَسْفِكَ بِهَا دَمًا، وَلَا يُغَضَّدَ بِهَا  
شَجَرَةٌ. فَإِنْ أَخَذَ تَرَخَّصَ لِقَتَالِ رَسُولِ  
اللَّهِ ﷺ فَقُولُوا لَهُ إِنَّ اللَّهَ أَدِنَ لِرَسُولِهِ  
كَلِمَ يَأْذَنُ لَكُمْ، وَإِنَّمَا أَدِنَ لِي سَاعَةٌ مِنْ  
نَهَارٍ، وَقَدْ عَادَتْ حُرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا  
بِالْأَمْسِ، وَتَبْلُغُ الشَّاهِدُ الْقَائِبَ)). فَقِيلَ  
لَأَبِي شُرَيْحٍ: مَا قَالَ لَكَ عَمْرُو؟ قَالَ: أَنَا  
أَعْلَمُ بِذَلِكَ مِنْكَ يَا أَبَا شُرَيْحٍ، إِنَّ الْحَرَمَ  
لَا يُعِيدُ غَاصِيًا، وَلَا قَارًا بِدَمٍ وَلَا قَارًا

बलिया है। (राजेअ: 104)

بُخَارِيَّهٖ خُرَّةٌ : بَلَّةٌ. [راجع: ١٠٤]

**तशरीह:** इस हदीष में अमर बिन सईद की फौजकशी (चढ़ाई) का जिक्र है जो खिलाफते उमवी का एक हाकिम था और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के मुक़ाबिले पर मक्का शरीफ़ में जंग करने के लिये फौज भेज रहा था उस मौक़े पर कलिम-ए-हक़ बुलन्द करने के लिये हज़रत अबू शुरैह (रज़ि.) ने ये हदीष बयान की कि उसे सुनकर शायद अमर बिन सईद अपने उस इक्दाम से रुक जाए मगर वो रुकनेवाला कहीं था। उलटा हदीष की तावील करने लगा और उलटी सीधी बातों से अपने फ़ेअल का जवाज़ (औचित्य) प्राबित करने लगा जो सरासर उसके नपस का फ़नेब था। आखिर उसने मक्का शरीफ़ पर फौजकशी की और हुर्मते का'बा को पामाल करके रख दिया। अबू शुरैह ने इसलिये सुकूत नहीं किया कि अमर बिन सईद का जवाब मा'कूल (पर्याप्त) था बल्कि उसका जवाब सरासर नामा'कूल (अपर्याप्त) था। बहष तो ये थी कि मक्का पर लश्करकशी और जंग जाइज़ नहीं लेकिन अमर बिन सईद ने दूसरा मसला छेड़ दिया कि कोई हदी जुर्म का मुर्तकिब होकर हरम में भाग जाए तो उसको हरम में पनाह नहीं मिलती। इस मसले में भी उलमा का इख़िलाफ़ है मगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने तो कोई हदी जुर्म भी नहीं किया था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की कुत्रियत अबूबक्र है, ये असदी कुरैशी हैं उनकी कुत्रियत उनके नानाजान हज़रत सय्यिदिना अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) की कुत्रियत पर खुद आँहज़रत (ﷺ) ने रखी थी। मदीना में मुहाजिरीन में ये सबसे पहले बच्चे थे जो 1 हिजरी में पैदा हुए। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनके कान में अज़ान कही, मक़ामे कुबा में पैदा हुए और उनकी वालिदा माजिदा हज़रत अस्मा बन्ते अबीबक्र (रज़ि.) उनकी आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में दुआ-ए-बरकत के वास्ते लेकर हाज़िर हुई, आप (ﷺ) ने उनको अपनी गोद में बिठाया और दहने मुबारक में एक खजूर चबाकर उसका लुआब उनके मुँह में डाला और उनके तालू से लगाया, गोया सबसे पहली चीज़ जो उनके पेट में दाखिल हुई वो आँहज़रत (ﷺ) का लुआब मुबारक था। फिर आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ-ए-बरकत फ़र्माई, बालिग़ होने पर ये बहुत ही भारी भरकम, रौबदार शख़्सियत के मालिक थे। बक़रत रोज़ा रखने वाले, नवाफ़िल पढ़ने वाले और हक़ व सदाक़त के अलमबरदार थे। ता'ल्लुकात और रिश्ते-नाते क़ायम रखने वाले, लिहाज़ व मुरव्वत के पैकर, मुजस्सम-ए-अख़्लाके हुस्ना (अच्छे चरित्र की जीती-जागती तस्वीर) थे। उनकी खूबियों में से ये है कि उनकी वालिदा माजिदा हज़रत अस्मा (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की साहबज़ादी थीं। उनके नाना अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) थे। उनकी दादी सफ़िया आँहज़रत (ﷺ) की सगी फूफी और हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) उनकी खाला हैं। आठ साल की उम्र में आँहज़रत (ﷺ) के दस्ते मुबारक पर बैअत की। उस जंग में जिसका यहाँ जिक्र है। हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उनको मक्का शरीफ़ में क़त्ल किया और 17 जमादिष्वानी बरोज़ मंगल 73 हिजरी में उनकी लाश को सूली पर लटकाया, जिसके कुछ दिनों बाद हज्जाज भी बड़ी ज़िल्लत व ख़वारी की मौत मरा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के लिये 64 हिजरी में बैअते खिलाफ़त ली गई, जिस पर बेशतर अहले हिजाज, यमन, इराक़ और ख़ुरासान वालों का इतिफ़ाक़ था। हज़रत अब्दुल्लाह ने अपनी उम्र में आठ बार हज्ज किया उनसे एक बड़ी जमाअत रिवायते हदीष करती है। मुख्तलिफ़ मसाइल के इस्तिम्बात के लिये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) अपनी जामेउस्सहीह में बहुत से मक़ामात पर इस हदीष को लाए हैं।

## बाब 9 : हरम के शिकार होंके न जाएँ

1833. हमसे मुहम्मद बिन मुशत्रा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वट्टहाब ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने मक्का को हुर्मत वाला बनाया है मुझसे पहले भी ये किसी के लिये हलाल नहीं था

## ٩- بَابُ لَا يُنْفَرُ صَيْدُ الْحَرَمِ

١٨٣٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا الْوَهَّابُ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ مَكَّةَ، فَلَمْ تَحِلَّ لِأَحَدٍ

इसलिये मेरे बाद भी वो किसी के लिये हलाल नहीं होगा। मेरे लिये सिर्फ़ एक दिन घड़ी भर हलाल हुआ था इसलिये उसकी घास न उखाड़ी जाए और उसके दस्तख्त न काटे जाएँ, उसके शिकार न भड़काए जाएँ और न वहाँ की कोई गिरी हुई चीज़ उठाई जाए, हाँ ऐलान करने वाला उठा सकता है। (ताकि अज़ल मालिक तक पहुँचा दे) हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इज़र की इजाज़त दीजिए क्योंकि ये हमारे सुनारों और हमारी क़र्बों के लिये काम आती है। आपने फ़र्माया कि इज़र की इजाज़त है। ख़ालिद ने रिवायत किया कि इब्रिमा (रह.) ने फ़र्माया कि तुम जानते हो कि शिकार को न भड़काने से क्या मुराद है? उसका मतलब ये है कि (अगर कहीं कोई जानवर साया में बैठा हुआ हो तो) उसे साये से भगाकर खुद वहाँ क़ायम न करे।

**तशरीह:**

मा'लूम हुआ कि इस्मे मुहतरम का मक़ाम ये है जिसमें किसी जानवर तक को भी सताना, उसको उसके आराम की जगह से उठा देना, खुद उस जगह पर क़ब्ज़ा कर लेना ये जुप्ला उमूर इस्म शरीफ़ के आदाब के ख़िलाफ़ हैं। अय्यामे हज़ में हर हाजी का फ़र्ज़ है कि वहाँ दूसरे भाइयों के आराम का हर वक़्त ख़याल रखें।

## बाब 10 : मक्का में लड़ना जाइज़ नहीं है

और अबू शुरैह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि वहाँ ख़ून न बहाया जाए।

1834. हमसे इम्रान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताऊस ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तह मक्का के दिन फ़र्माया अब हिजरत फ़र्ज़ नहीं रही लेकिन (अच्छी) निधयत और जिहाद अब भी बाक़ी है इसलिये जब तुम्हें जिहाद के लिये बुलाया जाए तो तैयार हो जाना। इस शहर (मक्का) को अल्लाह तआला ने उसी दिन हुर्मत अता की थी जिस दिन उसने आसमान और ज़मीन पैदा किये, इसलिये ये अल्लाह की मुकरर की हुई हुर्मत की वजह से मुहतरम है यहाँ किसी के लिये भी मुझे से पहले लड़ाई जाइज़ नहीं थी और मुझे भी सिर्फ़ एक दिन घड़ी भर के लिये (फ़तह मक्का के दिन इजाज़त मिली थी) अब हमेशा ये शहर अल्लाह की क़ायम की हुई हुर्मत की वजह से क़ायमत तक के लिये हुर्मत वाला है। पस

قَلْبِي، وَلَا تَجِلْ لِأَخِي بَعْدِي، وَإِنَّمَا أَجَلْتُ لِي مَسَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، لَا يُغْتَلَى خَلَاَهَا، وَلَا يُفْتَضُّ شَجَرُهَا، وَلَا يُفَرُّ مَبْدَهَا، وَلَا تُلْقَطُ لَقَطَتُهَا إِلَّا لِمُعْرَفٍ)). وَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّمَا الْإِذْعِيرُ لِصَاحِبَيْهِ وَكَبُورُنَا. فَقَالَ: ((إِلَّا الْإِذْعِيرُ)). وَعَنْ عَالِدٍ عَنْ حُكْرَمَةَ قَالَ: هَلْ تَدْرِي ((مَا لَا يُفَرُّ مَبْدَهَا)) هُوَ أَنْ يُسَبِّحَ مِنَ الظَّلِّ يَنْزِلُ مَكَانَهُ.

## ١٠- بَابُ لَا يَجِلُّ الْقِيَامُ بِمَكَّةَ

وَقَالَ أَبُو شُرَيْحٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا يَسْلُكُ بِهَا دَمًا)).

١٨٣٤- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الْفَتْحِ مَكَّةَ: ((لَا هِجْرَةَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَبَيْتَةٌ، وَإِذَا اسْتَفْرَغْتُمْ فَأَنْفِرُوا، لِإِنَّ هَذَا بَلَدٌ حَرَّمَ اللَّهُ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ، وَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَإِنَّهُ لَمْ يَجِلْ الْقِيَامُ فِيهِ لِأَخِي قَلْبِي، وَلَمْ يَجِلْ لِي إِلَّا مَسَاعَةٌ مِنْ نَهَارٍ، لَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ

इसका कांटा काटा न जाए न उसके शिकार होंके जाएँ और उस शख्स के सिवा जो ऐलान करने का इरादा रखता हो कोई यहाँ की गिरी हुई चीज़ न उठाए और न यहाँ की घास उखाड़ी जाए। अब्बास (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इज़्ज़र (एक घास) की इजाज़त तो दे दीजिए क्योंकि यह कारीगरों और घरों के लिये ज़रूरी है तो आपने फ़र्माया कि इज़्ज़र की इजाज़त है।

(राजेअ: 1349)

الْيَمَامَةِ، لَا يُغَضَّدُ شَوْكُهُ، وَلَا يُفَرُّ حَبْلُهُ، وَلَا يَلْتَمِطُ لَفْطُهُ إِلَّا مَن عَرَفَهَا، وَلَا يُغْتَلَى خِلَافَهَا)). قَالَ النَّبِيُّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ! إِلَّا الْإِذْخِرَ، فَإِنَّهُ لَفَيْهِمْ وَتَحْتَهُمْ. قَالَ: ((إِلَّا الْإِذْخِرَ)).

[راجع: 1349]

**तशरीह:** अहद रिसालत में हिज़रत का सिलसिला फ़तहे मक्का पर ख़त्म हो गया था क्योंकि अब खुद मक्का ही दारुल इस्लाम बन गया और मुसलमानों को आज़ादी से रहना नज़ीब हो गया लेकिन ये हुक्म क़ायमत तक के लिये बाक़ी है कि किसी ज़माने में कहीं भी दारुल हरब से बचते ज़रूरत मुसलमान दारुल इस्लाम की तरफ़ हिज़रत कर सकते हैं। इसलिये फ़र्माया कि अपने दीन ईमान को बहरहाल महफूज़ रखने के लिये हुस्ने निय्यत रखना हर ज़माने में हर जगह हर वक़्त बाक़ी है। साथ ही सिलसिले जिहाद भी क़ायमत तक के लिये बाक़ी है जब भी किसी जगह कुफ़्र और इस्लाम की मज़रका-आराई (लड़ाई) हो और इस्लामी सरबराह जिहाद के लिये ऐलान करे तो हर मुसलमान पर उसके ऐलान पर लब्बैक कहना फ़र्ज़ हो जाता है, जब मक्का शरीफ़ फ़तह हुआ तो थोड़ी देर के लिये मुदाफ़ेआना जंग की इजाज़त मिली थी जो वहाँ इस्तिहकामे अमन के लिये ज़रूरी थी बाद में वो इजाज़त जल्दी ही ख़त्म हो गई और अब मक्का शरीफ़ में जंग करना हमेशा के लिये हुराम है। मक्का सबके लिये दारुल अमन है जो क़ायमत तक उसी हैशियत में रहेगा।

**बयक-ए-मुबारका :-** रिवायते मज़कूर में मुकद्दस शहर मक्का का ज़िक्र है जिसे कुआन मजीद में लफ़ज़ बक्का से भी याद किया गया है इस सिलसिले की कुछ तफ़सीलात हम मौलाना अबुल जलाल साहब नदवी के क़लम से अपने नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करते हैं। मौलाना नदवा के उन फ़ाज़िलों में से हैं जिनको क़दीम इबरानी व सिरियानी जुबानों पर ड़बूर हासिल है और इस मौजूअ पर उनके मुतअहिद मक़ालात इल्मी रसाइल में शायेशुदा मौजूद हैं हम बक्का मुबारका के इन्वान से आपके एक इल्मी मक़ाले का एक हिस्सा मज़ारिफ़ सफ़ा 2 जिल्द नं. 6 से अपने कारेअीन के सामने रख रहे हैं। उम्मीद है कि अहले इल्म उसे ग़ौर के साथ मुतालआ फ़र्माएँगे। साहिबे मक़ाला मरहूम हो चुके हैं, अल्लाह उनको जन्नत नज़ीब करे आमीन।

तौरात के अंदर मज़कूर है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से जब अपना आबाई वतन (पूर्वजों का देश) छोड़ा तो अरज़े किन्आन में शिकम के मक़ाम से मूरह तक सफ़र करते रहे, (तक्वीन 61:12) शिकम उसी मक़ाम का नाम था जिसे इन दिनों नाबिल्स कहते हैं, मूरह का मक़ाम बहष तलब है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब सफ़र करते हुए इस मक़ाम पर पहुँचे तो यहाँ उनको अल्लाह की तजल्ली नज़र आई। मक़ामे तजल्ली पर उन्होंने अल्लाह के लिये एक कुर्बानगाह बनाई (तक्वीन - 7:12) तौरात के बयान के मुताबिक़ इस मक़ाम के अलावा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके बेटों पोतों ने और मक़ामात को भी इबादतगाह मुक़रर किया लेकिन क़दामत के लिहाज़ से अव्वलीन मअबद यही मूरह के पास वाला था। मूरह नाम के बाइबल में दो मक़ामात का ज़िक्र है, एक मूरह जिल्जाल के मक़ाबिल किन्आनियों की सरज़मीन में पर दिन के पार मरिब जानिब वाक़ेअ था जहाँ काज़ी जदऊन के ज़माने में बनू इस्राइल और बनू मूदयन से जंग हुई थी (इस्तिशाअ 11:30 व क़ासियून 10:7)

दूसरे मूरह का ज़िक्र ज़बूर में वारिद है बाइबिल के मुतर्जिमों (अनुवादकों) ने उस मूरह के ज़िक्र को पर्दा-ए-ख़िफ़ा (राज़दारी) में रखने की इतिहाई कोशिश की है। लेकिन हकीक़त का छुपाना निहायत ही मुश्किल है हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के इशारे का उर्दू में हस्बे ज़ेल तर्जुमा किया है।

ऐ लश्क़रों के अल्लाह! तेरे मस्कन क्या ही दिलक़श हैं, मेरी रूह अल्लाह की बारगाहों के लिये आरज़ूमन्द है, बल्कि



गुदाज होती है, मेरा मन और तन ज़िन्दा अल्लाह के लिये ललकारता है। गोरैया ने भी अपना घोंसला बनाया, और अब्बाबील ने अपना आशियाना पाया जहाँ वे अपने बच्चे रखें, तेरी कुर्बानिगाहों को ऐलशकरो के अल्लाह! मेरे बादशाह मेरे अल्लाह!! मुबारक हैं वो जो तेरे घर में बसते हैं, वो सदा तेरी सताइश करते रहेंगे, सलाह। मुबारक हैं वो इंसान जिनकी कुव्वत तुझसे हैं। उनके दिल में तेरी राहें हैं, वे बका की वादी में गुजरते हुए उसे एक कुआँ बनाते हैं, पहली बरसात उसे बरकतों से ढांप लेती है। वो कुव्वत से कुव्वत तक तरक्की करते चले जाते हैं, यहाँ तक कि अल्लाह के आगे स्रहून में हाज़िर होते हैं। (ज़बूर नम्बर 84)

छटी और सातवीं आयत का तर्जुमा अंग्रेज़ी में भी तक्रीबन यही किया गया है और ग़ालिबन मुतज्जेमीन ने तर्जुमा में इरादा ग़लती से काम लिया है, सहीह तर्जुमा नीचे है।

अबरी बिअमक हुबुका मुईन बसीतू हुव गुम बिरूकूफ़ि यअतिनुह मौदह बलकू मुहील अल हियल यराउ अलल बहम युसीबून वो बक्का के बतहा में चलते हैं, एक कुँए के पास फिरते हैं, जमीअ बरकतें, मूरह की ढांप लेती हैं, वो कुव्वत से कुव्वत तक चलते हैं, अल्लाह के स्रहून से डरते हुए।

मूरह दरहकीक़त वही लफ़ज़ है, जिसे कुआँन करीम में हम बसूरते मर्वा पाते हैं। अल्लाह ने फ़र्माया, इन्नस्सफ़ा बल मरवता मिन् शआइरिल्लाह यकीनन सफ़ा और मर्वा अल्लाह के मशाइर (निशानियों) में से हैं।

ज़बूर नम्बर 84 से एक बैतुल्लाह, एक कुँए और एक मर्वा का वादी—ए—बक्का में होना स़राहत के साथ प्राबित है, उससे ख़ान—ए—का'बा की बड़ी अज़मत और अहमियत ज़ाहिर होती है, हमारे पादरी स़ाहिबान के नज़दीक मुनासिब नहीं है कि लोगों के दिलों में का'बा का एहतिराम पैदा हो, इसलिये उन्होंने ज़बूर नम्बर 84 के तर्जुमे में दानिस्ता (जानते—बूझते) ग़लती से काम लिया, बहरहाल बाइबिल के अंदर मूरह नाम के दो मक़ामात का ज़िक्र है, जिनमें से एक जिलज़ाल के पास यानी फ़लस्तीन की ज़मीन पर था और एक वादी—ए—बक्का में है।

अब सवाल ये है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पहला मअबद किस मूरह के पास था, 9 हिजरी में नज़रान के नस्त्रानियों का एक वफ़द (प्रतिनिधि मण्डल) मदीना मुनव्वरा आया, उन नस्त्रानियों ने जैसा कि सूरह आले इमरान की बहुत सी आयतों से मा'लूम होता है, यहूद मुसलमानों और मुश्रिकीन के साथ मज़हबी बहषों की थीं, उन बहषों के बीच ये सवाल भी उठा था कि मिल्लते इब्राहीम का अव्वलीन मअबद कौन था, उसके जवाब में अल्लाह ने इश्राद फ़र्माया, इन्न अव्वल बैतिन उज़िअ लिन्नसिललज़ी बिबक़त मुबारकव्वं हुदल लिलआलमीन। फ़ीहि आयातुन बय्यिनातुम्मक़ामु इब्राहीमा वमन् दाख़लहु काना आमिन वलिल्लाहि अलन्नासि ह़िज़ुल बयति मनिस्तताअ इलैहि सबीला वमन् कफ़र फ़इन्नल्लाह ग़निव्युन अनिल् आलमीन (आले इमरान : 96) बिलाशुब्हा पहला अल्लाह का घर जो लोगों के लिये बनाया गया वही है, जो बक्का में वाक़ेअ है, मुबारक है और सारे लोगों के लिये हिदायत का सरचश्मा (स्रोत) है, उसमें खुली निशानियाँ हैं, यानी मक़ामे इब्राहीम है, जो उसमें दाख़िल हुआ उसने अमान पाई, और लोगों पर अल्लाह के लिये उस घर का हज़्ज फ़र्ज़ है बशर्ते कि रास्ता चलना मुम्किन हो, और अगर कोई काफ़िर कहा नहीं मानता, याद रहे अल्लाह सारे जहाँ से बेनियाज़ है।

जिलज़ाल के करीब जो मूरह था उसके पास किसी मुक़द्दस मअबर का पूरी तारीख़ यहूद के किसी अहद में सुराग़ नहीं मिलता, इसलिये यकीनी तौर पर मिल्लते इब्राहीम का पहला मअबद वही है जिसका ज़िक्र ज़बूर में है और यही ख़ान—ए—का'बा है।

ख़ान—ए—का'बा जिस शहर या इलाक़े में वाक़ेअ है उसका मा'रूफ़तरीन (लोकप्रिय, जाना—माना) नाम बक्का नहीं बल्कि मक्का है, कुआँन पाक में एक जगह मक्का के नाम से भी उसका ज़िक्र आया है, ज़ेरे बहष आयत में शहर के मा'रूफ़तर नाम की जगह ग़ैर मशहूर नाम को तरजीह दी गई है, उसकी दो वजह हैं एक ये कि अहले किताब को ये बताना मक्सूद था कि वो मूरह जिसके पास तौरात के अंदर मज़कूर मअबदे अव्वल को होना चाहिए, जिलज़ाल के पास नहीं, बल्कि उन वादी—ए—बक्का में वाक़ेअ है, जिसका ज़बूर में ज़िक्र है, दूसरी ये है कि मक्का दरअसल बक्का के नाम की बदली हुई सूरत है, तहरीरी नाम इस शहर का बक्का था, लेकिन अवाम की जुबान ने इसे मक्का बना दिया।

सबसे कदीम नविश्ता जिसमें हमको मक्का का नाम मिलता है, वो कुआन मजीद है लेकिन बक्का का नाम कुआन से पेशतर ज़बूर में मिलता है, हज़रत रसूलुल्लाह (ﷺ) की उम्र शरीफ़ जब 35 बरस की थी तो कुरैश ने खान-ए-का'बा की दो बार ता'मीर की, उस ज़माने में खान-ए-का'बा की बुनियाद के अंदर से चन्द पत्थर मिले, जिनपर कुछ इबारतें मन्कूस (खुदी हुई) थीं, कुरैश ने यमन से एक यहूदी और एक नसरानी राहिब (सन्यासी) को बुलाकर वो तहरीरें पढ़वाई एक पत्थर के पहलू पर लिखा था कि अब्रल्लाहु जू बक़त मैं हूँ अल्लाह बक्का का हाकिम, हफ़िज़ुहा बिसब्अति अम्लाकिन हुनफ़ाउ मैंने इसकी हिफ़ाज़त की सात अल्लाहपरस्त फ़रिश्तों से, बारक्तु लिअहलिहा फिल्माइ वल्लहमि इसके बाशिन्दों के लिये पानी और गोशत में बरकत दी मुख्तलिफ़ रिवायात में कुछ और अल्फ़ाज़ भी हैं, लेकिन हमने जितने अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं उन पर सब रिवायतों का इतिफ़ाक़ है, रिवायात के मुताबिक़ ये नविश्ता का'बा की बिनाए इब्राहीम के अंदर मिला था। सच है,

यही घर है कि जिसमें शौकते इस्लाम पिन्हाँ है  
उसी से साहिबे फ़ारान की अज़मत नुमाया है॥

### बाब 11 : मुहरिम को पछना लगवाना कैसा है?

और मुहरिम होने के बावजूद इब्ने उमर (रज़ि.) ने अपने लड़के के दाग़ लगाया था और ऐसी दवा जिसमें खुशबू न हो उसे मुहरिम इस्ते'माल कर सकता है।

उस लड़के का नाम वाकिद था। उसको सईद बिन मंसूर ने मुजाहिद के तरीक़ से वस्ल (मिलान) किया। दवा वाला जुम्ला हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का कलाम है, इब्ने उमर (रज़ि.) के अप्र में दाख़िल नहीं है।

1835. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कि अमर बिन दीनार ने बयान किया पहली बात मैंने जो अत्ता बिन अबी रबाह से सुनी थी, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, वो कह रहे थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मुहरिम थे उस वक़्त आपने पछना लगवाया था। फिर मैंने उन्हें ये कहते सुना कि मुझसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) से त़ाऊस ने ये हदी़ बयान की थी। उससे मैंने ये समझा कि शायद उन्होंने उन दोनों हज़रात से ये हदी़ सुनी होगी (मुतकल्लिम अमर हैं और दोनों हज़रात से मुराद अत्ता और त़ाऊस रह. हैं)

(दीगर मक़ाम : 1938, 1939, 2103, 2278, 2279, 5291, 5694, 5695, 5699, 5700, 5701)

1836. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा कि उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे अलक़मा बिन अबी अलक़मा ने, उनसे अब्दुर्रहमान अज़रज ने और उनसे इब्ने

### ۱۱- بَابُ الْحِجَامَةِ لِلْمُحْرِمِ

وَكَوَى ابْنُ عُمَرَ أَنَّهُ وَهُوَ مُحْرِمٌ.  
وَيَتَذَوَّى مَا لَمْ يَكُنْ فِيهِ طَيْبٌ.

۱۸۳۵- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا  
سُفْيَانُ قَالَ: قَالَ عُمَرُو: أَوَّلُ شَيْءٍ  
سَمِعْتُ عَطَاءً يَقُولُ: ((سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: اخْتَجَمَ رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ)). ثُمَّ سَمِعْتُهُ يَقُولُ:  
((حَدَّثَنِي طَاوُسٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ)) فَقُلْتُ:  
لَعَلَّهُ سَمِعَهُ مِنْهَا.

[إطرافه في : ۱۹۳۸, ۱۹۳۹, ۲۱۰۳]

۲۲۷۸, ۲۲۷۹, ۵۶۹۹, ۵۶۹۴

۵۶۹۵, ۵۷۰۰, ۵۷۰۱.]

۱۸۳۶- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا  
سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ عَنْ عُلْقَمَةَ بْنِ أَبِي  
عُلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ ابْنِ

बुहना (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब कि आप (ﷺ) मुहरिम थे अपने सर के बीच में मक़ामे लहयि जमल में पछना लगवाया था।

ये मक़ाम मक्का और मदीना के बीच में है। इस हदीस से ये साबित हुआ कि बवक़ते ज़रूरत मुहरिम पछना लगवा सकता है, मुरव्वजा आमाले जराही को भी बवक़ते ज़रूरत शदीद उसी पर क़यास किया जा सकता है।

## बाब 12 : मुहरिम निकाह कर सकता है

1837. हमसे अबुल मुगीरह अब्दुल कुदूस बिन हजाज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन अबी रबाह ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब मैमूना (रज़ि.) से निकाह किया तो आप मुहरिम थे।

(दीगर मक़ाम : 4257, 4259, 5114)

**तशरीह :** शायद इमाम बुखारी (रह.) इस मसले में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और अहले क़फ़ा से मुत्तफ़िक हैं कि मुहरिम को अक्दे निकाह करना दुस्त है लेकिन मुजामिअत बिल् इतिफ़ाक़ दुस्त नहीं है और जुम्हूर इलमा के नज़दीक निकाह भी एहराम में जाइज़ नहीं। इमाम मुस्लिम ने हज़रत उष्मान से मर्फूअन निकाला है कि मुहरिम न निकाह करे अपना न दूसरा कोई उसका निकाह करे न निकाह का पयाम दे। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) कहते हैं कि मुहरिम को जिमाअ के लिये लौण्डी ख़रीदना दुस्त है तो निकाह भी दुस्त होगा। हाफ़िज़ ने कहा ये क़यास भी जो ख़िलाफ़े नस के है काबिले कुबूल नहीं है। (वहीदी)

## बाब 13 : एहराम वाले मर्द और औरत को ख़ुशबू लगाना मना है

और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुहरिम औरत वर्स या जा' फ़रान में रंगा हुआ कपड़ा न पहने।

1838. हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स ने खड़े होकर पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हालते एहराम में हमें कौनसे कपड़े पहनने की इजाज़त देते हैं? तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि न क़मीस पहनो न पायजामे, न अमामे और न बरन्सा अगर किसी के पास जूते न हो तो मौज़ों को टखने के नीचे

بُحَيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((اِخْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ مَخْرَمٌ بَلَخِي جَمَلٍ لِي وَسَطٍ رَأْسِهِ)). (طرفه في : ٥٦٩٨).

## ١٢- بَابُ تَزْوِيجِ الْمُخْرَمِ

١٨٣٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْمُفَرَّةِ عَبْدُ الْقُدُوسِ بْنُ الْحَجَّاجِ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ أَبِي رَجَاحٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَزَوَّجَ مَيْمُونَةَ وَهُوَ مُخْرَمٌ)).

(أطرافه في : ٤٢٥٨, ٤٢٥٩, ٥١١٤).

## ١٣- بَابُ مَا يُنْهَى مِنَ الطَّيِّبِ

### لِلْمُخْرَمِ وَالْمُخْرَمَةِ

وَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: لَا تَلْبَسُ الْمُخْرَمَةُ ثَوْبًا بَوْزَسٍ أَوْ زَعْفَرَانٍ

١٨٣٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنَا نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَامَ وَجُلَّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَاذَا تَأْمُرُنَا أَنْ نَلْبَسَ مِنَ الثَّيَابِ فِي الْإِحْرَامِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَلْبَسُوا الْقَمِيصَ وَلَا السَّرَاوِيلَ وَلَا

काटकर पहन लो। इसी तरह कोई ऐसा लिबास न पहनो जिसमें जाफ़रान या वर्स लगा हो। एहराम की हालत में औरतें मुँह पर नक्राब न डालें और दस्ताने भी न पहनें। लैज़ के साथ इस रिवायत की मुताबअत मूसा बिन इक्रबा और इस्माईल बिन इब्राहीम बिन इक्रबा और जुवैरिया और इब्ने इस्हाक़ ने नक्राब और दस्तानों के ज़िक्र के सिलसिले में की है। इबैदुल्लाह (रह.) ने, वला वर्स का लफ़्ज़ बयान किया वो कहते थे कि एहराम की हालत में औरत मुँह पर न नक्राब डाले और न दस्ताने इस्ते'माल करे। और इमाम मालिक ने नाफ़ेअ से बयान किया और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से बयान किया कि एहराम की हालत में औरत नक्राब न डाले और लैज़ बिन अबी सुलैम ने मालिक की तरह रिवायत की है।

(राजेअ: 134)

الْعَمَائِمَ وَلَا التَّوْبَسَ، إِلَّا أَنْ يَكُونَ أَحَدٌ لَيْسَتْ لَهُ نِغْلَانٍ فَلْيَلْبَسِ الْخُفَيْنِ وَيَقْطَعْ أَصْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ. وَلَا تَلْبَسُوا شَيْئًا مَسَّهُ زَعْفَرَانٌ وَلَا الْوَرَسُ. وَلَا تَنْتِيبُ الْمَرْأَةُ الْمُحْرِمَةُ، وَلَا تَلْبَسِ الْقَفَّازِينَ)). تَابَعَهُ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عُقْبَةَ وَجُوَيْرِيَةُ وَابْنُ إِسْحَاقَ بْنِ الْقَافِ الْأَقْفَازِينَ. وَقَالَ عُقْبَةُ اللَّهُ: وَلَا وَرَسَ. وَكَانَ يَقُولُ: ((لَا تَنْتِيبُ الْمُحْرِمَةُ وَلَا تَلْبَسِ الْقَفَّازِينَ)). وَقَالَ مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمرَ: لَا تَنْتِيبُ الْمُحْرِمَةُ. وَتَابَعَهُ ثُبْتُ بْنُ أَبِي سَلَمٍ.

[راجع: 134]

**तशरीह:** बाब में खुशबू लगाने की मुमानअत का ज़िक्र था मगर हदीष में और भी कई मसाइल का ज़िक्र मौजूद है, एहराम की हालत में सिला हुआ लिबास मना है और औरतों के लिये मुँह पर नक्राब डालना भी मना है, उनको चाहिए कि उस हालत में और भी ज़्यादा अपनी निगाहों को नीचा रखें हया व शर्म व अल्लाह के डर व आदाबे हज्ज का पूरा-पूरा ख़याल रखें। मदों के लिये भी यही सब उमूर ज़रूरी हैं। हया-शर्म मल्हूज न रहे तो हज्ज उल्टा वबाले जान बन सकता है। आजकल कुछ लोग औरतों के मुँह पर पंखों की शकल में नक्राब डालते हैं, ये तकल्लुफ़ बिल्कुल ग़ैर-शरअी है, अहकामे शरअ पर बिला चूँ-चरा अमल ज़रूरी है।

1839. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरिर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे हक़म ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मुहरिम शख्स के ऊँट ने हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) उसकी गर्दन (गिराकर) तोड़ दी और उसे जान से मार दिया, उस शख्स को रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने लाया गया। तो आपने फ़र्माया कि उन्हें गुस्ल और कफ़न दे दो लेकिन उनका सर न ढंको और न खुशबू लगाओ क्योंकि (क्रयामत में) ये लब्बैक कहते हुए उठेगा।

١٨٣٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا جُوَيْرِي عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((وَقَصَّتْ بَرْجُلٌ مُحْرِمٍ نَاقَتَهُ فَقَتَلَتْهُ، فَأَتَى بِهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((اغْسِلُوهُ وَكَفِّنُوهُ وَلَا تَقَطُّوا رَأْسَهُ وَلَا تَقْرَبُوهُ طَبِيبًا، فَإِنَّهُ يَبْعَثُ يَهُي)).

**तशरीह:** मतलब ये है कि उसका एहराम बाक़ी है। दूसरी रिवायत में है कि उसका मुँह न ढंको, हाफ़िज़ ने कहा मुझे उस शख्स का नाम नहीं मा'लूम हुआ। इस बारे में कोई मुस्तनद रिवायत नहीं मिली, इससे भी हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये श्राबित किया कि मुहरिम को खुशबू लगाना मना है क्योंकि आपने मरने वाले को मुहरिम जानकर उसके जिस्म पर खुशबू

लगाने से मना किया। हदीष से अमले हज्ज की अहमियत भी साबित होती है कि ऐसा शख्स रोज़े कयामत में हाजी ही की शकल में पेश होगा बशर्ते कि उसका हज्ज अल्लाह के पास मकबूल हुआ हो और जुम्ला आदाब व शराइत को सामने रखकर अदा किया गया हो। हदीष से ऊँट की फ़ितरी तीनत पर भी रोशनी पड़ती है। अपने मालिक से अगर ये जानवर खफ़ा हो जाए तो मौक़ा पाते ही उसे हलाक करने की भरपूर कोशिश करता है। अगरचे इस जानवर में बहुत सी खूबियाँ भी हैं मगर उसकी कीना परवरी भी मशहूर है कुर्आन मजीद में अल्लाह ने ऊँट का भी ज़िक्र किया है। इलल इबिलि कैफ़ा खुलिक्त (अल ग़ाशिया : 17) यानी ऊँट की तरफ़ देखो वो किस तरह पैदा किया गया है। उसके जिस्म का हर हिस्सा शाने कुदरत का एक बेहतरीन नमूना है, अल्लाह ने उसे रेगिस्तान का जहाज़ बनाया है, जहाँ और सब घबरा जाते हैं मगर ये रेगिस्तानों में ख़ूब झूम-झूमकर सफ़र तै करता है।

## बाब 14 : मुहरिम को गुस्ल करना कैसा है?

और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मुहरिम (गुस्ल के लिये) हम्माम में जा सकता है। इब्ने उमर (रज़ि.) और आइशा (रज़ि.) बदन को खुजाने में कोई हर्ज नहीं समझते थे।

इब्ने मुज़िर ने कहा मुहरिम को गुस्ले जनाबत बिल इन्माअदुस्त है लेकिन गुस्ल सफ़ाई और पाकीज़गी में इख़्तिलाफ़ है इमाम मालिक ने उसको मकरूह जाना है और मुहरिम अपना सर पानी में डुबोए और मौत़ा में नाफ़ेअ से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) एहराम की हालत में अपना सर नहीं धोते थे लेकिन जब एहतिलाम होता तो धोते।

1840. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने, उन्हें इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन हुनैन ने, उन्हें उनके वालिद ने कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) और मुसव्विर बिन मख़रमा (रज़ि.) का मक़ामे अब्बा में (एक मसला पर) इख़्तिलाफ़ हुआ। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने मुझे अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) के यहाँ (मसला पूछने के लिये) भेजा, मैं जब उनकी ख़िदमत में पहुँचा तो वो कुँए की दो लकड़ियों के बीच में गुस्ल कर रहे थे, एक कपड़े से उन्होंने पर्दा कर रखा था, मैंने पहुँचकर सलाम किया तो उन्होंने पूछा कि कौन हो? मैंने अर्ज़ किया कि मैं अब्दुल्लाह बिन हुनैन हूँ, आप (ﷺ) की ख़िदमत में मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने भेजा है ये पूछने के लिये कि एहराम की हालत में रसूलुल्लाह (ﷺ) सरे मुख़ारक किस तरह धोते थे। ये सुनकर उन्होंने कपड़े पर (जिससे पर्दा था) हाथ रखकर उसे नीचे किया। अब आपका सर दिखाई दे रहा था, जो शख्स उनके बदन पर पानी डाल रहा था। उससे उन्होंने पानी डालने के लिये कहा। उसने उनके सर पर पानी डाला, फिर उन्होंने अपने सर को दोनों

## ١٤- بَابُ الْإِغْتِسَالِ لِلْمُحْرِمِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: يَدْخُلُ الْمُحْرِمُ الْحَمَّامَ وَلَمْ يَرِ ابْنُ عُمَرَ وَعَائِشَةُ بِالْحَذِّ نَاسًا.

١٨٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَبِيبٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ وَالْمُسَوِّزَ بْنَ مَخْرَمَةَ اخْتَلَفَا بِالْأَبْوَاءِ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ: يَغْسِلُ الْمُحْرِمُ رَأْسَهُ، وَقَالَ الْمُسَوِّزُ: لَا يَغْسِلُ الْمُحْرِمُ رَأْسَهُ. فَأَرْسَلَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ إِلَى أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ فَوَجَدْتُهُ يَغْسِلُ بَيْنَ الْقَرْنَيْنِ وَهُوَ مُسْتَوْبِعُ غُوبٍ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ فَقُلْتُ أَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حَبِيبٍ، أَرْسَلَنِي إِلَيْكَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ أَسْأَلُكَ: كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَغْسِلُ رَأْسَهُ وَهُوَ مُحْرِمٌ؟ فَوَضَعَ أَبُو أَيُّوبَ يَدَهُ عَلَى الثُّوبِ لَمَطَاطَةً حَتَّى يَدَا لِي رَأْسَهُ ثُمَّ قَالَ لِإِنْسَانٍ

हाथ से हिलाया और दोनों हाथ आगे ले गए और फिर पीछे लाए फर्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को (एहराम की हालत में) इसी तरह करते देखा था।

يَصُبُّ عَلَيْهِ : اصْتَبَّ. فَصَبَّ عَلَى رَأْسِهِ، ثُمَّ حَرَّكَ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ فَاقْبَلَ بِهِمَا وَادْبَرَ. وَقَالَ : مَكْدًا رَأْيْتُهُ (فَلْيَفْعَلُ)).

हाफिज़ इब्ने हजर फर्माते हैं, व फिल हदीसि मिनल फवाइदि मुनाज़रतुस्सहाबति फिल अहकामि व रुजूहुम इलनुसूमि व कुबूलहुम लिखबिल वाहिदि व लौ कान ताबिइय्यन व अन्न कौल बअजिहिम लैस बिहुज्जतिन अला बअज्र यानी इस हदीस के फवाइद में से सहाबा किराम का बाहमी तौर पर मसाइले अहकाम से मुता'ल्लिक मुनाज़रा करना, फिर नस की तरफ रुजूअ करना और उनका खबरे वाहिद को कुबूल कर लेना भी है अगरचे वो ताबेअी हो क्यों न हो। लिखते वक़्त एक साहब जो देवबन्द मसलक से ता'ल्लुक रखते हैं उनका मज्मून पढ़ रहा हूँ जिन्होंने क़लम के ज़ोर पर प्राबित किया है कि सहाबा किराम तक्लीदे शख़सी किया करते थे, लिहाज़ा तक्लीदे शख़सी का जवाज़ बल्कि वुजूब प्राबित हुआ उस दा'वे पर उन्होंने जो दलाइल वाक़ियात की शक्ल में पेश फर्माए हैं वो मुतनाज़िआ तक्लीदे शख़सी की ता'रीफ़ (परिभाषा) में बिलकुल नहीं आते मगर तक्लीदे शख़सी के इस हामी बुजुर्ग को क़दम-क़दम पर यही नज़र आ रहा है कि तक्लीदे शख़सी सहाबा में आम तौर पर मुरव्वज (प्रचलित) थी। हाफिज़ इब्ने हजर का मज्कूरा बयान ऐसे कमज़ोर दलाइल के जवाब के लिये काफ़ी है।

### बाब 15 : मुहरिम को जब जूतियाँ न मिलें तो वो मोज़े पहन सकता है

### ١٥- بَابُ نَيْسِ الْخُفَيْنِ لِلْمُحْرِمِ إِذَا لَمْ يَجِدِ النَّعْلَيْنِ

1841. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अमर बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने जाबिर बिन ज़ैद से सुना, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को अरफ़ात में ख़ुत्बा देते सुना था कि जिसके पास एहराम में जूते न हों वो मोज़े पहन ले और जिसके पास तहबन्द न हो वो पायजामा पहन ले।

(राजेअ: 1740)

١٨٤١- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ زَيْدٍ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ بِمِرْقَاتٍ: ((مَنْ لَمْ يَجِدِ النَّعْلَيْنِ فَلْيَنْسِ الْخُفَيْنِ، وَمَنْ لَمْ يَجِدِ إِزَارًا فَلْيَنْسِ سَرَاوِيلَ الْمُحْرِمِ)).

[راجع: ١٧٤٠]

इमाम अहमद ने इस हदीस के ज़ाहिर पर अमल करके हुक्म दिया है कि जिस मुहरिम को तहबन्द न मिले वो पायजामा और जिसको जूते न मिलें वो मोज़ा पहन ले और पायजामा का फाड़ना और मोज़ों का काटना ज़रूरी नहीं और जुम्हूर उलमा के नज़दीक ज़रूरी है अगर उसी तरह पहन लेगा, तो उस पर फ़िदया लाज़िम होगा यहाँ जुम्हूर का ये फ़त्वा सिफ़ क़यास पर मब्नी (अनुमान पर आधारित) है जो कि हुज्जत नहीं।

1842. हमसे अहमद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) से पूछा गया कि मुहरिम कौनसे कपड़े पहन सकता है? आप

١٨٤٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : مِثْلَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ: مَا يَنْسِ الْمُحْرِمُ مِنَ

(ﷺ) ने फ़र्माया कि क़मीज़, अमामा, पायजामा, और बरनिस (कन टोप या बाराने कोट) न पहने और न कोई ऐसा कपड़ा पहने जिसमें ज़ाफ़रान या वर्स लगी हो और अगर जूतियाँ न हों तो मोज़े पहन ले, अल्बत्ता इस तरह काट ले कि टखनों से नीचे हो जाएँ। (राजेअ: 134)

الْبَابُ؟ فَقَالَ: «لَا يَلْبَسُ الْقَمِيصَ وَلَا الْعَمَامَةَ وَلَا السَّرَاوِيلَ وَلَا الْبُرُوسَ وَلَا ثَوْبًا مَسَّهُ زَعْفَرَانٌ وَلَا وَرْسٌ، وَإِنْ لَمْ يَجِدْ نَعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسِ الْخَفَيْنِ وَيَقْطَعْهُمَا حَتَّى يَكُونَا اسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ».

[راجع: ١٣٤]

इन जुम्ला लिबासों को छोड़कर सिर्फ़ सोधी-साधी दो सफ़ेद चादरें होनी ज़रूरी हैं जिनमें से एक तहबन्द हो और एक कुतों की जगह हो क्योंकि हज्ज में अल्लाह पाक को यही फ़कीराना अदा पसन्द है।

## बाब 16 : जिसके पास तहबन्द न हो तो वो पायजामा पहन सकता है

1843. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन से उम्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे जाबिन बिन ज़ैद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमको मैदाने-अरफ़ात में वा'ज़ सुनाया, उसमें आपने फ़र्माया कि अगर किसी को एहराम के लिये तहबन्द न मिले तो पायजामा पहन ले और अगर किसी को जूते न मिले तो वो मोज़े पहन ले। (राजेअ: 1740)

## ١٦- بَابُ إِذَا لَمْ يَجِدِ الْإِزَارَ فَلْيَلْبَسِ السَّرَاوِيلَ

١٨٤٣- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: عَلَّمَنَا النَّبِيُّ ﷺ بَرَكَاتٍ فَقَالَ: «مَنْ لَمْ يَجِدِ الْإِزَارَ فَلْيَلْبَسِ السَّرَاوِيلَ، وَمَنْ لَمْ يَجِدِ النَّعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسِ الْخَفَيْنِ».

[راجع: ١٧٤٠]

मतलब आप का ये था कि एहराम में तहबन्द का होना और पैरों में जूतों का होना ही मुनासिब है लेकिन अगर किसी को ये चीज़ें मयस्सर न हो तो मजबूरन पायजामा और मोज़े पहन सकता है, क्योंकि इस्लाम में हर-हर क़दम पर आसानियों का लिहाज़ रखा है, इमाम अहमद ने इसी हदीस के ज़ाहिर पर फ़तवा दिया है।

## बाब 17 : मुहरिम का हथियारबन्द होना दुरुस्त है

इकिमा (रह.) ने कहा कि अगर दुश्मन का डर हो और कोई हथियार बाँधे तो उसे फ़िदया देना चाहिए लेकिन इकिमा के सिवा और किसी ने ये नहीं कहा कि फ़िदया देना चाहिए।

## ١٧- بَابُ لَيْسَ السَّلَاحُ لِلْمُحْرِمِ وَقَالَ عِكْرِمَةُ إِذَا خَشِيَ الْعَدُوَّ لَيْسَ السَّلَاحُ وَالْقُدَى. وَلَمْ يَتَّبِعْ عَلَيْهِ الْقُدَى.

हाफ़िज़ ने कहा इकिमा का ये अष्टर मुझको मौसूलन नहीं मिला। इब्ने मुंज़िर ने हसन बसरी से नक़ल किया उन्होंने मुहरिम को तलवार बाँधना मकरूह समझा। हथियारबन्द होना उसी वक़्त दुरुस्त है जब किसी दुश्मन का डर हो जैसा कि बाब (के मज़मून) से ज़ाहिर है।

1844. हमसे अब्दुल्लाह बिन मोसूला ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्राईल ने, उन्होंने कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ ने

١٨٤٤- حَدَّثَنَا غُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ

बयान किया, और उनसे बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जीक़अदा में उमरह किया तो मक्का वालों ने आपको मक्का में दाखिल होने से रोक दिया, फिर उनसे इस शर्त पर मुलह हुई कि हथियार नियाय (म्यान) में डाल कर मक्का में दाखिल होंगे। (राजेअ: 1781)

### बाब 18 : हरम और मक्का शरीफ में बग़ैर एहराम के दाखिल होना

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि.) एहराम के बग़ैर दाखिल हुए और नबी करीम (ﷺ) ने एहराम का हुक्म उन ही लोगों को दिया जो हज्ज और उमरह के इरादे से आएँ। उसके लिये लकड़ी बेचने वालों बग़ैरह को ऐसा हुक्म नहीं दिया।

**तशरीह:** हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के उस वाक़िया को इमाम मालिक ने मौता में नाफ़ेअ से नक़ल किया है कि जब अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) क़दीद में पहुँचे तो उन्होंने फ़साद की ख़बर सुनी। वो लौट गए और मक्का में बग़ैर एहराम के दाखिल हो गए। बाब का मतलब हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीष से यून निकाला कि हदीष में ज़िक़र है जो लोग हज्ज और उमरह का इरादा रखते हों उन पर लाज़िम है कि मक्का में एहराम के साथ दाखिल हों यहाँ जो लोग अपनी ज़ाती ज़रूरियात के लिये मक्का शरीफ़ आते जाते हैं उनके लिये एहराम वाज़िब नहीं। इमाम शाफ़िअ का यही मसलक है मगर हनीफ़ा मक्का शरीफ़ में हर दाखिल होने वाले के लिये एहराम ज़रूरी करार देते हैं। इब्ने अब्दुल बर ने कहा अक़षर सहाबा किराम (रज़ि.) और ताबेअीन वुजूब के काइल हैं मगर दिरायत और रिवायत की बिना पर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ही के मसलक को तरज़ीह मा'लूम होती है।

1845. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने, उनसे उनके बाप ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना वालों के लिये जुल हुलैफ़ा को मीक़ात बनाया, नजद वालों के लिये क़र्नुल मनाज़िल को और यमन वालों के लिये यलमलम को। ये मीक़ात उन मुल्कों के बाशिन्दों के लिये है और दूसरे उन तमाम लोगों के लिये भी जो उन मुल्कों से होकर मक्का आएँ और हज्ज और उमरह का भी इरादा रखते हों, लेकिन जो लोग उन हुदूद के अंदर हों तो उनकी मीक़ात वही जगह है जहाँ से वो अपना सफ़र शुरू करें यहाँ तक कि मक्का वालों की मीक़ात मक्का ही है। (राजेअ: 1524)

1846. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब जुहरी ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने आकर ख़बर दी कि फ़तहे

عنه: ((وَأَعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ فِي ذِي الْقَعْدَةِ، فَأَتَى أَهْلَ مَكَّةَ أَنْ يَدْغُوهُ يَدْخُلُ مَكَّةَ حَتَّى قَضَاهُمْ: لَا يَدْخُلُ مَكَّةَ مِلَاحًا إِلَّا فِي الْقِرَابِ)). [راجع: 1781]

١٨- بَابُ دُخُولِ الْحَرَمِ وَمَكَّةَ بِغَيْرِ إِحْرَامٍ. وَدَخَلَ ابْنُ عُمَرَ حِلَالًا

وَأَمَّا أَمْرُ النَّبِيِّ ﷺ بِالْإِخْلَالِ لِمَنْ أَرَادَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ. وَلَمْ يَذْكُرْ لِلْمُخَطِّئِينَ وَغَيْرِهِمْ.

١٨٤٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَقَفَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ ذَا الْخَلْفَةِ، وَلِأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنَ الْمَنَازِلِ، وَلِأَهْلِ الْيَمَنِ يَلْمَلَمَ، هُنَّ لَهُنَّ وَلِكُلِّ أَتَى عَلَيْهِنَّ مِنْ غَيْرِهِمْ مَنْ أَرَادَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ، فَمَنْ كَانَ دُونَ ذَلِكَ لَمِنْ حَتَّى أَتَى، حَتَّى أَهْلُ مَكَّةَ مِنْ مَكَّةَ)). [راجع: 1524]

١٨٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ



मक्का के दिन रसूले करीम (ﷺ) जब मक्का में दाखिल हुए तो आपके सर पर खुद था। जिस वक़्त आपने उतारा तो एक शख्स ने ख़बर दी कि इब्ने ख़तल का बा के पर्दों से लटक रहा है आपने फ़र्माया कि उसे क़त्ल कर दो।

(दीगर मक़ाम : 3044, 4286, 5808)

**तशरीह :** इब्ने ख़तल का नाम अब्दुल्लाह था ये पहले मुसलमान हो गया था। आप (ﷺ) ने एक सहाबी को उससे ज़कात वसूल करने के लिये भेजा, जिसके साथ एक मुसलमान गुलाम भी था। इब्ने ख़तल ने उस मुसलमान गुलाम को खाना तैयार करने का हुक्म दिया और खुद सो रहा, फिर जागा तो उस मुसलमान गुलाम ने खाना तैयार नहीं किया था, गुस्स में आकर उसने उस गुलाम को क़त्ल कर डाला और खुद इस्लाम से फिर गया। दो गाने वाली लौण्डियाँ उसने रखी थीं और उनसे आँहज़रत (ﷺ) की हिज्व (बुराई) के गीत गवाया करता था। ये बदबख़्त ऐसा अज़ली दुश्मन घाबित हुआ कि उसे का' बा शरीफ़ के अंदर ही क़त्ल कर दिया गया। इब्ने ख़तल को क़त्ल करने वाले हज़रत अबू बरज़ा असलमी थे कुछ ने हज़रत जुबैर को बतलाया है।

**बाब 19 : अगर नावाक़फ़ियत की वजह से कोई कुर्ता पहने हुए एहराम बाँधे?**

और अज़ाबिन अबी रबाह ने कहा ना वाक़फ़ियत में या भूलकर अगर कोई मुहरिम शख्स खुशबू लगाए, सिला हुआ कपड़ा पहन ले तो उस पर कफ़़ारा नहीं है।

इमाम शाफ़िई का यही क़ौल है और इमाम मालिक ने कहा अगर उसी वक़्त उतार डाले या खुशबू धो डाले तो कफ़़ारा न होगा, वरना कफ़़ारा लाज़िम होगा दलाइल की रू से इमाम बुखारी (रह.) के मसलक को तरज़ीह मा'लूम होती है जैसा कि इमाम शाफ़िई (रह.) का यही मसलक है।

1847. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे हममाम ने बयान किया, कहा हमसे अज़ाब ने बयान किया, कहा मुझसे सप्रवान बिन यअला ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था कि आप (ﷺ) की ख़िदमत में एक शख्स जो जुब्बा पहने हुए था हाज़िर हुआ और उस पर ज़र्दी या उसी तरह का कोई खुशबू का निशान था। उमर (रज़ि.) मुझसे कहा करते थे क्या तुम चाहते हो कि जब आँहज़रत (ﷺ) पर वह्य नाज़िल होने लगे तो तुम आँहज़रत (ﷺ) को देख सको? उस वक़्त आप पर वह्य नाज़िल हुई फिर वो हालत जाती रही। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस तरह अपने हज में करते हो उसी तरह उमरह में भी करो। (राजेअ : 1536)

1848. एक शख्स ने दूसरे शख्स के हाथ में दांत से काटा था दूसरे ने जो अपना हाथ खींचा तो उसका दांत उखड़ गया नबी करीम

مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْوُفْرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطْلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: ((اقْتُلُوهُ)). [أطرافه في: ٤٤٣، ٤٤٤، ٤٤٥، ٤٤٦، ٤٤٧، ٤٤٨، ٤٤٩، ٤٥٠، ٤٥١، ٤٥٢، ٤٥٣، ٤٥٤، ٤٥٥، ٤٥٦، ٤٥٧، ٤٥٨، ٤٥٩، ٤٦٠، ٤٦١، ٤٦٢، ٤٦٣، ٤٦٤، ٤٦٥، ٤٦٦، ٤٦٧، ٤٦٨، ٤٦٩، ٤٧٠، ٤٧١، ٤٧٢، ٤٧٣، ٤٧٤، ٤٧٥، ٤٧٦، ٤٧٧، ٤٧٨، ٤٧٩، ٤٨٠، ٤٨١، ٤٨٢، ٤٨٣، ٤٨٤، ٤٨٥، ٤٨٦، ٤٨٧، ٤٨٨، ٤٨٩، ٤٩٠، ٤٩١، ٤٩٢، ٤٩٣، ٤٩٤، ٤٩٥، ٤٩٦، ٤٩٧، ٤٩٨، ٤٩٩، ٥٠٠، ٥٠١، ٥٠٢، ٥٠٣، ٥٠٤، ٥٠٥، ٥٠٦، ٥٠٧، ٥٠٨، ٥٠٩، ٥١٠، ٥١١، ٥١٢، ٥١٣، ٥١٤، ٥١٥، ٥١٦، ٥١٧، ٥١٨، ٥١٩، ٥٢٠، ٥٢١، ٥٢٢، ٥٢٣، ٥٢٤، ٥٢٥، ٥٢٦، ٥٢٧، ٥٢٨، ٥٢٩، ٥٣٠، ٥٣١، ٥٣٢، ٥٣٣، ٥٣٤، ٥٣٥، ٥٣٦، ٥٣٧، ٥٣٨، ٥٣٩، ٥٤٠، ٥٤١، ٥٤٢، ٥٤٣، ٥٤٤، ٥٤٥، ٥٤٦، ٥٤٧، ٥٤٨، ٥٤٩، ٥٥٠، ٥٥١، ٥٥٢، ٥٥٣، ٥٥٤، ٥٥٥، ٥٥٦، ٥٥٧، ٥٥٨، ٥٥٩، ٥٦٠، ٥٦١، ٥٦٢، ٥٦٣، ٥٦٤، ٥٦٥، ٥٦٦، ٥٦٧، ٥٦٨، ٥٦٩، ٥٧٠، ٥٧١، ٥٧٢، ٥٧٣، ٥٧٤، ٥٧٥، ٥٧٦، ٥٧٧، ٥٧٨، ٥٧٩، ٥٨٠، ٥٨١، ٥٨٢، ٥٨٣، ٥٨٤، ٥٨٥، ٥٨٦، ٥٨٧، ٥٨٨، ٥٨٩، ٥٩٠، ٥٩١، ٥٩٢، ٥٩٣، ٥٩٤، ٥٩٥، ٥٩٦، ٥٩٧، ٥٩٨، ٥٩٩، ٦٠٠، ٦٠١، ٦٠٢، ٦٠٣، ٦٠٤، ٦٠٥، ٦٠٦، ٦٠٧، ٦٠٨، ٦٠٩، ٦١٠، ٦١١، ٦١٢، ٦١٣، ٦١٤، ٦١٥، ٦١٦، ٦١٧، ٦١٨، ٦١٩، ٦٢٠، ٦٢١، ٦٢٢، ٦٢٣، ٦٢٤، ٦٢٥، ٦٢٦، ٦٢٧، ٦٢٨، ٦٢٩، ٦٣٠، ٦٣١، ٦٣٢، ٦٣٣، ٦٣٤، ٦٣٥، ٦٣٦، ٦٣٧، ٦٣٨، ٦٣٩، ٦٤٠، ٦٤١، ٦٤٢، ٦٤٣، ٦٤٤، ٦٤٥، ٦٤٦، ٦٤٧، ٦٤٨، ٦٤٩، ٦٥٠، ٦٥١، ٦٥٢، ٦٥٣، ٦٥٤، ٦٥٥، ٦٥٦، ٦٥٧، ٦٥٨، ٦٥٩، ٦٦٠، ٦٦١، ٦٦٢، ٦٦٣، ٦٦٤، ٦٦٥، ٦٦٦، ٦٦٧، ٦٦٨، ٦٦٩، ٦٧٠، ٦٧١، ٦٧٢، ٦٧٣، ٦٧٤، ٦٧٥، ٦٧٦، ٦٧٧، ٦٧٨، ٦٧٩، ٦٨٠، ٦٨١، ٦٨٢، ٦٨٣، ٦٨٤، ٦٨٥، ٦٨٦، ٦٨٧، ٦٨٨، ٦٨٩، ٦٩٠، ٦٩١، ٦٩٢، ٦٩٣، ٦٩٤، ٦٩٥، ٦٩٦، ٦٩٧، ٦٩٨، ٦٩٩، ٧٠٠، ٧٠١، ٧٠٢، ٧٠٣، ٧٠٤، ٧٠٥، ٧٠٦، ٧٠٧، ٧٠٨، ٧٠٩، ٧١٠، ٧١١، ٧١٢، ٧١٣، ٧١٤، ٧١٥، ٧١٦، ٧١٧، ٧١٨، ٧١٩، ٧٢٠، ٧٢١، ٧٢٢، ٧٢٣، ٧٢٤، ٧٢٥، ٧٢٦، ٧٢٧، ٧٢٨، ٧٢٩، ٧٣٠، ٧٣١، ٧٣٢، ٧٣٣، ٧٣٤، ٧٣٥، ٧٣٦، ٧٣٧، ٧٣٨، ٧٣٩، ٧٤٠، ٧٤١، ٧٤٢، ٧٤٣، ٧٤٤، ٧٤٥، ٧٤٦، ٧٤٧، ٧٤٨، ٧٤٩، ٧٥٠، ٧٥١، ٧٥٢، ٧٥٣، ٧٥٤، ٧٥٥، ٧٥٦، ٧٥٧، ٧٥٨، ٧٥٩، ٧٦٠، ٧٦١، ٧٦٢، ٧٦٣، ٧٦٤، ٧٦٥، ٧٦٦، ٧٦٧، ٧٦٨، ٧٦٩، ٧٧٠، ٧٧١، ٧٧٢، ٧٧٣، ٧٧٤، ٧٧٥، ٧٧٦، ٧٧٧، ٧٧٨، ٧٧٩، ٧٨٠، ٧٨١، ٧٨٢، ٧٨٣، ٧٨٤، ٧٨٥، ٧٨٦، ٧٨٧، ٧٨٨، ٧٨٩، ٧٩٠، ٧٩١، ٧٩٢، ٧٩٣، ٧٩٤، ٧٩٥، ٧٩٦، ٧٩٧، ٧٩٨، ٧٩٩، ٨٠٠، ٨٠١، ٨٠٢، ٨٠٣، ٨٠٤، ٨٠٥، ٨٠٦، ٨٠٧، ٨٠٨، ٨٠٩، ٨١٠، ٨١١، ٨١٢، ٨١٣، ٨١٤، ٨١٥، ٨١٦، ٨١٧، ٨١٨، ٨١٩، ٨٢٠، ٨٢١، ٨٢٢، ٨٢٣، ٨٢٤، ٨٢٥، ٨٢٦، ٨٢٧، ٨٢٨، ٨٢٩، ٨٣٠، ٨٣١، ٨٣٢، ٨٣٣، ٨٣٤، ٨٣٥، ٨٣٦، ٨٣٧، ٨٣٨، ٨٣٩، ٨٤٠، ٨٤١، ٨٤٢، ٨٤٣، ٨٤٤، ٨٤٥، ٨٤٦، ٨٤٧، ٨٤٨، ٨٤٩، ٨٥٠، ٨٥١، ٨٥٢، ٨٥٣، ٨٥٤، ٨٥٥، ٨٥٦، ٨٥٧، ٨٥٨، ٨٥٩، ٨٦٠، ٨٦١، ٨٦٢، ٨٦٣، ٨٦٤، ٨٦٥، ٨٦٦، ٨٦٧، ٨٦٨، ٨٦٩، ٨٧٠، ٨٧١، ٨٧٢، ٨٧٣، ٨٧٤، ٨٧٥، ٨٧٦، ٨٧٧، ٨٧٨، ٨٧٩، ٨٨٠، ٨٨١، ٨٨٢، ٨٨٣، ٨٨٤، ٨٨٥، ٨٨٦، ٨٨٧، ٨٨٨، ٨٨٩، ٨٩٠، ٨٩١، ٨٩٢، ٨٩٣، ٨٩٤، ٨٩٥، ٨٩٦، ٨٩٧، ٨٩٨، ٨٩٩، ٩٠٠، ٩٠١، ٩٠٢، ٩٠٣، ٩٠٤، ٩٠٥، ٩٠٦، ٩٠٧، ٩٠٨، ٩٠٩، ٩١٠، ٩١١، ٩١٢، ٩١٣، ٩١٤، ٩١٥، ٩١٦، ٩١٧، ٩١٨، ٩١٩، ٩٢٠، ٩٢١، ٩٢٢، ٩٢٣، ٩٢٤، ٩٢٥، ٩٢٦، ٩٢٧، ٩٢٨، ٩٢٩، ٩٣٠، ٩٣١، ٩٣٢، ٩٣٣، ٩٣٤، ٩٣٥، ٩٣٦، ٩٣٧، ٩٣٨، ٩٣٩، ٩٤٠، ٩٤١، ٩٤٢، ٩٤٣، ٩٤٤، ٩٤٥، ٩٤٦، ٩٤٧، ٩٤٨، ٩٤٩، ٩٥٠، ٩٥١، ٩٥٢، ٩٥٣، ٩٥٤، ٩٥٥، ٩٥٦، ٩٥٧، ٩٥٨، ٩٥٩، ٩٦٠، ٩٦١، ٩٦٢، ٩٦٣، ٩٦٤، ٩٦٥، ٩٦٦، ٩٦٧، ٩٦٨، ٩٦٩، ٩٧٠، ٩٧١، ٩٧٢، ٩٧٣، ٩٧٤، ٩٧٥، ٩٧٦، ٩٧٧، ٩٧٨، ٩٧٩، ٩٨٠، ٩٨١، ٩٨٢، ٩٨٣، ٩٨٤، ٩٨٥، ٩٨٦، ٩٨٧، ٩٨٨، ٩٨٩، ٩٩٠، ٩٩١، ٩٩٢، ٩٩٣، ٩٩٤، ٩٩٥، ٩٩٦، ٩٩٧، ٩٩٨، ٩٩٩، ١٠٠٠، ١٠٠١، ١٠٠٢، ١٠٠٣، ١٠٠٤، ١٠٠٥، ١٠٠٦، ١٠٠٧، ١٠٠٨، ١٠٠٩، ١٠١٠، ١٠١١، ١٠١٢، ١٠١٣، ١٠١٤، ١٠١٥، ١٠١٦، ١٠١٧، ١٠١٨، ١٠١٩، ١٠٢٠، ١٠٢١، ١٠٢٢، ١٠٢٣، ١٠٢٤، ١٠٢٥، ١٠٢٦، ١٠٢٧، ١٠٢٨، ١٠٢٩، ١٠٣٠، ١٠٣١، ١٠٣٢، ١٠٣٣، ١٠٣٤، ١٠٣٥، ١٠٣٦، ١٠٣٧، ١٠٣٨، ١٠٣٩، ١٠٤٠، ١٠٤١، ١٠٤٢، ١٠٤٣، ١٠٤٤، ١٠٤٥، ١٠٤٦، ١٠٤٧، ١٠٤٨، ١٠٤٩، ١٠٥٠، ١٠٥١، ١٠٥٢، ١٠٥٣، ١٠٥٤، ١٠٥٥، ١٠٥٦، ١٠٥٧، ١٠٥٨، ١٠٥٩، ١٠٦٠، ١٠٦١، ١٠٦٢، ١٠٦٣، ١٠٦٤، ١٠٦٥، ١٠٦٦، ١٠٦٧، ١٠٦٨، ١٠٦٩، ١٠٧٠، ١٠٧١، ١٠٧٢، ١٠٧٣، ١٠٧٤، ١٠٧٥، ١٠٧٦، ١٠٧٧، ١٠٧٨، ١٠٧٩، ١٠٨٠، ١٠٨١، ١٠٨٢، ١٠٨٣، ١٠٨٤، ١٠٨٥، ١٠٨٦، ١٠٨٧، ١٠٨٨، ١٠٨٩، ١٠٩٠، ١٠٩١، ١٠٩٢، ١٠٩٣، ١٠٩٤، ١٠٩٥، ١٠٩٦، ١٠٩٧، ١٠٩٨، ١٠٩٩، ١١٠٠، ١١٠١، ١١٠٢، ١١٠٣، ١١٠٤، ١١٠٥، ١١٠٦، ١١٠٧، ١١٠٨، ١١٠٩، ١١١٠، ١١١١، ١١١٢، ١١١٣، ١١١٤، ١١١٥، ١١١٦، ١١١٧، ١١١٨، ١١١٩، ١١٢٠، ١١٢١، ١١٢٢، ١١٢٣، ١١٢٤، ١١٢٥، ١١٢٦، ١١٢٧، ١١٢٨، ١١٢٩، ١١٣٠، ١١٣١، ١١٣٢، ١١٣٣، ١١٣٤، ١١٣٥، ١١٣٦، ١١٣٧، ١١٣٨، ١١٣٩، ١١٤٠، ١١٤١، ١١٤٢، ١١٤٣، ١١٤٤، ١١٤٥، ١١٤٦، ١١٤٧، ١١٤٨، ١١٤٩، ١١٥٠، ١١٥١، ١١٥٢، ١١٥٣، ١١٥٤، ١١٥٥، ١١٥٦، ١١٥٧، ١١٥٨، ١١٥٩، ١١٦٠، ١١٦١، ١١٦٢، ١١٦٣، ١١٦٤، ١١٦٥، ١١٦٦، ١١٦٧، ١١٦٨، ١١٦٩، ١١٧٠، ١١٧١، ١١٧٢، ١١٧٣، ١١٧٤، ١١٧٥، ١١٧٦، ١١٧٧، ١١٧٨، ١١٧٩، ١١٨٠، ١١٨١، ١١٨٢، ١١٨٣، ١١٨٤، ١١٨٥، ١١٨٦، ١١٨٧، ١١٨٨، ١١٨٩، ١١٩٠، ١١٩١، ١١٩٢، ١١٩٣، ١١٩٤، ١١٩٥، ١١٩٦، ١١٩٧، ١١٩٨، ١١٩٩، ١٢٠٠، ١٢٠١، ١٢٠٢، ١٢٠٣، ١٢٠٤، ١٢٠٥، ١٢٠٦، ١٢٠٧، ١٢٠٨، ١٢٠٩، ١٢١٠، ١٢١١، ١٢١٢، ١٢١٣، ١٢١٤، ١٢١٥، ١٢١٦، ١٢١٧، ١٢١٨، ١٢١٩، ١٢٢٠، ١٢٢١، ١٢٢٢، ١٢٢٣، ١٢٢٤، ١٢٢٥، ١٢٢٦، ١٢٢٧، ١٢٢٨، ١٢٢٩، ١٢٣٠، ١٢٣١، ١٢٣٢، ١٢٣٣، ١٢٣٤، ١٢٣٥، ١٢٣٦، ١٢٣٧، ١٢٣٨، ١٢٣٩، ١٢٤٠، ١٢٤١، ١٢٤٢، ١٢٤٣، ١٢٤٤، ١٢٤٥، ١٢٤٦، ١٢٤٧، ١٢٤٨، ١٢٤٩، ١٢٥٠، ١٢٥١، ١٢٥٢، ١٢٥٣، ١٢٥٤، ١٢٥٥، ١٢٥٦، ١٢٥٧، ١٢٥٨، ١٢٥٩، ١٢٦٠، ١٢٦١، ١٢٦٢، ١٢٦٣، ١٢٦٤، ١٢٦٥، ١٢٦٦، ١٢٦٧، ١٢٦٨، ١٢٦٩، ١٢٧٠، ١٢٧١، ١٢٧٢، ١٢٧٣، ١٢٧٤، ١٢٧٥، ١٢٧٦، ١٢٧٧، ١٢٧٨، ١٢٧٩، ١٢٨٠، ١٢٨١، ١٢٨٢، ١٢٨٣، ١٢٨٤، ١٢٨٥، ١٢٨٦، ١٢٨٧، ١٢٨٨، ١٢٨٩، ١٢٩٠، ١٢٩١، ١٢٩٢، ١٢٩٣، ١٢٩٤، ١٢٩٥، ١٢٩٦، ١٢٩٧، ١٢٩٨، ١٢٩٩، ١٣٠٠، ١٣٠١، ١٣٠٢، ١٣٠٣، ١٣٠٤، ١٣٠٥، ١٣٠٦، ١٣٠٧، ١٣٠٨، ١٣٠٩، ١٣١٠، ١٣١١، ١٣١٢، ١٣١٣، ١٣١٤، ١٣١٥، ١٣١٦، ١٣١٧، ١٣١٨، ١٣١٩، ١٣٢٠، ١٣٢١، ١٣٢٢، ١٣٢٣، ١٣٢٤، ١٣٢٥، ١٣٢٦، ١٣٢٧، ١٣٢٨، ١٣٢٩، ١٣٣٠، ١٣٣١، ١٣٣٢، ١٣٣٣، ١٣٣٤، ١٣٣٥، ١٣٣٦، ١٣٣٧، ١٣٣٨، ١٣٣٩، ١٣٤٠، ١٣٤١، ١٣٤٢، ١٣٤٣، ١٣٤٤، ١٣٤٥، ١٣٤٦، ١٣٤٧، ١٣٤٨، ١٣٤٩، ١٣٥٠، ١٣٥١، ١٣٥٢، ١٣٥٣، ١٣٥٤، ١٣٥٥، ١٣٥٦، ١٣٥٧، ١٣٥٨، ١٣٥٩، ١٣٦٠، ١٣٦١، ١٣٦٢، ١٣٦٣، ١٣٦٤، ١٣٦٥، ١٣٦٦، ١٣٦٧، ١٣٦٨، ١٣٦٩، ١٣٧٠، ١٣٧١، ١٣٧٢، ١٣٧٣، ١٣٧٤، ١٣٧٥، ١٣٧٦، ١٣٧٧، ١٣٧٨، ١٣٧٩، ١٣٨٠، ١٣٨١، ١٣٨٢، ١٣٨٣، ١٣٨٤، ١٣٨٥، ١٣٨٦، ١٣٨٧، ١٣٨٨، ١٣٨٩، ١٣٩٠، ١٣٩١، ١٣٩٢، ١٣٩٣، ١٣٩٤، ١٣٩٥، ١٣٩٦، ١٣٩٧، ١٣٩٨، ١٣٩٩، ١٤٠٠، ١٤٠١، ١٤٠٢، ١٤٠٣، ١٤٠٤، ١٤٠٥، ١٤٠٦، ١٤٠٧، ١٤٠٨، ١٤٠٩، ١٤١٠، ١٤١١، ١٤١٢، ١٤١٣، ١٤١٤، ١٤١٥، ١٤١٦، ١٤١٧، ١٤١٨، ١٤١٩، ١٤٢٠، ١٤٢١، ١٤٢٢، ١٤٢٣، ١٤٢٤، ١٤٢٥، ١٤٢٦، ١٤٢٧، ١٤٢٨، ١٤٢٩، ١٤٣٠، ١٤٣١، ١٤٣٢، ١٤٣٣، ١٤٣٤، ١٤٣٥، ١٤٣٦، ١٤٣٧، ١٤٣٨، ١٤٣٩، ١٤٤٠، ١٤٤١، ١٤٤٢، ١٤٤٣، ١٤٤٤، ١٤٤٥، ١٤٤٦، ١٤٤٧، ١٤٤٨، ١٤٤٩، ١٤٥٠، ١٤٥١، ١٤٥٢، ١٤٥٣، ١٤٥٤، ١٤٥٥، ١٤٥٦، ١٤٥٧، ١٤٥٨، ١٤٥٩، ١٤٦٠، ١٤٦١، ١٤٦٢، ١٤٦٣، ١٤٦٤، ١٤٦٥، ١٤٦٦، ١٤٦٧، ١٤٦٨، ١٤٦٩، ١٤٧٠، ١٤٧١، ١٤٧٢، ١٤٧٣، ١٤٧٤، ١٤٧٥، ١٤٧٦، ١٤٧٧، ١٤٧٨، ١٤٧٩، ١٤٨٠، ١٤٨١، ١٤٨٢، ١٤٨٣، ١٤٨٤، ١٤٨٥، ١٤٨٦، ١٤٨٧، ١٤٨٨، ١٤٨٩، ١٤٩٠، ١٤٩١، ١٤٩٢، ١٤٩٣، ١٤٩٤، ١٤٩٥، ١٤٩٦، ١٤٩٧، ١٤٩٨، ١٤٩٩، ١٥٠٠، ١٥٠١، ١٥٠٢، ١٥٠٣، ١٥٠٤، ١٥٠٥، ١٥٠٦، ١٥٠٧، ١٥٠٨، ١٥٠٩، ١٥١٠، ١٥١١، ١٥١٢، ١٥١٣، ١٥١٤، ١٥١٥، ١٥١٦، ١٥١٧، ١٥١٨، ١٥١٩، ١٥٢٠، ١٥٢١، ١٥٢٢، ١٥٢٣، ١٥٢٤، ١٥٢٥، ١٥٢٦، ١٥٢٧، ١٥٢٨، ١٥٢٩، ١٥٣٠، ١٥٣١، ١٥٣٢، ١٥٣٣، ١٥٣٤، ١٥٣٥، ١٥٣٦، ١٥٣٧، ١٥٣٨، ١٥٣٩، ١٥٤٠، ١٥٤١، ١٥٤٢، ١٥٤٣، ١٥٤٤، ١٥٤٥، ١٥٤٦، ١٥٤٧، ١٥٤٨، ١٥٤٩، ١٥٥٠، ١٥٥١، ١٥٥٢، ١٥٥٣، ١٥٥٤، ١٥٥٥، ١٥٥٦، ١٥٥٧، ١٥٥٨، ١٥٥٩، ١٥٦٠، ١٥٦١، ١٥٦٢، ١٥٦٣، ١٥٦٤، ١٥٦٥، ١٥٦٦، ١٥٦٧، ١٥٦٨، ١٥٦٩، ١٥٧٠، ١٥٧١، ١٥٧٢، ١٥٧٣، ١٥٧٤، ١٥٧٥، ١٥٧٦، ١٥٧٧، ١٥٧٨، ١٥٧٩، ١٥٨٠، ١٥٨١، ١٥٨٢، ١٥٨٣، ١٥٨٤، ١٥٨٥، ١٥٨٦، ١٥٨٧، ١٥٨٨، ١٥٨٩، ١٥٩٠، ١٥٩١، ١٥٩٢، ١٥٩٣، ١٥٩٤، ١٥٩٥، ١٥٩٦، ١٥٩٧، ١٥٩٨، ١٥٩٩، ١٦٠٠، ١٦٠١، ١٦٠٢، ١٦٠٣، ١٦٠٤، ١٦٠٥، ١٦٠٦، ١٦٠٧، ١٦٠٨، ١٦٠٩، ١٦١٠، ١٦١١، ١٦١٢، ١٦١٣، ١٦١٤، ١٦١٥، ١٦١٦، ١٦١٧، ١٦١٨، ١٦١٩، ١٦٢٠، ١٦٢١، ١٦٢٢، ١٦٢٣، ١٦٢٤، ١٦٢٥، ١٦٢٦، ١٦٢٧، ١٦٢٨، ١٦٢٩، ١٦٣٠، ١٦٣١، ١٦٣٢، ١٦٣٣، ١٦٣٤، ١٦٣٥، ١٦٣

(ﷺ) ने उसका कोई बदला नहीं दिलवाया। (दीगर मक़ाम : 2265, 2973, 4417, 6893)

### बाब 20 : अगर मुहरिम अरफ़ात में मर जाए

और नबी करीम (ﷺ) ने ये हुक्म नहीं किया कि हज्ज के बाक़ी अरक़ान उसकी तरफ़ से अदा किये जाएँ।

1849. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मैदाने अरफ़ात में एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) के साथ ठहरा हुआ था कि अपनी ऊँटनी से गिर पड़ा और उस ऊँटनी ने उसकी गर्दन तोड़ डाली, नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि पानी और बेरी के पत्तों से उसे गुस्ल दो और एहराम ही के दो कपड़ों का कफ़न दो लेकिन खुशबू न लगाना न उसका सर छुपाना क्योंकि अल्लाह तआला क्रियामत में उसे लम्बैक कहते हुए उठाएगा।

1850. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) के साथ अरफ़ात में ठहरा हुआ था कि अपनी ऊँटनी से गिर पड़ा और उसने उसकी गर्दन तोड़ दी, तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे पानी और बेरी से गुस्ल देकर कपड़ों (एहराम वाले कपड़ों ही में) कफ़न दो और खुशबू न लगाना न सर छुपाना और न हनूत लगाना क्योंकि अल्लाह तआला क्रियामत में उसे लम्बैक पुकारते हुए उठाएगा।

बाब 21 : जब मुहरिम वफ़ात पा जाए तो उसका कफ़न-दफ़न किस तरह मस्नून है

[أُطْرَافُهُ فِي : ٢٢٦٥ ، ٢٩٧٣ ، ٤٤١٧]  
[٦٨٩٣]

٢٠- بَابُ الْمُحْرِمِ يَمُوتُ بِعَرَفَةَ، وَلَمْ يَأْمُرِ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُؤَدَّى عَنْهُ بَقِيَّةُ الْحَجِّ

١٨٤٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((بَيْنَا رَجُلٌ وَاقِفٌ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِعَرَفَةَ إِذْ وَقَعَ عَنْ رَأْسِهِ لَوْحَصَةٌ - أَوْ قَالَ فَالْقَصَصَةُ - فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِنْرٍ، وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ - أَوْ قَالَ فِي ثَوْبَيْهِ - وَلَا تُحْطَوهُ وَلَا تُغَمَّرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّ اللَّهَ يَبْعَثُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَلْبَسِي)).

١٨٥٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((بَيْنَا رَجُلٌ وَاقِفٌ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِعَرَفَةَ إِذْ وَقَعَ عَنْ رَأْسِهِ لَوْحَصَةٌ - أَوْ قَالَ فَالْقَصَصَةُ - فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِنْرٍ، وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ، وَلَا تُمَسَّوْهُ حَيْثَا، وَلَا تُغَمَّرُوا رَأْسَهُ، وَلَا تُحْطَوهُ، فَإِنَّ اللَّهَ يَبْعَثُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَلْبَسِي)).

٢١- بَابُ سَنَةِ الْمُحْرِمِ إِذَا مَاتَ

1851. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें अबू बिश्र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें सईद बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) के साथ मैदाने अरफ़ात में था कि उसके कूँट ने गिराकर उसकी गर्दन तोड़ दी। वो शख़्स मुहरिम था और मर गया। नबी करीम (ﷺ) ने ये हिदायत दी कि उसे पानी और बेरी का गुस्ल और (एहराम के) दो कपड़ों का कफ़न दिया जाए अल्बत्ता उसको खुशबू न लगाओ न उसका सर छुपाओ क्योंकि क़यामत के दिन वो लब्बैक कहता हुआ उठेगा।

١٨٥١- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَجُلًا كَانَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَوَقَعَتْهُ نَاقَتُهُ وَهُوَ مُحَرِّمٌ فَمَاتَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِنَنٍ، وَكَفِّنُوهُ بِثَوْبَيْنِ، وَلَا تَمْسُوهُ بِطَبِيبٍ، وَلَا تُخَمِّرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّهُ يَبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مُلَبًّا)).

## बाब 22 : मरियत की तरफ़ से हज्ज और नज़्र अदा करना और मर्द किसी औरत के बदले में हज्ज कर सकता है

## ٢٢- بَابُ الْحَجِّ وَالنَّذْرِ عَنِ الْمَرْأَةِ

तफ़सीर से दूसरा हुक्म बाब की हदीष से नहीं निकलता क्यों कि बाब की हदीष में ये बयान है कि औरत ने अपनी माँ की तरफ़ से हज्ज करने को पूछा था तो बाब का तर्जुमा यँ होना था कि औरत का औरत की तरफ़ से हज्ज करना और हाफ़िज़ साहब से इस मक़ाम पर सव्व हुआ उन्होंने कहा बाब की हदीष में है कि औरत ने अपने बाप की तरफ़ से हज्ज करने को पूछा जाने पर ये मतलब इस बाब की हदीष में नहीं है, बल्कि आइन्दा बाब की हदीष में है। इब्ने बत्ताल ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने इस हदीष में अमर के सेगे से यानी अक्ज़ुल्लाह से ख़िताब किया उसमें मर्द औरत सब आ गए और मर्द का औरत की तरफ़ से और औरत का मर्द की तरफ़ से हज्ज करना सबके नज़दीक जाइज़ है, उस औरत के नाम में इख़ितलाफ़ है। निसाई की रिवायत में सिनान बिन सलमा की बीवी मज़कूर है और इमाम अहमद की रिवायत में सिनान बिन अब्दुल्लाह की बीवी बतलाया गया है। त़िबरांनी की रिवायत से ये निकलता है कि उनकी फूफी थी मगर इब्ने हिन्दा ने स हाबियात में निकाला कि ये औरत आनिया या ग़ाबिया नामी थी, इब्ने त़ाहिर ने मुब्हमात में उसी पर ज़ज़म किया है।

1852. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना बज़ाह यशकरी ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र जा'फ़र बिन अयास ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि क़बीला जुहैना की एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और कहा मेरी वालिदा ने हज्ज की मन्नत मानी थी लेकिन वो हज्ज न कर सकी और उनका इंतिकाल हो गया तो क्या मैं उनकी तरफ़ से हज्ज कर सकती हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ उनकी तरफ़ से तू हज्ज कर। क्या तुम्हारी माँ पर क़र्ज़ होता तो तुम उसे अदा न करती? अल्लाह तआला का क़र्ज़ तो इसका सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि उसे अदा किया

١٨٥٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو حَوَاةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ امْرَأَةً مِنْ جُهَنَةَ جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: إِنَّ أُمِّي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ فَلَمْ تَحُجَّ حَتَّى مَاتَتْ، أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ حُجِّي عَنْهَا، أَرَأَيْتَ لَوْ كَانَ عَلَى أَمْلِكٍ دَيْنٌ أَكْتَسَ قَاضِيَتَهُ؟ أَقْضَوْا لِلَّهِ،

जाए। पस अल्लाह तआला का कर्ज अदा करना बहुत ज़रूरी है।

(दीगर मक़ाम : 1699, 7315)

### बाब 23 : उसकी तरफ से हज्जे बदल जिसमें सवारी पर बैठने की ताक़त न हो

1853. हमसे अबू आसिम ने इब्ने जुरैज से बयान किया, उन्होंने कहा उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सुलैमान बिन यसार ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने और उनसे फ़ज़ल बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून-----

1854. (दूसरी सनद से इमाम बुख़ारी ने) कहा हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब जुहरी ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन यसार ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर क़बीला ख़व़अम की एक औरत आई और अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़रीज़ाए हज्ज जो उसके बन्दों पर है उसने मेरे बूढ़े बाप को भी पा लिया है लेकिन उनमें इतनी सकत नहीं कि वो सवारी पर भी बैठ सकें तो क्या मैं उनकी तरफ़ से हज्ज कर लूँ तो उनका हज्ज अदा हो जाएगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। (राजेज़ : 1513)

### बाब 24 : औरत का मर्द की तरफ़ से हज्ज करना

1855. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब जुहरी ने, उनसे सुलैमान बिन यसार ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़ज़ल बिन अब्बास (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की सवारी पर पीछे बैठे हुए थे। इतने में क़बीला ख़व़अम की एक औरत आई। फ़ज़ल (रज़ि.) उसको देखने लगे और वो फ़ज़ल को देखने लगी। इसलिये नबी करीम (ﷺ) फ़ज़ल का चेहरा दूसरी तरफ़ फेरने लगे, उस औरत ने कहा कि अल्लाह का फ़रीज़ा (हज्ज) ने मेरे बूढ़े बाप को इस हालत में पा लिया है कि वो सवारी पर बैठ नहीं सकते तो

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ بِالْوَلَاءِ))

[طرفاء في : 1699, 17315]

### ٢٣- بَابُ الْحَجِّ عَمَّنْ لَا يَسْتَطِيعُ الثَّبُوتَ عَلَى الرَّاحِلَةِ

١٨٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّ امْرَأَةً . . ح .

١٨٥٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((جَاءَتِ امْرَأَةٌ مِنْ خَتَمِ حَجَّةِ الْوَدَاعِ قَالَتْ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ فَرِيضَةَ اللَّهِ عَلَى عِبَادِهِ فِي الْحَجِّ أَذْرَكْتُ أَبِي شَيْئًا كَثِيرًا لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يَسْتَوِيَ عَلَى الرَّاحِلَةِ، فَهَلْ يُفْعَلُ عَنْهُ أَنْ أُحْجَّ عَنْهُ؟ قَالَ : ((نَعَمْ)).

[راجع : 1513]

### ٢٤- بَابُ حَجِّ الْمَرْأَةِ عَنِ الرَّجُلِ

١٨٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((كَانَ الْفَضْلُ رَدِيفَ النَّبِيِّ ﷺ، فَجَاءَتِ امْرَأَةٌ مِنْ خَتَمِ، فَجَعَلَ الْفَضْلُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا وَتَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْرِفُ وَجْهَ الْفَضْلِ إِلَى الشَّقِّ

क्या मैं उनकी तरफ से हज्ज कर सकती हूँ, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! ये हज्जतुल विदाअ का वाक़िया है।

(राजेअ : 1513)

الْأَمْرُ، فَقَالَتْ: إِنِّي لَفَرِحْتُ بِالْهِجْرَةِ أَمْرًا  
أَبِي حَتَمًا كَثِيرًا لَا يَنْبَغُ عَلَيَّ الرَّاحِلَةُ،  
أَفَأَخُجُّ عَنْهُ؟ قَالَ: ((نَعَمْ))، وَذَلِكَ فِي

حَجَّةِ الْوَدَاعِ)). (راسع: ١٠١٣]

**तशरीह:** उस औरत का नाम मा'लूम नहीं हुआ इस हदीष से निकला कि ज़िन्दा आदमी की तरफ से भी अगर वो मा'ज़ूर (असमर्थ) हो जाए दूसरा आदमी हज्ज कर सकता है और ये भी ज़ाहिर है कि ऐसा हज्जे बदल मर्द की तरफ से औरत भी कर सकती है।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, व फ़ी हाज़ल हदीषि मिनल फ़वाइदि जवाज़ुल हज्जि मिनल ग़ैरि वस्तदल्लुल कूफ़ियून बिउमूमिही अला जवाज़ि सिहहति हज्जिमल्लम यहुज नियाबतन अन ग़ैरिही व ख़ालफ़हुमुल जुम्हूर फ़ख़म्मुहु बिमन हज्ज अन नफ़्सिही वस्तदल्लू बिमा फ़िस्सुननि व सहीहु इब्नि ख़ुजैमा व ग़ैरुहु मिन हदीषि इब्नि अब्बास अयज़न अन्न नबिय्य (ﷺ) राअरजुलन युलब्बी अन शिब्रमा फ़क़ाल अहजजत मिन नफ़्सिक फ़क़ाल ला हाज़िही मिन नफ़्सिक शुम्हजुज अन शिब्रमा (फ़तहुल बारी) यानी इस हदीष के फ़वाइद में से है कि ग़ैर की तरफ से हज्ज करना जाइज़ है और कूफ़ियों ने इसके इमूम से दलील ली है कि नियाबत में उसका हज्ज भी दुस्त है जिसने पहले अपना हज्ज न किया हो और जुम्हूर ने उनसे ख़िलाफ़ कहा है उन्होंने उसके लिये उसी को ख़ास किया है जो पहले अपना ज़ाती हज्ज कर चुका हो और उन्होंने इस हदीष से दलील पकड़ी है जिसे अस्हाबे सुनन और इब्ने ख़ुजैमा व ग़ैरह ने हदीषे इब्ने अब्बास (रज़ि.) से नक़ल किया है कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक आदमी को देखा कि वो शिब्रमा की तरफ से लब्बैक पुकार रहा है। आपने फ़र्माया शिब्रमा कौन है उसने उसके बारे में बतलाया। फिर आपने पूछा कि क्या तू पहले अपना ज़ाती हज्ज कर चुका है, उसने इन्कार में जवाब दिया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया पहले अपना हज्ज कर फिर शिब्रमा का हज्ज करना। इस हदीष से ज़ाफ़ ज़ाहिर है कि हज्जे बदल जिससे कराया जा रहा है ज़रूरी है कि वो शख्स पहले अपना हज्ज कर चुका हो हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, व फ़ीहि इम्माम्मात व अलैहि हज़ुन व ज़ब अला वलिय्यिही अय्युजहिज मय्यहुजु अन्हु मिन रासि मालिही कमा अन्न अलैहि कज़ाउ दुयूनिही फ़क़द अज्मऊ अला अन्न दैनल आदमी मिन रासिलमालि फ़क़ज़ालिक मा शुब्बिह बिही फ़िलक़ज़ाइ व यल्लहिक्कु बिल्हज्जि कल्लु हक्किन षबत फ़ी ज़िम्मतिही कफ़फ़ारतुन औ नज़रुन औ ज़कातुन औ ग़ैर ज़ालिक (फ़तहुल बारी) यानी उसमें ये भी है कि जो शख्स वफ़ात पाए और उस पर हज्ज वाजिब हो तो वारिषों का फ़र्ज़ है कि उसके असल माल से किसी दूसरे को हज्जे बदल के लिये तैयार करके भेजें। ये ऐसा ही ज़रूरी है जैसा कि उसके क़र्ज़ की अदाएगी ज़रूरी है और कफ़फ़ारा और नज़्र और ज़कात व ग़ैरह की जो उसके ज़िम्मे वाजिब हो।

## बाब 25 : बच्चों का हज्ज करना

1854. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे इब्नेदुल्लाह बिन अबी यज़ीद ने बयान किया कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे मुज़दलिफ़ा की रात मिना में सामान के साथ भेज दिया था।

## ٢٥ - بَابُ حَجِّ الصِّبْيَانِ

١٨٥٦ - حَدَّثَنَا أَبُو الثَّغْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ

بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَزِيدٍ عَنْ

أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ وَابْنَ

عَبَّاسٍ يَقُولَانِ: ((يَقُولُ - أَوْ قُلْتُ -

النَّبِيُّ ﷺ فِي الْفَلَاحِ مِنْ جَمْعِ بَلَدٍ)).

**तशरीह:** इमाम बुखारी (रह.) इस बाब में वो सरीह हदीष नहीं लाए जिसे इमाम मुस्लिम ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है कि एक औरत ने अपना बच्चा उठाया और कहने लगी या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या इसका हज्ज है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ और तुझको भी ज़वाब मिलेगा। हदीष से ये निकलता है कि बच्चे का हज्ज मशरूअ है और

उसका एहराम सहीह है लेकिन ये हज्ज उसके फ़र्ज हज्ज को साक़ित न करेगा, बुलूग़त (जवानी) के बाद फ़र्ज हज्ज अदा करना होगा और ये हज्ज नफ़ल रहेगा। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) उन दिनों नाबालिग़ थे, बावजूद उसके उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के साथ हज्ज किया, इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब उसी से प्राबित किया है।

1857. हमसे इस्हाक़ बिन मन्सूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें यज़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, उनसे उनके भतीजे इब्ने शिहाब जुहरी ने बयान किया, उनसे उनके चचा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, मैं अपनी एक गध़ी पर सवार होकर (मिना में आया) उस वक़्त में जवानी के करीब था, रसूलुल्लाह (ﷺ) मिना में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे। मैं पहली सफ़ के एक हिस्से के आगे से होकर गुज़रा, फिर सवारी से नीचे उतर आया और उसे चरने के लिये छोड़ दिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पीछे लोगों के साथ सफ़ में शरीक हो गया, यूनुस ने इब्ने शिहाब के वास्ते से बयान किया कि ये हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर मिना का वाक़िया है। (राजेअ: 76)

١٨٥٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي شِهَابٍ عَنْ عَمْرِو أَخْبَرَنِي عُثَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثَيْبٍ عَنْ مَنْشُورٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «أَقْبَلْتُ - وَقَدْ تَاهَرْتُ الْخُلْمَ - أَسِيرُ عَلَى آتَانٍ لِي، وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِمٌ يُصَلِّي بِوَيْلَى، حَتَّى سِرْتُ بَيْنَ يَدَيْ بَعْضِ الصَّفِّ الْأَوَّلِ، ثُمَّ نَزَلْتُ عَنْهَا فَوَرَمْتُ، فَصَفَفْتُ مَعَ النَّاسِ وَرَأَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. وَقَالَ يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ ((بَعِنَى حَجَّةُ الْوِدَاعِ)).»

[راجع: ٧٦]

**तशरीह:** अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) उन दिनों नाबालिग़ थे बावजूद उसके उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के साथ हज्ज किया, इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब इसी हदीष से प्राबित किया है।

1858. हमसे अब्दुर्रहमान बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने और उनसे साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हज्ज कराया गया था। मैं उस वक़्त सात साल का था।

١٨٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ يُونُسَ عَنْ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: حَجَّ بِي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَنَا ابْنُ سِتِّ مِائَةٍ.

١٨٥٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَّارَةَ أَخْبَرَنَا الْقَاسِمُ بْنُ مَالِكٍ عَنِ الْحَجَّافِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْغَزَّافِ يَقُولُ لِسَائِبِ بْنِ يَزِيدَ وَكَانَ قَدْ حَجَّ بِي لِي قَلَى النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفاه: ٢٧١٢, ٧٢٣٠.]

1859. हमसे अमर बिन ज़र्राह ने बयान किया, कहा कि हमें कासिम बिन मालिक ने ख़बर दी, उन्हें जुऐद बिन अब्दुर्रहमान ने, उन्होंने कहा कि मैंने अमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) से सुना, वो साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से कह रहे थे साइब (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) के सामान के साथ (यानी बाल-बच्चों में) हज्ज कराया गया था।

(दीगर मक़ाम: 2712, 7230)

दूसरी रिवायत में है कि अमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने हज़रत साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से मदद के बारे में पूछा था। हज़रत साइब

बिन यज़ीद हज़रतुल विदाअ के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) के सामान के साथ थे और वो उस वक़्त नाबालिग़ थे।

## बाब 26 : औरतों का हज्ज करना

1860. इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अहमद बिन मुहम्मद ने कहा कि उनसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उनके दादा (इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने आख़िरी हज्ज के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) की बीवियों को हज्ज की इजाज़त दी थी और उनके साथ उप्मान बिन अफ़फ़ान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) को भेजा था।

**तशरीह:** आँहज़रत (ﷺ) की सब बीवियाँ हज्ज को गईं मगर सौदा और हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) वफ़ात तक मकान से न निकलीं। पहले हज़रत उमर (रज़ि.) को तरदुद हुआ था कि आप (ﷺ) की बीवियों को हज्ज के लिये निकालें या नहीं। फिर उन्होंने इजाज़त दे दी और निगाहबानी के लिये हज़रत उप्मान (रज़ि.) को साथ कर दिया, फिर हज़रत मुआविया (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में भी उम्माहातुल मोमिनीन ने हज्ज किया, ऊटों पर सवार थीं, उन पर चादरें पड़ी हुई थीं। (वहीदी)

1861. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे हबीब बिन अम्र ने, उन्होंने बयान किया, मुझसे आइशा बिनते तलहा ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम भी क्यों न आप (ﷺ) के साथ जिहाद और ग़ज़वा में जाया करें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोगों के लिये सबसे उम्दह और सबसे मुनासिब जिहाद हज्ज है, वो हज्ज जो मक्क़ूल हो। हज़रत आइशा (रज़ि.) कहती थीं कि जबसे मैंने रसूलल्लाह (ﷺ) का ये इशार्द सुन लिया है हज्ज को मैं कभी नहीं छोड़ने वाली हूँ। (राजेअ: 1520)

**तशरीह:** आँहज़रत (ﷺ) का मक्क़ुसद था कि जिहाद के लिये निकलना तुम पर वाजिब नहीं जैसे मर्दों पर वाजिब है इस हदीस का ये मतलब नहीं है कि औरतें मुजाहिदीन के साथ न जाएँ बल्कि जा सकती हैं क्योंकि उम्मे अतिया की हदीस में है कि हम जिहाद में निकलते थे और ज़ख़्मियों की दवा वग़ैरह करते थे और आप (ﷺ) ने एक औरत को बशारत दी थी कि वो मुजाहिदीन के साथ शहीद होगी। (वहीदी)

1862. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) के गुलाम अबू मअबद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई

## ٢٦- بَابُ حَجِّ النِّسَاءِ

١٨٦٠- وَقَالَ لِي أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: (رَأَيْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لِأَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ لِي آخِرِ حَجَّةٍ حَجَّهَا، لَبِثَتْ مَعَهُنَّ عُمَانُ بْنُ عَفَانَ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ).

١٨٦١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي عُمَرَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَائِشَةُ بِنْتُ طَلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا نَفْرُو وَنُجَاهِدُ مَعَكُمْ؟ فَقَالَ: ((لَكِنْ أَحْسَنَ الْجِهَادِ وَأَجْمَلُهُ الْحَجُّ حَجَّ مَرُورٍ)). فَقَالَتْ عَائِشَةُ: فَلَا أَدْعُ الْحَجَّ بَعْدَ إِذْ سَمِعْتُ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)). [راجع: ١٥٢٠]

## ١٨٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ

بْنُ زَيْدٍ عَنْ عُمَرَ عَنْ أَبِي مَقْبَدٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تُسَافِرُ الْمَرْأَةُ

औरत अपने मुहरिम रिश्तेदार के बगैर सफ़र न करे और कोई शख्स किसी औरत के पास उस वक़्त न जाए जब तक वहाँ मुहरिम मौजूद न हो। एक शख्स ने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं तो फ़लाँ लश्कर में जिहाद के लिये निकलना चाहता हूँ लेकिन मेरी बीवी का इरादा हज्ज का है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू अपनी बीवी के साथ हज्ज को जा।

(दीगर मक़ाम : 3006, 3061, 5233)

إِلَّا مَعَ ذِي مَحْرَمٍ)). وَلَا يَدْخُلُ عَلَيْهَا رَجُلٌ إِلَّا وَمَعَهَا مَحْرَمٌ)). فَقَالَ رَجُلٌ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَخْرُجَ فِي جَيْشٍ كَذَا وَكَذَا، وَأَمْرًاي تُرِيدُ الْحَجَّ، فَقَالَ : ((اَخْرُجْ مَعَهَا)).

[أطرافه ١ : ٣٠٠٦، ٣٠٦١، ٥٢٣٣.]

**तशरीह :** इस रिवायत में मुतलक सफ़र मज़कूर है दूसरी रिवायतों में तीन दिन और दो दिन और एक दिन के सफ़र की तसरीह है बहरहाल एक दिन रात की राह के सफ़र पर औरत बगैर मुहरिम के जा सकती है। हमारे इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) फ़र्माते हैं कि अगर औरत को शौहर या दूसरा कोई मुहरिम रिश्तेदार न मिले तो उस पर हज्ज वाजिब नहीं है हनीफ़ा का भी यही क़ौल है लेकिन शाफ़िइया और मालिकिया मो'तबर (भरासेमन्द) और रफ़ीकों (रिश्तेदारों) के साथ हज्ज के लिये जाना जाइज़ रखते हैं। (वहीदी)

1863. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद बिन जुरैज ने ख़बर दी, कहा हमको हबीब मुअल्लम ने ख़बर दी, उन्हें अत्ता बिन अबी रबाह ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) हज्जतुल विदाअ से वापस हुए तो आप (ﷺ) ने उम्मे सिनान अंसारिया औरत (रज़ि.) से पूछा कि तू हज्ज करने नहीं गई? उन्होंने कहा कि फ़लाँ के बाप यानी मेरे शौहर के पास दो क़ैट पानी पिलाने के थे एक पर तो वो खुद हज्ज को चले गए और दूसरा हमारी ज़मीन सैराब करता है। आप (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि रमज़ान में उमरह करना मेरे साथ हज्ज करने के बराबर है, इस रिवायत को इब्ने जुरैज ने अत्ता से सुना, कहा उन्होंने ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से और उबैदुल्लाह ने अब्दुल करीम से रिवायत किया, उनसे अत्ता ने उनसे जाबिर (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम ने।

(राजेअ : 1782)

١٨٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْجٍ أَخْبَرَنَا حَبِيبُ الْمُثَنَّمِ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي عَتَّابٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((كُنَّا رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ حَبِيبِهِ قَالَ لَأَمْ مِثْنَانَ الْأَنْصَارِيَّةِ : ((مَا مَنَعَكَ مِنَ الْحَجِّ؟)) قَالَتْ : أُرَى فَلَانٌ - تَغْنِي زَوْجَهَا كَانَ لَهُ - نَاصِيحَانِ حَجَّ عَلَى أَحَدِيهِمَا، وَالْآخَرُ يَسْتَقِي أَرْضًا لَنَا. قَالَ : ((فَإِنْ عُمَرَا رَمَضَانَ تَغْنِي حَجَّةً أَوْ حَجَّةً مَعِي)) رَوَاهُ ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ مَسُوقُ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[[راجع : ١٧٨٢]]

**तशरीह :** उबैदुल्लाह अन् अब्दुल करीम की रिवायत को इब्ने माजा ने वस्ल किया है इमाम बुखारी (रह.) का मतलब इन सनदों के बयान करने से ये है कि रावियों ने इसमें अत्ता पर इख़्तिलाफ़ किया है इब्ने अबी मुअल्ला और यअकूब इब्ने अत्ता ने भी हबीब मुअल्लम और इब्ने जुरैज की तरह रिवायत की है मा'लूम हुआ कि अब्दुल करीम की रिवायत शाज़ है जो ए'तिबार के क़ाबिल नहीं। हदीष में जिस औरत का ज़िक्र है वो उम्मे सिनान (रज़ि.) है जो आँहज़रत (ﷺ) के साथ हज्ज करने से महरूम रह गई थीं। हज्ज उन पर फ़र्ज़ भी न था मगर आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी दिल जोई के लिये फ़र्माया कि रमज़ान में अगर वो उमरह कर लें तो इस महरूमी का कफ़ारा हो जाएगा, इससे रमज़ान में उमरह की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई।



1864. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने, उनसे अब्दुल मलिक बिन इमर ने, उनसे ज़ियाद के गुलाम कुज़आ ने, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से सुना जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह जिहाद किये थो। वो कहते थे कि मैंने चार बातें नबी करीम (ﷺ) से सुनी थीं या ये कि वो ये चार बातें नबी करीम (ﷺ) से नक़ल करते और कहते थे कि ये बातें मुझे इतिहाई पसन्द हैं ये कि कोई औरत दो दिन का सफ़र उस वक़्त तक न करे जब तक उसके साथ उसका शौहर या कोई करीबी मुहरिम न हो, न ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा रोज़े रखे जाएँ न अम्र की नमाज़ के बाद गुरुब होने से पहले और सुबह की नमाज़ के बाद सूरज निकलने से पहले कोई नमाज़ पढ़ी जाए और न तीन मसाजिद के सिवा किसी के लिये कजावे बाँधे जाएँ मस्जिदे हुराम, मेरी मस्जिद और मस्जिदे अक्रसा। (राजेअ: 586)

### बाब 27 : अगर किसी ने का'बा तक पैदल सफ़र करने की मन्नत मानी?

1865. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमें मरवान फ़िज़ारी ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद तविल ने, उन्होंने बयान किया कि मुझसे श्राबित ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक बूढ़े शख़्स को देखा जो अपने दो बेटों का सहारा लिये चल रहा था, आप (ﷺ) ने पूछा इन साहब का क्या हाल है? लोगों ने कहा कि उन्होंने का'बा को पैदल चलने की मन्नत मानी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला इससे बेनियाज़ है कि ये अपने को तकलीफ़ में डालें। फिर आप (ﷺ) ने उन्हें सवार होने का हुक्म दिया। (राजेअ: 6701)

तो उस पर उस मन्नत का पूरा करना वाजिब है या नहीं इदीष से ये निकलता है कि ऐसी नज़्र का पूरा करना वाजिब नहीं क्योंकि हज़्र सवार होकर करना पैदल करने से अफ़ज़ल है या आप (ﷺ) ने फ़र्माया ने इसलिये सवार होने का हुक्म दे दिया कि उसको पैदल चलने की त़ाक़त न थी।

1866. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि

١٨٦٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ غُمَيْرٍ عَنْ قُرْعَةَ مَوْلَى زَيْدٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ - هَذَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَتْلُو عَشْرَةَ هِزْجَةً - قَالَ : أَرْبَعٌ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ - أَوْ قَالَ يُحَدِّثُهُنَّ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ - فَأَعَجَبَنِي وَالْقَتَنِيُّ : أَنَّ «لَا تَسَافِرُ امْرَأَةٌ مَسِيرَةَ يَوْمَيْنِ لَيْسَ مَعَهَا زَوْجُهَا أَوْ ذُو مَحْرَمٍ. وَلَا صَوْمٌ يَوْمَيْنِ الْفِطْرِ وَالْأَضْحَى. وَلَا صَلَاةٌ بَعْدَ الْغَصْرِ حَتَّى تَقْرُبَ الشَّمْسُ، وَبَعْدَ الصُّبْحِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ. وَلَا تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلَّا إِلَى ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ: مَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَمَسْجِدِي، وَمَسْجِدِ الْأَقْصَى»۔ [راجع: ٥٨٦]

### ٢٧- بَابُ مَنْ نَذَرَ الْمَشْيَ إِلَى الْكَعْبَةِ

١٨٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو سَلَامٍ أَخْبَرَنَا الْفَزَارِيُّ عَنْ حُمَيْدِ الطُّوَيْلِ قَالَ : حَدَّثَنِي ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : «رَأَى النَّبِيَّ ﷺ رَأَى شَيْخًا يُهَادِي بَنِي أُنَيْيَةَ قَالَ : «مَا بَالُ هَذَا؟» قَالُوا : نَذَرْنَا أَنْ يَمْشِيَ. قَالَ : «إِنَّ اللَّهَ عَنْ تَغْلِيْبِهِ هَذَا نَفْسَهُ لَقِي»۔ وَأَمَرَهُ أَنْ يَرْكَبَ. [أطرافه ٦ : ٦٧٠١]

١٨٦٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى

हमको हिशाम बिन यूसुफ ने ख़बर दी कि इब्ने जुरैज ने उन्हें ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मुझे सईद बिन अबी अय्यूब ने ख़बर दी, उन्हें यज़ीद बिन हबीब ने ख़बर दी, उन्हें अबुल ख़ैर ने ख़बर दी कि इब्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने बयान किया मेरी बहन ने मन्नत मानी थी कि बैतुल्लाह तक वो पैदल जाएंगी, फिर उन्होंने मुझे से कहा कि तुम इसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से भी पूछ लो चुनौचे मैंने आप (ﷺ) से पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो पैदल चलें और सवार भी हो जाएँ। यज़ीद ने कहा अबुल ख़ैर हमेशा इब्बा (रज़ि.) के साथ रहते थे।

हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे यज़ीद बिन अय्यूब ने, उनसे यज़ीद ने उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे इब्बा (रज़ि.) ने फिर यही हदीस बयान की।

أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ أَنَّ يَزِيدَ بْنَ أَبِي حَبِيبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ ابْنَ الْخَبَرِ حَدَّثَهُ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: ((تَلَزَّيْتُ أَخِي أَنْ تَمْشِيَ إِلَيَّ تَبْتَ إِلَهُ، وَأَمَرَنِي أَنْ أَسْتَفْقِيَ لَهَا النَّبِيَّ ﷺ، فَاسْتَفْقَيْتُ، فَقَالَ ﷺ: ((لَتَمْشِيَ وَلَتَرْكَبَ)) قَالَ: وَكَانَ أَبُو الْخَبَرِ لَا يُفَارِقُ عُقْبَةَ. حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَيُّوبَ عَنْ يَزِيدَ عَنْ أَبِي الْخَبَرِ عَنْ عُقْبَةَ. فَلَا تَكُ الْخَلِيفَةُ.

## 29. किताब फ़जाइलुल मदीना

# किताब मदीना के फ़जाइल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### बाब 1 : मदीना के हरम (होने) का बयान

1867. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उनसे श्राबित बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे अबू अब्दुर्रहमान अहवल आसिम ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मदीना हरम है फ़लों जगह से फ़लों जगह तक (यानी जबले और से जबले प्रोर तक) इस हद में कोई दरख्त न काटा जाए न कोई बिदअत की जाए और जिसने भी यहाँ कोई बिदअत निकाली उस पर अल्लाह तआला और तमाम फ़रिश्ते और इंसानों की लअनत है।

(दीगर मक़ाम : 7306)

### ١- بَابُ حَرَمِ الْمَدِينَةِ

١٨٦٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا قَابُثُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَخْوَلُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَدِينَةُ حَرَمٌ مِنْ كَذَا إِلَى كَذَا، لَا يُقَطَّعُ شَجَرُهَا، وَلَا يُحْدَثُ فِيهَا حَدَثٌ. مَنْ أَخَذَ فِيهَا حَدَثًا فَلَيْتَ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ)).

[طرف ٣ : ٧٣٠٦]

**तशरीह:** हमसे मदीना का वही हुक्म है जो हमसे मक्का का है सिर्फ़ जज़ा लाज़िम नहीं आती। इमाम मालिक और इमाम शाफ़िई और अहमद और अहले हदीस का यही मज़हब है। शुअबा और इम्माद की रिवायत में इतना और ज़्यादा है या किसी बिदअती को जगह दे दे। मज़ाज़ अल्लाह बिदअत ऐसी बुरी बला है कि आदमी बिदअती को जगह देने से मलज़ून हो जाता है।

1868. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष्ठ ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि (नबी करीम ﷺ) जब मदीना (हिज़रत करके) तशरीफ़ लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने मस्जिद की ता'मीर का हुक्म दिया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ बनु नज़्ज़ार तुम (अपनी इस ज़मीन की) मुझसे क़ीमत ले लो लेकिन उन्होंने अर्ज़ किया कि हम इसकी क़ीमत सिर्फ़ अल्लाह तआला से मांगते हैं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने मुशिकीन की क़र्ज़ों के बारे में फ़र्माया और वो उखाड़ दी गई, वीराना के मुता'ल्लिक हुक्म दिया और वो बराबर कर दिया गया। खज़ूर के दरख़्तों के बारे में हुक्म दिया और वो काट दिये गये और वो दरख़त क़िबला की तरफ़ बिछा दिये गये

(राजेअ : 234)

**तशरीह:** इससे कुछ हन्फ़िया ने दलील ली है कि अगर मदीना हरम होता तो वहाँ के दरख़त आप (ﷺ) क्यों कटवाते? उनका जवाब ये है कि ये फ़ेअल ज़रूरत से बाक़ेअ हुआ यानी मस्जिद नबवी बनाने के लिये और आँहज़रत (ﷺ) ने जो किया बहुक्मे इलाही किया। आप (ﷺ) ने मक्का में भी क़िताल किया। क्या हन्फ़िया भी उसको किसी और के लिये जाइज़ कहेंगे। मुस्लिम की रिवायत में है आँहज़रत (ﷺ) ने मदीना के आसपास बारह मील तक हरम की हद क़रार दी।

1869. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे इब्बदुल्लाह ने, उनसे सईद मक़बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मदीना के दोनों पथरीले किनारों में जो ज़मीन है वो मेरी जुबान पर हरम ठहराई गई। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बनू हारिषा के पास आए और फ़र्माया बनू हारिषा! मेरा ख़याल है कि तुम लोग हरम से बाहर हो गए हो, फिर आप (ﷺ) ने मुड़कर देखा और फ़र्माया कि नहीं बल्कि तुम लोग हरम के अंदर ही हो। (दीगर मक़ाम : 1873)

1870. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुर्रहमान बिन महदी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ग़ौरी ने, उनसे अज़मश ने, उनसे उनके वालिद यज़ीद बिन शुरैक ने और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे पास ताबुल्लाह और

۱۸۶۸- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ، وَأَمَرَ بِنَاءِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((يَا أَيُّ النَّجَّارِ لَأَمْنُونِي)). فَقَالُوا: لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ تَعَالَى. فَأَمَرَ بِقُبُورِ الْمُشْرِكِينَ قُبِضَتْ، ثُمَّ بِالْعَرَبِ قَسُوتِ، وَبِالنَّخْلِ لِقَطْعٍ، فَصَفَرُوا النَّخْلَ لِقِلَّةِ الْمَسْجِدِ)).

[واجمع : ۲۳۴]

۱۸۶۹- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ سَعِيدِ الْمَشْهُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((حَرَمٌ مَا بَيْنَ لَاتِنِ الْمَدِينَةِ عَلَى لِسَانِي)). قَالَ: وَأَتَى النَّبِيُّ ﷺ بَنِي حَارِثَةَ فَقَالَ: ((أَرَأَيْكُمْ يَا بَنِي حَارِثَةَ لَقَدْ خَرَجْتُمْ مِنَ الْحَرَمِ)). ثُمَّ انْصَرَفَ فَقَالَ: ((بَلْ أَنْتُمْ قِيَةٌ)).

[طرفه بی : ۱۸۷۳]

۱۸۷۰- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ النَّخَعِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَلِيِّ رَضِيَ

नबी करीम (ﷺ) के इस सहीफ़े के सिवा जो नबी करीम (ﷺ) के हवाले से है और कोई चीज़ (शरअी अहक़ाम से मुताल्लिक) लिखी हुई सूरत में नहीं है। इस सहीफ़े में ये भी लिखा हुआ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मदीना आइर पहाड़ी से लेकर फ़लाँ मक़ाम तक हरम है, जिसने इस हद में कोई बिदअत निकाली या किसी बिदअती को पनाह दी तो उस पर अल्लाह और तमाम मलाइका और इंसानों की लअनत है। न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत मक़बूल है न नफ़ल और आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम मुसलमानों में से किसी का भी अहद काफ़ी है इसलिये अगर किसी मुसलमान की (दी हुई अमान में) दूसरे मुसलमान ने) बदअहदी की तो उस पर अल्लाह और तमाम फ़रिशतों और इंसानों की लअनत है। न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत कुबूल होगी और नफ़ल और जो कोई अपने मालिक को छोड़कर उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी दूसरे को मालिक बनाए, उस पर अल्लाह और तमाम मलाइका और इंसानों की लअनत है। न उसकी कोई फ़र्ज़ इबादत कुबूल होगी और न नफ़ल। (राजेअ: 111)

اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: مَا عِنْدَنَا خَيْرٌ إِلَّا كِتَابُ  
اللّٰهِ وَهَذِهِ الصّٰحِيفَةُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ:  
«الْمَدِينَةُ حَرَمٌ مَا تَبَنَ إِلَى كَذَا، مَنْ  
أَخَذَتْ فِيهَا حَدَثًا أَوْ آوَى مُخْبِرًا فَعَلَيْهِ  
لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا  
يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ». وَقَالَ:  
«لَعْنَةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةً، فَمَنْ أَخْفَرَ  
مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ  
أَجْمَعِينَ، لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ.  
وَمَنْ تَوَلَّى قَوْمًا يَغْتَرِبُونَ إِذَنْ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ  
لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا  
يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ».

(راجع: ۱۱۱)

### मदीनतुरसूल के कुछ तारीखी हालात

**तारीख:** मदीना मुनव्वरा या मदीनतुरसूल जिसे तय्यिबा कहते हैं, सतहे समुन्दर (समुद्र तल) से तक्रीबन 619 मीटर बुलन्द और वो मशरिफ़ की जानिब 39 दर्जा 55 दक्कीका के तूल पर और शिमाल (उत्तर) को ख़त्त-ए-इस्तवा से 24 दर्जा और 15 दक्कीका के अर्ज़ पर वाक़ेअ है, गर्मी के मौसम में उसकी हज़ारत (टेम्प्रेचर) 28 डिग्री तक पहुँच जाती है और सर्दी में दिन को सिफ़र (शून्य) के ऊपर दस डिग्री तक और रात में सिफ़र के नीचे 5 डिग्री तक आती है। सर्दी के दिनों में सुबह के वक़्त अक़षर पानी बर्तनों में जम जाता है।

ये शहर मक़तुल मुकर्रमा से उत्तर दिशा में दो सौ साठ मील के फ़ासले पर वाक़ेअ है और मुल्के अरब के हिजाज सूबे में आबादी के लिहाज़ से दूसरे नम्बर पर है। मक़तुल मुकर्रमा के बाद दुनिया ए इस्लाम का सबसे प्यारा बाबरकत मुक़द़स शहर है, जहाँ अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) आराम फ़र्मा हैं।

**वजहे तस्मिया:**— हिज़रत से पहले ये शहर यषरिब के नाम से मौसूम था, कुआन मजीद में भी ये नाम आया है, वइज़ा क़ालत् त़ाइफ़तुम्निन्हुम या अहल यषरिबा ला मुक़ाम लकुम (अल् अहज़ाब: 13) बक़ौले जुजाज ये शहर यषरिब बिन क़ानिया बिन मुह्लाइल बिन इरम बिन अबील बिन औस बिन इरम बिन साम बिन नूह (अलैहिस्सलाम) का आबाद किया हुआ है इसलिये यषरिब के नाम से मौसूम हुआ। कुछ मुअरिख़ीन (इतिहासकारों) के बयान के मुताबिक़ इसको यषरिब इसलिये कहते हैं कि एक शख़्स यषरिब नामी अम्लकी ने इस शहर को बसाया था, आख़िर में यहूदियों बनू नज़ीर व बनू कुरैज़ा व बनू केनकाअ के हाथ आ गया।

300 ईस्वी में बनू अज़द के क़बाइल औस और ख़ज़रज ने उसकी सरहद में सकूनत इख़्तियार की और 492 ईस्वी

में इस पर क़ाबिज़ हो गए। मदीना से शिमाल (उत्तर) व मशरिफ़ (पूर्व) में अब भी एक बस्ती है जिसका नाम यषरिब है अजब नहीं कि पहली आबादी उसी जगह हो और औस और ख़ज़रज ने यहूद से जुदा रहना पसन्द करके यहाँ रिहाइश इख़्तियार की हो और इसलिये इस हिस्से को भी यषरिब ही से पुकारा गया है। कुछ लोगों का ख़्याल है कि लफ़्ज़े यषरिब मिस्री कलिमा अत्रबिस से बिगड़कर बना है अगर ये सहीह हो तो प्राबित होता है कि अमालिका ने मिस्र से निकलने के बाद मदीना को बसाया उसकी यहूदियत के इस क़ौल से भी ताईद होती है कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़िलिस्तीन को जाते हुए एक जमाअत को भेजा ताकि वो इस जानिब के हालात मा'लूम करे। जब वो लोग इस तरफ़ पहुँचे और उनको हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की वफ़ात की ख़बर मिली तो उन्होंने ने शहर अत्रबिस बनाकर उसमें इक़ामत इख़्तियार कर ली इस क़ौल की बिना पर मदीना की आबादी सोलह सौ साल क़बले मसीह से शुरू होती है।

### यषरिब में इस्लाम क्योंकर पहुँचा?

मदीना मुनव्वरा में बसने वाले क़बीले ज़्यादातर यहूदी मज़हब के थे, मगर किब्रो-हमिय्यत की बिना पर उनमें बाहम इतने नज़ाअ (मतभेद) थे कि गोया एक-दूसरे के खून के प्यासे थे। औस व ख़ज़रज की ख़ाना-जंगी (गृहयुद्ध) को एक सदी का ज़माना गुजर चुका था कि सय्यिदे आलम (ﷺ) की नुबुव्वत व तब्लीग़ का चर्चा मक्का व नवाह में फैला, उसी दौरान उनमें ख़ानदान अब्दुल अशहल के चन्द आदमी कुरैश को अपना हलीफ़ (साथी) बनाने की गरज़ से मक्का आए और इस्लाम का चर्चा सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने तन्हाई में उनको इस्लाम की पाक ता'लीम से आगाह किया और कुअनि पाक की चन्द आयतें सुनाईं। उनमें अयास बिन मुआज़ पर इस तल्क़ीन का बहुत अप्रर हुआ और उन्होंने मुसलमान होने का इरादा किया मगर अमीरे वफ़द अनस बिन राफ़ेअ ने कहा कि जल्दी न करो अभी हालात का मुतालआ करो। चुनौचे ये लोग यूँ ही वापस हो गए।

10 नबवी में क़बीला ख़ज़रज के छः आदमी मौसमे हज्ज में मक्का आए तो अक्बा यानी उस पहाड़ी घाटी में जो मिना जाने वाले बाएँ हाथ पर चढ़ाई की सीढ़ियों से ज़रा परे पड़ती है, रात के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) उनसे मिले और उनको इस्लाम की दा'वत दी, चुनौचे ये हज़रात मुशरफ़ बा इस्लाम हो गए और उसका नाम इक्बा उल्ला हुआ। उनके ज़रिये से मदीना में इस्लाम का चर्चा फैला।

दूसरे साल बारह अस्त्राब आए और उस इक्बा में आँहज़रत (ﷺ) से तन्हाई में गुफ़्तगू करने का वक़्त मुअय्यन कर लिया, चुनौचे ख़ूब ख़ुलकर बातें हुईं और उन्होंने ये इत्मीनान करके कि बेशक आप (ﷺ) रसूल हैं, इस्लाम कुबूल कर लिया। हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि.) को मुबल्लिगो-इस्लाम बनाकर उनके साथ कर दिया और हज़रत अस्अद बिन ज़रारह (रज़ि.) ने उनको अपने मकान में ठहराया। अब दारे बनी ज़फ़र में इस्लामी मिशन का दफ़्तर कायम कर दिया गया। जो हज़रात इस्लाम ला चुके थे। वो मज़हबी ता'लीम पाते और जो नए आते उनको वा'ज़ सुनाया जाता था। इस मुख़िल्लाना प्रचार के बेहतरीन नतीजे निकले और रफ़्ता-रफ़्ता यषिब के नामवर क़बीले अब्दुल अशहल का हर मद व औरत इस्लाम के आगोश में हो गया। अब यषरिब में एक क़बीर जमाअत इस्लाम की नुसरत और पैग़म्बरे इस्लाम के पसीने की जगह खून बहाने के लिये तैयार हो गई। कुछ दिनों बाद आँहज़रत (ﷺ) भी यषरिब में हिज़रत फ़र्माकर तशरीफ़ ले आए। उस वक़्त से यषिब को मदीनतुरसूल (रसूल ﷺ का शहर) बनने का शर्फ़ (श्रेय) हासिल हुआ। मदीनतुरसूल का चप्पा-चप्पा मुसलमानाने आलम के लिये बाअिषे स़द एहताराम है। इस मुक़द्दस शहर में वो मुबारक मस्जिद है जिसमें बैठकर सय्यिदुल अम्बिया (ﷺ) ने इस्लाम की रोशनी को चारों दिशाओं में फैलाया और इस मुबारक शहर में वो मुक़द्दस जगह है जहाँ नबी करीम (ﷺ) की क़ब्र ह और आप (ﷺ) के लाखों स़हाबा यहाँ की मिट्टी के अंदर सोये हुए हैं। इसके अलावा तारीख़ी याददाश्तें मुसाफ़िरीन मदीना के लिये बतौर हदिया पेश की जाती हैं।

हिज़रत में तशरीफ़ आवरी के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) मदीना से जुनूबी सिम्त (दक्षिण दिशा) के कुबा में क़बीला बनी अमर बिन औफ़ के मेहमान हुए थे। कुल्थुम बिन हिदम का घर आप (ﷺ) का क़यामगाह बना और सअद बिन ख़ष्अमा का घर आपकी मर्दाना नशिस्तगाह, ये दोनों घर नुज़ूले क़दूमे नबवी के सबब बड़ी शान रखते हैं। मस्जिदे कुबा के जुनूब में किब्ला की दिशा में 40 फ़ीट की दूरी पर दो कुब्बे बैजवी शकल के हैं, उनमें एक कुब्बा जो मक़ामुल उमरा के नाम से मशहूर है, यही कुल्थुम बिन हिदम का मकान था, और उससे मिला हुआ कुब्बा जो बैते फ़ातिमा कहलाता है ये सअद बिन ख़ष्अमा का घर

था, मस्जिद कुबा के सहन में जो कुब्बा मुबारके नाका (कूट के बैठने की जगह) कहलाता है यहाँ हुजूर (ﷺ) की कूटनी बैठी थी जहाँ इस वक़्त मस्जिदे कुबा है वो हज़रत कुलथुम का मरबूद था कि खजूरें सुखाने के लिये वहाँ फैलाते थे, मदीना मुनव्वरा में आप (ﷺ) हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) के मकान पर उतरे थे, ये मकान मुहल्ला ज़िकाकुल जस्सा में मस्जिद की सूत में अब मौजूद है, जिसमें मेहराब भी है। और कुब्बा भी उसी बैरूनी दीवार पर एक पत्थर नसब है जिसमें आबे जर (सोने के पानी) से लिखा हुआ है हाज़ा बैतु अबू अय्यूब अल् अंसारी अल्लख हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) के मकान के जुनूबी सिम्त हज़रत जा'फ़र सादिक (रह.) का मकान था जो इस वक़्त दारे नाइबुल हरम कहलाता है। मस्जिद के मशरिक में हज़रत इम्मान (रज़ि.) के दो छोटे बड़े मकान थे। बवक्ते शहादत आपकी सकूनत बड़े मकान में थी, उस मकान की जाली के ऊपर अब भी क़त्ले इम्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) लिखा हुआ है, बक़ी अके रास्ते से उत्तर की ओर हज़रत सिदीक (रज़ि.) का मकान था, जिसमें आप (रज़ि.) की वफ़ात हुई, जावियतुस्सिमान से सटे हुए उत्तरी ओर एक छोटा सा कुबा वो शैरे-इस्लाम ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) का मकान था, रिवात ख़ालिद के पीछे अमर बिन आस (रज़ि.) फ़ातेहे-मिस्र (मिस्र के विजेता) का मकान था, मस्जिद के ग़रबी जानिब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का दूसरा मकान था ये अब बाबुस्सलाम के उत्तर में एक खिड़की की शक्ल में है उस पर ये हदीष लिखी हुई है, ला यब्कि यन्न फिल मस्जिदि खौखतु अहदिन इल्ला खौखतु अबी बक्क

### हरमे मदीना शरीफ़ का बयान :

अंदाज़न बारह मील तक मदीना मुनव्वरा की हद्दे हरम है, जिसके अन्दर शिकार करना, दरख़्त काटना, घास उखाड़ना हराम है। हाँ! जानवरों के लिये घास या पत्ते वगैरह तोड़ने जाइज़ हैं। हदीष शरीफ़ में आया है, अन अबी हुरैरत अन्नन नबिय्य (ﷺ) क़ाल अल्लाहुम्म इन्न इब्राहीम ख़लीलुक व नबिय्युक व इन्नक हरम्त मक़त अला लिसानि इब्राहीम अल्लाहुम्म व अना अब्दुक व नबिय्युक व इन्नी उहरिमु मा बैन लाबैतिहा (इन्ने माजा) अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) तेरे ख़लील और पैग़म्बर थे जिनकी जुबान पर तूने मक्का को बलदुल हराम (पवित्र शहर) क़रार दिया। ऐ अल्लाह! मैं तेरा बन्दा और पैग़म्बर हूँ और मदीना को उसके दोनों पथरीले किनारों के बीच तक हरम क़रार देता हूँ। नबी (ﷺ) ने मदीना शरीफ़ के बारे में ये दुआ की अल्लाहुम्म हब्बिब इलैनल मदीनत कहुब्बिन मक़त औ अशहू यानी ऐ अल्लाह! मदीने को हमें मक्का की तरह बल्कि उससे भी ज़्यादा महबूब बना दे (बुखारी)। एक रिवायत में मदीना की हुदूदे हरम और से घ़ौर तक बयान की गई हैं, ये मदीना के आसपास के पहाड़ों के नाम हैं। मदीना शरीफ़ के फ़ज़ाइल में बहुत सी अह्दादीष आई हैं चन्द हदीषें यहाँ दर्ज की जाती हैं, क़ाल क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) मनिस्तता अअय्यमूत बिल्मदीनति फ़ल्यमुत बिहा फ़इन्नी अशफ़उ लिमय्यमूतु बिहा (रवाहु तिमिज़ी) आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि जो शख़्स मदीना शरीफ़ में रहे और मदीने ही में उसको मौत आए मैं उसकी सिफ़ारिश करूँगा। बैहक़ी ने शुअबुल ईमान में एक शख़्स आले ख़ताब से रिवायत की है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स ख़ालिस्स पाक निय्यत के साथ मेरी ज़ियारत के लिये आया, क़यामत के दिन वो मेरे पड़ौस में होगा और जो मदीना शरीफ़ में रहकर स़न्न व शुक्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा मैं उसके लिये क़यामत के दिन गवाह और सिफ़ारिशी होऊँगा और जो हरमैन शरीफ़ेन में मौत पाएगा वो क़यामत के दिन अमन पाने वालों में होगा। नबी करीम (ﷺ) जब सफ़र से वापस मदीना शरीफ़ लौटते तो मकानाते मदीना की दीवारों को देखकर मग्न हो जाते और सवारी को तेज़ कर देते। (बुखारी) ये भी आया है कि मदीना शरीफ़ के दरवाज़ों पर फ़रिश्ते पहरा देते हैं। इस पाक शहर में त़ाज़न और दज़ाल दाख़िल नहीं हो सकते।

हरमे नबवी का बयान :— हरमे नबवी से मुराद नबी (ﷺ) की पाक व मुबारक मस्जिद और उसका माहौल है, ये सरापा नूर इमारत शहरे मदीना मुनव्वरा के बीच में किसी क़दर मशरिक (पूरब) की ओर झुकी हुई है। यहाँ की फ़िज़ा (वातावरण) लतीफ़ मंज़र जमील (सुहानी और दिल लुभाने वाली) और हेयत मुस्ततील है। क़दीम (पुरानी) मस्जिद की कुल इमारत सुख़ (लाल) पत्थर की है उसका तूल उत्तर से दक्षिण तक औसतन 116.25 मीटर है (फ़्रांसीसी पैमाना है जो 140 इंच के बराबर होता है।) इस लिहाज़ से क़दीम हरम शरीफ़ का तूल एक सौ उन्तीस गज़ से कुछ ज़्यादा है। उसका अर्ज़ मशरिक से मरिब तक

किब्ला की तरफ़ 86.35 मीटर यानी 96 गज़ है। बाबे शामी की तरफ़ से अर्ज़ 66 मीटर सवा 73 गज़ रह जाता है। बनावट के लिहाज़ से हरमे नबवी दो हिस्सों में मुन्कसिम (विभाजित) हो सकता है मस्जिद और स्रहन। हूदूदे मस्जिद की इत्तिदा उस जगह से होती है जहाँ खड़े होकर हज़रत इम्रान (रज़ि.) नमाज़ पढ़ाया करते थे यानी किब्ला रख दीवार से स्रहन एक तरफ़ और बाबे रहमत और बाबुन्निसा के बीच मस्जिद ही मस्जिद है। ये सारा हिस्सा गुम्बदों से ढका हुआ है जो मेहराबों पर कायम हैं उन मेहराबों को एक किस्म के सख्त पत्थर के सुतूनों (खम्भों) पर खड़ा किया गया है उन पर सगे-मरमर की तह चढ़ी हुई है और ऊपर सोने के पानी से पच्चीकारी कर दी गई है, दूसरा स्रहन है जिसका नाम हुस्वह है उसकी शकल शामी दरवाज़े से मुस्ततिल है उसके पास तीन तरफ़ तीन दालान अहाज़े किये हुए हैं; बरामदों में सुतून हैं जिनके ऊपर मेहराब और मेहराबों के ऊपर गुम्बद सरबुलन्द और बादलों से सरगोशियाँ (बातें) करते हुए नज़र आते हैं। हरम शरीफ़ के कुल सुतूनों की ता'दाद जो दीवारों के साथ मुल्तसिफ़ (मिली हुई) हैं तीन सौ सत्ताइस तक पहुँच जाती है, उनमें 22 हुजरा शरीफ़ के अंदर हैं। शामी दरवाज़े की ड्योढ़ी में मदरसा मजीदिया वाक़ेअ है, उसी वजह से हरम शरीफ़ में दाखिल होने के रास्ते के अंदरूनी हिस्से या 'नी ड्योढ़ी का नाम बाबे तवस्सुल रखा गया है। जिहते मरिब की तरफ़ ख्वाजा-सराओं के बैठने की जगह है जो गुलाम बेचने के ज़माने में ख़स्सी शुदा गुलामों की शकल में हरमे नबवी की खिदमत के लिये नज़र कर दिये जाते थे। अब ये ज़ालिमाना तरीक़ा मौक़ूफ़ (समाप्त) हो चुका है। पिछली तरफ़ शरकी बरामदे की लम्बाई के साथ साथ शीशम की लकड़ी का एक जालीदार शैद है जो औरतों के लिये ख़ास है। हरम शरीफ़ के अंदर औरतें यहीं बैठती हैं और यही नमाज़े पढ़ती हैं। उसे क़प्सुन्निसा कहा जाता है। इस बरामदे के जुनूब (दक्षिण) में एक चबूतरा है जो प्लेटफ़ॉर्म की शकल में साढ़े तेरह गज़ लम्बा और नौ गज़ चौड़ा है और ज़मीन से करीब सोलह इंच बुलन्द है, यहाँ नबी करीम (ﷺ) के ज़मान-ए-मुबारक में अस्हाबे सुफ़्फ़ा (रज़ि.) बैठा करते थे। ये नादार तलब-ए-इस्लामिया की जमाअत थी जिन्हें खाना कपड़ा और दीगर ज़रूरियात दारुल इलूम मुहम्मदिया से पहुँचाया जाता था। इस चबूतरे के जुनूब (दक्षिण) में एक और चबूतरा है जो उससे छोटा है ये चबूतरा मक्क़सूरा शरीफ़ से मुत्तसिल शिमाल (उत्तर) की जानिब है उस जगह नबी करीम (ﷺ) नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करते थे। रौज़ा शरीफ़ मक्क़सूरा शरीफ़ के मरिब (पश्चिम) में है, रसूलुल्लाह (ﷺ) के मिम्बर शरीफ़ और रौज़ा शरीफ़ के बीच यही जगह है जिसको आप (ﷺ) ने जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी बतलाया है और ये भी फ़र्माया है कि ये टुकड़ा सारा जन्नत में रखा जाएगा।

इस मुबारक ज़मीन का तूल अंदाज़े से पौने सत्ताईस गज़ और अर्ज़ अंदाज़न पौने सत्रह गज़ है, राज़ा शरीफ़ के साथ पीतल का जंगला है जिससे मुत्तसिल वो इज़ाफ़े हैं जो इस हरम शरीफ़ में हज़रत इमर (रज़ि.), हज़रत इम्रान (रज़ि.) के अय्याम (कार्यकाल) में किये गये थे, ये दोनों इज़ाफ़े जुनूब (दक्षिण) की तरफ़ हैं, पीतल के जंगले की ऊँचाई एक गज़ दो गिरह है। राज़ा शरीफ़ अपने शर्फ़-मर्तबत के लिहाज़ से हर वक़्त फ़िदाइयाने रसूल (ﷺ) से भरा रहता है। राज़ा शरीफ़ के मरिबी (पश्चिमी) जानिब वो जगह है जहाँ हुजूर (ﷺ) नमाज़ पढ़ाया करते थे जो अपनी कमाल बाहुज्जते और जमाल सन्नअत के लिहाज़ से अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है और ये किब्ला की तरफ़ मक्क़सूरा शरीफ़ की सीध में है। हुजूर ने उसकी बुनियाद हिज्रत मुबारक के दूसरे साल शाबान की पन्द्रहवीं तारीख ब-रोज़ अल इन्नैन (मंगलवार) को रखी थी। ये उस दिन का वाक़िया है जब अल्लाह अज़ व जल्ल ने हुजूर को का'बा शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया था। किब्ला के मरिब की तरफ़ मिम्बर शरीफ़ है जो सगे मरमर का बना हुआ है और उस पर सोने के पानी से निहायत आला दर्जे के नक्शो-निगार किये गये हैं। ये बेहद खूबसूरत और सन्नअत का बेहतरीन नमूना है, उसे तुर्की के सुल्तान मुराद घालिघा मरहूम ने 998 हिजरी में हरम शरीफ़ के लिये बत्तौर हदिया पेश किया था यही वो जगह है जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) का मिम्बर रखा था हरम शरीफ़ के फ़र्श मुबारक पर अन्वाअ व अक्साम के बेशकीमत सजावे बिछे हुए हैं, क़ालीन भी बड़ी ता'दाद मौजूद हैं; बिल ख़ुसूस राज़ा में तो बेशकीमत चीज़ों की भरमार है। हरम शरीफ़ के पाँच दरवाज़े हैं। सदर दरवाज़े बाबुल इस्लाम और बाबुर्रहमा दोनों मरिब की तरफ़ हैं। बाब मजीदी शिमाल (उत्तर) की जानिब, बाबुन्निसा और बाबे जिब्रईल दोनों मरिब की तरफ़ हैं। इशा के बाद उन दरवाज़ों को बन्द करके फ़िफ़ल (ताला) लगा दिया जाता है। फिर तहज्जुद की अज़ान के वक़्त खोल दिया जाता है इमर फ़ारूक (रज़ि.) के ज़माने से ये चला आ रहा है।

मौजूदा हुक्मते सज़्ज़दिया अरबिया ने हरम मस्जिदे नबवी की तौसीअ (विस्तार) इस क़दर किया है कि एक ही वक़्त हजारों नमाज़ी नमाज़ अदा करते हैं और तअम्मुरे जदीद (नवनिर्माण) पर करोड़ों रुपया बड़ी फ़राख़दिली के साथ ख़र्च करके

न सिर्फ़ मस्जिदे नबवी बल्कि आसपास के सारे इलाक़े को वसीअतर (लम्बा-चौड़ा) बनाकर सफ़ाई सुथराई का ऐसा नादिर नमूना पेश किया है कि देखकर दिल से दुआएँ निकलती हैं अल्लाह पाक इस हुक्मत को दुश्मनों की नज़रेबंद से बचाए और ख़िदमतते हरमैन शरीफ़ेन के लिये हमेशा कायम रखे, आमीन।

**गुम्बदे ख़िज़राअ के हालात :-** नबी करीम (ﷺ) ने 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी यौमे अल इन्नैन (सोमवार) को हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुजरे में इंतिकाल किया, उसी जगह लहद शरीफ़ में आप (ﷺ) के जिस्मे अत्हर को लिटाया गया है, आप (ﷺ) का सरे मुबारक बजानिबे गुरुब और रूप मुबारक बजानिब जुनूब है, ज़मीन का ये टुकड़ा भी अपनी सआदते अबदी (अनंतकालीन सौभाग्य) पर जितना नाज़ करे कम है। 22 जमादिल अव्वल 13 हिजरी को सय्यदिना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की वफ़ात हुई। आप आँहज़रत (ﷺ) की पुस्तकी जानिब दफ़न किये गए। उनका सर हज़ूर (ﷺ) के शान-ए-मुबारक के मक्काबिल यानी पास एक फ़िट नीचे सरका हुआ रहा, फिर 27 जिल्हिज 23 हिजरी को बुध के दिन सय्यदना इमर फ़ारूक़ (रज़ि.) की वफ़ात हुई। आप बइजाज़त सिद्दीक़ा (रज़ि.) यहाँ दफ़न हुए, आपका सर हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) के शाने के मक्काबिल यानी ज़रा नीचे सरका हुआ रहा।

अहदे फ़ारूकी में हुज़रा शरीफ़ा की दीवारें साबिक़ बुनियादों (पुरानी नीवों) पर दोबारा कच्ची ईंटों से बनवा दी गई थीं। अल्लामा सम्मूदी ने पैमाइश भी की है, जुनूबी (दक्षिणी) दीवार अंदर से 10<sup>2/3</sup> हाथ, शिमाली (उत्तरी) 11<sup>5/13</sup> हाथ, शक्की व गर्बी दोनों दीवारें 17<sup>5/8</sup> कैंचाई 15 हाथ थी। फिर अमीर मदीना इमर (रह.) बिन अब्दुल अज़ीज़ ने हुज़रा शरीफ़ को बहालते कायम रखा और उसके गिर्द बहुत अमीक (गहरी) बुनियाद खोदकर पत्थर की एक मख़मस दीवार कायम कर दी, हुज़रा शरीफ़ा की छत लकड़ी की बना दी और ऊपर तले तख़्तों को कोलों से जड़ दिया, उसके ऊपर मोमजामा बिछा दिया। ताकि बारिश का पानी अंदर न जाए न छत पर अषर करे, बाद में मुस्लिम सुल्तानों ने उसकी हिफ़ज़त व मरम्मत के लिये बहुत कुछ तजदीद व इस्लाह की। 557 हिजरी में सुल्तान नूरुद्दीन जंगी शहीद ने जबकि वो ईसाइयों के साथ मलीबी जंगे अज़ीम में मशगूल था, ख़्वाब देखा कि आँहज़रत (ﷺ) दो गुर्बा चश्म आदमियों की तरफ़ इशारा कर रहे हैं। अन्जिदनी व अन्किज़्नी पिन हाज़ेन चोंककर सुल्तान की आँख खुल गई और फ़ौरन् तेज़ रू सौंडनियाँ मंगाकर चन्द हमराही साथ लिये। न दिन देखा न रात। रवाँ दवाँ सोलह दिन में मिस्र से मदीना पहुँचा और जितने भी बैरूनी बाशिन्दे मदीना में मुकीम (ठहरे हुए) थे सबकी दा'वत की। ये मैदान अब भी दारुज़िन्नाफ़ा के नाम से मशहूर है, सुल्तान ने उन पर एक गहरी निगाह डाली मगर वो दो शख्स नज़र न आए जो ख़्वाब में दिखाए गए थे, पूछा क्या और कोई भी बाक़ी है? मा' लुम हुआ कि दो मरिबी दरवेश गोशानशीन बाक़ी रह गए हैं। चुनाँचे वो बुलाए गए। उनको देखते ही सुल्तान ने पहचान लिया कि उन्हीं की तरफ़ आँहज़रत (ﷺ) ने इशारा किया था। उनको लिये हुए सुल्तान उनकी क़यामगाह पर आया देखा कि इधर-उधर चंद किताबें पड़ी हुई हैं ज़मीन पर एक मा' मूली टाट पड़ा हुआ है और उस पर मुसल्ला बिछा हुआ है और चन्द बर्तन रखे हैं जिनमें कुछ अनाज है। बादशाह ख़ामोश सोच रहा था कि ख़्वाब का क्या मक़सद है, हैरान था कुछ समझ न सका दफ़अतन् उसके दिल में एक इल्का हुआ और उसने बिछा हुआ टाट और मुसल्ला उठा लिया। देखा तो उसके नीचे गड्ढा है जिस पर पत्थर रखा हुआ है पत्थर उठाया तो देखा कि घूस की तरह सुरंग खोदी गई है और वो सुरंग अंदर ही अंदर आप (ﷺ) के जिस्मे अनवर के क़रीब पहुँच गई है।

ये देखकर सुल्तान (रह.) गुस्से से लरज़ने लगा और सख़्ती से तफ़्तीशे हाल करने लगा, आख़िर दोनों ने इक्रार किया कि वो नसरानी हैं जो इस्लामी वज़अ में यहाँ आए हैं और उनके ईसाई बादशाह ने जसदे मुहम्मदी (ﷺ) निकाल लाने के लिये उनको भेजा है। उन हालात को सुनकर बादशाह (रह.) की अजीब कैफ़ियत हुई वो थरथर कांपने और रोने लगा। आख़िर उन दोनों को अपने सामने क़त्ल करा दिया और मख़मस दीवार के गिर्दागिर्द इतनी गहरी खन्दक खुदवाई कि पानी निकल आया फिर लाखों मन सीसा पिघलवाकर उसमें डलवाया और ज़मीन की सतह तक सीसे की एक ज़मींदोज़ (भूमिगत) ठोस दीवार खड़ी कर दी कि किसी रुख़ जसदे मुतहहह तक कोई दुश्मन रसाई न पा सके।

सुल्तान महमूद बिन अब्दुल हुमैद इब्मानी के ज़माने में कुब्बा शरीफ़ में कुछ शिगाफ़ आ गया था चुनाँचे 1233 हिजरी में सुल्तान ने उसकी तजदीद कराई ऊपर का हिस्सा उतारकर अज़सरे नौ (नये सिरे से) ता' मीर किया गया और उस पर गहरा



सब्ज़ रोगान (हरा रंग) फेरा गया जिसकी वजह से उसका नाम कुब्ब-ए-ख़िज़रा हुआ उसके बाद धूप और बारिश से जब उसका रंग हल्का हुआ तो यही सब्ज़ रंग का रोगान चढ़ाकर उसको पुख्ता और रोशन किया जाता रहा। दीवार मख़मस के चारों ओर मेहराबों में जालियाँ लगी हुई हैं, ये जालियाँ 888 हिजरी में सुल्तान कात्तबानी की तरफ़ से मेहमल मिस्री के साथ सत्तर ऊँटों पर लदकर आई, जाली के साथ दुनिया का वो बेमिज़ाल मुस्लिफ़ भी मुस्तक़िल एक ऊँट पर मेहमूल होकर आया था जो शाहीन नूरी खुशनवीस ने लिखा था, जालीदार मक्सूरा और दायरा मख़मस के बीच चारों तरफ़ सात और दस फ़िट के बीच बरामदा छूटा हुआ है जिस पर संगे मरमर का फ़र्श है।

मवाजे शरीफ़ में पीतल की जाली लगी हुई है, बाकी तीन तरफ़ तांबा और उस पर गहरा पुख्ता सब्ज़ रोगान चढ़ा हुआ है उसका नाम शबाक है, ये बशक्ले मुस्ततील है और उसका जुनूबी (दक्षिणी) व शिमाली (उत्तरी) हर ज़िला साढ़े सत्तर गज़ और शर्की व गर्बी ज़लज़ साढ़े सोलह गज़ है। ये शिबाक साथ अपने अंदरूनी के मक्सूरा कहलाता है। अल्लाहुम्मा इल्लि अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद; मौजूदा हुकूमते सऊदिया अरबिया ने इन तमाम हिस्सों के इस्तिहकाम में जिस क़दर कोशिश की है बल्कि सारे शहरे मदीना की तरक्की और आबादी के लिये जो मसाज़ी काम में लाई जा रही हैं उनकी तफ़्सीलात के लिये यहाँ मौक़ा नहीं है। हक़ ये है कि इस हुकूमत ने ख़िदमते हरमेन शरीफ़ेन का हक़ अदा कर दिया है। मदीना मुनव्वरा से मुत्तसिल ही एक बड़ा ज़बरदस्त दारुल इलूम जामिआ इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के नाम कायम किया है, जिसमें तमाम दुनिया-ए-इस्लाम के सैकड़ों नौजवाब हुकूमते सऊदिया के खर्च पर तहसीले इलूम में मशगूल हैं। अल्लाह पाक इस हुकूमत की हमेशा मदद फ़र्माए और इसे ज़्यादा से ज़्यादा मुस्तहक़म करे। शाह फ़ैसल को ज़न्नत नसीब करे जो हरमेन-शरीफ़ेन की ख़िदमत के लिये जुम्ला वसाइल मुम्किना वक्फ़ किये हुए हैं अल्लाहुम्मा अय्यदह बिनसहल अज़ीज़। आमीन!!

## बाब 2 : मदीना की फ़ज़ीलत और बेशक मदीना (बुरे) आदमियों को निकालकर बाहर कर देता है

1871. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद ने, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबुल हुबाब सईद बिन यस्सार से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे एक शहर (में हिज़रत) का हुक्म हुआ है जो दूसरे शहरों को खा लेगा। (यानी सबका सरदार बनेगा) मुनाफ़िक्कीन उसे यज़रिब कहते हैं लेकिन उसका नाम मदीना है वो (बुरे) लोगों को इस तरह बाहर कर देता है जिस तरह भट्ठी लोहे के ज़ंग को निकाल देती है।

हज़रत इमाम मालिक बिन अनस (रह.) अइम्म-ए-अरबआ में से एक मशहूरतरीन इमाम हैं, जो अनस बिन मालिक बिन अबी आमिर के बेटे और अस्बह्वी हैं उनकी कुत्रियत अबू अब्दुल्लाह है। 95 हिजरी में पैदा हुए और मदीना तय्यिबा में 84 साल की उम्र में 179 हिजरी में वफ़ात पाई, आप न सिर्फ़ हिजाज़ के इमाम थे बल्कि हदीष व फ़िक़ह में तमाम मुसलमानों के मुक्तदा थे। आपके फ़ख़ के लिये इसी क़दर काफ़ी है कि इमाम शाफ़िई आपके शागिर्दों में से हैं, आपने जुहरी, यह्या बिन सईद, नाफ़ेअ, मुहम्मद बिन मुक़दिर, हिशाम बिन ज़व्वा, यज़ीद इब्ने असलम, रबीआ बिन अबू अब्दुर्रहमान, और उनके अलावा बहुत से हज़रात से इल्मे हदीष हासिल किया और आपसे इस क़दर मख़लूक ने रिवायत की जिनका शुमार नहीं हो सकता। आपके शागिर्द पूरे मुल्क के इमाम बने जिनमें इमाम शाफ़िई, मुहम्मद बिन दीनार, अबू हाशिम अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम शामिल हैं जो अपने इल्म व अमल के लिहाज़ से आपके शागिर्दों में बेनज़ीर माने गए हैं इसके अलावा मुईन बिन ईसा, यह्या बिन यह्या,

## ٢- بَابُ فَضْلِ الْمَدِينَةِ وَأَنَّهَا تَقْلِي النَّاسَ

١٨٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْحُبَابِ سَعِيدَ بْنَ يَسَارٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَمْرٌ بِقَرْنٍ تَأْكُلُ الْقُرَى، يَقُولُونَ: قَرْبٌ، وَهِيَ الْمَدِينَةُ، تَقْلِي النَّاسَ كَمَا تَقْلِي الْكَبْشَ عَثَ الْخَنَازِيرُ)).

अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अम्बी, अब्दुल्लाह बिन वहब जैसे लोगों को शुमार नहीं; यही इमाम बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिजी, अहमद बिन हंबल और यह्या बिन मुईन मुहदिषीने किराम के असातिज़ा हैं। जब हदीष का दर्स देते तो वुजू फ़र्मा कर मस्नद पर तशरीफ़ लाते। दाढ़ी में कँधा करते, खुशबू लगाते और निहायत बा-वक्रार और पुरहेयत होकर बैठते और फ़र्माया करते कि मैं ये एहतिमाम हदीषे नबवी की अज़मत करने के लिये करता हूँ। अबू अब्दुल्लाह इमाम शाफ़िई फ़र्माते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि आँहज़रत (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ फ़र्मा हैं, लोग आसपास हैं और इमाम मालिक हुज़ूर के सामने मुअहबाना खड़े हुए हैं। आँहज़रत (ﷺ) के सामने मुशक का ढेर रखा हुआ है और आप मुट्टियाँ भर-भरकर मुशक व अम्बर इमाम मालिक (ﷺ) को दे रहे हैं और इमाम मालिक उसे लोगों पर छिड़क रहे हैं। मुतरफ़ ने कहा कि मैंने उसकी ता'बीर इल्मे हदीष की ख़िदमत और इतिबाअे सुन्नत सम्पत्ती, इमाम शाफ़िई फ़र्माते हैं कि एक बार मैंने हज़रत इमाम मालिक के मकान के दरवाज़े पर कुछ ख़ुरासान के घोड़ों की जमाअत और कुछ मिस्र के खच्चरों के गोल देखे जिनसे बेहतर मैंने कभी नहीं देखे थे। मैंने इमाम से अर्ज़ किया कि ये कैसे अच्छे हैं, आपने फ़र्माया कि ऐ अबू अब्दुल्लाह! ये तमाम मेरी जानिब से आपके लिये तोहफ़ा है, कुबूल कीजिए मैंने गुज़ारिश की अपनी सवारी के लिये कोई जानवर रख लीजिए। जवाब दिया कि मुझे अल्लाह से शर्म आती है कि जिस ज़मीन को रसूलुल्लाह (ﷺ) की आरामगाह बनने का शर्फ़ हासिल है मैं उसे किसी जानवर के खुरों से रौंदकर गुज़रूँ आपके मनाकिब के लिये दफ़ातिर भी नाकाफ़ी हैं। रहिमहुल्लाहु व रहमतन वासिअतन, आमीन!)

### बाब 3 : मदीना का एक नाम ताबा भी है

1872. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा कि हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा कि मुझसे अमर बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अब्बास इब्ने सहल बिन सअद ने और उनसे अबू हुमैद सअदी (रज़ि.) ने ये बयान किया कि हम ग़ज़वए तबूक से नबी करीम (ﷺ) के साथ वापस होते हुए जब मदीना के करीब पहुँचे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये ताबा आ गया। (राजेअ : 1471)

ताबा और तय्यिबा दोनो मदीना मुनव्वरा के नाम हैं, जो लफ़्ज़ तय्यिब से मुश्तक़ हैं जिसके मा'नी पाकीज़गी के हैं यानी ये शहर हर लिहाज़ से पाकीज़ा है। ये इस्लाम का मरकज़ (केन्द्र) है, यहाँ पैगम्बरे इस्लाम, हादी-ए-आज़म (ﷺ) आराम फ़र्मा रहे हैं। हुकूमते सऊदिया अरबिया अय्यदहल्लाह तआला ने इस शहर की सफ़ाई सुथराई, पाकीज़गी, आबादकारी में वो ख़िदमात अंजाम दी हैं जो रहती दुनिया तक यादगारे आलम रहेंगी।

### बाब 4 : मदीना के दोनों पथरीले मैदान

1873. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब जुहरी ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) फ़र्माया करते थे अगर मैं मदीना में हिरन चरते देखूँ तो उन्हें कभी न छेड़ूँ क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मदीना की ज़मीन दोनों पथरीले मैदानों के बीच में हरम है।

### ۳- بَابُ الْمَدِينَةِ طَابَةٌ

۱۸۷۲- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ قَائِمٍ : حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ بْنِ سَهْلٍ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ أَبِي حَسْبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَلْبَسْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مَنْ تَوَلَّا حَتَّى أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ فَقَالَ : ((هَلِو طَابَةٌ)). (راجع: ۱۴۸۱)

### ۴- بَابُ لَابِقِ الْمَدِينَةِ

۱۸۷۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ : لَوْ رَأَيْتُ الطَّيْرَ بِالْمَدِينَةِ تَرْتَعُ مَا دَعَرْتُهَا، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَا تَيْنَ لَا يَنْتَهَا حَرَامٌ)).

(राजेअ: 1869)

[راجع: 1869]

वहाँ शिकार करना जाइज़ नहीं। इस हदीष से भी साफ़ ज़ाहिर हुआ कि मदीना हरम है। तअज्जुब है उन हज़रात पर जो मदीना के हरम होने का इंकार करते हैं जबकि हरमे मदीना के मुता'ल्लिक़ स़राहत के साथ कितनी हदीषे नबविया मौजूद है।

### बाब 3 : जो शख़्स मदीना से नफ़रत करे

1874. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमें शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग मदीना को बेहतर हालत में छोड़ जाओगे फिर वो ऐसा उजाड़ हो जाएगा कि फिर वहाँ वहशी जानवर, दरिन्दे और परिन्दे बसने लगेंगे और आख़िर में मुज़ैना के दो चरवाहे मदीना आएँगे ताकि अपनी बकरियों को हॉक ले जाएँ लेकिन वहाँ उन्हें सिर्फ़ वहशी जानवर नज़र आएँगे आख़िर प्रनिय्यतुल विदाअ तक जब पहुँचेंगे तो अपने मुँह के बल गिर पड़ेंगे।

ये पेशीनगोई कुर्बे क़यामत से मुता'ल्लिक़ है। हर कमाले राज़वाले उसूले कुदस्त है। तो कुर्बे क़यामत ऐसा होना भी दूर नहीं है और फ़र्मानि नबवी (ﷺ) अपनी जगह बिलकुल हक़ है।

1875. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा से, उन्हें उनके वालिद इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने और उनसे सुफ़यान बिन अबी जुहैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना कि आपने फ़र्माया कि यमन फ़तह होगा तो कुछ लोग अपनी सवारियों को दौड़ाते हुए लाएँगे और अपने घरवालों को और उनको जो उनकी बात मान जाएँगे सवार करके मदीना से (वापस यमन को) ले जाएँगे काश! उन्हें मा'लूम होता कि मदीना ही उनके लिये बेहतर था और इराक़ फ़तह होगा तो कुछ लोग अपनी सवारियों को तेज़ दौड़ाते हुए लाएँगे और अपने घरवालों को और जो उनकी बात मान लेंगे अपने साथ (इराक़ वापस) ले जाएँगे काश! उन्हें मा'लूम होता

### 5- بَابُ مَنْ رَغِبَ عَنِ الْمَدِينَةِ

1874- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَبِّحِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((تَرْكُونَ الْمَدِينَةَ عَلَى غَيْرِ مَا كَانَتْ، لَا يَفْشَاهَا إِلَّا الْغَوَاةُ - يُرِيدُ غَوَاةَ السَّاعِ وَالطَّيْرِ - وَآخِرُ مَنْ يُخْشَرُ رَاعِيَانِ مِنْ مَرْثِيَةِ يُرِيدَانِ الْمَدِينَةَ يَتَمَقَّانِ بِقَوْمِهِمَا فَيَجِدَانِهَا وَخُشًا، حَتَّى إِذَا بَلَغَا قُبَّةَ الْوَدَاعِ خَرَا عَلَى وَجْهِهِمَا)).

1875- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي هُرَيْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((يُفْتَحُ الْيَمَنُ، فَيَأْتِي قَوْمٌ يَسُونُ، فَيَتَحَمَّلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ أَطَاعَهُمْ، وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ، وَتُفْتَحُ الشَّامُ، فَيَأْتِي قَوْمٌ يَسُونُ، فَيَتَحَمَّلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ أَطَاعَهُمْ، وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ. وَتُفْتَحُ الْبِلَادُ، فَيَأْتِي قَوْمٌ يَسُونُ،

कि मदीना ही उनके लिये बेहतर था।

لَيَعْمَلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ اطَاعَهُمْ،  
وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ۔

**तशरीह:** आँहजरत (ﷺ) की बशारत बिलकुल सहीह साबित हुई, मदीना एक मुदत तक ईरान, अरब, मिस्र और शाम तौरान का पाया तख्त रहा और खुल्फ-ए-राशिदीन ने मदीना में रहकर दूर-दूर अतराफे आलम में हुकूमत की, फिर बनू उमय्या ने अपना पाया तख्त (राजधानी) शाम को करार दिया और मुसलमान गिरोह-गिरोह होकर हर जगह मालूब हो गए, अब तक यही हाल है कि अरबों की एक बड़ी ता'दाद है, उनकी हुकूमतें हैं, आपसी इतिहाद न होने का नतीजा है कि क़िब्ला अव्वल मस्जिदे अक्सा पर यहूद काबिज हैं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाहुम्म-सुरिल् इस्लाम वल् मुस्लिमीन वख़्जुलिल्फरत वल्फ़जरत वल्हूद वल्मुल्हिदीन (आमीन)!!

### बाब 6 : इस बारे में कि ईमान मदीना की तरफ़ सिमट आएगा

1876. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन इयाज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह इमरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे खुबैब बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे हफ़स बिन आसिम ने और उनसे हजरत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के करीब) ईमान मदीना में इस तरह सिमट आएगा जैसे सांप सिमटकर अपने बिल में आ जाता है।

इसी तरह अख़ीर ज़माने में सच्चे मुसलमान हिजरत करके मदीना मुनव्वरा में चले जाएंगे। हाफ़िज़ ने कहा ये आँहजरत (ﷺ) और खुल्फ-ए-राशिदीन के ज़मानों में था, क़यामत के करीब फिर ऐसा ही दौर पलटकर आएगा, व मा ज़ालिक अलल्लाहि बिअज़ीज़!

### बाब 7 : जो शख़्स मदीना वालों को सताना चाहे उस पर क्या वबाल पड़ेगा?

1877. हमसे हुसैन बिन हुरैर ने बयान किया, कहा हमें फ़ज़ल बिन मूसा ने ख़बर दी, उन्हें जुएद बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) से सुना था, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना था कि आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अहले मदीना के साथ जो शख़्स भी फ़रेब करेगा वो इस तरह घुल जाएगा जैसे नमक पानी में घुल जाया करता है।

### बाब 8 : मदीना के महलों का बयान

#### ٦- بَابُ الْإِيمَانِ يَأْبُرُ إِلَى الْمَدِينَةِ

١٨٧٦- حَدَّثَنَا إِسْرَافِيلُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ قَالَ: حَدَّثَنِي حَبِيبُ اللَّهِ عَنْ حَبِيبِ بْنِ عُثْمَانَ الرَّحْمَنِ عَنْ حَنْصَلِ بْنِ حَاصِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْإِيمَانَ يَأْبُرُ إِلَى الْمَدِينَةِ كَمَا تَأْبُرُ الْحَيَّةُ إِلَى جُحْرِهَا)).

#### ٧- بَابُ إِمَامٍ مَنْ كَادَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ

١٨٧٧- حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ حُرَيْرٍ أَخْبَرَنَا الْفَضْلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ مَعْلَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَا يَكِيدُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ أَحَدٌ إِلَّا أُلْمَاعُ كَمَا يُلْمَاعُ السُّلَحُ فِي الْمَاءِ)).

1878. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब जुहरी ने, कहा कि मुझे उर्वा ने खबर दी और उन्होंने उसामा बिन जैद (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) मदीना के महल्लात में से एक महल यानी ऊँचे मकान पर चढ़े फिर फ़र्माया कि जो कुछ मैं देख रहा हूँ क्या तुम्हें भी नज़र आ रहा है? मैं बूंदों के गिरने की जगह की तरह तुम्हारे घरों में फ़िल्नों के नाज़िल होने की जगहों को देख रहा हूँ। इस रिवायत की मुताबअत मअमर और सुलैमान बिन कशीर ने जुहरी के वास्ते से की है।

(दीगर मक़ाम : 2467, 3597, 7060)

ये देखना बतरीके कशफ़ के था उसमें तावील की ज़रूरत नहीं और आप (ﷺ) का ये फ़र्मान पूरा हुआ कि मदीना ही में हज़रत उम्रान (रज़ि.) शहीद हुए फिर यज़ीद की तरफ़ से वाक़िय—ए—हर्ह में अहले मदीना पर क्या—क्या आफ़तें आईं।

## बाब 9 : दज्जाल मदीना में नहीं आ सकेगा

1879. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उनके दादा ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मदीना पर दज्जाल का रुअब भी नहीं पड़ेगा इस दौर में मदीना के सात दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर दो फरिश्ते होंगे।

(दीगर मक़ाम : 7125, 7126)

ये पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह हुई कि ज़मान—ए—नबवी में न मदीना की फ़ज़ील थी न उसमें दरवाज़े। अब फ़ज़ील भी बन गई है और सात दरवाज़े भी हैं। पेशगोई का बाक़ी हिस्सा आइन्दा भी सहीह साबित होगा, हुकूमत सज़्ज़दिया खल्लदहल्लाहु तअल्ला ने उस पाक शहर को जो रौनक और तरक्की दी है वो अपनी मिमाल आप हैं। अल्लाह पाक इस हुकूमत को हमेशा कायम रखे आमीन। ज़ियारते मदीना से मुशरफ़ होकर ये चन्द हुरूफ़ लिख रहा हूँ।

1880. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नईम बिन अब्दुल्लाह अल् मुज़्मर ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मदीना के रास्तों पर फ़रिश्ते हैं न उसमे त़ाऊन आ सकता है न दज्जाल।

١٨٧٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي غُرُوةٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَسَامَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أَطَامٍ مِنَ أَطَامِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ: ((هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى؟ إِنِّي لَأَرَى مَوَاقِعَ الْفِتَنِ خِلَالَ يَوْمِكُمْ كَمَوَاقِعِ الْقَطْرِ)) تَابَعَهُ مَعْمَرٌ وَسُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ.

[أطامه في : ٢٤٦٧, ٣٥٩٧, ٧٠٦٠].

٩- بَابُ لَا يَدْخُلُ الدَّجَالُ الْمَدِينَةَ ١٨٧٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ رُغَبُ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ، لَهَا يَوْمَئِذٍ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكَانٌ)).

[طرفاه في : ٧١٢٦, ٧١٢٥].

١٨٨٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَعِيمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْمُجَمِرِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((عَلَى أَلْقَابِ الْمَدِينَةِ

(दीगर मक़ाम : 5731, 7133)

مَلَائِكَةٌ، لَا يَدْخُلُهَا الطَّاغُوتُ وَلَا  
الدُّجَالُ)). [طرفاء : ٥٧٣١، ٧١٣٣].

यानी आम ताऊन (प्लेग) जिससे हजारों आदमी मर जाते हैं। अल्लाह ने अपने रसूल (ﷺ) की दुआओं की बरकत से मदीना मुनव्वरा को उन आफ़तों से महफूज़ रखा है।

1881. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, उनसे वलीद ने बयान किया, उनसे अबू अमर औज़ाई ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयाना किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई ऐसा शहर नहीं मिलेगा जिसे दज्जाल पामाल न करेगा, सिवाए मक्का और मदीना के, उनके हर रास्ते पर सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) फ़रिश्ते खड़े होंगे जो उनकी हिफ़ाज़त करेंगे फिर मदीना की ज़मीन तीन बार कांपेगी जिससे एक-एक काफ़िर और मुनाफ़िक़ को अल्लाह तआला उसमें से बाहर कर देगा।

(दीगर मक़ाम : 7124, 7134, 7473)

١٨٨١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرِو حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ مِنْ بَلَدٍ إِلَّا سَيَطُرُهُ الدُّجَالُ، إِلَّا مَكَّةَ وَالْمَدِينَةَ، لَيْسَ لَهُ مِنْ يَفَاقِهَا نَقَبٌ إِلَّا عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ صَافِّينَ يَخْرُسُونَهَا. ثُمَّ تَرْجَفُ الْمَدِينَةُ بِأَهْلِهَا ثَلَاثَ رَجَفَاتٍ، فَيُخْرِجُ اللَّهُ كُلَّ كَافِرٍ وَمُنَافِقٍ)).

[أطرافه : ٧١٢٤، ٧١٣٤، ٧٤٧٣].

**तशरीह :** यानी खुद दज्जाल अपनी ज़ात से हर बड़े शहर में दाखिल होगा, इमाम इब्ने हज़म को ये मुश्किल मा'लूम हुआ कि दज्जाल ऐसी थोड़ी मुद्दत में दुनिया के हर शहर में दाखिल हो तो उन्होंने यूँ तावील की कि दज्जाल दाखिल होने से उसके इतिबाज़ और जुनूद का दाखिल होना मुराद है। क़स्तलानी ने कहा कि इब्ने हज़म ने उस पर खयाल नहीं किया जो सहीह मुस्लिम में है कि दज्जाल का एक-एक दिन, एक-एक बरस के बराबर होगा (वहीदी)। मैं कहता हूँ कि आज के दजाजले असरी ईजादात (आधुनिक साधनों) के ज़रिये चन्द घण्टों में सारी दुनिया का चक्कर काट लेते हैं, फिर हक्कीकी दज्जाल जिस ज़माने में आया उस वक़्त अल्लाह जाने ईजादात का सिलसिला कहाँ तक पहुँच जाएगा। लिहाज़ा थोड़ी सी मुद्दत में उसका तमाम शहरों में फिर जाना कोई दूर अमर नहीं है।

1882. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैय़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने बयान किया कि मुझे अबैदुल्लाह बिन उतबा ने ख़बर दी कि अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दज्जाल के बारे में एक लम्बी हदीष बयान की, आप (ﷺ) ने अपनी हदीष में ये भी फ़र्माया था कि दज्जाल मदीना की एक ख़ारी शोर ज़मीन तक पहुँचेगा उस पर मदीना मे दाखिला तो हुराम होगा। (मदीना से) उस दिन एक शख्स उसकी तरफ़ निकलकर बढ़ेगा। इन लोगों में एक बेहतरीन नेक मर्द होगा या (ये फ़र्माया कि) बुजुर्ग़तरीन लोगों में से होगा वो शख्स कहेगा

١٨٨٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَكْزُورٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُثَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَدِيثًا طَوِيلًا عَنْ الدُّجَالِ، فَكَانَ فِيمَا حَدَّثَنَا بِهِ أَنْ قَالَ: ((يَأْتِي الدُّجَالُ- وَهُوَ مَحْرُومٌ عَلَيْهِ أَنْ يَدْخُلَ بَقَابَ الْمَدِينَةِ يَنْزِلُ - بَعْضُ

कि मैं गवाही देता हूँ कि तू वही दज्जाल है जिसके बारे में हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इतिला दी थी दज्जाल कहेगा क्या मैं इसे क़त्ल करके फिर ज़िन्दा कर दूँ तो तुम लोगों को मेरे मामले में कोई शुब्हा रह जाएगा? उसके हवारी कहेंगे नहीं, चुनौचे दज्जाल उन्हें क़त्ल करके फिर दोबारा ज़िन्दा करेगा, जब दज्जाल उन्हें ज़िन्दा कर देगा तो वो बन्दा कहेगा, अल्लाह की क़सम! अब तो मुझको पूरा हाल मा'लूम हो गया कि तू ही दज्जाल है। दज्जाल कहेगा, लाओ उसे फिर क़त्ल कर दूँ लेकिन उस मर्तबा वो क़ाबू न पा सकेगा।

(दीगर मक़ाम : 7132)

**तशरीह :** हकीकत में दज्जाल की ये मजाल नहीं किसी को मारकर फिर जिला सके, ये तो ख़ास सिफ़ते इलाही है। मगर अल्लाह माक ईमान वालों को आजमाने के लिये दज्जाल के हाथ पर ये निशानी ज़ाहिर कर देगा। नादान लोग दज्जाल की खुदाई के काइल हो जाएंगे लेकिन जो सच्चे ईमानवाले होंगे और अपने मअबूदे हकीक़ी को पहचानते हैं वो उससे मुताब्बिर (प्रभावित) न होंगे बल्कि उसके (दज्जाल के) काफ़िर होने पर उनका ईमान और बढ़ जाएगा।

**बाब 10 : मदीना बुरे आदमी को निकाल देता है**

1883. हमसे अमर बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि एक अअराबी ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम पर बेअत की, दूसरे दिन आया तो उसे बुख़ार चढ़ा हुआ था कहने लगा कि मेरी बेअत को तोड़ दो! तीन बार उसने यही कहा, आप (ﷺ) ने इंकार कर दिया फिर फ़र्माया कि मदीना की मिशाल भट्टी की सी है कि मैल-कुचैल को दूर करके ख़ालिफ़ जौहर को निखार देती है।

(दीगर मक़ाम : 7209, 7211, 7216, 7322)

हाफ़िज़ ने कहा उस गंवार का नाम मुझको मा'लूम नहीं और ज़मख़शरी ने ग़लती की जो उसका नाम कैस बिन अबी हाज़िम बताया वो तो ताबेअी हैं।

1884. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन श़ाबित ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया कि मैंने ज़ैद बिन श़ाबित (रज़ि.) से सुना, आप फ़र्माते थे कि जब नबी करीम (ﷺ) जंगे

السَّاحِ أَلَيَّ بِالْمَدِينَةِ، فَيَخْرُجُ إِلَيَّ يَوْمَئِذٍ وَجَلْ هُوَ غَيْرُ النَّاسِ - أَوْ مِنْ غَيْرِ النَّاسِ - قَيُولُ: أَهَذَا أَنْتَ الدَّجَالُ أَلَيَّ حَدَّثَنَا عَنْكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَدِيثًا. قَيُولُ الدَّجَالُ: أَرَأَيْتَ إِنْ قُلْتُ هَذَا ثُمَّ أَحْبَبْتَهُ هَلْ تَشْكُونُ لِي الْأَمْرَ؟ قَيُولُونَ: لَا. يَقْتُلُهُ ثُمَّ يَحْيِيهِ، قَيُولُ حِينَ يَحْيِيهِ: وَآلِهِ مَا كُنْتُ قَطُّ أَحَدًا بِصِغَرَةِ بَنِي الْيَوْمِ. قَيُولُ الدَّجَالُ: أَقْتُلْهُ فَلَا يَسْلُطُ عَلَيْهِ).

[طرفه 3 : 7132]

١- بَابُ الْمَدِينَةِ تَنْفِي الْخَبَثِ  
١٨٨٣- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُكَدِّرِ عَنْ جَابِرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ جَاءَ أَغْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَبَايَعَهُ عَلَى الْإِسْلَامِ، فَجَاءَ مِنَ الْفَدِّ مَحْمُومًا فَقَالَ: أَقْبَلْنِي، فَأَبَى - ثَلَاثَ مَرَّاتٍ - فَقَالَ: ((الْمَدِينَةُ كَالْكَيِّفِ تَنْفِي خَبَثَهَا، وَتَبْضَعُ طَيِّبَهَا)).

[أطرافه في : 7209, 7211, 7216, 7322]

[ 7322 ]

١٨٨٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ بْنِ قَابَسٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ : سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ قَابَسٍ رَضِيَ

उहद के लिये निकले तो जो लोग आप (ﷺ) के साथ थे उनमें से कुछ लोग वापस आ गए। (ये मुनाफ़िक़ीन थे) फिर कुछ ने तो ये कहा कि हम चलकर उन्हें क़त्ल कर देंगे। और एक जमाअत ने कहा कि क़त्ल न करना चाहिए, उस पर ये आयत नाज़िल हुई फ़मा लकुम फ़िल् मुनाफ़िक़ीना फ़िअतयनि अल्ख़ और नबी करीम (ﷺ) ने इश़ाद फ़र्माया कि मदीना (बुरे) लोगों को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह आग मैल—कुचैल दूर कर देती है।

(दीगर मक़ाम : 4050, 4589)

1885. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने यूनुस बिन शिहाब से सुना और उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! जितनी मक्का में बरकत अता फ़र्माई है मदीना में उससे दोगुनी बरकत कर। जरीर के साथ इस रिवायत की मुताबअत इब्मान बिन इमर (रज़ि.) ने यूनुस के वास्ते से की है।

1886. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब कभी सफ़र से वापस आते और मदीना की दीवारों को देखते तो अपनी सवारी तेज़ कर देते और अगर किसी जानवर की पुश्त पर होते तो मदीना की मुहब्बत में उसे ऐड़ लगा देते। (राजेअ : 1802)

रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्की थे आप (ﷺ) का आबाई वतन (पूर्वजों का देश) मक्का था; मगर मदीना तशरीफ़ ले जाने के बाद आप (ﷺ) ने उसे अपना हक़ीक़ी मुस्तक़र (वास्तविक ठिकाना) बना लिया और उसकी आबादी व तरक्की में इस क़दर कोशिशें (प्रयासरत) हुए कि अहले मदीना के रग व रेशा में आप (ﷺ) की मुहब्बत बस गई और अहले मदीना औस व खज़रज ने कभी तसव्वुर न किया कि आप (ﷺ) एक दूसरी जगह के बाशिन्दे हैं और मुहाजिर की शक्ल में यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। मुसलमानों की तारीख़ बताती है कि वो अपने प्यारे रसूलुल्लाह (ﷺ) की इज्जतदा में जिस मुल्क में भी गए। उसी के बाशिन्दे हो गये और उस मुल्क में अपनी मसाई (कोशिशों) से चार चाँद लगा दिये और हमेशा कि लिये उसी मुल्क को अपना वतन बना लिया। ऐसे सैकड़ों नमूने आज भी मौजूद हैं।

बाब 11 : मदीना का वीरान करना नबी करीम (ﷺ) को नागवार था

اللّٰهُ عَنْهُ يَقُولُ: لَمَّا خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى أَحَدٍ رَجَعَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَقَالَتْ فِرْقَةٌ: نَقْتُلُهُمْ، وَقَالَتْ فِرْقَةٌ: لَا نَقْتُلُهُمْ، فَزَلَّتْ: ﴿لَمَّا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةٌ﴾ [النساء: ٨٨] وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّهَا تَفْتِي الرُّجَالَ كَمَا تَفْتِي النِّسَاءَ خَبَثَ الْحَدِيثُ)).

[طبرانی : ٤٠٥٠, ٤٠٨٩.]

١٨٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ سَمِعْتُ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْ بِالْمَدِينَةِ ضِعْفِي مَا جَعَلْتَ بِمَكَّةَ مِنَ الْبَرَكَاتِ)).

تَابَعَهُ عُفْمَانُ بْنُ عَمَرَ عَنْ يُونُسَ.

١٨٨٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَلِمَ مِنْ مَقَرٍّ نَظَرَ إِلَى جُثُرَاتِ الْمَدِينَةِ أَوْضَعَ رَأْسَهُ، وَإِنْ كَانَ عَلَى ذَاتِهِ حَرَكَةٌ، مِنْ حَتَمَةٍ)).

[راجع : ١٨٠٢]

١١- بَابُ كِرَاهِيَةِ النَّبِيِّ ﷺ أَنْ تُغْرَى الْمَدِينَةُ



1887. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा कि हमें मरवान बिन मुआविया फ़ज़ारी ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद तवील ने ख़बर दी और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि बनू सलमा ने चाहा कि अपने दूर वाले मकानात छोड़कर मस्जिदे नबवी से करीब इक़ामत इख़्तियार कर लें लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये पसन्द नहीं किया कि मदीना के किसी हिस्से से भी रिहाइश तर्क की जाए, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ बनू सलमा! तुम अपने क़दमों का प्रवाब नहीं चाहते, चुनौचे बनू सलमा ने (अपनी असली इक़ामतगाह ही में) रिहाइश बाक़ी रखी। (राजेज़: 655)

**तशरीह:** आप (ﷺ) का मतलब ये था कि मदीना की आबादी सब तरफ़ से क़ायम रहे और उसमें तरक्की होती जाए ताकि क़ाफ़िरों और मुनाफ़िकों पर रुअब पड़े, हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि मदीना की इक़ामत तर्क करना शरीअत की नज़र में पसन्दीदा नहीं है बल्कि ये उस मुसलमान की ऐन सआदत है जिसको वहाँ इत्मीनान के साथ सकूनत (रहने की जगह) मिल जाए।

## बाब 12 :

1888. हमसे मुसहद ने बयान किया, उनसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्बदुल्लाह बिन त्रमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे ख़ुबैब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे हफ़्स बिन आसिम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे घर और मेरे मिम्बर के बीच ज़न्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर क़यामत के दिन मेरे हौज़ (कौषर) पर होगा।

**तशरीह:** घर से मुराद हज़रत आइशा (रज़ि.) का हुजरा है, जहाँ आप आराम फ़र्मा हैं। इब्ने असाकिर की रिवायत में यूँ है कि मेरी क़ब्र और मिम्बर के बीच एक क़यारी है ज़न्नत की क़यारियों में से। और त्रिबरानी में इब्ने उमर (रज़ि.) से निकाला उसमें भी क़ब्र का लफ़ज़ है अल्लाह पाक ने आपको पहले ही से आगाह कर दिया था कि आप इस हुजरे में क़यामत तक आराम फ़र्माएँगे। बयानकर्दा मुबारक किताब हकीकतन ज़न्नत का एक टुकड़ा है। कुछ ने कहा उसकी बरकत और ख़ूबी की वजह से मिजाज़न ऐसा कहा गया है या इसलिये कि वहाँ इबादत करना ख़ुसूसी तौर पर दुखले ज़न्नत का ज़रिया है मिम्बर के बारे में जो फ़र्माया अल्लाह की कुदरत से ये भी दूर नहीं कि क़यामत के दिन हौज़े कौषर पर इस मिम्बर को दोबारा मुहय्या करके आप (ﷺ) के लिये रख दिया जाए; वल्लाहु आलमु बिमुरादिही बाब का मक़सद यहाँ सकूनते मदीना की तरफ़ीब दिलाना है।

1889. हमसे इब्बद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद इर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि जब रसूले करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो अबूबक्र और बिलाल (रज़ि.) बुखार

۱۸۸۷- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلَامٍ أَخْبَرَنَا الْفَزَارِيُّ عَنْ حُمَيْدِ الطُّوَيْلِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَرَادَ بَنُو سَلَمَةَ أَنْ يَنْتَحِلُوا إِلَى قُرْبِ الْمَسْجِدِ، فَكَرِهَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ تُغْرَى الْمَدِينَةُ وَقَالَ: ((يَا بَنِي سَلَمَةَ أَلَا تَحْتَسِبُونَ آثَارَكُمْ؟)) فَلَا تَمُوتُوا. [راجع: ٦٥٥]

## ۱۲- بَابُ

۱۸۸۸- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: حَدَّثَنِي خُبَيْبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، وَمِنْبَرِي عَلَى حَوْضِي)).

۱۸۸۹- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا قِيمَ رَسُولُ

में मुब्तला हो गए, अबूबक्र (रजि.) जब बुखार में मुब्तला होते तो ये शेर पढ़ते,

हर आदमी अपने घरवालों में सुबह करता है हालाँकि उसकी मौत उसकी जूती के तस्मे से भी ज्यादा करीब है।

और बिलाल (रजि.) को जब बुखार उतरता तो आप बुलन्द आवाज़ से ये अशआर पढ़ते,

काश! मैं एक रात मक्का की वादी में गुजार सकता और मेरे चारों तरफ़ इज़्र और जलील (घास) होतीं।

काश! एक दिन मैं मजिन्ना के पानी पर पहुँचता और काश! मैं शामा और तफ़ील (पहाड़ों) को देख सकता।

कहा कि ऐ मेरे अल्लाह! शैबा बिन रबीआ, इत्बा बिन रबीआ और उमय्या बिन खल्लफ़ मरदूदों पर लअनत कर। उन्होंने हमें अपने वतन से इस वबा की ज़मीन में निकाला है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में मदीना की मुहब्बत उसी तरह पैदा कर जिस तरह मक्का की मुहब्बत है बल्कि उससे भी ज्यादा। ऐ अल्लाह! हमारे सज़ा और हमारे मुह में बरकत अता कर और मदीना की आबो-हवा हमारे लिये सेहत-ख़ेज़ (तन्दुरुस्ती वाली) कर दे यहाँ के बुखार को जुहफ़ा में भेज दे। आइशा (रजि.) ने बयान किया कि जब हम मदीना आए तो ये अल्लाह की सबसे ज्यादा वबा (महामारी) वाली सरज़मीन थी। उन्होंने कहा मदीना में बट्रहान नामी एक नाले से ज़रा-ज़रा बंद मज़ा और बंदबूदार पानी बहा करता था।

(दीगर मक्काम : 3926, 5654, 5677, 6372)

اللَّهُ الْمَدِينَةُ وَعَلَيْكَ أُبُوبَكْرٍ وَبِلَالٌ،  
فَكَانَ أُبُوبَكْرٌ إِذَا أَخَذَتْهُ الْحُمَى يَقُولُ :  
كُلُّ أَمْرٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ  
وَالْمَوْتُ أَذْنَى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ  
وَكَانَ بِلَالٌ إِذَا أَقْلَعَ عَنْهُ الْحُمَى يَرْفَعُ  
غَفِيرَتَهُ يَقُولُ :

أَلَا لَيْتَ شِعْرِي هَلْ أَبِيتُ لَيْلَةً  
بِرَامٍ وَخَوْلِي إِذْخِرَ وَخَلِيلُ  
وَهَلْ أَرَدْتُ يَوْمًا مَيَاةً مَجْنَةً  
وَهَلْ يَتَذَوَّنُ لِي شَامَةٌ وَطَفِيلُ  
قَالَ : ((اللَّهُمَّ الْفَنَ شَيْبَةَ بَنِ زُبَيْعَةَ وَغَنَبَةَ  
بَنِ زُبَيْعَةَ وَأَمِيَّةَ بَنِ خَلْفٍ، كَمَا أَخْرَجُونَا  
مِنْ أَرْضِنَا إِلَى أَرْضِ الْوَبَاءِ)). ثُمَّ قَالَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ  
كَحُبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ. اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي  
صَاعِنَا وَفِي مُدُنَا، وَصَحْحِنَا لَنَا، وَانْقُلْ  
حُمَاهَا إِلَى الْخُفَيْفَةِ. قَالَتْ : وَقَدِمْنَا  
الْمَدِينَةَ وَهِيَ أَوْثَى أَرْضِ اللَّهِ، قَالَتْ :  
فَكَانَ يُطْعَمَانِ يَجْرِي نَجَلًا. تَغْنِي مَاءُ  
أَجْنًا)).

إطرايه في : 3926, 5654, 5677

[6372]

**तरीह :** वतन की मुहब्बत इंसान का एक फ़ित्री ज़ुबा है, सहाबा किराम मुहाजिरीन (रजि.) अगरचे बरज़ा व रखत अल्लाह व रसूल (ﷺ) की रज़ा की ख़ातिर अपने वतन, अपने घर सबको छोड़कर मदीना आ गए थे, मगर शुरू शुरू में उनको वतन की याद आया ही करती थी और इसलिये भी कि हर लिहाज़ से उस वक्त मदीना का माहौल उनके लिये नासाज़गार था, ख़ास तौर पर मदीना की आबोहवा (जलवायु) उन दिनों उनके मुवाफ़िक़ न थी। इसीलिये वो बुखार में मुब्तला हो जाया करते थे। हज़रत बिलाल (रजि.) के दर्दअंगेज़ अशआर ज़ाहिर करते हैं कि मक्का शरीफ़ का माहौल वहाँ के पहाड़ यहाँ तक कि वहाँ की घास तक उनको किस क़दर महबूब थी मगर अल्लाह व रसूल (ﷺ) की मुहब्बत उनके लिये सबसे ज्यादा कीमती थी। हज़रत बिलाल (रजि.) के अशआर में ज़िक्रकर्दा जलील और इज़्र दो क्रिस्म की घास हैं जो अत़राफ़े मक्का में बक़रत पैदा

होती हैं और शामा और तफ़ील मक्का से तीस मील की दूरी पर दो पहाड़ हैं मजिन्ना मक्का से चन्द मील मरउज्जोहरान के पास एक मक़ाम है जहाँ का पानी बेहद शीरी (मीठा) है, हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अपने उन अशआर में उन ही सबका ज़िक्र किया है। हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने बिलाली अशआर का उर्दू तर्जुमा अशआर में यूँ फ़र्माया है,

अला लैत शअरी हल अबीतन्न लैलतन  
काश फिर मक्का की वादी में रहूँ एक रात  
बिवादिव्व हौली इज़्रर व जलील  
सब तरफ़ मेरे आगे हों वाँ जलील इज़्रर नबात  
व हल अरिदन्न यौमन मियाह मजिन्नत  
और पीऊँ पानी मजिन्ना के जो आबे हयात  
व हल यब्दून ली शामतंख्व तुफ़ैलु  
काश! फिर देखूँ मैं शामा काश! फिर देखूँ तफ़ील

अल्लाह पाक ने अपने हबीबे पाक (ﷺ) की दुआ कुबूल की कि मदीना न सिर्फ़ आबो हवा बल्कि हर लिहाज़ से एक जन्नत का नमूना शहर बन गया और अल्लाह ने उसे हर किस्म की बरकतों से नवाज़ा और सबसे बड़ा शर्फ़ जो कायनाते आलम में उसे हासिल है वो ये कि यहाँ खातमुन्नबियिन रसूले अकरम (ﷺ) आराम फ़र्मा रहे हैं। सच है।

इश्ततु बैन अमाकिनिल्याबरा  
दारल्किरामा बुन्नअतज़ूरा (ﷺ)

1890. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैज़ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे इमर (रज़ि.) ने जो फ़र्माया करते थे ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत अता कर और मेरी मौत अपने रसूल (ﷺ) के शहर में मक़दूर कर दे (तक्रदीर में लिख दे)। इब्ने जुरैअ ने रौह बिन क़ासिम से, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से, उन्होंने अपनी वालिदा से, उन्होंने हफ़्सा बिनते इमर (रज़ि.) से बयान किया कि मैंने इमर (रज़ि.) से इसी तरह सुना था, हिशाम ने बयान किया, उनसे ज़ैद ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे हफ़्सा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने इमर (रज़ि.) से सुना फिर यही हदीष रिवायत की।

١٨٩٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا  
الْثَّوْبِيُّ عَنْ خَالِدِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ سَعْدِ بْنِ  
أَبِي هِلَالٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ  
عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي  
شَهَادَةً لِي بِسَبِيلِكَ، وَجَعَلْ مَوْتِي لِي بِلَدِ  
رَسُولِكَ ﷺ. وَقَالَ ابْنُ زُرَيْجٍ عَنْ رَوْحِ  
بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أُمِّهِ عَنْ  
حَفْصَةَ بِنْتِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ:  
سَمِعْتُ عُمَرَ نَحْوَهُ. وَقَالَ هِشَامُ عَنْ زَيْدِ  
عَنْ أَبِيهِ عَنْ حَفْصَةَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهُ.

**तशरीह:** अल्लाह पाक ने हज़रत इमर फारूके आज़म (रज़ि.) की दोनों दुआओं को कुबूल किया, 26 ज़िल्हिज्ज 23 हिजरी बुध का दिन था कि फ़ज्र में आप (रज़ि.) इमामत कर रहे थे ज़ालिम अबूलूलू मजूसी ने आपको ज़हर आलूद खंज़र मारा, ज़ख़म कारी (गहरा) था चन्द दिन बाद आपका इंतिक़ाल हो गया और यकुम (1) मुहर्रम 24 हिजरी बरोजे हफ़्ता तदफ़ीन

अमल में आई। अल्लाह पाक ने आपकी दूसरी दुआ भी इस शान के साथ कुबूल फ़र्माई कि ऐन हुज़र-ए-नबवी पहलु-ए-रिसालत मआब (ﷺ) में दफ़न किये गये। वज़ालिक फ़ज़लुल्लाहि यूतीहि मय्यंशाउ वल्लाहु जुल्फ़ज़िल्ल अज़ीम।

अल्हम्दुलिल्लाह बेहद खुशी के साथ लिख रहा हूँ कि 1389 हिजरी में मुझे तीसरी बार फिर यहाँ हाज़िरी का शर्फ़ हासिल हुआ और बार-बार आँहज़रत (ﷺ) और शौखेन पर सलाम पढ़ने के मौक़े नसीब हुए, ये सफ़र बैंगलूर के एक मशहूर मुहतरम मरहूम भाई मुहम्मद अली उर्फ़ बिलारी प्यार व कुरेशी (रह.) के हज़ के बदल के सिलसिले में किया गया अल्लाह पाक इसे कुबूल करे और मरहूम के लिये अज़ो-षवाब प्राबित फ़र्माए और मेरे लिये और मेरी आल-औलाद के लिये भी इस मुबारक सफ़र की दुआओं के नतीजे में तरफ़ियाते दारेन (दोनों ज़हान की तरफ़ियाँ) अत्ता करे और मेरे उन तमाम मुहतरम भाईयों को भी जो बुखारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू (उर्दू अनुवाद) के सिलसिले में मुझे अपने हर मुम्किन तज़ावुन से नवाज़ रहे हैं, अल्लाह पाक उन सबको ज़जा-ए-अज़ीम ख़ैर अत्ता करे और सारे मुसलमाने आलम को सर बुलन्दी व रिफ़अत अत्ता करे। आमीन या रब्बल आलमीन. अब्बाबुल इमरति ख़तम शुदा बफ़ज़िल्ली तज़ाला

## 30. किताबुस्सौम

# किताब मसाइले-रोज़ा के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**तशीह:** सौम लुगत में रोकने को कहते हैं, शरअन एक इबादत का नाम है जिसमें एक मुसलमान मर्द-औरत सुबह सादिक़ से लेकर गुरुबे आफ़ताब तक खाने-पीने और जिमाअ से रुक जाता है, साल में एक महीना ऐसा रोज़ा रखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, औरतों के लिये और मरीज़ मुसाफ़िर के लिये कुछ रिआयत हैं जो मज़कूर होंगी। उस महीने को रमज़ान कहा जाता है जो रमज़ से मुश्तक़ है जिसके मा'नी जलने के हैं जिस साल रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए वो सख़्त गर्मी का महीना था इसलिये लफ़्ज़ रमज़ान से मौसम हुआ। कुछ ने कहा कि इस माह में रोज़ा रखने वालों के गुनाह जल जाते हैं। रमज़ान के रोज़ों की फ़र्ज़ियत कुआन मजीद से प्राबित है जैसा कि मुत्तहिदे आज़म इमाम बुखारी (रह.) यहाँ आयते कुआनी लाए हैं। जो शख़्स रमज़ान के रोज़ों का इंकार करे वो बिल इतिफ़ाक़ काफ़िर है। अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, अस्सियामु फ़िल्लुग़ति अल्इम्साकु व फ़िशशरइ इम्साकुन मख़सूसुन फ़ी ज़मनिन मख़सूसिन बिशराइतिन मख़सूसतिन व कान फुरिज सौमु शहरि रमज़ान फ़िस्सन तिष्ठा नियति मिनल हिज़रति (नैल) यानी रोज़ा लुगत में रुक जाना और शरीअतन मख़सूस शराइत के साथ एक मख़सूस वक़्त में मख़सूस तौर पर रुक जाना और माहे रमज़ान के रोज़े 2 हिजरी में फ़र्ज़ हुए।

## बाब 1 : रमज़ान के रोजे की फ़र्जियत का बयान

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया, ऐ ईमानवालों ! तुम पर रोजे उसी तरह फ़र्ज किये गए हैं जिस तरह उन लोगों पर फ़र्ज किये गए थे जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम गुनाहों से बचो। (अल बकर: : 183)

1891. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू सुहैल ने, उनसे उनके वालिद मालिक ने और उनसे तलहा बिन अबैदुल्लाह (रज़ि.) ने कि एक अअराबी परेशान हाल बाल बिखरे हुए रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हाज़िर हुआ उसने पूछा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! बताइये मुझ पर अल्लाह तआला ने कितनी नमाज़ें फ़र्ज की हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि पाँच नमाज़ें, ये और बात है कि तुम अपनी तरफ़ से नफ़ल पढ़ लो, फिर उसने कहा बताइये अल्लाह तआला ने मुझ पर रोजे कितने फ़र्ज किये हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि रमज़ान के महीने के, ये और बात है कि तुम ख़ुद अपने तौर पर कुछ नफ़ली रोजे और भी रख लो, फिर उसने पूछा और बताइये ज़कात किस तरह मुझ पर अल्लाह तआला ने फ़र्ज की है? आप (ﷺ) ने उसे शरअे इस्लाम की बातें बता दीं। जब उस अअराबी ने कहा उस ज़ात की क्रसम! जिसने आप (ﷺ) को इज़त दी! न मैं इसमें इससे जो अल्लाह तआला ने मुझ पर फ़र्ज कर दिया है कुछ बढ़ाऊँगा और न घटाऊँगा, उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर उसने सच कहा है तो ये मुराद को पहुँचाया (आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि) अगर सच कहा है तो जन्नत में जाएगा।

(राजेअ: 46)

इस देहाती का नाम हम्माम बिन अलबा था, इस हदीष से रमज़ान के रोज़ों की फ़र्जियत प्राबित हुई। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस मवसद के तहत यहाँ इस हदीष को नक़ल किया है। उस देहाती ने नफ़लों का इन्कार नहीं किया, कमी-बेशी न करने का वादा किया था जिसकी वजह से वो मुस्तहिक्के बशारते नबी (नबी करीम ﷺ की शुभ-सूचना का हक़दार) हुआ।

1892. हमसे मुसहद बिन मुअहिद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अलिया ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चौथे आशूरा का रोज़ा रखा था और आप

## 1- باب وَجُوبِ صَوْمِ رَمَضَانَ

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ [البقرة: 183].

1891- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي سَهْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَتِيدٍ اللَّهُ: ((أَنَّ أَهْرَابِيًّا جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَالْتَمَسَ الرِّأْسَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَخْبِرْنِي مَاذَا فَرَضَ اللَّهُ عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ؟ فَقَالَ: ((الصَّلَوَاتُ النَّمَسُ إِلَّا أَنْ تَطْوُرَ شَيْئًا)). فَقَالَ: أَخْبِرْنِي مَا فَرَضَ اللَّهُ عَلَيَّ مِنَ الصِّيَامِ؟ فَقَالَ: ((شَهْرَ رَمَضَانَ إِلَّا أَنْ تَطْوُرَ شَيْئًا)). فَقَالَ: أَخْبِرْنِي بِمَا فَرَضَ اللَّهُ عَلَيَّ مِنَ الزَّكَاةِ؟ فَقَالَ: ((فَأَخْبِرَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ شَرَائِعَ الْإِسْلَامِ)). قَالَ: وَاللَّهِ أَكْرَمَكَ، لَا أَنْطَوُّغُ شَيْئًا وَلَا أَنْفَعُ بِمَا فَرَضَ اللَّهُ عَلَيَّ شَيْئًا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَلَفَّحَ إِنْ صَدَقَ. أَوْ دَخَلَ الْجَنَّةَ إِنْ صَدَقَ)). [راجع: 46]

1892- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((صَامَ النَّبِيُّ ﷺ عَاشُورَاءَ

(ﷺ) ने उसके रखने का महाबा किराम (रज़ि.) को इब्तिदा—ए—इस्लाम में हुक्म दिया था, जब माहेरमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हो गए तो आशूरा का रोज़ा बतौर फ़र्ज़ छोड़ दिया गया, अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) आशूरा के दिन रोज़ा न रखते मगर जब उनके रोज़े का दिन ही यौमे आशूरा आन पड़ता। (दीगर मक़ाम : 2000, 4501)

यानी जिस दिन उनको रोज़ा रखने की आदत होती मसलन पीर या जुमेरात और उस दिन आशूरा का दिन भी आ पड़ता तो रोज़ा रख लेते थे। यौमे आशूरा मुहर्रमुल हुराम की दसवीं तारीख को कहा जाता है, ये क़दीम ज़माने से एक तारीखी दिन चला आ रहा है।

1893. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने और उनसे इराका बिन मालिक ने बयान किया, उन्हें इब्बा ने ख़बर दी कि उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, कुरैश ज़मान—ए—जाहिलियत में आशूरा का रोज़ा रखते थे, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी उस दिन रोज़े का हुक्म दिया यहाँ तक कि रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हो गए, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसका जी चाहे यौमे आशूरा का रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे। (राजेअ : 1592)

### बाब : रोज़ा की फ़ज़ीलत का बयान

1894. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा कअम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया रोज़ा दोज़ख़ से बचने के लिये एक ढाल है, इसलिये (रोज़ेदार) न फ़हश बातें करे और न जिहालत की बातें और अगर कोई शख्स उससे लड़े या उसे गाली दे तो उसका जवाब सिर्फ़ ये होना चाहिए कि मैं रोज़ेदार हूँ, (ये अल्फ़ाज़) दो बार (कह दे) उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की खुशबू से भी ज़्यादा पसन्दीदा और पाकीज़ा है, (अल्लाह तआला फ़र्माता है) बन्दा अपना खाना—पीना और अपनी शह्वात मेरे लिये छोड़ता है, रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इसका बदला दूँगा और (दूसरी) नेकियों का प्रवाब भी असल नेकी के दस गुना होता है।

(दीगर मक़ाम : 1904, 5927, 7492, 7538)

وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ، فَلَمَّا فُرِضَ رَمَضَانُ تَرِكَ.  
وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ لَا يَصُومُهُ إِلَّا أَنْ يُؤَافِقَ  
صَوْمَهُ)). [طرفاء في : ٤٥٠١، ٢٠٠٠].

١٨٩٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا  
اللِّثْبُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ أَنَّ عِيرَالَ  
بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُ أَنَّ عُرْوَةَ أَسْبَرَةَ أَنَّ عَائِشَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا : أَنَّ قُرَيْشًا كَانَتْ تَصُومُ  
يَوْمَ عَاشُورَاءَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، ثُمَّ أَمَرَ رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ بِصِيَامِهِ حَتَّى فُرِضَ رَمَضَانُ، وَقَالَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَنْ شَاءَ فَلْيَصُمْهُ،  
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُطْرُقْ)). [راجع : ١٥٩٢]

### - بَابُ فَضْلِ الصَّوْمِ

١٨٩٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ  
مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزُّوَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ،  
قَالَ : ((الصَّيَّامُ جَنَّةٌ، فَلَا يَوْقُتُ وَلَا  
يَجْهَلُ. وَإِنْ أَمَرًا قَاتَلَهُ أَوْ شَاتَمَهُ فَلْيَقُلْ:  
إِنِّي صَائِمٌ - مُرْتَضٍ - وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ  
لَخُلُوفٌ فِيمَ الصَّيَّامِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ  
رِيحِ الْمِسْكِ، يَتْرُكُ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ  
وَشَهْوَتَهُ مِنْ أَجْلِي، الصَّيَّامُ لِي وَأَنَا أَجْزَى  
بِهِ، وَالْحَسَنَةُ بِشَيْرِ أَثْمَالِهَا)).

[طرفاء في : ١٩٠٤، ٥٩٢٧، ٧٤٩٢]



### जन्नत में बनाया गया है उसकी तफ्सील का बयान)

1896. हमसे खालिद बिन मुखलद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाजिम सलाम इब्ने दीनार ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअद सअदी (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत का एक दरवाज़ा है जिसे रय्यान कहते हैं क़यामत के दिन उस दरवाज़े से सिर्फ़ रोज़ेदार ही जन्नत में दाख़िल होंगे, उनके सिवा और कोई उसमें से नहीं दाख़िल होगा। पुकारा जाएगा कि रोज़ेदार कहाँ हैं? वो खड़े हो जाएँगे उनके सिवा उससे और कोई नहीं अंदर जाने पाएगा और जब ये लोग अंदर चले जाएँगे तो ये दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा, फिर उससे कोई अंदर न जा सकेगा। (दीगर मक़ाम: 3257)

लफ़ज़ रय्यान, रय्यि से मुश्तक़ है जिसके मा'नी सैराबी के हैं चूँकि रोज़े में प्यास की तकलीफ़ एक ख़ास तकलीफ़ है जिसका बदल रय्यान ही हो सकता है जिससे सैराबी हाज़िल हो इसलिये ये दरवाज़ा ख़ास रोज़ेदारों के लिये होगा जिसमें दाख़िल होकर वो सैराब और क़द़्दी सैराब हो जाएँगे फिर वो ताअब्द (अनंतकाल तक) प्यास महसूस नहीं करेंगे। वजअल्लल्लाहु मिन्हुम, आमीन

1897. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मअन बिन ईसा ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जो अल्लाह के रास्ते में दो चीज़ें खर्च करेगा उसे फ़रिश्ते जन्नत के दरवाज़ों से बुलाएँगे कि ऐ अल्लाह के बन्दे! ये दरवाज़ा अच्छा है फिर जो शख़्स नमाज़ी होगा उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो मुजाहिद होगा उसे जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो रोज़ेदार होगा उसे बाबुर्रय्यान से बुलाया जाएगा और जो ज़कात अदा करने वाला होगा उसे ज़कात के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने पूछा मेरे माँ—बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हों या रसूलुल्लाह (ﷺ)! जो लोग इन दरवाज़ों (में से किसी एक दरवाज़े) से बुलाये जाएँगे मुझे उनसे बहस नहीं, आप ये फ़र्माइए कि क्या कोई ऐसा भी होगा जिसे उन सब दरवाज़ों से बुलाया जाएगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ और मुझे उम्मीद है कि आप

۱۸۹۶- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ بَابًا يُقَالُ لَهُ الرَّيَّانُ، يَدْخُلُ مِنْهُ الصَّائِمُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ، يُقَالُ: أَتَيْنَ الصَّائِمُونَ، فَيَقُومُونَ، لَا يَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ، فَإِذَا دَخَلُوا أُغْلِقَ، فَلَمْ يَدْخُلْ مِنْهُ أَحَدٌ)).

[طرقه ٣ : ٣٢٥٧].

۱۸۹۷- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ : حَدَّثَنِي مَعْنٌ قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((مَنْ أَلْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ نُودِيَ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ : يَا عَبْدَ اللَّهِ هَذَا خَيْرٌ، لِمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلَاةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلَاةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الْجِهَادِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الرِّيَّانِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ)). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : يَا بَايَ أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا عَلَى مَنْ دُعِيَ مِنْ يَلِكَ الْأَبْوَابِ مِنْ ضُرُورَةٍ،



भी उन्हीं में से होंगे।

(दीगर मक़ाम : 2841, 3216, 3666)

इस हदीष से जहाँ और बहुत सी बातें मा'लूम हुईं वहाँ हज़रत सय्यदना अबूबक्र (रज़ि) की भी बड़ी फ़ज़ीलत प्राबित हुई और ज़बाने रिसालते मआब (ﷺ) ने उनका आला दर्जा का ज़न्नती क़रार दिया है। तुफ़ (धिकार) है उन लोगों पर जो इस्लाम के इस मायानाज़ फ़रज़न्द की शान में गुस्ताख़ी करें। हदाहुमुल्लाह आमीन!!

### बाब 5 : रमज़ान कहा जाए या माहे रमज़ान?

और जिनके नज़दीक दोनों लफ़्ज़ों की गुंजाइश है।

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने रमज़ान के रोज़े रखे और आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि रमज़ान से आगे रोज़ा न रखो।

ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उस हदीष के जुअफ़ की तरफ़ इशारा किया जिसे अबू अदी ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से मफ़ूअन निकाला है कि रमज़ान मत कहो। रमज़ान अल्लाह का एक नाम है, उसकी सनद में अबू मअशर है, वो ज़ईफल हदीष है। लफ़्ज़े रमज़ान नबी करीम (ﷺ) की जुबाने मुबारक से अदा हुआ और शहर रमज़ान खुद अल्लाह तआला ने कुआन में फ़र्माया, प्राबित हुआ कि दोनों तरह से इस महीने का नाम लिया जा सकता है उन दोनों से अहदीष को खुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने वस्ल (मिलान) किया है।

1898. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू सहल नाफ़ेअ बिन मालिक ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (दीगर मक़ाम : 1899, 3277)

यहाँ भी खुद औहज़रत (ﷺ) ने लफ़्ज़े रमज़ान इस्ते'माल किया। हदीष और बाब में यही मुताबक़त है।

1899. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब जुहरी ने बयान किया कि मुझे बनू तमीम के मौला अबू सुहैल इब्ने अबी अनस ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को कहते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब रमज़ान का महीना आता है तो आसमान के तमाम दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को ज़ंजीरों से जकड़ दिया जाता है।

(राजेअ : 1898)

فَهَلْ يُدْعَى أَحَدٌ مِنْ بَلَدِكَ الْأَنْبَابَ كُلَّهَا؟  
فَقَالَ : ((نَعَمْ، وَأَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ)).  
[طَرَاهُ فِي : ٢٨٤١، ٣٢١٦، ٣٦٦٦.]

• - بَابُ هَلْ يُقَالُ رَمَضَانَ أَوْ شَهْرُ  
رَمَضَانَ، وَمَنْ رَأَى كَلَّةً وَاصِمًا  
وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((مَنْ صَامَ رَمَضَانَ))  
وَقَالَ : ((لَا تَقْدُمُوا رَمَضَانَ)).

١٨٩٨ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ  
جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي سَهْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
قَالَ : ((إِذَا جَاءَ رَمَضَانُ فَُيُخْتَرُ أَنْبَابُ  
السَّمَاءِ)). [طَرَاهُ فِي : ١٨٩٩، ٣٢٧٧.]

١٨٩٩ - حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنِي  
اللِّثْمُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ :  
أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي أَنَسٍ مَوْلَى التَّيْمِيِّينَ أَنَّ  
أَبَاهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ يَقُولُ : قَالَ : رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِذَا  
دَخَلَ رَمَضَانُ فَُيُخْتَرُ أَنْبَابُ السَّمَاءِ،  
وُغُلِقَتْ أَنْبَابُ جَهَنَّمَ، وَتُسَلِّطَتِ  
الشَّيَاطِينُ)). [رَاجِع : ١٨٩٨]

आँहज़रत (ﷺ) ने शहर रमज़ान का लफ़्ज़ इस्ते'माल किया इससे बाब का मक़सद प्राबित हो गया है।

1900. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे सालिम ने ख़बर दी कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि जब रमज़ान का चौद देखो तो रोज़ा शुरू कर दो और जब शव्वाल का चौद देखो तो रोज़ा इफ़्तार कर दो और अगर अन्न (बादल) हो तो अंदाज़े से काम करो। (यानी तीस रोज़े पूरे कर लो और कुछ ने लैष से बयान किया कि मुझसे अक़ील और य़नुस ने बयान किया कि रमज़ान का चौद मुराद है।

(दीगर मक़ाम : 1906, 1907)

मक़सद ये है कि रमज़ान शरीफ़ के रोज़े शुरू करने और ईदुल फ़ितर मनाने दोनों के लिये हिलाल (चौद नज़र आना) ज़रूरी है, अगर दोनों बार 29 तारीख़ में रूयते हिलाल यक़ीनी न हो तो तीस दिन पूरे करने ज़रूरी हैं, ईद के चौद में लोग बहुत सी बे-ए'तदाल (असंतुलन भरी बातें) कर जाते हैं जो नहीं होनी चाहिए।

## बाब 6 : जो शख़्स रमज़ान के रोज़े ईमान के साथ प्रवाब की निव्यत करके रखे उसका प्रवाब

और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि लोगों को क़यामत के दिन उनकी निव्यतों के मुताबिक़ उठाया जाएगा।

1901. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़सीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कोई शबे क़द्र में ईमान के साथ और हुसूले प्रवाब की निव्यत से इबादत में खड़ा हो उसके तमाम अगले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जिसने रमज़ान के रोज़े ईमान के साथ और प्रवाब की निव्यत से रखे उसके अगले तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।

١٩٠٠ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ : حَدَّثَنِي اللَّيْثُ عَنْ عَقِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : «إِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَصُومُوا، وَإِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَافْطِرُوا». فَإِنَّ غَمَّ عَلَيْكُمْ فَافْطِرُوا لَهُ». وَقَالَ غَيْرُهُ عَنِ اللَّيْثِ : حَدَّثَنِي عُفَيْ وَيُونُسُ «لِلْهَلَالِ رَمَضَانَ».

[طرمه في : ١٩٠٦, ١٩٠٧].

## ٦ - بَابُ مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْسَانًا وَرِثَةً

وَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : «يُغْفَرُونَ عَلَى نِيَاهِم».

١٩٠١ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : «قَالَ مَنْ قَامَ ثَلَاثَةَ الْأَشْهُرِ إِيْمَانًا وَاحْسَانًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ، وَمَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْسَانًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ».

**तशरीह :** हर अमल के लिये निव्यत का दुस्त होना ज़रूरी है, रोज़ा भी बेहतरीन अमल है। बशर्ते कि खुलूसे दिल के साथ सिर्फ़ रज़ा-ए-इलाही की निव्यत से रखा जाए और हुक्मे इलाही पर यक़ीन होना भी शर्त है कि सिर्फ़ अदायगी-ए-रस्म न हो फिर वो प्रवाब नहीं मिलेगा जिसका यहाँ ज़िक्र किया गया है। इस हदीष मन साम... अलख के ज़ेल में उस्ताजुल कुल हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष भरहूम फ़र्माते हैं कि मैं कहता हूँ उसकी वजह ये है कि रमज़ान के रोज़े रखने में क़व्वते

मलकी के गालिब होने और कुव्वते बैहक्री के मलूब होने के लिये ये मिक्दार काफी है कि उसके तमाम अगले-पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएँ।

## बाब 7 : नबी करीम (ﷺ) रमज़ान में सबसे ज्यादा सखावत किया करते थे

1902. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्हें इब्ने शिहाब ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन ब्रत्बा ने कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) सखावत और ख़ैर के मामले में सबसे ज्यादा सखी थे और आप (ﷺ) की सखावत उस वक़्त और ज्यादा बढ़ जाती थी जब जिब्रईल अलैहिस्सलाम आपसे रमज़ान में मिलते, जिब्रईल अलैहिस्सलाम औहज़रत (ﷺ) से रमज़ान शरीफ़ की हर रात में मिलते यहाँ तक कि रमज़ान गुज़र जाता। नबी करीम (ﷺ) जिब्रईल अलैहिस्सलाम से कुर्आन का दौर करते थे। जब हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आपसे मिलने लगते तो आप (ﷺ) चलती हवा से भी ज्यादा सखी हो जाया करते थे। (राजेअ: 6)

## बाब 8 : जो शख्स रमज़ान में झूठ बोलना और दगाबाज़ी करना न छोड़े

1903. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक्बरी ने, उनसे उनके वालिद कैसान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर कोई शख्स झूठ बोलना और दगाबाज़ी करना (रोज़े रखकर भी) न छोड़े तो अल्लाह तआला को उसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वो अपना खाना-पीना छोड़ दे।

(दीगर मक़ाम: 6058)

मा'लूम हुआ कि रोज़े की हालत में झूठ बोलना और दगाबाज़ी न छोड़ने वाला इंसान रोज़े की तौहीन करता है इसलिये अल्लाह तआला के यहाँ उसके रोज़े का कोई वज़न नहीं, क़ालल बैजाबी लैसल्मन्नसूदु मिन शरइय्यतिस्सौमिनफ़सुलज़ूइ वल्अतशि बल मा यत्तबिउहु मिन कसरिशहवाति व तत्वीइन्नफ़िसल अम्मारति लिन्नफ़िसल मुत्मइन्नति फ़इज़ा लम यहसिल ज़ालिकला यन्ज़ुल्लुहु इलैहि नज़ल्कुबूल (फ़त्ह) यानी रोज़ा से सिर्फ़ भूख व प्यास मुराद नहीं है बल्कि

## ۷- بَابُ أَجْوَدَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ

يَكُونُ فِي رَمَضَانَ

۱۹۰۲- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ بِالْغَيْرِ، وَكَانَ أَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ حِينَ يَلْقَاهُ جِبْرِيلُ، وَكَانَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَلْقَاهُ كُلَّ لَيْلَةٍ فِي رَمَضَانَ حَتَّى يَنْسَلِخَ، يَغْرُضُ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ الْقُرْآنَ، فَإِذَا لَقِيَهُ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ أَجْوَدَ بِالْغَيْرِ مِنَ الرَّبِيعِ الْمُرْسَلِ)). [راجع: ٦]

## ۸- بَابُ مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِ

وَأَتَمَّلَ بِهِ فِي الصَّوْمِ

۱۹۰۳- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذَنْبٍ حَدَّثَنَا سَعِيدُ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِ وَالْفُتْلِ بِهِ فَلَيْسَ لِلَّهِ حَاجَةٌ فِي أَنْ يَدَعَ طَعَامَهُ وَشِرَابَهُ)).

[طرمه في: ۶۰۵۷]

मुрад ये भी है कि शहवाते नफ़सानी को छोड़ दिया जाए, नफ़से अम्मारा को इताअत पर आमादा किया जाए ताकि वो नफ़से मुत्मइन्ना के पीछे लग सके। अगर ये मक़ासिद हासिल नहीं होते तो अल्लाह पाक उस रोज़े पर नज़रे कुबूलियत नहीं फ़र्माएगा। रोज़ादार के मुँह की बदबू अल्लाह के नज़दीक मुस्क से ज़्यादा पसन्दीदा है। इस पर हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहहिष देहलवी फ़र्माते हैं कि मेरे नज़दीक उसका सबब ये है कि इबादत के पसन्दीदा होने से उसका अफ़र भी पसन्दीदा हो जाता है और आलमे मिश्राल में बजाए इबादत के वो अफ़र मुतमप्पल (समान) हो जाता है, इसीलिये आप (ﷺ) ने उसके सबब से मलाइका (फ़रिश्तों) को खुशी पैदा होने और अल्लाह पाक की रज़ामन्दी को एक पल्ले में और बनी आदम को मुस्क के सूँघने पर जो सुरूर (आनन्द) हासिल होता है उसको एक पल्ले में रखा ताकि ये रन्ज़े ग़ैबी उनके लिये ज़ाहिर हो जाए। (हुजतुल्लाहिल बालिगा)

### बाब 9 : कोई रोज़ेदार को अगर गाली दे तो उसे ये कहना चाहिए कि मैं रोज़े से हूँ

1904. हमसे इब्राहीम बिन मूसा बिन मूसाने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने ज़ुरैज ने कहा कि मुझे अता ने ख़बर दी, उन्हें अबू स़ालेह (जो रोगान ज़ैतून और घी बेचते थे) ने उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह पाक फ़र्माता है कि इंसान का हर नेक अमल खुद उसी के लिये है मगर रोज़ा कि वो ख़ास मेरे लिये है और मैं ही उसका बदला दूँगा और रोज़ा गुनाहों की एक ढाल है, अगर कोई रोज़े से हो तो उसे फ़हशगोई न करनी चाहिए और न शोर मचाए। अगर कोई शख्स उसको गाली दे या लड़ना चाहे तो उसका जवाब सिर्फ़ ये हो कि मैं एक रोज़ेदार हूँ, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है! रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह तआला के नज़दीक मुस्क की खुशबू से भी ज़्यादा बेहतर है, रोज़ेदार को दो खुशियाँ हासिल होंगी (एक तो जब) वो इफ़्तार करता है तो खुश होता है और (दूसरे) जब वो अपने रब से मुलाक़ात करेगा तो अपने रोज़े का ज़वाब पाकर खुश होगा।

(राजेअ : 1894)

### ٩- بَابُ هَلْ يَقُولُ إِنِّي صَائِمٌ شَيْئًا

١٩٠٤- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ أَبِي صَالِحٍ الزَّيْتَانِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((قَالَ اللَّهُ: كُلُّ عَمَلٍ ابْنِ آدَمَ لِي، إِلَّا الصَّيَامَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزَى بِهِ، وَالصَّيَامُ جُنَّةٌ، وَإِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمٍ أَحَدِكُمْ فَلَا يَزَلْ وَلَا يَضَعُ، فَإِنْ سَأَهُ أَحَدٌ أَوْ قَاتَلَهُ فَلْيَقُلْ إِنِّي امْرُؤٌ صَائِمٌ. وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَخُلُوفٌ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ رِيحِ الْمَسْكِ. لِلصَّائِمِ فَرْحَانٌ يَفْرَحُهُمَا: إِذَا افْطَرَ فَرِحَ، وَإِذَا لَقِيَ رَبَّهُ فَرِحَ بِصَوْمِهِ)).

[راجع: ١٨٩٤]

**तशरीह :** यानी दुनिया में भी आदमी नेक अमल से कुछ न कुछ फ़ायदा उठाता है चाहे उसकी रिया की निर्यत न हो मग़लन लोग उसको अच्छा समझते हैं मगर रोज़ा ऐसी मख़्फ़ी (छुपी हुई) इबादत है जिसका सिला अल्लाह देगा बन्दों को उसमें कोई दख़ल नहीं।

### बाब 10 : जो मुजर्द हो और ज़िना से डरे तो वो रोज़ा रखे

### ١٠- بَابُ الصَّوْمِ لِمَنْ خَافَ عَلَى نَفْسِهِ الْفُرْوَ

1905. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे अमश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अलकमा ने बयान किया कि मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के साथ जा रहा था। आपने कहा कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ थे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर कोई साहब ताक़त वाला हो तो उसे निकाह कर लेना चाहिए क्योंकि नज़र को नीची रखने और शर्मगाह को बद फ़ेअली से महफूज़ रखने का ये ज़रिया है और किसी में निकाह करने की ताक़त न हो तो उसे रोज़े रखने चाहिए क्योंकि वो उसकी शहवत को ख़त्म कर देता है। (दीगर मक़ाम : 5065, 5066)

**बाब 11 : नबी करीम (ﷺ) का इशार्द जब तुम (रमज़ान का) चाँद देखो तो रोज़े रखो और जब शव्वाल का चाँद देखो तो रोज़े रखना छोड़ दो**  
और सिलह ने अम्मार (रज़ि.) से बयान किया कि जिसने शक के दिन रोज़ा रखा तो उसने हज़रत अबुल क़ासिम (ﷺ) की नाफ़रमानी की

1906. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा कअम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ान का ज़िक्र किया तो फ़र्माया कि जब तक चाँद न देखो रोज़ा शुरू न करो, उसी तरह जब तक चाँद न देख लो रोज़ा मौकूफ़ न करो और अगर बादल छा जाए तो तीस दिन पूरे कर लो।

(राजेअ : 1900)

**तशरीह :** मा'लूम हुआ कि माहे शाबान की 29 तारीख को चाँद में शक हो जाए कि हुआ या नहीं तो उस दिन रोज़ा रखना मना है बल्कि एक हदीष में ऐसा रोज़ा रखने वालों को हज़रत अबुल क़ासिम (ﷺ) का नाफ़रमान बतलाया गया है। इसी तरह ईद का चाँद भी अगर 29 तारीख को नज़र न आए या बादल वगैरह की वजह से शक हो जाए तो पूरे तीस दिन रोज़े रखकर ईद मनानी चाहिए। हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी मरहूम फ़र्माते हैं चूँकि रोज़े का ज़माना क्रमरी महीना के साथ रूयते हिलाल के ए'तिबार से मुन्ज़बित (निर्धारित) था और वो तीस दिन और कभी उन्तीस दिन का होता है लिहाज़ा इश्तिबाह (शक) की सूरत में उस असल की तरफ़ रुजूअ करना हुआ।

1907. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा

١٩٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي خَمْرَةَ  
عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ  
قَالَ: بَيْنَا أَنَا أُنْشِئُ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ فَقَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ  
اسْتَطَاعَ الْهَلَالَ فَلْيَتَزَوَّجْ، فَإِنَّهُ أَغْضُ  
لِلْبَصَرِ، وَأَخْصَنُ لِلْفَرْجِ. وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ  
فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ، فَإِنَّهُ لَهُ وَجَاءٌ)).  
[طرفاء ی : ٥٠٦٥، ٥٠٦٦.]

١١- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِذَا  
رَأَيْتُمُ الْهَلَالَ فَصُومُوا، وَإِذَا أَيْتَمُوهُ  
فَافْطَرُوا))  
وَقَالَ صِلَةَ عَنْ عَمَّارٍ : ((مَنْ صَامَ يَوْمَ  
الشَّكِّ فَقَدْ غَضِيَ أَبَا الْقَاسِمِ ﷺ)).

١٩٠٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ  
مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
ذَكَرَ رَمَضَانَ فَقَالَ: ((لَا تَصُومُوا حَتَّى  
تَرَوْا الْهَلَالَ، وَلَا تَفْطَرُوا حَتَّى تَرَوْهُ،  
إِن كَانَ هُمْ عَلَيْكُمْ فَافْطَرُوا لَهُ)).  
[راجع : ١٩٠٠]

١٩٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ

हमसे मालिक ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि महीना कभी उन्तीस रातों का भी होता है इसलिये (उन्तीस पूरे हो जाने पर) जब तक चाँद न देख लो रोज़ा न शुरू करो और अगर अब्र (बादल) हो जाए तो तीस दिन का शुमार पूरा कर लो। (राजेअ: 1900)

حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الشَّهْرُ بَسْعٌ وَعِشْرُونَ لَيْلَةً، فَلَا تَصُومُوا حَتَّى تَرَوْهُ، فَإِنْ غَمَّ عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا الْعِدَّةَ ثَلَاثِينَ)).

[راجع: ١٩٠٠]

**तारीह:** मुल्ला अली क़ारी (रह.) फ़र्माते हैं, क़ाल फ़िल्मवाहिब व हाज़ा मज़हबुना व मज़हबु मालिक व अबी हनीफ़त व जुम्हूरु सलफ़ व लख़लफ़ व क़ाल व अज़ुहुम अन्नलमुराद तक्दीर मनाज़िलिल क़मरि व ज़ब्तु हिसाबि शुजूमि हत्ता युअलम अन्नशहर पलाघून औ तिस्रुव्व इशरून व हाज़लक़ौल ग़ैर सदीदिन फ़इन्न क़ौलल्मुन्ज़िमीन ला युअतमदु अलैहि (लम्आत) यानी जुम्हूर इलम—ए—सलफ़ और ख़लफ़ का इसी हदीष पर अमल है कुछ लोगों ने ऊपर बयान की गई हदीष में लफ़्ज़ फ़क्दुरु से हिसाब नजूम का ज़ब्त करना मुराद लिया है ये क़ौल दुरुस्त नहीं है और अहले नजूम का क़ौल ए' तिमाद के क़ाबिल नहीं है। आजकल तक्वीम में जो तारीख़ बतलाई जाती है अगरचे उनके मुत्तब करने वाले पूरी कोशिश करते हैं मगर शर'ी उमूर के लिये सिर्फ़ उनकी तहरीरात पर ए' तिमाद नहीं किया जा सकता ख़ास तौर पर रमज़ान और ईद के लिये रूयते हिलाल या दो मोतबर गवाहों की शहादत ज़रूरी है।

1908. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे जब्लह बिन सहीम ने बयान किया, कि मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया महीना इतने दिनों और इतने दिनों का होता है। तीसरी बार कहते हुए आपने अंगूठे को दबा लिया।

١٩٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جُبَّالَةَ بْنِ سَعْتِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الشَّهْرُ هَكَذَا وَهَكَذَا، وَخَمْسَ الْإِنِّهَامِ فِي الْثَلَاثَةِ)).

[اطرافه في: ١٩١٣، ٥٣٠٢]

मुराद ये है कि कभी तीस दिन का और कभी उन्तीस दिन का महीना होता है।

1909. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, या यूँ कहा कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया कि चाँद ही देखकर रोज़े शुरू करो और चाँद ही देखकर रोज़ा मौक़ूफ़ करो और अगर बादल हो जाए तो तीस दिन पूरे कर लो।

١٩٠٩- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زَيَْادٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ- أَوْ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ- ((صُومُوا لِرُؤْيَاهِ وَأَطِيعُوا لِرُؤْيَاهِ، فَإِنْ غَبَى عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا عِدَّةَ شَعْبَانَ ثَلَاثِينَ)).

1910. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन सैफ़ी ने, उनसे इकिमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपनी अज़्वाजे मुतद्हरात से एक महीने तक

١٩١٠- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَفِيٍّ عَنْ عِكْرِمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ

जुदा रहे फिर उन्तीस दिन पूरे हो गए तो सुबह के वक़्त या शाम के वक़्त आप (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ ले गए उस पर किसी ने कहा आपने तो अहद किया था कि आप एक महीना तक उनके यहाँ तशरीफ़ नहीं ले जाएँगे तो औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है।

(दीगर मक़ाम : 5202)

1911. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी बीवियों से जुदा रहे थे, आप (ﷺ) के पाँच में मोच आ गई थी तो आप (ﷺ) ने बालाख़ाना में उन्तीस दिन क़याम किया था, फिर वहाँ से उतरे। लोगों ने अज़्र किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने एक महीना का ईला किया था। ज़वाब में आपने फ़र्माया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है।

(राजेअ : 378)

## बाब 12 : ईद के दोनों महीने कम नहीं होते

इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि इस्हाक़ बिन राहवै ने (इसकी तशरीह में) कहा कि अगर ये कम भी हों फिर भी (अज़्र के ए'तिबार से) तीस दिन का प्रवाब मिलता है मुहम्मद बिन सीरीन (रह.) ने कहा (मतलब ये है) कि दोनों एक साल में नाक़िस (उन्तीस उन्तीस दिन के) नहीं हो सकते।

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस्हाक़ और इब्ने सीरीन के कौल नक़ल करके हदीष की तफ़सीर कर दी, इमाम अहमद ने फ़र्माया है क़ायदा ये है कि अगर रमज़ान 29 दिन का हो तो ज़िल्हिज्ज 30 दिन का होता है, अगर ज़िल्हिज्ज 30 दिन का हो तो रमज़ान 29 दिन का होता है मगर इस तफ़सीर में बाक़ायदा नुजूम का शुबहा रहता है। कुछ साल ऐसे भी होते हैं कि रमज़ान और ज़िल्हिज्ज 29 दिन के होते हैं इसलिये सहीह इस्हाक़ बिन राहवै की तफ़सीर है। इमाम बुखारी (रह.) ने इसीलिये उसको पहले बयान किया कि राजेह यही है। हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहदिष देहलवी फ़र्माते हैं कि शहरा ईदिन ला यन्कुसानि कुछ के नज़दीक उसके ये मा'नी हैं कि उन्तीस उन्तीस दिनों के नहीं होते कुछ के नज़दीक उसके ये मा'नी हैं कि तीस व उन्तीस का अज़्र बराबर ही मिलता है और ये अख़ीर मा'नी क़वाइदे शरइया के लिहाज़ से ज़्यादा चस्पॉ होते हैं। गोया आपने इस बात का दफ़ा करना चाहा कि किसी के दिल में किसी बात का वहम न गुजरे।

1912. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन

رَحِمَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ آلى مِنْ بَسَائِهِ شَهْرًا، فَلَمَّا مَضَى بَسْعَةٌ وَعِشْرُونَ يَوْمًا غَدَا - أَوْ رَاحَ - فَوَيْلَ لَهُ: إِنَّكَ خَلَفْتَ أَنْ لَا تَدْخُلَ شَهْرًا فَقَالَ: ((إِنَّ الشَّهْرَ يَكُونُ بَسْعَةً وَعِشْرِينَ يَوْمًا)).

[طرفه ٣ : ٥٢٠٢.]

١٩١١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: آلى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ بَسَائِهِ، وَكَانَتْ انْفَكَّت رَجُلُهُ، فَأَلَامَ فِي مَشْرِيقِ بَسْعَةٍ وَعِشْرِينَ لَيْلَةً ثُمَّ نَزَلَ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ آلَيْتَ شَهْرًا، فَقَالَ: ((إِنَّ الشَّهْرَ يَكُونُ بَسْعًا وَعِشْرِينَ)). [راجع: ٣٧٨]

١٢ - بَابُ شَهْرًا عَيْنٍ لَا يَنْقُصَانِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ قَالَ إِسْحَاقُ: وَإِنْ كَانَ نَاقِصًا فَهُوَ تَمَامٌ. وَقَالَ مُحَمَّدٌ: لَا يَجْتَمِعَانِ كِلَاهُمَا نَاقِصٌ.

١٩١٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ

सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने इस्हाक़ से सुना, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और मुझे मुसहद ने ख़बर दी, उनसे मुअतमिर ने बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़ज़ाअ ने बयान किया कि मुझे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद ने नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दोनों महीने नाक़िस नहीं रहते।

### बाब 13 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि हम लोग हिसाब किताब नहीं जानते

1913. हमसे आदम बिन अबी अघास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क्रैस ने बयान किया, उनसे सईद बिन अमर ने बयान किया और उन्होंने इब्ने इमर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हम एक बेपढ़ी लिखी क्रोम हैं न लिखना जानते हैं न हिसाब करना। महीना यूँ है और यूँ है। आपकी मुराद एक बार उन्तीस (दिनों से) थी और एक बार तीस दिनों से। (आप ﷺ ने दसों डँगलियों से तीन बार बतलाया) (राजेअ: 1908)

### बाब 14 : रमज़ान से एक या दो दिन पहले रोज़े न रखे जाएँ

1914. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़प्पीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुममें से कोई शख्स रमज़ान से पहले (शाबान की आख़िरी तारीख़ों में) एक या दो दिन के रोज़े न रखे अल्बत्ता अगर किसी को उनमें रोज़े रखने की आदत हो तो वो उस दिन भी रोज़ा रख ले।

قَالَ: سَمِعْتُ إِسْحَاقَ يَقُولُ إِنَّهُ سَمِعَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح وَخَدَّثَنِي مُسَدَّدٌ قَالَ خَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ خَالِدِ بْنِ الْحَذَاءِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((شَهْرَانِ لَا يَنْقُصَانِ، شَهْرًا حَيْثُ رَمَضَانُ وَذُو الْحِجَّةِ)).

۱۳- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا نَكْتُبُ وَلَا نَحْسِبُ))

۱۹۱۳- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ قَيْسٍ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((إِنَّا أُمَّةٌ أُمِّيَّةٌ لَا نَكْتُبُ وَلَا نَحْسِبُ، الشَّهْرُ مَكْلًا وَهَكَذَا)). يَخْتَلِفُ مَرَّةً بِسَعَةِ وَعِشْرِينَ وَمَرَّةً ثَلَاثِينَ.

[راجع: ۱۹۰۸]

۱۴- بَابُ لَا يَقْدَمَنَّ رَمَضَانُ بِصَوْمِ يَوْمٍ وَلَا يَوْمَيْنِ

۱۹۱۴- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي مُرَيْزَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَقْدَمَنَّ أَحَدُكُمْ رَمَضَانَ بِصَوْمِ يَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ رَجُلٌ كَانَ يَصُومُ صَوْمَهُ فَلْيَصُمْ ذَلِكَ الْيَوْمَ)).



मषलन कोई हर माह में पीर या जुमेरात का या किसी और दिन का रोज़ा हर हफ़्ते रखता है और इतिफ़ाक़न वो दिन शाबान की आखिरी तारीख़ों में आ जाए तो वो ये रोज़ा रख ले, आधे शाबान के बाद रोज़ा रखने की मुमानअत इसलिये भी वारिद हुई है ताकि रमज़ान के लिये त्राक़त क़ायम रहे और कमज़ोरी लाहिक़ न हो। अल्फ़ारज़ हर क़दम पर शरीअत के अम्र व नही को सामने रखना यही दीन और यही इबादत और यही इस्लाम है और यही ईमान, हर हर जगह अपनी अक़ल का दख़ल हर्गिज़ नहीं होना चाहिए।

### बाब 15 : अल्लाह अज़्ज व जल्ल का फ़र्माना कि

हलाल कर दिया गया है तुम्हारे लिये रमज़ान की रातों में अपनी बीवियों से सुहबत करना, वो तुम्हारा लिबास है और तुम उनका लिबास हो, अल्लाह ने मा'लूम किया कि तुम घोरी से ऐसा करते थे। सो मुआफ़ कर दिया तुमको और दरगुज़र की तुमसे पस अब सुहबत करो उनसे और दूँदो जो लिख दिया अल्लाह तआला ने तुम्हारी क्रिस्मत में (औलाद से)। (अल बक्रर: : 187)

1915. हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि (शुरू इस्लाम में) हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के सहाबा (रज़ि.) जब रोज़ा से होते और इफ़्तार का वक़्त आता तो कोई रोज़ादार अगर इफ़्तार से पहले भी सो जाता तो फिर उस रात में भी और आने वाले दिन में भी उन्हें खाने-पीने की इजाज़त नहीं थी यहाँ तक कि फिर शाम हो जाती, फिर ऐसा हुआ कि कैस बिन सिरमा अंसारी (रज़ि.) भी रोज़े से थे जब इफ़्तार का वक़्त आया तो वो अपनी बीवी के पास आए और पूछा क्या तुम्हारे पास कुछ खाना है? उन्होंने कहा (इस वक़्त तो कुछ) नहीं है लेकिन मैं जाती हूँ कहीं से लाऊँगी, दिन भर उन्होंने काम किया था इसलिये आँख लग गई जब बीवी वापस हुई और उन्हें (सोते हुए) देखा तो फ़र्माया अफ़सोस तुम महरूम ही रहे! लेकिन दूसरे दिन वो दोपहर को बेहोश हो गए जब उसका ज़िक़्र नबी करीम (ﷺ) से किया गया तो ये आयत नाज़िल हुई, हलाल कर दिया गया तुम्हारे लिये रमज़ान की रातों में अपनी बीवियों से सुहबत करना इस पर सहाबा किराम (रज़ि.) बहुत खुश हुए और ये आयत नाज़िल हुई खाओ-पीओ यहाँ तक कि मुम्ताज़ हो जाए तुम्हारे लिये सुबह की सफ़ेद धारी (सुबह सादिक़) स्याह धारी (सुबह काज़िब) से।

١٥- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ جَلَّ ذِكْرُهُ :  
﴿أَجِلْ لَكُمْ لَيْلَةَ الصَّيَامِ الرَّثِّ إِلَىٰ سَائِكُمْ، مَنْ لَبَسَ لَكُمْ وَاتَّمَّ لَبَسَ لَهُنَّ، عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَآبَ عَلَيْكُمْ وَعَقَّا عَنْكُمْ، فَلَا يَنْ بَاهِرُوهُنَّ وَيَنْتَقُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ﴾  
[البقرة: ١٨٧]

١٩١٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَوْسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ النَّوَّاسِ وَحَدَّثَنَا اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ إِذَا كَانَ الرَّجُلُ صَائِمًا فَخَضَرَ الْإِفْطَارُ فَتَأَمَّ قَبْلَ أَنْ يَفْطُرَ لَمْ يَأْكُلْ لَيْلَةً وَلَا يَوْمَةً حَتَّى يَمْسِيَ. وَإِنْ قَسَرَ بَنَ صَوْمَةً الْأَنْصَارِيِّ كَانَ صَائِمًا، فَلَمَّا خَضَرَ الْإِفْطَارُ أَتَى امْرَأَتَهُ فَقَالَ لَهَا: أَجِدُكَ طَعَامًا؟ قَالَتْ: لَا، وَلَكِنْ أَنْطَلِقُ فَأَطْلُبُ لَكَ، وَكَانَ يَوْمُهُ يَفْعَلُ، فَلَبِثَتْ عَتَاةً، فَجَاءَتْهُ امْرَأَتُهُ، فَلَمَّا رَأَتْهُ قَالَتْ خَبَيْتَ لَكَ، فَلَمَّا انْتَصَفَ النَّهَارُ غَشِيَ عَلَيْهِ، فَلَذِكْرُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَتَرْتَلَزَمُ لَهُ الْآيَةُ: ﴿أَجِلْ لَكُمْ لَيْلَةَ الصَّيَامِ الرَّثِّ إِلَىٰ سَائِكُمْ﴾ فَفَرَحُوا بِهَا فَرَحًا شَدِيدًا، وَتَرْتَلَزَمُوا: ﴿وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَبَيِّنَ لَكُمْ الْغَطْطُ﴾

(दीगर मक़ाम : 4508)

الْأَيْضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ.

[طرفه في : ٤٥٠٨.]

**तशरीह :** निसाई की रिवायत में ये मज़मून यूँ है कि रोज़ेदार जब शाम का खाना खाने से पहले सो जाए, रात भर कुछ नहीं खा पी सकता था यहाँ तक कि दूसरी शाम हो जाती और अबुशौख की रिवायत में यूँ है कि मुसलमान इफ़्तार के वक़्त खाते-पीते, औरतों से सुहबत करते, जब तक सोते नहीं। सोने के बाद फिर दूसरा दिन ख़त्म होने तक कुछ नहीं कर सकते, ये इब्तिदा (शुरू दिनों) में था बाद में अल्लाह पाक ने रोज़े की तफ़्सीलात से आगाह किया और सारी मुश्किलात को आसान फ़र्मा दिया।

**बाब 16 : (सूरह बक्रः में) अल्लाह तआला का फ़र्माना**  
कि सेहरी खाओ और पीयो यहाँ तक कि खुल जाए  
तुम्हारे लिये सुबह की सफ़ेद धारी (सुबह सादिक़) स्याह  
धारी से यानी सुबह काज़िब से फिर पूरे करो अपने रोज़े  
सूरज छुपने तक (इस सिलसिले में) बराअ (रज़ि.) की  
एक रिवायत भी नबी करीम (ﷺ) से मरवी है।

1916. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा कि मुझे हुसैन बिन अब्दुरहमान ने ख़बर दी और उनसे शअबी ने, उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई यहाँ तक कि खुल जाए तुम्हारे लिये सफ़ेद धारी, स्याह धारी से। तो मैंने एक स्याह धागा लिया और एक सफ़ेद धागा लिया और दोनों को तकिये के नीचे रख लिया और रात में देखता रहा मुझ पर उनके रंग न खुले, जब सुबह हुई तो मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उससे तो रात की तारीकी (सुबह काज़िब) और दिन की सफ़ेदी (सुबह सादिक़) मुराद है।

(दीगर मक़ाम : 4509, 4510)

١٦- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:  
﴿وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ  
الْخَيْطُ الْأَيْضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ  
مِنَ الْفَجْرِ، ثُمَّ أَتِمُوا الصِّيَامَ إِلَى  
اللَّيْلِ﴾ فِيهِ الْبَرَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

١٩١٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ يَمْنَانَ حَدَّثَنَا  
هُشَيْمٌ قَالَ: أَخْبَرَنِي حُصَيْنُ بْنُ عَبْدِ  
الرَّحْمَنِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَبْدِ بْنِ حَازِمٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿حَتَّى  
يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَيْضُ مِنَ الْخَيْطِ  
الْأَسْوَدِ﴾ عَمَدْتُ إِلَى عِقَالِ أَسْوَدَ وَإِلَى  
عِقَالِ أَيْضٍ فَجَعَلْتُهُمَا تَحْتَ وَسَادَتِي،  
فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ فِي اللَّيْلِ فَلَا يَسْتَبِينُ لِي.  
فَقَدْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَلَذَكَّرْتُ لَهُ  
ذَلِكَ فَقَالَ: ((إِنَّمَا ذَلِكَ سَوَادُ اللَّيْلِ  
وَيَبَاضُ النَّهَارِ)).

[طرفاه في : ٤٥٠٩, ٤٥١٠.]

अदी बिन हातिम को आपके बतलाने पर हकीक़त समझ में आई कि यहाँ सुबह काज़िब और सुबह सादिक़ मुराद है।

1917. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके बाप

١٩١٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ  
حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ

ने और उनसे सहल बिन सअद ने, (दूसरी सनद इमाम बुखारी रह) ने कहा और मुझसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उनसे अबू गस्सान मुहम्मद बिन मुतरफ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत नाज़िल हुई खाओ—पीयो यहाँ तक कि तुम्हारे लिये सफ़ेद धारी, स्याह धारी से खुल जाए लेकिन मिनल फ़ज़्र (सुबह की) के अल्फ़ाज़ नाज़िल नहीं हुए थे। इस पर कुछ लोगों ने ये कहा कि जब रोज़े का इरादा होता तो स्याह और सफ़ेद धागा लेकर पाँच में बाँध लेते और जब तक दोनों धागे पूरी तरह दिखाई न देने लगते, खाना—पीना बन्द न करते थे, इस पर अल्लाह तआला ने मिनल फ़ज़्र के अल्फ़ाज़ नाज़िल किये फिर लोगों को मा'लूम हुआ कि उससे मुराद रात और दिन हैं।

(दीगर मक़ाम : 4511)

بْنِ سَعْدٍ. وَخَذْنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ خَذَنًا أَبُو غَسَّانَ مُحَمَّدُ بْنُ مُطَرِّفٍ قَالَ: خَذَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: «أَنْزِلَتْ: ﴿كُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ﴾ وَلَمْ يَنْزِلْ «مِنَ الْفَجْرِ» فَكَانَ رِجَالٌ إِذَا ارَادُوا الصَّوْمَ رَتَبُوا أَخَذْنَاهُمْ فِي رِجْلِهِ الْخَيْطَ الْأَبْيَضَ وَالْخَيْطَ الْأَسْوَدَ، وَلَمْ يَزَلْ يَأْكُلُ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَهُ رُؤُوسُهُمَا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ بَعْدَ: «مِنَ الْفَجْرِ» فَعَلِمُوا أَنَّهُ إِنَّمَا يَنْعَى اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ».

[طريقه في : ٤٥١١]

**तशरीह:** इब्तिदा में सहाबा किराम (रज़ि.) में से कुछ लोगों ने तुलूअ फ़ज़्र का मतलब नहीं समझा इसलिये वो सफ़ेद और स्याह धागा से फ़ज़्र मा'लूम करने लगे मगर मिनल फ़ज़्र के लफ़्ज़ नाज़िल हुए तो उनको हकीकत का इल्म हुआ स्याह धारी से रात का अँधेरा और सफ़ेद धारी से सुबह का उजाला मुराद है।

**बाब 17 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि बिलाल (रज़ि.) की अज़ान तुम्हें सेहरी खाने से न रोके**

1918, 19. हमसे इब्नेद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, उनसे इब्नेदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने और (इब्नेदुल्लाह और इब्ने इमर रज़ि.) ने यही रिवायत) कासिम बिन मुहम्मद से और उन्होंने आइशा (रज़ि.) से कि बिलाल (रज़ि.) कुछ रात रहे से अज़ान दे दिया करते थे इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तक इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) अज़ान न दें तुम खाते—पीते रहो क्योंकि वो सुबह सादिक के तुलूअ से पहले अज़ान नहीं देते। कासिम ने बयान किया कि दोनों (बिलाल और उम्मे मक्तूम रज़ि.) की अज़ान के बीच सिर्फ़ इतना फ़ासला होता था कि एक चढ़ते तो दूसरे उतरते।

(राजेअ : 617)

١٧- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

((لَا يَنْتَعَنُكُمْ مِنْ مَسْحُورِكُمْ أَذَانُ بِلَالٍ))

١٩١٨, ١٩١٩ - خَذَنًا غَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ أَبِي أَسَامَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ، وَالْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ بِلَالَ كَانَ يُؤَذِّنُ بَلِيلًا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «كُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يُؤْذَنَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ، فَإِنَّهُ لَا يُؤْذَنُ حَتَّى يَطْلُعَ الْفَجْرُ». قَالَ الْقَاسِمُ: وَلَمْ يَكُنْ يَنْتَعَنُ أَذَانَهُمَا إِلَّا أَنْ يَرْتَقِيَ ذَا وَيَنْزِلَ ذَا».

[راجع : ٦١٧]

**तशीह :**

अल्लामा कस्तलानी (रह.) ने नक़ल किया कि सहाबा किराम (रज़ि.) की सेहरी कलील (छोटी) होती थी, एक आध खजूर या एक आध लुकमा इसलिये ये कलील फ़ासला बतलाया गया। हदीषे हाज़ा में साफ़ मज़कूर है कि बिलाल (रज़ि.) सुबह सादिक से पहले अज़ान देते थे ये उनकी सेहरी की अज़ान होती थी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि.) फ़ज़्र की अज़ान दिया करते थे उस वक़्त जब लोग उनसे कहते कि फ़ज़्र हो गई है क्योंकि वो खुद नाबीना थे। अल्लामा कस्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, **वलम्पअना फिलजमीइ अन्न बिलालन कान युअज़िनु कल्लल्फ़ज़ि शुम्म यतरब्बसु बअद लिहुआइ व नहवहु शुम्म यर्कबुल्फ़ज़्र फ़इज़ा अक्रारब तुलूउहु नज़ल फ़अख़बर इब्न उम्मि मक्तूम अल्ख़ यानी हज़रत बिलाल (रज़ि.) फ़ज़्र से पहले अज़ान देकर उस जगह दुआ के लिये ठहरे रहते और फ़ज़्र का इतिज़ार करते जब तुलूअ फ़ज़्र करीब होती तो वहाँ से नीचे उतरकर इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) को ख़बर करते और वो फिर फ़ज़्र की अज़ान देते थे। दोनों की अज़ान के बीच कलील फ़ासला का मतलब यही समझ में आता है आयते कुआनिया हत्ता यतबय्यना लकुमुल ख़यतल् अब्यज़ु (अल्बक़र: 187) से ये भी ज़ाहिर होता है कि सुबह सादिक नुमायाँ हो जाने तक सेहरी खाने की इजाज़त है। जो लोग रात रहते हुए सेहरी खा लेते हैं ये सुन्नत के खिलाफ़ है। सुन्नते सेहरी वही है कि उससे फ़ारिग होने और फ़ज़्र की नमाज़ शुरू करने के बीच सिर्फ़ इतना फ़ासला होना चाहिए जितना कि पचास आयात के पढ़ने में वक़्त लगता है तुलूअे फ़ज़्र के बाद सेहरी खाना जाइज़ नहीं है।**

### बाब 18 : सेहरी खाने में देर करना

1920. हमसे मुहम्मद बिन इब्न अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सेहरी अपने घर खाता फिर जल्दी करता ताकि नमाज़ नबी करीम (ﷺ) के साथ मिल जाए। (राजेअ: 577)

यानी सेहरी वो बिलकुल आखिर वक़्त खाया करते थे फिर जल्दी से जमाअत में शामिल हो जाते क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) फ़ज़्र की नमाज़ हमेशा तुलूअे फ़ज़्र के बाद अँधेरे ही में पढ़ा करते थे ऐसा नहीं जैसा कि आजकल हन्फ़ी भाईयों ने मा' मूल बना लिया है कि नमाज़े फ़ज़्र लगभग सूरज निकलने के वक़्त पढ़ते हैं, हमेशा ऐसा करना सुन्नते नबी के खिलाफ़ है। नमाज़े फ़ज़्र को अव्वले वक़्त अदा करना ही ज़्यादा बेहतर है।

### बाब 19 : सेहरी और फ़ज़्र की नमाज़ में कितना फ़ासला होता था

1921. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे ज़ैद बिन ग़ाबित (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हमने सेहरी खाई, फिर आप (ﷺ) सुबह की नमाज़ के लिये खड़े हो गए। मैंने पूछा कि सेहरी और अज़ान में कितना फ़ासला होता था तो उन्होंने कहा कि पचास आयतें (पढ़ने) के मुवाफ़िक़ फ़ासला होता था। (राजेअ: 575)

### ١٨- بَابُ تَفْجِيلِ السُّحُورِ

١٩٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَيْسِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «كَانَتْ أَسْحَرُ لِي أَهْلِي، ثُمَّ يَكُونُ سُرْعَى أَنْ أَذْرِكَ السُّجُودَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ

ﷺ. (راجع: ٥٧٧)

### ١٩- بَابُ قَدْرِ كَمِّ بَيْنِ السُّحُورِ وَصَلَاةِ الْفَجْرِ

١٩٢١- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامُ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ زَيْدِ بْنِ نَابِتٍ قَالَ: «سَعَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ. قُلْتُ: كَمْ كَانَ بَيْنَ الْأَذَانِ وَالسُّحُورِ؟ قَالَ: قُنْرُ خَمْسِينَ آيَةً. (راجع: ٥٧٥)

**तशीह:** सनद में हज़रत क़तादा बिन दआमा का नाम आया है, उनकी कुनियत अबुल ख़त्ताब है, नाबीना और क़वीय्युल हाफ़िज़ थे, बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी एक बुजुर्ग कहते हैं कि जिस का जी चाहे अपने ज़माने के सबसे ज़्यादा क़वीय्युल हाफ़िज़ बुजुर्ग की ज़ियारत करे वो क़तादा को देख ले। खुद क़तादा कहते हैं कि जो बात भी मेरे कान में पड़ती है उसे क़ल्ब फ़ौरन् महफूज़ कर लेता है। अब्दुल्लाह बिन सरजिस और अनस (रज़ि.) और बहुत से दीगर हज़रात से रिवायत करते हैं, 70 हिजरी में इतिक़ाल फ़र्माया (रह.)। (आमीन)

**बाब 20 : सेहरी खाना मुस्तहब है वाजिब नहीं है**

क्योंकि नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अम्हाबे किराम (रज़ि.) ने पे दर पे रोज़े रखे और उनमें सेहरी का ज़िक्र नहीं है।

1922. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सौमे विसाल रखा तो सहाबा किराम (रज़ि.) ने भी रखा लेकिन सहाबा (रज़ि.) के लिये दुश्वारी हो गई। इसलिये कि आप (ﷺ) ने मना फ़र्मा दिया सहाबा (रज़ि.) ने इस पर अर्ज किया कि आप (ﷺ) तो सौमे विसाल रखते हैं ? औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मैं तो बराबर खिलाया-पिलाया जाता हूँ। (दीगर मक़ाम: 1962)

۲۰- بَابُ بَرَكَةِ الشُّحُورِ عَنْ غَيْرِ  
إِنْجَابٍ، لِأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَصْحَابَهُ  
وَاصَلُوا وَلَمْ يَذْكُرِ الشُّحُورُ  
۱۹۲۲- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ  
حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَاصَلَ،  
فَوَاصَلَ النَّاسُ، فَتَشَقَّ عَلَيْهِمْ، فَهَاضَمُوا،  
قَالُوا: إِنَّكَ تَوَاصِلٌ، قَالَ: ((لَسْتُ  
كَهَيْتِكُمْ، إِنِّي أَطْلُ أَطْعَمُ وَأَسْقِي)).

[طرفة ي: ۱۹۶۲].

**तशीह:** सौमे विसाल मुतवातिर (लगातार) कई दिन सेहरी व इफ़्तार किये बग़ैर रोज़ा रखना और रखे चले जाना, कई बार औहज़रत (ﷺ) ऐसा रोज़ा रखा करते थे मगर सहाबा किराम (रज़ि.) को आप (ﷺ) ने मशक़त के पेशे-नज़र ऐसे रोज़े से मना किया बल्कि सेहरी खाने का हुक्म दिया ताकि दिन में उससे कुव्वत हासिल हो। इमाम बुखारी (रह.) का मंश-ए-बाब ये है कि सेहरी खाना सुन्नत है, मुस्तहब है; मगर वाजिब नहीं है क्योंकि सौमे विसाल में सहाबा किराम (रज़ि.) ने भी बहरहाल सेहरी को तर्क कर दिया था, बाब का मक़सद प्राबित हुआ।

1923. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सेहरी खाओ कि सेहरी में बरकत होती है।

۱۹۲۳- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا  
شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيرِ بْنُ صُهَيْبٍ قَالَ:  
سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «تَسَحَّرُوا، فَإِنَّ  
فِي الشُّحُورِ بَرَكَةً»)).

सेहरी खाना इसलिये भी ज़रूरी है कि यहूदियों के यहाँ सेहरी खाने का चलन नहीं है, पस उनकी मुख़ालफ़त में सेहरी खानी चाहिए और उससे रोज़ा पूरा करने में मदद भी मिलती है, सेहरी में चन्द खजूर और पानी के घूँट भी काफी हैं और जो अल्लाह मयस्सर करे। बहरहाल सेहरी छोड़ना सुन्नत के खिलाफ़ है।

**बाब 21 : अगर कोई शख़्स रोज़े की निय्यत**

दिन में करे तो दुरुस्त है और उम्मे ददा (रज़ि.) ने कहा कि अबू ददा

۲۱- بَابُ إِذَا نَوَى بِالنَّهَارِ صَوْمًا  
وَقَالَتْ أُمُّ الْوَدَّاءِ: كَانَ أَبُو الْوَدَّاءِ

(रज़ि.) उनसे पूछते क्या कुछ खाना तुम्हारे पास है? अगर हम जवाब देते कि कुछ नहीं तो कहते फिर आज मेरा रोज़ा रहेगा। उसी तरह अबू तलहा, अबू हुरैरह, इब्ने अब्बास और हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने भी किया।

1924. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अक्वा ने कि नबी करीम (ﷺ) ने आशूरा के दिन एक शख्स को ये ऐलान करने के लिये भेजा कि जिसने खाना खा लिया है वो अब (दिन डूबने तक रोज़े की हालत में) पूरा करे या (ये फ़र्माया कि) रोज़ा रखे और जिसने न खाया हो (तो वो रोज़ा रखे) खाना न खाए।

(दीगर मक़ाम : 2007, 7265)

मक़सदे बाब ये है कि किसी शख्स ने फ़ज्र के बाद से कुछ न खाया पिया हो और उसी हालत में रोज़ा की निय्यत दिन में भी कर ले तो रोज़ा हो जाएगा मगर ये इजाज़त नफ़ल रोज़े के लिये है; फ़र्ज़ रोज़े की निय्यत रात ही में सेहरी के वक़्त होनी चाहिए। हदीष में आशूरा के रोज़े का ज़िक्र है जो रमज़ान की फ़र्ज़ियत से पहले फ़र्ज़ था, बाद में महज़ नफ़ल की हैयियत में रह गया।

## बाब 22 : रोज़ेदार सुबह को जनाबत में उठे तो क्या हुक़म है

1925, 26. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम बिन मुगीरह के गुलाम सुमय ने बयान किया, उन्होंने अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं अपने बाप के साथ आइशा और उम्मे सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ (दूसरी सनद इमाम बुखारी रह. ने कहा कि) और हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्होंने बयान किया कि मुझे अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, उन्हें मरवान ने ख़बर दी और उन्हें आइशा और उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (कुछ दफ़ा) फ़ज्र होती तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने अहल के साथ जुनुबी होते थे, फिर आप (ﷺ) गुस्ल करते और आप (ﷺ) रोज़े से होते थे और मरवान बिन हक़म ने अब्दुर्रहमान बिन हारिष से

يَقُولُ: عِنْدَكُمْ طَعَامٌ؟ فَإِنْ قُلْنَا لَا، قَالَ: فَإِنِّي صَائِمٌ يَوْمَئِذَا هَذَا. وَقَعَلَهُ أَبُو طَلْحَةَ، وَأَبُو هُرَيْرَةَ، وَابْنُ عَبَّاسٍ، وَخُذَيْفَةُ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ.

١٩٢٤ - حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلًا يُنَادِي فِي النَّاسِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ: ((أَنْ مَنْ أَكَلَ فَلْيُحِمِّمْ أَوْ فَلْيَصُمْ، وَمَنْ لَمْ يَأْكُلْ فَلَا يَأْكُلْ)).

[طرفاء في : ٢٠٠٧, ٧٢٦٥].

## ٢٢ - بَابُ الصَّائِمِ يُصْبِحُ جُنْبًا

١٩٢٦, ١٩٢٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ سَمِيِّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ بْنِ الْمُغِيرَةِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا بَكْرٍ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: ((كُنْتُ أَنَا وَأَبِي حِينَ دَخَلْنَا عَلَى عَائِشَةَ وَأُمِّ سَلَمَةَ ح)).

وَحَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرٍ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ أَنَّ أَبَاهُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ أَخْبَرَهُ مَرْوَانَ أَنَّ عَائِشَةَ وَأُمَّ سَلَمَةَ أَخْبَرَتَاهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَنْزِلُهُ الْفَجْرُ وَهُوَ جُنْبٌ مِنْ أَهْلِهِ،

कहा मैं तुम्हें अल्लाह की कसम देता हूँ अबू हुरैरह (रज़ि.) को तुम ये हदीष साफ़-साफ़ सुना दो। (क्योंकि अबू हुरैरह रज़ि. का फ़त्वा उसके खिलाफ़ था) उन दिनों मरवान, अमीर मुआविया (रज़ि.) की तरफ़ से मदीना का हाकिम था। अबू बक्र ने कहा कि अब्दुरहमान ने इस बात को पसन्द नहीं किया। इतिफ़ाक़ से हम सब एक बार जुलुहुलैफ़ा में जमा हो गए। अबू हुरैरह (रज़ि.) की वहाँ कोई ज़मीन थी, अब्दुरहमान ने उनसे कहा कि आपसे एक बात कहूँगा और अगर मरवान ने उसकी मुझे कसम न दी होती तो मैं कभी आपके सामने उसे न छेड़ता। फिर उन्होंने आइशा (रज़ि.) और उम्मे सलमा (रज़ि.) की हदीष ज़िक्र की। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा (मैं क्या करूँ) कहा कि फ़ज़ल बिन अब्बास (रज़ि.) ने ये हदीष बयान की थी (और वो ज़्यादा जानने वाले हैं) कि हमें हम्माम और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के साहबज़ादे ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ऐसे शख्स को जो सुबह के वक़्त जुनुबी होने की हालत में उठा हो इफ़्तार का हुक्म देते थे लेकिन हज़रत आइशा (रज़ि.) और उम्मे सलमा (रज़ि.) की ये रिवायत ज़्यादा मुअतबर है।

(दीगर मक़ाम : 1930, 1931, 1932)

ثُمَّ يَقْسِمُ وَيَصُومُ. وَقَالَ مَرْوَانُ لِعَبْدِ  
الرَّحْمَنِ بْنِ الْخَارِثِ: أَلَيْسَ بِأَهْلٍ لَتَقْرَعَنَّ  
بِهَا أَبَا هُرَيْرَةَ، وَمَرْوَانُ يَوْمئِذٍ عَلَى  
الْمَدِينَةِ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَكَّرَ ذَلِكَ عَبْدُ  
الرَّحْمَنِ. ثُمَّ قُلْتُ لَنَا أَنْ نَجْمَعَ بَيْنَ  
الْخَلِيفَةِ - وَكَانَتْ لِأَبِي هُرَيْرَةَ هُنَالِكَ  
أَرْضٌ - فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ لِأَبِي هُرَيْرَةَ:  
إِنِّي ذَاكِرٌ لَكَ أَمْرًا، وَلَوْلَا مَرْوَانُ أَلَيْسَ  
عَلَيْهِ فِيهِ لَمْ أَذْكُرْكَ لَكَ. فَذَكَرَ قَوْلَ  
عَائِشَةَ وَأُمِّ سَلَمَةَ، فَقَالَ: كَذَلِكَ خَلَّيْنِي  
الْفَضْلُ بْنُ عَسَى وَهُوَ أَكْثَرُ. وَقَالَ  
هَمَّامٌ وَابْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَأْمُرُ بِالْإِفْطَارِ))  
وَالْأَوَّلُ أَشَدُّ.

[طرفاء في : ١٩٣٠، ١٩٣١]

[طرفه في : ١٩٣٢]

**तशरीह :** अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़ज़ल की हदीष सुनकर उसके खिलाफ़ फ़त्वा दिया था। मरवान का ये मतलब था कि अब्दुरहमान उनको परेशान करें लेकिन अब्दुरहमान ने ये मंज़ूर न किया और खामोश रहे फिर मौक़ा पाकर अबू हुरैरह (रज़ि.) से इस मसले को ज़िक्र किया। एक रिवायत में है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने आइशा और उम्मे सलमा (रज़ि.) की हदीष सुनकर कहा कि वो ख़ूब जानती हैं गोया अपने फ़त्वा से रूजूअ किया। (वहीदी)

अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़रमते हैं कि इस हदीष से बहुत से फ़वाइद निकलते हैं मसलन इलमा का उमरा के यहाँ जाकर इल्मी मुज़ाकरात करना, मन्कूलात में अगर ज़रा भी शक हो जाए तो अपने से ज़्यादा आलिम की तरफ़ रूजूअ करके उससे अम्मे हक़ मा'लूम करना, ऐसे उमूर जिन पर औरतों को बनिस्बत मर्दों के ज़्यादा ख़बर हो सकती है, की बाबत औरतों की रिवायात को मर्दों की मरवियात पर तरजीह देना, उसी तरह बिल अक्स जिन उमूर पर मर्दों को ज़्यादा ख़बर हो सकती है उनके लिये मर्दों की रिवायात को औरतों की मरवियात पर तरजीह देना, बहरहाल हर अमर में आहज़रत (ﷺ) की इक्तिदा करना, जब तक उस अमर के बारे में खुसूसे नबवी न प्राबित हो और ये कि इख़्तिलाफ़ के वक़्त किताबों-सुन्नत की तरफ़ रूजूअ करना और ख़बरे वाहिद मर्द से मरवी हो या औरत से उसका हुज्जत होना, ये जुम्ला फ़वाइद इस हदीष से निकलते हैं और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी प्राबित होती है जिन्होंने हक़ का ए'तिराफ़ करके उसकी तरफ़ रूजूअ किया। (फ़तहूल बारी)

बाब 23 : रोजेदार का अपनी बीवी से मुबाशरत यानी बोसा, मसास वगैरह दुरुस्त है और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रोजेदार पर बीवी की शर्मगाह हुराम है

1927. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे हकम ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) रोजे से होते लेकिन (अपनी बीवियों के साथ तदबील (बोसा लेना) व मुबाशरत (अपने जिस्म से लगा लेना) भी कर लेते थे। औहज़रत (ﷺ) तुम सबसे ज्यादा अपनी इबाहिशात पर क़ाबू रखने वाले थे, बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (सूरह ताँहा) में जो मआरिब का लफ़्ज़ है वो हाज़त व ज़रूरत के मा'नी में है, ताउस ने कहा कि लफ़्ज़ कलुल इरबति (जो सूरह नूर में है) उस अहमक़ को कहेंगे जिसे औरतों की कोई ज़रूरत न हो।

बाब 24 : रोजेदार का रोजे की हालत में अपनी बीवी का बोसा लेना

और जाबिर बिन ज़ैद ने कहा अगर रोजेदार ने शहवत से देखा और मनी निकल आई तो वो अपना रोज़ा पूरा कर ले।

1928. हमसे मुहम्मद बिन मुन्नना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया कि मुझे मेरे वालिद उर्वा ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से (दूसरी सनद इमाम बुखारी रह. ने कहा कि) और हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी कुछ अज़्वाज का रोजेदार होने के बावजूद बोसा ले लिया करते थे। फिर आप हैंसे। (राजेअ: 1927)

1929. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया उनसे हिशाम बिन अबी अब्दुल्लाह ने, उनसे यह्या बिन अबी क़प्पीर ने, उनसे अबू सलमा ने, उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) की बेटी ज़ैनब ने और उनसे उनकी वालिदा (हज़रत उम्मे

۲۳- بَابُ الْمُبَاشَرَةِ لِلصَّائِمِ  
وَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: يَحْرُمُ عَلَيْهِ فَرْجُهَا.

۱۹۲۷- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: عَنْ شُعْبَةَ عَنْ الْعَكْمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَمْلُكُ وَيَتَاهَوَى وَهُوَ صَائِمٌ، وَكَانَ أَمْلَكَكُمْ لِزَوْجِهِ)).

وَقَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: «مَأْرِبٌ» حَاجَةٌ. وَقَالَ طَاوُسٌ: «أَوَّلَى الْإِنْتِ» الْأَخْمَلُ لَا حَاجَةَ لَهُ لِي النِّسَاءِ.

۲۴- بَابُ الْفِتْنَةِ لِلصَّائِمِ  
وَقَالَ جَابِرُ بْنُ زَيْدٍ: إِنْ نَظَرَ قَامَتِي يَوْمَ صَوْمَةٍ. [طَرَفُهُ ن: ۱۹۲۸].

۱۹۲۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ جِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ جِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيَقْبَلُ بَعْضَ أَزْوَاجِهِ وَهُوَ صَائِمٌ، ثُمَّ ضَعَفَتْ)).

[راجع: ۱۹۲۷]

۱۹۲۹- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ جِشَامٍ عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي مُسْلِمَةَ عَنْ زَيْنَبِ ابْنَةِ أُمِّ



सलमा रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह के साथ एक चादर में (लेटी हुई) थी कि मुझे हैज़ आ गया। इसलिये मैं चुपके से निकल आई और अपना हैज़ का कपड़ा पहन लिया। आप (ﷺ) ने पूछा क्या बात हुई? क्या हैज़ आ गया है? मैंने कहा हौं, फिर मैं आप (ﷺ) के साथ उसी चादर में चली और उम्मे सलमा (रज़ि.) और रसूलुल्लाह (ﷺ) एक ही बर्तन से गुस्ल (जनाबत) किया करते थे और आँहज़रत (ﷺ) रोज़े से होने के बावजूद उनका बोसा लेते थे। (राजेज़ : 298)

**तस्रीह :** शरीअत एक आसान जामेअ कानून का नाम है जिसका ज़िन्दगी के हर हर गोशे से ता'ल्लुक ज़रूरी है, मियाँ बीवी का ता'ल्लुक जो भी है ज़ाहिर है इसलिये हालते रोज़ा में अपनी बीवी के साथ बोस व किनार को जाइज़ रखा गया है बशर्ते कि बोसा लेने वालों को अपनी तबीअत पर पूरा क़ाबू हासिल हो, इसीलिये जवानों के वास्ते बोसा व किनार की इजाज़त नहीं। उनका नफ़्स ग़ालिब रहता है हौं ये ख़ौफ़ न हो तो जाइज़ है।

## बाब 25 : रोज़ेदार का गुस्ल करना जाइज़ है

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने एक कपड़ा तर करके अपने जिस्म पर डाला हालाँकि वो रोज़े से थे और शअबी रोज़े से थे लेकिन हम्माम में (गुस्ल के लिये) गए और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि हाँडी या किसी चीज़ का मज़ा मा'लूम करने में (ज़ुबान पर रखकर) कोई हर्ज नहीं। हसन बसरी (रह.) ने कहा कि रोज़ेदार के लिये कुल्ली करने और ठण्ड हासिल करने में कोई क़बाहत नहीं और इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि जब किसी को रोज़ा रखना हो तो वो सुबह को इस तरह उठे कि तेल लगा हुआ हो और कँघा किया हुआ हो और अनस (रज़ि.) ने कहा कि मेरा एक आबज़न (हौज़ पत्थर का बना हुआ) है जिसमें मैं रोज़े से होने के बावजूद ग़ौते मारता हूँ, नबी करीम (ﷺ) से ये मन्कूल है कि आप (ﷺ) ने रोज़ा में मिस्वाक की और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि दिन में सुबह और शाम (हर वक़्त) मिस्वाक किया करते और रोज़ेदार थूक न निगले और अत्ता (रह.) ने कहा कि अगर थूक निगल गया तो मैं ये नहीं कहता कि उसका रोज़ा टूट गया और इब्ने सीरीन (रह.) ने कहा कि तर मिस्वाक करने में कोई हर्ज नहीं है किसी ने कहा कि उसमें जो एक मज़ा होता है उस पर आपने कहा क्या पानी में मज़ा नहीं होता? हालाँकि उससे कुल्ली करते हो। अनस, हसन और इब्राहीम ने कहा कि रोज़ेदार के लिये

سَلَّمَ عَنْ أَمَتِهَا قَالَتْ: بَعِمَا أَنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي الْخِمْلَةِ إِذْ حِضْتُ، فَاسْتَلْتُ فَأَخَذْتُ لِيَابَ حِضَّتِي فَقَالَ: ((مَا لَكَ))، أَنْفَسْتُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَدَخَلْتُ مَعَهُ فِي الْخِمْلَةِ. وَكَأَنَّهُ هِيَ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَمَسَّلَانِ مِنْ إِبْنَاءٍ وَاحِدٍ، وَكَانَ يُقَبِّلُهَا وَهُوَ صَائِمٌ)). [راجع: 298]

## ٢٥- بَابُ اغْتِسَالِ الصَّائِمِ

وَبَلَ أَنَّهُ عَمَرَ قَوْلًا فَقَالَ لَهُ عَلَيْهِ وَهُوَ صَائِمٌ. وَدَخَلَ الشَّعْبِيُّ الْحَمَّامَ وَهُوَ صَائِمٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَا بَأْسَ أَنْ يَتَغَطَّمَ الْفَتْرَ أَوْ الشَّيْءَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: لَا بَأْسَ بِالْمُضْمَضَةِ وَالْتَرْدُ لِلصَّائِمِ. وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: إِذَا كَانَ صَوْمٌ أَحَدِكُمْ فَلْيُصْبِحْ ذَهَبًا مُتَرَجِّلًا. وَقَالَ أَنَسٌ: إِنْ لِي أَنْزَلًا أَتَقَعَمُ فِيهِ وَأَنَا صَائِمٌ. وَتَذَكَّرُوا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ اسْتَاكَ وَهُوَ صَائِمٌ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: يَسْتَاكُ أَوَّلَ النَّهَارِ وَآخِرَهُ. وَلَا يَتَلَعُ وَقَالَ عَطَاءٌ: إِنْ اِخْرَجَ رِيْقَةً لَا أَوَّلَ يُفْطِرُ. وَقَالَ ابْنُ سَبْوَيْنَ: لَا بَأْسَ بِالسَّوَاكِ الرُّطْبِ. قِيلَ: لَهُ طَعْمٌ. قَالَ: وَالْمَاءُ لَهُ طَعْمٌ وَأَنْتَ تُمْضِغُهُ بِوِ وَلَمْ يَرِ أَنَسٌ وَالْحَسَنُ وَإِبْرَاهِيمُ بِالْكُحْلِ

सुरमा लगाना दुरुस्त है।

لِلصَّائِمِ بَاسًا.

**तशरीह :** हजरत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के अषर मज़कूरा फिल् बाब की मुनासबत बाब के तर्जुमे से मुश्किल है, इब्ने मुनीर ने कहा इमाम बुखारी (रह.) ने उसका रद्द किया जिसने रोज़ेदार के लिये गुस्ल मकरूह रखा है क्योंकि अगर मुँह में पानी जाने के डर से मकरूह रखा है तो कुत्ली करने और नाक में पानी डालने से भी उसका डर रहता है। इसलिये अगर मकरूह रखा है कि रोज़े में ज़ैब व ज़ीनत और आराइश अच्छी नहीं तो सलफ़ ने कँधी करना, तेल डालना रोज़ेदार के लिये जाइज़ रखा है। हाफ़िज़ ने ये बयान नहीं किया कि इब्ने मसऊद (रज़ि.) के अषर को किसने वस्ल किया न कस्तलानी ने बयान किया। (बहीदी)

1930. हमसे अहमद बिन मालेह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे यूनस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा और अबूबक्र ने कि आइशा (रज़ि.) ने कहा रमज़ान में फ़ज्र के वक़्त नबी करीम (ﷺ) एहतिला मसे नहीं (बल्कि अपनी अज़्वाज के साथ मुहबत करने की वजह से) गुस्ल करते और रोज़ा रखते थे (मा'लूम हुआ कि गुस्ले जनाबत रोज़ेदार फ़ज्र के बाद कर सकता है) (राजेअ : 1925)

1931. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझे से इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम बिन मुगीरह के गुलाम समी ने, उन्होंने ने अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान से सुना, उन्होंने ने बयान किया कि मेरे बाप अब्दुर्रहमान मुझे साथ लेकर आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, आइशा (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) सुबह जुंबी होने की हालत में करते एहतिलाम की वजह से नहीं बल्कि जिमाअ की वजह से! फिर आप रोज़े से रहते (यानी गुस्ल फ़ज्र की नमाज़ से पहले सेहरी का वक़्त निकल जाने के बाद करते)। (राजेअ : 1925)

1932. उसके बाद हम उम्मे सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने भी इसी तरह हदीष बयान की। (राजेअ : 1926)

इस हदीष से भी दोनों मसले प्राबित हुए रोज़ेदार के लिये गुस्ल का जाइज़ होना और बहालते रोज़ा गुस्ले जनाबत फ़ज्र होने के बाद करना चूँकि शरीअत में हर मुम्किन आसानी पेशेनज़र रखी गई है इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने अपने उस्व ए-हस्ना से अम्लन ये आसानियाँ पेश की हैं।

١٩٣٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَالِكٍ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ وَأَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُدْرِكُهُ الْفَجْرُ لِي وَتَقْضَانِ مِنْ غَيْرِ حَلَمٍ لِيَقْضِيَهُ وَيَصُومَهُ)). [راجع: ١٩٢٥]

١٩٣١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامِ بْنِ الْمُفَيْزَةِ أَنَّ سَمِعَ أَبَا بَكْرٍ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: ((كَانَتْ أُمِّي وَأَبِي، فَلَقِيتُ مَعَهُ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَشْهَدُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِنْ كَانَ لَيَصْبُحُ جُنْبًا مِنْ جَمَاعٍ غَيْرِ احْتِلَامٍ ثُمَّ يَصُومُهُ)). [راجع: ١٩٢٥]

١٩٣٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ دَخَلْنَا عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَقَالَتْ مِثْلَ ذَلِكَ. [راجع: ١٩٢٦]

बाब 26 : अगर रोज़ेदार भूलकर खा पी ले तो

٢٦- بَابُ الصَّائِمِ إِذَا أَكَلَ أَوْ

## रोज़ा नहीं जाता

और अत्रा ने कहा कि अगर किसी रोज़ेदार ने नाक में पानी डाला और वो पानी हलक़ के अंदर चला गया तो उसमें कोई मुजायका नहीं अगर उसको निकाल न सके और इमाम हसन बसरी ने कहा कि अगर रोज़ेदार के हलक़ में मक्खी चली गई तो उसका रोज़ा नहीं जाता और इमाम हसन बसरी और मुजाहिद ने कहा कि अगर भूलकर जिमाअ कर ले तो उस पर क़ज़ा वाजिब न होगी।

1933. हमसे अब्दान ने बयान किया कि हमें यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने ख़बर दी, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इब्ने सीरीन ने बयान किया कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत किया कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब कोई भूल गया और कुछ खा पी लिया तो उसे चाहिए कि अपना रोज़ा पूरा करे। क्योंकि उसको अल्लाह तआला ने खिलाया और पिलाया। (दीगर मक़ाम : 6669)

**तशरीह:** इमाम हसन बसरी (रह.) और मुजाहिद के इस अफ़र को अब्दुरज़ाक़ ने वस्ल किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने अबी नुजैह से, उन्होंने मुजाहिद से, उन्होंने कहा अगर कोई आदमी रमज़ान में भूलकर अपनी औरत से सुहबत करे तो कोई नुक़सान न होगा और पौरी से रिवायत की, उन्होंने एक शख़्स से, उन्होंने हसन बसरी से, उन्होंने कहा भूलकर जिमाअ करना भी भूलकर खाने-पीने के बराबर है (वहीदी)। ये फ़त्वा एक मसले की वज़ाहत के लिये है वरना ये काम लगभग नामुमकिन ही है कि कोई रोज़ेदार भूलकर ऐसा करे, कम अज़क़म उसे याद न रहा हो तो औरत को ज़रूर याद रहेगा और वो याद दिलाएगी इसीलिये बहालते रोज़ा क़स़दन (जान-बूझकर) जिमाअ करना सख़्ततरीन गुनाह क़रार दिया गया जिससे रोज़ा टूट जाता है और उसका कफ़़ारा पे दर पे (लगातार) दो माह के रोज़े रखना वगैरह वगैरह क़रार दिया गया है।

## बाब 27 : रोज़ेदार के लिये तर या ख़ुश्क़ मिस्वाक इस्ते'माल करनी दुरुस्त है

और आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) से मन्कूल है कि उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को रोज़ा की हालत में बेशुमार दफ़ा वुजू में मिस्वाक करते देखा और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) की ये हदीष बयान की कि अगर मेरी उम्मत पर मुश्किल न होती तो मैं हर वुजू के साथ मिस्वाक का हुक्म वजूबन दे देता। इसी तरह की हदीष जाबिर और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) की भी नबी करीम (ﷺ) से मन्कूल है। उसमें औहज़रत (ﷺ) ने रोज़ेदार वगैरह की कोई तख़सीस नहीं की।

## شَرِبَ نَاسِيًا

وَقَالَ عَطَاءٌ : إِنْ اسْتَوْرَ لَدَخَلَ الْمَاءَ فِي خَلْقِهِ لَا بَأْسَ إِنْ لَمْ يَمْلِكْ رَدَّهُ.  
وَقَالَ الْحَسَنُ : إِنْ دَخَلَ خَلْقَهُ اللَّذَابُ فَلَا ضَرَرَ عَلَيْهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ وَمُجَاهِدٌ : إِنْ جَامَعَ نَاسِيًا فَلَا ضَرَرَ عَلَيْهِ.

١٩٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا ابْنُ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : (إِذَا نَسِيَ فَأَكَلَ وَشَرِبَ فَلَيْتَمَ صَوْمُهُ، فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ اللَّهُ وَسَقَاهُ)).  
[طرفه في : ٦٦٦٩].

## ٢٧- بَابُ السَّوَاكِ الرُّطْبِ وَالْيَاسِ لِلصَّائِمِ

وَيَذْكُرُ عَنْ غَابِرِ بْنِ رَيْثَةَ قَالَ : (رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْتَاكُ وَهُوَ صَائِمٌ مَا لَا أَحْصِي أَوْ أَعْدُ)). وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : (لَوْ لَا أَنِ اشْتَقَّ عَلَى أُمَّتِي لِأَمْرِهِمْ بِالسَّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ وَضُوءٍ)). وَتَرَوْنَ نَحْوَهُ عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ وَخَالِدِ بْنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَلَمْ يَخْصُ الصَّائِمَ مِنْ غَيْرِهِ.

आइशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान नक़ल किया कि (मिस्वाक) मुँह को पाक रखने वाली और रब की रज़ा का सबब है और अज्ञा और क़तादाने कहा रोज़ेदार अपना थूक निगल सकता है।

1934. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अज्ञा बिन ज़ैद ने, उनसे हम्रान ने, उन्होंने हज़रत ब्रह्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) को वुजू करते देखा, आपने (पहले) अपने दोनों हाथों पर तीन बार पानी डाला फिर कुल्ली की और नाक साफ़ की, फिर तीन बार चेहरा धोया, फिर दायाँ हाथ कोहनी तक धोया, फिर बायाँ हाथ कोहनी तक धोया तीन तीन बार, उसके बाद अपने सर का मसह किया और तीन बार दाहिना पाँव धोया, फिर तीन बार बायाँ पाँव धोया, आख़िर में कहा कि जिस तरह मैंने वुजू किया है मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी इसी तरह वुजू करते देखा है, फिर आपने फ़र्माया था कि जिसने मेरी तरह वुजू किया फिर दो रकअत नमाज़ (तहिय्यतुल वुजू) इस तरह पढ़ी कि उसने दिल में किसी क्रिस्म के ख़यालात व बसाबिस गुज़रने नहीं दिये तो उसके अगले तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।

## बाब 28 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि जब कोई वुजू करे तो नाक में पानी डाले

और औहज़रत (ﷺ) ने रोज़ेदार और ग़ैर रोज़ेदार में कोई फ़र्क़ नहीं किया और इमाम हसन बसरी ने कहा कि नाक में (दवा वग़ैरह) चढ़ाने में अगर वो हलक़ तक न पहुँचे तो कोई हर्ज नहीं है और रोज़ेदार सुरमा भी लगा सकता है। अज्ञा ने कहा कि अगर कुल्ली की और मुँह से सब पानी निकाल दिया तो कोई नुक़सान नहीं होगा और अगर वो अपना थूक न निगल जाए और जो उसके मुँह में (पानी की तरी) रह गई और मुस्तगी न चबानी चाहिए। अगर कोई मुस्तगी का थूक निगल गया तो मैं नहीं कहता कि उसका रोज़ा टूट गया लेकिन मना है और अगर किसी ने नाक में पानी

وَقَالَتْ عَائِشَةُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((السَّوَالُ مَطْهُرَةٌ لِلْفَمِ، مَرَضَةٌ لِلرُّبِّ)). وَقَالَ عَطَاءٌ وَقَادَةُ: يَتَلَعُّ رِيْقَهُ.

١٩٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ حُمْرَانَ رَأَيْتُ عُفْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَوَضَّأَ: فَأَفْرَغَ عَلَى يَدَيْهِ ثَلَاثًا، ثُمَّ تَمَضَّمَصَ وَاسْتَنْفَرَ، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثًا، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُمْنَى إِلَى الْمِرْفَاقِ ثَلَاثًا، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الشِّمَالِي إِلَى الْمِرْفَاقِ ثَلَاثًا، ثُمَّ مَسَحَ بِرَأْسِهِ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَهُ الْيُمْنَى ثَلَاثًا، ثُمَّ الشِّمَالِي ثَلَاثًا، ثُمَّ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ تَوَضَّأَ نَحْوَ وَضُوءِي هَذَا، ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ تَوَضَّأَ نَحْوَ وَضُوءِي هَذَا ثُمَّ يُصَلِّيَ رَكَعَتَيْنِ لَا يُحَدِّثُ نَفْسَهُ فِيهِمَا بِشَيْءٍ غَيْرِ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)).

٢٨- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِذَا تَوَضَّأَ فَلْيَسْتَنْشِقْ بِمَنْعِرِهِ الْمَاءَ))

وَلَمْ يُفَرِّقْ بَيْنَ الصَّائِمِ وَغَيْرِهِ وَقَالَ الْحَسَنُ: لَا بَأْسَ بِالسَّغُوطِ لِلصَّائِمِ إِنْ لَمْ يَصِلْ إِلَى حَلْفِهِ وَيَكْتَجِلْ. وَقَالَ عَطَاءٌ: إِنْ تَمَضَّمَصَ ثُمَّ أَفْرَغَ مَا فِي فَمِهِ مِنَ الْمَاءِ لَا يَضِيرُهُ إِنْ لَمْ يَزِدْ رِيْقَهُ، وَمَاذَا بَقِيَ فِي فَمِهِ وَلَا يَمَضُّعُ الْعِلْكُ، فَإِنْ أَزْدَرَدَ رِيْقَ الْعِلْكِ لَا أَقُولُ إِنَّهُ يُفْطِرُ

डाला और पानी (गैर इखितयारी तौर पर) हलक के अंदर चला गया तो उससे रोज़ा नहीं टूटेगा क्योंकि ये चीज़ इखितयार से बाहर थी।

وَلَكِنْ يَنْهَى عَنْهُ فَإِنْ اسْتَنْزَلَ فَدَخَلَ الْمَاءُ خَلْفَهُ لَا بَأْسَ، لِأَنَّهُ لَمْ يَمْلِكْ.

**तशरीह :** इब्ने मुज़िर ने कहा इस पर इज्माअ है कि अगर रोज़ेदार अपने थूक के साथ दाँतों के बीच जो रह जाता है जिसको निकाल नहीं सकता निगल जाए तो रोज़ा न टूटेगा और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) फ़रमते हैं अगर रोज़ेदार के दाँतों में गोश्त रह गया हो, उसको चबाकर क़सदन खा जाए तो उस पर क़ज़ा नहीं और जुम्हूर कहते हैं क़ज़ा लाज़िम होगी और उन्होंने रोज़े में मस्तीगी चबाने की इजाज़त दी अगर उसके अज्ज़ाअ न निकलें अगर निकलें और निगल जाए तो जुम्हूर इलमा के नज़दीक रोज़ा टूट जाएगा (फ़त्हुल बारी)। बहरहाल रोज़ा की हालत में उन तमाम शक व शुब्हा की चीज़ों से भी बचना चाहिए जिससे रोज़ा ख़राब होने का एहतिमाल हो।

## बाब 29 : जान-बूझकर अगर रमज़ान में किसी ने जिमाअ किया?

और अबू हुरैरह (रज़ि.) से मफ़ूअन यूँ मरवी है कि अगर किसी ने रमज़ान में किसी इज़्र और मर्ज़ के बग़ैर एक दिन का भी रोज़ा नहीं रखा तो सारी इज़्र के रोज़े भी उसका बदला न होंगे और इब्ने मसऊद (रज़ि.) का भी यही क़ौल है और सईद बिन मुसय्यिब, शअबी और इब्ने जुबैर और इब्राहीम और क़तादा और हम्माद (रह.) ने भी फ़र्माया कि उसके बदले में एक दिन रोज़ा रखना चाहिए।

1935. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, कहा कि हमने यज़ीद बिन हारून से सुना, उनसे यह्या ने, (जो सईद के माहबज़ादे हैं) कहा, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन जा'फ़र बिन जुबैर (रज़ि.) बिन अय्याम बिन खुवैलद ने और उन्हें अब्बाद बिन अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने आइशा (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि मैं दोज़ख़ में जल चुका। ओहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि क्या बात हुई? उसने कहा कि रमज़ान में मैंने (रोज़े की हालत में) अपनी बीवी से हमबिस्तरी कर ली, थोड़ी देर में ओहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में (खज़ूर का) एक थैला जिसका नाम अर्क़ था, पेश किया गया, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि दोज़ख़ में जलने वाला शख़्स कहाँ है? उसने कहा कि हाज़िर हूँ, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ले तू उसे ख़ैरात कर दे।

(दीगर मक़ाम : 6822)

## ٢٩- بَابُ إِذَا جَامَعَ فِي رَمَضَانَ

وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَفَعَهُ ((مَنْ أَفْطَرَ يَوْمًا مِنْ رَمَضَانَ مِنْ غَيْرِ غَلَرٍ وَلَا مَرَضٍ لَمْ يَقْضِهِ صِيَامُ الدَّخْرِ وَإِنْ صَامَهُ)) وَبِهِ قَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ. وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَبِّبِ وَالشَّعْبِيُّ وَابْنُ جُبَيْرٍ وَابْرَاهِيمُ وَقَتَادَةُ وَحَمَّادٌ : يَقْضِي يَوْمًا مَكَانَهُ.

١٩٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ يَزِيدَ بْنَ هَارُونَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْقَاسِمِ أَخْبَرَهُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرِ بْنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْقَوَامِ بْنِ خُوَيْلِدٍ عَنْ عُبَادِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ : ((إِنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ إِنَّهُ اخْتَرَقَ، قَالَ: ((مَا لَكَ؟)) قَالَ: اصْبَتْتُ أَهْلِي فِي رَمَضَانَ. فَأَيُّ النَّبِيِّ ﷺ يَمْكُلُ يُدْعَى الْفَرَقُ. فَقَالَ: ((أَنْتَ الْمُخْتَرِقُ؟)) قَالَ : آتَى. قَالَ : ((تَصَدَّقْ بِهَذَا)). [طرمه ٣ : ٦٨٢٢].

आगे यही वाकिया तपसील से आ रहा है जिसमें आपने उस शख्स को बतौर कफ़ारा पे दर पे दो माह के रोज़ों का हुक्म फ़र्माया था या फिर साठ मिस्कीनों को खाना खिलाने का जिससे मा'लूम होता है कि ये जुर्म एक संगीन जुर्म है, जिसका कफ़ारा यही है जो आँहज़रत (ﷺ) ने बतला दिया और सईद बिन मुसय्यिब वगैरह के कौल का मतलब ये है कि सज़ा-ए-मज़क़रा के अलावा ये रोज़ा भी उसे मज़ीद लाज़िमन रखना होगा। इमाम औज़ाई ने कहा कि अगर दो माह के रोज़े रखे तो क़ज़ा लाज़िम नहीं है।

### बाब 30 : अगर किसी ने रमज़ान में क़सदन

#### जिमाअ किया

और उसके पास कोई चीज़ ख़ैरात के लिये भी न हो फिर उसको कहीं से ख़ैरात मिल जाए तो वही कफ़ारा में दे दे।

1936. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्होंने बयान किया कि मुझे हुमैद बिन अब्दुरहमान ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में थे कि एक शख्स ने हाज़िर होकर कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं तो तबाह हो गया, आप (ﷺ) ने पूछा क्या बात हुई? उसने कहा कि मैंने रोज़ा की हालत में अपनी बीवी से जिमाअ कर लिया है, इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा क्या तुम्हारे पास कोई गुलाम है जिसे तुम आज़ाद कर सको? उसने कहा नहीं, फिर आप (ﷺ) ने पूछा क्या पे दर पे दो महीने के रोज़े रख सकते हो? उसने अर्ज़ की कि नहीं, फिर आप (ﷺ) ने पूछा क्या तुमको साठ मिस्कीनों को खाना खिलाने की ताक़त है? उसने उसका जवाब भी इंकार में दिया, रावी ने बयान किया कि फिर नबी करीम (ﷺ) थोड़ी देर के लिये ठहर गए। हम भी अपनी उसी हालत में बैठे हुए थे कि आप (ﷺ) की ख़िदमत में एक बड़ा थैला (अर्क़ नामी) पेश किया गया जिसमें खजूरें थीं। अर्क़ थैले को कहते हैं (जिसे खजूर की छाल से बनाते हैं) आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि साइल कहीं है? उसने कहा कि मैं हाज़िर हूँ, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे ले लो और सदक़ा कर दो, उस शख्स ने कहा क्या या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अपने से ज़्यादा मुहताज पर सदक़ा कर दूँ? अल्लाह की क़सम! उन दोनों पथरीले मैदानों के बीच कोई भी घराना मेरे घर से ज़्यादा मुहताज नहीं है, इस पर नबी करीम (ﷺ) इस तरह हँस पड़े कि आपके आगे के दाँत देखे जा सके। फिर आपने इशारा फ़र्माया कि अच्छा जा

۳۰- بَابُ إِذَا جَامَعَ فِي رَمَضَانَ

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَيْءٌ فَصَدَّقَ عَلَيْهِ  
فَلْيَكْفُرْ

۱۹۳۶- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ  
عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ  
الرُّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:  
بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذَا  
جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
هَلَكَتُ، قَالَ: ((مَا لَكَ؟)) قَالَ: وَقَعْتُ  
عَلَى امْرَأَتِي وَأَنَا صَائِمٌ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:  
((هَلْ تَجِدُ رَقَبَةً تُعْفِقُهَا؟)) قَالَ: لَا.  
قَالَ: ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ  
مُتَابَعَيْنِ؟)) قَالَ: لَا. قَالَ: ((فَهَلْ تَجِدُ  
إِطْعَامَ مِائَتَيْنِ مِسْكِينًا؟)) قَالَ: لَا. قَالَ:  
فَمَكَتْ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَبَيْنَا نَحْنُ عَلَى  
ذَلِكَ أَمَرِ النَّبِيِّ ﷺ بِعَرَقٍ فِيهَا تَبَرُّزٌ -  
وَالْعَرَقُ: الْمِكْتَلُ - قَالَ: ((أَتَيْنَ  
السَّائِلُ؟)) فَقَالَ آتَى. قَالَ: ((خُلِعَا  
فَصَدَّقَ بِهِ)). فَقَالَ الرَّجُلُ: أَغْلَى أَفْقَرُ  
مِنِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَرَأَى اللَّهُ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا  
- يُرِيدُ الْحَرَوَيْنِ - أَغْلَى مِمَّنْ أَفْقَرُ مِنْ  
أَغْلَى تَضَى. فَصَحَّحَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى بَدَتْ  
أَنَابَةُ ثُمَّ فَقَالَ: ((أَطْعِمُوا أَهْلَكُمْ)).

अपने घर वालों ही को खिला दे।

(दीगर मक़ामात : 1937, 2600, 5368, 6087, 6164, 6709, 6710, 6711, 6821)

أطرافه في : ١٩٣٧، ٢٦٠٠، ٥٣٦٨

١٧١٠، ١٧٠٩، ٦١٦٤، ٦٠٨٧

٦٨٢١، ٦٧١١

**तशरीह :** सूरते मज़कूर में बतौर कफ़ारा पहली सूरत गुलाम आज़ाद करने की रखी गई, दूसरी सूरत पे दर पे दो महीना रोज़ा रखने की, तीसरी सूरत साठ मिस्कीनों को खाना खिलाने की। अब भी ऐसी हालत में ये तीनों सूरतें कायम हैं चूँकि इस हदीष में जिस शख्स का जिक्र हुआ है, उसने हर सूरत की अदाएगी के लिये अपनी मजबूरी ज़ाहिर की आखिर में एक सूरत आँहज़रत (ﷺ) ने उसके लिये निकाली तो उस पर भी उसने खुद अपनी मिस्कीनी का इज़हार किया। आँहज़रत (ﷺ) को उसकी हालते ज़ार पर रहम आया और उस रहम और करम के तहत आप (ﷺ) ने वो फ़र्माया जो यहाँ मज़कूर है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक अब भी कोई ऐसी सूरत सामने आ जाए तो ये हुक्म बाकी है। कुछ लोगों ने उसे उस शख्स के साथ ख़ास करार देकर अब उसको मन्सूख़ करार दिया है मगर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का रुज़्हान इस बात से ज़ाहिर है।

**बाब 31 : रमज़ान में अपनी बीवी के साथ क़सदन हम बिस्तर होने वाला शख्स क्या करे? और क्या उसके घर वाले मुहताज हों तो वो उन ही को कफ़ारा का खाना खिला सकता है?**

1937. हमसे इब्मन बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे जुहरी ने, उनसे हुमैद बिन अब्दुरहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक शख्स नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि ये बद नसीब रमज़ान में अपनी बीवी से जिमाअ कर बैठा है, आप (ﷺ) ने पूछा कि तुम्हारे पास इतनी ताक़त नहीं है कि एक गुलाम आज़ाद कर सको? उसने कहा कि नहीं। आप (ﷺ) ने फिर पूछा, क्या तुम पे दर पे दो महीने के रोज़े रख सकते हो? उसने कहा कि नहीं। आप (ﷺ) ने फिर पूछा क्या तुम्हारे अंदर इतनी ताक़त है कि साठ मिस्कीनों को खाना खिला सको? अब भी उसका जवाब नफ़ी में था। रावी ने बयान किया फिर नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में एक थैला लाया गया जिसमें खजूरें थीं अर्क जंबील को कहते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे ले जा और अपनी तरफ़ से (मुहताजों को) खिला दे, उस शख्स ने कहा मैं अपने से भी ज़्यादा मुहताज को हालाँकि दो पैदानों के बीच कोई घराना हमसे ज़्यादा मुहताज नहीं आपने फ़र्माया कि फिर जा अपने घरवालों ही को खिला दे।

(राजेअ : 1936)

٣١- بَابُ الْمَجَامِعِ فِي رَمَضَانَ  
هَلْ يُطْعِمُ أَهْلَهُ مِنَ الْكَفَّارَةِ إِذَا كَانُوا  
مَعَاوِجَ؟

١٩٣٧- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ  
حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ نَسْوَءٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ  
حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبِي هُرَيْرَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ  
لَقَالَ: إِنَّ الْأَجِيرَ وَقَعَ عَلَى امْرَأَتِهِ فِي  
رَمَضَانَ. لَقَالَ: ((أَتَجِدُ مَا تُحَرِّزُ رَقَبَةً؟))  
قَالَ: لَا. قَالَ: ((أَتَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ  
شَهْرَيْنِ مُتَابَعَيْنِ؟)) قَالَ: لَا. قَالَ:  
((أَتَجِدُ مَا تُطْعِمُ بِهِ سِتِينَ مِسْكِينًا؟)) قَالَ:  
: لَا. قَالَ: فَأَيُّ النَّبِيِّ ﷺ يَمُرُّ بِهِ تَعْمَرُ  
- وَهُوَ الزَّيْبِلُ - قَالَ: ((أَطْعِمْ هَذَا  
عَنْكَ))، قَالَ: عَلَى أَخْرَجَ مِنَّا؟ مَا بَيْنَ لَا  
بَيْنَهُمَا أَهْلٌ تَسْتَأْخِرُ أَخْرَجَ مِنَّا. قَالَ: ((فَأَطْعِمَهُ  
أَهْلَكَ)). [راجع: ١٩٣٦]

**तशरीह :** इससे कुछ ने ये निकाला कि मुस्लिम पर से कफ़ारा साकित हो जाता है और जुम्हूर के नज़दीक मुस्लिम की वजह से कफ़ारा साकित नहीं होता, अब रहा अपने घरवालों को खिलाना तो जुहरी ने कहा ये उस मर्द के साथ खास था कुछ ने कहा ये हदीष मन्सूख है। अब उसमें इखितलाफ़ है कि जिस रोज़े का कफ़ारा दे उसकी क़ज़ा भी लाज़िम है या नहीं। शाफ़िई और अक़्बर इलमा के नज़दीक क़ज़ा लाज़िम नहीं और औज़ाई ने कहा अगर कफ़ारे में दो महीने के रोज़े रखे तब क़ज़ा लाज़िम नहीं। दूसरा कोई कफ़ारा दे तो क़ज़ा लाज़िम है और हन्फ़िया के नज़दीक हर हाल में क़ज़ा और कफ़ारा दोनों लाज़िम हैं। (वहीदी)

### बाब 32 : रोज़ेदार का पछना लगवाना और कै करना कैसा है

और मुझसे यह्या बिन सलालेह ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी कसीर ने बयान किया, उनसे उमर बिन हुकम बिन प्रौबान ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि जब कोई कै करे तो रोज़ा नहीं टूटता क्योंकि उससे तो चीज़ बाहर आती है अंदर नहीं जाती और अबू हुरैरह (रज़ि.) से ये भी मन्कूल है कि उससे रोज़ा टूट जाता है लेकिन पहली रिवायत ज़्यादा सहीह है और इब्ने अब्बास और इब्निमा (रज़ि.) ने कहा कि रोज़ा टूटता है उन चीज़ों से जो अंदर जाती हैं उनसे नहीं जो बाहर आती हैं। इब्ने उमर (रज़ि.) भी रोज़ा की हालत में पछना लगवाते लेकिन बाद में दिन को उसे तर्क कर दिया था और रात में पछना लगवाने लगे थे और अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने भी रात में पछना लगवाया था और सअद बिन अबी वक्रास और ज़ैद बिन अरक़म और उम्मे सलमा (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने रोज़ा की हालत में पछना लगवाया, बुकैर ने उम्मे अल्क़मा से कहा कि हम आइशा (रज़ि.) के यहाँ (रोज़ा की हालत में) पछना लगवाया करते थे और आप हमें रोकती नहीं थीं और हसन बसरी (रह.) कई सहाबा से मफ़ूअन रिवायत करते हैं कि औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया पछना लगाने वाले और लगवाने वाले (दोनों का) रोज़ा टूट गया और मुझसे अयाश बिन वलीद ने बयान किया और उनसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया और उनसे हसन बसरी ने ऐसी ही रिवायत की जब उनसे पूछा गया कि क्या नबी करीम (ﷺ) से रिवायत है तो उन्होंने कहा कि हाँ। फिर कहने लगे अल्लाह बेहतर जानता है।

۳۲- بَابُ الْحِجَامَةِ وَالْقِيَاءِ لِلصَّائِمِ وَقَالَ لِي يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُمَرَ بْنِ الْحَكَمِ بْنِ قُوتَبَانَ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِذَا قَاءَ فَلَا يَفْطُرُ، إِنَّمَا يُخْرُجُ وَلَا يُؤَلِّجُ. وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ قَالَ يَفْطُرُ، وَالْأَوَّلُ أَصَحُّ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَعِكْرِمَةُ: الصَّوْمُ مِمَّا دَخَلَ وَلَيْسَ مِمَّا خَرَجَ. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَخْتَجِمُ وَهُوَ صَائِمٌ، ثُمَّ تَوَكَّأَ، فَكَانَ يَخْتَجِمُ بِاللَّيْلِ. وَاخْتَجَمَ أَبُو مُوسَى لَيْلًا. وَيَذْكُرُ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَرْقَمٍ وَأُمِّ سَلَمَةَ أَنَّهُمْ اخْتَجَمُوا صِيَامًا. وَقَالَ بُكَيْرٌ عَنْ أُمِّ عَلْقَمَةَ: كُنَّا نَخْتَجِمُ عِنْدَ عَائِشَةَ فَلَا تَنْهَى. وَتُرَوَّى عَنِ الْحَسَنِ عَنْ غَيْرِ وَاحِدٍ مَرْفُوعًا فَقَالَ: «(أَفْطَرَ الْحَاجِمُ وَالْمَخْمُومُ)». وَقَالَ لِي عِيَّاشُ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ الْحَسَنِ مَقْلُوقَةً، قِيلَ لَهُ: عَنْ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ. ثُمَّ قَالَ: اللَّهُ أَعْلَمُ.

**तशरीह :** इस कलाम से इस हदीष का जुअफ़ निकलता है गो अनेक सहाबा से मरवी है मगर हर तौषीक मे कलाम है इमाम



अहमद ने कहा कि प्रोबान और शहाद से ये हदीष ग़हीह हुई और इब्ने खुज़ैमा ने भी ऐसा ही कहा और इब्ने मुईन का ये कहना कि इस बाब में कुछ प्राबित नहीं ये हठधर्मी है और इमाम बुखारी उसके बाद अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) की हदीष लाए और ये इशारा किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीष अज़ रूप सनद कवी है (वहीदी)। कै और पछना लगाना इन दोनों मसलों में सलफ़ का इख़्तिलाफ़ है जुम्हूर का क़ौल ये है कि अगर कै खुद ब खुद हो जाए तो रोज़ा नहीं टूटता और जो अमदन (जान-बूझकर) कै करे टूट जाता है और पछना लगाने में भी जुम्हूर का क़ौल ये है कि उससे रोज़ा नहीं जाता अब उसी पर फ़त्वा है जिस हदीष में रोज़ा टूटने का ज़िक्र है वो मन्सूख है जैसा कि दूसरी जगह ये बहस आ रही है।

1938. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, उनसे वुहैब ने, वो अय्यूब से, वो इकिमा से, वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) ने एहराम में और रोज़े की हालत में पछना लगवाया।

(राजेअ: 1835)

1939. हमसे अबू मअमर अब्दुल्लाह बिन इमरी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सख़्तियानी ने बयान किया, उनसे इकिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) ने रोज़ा की हालत में पछना लगवाया।

**तशरीह:** कस्तलानी फ़र्माते हैं, व हुब नासिख़ुल हदीष अफ़तरल हाजिम वल महजूम अन्नहू जाअ फ़ी बअज़ि तुरुकिही अन्न ज़ालिक कान फ़ी हज़तिल विदाइ यानी ये हदीष जिसमें पछना लगाने का ज़िक्र यहाँ आया है ये दूसरी हदीष जिसमें है कि पछना लगवाने और लगाने वाले दोनों का रोज़ा टूट गया की नासिख़ है। उसका ता'ल्लुक फ़तहे मक्का से है और दूसरी नासिख़ हदीष का ता'ल्लुक हज़तुल विदाअ से है जो फ़तहे मक्का के बाद हुआ लिहाज़ा अमे प्राबित अब यही है जो यहाँ मज़कूर हुआ कि रोज़ा की हालत में पछना लगाना जाइज़ है।

1940. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैं ने प्राबित बनानी से सुना, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा था कि क्या आप लोग रोज़ा की हालत में पछना लगवाने को मकरूह समझा करते थे? आपने जवाब दिया कि नहीं अल्बत्ता कमज़ोरी के छयाल से (रोज़ा में नहीं लगवाते थे) शबाबा ने ये ज़्यादती की है कि हमसे शुअबा ने बयान किया कि (ऐसा हम) नबी करीम (ﷺ) के अहद में (करते थे)।

۱۹۳۸- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اخْتَجَّ وَهُوَ مُحْرِمٌ، وَخَتَمَ وَهُوَ صَائِمٌ)). [راجع: ۱۸۳۵]

۱۹۳۹- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اِخْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ صَائِمٌ)).

۱۹۴۰- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ ثَابِتًا الثَّانِيَّ يَسْأَلُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَكُنْتُمْ تَكْرَهُونَ الْحِجَامَةَ لِلصَّائِمِ؟ قَالَ: لَا، إِلَّا مِنْ أَجْلِ الضَّغْفَرِ)) وَزَادَ شُعْبَةُ: ((حَدَّثَنَا شُعْبَةُ: عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ)).

बाब 33 : सफ़र में रोज़ा रखना और इफ़्तार करना

۳۳- بَابُ الصَّوْمِ فِي السَّفَرِ وَالْإِفْطَارِ

1941. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक सुलैमान शैबानी ने, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना कहा कि हम रसूलुल्लाह के साथ सफ़र में थे (रोज़ा की हालत में) आँहज़रत ने एक साहब (बिलाल रज़ि.) से फ़र्माया कि उतरकर मेरे लिये सत्तू घोल ले, उन्होंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अभी तो सूरज बाकी है, आप (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि उतरकर सत्तू घोल ले! अब की बार भी उन्होंने वही अर्ज़ की या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अभी सूरज बाकी है, लेकिन आपका हुक्म अब भी वही था कि उतरकर मेरे लिये सत्तू घोल ले, फिर आप (ﷺ) ने एक तरफ़ इशारा करके फ़र्माया कि जब तुम देखो कि रात यहाँ से शुरू हो चुकी है तो रोज़ेदार को इफ़्तार कर लेना चाहिए। उसकी मुताबिक़त जरीर और अबूबक्र बिन अयाश ने शैबानी के वास्ते से की है और उनसे अबू औफ़ा (रज़ि.) ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सफ़र में था।

(दीगर मक़ाम : 1955, 1956, 1958, 5297)

١٩٤١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الشَّيْبَانِيِّ سَمِعَ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَقَالَ لِرَجُلٍ: «انْزِلْ فَاجْذِخْ لِي»)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الشَّمْسُ، قَالَ: «(النَّوْلُ فَاجْذِخْ لِي)» قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ الشَّمْسُ، قَالَ: «(النَّوْلُ فَاجْذِخْ لِي)»، فَنَزَلَ فَجَذَخَ لَهُ فَشَرِبَ، ثُمَّ رَمَى يَدَيْهِمَا هُنَا ثُمَّ قَالَ: «(إِذَا رَأَيْتُمُ اللَّيْلَ أَقْبَلَ مِنْ هَا هُنَا فَقَدْ أَفْطَرُ الصَّائِمُ)». ثَابِتَةُ جَرِيذٌ وَأَبُو بَكْرٍ بْنُ عَوَّادٍ عَنْ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ ابْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ)).

[أطرافه في : ١٩٥٥, ١٩٥٦, ١٩٥٨]

[ ٢٩٩٧ ]

**तशरीह :** हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है। रोज़ा खोलते वक़्त इस दुआ का पढ़ना सुन्नत है, अल्लाहुम्म लक सुन्नु व अला रिज़िकक अफ़्तर्तु यानी या अल्लाह! मैंने ये रोज़ा तेरी रज़ा के लिये रखा था और अब तेरे ही रिज़क पर उसे खोला है। उसके बाद ये कलिमात पढ़े ज़हब ज़मड व बतल्लन तिल इरूकु व बतल्ल अज्रु ईशा अल्लाह यानी अल्लाह का शुक्र है कि रोज़ा खोलने से प्यास दूर हो गई और रंग सैराब हो गई और अल्लाह ने चाहा तो उसके पास उसका प्रवाबे अज़ीम लिखा गया। हदीष लिम्सा इमि फ़र्हतानि यानी रोज़ेदार के लिये दो खुशियाँ हैं; के बारे में हज़रत शाह वलीइल्लाह मरहूम फ़र्माते हैं पहली खुशी तब आती है कि रमज़ान के रोज़ा इफ़्तार करने से नफ़्स को जिस चीज़ की ख़्वाहिश थी वो मिल जाती है और दूसरी रूहानी फ़रहत है इस वास्ते कि रोज़ा की वजह से रोज़ेदार हिजाबे जिस्मानी से अलग होने और आलमे बाला से इल्मुल यक़ीन का फ़ैज़ान होने के बाद तक्रहुस के आधार ज़ाहिर होने के काबिल हो जाता है। जिस तरह नमाज़ के सबब से तजल्ली के आधार नुमायाँ हो जाते हैं। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा)

1942. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया कि मुझसे मेरे बाप उर्वा ने बयान किया, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि हम्ज़ा बिन अम्म असलमी (रज़ि.) ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं सफ़र में लगातार रोज़े रखता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 1943)

١٩٤٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ : ((أَنَّ حَمْزَةَ بْنَ عَمْرٍو الْأَسْلَمِيَّ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَسْرُدُ الصَّوْمَ)). ح وَ

[طرفه في : ١٩٤٣]

1943. (दूसरी सनद इमाम बुखारी ने कहा कि) और हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोज़ा मुतहहरा आइशा (रज़ि.) ने कि हमज़ा बिन अमर असलमी (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अर्ज़ की मैं सफ़र में रोज़ा रखूँ? वो रोज़े बक़रत रखा करते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर जी चाहे तो रोज़ा रख और जी चाहे इफ़्तार कर। (राजेअ: 1942)

۱۹۴۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ حَنْزَلَةَ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْأَسْلَمِيِّ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ : أَمُومٌ فِي السَّفَرِ؟ - وَكَانَ كَثِيرَ الصَّيَامِ - فَقَالَ : ((إِنْ شِئْتَ لَفَعْمَ، وَإِنْ شِئْتَ فَأَطْنِ)). [راجع: ۱۹۴۲]

**तशरीह:** इस मसले में सलफ़ का इख़्तिलाफ़ है; कुछ लोगों ने कहा सफ़र में अगर रोज़ा रखेगा तो उससे फ़र्ज़ रोज़ा अदा न होगा फिर क़ज़ा करना चाहिए और जुम्हूर इलमा जैसे इमाम मालिक और शाफ़िअ और अबू हनीफ़ा (रह.) ये कहते हैं कि रोज़ा रखना सफ़र में अफ़ज़ल है, अगर त़ाक़त हो और कोई तकलीफ़ न हो। इमाम अहमद बिन हंबल और औज़ाई और इस्हाक़ और अहले हदीस ये कहते हैं कि सफ़र में रोज़ा न रखना अफ़ज़ल है। कुछ ने कहा दोनों बराबर हैं रोज़ा रखे या इफ़्तार करे, कुछ ने कहा जो ज़्यादा आसान हो वही अफ़ज़ल है (वहीदी)। हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने इस अमर की तशरीह फ़र्माई है कि हमज़ा बिन अमर (रज़ि.) ने नफ़ल रोज़ों के बारे में नहीं बल्कि रमज़ान शरीफ़ के फ़र्ज़ रोज़ों के ही बारे में पूछा था, फ़क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) हिय रुख़सतुम्मिनल्लाहि फ़मन अख़ज़ बिहा फ़हसुन व मन अहबब अय्यसूम फ़ला जुनाह अलैहि (फ़तहूल बारी)। यानी आँहज़रत (ﷺ) ने उसको जवाब दिया कि ये अल्लाह की तरफ़ से रुख़सत है जो उसे कुबूल करे पस वो बेहतर है और जो रोज़ा रखना ही पसन्द करे उस पर कोई गुनाह नहीं। हज़रत अल्लामा (रह.) फ़र्माते हैं कि लफ़ज़ रुख़सत वाजिब ही के मुकाबले पर बोला जाता है उससे भी ज़्यादा सराहत के साथ अबू दाऊद और हाकिम की रिवायत में मौजूद है कि उसने कहा था मैं सफ़र में रहता हूँ और माहे रमज़ान हालते सफ़र ही में मेरे सामने आ जाता है इस सवाल के जवाब में ऐसा फ़र्माया जो मज़कूर हुआ।

**बाब 34 : जब रमज़ान में कुछ रोज़े रख कर कोई सफ़र करे**

1944. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) (फ़तहे मक्का के मौक़े पर) मक्का की तरफ़ रमज़ान में चले तो आप (ﷺ) रोज़ा से थे लेकिन जब कुदैद पहुँचे तो रोज़ा रखना छोड़ दिया और म्हाबा रिज्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने भी आपको देखकर रोज़ा छोड़ दिया। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि इस्फ़ान और कुदीद के बीच कुदैद एक तालाब है।

۳۴- بَابُ إِذَا صَامَ أَيَّامًا مِنْ رَمَضَانَ ثُمَّ سَافَرَ

۱۹۴۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَرَجَ إِلَى مَكَّةَ فِي رَمَضَانَ فَصَامَ، حَتَّى بَلَغَ الْكَذْبَةَ أَفْطَرَ، فَأَفْطَرَ النَّاسُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَالْكَذْبَةُ مَاءٌ بَيْنَ عُسْفَانَ وَقُدَيْدٍ.

(दीगर मक़ाम : 1948, 2953, 4275)

أُطْرَافُهُ : ١٩٤٨ ، ٢٩٥٣ ، ٤٢٧٥

**तशरीह :** इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर उस रिवायत का जुअफ़ बयान किया जो हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि जब किसी शख्स पर रमज़ान का चाँद हालते इक़ामत में भी आ जाए तो फिर वह सफ़र में इफ़्तार नहीं कर सकता। जुम्हूर उलमा इसके खिलाफ़ है, वह कहते हैं कि अल्लाह तआला का क़ौल मुल्लक़ है, फ़मन कान मिन्कुम मरीज़न औ अला सफ़रिन फ़इद्तुम्पिन अय्यामिन् उख़र (अल बकर: : 184) और इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीष से प्राबित है कि आँहज़रत (ﷺ) ने कुदैद में पहुँचकर फिर रोज़ा नहीं रखा हालाँकि आप दसवीं रमज़ान को मदीना से खाना हुए थे अब अगर कोई शख्स इक़ामत में रोज़ा की निय्यत कर ले फिर दिन को किसी वक़्त सफ़र में निकले तो उसको रोज़ा खोल डालना दुरुस्त है या पूरा करना चाहिए उसमें इख़तिलाफ़ है मगर हमारे इमाम अहमद बिन हंबल और इस्हाक़ बिन राहवै रोज़ा इफ़्तार करने को दुरुस्त जानते हैं और मुज़नी ने उसके लिये इस हदीष से हुज्जत ली हालाँकि इस हदीष में उसकी कोई हुज्जत नहीं क्योंकि कुदैद मदीना से कई मंज़िल पर है (वहीदी)।

1945. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन जाबिर ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे उम्मे ददा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू ददा (रज़ि.) ने कहा हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र कर रहे थे। दिन इतिहाई गरम था। गर्मी का ये आलम था कि सख़्ती से लोग अपने सरों को पकड़ लेते थे, नबी करीम (ﷺ) और इब्ने खात्मा (रज़ि.) के सिवा और कोई शख्स रोज़े से नहीं था।

١٩٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ حَمْزَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ أَنَّ إِسْمَاعِيلَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَهُ عَنْ أُمِّ الثَّوْدَاءِ عَنْ أَبِي الثَّوْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((حَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لِي بَقِصِ اسْفَارِهِ فِي يَوْمٍ حَارٍ حَتَّى يَضَعَ الرَّجُلُ يَدَهُ عَلَى رَأْسِهِ مِنْ حِدَّةِ الْحَرِّ وَمَا لَنَا صَائِمِينَ، إِلَّا مَا كَانَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ وَابْنِ رَوَاحَةَ)).

मा'लूम हुआ कि अगर शुरू सफ़र रमज़ान में कोई मुसाफ़िर रोज़ा भी रख ले और आगे चलकर उसको तकलीफ़ मा'लूम हो तो वो बिला तरदुद रोज़ा तर्क कर सकता है।

**बाब 26 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मांना उस शख्स के लिये जिस पर शिद्दते गर्मी की वजह से साया कर दिया गया था कि सफ़र में रोज़ा रखना कोई नेकी नहीं है**

1946. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अंसारी ने बयान किया, कहा कि मैंने मुहम्मद बिन अमर बिन हसन बिन अली (रज़ि.) से सुना और उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक सफ़र (ग़ज़व-ए-फ़तह) में थे आप (ﷺ) ने देखा कि एक शख्स पर लोगों ने साया

٢٦- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِمَنْ ظَلَّلَ عَلَيْهِ وَاشْتَدَّ الْحَرُّ: ((لَيْسَ مِنَ الْبِرِّ الصَّوْمُ فِي السَّفَرِ))

١٩٤٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ عَمْرٍو بْنَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي سَفَرٍ

कर रखा है, आप (ﷺ) ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने कहा कि एक रोज़ेदार है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सफ़र में रोज़ा रखना कुछ अच्छा काम नहीं है।

قَرَأَى رَحِمًا وَرَجُلًا قَدْ ظَلَّلَ عَلَيْهِ قَلَانُ :  
(مَا هَذَا؟) فَقَالُوا: صَائِمٌ، فَقَالَ: ((لَيْسَ  
مِنَ الْبِرِّ الصَّوْمُ فِي السَّفَرِ)).

**तशरीह:** इस हदीष से उन लोगों ने दलील ली जो सफ़र में इफ़्तार ज़रूरी समझते हैं। मुखालिफ़ीन ये कहते हैं कि मुराद उससे यही है जब सफ़र में रोज़े से तकलीफ़ होती हो उस मूलत में तो बिल इत्तिफ़ाक़ इफ़्तार अफ़ज़ल है।

**बाब 37 : नबी करीम (ﷺ) के अस्हाब (रज़ि.) (सफ़र में) रोज़ा रखते या न रखते वो एक दूसरे पर नुक्ता- चीनी नहीं किया करते थे**

1947. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे हुपैद तबील ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ (रमज़ान में) सफ़र किया करते थे। (सफ़र में बहुत से रोज़े से होते और बहुत से बेरोज़े होते) लेकिन रोज़ेदार बे रोज़ेदार पर और बेरोज़ेदार रोज़ेदार पर किसी फ़िस्म की ऐबजूई नहीं किया करते थे।

۳۷- بَابُ لَمْ يَعْيبُ أَصْحَابُ النَّبِيِّ  
بَعْضُهُمْ بَعْضًا فِي الصَّوْمِ وَالْإِفْطَارِ  
۱۹۴۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ  
مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ حُمَيْدِ الطَّوِيلِ  
عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ :  
((كُنَّا نَسَافِرُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يَعْيبِ  
الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ، وَلَا الْمُفْطِرُ عَلَى  
الصَّائِمِ)).

बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है और ये भी कि सफ़र में कोई रोज़ा न रखे तो रखने वालों को इजाज़त नहीं है कि वो उस पर जुबान से तानेबाज़ी करें। वो शरअी रुख़सत पर अमल कर रहा है। किसी को ये हक़ नहीं वो उसे शरअी रुख़सत से रोक सके और हर शरअी रुख़सत के लिये ये बतौर उमूल के है।

**बाब 38 : सफ़र में लोगों को दिखाकर रोज़ा इफ़्तार कर डालना**

1948. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अबाना ने, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताउस ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (राजवए फ़तह में) मदीना से मक्का के लिये सफ़र शुरू किया तो आप (ﷺ) रोज़े से थे, जब आप इस्फ़ान पहुँचे तो पानी मंगवाया और उसे अपने हाथ से (मुँह तक) उठाया ताकि लोग देख लें फिर आप (ﷺ) ने रोज़ा छोड़ दिया यहाँ तक कि मक्का पहुँचे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहा करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (सफ़र में) रोज़ा रखा भी और नहीं भी रखा, इसलिये जिसका जी चाहे रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे।

۳۸- بَابُ مَنْ أَفْطَرَ فِي السَّفَرِ لِرَأَى النَّاسِ

۱۹۴۸- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مَنصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَارُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنَ الْمَدِينَةِ إِلَى مَكَّةَ فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ عُسْفَانَ، ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَرَفَعَهُ إِلَى يَدَيْهِ لِرَأَى النَّاسِ فَأَفْطَرَ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ، وَذَلِكَ لِي وَرَمَضَانَ، فَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ : قَدْ صَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَفْطَرَ، فَمَنْ شَاءَ صَامَ وَمَنْ شَاءَ

(राजेअ : 1944)

[अफ़्ठः] . [راجع : ١٩٤٤]

ये अस्हाबे फ़त्वा व कयादत के लिये है कि उनका अमल देखकर लोगों को मसला मा'लूम हो जाए और फिर वो भी उसके मुताबिक अमल करें जैसाकि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने अमल से दिखाया। सफ़र में रोज़ा रखना न रखना ये खुद मुसाफ़िर के अपने हालात पर मौकूफ़ है। शारेअ अलैहिस्सलाम ने दोनों अमल के लिये उसे मुख्तार बनाया है, ताउस बिन कैसान फ़ारसी अल् अस्ल खौलानी हम्दानी यमानी हैं, एक जमाअत से रिवायत करते हैं। उनसे जुहरी जैसे अजिल्ला रिवायत करते हैं। इल्म व अमल में बहुत ऊँचे थे, मक्का शरीफ़ में 105 हिजरी में वफ़ात पाई। रहिमहुल्लाहु तआला अलैहि व अज्मईन।

### बाब 39 : सूरह बक्ररः की उस आयत का बयान (वअलल्लज़ीन युतीकूनहु) अल् आयति

इब्ने इमर और सलमा बिन अक्व ने कहा कि इस आयत को इसके बाद वाली आयत ने मन्सूख़ कर दिया जो ये है रमज़ान ही वो महीना है जिसमें कुआन नाज़िल हुआ लोगों के लिये हिदायत बनकर और राहयाबी और हक़ को बातिल से जुदा करने के रोशन दलाइल के साथ। पस जो शख्स भी तुममें से इस महीने को पाए वो इसके रोज़े रखे और जो कोई मरीज़ हो या मुसाफ़िर तो उसको छूटे हुए रोज़ों की गिनती बाद में पूरी करनी चाहिए, अल्लाह तआला तुम्हारे लिये आसानी चाहता है दुश्वारी नहीं चाहता और इसलिये कि तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह तआला की उस बात पर बड़ाई बयान करो कि उसने तुम्हें हिदायत दी और ताकि तुम एहसान मानो, इब्ने नुमैर ने कहा कि हमसे अअमश ने बयान किया, उनसे अमर बिन मुरह ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी लैला ने बयान किया और उनसे आँहज़रत (ﷺ) के सहाबा (रज़ि.) ने बयान किया कि रमज़ान में (जब रोज़े का हुक्म) नाज़िल हुआ तो बहुत से लोगों पर बड़ा दुश्वार गुज़रा, चुनाँचे बहुत से लोग जो रोज़ाना एक मिस्कीन को खाना खिला सकते थे उन्होंने रोज़े छोड़ दिये हालाँकि उनमें रोज़े रखने की ताक़त थी, बात ये थी कि उन्हें उसकी इजाज़त भी दे दी गई थी कि अगर वो चाहें तो हर रोज़े के बदले एक मिस्कीन को खाना खिला दें। फिर इस इजाज़त को दूसरी आयत वअन् तम्मू अल्ख़ यानी तुम्हारे लिये यही बेहतर है कि तुम रोज़ा रखो ने मन्सूख़ कर दिया और इस तरह लोगों को रोज़ा रखने का हुक्म हो गया।

### ٣٩- بَابُ ﴿وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ﴾ [البقرة: ١٨٤]

قَالَ ابْنُ عُمَرَ وَسَلَمَةُ بْنُ الْأَكْوَعِ: نَسَخَهَا ﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ، فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ، وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ، يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ، وَلَقَدْ كُنتُمْ تَشْكُرُونَ﴾ [البقرة: ١٨٥].

وَقَالَ ابْنُ عُثَيْمٍ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ مَرْثَدَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ثَلَّيْ حَدَّثَنَا اصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ ((نَزَلَ رَمَضَانَ فَشُقُّ عَلَيْهِمْ، فَكَانَ مَنْ أَطْعَمَ كُلَّ يَوْمٍ مِسْكِينًا تَوَلَّى الصَّوْمَ مِمَّنْ يُطِيقُهُ، وَرُخِصَ لَهُمْ فِي ذَلِكَ، فَسَخَتْهَا ﴿وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ﴾ فَأَيَّرُوا بِالصَّوْمِ)).

1949. हमसे अयाश ने बयान किया, उनसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने (ऊपर वाली आयत) (फ़िदयतुन तज़ामुम्मिस्कीन) पढ़ी और फ़र्माया ये मन्सूख़ हो गई है। (दीगर मक़ाम : 4506)

۱۹۴۹- حَدَّثَنَا عِيَّاشٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى حَدَّثَنَا عِيَّادٌ اللَّهُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: قَرَأَ ((لَيْتَةَ طَعَامٌ مَسْكِينٍ)) قَالَ: (هِيَ مَنْسُوخَةٌ).

[طرفه فی : ۴۵۰۶]

**तफ़सीह :** पूरा तर्जुमा आयत का यँ है .. और जो लोग रोज़ा की ताक़त रखते हैं, लेकिन रोज़ा रखना नहीं चाहते वो एक मिस्कीन को खाना खिला दें फिर जो शरूअ खुशी से ज़्यादा आदमियों को खिलाए और उसके लिये बेहतर है और अगर तुम रोज़ा रखो तो ये तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम समझो। रमज़ान का महीना वो महीना है जिसमें कुआन उतरा जो लोगों को दीने हक़ की सच्ची राह समझाता है और उसमें खुली हिदायत की बातें और सहीह को ग़लत से जुदा करने की दलीलें मौजूद हैं, फिर ऐ मुसलमानों! तुममें से जो कोई रमज़ान का महीना पाए वो रोज़ा रखे और जो बीमार या मुसाफ़िर हो वो दूसरे दिनों में ये गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम पर सख़्ती नहीं करना चाहता और उस हुक्म की गर्ज़ ये है कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह ने जो तुमको दीन की सच्ची राह बतलाई उसके शुक्रिया में उसकी बड़ाई बयान करो और इसलिये कि तुम उसका एहसान मानो।.. शुरू इस्लाम में वअलल्लज़ीन युतीकूनहु (अल् बक़र : 184) उतरा था और मक़दूर वाले लोगों को इख़्तियार था कि वो रोज़ा रखें ख़वाह फ़िदया दें; फिर ये हुक्म मन्सूख़ हो गया और सहीह जिस्मे मुकीम पर रोज़ा रखना फ़मन शहिद मिन्कुमुशशहर (अल् बक़र : 185) से वाजिब हो गया। (वहीदी) कुछ ने कहा व अलल्लज़ीन युतीकूनहु के मा'नी ये हैं जो लोग रोज़ा की ताक़त नहीं रखते गो मुकीम और तन्दरुस्त हैं, मज़लन जईफ़ बूढ़े लोग तो वो हर रोज़े के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाए इस सूरत में ये आयत मन्सूख़ हो गई और तफ़सील इस मसले की तफ़सीलों में है। (वहीदी)

#### बाब 40 : रमज़ान के क़ज़ा रोज़े

##### कब रखे जाएँ

और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि उनको मुतफ़रिक् दिनों में रखने में कोई हर्ज नहीं क्योंकि अल्लाह तआला का हुक्म सिर्फ़ ये है कि गिनती पूरी कर लो दूसरे दिनों में।

और सईद बिन मुसय्यिब ने कहा कि (ज़िलहिज्जे के) दस रोज़े उस शरूअ के लिये जिस पर रमज़ान के रोज़े वाजिब हों (और उनकी क़ज़ा अभी तक नहीं हो) रखने बेहतर नहीं हैं बल्कि रमज़ान की क़ज़ा पहले करनी चाहिए और इब्राहीम नख़्सी ने कहा कि अगर किसी ने कोताही की (रमज़ान की क़ज़ा में) और दूसरा रमज़ान भी आ गया तो दोनों के रोज़े रखे और उस पर फ़िदया वाजिब नहीं और अबू हुरैरह (रज़ि.) से ये रिवायत मुसलन है और इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मन्कूल है कि वो (मिस्कीनों) को खाना भी खिलाए। अल्लाह ने खाना खिलाने का (कुआन में) ज़िक्र

#### ۴- بَابُ مَتَى يُقْضَى قِضَاءُ

##### رَمَضَانَ؟

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَا بَأْسَ أَنْ يَفْرُقَ، يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ﴾ [البقرة : 185] :

وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ فِي صَوْمِ الْقِسْرِ: لَا يَصْلُحُ حَتَّى يَتَنَا بِرَمَضَانَ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ: إِذَا فَرُطَ حَتَّى جَاءَ رَمَضَانُ أُخَرَ يَصُومُهُمَا، وَلَمْ يَرِ عَلَيْهِ طَعَامًا. وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ مُرْسَلًا، وَعَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ يُطْعِمُ، وَلَمْ يَذْكُرِ اللَّهُ الْإِطْعَامَ، إِنَّمَا قَالَ: ﴿فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ

नहीं किया है बल्कि इतना ही फ़र्माया कि दूसरे दिनों में गिनती पूरी की जाए।

अर्थात्

1950. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे जुहैर ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़षीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया कि मैंने आइशा (रज़ि.) से सुना वो फ़र्माती हैं कि रमज़ान का रोज़ा मुझसे छूट जाता। शाबान से पहले उसकी क़ज़ा की तौफ़ीक़ न होती। यह्या ने कहा कि ये नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मशगूल रहने की वजह से था।

١٩٥٠ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ بِخَاتِمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: «كَانَ يَكُونُ عَلَى الصَّوْمِ مِنْ رَمَضَانَ فَمَا اسْتَطِيعَ أَنْ الْقِيَّ إِلَّا فِي شَعْبَانَ» قَالَ يَحْيَى: الشُّغْلُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ أَكْثَرُ بِالنَّبِيِّ.

**तशरीह:** यहाँ जो क़ौल इब्राहीम नख़्ज़ी का ऊपर मशहूर हुआ है उसको सईद बिन मंसूर ने बयान किया मगर जुम्हूर इब्नाबा (रज़ि.) और ताबेज़ीन से ये मरवी है कि अगर किसी ने रमज़ान की क़ज़ा न रखी यहाँ तक कि दूसरा रमज़ान आ गया तो वो क़ज़ा भी रखे और हर रोज़े के बदले फ़िदया भी दे। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने जुम्हूर के ख़िलाफ़ इब्राहीम नख़्ज़ी के क़ौल पर अमल किया है और फ़िदया देना ज़रूरी नहीं रखा, इब्ने उमर (रज़ि.) से एक शाज़ रिवायत ये भी है कि अगर रमज़ान की क़ज़ा न रखे और दूसरा रमज़ान आ पहुँचा तो दूसरे रमज़ान के रोज़े रखे और पहले रमज़ान के हर रोज़े के बदले फ़िदया दे और रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं, उसको अब्दुरज़ाक़ और इब्ने मुज़िर ने निकाला। यह्या बिन सईद ने कहा हज़रत उमर (रज़ि.) से उसके ख़िलाफ़ मरवी है और क़तादा से ये मन्कूल है कि जिसने रमज़ान की क़ज़ा में इफ़तार कर डाला तो वो एक रोज़े के बदले दो रोज़े रखे। अब जुम्हूर इलमा के नज़दीक रमज़ान की क़ज़ा पे दर पे रखना ज़रूरी नहीं अलग-अलग भी रख सकता है। यानी मुतफ़र्रिक़ तौर से और इब्ने मुज़िर ने हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत आइशा (रज़ि.) से नक़ल किया है कि पे दर पे रखना वाजिब है, कुछ अहले ज़ाहिर का भी यही क़ौल है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि ये आयत उतरी थी। फ़इदतुल्मिन अय्यामिन उख़र मुतताबिअतिन इब्ने अबी क़अब की भी क़िरअत यूँ ही है। (वहीदी) मगर अब क़िरअत मशहूर में ये लफ़ज़ नहीं हैं और अब उसी क़िरअत को तरजीह हासिल है।

## बाब 41 : हैज़ वाली औरत न नमाज़ पढ़े

### और न रोज़े रखे

## ٤١ - بَابُ الْحَائِضِ تَرْكُ الصَّوْمِ

### وَالصَّلَاةِ

और अबुज़्ज़िनाद ने कहा कि दीन की बातें और शरीअत के अहक़ाम बहुत दफ़ा ऐसा होता है कि राय और क़यास के ख़िलाफ़ होते हैं और मुसलमानों को उनकी पैरवी करनी ज़रूरी होती है उन ही में से एक ये हुक्म भी है कि हायज़ा रोज़े तो क़ज़ा कर ले लेकिन नमाज़ की क़ज़ा न करे।

وَقَالَ أَبُو الزُّنَادِ : إِنَّ السُّنَنَ وَوُجُوهَ الْحَقِّ لَتَأْتِي كَثِيرًا عَلَى خِلَافِ الرَّأْيِ، فَلَا يَجِدُ الْمُسْلِمُونَ بُدًّا مِنْ اتِّبَاعِهَا، مِنْ ذَلِكَ أَنَّ الْحَائِضَ تَقْضِي الصِّيَامَ وَلَا تَقْضِي الصَّلَاةَ.

यानी पाक होने पर उसको रोज़ों की क़ज़ा करना ज़रूरी है मगर नमाज़ की नहीं।

1951. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे

١٩٥١ - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا



मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अयाज़ ने और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क्या जब औरत हायज़ा होती है तो नमाज़ और रोज़े नहीं छोड़ देती? यही उसके दीन का नुक़सान है।

(राजेअ: 304)

مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ : حَدَّثَنِي زَيْدٌ عَنْ  
عِيَّاضٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ :  
قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((الْمَرْءُ إِذَا جَاءَتْهُ لَمْ  
تُصَلِّ وَلَمْ تَصُمْ؟ فَذَلِكَ نَقْصَانٌ فِيهَا)).

[راجع: 304]

मज़हब ये है कि मे'यारे सदाक़त हमारी नाक़िस अक़ल नहीं बल्कि फ़र्माने रिसालत (ﷺ) है। ख़्वाह वो बज़ाहिर अक़ल के ख़िलाफ़ भी नज़र आए मगर हक़ व सदाक़त वही है जो अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्मा दिया। उसी को मुक़द्दम रखना और अक़ले नाक़िस को छोड़ देना ईमान का तकाज़ा है। अबुज़िनाद के क़ौल का भी यही मतलब है।

## बाब 42 : अगर कोई शख़्स मर जाए और उसके ज़िम्मे रोज़े हों

और हसन बज़री (रह.) ने कहा कि अगर उसकी तरफ़ से (रमज़ान के तीस रोज़ों के बदले में) तीस आदमी एक दिन रोज़े रख लें तो जाइज़ है।

1952. हमसे मुहम्मद बिन ख़ालिद ने बयान किया कहा हमसे मुहम्मद बिन मूसा इब्ने अअयन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे अमर बिन हारिष ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी जा'फ़र ने, उनसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने कहा, उनसे इब्ना ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर कोई शख़्स मर जाए और उसके ज़िम्मे रोज़े बाजिब हों तो उसका वली उसकी तरफ़ से रोज़े रख ले, मूसा के साथ इस हदीष को इब्ने ख़हब ने भी अमर से रिवायत किया और यह्या बिन अय्यूब ने भी इब्ने अबी जा'फ़र से।

٤٢- بَابُ مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صَوْمٌ  
وَقَالَ الْحَسَنُ : إِنْ صَامَ عَنْهُ ثَلَاثُونَ رَجُلًا  
يَوْمًا وَاحِدًا جَازَ.

١٩٥٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَالِبٍ حَدَّثَنَا  
مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى بْنِ أَهْتَمٍ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ  
عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي  
جَعْفَرٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جَعْفَرٍ حَدَّثَهُ عَنْ  
عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ  
صِيَامٌ صَامَ عَنْهُ وَثْلَةٌ)). ثَابِتُ بْنُ وَهَبٍ  
عَنْ عَمْرِو. وَزَوَّاهُ يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ عَنْ  
أَبْنِ أَبِي جَعْفَرٍ.

**तशरीह :** अहले हदीष का मज़हब बाब की हदीष पर है कि उसका वली उसकी तरफ़ से रोज़े रखे और शाफ़िई का क़ौले क़दीम यही है, इमाम शाफ़िई से बैहक़ी ने ब सनदे सहीह रिवायत किया कि जब कोई सहीह हदीष मेरे क़ौल के ख़िलाफ़ मिल जाए तो उस पर अमल करो और मेरी तक्लीद न करो, इमाम मालिक और अबू हनीफ़ा (रह.) ने इस हदीषे सहीहा के बरख़िलाफ़ ये इख़्तियार किया है कि कोई किसी की तरफ़ से रोज़ा नहीं रख सकता। (वहीदी)

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहदिप्र देहलवी (रह.) :—मरने वाले की तरफ़ से रोज़ा रखने के बारे में फ़र्माते हैं कि उसमें दो भेद हैं एक मय्यत के ए'तिबार से क्योंकि बहुत से नुफ़ूस जो अपने अब्दान से मुफ़ारिक़त करते हैं उनको इस बात का इद्राक

रहता है कि इबादत में से कोई इबादत जो उन पर फ़र्ज़ थी और उसके तर्क करने से उनसे मुआख़ज़ा किया जाएगा उससे फ़ौत हो गई है, इसलिये वो नुफ़ूस रंज व अलम की हालत में रहते हैं और इस सबब से उन पर वह शत का दरवाज़ा खुल जाता है ऐसे वक़्त में उन पर बड़ी शफ़क़त ये है कि लोगों में से जो सबसे ज़्यादा इस मय्यित का करीबी है उसका—सा अमल करे और इस बात का क़स्द करे कि मैं ये अमल उसकी तरफ़ से करता हूँ उस शख्स के करीबी को मुफ़ीद प्राबित होता है या वो शख्स कोई और दूसरा काम मिला उसी काम के करता है और ऐसा ही अगर एक शख्स ने स़दका करने का इरादा किया था मगर वो बग़ैर स़दका किये मर गया तो उसके वारिष को उसकी तरफ़ से स़दका करना चाहिए। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा)

1953. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, कहा हमसे ज़ायदा ने बयान किया, उनसे अज़मश ने, उनसे मुस्लिम बत्तीन ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक शख्स रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरी माँ का इंतिक़ाल हो गया है और उनके ज़िम्मे एक महीने के रोज़े बाक़ी रह गये हैं। क्या मैं उनकी तरफ़ से क़ज़ा रख सकता हूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ ज़रूर, अल्लाह तआला का क़र्ज़ इस बात का ज़्यादा मुस्तहिक्क है कि उसे अदा कर दिया जाए। सुलैमान अज़मश ने बयान किया कि हक़म और सलमा ने कहा जब मुस्लिम बत्तीन ने ये हदीष बयान की तो हम सब वहीं बैठे हुए थे। उन दोनों हज़रात ने फ़र्माया कि हमने मुजाहिद से भी सुना था कि वो ये हदीष इब्ने अब्बास (रज़ि.) से बयान करते थे। अबू ख़ालिद से रिवायत है कि अज़मश ने बयान किया उनसे हक़म, मुस्लिम बत्तीन और सलमा बिन कुहैल ने, उनसे सईद बिन जुबैर, अत्ता और मुजाहिद ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि एक ख़ातून ने नबी करीम (ﷺ) से अज़ किया कि मेरी बहन का इंतिक़ाल हो गया है फिर यही क़िस्सा बयान किया, यह्या और सईद और अबू मुआविया ने कहा, उनसे अज़मश ने बयान किया, उनसे मुस्लिम ने, उनसे सईद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून ने नबी करीम (ﷺ) से अज़ की कि मेरी माँ का इंतिक़ाल हो गया है और उबैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे ज़ैद इब्ने अबी उन्स ने, उनसे हक़म ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून

١٩٥٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمِ بْنِ أَبِي النَّظَّارِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ وَعَلَيْهَا صَوْمُ شَهْرٍ أَفَأُضَيِّعُ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) قَالَ: ((لَدَيْنِ اللَّهِ أَحَقُّ أَنْ يُفْضَى)). قَالَ سَلِمَانٌ: فَقَالَ الْحَكَمُ وَمَتْلَمَةُ وَنَحْنُ جَمِيعًا جُلُوسٌ حِينَ حَدَّثَ مُسْلِمٌ بِهِذَا الْحَدِيثِ، قَالَا: سَمِعْنَا مُجَاهِدًا يَذْكُرُ هَذَا عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي خَالِدٍ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ الْحَكَمِ وَمُسْلِمِ بْنِ أَبِي النَّظَّارِ وَمَتْلَمَةَ بْنِ كَهْبَلٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ وَعَطَاءٍ وَمُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: ((قَالَتِ امْرَأَةٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ إِنَّ أُخْتِي مَاتَتْ)). وَقَالَ يَحْيَى وَأَبُو مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: ((قَالَتِ امْرَأَةٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ)). وَقَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي لَيْثَةَ عَنْ الْحَكَمِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ

ने नबी करीम (ﷺ) से अर्ज की कि मेरी माँ का इंतिकाल हो गया है और उन पर नज़्र का एक रोज़ा वाजिब था और अबू हरीज़ अब्दुल्लाह बिन हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे इकिस्मा ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अर्ज किया कि मेरी माँ का इंतिकाल हो गया है और उन पर पन्द्रह दिन के रोज़े क़ज़ा है।

**तशरीह:** इन सनदों के बयान करने से इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि इस हदीष में बहुत से इख़ितिलाफ़ात हैं, कोई कहता है पूछनेवाला मर्द था, कोई कहता है औरत ने पूछा था, कोई एक महीने के कोई पन्द्रह दिन के रोज़े कहता है कोई नज़्र का रोज़ा कहता है। इसलिये नज़्र का रोज़ा इमाम अहमद और लैष ने मय्यित की तरफ़ से रखना दुरुस्त कहा है और रमज़ान का रोज़ा रखना दुरुस्त नहीं रखा (जबकि ये क़ौल सहीह नहीं, मय्यित की तरफ़ से बाक़ी रोज़े रखने ज़रूरी हैं)। मैं कहता हूँ इन इख़ितिलाफ़ात से हदीष में कोई नुक़्स नहीं आता। जब उसके रावी शिक्कह हैं मुम्किन है ये मुख़्तलिफ़ वाक़ियात हों और पूछनेवाले मुतअदिद (अनेक रहे) हों। (वहीदी)

### बाब 43 : रोज़े किस वक़्त इफ़्तार करें?

और सूरज का गर्दा डूब गया तो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने रोज़ा इफ़्तार कर लिया (इस अघ़र को सईद बिन मंसूर और इब्ने अबी शैबा ने वज़ल किया है)

1954. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ठव्वा ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने बाप से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने आसिम बिन इमर (रज़ि.) बिन ख़ज़ाब से सुना, उनसे उनके बाप हज़रत इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब रात इस तरफ़ (मश्रिक) से आए और दिन उधर मश्रिब में चला जाए कि सूरज डूब जाए तो रोज़ा के इफ़्तार का वक़्त आ गया।

**तशरीह:** हदीष और बाब में मुताबक़त जाहिर है। हज़रत सुफ़यान बिन उययना जो यहाँ भी सनद में आए हैं 107 हिजरी में माहे शाबान में कूफ़ा में उनकी विलादत हुई। इमाम, आलिम, ज़ाहिद, परहेज़गार थे, उन पर जुम्ला मुहद्दीसीन का ए'तिमाद था। जिनका मुतफ़क़ा क़ौल है कि अगर इमाम मालिक और सुफ़यान बिन उययना न होते तो हज़ाज का इल्म नमूदार हो जाता। 198 हिजरी में यकुम रजब को मक्का मुकर्रमा में उनका इंतिकाल हुआ और हिजून में दफ़न किये गये उन्होंने सत्तर हज़्ज किये थे। रहिमहुमुल्लाह अज्मईन। (आमीन)

1955. हमसे इस्हाक़ वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे सुलेमान शैबानी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (ग़ज़्व-ए-फ़तह जो रमज़ान में हुआ) सफ़र में थे और अहज़रत (ﷺ) रोज़े से थे, जब सूरज ग़रूब हो

عَبَّاسٍ: ((قَالَتْ امْرَأَةٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ وَغَلِيهَا صَوْمٌ نَذَرْتُ)). وَقَالَ أَبُو حَرِيرَةَ حَدَّثَنَا عِكْرَمَةُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ ((قَالَتْ امْرَأَةٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَاتَتْ أُمِّي وَغَلِيهَا صَوْمٌ خَمْسَةَ عَشَرَ يَوْمًا)).

٤٣- بَابُ مَتَى يَحِلُّ فِطْرُ الصَّائِمِ؟  
وَالْفِطْرُ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ حِينَ غَابَ قُرْصُ الشَّمْسِ  
١٩٥٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ سَمِعْتُ عَاصِمَ بْنَ خَمْرَةَ نَوَى الْعَطَّابُ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا أَتَى اللَّيْلُ مِنْ هَاهُنَا، وَأَذْبَرِ النَّهَارُ مِنْ هَاهُنَا، وَغَرَبَتِ الشَّمْسُ، فَقَدْ أَفْطَرَ الصَّائِمُ)).

١٩٥٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي سَفَرٍ وَهُوَ صَائِمٌ، فَلَمَّا غَرَبَتِ

गया तो आप (ﷺ) ने एक सहाबी (बिलाल रज़ि.) से फ़र्माया कि ऐ फ़लाँ! मेरे लिये उठ के सत्तू घोल, उन्होंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) थोड़ी देर और ठहरते। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उतरकर हमारे लिये सत्तू घोल, इस पर उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) थोड़ी देर और ठहरते। आँहज़रत (ﷺ) ने फिर वही हुक्म दिया कि उतरकर हमारे लिये सत्तू घोल लेकिन उनका अब भी ख़याल था कि अभी दिन बाक़ी है। आँहज़रत (ﷺ) ने इस बार फिर फ़र्माया कि उतरकर हमारे लिये सत्तू घोल चुनाँचे उतरे और सत्तू उन्होंने घोल दिया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पिया। फिर फ़र्माया कि जब तुम ये देख लो कि रात इस मशिक़ की तरफ़ से आ गई तो रोज़ेदार को इफ़्तार कर लेना चाहिए। (राजेअ: 1941)

**तशरीह:** मुखातब हज़रत बिलाल (रज़ि.) थे जिनका ख़याल था कि अभी सूरज गुरुब नहीं हुआ है, हालाँकि वो गुरुब हो चुका था। बहरहाल ख़याल के मुताबिक़ ये कहा क्योंकि अरब में पहाड़ों की क़प्रत है और ऐसे इलाक़ों में गुरुबे आफ़ताब के बाद भी ऐसा ज़ाहिर होता है कि अभी सूरज बाक़ी है मगर हकीकत में इफ़्तार का वक़्त हो गया था इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनको सत्तू घोलने के लिये हुक्म दिया और रोज़ा खोला गया। हदीष से ज़ाहिर हो गया कि जब भी गुरुब का यक़ीन हो जाए तो रोज़ा खोल देना चाहिए ताख़ीर करना जाइज़ नहीं है जैसा कि दूसरी अहदीष में वारिद हुआ है। इस हदीष से इफ़्तारे ख़याल की भी आज़ादी प्राबित हुई अगरचे वो ख़याल दुरुस्त भी न हो। मगर हर शख्स को हक़ है कि अपना ख़याल ज़ाहिर करे, बाद में वो ख़याल ग़लत प्राबित हो तो उस पर उसका तस्लीमे हक़ करना भी ज़रूरी है।

#### बाब 44 : पानी वग़ैरह जो चीज़ भी पास हो उससे रोज़ा इफ़्तार कर लेना चाहिए

1956. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सफ़र में जा रहे थे, आप (ﷺ) रोज़े से थे, जब सूरज गुरुब हुआ तो आपने एक शख्स से फ़र्माया कि उतरकर हमारे लिये सत्तू घोल, उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! थोड़ी देर और ठहरिये, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उतरकर हमारे लिये सत्तू घोल, उन्होंने फिर यही कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अभी तो दिन बाक़ी है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उतरकर सत्तू घोल हमारे लिये, चुनाँचे उन्होंने उतरकर सत्तू घोला। आँहज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि जब तुम देखो कि रात की तारीकी इधर

الشَّمْسُ فَإِنْ لَمْ يَغْضِ الْقَوْمُ : ((يَا فُلَانُ فَمَ  
لَا جَدِّحْ لَنَا))، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ  
أَمْسَتَ، قَالَ: ((أَتَزِلُّ لَاجِدِّحْ لَنَا))، قَالَ:  
يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلَوْ أَمْسَتَ، قَالَ: ((أَتَزِلُّ  
لَاجِدِّحْ لَنَا))، قَالَ: إِنَّ عَلَيْكَ نَهَارًا، قَالَ:  
((أَتَزِلُّ لَاجِدِّحْ لَنَا)).. فَزَلَّ فَجَدِّحَ لَهُمْ،  
فَشَرِبَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّا رَأَيْنَا  
الْزُّلَّ لَدُنَّ أَهْلِ بَيْتِنَا مِنْ هَاهُنَا فَكَذَلِكَ أَطَرَّ  
الصَّالِحِينَ)). (راجع: 1941)

#### 44- بَابُ يَنْطَرُ بِمَا تَهْتَرُ عَلَيْهِ بِالْمَاءِ وَغَيْرِهِ

1956- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَنْهُ  
الْوَاحِدُ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ عَنْهُ  
اللَّهُ بْنُ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:  
((بِزَيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ صَائِمٌ،  
فَلَمَّا غَرَبَتِ الشَّمْسُ قَالَ: ((أَتَزِلُّ لَاجِدِّحْ  
لَنَا))، قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ أَمْسَتَ،  
قَالَ: ((أَتَزِلُّ لَاجِدِّحْ لَنَا))، قَالَ: يَا  
رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ عَلَيْكَ نَهَارًا، قَالَ: ((أَتَزِلُّ  
لَاجِدِّحْ لَنَا))، فَزَلَّ فَجَدِّحَ لَهُمْ، ثُمَّ قَالَ:

से आ गई तो रोज़ेदार को रोज़ा इफ़्तार कर लेना चाहिए, आप (ﷺ) ने अपनी उँगली से मशिक की तरफ़ इशारा किया।

(राजेअ: 1941)

((إِذَا رَأَيْتُمُ اللَّيْلَ أَقْبَلَ مِنْ هَا هُنَا فَقَدْ

أَفْطَرَ الصَّائِمُ. وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ قِبَلَ

الْمَشْرِقِ)). [راجع: 1941]

हदीष की मुनासबत तर्जुम-ए-बाब से यूँ है कि सत्तू पानी में घोले गए थे और उस वक़्त यही हाज़िर था तो पानी वग़ैरह माहज़र (जो कुछ हाज़िर हो उस) से रोज़ा खोलना प्राबित हुआ। तिर्मिज़ी ने मर्फूअन निकाला कि खजूर से रोज़ा इफ़्तार करे अगर खजूर न मिले तो पानी से। (वहीदी)

हज़रत मुसद्द बिन मुसहिद इमाम बुखारी (रह.) के जलीलुल क़द्र असातिज़ा में से हैं और जामेउस्सहीह में उनसे ब-क़रत रिवायात हैं। ये बसरा के बाशिन्दे थे। हम्माद बिन ज़ैद और अबू अवाना वग़ैरह से हदीष की समाअत फ़र्माई। उनसे इमाम बुखारी (रह.) के अलावा और भी बहुत से मुहदिषीन ने रिवायत की है। 228 हिजरी में इतिक़ाल हुआ। रहिमहुमुल्लाहु तआला अलैहिम अज्मईन (आमीन)

अल्हम्दु लिल्लाह पारा नम्बर 7 मुकम्मल हुआ।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## आठवां पारा

### बाब 45 : रोज़ा खोलने में जल्दी करना

1957. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने, उन्हें सहल बिन सअद (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी उम्मत के लोगों में उस वक़्त तक ख़ैर बाक़ी रहेगी, जब तक वो इफ़्तार में जल्दी करते रहेंगे।

### ४०- بَابُ تَعْجِيلِ الْإِفْطَارِ

١٩٥٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي خَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: (لَا يَزَالُ النَّاسُ بِخَيْرٍ مَا عَجَّلُوا الْإِفْطَارَ).

**तशरीह:** या'नी वक़्त हो जाने के बाद फिर इफ़्तार में देर न करना चाहिए। अबू दाऊद ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला यहूद और नज़ारा देर करते हैं, हाकिम की रिवायत में है कि मेरी उम्मत हमेशा सुन्नत पर रहेगी जब तक रोज़े के इफ़्तार में तारे निकलने का इतिज़ार न करेगी। इब्ने अब्दुल बर ने कहा रोज़ा जल्द इफ़्तार करने और सेहरी देर में खाने की हदीषें सहीह और मुतवातिर हैं। अब्दुर्रज़ाक़ ने निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) के अस्हाब (रज़ि.) सब लोगों से रोज़ा जल्दी खोलते और सेहरी खाने में लोगों से देर करते। मगर हमारे ज़माने में इमूमन लोग रोज़ा तो देर से खोलते हैं और सेहरी जल्दी खा लेते हैं इसी वजह से उन पर तबाही आ रही है। आँहज़रत (ﷺ) का फ़र्माना दुरुस्त था। जब से मुसलमानों ने सुन्नत पर चलना छोड़ दिया रोज़ा बरोज़ (दिन-ब-दिन) उनका तनज़ुल (पतन) होता गया। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ाल इब्नु अब्दिलबर अहादीषु तअजीलिल इफ़्तारि व ताख़ीरिस्सुहूरि सिहाहुन मुतवातिरतुन व इन्द अब्दिर्रज़ाक़ व ग़ैरिही बिइस्नादिन सहीहिन अन अम्रिब्नि मैयून अल अज़दी क़ाल क़ान अस्हाबु मुहम्मदिन (ﷺ) अस्सुन्नसि इफ़्तारन व अब्ताहुम सुहूरन (फ़तहुल बारी) या'नी रोज़ा खोलने से मुता'ल्लिक़ सहीह अहादीष मुतवातिर हैं। वत्तफ़क़लुलमाउ अला अन्न महल्ल ज़ालिक़ इज़ा तहक्क़क़ गुरुबिश्शमसि बिरूयति औ बिइब्बारि अदलैनि व क़ज़ा अदलुन वाहिदुन फ़लअर्जहि क़ाल इब्नु दक्कीक़ अल्ईद फ़ी हाज़ल हदीषि रहुन अलशशीअति फ़ी ताख़ीरिहिम इला जुहुरिन्नजूमि (फ़तहुल बारी) उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि रोज़ा खोलने का वक़्त वो है जब सूरज का गुरुब होना पुख़्ता तौर पर प्राबित हो जाए या दो आदिल गवाह कह दें, दो न हो तो एक आदिल गवाह भी काफ़ी है। इस हदीष में शिआ पर रद्द है जो रोज़ा खोलने के लिये तारों के ज़ाहिर होने का इतिज़ार करते रहते थे जो यहूद व नज़ारा का तरीक़ा है जिसके बारे में आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी सख़्ततरीन नाराज़गी का इज़हार किया है।

1958. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू बक्र बिन अयाश ने बयान किया, उनसे सुलैमान शैबानी ने

١٩٥٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي

और उनसे इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) ने कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में था। आप (ﷺ) रोज़े से थे, जब शाम हुई तो आप (ﷺ) ने एक शख्स से फ़र्माया कि (ऊँट से) उतरकर मेरे लिये सत्तू घोल। उसने कहा! हुज़ूर अगर शाम होने का कुछ और इंतज़ार करें तो बेहतर हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उतरकर मेरे लिये सत्तू घोल (वक़्त हो गया है) जब तुम ये देख लो कि रात इधर मश्रिक से आ गई तो रोज़ेदार के रोज़ा खोलने का वक़्त हो गया। (राजेअ: 1941)

أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : «كَثُتْ مَعَ النَّبِيِّ فِي سَفَرٍ، فَصَامَ حَتَّى أَمْسَى، قَالَ لِرَجُلٍ : «(انْزِلْ فَاجِدْ لِي)» قَالَ: لَوْ أَنْتَظَرْتُ حَتَّى تَمْسَى، قَالَ: «(انْزِلْ فَاجِدْ لِي)»، إِذَا رَأَيْتَ اللَّيْلَ قَدْ أَقْبَلَ مِنْ هَاهُنَا فَقَدْ أَفْطَرَ الصَّائِمُ».

[راجع: 1941]

**तशरीह:** या रोज़ा खुल गया। कुछ लोगों ने इस हदीष से ये दलील ली है कि जब इफ़्तार का वक़्त आ जाए तो खुद-ब-खुद रोज़ा खुल जाता है गो इफ़्तार न करे। हम कहते हैं इस हदीष से उनका रद्द होता है क्योंकि अगर वक़्त आने से रोज़ा खुद-ब-खुद खुल जाता है तो आँहज़रत (ﷺ) सत्तू घोलने के लिये क्यूँ जल्दी करते। इसी तरह दूसरी हदीषों में रोज़ा जल्दी खोलने की तरगीब क्यूँ देते और अगर वक़्त आने पर रोज़ा खुद-ब-खुद खुल जाता तो फिर तै के रोज़े से क्यूँ मना करते? यही हदीष पीछे इस्लाम का वास्ती की सनद से भी गुज़र चुकी है। आप (ﷺ) ने जिसको सत्तू घोलने का हुक्म दिया था वो हज़रत बिलाल (रज़ि.) थे। जिन्होंने रोशनी देखकर ख़याल किया कि अभी सूरज गुरुब होने में कसर है। इसीलिये उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के सामने ऐसा अर्ज़ किया।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, वफ़ीहि तज़किरतुल आलिमि बिमा यख़शा अय्यकून नसियहू व तर्कुल मुराजअ ति लहू बअद प्रलाघिन या'नी इस हदीष में ज़िक्र किये गये वाक़िये से ये भी प्राबित हुआ कि किसी आलिम को एक आम आदमी तीन बार याददेहानी करा सकता है अगर ये गुमान हो कि आलिम से भूल हो गई है, जैसा कि हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अपने ख़याल के मुताबिक़ आँहज़रत (ﷺ) को तीन बार याददेहानी कराई। मगर चूँकि हज़रत बिलाल (रज़ि.) का ख़याल सहीह न था। लिहाज़ा आख़िर में आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मसले की हक़ीक़त से आगाह कराया और उन्होंने इशदि गिरामी की ता'मील की, मा'लूम हुआ कि वक़्त हो जाने पर रोज़ा खोलने में पसोपेश करना क़द्अन मुनासिब नहीं है।

**बाब 46 : एक शख्स ने सूरज गुरुब समझकर रोज़ा खोल लिया उसके बाद सूरज निकल आया**

1959. हमसे अब्दुल्लाह बिन शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे फ़ातिमा बिनते मुज़िर ने और उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने कि एक बार नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में अब्र (बादल छाया हुआ) था। हमने जब इफ़्तार कर लिया तो सूरज निकल आया। इस पर हिशाम (रावी हदीष) से कहा गया कि क्या फिर उन्हें उस रोज़े की क़ज़ा का हुक्म हुआ था? तो उन्होंने बतलाया कि क़ज़ा के सिवा और चाराकार ही क्या था? और मअमर ने कहा कि मैंने हिशाम से यँ सुना मुझे मा'लूम नहीं कि उन लोगों ने क़ज़ा की थी या नहीं।

٤٦- بَابُ إِذَا أَفْطَرَ فِي رَمَضَانَ، ثُمَّ طَلَعَتِ الشَّمْسُ

١٩٥٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: «(أَفْطَرْنَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ غَيْمٍ ثُمَّ طَلَعَتِ الشَّمْسُ، قِيلَ لِهِشَامٍ: فَأَمِرُوا بِالْقَضَاءِ؟ قَالَ: بَدُ مِنْ قَضَاءٍ)» وَقَالَ مَقْمَرٌ سَمِعْتُ هِشَامًا لَا أَذْرِي أَقَضُوا أَمْ لَا».

**तशरीह :** इस पर चारों इमामों का इतिफाक है कि ऐसी सूरत में क़ज़ा लाज़िम होगी और कफ़रा न होगा और उसके सिवा ये भी ज़रूरी है कि जब तक गुरुब न हुआ इन्साक करे या'नी कुछ खाए-पीये नहीं।

क़स्तलानी ने कुछ इनाबिला से ये नक़ल किया है कि अगर कोई शख्स ये समझकर कि रात हो गई इफ़तार कर ले फिर मा'लूम हुआ कि दिन था तो उस पर क़ज़ा भी नहीं है। लेकिन ये क़ौल सहीह नहीं है। मैं कहता हूँ हज़रत इमर (रज़ि.) से ये मन्कूल है कि ऐसी सूरत में क़ज़ा भी नहीं है और मुजाहिद और हसन से भी ऐसा ही मन्कूल है। हाफ़िज़ ने कहा एक रिवायत इमाम अहमद (रह.) से भी ऐसी ही है। और इब्ने खुज़ैमा ने उसी को इख़्तियार किया है। और मअमर की तअलीक़ को अब्द बिन हुमैद ने वस्त्त किया। ये रिवायत पहली रिवायत के ख़िलाफ़ है और शायद पहले हिशाम को उसमें शक हो फिर यक़ीन हो गया हो कि उन्होंने क़ज़ा की। और अबू उसामा ने उनको क़ज़ा का यक़ीन हो जाने के बाद रिवायत की हो, इस सूरत में तअरुज़ न रहेगा। इब्ने खुज़ैमा ने कहा हिशाम ने जो क़ज़ा करना बयान किया उसकी सनद ज़िक्र नहीं की, इसलिये मेरे नज़दीक क़ज़ा न होने की तरज़ीह है और इब्ने अबी शैबा ने हज़रत इमर (रज़ि.) से नक़ल किया कि हम क़ज़ा नहीं करेंगे, न हमको गुनाह हुआ और अब्दुर्रज़ाक और सईद बिन मंसूर ने उनसे नक़ल किया है कि क़ज़ा करना चाहिए। हाफ़िज़ ने कहा, इस कलाम से हासिल ये हुआ कि ये मसला इख़्तिलाफ़ी है (वहीदी)। जाहिर हदीष का मफ़हूम यही है कि क़ज़ा लाज़िम है, वल्लाहु आलम।

## बाब 47 : बच्चों के रोज़ा रखने का बयान

## ٤٧- بَابُ صَوْمِ الصِّبْيَانِ

जुम्हूर उलमा का ये क़ौल है कि जब तक बच्चा जवान न हो उस पर रोज़ा वाज़िब नहीं लेकिन एक जमाअते सलफ़ ने उनको आदत डालने के लिये ये हुक्म दिया कि बच्चों को रोज़ा रखवाएँ जैसे नमाज़ पढ़ने के लिये उनको हुक्म दिया जाता है। शाफ़िई ने कहा सात से लेकर दस बरस तक जब उम्र हो तो उनसे रोज़ा रखवाएँ। और इस्हाक़ ने कहा जब बारह बरस के हों, इमाम अहमद ने कहा जब दस बरस के हों। औज़ाई ने कहा जब बच्चा तीन रोज़े मुतवातिर रख सके और उसको जुअफ़ (कमज़ोरी) न हो तो उसको रोज़ा रखवाएँ और मालिकिया का मशहूर मज़हब ये है कि बच्चों के हक़ में रोज़ा मशरूअ नहीं है। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़रमते हैं, अन्नस्महीह इन्द अहलिल हदीषिय अहलिल उम्ूलि अन्नस्महाबी इज़ा क़ाल फ़अल्ना क़ज़ा फ़ी अहदि रसूलिल्लाहि (ﷺ) जब कोई सहाबी लफ़्ज़े फ़अलना फ़ी अहद अल्ख़ बोले तो वो मर्फूअ हदीष के हुक्म में हैं।

और हज़रत इमर (रज़ि.) ने एक नशेबाज़ से फ़र्माया था, अफ़सोस तुझ पर, तूने रमज़ान में भी शराब पी रखी है। हालाँकि हमारे बच्चे तक भी रोज़े से हैं, फिर आपने उस पर हद कायम की।

وَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لِنَشْوَانٍ لِي رَمَضَانَ: وَيَلَاكَ، وَصِيَّانَا صِيَّامًا. فَضَرَبَهُ.

1960. हमसे मुसहद ने बयान किया, उनसे बिश्र बिन मुफ़ज़ल ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने बयान किया, उनसे रबीअ बन्ते मुअव्विज़ (रज़ि.) ने कहा कि आशूरा की सुबह को आँहज़रत (ﷺ) ने अंसार के महल्लों में कहला भेजा कि सुबह जिसने खा पी लिया हो वो दिन का बाक़ी हिस्सा (रोज़ेदार की तरह) पूरे करे और जिसने कुछ खाया पिया न हो वो रोज़े से रहे। रबीअ ने कहा कि फिर बाद में भी (रमज़ान के रोज़े की फ़ज़ियत के बाद) हम उस दिन रोज़ा रखते और अपने बच्चों से भी रखवाते

١٩٦٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ عَنْ الرَّبِيعِ بْنِ مَعْوَدٍ قَالَتْ: أُرْسِلَ النَّبِيُّ ﷺ غَدَاةَ عَاشُورَاءَ إِلَى قُرَى الْأَنْصَارِ: مَنْ أَصْبَحَ مُفْطِرًا فَلَيْتِمَ بَقِيَّةَ يَوْمِهِ، وَمَنْ أَصْبَحَ صَائِمًا فَلَيْصُمَ. قَالَتْ: فَكُنَّا نَصُومُهُ بَعْدَ وَنَصُومُ صِيَّانًا وَنَجْعَلُ لَهُمُ اللَّعْبَةَ مِنْ



थे। उन्हें हम ऊन का एक खिलौना देकर बहलाए रखते। जब कोई खाना खाने के लिये रोता तो वही दे देते, यहाँ तक कि इफ्तार का वक़्त आ जाता।

الْمُهِنِ. فَإِذَا بَكَى أَحَدُهُمْ عَلَى الطَّعَامِ  
أَعْطَيْنَاهُ ذَلِكَ حَتَّى يَكُونَ عِنْدَ الْإِفْطَارِ.))

**तशरीह :** उस नशेबाज़ ने स्मज़ान में भी शराब पी रखी थी, हज़रत इमर (रज़ि.) ने ये मा'लूम करके फ़र्माया कि अरे कमबख्त! तू ने ये क्या हरकत की हमारे तो बच्चे भी रोज़ेदार हैं। फिर आप (ﷺ) ने उसको अस्सी कोड़े मारे और शाम के मुल्क में जलावतन (तड़ीपार) कर दिया। उसको सईद बिन मंसूर और बन्वी ने ज़अदियात में निकाला है। इस वाक़िये को नक़ल करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद सिर्फ़ बच्चों को रोज़ा रखने की मशरूइयत बयान करना है। जिसका ज़िक्र हज़रत इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया था। पस मुनासिब है कि बच्चों को भी रोज़े की आदत डलवाई जाए। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, ब फ़िल हदीषि हुज्जतुन अला मशरूइयति तम्पीनिस्सिब्यानि अलस्मियामि कमा तक्रहम लिअन्न कान फ़ी मिस्लिस्मिस्मिल्लज़ी जुकिर फ़ी हाज़ल हदीषि क़ हुब ग़ैर मुकल्लफ़िन या'नी इस हदीष में दलील है इस बात पर कि बतौर मशक़ बच्चों से रोज़ा रखवाना मशरूअ है। अगरचे इस उम्र में वो शरअ के मुकल्लफ़ (पाबन्द) नहीं हैं।

#### बाब 48 : पे दर पे रोज़ा रखना और जिन्होंने ये कहा कि रात में रोज़ा नहीं हो सकता

(अबुल आलिया) ताबेअी से ऐसा मन्कूल है उन्होंने कहा अल्लाह ने फ़र्माया रोज़ा रात तक पूरा करो (जब रात आई तो रोज़ा खुल गया। ये इब्ने शैबा ने निकाला) क्योंकि अल्लाह तआला ने (सूरह बक्रर: में) फ़र्माया फिर तुम रोज़ा रात तक पूरा करो नबी करीम (ﷺ) ने सौमे विसाल से (बहुक्मे इलाही) मना फ़र्माया, उम्मत पर रहमत और शफ़क़त के ख़याल से ताकि उनकी ताक़त फ़ायम रहे। और ये कि इबादत में सख़्ती करना मकरूह है।

इस हदीष को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने आख़िर बाब में हज़रत आइशा (रज़ि.) से वस्ल किया और अबू दाऊद (रज़ि.) से निकाला कि आहज़रत (ﷺ) ने इजामत और विसाल से मना किया। अपने अस्हाब की ताक़त बाक़ी रखने के लिये, तै का रोज़ा रखना मना है मगर सेहर तक विसाल जाइज़ है। जैसे दूसरी हदीष में वारिद है। अब इख़ितलाफ़ है कि ये मुमानअत तहरीमी है या कराहत के तौर पर। कुछ ने कहा जबर शाक़ हो तो उस पर तो ह़राम है और जिस पर शाक़ न हो उसके लिये जाइज़ है। (वहीदी)

#### 48 - بَابُ الْوَصَالِ، وَمَنْ قَالَ لَيْسَ فِي اللَّيْلِ صِيَامٌ،

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لَمْ يَأْمُرُوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ﴾ وَنَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ رَحْمَةِ لَهُمْ وَإِنْقَاءَ عَلَيْهِمْ، وَمَا يُكْرَهُ مِنَ الصَّغْمِ.

1961. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि मुझसे यहा क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, कहा कि मुझसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (बिला सेहर व इफ़्तार) पे दर पे रोज़े न रखा करो। सहाबा किराम (रज़ि.) ने अज़ज़ किया कि आप (ﷺ) तो विसाल करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मुझे (अल्लाह तआला की तरफ़ से) खिलाया और पिलाया जाता है या (आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया) मैं इस तरह रात गुज़ारता हूँ कि मुझे खिलाया और पिलाया जाता रहता है। (दीगर मक़ाम: 7241)

١٩٦١ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثُنِي عَنْ يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَوَاصِلُوا، قَالُوا: إِنَّكَ تَوَاصِلٌ، قَالَ: لَسْتُ كَأَحَدٍ مِنْكُمْ، إِنِّي أَطْعَمُ وَأَسْقَى. أَوْ إِنِّي أَبِيتُ أَطْعَمُ وَأَسْقَى.))

[طرفه ب: ٧٢٤١]

1962. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक (रह.) ने खबर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सौमे विसाल से मना किया। सहाबा किराम (रज़ि.) ने अर्ज किया कि आप (ﷺ) तो विसाल करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ, मुझे खिलाया और पिलाया जाता है। (राजेअ: 1922)

1963. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, उनसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन हाद ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन खब्बाब ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलसल (बिला सेहरी व इफ़्तारी) रोज़ेन रखो, हाँ अगर कोई ऐसा करना ही चाहे तो वो सेहरी के वक़्त तक ऐसा कर सकता है। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) तो ऐसा करते हैं? इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मैं तो रात इस तरह गुज़ारता हूँ कि एक खिलाने वाला मुझे खिलाता है और एक पिलाने वाला मुझे पिलाता है। (दीगर मक़ाम: 1967)

**तशरीह:** इब्ने अबी हातिम ने सनदे सहीह के साथ बशीर बिन ख़सासिया की औरत से नक़ल किया कि मैंने इरादा किया था कि दो दिन—रात का मुतवातिर रोज़ा रखूँ मगर मेरे शौहर ने मुझको ऐसा करने से मना कर दिया और ये हदीष सुनाई कि रसूले करीम (ﷺ) ने इससे मना किया और उसको फ़ेअले नज़ारा (ईसाइयों जैसा काम) बतलाया और फ़र्माया कि उसी तरह रोज़ा रखो जिस तरह तुमको अल्लाह ने उसके लिये हुक्म दिया है। रात आने तक रोज़ा रखो, रात होने पर फ़ौरन रोज़ा इफ़्तार कर लो।

अहदीष में औहज़रत (ﷺ) के सौमे विसाल का ज़िक्र है ये आप (ﷺ) की खुसूसियात में से है। उसी तत्बीक को तरज़ीह हासिल है। अल्लाह पाक मुझे खिलाता—पिलाता है उससे रूहानी खाना व पीना मुराद है। तफ़सीले मज़ीद के लिये अहले इल्म फ़तहूल बारी का ये मक़ाम मुलाहिज़ा फ़र्माएँ।

1964. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा और मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने खबर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके बाप ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पे दर पे रोज़ा से मना किया था, उम्मत पर रहमत और शफ़क़त के ख़याल से, सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज किया कि आप (ﷺ) तो विसाल करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ मुझे मेरा ख़ खिलाता और पिलाता है। इब्मान ने (अपनी रिवायत में) उम्मत पर रहमत व शफ़क़त के ख़याल से

۱۹۶۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ، قَالُوا: إِنَّكَ تُوَاصِلُ، قَالَ: ((إِنِّي لَسْتُ بِفِلْكُمْ، إِنِّي أَطْعَمُ وَأَسْقِي)). (راجع: ۱۹۶۲)

۱۹۶۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَتَابٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَا تُوَاصِلُوا، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يُوَاصِلَ فَلْيُوَاصِلْ حَتَّى السَّحَرِ))، قَالُوا: فَإِنَّكَ تُوَاصِلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: ((إِنِّي لَسْتُ كَهَيْئَتِكُمْ، إِنِّي آيِسْتُ لِي مُطْعِمٌ يُطْعِمُنِي وَسَاقٍ يَسْقِينِي)). (طرنه ن: ۱۹۶۷)

۱۹۶۴- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَمُحَمَّدٌ قَالَا: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ رَحْمَةً لَهُمْ، قَالُوا: إِنَّكَ تُوَاصِلُ، قَالَ: ((إِنِّي لَسْتُ كَهَيْئَتِكُمْ، إِنِّي يُطْعِمُنِي رَبِّي

के अल्फ़ाज़ ज़िक्र नहीं किये हैं।

وَتَسْقِينَ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ : لَمْ يَذْكُرْ  
عُمَانُ ((رَحْمَةً لَهُمْ)).

**तशरीह :** इससे उन लोगों ने दलील ली है जो तै का रोज़ा रखना हुराम नहीं कहते बल्कि कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी उम्मत पर शफ़क़त के ख़याल से उससे मना किया जैसे क़यामुल लैल में आप चौथी रात को इस डर से हाज़िर न हुए कि कहीं ये फ़र्ज़ न हो जाए। और इब्ने अबी शैबा ने सहीह सनदों से अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) से निकाला कि वो पन्द्रह पन्द्रह दिन तक तै रोज़े रखते। और खुद आँहज़रत (ﷺ) ने अपने अस्हाब के साथ तै रोज़े रखे। अगर हुराम होते तो आप (ﷺ) अपने अस्हाब (रज़ि.) को कभी न रखने देते। (वहीदी)

### बाब 49 : जो तै के रोज़े बहुत रखे उसको सज़ा देने का बयान

इसको हज़रत अनस (रज़ि.) ने जनाबे नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

1965. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुसलसल (कई दिन तक सेहरी व इफ़्तारी के बग़ैर) रोज़ा रखने से मना किया था। इस पर एक आदमी ने मुसलमानों में से अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप तो विज्ञाल करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी तरह तुममें से कौन है? मुझे तो रात में मेरा ख़ ख़िलाता है और वही मुझे सैराब करता है। लोग इस पर भी जब स़ौमे विज्ञाल रखने से न रुके तो आप (ﷺ) ने उनके साथ दो दिन तक विज्ञाल किया। फिर ईद का चाँद निकल आया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर ईद का चाँद न दिखाई देता तो मैं और कई दिन विज्ञाल करता। गोया जब स़ौमे विज्ञाल से वो लोग न रुके तो आपने उनको सज़ा देने के लिये ये कहा। (दीगर मक़ाम : 1966, 6851, 7242)

٤٩- بَابُ التَّكْيِيلِ لِمَنْ أَكْثَرَ  
الْوَصَالَ. رَوَاهُ أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ  
١٩٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا  
ثَعْلَبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو  
سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ  
عَنِ الْوَصَالِ فِي الصَّوْمِ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ  
مِنَ الْمُسْلِمِينَ: إِنَّكَ تَوَاصِلٌ يَا رَسُولَ  
اللَّهِ. قَالَ: ((وَأَيْكُمْ يَفْلِهِ؟ إِنِّي أَبِئْتِ  
نُطْمِئِنِّي رَمَى وَتَسْقِينَ)). فَلَمَّا أَبَوْا أَنْ  
يَنْتَهُوا عَنِ الْوَصَالِ وَاصْلَ بِهِمْ يَوْمًا ثُمَّ  
يَوْمًا، ثُمَّ رَأَوْا الْهَيْلَانَ، فَقَالَ: ((لَوْ فَاعَزَّ  
لِرِذْوَنِكُمْ)). كَالْتَّكْيِيلِ لَهُمْ حِينَ أَبَوْا أَنْ  
يَنْتَهُوا.

أَطْرَافُهُ ٦ : ١٩٦٦ ، ٦٨٥١ ، ٧٢٤٢

**तशरीह :** कुछ रिवायतों में यूँ है मैं तो बराबर अपने मालिक के पास रहता हूँ वो मुझको खिलाता और पिलाता है। ये खिला पिला देना रोज़ा नहीं तोड़ता क्योंकि ये बहिश्त का त़आम और शराब है, उसका हुक्म दुनिया के त़आम और शराब का नहीं जैसे एक हदीष में है सोने का त़श्त लाया गया और मेरा सीना धोया गया। हालाँकि दुनिया में सोने-चाँदी के बर्तनों का इस्तेमाल हुराम है क़रुअे नज़र उसके सहीह रिवायत यही है कि मैं रात को अपने मालिक के पास रहता हूँ वो मुझको खिला पिला देता है। (वहीदी)

हाफ़िज़ फ़मति है, अय अला सिफ़तिकुम फ़ी अन्न मन अकल मिन्कुम औ शरिब इन्क़तअ विज्ञालुह बल इन्नमा युत्इमुनी रब्बी व यस्क्रनीनी व ला तन्क़रतिउ बिज्ञालिक मवासलती फ़त़आमी व शराबी अला ग़ैरि

तआमिकुम व शराबिकुम सूरतन व मअनन या' नी तुमसे से कोई रोज़े में खा पी ले तो उसका विस्माल रोज़ा टूट गया। और मेरा रब मुझे खिलाता और पिलाता है और उससे मेरा विस्माल नहीं टूटता। मेरा तआम व शराब (खाना-पीना) बातिन के लिहाज़ से तुम्हारे तआम व शराब से बिल्कुल अलग है।

1966. हमसे यहा बिन मूसा ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रज़ाक ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम ने और उन्होंने ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने दोबारा फ़र्माया, तुम लोग विस्माल से बचो! अर्ज़ किया गया आप तो विस्माल करते हैं? इस पर आपने फ़र्माया कि रात में मुझे मेरा रब खिलाता और वही मुझे पिलाता है। पस तुम उतनी ही मुशक़्त उठाओ जितनी तुम ताक़त रखते हो। (राजेज़: 1965)

١٩٦٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِيَّاكُمْ وَالْوَصَالَ)) مَرَّتَيْنِ. قِيلَ: إِنَّكَ تُوَاصِلُ. قَالَ: ((إِنِّي أَبِيتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِي، فَكُلُّوْا مِنَ الْعَمَلِ مَا تُطِيقُوْنَ)).

[راجع: ١٩٦٥]

## बाब 50 : सेहरी तक विस्माल का रोज़ा रखना

### ٥٠- بَابُ الْوِصَالِ إِلَى السَّحَرِ

दरहकीक़त ये तै का रोज़ा नहीं मगर मिजाज़न इसको विस्माल या' नी तै का रोज़ा कहते हैं क्योंकि तै का रोज़ा ये है कि दिन की तरह सारी रात न कुछ खाए न कुछ पीये। बाब के जेल में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, अयजवा जुहू व क़द तक्रहम अन्नहू क़ौलु अहमद व ताइफ़तिम्मिन अस्हाबिल हदीषि व तक्रहम तौजीहुहू व अन्न मिनश्शाफ़िइयति मन क़ाल अन्नहू लैस बिबिसालिन हकीक़तिन इबारत का मफ़हूम ऊपर बयान किया जा चुका है।

1967. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ इब्ने अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन हाद ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना कि आप फ़र्मा रहे थे, सौमे विस्माल न रखो। और अगर किसी का इरादा ही विस्माल का हो तो सेहरी के वक़्त तक विस्माल कर ले। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप तो विस्माल करते हैं। आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। रात के वक़्त एक मुझे खिलाने वाला मुझे खिलाता है और एक पिलाने वाला मुझे पिलाता है। (राजेज़: 1963)

١٩٦٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ هَزْمَةَ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ خَبَّابٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَا تُوَاصِلُوا، فَإِيَّاكُمْ أَرَادَ أَنْ يُوَاصِلَ فَلْيُوَاصِلْ حَتَّى السَّحَرِ))، قَالُوا: لِإِنَّكَ تُوَاصِلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: ((لَسْتُ كَهَيْئَتِكُمْ، إِنِّي أَبِيتُ لِي مُطْعِمٌ يُطْعِمُنِي وَمَاقٍ يَسْقِينِي)).

[راجع: ١٩٦٣]

बाब 51 : किसी ने अपने भाई को नफ़ली रोज़ा तोड़ने के लिये क़सम दी और उसने रोज़ा तोड़ दिया तो तोड़ने वाले पर क़ज़ा वाजिब नहीं है जबकि रोज़ा न रखना उसको मुनासिब हो

### ٥١- بَابُ مَنْ أَقْسَمَ عَلَى أَخِيهِ لِيُفْطِرَ لِي الطَّوْعَ، وَلَمْ يَرَوْا عَلَيْهِ قَضَاءً إِذَا كَانَ أَوْفَقَ لَهُ

इससे ये निकलता है कि अगर बिला वजह नफ़ल रोज़ा क़स्दन तोड़ डाले तो उस पर क़ज़ा लाज़िम होगी। इस मसले में इलमा का इख़्तिलाफ़ है। शाफ़िइया कहते हैं अगर नफ़ल रोज़ा तोड़ डाले तो उसकी क़ज़ा मुस्तहब है उज़्र से तोड़े या बिना उज़्र के।

हनाबिला और जुम्हूर भी उसी के काइल हैं। हनफ़िया के नज़दीक हर हाल में कज़ा वाजिब है और मालिकिया कहते हैं कि जब अमदन (जान-बूझकर) बिला उज़्र तोड़ डाले तो कज़ा लाज़िम होगी। इमाम बुखारी (रह.) का मसलक ज़ाहिर है और उसी को तरजीह हासिल है।

1968. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे जा'फ़र बिन औन ने बयान किया, उनसे अबुल इमैस इब्ना बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे औन बिन अबी जुहैफ़ा ने और उनसे उनके वालिद (वहब बिन अब्दुल्लाह रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सलमान और अबू दर्दा (रज़ि.) में (हिज़रत के बाद) भाईचारा कराया था। एक बार सलमान (रज़ि.) अबू दर्दा (रज़ि.) से मुलाक़ात करने के लिये गए। तो (उनकी औरत) उम्मे दर्दा (रज़ि.) को बहुत फटे-पुराने हाल में देखा। उनसे पूछा कि ये हालत क्यों बना रखी है? उम्मे दर्दा (रज़ि.) ने जवाब दिया कि तुम्हारे भाई अबू दर्दा (रज़ि.) हैं जिनको दुनिया की कोई हज़ात ही नहीं है। फिर अबू दर्दा (रज़ि.) आ गये और उनके सामने खाना हाज़िर किया और कहा कि खाना खाओ, उन्होंने कहा कि मैं तो रोज़े से हूँ, उस पर हज़रत सलमान (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं भी उस वक़्त तक खाना नहीं खाऊँगा जब तक तुम खुद भी शरीक न होओगे। राबी ने बयान किया कि फिर वो खाने में शरीक हो गए। (और रोज़ा तोड़ दिया) रात हुई तो अबू दर्दा (रज़ि.) इबादत के लिये उठे और इस बार भी सलमान (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अभी सो जाओ। फिर जब रात का आखिरी हिस्सा हुआ तो सलमान (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अच्छा अब उठ जाओ। चुनौचे दोनों ने नमाज़ पढ़ी। उसके बाद सलमान (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम्हारे रब का भी तुम पर हक़ है। जान का भी तुम पर हक़ है। और तुम्हारी बीबी का भी तुम पर हक़ है। इसलिये हर हक़ वाले के हक़ को अदा करना चाहिए। फिर आप नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) से इसका तज़क़िरा किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सलमान (रज़ि.) ने सच कहा। (दीगर मक़ाम : 6139)

**तशरीह :** इबादते इलाही के बारे में कुछ ग़लत तसव्वुरात अदयाने आलम में पहले ही से पाए जाते रहे हैं। उन ही ग़लत तसव्वुरात की इस्लाह के लिये पैग़म्बरे आज़म (ﷺ) तशरीफ़ लाए। इब्तिदाए इस्लाम में कुछ सद्दाबा भी ऐसे तसव्वुरात रखते थे। जिनमें से एक हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) भी थे कि नफ़्सकशी (आत्म-संयम) इस तरीक़े से करते कि जाइज़ हाज़ात भी छोड़ दी। यहाँ तक कि रात को आराम करना भी छोड़ देने और दिन में हमेशा रोज़े से रहने ही को इबादत समझा और इन्हीं को अल्लाह की रज़ामन्दी का ज़रिया माना। हज़रत सलमान (रज़ि.) ने उनके इस तसव्वुर की अमलन इस्लाह की और बतलाया कि हर साहिबे हक़ का हक़ अदा करना ये भी इबादते इलाही में दाख़िल है। बीबी के हक़ अदा करना जिसमें

۱۹۶۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ قَالٍ بِشَارٍ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْمُتَمِّسِ عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جَحْفَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((أَخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ سَلْمَانَ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ، فَوَازَ سَلْمَانُ أَبَا الدَّرْدَاءِ، فَرَأَى أُمَّ الدَّرْدَاءِ مُتَبَدِّلَةً فَقَالَ لَهَا: مَا شَأْنُكِ؟ قَالَتْ: أَخَوْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ لَيْسَ لَهُ حَاجَةٌ فِي الدُّنْيَا. فَجَاءَ أَبُو الدَّرْدَاءِ فَصَنَعَ لَهُ طَعَامًا فَقَالَ: كُلْ، قَالَ: فَإِنِّي صَائِمٌ، قَالَ: مَا أَنَا بِأَكِلٍ حَتَّى تَأْكُلَ. قَالَ: فَأَكَلَ. فَلَمَّا كَانَ اللَّيْلُ ذَهَبَ أَبُو الدَّرْدَاءِ يَقُومُ، قَالَ: نَمْ، فَنَامَ. ثُمَّ ذَهَبَ يَقُومُ، فَقَالَ نَمْ. فَلَمَّا كَانَ مِنَ آخِرِ اللَّيْلِ قَالَ سَلْمَانُ: أُمِّ الْآنَ، فَصَلِّ. فَقَالَ لَهُ سَلْمَانُ: إِنَّ لِرَبِّكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلِنَفْسِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلِلْمَلِكِ عَلَيْكَ حَقًّا، فَأَعْطِ كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ. فَاتَى النَّبِيُّ ﷺ فَلَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ سَلْمَانُ)).

[أطرافه في : ۶۱۳۹].

उससे जिमाअ करना भी दाखिल है। और रात में आराम करना और दिन में मुतवातिर (लगातार) नफ़्ल रोज़ों की जगह खाना-पीना ये सब उमूर दाखिले इबादत हैं। इन हर दो बुजुर्ग सहाबियों का जब ये वाक़िया नबी करीम (ﷺ) तक पहुँचा तो आपने हज़रत सलमान (रज़ि.) की ताईद फ़र्माई और बतलाया कि इबादते इलाही का हकीकी तसव्वुर यही है कि हुकूकुल्लाह के साथ साथ हुकूकुल इबाद बल्कि हुकूके नफ़्स भी अदा किये जाएँ।

## बाब 52 : माहे शाबान में रोज़े रखने का बयान

1969. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें अबुन नज़्र ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नफ़्ल रोज़ा रखने लगते तो हम (आपस में) कहते कि अब आप (ﷺ) रोज़ा रखना छोड़ेंगे ही नहीं। और जब रोज़ा छोड़ देते तो हम कहते कि अब आप रोज़ा रखेंगे ही नहीं। मैंने रमज़ान को छोड़कर रसूलुल्लाह (ﷺ) को कभी पूरे महीने का नफ़ली रोज़ा रखते नहीं देखता और जितने रोज़े आप शाबान में रखते मैंने किसी महीने में उससे ज़्यादा रोज़े रखते आपको नहीं देखा। (दीगर मक़ाम : 1970, 6465)

शाबान की वजह तस्मिया हाफ़िज़ साहब के लफ़्ज़ों में ये है, लितशउब्बिहिम फ़ी तलबिल मियाहि औ फ़िल गाराति बअद अंध्यइरुज शहरु रजबुल हराम (फ़तह) या'नी अहले अरब इस महीने में पानी की तलाश में मुतफ़रि़क हो जाया करते थे। या माहे रजब के ख़ातिमे पर जिसमें अहले अरब क़त्ल व ग़ारत वग़ैरह से बिलकुल रुक जाया करते थे, इस माह में वो ऐसे मौक़ों की फिर तलाश करते। इसीलिये इस माह को उन्होंने शाबान से मौसूम किया।

1970. हमसे मुआज़ बिन फुज़ाला ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे यहा़ ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) शाबान से ज़्यादा और किसी महीने में रोज़े नहीं रखते थे, शाबान के पूरे दिनों में आप (ﷺ) रोज़े से रहते। आप (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि अमल वही इख़्तियार करो जिसकी तुममें ताक़त हो क्योंकि अल्लाह तआला (प्रवाब देने से) नहीं थकता। तुम खुद ही उकता जाओगे। नबी करीम (ﷺ) उस नमाज़ को सबसे ज़्यादा पसन्द करते थे जिस पर हमेशगी इख़्तियार की जाए ख़ाह कम ही क्यों न हो। चुनाँचे औ हज़रत (ﷺ) जब कोई नमाज़ शुरू करते तो उसे हमेशा पढ़ते थे। (राजेअ : 1969)

## ۵۲- بَابُ صَوْمِ شَعْبَانَ

۱۹۶۹- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَصُومُ حَتَّى يَقُولَ لَا يُفْطِرُ، وَيُفْطِرُ حَتَّى يَقُولَ لَا يَصُومُ، لَمَّا رَأَيْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اسْتَكْمَلَ صِيَامَ شَهْرِ إِلَّا رَمَضَانَ، وَمَا رَأَيْتُهُ أَكْثَرَ صِيَامًا مِنْهُ فِي شَعْبَانَ)).

[طرفاء ب : ۱۹۷۰، ۶۴۶۵].

۱۹۷۰- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ لَعْنَالَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا حَدَّثَتْهُ قَالَتْ: ((لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ يَصُومُ شَهْرًا أَكْثَرَ مِنْ شَعْبَانَ، لِإِنَّهُ كَانَ يَصُومُ شَعْبَانَ كُلَّهُ، وَكَانَ يَقُولُ: ((غُلُّوا مِنْ الْعَمَلِ مَا تُطِيقُونَ، فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَمَلُ حَتَّى تَمَلُّوا)).

وَأَحَبُّ الصَّلَاةِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مَا دُوومَ عَلَيْهِ وَإِنْ قُلْتُ. وَكَانَ إِذَا صَلَّى صَلَاةً دَاوَمَ عَلَيْهَا. [راجع : ۱۹۶۹]

**तशरीह:** अगरचे और महीनों में भी आप नफ़ल रोज़े रखा करते थे मगर शाबान में ज्यादा रोज़े रखते क्योंकि शाबान में बन्दों के आमाल अल्लाह की तरफ़ उठाए जाते हैं। निसाई की रिवायत में ये मज़मून मौजूद है। (वहीदी) वल्लाहु आलामा

### बाब 53 : नबी करीम (ﷺ) के रोज़े रखने और न रखने का बयान

1971. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिशर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रमज़ान के सिवा नबी करीम (ﷺ) ने कभी पूरे महीने के रोज़े नहीं रखे। आप (ﷺ) नफ़ल रोज़ा रखने लगते तो देखने वाला कह उठता कि अल्लाह की क़सम! अब आप बे रोज़ा नहीं रहेंगे। और उसी तरह जब नफ़ल रोज़ा छोड़ देते तो कहने वाला कहता कि वल्लाह! अब आप (ﷺ) रोज़ा नहीं रखेंगे।

1972. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना। आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी महीने में बे रोज़ा के रहते तो हमें ख़याल होता कि इस महीने में आप रोज़ा नहीं रखेंगे। इसी तरह किसी महीने में नफ़ल रोज़े रखने लगते तो हम ख़याल करते कि अब इस महीने का एक दिन भी बे रोज़े के नहीं गुज़रेगा। जो जब भी चाहता आँहज़रत (ﷺ) को रात में नमाज़ पढ़ते देख सकता था और जब भी चाहता सोता हुआ भी देख सकता था। सुलैमान ने हुमैद तवील से यँू बयान किया कि उन्होंने अनस (रज़ि.) से रोज़े के बारे में पूछा था।

1973. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमको अबू ख़ालिद अहमर ने ख़बर दी, कहा कि हमको हुमैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) के रोज़ों के बारे में पूछा। आपने फ़र्माया कि जब भी मेरा दिल करता कि आपको रोज़े से देखूँ तो मैं आपको रोज़े से ही देखता। और बग़ैर रोज़े के चाहता तो बग़ैर रोज़े से ही देखता। रात में खड़े (नमाज़ पढ़ते) देखना चाहता तो उसी तरह नमाज़ पढ़ते देखता

### ٥٣- بَابُ مَا يُذَكَّرُ مِنْ صَوْمِ النَّبِيِّ ﷺ وَإِفْطَارِهِ

١٩٧١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَيِّدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : ((مَا صَامَ النَّبِيُّ ﷺ شَهْرًا كَامِلًا قَطُّ غَيْرَ رَمَضَانَ، وَتَصُومُ حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ : لَا وَاللَّهِ لَا يَفْطُرُ، وَتَفْطُرُ حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ : لَا وَاللَّهِ لَا يَصُومُ)).

١٩٧٢- حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَفْطِرُ مِنَ الشَّهْرِ حَتَّى نَظُنَّ أَنْ لَا يَصُومَ مِنْهُ، وَتَصُومُ حَتَّى نَظُنَّ أَنْ لَا يَفْطِرُ مِنْهُ شَيْئًا. وَكَانَ لَا تَشَاءُ تَرَاهُ مِنَ اللَّيْلِ مُصَلِّيًا إِلَّا رَأَيْتَهُ، وَلَا نَابِمَا إِلَّا رَأَيْتَهُ)). وَقَالَ سَلِيمَانُ عَنْ حُمَيْدٍ أَنَّهُ سَأَلَ أَنَسًا فِي الصَّوْمِ.

١٩٧٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو خَالِدٍ الْأَحْمَرُ قَالَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ صِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا كُنْتُ أَحِبُّ أَنْ أَرَاهُ مِنَ الشَّهْرِ صَائِمًا إِلَّا رَأَيْتَهُ، وَلَا مُفْطِرًا إِلَّا رَأَيْتَهُ، وَلَا مِنَ اللَّيْلِ قَائِمًا إِلَّا رَأَيْتَهُ،

और सोते हुए देखना चाहता तो उसी तरह देखता। मैंने नबी करीम (ﷺ) के मुबारक हाथों से ज्यादा नरम व नाजुक रेशम के कपड़ों को भी नहीं देखा। और न मुश्क व अबीर को आपकी खुश्बू से ज्यादा खुश्बूदार पाया।

(राजेअ: 1141)

وَلَا نَالِمًا إِلَّا رَأَيْتُهُ، وَلَا مَسِسْتُ خَزَةَ وَلَا خَزِيرَةَ أَلَيْنَ مِنْ كَفِّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَلَا شَمِئْتُ مِسْكَةً وَلَا غَبِيرَةَ أَطْيَبَ رَائِحَةً مِنْ رَائِحَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

[راجع: 1141]

मतलब ये है कि आप (ﷺ) कभी अक्वले रात में इबादत करते, कभी बीच रात में, कभी आखिर रात में। उसी तरह आप (ﷺ) का आराम फर्माना भी मुख्तलिफ़ वक़्तों में होता रहता। इसी तरह आप (ﷺ) का नफ़ल रोज़ा भी था। शुरू और बीच और आखिर महीने में हर दिनों में रखते। तो हर शाख़्स जो आपको रोज़ेदार या रात को इबादत करते या सोते देखना चाहता बिला वक़्त देख लेता। ये सब कुछ उम्मत की ता'लीम के लिये था ताकि मुसलमान हर हाल में अपने अल्लाह पाक को याद रखें और हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद दोनों को अदायगी को अपने लिये लाज़िम करार दे लें।

### बाब 54 : मेहमान की खातिर से नफ़ल रोज़ा न रखना या तोड़ डालना

1974. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि हमको हारून बिन इस्माईल ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अली ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (राज़ि.) ने बयान किया, आपने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए। फिर उन्होंने पूरी हदीष बयान की, या'नी तुम्हारे मुलाक़ातियों का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है। इस पर मैंने पूछा, और दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा कैसा था? तो आपने फ़र्माया कि एक दिन रोज़ा रखना और एक दिन बेरोज़ा रहना सौमे दाऊदी है। (राजेअ: 1131)

मा'लूम हुआ कि नफ़ल रोज़ा से ज्यादा मूजिबे प्रवाब ये अमर है कि मेहमान के साथ खाए-पिये, उसकी तवाज़ो करने के ख़याल से खुद नफ़ल रोज़ा तर्क कर दे कि मेहमान का एक खुसूसी हक़ है। दूसरी हदीष में फ़र्माया कि जो शाख़्स अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो उसका ये फ़र्ज़ है कि अपने मेहमान का इकराम करे।

### बाब 55 : रोज़े में जिस्म का हक़

1975. हमसे इब्ने मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमको औज़ाई ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी क़सीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू सलमान बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन अमर बिन

٥٤ - بَابُ حَقِّ الصَّيْفِ فِي الصَّوْمِ  
١٩٧٤ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَعَلَ عَلِيُّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، فَذَكَرَ الْحَدِيثَ، يَقْنِي: ((إِنْ لَزَوْنَا عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنْ لَزَوْنَاكَ عَلَيْكَ حَقًّا)). فَقُلْتُ: وَمَا صَوْمُ دَاوُدَ؟ قَالَ: ((يَعْنِي الدُّفْرَ)). [راجع: 1131]

١٩٧٥ - حَدَّثَنَا ابْنُ مَقْلَبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنِي



आप्त (रज़ि.) ने बयान किया, कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अब्दुल्लाह! क्या ये ख़बर सहीह है कि तुम दिन में रोज़ा रखते हो और सारी रात नमाज़ पढ़ते हो? मैंने कहा कि सहीह है या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने फ़र्माया कि ऐसा न कर, रोज़ा भी रख और बे रोज़ा के भी रह। नमाज़ भी पढ़ और सोओ भी क्योंकि तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी बीबी का भी तुम पर हक़ है और तुमसे मुलाकात करनेवालों का भी तुम पर हक़ है। बस यही काफ़ी है कि हर महीने में तीन दिन रोज़ा रख लिया करो, क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलेगा और इस तरह ये सारी उम्र का रोज़ा हो जाएगा लेकिन मैंने अपने पर सख़्ती चाही तो मुझ पर सख़्ती कर दी गई। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं अपने में कुव्वत पाता हूँ। इस पर आपने फ़र्माया कि फिर अल्लाह के नबी दाऊद अलैहिस्सलाम की तरह रोज़ा रख और उससे आगे न बढ़। मैंने पूछा अल्लाह के नबी दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा क्या था? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन बे रोज़ा रहा करते थे। अब्दुल्लाह (रज़ि.) बाद में ज़ईफ़ हो गए तो कहा करते थे, काश! मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की दी हुई रुख़सत मान लेता।

(राजेअ: 1131)

عَنْدَ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «يَا عَبْدَ اللَّهِ، أَلَمْ أَخْبِرْ أَنَّكَ تَصُومُ النَّهَارَ وَتَقُومُ اللَّيْلَ»)) فَقُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: ((فَلَا تَفْعَلْ، صُمِّ وَأَفْطِرْ، وَلَمْ وَنَمْ، فَإِنَّ لِبَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنْ لَعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنْ لِرُؤُوسِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنْ لِرُؤُوسِكَ عَلَيْكَ حَقًّا. وَإِنْ بَحْسَبِكَ أَنْ تَصُومَ كُلَّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، فَإِنَّ لَكَ بِكُلِّ حَسَنَةٍ عَشْرَ أَثْمَالِهَا، فَإِنَّ ذَلِكَ صِيَامُ الدَّهْرِ كُلِّهِ. فَشَدَّدْتُ فَشَدَّدْتُ عَلَيَّ. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِنِّي أَجِدُ قُوَّةً، قَالَ: ((فَصُمْ صِيَامَ نَبِيِّ اللَّهِ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَلَا تَزِدْ عَلَيْهِ)). فَقُلْتُ: وَمَا كَانَ صِيَامَ نَبِيِّ اللَّهِ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ؟ قَالَ: ((نِصْفَ الدَّهْرِ)). فَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ يَقُولُ بَعْدَ مَا كَبُرَ: يَا لَيْتَنِي قَبِلْتُ رَخَصَةَ النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: 1131]

**तशरीह:** इस हदीष में पिछले मज़मून की मज़ीद वज़ाहत है। फिर उन लोगों के लिये जो इबादत में ज़्यादा से ज़्यादा इंहिमाक के ख़वाहिशमन्द हों उनके लिये दाऊद अलैहिस्सलाम के रोज़े को बतौर मिषाल बयान किया और तर्गीब दिलाई कि ऐसे लोगों के लिये मुनासिब है कि झौमे दाऊदी की इज़्तिदा करें और उस म्यानारवी (बीच के रास्ते) से प्रवाबे इबादत हासिल करें।

**बाब 56 : हमेशा रोज़ा रखना (जिसको सौमुदहर कहते हैं)**

٥٦- بَابُ صَوْمِ الدَّهْرِ

शाफ़िया के नज़दीक ये मुस्तहब है। एक हदीष में है जिसने हमेशा रोज़ा रखा उस पर दोज़ख़ तंग हो जाएगी या'नी वो उसमें जा ही नहीं सकता। उसको इमाम अहमद और निसाई और इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने हिब्बान और बैहकी ने निकाला। कुछ ने हमेशा रोज़ा रखना मकरूह जाना है क्योंकि ऐसा करने से नफ़्स आदी हो जाता है और रोज़े की तकलीफ़ बाक़ी नहीं रहती। कुछ उलमा ने हदीषे मज़कूर को वर्ड के या'नी में समझा है कि हमेशा रोज़ा रखने वाला दोज़खी होगा। फ़तहूल बारी में एक ऐसे शख़्स का ज़िक्र भी है जो हमेशा रोज़ा रखता था। देखने वालों ने कहा कि अगर अज़हाबे मुहम्मद (ﷺ) का ज़माना होता और वो उसे देखते तो उसे संगसार कर देते क्योंकि उसने सराहतन फ़र्माने नबवी (ﷺ) की मुखालफ़त की है।

1976. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको

١٩٧٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ

शुआब ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने खबर दी कि अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तक मेरी ये बात पहुँचाई गई कि अल्लाह की कसम! जिन्दगी भर मैं दिन में तो रोज़े रखूँगा और सारी रात इबादत करूँगा। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज किया कि, मेरे माँ-बाप कुर्बान हो आप (ﷺ) पर, हाँ, मैंने ये कहा है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन तेरे अंदर उसकी ताक़त नहीं, इसलिये रोज़ा भी रख और बेरोज़ा भी रह। इबादत भी कर लेकिन सोओ भी और महीने में तीन दिन के रोज़े रखा कर। नेकियों का बदला दस गुना मिलता है। इस तरह ये सारी उम्र का रोज़ा हो जाएगा। मैंने कहा कि मैं इससे भी ज़्यादा ताक़त रखता हूँ, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखाकर और दो दिन के लिये रोज़े छोड़ दिया कर। मैंने फिर कहा कि मैं इससे भी ज़्यादा ताक़त रखता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा एक दिन रोज़ा रख और एक दिन बे रोज़े के रह कि दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा ऐसा ही था और रोज़े का ये सबसे अफ़ज़ल तरीक़ा है। मैंने अब भी वही कहा कि मुझे उससे भी ज़्यादा ताक़त है लेकिन इस बार आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उससे अफ़ज़ल कोई रोज़ा नहीं है।

(राजेअ: 1131)

**बाब 57 : रोज़े में बीवी और बाल-बच्चों का हक़, उसको अबू जुहैफ़ा वहब बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है**

1977. हमसे अमर बिन अली ने बयान किया, कहा कि हमको अबू आसिम ने खबर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्होंने अता से सुना, उन्हें अबू अब्बास शायर ने खबर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि मैं मुसलसल रोज़े रखता हूँ और सारी रात इबादत करता हूँ। अब या आँहुज़ूर (ﷺ) ने किसी को मेरे पास भेजा या खुद मैंने आपसे मुलाक़ात की। आपने पूछा क्या ये खबर सही है कि तूलगातार रोज़े रखता है और एक भी नहीं छोड़ता। और (रात भर) नमाज़

عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو قَالَ: أَخْبَرَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنِّي أَقُولُ: وَاللَّهِ لَأَصُومَنَّ النَّهَارَ وَلَأَقُومَنَّ اللَّيْلَ مَا عِشْتُ، فَقُلْتُ لَهُ: قَدْ قُلْتَ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي. قَالَ: ((لَإِنَّكَ لَا تَسْتَطِيعُ ذَلِكَ، فَصُمْ وَأَفْطِرْ، وَكُنْ وَمَنْ وَصُمْ مِنَ الشَّهْرِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ الْحَسَنَةَ بِعَشْرِ أَثْنَالَيْهَا، وَذَلِكَ بِغُلِّ صِيَامِ النَّفْسِ)) قُلْتُ: إِنِّي أَطِيقُ الْفَضْلَ مِنْ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمَيْنِ)).

قُلْتُ إِنِّي أَطِيقُ الْفَضْلَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمًا، فَذَلِكَ صِيَامُ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ، وَهُوَ الْفَضْلُ الصَّيَّامُ)). فَقُلْتُ: إِنِّي أَطِيقُ الْفَضْلَ مِنْ ذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا الْفَضْلَ مِنْ ذَلِكَ)).

[راجع: 1131]

57- بَابُ حَقِّ الْأَهْلِ فِي الصَّوْمِ،

رَوَاهُ أَبُو جَعْفَرٍ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ

1977- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو حَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ سَمِعْتُ عَطَاءَ بْنَ أَبِي الْعَبَّاسِ الشَّاعِرَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: بَلَغَ النَّبِيُّ ﷺ أَنِّي أَسْرُدُ الصَّوْمَ، وَأَصَلِّي اللَّيْلَ فَإِنَّمَا أَرْسَلَ إِلَيَّ وَإِنَّمَا لَقِيتُهُ فَقَالَ: ((أَلَمْ أَخْبَرَ أَنَّكَ تَصُومُ وَلَا

पढ़ता रहता है? रोज़ा भी रख और बेरोज़े के भी रह, इबादत भी कर और सोओ भी क्यों कि तेरी आँख का भी तुझ पर हक़ है, तेरी जान का भी तुझ पर हक़ है। और तेरी बीवी का भी तुझ पर हक़ है। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि मुझमें उससे ज़्यादा की ताक़त है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर दाऊद अलैहिस्सलाम की तरह रोज़ा रखा करो। उन्होंने कहा और वो किस तरह? फ़र्माया कि दाऊद अलैहिस्सलाम एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन का रोज़ा छोड़ दिया करते थे। जब दुश्मन से मुकाबला होता तो पीठ नहीं फेरते थे। इस पर अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अज़र्ज किया, ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! मेरे लिये कैसे मुम्किन है कि मैं पीठ फेर जाऊँ। अता ने कहा कि मुझे याद नहीं (इस हदीष में) सौमुहहर का किस तरह ज़िक्र हुआ। (अल्बत्ता उन्हें इतना याद था कि) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, जो सौमुहहर रखता है उसका रोज़ा ही नहीं, दो बार (आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया)।

**तशरीह:** इससे उन लोगों ने दलील ली है जिन्होंने सदा रोज़ा रखना मकरूह जाना है। इब्ने अरबी ने कहा जब आँहज़रत (ﷺ) ने सदा रोज़ा रखने वाले की निस्बत ये फ़र्माया कि उसने रोज़ा नहीं रखा तो अब उसको प्रवाब की क्या तवक्क़ल है। कुछ ने कहा इस हदीष में सदा रोज़ा रखने से ये मुराद है कि ईदन और अय्यामे तशरीक में भी इफ़्तार न करे। उसकी कराहियत और हुर्मत में तो किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। अगर उन दिनों में कोई इफ़्तार करे और बाक़ी दिनों में रोज़े रखे बशर्तकि अपनी और अपने अहलो-अयाल के हुक्क़ में कोई ख़लल वाक़ेअ न हो तो ज़ाहिर है कि मकरूह न होगा। मगर हर हाल में बेहतर यही है कि सौमे दाऊद अलैहिस्सलाम रखे या'नी एक दिन रोज़ा और एक दिन बेरोज़ा। तफ़सीले मज़ीद के लिये फ़तहूल बारी का मुतालआ किया जाए।

एक रिवायत में ला म़ाम वला फ़त्तर के लफ़ज़ आए हैं कि जिसने हमेशा रोज़ा रखा गोया उसको न रोज़े का प्रवाब मिला न उस पर गुनाह हुआ क्योंकि इस तरह करने से उसका नफ़्स आदी हो गया।

## बाब 58 : एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ़्तार का बयान

1978. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुगीरह ने बयान किया कि मैं ने मुजाहिद से सुना और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, महीना में सिर्फ़ तीन दिन के रोज़े रखो। उन्होंने कहा कि मुझ में इससे भी ज़्यादा ताक़त है। इसी तरह वो बराबर कहते रहे (कि मुझमें इससे भी ज़्यादा ताक़त है) यहाँ तक कि आँहज़रत

تَطِيرُ، وَتُصَلِّي وَلَا تَأْمُ، فَصُمُّوهُ وَالْفِطْرُ وَفَمُّ  
وَنَمُّ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ حَطَأٌ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ  
وَأَهْلُكَ عَلَيْكَ حَطَأٌ)). قَالَ : إِنِّي لَأَقْوَى  
لِلذِّكْرِ. قَالَ : ((فَصُمُّوهُ مِثْلَ دَاوُدَ عَلَيْهِ  
السَّلَامُ)). قَالَ : وَكَيْفَ؟ قَالَ : ((كَأَنَّ  
يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا وَلَا يَقْرُ إِذَا  
لَاقَى)). قَالَ : مَنْ لِي بِهِدِيهِ، يَا نَبِيَّاهُ)).  
قَالَ عَطَاءٌ : لَا أَذْرِي. كَيْفَ ذَكَرَ صِيَامَ  
الْأَبْدِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((لَا صَامَ مَنْ صَامَ  
الْأَبْدَ مَرَّتَيْنِ)). (راجع: 1131)

٥٨- بَابُ صَوْمِ يَوْمٍ وَإِفْطَارِ يَوْمٍ  
١٩٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُعِينَةَ  
قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاعِدًا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ  
عَمْرٍو وَصِيٍّ لَهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ  
قَالَ : ((صُمُّوهُ مِنَ الشَّهْرِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ)). قَالَ:  
أَطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ، فَمَا زَالَ حَتَّى قَالَ:  
((صُمُّ يَوْمًا وَافْطِرْ يَوْمًا)). فَقَالَ: ((اقْرَأْ

(ﷺ) ने फ़र्माया, एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन का रोज़ा छोड़ दो। आप (ﷺ) ने उनसे ये भी फ़र्माया कि महीना में एक कुआँन मजीद ख़त्म करो। उन्होंने इस पर भी कहा कि मैं इससे भी ज़्यादा ताक़त रखता हूँ। और बराबर यही कहते रहे। यहाँ तक कि आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीन दिन में (एक कुआँन ख़त्म किया कर)। (राजेअ: 1131)

**तशरीह:** इमाम मुस्लिम की रिवायत में यूँ है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक महीने में एक ख़त्म कुआँन का किया कर। मैंने कहा कि मुझमें इससे भी ज़्यादा ताक़त है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा बीस दिन में ख़त्म किया कर, मैंने कहा कि मुझमें इससे ज़्यादा ताक़त है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा दस दिन में ख़त्म किया कर। मैंने कहा मुझमें इससे ज़्यादा ताक़त है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा सात दिन में ख़त्म किया कर और उससे ज़्यादा मत पढ़। (या'नी सात दिन से कम में ख़त्म न कर।) इसीलिये अक़्बर इलमा ने सात दिन से कम में कुआँन का ख़त्म करना मक़रूह रखा है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा मैंने बैतुल मुक़द्दस में एक बूढ़े को देखा जिसको अबुताहिर कहते थे वो रात में कुआँन के आठ ख़त्म किया करते थे वग़ैरह वग़ैरह। मुतर्जिम कहता है ये ख़िलाफ़े सुन्नत है। इम्दह यही है कि कुआँन मजीद को समझ समझकर चालीस दिन में ख़त्म करना चाहिए इतिहा ये है कि तीन दिन में ख़त्म हो। उससे कम में जो कुआँन ख़त्म करेगा गोया उसने घास काटी है इल्ला माशाअल्लाह।

### बाब 59 : हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा

1979. हमसे आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे हबीब बिन अबी घाबित ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू अब्बास मक्की से सुना, वो शायर थे लेकिन रिवायते हदीष में उनका कोई इत्तेहाम नहीं था। उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मुझे इससे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तू लगातार रोज़े रखता है और रात भर इबादत करता है? मैंने हाँ में जवाब दिया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तू यूँ ही करता रहा तो आँखें धंस जाएँगी और तू बेहद कमज़ोर हो जाएगा ये कोई रोज़ा नहीं कि कोई ज़िन्दगी भर (बिला नागा हर रोज़) रोज़ा रखो। तीन दिन का (हर महीने में) रोज़ा पूरी ज़िन्दगी के रोज़े के बराबर है। मैंने इस पर कहा कि मुझे इससे ज़्यादा की ताक़त है। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखा कर, आप एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन बेरोज़ा रहते थे और जब दुश्मन का सामना होता तो पीठ नहीं दिखलाते थे।

(राजेअ: 1131)

الْقُرْآنَ فِي كُلِّ شَهْرٍ)) قَالَ: إِنِّي أُطِيقُ أَكْثَرَ، لَمَّا زَالَ حَتَّى قَالَ: ((لِي ثَلَاثٌ)).

[راجع: ١١٣١]

٥٩- بَابُ صَوْمِ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ

١٩٧٩- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

قَالَ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ:

سَمِعْتُ أَبَا الْعَاصِي الْمَكِّيَّ - وَكَانَ

شَاعِرًا، وَكَانَ لَا يُتَمُّ فِي حَدِيثِهِ - قَالَ:

سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو بْنَ الْعَاصِي

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ

ﷺ: ((إِنَّكَ تَصُومُ الذَّهْرَ وَتَقُومُ اللَّيْلَ))

فَقُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: ((إِنَّكَ إِذَا فَعَلْتَ ذَلِكَ

خَفَعْتَ لَهُ الْعَيْنَ وَنَفَيْتَ لَهُ النَّفْسَ، لَا

صَامَ مَنْ صَامَ الذَّهْرَ، صَوْمٌ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ

صَوْمُ الذَّهْرِ كُلِّهِ)). قُلْتُ: فَإِنِّي أُطِيقُ

أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: ((فَصُمْ صَوْمَ دَاوُدَ

عَلَيْهِ السَّلَامُ: كَانَ يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ

يَوْمًا، وَلَا يَغْرُ إِذَا لَاقَى)).

[راجع: ١١٣١]

**तशरीह:**

शायर मुबालगा (बढ़ा-चढ़ाकर कहने) के आदी होते हैं जो एहतियातन प्रकाश के मनाफ़ी है, इसलिये अबू अब्बास मक्की के बारे में ये तौजीह की गई कि वो शायर होने के बावजूद इतिहाई शिक्का थे और उनके बारे में कोई इतिहाम न था, लिहाज़ा उनकी रिवायात सब क़ाबिले कुबूल हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं। वन क़लत्तिमिज़ी अन बअज़ि अहलिल इल्मि अन्नहू अशकुस्मियामि व यामनु मअ ज़ालिक ज़ालिबन मिन तप्स्वीतिल हुकूकि कमा तक्रहमतिल इशारतु अलैहि फ़ीम तक्रहम क़रीबन फ़ी हक्कि दाऊद वला ला शक्क अन्न सर्दस्मौमि यन्हिकुहू व अला ज़ालिक युहमलु महीहिन अन्हु अन्नहू क़ील लहू इन्नक लतकिल्लुस्मियाम फ़क़ाल इन्नी अखाफु अय्यज़अफ़नी अनिल किराति वल्किरातु अहब्बु इलय्य मिनस्मियाम यानि तिर्मिज़ी (रह.) ने कुछ से नक़ल किया है कि स्मियामे दाऊद अलैहिस्सलाम अगरचे मुश्किलतरीन रोज़ा है मगर उसमें हुकूके वाजिब के फ़ौत होने का डर नहीं जैसा कि पीछे दाऊद अलैहिस्सलाम के बारे में इशारा गुज़र चुका है कि उनकी शान ये बतलाई गई कि इस क़दर रोज़ा रखने के बावजूद वो जिहाद में दुश्मन से मुकाबले के वक़्त भागते नहीं थे। या'नी इस क़दर रोज़ा रखने के बावजूद उनके जिस्म में कोई कमज़ोरी न थी। हालाँकि इस तरह रोज़े रखना जिस्म को कमज़ोर कर देता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के क़ौल का भी यही मतलब है। उनसे कहा गया था कि आप नफ़ल रोज़ा कम रखते हैं तो उन्होंने फ़र्माया कि मुझे ख़तरा है कि कहीं मैं क़षरते सौम की वजह से इस क़दर कमज़ोर न हो जाऊँ कि मेरी क़िरअत का सिलसिला रुक जाए हालाँकि क़िरअत मेरे लिये रोज़े से भी ज़्यादा मेहबूब है। खुलासा ये है कि सौमे दाऊद अलैहिस्सलाम बेहतरीन रोज़ा है। जो लोग बक़रत रोज़ा रखने की ख़्वाहिशमन्द हों उनके लिये उन ही की इतिबाअ मुनासिब है।

1980. हमसे इस्हाक़ वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़ज़ाअ ने और उनसे अबू क़िलाबा ने कि मुझे अबू मलीह ने ख़बर दी, कहा कि मैं आपके वालिद के साथ अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उन्होंने हमसे बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को मेरे रोज़े के बारे में ख़बर हो गई (कि मैं मुसलसल रोज़े रखता हूँ) आप (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए और मैंने एक ग़दा आप (ﷺ) के लिये बिछा दिया। जिसमें ख़जूर की छाल भरी हुई थी लेकिन आँहज़रत ज़मीन पर बैठ गए और तकिया मेरे और आप (ﷺ) के बीच हो गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम्हारे लिये हरमहीने में तीन दिन के रोज़े काफ़ी नहीं हैं। उन्होंने कहा कि मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (कुछ और बढ़ा दीजिए) आपने फ़र्माया, अच्छा पाँच दिन के रोज़े (रख ले) मैंने अर्ज किया कि, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! और; आप (ﷺ) ने फ़र्माया चलो छः दिन, मैंने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (कुछ और बढ़ा दीजिए, मुझमें इससे भी ज़्यादा ताक़त है) आप (ﷺ) ने फ़र्माया! अच्छा नौ दिन, मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! कुछ और, फ़र्माया, अच्छा ग्यारह दिन। आख़िर आपने फ़र्माया कि दाऊद अलैहिस्सलाम के रोज़े के तरीक़े के सिवा और कोई तरीक़ा (शरीअत में) जाइज़ नहीं। या'नी ज़िन्दगी के आधे दिनों में एक

١٩٨٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو الْمَلِيحِ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ أَبِيكَ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو فَحَدَّثَنَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ذَكَرَ لَهُ صَوْمِي فَدَخَلَ عَلَيَّ، فَالْقَيْتُ لَهُ وَمِثْلَهُ مِنْ أَدَمَ حَشَوَهَا لَيْفَ، فَجَلَسَ عَلَى الْأَرْضِ وَصَارَتْ الْمِثْلَةُ بَيْنِي وَبَيْنَهُ، فَقَالَ: «أَمَا يَكْفِيكَ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ؟» قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ.. قَالَ: «(خَمْسًا)». قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ.. قَالَ: «(سِتًّا)». قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ.. قَالَ: «(سِتًّا)». قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ.. قَالَ: «(إِحْدَى عَشْرَةَ)». ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «لَا صَوْمَ فَوْقَ صَوْمِ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ: شَطْرَ النَّهْرِ، صَوْمَ يَوْمًا وَأَفْطَرَ يَوْمًا»۔ [راجع: ١١٢١]

दिन का रोज़ा रख और एक दिन का छोड़ दिया कर।

(राजेअ: 1131)

### बाब 60 : अय्यामे बीज़ के रोज़े या'नी तेरह, चौदह और पन्द्रह तारीखों के रोज़े रखना

1981. हमसे अबू मज़मर ने बयान किया, उनसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अबु तियाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू इम्रान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि मेरे ख़लील (ﷺ) ने मुझे हर महीने की तीन तारीखों में रोज़ा रखने की वसियत की थी। इसी तरह चाश्त की दो रकअतों की भी वसियत की थी और उसकी भी कि सोने से पहले ही मैं वित्र पढ़ लिया करूँ। (राजेअ: 1178)

٦٠- بَابُ صِيَامِ أَيَّامِ الْبَيْضِ :  
ثَلَاثَ عَشْرَةَ وَأَرْبَعَ عَشْرَةَ وَخَمْسَةَ عَشْرَةَ

١٩٨١- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَنْ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْفَاحِ قَالَ :  
حَدَّثَنِي أَبُو عُثْمَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((أَوْصَانِي خَلِيلِي ﷺ بِثَلَاثِ صِيَامٍ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَدَعَاَنِي الطَّحْطِ، وَأَوْصَى قَبْلَ أَنْ أَمُوتَ)).

[راجع: ١١٧٨]

**तशरीह:** यहाँ ये इश्काल होता है कि हदीष, बाब के तर्जुमे के मुवाफ़िक (अनुकूल) नहीं है क्योंकि हदीष में हर महीने में तीन रोज़े रखने का ज़िक्र है; अय्यामे बीज़ की कोई तख़सीस (विशिष्टता) नहीं है और उसका जवाब ये है कि इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक इस हदीष को दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा कर दिया, जिसे इमाम अहमद और निसाई और इब्ने हिब्वान ने मूसा बिन तलहा से निकाला, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से। उसमें यूँ है कि आपने एक अज़राबी से फ़र्माया जो भुना हुआ खरगोश लाया था, तू भी खा। उसने कहा मैं हर महीने तीन दिन रोज़े रखता हूँ। आपने फ़र्माया अगर तू ये रोज़े रखता है तो सफ़ेद दिनों में या'नी अय्यामे बीज़ में रखा कर। निसाई की एक रिवायत में अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) से यूँ है हर दस दिन में एक रोज़ा रखा कर और तिमिज़ी ने निकाला कि आप हफ़्ता और इतवार और पीर को रोज़ा रखा करते थे और एक रिवायत में मंगल, बुध और जुमेरात में है गर्ज़ आपका नफ़ली रोज़ा हमेशा के लिये किसी ख़ास दिन में मुअय्यन (निर्धारित) न था। मगर अय्यामे बीज़ के रोज़े मसनून हैं।

### बाब 61 : जो शख़्स किसी के यहाँ बतौर मेहमान मुलाक़ात के लिये गया और उनके यहाँ जाकर उसने अपना नफ़ली रोज़ा नहीं तोड़ा

1982. हमसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, कहा कि मुझसे ख़ालिद ने (जो हारिष के बेटे हैं) बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उम्मे सुलैम (रज़ि.) नामी एक औरत के यहाँ तशरीफ़ ले गए। उन्होंने आप (ﷺ) की ख़िदमत में खज़ूर और घी पेश किया। आप (ﷺ) ने

٦١- بَابُ مَنْ زَارَ قَوْمًا فَلَمْ يُفْطِرْ عَنْهُمْ

١٩٨٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ :

حَدَّثَنِي خَالِدٌ هُوَ ابْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أُمِّ سُلَيْمٍ، فَأَتَتْهُ بِمَنْزِلٍ وَسَمَنٍ، قَالَ : ((اعِينُوا سَمَنَكُمْ فِي سِقَاتِهِ

फ़र्माया, ये घी उसके बर्तन में रख दो और ये खजूरें भी उसके बर्तन में रख दो क्योंकि मैं तो रोज़े से हूँ। फिर आपने घर के एक किनारे खड़े होकर नफ़ल नमाज़ पढ़ी और उम्मे सुलैम (रज़ि.) और उनके घर वालों के लिये दुआ की, उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने अज़ा किया कि मेरा एक बच्चा लाडला भी तो है (उसके लिये भी तो दुआ कीजिए) फ़र्माया कि कौन है? उन्होंने कहा कि आप (ﷺ) का खादिम अनस (रज़ि.)। फिर आप (ﷺ) ने दुनिया और आख़िरत की कोई ख़ैरो-भलाई नहीं छोड़ी जिसकी उनके लिये दुआ न की हो। आपने दुआ में ये भी फ़र्माया, ऐ अल्लाह! इसे माल और औलाद अत्ता कर और इसके लिये बरकत अत्ता कर। (अनस रज़ि. का बयान था कि) चुनाँचे में अंसार में सबसे ज़्यादा मालदार हूँ और मुझसे मेरी बेटी उमैना ने बयान किया कि हज्जाज के बसरा आने तक मेरी सलबी औलाद में से तन्नरीबन एक सौ बीस दफ़न हो चुके थे। हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्हें यह्या ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे हुमैद ने बयान किया, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, नबी करीम (ﷺ) के हवाले से।

(दीगर मक़ाम : 6334, 6344, 6378, 6380)

وَتَمَرَكُم لِي وَغَايِهِ لِي صَاتِمٌ)). ثُمَّ قَامَ إِلَى نَاحِيَةٍ مِّنَ النَّبْتِ فَصَلَّى غَيْرَ الْمَكْتُوبَةِ، قَدْغَا لَأُمِّ سَلِيمٍ وَأَهْلِ بَيْتِهَا. فَقَالَتْ أُمُّ سَلِيمٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِنَّ لِي خُوَيْصَّةً، قَالَ: ((مَا هِيَ؟)) قَالَتْ: خَادِمَتُكَ أَنَسٌ. لَمَّا تَرَكَهَا خَيْرَ آخِرَةٍ وَلَا دُنْيَا إِلَّا دَغَا بِهِ: اللَّهُمَّ ارْزُقْهُ مَالًا وَوَلَدًا، وَتَارِكَ لَهُ)). فَإِنِّي لَمِنَ أَكْثَرِ الْأَنْصَارِ مَالًا. وَخَدَّتْنِي ابْنَتِي أُمْنَةُ أَنَّهُ قَالَ ذَلِكِ لِيَصْلِي مَقْدَمَ حِجَابِ الْبَصْرَةِ بِضَعٍ وَعِشْرُونَ وَمِائَةً)). خَدَّتْنَا ابْنُ أَبِي مَرْثَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى قَالَ: خَدَّتْنِي حُمَيْدٌ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[أطرافه في : ٦٣٣٤، ٦٣٤٤، ٦٣٧٨]

[٦٣٨٠]

**तशरीह:** पिछली हदीष में हज्जाज का ज़िक्र है जो बसरा में 75 हिजरी में आया था। उस वक़्त हज़रत अनस (रज़ि.) की उम्र कुछ ऊपर अस्सी बरस की थी, 93 हिजरी के करीब आपका इतिक़ाल हो गया। एक सौ साल के करीब उनकी उम्र हुई। ये सब औहज़रत (ﷺ) की दुआ की बरकत थी। एक रिवायत में है कि उन्होंने ख़ास अपनी सलबी के 125 बच्चे दफ़न किये फिर दीगर लवाहिक्कीन (मरने वालों) का अंदाज़ा करना चाहिए। इस हदीष से मक़सदे बाब यूँ प्राबित हुआ कि आप (ﷺ) उम्मे सुलैम (रज़ि.) के घर रोज़े की हालत में तशरीफ़ ले गए और आप (ﷺ) ने उनके यहाँ खाना वापस कर दिया और रोज़ा नहीं तोड़ा। प्राबित हुआ कि कोई शख्स ऐसा भी करे तो जाइज़ व दुरुस्त है बल्कि सुन्नते नबवी (ﷺ) है। ये सब हालात पर मुन्हसिर (आधारित) है। कुछ मवाक़ेअ ऐसे भी आ सकते हैं कि वहाँ रोज़ा खोल देना जाइज़ है, कुछ ऐसे कि रखना भी जाइज़ है। ये हर शख्स के खुद दिल में फ़ैसला करने और हालात को समझने की बातें हैं। इन्नमल् आमालु बिन्नियात।

## बाब 62 : महीने के आख़िर में रोज़ा रखना

1983. हमसे सुलत बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे महदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ग़ीलान ने (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे महदी बिन मैमून ने, उनसे ग़ीलान बिन जरीर ने, उनसे मुतरफ़ ने, उनसे इमरान बिन

## ٦٢- بَابُ الصَّوْمِ آخِرَ الشَّهْرِ

١٩٨٣- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ عَنْ غِيلَانَ ح. وَحَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ قَالَ حَدَّثَنَا غِيلَانُ بْنُ جَرِيرٍ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنْ

हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सवाल किया या (मुतरफ़ ने ये कहा कि) सवाल तो किसी और ने किया था लेकिन वो सुन रहे थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अबू फ़ल्लाँ! क्या तुमने इस महीने के आख़िर के रोज़े रखे? अबू नोअमान ने कहा मेरा ख़याल है कि रावी ने कहा कि आपकी मुराद रमज़ान से थी। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह) कहते हैं कि श़ाबित ने बयान किया, उनसे मुतरफ़ ने, उनसे इमरान (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (रमज़ान के आख़िर के बजाय) शाबान का लफ़ज़ बयान किया (यही महीह है)।

عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ سَأَلَهُ - أَوْ سَأَلَ رَجُلًا وَعِمْرَانُ يَسْمَعُ - فَقَالَ: يَا أَبَا فَلَانٍ أَمَا صُنْتَ سَرَرََ هَذَا الشَّهْرِ؟ قَالَ: أَطْعُهُ فَإِنْ يَغْنِي رَمَضَانَ، قَالَ الرَّجُلُ: لَا، يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: ((لَإِذَا أَفْطَرْتُ لَعَنُكُمْ يَوْمَئِذٍ))، ثُمَّ يَقُلُ الصَّلَاتُ: أَطْعُهُ يَغْنِي رَمَضَانَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَقَالَ ثَابِتٌ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنْ عِمْرَانَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ سَرَرََ شَعْبَانَ)).

**तशरीह:** क्योंकि रमज़ान में तो सारे महीने हर कोई रोज़े रखता है। कुछ ने सरर का तर्जुमा महीने का शुरू किया है, कुछ ने महीने का बीच, कुछ ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख्स से डाँट के तौर पर ऐसा फ़र्माया कि तूने शाबान के आख़िर में तो रोज़े नहीं रखे क्योंकि दूसरी हदीष में आप (ﷺ) ने रमज़ान का इस्तिफ़ाल करने से मना किया है। मगर उसमें ये इश्काल होता है कि अगर ये पूरी करने का हुक्म दिया इस तरह की शब्दाल में उसकी क़ज़ा कर ले। कुछ ने कहा अगर कोई शाबान के आख़िर में रमज़ान के इस्तिफ़ाल की निय्यत से रोज़ा रखे तो ये मकरूह है लेकिन अगर इस्तिफ़ाल की निय्यत न हो तो कोई क़बाहत नहीं है। मगर एक हदीष में शाबान के निस्फ़ (आधे) व आख़िर में रोज़े रखने की मुमानअत भी वारिद हुई है ताकि रमज़ान के लिये जुअफ़ (कमज़ोरी) लाहक़ न हो।

### बाब 63 : जुम्अे के दिन रोज़ा रखना, अगर

किसी ने ख़ाली एक जुम्आ के दिन रोज़ा की

निय्यत की तो उसे तोड़ डाले

### ٦٣- بَابُ صَوْمِ يَوْمِ الْجُمُعَةِ،

لَإِذَا اصْتَبَحَ صَائِمًا يَوْمَ الْجُمُعَةِ لَعَلَّهِ أَنْ يَفْطَرَ

1984. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अब्दुल हमीद बिन जुबैर ने और उनसे मुहम्मद बिन अब्बाद ने कि मैंने जाबिर (रज़ि.) से पूछा, क्या नबी करीम (ﷺ) ने जुम्आ के दिन रोज़ा रखने से मना किया है? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ! अबू आसिम के अलावा रावियों ने ये इज़ाफ़ा किया है कि ख़ाली (एक जुम्आ ही के दिन) रोज़ा रखने से आप (ﷺ) ने मना किया।

١٩٨٤- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَبْدِ الْخَمِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عُبَادٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ صَوْمِ يَوْمِ الْجُمُعَةِ؟ قَالَ: نَعَمْ)) زَادَ غَيْرُ أَبِي عَاصِمٍ ((أَنْ يَنْفَرِدَ بِصَوْمٍ)).

**तशरीह:** इस बाब में हज़रत इमाम ने तीन हदीष नक़ल की हैं। पहली दो हदीषों में कुछ-कुछ इज्माल है मगर तीसरी हदीष में पूरी तफ़सील मौजूद है, जिससे ज़ाहिर है कि जुम्आ के रोज़े के लिये ज़रूरी है कि उससे एक दिन पहले या एक



दिन बाद भी रोज़ा रखा जाए। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मज़ीद तपसील यूँ है, ला तख़ुस्सू लैलतल जुम्अति बिक्रियामिम्बैनिल्लियाली व ला तख़ुस्सू यौमल जुम्अति मिम्बैनल अय्यामि इल्ला अय्यकून फ़ी सौमिन यसूमुहु अहदुकुम या'नी जुम्आ की रात को इबादत के लिये ख़ास न करो और न दिन को रोज़े के लिये। हाँ अगर किसी का कोई नज़्र वगैरह का रोज़ा जुम्आ के दिन आ जाए, जिसका रखना उसके लिये ज़रूरी हो तो ये अलग बात है। वो रोज़ा रखा जा सकता है। कमय्यसूमु अय्यामल बीज़ि औ मन लहु आदतुन बिस्मौमि यौमिन मुअय्यनिन कयौमि अरफ़त फ़वाफ़क़ यौमल जुम्अति व यूखज़ु मिन्हु जवाज़ु सौमिही लिमन नज़र यौम कुदूमि जैदिन मय़लन औ शिफ़ाउ फ़ुलानिन (फ़तह) या'नी किसी का कोई रोज़ा अय्यामे बीज़ का हो या अरफ़ा का या किसी नज़्र का जुम्आ में पड़ जाए तो फिर जुम्आ का रोज़ा रखना जाइज़ है।

1985. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन शियाब ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई भी शख्स जुम्आ के दिन उस वक़्त तक रोज़ा न रखे जब तक उससे एक दिन पहले या एक दिन बाद रोज़ा न रखता हो।

**तशरीह:** मतलब ये है कि कुछ लोगों की जो आदत होती है कि हफ़्ता में एक दो दिन रोज़ा रखते हैं। जैसे कोई पीर जुमेरात को रोज़ा रखता है, कोई पीर मंगल को, कोई जुमेरात-जुम्आ को तो ये तख़सीस आँहज़रत (ﷺ) से प्राबित नहीं है। इब्ने तय्यिन ने कहा कुछ ने इसी वजह से ऐसी तख़सीस को मकरूह रखा है। लेकिन अरफ़ा के दिन और आशूरा और अय्यामे बीज़ की तख़सीस तो खुद हदीष से प्राबित है। हाफ़िज़ ने कहा अनेक अहदीष में ये वारिद है कि आप (ﷺ) सोमवार और जुमेरात को रोज़ा रखा करते थे। मगर शायद इमाम बुखारी (रह.) ने नज़दीक वो हदीषें सहीह नहीं हैं। हालाँकि अबू दाऊद और तिर्मिज़ी और निसाई ने निकाला और इब्ने हिब्वान ने उसको सहीह कहा। हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि आँहज़रत (ﷺ) क़स्द करके सोमवार और जुमेरात को रोज़ा रखते और निसाई और अबू दाऊद ने निकाला, इब्ने ख़ुज़ैमा ने उसको सहीह कहा, उसामा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को देखा आप (ﷺ) सोमवार और जुमेरात को रोज़ा रखते। मैंने उसका सबब पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इस दिन आमाल पेश किये जाते हैं तो मैं चाहता हूँ कि मेरा अमल उस वक़्त उठाया जाए जब मैं रोज़े से हूँ।

1986. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, (दूसरी हदीष) और इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबू अय्यूब ने और उनसे जुवेरिया बिनते हारिष (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उनके यहाँ जुम्आ के दिन तशरीफ़ ले गए, (इत्तिफ़ाक़ से) वो रोज़े से थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर पूछा क्या कल के दिन भी तू ने रोज़ा रखा था? उन्होंने जवाब दिया कि नहीं। फिर आप (ﷺ) ने पूछा कि क्या आइन्दा कल रोज़ा रखने का इरादा है? जवाब दिया कि नहीं। आप (ﷺ)

١٩٨٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَا يَصُومُنَ أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَّا يَوْمًا قَبْلَهُ أَوْ بَعْدَهُ)).

١٩٨٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ. ح. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَادَةَ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ عَنْ جُوَيْرِيَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَهِيَ صَائِمَةٌ فَقَالَ: (أَصُمْتُ أَمْسِي؟) قَالَتْ: لَا. قَالَ: ((فَتَبَيَّنَ أَنَّ تَصُومِينَ غَدًا؟)) قَالَتْ: لَا. قَالَ: ((فَأَفْطَرِي؟))

ने फ़र्माया कि फिर रोज़ा तोड़ दो। हम्माद बिन ज़अद ने बयान किया कि उन्होंने क़तादा से सुना, उनसे अबू अय्यूब ने बयान किया और उनसे जुबैरिया (रज़ि.) ने बयान किया कि आहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया और उन्होंने रोज़ा तोड़ दिया।

وَقَالَ حَمَادُ بْنُ الْجَعْفَرِ سَمِعَ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو أَيُّوبَ: ((أَنَّ جُؤَيْرِيَةَ حَدَّثَتْهُ فَأَمَرَهَا فَأَلْطَرَتْ)).

हाकिम वगैरह में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मफूअन रिवायत है, यौमुल्जुम्अति यौमु ईदिन फ़ला तजअलु यौम ईदिकुम यौम सियामिकुम इल्ला अन तसूमू कब्लहु औ बअदहु या'नी जुम्अे का दिन तुम्हारे लिये ईद का दिन है पस अपने ईद के दिन को रोज़ा रखने का दिन न बनाओ, मगर ये कि तुम उससे आगे या पीछे एक रोज़ा और रख लो। इब्ने अबी शैबा ने हज़रत अली (रज़ि.) से नक़ल किया कि जुम्अे के दिन रोज़ा न रखो ये दिन तुम्हारे लिये इबादते इलाही और खाने-पीने का दिन है। बज़हबल्जुम्हूरु इला अन्न नह्य फ़ीहि लिन्नज़ीहि (फ़तह) या'नी जुम्हूर का क़ौल है कि जुम्अे का दिन रोज़ा की नह्य (इन्कार) तन्ज़ीह के लिये है, हुर्मत के लिये नहीं है; या'नी बेहतर है कि उस दिन रोज़ा न खा जाए।

#### बाब 64 : रोज़े के लिये कोई दिन मुक़रर करना

٦٤ - بَابُ هَلْ يَحُصُّ شَيْئًا مِنَ الْأَيَّامِ؟

1987. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे मन्सूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अलक्रमा ने, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (रोज़ा वगैरह इबादात के लिये) कुछ दिन ख़ास तौर पर मुक़रर कर रखे थे? उन्होंने कहा कि नहीं। बल्कि आपके हर अमल में हमेशगी होती थी और दूसरा कौन है जो रसूलुल्लाह (ﷺ) जितनी त्ताक़त रखता हो? (दीगर मक़ाम : 6466)

١٩٨٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ ((قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا: هَلْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَحُصُّ مِنَ الْأَيَّامِ شَيْئًا؟ قَالَتْ: لَا، كَانَ عَمَلَةً دِيَّةً، وَأَيُّكُمْ يُطِيقُ مَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُطِيقُ؟)). [طرف في : ٦٤٦٦].

जिन अय्याम के रोज़ों के बारे में अह्दादीष वारिद हुई हैं जैसे यौमे अरफ़ा यौमे आशूरा वगैरह इससे मुस्ताज़ना (अलग) हैं।

#### बाब 65 : अरफ़ा के दिन रोज़ा रखना

٦٥ - بَابُ صَوْمِ يَوْمِ عَرَفَةَ

1988. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, कि मुझसे सालिम ने बयान किया, कहा कि मुझसे उम्मे फ़ज़ल (रज़ि.) के माला इमैर ने बयान किया, और उनसे उम्मे फ़ज़ल (रज़ि.) ने बयान किया। (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें इमर बिन अब्दुल्लाह के गुलाम अबू नज़ ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के गुलाम इमैर ने और उन्हें उम्मे फ़ज़ल बिनते हारिष (रज़ि.) ने कि उनके यहाँ कुछ लोग अरफ़ात के

١٩٨٨ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ مَالِكٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ مَوْلَى أُمِّ الْفَضْلِ أَنَّ أُمَّ الْفَضْلِ حَدَّثَتْهُ. ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الْفَضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عُمَرَ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْمُبَارِ عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ ((أَنَّ نَاسًا تَمَارَوْا عِنْدَنَا يَوْمَ

दिन नबी करीम (ﷺ) के रोज़े के बारे में झगड़ रहे थे। कुछ ने कहा कि आप (ﷺ) रोज़े से हैं और कुछ ने कहा कि रोज़े से नहीं हैं। इस पर उम्मे फ़ज़ल (रज़ि.) ने आप (ﷺ) की ख़िदमत में दूध का एक प्याला भेजा (ताकि हकीक़त हाल मा'लूम कर सके) आप अपने ऊँट पर सवार थे, आपने दूध पी लिया। (राजेअ: 1657)

अबू नुऐम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि आप खुत्बा सुना रहे थे और ये हज्जतुल विदाअ का वाक़िया था जैसा कि अगली हदीष में मज़कूर है।

1989. हमसे यह्या बिन सुलमान ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, (या उनके सामने हदीष की क़िरअत की गई)। कहा कि मुझको अमर ने ख़बर दी, उन्हें बुक़ैर ने, उन्हें कुरैब ने और उन्हें मैमूना (रज़ि.) ने कि अरफ़ा के दिन कुछ लोगों को आँहज़रत (ﷺ) के रोज़े के बारे में शक हुआ। इसलिये उन्होंने आपकी ख़िदमत में दूध भेजा। आप उस वक़्त अरफ़ात में वकूफ़ कर रहे थे। आपने वो दूध पी लिया और सब लोग देख रहे थे।

عَرَفَةَ فِي صَوْمِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: هُوَ صَائِمٌ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَيْسَ بِصَائِمٍ. فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ بِقَدَحٍ لَبَنٍ وَهُوَ وَقِفٌ عَلَى بَعِيرِهِ فَشَرِبَهُ. (راجع: 1658)

1989 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهَبٍ - أَوْ قُرَيْءٌ عَلَيْهِ - قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ كُرَيْبٍ عَنْ مَيْمُونَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا. ((أَنَّ النَّاسَ شَكَوْا فِي صِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَارْسَلْتُ إِلَيْهِ بِحَلَابٍ وَهُوَ وَقِفٌ فِي الْمَوْقِفِ. فَشَرِبَ مِنْهُ وَالنَّاسُ يَنْظُرُونَ)).

**तशरीह:** अब्दुल्लाह बिन वहब ने खुद ये हदीष यह्या को सुनाई या अब्दुल्लाह बिन वहब के शागिर्दों ने उनको सुनाई। दोनों तरह हदीष की रिवायत सहीह है।

इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब में उन हदीषों का जिक्र नहीं किया जिनमें अरफ़ा के रोज़े की तर्ज़ीब है, जबकि वो हदीष बयान की जिससे अरफ़ा में आपका इफ़्तार करना ग़ाबित है क्योंकि वो हदीषें उनकी शर्त के मुवाफ़िक़ सहीह न होंगी। हालाँकि इमाम मुस्लिम ने अबू क़तादा से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अरफ़ा का रोज़ा एक बरस आगे और एक बरस पीछे के गुनाहों का कफ़ारा हो जाता है और कुछ ने कहा, अरफ़ा का रोज़ा हाजी को नहीं रखना चाहिए। इस ख़याल से कि कहीं जुअफ़ (कमज़ोरी) न हो जाए और हज्ज के अमल बजा लाने में ख़लल वाक़ेअ हो और इस तरह बाब की अहादीष और उन अहादीष में तत्बीक़ हो जाती है। (वहीदी)

## बाब 66 : ईदुल फ़ित्र के दिन रोज़ा रखना

## ٦٦ - بَابُ صَوْمِ يَوْمِ الْفِطْرِ

ये बिल इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) मना है। मगर इख़ितलाफ़ उसमें है कि अगर किसी ने एक रोज़े की मन्नत मानी और इत्तिफ़ाक़ से वो मन्नत ईद के दिन आ पड़ी; मग़लन किसी ने कहा जिस दिन ज़ैद आए उस दिन मैं एक रोज़े की मन्नत अल्लाह के लिये मान रहा हूँ और ज़ैद ईद के दिन आया तो ये नज़्र सहीह होगी या नहीं? हन्फ़िया ने कहा सहीह होगी और उस पर क़ज़ा लाज़िम होगी और जुम्हूर इलमा के नज़दीक़ ये नज़्र सहीह ही न होगी।

1990. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अज़हर के गुलाम अबू इब्बैद ने बयान किया कि ईद के दिन मैं इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर था। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ये दो दिन ऐसे हैं जिनके रोज़ों की आँहज़रत (ﷺ) ने मुमानअत फ़र्माई है।

1990 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَبِيِّ شِهَابٍ عَنْ أَبِي عُمَيْرٍ مَوْلَى ابْنِ أَزْهَرَ قَالَ: ((شَهِدْتُ الْعِيَةَ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: ((هَذَانِ يَوْمَانِ نَهَى رَسُولُ

(रमज़ान के) रोज़ों के बाद इफ़्तार का दिन (ईदुल फ़ितर) और दूसरा वो दिन जिसमें तुम अपनी कुर्बानी का गोشت खाते हो (या'नी ईदुल अज़हा का दिन)

(दीगर मक़ाम : 5571)

اللّٰهُ عَنْ صِيَامِهِمَا : يَوْمٌ لِّفِطْرِكُمْ مِنْ صِيَامِكُمْ، وَالْيَوْمَ الْآخِرُ تَأْكُلُونَ فِيهِ مِنْ نُسُكِكُمْ)). [طرفه بي : ٥٥٧١].

**तशरीह :** कुछ नुस्खों में उसके बाद इतनी इबारत ज़्यादा है, क़ाल अबू अब्दिल्लाहि क़ाल इब्नु उययना मन क़ाल मौला इब्नि अज़हर फ़क़द असाब व मन क़ाल मौला अब्दिरहमान इब्नि औफ़ फ़क़द असाब या'नी इमाम बुखारी (रह.) ने कहा सुफ़यान बिन उययना ने कहा, जिसने अबू अब्दुल्लाह को इब्ने अज़हर का गुलाम कहा उसने भी ठीक कहा, और जिसने अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) का गुलाम कहा उसने भी ठीक कहा। उसकी वजह ये है कि इब्ने अज़हर और अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) दोनों उस गुलाम में शरीक थे। कुछ ने कहा दर हकीकत वो अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के गुलाम थे। मगर इब्ने अज़हर की ख़िदमत में रहा करते थे तो एक के हकीकतन गुलाम हुए दूसरे के मिजाज़न। (वहीदी)

1991. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन यज़्ज़ा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल फ़ितर और कुर्बानी के दिनों के रोज़ों की मुमानअत की थी। और एक कपड़ा सारे बदन पर लपेट लेने से और एक कपड़े में गोठ मारकर बैठने से।

(राजेअ : 367)

١٩٩١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ صَوْمِ يَوْمِ الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ، وَعَنِ الصَّوْمِ، وَأَنْ يَحْتَبِيَ الرَّجُلُ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ)).

[راجع : ٣٦٧]

1992. और सुबह और अम्र के बाद नमाज़ पढ़ने से।

(राजेअ : 576)

١٩٩٢- وَعَنْ صَلَاحٍ بَعْدَ الصُّبْحِ وَالْمَصْرِ. [راجع : ٥٨٦]

**बाब 67 : ईदुल अज़हा के दिन का रोज़ा रखना**

1993. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मुझे अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने अता बिन मीनाअ से सुना, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से ये हदीष नक़ल करते थे कि आपने फ़र्माया, आँहज़रत (ﷺ) ने दो रोज़े और दो किस्म की ख़रीद व फ़रोख़्त से मना किया है। ईदुल फ़ितर और ईदुल अज़हा के रोज़े से और मुलामसत और मुनाबज़त के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त करने से। (राजेअ : 367)

٦٧- بَابُ الصَّوْمِ يَوْمَ النَّحْرِ ١٩٩٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ مِينَاءَ قَالَ: سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى عَنْ صِيَامَيْنِ وَتَبَعَيْنِ: الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ، وَالْمَلَأَسَةِ وَالْمُنَابَذَةِ)).

[راجع : ٣٦٨]

या'नी बायअ (बेचने वाला) मुश्तरी (ख़रीदने वाला) का या मुश्तरी-बायअ का; कपड़ा या बदन हुए तो बैअ (सौदा) लाज़िम हो जाए, इस शर्त पर बैअ करना, या बायअ या मुश्तरी कोई चीज़ दूसरे की तरफ़ फेंक मारे तो बैअ लाज़िम हो जाए ये बैअ मुनाबज़ा है जो मना है।

1994. हमसे मुहम्मद बिन मुसना ने बयान किया कहा कि हमसे मुआज़ बिन मुआज़ अम्बरी ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन औन ने खबर दी, उनसे ज़ियाद बिन जुबैर ने बयान किया कि एक शख्स इब्ने उमर (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि एक शख्स ने एक दिन के रोज़े की नज़्र मानी। फिर कहा कि मेरा खयाल है कि वो पीर का दिन है और इत्तिफ़ाक़ से वही ईद का दिन पड़ गया। इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआला ने तो नज़्र पूरी करने का हुक्म दिया है और नबी करीम (ﷺ) ने उस दिन रोज़ा रखने से (अल्लाह के हुक्म से) मना किया है। (गोया इब्ने उमर रज़ि. ने कोई क़द्री फैसला नहीं दिया) (दीगर मक़ाम : 6705, 6706)

**तशरीह :** अल्लामा इब्ने हज़र फ़रमते हैं, लम युफ़स्सिरिल्ईदु फ़ी हाज़िहि रियायति व मुक्ताज़ा इदखालिही हाज़ल हदीथु फ़ी तर्जुमति सौमि यौमिन्नहरि अय्यकूनल्मकुलु अन्हु यौमुन्नहरि व हुव मुसर्रहुन बिही फ़ी रियायति यज़ीद बिन ज़रीअ अल्मज़्ज़ूर व लफ़्ज़ु हू फ़वाफ़क़ यौमुन्नहरि या'नी इस रियायत में ईद की वज़ाहत नहीं है कि वो कौनसी ईद थी और यहाँ बाब का इत्तिफ़ाक़ इंदुल अज़हा है सो उसकी तशरीह यज़ीद बिन ज़ुरैअ की रियायत में मौजूद है, जिसमें ये है कि इत्तिफ़ाक़ से उस दिन कुर्बानी का दिन पड़ गया था। यज़ीद बिन ज़ुरैअ की रियायत में ये लफ़्ज़ वज़ाहत के साथ मौजूद है और ऐसा ही अहमद की रियायत में है जिसे उन्होंने इस्माईल बिन अलिया से, उन्होंने यूनुस से नक़ल किया है, पस प्राबित हो गया कि रियायत में यौमे ईद से इंदुल अज़हा यौमुन्नहरि (कुर्बानी का दिन) मुराद है।

1995. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन इमैर ने बयान किया, कहा कि मैंने क़ज़ाआ से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, आप नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह जिहादों में शरीक रहे थे। उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से चार बातें सुनी हैं जो मुझे बहुत ही पसन्द आईं। आपने फ़र्माया था कि कोई औरत दो दिन (या उससे ज़्यादा) के अंदाज़े का सफ़र उस वक़्त तक न करे जब तक उसके साथ उसका शौहर या कोई और महरम न हो। और इंदुल फ़िर और इंदुल अज़हा के दिनों में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं है। और सुबह की नमाज़ के बाद सूरज उगने तक और अस्त्र की नमाज़ के बाद सूरज डूबने तक कोई नमाज़ नहीं। और चौथी बात ये कि तीन मसाजिद के सिवा और किसी जगह के लिये शदे रिहास (सफ़र) न किया जाए मस्जिदे हराम मस्जिदे अक़सा और मेरी ये मस्जिद।

(राजेअ : 586)

١٩٩٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاذٌ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَرَبٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ جَبْرِ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ: رَجُلٌ نَزَرَ أَنْ يَصُومَ يَوْمًا قَالَ: أَظَنُّهُ قَالَ الْاِثْنَيْنِ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: أَمَرَ اللَّهُ بِوَقْفِهِ النَّاسَ، وَلَهُ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ صَوْمِ هَذَا الْيَوْمِ)). [طرقاه ١ : ١٧٠٠، ١٧٠٦]

١٩٩٥- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا الْمَلِكُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ قُرْظَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَكَانَ غَرَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَيْنَ حَشْرَةِ غُرُوفَةٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَرْثَا مِنْ النَّبِيِّ ﷺ فَأَعْبَتْنِي، قَالَ: ((لَا تُسَافِرِ الْمَرْأَةُ مَسِيرَةَ يَوْمَيْنِ إِلَّا وَمَعَهَا زَوْجُهَا أَوْ ذُو مَحْرَمٍ، وَلَا صَوْمٌ لِيَوْمَيْنِ: الْفِطْرِ وَالْأَضْحَى، وَلَا صَلَاةٌ بَعْدَ الصُّبْحِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ، وَلَا بَعْدَ الْغَمَسِ حَتَّى تَغْرُبَ، وَلَا تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلَّا إِلَى ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ: مَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَمَسْجِدِ الْأَقْصَى، وَمَسْجِدِي هَذَا)).

**तशरीह :**

बयानकर्दा तीनों चीजें बड़ी अहमियत रखती हैं। औरत का बगैर महरम के सफ़र करना ख़तरे से खाली नहीं और ईदैन के दिन खाने पीने के दिन हैं, उनमें रोज़ा बिलकुल ग़ैर मुनासिब है। इसी तरह नमाज़े फ़ज़ के बाद नमाज़े अस्त्र के बाद कोई नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए और तीन मसाजिद के सिवा किसी भी जगह के लिये तक्रूरब (नज़दीकी) हासिल करने की ग़र्ज़ से सफ़र करना शरीअत में क़त्अन नाजाइज़ है। ख़ास तौर पर आजकल क़ब्रों, मज़ारों की ज़ियारत के लिये नज़्रो-नियाज़ के तौर पर सफ़र किये जाते हैं, जो हूबहू बुतपरस्त क़ौमों की नक़ल है। शरीअते मुहम्मदिया में इस किस्म के कामों की हर्गिज़ गुंजाइश नहीं है। हदीष ला तशहूरिहाल की मुफ़सल तशरीह (विस्तृत व्याख्या) पीछे लिखी जा चुकी है।

हज़रत इमाम नववी (रह.) इस हदीष के ज़ेल में फ़र्माते हैं, फ़ीहि बयानु अज़मे फ़ज़ीलति हाज़िहिल मसाजिदिष़लाअति व मुजय्यनिहा अला ग़ैरिहा लिक्कौनिहा मसाजिदुल अंबियाइ सलातुल्लाहि व सलामुहू अलैहिम वल फ़ज़्लु अस्सलातु फ़ीहा व लौ नज़रज़हाब इलल मस्जिदिल हरामि लजिमहू क़स्दुहू लिहजिन औ इम्तिन व लौ नज़र इलल मस्जिदैनिल आख़िरैनि फ़क़ौलानि लिश़ाफ़िई असहूमा इन्द अस्हाबिही यस्तहिब्बु क़सदुहूमा व ला यजिबु व बिही क़ाल क़थीरुन मिनल इलमाइ व अम्मा बाक़िल मसाजिदि सिवष़लाअति फ़ला यजिबु क़सदुहा बिन्नज़ि व ला यन्अक्रिदु नज़र क़सदिहा हाज़ा मज़हबुना व मज़हबुल इलमाइ काफ़फ़तन इल्ला मुहम्मदुब्नुल मुसल्लमतिल मालिकी फ़क़ाल इज़ा नज़र क़स्द मस्जिदि कुबा लजिमहू क़स्दुहू लिअन्न नबिय्यु (ﷺ) कान यातीहि कुल्ल सब्तिन राकिबन व माशियन व क़ालल लैषुब्नु सअद यल्लिजमहू क़स्द ज़ालिकल मस्जिद अय मस्जिदु कान व अला मज़हबिल्लमाहीरिला यन्अक्रिदु नज़रु व ला यल्लिजमुहू शैउन व क़ाल अहमद यल्लिजमुहू शैउन व क़ाल अहमद कफ़फ़ारतु यमीन व ख़तलफ़ुल इलमाउ फ़ी शहिरीहालि व आमालिलमूति इला ग़ैरिलमसाजिदिष़लाअति क़ज़हाबि इला कुबूरिस्सालिहीन इलल मवाज़िल फ़ाज़िलति व नहव ज़ालिक फ़क़ालश़ैख़ु अबू मुहम्मद अल्जवैनी मिन अस्हाबिना हुव हरामुन व हुवल्लज़ी अशारल्लज़ी अयाज़ इला इख़ितयारीही

इमाम नववी (रह.) सहीह मुस्लिम की शरह लिखने वाले बुजुर्ग हैं। अपने दौर के बहुत ही बड़े आलिम फ़ाज़िल, हदीष व कुआन के माहिर और मुत्तदीन अहलुल्लाह शुमार किये गये हैं। आपकी मज़क़ूर इबारत का ख़ुलासा मतलब ये कि उन तीनों मसाजिद की फ़ज़ीलत और बुजुर्गी दीगर मसाजिद पर इस वजह से है कि उन मसाजिद की निस्बत कई बड़े-बड़े अंबिया अलैहिमुस्सलाम से है या इसलिये कि उनमें नमाज़ पढ़ना बहुत फ़ज़ीलत रखता है। अगर कोई हज़ या इमरह के लिये मस्जिदे हराम में जाने की नज़्र माने तो उसका पूरा करना उसके लिये लाज़िम होगा। और अगर दूसरी दो मसाजिद की तरफ़ जाने की नज़्र मानी तो इमाम शफ़िई (रह.) और उनके अस्हाब उस नज़्र को पूरा करना मुस्तहब जानते हैं न कि वाजिब और दूसरे इलमा उस नज़्र का पूरा करना भी वाजिब जानते हैं। और अक़सर इलमा का यही क़ौल है। इन तीनों मसाजिद के सिवा बाक़ी मसाजिद का नज़्र वग़ैरह के तौर पर क़स्द करना वाजिब नहीं बल्कि ऐसे क़स्द की नज़्र ही मुन्अक्रिद नहीं होती। ये हमारा और बेशतर इलमा का मज़हब है। मगर मुहम्मद बिन मुस्लिमा मालिकी कहते हैं कि मस्जिदे कुबा में जाने की नज़्र वाजिब हो जाती है क्योंकि नबी करीम (ﷺ) हर हफ़्ता पैदल व सवार होकर वहाँ जाया करते थे। और लैष बिन सअद ने हर मस्जिद के लिये ऐसी नज़्र और उसका पूरा करना ज़रूरी कहा है। लेकिन जुम्हूर के नज़दीक ऐसी नज़्र मुन्अक्रिद ही नहीं होती। और न उस पर कोई कफ़फ़ारा लाज़िम है। मगर इमाम अहमद (रह.) ने क़सम जैसा कफ़फ़ारा लाज़िम करार दिया है।

और मसाजिदे ष़लाआ के अलावा कुबूरे स़ालिहीन या ऐसे मक़ामात की तरफ़ पालाने सफ़र बाँधना इस बारे में इलमा ने इख़ितलाफ़ किया है। हमारे अस्हाब में से शैख़ अबू मुहम्मद जुवैनी ने इसे हराम करार दिया है और काज़ी अयाज़ का भी इशारा उसी तरफ़ है। और हदीषे नबवी जो यहाँ मज़क़ूर हुई है वो भी अपने मा'नी में जाहिर है कि ख़ुद नबी करीम (ﷺ) ने उन तीन मज़क़ूर मसाजिद के अलावा हर जगह के लिये बग़र्ज़ तक्रूरब इल्लाह पालाने सफ़र बाँधने से मना किया है। इस हदीष के होते हुए किसी का क़ौल क़ाबिले ए'तिबार नहीं। ख़्वाह वो काइल कसे बाशद।

मज़हबे मुहक़क़ यही है कि सफ़र का इरादा सिर्फ़ उन ही तीन मस्जिदों के साथ मरख़ूस है और किसी जगह के लिये ये जाइज़ नहीं। शदे रिहाल की तशरीह में ये दाख़िल है कि वो क़स्द तक्रूरबे इलाही के ख़याल से किया जाए।

कुबूरे स़ालिहीन के लिये सफ़र करना और वहाँ जाकर तक्रूरबे इलाही का अक़ीदा रखना ये बिलकुल ही बे दलील

अमल है और आजकल कुबूरे औलिया की तरफ़ शदे रिहाल तो बिलकुल ही बुतपरस्ती का चरबा है।

## बाब 68 : अय्यामे तशरीक़ के रोज़े रखना

## ٦٨- بَابُ صِيَامِ أَيَّامِ التَّشْرِيقِ

इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक राजेह यही है कि मुतमत्तेअ को अय्यामे तशरीक़ में रोज़ा रखना जाइज़ है और इब्ने मुज़िर ने जुबैर और अबू तलहा (रज़ि.) से मुतलक़न जवाज़ नक़ल किया है और हज़रत अली और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मुतलक़न मना मन्कूल है। और इमाम शाफ़िई और इमाम अबू हनीफ़ा का यही क़ौल है। और एक क़ौल इमाम शाफ़िई (रह.) का ये है कि उस मुतमत्तेअ के लिये दुरुस्त है जिसको कुर्बानी का मक्कदूर न हो। इमाम मालिक (रह.) का भी यही क़ौल है।

1996. अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) फ़र्माते हैं कि मुझे से मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे यहा बिन सईद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया कि मुझे मेरे बाप इर्वा ने ख़बर दी कि आइशा (रज़ि.) अय्यामे मिना (अय्यामे तशरीक़) के रोज़े रखती थीं और हिशाम के बाप (इर्वा) भी उन दिनों में रोज़ा रखते थे।

मिना में रहने के दिन वही हैं जिनको अय्यामे तशरीक़ कहते हैं या'नी 11, 12, 13 ज़िल्हिज के अय्याम।

1997, 98. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन ईसा से सुना, उन्होंने जुहरी से, उन्होंने इर्वा से, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से, (नीज़ जुहरी ने इस हदीष को) सालिम से भी सुना और उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से सुना। (आइशा और इब्ने उमर रज़ि.) दोनों ने बयान किया कि किसी को अय्यामे तशरीक़ में रोज़ा रखने की इजाज़त नहीं मगर उसके लिये जिसे कुर्बानी का मक्कदूर न हो।

١٩٩٦- وَقَالَ لِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ مِثْمَمٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي : «كَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَصُومُ أَيَّامَ مِنَى، وَكَانَ أَبُوهُ يَصُومُهَا».

١٩٩٧، ١٩٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ سَعِيدٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ، وَعَنْ سَالِمٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ، قَالَا : «لَمْ يُرَخَّصْ لِي أَيَّامُ التَّشْرِيقِ أَنْ يُصْمَنَ إِلَّا لِمَنْ لَمْ يَجِدِ الْهَدْيَ».

**तशरीह :** हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, अय्यामुतशरीकि अय अल्लअय्यामुल्लती बअद यौमिन्नहरि व क़द उख़्तुलिफ़ फ़ी कौनिहा यौमैनि औ फ़लाफ़तिन व सुम्पियत अय्यामुतशरीकि लिअन्न लुहूमल्अज़ाही तुशकु फ़ीहा अय तुन्शरूफ़िशम्पि या'नी अय्यामे तशरीक़ यौमुन्नहर दस ज़िल्हिज के बाद वाले दिनों को कहते हैं। जो दो हैं या तीन इस बारे में इख़ितलाफ़ है (मगर तीन होने को तरजीह हासिल है) और उनका नाम अय्यामे तशरीक़ इसलिये रखा गया कि उनमें कुर्बानियों का गोश्त सुखाने के लिये घूप में फैला दिया जाता था। वर्राजिहु इन्दल बुखारी जवाज़ुहा लिच्चमत्तुइ फ़इन्नहू ज़कर फिलबाबि हदीषय आइशत व इब्नि उमर फ़ी जवाज़ि ज़ालिक व लम यूरिद ग़ैरहू या'नी इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक हज्जे तमत्तेअ वाले के लिये (जिसको कुर्बानी का मक्कदूर न हो) उन अय्याम में रोज़ा रखना जाइज़ है, आपने बाब में हज़रत आइशा (रज़ि.) और इब्ने उमर (रज़ि.) की अह्दादीष ज़िक़ की हैं और कोई उनके ग़ैर हदीष न लाए। जिन अह्दादीष में मुमानअत आई है वो ग़ैर मुतमत्तेअ के हक़ में करार दी जा सकती हैं। और जवाज़ वाली हदीष मुतमत्तेअ के हक़ में जो कुर्बानी की त़ाक़त न रखता हो। इस तरह हर दो अह्दादीष में तत्बीक़ हो जाती है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) का फ़ैसला ये है। यतरज्जहुल क़ौलु बिल्जवाज़ि व इला हाज़ा जनहल्बुखारी (फ़तह) या'नी हज़रत इमाम बुखारी (रह.) जवाज़ के क़ाइल हैं और उसी क़ौल को तरजीह हासिल है।

इब्राहीम बिन सअद अन इब्ने शिहाब के अफ़र को इमाम शाफ़िई (रह.) ने वर्रल किया है। क़ाल अख़बरनी इब्राहीमुब्नु सअद अनिब्नि शिहाब अन इर्वत अन आइशत फिल्मत्तइ इज़ा लम यजिद हदयन लम यसुम क़व्वल

अरफ़त फ़ल्यसुम अय्याम मिना या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुतमत्तेअ अय्यामे तशरीक में रोज़ा रखे जिसको कुर्बानी का मक्दूर न हो।

अल्मुहदिषुल कबीर हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान (रह.) फ़र्माते हैं। व हम्लुल मुल्लकि अलल्मुकय्यदि वाजिबुन व कज़ा बिना उलआमि अलल्खासि कालशशौकानी व हाज़ा अक्वलमज़ाहिबि व अम्मल्काइलु बिल जवाज़ि मुल्लकन फ़अहादीषु जमीइहा तरहु अलैहि (तुहफ़तुल अहवज़ी) या'नी मुत लक़ का मुकय्यिद पर महमूल करना वाजिब है और उसी तरह आम को ख़ास पर बिना करना। इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं और ये क़वीतर (मज़बूत) मज़हब है। और जो लोग मुल्लक जवाज़ के काइल हैं पस जुम्ला अहादीष उनकी तर्दीद करती हैं।

1999. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जो हाजी हज़ और इमरह के दरम्यान तमत्तोअ करे उसी को यौमे अरफ़ा तक रोज़ा रखने की इजाज़त है। लेकिन अगर कुर्बानी का मक्दूर न हो। और न उसने रोज़ा रखा, तो अय्यामे मिना (अय्यामे तशरीक) में भी रोज़ा रखे और इब्ने शिहाब ने इर्वा से और उन्होंने आइशा (रज़ि.) ने इसी तरह रिवायत की है। इमाम मालिक (रह.) के साथ इस हदीष को इब्राहीम बिन सअद ने भी इब्ने शिहाब से रिवायत किया।

١٩٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((الصَّيَّامُ لِمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ إِلَى يَوْمِ عَرَفَةَ، فَإِنْ لَمْ يَجِدْ هَدْيًا وَلَمْ يَصُمْ صَامَ أَيَّامَ مِنًى)). وَعَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ مَوْلَى. تَابَعَهُ إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ.

बाब 69 : इस बारे में कि आशूरा के दिन का रोज़ा कैसा है?

٦٩ - بَابُ صِيَامِ يَوْمِ عَاشُورَاءَ

आशूरा मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को कहा जाता है, अवाइले इस्लाम (हमसे पहले वाली उम्मतों) में ये रोज़ा फ़र्ज़ था। जब रमज़ान का रोज़ा फ़र्ज़ हुआ तो इसकी फ़र्ज़ियत जाती रही सिर्फ़ सुनियत बाक़ी रह गई।

2000. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इमर बिन मुहम्मद ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने, और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आशूरा के दिन अगर कोई चाहे तो रोज़ा रख ले। (राजेअ: 1892)

٢٠٠٠ - حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِي رَجْحٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((يَوْمَ عَاشُورَاءَ إِنْ شَاءَ صَامَ)). [راجع: ١٨٩٢]

2001. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (शुरू इस्लाम में) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आशूरा का रोज़ा रखने का हुक्म दिया था। फिर जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हो गये तो जिसका दिल चाहता उस दिन रोज़ा रखता और जो चाहता नहीं रखता था।

٢٠٠١ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَمَرَ بِصِيَامِ يَوْمِ عَاشُورَاءَ، فَلَمَّا فُرِضَ رَمَضَانُ كَانَ مِنْ شَاءَ صَامَ وَمِنْ شَاءَ افْطَنَ)).



(राजेअ: 1592)

2002. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा कअम्बी ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने और उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आशूरा के दिन ज़माना जाहिलियत में कुरैश रोज़ा रखा करते थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) भी रखते। फिर जब आप (ﷺ) मदीना आए तो आप (ﷺ) ने यहाँ भी आशूरा के दिन का रोज़ा रखा और लोगों को भी हुक्म दिया। लेकिन रमज़ान की फ़र्ज़ियत के बाद आपने उसको छोड़ दिया और फ़र्माया कि अब जिसका जी चाहे इस दिन रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे। (राजेअ: 1592)

2003. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि उन्होंने मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से आशूरा के दिन मिम्वर पर सुना, उन्होंने कहा ऐ अहले मदीना! तुम्हारे इलमा किधर गए, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि ये आशूरा का दिन है। इसका रोज़ा तुम पर फ़र्ज़ नहीं है लेकिन मैं रोज़े से हूँ और अब जिसका जी चाहे रोज़े से रहे (और मेरी सुन्नत पर अमल करे) और जिसका जी चाहे न रहे।

शायद मुआविया (रह.) को ये ख़बर पहुँची हो कि मदीना वाले आशूरा का रोज़ा मकरूह जानते हैं या उसका एहतिमाम करते या उसको फ़र्ज़ समझते हैं, तो आपने मिम्वर पर ये तक्ररीर की। आपने ये हज्ज 44 हिजरी में किया था। ये उनकी ख़िलाफ़त का पहला हज्ज था और अख़ीर हज्ज उनका 57 हिजरी में हुआ था। हाफ़िज़ के ख़याल के मुताबिक़ ये तक्ररीर उनके आख़िरी हज्ज में थी।

2004. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन सईद बिन जुबैर ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना में तशरीफ़ लाए। (दूसरे साल) आप (ﷺ) ने यहूदियों को देखा कि वो आशूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। आप (ﷺ) ने उनसे इसका सबब मा'लूम किया तो

[راجع: 1092]

٢٠٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ جِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: «كَانَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ تَصُومُهُ قُرَيْشٌ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَصُومُهُ، فَلَمَّا قُبِمَ الْمَدِينَةَ صَامَهُ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ، فَلَمَّا فُرِضَ رَمَضَانُ تَرَكَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ، لَمَنْ شَاءَ صَامَهُ وَمَنْ شَاءَ تَرَكَهُ». [راجع: 1092]

ثابت ہوا کہ عاشرہ کا روزہ فرض نہیں ہے۔

٢٠٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِي سُفْيَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَوْمَ عَاشُورَاءَ غَمَّ حَجَّ عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُولُ: «يَا أَهْلَ الْمَدِينَةِ، إِنِّي عَلِمْتُكُمْ؟ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: هَذَا يَوْمَ عَاشُورَاءَ، وَلَمْ يَكْتُبِ اللَّهُ عَلَيْكُمْ صِيَامَهُ، وَأَنَا صَائِمٌ، لَمَنْ شَاءَ فَلْيَصُمْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُفِطْ».

٢٠٠٤- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ بْنُ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «لَقِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ فَرَأَى الْيَهُودَ تَصُومُ يَوْمَ

उन्होंने बताया कि ये एक अच्छा दिन है। इसी दिन अल्लाह ने बनी इस्राईल को उनके दुश्मन (फिरऔन) से नजात दिलाई थी। इसलिये मूसा अलैहिस्सलाम ने उस दिन का रोज़ा रखा था। आपने फ़र्माया फिर मूसा अलैहिस्सलाम के (खुशियों में शरीक होने में) हम तुमसे ज्यादा मुस्तहिक़ हैं। चुनौचे आप (ﷺ) ने उस दिन रोज़ा रखा और सहाबा (रज़ि.) को भी इसका हुक्म दिया। (दीगर मक़ाम: 3397, 3943, 4943, 4680, 4737)

عاشوراء فقال: ما هذا؟ قالوا: يوم صالح، هذا يوم نحيي الله نبي إسرائيل من غدوهم فصامه موسى، قال: فأتا أخو بموسى منكم، فصامه، وأمر بصيامه)).  
[طرافه (١): ٣٣٩٧، ٣٩٤٣، ٤٩٤٣، ٤٦٨٠، ٤٧٣٧].

मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है, अल्लाह का शुक्र करने के लिये हम भी रोज़ा रखते हैं। अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत में यूँ है उसी दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कशती जूदी पहाड़ पर ठहरी थी, तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उसके शुक्रिये में इस दिन रोज़ा रखा था।

2005. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे अबू उमैस ने, उनसे कैस बिन मुस्लिम ने, उनसे तारिक़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि आशूरा के दिन को यहूदी ईद का दिन समझते थे इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम भी इस दिन रोज़ा रखा करो।

٢٠٠٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ أَبِي شَيْبَةَ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ تَعْدُو الْيَهُودُ عِيدًا، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَصُومُوا أُنْتُمْ)).  
[طرافه (١): ٣٩٤٢].

(दीगर मक़ाम: 3942)

**तशरीह:** मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मफ़ूअन रिवायत है कि मूमूयौम आशूरा व ख़ालिफ़ुल यहूद मूमूयौमन क़बूल हू औ यौमन बअद हू। या'नी ओहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आशूरा के दिन रोज़ा रखो और उसमें यहूद की मुख़ालफ़त के लिये एक दिन पहले या बाद का रोज़ा और मिला लो। क़ाललकुतुबी आशूरा मअदूलन अन अशरतिन लिस्मुबालग़ति वक्त अजीमि व हुब फिलअस्ति सिफ़तुल्लैलतिल आशिरति लिअन्नहू माख़्जुन मिनल अशिरल्लज़ी हुब इस्मुल अन्नद वल्यौमि मुजाफ़न इलैहा फ़इज़ा क़ील यौमु आशूरा फकअन्नहू क़बूल यौमि लैलतिल आशिरति लिअन्नहू कानू लम्मा अदलू बिही अनिस्सिफ़ति ग़लबत अलेहिल इस्मिध्यतु फ़स्तग़नू अनिल मौसूफ़ि फ़हज़फ़ुल्लैलत फ़सार हाज़ल्लफ़ज़ु अलमन अलल्यौमिल आशिर (फ़तह) या'नी कुतुबी ने कहा कि लफ़ज़ आशूरा मुबालिग़ा और ता'ज़ीम के लिये है जो लफ़ज़ आशिरा से मअदूल है। जब भी लफ़ज़ आशूरा बोला जाए उससे मुहर्रम की दसवीं तारीख़ की रात मुराद होती है।

2006. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी यज़ीद ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को सिवा आशूरा के दिन के और इस रमज़ान के महीने के और किसी दिन को दूसरे दिनों से अफ़ज़ल जानकर ख़ास तौर से क़स्द करके रोज़ा रखते नहीं देखा।

٢٠٠٦- حَدَّثَنَا غَيْدٌ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنْ ابْنِ عُيَيْنَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَوَيْدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَحْرُمُ صِيَامَ يَوْمٍ فَضَّلَهُ عَلَى غَيْرِهِ إِلَّا هَذَا الْيَوْمَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ، وَهَذَا الشَّهْرُ يَعْنِي شَهْرَ رَمَضَانَ)).

2007. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे

٢٠٠٧- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ

यज़ीद बिन अबी डबैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अक्वबा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू असलम के एक शख्स को लोगों में इस बात का ऐलान का हुक्म दिया था कि जो खा चुका हो वो दिन के बाक़ी हिस्से में भी खाने-पीने से रुका रहे और जिसने न खाया हो उसे रोज़ा रख लेना चाहिए क्योंकि ये आशूरा का दिन है। (राजेअ: 1924)

حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ مَلِكٍ عَنْ ابْنِ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي دَبْدَبٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ أَلَكُوعَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلًا مِنْ أَسْلَمَ أَنْ أَذِّنَ فِي النَّاسِ أَنْ مَنْ كَانَ أَكَلَ فَلْيَصُمْ بَقِيَّةَ يَوْمِهِ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ أَكَلَ فَلْيَصُمْ، فَإِنَّ الْيَوْمَ يَوْمُ عَاشُورَاءَ)). [راجع: 1924]

**तशरीह:** यहाँ किताबुस्सियाम खत्म हुई जिसमें हज़रत इमाम बुखारी (रह.) एक सौ सत्तावन अह्दादीष लाए हैं जिनमें मुअल्लक और मौसूल और मुकरर सब शामिल हैं और सहाबा और ताबेअीन के साथ अप्र लाए हैं। जिनमें अक़्बर मुअल्लक हैं और बाक़ी मौसूल हैं। अल्हम्दुलिल्लाह कि आज 5 शाबान 1389 हिजरी को जुनूबी हिन्द के सफ़र में रेलवे पर चलते हुए उसके तर्जुमे व तशरीहात से फ़ारिग हुआ।

## 31. किताब सलातुत्तरावीह

# किताब नमाज़े तरावीह पढ़ने का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### बाब 1 : रमज़ान में तरावीह पढ़ने की फ़ज़ीलत

2008. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कि मुझे अबू सलमा ने ख़बर दी, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) रमज़ान के फ़ज़ाइल बयान फ़र्मा रहे थे कि जो शख्स भी इसमें ईमान और निश्चयते प़वाब के साथ (रात में) नमाज़ के लिये खड़ा हुआ उसके अगले तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएँगे। (राजेअ: 35)

### 1- بَابُ فَضْلِ مَنْ قَامَ رَمَضَانَ

٢٠٠٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ بَنِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لِرَمَضَانَ: ((مَنْ قَامَهُ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)).

[راجع: 35]

2009. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्हें अबू हुरैरह

٢٠٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ

(रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने रमज़ान की रातों में (बेदार रहकर) नमाज़े तरावीह पढ़ी, ईमान और प्रवाब की निश्चय के साथ, उसके अगले तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हो गई। और लोगों का यही हाल रहा (अलग-अलग, अकेले और जमाअतों से तरावीह पढ़ते थे) उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) के दौरे ख़िलाफ़त में और उमर (रज़ि.) के इब्तिदाई दौरे ख़िलाफ़त में भी ऐसा ही रहा। (राजेअ: 35)

2010. और इब्ने शिहाब से (इमाम मालिक रह) की रिवायत है, उन्होंने ने इब्ना बिन जुबैर (रज़ि.) से और उन्होंने अब्दुरहमान बिन अब्दुल क़ारी से रिवायत की कि उन्होंने बयान किया, मैं उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के साथ रमज़ान की एक रात को मस्जिद में गया। सब लोग मुतफ़र्रिक और मुतशिर (बिखरे हुए) थे। कोई अकेला नमाज़ पढ़ रहा था और कुछ किसी के पीछे खड़े हुए थे। उस पर उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मेरा ख़याल है कि अगर मैं तमाम लोगों को एक क़ारी के पीछे जमा कर दूँ तो ज़्यादा अच्छा होगा। चुनौचे आपने यही ठानकर उबय इब्ने क़अब (रज़ि.) को उनका इमाम बना दिया। फिर एक रात जो मैं उनके साथ निकला तो देखा कि लोग अपने इमाम के पीछे नमाज़े (तरावीह) पढ़ रहे हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, ये नया तरीक़ा बेहतर और मुनासिब है और (रात का) वो हिस्सा जिसमें ये लोग सो जाते हैं इस हिस्से से बेहतर और अफ़ज़ल है जिसमें ये नमाज़ पढ़ते हैं। आपकी मुराद रात के आख़िरी हिस्से (की फ़ज़ीलत) से थी। क्योंकि लोग ये नमाज़ रात के शुरू ही में पढ़ लेते थे।

2011. हमसे इस्माईल बिन उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ना बिन जुबैर (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक बार नमाज़े (तरावीह) पढ़ी और ये रमज़ान में हुआ था।

(राजेअ: 729)

2012. और हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि

اَللّٰهُ عَنْهُ اَنْ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًا وَاحْسَانًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَقَوْلِي رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ الْاَمْرُ عَلَى ذَلِكَ، ثُمَّ كَانَ الْاَمْرُ عَلَى ذَلِكَ لِيْ خِلَافَةَ اَبِيْ بَكْرٍ وَصَدْرًا مِنْ خِلَافَةِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا)).

[راجع: 35]

٢٠١٠- وَعَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرُوَّةِ ابْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ الْقَارِيِّ اَنَّهُ قَالَ: ((عَرَجْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ لَيْلَةً لِيْ رَمَضَانَ اِلَى الْمَسْجِدِ فَاِذَا النَّاسُ اَوْزَاعٌ مُّطَوَّرُونَ يُصَلِّي الرَّجُلُ لِنَفْسِهِ، وَيُصَلِّي الرَّجُلُ لِمُصَلِّي بِصَلَاتِهِ الرَّهْطُ. فَقَالَ عُمَرُ: اِنِّي اُرَى لَوْ جَمَعْتُ هَؤُلَاءِ عَلَى قَارِيٍّ وَاحِدٍ لَكَانَ اَمْلًا. ثُمَّ عَزَمَ فَجَمَعَهُمْ عَلَى اَبِيْ بَكْرٍ كَتَبٍ. ثُمَّ عَرَجْتُ مَعَهُ لَيْلَةً أُخْرَى وَالنَّاسُ يُصَلُّونَ بِصَلَاةِ قَارِيهِمْ، قَالَ عُمَرُ: بِنِعْمِ الْبِدْعَةِ هَذِهِ، وَاللّٰهِ يَنَامُونَ عَنْهَا اَفْضَلَ مِنْ اَلَّذِي يَقُومُونَ - يُرِيدُ آخِرَ اللَّيْلِ - وَكَانَ النَّاسُ يَقُومُونَ اَوَّلَهُ)).

٢٠١١- حَدَّثَنَا اِسْمَاعِيْلُ قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرُوَّةِ ابْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ: ((اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ صَلَّى، وَذَلِكَ

لِيْ رَمَضَانَ)). [راجع: 729]

٢٠١٢- ح وَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ

हमसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे अकील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उर्वा ने खबर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बार (रमज़ान की) आधी रात में मस्जिद तशरीफ़ ले गए और वहाँ तरावीह की नमाज़ पढ़ी। कुछ म्हाबा (रज़ि.) भी आपके साथ नमाज़ में शरीक हो गए। सुबह हुई तो उन्होंने उसका चर्चा किया। चुनौचे दूसरी रात में लोग पहले से भी ज़्यादा जमा हो गए। और आप (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। दूसरी सुबह को और ज़्यादा चर्चा हुआ और तीसरी रात उससे भी ज़्यादा लोग जमा हो गये। आप (ﷺ) ने (उस रात भी) नमाज़ पढ़ी और लोगों ने आप (ﷺ) की इज़्तिदा की। चौथी रात को ये आलम था कि मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आने वालों के लिये जगह भी बाक़ी नहीं रही थी। (लेकिन उस रात आप तशरीफ़ ही नहीं लाए) बल्कि सुबह की नमाज़ के लिये बाहर तशरीफ़ लाए। जब नमाज़ पढ़ ली तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर शहादत के बाद फ़र्माया। अम्माबाद! तुम्हारे यहाँ जमा होने का मुझे इल्म था, लेकिन मुझे डर उसका हुआ कि कहीं ये नमाज़ तुम पर फ़र्ज़ न कर दी जाए और फिर तुम उसकी अदायगी से आजिज़ हो जाओ चुनौचे जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो यही कैफ़ियत कायम रही। (राजेज़: 729)

2013. हमसे इस्माईल बिन उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे सईद मन्बरी ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने कि उन्होंने आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (तरावीह या तहज्जुद की नमाज़) रमज़ान में कितनी रकअतें पढ़े थे? तो उन्होंने बतलाया कि रमज़ान हो या कोई और महीना आप (ﷺ) ग्यारह रकअतों से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे। आप (ﷺ) पहली चार रकअत पढ़ते, तुम उनके हुस्न व ख़ूबी और तूल का हाल न पूछो, फिर चार रकअत पढ़ते, उनके भी हुस्न व ख़ूबी और तूल का हाल न पूछो, आखिर मैं तीन रकअत (वित्र) पढ़ते थे। मैंने एक बार पूछा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या आप वित्र पढ़ने से पहले सो जाते हैं? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, आइशा! मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल नहीं सोता।

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَرَجَ لَيْلَةً مِنْ جَوْفِ اللَّيْلِ فَصَلَّى فِي الْمَسْجِدِ، وَصَلَّى رَجُلَانِ بِصَلَاتِهِ، فَأَصْبَحَ النَّاسُ فَتَحَدَّثُوا، فَاجْتَمَعَ أَكْثَرُ مِنْهُمْ، فَصَلُّوا مَعَهُ، فَأَصْبَحَ النَّاسُ فَتَحَدَّثُوا فَكَثُرَ أَهْلُ الْمَسْجِدِ مِنَ اللَّيْلَةِ الْتَالِيَةِ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَصَلَّى فَصَلُّوا بِصَلَاتِهِ، فَلَمَّا كَانَتِ اللَّيْلَةُ الرَّابِعَةَ عَجَزَ الْمَسْجِدُ عَنْ أَهْلِهِ حَتَّى خَرَجَ بِصَلَاةِ الصُّبْحِ، فَلَمَّا قَضَى الْفَجْرَ أَتَى عَلَى النَّاسِ فَتَشْهَدُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّهُ لَمْ يَغْفِرْ عَلَيَّ مَكَانَكُمْ. وَلَكِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَفْرُغُوا عَلَيْكُمْ فَتَعْجِزُوا عَنْهَا)). قَوْلِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَالْأَمْرُ عَلَى ذَلِكَ. [راجع: ٧٢٩]

٢٠١٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: كَيْفَ كَانَتْ صَلَاةُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَتْ: مَا كَانَ يَزِيدُ فِي رَمَضَانَ وَلَا فِي غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلَا تَمْلَأُ عَنْ حُسَيْنٍ وَطَوِيلٍ، ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلَا تَمْلَأُ عَنْ حُسَيْنٍ وَطَوِيلٍ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلَاثًا. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَأْتِمُ قَبْلَ أَنْ تُؤَيَّرَ؟ قَالَ: ((يَا عَائِشَةُ، إِنَّ عَنِّي تَمَامًا، وَلَا يَتَمُّ قَلْبِي)).

(राजेअ: 1147)

[راجع: 1147]

**तशरीह:** हाफिज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, वत्तरावीह जम्अ तर्वी हतिन व हियल मरतुल वाहिदतु मिनर्राहति कत्तस्लीमति मिनस्सलामि सुम्मियत अस्सलातु फिल्जमाअति फ़ी लयालि रमज़ान अत्तरावीह लिअन्नहुम अव्वलु मज्तमऊ अलैहा कानू यस्तरिहून बैन कुल्लि तस्लीमतैन वक्रद अक्रद मुहम्मद बिन नस्र फ़ी क्रियामिल्लैलि बाबैनि लिमनिस्तहब्बत्ततव्वअ लिनफ़िसही बैन कुल्लि तर्वी हतैन व लिमन करिह ज़ालिक व हुकिय फ़ीहि अन यह्या बिन बुकैर अनिल्लैष इन्नहुम कानू यस्तरिहून कद्र मा युसल्ली अर्ज़ुलु कज़ा कज़ा रकअतन (फ़तहूल बारी)

ख़ुलासा मतलब ये है कि तरावीह, तरवीहा की जमा है जो राहत से मुश्तक है जैसे तस्लीमा सलाम से मुश्तक है। रमज़ान की रातों में जमाअत से नफ़ल नमाज़ पढ़ने को तरावीह कहा गया, इसलिये कि वो शुरू में हर दो रकअतों के बीच थोड़ा सा आराम किया करते थे। अल्लामा मुहम्मद बिन नस्र ने क़यामुल लैल में दो बाब मुनअकिद किये हैं। एक उनके बारे में जो उस राहत को मुस्तहब जानते हैं और एक उनके बारे में जो इस राहत को अच्छा नहीं जानते। और इस बारे में यह्या बिन बुकैर ने लैष से नक़ल किया है कि वो इतनी इतनी रकआत की अदायगी के बाद थोड़ी देर आराम किया करते थे। इसीलिये उसे नमाज़े तरावीह से मौसूम किया गया।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) यहाँ इस बारे में पहले इस नमाज़ की फ़ज़ीलत के बारे में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत लाए, फिर हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की दूसरी रिवायत के साथ हज़रत इब्ने शिहाब की तशरीह लाए जिसमें इस नमाज़ का बाजमाअत अदा किया जाना और इस बारे में हज़रत उमर (रज़ि.) का इक्दाम मज़कूर है। फिर हज़रत इमाम (रह.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की अह्मादीष से ये षाबित फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने खुद इस नमाज़ को तीन रातों तक बाजमाअत अदा फ़र्माकर इस उम्मत के लिये मस्नून करार दिया। उसके बाद उसकी ता'दाद के बारे में खुद हज़रत आइशा (रज़ि.) की जुबान मुबारक से ये नक़ल फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान या ग़ैर रमज़ान में इस नमाज़ को ग्यारह रकअतों की ता'दाद में पढ़ा करते थे। रमज़ान में यही नमाज़ तरावीह के नाम से मौसूम हुई और ग़ैर रमज़ान में तहज्जुद के नाम से, और उसमें आठ रकअत सुन्नत और तीन वित्र। इस तरह कुल ग्यारह रकअतें हुआ करती थीं। हज़रत आइशा (रज़ि.) की जुबाने मुबारक से ये ऐसी क़तअी वज़ाहत है जिसकी कोई भी तावील या तर्दीद नहीं की जा सकती, उसी के बिना पर जमाअते अहले हदीष के नज़दीक तरावीह की आठ रकआत सुन्नत तस्लीम की गई हैं, जिसकी तफ़सील पारा सोम में मुलाहिज़ा हो।

**अजीब दिलेरी:** हज़रत आइशा (रज़ि.) की ये हदीष और मौता इमाम मालिक में ये वज़ाहत कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) की इक्तिदा में मुसलमानों की जमाअत कायम फ़र्माई और उन्होंने सुन्नते नबवी के मुताबिक़ ये नमाज़ ग्यारह रकअतों में अदा की थी। उसके बावजूद उलम—ए—अहनाफ़ की दिलेरी और जुअत काबिले-दाद है, जो आठ रकआत तरावीह के न सिर्फ़ मुंकिर हैं बल्कि उसे नाजाइज़ और बिदअत करार देने से भी नहीं चूकते और तक्रीबन हर साल उनकी तरफ़ से आठ रकआत तरावीह वालों के खिलाफ़ इश्तिहारात, पोस्टर, किताबचे शाये होते रहते हैं।

हमारे सामने देवबन्द से शाये शुदा (प्रकाशित) बुखारी शरीफ़ का तर्जुमा तफ़हीमुल बुखारी के नाम से रखा हुआ है। इसके मुतर्जिम व शारेह साहब बड़ी दिलेरी के साथ तहरीर फ़र्माते हैं,

जो लोग सिर्फ़ आठ रकआत तरावीह पर इक्तिफ़ा करते और सुन्नत पर अमल का दा'वा करते हैं वो दर हक़ीक़त सवादे आज़म से शज़ूज़ इख़्तियार करते हैं और सारी उम्मत पर बिदअत का इल्ज़ाम लगाकर खुद अपने पर जुल्म करते हैं। (तफ़हीमुल बुखारी: पारा 8, पेज नं. 30)

यहाँ अल्लामा मुतर्जिम साहब, दा'वा कर रहे हैं कि बीस रकआत तरावीह सवादे आज़म का अमल है। आठ रकआत पर इक्तिफ़ा करने वालों का दा'वा—ए—सुन्नत ग़लत है। हिमायत के ज़ब्हे में इंसान कितना बहक सकता है यहाँ ये नमूना नज़र आ रहा है। यही हज़रत आगे खुद अपनी उसी किताब में खुद अपने ही कलम से खुद अपनी ही तर्फीद फ़र्मा रहे हैं। चुनौचे आप

फ़र्माते हैं,

इब्ने अब्बास (रज़ि.) की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रमज़ान में बीस रकआत पढ़ते थे और वित्र उसके अलावा होते थे। आइशा (रज़ि.) की हदीष उससे अलग है बहरहाल दोनों अहादीष पर अइम्मा का अमल है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का मसलक बीस रकआत तरावीह का है और इमाम शाफ़िई (रह.) का म्यारह रकआत तरावीह पर अमल है। (तफ़हीमुल बुखारी, पारा नं. : 8, पेज नं. 31)

इस बयान से मौसूफ़ के पीछे के बयान की तर्दीद जिन वाज़ेह लफ़्ज़ों में हो रही है वो सूरज की तरह अयाँ (रोशन) है जिससे मा'लूम होता है कि आठ रकआत पढ़ने वाले भी हक़ बजानिब हैं और बीस रकआत पर सवादे आज़म के अमल का दा'वा सहीह नहीं है।

हदीष इब्ने अब्बास (रज़ि.) जिसकी तरफ़ मुहतरम मुतर्जिम साहब ने इशारा फ़र्माया है ये हदीष सुनने कुबरा बेहक़ी पेज नं. 496 जिल्द 2 पर इन अल्फ़ाज़ के साथ मरवी है। अन इब्नि अब्बासिन क़ाल कानन्नबिय्यु (ﷺ) युसल्ली फ़ी शहरि रमज़ान फ़ी ग़ैरि जमाअतिन बिइशरीन रकअतन वल्लिक्क तफ़रद बिही अबू शैबत इब्राहीम बिन उप्मान अल अबसी अल कूफ़ी व हुव ज़ईफ़ुन या'नी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) रमज़ान में जमाअत के बग़ैर बीस रकआत और वित्र पढ़ा करते थे। इस बयान में रावी अबू शैबा इब्राहीम बिन उप्मान अबसी कूफ़ी तंहा है और वो ज़ईफ़ है। लिहाज़ा ये रिवायत हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत के मुक़ाबले पर हर्गिज़ क़ाबिले हुज्जत नहीं है। इमाम सियूती (रह.) इस हदीष की बाबत फ़र्माते हैं, हाज़ल हदीषु ज़ईफ़ुन जिद्दा ला तक्कुम बिहिल हुज्जतु (अल मसाबीहु लिस्सियूती)

आगे अल्लामा सियूती (रह.) अबू शैबा मज़कूर पर मुहदिषीने किबार की जरहें नक़ल करके लिखते हैं, व मनिक्तफ़क़ हाडलाइल अइम्मतु अला तज़ईफ़िही ला यहिल्लुल इहतिजाज़ु बिहदीषिही या'नी जिस शख्स की तज़ईफ़ पर ये तमाम अइम्म-ए-हदीष मुत्तफ़िक्क हों उसकी हदीष से हुज्जत पकड़ना हलाल नहीं है। अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) ने भी ऐसा ही लिखा है। अल्लामा ज़ेज़ज़ी हन्फ़ी लिखते हैं। व हुव मअलूलुन बिअबी शैबत इब्राहीम बिन उप्मान जिद्दा लिइमाम अबी बकर बिन अबी शैबत व हुव मुत्तफ़कुन अला जुअफ़िही व लीनिही इब्नि अदी फ़िल्कामिल शुम्म अन्नहू मुख़ालिफ़ुल्लि हदीषिस्सहीहि अन अबी सलमत इब्नि अब्दिरहमान अन्नहू अन्नहू सअल आइशत अल हदीषु (नज़बुराय : पेज नं. 493.) या'नी अबू शैबा की वजह से ये हदीष मअलूल ज़ईफ़ है। और उसके जुअफ़ पर सब मुहदिषीने किराम का इत्तिफ़ाक़ है। और इब्ने अदी ने उसे लीन कहा है। और ये हदीष हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष जो सहीह है, उसके भी खिलाफ़ है। लिहाज़ा ये क़ाबिले कुबूल नहीं है। अल्लामा इब्ने हम्माह हन्फ़ी (रह.) ने फ़तहूल क़दीर जिल्द अव्वल पेज नं. 333 तिबअ मिस्त्र पर भी ऐसा ही लिखा है। और अल्लामा ऐनी (रह.) हन्फ़ी ने इम्दतुल क़ारी तबअे मिस्त्र पेज नं. 359 जिल्द 5 पर भी यही लिखा है।

अल्लामा सिन्धी हन्फ़ी ने भी अपनी शरह तिर्मिज़ी पेज नं. 423 जिल्द अव्वल में यही लिखा है। इसीलिये मौलाना अनवर शाह साहब कशमीरी (रह.) फ़र्माते हैं व अम्मन्नबिय्यु (ﷺ) फ़सहह अन्हु प्रमान रकआतिन व अम्मा इशरून रकअतन फ़हुव अन्हु बिसनदिन ज़ईफ़िन व अला जुअफ़िही इत्तिफ़ाकुन या'नी नबी करीम (ﷺ) से तरावीह की आठ ही रकअ तसहीह सनद से प्राबित हैं। बीस रकआत वाली रिवायत की सनद ज़ईफ़ है जिसके जुअफ़ पर सबका इत्तिफ़ाक़ है।

औजुल मसालिक, जिल्द अव्वल, पेज नं. 397. पर हज़रत मौलाना ज़करिया कान्धलवी हन्फ़ी लिखते हैं। ला शक़ फ़ी अन्न तहदीद तरावीहि फ़ी इशरीन रकअतुन लम यम्बुत मफ़ूअन अनिन्नबिय्यि (ﷺ) तरीकिन सहीहिन अला इस्लिल मुहदिषीन व मा वरद फ़ीहि मिन रिवायति इब्नि अब्बास फ़मुतकल्लमुन फ़ीहा अला इस्लिलहिम (इन्तिहा) या'नी उसमें कोई शक़ नहीं कि तरावीह की बीस रकअतों की तहदीद तअय्युन नबी करीम (ﷺ) से उसूले मुहदिषीन के तरीक़ पर प्राबित नहीं है। और जो रिवायत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से बीस रकआत के बारे में मरवी है वो बउसूले मुहदिषीन मज़रूह और ज़ईफ़ है।

ये तफ़सील इसलिये दी गई ताकि उलम-ए-अहनाफ़ के दावा बीस रकआत तरावीह की सुन्नियत की हक़ीक़त खुद

उलम ए-मुहक्किनीने अहनाफ ही की क़लम से ज़ाहिर हो जाए। बाकी तफ़्सीली मज़ीद के लिये हमारे उस्ताज़ुल उलमा हज़रत मौलाना नज़ीर अहमद साहब रहमानी (रह.) की किताब मुस्तताब, अनवारुल मसाबीह का मुतालआ किया जाए जो इस मौजूअ के मालहू व माअलैहि पर इस क़दर जामेअ मुदल्लल किताब है कि अब उसकी नज़ीर मुम्किन नहीं। जज़ल्लाह अन्ना ख़ैरल्जज़ा व ग़फ़रल्लाह लहू आमीन। मज़ीद तफ़्सीलात पारा 3 में दी जा चुकी है वहाँ देखी जा सकती है।

## 32. किताब लैलतुल क़द्र

# किताब लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### बाब 1 : लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत

और (सूरह क़द्र में) अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि मैंने इस (कुआन मज़ीद) को क़द्र की रात में उतारा। और तूने क्या समझा कि क़द्र की रात क्या है? क़द्र की रात हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है। उसमें फ़रिश्ते, रूहुल कुदस (जिब्रईल अलैहिस्सलाम) के साथ अपने रब के हुक्म से हर बात का इतिज़ाम करने को उतरते हैं। और सुबह तक ये सलामती की रात फ़ायम रहती है। सुफ़यान बिन इययना ने कहा कि कुआन में जिस मौक़े के लिये मा अदराक आया है तो उसे अल्लाह तआला ने आँहज़रत (ﷺ) को बता दिया है और जिसके लिये मा युदरीक फ़र्माया उसे नहीं बताया है।

2014. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमने इस रिवायत को याद किया था। और ये रिवायत उन्होंने जुहरी से (सुनकर) याद की थी। उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे अबू हुसैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख्स रमज़ान के रोज़े ईमान और एहतिज़ाब (हमूले अज़्र व प्रवाब की निव्यत) के साथ रखे, उसके अगले तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। जो लैलतुल क़द्र में ईमान व एहतिज़ाब

### ١- بَابُ فَضْلِ لَيْلَةِ الْقَدْرِ

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ. وَمَا أَذْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ. لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ. تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ. سَلَامٌ هِيَ حَتَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِ﴾. قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: مَا كَانَ فِي الْقُرْآنِ ﴿وَمَا أَذْرَاكَ﴾ فَقَدْ أَغْلَمَهُ، وَمَا قَالَ: ﴿وَمَا يُدْرِيكَ﴾ فَإِنَّهُ لَمْ يَعْلَمْهُ.

٢٠١٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَقِيقَتَاهُ وَإِنَّمَا حَقِيقَةُ مِنَ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ: ((مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ، وَمَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)).



के साथ नमाज़ में खड़ा रहे, उसके भी अगले तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। सुफयान के साथ सुलैमान बिन क़शीर ने भी इस हदीष को जुहरी से रिवायत किया। (राजेअ: 35)

تَابَعَهُ سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ.

[راجع: 35]

## बाब 2 : क़द्र की रात को रमज़ान की आख़िरी ताक़ रातों में तलाश करने का बयान

2015. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के चन्द अस्हाब को शबे क़द्र ख़्वाब में (रमज़ान की) सात आख़िरी तारीख़ों में दिखाई गई थी। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे सबके ख़्वाब सात आख़िरी तारीख़ों पर मुत्तफ़िक्क़ हो गए हैं। इसलिये जिसे उसकी तलाश हो वो इसी हफ़्ता की आख़िरी (ताक़) रातों में तलाश करे।

(राजेअ: 1157)

## ٢- بَابُ الْإِيمَانِ لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي السَّبعِ الْأَوَاخِرِ

٢٠١٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَرَا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي السَّامِ فِي السَّبعِ الْأَوَاخِرِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَرَى زُؤَانَكُمْ فَذُ تَوَاطَّاتٍ فِي السَّبعِ الْأَوَاخِرِ، لَمْ يَكُنْ كَانَ مُتَحَرِّبَهَا فَلْيَتَحَرَّهَا فِي السَّبعِ الْأَوَاخِرِ)). [راجع: 1158]

आख़िरी अशरे की ताक़ रातें 21, 23, 25, 27 व 29 मुराद हैं।

**तशरीह:** इस हदीष के तहत हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व फ़की हाज़ल हदीषि दलालतुन अला अज़िम क़द्रिस्नया व जवाज़िल इस्तिनादि इलैहा फ़िलइस्तिदलालि अलल उमूरि वुजूदिय्य बिशर्तिन अल्ला युरख़ालिफल क़वाइदशरर्य्या (फ़तह) या'नी इस हदीष से ख़्वाबों की क़द्र व मंज़िलत ज़ाहिर होती है और ये भी कि उनमें उमूरे वजूबिया के लिये इस्तिनाद के जवाज़ की दलील है बशर्ते कि वो शरअी क़वाइद के खिलाफ़ न हो। फ़िल व़ाक़ेअ मुताबिक्क़ हदीष दीगर मोमिन का ख़्वाब नुबुव्वत के सत्तर हिस्सों में से एक अहम हिस्सा है। कुर्आन मजीद की आयते शरीफ़ा अला इन्न औलिया अल्लाहि अल्ख़ में बुशरा से मुराद नेक ख़्वाब भी हैं, जो वो खुद देखे या उसके लिये दूसरे लोग देखें।

2016. हमसे मुआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़शीर ने, उनसे अबू सलमा ने बयान किया कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से पूछा, वो मेरे दोस्त थे, उन्होंने जवाब दिया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ रमज़ान के दूसरे अशरे में ए'तिकाफ़ में बैठे। फिर बीस तारीख़ की सुबह को आँहज़रत (ﷺ) ए'तिकाफ़ से निकले और हमें खुत्बा दिया आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे लैलतुल क़द्र दिखाई गई, लेकिन भुला दी गई, या (आपने ये फ़र्माया कि) मैं खुद भूल गया। इसलिये तुम उसे आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में तलाश करो। मैंने ये भी देखा है (ख़्वाब में) कि

٢٠١٦- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا سَعِيدٍ - وَكَانَ لِي صَدِيقًا - فَقَالَ: اغْتَبَكُمَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَشْرَ الْأَوَّلَ مِنْ رَمَضَانَ، فَخَرَجَ صَبِيحَةَ عِشْرِينَ، فَخَطَبَنَا، وَقَالَ: ((إِنِّي أَرَيْتُ لَيْلَةَ الْقَدْرِ ثُمَّ أُنْسِيْتُهَا - أَوْ نَسِيْتُهَا - فَاتَّبَعْتُهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ فِي الْوَتْرِ،

गोया मैं कीचड़ में सज्दा कर रहा हूँ। इसलिये जिसने मेरे साथ ए'तिकाफ़ किया हो वो फिर लौट आए और ए'तिकाफ़ में बैठे। ख़ैर हमने फिर ए'तिकाफ़ किया। उस वक़्त आसमान पर बादल का एक टुकड़ा भी नहीं था। लेकिन देखते ही देखते बादल आया और बारिश इतनी हुई कि मस्जिद की छत से पानी टपकने लगा जो खजूर की शाखों से बनी हुई थी। फिर नमाज़ की तक्बीर हुई तो मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कीचड़ में सज्दा कर रहे थे, यहाँ तक कि कीचड़ का निशान आप (ﷺ) की पेशानी पर देखा।

(राजेअ: 669)

وَلَيْتِي رَأَيْتُ أَنِّي أَسْجُدُ فِي مَاءٍ وَطَيْنٍ،  
فَمَنْ كَانَ اغْتَكِفَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ  
فَلْيَرْجِعْ)). فَرَجَعْنَا، وَمَا نَوَى فِي السَّمَاءِ  
فَرْعَةً، فَجَاءَتْ سَحَابَةٌ فَمَطَرَتْ حَتَّى سَالَ  
سَقْفُ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ مِنْ جَرِيدِ النَّخْلِ،  
وَأَقِمَّتِ الصَّلَاةَ، فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
يَسْجُدُ فِي الْمَاءِ وَالطَّيْنِ، حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ  
الطَّيْنِ فِي جَنْبِهِ)). [راجع: ٦٦٩]

۳- بَابُ تَحْرِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ فِي الْوُتْرِ  
مِنَ الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ. فِيهِ عِبَادَةُ

### बाब 3 : क़द्र की रात का रमज़ान के आख़िरी दस त्राक़ रातों में तलाश करना, इस बाब में उबादा बिन सामित से रिवायत है

**तशरीह:** लैलतुल क़द्र का वजूद, उसके फ़ज़ाइल और उसका रमज़ान शरीफ़ में वाक़ेअ होना ये चीज़ें नुस्रसे कुआनी से प्राबित हैं। जैसा कि सूरह क़द्र में मज़कूर है और इस बारे में अह्दादीषे सहीहा भी बक़्दरत वारिद हैं। फिर भी आजकल के कुछ मुंकिरीने हद्दीष ने लैलतुल क़द्र का इंकार किया है जिनका क़ौल हर्गिज़ क़ाबिले कुबूल नहीं है।

अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, वख़्तुलिफ़ फ़िल्मुरादिल्लज़ी उज़ीफ़त इलैहिल्लैलतु फ़क़ौल अल्मुरादु बिही अत्तअज़ीमु फ़क़ौलिही तअ़ाला व माक़दरुल्लाह हक्क़ क़दरिही वल्मअना अन्नहा ज़ात क़दरिन लिनुज़ूलिलकुआनि या'नी यहाँ क़द्र से क्या मुराद है, इस बारे में इख़ितलाफ़ है। पस कहा गया है कि क़द्र से ता'ज़ीम मुराद है जैसा कि आयते कुआनी में है या'नी उन काफ़िरो ने पूरे तौर पर अल्लाह की अज़मत को नहीं पहचाना, आयते शरीफ़ा में जिस तरह क़द्र से ता'ज़ीम मुराद है। यहाँ भी इस रात के लिये ता'ज़ीम मुराद है। इसलिये कि ये रात वो है जिसमें कुआने करीम का नज़ूल शुरू हुआ। क़ालल इलमाउ सुम्मियत लैलतुलक़दरि लिमा तक्तुबु फ़ीहल्मलाइकतु मिनल अक्दरि लिक्कौलिही तअ़ाला फ़ीहा युप्सकु कुल्लु अम्रिन हकीम (फ़तुहल बारी) या'नी इलमा का एक क़ौल ये भी है कि उसका नाम लैलतुल क़द्र इसलिये रखा गया कि उसमें अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्ते आने वाले साल की कुल तक्दीरें लिखते हैं। जैसा कि आयते कुआनी में मज़कूर है कि उसमें हर मुहक़म अम्र लिखा जाता है।

इस रात के बारे में इलमा के बहुत से क़ौल हैं जिनको हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने तफ़्सील के साथ लिखा है। जिन्हें 146 अक्वाल की ता'दाद तक पहुँचा दिया है। आख़िर में आपने अपना फ़ाज़िलाना फ़ैसला इन लफ़्ज़ों में दिया है, व अर्जहुहा कुल्लुहा अन्नहा फ़ी वितरिम्मिनल अश्रिल अख़ीरि व अन्नहा तन्तक़िलु कमा यफ़हमु मिन अह्दादीषे हाज़ल्बाबि या'नी उन सब में तरजीह उस क़ौल को हासिल है कि ये मुबारक रात रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अशरे की त्राक़ रातों में होती है और ये हर साल मुंतक़िल होती रहती है। जैसा कि इस बाब की अह्दादीषे से समझा जा सकता है। शाफ़िइया ने इक्कीसवीं रात को तरजीह दी है और जुम्हूर ने सत्ताइसवीं रात को, मगर सहीहतर यही है कि इसे हर साल के लिये किसी खास तारीख़ के साथ मुतअय्यन (निर्धारित) नहीं किया जा सकता। ये हर साल मुंतक़िल होती रहती है और ये एक पोशीदा (गुप्त) रात है, क़ालल इलमाउ अल हिक्मतु फ़ी इख़फ़ाइल्लैतिल क़दरि लिय हसिलुल इज्तिहादु फ़ी इल्तिमासिहा बिख़िलाफ़ि मा लौ उय्यिनत लहा लैलतुन लउक्त्तसिर अलैहा कमा तक्दम नहवहू फ़ी साअतिल्लुम्अति या'नी इलमा ने कहा कि इस रात के मख़फ़ी (छुपी हुई) होने में ये हिक्मत है ताकि उसकी तलाश की जाए। अगर उसे मुअय्यन कर दिया जाता तो फिर इस

रात पर इक़तिसार कर लिया जाता। जैसा कि जुम्ह्रे की घड़ी की तफ़्सील में पीछे मुफ़स्सल बयान किया जा चुका है। मुतर्जिम कहता है कि इससे उन लोगों के ख़याल की भी तग़लीज़ होती है जो उसे हर साल इक्कीसवीं या सत्ताइसवीं शब के साथ ख़ास करते हैं।

मुख्तलिफ़ आधार में इस रात की कुछ निशानियाँ भी बतलाई गई हैं, जिनको अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) ने मुफ़स्सल लिखा है। मगर वो आधार बतौर इम्क़ान हैं बतौर शर्त के नहीं हैं, जैसा कि कुछ रिवायत में उसकी एक अलामत बारिश होना भी बतलाया गया है। मगर कितने ही रमज़ान ऐसे गुज़र जाते हैं कि उनमें बारिश नहीं होती, हालाँकि उनमें लैलतुल क़द्र का होना बरहक़ है। पस बहुत दफ़ा ऐसा होना मुम्किन है कि एक शख्स ने आख़िर अशरे की त़ाक़ रातों में क़याम किया और उसे लैलतुल क़द्र ह़ासिल भी हो गई। मगर उसने उस रात में कोई अमर बतौर ख़क़े आदत नहीं देखा। इसलिये हाफ़िज़ (रह.) फ़र्माते हैं, फ़ला नअतक्रिदु अन्न लैलतल क़द्रि ला यनालुहा इल्ला मन अरलख़वारिक़ बल फ़ज़लुल्लाहि वासिउन या' नी हम ये ए' तिक़ाद (यक़ीन) नहीं रखते कि लैलतुल क़द्र को वही पहुँच सकता है जो कोई अमर ख़ारिक़े आदत देखे, ऐसा नहीं है बल्कि अल्लाह का फ़ज़ल बहुत फ़राख़ (विशाल) है।

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा था, हज़ूर! मैं लैलतुल क़द्र में क्या दुआ पढ़ूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये दुआ बक़रत पढ़ा करो, अल्लाहुम्म इन्नक़ अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़्वा फ़अफ़ु अत्री ऐ अल्लाह! तू मुआफ़ करने वाला है और मुआफ़ी को पसन्द करता है, पस तू मेरी ख़ताएँ भी मुआफ़ कर दे।

उम्मीद है कि लैलतुल क़द्र की शब बेदारी करने में बुखारी शरीफ़ का मुतालआ (अध्ययन) करने वाले मुअज़्ज़ भाई मुतर्जिम (अनुवादक) व मुआविनीन सबको अपनी पाकीज़ा दुआओं में शामिल कर लिया करें, आमीन!!

शैख़ुल हदीष हज़रत मौलाना अबैदुल्लाह साहब मदज़िल्लुहू फ़र्माते हैं :-

धुम्मल जुम्हूर अला अन्नहा मुख्तसमतुन बिहाज़ल उम्मत व लम तकुन लिमन क़ब्लहुम क़ालल हाफ़िज़ व जज़म बिही इब्नु हबीब व ग़ैरूहू मिनल मालिकियति कल्बाजी व इब्नि अब्दिल बरि व नक़लहू अनिल जुम्हूर साहिबुल इदति मिनश़ाफ़िइयति व रज़हहू व क़ालन्नववी अन्नहुस्सहीहुल मशहूरुल्लज़ी क़तअ बिही अन्हाबुना कुल्लुहुम व जमाहीरुल उलमाइ क़ालल हाफ़िज़ व हुव मुअतरिज़ुन बिहदीषि अबी ज़रिन इन्दन्नसई हैषु क़ाल फ़ीहि कुल्लु या रसूलल्लाहि (ﷺ) अतकूनु मअल अबियाइ फ़इज़ा मातूरुफ़िअत क़ाल ला बल हिय बाक़ियतुन व इम्दतुहुम क़ौलु मालिक फ़िल मुअता बलगनी अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) तकासुरु आमारि उम्मतिही अन आमारिल माज़ियति फ़आताहुल्लाहु लैलतल क़द्रि व हाज़ा यहतमितावीलु बल यदफ़उस्सरीहु फ़ी हदीषि अबी ज़रिन इन्तिहा - - कुल्लु हदीषु अबी ज़रिन ज़क़हू इब्नु कुदामा 3/179 मिन अय्यगज़ुह लिअहदिन बिलफ़िज़ कुल्लु या नबियल्लाहि अतकूनु मअल अबियाइ मा कानू फ़इज़ा कुबिजतिल अबियाउ व रुफ़िऊ रुफ़िअत मअहुम औ हिय इला यौमिल क्रियामति क़ाल बल हिय इला यौमिल क्रियामति व अम्मा अप्ररुल मुअता फ़क़ाल मालिक फ़ीहि अन्नहू समिअ मय्युषिक़ बिही मिन अहलिल इल्मि यक़ूलु अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) अरा आमारन्नासि क़ब्लहू औ माशाअल्लाहु मिन ज़ालिक़ फ़क़अन्नहू तकासर आमारु उम्मतिही अल्ला यब्लुगू मिनल अमलि मिस्लुल्लज़ी बलग ग़ैरुहुम फ़ी तूलिल इम्पि फ़आताहुल्लाहु लैलतल क़द्रि ख़ैरुम्मिन अल्फ़ि शहर ..... कुल्लु व अपरुलमुअतल मज़क़ूर यदुल्लु अला अन्न इत्ताअ लैलतलक़द्रि कान तस्लीयतुन लिहाज़िहिल उम्मतिल क़ध़रतिल आमारि व यशहदु लिज़ालिक़ रिवायतुन उछ़ा मुसलतन ज़क़रहल ऐनी फ़िल्इमदति (स. 129-130 जिल्द 11)

जुम्हूर का क़ौल यही है कि ये बात इसी उम्मत के साथ ख़ास है और पहली उम्मतों के लिये ये नहीं थी। हाफ़िज़ ने कहा उसी अक़ीदा पर इब्ने हबीब और बाजी और इब्ने अब्दुल बरि इलम-ए-मालिकिया ने जज़म किया है। और शाफ़िइया में से साहिबुल इम्दह ने भी इसे जुम्हूर से नक़ल किया है। हाफ़िज़ ने कहा कि ये हदीष अबू ज़र (रज़ि.) के ख़िलाफ़ है जिसे निसाई ने रिवायत किया है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) कहती हैं मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ) ये रात पहले अबिया के साथ भी हुआ करती थी कि जब वो इतिक़ाल कर जाते तो वो रात उठा दी जाती। आपने फ़र्माया कि नहीं, बल्कि वो रात बाक़ी है। और बेहतरीन क़ौल इमाम मालिक (रह.) का है जो उन्होंने मौता में नक़ल किया है कि मुझे पहुँचा है कि रसूलल्लाह (ﷺ)

को अपनी उम्मत की उम्मेद कम होने का एहसास हुआ जबकि पहली उम्मतों की उम्मेद लम्बी हुआ करती थी। पस अल्लाह तआला ने आपको लैलतुल क्रद्र अन्ता की जिससे आप (ﷺ) की उम्मत को तसल्ली देना मक्सूद था जिनकी उम्मेद बहुत छोटी हैं और ये रात एक हजार महीने से बेहतर उनको दी गई। (मुल्हज)

सूरह शरीफा, इन्ना अंज़लनाहु फ़ी लैलतिल क्रद्र के शाने नुज़ूल में वाहिदी ने अपनी सनद के साथ मुजाहिद से नक़ल किया है कि ज़करिय़ुल्लिह (ﷺ) रज़ुलमिन् बनी इस्राईल लबिसस्सलाह फ़ी सबीलिल्लाहि अल्फ़ शहर फअजबल मुस्लिमून मिन ज़ालिक फअन्ज़लल्लाहु तआला अज़ व जल्ल इन्ना अन्ज़लनाहु (अल्ख) क़ाल ख़ैरुम्मनिल्लज़ी लबिसस्सलाह फ़ीहा ज़ालिकरज़ुलु इन्तिहा व ज़करलमुफ़स्मिरून अन्नहू कान फ़िज्मनिल अव्वलि नबिय्युन युकालु लहू शम्सून अलैहिस्सलामु कातल्कफ़रत फ़ी दीनिल्लाहि अल्फ़ शहरिन व लम यन्ज़इषियाब वस्सलाह फ़क़ालतिसुहाबतु या लैत लन उम्न तवीलन हत्ता नुकातिल मिस्लहू फ़नज़लत हाज़िहिल आयतु व अख़्बर (ﷺ) इन्न लैलतल्क्रद्री ख़ैरुम्मिन अल्फ़ि शहर अल्लज़ी लबिसस्सलाह फ़ीहा शम्सून फ़ी सबीलिल्लाहि इला आख़िरिही ज़करल्लेनी या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी इस्राईल में से एक शख्स का ज़िक्र फ़र्माया जिसने एक हजार महीने तक अल्लाह की राह में जिहाद किया था। उसको सुनकर मुसलमानों को बेहद तअज्जुब हुआ, इस पर ये सूरह नाज़िल हुई। मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि पहले ज़माने में एक शमसून नामी नबी थे, जो एक हजार महीने तक अल्लाह के दीन के लिये जिहाद करते रहे और उस तमाम मुद्त में उन्होंने अपने हथियार जिस्म से नहीं उतारे, ये सुनकर सहाब-ए-किराम (रज़ि.) ने भी इस तवील उम्न के लिये तमन्ना की ताकि वो भी उस तरह ख़िदमते इस्लाम करें। इस पर ये सूरह नाज़िल हुई और बतलाया गया कि तुमको सिर्फ़ एक रात ऐसी दी गई जो इबादत के लिये एक हजार माह से बेहतर और अफ़जल है।

2017. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा कि हमको अबू सुहैल ने बयान किया, उनसे उनके बाप मालिक बिन अबी आमिर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क्रद्र की रात को रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़रातों में तलाश करो। (दीगर मक़ाम : 2019, 2020)

2018. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम और अब्दुल अज़ीज़ दरावदी ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन हाद ने, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलाम ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान के उस अशरे में ए'तिकाफ़ किया करते जो महीने के बीच में पड़ता है। बीसरातों के गुज़र जाने के बाद जब इक्कीसवीं रात आती तो शाम को आप घर वापस आ जाते। जो लोग आपके साथ ए'तिकाफ़ में होते वो भी अपने घरों में वापस आ जाते। एक रमज़ान में आप जब ए'तिकाफ़ किये हुए थे तो उस रात में भी (मस्जिद ही में) मुक़ीम रहे जिसमें आपकी आदत घर आ जाने की थी, फिर आपने लोगों को ख़ुत्बा दिया और जो कुछ अल्लाह पाक ने चाहा, आपने लोगों

۲۰۱۷- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((تَحَرَّوْا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْوَتْرِ مِنَ الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ)). (طرفاء في : ۲۰۱۹, ۲۰۲۰)

۲۰۱۸- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ خَمْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالتِّرَاوُزِيُّ عَنْ يَزِيدَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُجَاوِرُ فِي رَمَضَانَ الْمَشْرَاقِي فِي وَسْطِ الشَّهْرِ، فَإِذَا كَانَ حِينَ يُنْصَبُ مِنْ عِشْرِينَ لَيْلَةً تَمْضِي وَتَسْتَقْبِلُ إِحْدَى وَعِشْرِينَ رَجَعَ إِلَى مَسْكَنِهِ وَرَجَعَ مَنْ كَانَ يُجَاوِرُ مَعَهُ، وَأَنَّهُ أَقَامَ فِي شَهْرِ جَاوَرَ فِيهِ اللَّيْلَةُ الَّتِي كَانَ

को उसका हुक्म दिया। फिर फ़र्माया कि मैं इस (दूसरे) अशरे में ए'तिकाफ़ किया करता था। लेकिन अब मुझ पर ये ज़ाहिर हुआ है कि अब इस आखिरी अशरे में मुझे ए'तिकाफ़ करना चाहिए। इसलिये जिसने मेरे साथ ए'तिकाफ़ किया है वो अपने मुअतकफ़ ही में ठहरा रहे। और मुझे ये रात (शबे क़द्र) दिखाई गई लेकिन फिर भुला दी गई। इसलिये तुम लोग उसे आखिरी अशरे (की त्ताक़ रातों) में तलाश करो। मैंने (ख़्वाब में) अपने को देखा कि उस रात कीचड़ में सज्दा कर रहा हूँ। फिर उस रात आसमान पर बादल हुआ और बारिश बरसी, नबी करीम (ﷺ) के नमाज़ पढ़ने की जगह (छत से) पानी टपकने लगा। ये इक्कीसवीं रात का ज़िक्र है। मैंने खुद अपनी आँखों से देखा कि आप (ﷺ) सुबह की नमाज़ के बाद वापस हो रहे थे और आपके चेहरा मुबारक पर कीचड़ लगी हुई थी।

(राजेअ: 669)

2019. मुझसे मुहम्मद बिन मुन्नान ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या क़ज़ान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, (क़द्र की रात को) तलाश करो। (राजेअ: 2017)

जिसकी सूरत ये कि आखिरी अशरा की त्ताक़ रातों में जागो और इबादत करो।

2020. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया। उन्होंने कहा हमें अब्दह बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके वालिद (इर्वा बिन जुबैर) ने और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान के आखिरी अशरे में ए'तिकाफ़ करते और फ़र्माते कि रमज़ान के आखिरी अशरे में क़द्र की रात को तलाश करो।

2021. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे इब्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़द्र की रात

يَرْجِعُ فِيهَا، فَخَطَبَ النَّاسَ فَأَمَرَهُمْ مَا شَاءَ اللَّهُ، ثُمَّ قَالَ: «كَنتُ أَجَاوِرُ هَذِهِ الْقَشْرَ، ثُمَّ قَدْ بَدَأَ لِي أَنْ أَجَاوِرَ هَذِهِ الْقَشْرَ الْأَوَّاعِ، فَمَنْ كَانَ اشْتَكَفَ مِنِّي فَلْيَبْتَ فِي مُنْتَكَبِهِ، وَقَدْ أُرِيتُ هَذِهِ اللَّيْلَةَ، ثُمَّ أُنْسِيَهَا، فَابْتَغُوا فِي الْقَشْرِ الْأَوَّاعِ، وَابْتَغُوا فِي كُلِّ وَتَرٍ، وَقَدْ رَأَيْتُي أَسْجُدُ فِي مَاءٍ وَطِينٍ)). فَاسْتَهَلَّتِ السَّمَاءُ فِي بَلَدِكَ اللَّيْلَةَ فَانْطَرَتِ، فَوَسَّفَ الْمَسْجِدُ فِي مُصَلَّى النَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةَ إِحْدَى وَعِشْرِينَ فَبَصُرْتُ عَيْنِي، نَظَرْتُ إِلَيْهِ أَنْصَرَفَ مِنْ الصُّبْحِ وَوَجْهُهُ مُنْتَلَبِيءٌ طِينًا وَمَاءً)).

[راجع: ٦٦٩]

٢٠١٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «(الْتَمِسُوا...)» [راجع: ٢٠١٧]

٢٠٢٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُجَاوِرُ فِي الْقَشْرِ الْأَوَّاعِ مِنْ رَمَضَانَ وَيَقُولُ: «(تَحَرَّوْا لَيْلَةَ الْقَشْرِ فِي الْقَشْرِ الْأَوَّاعِ مِنْ رَمَضَانَ))».

٢٠٢١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

को रमज़ान के आखिरी अशरे में तलाश करो, जब नौ रातें बाकी रह जाएँ या पाँच रातें बाकी रह जाएँ। (या'नी 21 23 25वीं रातों में क़द्र की रात को तलाश करो)

(दीगर मक़ाम : 2022)

2022. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी अल्-अस्वद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू मिज़लज़ और इक्दिमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़द्र की रात रमज़ान के (आखिरी) अशरे में पड़ती है। जब नौ रातें गुज़र जाएँ या सात रातें बाकी रह जाएँ। आपकी मुराद क़द्र की रात से थी।

अब्दुल वहहाब ने अय्यूब और ख़ालिद से बयान किया, उनसे इक्दिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि क़द्र की रात को चौबीस तारीख़ (की रात) में तलाश करो। (राजेअ : 2021)

**तशरीह :** इस हदीष पर क़स्तलानी (रह.) वग़ैरह की मुख़्तसर तशरीह ये है, फ़ी अर्बइव्व इशरीन मिन रमज़ान व हिय लैलतु इन्ज़ालिल कुआनि वस्तशकल ईरादु हाज़ल हदीषि हुना लिअन्नत्तर्जुमत लिऔतारिन व हाज़ा शफ़उन व उजीब बिअन्नल मुराद अल्लमिसूहा फ़ी तमामि अर्बअतिव्व इशरीन व हिय लैलतुल ख़ामिस वल इशरीन अला अन्नल बुख़ारी रहिमहुल्लाहु क़ज़ीरम्मा यज़कूरु तर्जुमतन व यसकु फ़ीहा मा यकूनु बैनहू व बैनत्तर्जुमति अदना मुलाबसतिन या'नी रमज़ान शरीफ़ की चौबीसवीं रात जिसमें कुआन मजीद का नुज़ूल शुरू हुआ और यहाँ इस हदीष को लाने से ये मुश्किल पैदा हुई कि तर्जुम-ए-बाब त्राक़ रातों के लिये है। और ये चौबीसवीं रात त्राक़ नहीं है बल्कि शिफ़ा है और इस मुश्किल का ज़वाब ये दिया गया कि मुराद ये है कि चौबीसवीं तारीख़ रमज़ान को पूरा करके आने वाली रात में लैलतुल क़द्र को तलाश करो। और वो पच्चीसवीं रात होती है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ये आदत शरीफ़ा है कि वो अक़षर अपने तराजिम के तहत ऐसी अह्मदीष ले आते हैं। जिनमें किसी न किसी तरह बाब से अदना से अदना मुनासबत भी निकल सकती है।

मुतर्जिम कहता है कि यहाँ भी हज़रत इमाम (रह.) ने बाब में फिल्वित्री मिनल अस्सि का इशारा उसी जानिब किया है कि अगरचे रिवायते इब्ने अब्बास (रज़ि.) में चौबीसवीं तारीख़ का ज़िक़्र है। मगर उससे मुराद यही है कि उसे पूरा करके पच्चीसवीं रात में जो वित्र है क़द्र की रात को तलाश करो। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

3034. हमसे मुहम्मद बिन मुघत्रा ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन हारिष ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे उबादा बिन स़ामित (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें क़द्र की रात की ख़बर देने के लिये तशरीफ़ ला रहे थे कि दो मुसलमान

أَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْتَمِسُوهُمَا فِي الْفَنَرِ الْأَوَّاعِ مِنْ رَمَضَانَ لَيْلَةُ الْفَنَرِ فِي تَابِعَةِ ثَقَفٍ، فِي سَابِعَةِ ثَقَفٍ، فِي خَامِسَةِ ثَقَفٍ)). [طرمه في : ٢٠٢٢]۔

٢٠٢٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي الْأَسْوَدِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ وَعِكْرِمَةَ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((هِيَ فِي الْفَنَرِ فِي سَبْعِ يَمَضِينَ أَوْ فِي سَبْعِ يَمَضِينَ)). يَمْنَى لَيْلَةُ الْفَنَرِ۔

تَابِعَةُ عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ أَيُّوبَ، وَعَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، ((الْتَمِسُوا فِي أَرْبَعٍ وَعَشْرِينَ)). [راجع : ٢٠٢١]

٢٠٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمِيدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: غَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ لِنَحْبِرَنَا بِلَيْلَةِ الْفَنَرِ۔

आपस में कुछ झगड़ा करने लगे। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं आया था कि तुम्हें क़द्र की रात बता दूँ लेकिन फ़लाँ और फ़लाँ ने आपस में झगड़ा कर लिया। पस उसका इल्म उठा लिया गया। और उम्मीद यही है कि तुम्हारे हक़ में यही बेहतर होगा। पस अब तुम उसकी तलाश (आखिरी अशरे की) नौ या सात या पाँच (की रातों) में किया करो। (राजेअ: 49)

### बाब 5 : रमज़ान के आखिरी अशरे में ज़्यादा मेहनत करना

2024. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन ज़ययना ने बयान किया, उनसे अबू यज़फ़र ने बयान किया, उनसे अबुजुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (रमज़ान का) आखिरी अशरा आता तो नबी करीम (ﷺ) अपना तहबन्द मज़बूत बाँधते (या'नी अपनी कमर पूरी तरह कस लेते) और उन रातों में आप ख़ुद भी जागते और अपने घरवालों को भी जगाया करते थे।

**तशरीह:** कमर कस लेने का मतलब ये कि आप इस अशरे में इबादते इलाही के लिये ख़ास मेहनत करते। ख़ुद जागते घरवालों को जगाते और रात भर इबादते इलाही में मशगूल रहते। और औहज़रत (ﷺ) का ये सारा अमल ता'लीमे उम्मत के लिये था। अल्लाह तआला ने कुर्आन पाक में फ़र्माया, लक़द कान लकुम फ़ी रसूलिह्माह उस्वतुन हसना (अल् अहज़ाब : 21) ऐ ईमानवालों! अल्लाह के रसूल (ﷺ) तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना हैं। उनकी इक़्तिदा करना तुम्हारी सआदतमन्दी (सौभाग्य) है। यूँ तो हमेशा ही इबादते इलाही करना बड़ा फ़वाब का काम है लेकिन रमज़ान के आखिरी अशरे में इबादते इलाही करना बहुत ही बड़ा करे फ़वाब है। लिहाज़ा इन अय्याम में जिस क़द्र भी इबादत हो सके ग़नीमत है।

فَلَاخَى زَخْلَانٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالَ: «خَرَجْتُ لِأَخْبِرَكُمْ بِهَذِهِ النَّبِيَّةِ، فَلَاخَى فَلَانٌ وَفَلَانٌ فَرُفِقْتُ، وَعَسَى أَنْ يَكُونَ خَيْرًا لَكُمْ، فَاتَّبَعُونَا فِي النَّاسِغَةِ وَالسَّابِقَةِ وَالْخَامِسَةِ». [راجع: 49]

5- بَابُ الْقَمَلِ فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ

2024- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ أَبِي يَحْيَى عَنْ أَبِي الطُّحَيْفِيِّ عَنْ مُسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ وَحَبِيبِ اللَّهِ عَنْهَا قَالَتْ: «كَانَ النَّبِيُّ إِذَا دَخَلَ الْعَشْرَ شَدَّ مِزْرَهُ، وَأَحْيَا لَيْلَهُ، وَاتَّقَطَ أَهْلُهُ».

## 33. किताबुल ए'तिकाफ़

# किताब ए'तिकाफ़ के मसाइल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : रमज़ान के आखिरी अशरे में ए'तिकाफ़ करना और ए'तिकाफ़ हर एक मस्जिद में दुरुस्त है

1- بَابُ الْإِغْتِكَافِ فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ وَالْإِغْتِكَافِ فِي الْمَسَاجِدِ كُلِّهَا

क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है, जब तुम मसाजिद में ए' तिकाफ़ किये हुए हो तो अपनी बीवियों से हमबिस्तरी न करो, ये अल्लाह के हुदूद हैं, इसलिये उन्हें (तोड़ने के) क़रीब भी न जाओ, अल्लाह तआला अपने अहकामात लोगों के लिये इसी तरह बयान फ़र्माता है ताकि वो (गुनाह से) बच सकें। (अल बक़र : 187)

يَقُولُ تَعَالَى: ﴿وَلَا تَبَايَرُوا فِي مَسَاجِدِ اللَّهِ فَتَكُونُوا كَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهَتِهِمْ كَارِهِونَ﴾ [البقرة : 187] .

**तशरीह:** हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, अलइतिकाफ़ लुगतन लुजूमुशरैइ व हब्सुन्नफ़िस अलैहि व शअन अल्मक़ामु फिल्मस्जिदि मिन शख़िस्सिन मख़सूसिन अला सिफ़तिन मख़सूसतिन व लैस बिवाजिबिन इज्माअन इल्ला अला मन नज़रहू व क़ज़ा मन शरअ फ़ीहि फ़क़त अहू आमिदन इन्द क़ौमिन वख़्तुलिफ़ फ़ी इश्तिरातिस्सौमि लहू अल्ख़ (फ़तहूल बारी) या'नी ए' तिकाफ़ के लम्बी (शाब्दिक) मा'नी किसी चीज़ को अपने लिये लाज़िम कर लेना और अपने नफ़्स को उस पर मुक़य्यद (क़ैद या पाबन्द) कर देना और शरअो मा'नी में किसी भी मस्जिद में किसी मुकर्र आदमी की तरफ़ से किसी मख़सूस तरीक़े के साथ किसी जगह को लाज़िम कर लेना। और ये ए' तिकाफ़ इज्माअी तौर पर वाजिब नहीं है। हाँ कोई अगर नज़्र माने या कोई शुरू करे मगर दरम्यान में क़स्दन (जान बूझकर) छोड़ दे तो उन पर अदायगी वाजिब है और रोज़े की शर्त के बारे में इख़ितलाफ़ है जैसा कि आगे आएगा।

ए' तिकाफ़ के लिये मस्जिद का होना शर्त है जो आयते कुर्आनी, वअन्तुम आकिफ़ूना फिल्मसाजिद (अल बक़र : 187) से शाबित है। व अजाज़ल हनफ़िय्यतु लिल्मअर्ति अन तअतकिफ़ फ़ी मस्जिदि बैतिहा व हुवल मकानुल मुअहु लिस्सलाति फ़ीहि (फ़तह) या'नी इन्फ़िया ने औरतों के लिये ए' तिकाफ़ जाइज़ रखा है इस सूत्र में कि वो अपने घरों की उन जगहों में ए' तिकाफ़ करें जो जगह नमाज़ के लिये मख़सूस की हुई होती हैं। इमाम जुहरी और सलफ़ की एक जमाअत ने ए' तिकाफ़ को जामेअ मस्जिद के साथ ख़ास किया है। इमाम शाफ़िई (रह.) का भी तक्ज़ीबन ऐसा ही इशारा है। और ये मुनासिब भी है ताकि मुअतकिफ़ आसानी के साथ जुम्आ की अदायगी भी कर सके। रमज़ान शरीफ़ के पूरे आखिरी अशरे में ए' तिकाफ़ में बैठना मसनून है। यूँ एक दिन एक रात या और भी कोई मुद्दत के लिये बैठने की निव्यत करे तो उसे भी बक़द्रे अमल प्रवाब मिलेगा।

सुनन अबू दाऊद में हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि अस्सुन्नतु अलल मुअतकिफ़ि अल्ला यऊद मरीज़न व ला यशहदु जनाज़तन व ला यमस्सु इम्मातन व ला युबाशिरुहा व ला यख़रुजु लिहाजतिन इल्ला लिमा बुद् मिन्हु या'नी मुअतकिफ़ के लिये सुन्नत है कि वो किसी मरीज़ की इयादत के लिये न जाए और न किसी जनाज़े पर हाज़िर हो। और न अपनी औरत को छुए, न उससे मुबाशरत करे और किसी हाज़त के लिये अपनी जगह से बाहर न निकले लेकिन जिसके लिये निकलना ज़रूरी हो। जैसा कि खाना-पीना या क़ज़ा-ए-हाज़ात के लिये जाना। अगर मुअतकिफ़ ऐसे कामों के लिये निकला और मस्जिद से खारिज ही वुजू करके वापस आ गया तो उसके ए' तिकाफ़ में कोई ख़लल न होगा, बाकी उमूर जाइज़ व नाजाइज़ इमाम बुखारी (रह.) ने अपने अब्बाबे मुतफ़रिक्का में ज़िक्क़ फ़र्मा दिये हैं। अल्मुहदिषुल कबीर हज़रत मौलाना अब्दुरहमान मुबारकपुरी (रह.) ने ए' तिकाफ़ के लिये जामेअ मस्जिद को मुख़्तार क़रार दिया है। (तुहफ़तुल अहवज़ी, जिल्द 2 पेज नं. 72)

2025. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे यूनुस ने, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रमज़ान के आखिरी अशरे में ए' तिकाफ़ करते थे।

2026. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया,

٢٠٢٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ أَنَّ مَالِكًا أَخْبَرَهُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَكَفَّفُ الْفَيْشَرِ الْأَوَّخِرَ مِنْ رَمَضَانَ)).

٢٠٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ



उन्होंने कहा कि हमसे लैस बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा बिन जुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपनी वफ़ात तक बराबर रमज़ान के आख़िरी अशरे में ए'तिकाफ़ करते रहे। और आप (ﷺ) के बाद आप (ﷺ) की बीवियाँ ए'तिकाफ़ करती रहीं।

2027. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन हाद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिष तैमी ने बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान के दूसरे अशरे में ए'तिकाफ़ किया करते थे। एक साल आप (ﷺ) ने उन ही दिनों में ए'तिकाफ़ किया, और जब इक्कीसवीं तारीख़ की रात आई। ये वो रात है जिसकी सुबह को आप (ﷺ) ए'तिकाफ़ से बाहर आ जाते थे, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने मेरे साथ ए'तिकाफ़ किया हो वो अब आख़िरी अशरे में भी ए'तिकाफ़ करे। मुझे ये रात (ख़वाब में) दिखाई गई, लेकिन फिर भुला दी गई। मैंने ये भी देखा कि उसी की सुबह मैं कीचड़ में सज़्दा कर रहा हूँ, इसलिये तुम लोग उसे आख़िरी अशरे की हर ताक़ रातों में तलाश करो। चुनौचे उसी रात बारिश हुई। मस्जिद की छत चूँकि ख़जूर की शाख़ से बनी थी इसलिये टपकने लगी और ख़ुद मैंने अपनी आँखों से देखा कि इक्कीसवीं की सुबह को रसूलुल्लाह (ﷺ) की पेशानी मुबारक पर कीचड़ लगी हुई थी।

(राजेअ : 669)

बाब 2 : अगर हैज़ वाली औरत उस मर्द के सर में

حَدَّثَنَا عَنْ اللَّيْثِ غَقِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَتَكَبَّرُ الْعَشْرَ الْأَوَّلَ مِنْ رَمَضَانَ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللَّهُ: ثُمَّ اغْتَسَفَ أَزْوَاجُهُ مِنْ بَغْلِهِ)).

٢٠٢٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْهَادِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْخَارِثِ التَّحْمِي عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَتَكَبَّرُ فِي الْعَشْرِ الْأَوَّلِ مِنْ رَمَضَانَ، فَاغْتَسَفَ عَامًا حَتَّى إِذَا كَانَ لَيْلَةً إِحْدَى وَعِشْرِينَ - وَهِيَ اللَّيْلَةُ الَّتِي يُخْرُجُ صَبِيحَتُهَا مِنْ عَيْكَالِهِ - قَالَ: ((مَنْ كَانَ اغْتَسَفَ فِيهَا فَلْيَتَكَبَّرِ الْعَشْرَ الْأَوَّلَ، وَقَدْ أَرَبْتُ هَذَا اللَّيْلَةَ ثُمَّ أُنِيفْتُهَا، وَقَدْ رَأَيْتُنِي أَسْجُدُ فِي مَاءٍ وَطَيْنٍ مِنْ صَبِيحَتِهَا، فَاتَّبِعُوهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَّلِ، وَاتَّبِعُوهَا فِي كُلِّ وَتْرٍ)). فَمَطَرَتِ السَّمَاءُ يَلُكُ اللَّيْلَةَ، وَكَانَ الْمَسْجِدُ عَلَى غَرِيثٍ، فَوَكَّفَ الْمَسْجِدَ، فَبَصُرْتُ غَنَائِي رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى جَنْبَيْهِ أَثَرُ الْمَاءِ وَالطَّيْنِ مِنْ صَبْحِ إِحْدَى وَعِشْرِينَ)). [راجع : ٦٦٩]

٢- بَابُ الْحَائِضِ تَوَجَّلُ الْمُتَكَبِّرِ

## कँधा करे जो ए' तिकाफ में हो

2028. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वी ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे बाप ने ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मस्जिद में मुअतकिफ़ होते और सरे मुबारक मेरी तरफ़ झुका देते फिर मैं उसमें कँधा कर देती, हालाँकि मैं उस वक़्त हैज़ से हुआ करती थी। (बाब और हदीष में मुताबिक़त ज़ाहिर है) (राजेअ: 295)

## बाब 3 : ए' तिकाफ़ वाला बेज़रूरत घर में न जाए

2029. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे लैय़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वी और उमर ह बन्ति अब्दुर्रहमान ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, औहज़रत (ﷺ) मस्जिद से (ए' तिकाफ़ की हालत में) सरे मुबारक मेरी तरफ़ हुज़े के अंदर कर देते और मैं उसमें कँधा कर देती थी। हुज़ूर (ﷺ) जब मुअतकिफ़ होते तो बिला हाज़त घर में तशरीफ़ नहीं लाते थे।

(दीगर मक़ाम : 2033, 2034, 2041, 2045)

**तशरीह :** अल्लामा अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) मरहूम फ़र्माते हैं, फ़स्सरहुज़ुहरी बिल्बोलि वलगाइति व क़द इत्फ़क़ू अला इस्तिस्नाइहिमा (तुहफ़तुल अहवज़ी) या'नी इमाम जुहरी ने हाज़ात की तफ़सीर पैशाब और पाख़ाना से की है। और उस पर उनका इत्तिफ़ाक़ है कि इन हाज़ात के लिये घर जाना मुस्तफ़्ना है और मुअतकिफ़ इन हाज़ात को दूर करने के लिये जा सकता है।

## बाब 4 : ए' तिकाफ़ वाला सर या बदन धो सकता है

2030. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़्ज़ी ने, उनसे अस्वद ने, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हाइज़ा होती फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) मुझे अपने बदन से लगा लेते। और आप (ﷺ)

۲۰۲۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَغْتَسِلُ رَأْسَهُ وَهُوَ مُجَاوِرٌ فِي الْمَسْجِدِ فَأَرْجَلُهُ وَأَنَا حَائِضٌ)).

[راجع: ۲۹۵]

۳- بَابُ الْمُتَكَيِّفِ لَا يَدْخُلُ الْبَيْتَ إِلَّا لِحَاجَةٍ

۲۰۲۹- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ وَعُمَرَةَ بَنَاتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوَّجَ النَّبِيَّ ﷺ قَالَتْ ((وَأِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيَدْخُلُ عَلَيَّ رَأْسَهُ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَأَرْجَلُهُ، وَكَانَ لَا يَدْخُلُ الْبَيْتَ إِلَّا لِحَاجَةٍ إِذَا كَانَ مُتَكَيِّفًا)).

[أطرافه في: ۲۰۳۳، ۲۰۳۴، ۲۰۴۱]

[۲۰۴۵]

۴- بَابُ غَسْلِ الْمُتَكَيِّفِ

۲۰۳۰- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَمْسَحُ بِيَدَيْهِ وَأَنَا حَائِضٌ)).

मुअतकिफ़ होते और मैं हाइज़ा होती। (राजेअ: 295)

[راجع: 295]

2031. इसके बावजूद आप सरे मुबारक (मस्जिद से) बाहर कर देते और मैं उसे धोती थी।

۲۰۳۱- ((وَكَانَ يُخْرِجُ رَأْسَهُ مِنَ الْمَسْجِدِ وَهُوَ مُتَكَيِّفٌ فَأَغْبَيْتُهُ وَأَنَا حَائِضٌ)). [راجع: 295]

(राजेअ: 295)

मक़ामे ए' तिकाफ़ में बवक्ते ज़रूरत मुअतकिफ़ के लिये सर या बदन का धोना जाइज़ है। इस हदीष से हज़रत इमाम (रह.) ने ये मसला प्राबित किया है।

## बाब 5 : सिर्फ़ रातभर के लिये ए' तिकाफ़ करना

2032. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया, मैंने जाहिलियत में ये नज़्र मानी थी कि मस्जिदे हराम में एक रात का ए' तिकाफ़ करूँगा। आपने फ़र्माया कि अपनी नज़्र पूरी कर।

(दीगर मक़ाम: 2043, 3144, 4320, 6697)

## 5- بَابُ الْإِعْكَافِ لَيْلًا

۲۰۳۲- حَدَّثَنَا مُسْنَدُ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : ((أَنَّ عُمَرَ سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: كُنْتُ نَزَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَتَكَيَّفَ لَيْلَةً فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، قَالَ: ((أَوْفِ بِنَزْرِكَ)).

[أطرافه في: 2043, 3144, 4320, 6697]

[6697]

नज़्र व नियाज़ जो ख़ालिस् अल्लाह के लिये हो और जाइज़ काम के लिये, जाइज़ तौर पर मानी गई हो उसका पूरा करना वाजिब है। ए' तिकाफ़ भी ऐसे उमूर में दाख़िल है अगर कोई ग़लत नज़्र माने जैसा कि एक शख्स ने पैदल चलकर हब्ब करने की नज़्र मानी थी, आप (ﷺ) ने उसे बातिल करार दिया। इस तरह दीगर ग़लत नज़्रे मन्नत भी तोड़ी जानी ज़रूरी है। ग़ैरुल्लाह के लिये कोई नज़्र मन्नत मानना शिर्क में दाख़िल है।

## बाब 6 : औरतों का ए' तिकाफ़ करना

2033. हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल दौसी ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह्या क़त्तान ने, उनसे अम्म ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान के आख़िरी अशरे में ए' तिकाफ़ किया करते थे। मैं आपके लिये (मस्जिद में) एक खैमा लगा देती। और आप सुबह की नमाज़ पढ़ के उसमें चले जाते थे। फिर हफ़सा (रज़ि.) ने भी आइशा (रज़ि.) से खैमा खड़ा करने की (अपने ए' तिकाफ़ के लिये) इजाज़त चाही। आइशा (रज़ि.) ने इजाज़त दे दी और उन्होंने एक खैमा खड़ा कर लिया। जब ज़ैनब बन्ते जहश (रज़ि.) ने देखा तो उन्होंने भी

## 6- بَابُ إِعْكَافِ النِّسَاءِ

۲۰۳۳- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَتَكَيَّفُ فِي الْمَشْرِقِ الْأَوَّخِرِ مِنْ رَمَضَانَ، فَكُنْتُ أَضْرِبُ لَهُ خِيَاءً فَيُصَلِّي الصُّبْحَ ثُمَّ يَدْخُلُهُ. فَاسْتَأْذَنْتُ حَفْصَةَ عَائِشَةَ أَنْ تَضْرِبَ خِيَاءً، فَأَذِنَتْ لَهَا فَضَرَبَتْ خِيَاءً. فَلَمَّا

(अपने लिये) एक खैमा खड़ा कर लिया। सुबह हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कई खैमे देखे तो फर्माया, ये क्या है? आपको उनकी हकीकत की खबर दी गई। आपने फर्माया, क्या तुम समझते हो ये खैमे षबाब की निव्यत से खड़े किये गये हैं। पस आपने इस महीना (रमजान) का ए'तिकाफ छोड़ दिया और शव्वाल के अशरे का ए'तिकाफ किया। (राजेअ: 2029)

رَأَى زَيْنَبُ ابْنَةَ جَعْفَرٍ ضَرَبَتْ خِيَاءَ  
آخَرَ، فَلَمَّا اصْبَحَ النَّبِيُّ ﷺ رَأَى الْآخِيَةَ  
فَقَالَ: ((مَا هَذَا؟)) فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:  
((أَلَيْسَ تَرَوْنَ بِهِنَّ؟)) فَتَرَكَ الْاِغْتِكَافَ  
ذَلِكَ الشَّهْرَ، ثُمَّ اغْتَكَفَ عَشْرًا مِنْ  
شَوَّالٍ. [راجع: ٢٠٢٩]

**तशरीह:** काल इस्माईली फ़ीहि दलीलुन अला इतिकाफ़ि बिगैरि सौमिन लिअन्न अव्वल शव्वालिन यौमुल फ़िल्ति व सौमुहु हरामुन या'नी इस हदीष में दलील है कि बगैर रोज़े के भी ए'तिकाफ़ दुरुस्त है इसलिये कि आपने अव्वल अशरा शव्वाल में ए'तिकाफ़ किया। जिसमें यौमुल फ़िल्र भी दाख़िल है। जिसमें रोज़ा रखना मना है। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, अन्नल्मअत ला तअतकिफ़ु हत्ता तस्तअज़न ज़ौजहा व अन्नहा इज़ा इअतकफ़त बिगैरि इज़्मिही कान लहु अय्यखरिजहा व फ़ीहि जवाजु ज़र्बल अख़िबयति फिल्मस्जिदि व अन्नल अफ़ज़ल लिन्निसाइ अल्ला यअतकिफ़न फिल्मस्जिदि व फ़ीहि अन्न अव्वलल वन्निल्लजी यदख़ुलु फ़ीहिलमुअतकिफ़ु बअद सलातिस्सुब्हि व हुव क़ौलुल औज़ाई व क़ाल अइम्मतुल अर्बअतु व ताइफ़तुन यदख़ुलु क़बल गुरुबिशशमसि व उलुल हदीषि अला अन्नहु दाख़ल मिन अव्वलिल लैलि व लाकिन इन्नमा तख़ल्ला बिनफ़िसिही फिल्मकानिल्लजी अअहू लिनफ़िसिही बअद सलातिस्सुब्हि या'नी औरत अपने शौहर की इजाज़त के बगैर ए'तिकाफ़ न करे और बगैर इजाज़त ए'तिकाफ़ की सूत में शौहर को हक़ है कि वो औरत का ए'तिकाफ़ ख़त्म करा दे। और ए'तिकाफ़ के लिये मसाजिद में खैमा लगाना दुरुस्त है। और औरतों के लिये अफ़ज़ल यही है कि वो मसाजिद में ए'तिकाफ़ न करें और मुअतकिफ़ के लिये अपनी जगह में दाख़िल होने का वक़्त नमाज़े फ़ज़ के बाद का वक़्त है। ये औज़ाई का क़ौल है लेकिन चारों इमाम और एक जमाअत इलमा का क़ौल ये है कि सूरज गुरुब होने से पहले अपने मक़ाम में दाख़िल हो और हदीषे मरकूरा का मतलब उन्होंने यूँ बयान किया कि आप अव्वल रात ही में दाख़िल हो गए थे मगर जो जगह आपने ए'तिकाफ़ के लिये मख़सूस फ़र्माई थी उसमें फ़ज़ के बाद दाख़िल हुए।

### बाब 7 : मस्जिदों में खैमे लगाना

2034. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद ने, उन्हें अम्ह बन्ते अब्दुरहमान ने और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ए'तिकाफ़ का इरादा किया। जब आप (ﷺ) उस जगह तशरीफ़ लाए (या'नी मस्जिद में) जहाँ आप (ﷺ) ने ए'तिकाफ़ का इरादा किया था। तो वहाँ कई खैमे मौजूद थे। आइशा (रज़ि.) का भी, हफ़्सा (रज़ि.) का भी और ज़ैनब (रज़ि.) का भी, इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम ये समझते हो कि उन्होंने षबाब की निव्यत से ऐसा किया है। फिर आप (ﷺ) वापस तशरीफ़ ले गए और ए'तिकाफ़ नहीं किया बल्कि शव्वाल के अशरे में ए'तिकाफ़ किया।

(राजेअ: 2029)

٧- بَابُ الْاُخْيَةِ فِي الْمَسْجِدِ  
٢٠٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ  
أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ  
خَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((رَأَى النَّبِيُّ ﷺ أَرَادَ أَنْ  
يُغْتَكِفَ، فَلَمَّا انْصَرَفَ إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي  
أَرَادَ أَنْ يَغْتَكِفَ إِذَا أُخْيَةٌ : خِيَاءُ عَائِشَةَ،  
وَعِيَاءُ خَفْصَةَ، وَخِيَاءُ زَيْنَبَ. فَقَالَ:  
((أَلَيْسَ تَرَوْنَ بِهِنَّ؟)) ثُمَّ انْصَرَفَ فَلَمْ  
يُغْتَكِفَ، حَتَّى اغْتَكَفَ عَشْرًا مِنْ  
شَوَّالٍ. [راجع: ٢٠٢٩]

## बाब 8 : क्या मुअतकिफ़ अपनी ज़रूरत के लिये मस्जिद के दरवाज़े तक जा सकता है?

2035. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझे इमाम जैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन ने ख़बर दी और उन्हे नबी करीम (ﷺ) की पाक बीवी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो रमज़ान के आख़िरी अशरा में जब रसूले करीम (ﷺ) ए'तिकाफ़ में बैठे हुए थे, आप (ﷺ) से मिलने मस्जिद में आई थोड़ी देर तक बातें कीं फिर वापस होने के लिये खड़ी हुई। नबी करीम (ﷺ) भी उन्हें पहुँचाने के लिये खड़े हुए। जब वो उम्मे सलमा (रज़ि.) के दरवाज़े से करीब वाले मस्जिद के दरवाज़े पर पहुँचे, तो दो अंसारी आदमी उधर से गुज़रे और नबी करीम (ﷺ) को सलाम किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया किसी सोच की ज़रूरत नहीं, ये तो (मेरी बीवी) सफ़िया बिनते हय्यि (रज़ि.) हैं। उन दोनों सहाबियों ने अर्ज़ किया, सुबहानल्लाह! या रसूलल्लाह (ﷺ)! उन पर आपका जुम्ला बड़ा शाक़ गुज़रा। आपने फ़र्माया कि शैतान ख़ून की तरह इंसान के बदन में दौड़ता रहता है। मुझे ख़तरा हुआ कि कहीं तुम्हारे दिलों में वो कोई बदगुमानी न डाल दे।

(दीगर मक़ाम : 2038, 2039, 3101, 3281, 6219, 7171)

## ۸- بَابُ هَلْ يَخْرُجُ الْمُتَكَيِّفُ لِحَوَائِجِهِ إِلَى بَابِ الْمَسْجِدِ؟

۲۰۳۵- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ صَفِيَّةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْ أَنَّهَا جَاءَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ تَوَرُّدَهُ فِي اغْتِكَافِهِ فِي الْمَسْجِدِ فِي الْفِطْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ، فَحَدَّثَتْ عَنْهُ سَاعَةً ثُمَّ قَامَتْ تَقْلِبُ لِقَامِ النَّبِيِّ ﷺ مَعَهَا يَقْلِبُهَا، حَتَّى إِذَا بَلَغَتْ بَابَ الْمَسْجِدِ عِنْدَ بَابِ أُمِّ سَلَمَةَ مَرَّ رَجُلَانِ مِنَ الْأَنْصَارِ فَسَلَّمَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ لَهُمَا النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى رِسْلِكُمَا، إِنَّمَا هِيَ صَفِيَّةُ بِنْتُ حُصَيْنٍ)). فَقَالَا: سُبْحَانَ اللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَكَبَّرَ عَلَيْهِمَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَتْلَعُ مِنَ الْإِنْسَانِ مِتْلَعُ الدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَقْلِبَ فِي قُلُوبِكُمَا شَيْئًا)).

[أُطْرَافُهُ لِي : ۲۰۳۸، ۲۰۳۹، ۳۱۰۱، ۶۲۱۹، ۷۱۷۱]

[۳۲۸۱، ۶۲۱۹، ۷۱۷۱]

**तशरीह :** इस हदीस से प्राबित हुआ कि मुअतकिफ़ ज़रूरी काम के लिये मक़ामे ए'तिकाफ़ से बाहर निकल सकता है। आप (ﷺ) हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के साथ इसलिये निकले कि वो अकेली रह गई थीं। कहते हैं उनका मकान भी मस्जिद से दूर था कुछ रिवायतों में उन देखने वालों के बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने आगे बढ़ जाना चाहा था, आँहज़रत (ﷺ) ने हक़ीक़ते हाल से आगाह करने के लिये उनको बुलाया। मा'लूम हुआ कि किसी मुम्किन शक को दूर कर देना बहरहाल अच्छा है।

## बाब 9 : आँहज़रत (ﷺ) के ए'तिकाफ़ का और बीसवीं की सुबह को आपका ए'तिकाफ़ से निकलने का बयान

## ۹- بَابُ الْإِغْتِكَافِ. وَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ صَبِيحَةَ عِشْرِينَ

2036. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने हारून बिन इस्माईल से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे अली बिन मुबारक ने बयान किया, कहा कि मुझसे यहा बिन अबी कषीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से सुना, मैंने उनसे पूछा था कि क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से क़द्र की रात का ज़िक्र सुना है? उन्होंने कहा कि हाँ! हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रमज़ान के दूसरे अशरे में ए' तिकाफ़ किया था, अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर बीस की सुबह को हमने ए' तिकाफ़ ख़त्म कर दिया। उसी सुबह को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें ख़िताब फ़र्माया, कि मुझे क़द्र की रात दिखाई गई थी लेकिन फिर भुला दी गई, इसलिये अब उसे आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में तलाश करो। मैंने (ख़्वाब में) देखा है कि मैं कीचड़, पानी में सज्दा कर रहा हूँ। और जिन लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (उस साल) ए' तिकाफ़ किया था वो फिर दोबारा करें। चुनौचे वो लोग मस्जिद में दोबारा आ गए। आसमान में कहीं बादल का एक टुकड़ा भी नहीं था कि अचानक बादल आया और बारिश शुरू हो गई, फिर नमाज़ की तक्बीर हुई और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कीचड़ में सज्दा किया। मैंने खुद आपकी नाक और पेशानी पर कीचड़ लगा हुआ देखा।

### बाब 10 : क्या मुस्तहाज़ा औरत ए' तिकाफ़ कर सकती है?

2037. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे इब्निमा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ आप (ﷺ) की बीवियों में से एक खातून (उम्मे सलमा (रज़ि.) ने जो मुस्तहाज़ा थीं, ए' तिकाफ़ किया। वो सुखी और ज़र्दी (या'नी इस्तिहाज़ा का ख़ून) देखती थीं। अक़्बर तश्त हम

٢٠٣٦ - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ هَارُونَ بْنَ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: ((سَأَلْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ قُلْتُ: هَلْ سَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ يَذْكُرُ لَيْلَةَ الْقَدْرِ؟ قَالَ نَعَمْ، اغْتَسَفْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْعَشْرَ الْأَوْسَطَ مِنْ رَمَضَانَ، قَالَ: فَخَرَجْنَا صَبِيحَةَ عِشْرِينَ، قَالَ: فَخَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ صَبِيحَةَ عِشْرِينَ فَقَالَ: ((إِنِّي أَرَيْتُ لَيْلَةَ الْقَدْرِ، وَإِنِّي نُسَيْتُهَا، فَالْتَمِسُوهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ فِي وَتْرِ، فَإِنِّي رَأَيْتُ أَنْ أَسْجُدَ فِي مَاءٍ وَطِينٍ، وَمَنْ كَانَ اغْتَسَفَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَلْيَرْجِعْ)). فَرَجَعَ النَّاسُ إِلَى الْمَسْجِدِ. وَمَا نَرَى فِي السَّمَاءِ قُرُوعًا، قَالَ: فَجَاءَتْ سَحَابَةٌ فَمَطَرَتْ، وَأُكِنِمَتِ الصَّلَاةُ فَسَجَدَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي الطِّينِ وَالْمَاءِ، حَتَّى رَأَيْتُ الطِّينَ فِي أَرْبَعِيهِ وَجَنَهِهِ)).

### ١٠ - بَابُ اغْتِكَافِ الْمُسْتَحَاضَةِ

٢٠٣٧ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اغْتَسَفْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ امْرَأَةً مِنْ أَرْوَاجِهِ مُسْتَحَاضَةً، فَكَانَتْ تَرَى الْحُمْرَةَ وَالصُّفْرَةَ، فَرُبَّمَا وَضَعْنَا الطُّسْتَ تَحْتَهَا

उनके नीचे रख देते और वो नमाज़ पढ़ती रहती। (राजेअ: 209)

وَمِنْ نُسُلِيَّ)). [راجع: 209]

**तशरीह:** मुस्तहाज़ा वो औरत जिसको हज़ का खून बीमारी के तौर पर हर वक़्त जारी रहता हो, ऐसी औरत को नमाज़ पढ़नी होगी। मगर उसके लिये गुस्ले तहारत भी ज़रूरी है जैसा कि पहले बयान किया जा चुका है। अज़्वाजे मुतहहरात में से एक मुहतरमा बीवी उम्मे सलमा (रज़ि.) जो इस मर्ज़ में मुब्तला थीं उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के साथ ए'तिकाफ़ किया था। इसी से हज़रत इमामुल मुहदिप्पीन (रह.) ने बाब का मज़मून श्राबित किया है। बाद में जब आपने कुछ अज़्वाजे मुतहहरात के बक़रत ख़ैमे मस्जिद में ए'तिकाफ़ के लिये देखे, तो आप (ﷺ) ने सबको दूर करा दिया था।

## बाब 11 : औरत ए'तिकाफ़ की हालत में अपने शौहर से मुलाक़ात कर सकती है

2038. हमसे सईद बिन इफ़ेर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इमाम ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की पाक बीवी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी (दूसरी सनद) और इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें अली बिन हुसैन (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मस्जिद में (ए'तिकाफ़ में) थे आपके पास अज़्वाजे मुतहहरात बैठी थीं। जब वो चलने लगीं तो आपने सफ़िया बिनते हुय्यि (रज़ि.) से फ़र्माया कि जल्दी न कर, मैं तुम्हें छोड़ने चलता हूँ। उनका हुज़रा दारे उसामा (रज़ि.) में था। चुनाँचे जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके साथ निकले तो दो अंगारी सद्दाबियों से आप (ﷺ) की मुलाक़ात हुई। उन दोनों हज़रात ने नबी करीम (ﷺ) को देखा और जल्दी से आगे बढ़ जाना चाहा। लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ठहरो! इधर सुनो! ये सफ़िया बिनते हुय्यि (रज़ि.) हैं, (जो मेरी बीवी हैं) उन हज़रात ने अज़्र किया, सुबहानल्लाह! या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने फ़र्माया कि शैतान (इंसान के जिस्म में) खून की तरह दौड़ता है और मुझे ख़तरा ये हुआ कि कहीं तुम्हारे दिलों में भी कोई बुरी बात न डाल दे।

(राजेअ: 2035)

## ١١- بَابُ زِيَارَةِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا فِي اغْتِكَافِهِ

٢٠٣٨- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ : حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ أَنَّ صَفِيَّةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ ح. حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ : ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ وَعِنْدَهُ أَزْوَاجُهُ، فَوَحَنَ، فَقَالَ لَصَفِيَّةَ بِنْتِ حَمٍّ: «لَا تَعْطِلِي حَتَّى أَنْصَرَفَ مَعْلُوقٌ»)) وَكَانَتْ يَتِيهَا فِي دَارِ أَسَامَةَ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ مَعَهَا، فَلَقِيَهُ رَجُلَانِ مِنَ الْأَنْصَارِ، فَظَرَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ أَجَازَا، وَقَالَ لَهُمَا النَّبِيُّ ﷺ ((وَعَالِيَا، إِنَّهَا صَفِيَّةُ بِنْتِ حَمٍّ)) قَالَا: سُبْحَانَ اللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَخْرُجِي مِنَ الْإِنْسَانِ مَخْرَجِي الدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَلْقَى فِي أَنْفُسِكُمَا شَيْئًا)).

[راجع: 2035]

**तर्ज़ाह** ये हदीष कई सनदों के साथ कई जगह गुजर चुकी है और हज़रत इमाम (रह.) ने उससे बहुत से मसाल के लिये इस्तिम्बात फ़र्माया है। अल्लामा इब्ने हज़र उसके ज़ेल में एक जगह लिखते हैं, व फ़िल्हदीषि मिनल्फ़वाइदि इश्तिगालिलमुअतकिफ़ि बिल्उमूरिल मुबाहति मिन तशईए जाइरिही वल्क्रियामि मअहू वल्हदीषु मअगैरिही व इबाहतु खल्वतिल मुअतकिफ़ि बिज़ौजति व ज़ियारतुल इम्राति अल्मुअतकिफ़ व बयानु शफ़क़तिही (❦) अला उम्मतिही व इश्रादहुम इला मा यदफ़उ अन्हुमुल्इष्म व फ़ीहि अत्तर्हज़ु मिनत्तअर्रज़ि लिसुइज़न्नि वल इहतिकाज़ि मिन कैदिशैतानि वल इअतिज़ारि व क़ाल इब्नु दक्कीक़ अल ईद व हाज़ा मनाकिदु फ़ी हक्किल उलमाइ व मय्यक्त्तदी बिही फ़ला यज़ूज़ु लहुम अय्यफ़अलू फ़िअलन यूजिबु सूअज़न्नि बिहिम व इन कान लहुम फ़ीहि मुख़िल मुन लिअन्न ज़ालिक सबबुन इला इब्तालिल इन्तिफ़ाइ बिइल्मिहिम व मिन मम्म क़ाल बअज़ुल उलमाइ यम्बगी लिल हाकिम अय्यबय्यिन लिम्हकूमि अलैहि वज्हुल्हुकिम इज़ा कान ख़ाफ़ियन नफ़यन लिनुहमति व मिन हाहुना यज़ हफ़ ख़ताउन मय्यतजाहरु बिमुजाहरिस्सूइ व यअतज़िरू बिअन्नहू युज़रिबू बिज़ालिक अला नमिस्सी व क़द अज़ुमल्बलाउ बिहाज़स्सिन्फ़ि वल्लाहु आलामु व फ़ीहि इज़ाफ़तु बुयूति अज्वाजिन्नबिय्यि (❦) इलैहिन्न फ़ीहि जवाज़ु ख़ुर्जिल्मअंति व फ़ीहि क़ौलु सुब्हानिल्लाहि इन्दलअजबि अल्ख़ (फ़हूल बारी)

मुअत्तर मतलब ये कि इस हदीष से बहुत से फ़वाइद निकलते हैं। मसलन ये कि मुअतकिफ़ के लिये मुबाह है कि वो अपने मिलने वालों को खड़ा होकर उनको रुख़सत कर सकता है और ग़ैरो के साथ बात भी कर सकता है और उसके लिये अपनी बीवी के साथ खल्वत (एकान्त में बात करना) भी मुबाह है। या'नी इससे तंहाई में सिर्फ़ ज़रूरी और मुनासिब बातचीत करना और ए' तिकाफ़ करने वाले की औरत भी उससे मिलने आ सकती है और इस हदीष से उम्मत के लिये शफ़क़ते नबवी का भी इस्बात है और आप (❦) के ऐसे इश्राद पर भी दलील है जो कि उम्मत से गुनाहों के दफ़्न करने के बारे में हैं और इस हदीष से ये भी प्राबित हुआ कि बदगुमानी और शैतानी चालों से अपने आपको महफूज़ रखना भी बेहद ज़रूरी है। इब्ने दक्कीक़ ईद ने कहा कि इलमा के लिये बहुत ज़रूरी है कि वो कोई ऐसा काम न करे जिससे उनके हक़ में लोग बदगुमानी इस्तिज़ार कर सकें, अगरचे उस काम में उनके इख़लास भी हो। मगर बदगुमानी पैदा होने की सूरत में उनके उलूम का इन्तिफ़ाअ ख़त्म हो जाने का अन्देशा है। इसलिये कुछ इलमा ने कहा है कि हाकिम के लिये ज़रूरी है कि मुहअ अलैह पर जो उसने फ़ैसला दिया है उसकी पूरी वुजूह उसके सामने बयान कर दे ताकि वो कोई ग़लत तोहमत न लगा सके। और उससे ये भी ज़ाहिर होता है कि कोई शख्स बतौर तजर्बा भी कोई बुरा मुजाहिरा न करे। ऐसी बलाएँ आजकल आम हो रही हैं और इस हदीष में बुयूते अज्वाजुन्नबी की इज़ाफ़त का भी जवाज़ है और रात में औरतों का घरों से बाहर निकलने का भी जवाज़ प्राबित है और तअज़ुब के वक़्त सुब्हानिल्लाह कहने का प्राबूत है। वल्लाहु आलाम बिस्सवाबा

**बाब 12 : ए' तिकाफ़ वाला अपने ऊपर से किसी बदगुमानी को दूर कर सकता है**

۱۲- بَابُ هَلْ يَذْرَأُ الْمُتَكَيِّفُ عَنْ نَفْسِهِ؟

2039. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे भाई ने ख़बर दी, उन्हें सुलैमान ने, उन्हें मुहम्मद बिन अबी अतीक़ ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अली बिन हुसैन (रज़ि.) ने कि सफ़िया (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी, (दूसरी सनद) और हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा कि मैंने जुहरी से सुना। वो अली बिन हुसैन (रज़ि.) से ख़बर देते थे कि सफ़िया (रज़ि.) नबी करीम (❦) के यहाँ आईं। आप उस वक़्त ए' तिकाफ़ में थे। फिर

۲۰۳۹- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ صَفِيَّةَ أَخْبَرَتْهُ ح. حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يُخْبِرُ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ أَنَّ صَفِيَّةَ



जब वो वापस होने लगीं तो आप भी उनके साथ (थोड़ी दूर तक उन्हें छोड़ने) आए। (आते हुए) एक अंगरी महाबी (रज़ि.) ने आपको देखा। जब आँहजरत (ﷺ) की नज़र उन पर पड़ी, तो फ़ौरन आप (ﷺ) ने उन्हें बुलाया, कि सुनो! ये (मेरी बीवी) सफ़िया (रज़ि.) हैं। (सुफ़यान ने हिया सफ़यतु की बजाए कुछ दफ़ा हाज़िही सफ़यतु के अल्फ़ाज़ कहे। (उसकी वज़ाहत इसलिये ज़रूरी समझी) कि शैतान इंसान के जिस्म में ख़ून की तरह दौड़ता रहता है। मैं (अली बिन अब्दुल्लाह) ने सुफ़यान से पूछा कि ग़ालिबन वो रात को आती रही होंगी? तो उन्होंने कहा कि रात के सिवा और वक़्त ही कौनसा हो सकता है। (रजेज़: 2035)

### बाब 13 : ए' तिकाफ़ से सुबह के वक़्त बाहर आना

बाब की हदीष इस पर महमूल (आधारित) है कि आपने रातों के ए' तिकाफ़ की निय्यत की थीन दिनों की। गोया गुरुबे आफ़ताब के बाद ए' तिकाफ़ में गए और सुबह होते ही बाहर आए, अगर कोई दिनों के ए' तिकाफ़ की निय्यत करे तो तुलूअे फ़ज़ होते ही ए' तिकाफ़ में जाए और गुरुबे आफ़ताब के बाद निकल आए। (वहीदी)

2040. हमसे अब्दुर्रहमान बिन बशर ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इब्ने ज़ुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नुजैह के मामू सुलैमान अहवल ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने। सुफ़यान ने कहा और हमसे मुहम्मद बिन अमर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने, सुफ़यान ने ये भी कहा कि मुझे यकीन के साथ याद है कि इब्ने अबी लुबैद ने हमसे ये हदीष बयान की थी, उनसे अबू सलमान ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रमज़ान के दूसरे अशरे में ए' तिकाफ़ के लिये बैठे। बीसवीं की सुबह को हमने अपना सामान (मस्जिद से) उठा लिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि जिसने (दूसरे अशरे में) ए' तिकाफ़ किया है वो दोबारा ए' तिकाफ़ की जगह चले, क्योंकि मैंने आज की रात (क़द्र की रात को) ख़्वाब में देखा है। मैंने ये भी देखा कि मैं कीचड़ में सज्दा कर रहा हूँ। फिर जब

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَتَتْ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ مُغْتَكِفٌ، فَلَمَّا رَجَعَتْ مَشَى مَعَهَا، فَأَبْصَرَهُ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ، فَلَمَّا أَبْصَرَهُ دَعَاهُ فَقَالَ: ((عَلَى هَذِهِ صَفِيَّةُ)) - وَرَبَّمَا قَالَ هَذِهِ صَفِيَّةُ - فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَخْرِي مِنَ ابْنِ آدَمَ مَخْرِي الدَّمِ. قُلْتُ لِسُفْيَانَ: أَتَيْتُهُ لِيَلًا؟ قَالَ: وَهَلْ هُوَ إِلَّا لَيْلًا؟ [راجع: ٢٠٣٥]

### ١٣- بَابُ مَنْ خَرَجَ مِنْ اغْتِكَافِهِ عِنْدَ الصُّبْحِ

٢٠٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَخْوَلِ قَالَ ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ سُفْيَانُ: وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ. قَالَ: وَأُظِلُّ أَنْ ابْنَ أَبِي لَيْبٍ حَدَّثَنَا عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: ((اغْتِكَفْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْعَشْرَ الْأَوَّلَ، فَلَمَّا كَانَ صَبِيحَةَ عِشْرِينَ نَقَلْنَا مَنَاعِنَا، فَأَتَانَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَانَ اغْتِكَفَ فَلْيَرْجِعْ إِلَى مُغْتَكِفِهِ، لِأَنِّي رَأَيْتُ هَذِهِ اللَّيْلَةَ، وَرَأَيْتُنِي أَسْجُدُ فِي مَاءٍ وَطِينٍ)). فَلَمَّا رَجَعَ إِلَى مُغْتَكِفِهِ وَهَاجَتْ

अपने ए' तिकाफ़ की जगह (मस्जिद में) आप दोबारा आ गये तो अचानक बादल मँडलाए, और बारिश हुई। उस ज़ात की क़सम जिसने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा है! आसमान पर उसी दिन के आख़िरी हिस्से में बादल हुआ था। मस्जिद खज़ूर की शाखों से बनी हुई थी (इसलिये छत से पानी टपका) जब आप (ﷺ) ने नमाज़े सुबह अदा की, तो मैंने देखा कि आपकी नाक और पेशानी पर कीचड़ का अंश था। (राजेअ: 669)

السَّمَاءُ فَمَطَرْنَا، فَوَ الَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ لَقَدْ هَاجَتْ السَّمَاءُ مِنْ آخِرِ ذَلِكَ الْيَوْمِ، وَكَانَ الْمَسْجِدُ عَرِيشًا فَلَقَدْ رَأَيْتُ عَلَى أَنْفِي وَأَرْبَتَيْهِ أَثَرَ الْمَاءِ وَالطِّينِ)).

(راجع: ٦٦٩)

#### बाब 14 : शव्वाल में ए' तिकाफ़ करने का बयान

2041. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमको मुहम्मद बिन फुज़ैल बिन ग़ज़वान ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद ने, उन्हें अमरह बिनो अब्दुरहमान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हर रमज़ान में ए' तिकाफ़ किया करते। आप सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद उस जगह जाते जहाँ आपको ए' तिकाफ़ के लिये बैठना होता। राबी ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी आपसे ए' तिकाफ़ करने की इजाज़त चाही, आपने उन्हें इजाज़त दे दी, इसलिये उन्होंने (अपने लिये भी मस्जिद में) एक ख़ैमा लगा लिया। हफ़सा (रज़ि.) (नबी करीम (ﷺ) की बीवी) ने सुना तो उन्होंने भी एक ख़ैमा लगा लिया। ज़ैनब (रज़ि.) (नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत्तहहरा) ने सुना तो उन्होंने भी एक ख़ैमा लगा लिया। सुबह को जब आँहज़रत (ﷺ) नमाज़ पढ़कर लौटे तो चार ख़ैमे नज़र आए। आप (ﷺ) ने पूछा, ये क्या है? आप (ﷺ) को हज़क़ीक़ते हाल की इज़िला दी गई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उन्होंने प्रवाब की निव्यत से ये नहीं किया, (बल्कि सिर्फ़ एक दूसरी की रस से ये किया है) इन्हें उखाड़ दो। मैं उन्हें अच्छा नहीं समझता, थुनोचे वो उखाड़ दिये गए। और आपने भी (उस साल) रमज़ान में ए' तिकाफ़ नहीं किया बल्कि शव्वाल के आख़िरी अंश में ए' तिकाफ़ किया। (राजेअ: 2039)

١٤- بَابُ الْإِغْتِكَافِ فِي شَوَّالٍ  
٢٠٤١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ لُصَيْبٍ بْنُ غُرَّانٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَغْتَكِفُ فِي كُلِّ رَمَضَانَ، وَإِذَا صَلَّى الْغَدَاةَ دَخَلَ مَكَانَهُ الَّذِي اغْتَكَفَ فِيهِ. قَالَ فَاسْتَأْذَنَتْهُ عَائِشَةُ أَنْ يَغْتَكِفَ، فَأَذِنَ لَهَا فَصُرَّتْ فِيهِ ثُبَّةٌ. فَسَمِعَتْ بِهَا خَفْصَةً فَصُرَّتْ ثُبَّةً، وَسَمِعَتْ زَنْبُبُ بِهَا فَصُرَّتْ ثُبَّةً أُخْرَى. فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنَ الْغَدَاةِ انْصَرَفَ أَرْبَعَ قِبَابٍ، فَقَالَ: ((مَا هَذَا؟)) فَأَخْبَرَ غَيْرُهُنَّ، فَقَالَ: ((مَا حَمَلْنَهُنَّ عَلَى هَذَا؟ أَلَبَرُّ؟ أَلَزَّغُومَا؟ فَلَا أَرَاهُنَّ))، فَصُرَّتْ، فَلَمْ يَغْتَكِفْ فِي رَمَضَانَ حَتَّى اغْتَكَفَ فِي آخِرِ الْعَشْرِ مِنْ شَوَّالٍ)). (راجع: ٢٠٣٩)

#### बाब 15 : ए' तिकाफ़ के लिये रोज़ा ज़रूरी न होना

2042. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने

١٥- بَابُ مَنْ لَمْ يَرِ عَلَيْهِ صَوْمًا إِذَا اغْتَكَفَ  
٢٠٤٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ

अपने भाई (अब्दुल हमीद) से, उनसे सुलैमान ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने, कि उन्होंने पूछा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने जाहिलियत में नज़्र मानी थी कि एक रात का मस्जिदे हुराम में ए'तिकाफ़ करूँगा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर अपनी नज़्र पूरी कर। चुनौचे उमर (रज़ि.) ने एक रात भर ए'तिकाफ़ किया।

(राजेअ : 2032)

عَنْ أَخِيهِ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سُلَيْمَانَ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِنِّي نَذَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَغْتَكِفَ لَيْلَةً فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ : ((أَوْفِ نَذْرَكَ)). فَغْتَكِفَ لَيْلَةً.

[راجع: ٢٠٣٢]

## बाब 16 : अगर किसी ने जाहिलियत में ए'तिकाफ़ की नज़्र मानी फिर वो इस्लाम लाया

١٦ - بَابُ إِذَا نَذَرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ يَغْتَكِفَ ثُمَّ أَسْلَمَ

बाब की हदीष में आपने ऐसी नज़्र के पूरा करने का हुक्म दिया, मा'लूम हुआ कि नज़्र और यमीन हालते कुफ़्र में सहीह हो जाती है और इस्लाम के बाद भी उसका पूरा करना लाज़िम है। (वहीदी)

2043. हमसे अब्दुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने ज़माना जाहिलियत में मस्जिदे हुराम में ए'तिकाफ़ की नज़्र मानी थी, अब्द ने बयान किया कि मेरा ख़याल है कि उन्होंने रात भर का जिक्र किया था, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपनी नज़्र पूरी कर।

٢٠٤٣ - حَدَّثَنَا عُثَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ عُثَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ ((أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ نَذَرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ يَغْتَكِفَ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ - قَالَ : أَرَاهُ قَالَ لَيْلَةً - قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((أَوْفِ بِنَذْرِكَ)).

## बाब 17 : रमज़ान के दरम्यानी अशरे में ए'तिकाफ़ करना

١٧ - بَابُ الْأَعْتِكَافِ فِي الْعَشْرِ الْأَوْسَطِ مِنْ رَمَضَانَ

इससे इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि ए'तिकाफ़ के लिये रमज़ान का आखिरी अशरा ज़रूरी नहीं। गोया आखिरी अशरे में ए'तिकाफ़ करना अफ़ज़ल है।

2044. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू बक्र बिन अयाश ने बयान किया, उनसे अबू हुसैन इब्मान बिन आसिम ने, उनसे अबू स़ालेह सिमान ने और उनसे अबू हुसैह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हर साल रमज़ान में दस दिन का ए'तिकाफ़ किया करते थे। लेकिन जिस

٢٠٤٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ عَنْ أَبِي حَصِينٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَغْتَكِفُ لِي كُلِّ

साल आप (ﷺ) का इंतिकाल हुआ उस साल आपने बीस दिन का ए' तिकाफ़ किया था। (दीगर मक़ाम : 4998)

رَمَضَانَ عَشْرَةَ أَيَّامٍ، فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ اغْتَكَفَ عِشْرِينَ يَوْمًا).

[طرفه بی : ۴۹۹۸].

इब्ने बत्ताल ने कहा कि इससे ये निकलता है कि ए' तिकाफ़ सुन्नते मुअक़्क़दा है, और इब्ने मुज़िर ने इब्ने शिहाब से निकाला कि मुसलमानों पर तअज़ुब है कि उन्होंने ए' तिकाफ़ करना छोड़ दिया, हालाँकि ओहज़रत (ﷺ) जबसे मदीना में तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) ने वफ़ात तक ए' तिकाफ़ तर्क नहीं फ़र्माया था। उस साल आप (ﷺ) ने बीस दिन का ए' तिकाफ़ इसलिये किया था कि आपको मा'लूम हो गया था कि अब वफ़ात करीब है।

**बाब 18 : ए' तिकाफ़ का क़स्द किया लेकिन फिर मुनासिब ये मा'लूम हुआ कि ए' तिकाफ़ न करें तो ये भी दुरुस्त है**

2045. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल अबुल हसन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझसे अमरह बन्ते अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे आइशा (रज़ि.) ने किरसूले करीम (ﷺ) ने रमज़ान के आखिरी अशरे में ए' तिकाफ़ के लिये ज़िक्र किया। आइशा (रज़ि.) ने भी आप (ﷺ) से इजाज़त माँगी। आपने उन्हें इजाज़त दे दी, फिर हप्सा (रज़ि.) ने आइशा (रज़ि.) से कहा कि उनके लिये भी इजाज़त ले दें चुनौचे उन्होंने ऐसा कर दिया। जब ज़ैनब बन्ते जहश (रज़ि.) ने देखा, तो उन्होंने भी ख़ैमा लगाने के लिये कहा, और उनके लिये भी ख़ैमा लगा दिया गया। उन्होंने ज़िक्र किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ के बाद अपने ख़ैमे में तशरीफ़ ले जाते आज आपको बहुत से ख़ैमे दिखाई दिये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये क्या है? लोगों ने बताया कि आइशा (रज़ि.), हप्सा और ज़ैनब (रज़ि.) के ख़ैमे हैं। उस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, भला क्या उनकी षवाब की निर्य्यत है। अब मैं भी ए' तिकाफ़ नहीं करूँगा। फिर जब रमज़ान ख़त्म हो गया, तो आप (ﷺ) ने शव्वाल में ए' तिकाफ़ किया।

(राजेअ : 2029)

۱۸- بَابُ مَنْ أَرَادَ أَنْ يَتَكَبَّفَ ثُمَّ بَدَأَ لَهُ أَنْ يَخْرُجَ

۲۰۴۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَابِلٍ أَبُو الْحَسَنِ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرَةُ بِنْتُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ذَكَرَ أَنْ يَتَكَبَّفَ الْعَشْرَ الْأَوَّلَ مِنْ رَمَضَانَ، فَاسْتَأْذَنَتْهُ عَائِشَةُ فَأَذِنَ لَهَا، وَسَأَلَتْ حَفْصَةَ عَائِشَةَ أَنْ تَسْأَلَنَ لَهَا فَفَعَلَتْ، فَلَمَّا رَأَتْ ذَلِكَ زَيْنَبُ ابْنَةُ جَحْشٍ أَمَرَتْ بِنَاءَ فَيْئٍ لَهَا. قَالَتْ: وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا صَلَّى انْصَرَفَ إِلَى بَنَاتِهِ، فَبَصُرَ بِالْأَبْنَةِ فَقَالَ: ((مَا هَذَا؟)) قَالُوا: بِنَاءُ عَائِشَةَ وَحَفْصَةَ وَزَيْنَبَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الْبُرُّ أَوْذَنُ بِهَذَا؟ مَا أَنَا بِمُتَكَبِّفٍ)). فَرَجَعَ. فَلَمَّا أَفْطَرَ اغْتَكَفَ عَشْرًا مِنْ شَوَّالٍ)).

[راجع : ۲۰۲۹]

**बाब 19 : ए' तिकाफ़ वाला धोने के लिये अपना**

۱۹- بَابُ الْمُتَكَبِّفِ يُدْخِلُ رَأْسَهُ

सर घर में दाखिल करता है।

2046. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उन्हें मअमर ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें इब्ना ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि वो हाइज़ा होती थीं और रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद में ए'तिकाफ़ में होते थे। फिर भी आपके सर में अपने हुज़े ही में कैधा करती थीं। आप अपना सरे मुबारक उनकी तरफ़ बढ़ा देते।

(राजेअ: 295)

اَلَيْتَ لِلْفَسْلِ

٢٠٤٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرُورَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا : «أَنَّهَا كَانَتْ تُرَجِّلُ النَّبِيَّ ﷺ وَهِيَ خَائِضٌ وَفَوْ مُتَكَبِّفٌ فِي الْمَسْجِدِ وَهِيَ فِي حُجْرَتِهَا يُنَادِلُهَا رَأْسُهُ».

[راجع: ٢٩٥]

**तशरीह:** इमाम बुखारी (रह.) ने तरावीह, लैलतुल क़द्र व ए'तिकाफ़ के मसलों के अन्तर्गत यहाँ कुल उन्तालीस हदीषों को नक़ल फ़र्माया। जिनमें मफूअ, मुअल्लक़, मुकरर तमाम अहदादीष शामिल हैं। कुछ सहाबा किराम और ताबेईने इज़ाम के आधार भी आपने ज़िक्र फ़र्माए, चूँकि ईमान और अरकाने ख़म्सा के बाद अव्वलीन चीज़ जो हर मुसलमान के लिये बेहद ज़रूरी है वो तलबे रिक्के हलाल है जिसका बेहतरीन ज़रिया तिजारात है, इसलिये अब इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल बुयूअ को शुरू फ़र्माया, रिक्क की तलाश के लिये तिजारात को अव्वलीन ज़रिया करार दिया गया है। तिजारात नबी करीम (ﷺ) की सुन्नत है। कुआन मजीद में भी लफ़ज़ तिजारात अलग मक़सद के तहत बोला गया है। जो ताजिर-अमानत व दयानत के साथ तिजारात करता है उनके लिये बहुत कुछ बशारतें वारिद हुई हैं जिनमें कुछ यहाँ भी मुलाहज़ा में आएँगी। ईशाअल्लाह तआला।

## 34. किताबुल बुयूअ

# किताब खरीदो-फ़रोख्त के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, अल्लाह ने तुम्हारे लिये खरीद व फ़रोख्त हलाल की और सूद को हुराम करार दिया है।

और अल्लाह तआला का इशार्द है, मगर जब नक़द सौदा हो तो इस

وَقَوْلِ اللَّهِ غَرُّ وَحَلٌّ : ﴿وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا﴾ [البقرة: २७५].

وَقَوْلِهِ : ﴿إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً

हाथ दो उस हाथ लो। (अल बकर: : 282)

تَذِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ ﴿البقرة : ٢٨٢﴾.

## बाब 1 : अल्लाह तआला के उस इर्शाद के बारे में अहादीष कि

١ - بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

फिर जब नमाज़ खत्म हो जाए तो जमीन में फैल जाओ। (या'नी रिज़्के-हलाल की तलाश में अपने कारोबार को सम्भाल लो) और अल्लाह तआला का फज़ल तलाश करो, और अल्लाह तआला को बहुत याद करो, ताकि तुम्हारा भला हो। और जब उन्होंने सौदा बिकते देखा या कोई तमाशा देखा तो उसकी तरफ मुतफर्रिफ़ि होगये और तुमको खड़ा छोड़ दिया। तो कह दीजिए कि जो अल्लाह तआला के पास है वो तमाशे और सौदागरी से बेहतर है। और अल्लाह ही है बेहतर रिज़्क देने वाला। (अल जुमुआ : 10-11)

﴿فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ، وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ. وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا، فَلَمَّا عَزَدَ اللَّهُ خَيْرَ مِنَ النَّهْرِ وَمِنَ النَّجَارَةِ، وَاللَّهُ غَيْرُ الرَّازِقِينَ﴾ [الجمعة : ١٠-١١].

और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि तुम लोग एक-दूसरे का माल ग़लत तरीक़ों से न खाओ, मगर ये कि तुम्हारे दरम्यान कोई तिजारत का मामला हो तो आपस की रज़ामन्दी के साथ (मामला ठीक है)। (अन निसा : 29)

﴿وَقُولُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ بَيْنَكُمْ﴾ [النساء : ٢٩].

**तशीह :** बुयूअ, बैअ की जमा है जो बाब ज़रब यज़िबु से मुअतल याई है, जिसके मा'नी ख़रीद व फ़रोख्त के हैं। इस सिलसिले में भी अल्लाह और उसके सच्चे रसूल (ﷺ) ने बहुत सी पाकीज़ा हिदायत दी हैं। बेचने वालों को आम तौर पर लफ़्ज़े ताजिर से याद किया जाता है। कैस बिन अबी ग़रह से रिवायत है, क़ाल ख़रज अलैना रसूलुल्लाहि (ﷺ) व नहनु नुसम्मा अस्समासिरा फ़क़ाल या मअशरतुज्जार व फ़ी रिवायति अबी दाऊद फ़मर्र बिना अन्नबिय्यु (ﷺ) फसम्माना बिस्मि हुब अहसनु मिन्हु फ़क़ाल या मअशरतुज्जार इन्नशैतान वल्इष्म यहज़ुरानिल्बैअ फ़शब्बिबू बैअकुम बिस्सदक़ति (रवाहुतिर्मिज़ी) या'नी नबी करीम (ﷺ) हम लोगों पर गुज़रे जबकि आम तौर पर हमको लफ़्ज़ समा सरह (सौदाग़रान) से पुकारा जाता था, आपने हमको बेहतर नए नाम से मौसूम फ़र्माया, और यै इर्शाद हुआ कि ऐ ताजिरों की जमाअत! बेशक शैतान और गुनाह ख़रीद व फ़रोख्त में हाज़िर होते रहते हैं। इसलिये अपनी बैअ के साथ स़दक़ा ख़ैरात को भी शामिल कर लो, ताकि उन अग़लात का कुछ कफ़ारा भी साथ ही साथ होता रहे।

तिजारत की फ़ज़ीलत में हज़रत अबू सईद (रज़ि.) से मरवी है कि आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अत्ताजिरुस्सदकुल अमीन मअन्नबिय्यिन वस्सिद्दीकीन वशुहदाइ (रवाहुतिर्मिज़ी) अमानत और स़दाक़त के साथ तिजारत करने वाला मुसलमान क़यामत के दिन अंबिया और सिद्दीकीन और शुहदा के साथ उठाया जाएगा। इसलिये कि अमानत और दयानत के साथ तिजारत करना भी उतना ही मुश्किल काम है जितना कि अंबिया व सिद्दीकीन व शुहदा का मिशन मुश्किल होता है। अन इस्माईल बिन उबैद बिन रिफ़ाआ अन अबीहि अन जद्दिही अन्नहू ख़रज मअन्नबिय्यि (ﷺ) इल्ल्मुसल्ला फ़राअन्नास यतबायऊन फ़क़ाल या मअशरतुज्जारि फ़स्तजाबू लिस्सलिल्लाहि (ﷺ) व रफ़ऊ आनाकहुम व अब्सारहुम इलैहि फ़क़ाल इन्नजुज्जार युब्अषून यौमल क़ियामति फ़ुज्जारन इल्ला मनिन्नक़ल्लाहु व बर्र व स़दक़ (रवाहुतिर्मिज़ी) या'नी एक दिन आहज़रत (ﷺ) नमाज़ के लिये निकले कि आपने रास्ते में ख़रीद व फ़रोख्त करने वालों को देखा फ़र्माया कि ऐ ताजिरों की जमाअत! उन सबने आपकी तरफ़ अपनी गर्दनो और आँखों को उठाया। और आप (ﷺ) की

आवाज़ पर सबने लम्बैक कहा। आपने फ़र्माया कि बेशक ताजिर लोग क़यामत के दिन फ़ासिक, फ़ाजिर लोगों में उठाए जाएंगे, मगर जिसने इस पैसा को अल्लाह तआला के डर के तहत सच्चाई और नेक शज़ारी के साथ अंजाम दिया। हज़रत अबूज़र (रज़ि.) की रिवायत में है कि आपने फ़र्माया तीन आदमी ऐसे हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला नज़रे रहमत से नहीं देखेगा, न उनको गुनाहों से पाक करेगा और उनके लिये सख्त दर्दनाक अज़ाब होगा। उनमें अक्वल नम्बर एहसान जतलाने वाला, दूसरे नम्बर पर अपने पायजामा तहबन्द को घमण्ड से टख़नों से नीचे धिसटने वाला, तीसरा अपने माल को झूठी क़समें खाकर बेचने वाला।

हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी मरहूम फ़र्माते हैं, व क़ाललक़ाज़ी लिमा कान मिन शानित्तुज्जारि अत्तदलीसु फ़िल्मुआमलाति वत्तहालुकि अला तवीजिस्सिलइ बिमा तयस्सर लहुम मिनलअयमानिल काज़िबति व नहविहा हकम अलैहिम बिल्फुजूरि वस्ताना मिन्हुम मनिक्तक़ल महारिम व बर्र फ़ी यमीनिही व सदक़ फ़ी हदीषिही व इला हाज़ा जहबशशारिहून व हम्मलुलफुजूर अलल्लग़वि वल्हलिफ़ कज़ा फ़िल्मिकाति (तुहफ़तुल अहवज़ी) या'नी क़ाज़ी ने कहा कि मुआमलात में धोका देना और माल निकालने के लिये झूठी क़समें खा-खाकर हर किस्म के हथकण्डे इस्ते'माल करना ताजिरों का आम शैवा है, इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उन पर फ़ाजिर होने का हुक्म फ़र्माया, मगर उनको मुस्तफ़ा (अलग) फ़र्माया जो हराम से बचें और क़सम में सच्चाई को सामने रखें और अक़र शारेह ने यही नज़रिया इख़्तियार किया है कि फ़ुजूर से लखियात और झूठी क़सम खाना मुराद हैं।

2047. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उनसे शुऐब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, तुम लोग कहते हो कि अबू हुरैरह (रज़ि.) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की अहादीष बहुत ज़्यादा बयान करता है, और ये भी कहते हो कि मुहाजिरीन व अंसार अबू हुरैरह (रज़ि.) की तरह क्यूँ हदीष नहीं बयान करते? असल वजह ये है कि मेरे भाई मुहाजिरीन बाज़ार में ख़रीद व फ़रोख़्त में मशगूल रहते हैं और मैं अपना पेट भरने के बाद बराबर रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर रहता, इसलिये जब ये भाई ग़ैर-हाज़िर होते तो मैं उस वक़्त भी हाज़िर रहता, और मैं (वो बातें आपसे सुनकर) याद कर लेता जिसे उन हज़रात को (अपने कारोबार की मशगूलियत की वजह से या तो सुनने का मौक़ा नहीं मिला था या) वो भूल जाया करते थे। इसी तरह मेरे भाई अंसार अपने अम्वाल (खेतों और बाग़ों) में मशगूल रहते। लेकिन मैं सुफ़्फा में मुक़ीम मिस्कीनों में से एक मिस्कीन आदमी था। जब ये हज़रात अंसार भूलते तो मैं उसे याद रखता। एक बार रसूले करीम (ﷺ) ने एक हदीष बयान करते हुए फ़र्माया था कि जो कोई अपना कपड़ा फैलाए और उस वक़्त तक फैलाए रखे जब तक अपनी ये गुफ़्तगू न पूरी कर लूँ, फिर (जब मेरी गुफ़्तगू पूरी हो जाए तो) उस कपड़े को सपेट ले तो वो मेरी बातों

٢٠٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((إِنَّكُمْ تَقُولُونَ: إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ يَكْثُرُ الْخَبِيثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَتَقُولُونَ: مَا بَالُ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ لَا يُحَدِّثُونَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِغَيْرِ خَبِيثٍ أَبِي هُرَيْرَةَ؟ وَإِنْ إِيَّانِي مِنَ الْمُهَاجِرِينَ يَشْفَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالْأَسْوَاقِ وَكَثُرَ الزَّمْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلَى بِلَاءٍ بَطْنِي، فَأَشْهَدُ إِذَا غَابُوا، وَأَحْفَظُ إِذَا نَسُوا. وَكَانَ يَشْفَلُ إِيَّانِي مِنَ الْأَنْصَارِ حَمَلُ أَمْوَالِهِمْ، وَكَثُرَ امْتِرَاءُ بَسِكِنَا مِنْ مَسَاكِينِ الصَّفْقِ أَحْيَى حِينَ يَنْسَوْنَ، وَلَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي حَدِيثٍ يُحَدِّثُهُ: ((إِنَّهُ لَنْ يَسْطُرَ أَحَدٌ لَوْحَةً حَتَّى أَقْضَى مَقَالِي عَلَيْهِ ثُمَّ يَجْمَعُ إِلَيْهِ

को (अपने दिलो-दिमाग में हमेशा) याद रखेगा। चुनौचे मैंने अपना कम्बल अपने सामने फैला दिया। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना मकाला मुबारक खत्म किया, तो मैंने उसे समेटकर अपने सीने से लगा लिया और उसके बाद कभी मैं आपकी कोई हदीष नहीं भूला। (राजेअ: 118)

لَوْ أَنَّهُ إِلَّا وَصَى مَا أَوْلَى، قَبَسَطْتُ نَمِرَةً عَلَيَّ، حَتَّى إِذَا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَقَالَتَهُ جَمَعْتُهَا إِلَى صَدْرِي، فَمَا نَسِيتُ مِنْ مَقَالَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، يَبْلُغُ مِنْ شَيْءٍ. [راجع: ١١٨]

**तशरीह:** कुरेश का पैशा तिजारत था और अहले मदीना बेशतर काश्तकार (किसान) थे। जब मुहाजिरीन मदीना तशरीफ लाए तो उन्होंने अपना आबाई पेश तिजारत ही ज्यादा पसन्द फर्माया, और मआश (रोजी) तलाश करने के सिलसिले में अंसार और मुहाजिरीन सभी अपने धंधों में मशगूल रहा करते थे। मगर अस्हाबे सुफ्फा खालिफ ता'लीमे दीन के लिये वफ़्फ़ थे, जिनका कोई दुनियावी मशगला (व्यस्तताएं) न था। उनमें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) सबसे ज्यादा शौकीन बल्कि इलूमे कुआन व हदीष पर इस दर्जा फ़िदा कि अक़्बर औक्रात अपनी भूख मिटाने से भी ग़ाफ़िल हो जाते और फ़ाका दर फ़ाका करते हुए जब ग़शी तारी होने लगती तब उनको भूख याद आती।

इमाम बुखारी (रह.) इस हदीष को यहाँ ये बतलाने के लिये लाए हैं कि तिजारत बेअ व शराअ और खेती-क्यारी बल्कि सब दुनियावी कारोबार ज़रूरियाते ज़िन्दगी से हैं। जिनके लिये इस्लाम ने बेहतरीन उस्लूल और हिदायात पेश की हैं और इस सिलसिले में हर मुस्किन तरक्की के लिये राबत दिलाई है जिसका ज़िन्दा शुबूत वो अंसार व मुहाजिरीन हैं जिन्होंने अहदे रिसालत में तिजारत और ज़राअत में क़ाबिले रश्क तरक्की हासिल की और तिजारत व खेती व बाग़बानी में भी वो दुनिया के लिये एक मिशाल बन गए।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) महज़ दीनी तालिबे इल्म थे और दुनियावी कारोबार से उनको कुछ लगाव न था। इसलिये ये हज़ारों हदीषे नबवी के हाफ़िज़ हुए। इस हदीष से रसूले करीम (ﷺ) का एक मुअज़्जा भी साबित होता है कि हस्बे हिदायत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने आप (ﷺ) की तक्ररी दिलपज़ीर के वक़्त अपना कम्बल फैला दिया और बाद में वो कम्बल समेटकर अपने सीने से लगा लिया, जिससे उनका सीना रोशन हो गया और बाद में वो हिफ़्ज़े हदीष में सब पर सबक़त ले गय, रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाह, आमीन!

2048. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद सअद ने बयान किया, उनसे उनके दादा (इब्राहीम बिन अब्दुरहमान बिन औफ़ रज़ि.) ने बयान किया कि अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने कहा कि जब हम मदीना आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे और सअद बिन रबीअ अंसारी के बीच भाईचारा करा दिया। सअद बिन रबीअ (रज़ि.) ने कहा कि मैं अंसार के सबसे ज्यादा मालदार लोगों में से हूँ। इसलिये अपना आधा माल मैं आपको देता हूँ और आप खुद देख लें कि मेरी दो बीबियों में से आप (रज़ि.) को कौन ज्यादा पसन्द है। मैं आपके लिये उन्हें अपने से अलग कर दूँगा। (या'नी तलाक़ दे दूँगा) जब उनकी इहत पूरी हो जाए तो आप उनसे निकाह कर लें। बयान

٢٠٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((لَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ أَخْبَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنِي وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ، فَقَالَ سَعْدُ بْنُ الرَّبِيعِ: إِنِّي أَكْثَرُ الْأَنْصَارِ مَالًا، فَأَقْسِمُ لَكَ بِصَفِّ مَالِي، وَأَنْظُرَ أَيُّ رَوْحَتِي هَوَيْتَ نَزَلْتُ لَكَ، عَنْهَا، فَإِذَا خَلْتُ نَزَوَخْتَهَا. قَالَ: فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: لَا حَاجَةَ لِي فِي ذَلِكَ، هَلْ مِنْ



किया कि उस पर अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने फ़र्माया, मुझे उनकी ज़रूरत नहीं क्या यहाँ कोई बाज़ार है जहाँ कारोबार होता हो? सअद (रज़ि.) ने सूके क्रेनक्राअ का नाम लिया। बयान किया कि जब सुबह हुई तो अब्दुर्रहमान (रज़ि.) पनीर और घी लाए। राबी ने बयान किया कि फिर वो तिज़ारत के लिये बाज़ार आने-जाने लगे। कुछ दिनों के बाद एक दिन वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो ज़र्द रंग का निशान (कपड़े या जिस्म पर) था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा क्या तुमने शादी कर ली? उन्होंने कहा कि हाँ। आप (ﷺ) ने पूछा कि किससे? बोले कि एक अंसारी ख़ातून से। पूछा, और मेहर कितना दिया है? अर्ज़ किया कि एक घुटली बराबर सोना दिया है (या ये कहा कि) सोने की एक घुटली दी है। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा तो वलीमा कर ख़वाह एक बकरी ही का हो। (दीगर मक़ाम : 3780)

2049. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे जुहैर ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) मदीना आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनका भाई चारा सअद बिन रबीआ अंसारी (रज़ि.) से करा दिया। सअद (रज़ि.) मालदार आदमी थे। उन्होंने अब्दुर्रहमान (रज़ि.) से कहा मैं और आप मेरे माल से आधा आधा ले लें। और मैं (अपनी एक बीवी से) आपकी शादी करा दूँ। अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने उसके जवाब में कहा अल्लाह तआला आपके अहल और आपके माल में बरकत अता करे, मुझे तो आप बाज़ार का रास्ता बता दीजिए। फिर वो बाज़ार से उस वक़्त तक वापस न हुए जब तक नफ़ा में काफ़ी पनीर और घी न बचा लिया। अब वो अपने घरवालों के पास आए, कुछ दिन गुज़रे होंगे या अल्लाह ने जितना चाहा। उसके बाद वो आए कि उन पर ज़र्दी का निशान था। औहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, ये ज़र्दी कैसी है? अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने एक अंसारी ख़ातून से शादी कर ली है। आपने दरयाफ़्त किया उन्हें मेहर में क्या दिया है? अर्ज़ किया, सोने की एक घुटली, या (ये कहा कि) एक गुठली बराबर सोना, आपने फ़र्माया कि अच्छा अब वलीमा कर अगरचे एक बकरी ही का हो।

سُوقٌ لِيهِ بَخَارَةٌ؟ قَالَ : سُوقٌ قَيْطَاعٍ.  
قَالَ : لَقَدْ آتَىٰ عَبْدَ الرَّحْمَنِ قَاتِيًا بِأَقِطٍ  
وَسَمْنٍ. قَالَ : ثُمَّ تَابَعَ الْفُلُودُ، فَمَا لَبِثَ  
أَنْ جَاءَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ أَثَرُ صُفْرَةٍ،  
فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : «تَزَوَّجْتَ؟» قَالَ :  
نَعَمْ. قَالَ : «وَمَنْ؟» قَالَ : امْرَأَةٌ مِنَ  
الْأَنْصَارِ. قَالَ : «كَمْ مَقْتٌ؟» قَالَ : زِنَةٌ  
نَوَافٍ مِنْ ذَهَبٍ - أَوْ نَوَافٍ مِنْ ذَهَبٍ -  
فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ : «أَوَلَمْ وَلَوْ بِشَاقٍ».

[طرفه لي : 3780].

٢٠٤٩ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ  
حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسِ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : «قَدِمَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ  
بْنُ عَوْفٍ الْمَدِينَةَ، فَأَخْبَى النَّبِيُّ ﷺ، بَيْنَهُ  
وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ الْأَنْصَارِيِّ، وَكَانَ  
سَعْدٌ ذَا غِنَى، فَقَالَ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ:  
أَلْقِ بِكَ مَالِي بِصَفْنَيْنِ وَأَزْوَجْكَ. قَالَ:  
بَارَئَ اللَّهُ لَكَ فِي أَمْلِكَ وَمَالِكَ، ذُلُّنِي  
عَلَى السُّوقِ، فَمَا رَجَعَ حَتَّى اسْتَفْضَلَ  
أَقِطًا وَسَمْنًا، فَآتَى بِهِ أَهْلَ مَنْزِلِهِ. فَمَكَثَا  
يَسِيرًا - أَوْ مَا شَاءَ اللَّهُ - فَجَاءَ وَغَلِيهِ  
وَضَرْ مِنْ صُفْرَةٍ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ:  
«مَهْمٌ؟» قَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ تَزَوَّجْتُ  
امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ. قَالَ : «مَا مَقْتٌ  
إِلَيْهَا؟» قَالَ : نَوَافٍ مِنْ ذَهَبٍ - أَوْ وَزَنَ

(दीगर मक़ाम : 2293, 3781, 3937, 5072, 5148, 5153, 5100)

نَوَافٍ مِنْ فَهْرٍ - قَالَ: «أَوْلَمَ وَلَوْ بِشَاةٍ».

[أطرافه في : ٢٢٩٣, ٣٧٨١, ٣٩٣٧]

٥٠٧٢, ٥١٤٨, ٥١٥٣, ٥١٥٥

**तशरीह :** हदीषे हाज़ा बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद यहाँ इस हदीष के लाने से ये है कि अहदे नबवी में मदीना मुनव्वरा में अहले इस्लाम तिजारात किया करते थे और उनका बेहतरीन पेशा तिजारात ही था। चुनाँचे हज़रत अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) जो कुरैशी हैं हिज़रत फ़र्माकर जब मदीना आए तो उन्होंने ग़ौरो फ़िक्क के बाद अपने क़दीमी पेशा तिजारात ही को यहाँ भी अपनाया। और अपने इस्लामी भाई सअद (रज़ि.) बिन रबीअ का शुक्रिया अदा करते हुए जिन्होंने अपनी आधी जायदाद मन्कूला और ग़ैर-मन्कूला की पेशकश की थी बाज़ार का रास्ता लिया और वहाँ के हालात का जायज़ा लेकर आपने तेल और घी का कारोबार शुरू किया, अल्लाह ने आपको थोड़ी ही मुदत में ऐसी कुशादगी अता की कि आपने एक अंसारी औरत से अपना अक़दे निकाह भी कर लिया।

हज़रत अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) अशर-ए-मुबशशरा में से हैं। ये शुरू दौर में हज़रत अबूबक्र सिदीक़ (रज़ि.) की सुहबत से दाख़िले इस्लाम हुए। और दो बार हब्शा की तरफ़ हिज़रत भी की। तमाम ग़ज्वात में आँहज़रत (ﷺ) के साथ शरीक रहे। तबीलुल क़ामत (लम्बी कद-काठी) और ग़ौरे रंग वाले थे। ग़ज्व-ए-उहुद में इनके बदन पर बीस से ज़्यादा ज़ख़म लगे थे, जिनकी वजह से पैरों में लंगड़ापन पैदा हो गया था। ये मदीना में बहुत ही बड़े मालदार मुसलमान थे और रईसुतिजारात की हैषियत रखते थे। उनकी सखावत के भी कितने ही वाकिफ़ात मज़कूर हैं। 72 साल की उम्र में 32 हिज़री में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न हुए।

उन्होंने मेहर में अपनी बीवी को नवाति मिनज़हबि या'नी सोने की एक डली दी जिसका वज़न 5 दिरहम से ज़ा़इद भी मुम्किन है। इस हदीष से वलीमा करने की ताकीद भी प्राबित हुई और ये भी कि वलीमा में बक़रे या बकरी का ज़बीहा बेहतर है। ज़र्द रंग शायद किसी इत्र का हो या किसी ऐसी मख़लूत चीज़ का जिसमें कोई ज़र्द क़िस्म की चीज़ भी शामिल हो और आपने उससे गुस्ल वग़ैरह किया हो।

2050. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अम्म बिन दीनार ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि उकाज़, मजिन्ना और जुल मजाज़ अहदे जाहिलियत के बाज़ार थे। जब इस्लाम आया तो ऐसा हुआ कि मुसलमान लोग (खरीद व फ़रोख्त के लिये इन बाज़ारों में जाना) गुनाह समझने लगे। इसलिये ये आयत नाज़िल हुई। तुम्हारे लिये उसमें कोई हर्ज नहीं कि अगर तुम अपने ख़ब के फ़ज़ल (या'नी रिज़के हलाल) की तलाश करो हज्ज के मौसम में, ये इब्ने अब्बास (रज़ि.) की क़िरअत है।

(राजेअ : 1770)

٢٠٥٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «كَانَتْ عَكَظٌ وَمَجَنَّةٌ وَذَوَا الْمَجَارِ أَسْوَافَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَلَمَّا كَانَ الْإِسْلَامُ فَكَانَهُمْ يَتَقَرَّبُونَ إِلَيْهِ، فَقُلْتُ: ﴿لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ﴾ لِي فِيهِمَا الْحَجُّ. قَرَأَهَا ابْنُ عَبَّاسٍ».

[راجع : ١٧٧٠]

**तशरीह :** हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की क़िरअत में आयते करीमा, लयस अलैकुम जुनाहुन अन तब्तगू फ़ज़लम मिर्रिब्बिकुम से आगे फ़ी मवासिमिल हज्ज के लफ़्ज़ ज़ा़इद हैं। मगर आम क़िरअतों में ये ज़ा़इद लफ़्ज़ नहीं हैं या शायद ये मन्सूख़ हो गए हों और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) को नस्ख़ का इल्म न हो सका हो। हदीष में ज़मान-ए-

जाहिलियत की मण्डियों का जिक्र है। इस्लाम ने अपने दौर में तिजारती मण्डियों को तरक्की दी और हर तरह से उनकी हौसला अफजाई की गई। मगर खुराफात और मक्क व फरेब वालों के लिये बाज़ार से बदतर कोई जगह भी नहीं है।

## बाब 2 : हलाल खुला हुआ है और हुराम भी खुला हुआ है लेकिन इन दोनों के बीच शक शुब्हा वाली चीज़ें भी हैं

## ۲- بَابُ الْحَلَالِ بَيْنَ وَالْحَرَامِ بَيْنَ، وَبَيْنَهُمَا مُشْتَبِهَاتٌ

मुश्तबिहात वो जिनकी हिल्लत व हुर्मत के बारे में हमको कुआन व हदीष में कोई वाज़ेह हिदायत न मिले। कुछ वजह उनमें हलाल दाखिल होने के नज़र आएँ, कुछ हुराम होने के। उन हालात में ऐसी चीज़ों से परहेज़ करना ही बेहतर है यही बाब का मक़सद है।

2051. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन अबी अदी ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन औन ने, उनसे शअबी ने, उन्होंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना (दूसरी सनद इमाम बुखारी (रह.) ने कहा) और हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफयान बिन जययना ने बयान किया, उनसे अबू फरवा ने, उनसे शअबी ने, कहा कि मैंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से (तीसरी सनद) और हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफयान बिन जययना ने बयान किया, उनसे अबू फरवा ने, उन्होंने शअबी से सुना, उन्होंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से (चौथी सनद) और हमसे मुहम्मद बिन क़शीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफयान बशीर ने ख़बर दी, उन्हें अबू फरवा ने, उन्हें शअबी ने और उनसे नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हलाल भी खुला हुआ है और हुराम भी ज़ाहिर है लेकिन इन दोनों के बीच कुछ मुश्तबह चीज़ें हैं। पस जो शअ़्स उन चीज़ों को छोड़े जिनके गुनाह होने या न होने में शुब्हा है। वो उन चीज़ों को तो ज़रूर ही छोड़ देगा जिनका गुनाह होना ज़ाहिर है। लेकिन जो शअ़्स शुब्हा की चीज़ों के करने की ज़ुअत करेगा तो क़रीब है कि वो उन गुनाहों में भी मुब्तला हो जाए जो बिल्कुल वाज़ेह तौर पर गुनाह हैं। (लोगों याद रखो) गुनाह अल्लाह तआला की चरागाह है जो (जानवर भी) चरागाह के आसपास चरेगा, उसका चरागाह के अंदर चला जाना ग़ैर-मुम्किन नहीं। (राजेअ: 52)

۲۰۵۱- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ قَالٍ التَّمَنِي

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ ابْنِ غَوْنٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ الثُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ح. وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ أَبِي قُرْظَةَ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ الثُّعْمَانَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح.

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ أَبِي قُرْظَةَ سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ سَمِعْتُ الثُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح. و.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي قُرْظَةَ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الثُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْحَلَالُ بَيْنَ، وَالْحَرَامِ بَيْنَ، وَبَيْنَهُمَا أُمُورٌ مُشْتَبِهَةٌ. فَمَنْ تَرَكَ مَا شَبَّ عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ كَانَ لِمَا اسْتَبَانَ أَتْرَكَ، وَمَنْ اجْتَرَأَ عَلَى مَا يَشْكُ فِيهِ مِنَ الْإِثْمِ أَوْشَكَ أَنْ يُؤَالِقَ مَا اسْتَبَانَ. وَالْبَعْضُ جَمَى اللَّهِ، مَنْ يَرْتَفِعْ خَوَلُ الْحَيِّ يُؤْهِلُكَ أَنْ

**तशरीह :**

अहदे जाहिलियत में अरबी शूयूख व इमरा अपनी चरागाहें मख्सूस रखा करते थे उनमें कोई ग़ैर आदमी अपने जानवरों को नहीं दाखिल कर सकता था। इसलिये गरीब लोग उन चरागाहों के करीब भी न जाते, कि अनजाने में उनके जानवर उसमें दाखिल हो जाएँ और वो सख्ततरीन सज़ाओं के मुस्तहिक़ करार दिये जाएँ। अल्लाह की हदों को भी ऐसे ही चरागाहों से तश्बीह (मिथाल) दी गई और कुआन मजीद की अनेक आयात में ताकीद की गई कि हूदुल्लाह के करीब भी न जाओ कि कहीं उनके तोड़ने के मुर्तकिब होकर अल्लाह के पास मुजरिम ठहरो। हदीषे हाज़ा में मज़ासी को अल्लाह की चरागाह बतलाया गया है जो मज़ासी से दूर रहने के लिये एक इतिहाई चेतावनी है। उनसे बचने की एक सूत ये भी है कि हलाल और हुराम के बीच जो काम शक वाले हैं उनसे भी परहेज़ किया जाए, ऐसा न हो कि उनके इतिहाब से फ़ैअले हुराम ही का इतिहाब हो जाए, इसलिये जो शक वाली चीज़ों से बच गया वो सलामत रहा। हुरामात अल्लाह की चरागाहों से तश्बीह ज़जर व तौबीख के लिये है कि जिस तरह इमरा व ज़मींदार लोगों की मख्सूस चरागाहों में दाखिल हो जाने वाले और अपने जानवरों को वहाँ चराने वालों को इतिहाई संगीन सज़ा दी जा सकती है। ऐसे ही जो लोग हूदुल्लाह को तोड़ने और अल्लाह की चरागाह या 'नी उमूरे हुराम में वाक़ेअ हो जाते हैं। वो आखिरत में सख्त तरीन सज़ा के मुस्तहिक़ होंगे और शक वाले कामों से परहेज़ भी उसी आधार पर ज़रूरी है कि मुबादा कोई शख्स उमूरे हुराम का मुर्तकिब होकर अज़ाबे अलीम का मुस्तहिक़ न हो जाए।

### बाब 3 : मिलती-जुलती चीज़ें या 'नी शुब्हा वाले उमूर क्या हैं?

और हस्सान बिन अबी सिनान ने कहा कि, वरअ (परहेज़गारी) से ज़्यादा आसान कोई चीज़ मैंने नहीं देखी बस शुब्हा की चीज़ों को छोड़ और वो रास्ता इख़्तियार कर जिसमें कोई शुब्हा न हो।

2052. हमसे मुहम्मद बिन क़बीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफ़यान शौरी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी हुसैन ने ख़बर दी, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने बयान किया, उनसे इब्न बाबिन हारिष (रज़ि.) ने कि एक स्याह फ़ाम ख़ातून आई और दावा किया कि उन्होंने उन दोनों (इब्न बाबिन और उनकी बीवी) को दूध पिलाया है। इब्न बाबिन उस अम्र का ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आप (ﷺ) ने अपना चेहरा मुबारक फेर लिया और मुस्कराकर फ़र्माया, अब जबकि एक बात कह दी गई तो तुम दोनों एक साथ किस तरह रह सकते हो। उनके निकाह में अबू वहाब तमीमी की साहबज़ादी थी।

(राजेअ : 88)

### ۳- يَابُ تَفْسِيرِ الْمُشَبَّهَاتِ

وَقَالَ حَسَّانُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ: مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَهْوَنَ مِنَ الْوَرَعِ، دَخَلَ مَا يَرِيكَ إِلَى مَا لَا يَرِيكَ.

۲۰۵۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي حُسَيْنٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي مَالِكَةَ عَنْ عَفْئَةَ بْنِ الْحَارِثِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : ((أَنَّ امْرَأَةً سَوْدَاءَ جَاءَتْ فَوَعَمَتْ أَنَّهَا أَرْضَعَتْهُمَا، فَذَكَرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَأَعْرَضَ عَنْهُ وَتَسَمَّ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ : ((كَيْفَ وَقَدْ قِيلَ؟)). وَقَدْ كَانَتْ تَحْتَهُ ابْنَةُ أَبِي إِبَاهِبِ التَّمِيمِيِّ.

[راجع : ۸۸]

**तशरीह :**

तिर्मिज़ी की रिवायत में है मैंने अज़ा किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वो झूठी है, आपने मुँह फेर लिया, फिर मैं आपके मुँह के सामने आया और अज़ा किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वो झूठी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब तू उस औरत को कैसे रख सकता है जब ये कहा जाता है कि एक औरत ने तुम दोनों को दूध पिलाया है। ये हदीष ऊपर किताबुल इल्म में गुजर चुकी है। यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इसलिये लाए कि गो अक़षर इल्मा के नज़दीक रिज़ाअ एक औरत की शहादत

से प्राबित नहीं हो सकता मगर शुब्हा तो हो जाता है और आँहज़रत (ﷺ) ने शुब्हा की बिना पर इक्बा (रज़ि.) को ये सलाह दी कि उस औरत को छोड़ दे। मा'लूम हुआ कि अगर शहादत कामिल न हो या शहादत के शराइत में नुक्स हो तो मामला मुश्तबह रहता है लेकिन मुश्तबह से बचे रहना तक्वा और परहेज़गारी है। हमारे इमाम अहमद बिन हम्बल (रह.) के नज़दीक तो रिज़ाअ सिर्फ़ मुर्ज़िआ की शहादत से प्राबित हो जाता है। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, वजहुदलालति मिन्हु कौलहू कैफ़ व क़द क़ील फ़इन्नहू युशइरू बिअन्न अमरहू बिफ़िराकि इम्प्रातिही इन्नमा कान लअल्जि क़ौलिन्मअति अन्नहा रज़अतहुमा फ़हतमल अय्यकून सहीहन फ़यतिबुल हराम फ़अमरहू बिफ़िराकिहा इहतियातन अला क़ौलिल अक्सरि व क़ील बल क़ब्ल शहादतिल्मअति वहदहा अला ज़ालिक या'नी इशादि नबवी कैफ़ क़द क़ीला से मक्सदे बाब प्राबित होता है जिससे ज़ाहिर है कि आप (ﷺ) ने इक्बा (रज़ि.) को उस औरत से जुदाई का हुक्म सादिर फ़र्मा दिया, दूध पिलाने का दावेदार औरत के इस बयान पर कि मैंने इन दोनों को दूध पिलाया है। एहतियाल है कि उस औरत का बयान सहीह हो और इक्बा हराम का मुर्तकिब हो। इसलिये एहतियातन जुदाई का हुक्म दे दिया। ये भी कहा गया कि आपने उस औरत की शहादत को कुबूल फ़र्मा लिया, और उस बारे में उस एक ही शहादत को काफ़ी समझा। हज़रत इमाम ने इस वाक़िये से भी ये प्राबित फ़र्माया कि मुश्तबह उमूर में उनसे परहेज़ ही का रास्ता सलामती और एहतियाती का रास्ता है।

2053. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि इल्बा बिन अबी वक्रास (काफ़िर) ने अपने भाई सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) (मुसलमान) को (मस्ते वक्रत) वसियत की थी कि ज़म्आ की बांदी का लड़का मेरा है। इसलिये उसे तुम अपने क़ब्जे में ले लेना। उन्होंने कहा फ़त्हे मक्का के साल सअद (रज़ि.) बिन अबी वक्रास ने उसे ले लिया, और कहा कि ये मेरे भाई का लड़का है और वो इसके बारे में मुझे वसियत कर गए हैं लेकिन अब्द बिन ज़म्आ ने उठकर कहा कि मेरे बाप की लौण्डी का बच्चा है, मेरे बाप के बिस्तर पर पैदा हुआ है। आख़िर दोनों ये मुक़द्दमा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ले गए। सअद (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये मेरे भाई का लड़का है और मुझे इसकी उन्होंने वसियत की थी। और अब्द बिन ज़म्आ ने अर्ज़ किया, ये मेरा भाई है और मेरे बाप की लौण्डी का लड़का है। उन्हीं के बिस्तर पर इसकी पैदाइश हुई है। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अब्द बिन ज़म्आ लड़का तो तुम्हारे साथ ही रहेगा। उसके बाद फ़र्माया, बच्चा उसी का होता है जो जाइज़ शौहर या मालिक हो जिसके बिस्तर पर वो पैदा हुआ हो और हरामकार के हिस्से में पत्थरों की सज़ा है। फिर सौदा बन्ते

٢٠٥٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرُورَةَ بِنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كَانَ عُبَيْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ عَهْدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّ ابْنَ وَلِيدَةٍ زَمْعَةَ مِنِّي فَأَتَيْتُهُ. قَالَتْ : فَلَمَّا كَانَ عَمَ الْفَتْحِ أَخَذَهُ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ وَقَالَ : ابْنُ أَخِي، قَدْ عَهْدَ إِلَيَّ فِيهِ. فَقَامَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فَقَالَ : أَخِي، وَأَبْنُ وَلِيدَةٍ أَبِي وَلَدَ عَلَى فِرَاشِهِ. فَمَسَاوَقًا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ سَعْدُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، ابْنُ أَخِي، كَانَ قَدْ عَهْدَ إِلَيَّ فِيهِ. فَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ : أَخِي، وَأَبْنُ وَلِيدَةٍ أَبِي، وَلَدَ عَلَى فِرَاشِهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ)). ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْمَآهَرِ الْحَجَرِ)). ثُمَّ قَالَ لِسُودَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ :

जम्आ (रज़ि.) से जो आँहज़रत (ﷺ) की बीवी थीं, फ़र्माया कि इस लड़के से पर्दा किया कर, क्योंकि आप (ﷺ) ने इत्बा की शबाहत उस लड़के में महसूस की थी। उसके बाद उस लड़के ने सौदा (रज़ि.) को कभी न देखा यहाँ तक कि वो अल्लाहत आला से जा मिला। (दीगर मक़ाम : 2218, 2421, 2533, 2745, 4303, 6749, 6765, 6817, 7182)

((اَخْبَنِي مِنْهُ))، لَمَّا رَأَى مِنْ شَبِّهِ  
بُغْتَةَ، لَمَّا رَأَاهَا خَتَى لَهِيَ (الله).

[أطرافه في : ٢٢١٨، ٢٤٢١، ٢٥٣٣، ٢٧٤٥، ٤٣٠٣، ٦٧٤٩، ٦٧٦٥، ٧١٨٢، ٦٨١٧]

**तशरीह :** रिवायत में जो वाक़िया बयान हुआ है उसकी तफ़सील ये है कि इत्बा बिन अबी वक्कास, मशहूर सहाबी हज़रत सअद बिन अबी वक्कास के भाई थे। इत्बा इस्लाम के शदीद दुश्मनों में से था और कुफ़्र ही पर उसकी मौत हुई, जम्आ नामी एक शख्स की लौण्डी से उसी इत्बा ने ज़िना किया और वो हामला हो गई। इत्बा जब मरने लगा तो उसने अपने भाई हज़रत सअद (रज़ि.) बिन अबी वक्कास को वसियत की कि जम्आ की लौण्डी का हमल मुझसे है। लिहाज़ा उसके पेट से जो बच्चा होगा उसको तुम अपनी तहवील में ले लेना, चुनौचे जम्आ की लौण्डी के बतन से लड़का पैदा हुआ और वो उन ही के यहाँ परवरिश पाता रहा। जब मक्का फ़तह हुआ तो हज़रत सअद (रज़ि.) ने चाहा कि अपने भाई की वसियत के तहत उस बच्चे को अपनी परवरिश में ले लें। मगर जम्आ का बेटा अब्द बिन जम्आ कहने लगा कि ये मेरे वालिद की लौण्डी का बच्चा है, इसलिये उसका वारिष मैं हूँ। जब ये मुकद्दमा अदालत ने नबवी में पहुँचा तो आप (ﷺ) ने ये क़ानून पेश फ़र्माया कि अल्वलदु लिल्फ़राशि व लिल्आहिर अल्हज़र बच्चा उसी का माना जाएगा जिसके बिस्तर पर वो पैदा हुआ है अगरचे वो किसी दूसरे फ़र्द के ज़िना का नतीजा है। उस फ़र्द के हिस्से में शरअी हद संगसार है। इस क़ानून के तहत आँहज़रत (ﷺ) ने वो बच्चा अब्द बिन जम्आ ही को दे दिया। मगर बच्चे की मुशाबिहत इत्बा बिन अबी वक्कास ही से थी। इसलिये उस शुब्हा की बिना पर आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन सौदा (रज़ि.) को हुक्म फ़र्माया कि वो जम्आ की बेटो होने के नाते बज़ाहिर इस लड़के की बहन थीं। मगर वो लड़का मुश्तबह (संदिग्ध) हो गया। लिहाज़ा मुनासिब हुआ कि वो उससे ग़ैरों की तरह पदा करें। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक सौदा (रज़ि.) को पर्दा का हुक्म उसी इश्तिबाह की वजह से एहतियातन दिया गया था कि बाँदी के नाजाइज़ ता'ल्लुकात इत्बा से थे, और बच्चे में उसकी मुशाबिहत थी। इमाम बुखारी (रह.) का मक्सद मुश्तबिहात की तफ़सीर और उनसे बचने का हुक्म प्राबित फ़र्माता है।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, व वज्हुद्दलालति मिन्हु क़ौलुहू (ﷺ) इहतित्जिबी मिन्हु या सौदा मअहुक्मिही बिअन्नहू अख़ूहा लिअबीहा लाकिन लम्मा राअशिशबहल बय्यन फ़ीहि मिन ग़ैर जम्आ अमर सौदत बिल्इहतित्जिबि मिन्हु इहतियातन फ़ी क़ौलिल अक्सरि (फ़तुल बारी) या'नी यहाँ मुश्तबिहात की दलील आँहज़रत (ﷺ) का वो इशदि मुबारक है जो आपने हज़रत सौदा (रज़ि.) को फ़र्माया कि बज़ाहिर ये तुम्हारा भाई है और इस्लामी क़ानून भी उसी को प्राबित करता है मगर शुब्हा यक्नीन है कि ये इत्बा का ही लड़का हो। जैसा कि उसमें उससे मुशाबिहत भी पाई जाती है। पस बेहतर है कि तुम उससे पर्दा करो। हज़रत सौदा (रज़ि.) ने इस इशदि नबवी पर अमल किया यहाँ तक कि वो दुनिया से रुख़्सत हुए।

अल्वलदु लिल्फ़राशि व लिल्आहिर अल्हज़र या'नी बच्चा क़ानून उसी का तस्लीम किया जाएगा जो उस बिस्तर का मालिक है जिस पर बच्चा पैदा हुआ है या'नी जो उसका शरअी व क़ानूनी मालिक या शौहर है। बच्चा उसी का माना जाएगा, अगरचे वो किसी दूसरे के नुत्फ़े ही से क्यूँन हो, अगर ऐसा मुकद्दमा प्राबित हो जाए तो फिर ज़ानी के लिये महज़ संगसारी है।

2054. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अबी सफ़र ने ख़बर दी, उन्हें शअबी ने, उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मेअराज (तीर का शिकार) के बारे में पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर उसके

٢٠٥٤ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا

شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي  
السَّفَرِ عَنْ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَبْدِ بْنِ حَاتِمٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ

धार की तरफ से लगे तो खा। अगर चौड़ाई से लगे तो मत खा। क्योंकि वो मुरदार है, मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं अपना कुत्ता (शिकार के लिये) छोड़ता हूँ और बिस्मिल्लाह पढ़ लेता हूँ, फिर उसके साथ मुझे एक ऐसा कुत्ता मिलता है जिस पर मैंने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी है। मैं ये फ़ैसला नहीं कर पाता कि दोनों में कौनसे कुत्ते ने शिकार पकड़ा। आपने फ़र्माया, ऐसे शिकार का गोश्त न खा। क्योंकि तूने बिस्मिल्लाह तो अपने कुत्ते के लिये पढ़ी है दूसरे के लिये तो नहीं पढ़ी।

(राजेअ: 175)

**तशरीह:** चौड़ाई से लगने का मतलब ये कि तेरी लकड़ी आड़ी होकर शिकार के जानवर पर लगे और बोझ और सदमे की वजह से वो मर जाए। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) यहाँ इस हदीष को मुश्तब्हात (संदिग्ध चीज़ों) की तफ़्सीर में लाए कि दूसरे कुत्ते की मौजूदगी में शुब्हा हो गया कि शिकार कौनसे कुत्ते ने पकड़ा है, और हज़रत (ﷺ) ने उसी शुब्हा को दूर करने के लिये ऐसे शिकार के खाने से मना कर दिया। अरबों में शिकारी कुत्तों को सघाने का दस्तूर था। शरीअते इस्लामिया ने इजाज़त दी कि ऐसा सघाया हुआ कुत्ता बिस्मिल्लाह पढ़कर छोड़ा जाए और वो शिकार को पकड़ ले और मालिक के पहुँचने से पहले शिकार मर जाए तो गोया शिकार हलाल है।

इस हदीष से ये भी ज़ाहिर है कि जिस जानवर पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए वो हुराम और मुरदार है, अहले हदीष और अहले ज़ाहिर का यही क़ौल है। और इमाम शाफ़िई (रह.) कहते हैं कि मुसलमान का ज़बीहा हर हाल में हलाल होता है गो वो जानते-बुझते या भूलकर बिस्मिल्लाह छोड़ दे, इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब यूनैकाला कि उस जानवर में शुब्हा पड़ गया कि किस कुत्ते ने मारा। और आपने उसके खाने से मना कर दिया तो मा'लूम हुआ कि शुब्हा की चीज़ों से बचना चाहिए। (वहीदी)

#### बाब 4 : मुश्तबह चीज़ों से परहेज़ करना

2055. हमेस कुबैसा बिन इब्नबा ने बयान किया; कहा कि हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे तलहा बिन मुसरिफ़ ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक गिरी हुई खजूर पर गुजरे, तो आपने फ़र्माया कि अगर उसके सड़के होने का शुब्हा न होता तो मैं इसे खा लेता। और हम्माम बिन मुनब्बा ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं अपने बिस्तर पर पड़ी हुई एक खजूर पाता हूँ।

(दीगर मक़ाम: 2431)

#### ٤- باب ما يُنزّه من الشُّبُهَات

٢٠٥٥- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ طَلْحَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِخَمْرَةٍ مَسْقُوطَةٍ فَقَالَ: ((لَوْ لَا أَن تَكُونُ صَدَقَةً لَأَكَلْتُهَا)). وَقَالَ هَمَّامٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَجِدُ خَمْرَةً سَاطِئَةً عَلَى لِرَاسِي)).

[طرفه في: ٢٤٣١]

ये खजूर आपको अपने बिछौने पर मिली थी जैसे उसके बाद की रिवायत में उसकी तसरीह है। शायद आप सड़का की खजूरे बाँटकर आए हों और कोई उन ही में से आपके कपड़ों में लग गई हो और बिछौने पर गिर पड़ी हो ये शुब्हा आपको मा'लूम

हुआ, और आपने सिर्फ उस शुब्हा की बिना पर उसके खाने से परहेज़ किया, मा'लूम हुआ कि मुश्तबह चीज़ के खाने से परहेज़ करना कमाल तक्वा और वरअ है। इसी मक़सद के पेशे-नज़र अपने मुनअकिद बाब के तहत हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये हदीष लाए हैं।

## बाब 5 : दिल में वस्वसा आने से शुब्हा न करना चाहिये

## ۵- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ الْوَسَاوِسَ وَنَحْوَهَا مِنَ الْمُشَبَّهَاتِ

या'नी मुश्तबह उस चीज़ को कहते हैं जिसकी हिल्लत और हुर्मत या नजासत के दलाइल मुतआरिज हों, तो ऐसी चीज़ों से बचना तक्वा और परहेज़गारी है और एक वस्वसे हैं कि ख्वाह मख्वाह बे दलील हर चीज़ में शुब्हा करना। जैसे एक फर्श बिछा हुआ है तो यही समझेंगे कि वो पाक है या एक शख्स ने कुछ खरीदा, तो यही समझेंगे कि हलाल तौर से उसके पास आया होगा। अब ख्वाह मख्वाह उसके नजिस होने का गुमान करना, या उस माल के हुराम होने का, ये वस्वसा है, इससे परहेज़ करना चाहिए। अल्बत्ता अगर दलील से नजासत या हुर्मत मा'लूम हो जाए तो उससे बाज़ रहना चाहिए।

2056. हमसे अबू नुएम फ़ज्जल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने और उनसे उनके चचा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़िनी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के सामने एक ऐसे शख्स का ज़िक्र आया जिसे नमाज़ में कुछ शुब्हा हवा निकलने का हो जाता है, क्या उसे नमाज़ तोड़ देनी चाहिए? फ़र्माया कि नहीं, जब तक वो आवाज़ न सुन ले या बदबू न महसूस कर ले (उस वक़्त तक नमाज़ न तोड़े) इब्ने अबी हफ़सा ने जुहरी से बयान किया (ऐसे शख्स पर) वुजू वाजिब नहीं जब तक हद़्थ की बदबू न महसूस कर ले या आवाज़ न सुन ले। (राजेअ: 37)

۲۰۵۶- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَادِ بْنِ نَعِيمٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: شَكَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ الرَّجُلُ يَجِدُ فِي الصَّلَاةِ شَيْئًا يَقْطَعُ الصَّلَاةَ؟ قَالَ: ((لَا، حَتَّى يَسْمَعَ صَوْتًا أَوْ يَجِدَ رِيحًا)). وَقَالَ ابْنُ أَبِي حَفْصَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ: لَا وَصَوْرٌ إِلَّا قِيَمًا وَجَدْتَ الرِّيحَ أَوْ سَمِعْتَ الصَّوْتِ. [راجع: ۳۷]

**तशीह:** इस हदीष के तहत अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ालल ग़ज़ाली अल्वरउ अक्सामु वरइस्मिदीक़ीन व हुव तर्कन मा ला यतनावलु बिग़ैरि निय्यतिन अल कुव्वतु अलल इबादति व वरउल मुत्तक़ीन व हुव तर्कुन मा शुब्हत फ़ीहि व लाकिन यख़शा अय्यजुर इललहरामि व वरउस्सालिहीन व हुव तर्कुन मा यततरकु इलैहि इहतिमालुत्तहरीमि बिशर्तिन अय्यकून लिज़ालिकल इहतिमालि मौक़उन फ़इल्लम यकून फ़हुव वरउल मुसव्वैसीन क़ाल व वराअ ज़ालिक वरउश्शुहूदि व हुव तर्कुन मा यस्कुतुश्शहादतु अय अम्मू मिन अय्यकून ज़ालिकल मतरूकु हरामन अम ला इन्तिहा व गरज़ल मुसज़िफ़ि हुना बयान वरइल मुस्सिसीन कमन यमतनिउ मिन अक्लिस्सैदि कान लि इन्सानिन् मुम्म अफ़लत मिन्हु व कमन यतरूकु शराअन मा यंहताजु इलैहि मिनल मज्हुल ला यदरी अम्मा लहू हलालुन अम हरामुन व लैसत हुनाक अलामतुन तदुल्लु अलफ़्फ़ानी व कमन यतरूकु तनावलश्शैइ लिख़बिन व रहुन फ़ीहि मुत्तफ़कुन अला जुअफ़िही व अदमुल इहतिजाज़ि बिही य वकूनु दलीलु इबाहतिही क़विय्यन व तावीलूहु मुम्तनिउन औ मुस्तब्इदुन (फ़हल बारी)

या'नी इमाम ग़ज़ाली (रह.) ने वरअ को चार किस्मों पर तक्सीम किया है। एक वरअ सिद्दीक़ीन का है वो ये कि उन तमाम कामों को छोड़ देना जिनको बतौरि निय्यत इबादत से कोई ता'ल्लुक न हो। मुत्तक़ीन का वरअ ये है कि ऐसी चीज़ों को भी छोड़ देना जिनकी हिल्लत में कोई शुब्हा नहीं मगर ख़तरा है कि उनको अमल में लाने से कहीं हुराम तक नौबत न पहुँच जाए और सालेहीन का वरअ ये कि ऐसी चीज़ों से दूर रहना जिनमें हुर्मत के एहतिमाल के लिये कोई भी मौक़ा निकल सकता है।



अगर ऐसा न हो तो वो वस्वसाइयों का वरअ है और उनके अलावा एक वरअश्शुहद है जिसके इतिहास से इंसान शहादत में नाकाबिले ए'तिबार हो जाए आम है कि वो हुराम हो या न हो। यहाँ मुसनिफ (रह.) की गर्ज वस्वसा वालों के वरअ का बयान है जैसा कि कोई किसी शिकार का गोश्त महज इसलिये न खाए कि शायद वो शिकार किसी और आदमी ने भी किया हो और उससे वो जानवर भाग गया हो। या जैसा कि किसी ऐसे आदमी के हाथ से खरीद व फरोख्त छोड़ दे जो मजहूल हो और जिसके बारे में मा'लूम न हो कि उसका माल हुराम है या हलाल का। और कोई ज़ाहिरी दलील भी न हो कि उसकी हिल्लत ही पर यक़ीन किया जा सके। और जैसा कि कोई शख्स ऐसे आदमी की रिवायत तर्क कर दे जिसके जुअफ़ पर सबका इतिफ़ाक़ हो और जिसके साथ हुज्जत न पकड़ी जा सकती हो, ऐसे जुम्ला मश्कूक हालात में परहेज़गारी का नाम वरअ है। मगर हद से ज़्यादा गुजरकर किसी मुसलमान भाई के बारे में बिला तहक़ीक़ कोई ग़लत गुमान क़ायम कर लेना ये भी वरअ के सख़्त ख़िलाफ़ है।

इमाम ग़ज़ाली (रह.) ने किसी जगह लिखा है कि कुछ लोग नमाज़ के लिये अपना लोटा और मुसल्ला इस ख़याल से साथ रखते हैं कि उनके ख़याल में दुनिया के सारे मुसलमानों के लोटे और मुसल्ले इस्ते'माल के लायक़ नहीं हैं। और उन सब में शुब्हा दाख़िल है। सिर्फ़ उन ही का लोटा और मुसल्ला हर किस्म के शक व शुब्हा से बालातर है। इमाम ग़ज़ाली (रह.) ने ऐसे परहेज़गारों को खुद गन्दे करार दिया है। अल्लाहुम्म अहफ़िज्ना मिन जमीइश्शुब्हाति वल्आफ़ाति आमीन!

2057. हमसे अहमद बिन मिक्दाम इज़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान तफ़ावी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद (इर्वा बिन जुबैर) ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि कुछ लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! बहुत से लोग हमारे यहाँ गोश्त लाते हैं। हमें ये मा'लूम नहीं होता कि अल्लाह का नाम उन्होंने ज़िब्ह के वक़्त लिया था या नहीं? उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि बिस्मिल्लाह पढ़कर उसे खा लिया करो।

(दीगर मक़ाम : 5507, 7398)

मतलब ये कि मुसलमान से नेक गुमान रखना चाहिए और जब तक दलील से मा'लूम न हो कि मुसलमान ने ज़िब्ह के वक़्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ा या अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया था तो उसका लाया हुआ या पकाया हुआ गोश्त हलाल ही समझा जाएगा। इदीष का मतलब ये नहीं कि मुश्रिकों का लाया हुआ या पकाया हुआ गोश्त हलाल समझ लो, और फुक़हा ने उसकी तस्रीह की है कि अगर मुश्रिक क़स्साब भी कहे कि इस जानवर को मुसलमान ने काटा है तो उसका क़ौल मज़बूल न होगा। इसलिये मुश्रिक काफ़िर क़स्साई से गोश्त लेने में बहुत एहतियात और परहेज़ करना चाहिए।

बाब 6 : अल्लाह तआला का सूरह जुम्आ में ये फ़र्माना कि जब वो माल तिजारत आता हुआ या कोई और तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ते हैं

2058. हमसे तल्क़ बिन ग़त्ताम ने बयान किया, कहा कि हमसे

٢٠٥٧ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْحَفَّاذِ الْعَبْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الطَّفَاوِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ غُرُوةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَالِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا : أَنَّ قَوْمًا قَالُوا : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ قَوْمًا يَأْتُونَنَا بِاللَّحْمِ لَا نَدْرِي أَذَكَرُوا أَمْ لَا نَدْرِي أَمْ لَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((سُئِلُوا اللَّهَ عَلَيْهِ وَكُلُوهُ)).

[طرفاء ب : ٥٥٠٧ ، ٧٣٩٨].

٦ - بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى : ﴿وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا﴾ [الجمعة : ٩٩]

٢٠٥٨ - حَدَّثَنَا طَلْقُ بْنُ عَتَمٍ قَالَ حَدَّثَنَا

जाइद बिन कुदामा ने बयान किया, उससे हुसैन ने, उनसे सालिम बिन अबी अल जअद ने कि मुझसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जुम्आ की नमाज़ पढ़ रहे थे, (या'नी खुत्बा सुन रहे थे) कि मुल्के शाम से कुछ ऊँट खाने का सामाने तिजारत लेकर आए। (सब नमाज़ी) लोग उनकी तरफ मुतवज्जह हो गए और रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बारह आदमियों के सिवा और कोई बाक़ी न रहा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई, जब वो माले तिजारत या कोई तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। (राजेअ: 936)

**तशीह:** हुआ ये था कि उस ज़माने में मदीना में गल्ले (अनाज) का क़हत्त (अकाल) था। लोग बहुत भूखे और परेशान थे। शाम से जो गल्ले का काफ़िला आया तो लोग बेइख़्तियार होकर उसको देखने चल दिये, सिर्फ़ बारह सहाबा या'नी अशर-ए-मुबशशरह और बिलाल और इब्ने मसरूद (रज़ि.) आप (ﷺ) के पास ठहरे रहे। सहाबा किराम (रज़ि.) कुछ मा'सूम न थे बशर (इन्सान) थे। उनसे ये ख़ता हो गई जिस पर अल्लाह तआला ने उनको इताब फ़र्माया (डॉटा)। शायद उस वक़्त तक उनको ये मा'लूम न होगा कि खुत्बे में से उठकर जाना मना है। इमाम बुखारी (रह.) इस बाब को इसलिये यहाँ लाए कि बेअ और शरअ, तिजारत और सौदागिरी गो उम्दह और मुबाह चीज़ें हैं मगर जब इबादत में उनकी वजह से खलल हो तो उनको छोड़ देना चाहिए। ये मक्क़सद भी है कि जिस तिजारत से यादे इलाही में फ़र्क़ आए मुसलमान के लिये वो तिजारत भी मुनासिब नहीं है क्योंकि मुसलमान की ज़िन्दगी का असल मक्क़सद यादे इलाही है। उसके अलावा जुम्ला मशगूलियात आरज़ी हैं। जिनका महज़ बक्रा-ए-हयात के लिये अंजाम देना ज़रूरी है वरना मक्क़सदे वाहिद सिर्फ़ यादे इलाही है।

## बाब 7 : जो रुपया कमाने में हलाल या हराम की परवाह न करे

2059. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद मक्बरी ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि इंसान कोई परवाह नहीं करेगा कि जो उसने हासिल किया है वो हलाल है या हराम से है।

(दीगर मक़ाम: 2083)

## बाब 8 : खुश्की में तिजारत का बयान

और अल्लाह तआला का फ़र्मान (सूरह नूर में) कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें तिजारत और खरीद व फ़रोख़्त अल्लाह तआला की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती। क़तादा ने कहा कि कुछ लोग ऐसे थे जो खरीद व फ़रोख़्त और तिजारत करते थे लेकिन अगर अल्लाह के हुक्क़ में से कोई हुक्क़ सामने आ जाता तो उनकी तिजारत और

زَايِدَةٌ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ سَالِمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَيْنَمَا نَحْنُ نُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، إِذْ أَقْبَلَتْ مِنَ الشَّامِ عِيرٌ تَحْمِلُ طَعَامًا، فَالْتَفَتُوا إِلَيْهَا حَتَّى مَا بَقِيَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَّا أُنْثَى عَشْرٌ وَجُلَا، فَتَرَلْتُ ﴿وَإِذَا رَأَوْا بِجَارَةً أَوْ لَهْرًا انفَضُّوا إِلَيْهَا﴾. [راجع: ٩٣٦]

## ٧- بَابُ مَنْ لَمْ يَبَالِ مِنْ حَيْثُ كَسَبَ الْمَالَ

٢٠٥٩- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَبٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ الْمَقْبِرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَأَيِّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَبَالِي الْمَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ أَمِنْ الْحَلَالِ أَمْ مِنَ الْحَرَامِ)). [طرفه في: ٢٠٨٣]

## ٨- بَابُ التَّجَارَةِ فِي الْبَرِّ

وَقَوْلُهُ: ﴿وَرَجُلًا لَا تَلْهِيهِمْ بِجَارَةٌ وَلَا تَبِعَ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ﴾ [النور: ٣٧]. وَقَالَ قَتَادَةُ: كَانَ الْقَوْمُ يَتَبَاهَوْنَ وَيَتَجَرَّوْنَ، وَلَكِنَّهُمْ إِذَا نَالَهُمْ حَقٌّ مِنْ

खरीद व फरोख्त उन्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं रख सकती थी, जब तक वो अल्लाह के हक्क को अदा न कर लें। (उनको चैन नहीं आता था)

حَقُوقِ اللَّهِ لَا تُلْهِمُهُمْ بَيْعَارَةً وَلَا بَيْعَ عَنْ  
ذَكَرِ اللَّهِ حَتَّى يُؤْذَوْهُ إِلَى اللَّهِ.

**तशरीह:** कुछ ने बाबुत तिजारत फ़िल बर को ज़ा के साथ फ़िल बज़ पढ़ा है तो तर्जुमा ये होगा कि कपड़े की तिजारत करना मगर बाब की हदीष में कपड़े की तिजारत का ज़िक्र नहीं है और इमाम बुखारी (रह.) ने आगे चलकर जो बाब समुन्दर में तिजारत करने का बयान किया, उसका जोड़ यही है कि यहाँ खुशकी की तिजारत मज़कूर हो। कुछ ने ज़म्मा बा के साथ फ़िल् बर पढ़ा है या 'नी गंदुम की तिजारत तो उसका भी बाब की तरी, सहरा और समुन्दर सब कारगाह अमल हैं। इसी जोशे अमल ने मुसलमानों को मशरिफ़ से मरिब तक दुनिया के हर हिस्से में पहुँचा दिया।

2060, 61. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कि मुझे इब्ना बिन दीनार ने ख़बर दी और उनसे अबुल मिन्हाल ने बयान किया कि मैं सोने चाँदी की तिजारत किया करता था। इसलिये मैंने ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। और मुझसे फ़ज़ल बिन यज़क़ूब ने बयान किया, कहा कि हमसे हज़ाज बिन मुहम्मद ने बयान किया, कि इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मुझे अम्र बिन दीनार और आमिर बिन मुसअब ने ख़बर दी, उन दोनों हज़रात ने अबू मिन्हाल से सुना। उन्होंने बयान किया कि मैंने बरा बिन आज़िब और ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से सोने-चाँदी की तिजारत के बारे में पूछा तो उन दोनों बुजुर्गों ने फ़र्माया कि हम नबी करीम (ﷺ) के अहद में ताजिर थे, इसलिये हमने आपसे सोने-चाँदी की तिजारत के बारे में पूछा था, आपने जवाब ये दिया था कि (लेन-देन) हाथों-हाथ हो तो कोई हर्ज नहीं लेकिन उधारी की सूरत में जाइज़ नहीं है।

(दीगर मक़ाम : 2180, 2181, 2497, 2498, 3939, 3940)

٢٠٦٠، ٢٠٦١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ  
ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ  
عَنْ أَبِي السِّنْهَالِ قَالَ : كُنْتُ تَاجِرًا فِي  
الصُّرَفِ، فَسَأَلْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ فَقَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ  
وَحَدَّثَنِي الْفَضْلُ بْنُ يَقُوبَ قَالَ حَدَّثَنَا  
الْحُجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ  
أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ وَعَاصِمُ بْنُ  
مُضَيْبٍ أَنَّهُمَا سَمِعَا أَبَا السِّنْهَالِ يَقُولُ :  
سَأَلْتُ الثَّوْرَةَ بْنَ عَازِبٍ وَزَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ عَنِ  
الصُّرَفِ فَقَالَا : كُنَّا تَاجِرَيْنِ عَلَى عَهْدِ  
رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَسَأَلْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
عَنِ الصُّرَفِ فَقَالَ : ((إِنْ كَانَ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلَا  
بَأْسَ، وَإِنْ كَانَ بَيْنَهُمَا فَلَا يَصْلُحُ)).

[أطرافه في : ٢١٨٠، ٢٤٩٧، ٣٩٣٩]

[أطرافه في : ٢١٨١، ٢٤٩٨، ٣٩٤٠]

मषलन एक शख्स नक़द रुपया दे और दूसरा कहे मैं उसके बदल का रुपया एक महीने के बाद दूँगा तो ये दुरुस्त नहीं है। बेअ सर्फ़ में सबके नज़दीक तक्काबुज़ यही दोनों बदलों का नक़द-नक़द दिया जाना शर्त है और मियाद के साथ दुरुस्त नहीं होती अब इसमें इख़्तिलाफ़ है कि अगर जिन्स एक ही हो मषलन रुपये को रुपये से या अशरफ़ियों को अशरफ़ियों से तो कमी या ज़्यादाती दुरुस्त है या नहीं? हन्फ़िया के नज़दीक कमी और ज़्यादाती जब जिन्स एक हो दुरुस्त नहीं और उनके मज़हब पर कलदार और हाली सिक्के (वर्तमान सिक्का या मुद्रा) का बदलना मुश्किल हो जाता है और बेहतर ये है कि कुछ पैसे शरीक कर दे, ताकि कमी और ज़्यादा सब के नज़दीक जाइज़ हो जाए (वहीदी)। इस हदीष के उम्मू से इमाम बुखारी

(रह.) ने ये निकाला कि खुशकी में त्जारात करना दुरुस्त है।

**बाब 9 : त्जारात के लिये घर से निकलना और (सूरह जुम्आ में) अल्लाह तआला का फ़र्मान कि जब नमाज़ हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करो**

2062. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमको मुख़्लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अता बिन अबी रिबाह ने ख़बर दी। उन्हें इब्ने दबिन इमर ने कि अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से मिलने की इजाज़त चाही लेकिन इजाज़त नहीं मिली। ग़ालिबन आप उस वक़्त काम में मशगूल थे। इसलिये अबू मूसा (रज़ि.) वापस लौट गये, फिर इमर (रज़ि.) फ़ारिग हुए तो फ़र्माया, क्या मैंने अब्दुल्लाह बिन कैस (रज़ि.) (अबू मूसा रज़ि.) की आवाज़ सुनी थी उन्हें अंदर आने की इजाज़त दे दो। कहा गया वो तो लौट गये। तो इमर (रज़ि.) ने उन्हें बुला लिया। अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि हमें उसी का हुक्म (औलज़रत से) था (कि तीन बार इजाज़त चाहने पर अगर अंदर जाने की इजाज़त न मिले तो वापस लौट जाना चाहिए) इस पर इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, इस हदीष पर कोई गवाह लाओ। अबू मूसा (रज़ि.) अंसार की मज्लिस में गए। और उनसे इस हदीष के बारे में पूछा (कि क्या किसी ने इसे औलज़रत से सुना है) उन लोगों ने कहा कि उसकी गवाही तो तुम्हारे साथ वो देगा जो हम सबमें बहुत ही कम इम्र है। वो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को अपने साथ ले गए। इमर (रज़ि.) ने ये सुनकर फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) का एक हुक्म मुझसे पोशोदा रह गया। अफ़सोस कि मुझे बाज़ारों की खरीद व फ़रोख्त ने मशगूल रखा। आपकी मुराद त्जारात से थी। (दीगर मक़ाम : 6245, 7353)

**तशरीह :** रिवायत में हज़रत इमर (रज़ि.) का बाज़ार में त्जारात करना मज़कूर है उसी से मक़सद बाब प्राबित हुआ। हदीष से और भी बहुत से मसाइल निकलते हैं। मसलन कोई किसी के घर में मुलाक़ात को जाए तो दरवाज़े पर जाकर तीन बार सलाम के साथ इजाज़त त़लब करे, अगर जवाब न मिले तो वापस लौट जाए। किसी हदीष की तस्दीक़ के लिये गवाह त़लब करना भी प्राबित हुआ। नीज़ ये कि सहीह बात में कमसिन बच्चों की गवाही भी मानी जा सकती है। और ये भी प्राबित हुआ कि भूल-चूक बड़े बड़े लोगों से भी हो सकती है वगैरह वगैरह।

**बाब 10 : समन्दर में त्जारात करने का बयान**

۹- بَابُ الْخُرُوجِ فِي التِّجَارَةِ  
وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿فَلْيَنْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ  
وَانْتَبِهُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ﴾ [الجمعة : ۱۰].

۲۰۶۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ  
أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ  
جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ عَبْدِ بْنِ  
عَمْرِ أَنَّ أَبَا مُوسَى الْأَخْضَرِيَّ اسْتَأْذَنَ  
عَلَى عَمْرِ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
فَلَمْ يُؤْذَنَ لَهُ- وَكَأَنَّهُ كَانَ مَشْغُولًا -  
فَرَجَعَ أَبُو مُوسَى. فَفَرَّغَ عَمْرٌ فَقَالَ: أَلَمْ  
أَسْمَعْ صَوْتَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَيْسٍ؟ أَلَمْ تَأْذِنَا  
لَهُ. قِيلَ: قَدْ رَجَعَ فَدَعَاهُ: فَقَالَ: كُنَّا  
لَوْ مَرَّ بِذَلِكَ. فَقَالَ: تَأْذِنِي عَلَى ذَلِكَ  
بِالْيَمِينَةِ. فَاذْهَبْ إِلَى مَجْلِسِ الْأَنْصَارِ  
فَسَأَلْهُمْ، فَقَالُوا: لَا يَشْهَدُ لَكَ عَلَى هَذَا  
إِلَّا أَصْحَابُنَا أَبُو سَعِيدٍ الْخُضَرِيُّ. فَلَحَبَ  
بِأَبِي سَعِيدٍ الْخُضَرِيَّ، فَقَالَ عَمْرٌ: خُفِيَ  
عَلَيَّ هَذَا مِنْ أَمْرِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ؟ الْهَائِي  
الصَّفْقُ بِالْأَسْوَاقِ. يَخْنِي الْخُرُوجُ إِلَى  
التِّجَارَةِ. [طرقاه ۱ : ۶۲۴۵، ۷۳۵۳].

۱۰- بَابُ التِّجَارَةِ فِي الْبَحْرِ

और मत्तर बराक़ ने कहा कि इसमें कोई हर्ज नहीं है। और कुआन मजीद में जो इसका ज़िक्र है वो बहरहाल हक़ है। उसके बाद उन्होंने (सूरह नहल की ये) आयत पढ़ी, और तुम देखते हो कश्तियों को कि उसमें चलती हैं पानी को चीरती हुई ताकि तुम तलाश करो उसके फ़ज़ल से। इस आयत में लफ़्ज़ फुल्क का मतलब कश्ती से है, वाहिद और जमा दोनों के लिये ये लफ़्ज़ उसी तरह इस्तेमाल होता है। मुजाहिद (रह.) ने (इस आयत की तफ़सीर में) कहा कि कश्तियाँ हवा को चीरती हुई चलती हैं और हवा को वही कश्तियाँ (देखने में साफ़ तौर पर) चीरती चलती हैं जो बड़ी होती हैं।

2063. लैस ने कहा कि मुझसे जा'फ़र बिन रबी'आ ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुरमुज़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी इस्राईल के एक शख्स का ज़िक्र किया। जिसने समुन्दर का सफ़र किया था और अपनी ज़रूरत पूरी की थी। फिर पूरी हदीस बयान की (जो किताबुल किफ़ालह में आएगी) (राजेअ : 1498)

**बाब 11 : (सूरह जुम्आ में) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, जब सौदागरी या तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ते हैं**

और सूरह नूर में अल्लाह जल्ला ज़िकरुहू का ये फ़र्माना कि, वो लोग जिन्हें तिजारत और खरीद व फ़रोख्त अल्लाह के ज़िक्र से गाफ़िल नहीं करती, क्रतादा ने कहा कि झहाबा किराम (रज़ि.) तिजारत किया करते थे। लेकिन ज्यों ही अल्लाह तआला का कोई फ़र्ज़ सामने आता तो उनकी तिजारत और सौदागरी अल्लाह के ज़िक्र से उन्हें गाफ़िल नहीं कर सकती थी यहाँ तक कि वो अल्लाह तआला के फ़र्ज़ को अदा न कर लें।

**तशरीह :** अभी चन्द सप्ताह पहले इसी आयत शरीफ़ा के साथ ये बाब गुज़र चुका है और यहाँ दोबारा फिर ये दर्ज हुआ है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने उसे कुछ नाकेलीन ने बुखारी की कलम की भूल करार दिया है। अल्लामा फ़र्माते हैं कि बुखारी शरीफ़ का असल नुस्खा वो था जो हज़रत इमाम के शागिर्द फ़रबरी के पास था। उसमें हवाशी में कुछ इल्हाकात थे। कुछ नक़ल करने वालों ने उन इल्हाकात में से कुछ इबारतों को अपने ख़याल की बिना पर मतन में दर्ज कर दिया है। उसी वजह से ये बाब भी मकरूर आ गया है।

2064. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि

وَقَالَ مَطَرٌ : لَا يَأْمَنُ بِهِ، وَمَا ذِكْرُهُ أَهْلُ  
لِي الْقُرْآنِ إِلَّا بِحَقِّ ثُمَّ تَلَا : ﴿وَتَرَى  
الْفُلْكَ مَوَاقِرَ فِيهِ، وَلَتَتَنَبَّهُوا مِنْ فَضْلِهِ﴾  
[النحل : ١٤] وَالْفُلْكَ السُّفُنُ، الْوَاحِدُ  
وَالْجَمْعُ سَوَاقٍ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : تَمَنَّرُ  
السُّفُنُ الرِّيحَ، وَلَا تَمَنَّرُ الرِّيحَ مِنَ  
السُّفُنِ إِلَّا الْفُلْكَ الْعَظِيمُ.

٢٠٦٣- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ  
رَبِيعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزٍ عَنْ أَبِي  
هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ :  
أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلًا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَرَجَ فِي  
الْبَحْرِ فَفُتِنَ حَاجَةً وَسَاقِ الْحَبِيبَةِ.

[راجع : ١٤٩٨]

١١- بَابُ ﴿وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ  
لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا﴾ [الجمعة : ١١]  
وَقَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿رَجُلًا لَا تَلْمِزُهُمْ  
بِتِجَارَةٍ وَلَا تَنَافَعُ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ﴾ [النور :  
٣٧]. وَقَالَ قُتَادَةُ : كَانَ الْقَوْمُ يَسْعَوْنَ  
وَلَكِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا نَالَهُمْ حَقٌّ مِنْ حَقْوِي  
اللَّهُ لَمْ تَلْمِزُهُمْ بِتِجَارَةٍ وَلَا تَنَافَعُ عَنْ ذِكْرِ  
اللَّهُ حَتَّى يُؤْتُوهُ إِلَى اللَّهِ.

٢٠٦٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ قَالَ : حَدَّثَنِي

मुझसे मुहम्मद बिन फुजैल ने बयान किया, उनसे हुसैन ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी अल जअद ने बयान किया, और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि (तिजारती) कैंटों (का क्राफ़ला) आया। हम उस वक़्त नबी करीम (ﷺ) के साथ जुम्अ (के ख़ुत्बे) में शरीक थे। बारह सहाबा के सिवा बाक़ी तमाम हज़रात उधर चले गए। उस पर ये आयत उतरी कि, जब सौदागरी या तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ते हैं और आपको खड़ा छोड़ देते हैं। (राजेअ : 936)

## बाब 12 : अल्लाह तआला का फ़र्मान कि,

अपनी पाक कमाई में से खर्च करो (अल्बक़र : : 267)

2065. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे अबू वाइल ने, उनसे मसरूक़ ने, और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब औरत अपने घर का खाना (गल्ला वगैरह) बशर्ते कि घर बिगाड़ने की निव्यत न हो खर्च करे तो उसे खर्च करने का प्रवाब मिलता है और उसके शौहर को कमाने का और ख़ज़ान्ची को भी ऐसा ही प्रवाब मिलता है। एक का प्रवाब दूसरे के प्रवाब को कम नहीं करता।

2066. मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे हम्माम ने बयान किया, उन्होंने अबू हुदैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर औरत अपने शौहर की कमाई उसकी इजाज़त के बग़ैर भी (अल्लाह के रास्ते में) खर्च करती है तो उसे आधा प्रवाब मिलता है।

(दीगर मक़ाम : 5192, 5195, 5360)

مُحَمَّدُ بْنُ فُعَيْلٍ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَقْبَلْتُ عَيْرَ وَنَحْنُ نُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْجُمُعَةَ، فَانْقَضَ النَّاسُ إِلَّا اثْنَيْ عَشَرَ رَجُلًا فَتَوَلَّيْتُ هَذِهِ الْآيَةَ: ﴿وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا﴾. [راجع: ٩٣٦]

١٢- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿انْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ﴾ [البقرة: ٢٠٦٥-٢٠٦٦] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا أَنْفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ طَعَامِ بَيْتِهَا غَيْرَ مُفْسِدَةٍ كَانَ لَهَا أَجْرُهَا بِمَا أَنْفَقَتْ، وَلَوْ زَوَّجَهَا بِمَا كَسَبَ، وَلِلنَّحَّازِ مِثْلُ ذَلِكَ، لَا يَنْقُصُ بَعْضُهُمْ أَجْرَ بَعْضٍ شَيْئًا)).

٢٠٦٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَنْفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ كَسْبِ زَوْجِهَا عَنْ غَيْرِ أَمْرِهِ فَلَهُ يَعْطَى أَجْرُهُ)).

[أطرافه في: ٥١٩٢، ٥١٩٥، ٥٣٦٠].

मज़लब ये है कि ऐसी मामूली ख़ैरात करे कि जिसको शौहर देख भी ले तो नापसन्द न करे, जैसे खाने में से कुछ खाना फ़कीर को दे या फटा-पुराना कपड़ा अल्लाह की राह में दे डाले, और औरत क़राइन से समझे कि शौहर की तरफ़ से ऐसी ख़ैरात के लिये इजाज़त है। गो उसने सरीह इजाज़त न दी हो, कुछ ने कहा मुराद ये है कि औरत उस माल में से खर्च करे जो शौहर ने उसके लिये

मुकर्रर कर दिया हो। कुछ नुस्खों में यूँ है कि शौहर को औरत को आधा प़वाब मिलेगा। क़स्तलानी (रह.) ने कहा उन दोनों तौज़िहों में से कोई तौज़ीह ज़रूर करना चाहिए वरना औरत अगर शौहर का माल उसकी इज़ाज़त के बग़ैर ख़र्च कर डाले तो प़वाबे कजा गुनाह लाज़िम होगा।

### बाब 13 : जो रोज़ी में कुशादगी चाहता हो वो क्या करे?

2067. हमसे मुहम्मद बिन यअक़ूब कर्मांनी ने बयान किया, कहा कि हमसे हस्सान बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, कि मैंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि जो शख्स अपनी रोज़ी में कुशादगी चाहता हो या उम्र की दराज़ी चाहता हो तो उसे चाहिये कि सिलारहमी करे। (दीगर मक़ाम : 5986)

नतीजा ये होगा कि उसके रिश्तेदार उसका हुस्ने-सुलूक देखकर दिल से उसकी उम्र की दराज़ी, माल की फ़राखी की दुआएँ करेंगे और अल्लाह पाक उनकी दुआओं के नतीजे में उसकी रोज़ी में और उम्र में बरकत करेगा। इसलिये कि अल्लाह पाक हर चीज़ के घटाने बढ़ाने पर कादिर है।

### बाब 14 : नबी करीम (ﷺ) का उधार खरीदना

2068. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अज़मश ने बयान किया कि इब्राहीम नख़्ख़ी की मजलिस में हमने उधार लेने-देने में (सामान) गिरवी रखने का ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि मुझसे अस्वद ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक यहूदी से कुछ ग़ल्ला एक मुद्दत मुकर्रर करके उधार खरीदा और अपनी लोहे की एक ज़िरह उसके पास गिरवी रखी।

(दीगर मक़ाम : 2096, 2200, 2251, 2252, 2386, 2509, 2513, 2916, 4467)

2069. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद बिन

### ۱۳- بَابُ مَنْ أَحَبَّ الْبَسْطَ فِي الرِّزْقِ

۲۰۶۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي يَحْيَى الْقُرْمَانِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا حَسَّانُ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ سَرَّ أَنْ يَبْسُطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ أَوْ يُنْسَأَ لَهُ فِي آثَرِهِ فَلْيَمِلْ رَحِمَةً)).

[طرفه في : ۵۹۸۶]

### ۱۴- بَابُ شِرَاءِ النَّبِيِّ ﷺ بِالنَّسِيئَةِ

۲۰۶۸- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: ذَكَرْنَا عِنْدَ إِبْرَاهِيمَ الرَّهْنِ فِي السَّلَامِ فَقَالَ: حَدَّثَنِي الْأَسَدُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اشْتَرَى طَعَامًا مِنْ يَهُودِيٍّ إِلَى أَجَلٍ وَرَهْنَهُ دِرْعًا مِنْ خَلِيْفِهِ.

[أطرافه في : ۲۰۹۶, ۲۲۰۰, ۲۲۵۱, ۲۳۸۶, ۲۵۰۹, ۲۵۱۳, ۲۹۱۶, ۴۴۶۷]

۲۰۶۹- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا وَثَّابٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اشْتَرَى مِنْ يَهُودِيٍّ خُبْزًا بِدِرْعَةٍ وَرَهْنَهُ دِرْعًا مِنْ خَلِيْفِهِ.

[أطرافه في : ۲۰۹۶, ۲۲۰۰, ۲۲۵۱, ۲۳۸۶, ۲۵۰۹, ۲۵۱۳, ۲۹۱۶, ۴۴۶۷]

۲۰۶۹- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا وَثَّابٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اشْتَرَى مِنْ يَهُودِيٍّ خُبْزًا بِدِرْعَةٍ وَرَهْنَهُ دِرْعًا مِنْ خَلِيْفِهِ.

अब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, कहा कि हमसे अस्बात अबुल यसअ बसरी ने, कहा कि हमसे हिशाम दस्तवाई ने, उन्होंने ने क़तादा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जौ की रोटी और बदबूदार चर्बी (सालन के तौर पर) ले गए। औहज़रत (ﷺ) ने उस वक़्त अपनी ज़िरह मदीना में एक यहूदी के यहाँ गिरवी रखी थी। और उससे अपने घरवालों के लिये जो क़र्ज लिया था। मैंने खुद आपको ये फ़र्माते सुना कि मुहम्मद (ﷺ) के घराने में कोई शाम ऐसी नहीं आई जिसमें उनके पास एक साअ गैहूँ या एक साअ कोई ग़ल्ला मौजूद रहा हो। हालाँकि आपकी घरवालिओं की ता'दाद नौ थी।

(दीगर मक़ाम : 2508)

قَالَ - مَتَنَا أَتَبَّاطُ أَبُو السَّعِّ الْبَصْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ الدُّسْرَوِيُّ عَنْ قَتَادَةَ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ مَشَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَخْتَبِرُ خَبِيرٍ وَإِمَالَةً مَخِيَّةً، وَلَقَدْ رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ دِرْعًا لَهُ بِالْمَلِيَّةِ عِنْدَ يَهُودِيٍّ وَأَخَذَ مِنْهُ خَبِيرًا لِأَهْلِهِ. وَلَقَدْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَا أَفْسَى عِنْدَ آلِ مُحَمَّدٍ ﷺ صَاعٌ بُرٌّ وَلَا صَاعٌ حَبٌّ، وَإِنْ عِنْدَهُ لَيْسَعٌ بِسَوْءٍ)). (طَرَفُهُ فِي : ٢٥٠٨).

**तशरीह :** इस हदीस से औहज़रत (ﷺ) की इक़तिसादी (पारिवारिक) ज़िन्दगी पर रोशनी पड़ती है। खुदा न ख़ास्ता आप दुनियादार होते तो ये नौबत न आती कि एक यहूदी के यहाँ अपनी ज़िरह गिरवी रखकर राशन हासिल करें। और राशन भी जौ की शक्ल में, जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि आपने आने वाले लोगों के लिये एक इम्दातरीन नमूना पेश फ़र्मा दिया कि वो दुनियावी ऐशो-आराम और नाज़-नख़रों के वक़्त उस्व-ए-मुहम्मदी (ﷺ) को याद कर लिया करें। मक़सद बाब ये है कि इंसान को ज़िन्दगी में कभी उधार भी कोई चीज़ ख़रीदनी पड़ती है। लिहाज़ा उसमें कोई क़बाहत नहीं और इससे ग़ैर-मुस्लिमों के साथ लेन-देन का ता'ल्लुक भी प्राबित हुआ।

## बाब 15 : इंसान का कमाना और अपने हाथों से मेहनत करना

## ١٥- بَابُ كَسْبِ الرُّجُلِ وَعَمَلِهِ

بَابُهُ

इस बाब के तहत हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, व क़द इख़तलफल इलमाउ फ़ी अफ़ज़लिल्मकासिबि क़ालल्मावदी उसूलुल्मकासिबि अज़राअतु वततिजारतु वसम्अतु वल्अशबहु बिमज्हबिश्शाफ़िइ अन्न अत्बहा अत्तिजारतु क़ाल वल्अर्जह अन्न अत्यबहा अज़राअतु लिअन्नहा अक्स्बु इलत्तवक्कुलि व तअक्कुबहुन्नववी बिहदीषिल मुक़द्दम अल्लज़ी फ़ी हाज़ल्बाबि व अन्नम्सवाब अन्न अत्यबल्कस्बि मा कान बिअमलिल्यदि क़ाल फ़इ कान ज़राअन फ़हुव अत्यबुल्मकासिबि लिमा यश्तमिलु अलैहि मिन कौनिही अमलुल्यदि वलिमा फ़ीहि मिनत्तवक्कुलि व लिअन्नहू ला बुद्द फ़ीहि फिल्आदति अय्यूकल मिन्हु बिगैरि इवज़िन. (फ़तह)

या'नी इलमा का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि अफ़ज़ल कस्ब कौनसा है। मावदी ने कहा कि कस्ब के तीन उसूलों तरीक़े हैं। ज़राअत, तिजारत और सम्अत व हिफ़्त और इमाम शाफ़िई के क़ौल में अफ़ज़ल कस्ब तिजारत है। मगर मावदी कहते हैं कि मैं ज़राअत को तरज़ीह देता हूँ कि ये तवक्कल से करीब है। और नववी ने इस पर तआकुब किया है और दुरुस्त बात ये है कि बेहतरीन पाकीज़ा कस्ब वो है जिसमें अपने हाथ को दख़ल ज़्यादा हो। अगर ज़राअत को अफ़ज़ल कस्ब माना जाए तो बजा है क्योंकि उसमें इंसान ज़्यादातर अपने हाथ से मेहनत करता है उसमें तवक्कल भी है और इंसानों और हैवानों के लिये आम नफ़ा भी है। उसमें बग़ैर किसी मुआवज़े के हासिल हुए ग़ल्ले से ख़ाया जाता है। इसलिये ज़राअत बेहतरीन कस्ब है। बशर्तकि कामयाब ज़राअत हो वरना आम तौर पर ज़राअत पेशा लोग मक्लूज़, तंगदस्त, परेशान हाल मिलते हैं। इसलिये कि न तो उनके पास ज़राअत के क़ाबिल काफ़ी ज़मीन होती है न दीगर वसाइल फ़राख़ी के साथ मुहय्या होते हैं, नतीजतन ये कि उनका इफ़लास दिन ब दिन बढ़ता ही चला जाता है, ऐसी हालत में ज़राअत को बेहतरीन कस्ब नहीं कहा जा सकता। इन हालात



में मज़दूरी भी बेहतर है।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब के तहत तीन हदीषें ज़िक्र की हैं। जिनमें से पहली तिजारत के बारे में है, दूसरी ज़राअत से और तीसरी सन्अत के बारे में है। पहली हदीष में हज़रत सय्यिदना अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) और उनके पेशा तिजारत का ज़िक्र है। हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं, लम्मा मरिज़ अबू बक्र मर्ज़हुल्लजी मात फ़ीहि क़ाल उन्जुरु मा ज़ाद फ़ी माली मुन्जु दखलतुल इमारत फ़बअषू बिही इललखलीफ़ति बअदी या'नी जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) मर्जुल मौत में गिरफ़्तार हुए तो आपने अपने घरवालों को वसियत की कि मेरे माल की पड़ताल करना और खलीफ़ा बनने के बाद जो कुछ भी मेरे माल में ज़्यादाती नज़र आए उसे बैतुलमाल में दाख़िल करने के लिये खलीफ़तुल मुस्लिमीन के पास भेज देना। चूनाँचे आपके इतिक़ाल के बाद जायज़ा लिया गया तो एक गुलाम ज़ाइद पाया गया जो बाल-बच्चों को खिलाया करता था और एक कैंट जिससे मरहूम के बाग़ को पानी दिया जाता था। दोनों को हज़रत उमर (रज़ि.) के पास भेज दिया गया। जिनको देखकर हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया रहिमहुल्लाहु अल्ला अबी बक्र लकद अत्अ ब मन बअदहू या'नी अल्लाह पाक हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) पर रहम फ़र्माए उन्होंने अपने बाद वालों को मशक़त में डाल दिया।

2070. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहाब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि जब अबूबक्र (रज़ि.) खलीफ़ा हुए तो फ़र्माया, मेरी क़ौम जानती है कि मेरा (तिजारती) कारोबार मेरे घरवालों की गुज़रान के लिये काफ़ी रहा है। लेकिन अब मैं मुसलमानों के काम में मशगूल हो गया हूँ, इसलिये आले अबूबक्र (रज़ि.) अब बैतुलमाल में से खाएंगी, और अबूबक्र (रज़ि.) मुसलमानों का माले तिजारत बढ़ाता रहेगा।

٢٠٧٠ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمَّا اسْتُخْلِفَ أَبُو بَكْرٍ الصَّدِيقُ قَالَ: لَقَدْ عَلِمَ قَوْمِي أَنَّ حِرْزِي لَمْ تَكُنْ تَعْبُرُ عَنْ مَوْلَايَ أَهْلِي، وَطَعِلْتُ بِأَمْرِ الْمُسْلِمِينَ، فَسَأَلْتُ أُنْ أَبِي بَكْرٍ مِنْ هَذَا الْمَالِ وَتَخَفَرْتُ لِلْمُسْلِمِينَ)).

या'नी अब खिलाफ़त के काम में मशरूफ़ रहूँगा तो मुझको अपना ज़ाती पेशा और बाज़ारों में फिरने का मौक़ान मिलेगा इसलिये मैं बैतुलमाल से अपना और अपने घरवालों का खर्चा किया करूँगा और ये खर्चा भी मैं इस तरह से निकाल दूँगा कि बैतुलमाल के रुपये पैसे में तिजारत और सौदागरी करके उसको तरफ़ी दूँगा और मुसलमानों का फ़ायदा कराऊँगा।

2071. मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबुल अस्वद ने बयान किया, उनसे इर्वा ने कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, रसूलुल्लाह (ﷺ) के म्हाबा (रज़ि.) अपने काम अपने ही हाथों से किया करते थे और (ज्यादा मेहनत व मशक़त की वजह से) उनके जिस्म से (पसीने की) बू आ जाती थी। इसलिये उनसे कहा गया कि अगर तुम गुस्ल कर लिया करो तो बेहतर होगा। इसकी रिवायत हम्मा ने अपने वालिद से और उन्होंने अपने बाप से और उन्होंने आइशा (रज़ि.) से की है। (राजेज़: 903)

٢٠٧١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((كَانَ اصْنَابُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَمَالًا أَنْفُسِهِمْ، وَكَانَ يَكُونُ لَهُمْ أَزْوَاجٌ، فَقِيلَ لَهُمْ: لَوْ اغْتَسَلْتُمْ)). رَوَاهُ هَمَامٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ. [راجع: ٩٠٣]

2072. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको ईसा बिन यूनस ने खबर दी, उन्हें घोर ने खबर दी, उन्हें खालिद बिन मअदान ने और उन्हें मिक्दाम (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी इंसान ने उस शख्स से बेहतर रोज़ी नहीं खाई, जो खुद अपने हाथों से कमाकर खाता है अल्लाह के नबी दाऊद अलैहिस्सलाम भी अपने हाथ से काम करके रोज़ी खाया करते थे।

2073. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि हमें मअमर ने खबर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने कि दाऊद अलैहिस्सलाम सिर्फ़ अपने हाथ की कमाई से खाया करते थे।

(दीगर मक़ाम : 3417, 4713)

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम खेती का काम करते थे और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम लोहार का काम और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम बढ़ई का काम करते और हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम कपड़े सिया करते और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बकरियाँ चराया करते थे। और हमारे नबी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) तिजारत पेशा थे, लिहाज़ा किसी भी हलाल और जाइज़ पेशा को हकीर जानना इस्लामी शरीअत में सख़्त ना रवा है।

2074. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैप्र बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के गुलाम अबी उबैद ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया वो शख्स जो लकड़ी का गट्टा अपनी कमर पर लादकर लाए, उससे बेहतर है जो किसी के सामने हाथ फैलाए चाहे वो उसे कुछ दे दे या न दे।

(राजेअ : 147)

2075. हमसे याह या बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे वकीअ ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे जुबैर बिन अब्बाम (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर

۲۰۷۲- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ ثَوْبٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ عَنِ السَّقْدَامِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا أَكَلَ أَحَدٌ طَعَامًا قَطُّ خَيْرًا مِنْ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ، وَإِنْ نَبِيَ اللَّهُ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ)).

۲۰۷۳- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مَثَبٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ: ((أَنْ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ لَا يَأْكُلُ إِلَّا مِنْ عَمَلِ يَدِهِ)).

[طرفاء في : ۳۴۱۷, ۴۷۱۳]

۲۰۷۴- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَنْ يَخْتَلِبَ أَحَدُكُمْ خَزْمَةً عَلَى ظَهْرِهِ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ أَحَدًا فَيُعْطِيَهُ أَوْ يَمْنَعَهُ)).

[راجع : ۱۴۷۰]

۲۰۷۵- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللَّهُ

कोई अपनी रस्सियों को सम्भाल ले और उनमें लकड़ी बाँधकर लाए तो वो उससे बेहतर है जो लोगों से मांगता फिरे।

(राजेअ : 1471)

या'नी माँगने से बचना और खुद मेहनत मजदूरी करके गुजराना करना, एक सच्चे मुसलमान की ज़िंदगी यही होनी ज़रूरी है।

**बाब 16 : खरीद व फरोख्त के वक्त नमी ,  
वुस्अत और फय्याज़ी करना और किसी से  
अपना हक़ पाकीज़गी से मांगना**

2076. हमसे अली बिन अयाश ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू गस्सान मुहम्मद बिन मुतरफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया, और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ऐसे शख्स पर रहम करे जो बेचते वक़्त और खरीदते वक़्त और तक्राज़ा करते वक़्त फ़य्याज़ी और नरमी से काम लेता है।

**बाब 17 : जो शख्स मालदार को मुहलत दे**

2077. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे जुहैर ने बयान किया, कहा कि हमसे मंसूर ने, उनसे रिबज़ी बिन हिराश ने बयान किया, और उनसे हुज़ैफ़ बिन यमान (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले गुज़िश्ता उम्मतों के किसी शख्स की रूह के पास (मौत के वक़्त) फ़रिश्ते आए और पूछा कि तूने कुछ अच्छे काम भी किये हैं? रूह ने जवाब दिया कि मैं अपने नौकरों से कहा करता था कि वो मालदार लोगों को (जो उनके मक़रूज़ हों) मुहलत दे दिया करें और उन पर सख़्ती न करें और मुहताजों को मुआफ़ कर दिया करें रावी ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर फ़रिश्तों ने भी उससे दरगुज़र किया और सख़्ती नहीं की। और अबू मालिक रिबज़ी से (अपनी रिवायत में ये अल्फ़ाज़) बयान किये। मैं खाते कमाते के साथ (अपना हक़ लेते वक़्त) नरम मामला करता था और तंगहाल मक़रूज़ को मुहलत दे देता था। इसकी मुताबअत

عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَنْ يَأْخُذَ أَحَدُكُمْ أَجَلَهُ خَيْرَ لَهُ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ النَّاسَ)). (راجع: 1471)

١٦- بَابُ السُّهُولَةِ وَالسَّمَاحَةِ فِي الشِّرَاءِ وَالْبَيْعِ وَمَنْ طَلَبَ حَقًّا فَلْيَطْلُبْهُ فِي عَفَافٍ

٢٠٧٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عِشْرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُكَدِيرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((رَحِمَ اللَّهُ رَجُلًا سَمَحًا إِذَا بَاعَ، وَإِذَا اشْتَرَى، وَإِذَا اقْتَضَى)).

١٧- بَابُ مَنْ أَنْظَرَ مُوسِرًا

٢٠٧٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا مَنصُورٌ أَنَّ رِبْعِيَّ بْنَ جِرَاحٍ حَدَّثَهُ أَنَّ حُدَيْفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَلَقَّتِ الْمَلَائِكَةُ رُوحَ رَجُلٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، قَالُوا: أَغْمِلْتَ مِنَ الْخَيْرِ شَيْئًا؟ قَالَ: كُنْتُ أَمُرُ فِتْيَانِي أَنْ يَنْظُرُوا وَيَسْجُورُوا عَنْ الْمُسِيرِ. قَالَ: فَتَسْجُورُوا عَنْهُ)). وَقَالَ أَبُو مَالِكٍ عَنْ رِبْعِيٍّ: ((كُنْتُ أَيْسُرُ عَلَى الْمُسِيرِ، وَأَنْظِرُ الْمُغْمِرِينَ)). وَتَابَعَهُ شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ رِبْعِيٍّ. وَقَالَ أَبُو عَوَانَةَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ رِبْعِيٍّ:

शुअबा ने की है। उनसे अब्दुल मलिक ने और उनसे रिब्नी ने बयान किया, अबू अवाना ने कहा कि उनसे अब्दुल मलिक ने रिब्नी से बयान किया कि (उस रूह ने ये अल्फ़ाज़ कहे थे) मैं खाते कमाते को मुहलत दे देता था और तंग हाल वाले मकरूज़ से दरगुज़र करता था। और नईम बिन अबी हिन्द ने बयान किया, उनसे रिब्नी ने (कि रूह ने ये अल्फ़ाज़ कहे थे) मैं खाते कमाते लोगों को (जिन पर मेरा कोई हक़ वाजिब होता) इज़्र कुबूल कर लिया करता था और तंगहाल वाले से दरगुज़र कर दिया था। (दीगर मक़ाम : 2391, 3451)

**तशरीह :** या'नी भले ही कर्ज़दार मालदार हो मगर उस पर सख्ती न करे, अगर मुहलत चाहिये तो मुहलत दे। मालदार की ता'रीफ़ में इख़ितलाफ़ है। कुछ ने कहा जिसके पास अपना और अपने अहलो-अयाल का खर्चा मौजूद हो। प्रौरी और इब्ने मुबारक और इमाम अहमद और इस्हाक़ ने कहा जिसके पास पचास दिरहम हों और इमाम शाफ़िई ने कहा उसकी कोई हद मुकर्रर नहीं कर सकते; कभी जिसके पास एक दिरहम हो मालदार कहला सकता है जब वो उसके खर्च से फ़ाज़िल हो और कभी हजार दिरहम रखकर भी आदमी मुफ़्लिस होता है जबकि उसका खर्चा ज़्यादा हो और अयाल बहुत हों और वो कर्ज़दार रहता हो।

### बाब 18 : जिसने किसी तंगदस्त को मुहलत दी उसका प्रवाब

2078. हमसे हिशाम बिन अम्मार ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन बलीद जुबैदी ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ताजिर लोगों को कर्ज़ दिया करता था। जब किसी तंगदस्त को देखता तो अपने नौकरों से कह देता कि उससे दरगुज़र कर जाओ। शायद कि अल्लाह तआला भी हमसे (आखिरत में) दरगुज़र फ़र्माए। चूनोंचे अल्लाह तआला ने (उसके मरने के बाद) उसको बख़्श दिया। (दीगर मक़ाम : 3480)

**तशरीह :** तंगदस्त को मुहलत देना और उस पर सख्ती न करना अल्लाह के यहाँ महबूब है, मगर ऐसे लोगों को भी नाजाइज़ फ़ायदा न उठाना चाहिये कि माल वाले का माल तल्फ़ (बर्बाद) हो। दूसरी रिवायत में है कि मकरूज़ अगर दिल में कर्ज़ अदा करने की निव्यत रखेगा तो अल्लाह तआला भी जरूर उसका कर्ज़ अदा करा देगा।

**बाब 19 : जब खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों साफ़ साफ़ बयान कर दें और एक दूसरे की बेहतरी चाहें**

((أَنْظِرِ الْمُوسِرَ، وَأَتَجَاوَزْ عَنْ الْمُغْسِرِ)). وَقَالَ نَعِيمُ بْنُ أَبِي هِنْدٍ عَنْ رَبِيِّ : ((فَأَقْبَلُ مِنَ الْمُوسِرِ، وَأَتَجَاوَزْ عَنْ الْمُغْسِرِ)). [طرفاء ٣ : ٢٣٩١، ٣٤٥١.]

١٨- بَابُ مَنْ أَنْظَرَ مُغْسِرًا  
٢٠٧٨- حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ غَمَارٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ سَمْعَ بْنَ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((كَانَ تَاجِرٌ يُدَافِنُ النَّاسَ، فَإِذَا رَأَى مُغْسِرًا قَالَ لِفَتَايِهِ : تَجَاوَزُوا عَنْهُ لَعَلَّ اللَّهَ أَنْ يَتَجَاوَزَ عَنْهُ، فَتَجَاوَزَ اللَّهُ عَنْهُ)). [طرفه ٣ : ٣٤٨٠.]

١٩- بَابُ إِذَا بَيَّنَّ الْبَيْعَانِ، وَلَمْ يَكْتُمَا، وَتَصَحَّاحًا

और अदाअ बिन खालिद (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने एक बैअनामा लिख दिया था कि ये वो कागज़ है जिसमें मुहम्मद अल्लाह के रसूल (ﷺ) का अदा बिन खालिद से खरीदने का बयान है। ये बेअ मुसलमान की है मुसलमान के हाथ, न इसमें कोई ऐब है न कोई फ़रेब न फ़िस्क व फ़िजूर, न कोई बदबातिनी है। और क़तादा (रह.) ने कहा कि ग़ाइला, ज़िना, चोरी और भागने की आदत को कहते हैं।

इब्राहीम नख़्ज़ी (रह.) से किसी ने कहा कि कुछ दलाल (अपने अस्तबल और बहिस्तानी अस्तबल) रखते हैं और (धोखा देने के लिये) कहते हैं कि फ़लों जानवर कल ही ख़ुरासान से आया था और फ़लों आज ही बहिस्तान से आया है। तो इब्राहीम नख़्ज़ी ने इस बात को बहुत ज़्यादा नागवारी के साथ सुना। इब्नबा बिन अमिर (रज़ि.) ने कहा कि किसी शख्स के लिये भी ये जाइज़ नहीं कि कोई सौदा बेचे और ये जानने के बावजूद कि उसमें ऐब है, खरीदने वाले को उसके बारे में न बताए।

**तशरीह:** काज़ी अयाज़ ने कहा महीह यूँ है कि अदा के खरीदने का बयान है नबी करीम (ﷺ) से, जैसे तिमिज़ी और निसाई और इब्ने माजा ने इसे वज़ल किया है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा मुम्किन है यहाँ इश्तिरा बाअ के मा'नी में आया हो या मामला कई बार हुआ हो। गुलाम के ऐब का ज़िक्र है या'नी वो काना, लूला, लंगड़ा, फ़रेबी नहीं है। न भागने वाला बदकार है। मक़सद ये है कि बेचने वाले का फ़र्ज़ है कि मामला की चीज़ के ऐब व स़वाब से खरीददार को पूरे तौर पर आगाह कर दे।

2079. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे ज़ालेह अबू ख़लील ने, उनसे अबैदुल्लाह बिन हारिष ने, उन्होंने हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) से किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, खरीदने और बेचने वालों को उस वक़्त इख़्तियार (बेअ ख़त्म कर देने का) है जब तक दोनों जुदा न हों या आपने (मालम यतफ़रकू के बजाय) हत्ता यतफ़रक़ा फ़र्माया। (आँहज़रत ﷺ ने मज़ीद इश्राद फ़र्माया) पस अगर दोनों ने सच्चाई से काम लिया और हर बात स़ाफ़-स़ाफ़ खोल दी तो उनकी खरीद व फ़रोख्त में बरकत होती है लेकिन अगर कोई बात छुपाकर रखी या झूठ कही तो उनकी बरकत ख़त्म कर दी जाती है।

(दीगर मक़ाम : 2082, 2108, 2110, 2114)

وَيَذْكُرُ عَنْ الْعَدَاءِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: كُتِبَ لِي النَّبِيُّ ﷺ ((هَذَا مَا اشْتَرَى مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنَ الْعَدَاءِ بْنِ خَالِدٍ بَيْعَ الْمُسْلِمِ الْمُسْلِمَ، لَا دَاءَ وَلَا خِيَنَةَ وَلَا عَائِلَةً)). وَقَالَ قَدَادَةُ: الْعَائِلَةُ الرِّزَا وَالسَّرِقَةُ وَالْإِبَاقُ.

وَقِيلَ لِابْنِ رَاهِمٍ: إِنَّ بَعْضَ النُّحَاسِينَ يُسَمِّي: آوِيَّ خُرَاسَانَ. وَسَجِسْتَانَ، فَيَقُولُ: جَاءَ أَمْسٍ مِنْ خُرَاسَانَ، وَجَاءَ الْيَوْمَ مِنْ سِجِسْتَانَ. فَكُفِّرُهُ كِبْرَاهَةَ شَدِيدَةً. وَقَالَ غُبَةُ بْنُ عَامِرٍ: لَا يَجُزُّ لِأَمْرِيٍّ يَبِيعُ سَلْعَةً يَعْلَمُ أَنَّ بِهَا دَاءً إِلَّا الْخَبْرَةَ.

٢٠٧٩ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَدَادَةَ عَنْ صَالِحِ أَبِي الْخَلِيلِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْخَارِثِ رَفَعَهُ إِلَى حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَفْرَقَا - أَوْ قَالَ: حَتَّى يَفْرَقَا - فَإِنْ صَدَقَا وَتَيَّأَ بُرُوكَ لَهُمَا فِي بَيْعِهِمَا، وَإِنْ كَتَمَا وَكَذَبَا مُحِقَتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا)).

أَطْرَافُهُ فِي : ٢٠٨٢، ٢١٠٨، ٢١١٠،

[٢١١٤]

**तशरीह:** मक़सदे बाब ज़ाहिर है सौदागर के लिये ज़रूरी है कि वो अपने माल का हुस्न व क़बह (अच्छाई व बुराई) सब ज़ाहिर कर दें ताकि ख़रीदने वाले को बाद में शिकायत का मौक़ा न मिल सके और इस बारे में कोई झूठी क़सम हर्गिज़ न खाएँ। और ये भी मा'लूम हुआ कि ख़रीददार को जब तक वो दुकान से अलग न हो माल वापस करने का इख़्तियार है। हाँ, दुकान से चले जाने के बाद ये इख़्तियार ख़त्म हो जाता है मगर ये कि दोनों बाहमी तौर पर एक मुद्दत के लिये उस इख़्तियार को तै कर लिया हो तो ये अलग बात है।

## बाब 20 : मुख़तलिफ़ क्रिस्म की खज़ूर मिलाकर बेचना कैसा है?

2080. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यहा़ा ने, उनसे अबू सलमान ने, उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया हमें (नबी करीम ﷺ की तरफ़ से) मुख़तलिफ़ क्रिस्म की खज़ूरें एक साथ मिला करती थीं और हम दो स़ाअ खज़ूर एक स़ाअ के बदले में बेच दिया करते थे। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि दो स़ाअ एक स़ाअ के बदले में न बेची जाए और न दो दिरहम एक दिरहम के बदले बेचे जाएँ।

٢٠- بَابُ بَيْعِ الْخَلِطِ مِنَ التَّمْرِ  
٢٠٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا نُرْزَقُ تَمْرَ الْجَمْعِ، وَهُوَ الْخَلِطُ مِنَ التَّمْرِ، وَكُنَّا نَبِيعُ صَاعَيْنِ بِصَاعٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا صَاعَيْنِ بِصَاعٍ وَلَا دِرْهَمَيْنِ بِدِرْهَمٍ)).

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सदे बाब ये बतलाना है कि इस क्रिस्म की मख़लूत (मिक्स) खज़ूरों की बेअ जाइज़ है क्योंकि उनमें जो कुछ भी ऐब है वो ज़ाहिर है और जो इम्दगी है वो भी ज़ाहिर है। कोई धोखेबाज़ी नहीं है, लिहाज़ा ऐसी मख़लूत खज़ूरें बेची जा सकती हैं। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने जो हिदायत फ़र्माई वो हदीस से ज़ाहिर है।

## बाब 21 : गोश्त बेचनेवाले और क़स्साब का बयान

2081. हमसे इमर बिन हफ़्स बिन गयाज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि हमसे अज़मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ ने बयान किया और उनसे अबू मसऊद (रज़ि.) ने कि अंसार में से एक स़हाबी जिनकी कुन्नियत अबू शुऐब (रज़ि.) थी, तशरीफ़ लाए और अपने गुलाम से जो क़स्साब था, फ़र्माया कि मेरे लिये इतना खाना तैयार कर जो पाँच आदमी के लिये काफ़ी हो। मैंने नबी करीम (ﷺ) की और आपके साथ और चार आदमियों की दा'वत का इरादा किया क्योंकि मैंने आपके चेहरा मुबारक पर भूख के आघार देखे थे। चुनाँचे उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को बुलाया। आपके साथ एक और स़ाहब भी आ गये। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमारे साथ एक और स़ाहब ज़ाइद आ गये हैं। अगर आप चाहें तो उन्हें

## ٢١- بَابُ مَا قِيلَ فِي اللَّحَامِ وَالْجَزَارِ

٢٠٨١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَيْبَانُ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ يُكْنَى أَبَا شُعْبَةَ فَقَالَ لِعَلَامٍ لَهُ قَصَابٌ: اجْعَلْ لِي طَعَامًا يَكْفِي خَمْسَةَ لِيَانِي أُرِيدُ أَنْ أَذْغُو النَّبِيَّ ﷺ، خَامِسَ خَمْسَةِ، لِيَانِي قَدْ عَرَفْتُ لِي وَجْهَهُ الْجَوْعَ، فَذَعَاهُمْ، فَجَاءَ مَعَهُمْ رَجُلٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ هَذَا قَدْ تَبَعَنَا، لَإِنْ شِئْتَ أَنْ نَأْذَنَ لَهُ فَأَذِنَ لَهُ، وَإِنْ شِئْتَ

भी इजाज़त दे सकते हैं और चाहें तो वापस कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि नहीं, बल्कि मैं इन्हें भी इजाज़त देता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 2456, 5434, 5461)

أَنْ يَرْجِعَ (رَجَعَ)). فَقَالَ : لَا، بَلْ قَدْ أَذِنْتُ لَهُ.

[أطرافه في: ٢٤٥٦، ٥٤٣٤، ٥٤٦١].

**तशरीह :** या'नी वो तुफैली बनकर चला अया, उस शख्स का नाम मा'लूम नहीं हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने साहिबे खाना (घरवाले) से इजाज़त ली ताकि उसका दिल खुश हो। और अबू तलहा (रज़ि.) की दा'वत में आपने ये इजाज़त न ली क्योंकि अबू तलहा ने दा'वत में आने वालों की ता'दाद मुकर्रर नहीं की थी और उस शख्स ने पाँच की ता'दाद मुकर्रर कर दी थी, इसलिये आपने इजाज़त की ज़रूरत समझी। हदीष में क़स्साब का ज़िक्र है और गोश्त बेचने वालों का इसी से पेशे का जवाज़ प्राबित हुआ।

**बाब 22 : बेचने में झूठ बोलने और (ऐब को)**

**छुपाने से (बरकत) ख़त्म हो जाती है**

2082. हमसे बदल बिन महबूर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे क़तादा ने, कहा कि मैंने अबू ख़लील से सुना, वो अब्दुल्लाह बिन हारिष से नक़ल करते थे और वो हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़रीद व फ़रोख़्त करने वालों को इख़ितयार है जब तक वो एक-दूसरे से जुदा न हों (कि बेअ फ़सख़ कर दें या रखें) या आपने (मालम यतफ़र्रका के बजाय) हत्ता यतफ़र्रका फ़र्माया। पस अगर दोनों ने सच्चाई इख़ितयार की और हर बात खोल-खोलकर बयान की तो उनकी ख़रीद व फ़रोख़्त में बरकत होगी और अगर उन्होंने कुछ छुपाएखा या झूठ बोला तो उनके ख़रीद व फ़रोख़्त की बरकत ख़त्म कर दी जाएगी। (राजेज़ : 2079)

**बाब 23 : अल्लाह तआला का फ़र्मान कि ऐ ईमानवालों! सूद दरसूद मत खाओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह पा सको (आले इमरान : 130)**

**तशरीह :** पहले यही आयत उतरी, जाहिलियत का कायदा था कि जब वादा आ पहुँचता तो क़र्ज़दार से कहते, तू अदा करता है या सूद देना पसन्द करता है। अगर वो न देता तो सूद लगा देते और असल में शरीक कर लेते। इस तरह सूद की रक़म जमा होकर दोगुनी-तिगुनी हो जाती। अल्लाह ने इसका ज़िक्र फ़र्माया और मना किया, इसका मतलब ये नहीं है कि असल से कम या हल्का खाना दुरुस्त है। हमारी शरीअत में सूद हल्का हो या भारी मुत्लक़न ह़राम और नाजाइज़ है।

2083. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि

٢٢- بَابُ مَا يَمْنَحُ الْكَذِبُ

وَالْكِفْمَانُ فِي الْبَيْعِ

٢٠٨٢- حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ مَهْبُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْخَلِيلِ يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ خَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْبَيْعَانُ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَفْتَرَقَا - أَوْ قَالَ حَتَّى يَفْتَرَقَا - فَإِنْ صَدَقَا وَبَيَّنَّا بُرْكَ لَهُمَا فِي تَبِعِيهِمَا، وَإِنْ كَتَمَا وَكَلَمَا مُحِقَّتْ بُرْكَهُمَا تَبِعِيهِمَا)).

[راجع: ٢٠٧٩]

٢٣- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾ الآية [آل عمران : ١٣٠]

٢٠٨٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي

हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक्बरी ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ज़माना ऐसा आएगा कि इंसान उसकी परवाह नहीं करेगा कि माल उसने कहाँ से लिया, हलाल तरीक़े से या हराम तरीक़े से।

(राजेज़: 2059)

ذُنُبٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ الْمَقْبَرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي الْمَرْءُ بِمَا أَخَذَ الْمَالُ أَمِنْ خِلَالٍ أَمْ خَوَامٍ)).

[راجع: ٢٠٥٩]

बल्कि उनकी हर तरह से पैसा जोड़ने की नियत होगी, कहीं से भी मिल जाए और किसी तरह से ख़्वाह शरअन वो जाइज़ हो या नाजाइज़। एक हदीष में आया है कि एक ज़माना ऐसा आएगा कि जो सूद न खाएगा उस पर भी सूद का गुबार पड़ जाएगा। या'नी वो सूदी मामलात में वकील या हाकिम या गवाह की दैषियत से शरीक होकर रहेगा। आज के निज़ामे बातिल के निफ़ाज़ से ये बलाएँ जिस क़दर आम हो रही हैं मज़ीद तफ़सील (विस्तृतविवरण) की मुहताज नहीं हैं।

### बाब 24 : सूद खाने वाला और उस पर गवाह होने वाला और सूदी मुआमलात करने वाला, इन सबकी सज़ा का बयान

और अल्लाह तआला का ये फ़र्मान कि जो लोग सूद खाते हैं, वो क़यामत में बिलकुल उस शख़्स की तरह उठेंगे जिसे शैतान ने लिपटकर दीवाना बना दिया हो। ये हालत उनकी इस वजह से होगी कि उन्होंने कहा था कि ख़रीद व फ़रोख्त भी सूद की तरह है हालाँकि अल्लाह तआला ने ख़रीद व फ़रोख्त को हलाल करार दिया है और सूद को हराम। पस जिसको उसके रब की नज़ीहत पहुँची और वो (सूद लेने से) ब्राज़ आ गया तो वो जो कुछ पहले ले चुका है वो उसी का है और उसका मामला अल्लाह के सुपुर्द है लेकिन अगर वो फिर भी सूद लेता रहा तो यही लोग जहन्नमी हैं, ये उसमे हमेशा रहेंगे।

किसी पर आसेब हो या शैतान तो वो खड़ा नहीं हो सकता। अगर मुश्किल से खड़ा भी होता है तो कंपकंपा कर गिर पड़ता है। यही हाल हश्श में सूद खाने वालों का होगा कि वो मख़बूतल ह्वास (बावले) होकर हश्श में अल्लाह के सामने हाज़िर किये जाएँगे। ये वो लोग होंगे जिन्होंने सूद को तिजारात पर क़यास (अन्दाज़ा) करके उसको हलाल करार दिया, हालाँकि तिजारात को अल्लाह ने हलाल करार दिया है और सूदी मुआमलात को हराम, मगर उन्होंने क़ानूने इलाही का मुक़ाबला किया, गोया चोरी की और सीनाज़ोरी की, लिहाज़ा उनकी सज़ा यही होनी चाहिये कि वो मैदाने मह़शर में इस क़दर ज़लील होकर उठेंगे कि देखने वाले सब ही उनको ज़िल्लत और ख़वारी की तस्वीर देखेंगे।

2084. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबुज्जुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और

٢٤- بَابُ آكِلِ الرِّبَا وَشَاهِدِهِ وَكَاتِبِهِ وَقَوْلُهُ تَعَالَى :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ يَكْفُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا: إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحْلَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَاتَّقِ اللَّهَ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (البقرة: ٢٧٥)

٢٠٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي الصُّحَيْ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ



उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (सूरह) बकर: की आखिरी आयतें (अल्लज़ीना याकुलू नरिबा) अल्लज़ नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें सहाबा (रज़ि.) को मस्जिद में पढ़कर सुनाया। उसके बाद उन पर शराब की तिजारत को हुराम कर दिया। (राजेअ: 2059)

2085. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे जरिर बिन हाज़िम ने, कहा कि हमसे अबू रिजाअ बसरी ने बयान किया, उनसे समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, रात (ख़वाब में) मैंने दो आदमी देखे, वो दोनों मेरे पास आए और मुझे बैतुल मस्जिद में ले गए। फिर हम सब वहाँ से चले यहाँ तक कि हम एक ख़ून की नहर पर आए, वहाँ (नहर के किनारे पर) एक शख्स खड़ा हुआ था। और नहर के बीच में भी एक शख्स खड़ा हुआ था। (नहर के किनारे पर) खड़े होने वाले के सामने पत्थर पड़े हुए थे। बीच नहर वाला आदमी आता और ज्यों ही वो चाहता कि बाहर निकल जाए फ़ौरन ही बाहर वाला शख्स उसके मुँह पर पत्थर खींचकर मारता जो उसे वहीं लौटा देता था, जहाँ वो पहले था। इसी तरह जब भी वो निकलना चाहता किनारे पर खड़ा हुआ शख्स उसके मुँह पर पत्थर खींचकर मारता और वो जहाँ था वहीं फिर लौट जाता। मैंने (अपने साथियों से जो फ़रिश्ते थे) पूछा, कि ये क्या है, तो उन्होंने उसका जवाब ये दिया कि नहर में तुमने जिस शख्स को देखा वो सूद खाने वाला इंसान है।

(राजेअ: 845)

**तशरीह:** ये तवील हदीस पारा नम्बर 5 में भी गुज़र चुकी है। उसमें सूदखोर का अज़ाब दिखलाया गया है कि दुनिया में उसने लोगों का ख़ून चूस-चूसकर दौलत जमा किया था, उसी ख़ून की वो नहर है जिसमें वो ग़ौते खिलाया जा रहा है। कुछ रिवायात में वसतुन्नहर की जगह शितुन्नहर का लफ़ज़ है।

## बाब 25 : सूद खिलाने वाले का गुनाह

अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, ऐ ईमानवालों! अल्लाह से डरो, और छोड़ दो वसूली उन रक़मों की जो बाक़ी रह गई हैं लोगों पर सूद से, अगर तुम ईमान वाले हो और अगर तुम ऐसा नहीं करते तो फिर तुमको ऐलाने जंग है अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ से, और अगर तुम सूद लेने से तौबा करते हो तो सिर्फ़ अपनी असल रक़म ले लो, न तुम किसी पर ज़्यादाती करा और न तुम पर

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمَّا نَزَلَتْ آيَةُ الْبَقَرَةِ قَرَأَهُنَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَيْهِمُ فِي الْمَسْجِدِ، ثُمَّ حُرِّمَ التِّجَارَةُ فِي الْخَمْرِ)).

[راجع: 159]

٢٠٨٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَارِثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ الثِّلَّةَ وَرَجُلَيْنِ آتِيَانِي فَأَخْرَجَانِي إِلَى أَرْضٍ مُقَدَّسَةٍ، فَأَنْطَلَقْنَا حَتَّى آتَيْنَا عَلَى نَهْرٍ مِنْ دَمٍ، فِيهِ رَجُلٌ قَائِمٌ، وَعَلَى وَسْطِ النَّهْرِ رَجُلٌ بَيْنَ يَدَيْهِ حِجَارَةٌ. فَأَقْبَلَ الرَّجُلُ الَّذِي فِي النَّهْرِ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ رَمَى الرَّجُلُ بِخَجَرٍ فِي فِيهِ فَرَدَّهُ حَيْثُ كَانَ، فَجَعَلَ كُلُّمَا جَاءَ لِيَخْرُجَ رَمَى لِي فِيهِ بِخَجَرٍ فَيَرْجِعُ كَمَا كَانَ، فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ فَقَالَ الَّذِي رَأَيْتُهُ فِي النَّهْرِ: أَكْبَلُ الرِّبَا)).

[راجع: 845]

## ٢٥- بَابُ مُوجِبِ الرِّبَا

لِقَوْلِهِ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِخَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْتِغُوا فَلَئِنَّكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَحْلُمُونَ وَلَا تَحْلُمُونَ وَإِن كَانَ ذُو

कोई ज़्यादाती हो, और अगर मकरूज़ तंगदस्त है तो उसे मुहलत दे दो अदायगी की ताक़त होने तक। और अगर तुम उससे अमल करम भी छोड़ दो तो ये तुम्हारे लिये बहुत ही बेहतर है अगर तुम समझो। और उस दिन से डरो जिस दिन तुम सब अल्लाह तआला की तरफ़ लौटाए जाओगे। फिर हर शख्स को उसके किये हुए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर किसी क्रिस्म की कोई ज़्यादाती नहीं की जाएगी। (अल बकर: : 278-281)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ये आख़िरी आयत है जो नबी करीम (ﷺ) पर नाज़िल हुई।

2086. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे औन बिन अबी जुहैफ़ा ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद को एक पछना लगाने वाला गुलाम खरीदते देखा। मैंने ये देखकर उनसे उसके बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्ते की क़ीमत लेने और ख़ून की क़ीमत लेने से मना किया है, आपने गोदने वाली और गुदवाने वाली को (गोदना लगवाने से) सूद लेने वाले और सूद देने को (सूद लेने या देने से) मना फ़र्माया और तस्वीर बनाने वाले पर लअनत भेजी। (दीगर मक़ाम: 2238, 5347, 5962)

**तशरीह:** अक़षर इलमा के नज़दीक कुत्ते की बेअ (व्यापार) दुरुस्त नहीं है मगर हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने कुत्ते का बेचना और उसकी क़ीमत खाना जाइज़ रखा है और अगर कोई किसी का कुत्ता मार डाले तो उस पर तावान लाज़िम किया गया है। इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) ने हदीसे हाज़ा की रद से कुत्ते की बेअ मुतलक़न नाजाइज़ करार दी है। पछना लगाने की उज्रत के बारे में मुमानअते तंज़ीही है क्योंकि दूसरी हदीस से प्राबित है कि आहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद पछना लगवाया और पछना लगाने वाले को मज़दूरी दी, अगर हुराम होती तो आप (ﷺ) कभी न देते। गुदवाना, गोदना हुराम है और जानदारों की मूरत बनाना भी हुराम है। जैसा कि यहाँ ऐसे सब पेशे वालों पर अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने लअनत भेजी है।

**बाब 22 : (सूरह बकर: में) अल्लाह तआला का ये फ़र्माना कि वो सूद को मिटा देता है और स़दकात को बढ़ा देता है और अल्लाह तआला नहीं पसन्द करता हर मुंकिर गुनाहगारों को**

2087. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने कि सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ख़ुद नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि (सामान बेचते वक़्त दुकानदार के) क़सम खाने से सामान तो

عُسْرَةً فَظَرَّةً إِلَى مَيْسَرَةٍ وَإِنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿البقرة: २८१-२८२﴾

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: هَذِهِ آيَةُ آخِرُ آيَةٍ نَزَلَتْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ.

٢٠٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جَحْثَفَةَ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبِي اشْتَرَى غَنَداً حَاجِئاً، فَسَأَلْتُهُ، فَقَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ مَنْ تَمَنَّى الْكَلْبَ وَتَمَنَّى الدَّمَ، وَنَهَى عَنِ الْوَاشِمَةِ وَالْمَوْشُومَةِ، وَآقَى الرَّبَا وَمُوكَلِّهِ، وَلَعَنَ الْمُصَوِّرَ)).

[أطرافه في: ٢٢٣٨, ٥٣٤٧, ٥٩٦٢].

٢٦- بَابُ ﴿يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزِيلُ الصَّدَقَاتِ﴾: وَاللَّهُ لَا يَجِبُ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿البقرة: ٧٦﴾

٢٠٨٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ،

जल्दी बिक जाता है लेकिन वो क्रसम बरकत को मिटाने वाली होती है।

يَقُولُ: ((الْخَلْفُ مَنْقَعَةٌ لِلْسَلْفَةِ، مَنْقَعَةٌ لِلْبَرَكَةِ)).

गो चंद रोज तक ऐसी झूठी क्रसम खाने से माल तो कुछ निकल जाता है लेकिन आखिर में उसका झूठ और फरेब खुल जाता है और बरकत इसलिये खत्म हो जाती है कि लोग उसे झूठा जानकर उसकी दुकान पर आना छोड़ देते हैं। मद्कररसूलल्लाह (ﷺ)।

## बाब 27 : खरीद व फरोख्त में क्रसम

### खाना मकरूह है

2088. हमसे अम्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा कि हमको अबाम बिन हाशिम ने खबर दी, उन्हें इब्राहीम बिन अब्दुरहमान ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी अफ़ा (रज़ि.) ने कि बाज़ार में एक शख्स ने एक सामान दिखाकर क्रसम खाई कि उसकी इतनी क्रीमत लग चुकी है। हालाँकि उसकी उतनी क्रीमत नहीं लगी थी। उस क्रसम से उसका मक्कसद एक मुसलमान को धोखा देना था। उस पर ये आयत उतरी, जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क्रसमों को थोड़ी क्रीमत के बदले में बेचते हैं।

(दीगर मक़ाम : 2675, 4551)

## ٢٧- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ الْخَلْفِ فِي التَّيْعِ

٢٠٨٨- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هُثَيْمٌ قَالَ أَخْبَرَنَا الْقَوَامُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : أَنَّ رَجُلًا أَقَامَ سِلْعَةً وَهُوَ فِي السُّوقِ، فَخَلَفَ بِاللهِ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا مَا لَمْ يُعْطَ لِيُوقِعَ فِيهَا رَجُلًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، فَتَوَلَّى: هَؤُلَاءِ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا [آل عمران : ٧٧].

[طرفاه : ٢ : ٢٦٧٥، ٤٥٥١].

आखिरत में उनके लिये कुछ हिस्सा नहीं है और न उनसे अल्लाह कलाम करेगा और न उन पर नज़रे रहमत करेगा और न उनको पाक करेगा बल्कि उनके लिये दुख देने वाला अज़ाब है। मा'लूम हुआ कि अल्लाह के नाम की झूठी क्रसम खाना बदतरीन गुनाह है। उलम-ए-किराम ने किसी सच्चे मामले में भी बतौर तंज़ीह अल्लाह के नाम की क्रसम खाना पसन्द नहीं किया है। मुस्नद अहमद में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अपनी हज़ार को टखनों से नीचे लटकाने वाला और झूठी क्रसमों से अपना माल फ़रोख्त करने वाला और एहसान जतलाने वाला ये वो मुजरिम हैं जिन पर हर्ष में अल्लाह की नज़रे रहमत नहीं होगी। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक्कसद बाब ये है कि तिजारत में हर वक़्त सच्चाई को सामने रखना ज़रूरी है। घरना झूठ बोलने वाला ताजिर इन्दल्लाह सख़्त मुजरिम क़रार पाता है।

## बाब 28 : सुनारों का बयान

और ताउस ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से नक़ल किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर हरम की हर्मत बयान करते हुए) फ़र्माया-था कि हरम की घास न काटी जाए। उस पर अब्बास (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि इज़र (एक ख़ास क्रिस्म की घास) की इजाज़त दे दीजिए क्योंकि ये यहाँ के सुनारों, लोहारों

## ٢٨- بَابُ مَا قِيلَ فِي الصَّوَاغِ

وَقَالَ طَاوُسٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا يُخْتَلَى خَلَاً)) وَقَالَ الْعَبَّاسُ: ((إِلَّا الْإِذْخِرَ لِأَنَّهُ لِقَيْنِهِمْ وَيُؤْتِيهِمْ. فَقَالَ: إِلَّا الْإِذْخِرَ)).

और घरों के काम आती है, तो आपने फर्माया, अच्छा इज़्र खर काट लिया करो।

इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि सुनारी का पेशा आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में भी था और आप (ﷺ) ने उससे मना नहीं फर्माया; तो ये पेशा जाइज़ हुआ। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर उस हदीष के जुअफ़ की तरफ़ इशारा फर्माया है, जिसे इमाम अहमद ने निकाला है जिसमें मज़कूर है कि सबसे ज़्यादा झूठे सुनार और रंगरेज़ हुआ करते हैं। उसकी सनद में इज़्तिराब है।

2089. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्होंने कहा कि हमें यूनुस ने खबर दी, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि हमें ज़ैनुल आबेदीन अली हुसैन (रज़ि.) ने खबर दी, उन्हें हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने खबर दी कि अली (रज़ि.) ने फर्माया कि ग़नीमत के माल में से मेरे हिस्से में एक ऊँट आया था और एक दूसरा ऊँट मुझे नबी करीम (ﷺ) ने ख़ुम्स में से दिया था। फिर जब मेरा इरादा रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) की रुख़सती कराके लाने का हुआ तो मैंने बनी केनकाअ के एक सुनार से तै किया कि वो मेरे साथ चले और हम दोनों मिलकर इज़्र खर घास (जमा करके) लाएँ, क्योंकि मेरा इरादा था कि उसे सुनारों के हाथ बेचकर अपनी शादी के वलीमे में उसकी क़ीमत को लगाऊँ।

(दीगर मक्काम : 2375, 3091, 4003, 5793)

٢٠٨٩ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ بِنِ أَنْ حُسَيْنَ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنْ عَلِيًّا قَالَ: ((كَانَتْ لِي شَارِفٌ مِنْ نَصَبِي مِنَ الْمَغْنَمِ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَعْطَانِي شَارِفًا مِنَ الْخُمْسِ، فَلَمَّا أَرَدْتُ أَنْ أَتَيْتِي بِعَاطِئَةِ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَاعْدْتُ رَجُلًا صَوَاعًا مِنْ بَنِي قَيْقَاعٍ أَنْ يَرْتَحِلَ مَعِيَ فَأَتَانِي بِأَدْحِرٍ أَرَدْتُ أَنْ أَبِيعَهُ مِنَ الصَّوْغَيْنِ وَأَسْتَعِينُ بِهِ لِي وَلَيْمَةٍ عَرُوسِي)).

[أطرافه في : ٢٣٧٥، ٣٠٩١، ٤٠٠٣]

[٥٧٩٣]

**तशरीह :** इस हदीष में भी सुनारों का ज़िक्र है। जिससे अहदे रिसालत में उस पेशे का शुबूत मिलता है और ये भी प्राबित हुआ कि रिफ़के हलाल तलाश करने में कोई हिचकिचाहट न होनी चाहिये जैसा कि हज़रत अली (रज़ि.) ने खुद जाकर जंगल से इज़्र खर घास जमा करके फ़रोख्त की और ये भी मा'लूम हुआ कि वलीमा दूल्हे की तरफ़ से होता है।

बनी केनकाअ मदीना में यहूदियों के एक ख़ानदान का नाम था। अली बिन हुसैन इमाम ज़ैनुल आबेदीन का नाम है जो हज़रत हुसैन (रज़ि.) के बेटे और हज़रत अली (रज़ि.) के पोते हैं। उनकी कुत्रियत अबुल हसन है। अकाबिर सादात में से थे। ताबेअीन में जलीलुल क़द्र और शोहरतयाफ़ता (प्रसिद्ध) थे। इमाम जुहरी ने फर्माया कि कुरैश में किसी को मैंने उनसे बेहतर नहीं पाया। 94 हिजरी में इंतिकाल फर्माया। कुछ लोगों ने ए'तिराज़ किया है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अइम्म-ए-इफ़्ना अशर की रिवायतें नहीं ली हैं। उन मुअतरिज़ीन (ए'तिराज़ करने वालों) के जवाब के लिये इमाम ज़ैनुल आबेदीन की रिवायत मौजूद है जो अइम्मा इफ़्ना अशर में बड़ा मुक़ाम रखते हैं।

2090. हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन ने बयान किया, कहा कि हमसे खालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे खालिद ने, उनसे इकिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, अल्लाह तआला ने मक्का को हुर्मत वाला शहर करार दिया है। ये न मुझसे पहले किसी के लिये हलाल था और न मेरे बाद किसी के लिये हलाल होगा। मेरे लिये भी एक दिन चन्द लम्हात के लिये हलाल हुआ था। सो अब उसकी न घास काटी जाए, न उसके दरख्त काटे जाएँ, न उसके शिकार भगाए जाएँ, और न उसमें कोई गिरी हुई चीज़ उठाई जाए। सिर्फ़ मअरिफ़ (या'नी गुमशुदा चीज़ को अमल मालिक तक ऐलान के ज़रिये पहुँचाने वाले) को उसकी इजाज़त है। अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि इज़्रख़ के लिये इजाज़त दे दीजिए, कि ये हमारे सुनारों और हमारे घरों की छतों के काम में आती है। तो आप (ﷺ) ने इज़्रख़ की इजाज़त दे दी। इकिमा ने कहा, ये भी मा'लूम है कि हरम के शिकार को भगाने का मतलब क्या है? इसका मतलब ये है कि (किसी दरख्त के साए तले अगर वो बैठा हुआ हो तो) तुम साए से उसे हटाकर खुद वहाँ बैठ जाओ। अब्दुल वहहाब ने खालिद से (अपनी रिवायत में ये अल्फ़ाज़) बयान किये कि (इज़्रख़) हमारे सुनारों और हमारी क़ब्रों के काम में आती है। (राजेज़: 1349)

या'नी बजाय छतों के अब्दुल वहहाब की रिवायत में क़ब्रों का ज़िक्र है। अरब लोग इज़्रख़ को क़ब्रों में भी डालते और छत भी उससे पाटते; वो एक खुशबूदार घास होती है। अब्दुल वहहाब की रिवायत को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल हज्ज में निकाला है। रिवायत में सुनारों का ज़िक्र है, इसी से पेशे का दुरुस्त होना बाबित हुआ। सुनार जो सोना-चाँदी वगैरह से औरतों के जेवर बनाने का धंधा करते हैं।

## बाब 29 : कारीगरों और लोहारों का बयान

2091. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे सुलैमान ने, उनसे अबुजुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने कि मैं जाहिलियत के ज़माने में लोहार का काम किया करता था। आस्र बिन वाइल (काफ़िर) पर मेरा कुछ क़र्ज़ था। मैं एक दिन उस पर तक्राज़ा करने गया। उसने कहा कि जब तक तू मुहम्मद (ﷺ) का इन्कार नहीं करेगा मैं

٢٠٩٠ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَلَمْ يَجْعَلْ لِأَخِي قَبْلِي، وَلَا لِأَخِي بَعْدِي، وَإِنَّمَا أَجَلْتُ لِي سَاعَةً، مِنْ نَهَارٍ لَا يَخْتَلِي عِلَامًا وَلَا يُفَضُّ شَحْرَهَا وَلَا يُنْفَرُ صَيْدُهَا وَلَا يُلْتَقَطُ لِقَطْعِهَا إِلَّا لِمُعَرَّبٍ)). وَقَالَ عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ: إِلَّا الْإِدْعِيرَ لِصَاحِبَتَا وَلِسْفَرِ بَيُوتِنَا. فَقَالَ: ((إِلَّا الْإِدْعِيرَ)). فَقَالَ عِكْرِمَةُ: هَلْ تَذَرِي مَا يُنْفَرُ صَيْدُهَا؟ هُوَ أَنْ تَنْحَبِهُ مِنَ الظِّلِّ وَتَنْزِلَ مَكَانَهُ. قَالَ عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ خَالِدٍ: ((لِصَاحِبَتَا وَقُبُورِنَا)). [راجع: ١٣٤٩]

## ٢٠٩١ - بَابُ ذِكْرِ الْقَيْنِ وَالْحَدَّادِ

٢٠٩١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي الصُّخَيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ خُبَّابٍ قَالَ: ((كُنْتُ قَيْنًا لِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَكَانَ لِي عَلَى الْعَاصِي بْنِ وَائِلٍ دَيْنٌ، فَلَتَيْتُهُ أَنْفَاطًا. قَالَ: لَا

तेरा कर्ज नहीं दूँगा। मैंने जवाब दिया कि मैं आप (ﷺ) का इंकार उस वक़्त तक नहीं करूँगा जब तक अल्लाह तआला तेरी जान न ले ले, फिर तू दोबारा उठाया जाए, उसने कहा कि फिर मुझे भी मुहलत दे कि मैं मर जाऊँ, फिर दोबारा उठाया जाऊँ और मुझे माल और औलाद मिले उस वक़्त मैं भी तुम्हारा कर्ज अदा कर दूँगा। इस पर आयत नाज़िल हुई, क्या तुमने उस शख्स को देखा जिसने हमारी आयात को न माना और कहा कि (आखिरत में) मुझे माल और दौलत दी जाएगी, क्या उसे ग़ैब की ख़बर है? या उसने अल्लाह तआला के यहाँ कोई इकरार ले लिया है।

(दीगर मक़ाम : 2275, 2425, 4732, 4733, 4734, 4735)

أَعْطَيْكَ حَتَّى تَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ ﷺ، فَقُلْتُ: لَا أَكْفُرُ حَتَّى يُبَيِّنَكَ اللَّهُ ثُمَّ تُبَيِّنَ. قَالَ: دَعْنِي حَتَّى أَمُوتَ وَأُبْقَتْ، فَسَأَوْنِي مَا لَا وَوَلَدًا فَأَقْبَعِيكَ. فَزَوَّلْتُ: هَذَا قُرْآنُ اللَّهِ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا لَا وَتَيْنَ مَا لَا وَوَلَدًا، أَطْلَعَ الْقَبْرَ أَمْ أَخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا.

[أطرافه في : ٢٢٧٥، ٢٤٢٥، ٤٧٣٢]

[٤٧٣٠، ٤٧٣٤، ٤٧٣٣]

खब्बाब बिन अरत (रज़ि.) मशहूर सज़ाबी हैं, उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। उनको ज़मान-ए-जाहिलियत में ज़ालिमों ने कैद कर लिया था। एक ख़ुज़ाईया औरत ने उनको ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था। आँहज़रत (ﷺ) के दारे अरक़म में दाख़िल होने से पहले ही ये इस्लाम ला चुके थे। कूफ़ार ने उनको सख़्त तकलीफ़ों में मुब्तला किया, मगर उन्होंने सब्र किया। कूफ़ा में इक़ामत गर्ज़ी (निवासी) हो गए थे और 73 साल की उम्र में 37 हिजरी में वहीं उनका इंतिक़ाल हुआ। इस हदीस से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने लोहार का काम करना प्राबित फ़र्माया, कुर्आन मजीद से प्राबित है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम भी लोहे के बेहतरीन हथियार बनाया करते थे।

### बाब 30 : दर्ज़ी का बयान

2092. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने ख़बर दी, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) को ये कहते सुना कि एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को खाने पर बुलाया। अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि मैं भी उस दा'वत में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ गया। उस दर्ज़ी ने रोटी और शोरबा जिसमें कढ़ू और भुना हुआ गोश्त था, रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने पेश कर दिया। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कढ़ू के क़तले प्याले में तलाश कर रहे थे। उसी दिन से मैं भी बराबर कढ़ू को पसन्द करता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 5379, 5420, 5433, 5435, 5436, 5437, 5439)

### ٣٠- بَابُ ذِكْرِ الْخَبَاثِ

٢٠٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : (إِنَّ خَبَاثًا دَعَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِبَطْعَامٍ صَنَعَةٍ، قَالَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَذَهَبْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَى ذَلِكَ الطَّعَامِ، فَقَرَّبَ إِلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خُبْرًا وَمَرَقًا فِيهِ ذَبَابٌ وَقَدِيدٌ، فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَتَبَعَ الذَّبَابَ مِنْ خَوَالِي الْقَصْعَةِ. قَالَ: فَلَمْ أَزَلْ أَحِبُّ الذَّبَابَ مِنْ يَوْمَئِذٍ).

[أطرافه في : ٥٣٧٩، ٥٤٢٠، ٥٤٣٣]

[٥٤٣٩، ٥٤٣٧، ٥٤٣٦، ٥٤٣٥]

**तशरीह:** क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) को कदू पसन्द था। कदू निहायत इम्दा तरकारी है। या'नी लम्बा कदू सर्दतर और तप (बुखार) व खिप्तान को दूर करने वाला व ह्रारत (गर्मी) व बदन की खुश्की और कब्ज़ बवासीर को दूर करता है। पेटे की भी खासियत है। गो कदू खाना दीन का तो कोई काम नहीं है कि उसकी पैरवी लाज़िम हो, मगर आँहज़रत (ﷺ) की मुहब्बत उसको मुक्तफ़ी है कि हर मुसलमान कदू से ख़बत रखे जैसे अनस (रज़ि.) ने किया। (वहीदी)

आँहज़रत (ﷺ) की दा'वत करने वाले सहाबी ख़य्यात थे। दर्ज़ी का काम किया करते थे। उससे हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने दर्ज़ी का काम प्राबित फ़र्माया।

### बाब 31 : कपड़ा बुनने वाले का बयान

2093. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे यअकूब बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने, कहा कि मैंने सहल बिन सअद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि एक औरत बुर्दा लेकर आई। सहल (रज़ि.) ने पूछा, तुम्हें मा'लूम भी है बुर्दा किसे कहते हैं? कहा गया जी हाँ! बुर्दा हाशियेदार चादर को कहते हैं। तो उस औरत ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ख़ास आपको पहनाने के लिये ये चादर अपने हाथ से बुनी है, आप ((ﷺ)) ने उसे ले लिया। आप ((ﷺ)) को उसकी ज़रूरत भी थी, फिर आप बाहर तशरीफ़ लाए तो आप उसी चादर को बतौर इज़ार के पहने हुए थे, हाज़िरीन में से एक साहब बोले, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो मुझे दे दीजिए, आप ((ﷺ)) ने फ़र्माया कि अच्छा ले लेना। उसके बाद आप ((ﷺ)) मज्लिस में थोड़ी देर तक बैठे रहे फिर वापस तशरीफ़ ले गए। फिर इज़ार को तह करके उन साहब के पास भिजवा दिया। लोगों ने कहा कि तुमने आँहज़रत (ﷺ) से ये इज़ार मांगकर अच्छा नहीं किया क्योंकि तुम्हें मा'लूम है कि आप किसी साइल के सवाल को रह नहीं करते हैं। इस पर उन सहाबी ने कहा कि वल्लाह! मैंने तो सिर्फ़ इसलिये ये चादर मांगी है कि जब मैं मरूँ तो ये मेरा कफ़न बने। सहल (रज़ि.) ने फ़र्माया, कि वो चादर ही उनका कफ़न बनी।

(राजेअ: 1166)

### ٣١- بَابُ ذِكْرِ النَّسَاجِ

٢٠٩٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي خَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((جَاءَتِ امْرَأَةٌ بِبُرْدَةٍ - قَالَ: أَنْذَرُونَ مَا الْبُرْدَةُ؟ فَقِيلَ لَهُ: نَعَمْ هِيَ الشَّمْلَةُ مَنْسُوجَةٌ فِي حَاشِيَتِهَا - قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، إِنِّي نَسَجْتُ هَذِهِ بِيَدِي أَكْسَوْتُهَا. فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ ﷺ مُحْتَاجًا إِلَيْهَا، فَخَرَجَ إِلَيْنَا وَإِنَّهَا إِزَارُهُ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَكْسَيْنَهَا، فَقَالَ: ((نَعَمْ)). فَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ، فِي الْمَجْلِسِ ثُمَّ رَجَعَ فَطَوَّأَهَا ثُمَّ أَرْسَلَ بِهَا إِلَيْنَا. فَقَالَ لَهُ الْقَوْمُ: مَا أَحْسَنَتْ، سَأَلْنَاهَا إِيَّاهُ، فَقَدْ عَلِمْتُ أَنَّهُ لَا يَرُدُّ سَائِلًا، فَقَالَ الرَّجُلُ: وَاللَّهِ مَا سَأَلْتُهُ إِلَّا لَنَكُونَ كَفِييَ يَوْمَ أَمُوتُ. قَالَ سَهْلٌ: فَكَانَتْ كَفَنَهُ.))

[راجع: ١١٦٦]

**तशरीह:** रिवायत से मा'लूम होता है कि उस औरत के यहाँ करघा था, और वो कपड़ा बनाने का काम करने में माहिर थी जो बेहतरीन हाशियादार चादर बनाकर हुज़ूर (ﷺ) की खिदमत में पेश करने लाई। आपने उसे बख़ुशी कुबूल कर लिया, मगर एक सहाबी (अब्दुरहमान बिन औफ़ रज़ि.) थे जिन्होंने उसे आपके जिस्म पर ज़ेबतन (पहनी हुई) देखकर बतौर तबरक अपने कफ़न के लिये उसे आपसे मांग लिया और आपने उनको ये दे दी और उनके कफ़न ही में वो इस्ते'माल की गई। इस हदीस से मा'लूम हुआ कि अहदे रिसालत में नूर बाफ़ी (बुनकरी) का फ़न था, और उसमें औरतें तक महारत रखती थीं, और इस पेशा को कोई भी मअयूब (बुरा) नहीं जानता था। यही प्राबित करना हज़रत इमाम बुखारी (रह.)

का मक़सदे बाब है।

### बाब 32 : बड़ई का बयान

2094. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया कि कुछ लोग सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) के यहाँ मिम्बरे नबवी के बारे में पूछने आए। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़लाँ औरत के यहाँ जिनका नाम भी सहल (रज़ि.) ने लिया था, अपना आदमी भेजा कि वो अपने बड़ई गुलाम से कहें कि मेरे लिये कुछ लकड़ियों को जोड़कर मिम्बर तैयार कर दे, ताकि लोगों को वा'ज करने के लिये मैं उस पर बैठ जाया करूँ, चुनाँचे उस औरत ने अपने गुलाम से गाबा के झाऊ की लकड़ी का मिम्बर बनाने के लिये कहा, फिर (जब मिम्बर तैयार हो गया तो) उन्होंने उसे आपकी ख़िदमत में भेजा, वो मिम्बर आपके हुक्म से (मस्जिद में) रखा गया और आप (ﷺ) उस पर बैठे। (राजेअ : 377)

गाबा मदीना से शाम की जानिब एक मक़ाम है, जहाँ झाऊ के बड़े-बड़े दरख्त थे। उस औरत का नाम मा'लूम नहीं हो सका अल्बत्ता गुलाम का नाम बाकूम बतलाया गया है। कुछ ने कहा कि ये मिम्बर तमीम दारी ने बनाया था।

2095. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि एक अंसारी औरत ने रसूले करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं आपके लिये कोई ऐसी चीज़ क्यूँ न बनवा दूँ जिस पर आप (ﷺ) वा'ज के वक़्त बैठा करें क्योंकि मेरे पास एक गुलाम बड़ई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा तुम्हारी मर्ज़ी। रावी ने बयान किया कि फिर जब मिम्बर आप (ﷺ) के लिये उसने तैयार किया, तो जुम्आ के दिन जब आँहजरत (ﷺ) उस मिम्बर पर बैठे तो उस ख़जूर की लकड़ी से रोने की आवाज़ आने लगी। जिस पर टेक देकर आप (ﷺ) ख़ुत्बा दिया करते थे। ऐसा मा'लूम होता था कि वो चिमट जाएगी। ये देखकर नबी करीम (ﷺ) मिम्बर से उतरे और उसे पकड़कर अपने सीने से लगा लिया। उस वक़्त भी वा

### ۳۲- بَابُ النَّجَّارِ

۲۰۹۴- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: ((أَتَى رَجُلًا إِلَى سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ يَسْأَلُونَهُ عَنْ الْمِنْبَرِ فَقَالَ: يَثَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَى فَلَانَةٍ - امْرَأَةٍ قَدْ سَمَّاهَا سَهْلٌ - أَنْ مَرِي غُلَامُكَ النَّجَّارُ يَعْمَلُ لِي أَغْوَادًا أَخْلِسُ عَلَيْهِمْ إِذَا كُنْتُ النَّاسَ. فَأَمَرْتُهُ يَعْمَلُهَا مِنْ طَرَفَاءِ الْغَابَةِ، ثُمَّ جَاءَ بِهَا، فَأَرْسَلْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِهَا، فَأَمَرَ بِهَا فَوَضِعَتْ، فَجَلَسَ عَلَيْهِ)).

[راجع: ۳۷۷]

۲۰۹۵- حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ قَالَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، أَلَا أَجْعَلُ لَكَ شَيْئًا تَقْعُدُ عَلَيْهِ، فَإِنِّي لِي غُلَامٌ نَجَّارٌ. قَالَ: ((إِنْ شِئْتَ)). قَالَ فَعَمَلْتُ لَهُ الْمِنْبَرَ.

فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ قَعَدَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ الَّذِي صُنِعَ فَصَاحَتْ النُّخْلَةُ الَّتِي كَانَ يَخْطُبُ عَلَيْهَا حَتَّى كَادَتْ أَنْ تَشَقَّ فَرَأَى النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى أَخَذَهَا فَصَمَّمَهَا إِلَيْهِ.



लकड़ी उस छोटे बच्चे की तरह सिसकियाँ भर रही थी जिसे चुप कराने की कोशिश की जाती है। उसके बाद वो चुप हो गई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि उसके रोने की वजह ये थी कि ये लकड़ी खुत्बा सुना करती थी इसलिये रोई। (राजेज़ : 449)

وَجَعَلَتْ تَنُ أَيْنَ الصَّبِيِّ الَّذِي يَسْكُتُ حَتَّى اسْتَفْرَزَتْ. قَالَ: ((نَكَتْ عَلَى مَا كَانَتْ تَسْمَعُ مِنَ الذِّكْرِ)).

[راجع: ٤٤٩]

**तशरीह:** क्योंकि आपने उसको छोड़ दिया और मिम्बर पर खुत्बा पढ़ने लगे। ये आँहज़रत (ﷺ) का एक अजीम मुअज्ज़ा है कि आप (ﷺ) की जुदाई का ग़म एक लकड़ी से भी जाहिर हुआ। आखिर आप (ﷺ) ने उस लकड़ी को सीने से लगाया तब जाकर उसका रोना बन्द हुआ। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस से प्राबित किया है कि बढई का पेशा भी कोई मज़मूम पेशा नहीं है। एक मुसलमान उनमें से जो पेशा भी उसके लिये आसान हो इख़्तियार करके रिज़्के हलाल तलाश कर सकता है। इन अह्दादीस से उस अम्र पर भी रोशनी पड़ती है कि सन्नअत व हिफ़्त के बारे में भी इस्लाम की निगाहों में एक तरक्कीयाफ़ता प्लान है। बाद के ज़मानों में जो तरक्कीयात इस सिलसिले में हुई हैं। खुसूसन आज इस मशीनी दौर में ये जुम्ला फुनून किस तेज़ी के साथ मनाज़िले तरक्की तै कर रहे हैं बुनियादी तौर पर ये सब कुछ इस्लामी ता'लीमात के मुक़द्दस नतीजे हैं। इस लिहाज़ से इस्लाम का ये पूरी दुनिया-ए-इंसानियत पर एहसाने अज़ीम है कि उसने दीन और दुनिया दोनों की तरक्की का पैग़ाम देकर मज़हब की सच्ची तस्वीर को बनी नो'अे इंसान के सामने आशकारा (अवगत) किया है। सच है, इन्नदीन इन्दल्लाहिल इस्लाम (सूरह आले इमरान : 19)

### बाब 33 : अपनी ज़रूरत की चीज़ें हर आदमी खुद भी खरीद सकता है

और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत इमर (रज़ि.) से एक ऊँट खरीदा, और अब्दुरहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने कहा कि एक मुश्किक बकरियाँ (बेचने) लाया तो नबी करीम (ﷺ) ने उससे एक बकरी खरीदी। आपने जाबिर (रज़ि.) से भी एक ऊँट खरीदा था।

2096. हमसे यूसुफ़ बिन ईसा ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू मुआविया ने बयान किया, कहा कि हमसे अज़मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़्ज़ी ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक यहूदी से कुछ ग़ल्ला उधार खरीदा, और अपनी ज़िरह उसके पास गिरवी रखवाई।

(राजेज़ : 2068)

٣٣- باب شراء الخوارج بنفسه  
وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: اشْتَرَى النَّبِيُّ ﷺ جَمَلًا مِنْ عُمَرَ. وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: جَاءَ مُشْرِكٌ بِغَنَمٍ فَاشْتَرَى النَّبِيُّ ﷺ مِنْهُ شَاةً. وَاشْتَرَى مِنْ جَابِرٍ بَعِيرًا.

٢٠٩٦- حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ عِيسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْأَسْوَدِ عَنْ غَائِثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اشْتَرَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ يَهُودِيٍّ طَعَامًا بِسَبْعِينَ، وَرَهْنَهُ دِرْعَةً)).

[راجع: ٢٠٦٨]

**तशरीह:** आँहज़रत (ﷺ) ने बज़ाते खुद एक यहूदी से उधार ग़ल्ला खरीदा बल्कि अपनी ज़िरह उसके यहाँ गिरवी रख दी। सो ये अम्र मुर्व्वत के खिलाफ़ नहीं है, कोई इमाम हो या बादशाह, नबी से किसी का दर्जा बड़ा नहीं है, अपना सौदा बाज़ार से खुद खरीदना और खुद ही उसको उठाकर ले आना, आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत है और जो उसको बुरा या इज़्ज़त के खिलाफ़ समझे वो मरदूद व शक्की है। बल्कि बेहतर यही है कि जहाँ तक हो सके इंसान अपना हर काम खुद ही अंजाम दे तो उसकी ज़िन्दगी सुकूनभरी ज़िंदगी होगी। उस्व-ए-हुस्ना इसी का नाम है।

### बाब 34 : चौपाया जानवरों और घोड़ों, गधों की खरीदारी का

बयान अगर कोई सवारी का जानवर या गधा खरीदे और बेचने वाला उस पर सवार हो तो उसके उतरने से पहले खरीदार का क़ब्ज़ा पूरा होगा या नहीं? और इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत इमर (रज़ि.) से फ़र्माया, इसे मुझे बेच दे। आपकी मुराद एक सरकश ऊँट से थी।

2097. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वहहाब ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्बदुल्लाह ने बयान किया, उनसे वहब बिन कैसान ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ज़वा (ज़ातुर्रिकाअ या तबूक) में था। मेरा ऊँट थककर सुस्त हो गया। इतने में मेरे पास नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, जाबिर! मैंने अर्ज़ किया, हज़ूर मैं हाज़िर हूँ। फ़र्माया क्या बात हुई? मैंने कहा कि मेरा ऊँट थककर सुस्त हो गया है, चलता ही नहीं। इसलिये मैं पीछे रह गया हूँ। फिर आप अपनी सवारी से उतरे और मेरे उसी ऊँट को एक टेढ़े मुँह की लकड़ी से खींचने लगे (या'नी हॉकने लगे) और फ़र्माया कि अब सवार हो जा। चुनौचे मैं सवार हो गया। अब तो ये हाल हुआ कि मुझे उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के बराबर पहुँचने से रोकना पड़ जाता था। आप (ﷺ) ने पूछा, जाबिर तूने शादी भी कर ली है? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ! दरयाफ़्त फ़र्माया, किसी कुँवारी लड़की से की है या बेवा से। मैंने अर्ज़ किया कि मैंने तो एक बेवा से कर ली है। फ़र्माया, किसी कुँवारी लड़की से क्यों नहीं की कि तुम भी उसके साथ खेलते और वो भी तुम्हारे साथ खेलती। (हज़रत जाबिर भी कुँवारे थे) मैंने अर्ज़ किया कि मेरी कई बहनें हैं। (और मेरी माँ का इतिफ़ाक़ हो चुका है) इसलिये मैंने यही पसन्द किया कि ऐसी औरत से शादी करूँ, जो उन्हें जमा रखे। उनके कैघा करे और उनकी निगरानी करे। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि अच्छा अब तुम घर पहुँचकर ख़ैरो-आफ़ियत के साथ ख़ूब मज़े उड़ाना। उसके बाद फ़र्माया, क्या तुम अपना ऊँट बेचोगे? मैंने कहा जी

۳۴- بَابُ شِرَاءِ الدَّوَابِّ وَالْخَوَاصِرِ  
وَإِذَا اشْتَرَى ذَاتَهُ أَوْ جَمَلًا وَهُوَ عَلَيْهِ هَلْ  
يَكُونُ ذَلِكَ قَبْضًا قَبْلَ أَنْ يَنْزِلَ؟ وَقَالَ ابْنُ  
عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ  
لِعُمَرَ: ((بَغِينِهِ. يَغْنِي جَمَلًا صَعْبًا)).

۲۰۹۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّهْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا غَيْثُ اللَّهِ  
عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ  
اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ  
النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزَاةٍ فَأَبْطَأَ بِي جَمَلِي وَأَعْيَا،  
فَأَتَى عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((جَابِرُ؟))  
فَقُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: ((مَا شَأْنُكَ؟)) قُلْتُ:  
أَبْطَأَ عَلَيَّ جَمَلِي وَأَعْيَا فَتَخَلَّفْتُ. فَتَزَلَّ  
يَخْجُبُهُ بِمِخْجَبِهِ. ثُمَّ قَالَ: ((ارْكَبْ)).  
فَرَكِبْتُ، فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ أَكَلَهُ عَنْ رَسُولِ  
اللَّهِ ﷺ. قَالَ: ((تَزَوَّجْتَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ.  
قَالَ: ((بِكْرًا أَمْ كَيْنَا؟)) قُلْتُ: بَلَى كَيْنَا.  
قَالَ: ((أَفَلَا جَارِيَةٌ تُلَاعِبُهَا وَتُلَاعِبُكَ؟))  
قُلْتُ: إِنَّ لِي أَخَوَاتٍ، فَأَحْبَبْتُ أَنْ أَتَزَوَّجَ  
امْرَأَةً تَجْمَعُهُنَّ وَتَمْسُطُهُنَّ وَتَقُومُ  
عَلَيْهِنَّ. قَالَ: ((أَمَّا إِنَّكَ قَادِمٌ. فَإِذَا قَدِمْتَ  
فَالْكَيْسَ الْكَيْسَ)). ثُمَّ قَالَ: ((أَتَبِيعُ  
جَمَلَكَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَاشْتَرَاهُ مِنِّي  
بِأَوْقِيَةٍ. ثُمَّ قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَلِيلًا  
وَقَدِمْتُ بِالْقَدَاةِ، فَبَجِئْنَا إِلَى الْمَسْجِدِ  
فَوَجَدْنَاهُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ، قَالَ: ((الْآنَ

हाँ! चुनौचे आपने एक औक्रिया चाँदी में खरीद लिया, रसूलुल्लाह (ﷺ) मुझसे पहले ही मदीना पहुँच गए थे और मैं दूसरे दिन सुबह को पहुँचा। फिर हम मस्जिद आए तो आँहज़रत (ﷺ) मस्जिद के दरवाज़े पर मिले। आपने दरयाफ्त फ़र्माया कि क्या अभी आए हो? मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ! फ़र्माया, फिर अपना कूँट छोड़ दे और मस्जिद में जा के दो रकअत नमाज़ पढ़। मैं अंदर गया और नमाज़ पढ़ी। उसके बाद आपने बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया कि मेरे लिये एक औक्रिया चाँदी तोल दे। उन्होंने एक औक्रिया चाँदी झुकती हुई तोल दी। मैं पीठ मोड़ के चला तो आपने फ़र्माया कि जाबिर को ज़रा बुलाओ। मैंने सोचा कि शायद अब मेरा कूँट फिर मुझे वापस करेंगे। हालाँकि उससे ज़्यादा नागवार मेरे लिये कोई चीज़ नहीं थी। चुनौचे आपने यही फ़र्माया कि ये अपना कूँट ले जा और उसकी क़ीमत भी तुम्हारी है। (राजेअ : 443)

قَبِمْتُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((لَدَغُ جَمَلِكَ فَادْخُلْ فَصَلِّ رَكَعَتَيْنِ))، فَدَخَلْتُ فَصَلَّيْتُ. فَأَمَرَ بِلَالًا أَنْ يَتَوَنَّهُ أَوْقِيَةً، فَوَزَنَ لِي بِلَالٌ فَارْجَحْتَنِي الْمِيزَانَ. فَانْطَلَقْتُ حَتَّى وَثَيْتُ. فَقَالَ: ((ادْغُ لِي جَابِرًا)). قُلْتُ: إِيَّاهُ يَرُدُّ عَلَيَّ الْجَمَلَ، وَلَمْ يَكُنْ شَيْئًا أَهْمَنُ إِلَيَّ مِنْهُ، قَالَ: ((عُدْ جَمَلَكَ، وَلَكَ قَمْنَةُ)).

[راجع: 443]

**तशरीह:** बाब की दोनों हदीषों में कहीं गधे का ज़िक्र नहीं जिसका बयान बाब के तर्जुमा में है और शायद इमाम बुखारी (रह.) ने गधे को कूँट पर क़यास किया। दोनों चौपाए और सवारी के जानवर हैं। दूसरी रिवायत में है कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से बेचते वक़्त ये शर्त कर ली थी कि मदीना पहुँचने तक मैं इस पर सवार होऊँगा। इमाम अहमद और अहले हदीष ने बेअ में ये शर्त इसी हदीष से दुरुस्त रखी है। इस हदीष को इमाम बुखारी (रह.) ने इस किताब में बीस जगहों के करीब बयान किया है। गोया इससे बहुत से मसाइल का इस्तिस्राज फ़र्माया है (यानी बहुत से मसाइल निकाले हैं)।

### बाब 35 : जाहिलियत के बाज़ारों का बयान जिनमें इस्लाम के ज़माने में भी लोगों ने खरीद व फरोख्त की

2098. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफयान बिन डययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि इकाज़, मजिन्ना और जुल मजाज़ ये सब ज़माना जाहिलियत के बाज़ार थे। जब इस्लाम आया तो लोगों ने उनमें त्तिजारत को गुनाह समझा। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की (लयस अलैकुम जुनाहुन) फ़ी मवासिमिल् हज्ज इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इसी तरह क़िरअत की है।

### ۳۵- بَابُ الْأَسْوَاقِ الَّتِي كَانَتْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَتَبَاعَ بِهَا النَّاسُ فِي الْإِسْلَامِ

۲۰۹۸- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَتْ عُكَاظٌ وَمَجَنَّةٌ وَذُو الْمَجَازِ أَسْوَاقًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَلَمَّا كَانَ الْإِسْلَامُ تَأَمَّلُوا مِنَ التَّجَارَةِ فِيهَا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: ﴿لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِي مَوَاسِمِ الْحَجِّ. قَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ كَذًا﴾.

(राजेअ: 177)

[راجع: 1770]

या'नी तुम पर गुनाह नहीं कि अय्यामे हज्ज में उन बाजारों में तिजारत करो।

**बाब 36 : (हीम) बीमार या खारिशी ऊँट खरीदना, हीम हाइम की जमा है, हाइम ए'तिदाल (म्याना रवी) से गुजरने वाला**

۳۶- بابُ شراءِ الابلِ الهيمِ اوِ الاخرَبِ  
الهائمِ . المخالف للقصْد في كلِّ شيءٍ

**तशरीह:** यहाँ ये ए'तिराज हुआ है कि हैम हाइम की जमा नहीं है बल्कि अहीम या हीमा की जमा है। मसाबीह वाले ने यूँ जवाब दिया है कि हीम हाइम की जमा भी हो सकती है। जैसे बाज़िल की जमा बज़ल आती है। फिर हा का जम्मा बवजह या के कसरह से बदल गया। जैसे बीज़ में जो अब्यज़ की जमा है। हियाम एक बीमारी है जो ऊँट को हो जाती है। वो पानी पीता ही चला जाता है मगर सैराब नहीं होता और उसी तरह मर जाता है। कुआन मजीद में फ़शारिबून शुबल हीम (अल वाकिआ: 55) में यही बयान है कि दोज़खी, ऐसे प्यासे ऊँट की तरह जो सैराब ही नहीं होता खोलता हुआ पानी पीयेगे मगर सैराब न होंगे बल्कि शिद्दे प्यास में और इज़ाफ़ा हो जाएगा। यही लफ़्ज़ हीमा यहाँ हदीष में मज़कूर हुआ। हदीष ला अदवा में छूत की बीमारी को नकारा गया है, फ़फ़हम व तदब्बर सद्क रसूलुल्लाहि (ﷺ)

2099. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया कि अमर बिन दीनार ने कहा यहाँ (मक्का में) एक शख्स नवास नाम का था। उसके पास एक बीमार ऊँट था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) गये और उसके शरीक से वही ऊँट खरीद लाए। वो शख्स आया तो उसके साड़ी ने कहा कि हमने तो वो ऊँट बेच दिया। उसने पूछा कि किसे बेचा? शरीक ने कहा कि एक शैख के हाथों जो इस तरह के थे। उसने कहा, अफ़सोस! वो तो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) थे। चुनौचे वो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ किया कि मेरे साथी ने आपको मरीज़ ऊँट बेच दिया है और आपसे उसने उसके मर्ज़ की वज़ाहत भी नहीं की। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फिर उसे वापस ले जाओ। बयान किया कि जब वो उसको ले जाने लगा तो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अच्छा रहने दो हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ैसले पर राज़ी हैं, (आपने फ़र्माया था) ला अदवा (या'नी अमराज़ छूत वाले नहीं होते) अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा कि सुफ़यान ने इस रिवायत को अमर से सुना।

۲۰۹۹- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : قَالَ عُمَرُو : (رَكَانَ مَا هَذَا رَجُلٌ اسْمُهُ نَوَاسٌ، وَكَانَتْ عِنْدَهُ إِبِلٌ هِيمٌ، فَذَهَبَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَاشْتَرَى ذَلِكَ الْإِبِلَ مِنْ شَرِيكَ لَهُ، فَجَاءَ إِلَيْهِ شَرِيكُهُ فَقَالَ : بَيْعًا ذَلِكَ الْإِبِلَ. فَقَالَ : مِمَّنْ بَيْعُهَا؟ قَالَ : مِنْ شَيْخٍ كَذَّابٍ وَكَذَّابٌ. فَقَالَ : وَبَيْعَكَ، ذَلِكَ وَاللَّهِ ابْنُ عُمَرَ. فَجَاءَهُ فَقَالَ : إِنَّ شَرِيكَِي بَاعَكَ إِبِلًا هِيمًا وَلَمْ يَعْرِفْكَ. قَالَ : فَاسْتَفْهَمَا. قَالَ فَلَمَّا ذَهَبَ يَسْأَلُهَا فَقَالَ : دَعَهَا، رَضِينَا بِقَضَاءِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لَا غَفْوِي)) سَمِعَ سُفْيَانُ عُمَرَ.

[أطرافه في: 2858, 5093, 5094, 5753, 5772]

[2858, 5093, 5094, 5753, 5772]

**तशरीह:** इस हदीष से बहुत से मसाइल प्राबित होते हैं मसलन ये कि व्यापारियों का फ़र्ज़ है कि खरीददार को जानवरों का हुस्न व क़बह (अच्छाई व बुराई) पूरा-पूरा बतलाकर मौल तौल करें, धोखेबाज़ी न करें। अगर ऐसा किया गया और खरीददार को बाद में मा'लूम हो गया, तो मा'लूम होने पर मुख्तार है कि उसे वापस करके अपना रुपया वापस ले ले और

उस सौदे को फसख कर दे। ये भी मा'लूम हुआ कि अगर कोई सौदागर भूल-चूक से ऐसा माल बेच दे तो उसके लिये लाज़िम है कि बाद में ग्राहक के पास जाकर मअज़रत ख़्वाही करे (माफ़ी माँगे) और ग्राहक की मर्ज़ी पर मामले को छोड़ दे। ये व्यापारी की शराफ़ते नफ़्स की दलील होगी। ये भी मा'लूम हुआ कि ग्राहक दरगुज़र से काम ले। और जो ग़लती उसके साथ की गई है हत्तल इम्कान उसे मुआफ़ कर दे और तयशुदा मामले को बहाल रहने दे कि ये फ़राख़दिली उसके लिये बरकत में बढ़ोतरी का बाअिष हो सकती है। ला अदवा की मज़ीद तफ़सील दूसरे मक़ाम पर आएगी। इशाअल्लाह तआला।

**बाब 37 : जब मुसलमानों में आपस में फ़साद न हो या हो रहा हो तो हथियार बेचना कैसा है? और इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने फ़ितने के ज़माने में हथियार बेचना मकरूह रखा**

2100. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने, कहा उनसे यह्या बिन सईद ने, कहा उनसे इब्ने अफ़्लह ने, उनसे अबू क्रतादा (रज़ि.) के गुलाम अबू मुहम्मद ने और उनसे अबू क्रतादा (रज़ि.) ने कि हम ग़ज़व—ए—हुनैन के साल रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले। नबी करीम (ﷺ) ने मुझे एक ज़िरह बख़्श दी और मैंने उसे बेच दिया। फिर मैंने उसकी क़ीमत से क़बीला बनी सलमा में एक बाग़ ख़रीद लिया। ये पहली जायदाद थी जिसे मैंने इस्लाम लाने के बाद हासिल किया। (दीगर मक़ाम : 3142, 4321, 4322)

۳۷- بَابُ بَيْعِ السِّلَاحِ فِي الْفِتْنَةِ وَغَيْرِهَا وَكَرِهَةُ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ بَيْعَهُ فِي الْفِتْنَةِ

۲۱۰۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ ابْنِ أَبِي قَلْحٍ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((وَجِئْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ غَامَ حُنَيْنٍ فَأَعْطَاهُ يَغْيِي دِرْعًا فَبَيْعْتُ الدَّرْعَ فَأَبْتَعْتُ بِهِ مَغْرَمًا فِي بَنِي سَلَمَةَ، فَإِنَّهُ لَأَوَّلُ مَالٍ تَأْتَلُهُ فِي الْإِسْلَامِ)).

{أطرافه ي: ۳۱۴۲، ۴۳۲۱، ۴۳۲۲}

**तशरीह:** इस हदीष से तर्जुमा बाब का एक जुज़ या'नी जब फ़साद न हो उस वक़्त जंगी सामान बेचना दुरुस्त है, निकलता है क्योंकि ज़िरह भी हथियार या'नी लड़ाई के सामान में दाख़िल हैं। अब रही ये बात कि फ़साद के ज़माने में, हथियार बेचना, तो ये कुछ ने मकरूह रखा है जब उन लोगों के हाथ बेचे जो फ़ितने में नाहक़ पर हों। इसलिये कि ये इआनत (मदद) है गुनाह और मअसियत (नाफ़रमा'नी) पर और अल्लाह तआला ने फ़र्माया, वतआवनू अलल् बिर् वतक्रवा वला तआवनू अलल् इब्मि वल् इदवान (अल माइद : 2) उस जमाअत के हाथ जो हक़ पर हो, उसे बेचना मकरूह नहीं है। (वहीदी)

**बाब 38 : इत्र बेचनेवालों और मुश्क बेचने का बयान**

2101. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू बुर्दा बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू बुर्दा बिन अबी मूसा से सुना और उनसे उनके वालिद अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया नेक साथी और बुरे साथी की मिश्राल मुश्क बेचने वाले अत्तार और लोहार की सी है। मुश्क बेचने वाले के पास तुम दो अच्छाइयों म

۳۸- بَابُ فِي الْعَطَارِ وَبَيْعِ الْمِسْكِ

۲۱۰۱- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو بُرْدَةَ بْنُ أَبِي مُوسَى عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَثَلُ الْجَلِيسِ الصَّالِحِ وَالْجَلِيسِ السُّوءِ كَمَثَلِ صَاحِبِ الْمِسْكِ

से एक न एक ज़रूर पा लगे। या तो मुश्क ही खरीद लगे वरना कम-अज-कम उसकी खुशबू तो ज़रूर ही पा सकोगे। लेकिन लोहार की भट्टी या तुम्हारे बदन और कपड़े को झुलसा देगी वरना बदबू तो उससे तुम ज़रूर पा लगे। (दीगर मक़ाम : 5534)

وَكثيرُ الخُذَادِ: لَا يَغْدُمُكَ مِنْ صَاحِبِ الْمِسْكِ إِمَّا تَشْتَرِيهِ أَوْ تَجِدُ رِيحَهُ، وَكثيرُ الخُذَادِ يُحْرِقُ بَذْلَكَ أَوْ ثَوْبَكَ أَوْ تَجِدُ مِنْهُ رِيحًا خَيِّفَةً. [طرفه في : ٥٥٣٤.]

**तशरीह :** हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) इस हदीस के ज़ेल फ़रमति हैं, व फ़िल्हदीसि अन्नह्यु अन मजालिसतिन मय्यत अज़ा फ़िहीनि वहुनिया वत्तगीबु फ़ी मजालिसतिम्पन यन्तफ़िड बिमजालिसतिही फ़ीहिमा व फ़ीहि जवाज़ुल्मिस्कि वल्हुक्मु बितहारतिही लिअन्नह (ﷺ) मदहहू व रगिब फ़ीहि अरहु अला मन करिहहू (फ़त्हुल बारी) इस हदीस से ऐसी मजलिस में बैठने की बुराई प्राबित होते हैं जिसमें बैठने से दीन और दुनिया दोनों का नुक़सान है और इस हदीस में नफ़ा बख़्श मजालिस में बैठने की तर्गीब भी है। और ये भी मा'लूम हुआ कि मुश्क की तिजारात जाइज़ है और ये भी कि मुश्क पाक है। इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी ता'रीफ़ की, और उसके हसूल के लिये रस्बत दिलाई। ये भी मा'लूम हुआ कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब मुनअकिद करके उन लोगों की तर्दीद की है जो मुश्क की तिजारात को जाइज़ नहीं जानते और उसकी अदमे-तहारत (नापाकी) का ख़याल रखते हैं।

### बाब 39 : पछना लगाने वाले का बयान

2102. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें हुयैद ने, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू तयबा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पछना लगाया तो आपने एक झाड़ ख़जूर (बतौर उज्रत) उन्हें देने के लिये हुक्म फ़र्माया। और उनके मालिक को फ़र्माया कि उनके ख़िराज में कमी कर दें। (दीगर मक़ाम : 2210, 2277, 2280, 2281, 5696)

### ३९- بَابُ ذِكْرِ الْحَجَامِ

٢١٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: حَجَمَ أَبُو طَيْبَةَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، فَأَمَرَ لَهُ بِصَاعٍ مِنْ تَمْرٍ، وَأَمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يُخَفِّفُوا مِنْ خِرَاجِهِ. [أطرافه في : ٢٢٨٠, ٢٢٧٧, ٢٢١٠.]

[٢٢٨١, ٢٢٩٦.]

या'नी जो रोज़ाना या माहवारी उससे लिया करते थे। अरब में मालिक लोग अपने गुलाम की मेहनत और लियाक़त के लिहाज़ से उस पर एक शरह मुक़रर कर दिया करते थे कि इतना रोज़ या महीने महीने हमको दिया करे उसको ख़िराज कहते हैं। (वहीदी)

2103. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद ने जो अब्दुल्लाह के बेटे हैं बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पछना लगावाया और जिसने पछना लगाया, उसे आपने उसकी उज्रत भी दी, अगर इसकी उज्रत ह़राम होती तो आप उसको हर्गिज़ उज्रत न देते।

٢١٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اِحْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَعْطَى الَّذِي حَجَمَهُ، وَلَوْ كَانَ حَرَامًا لَمْ يُعْطِهِ)).

[راجع : ١٨٣٥]

(राजेअ : 1835)

प्राबित हुआ कि बवक़ते ज़रूरत पछना लगवाना जाइज़ है और उसकी उज्रत लेने वाले और देने वाले दोनों के लिये मना नहीं है।

इस्लाहे खून के लिये पछने लगवाने का इलाज बहुत पुराना नुस्खा है अरब में भी यही मुख्वज (प्रचलित) था।

### बाब 40 : उन चीज़ों की सौदागरी जिनका पहनना मर्दों और औरतों के लिये मकरूह है

2104. हमसे आदम इब्ने अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबूबक्र बिन हफ़स ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उमर (रज़ि.) के यहाँ एक रेशमी जुब्बा भेजा। फिर आपने देखा कि हज़रत उमर (रज़ि.) उसे (एक दिन) पहने हुए हैं। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने इसे तुम्हारे लिये नहीं भेजा था कि तुम इसे पहन लो, इसे तो वही लोग पहनते हैं जिनका आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। मैंने तो इसलिये भेजा था कि तुम इससे (बेचकर) फ़ायदा उठाओ। (राजेअ : 886)

### 40 - بَابُ التَّجَارَةِ فِيمَا يُكْرَهُ لِبَسَةِ

لِلرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ

2104 - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ حَفْصٍ عَنْ مَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : (رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِخِلَّةٍ حَرِيرٍ - أَوْ سِرَاءٍ فَرَأَاهَا عَلَيْهِ فَقَالَ: إِنِّي لَمْ أُرْسَلْ بِهَا إِلَيْكَ لِتَلْبَسَهَا إِنَّمَا يَلْبَسُهَا مَنْ لَا خِلَاقَ لَهُ، إِنَّمَا بَغْتُ إِلَيْكَ لِتَسْتَمْتَعَ بِهَا. يَغْنَى نَيْفُهَا)).

[راجع : 886]

**तहरीह :** बरातें कि दूसरा कोई गो काफ़िर ही सही इससे फ़ायदा उठा सके या'नी उस चीज़ का बेचना जिससे कोई फ़ायदा न उठा सके दुरुस्त नहीं है और राजेह क़ौल यही है। अब बाब में जो हदीस बयान की उसमें रेशमी जोड़े का ज़िक्र है। वो मर्दों के लिये मकरूह है, औरतों के लिये मकरूह नहीं है। इस्माईली ने इस पर ए'तिराज़ किया और जवाब ये है कि मर्दों के लिये जो चीज़ मकरूह है उसके बेचने का जवाज़ हदीस से निकलता है तो औरतों के लिये जो मकरूह है उसकी बेअ का भी जवाज़ इस पर क़यास करने से निकल आया। या ये कि बाब के तर्जुमे में कराहत से आम मुराद है तहरीमी हो यो तंज़ीही और रेशमी कपड़े गो औरतों के लिये हुराम नहीं हैं, मगर तंज़ीहन मकरूह है। (वहीदी) खुसूसन ऐसे कपड़े जो आजकल वजूद में आ रहे हैं। जिनमें से औरत का सारा जिस्म बिलकुल उरयौ (नंगा) नज़र आता है ऐसे ही कपड़े पहनने वाली औरतें हैं जो क़यामत के दिन नंगी उठाई जाएंगी।

2105. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें कासिम बिन मुहम्मद ने और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने एक गद्दा खरीदा जिस पर तस्वीर थी। रसूल करीम (ﷺ) की तज़र ज्यों ही उस पर पड़ी, आप (ﷺ) दरवाज़े पर ही खड़े हो गए और अंदर दाख़िल नहीं हुए। (आइशा रज़ि.) ने बयान किया कि) मैंने आपके चेहरा मुबारक पर नापसन्दीदगी के आधार देखे तो अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अल्लाह की बारगाह में तौबा करती हूँ और उसके रसूल (ﷺ) से मुआफ़ी मांगती हूँ। फ़र्माइए मुझसे क्या ग़लती हुई है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ये गद्दा

2105 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا أَخْبَرَتْ أَنَّهَا اشْتَرَتْ ثَمْرَةً فَبِهَا تَصَاوِيرٌ، فَلَمَّا رَأَاهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ فَعَرَفَتْ فِي وَجْهِهِ الْكَرَاهَةَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَتُوبُ إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ، مَهَذَا أَذْنِبْتُ؟

कैसा है? मैंने कहा कि मैंने ये आप ही के लिये खरीदा है ताकि आप उस पर बैठें और उससे टेक लगाएँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, लेकिन इस तरह की मूर्तियाँ बनाने वाले लोग क़यामत के दिन अज़ाब दिये जाएँगे। और उनसे कहा जाएगा कि तुम लोगों ने जिस चीज़ को बनाया उसे ज़िन्दा कर दिखाओ। आपने ये भी फ़र्माया कि जिन घरों में मूर्तियाँ होती हैं (रहमत के) फ़रिश्ते उनमें दाख़िल नहीं होते।

(दीगर मक़ाम : 3224, 5181, 5957)

فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَا بَالُ هَذِهِ النَّمُورَةِ؟)) قُلْتُ: اشْتَرَيْتُهَا لَكَ لِنَقْعَدَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنْ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّورِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُعَذَّبُونَ، فَيَقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ. وَقَالَ: إِنْ آتَيْتَ الَّذِي فِيهِ الصُّورُ لَا تَدْخُلُهُ الْمَلَائِكَةُ)).

أُطْرَافُهُ فِي : ٣٢٢٤ ، ٥١٨١ ، ٥٩٥٧

**तशरीह :** इस हदीष से साफ़ निकलता है कि जानदार की मूर्त बनाना मुत्लक़न ह़राम है; नक़शी हो यो मुजस्सम। इसलिये कि तकिये पर नक़शी मूर्तें बनी हुई थीं। और बाब का मतलब इस हदीष से इस तरह निकलता है कि बावजूद ये कि आपने मूर्तदार कपड़ा और तर्द दोनों के लिये मकरूह रखा मगर उसका खरीदना जाइज़ समझा। इसलिये कि हज़रत आइशा (रज़ि.) को ये हुक्म नहीं दिया कि बेअ को फ़रसख (रह) कर दो। (वहीदी)

#### बाब 41 : सामान के मालिक को क़ीमत कहने का ज़्यादा हक़ है

#### ٤١- بَابُ صَاحِبِ السَّلْعَةِ أَحَقُّ بِالسُّومِ

2106. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने, उनसे अबुत तियाह ने, और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ बन् नज़ार! अपने बाग़ की क़ीमत मुक़र्रर कर दो। (आप ﷺ उस जगह को मस्जिद के लिये ख़रीदना चाहते थे) उस बाग़ में कुछ हिस्सा तो वीराना और कुछ हिस्से में ख़जूर के दरख़्त थे। (राजेअ : 234)

या'नी माल की क़ीमत पहले वही बयान करे, फिर ख़रीददार जो चाहे कहे, इसका ये मतलब नहीं कि ऐसा करना वाजिब है, क्योंकि ऊपर जाबिर (रज़ि.) की हदीष में गुज़रा है। (वहीदी)

٢١٠٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِنُونِي بِخَائِطِكُمْ وَفِيهِ خَرْبٌ وَنَخْلٌ)). (رايح: ٢٣٤)

#### बाब 42 : कब तक बेअ तोड़ने का इख़्तियार रहता है उसका बयान

#### ٤٢- بَابُ كَمْ يَجُوزُ الْخِيَارُ؟

**तशरीह :** बेअ में कई तरह के ख़ियार होते हैं एक ख़ियारुल मज्लिस या'नी जब तक बायअ (बेचने वाला) और मुश्तरी (बेचने वाला) उसी जगह रहें, जहाँ सौदा हुआ तो दोनों को बेअ के फ़रसख कर डालने का इख़्तियार रहता है। दूसरे ख़ियारुशर्त या'नी मुश्तरी तीन दिन को शर्त कर ले या उससे कम की। तीसरे ख़ियारुअया या'नी मुश्तरी ने बिन देखे एक चीज़ ख़रीद ली हो तो देखने पर उसको इख़्तियार है चाहे बेअ कायम रखे चाहे फ़रसख कर डाले। इसके सिवा और भी ख़ियार हैं जिनको क़स्तलानी (रह.) ने बयान किया है। (वहीदी)

2107. हमसे स़दक्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल वहहाब ने ख़बर दी, कहा कि मैंने यह्या बिन सईद

٢١٠٧- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يُحَيَّي قَالَ: سَمِعْتُ



से सुना, कहा कि मैंने नाफ़ेअ से सुना और उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, खरीद व फ़रोख्त करने वालों को जब तक वो जुदा न हों इख़्तियार होता है। या ख़ुद बेअ में इख़्तियार की शर्त हो, (तो शर्त के मुताबिक़ इख़्तियार होता है) नाफ़ेअ ने कहा कि जब अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कोई ऐसी चीज़ खरीदते जो उन्हें पसन्द होती तो अपने मामलादार से जुदा हो जाते।

(दीगर मक़ाम : 2109, 2111, 2112, 2113, 2116)

या'नी वहाँ से जल्द चल देते ताकि फ़स्खे बेअ (सौदा रद्द करने) का इख़्तियार न रहे, इससे साफ़ निकलता है कि जुदा होने से हदीष में दोनों का जुदा होना मुराद है।

2108. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादाने, उनसे अबुल ख़लील ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन हारिष ने और उनसे हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, बेचने और खरीदने वालों को जब तक वो जुदा न हों (मामला को बाक़ी रखने या तोड़ने का) इख़्तियार होता है। अहमद ने ये ज़्यादाती की कि हमसे बहज़ ने बयान किया कि हम्माम ने बयान किया कि मैंने इसका ज़िक़्र अबुत तियाह के सामने किया तो उन्होंने बतलाया कि जब अब्दुल्लाह बिन हारिष ने ये हदीष बयान की थी, तो मैं भी उस वक़्त अबुल ख़लील के साथ मौजूद था। (राजेअ : 2079)

**बाब 43 : अगर बायअ या मुशतरी इख़्तियार की मुद्दत तै न करे तो बेअ जाइज़ होगी या नहीं?**

**तस्रीह :** इस मसले में इख़्तिलाफ़ है। शाफ़िइया और हन्फ़िया के नज़दीक ख़ियारुशर्त की मुद्दत तीन दिन से ज़्यादा नहीं हो सकती। अगर उससे ज़ाइद मुद्दत ठहरे या कोई मुद्दत मुअय्यन (निर्धारित) न हो तो बेअ बातिल हो जाती है और हमारे इमाम अहमद और इस्हाक़ और अहले हदीष का मज़हब ये है कि बेअ जाइज़ है और जितनी मुद्दत ठहराए उतनी मुद्दत तक इख़्तियार रहेगा और जो कोई मुद्दत मुअय्यन न हो तो हमेशा इख़्तियार रहेगा और औज़ाई और इब्ने अबी लैला कहते हैं कि ख़ियारुशर्त बातिल होगी और बेअ लाज़िम होगी। (वहीदी)

2109. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सख़्तियानी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने

نَافِعًا عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((إِنَّ الْمَتَابِعِينَ بِالْخِيَارِ فِي بَيْعِهِمَا مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا أَوْ يَكُونَ الْبَيْعُ خِيَارًا)). وَقَالَ نَافِعٌ: وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا اشْتَرَى شَيْئًا يُغْنِيهِ فَارَقَ صَاحِبَهُ.

[أطرافه في : ٢١٠٩, ٢١١١, ٢١١٢]

[ ٢١١٦, ٢١١٣ ]

٢١٠٨ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا هُمَامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ حَكِيمِ بْنِ جِرَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: ((الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا)). وَزَادَ أَحْمَدُ حَدَّثَنَا يَزِيدُ قَالَ : قَالَ هُمَامٌ: فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِأَبِي النَّجَّاحِ فَقَالَ: كُنْتُ مَعَ أَبِي الْخَلِيلِ لَمَّا حَدَّثَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْحَارِثِ بِهَذَا الْحَدِيثِ. [راجع : ٢٠٧٩]

٤٣ - بَابُ إِذَا لَمْ يَوْقَتْ فِي الْخِيَارِ هَلْ يَجُوزُ الْبَيْعُ؟

٢١٠٩ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنَا قَالَ أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ

कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, खरीदने वाले और बेचने वाले को (बेअ तोड़ने का) उस वक़्त तक इख़्तियार है जब तक वो जुदा न हो जाएँ, या दोनों में से कोई एक अपने दूसरे फ़रीक़ से ये न कह दे कि पसन्द कर लो। कभी ये भी कहा कि या इख़्तियार की शर्त के साथ बेअ हो। (राजेअ: 2107)

**बाब 44 : जब तक खरीदने और बेचने वाले जुदा न हों उन्हें इख़्तियार बाक़ी रहता है**

(कि बेअ कायम रखें या तोड़ दें) और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.), शुरैह शअबी, ताउस, अत्ता और इब्ने अबी मुलैका (रह.) सबने यही कहा है।

**तशरीह :** इन सबने यही कहा कि सिर्फ़ ईजाब व कुबूल या'नी अक़द से बेअ लाज़िम नहीं हो जाती और जब तक बायअ (बेचने वाला) और मुशतरी (खरीदार) मज्लिसे अक़द से जुदा न हों, दोनों को इख़्तियार रहता है कि सौदा तोड़ डालें। सईद बिन मुसय्यिब, जुस्री, इब्ने अबी जिब, हसन बसरी, औज़ाई, इब्ने जुरैज, शाफ़िया, मालिक, अहमद और अक़वर इलमा यही कहते हैं। इब्ने हज़म ने कहा कि ताबेओन में से सिवाए इब्राहीम नख़्ज़ी के और कोई उसका मुख़ालिफ़ नहीं है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने सिर्फ़ इमाम नख़्ज़ी का क़ौल इख़्तियार करके जुम्हूरे इलमा को मुख़ालिफ़त की है।

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का क़ौल इमाम बुख़ारी (रह.) ने उससे निकाला जो ऊपर नाफ़ेअ से गुज़रा कि इब्ने उमर (रज़ि.) जब कोई चीज़ ऐसी ख़रीदते जो उनको पसंद होती, तो बायअ से जुदा हो जाते। तिमिज़ी ने रिवायत किया बैठे होते तो खड़े हो जाते। या'नी इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया वहाँ से चल देते ताकि बेअ लाज़िम हो जाए और शुरैह के क़ौल को सईद बिन मंसूर ने और शअबी के क़ौल को इब्ने अबी शैबा ने और ताउस के क़ौल को इमाम शाफ़िई ने उम्म में और अत्ता इब्ने अबी मुलैक के अक़वाल को इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया है।

अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व मिनल अदिल्लति अहालतु अला इरादति फ़रक़ि बिल्अब्दानि क़ौलहु फ़ी हदीषि इब्नि उमर अल्मजकूर मा लम यतफ़रक़ा व कान जमीअन व कज़ालिक क़ौलुहू व इन तफ़रक़ा बअद अन तबायआ व लम यतरक़ वाहिदुम्निहुमा अल्बैअ फ़क़द वजब फ़इन्न फ़ीहि अल बयानुल्वाज़िहु अन्नफ़त्तर्क़ बिल्बदनि क़ाललख़ताबी व अला हाज़ा वजदना अमरनासि फ़ी उर्फ़िल्लुग़ति व ज़ाहिरिल कलामि फ़इज़ा क़ौल तफ़रक़नासु कानल मफ़हूमु मिन्हु अत्तमीज़ु बिल्अब्दानि क़ाल व लौ कानल्मुरादु तफ़रक़ल्अक़वाल कमा यकूलु अहलुराय लख़लहदीषु मिनल्फ़ाइदति व सक़त मअनाहू अल्ख़ (नैलुल औतार)

अल्लामा शौकानी (रह.) मरहूम की तक्ररीर का मतलब ये है कि दोनों ख़रीदने व बेचने वाले की जिस्मानी जुदाई पर दलील हदीषे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) में ये क़ौल नबवी है, मालम यतफ़रक़ा व काना जमीआ या'नी दोनों को उस वक़्त तक इख़्तियार बाक़ी रहता है कि वो दोनों जुदा न हों बल्कि दोनों इक़ट्टे रहें। उस वक़्त तक उनको सौदे के बारे में पूरा इख़्तियार हासिल है। और इसी तरह दूसरा इशदि नबवी इस मक़सद पर दलील है, इसका तर्जुमा ये है कि दोनों फ़रीक़ बेअ के बाद जुदा हो जाएँ। और सौदे के मामले को किसी ने भी फ़स्ख़ (रह) न किया हो और वो जुदा हो गए। पस बेअ बाज़िब हो गई, ये दलाइल वाज़िह हैं कि जुदाई से जिस्मानी जुदाई मुराद है। ख़ताबी ने कहा कि शाब्दिक तौर पर भी लोगों का मामला हमने उसी तरह पाया है। और ज़ाहिर कलाम में जुदाई से लोगों की जिस्मानी जुदाई ही मुराद होती है। अगर राय की तरह महज़ बातों की जुदाई मुराद हो तो हदीषे मजकूर अपने हक़ीक़ी फ़ायदे से ख़ाली हो जाती है बल्कि हदीष का कोई मा'नी बाक़ी ही नहीं रह सकता.... लिहाज़ा खुलासा ये कि सहीह मसलक में दोनों तरफ़ से जिस्मानी जुदाई ही मुराद है। ....मसलके जुम्हूर है।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) जिनसे हदीषे बाब मरवी है जलीलुल क़द्र सहाबी हैं, कुत्रियत अबू ख़ालिद कुरैशी

النَّبِيُّ ﷺ: ((الْيَعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَفْرَقَا، أَوْ يَقُولَ أَخَذْتُمَا لِصَاحِبِهِ اخْتَرًا، وَرَبَّمَا قَالَ : أَوْ يَكُونَ بَيْنَ خِيَارٍ)).

[راجع: ٢١٠٧]

٤٤ - بَابُ ((الْيَعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَفْرَقَا))

وَبِهِ قَالَ ابْنُ عُثْمَرَ وَشَرِيحُ وَالشَّعْبِيُّ وَطَاوُسٌ وَعَطَاءُ وَابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ.

असदी है, ये हज़रत खदीजतुल कुबरा (रज़ि.) के भतीजे हैं। वाक़िया फ़ौल (मक्का पर हाथियों के लश्कर वाले अबरहा के हमले) से तेरह साल पहले का'बा में पैदा हुए। ये कुरैश के सरदारों में से थे। इस्लाम से पहले और बाद दोनों ज़मानों में बड़ी इज़्जत पाई फ़तहे मक्का में इस्लाम लाए। साठ साल जाहिलियत में गुज़ारे। फिर साठ ही साल इस्लाम में उम्र पाई। 54 हिजरी में मदीना मुनव्वरा में अपने मकान ही में वफ़ात पाई। बहुत मुत्तकी, परहेज़गार और सख़ी थे। ज़मान-ए-जाहिलियत में सौ गुलाम आज़ाद किये और सौ ऊँट सवारी के लिये बख़शे। फ़त्रे हदीष में एक जमाअत उनकी शागिर्द है।

2110. मुझसे इस्हाक बिन मंसूर ने बयान किया, कहा कि हमको हिब्बान बिन हिलाल ने ख़बर दी, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया कि उनको क़तादा ने ख़बर दी कि मुझे स़ालेह अबुल ख़लील ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन हारिष ने, कहा कि मैंने हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ख़रीदने और बेचने वाले जब तक एक-दूसरे से अलग अलग न हो जाएँ उन्हें इख़्तियार बाक़ी रहता है। अब अगर दोनों ने सच्चाई इख़्तियार की और हर बात साफ़-साफ़ बयान और वाजेह कर दी, तो उनकी ख़रीद व फ़रोख्त में बरकत होती है। लेकिन अगर उन्होंने कोई बात छुपाई या झूठ बोला तो उनकी ख़रीद व फ़रोख्त में से बरकत मिटा दी जाती है। (राजेअ: 2079)

2111. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़रीदने और बेचने वाले दोनों को उस वक़्त तक इख़्तियार होता है, जब तक वो एक-दूसरे से जुदा न हों, मगर बेअ ख़ियार में। (राजेअ: 2107)

**तशरीह:** या'नी जब बायअ (बेचने वाला) बेअ के बाद मशतरी (ख़रीदार) को इख़्तियार दे और वो कहे मैं बेअ को नाफ़िज़ करता हूँ और वो बेअ उससे अलग है जिसमें इख़्तियार की शर्त पहले ही से लगा दी गई हो। या'नी जहाँ मामला हुआ है वहाँ से अलग न जाएँ। अगर वहीं रहें या दोनों मिलकर मन्ज़िलों चलते रहें तो इख़्तियार बाक़ी रहेगा, भले तीन दिन से ज़्यादा मुद्त गुज़र जाए। बेअुल ख़ियार की तफ़सीर जो हमने यहाँ की है। इमाम नववी (रह.) ने भी उसी पर यक़ीन किया है और इमाम शाफ़िई (रह.) ने भी इस पर यक़ीन किया है। कुछ ने ये मतलब किये हैं, मगर उस बेअ में जिसमें इख़्तियार की शर्त हो, या'नी वहाँ से जुदा होने से इख़्तियार बातिल न होगा बल्कि मुद्त मुक़ररा तक इख़्तियार रहेगा।

**बाब 45 : अगर बेअ के बाद दोनों ने एक-दूसरे को पसन्द कर लेने के लिये मुख़्तार बनाया तो बेअ लाज़िम हो गई**

2112. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने

٢١١٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا حَبَّانُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ قَتَادَةُ أَخْبَرَنِي عَنْ صَالِحِ أَبِي الْخَلِيلِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: سَمِعْتُ حَكِيمَ بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَنْفَرَقَا. فَإِنْ صَدَقَا وَتَبَيَّنَ بَوْرُكُ لَهُمَا فِي بَيْعِهِمَا، وَإِنْ كَذَبَا وَكُنَّ مُحِقَّتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا)).

[راجع: ٢٠٧٩]

٢١١١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الْبَيْعَانِ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا بِالْخِيَارِ عَلَى صَاحِبِهِ مَا لَمْ يَنْفَرَقَا، إِلَّا بَيْعَ الْخِيَارِ)). [راجع: ٢١٠٧]

٤٥- بَابُ إِذَا خَيْرَ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ بَعْدَ الْبَيْعِ فَقَدْ وَجَبَ الْبَيْعُ

٢١١٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ

बयान किया, उनसे नाफेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब दो शख्सों ने ख़रीद व फ़रोख्त की तो जब तक वो दोनों जुदा न हो जाएँ, उन्हें (बेअ को तोड़ देने का) इख़्तियार बाक़ी रहता है। ये उस मूरत में कि दोनों एक ही जगह रहें। लेकिन अगर एक ने दूसरे को पसन्द करने के लिये कहा और इस शर्त पर बेअ हुई, और दोनों ने बेअ का क़त्अी फ़ैसला कर लिया, तो बेअ उसी वक़्त मुनअक़िद हो जाएगी। उसी तरह अगर दोनों फ़रीक़ बेअ के बाद एक-दूसरे से जुदा हो गए। और बेअ से किसी फ़रीक़ ने भी इंकार नहीं किया तो भी बेअ लाज़िम हो जाती है। (राजेअ : 2107)

#### बाब 46 : अगर बायअ अपने लिये इख़्तियार की शर्त कर ले तो भी बेअ जाइज़ है

ये बाब लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द किया जो कहते हैं कि ख़ियारुशर्त फ़क़त मुशतरी (ख़रीदार) ही को करना जाइज़ है, बायअ (बेचने वाले) को दुरुस्त नहीं।

2113. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान प्रौरी ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी भी ख़रीदने और बेचने वाले में उस वक़्त तक बेअ पुख़्ता नहीं होती जब तक वो दोनों जुदा न हो जाएँ। अल्बत्ता वो बेअ जिसमें मुशतरका (संयुक्त) इख़्तियार की शर्त लगा दी गई हो इससे अलग है। (राजेअ : 2107)

2114. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा कि हमसे हब्बान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबू ख़लील ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन हारिष ने और उनसे हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बेचने और ख़रीदने वाले को जब तक वो जुदा न हों (बेअ तोड़ देने का) इख़्तियार है। हम्माम रावी ने कहा, कि मैंने अपनी किताब में लफ़ज़ यख़्तार तीन बार लिखा हुआ पाया।

पस अगर दोनों ने सच्चाई इख़्तियार की और बात म़ाफ़-म़ाफ़ वाजेह कर दी तो उन्हें उनकी बेअ में बरक़त मिलती है। और अगर उन्होंने झूठी बातें बनाई और (किसी प्रेब को) छुपाया तो थोड़ा

عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((إِذَا بَايَعَ الرَّجُلَانِ فُكِّرُوا وَاحِدٌ مِنْهُمَا بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا وَكَانَا جَمِيعًا، أَوْ يُخَيَّرُ أَحَدُهُمَا الْآخَرَ، فَبَايَعَا عَلَى ذَلِكَ فَقَدْ وَجَبَ الْبَيْعُ، وَإِنْ تَفَرَّقَا بَعْدَ أَنْ بَايَعَا وَلَمْ يَتَوَلَّ وَاحِدٌ مِنْهُمَا الْبَيْعَ فَقَدْ وَجَبَ الْبَيْعُ)).

[راجع: 2107]

#### ٤٦- بَابُ إِذَا كَانَ الْبَايَعُ بِالْخِيَارِ هَلْ يَجُوزُ الْبَيْعُ؟

٢١١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ بَيْعٍ لَا يَتَّعِ بَيْنَهُمَا حَتَّى يَتَفَرَّقَا، إِلَّا بَيْعُ الْخِيَارِ)).

[راجع: 2107]

٢١١٤- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا حَبَّانُ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا)) - قَالَ هَمَّامٌ وَجَدْتُ فِي كِتَابِي: يَخْتَارُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ - فَإِنْ صَدَقَا وَبَيَّئَا بَوْرَكَ لَهُمَا فِي بَيْنَهُمَا وَإِنْ كَذَبَا وَكَتَمَا فَكُنِيَ أَنْ يَرْبَحَا رِبْحًا وَيَمُحَقَا بِرُكَّةً

सा नफ़ा शायद वो कमा लें, लेकिन उनकी बेअ में बरकत नहीं होगी। (हब्बान ने) कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन हारिष से सुना कि यही हदीष वो हकीम बिन हिजाम (रज़ि.) से बहवाला नबी करीम (ﷺ) के रिवायत करते थे। (राजेअ: 2079)

يَعْنِيهَا)). قَالَ : وَحَدَّثَنَا هَمَامٌ قَالَ حَدَّثَنَا  
أَبُو النَّجَّاحِ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الْحَارِثِ  
يُحَدِّثُ بِهَذَا الْحَدِيثِ عَنْ حَكِيمِ بْنِ  
حِزَامٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٠٧٩]

(या'नी खरीदने वाला तीन बार अपनी पसन्द का ऐलान कर दे तो बेअ लाज़िम हो जाती है। ऊपर की रिवायत में जो हम्माम ने अपनी याद से की है य़ूँ है, अल्बेयआनि बिल् ख़ियार लेकिन हम्माम कहते हैं मैंने अपनी किताब में जो इस हदीष को देखा तो य़ख़्तार का लफ़्ज़ तीन बार लिखा हुआ पाया। कुछ नुस्खों में य़ख़्तार के बदले बिख़ियार है)

#### बाब 47 :

अगर एक शख्स ने कोई चीज़ खरीदी और जुदा होने से पहले ही किसी और को लिज़ाह दे दी फिर बेचने वाले ने खरीदने वाले को उस पर नहीं टोका, या कोई गुलाम खरीदकर (बेचने वाले से जुदाई से पहले ही उसे) आज़ाद कर दिया। त़ाऊस ने उस शख्स के बारे में कहा, जो (दूसरे फ़रीक़ की) रज़ामन्दी के बाद कोई सामान उससे खरीदे और फिर उसे बेच दे और बायेअ इंकार न करे तो ये बेअ लाज़िम हो जाएगी और उसका नफ़ा भी खरीदार ही का होगा।

2115. हुमैदी ने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने बयान किया, उनसे अमर ने बयान किया और उनसे इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे। मैं हज़रत ड़मर (रज़ि.) के एक नए और सरकश कैंट पर सवार था। अक़रर वो मुझे मरलूब करके सबसे आगे निकल जाता। लेकिन हज़रत ड़मर (रज़ि.) उसे डांटकर पीछे वापस कर देते। वो फिर आगे बढ़ जाता, आख़िर नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत ड़मर (रज़ि.) से फ़र्माया कि ये कैंट मुझे बेच डाल। हज़रत ड़मर (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो आप ही का है। लेकिन आपने फ़र्माया कि नहीं मुझे ये कैंट दे दे। चुनौचे ड़मर (रज़ि.) ने रसूलल्लाह (ﷺ) को वो कैंट बेच डाला। उसके बाद आँ हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अब्दुल्लाह बिन ड़मर! अब ये कैंट तेरा होगया जिस तरह तू चाहे उसे इस्ते'माल कर। (दीगर मक़ाम: 2610, 2611)

2116. अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा किलैष बिन

٤٧- بَابُ إِذَا اشْتَرَى شَيْئًا فَوَهَبَ  
مِنْ سَاعِيهِ قَبْلَ أَنْ يَتَفَرَّقَا وَلَمْ يُنْكِرِ  
الْبَائِعُ عَلَى الْمُشْتَرِي، أَوْ اشْتَرَى  
عَبْدًا فَأَغْفَقَهُ  
وَقَالَ طَاوُسٌ لِيَمَنْ يَشْتَرِي السَّلْعَةَ  
الرَّضَا ثُمَّ بَاعَهَا وَجَبَتْ لَهُ وَالرَّوْبَعُ لَهُ.

٢١١٥- وَقَالَ الْحَمْدِيُّ حَدَّثَنَا مُغَيَّانٌ  
قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُو عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُمَا قَالَ : ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ  
فَكُنْتُ عَلَى بَكْرِ صَغِيرٍ لِعُمَرَ، فَكَانَ  
يَغْلِبُنِي فَيَقْدُمُ أَمَامَ الْقَوْمِ، فَيَزْجُرُهُ عُمَرُ  
وَيُؤَدُّهُ، ثُمَّ يَقْدُمُ فَيَزْجُرُهُ عُمَرُ وَيُؤَدُّهُ،  
فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعُمَرَ: ((يَعْنِي)). قَالَ: هُوَ  
لَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: ((بَعْنِي)). فَبَاعَهُ  
مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هُوَ  
لَكَ يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ تَصْنَعُ بِهِ مَا  
شِئْتَ)). [طرفاه في: ٢٦١٠، ٢٦١١].

٢١١٦- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَقَالَ اللَّيْثُ

सअद ने बयान किया, कि मुझे अब्दुरहमान बिन खालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अमीरुल मोमिनीन इब्मान (रज़ि.) को अपनी वादी कुरा की ज़मीन, उनकी ख़ैबर की ज़मीन के बदले में बेची थी। फिर जब हमने बेअ कर ली तो मैं उलटे पाँव उनके घर से इस ख़याल से बाहर निकल गया कि कहीं वो बेअ फ़स्ख़ न कर दें। क्योंकि शरीअत का क़ायदा ये था कि बेचने और ख़रीदने वाले को (बेअ तोड़ने का) इख़ितयार उस वक़्त तक रहता है जब तक वो एक-दूसरे से जुदा न हो जाएँ। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि जब हमारी ख़रीद व फ़रोख्त पूरी हो गई और मैंने ग़ौर किया तो मा'लूम हुआ कि मैंने इब्मान (रज़ि.) को नुक़सान पहुँचाया है। क्योंकि (इस तबादले के नतीजे में, मैंने उनकी पहली ज़मीन से) उन्हें तीन दिन के सफ़र की दूरी पर भूमूद की ज़मीन की तरफ़ धकेल दिया था। और उन्होंने मुझे (मेरी मुसाफ़त कम करके) मदीना से सिर्फ़ तीन दिन के सफ़र की वादी पर ला छोड़ा था। (राजेअ: 2107)

حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((بُعْتُ مِنْ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عُثْمَانَ مَالًا بِالْوَادِي بِمَالٍ لَهُ بِخَيْرٍ، فَلَمَّا تَبَيَّنَا رَجَعْتُ عَلَى غَيْبِي حَتَّى عُرِجْتُ مِنْ بَيْتِهِ عَشِيَّةً أَنْ يُرَاقِبِي النَّهْجَ، وَكَانَتْ السَّنَةُ أَنْ الْمُتَبَايِعِينَ بِالْخِيَارِ حَتَّى يَنْفَرُوا ، قَالَ عَبْدُ اللَّهِ : فَلَمَّا وَجَبَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ رَأَيْتُ أَنِّي لَدَى عَيْتِهِ بَأْتِي سَفْتَهُ إِلَى أَرْضِ قُمُودٍ بِثَلَاثِ نَهَالٍ، وَسَأَلَنِي إِلَى الْمَدِينَةِ بِثَلَاثِ نَهَالٍ)). (راجع: ٢١٠٧)

**तशरीह:** शुरू बाब में जो दो सूरतें मज़कूर हुई हैं उन दोनों सूरतों में अब बायेअ को फ़स्ख़े बेअ का इख़ितयार न रहेगा क्योंकि उनसे मुशतरी (ख़रीदार) के तसर्फ़ पर ए'तिराज़ नहीं किया, बल्कि ख़ामोश रहा। बाब की हदीष में सिर्फ़ हिबा का ज़िक्र है, मगर एअताक़ को हिबा पर कयास किया। दोनों तबरूअ की किस्म में से हैं और इस बाब के लाने से इमाम बुखारी (रह.) की रज़ा ये है कि बाब की हदीष से ख़ियारे मज्लिस की नफ़ी नहीं होती। जिसका शुबूत ऊपर इब्ने इमर (रज़ि.) की हदीष से हो चुका है। क्योंकि ये ख़ियार उस वास्ते जाता रहा कि मुशतरी ने तसर्फ़ किया और बायेअ ने सुकूत (चुप्पी) किया तो उसका सुकूत मुबतिले ख़ियार हो गया। इब्ने बत्ताल ने कहा जो लोग कहते हैं कि बग़ैर तफ़र्रुके अब्दान के बेअ पूरी नहीं होती वो मुशतरी का तसर्फ़ क़बूल अज़ तफ़र्रुक़ जाइज़ नहीं रखते और ये हदीष उन पर हुज्जत है। अब रहा क़ब्ज़ा से पहले बेअ करना, तो इमाम शाफ़िई (रह.) और मुहम्मद (रह.) के नज़दीक मुत्लक़न दुरुस्त नहीं, और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और अबू यूसुफ़ (रह.) के नज़दीक मन्कूल की बेअ दुरुस्त नहीं ग़ैर मन्कूल की दुरुस्त है। और इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) और औज़ाई और इस्हाक़ और अहले हदीष का ये क़ौल है कि नाप और तौल की जो चीज़ बिकती हैं, उनका क़ब्ज़े से पहले बेचना दुरुस्त नहीं बाक़ी चीज़ों का दुरुस्त है। क़स्तालानी (रह.) ने कहा हज़रत उमर (रज़ि.) की ये हदीष तो उन सहीह हदीषों के मुआरिज नहीं जिनसे ख़ियारे मज्लिस प्राबित है क्योंकि एहतिमाल (अन्देशा) है कि अक़दे बेअ के बाद आहज़रत (ﷺ) हज़रत उमर (रज़ि.) से थोड़ी देर के लिये आगे या पीछे बढ़ गए हों, उसके बाद हिबा किया हो। वल्लाहु आलम। (वहीदी)

आप (ﷺ) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से वो ऊँट लेकर उसी वक़्त उनके साहबज़ादे अब्दुल्लाह (रज़ि.) को हिबा कर दिया। और हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पर कोई ए'तिराज़ नहीं किया तो बेअ दुरुस्त हो गई और ख़ियारे मज्लिस बाक़ी न रहा। आख़िर बाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) और हज़रत इब्मान (रज़ि.) के एक मामले का ज़िक्र है जिसमें बयान की गई वादी कुरा एक बस्ती है, तबूक के क़रीब, ये जगह मदीना से छः सात मंज़िल पर है, और भूमूद की क़ौम के ज़माने में इस जगह आबादी थी। क़स्तालानी ने कहा कि वाक़िया मज़कूर की बाब से मुनासबत ये है कि बायेअ (बेचने वाले) और मुशतरी (ख़रीदने वाले) को अपने इरादे से जुदा होना दुरुस्त है या बेअ का फ़स्ख़ करना।

### बाब 48 : खरीद व फ़रोख़्त में धोखा देना मकरूह है

2117. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि एक शख्स (हब्बान बिन मुक़दिर रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अर्ज़ किया कि वो अक़्शर ख़रीद व फ़रोख़्त में धोखा खा जाते हैं। इस पर आपने उनसे फ़र्माया कि जब तुम किसी चीज़ की ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो यूँ कह दिया करो कि भाई धोखा और फ़रोब का काम नहीं। (दीगर मक़ाम : 2407, 2414, 6964)

### ٤٨- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ الْخِدَاعِ فِي الْبَيْعِ

٢١١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلًا ذَكَرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ يُخْدَعُ فِي الْبَيْعِ ، فَقَالَ : ((إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ لَا خِلَافَةَ)).

[أطرافه في : ٧٤٠٧، ٢٤١٤، ٦٩٦٤].

**तशरीह :** बेहकी की रिवायत में इतना ज़्यादा है और तू जो चीज़ ख़रीदे उसमें तुझे तीन दिन तक इख़्तियार होगा। इमाम अहमद (रह.) ने इस हदीस से ये हुक्म दिया है कि अगर किसी शख्स को अस्बाब (माल) की कीमत मा'लूम न हो, और वो तिहाई कीमत ज़्यादा दे या एक सुदुस तो वो अस्बाब बायेअ (बेचने वाले) को फेर सकता है और हन्फिया और शाफ़िइया ने इसका इंकार किया है। ये सहाबी हब्बान बिन मुक़दिर (रज़ि.) थे, जंगे उहद में उनके सर में ज़ख़्म आया था। जिसकी वजह से उनकी अक़ल में कमज़ोरी आ गई थी। (वहीदी)

### बाब 49 : बाज़ारों का बयान

और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने कहा कि जब हम मदीना आए तो मैंने (अपने इस्लामी भाई से) पूछा कि क्या यहाँ कोई बाज़ार है अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने कहा कि मुझे बाज़ार बता दो और हज़रत इमर (रज़ि.) ने एक बार कहा था कि मुझे बाज़ार की ख़रीद व फ़रोख़्त ने ग़ाफ़िल रखा।

मक़सदे बाब ये कि तिजारत के लिये बाज़ारों का वजूद मज़मूम (बुरा) नहीं बल्कि ज़रूरी है कि बाज़ार कायम किये जाएँ।

2118. हमसे मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन जकरिया ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सौक्रा ने, उनसे नारफ़ेअ बिन जुबैर मुतइम ने बयान किया, कहा कि मुझसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के करीब एकलश्कर का'बा पर चढ़ाई करेगा जब वो मक़ामे बैदाअ में पहुँचेगा, तो उन्हें अब्बल से आख़िर तक सबको ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने

### ٤٩- بَابُ مَا ذَكَرَ فِي الْأَسْوَاقِ

وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ : لَمَّا قَبِعْنَا الْمَدِينَةَ قُلْتُ : هَلْ مِنْ سُوقٍ فِيهِ تِجَارَةٌ؟ قَالَ : سُوقٌ قَيْنِقَاعٍ. وَقَالَ أَنَسٌ : قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ دَلُونِي عَلَى السُّوقِ. وَقَالَ عُمَرُ : أَلْهَانِي الصَّفْقُ بِالْأَسْوَاقِ.

٢١١٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّا عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سُوْقَةَ عَنْ نَافِعِ بْنِ جَبْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ : حَدَّثَنِي عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((يَغْزُو جَيْشُ الْكُفَّةِ ، لِذَا كَانُوا بَيْنَاءَ مِنَ الْأَرْضِ يُخْسَفُ

बयान किया, कि मैंने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उसे शुरू से आखिर तक क्योंकर धंसाया जाएगा जबकि वहाँ उनके बाज़ार भी होंगे और वो लोग भी होंगे जो उन लश्करियों में से नहीं होंगे? आपने फ़र्माया कि हाँ! शुरू से आखिर तक उन सबको धंसा दिया जाएगा। फिर उनकी निधियों के मुताबिक़ वो उठाए जाएँगे।

सवादे का'बा में बाज़ारों का वजूद प्राबित हुआ। यही बाब का मक्सद है।

2119. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अज़मश ने, उनसे अबू सलालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जमाअत के साथ किसी की नमाज़ बाज़ार में या अपने घर में नमाज़ पढ़ने से दर्जों में कुछ ऊपर बीस दर्जे ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है। क्योंकि जब एक शख्स अच्छी तरह वुजू करता है फिर मस्जिद में सिर्फ़ नमाज़ के इरादे से आता है। नमाज़ के सिवा और कोई चीज़ उसे ले जाने का बाअिअ नही बनती तो जो भी क़दम वो उठाता है उससे एक दर्जा उसका बुलन्द होता है। या उसकी वजह से एक गुनाह उसका मुआफ़ होता है। और जब तक एक शख्स अपने उस मुसल्ले पर बैठा रहता है जिस पर उसने नमाज़ पढ़ी है तो फ़रिश्ते बराबर उसके लिये रहमत की दुआएँ यूँ करते रहते हैं। ऐ अल्लाह! इस पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़र्मा, ऐ अल्लाह इस पर रहम फ़र्मा। ये उस वक़्त तक होता रहता है जब तक वो वुजू तोड़कर फ़रिश्तों को तकलीफ़ न पहुँचाए। जितनी देर तक भी आदमी नमाज़ की वजह से रुका रहता है वो सब नमाज़ ही में शुमार होता है। (राजेअ: 176)

بِأُولَئِهِمْ وَأَحْرِمَهُمْ)). قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ يُخَسَفُ بِأُولَئِهِمْ وَأَحْرِمَهُمْ وَفِيهِمْ أَسْوَاقُهُمْ وَمَنْ لَيْسَ بِهِمْ؟ قَالَ: ((يُخَسَفُ بِأُولَئِهِمْ وَأَحْرِمَهُمْ، ثُمَّ يُنْعَوْنَ عَلَى نِيَابِهِمْ)).

٢١١٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((صَلَاةٌ أَحَدِكُمْ فِي جَمَاعَةٍ تَزِيدُ عَلَى صَلَاتِهِ فِي سَوْقِهِ وَبَيْتِهِ بِضْعًا وَعِشْرِينَ دَرَجَةً، وَذَلِكَ بِأَنَّهُ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ، ثُمَّ أَتَى الْمَسْجِدَ لَا يُرِيدُ إِلَّا الصَّلَاةَ، لَا يَنْهَرُهُ إِلَّا الصَّلَاةُ، لَمْ يَخْطُ خَطْوَةً إِلَّا رَفَعَ بِهَا دَرَجَةً، أَوْ خَطَّتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ، وَالْمَلَائِكَةُ تَصَلِّي عَلَى أَحَدِكُمْ مَا دَامَ فِي مُصَلَاةٍ الَّتِي يُصَلِّي فِيهِ: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ، اللَّهُمَّ ارْحَمَهُ، مَا لَمْ يُحْدِثْ فِيهِ، مَا لَمْ يُؤْذِ فِيهِ. وَقَالَ: أَحَدُكُمْ فِي صَلَاةٍ مَا كَانَتْ (الصَّلَاةُ تَخْبِئُهُ)). [راجع: ١٧٦]

**तशरीह:** इस हदीष में भी बाज़ारों का ज़िक्र आया है और बवक़ते ज़रूरत वहाँ नमाज़ पढ़ने का भी ज़िक्र आया। जिससे प्राबित हुआ कि इस्लाम में बाज़ारों का वजूद कायम रखा गया है। और वहाँ आना-जाना, खरीद व फ़रोख़्त करना भी ताकि उमूरे तमहुनी (सांस्कृतिक कामों) को तरक्की हासिल हो। मगर बाज़ारों में झूठ, मकर व फ़रेब भी लोग बक़़रत करते हैं। इस लिहाज़ से बाज़ार को बदतरीन ज़मीन क़रार दिया गया। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

2120. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक बार बाज़ार में थे। कि एक शख्स ने पुकारा या अबुल

٢١٢٠- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حَمِيدِ الطَّوِيلِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ



क्रासिम! आप (ﷺ) ने उसकी तरफ देखा। (क्योंकि आपकी कुत्रियत भी अबुल क्रासिम ही थी) उस पर उस शख्स ने कहा कि मैंने तो उसको बुलाया था। (या'नी एक-दूसरे शख्स को जो अबुल क्रासिम ही कुत्रियत रखता था) आप (ﷺ) ने फर्माया कि तुम लोग मेरे नाम पर नाम रखा करो लेकिन मेरी कुत्रियत तुम अपने लिये न रखो। (दीगर मक़ाम: 2121, 3537)

इस हदीष में हज़रत रसूले करीम (ﷺ) का बाज़ार में तशरीफ़ ले जाना मज़कूर है। प्रामाणिक हुआ कि बवक्ते ज़रूरत बाज़ार जाना बुरा नहीं है। मगर वहाँ अमानत व दयानत का क़दम क़दम पर लिहाज़ रखना ज़रूरी है।

2121. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे जुहैर ने बयान किया, उनसे हुमैद ने, और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि एक शख्स ने बक़ीअ में (किसी को) पुकारा ऐ अबुल क्रासिम! नबी करीम (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा, तो उसने कहा कि मैंने आपको नहीं पुकारा, उस दूसरे आदमी को पुकारा था। आप (ﷺ) ने फर्माया, मेरे नाम पर नाम रखा करो लेकिन मेरी कुत्रियत न रखा करो। (रजेअ: 2120)

इस हदीष की मुनासबत बाब से ये है कि इसमें आपके बाज़ार जाने का ज़िक्र है या'नी बक़ीअ में। कुछ ने कहा कि उस ज़माने में बक़ीअ में भी बाज़ार लगा करता था। कुत्रियत के बारे में ये हुक्म आपकी हयाते मुबारका तक था। जैसा कि हज़रत इमाम मालिक (रह.) का क़ौल है।

2122. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने, उनसे नाफ़ेअ बिन जुबैर बिन मुत्तइम ने और उनसे अबू हुसैरह दौसी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दिन के एक हिस्से में तशरीफ़ ले चले। न आप (ﷺ) ने मुझसे कोई बात की और न मैंने आप (ﷺ) से। उसी तरह आप बनी क़ेनकाअ के बाज़ार में आए फिर (वापस हुए और) फ़ातिमा (रज़ि.) के घर के आंगन में बैठ गए, और फर्माया, वो बच्चा कहाँ है, वो बच्चा कहाँ है? फ़ातिमा (रज़ि.) (किसी मशगूलियत की वजह से फ़ौरन) आप (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर न हो सकीं। मैंने ख़याल किया, मुम्किन है हसन (रज़ि.) को कुर्ता वग़ैरह पहना रही हों या नहला रही हों। थोड़ी ही देर बाद हसन (रज़ि.) दौड़ते हुए आए, आपने उनको सीने से लगा लिया, और बोसा लिया। फिर फर्माया, ऐ अल्लाह! इसे महबूब रख और उस शख्स को भी महबूब रखा जो इससे मुहब्बत रखे। सुफ़यान ने कहा कि

كَانَ فِي السُّوقِ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ، فَاتَّقَتْ إِلَيْهِ النِّسَىُّ، فَقَالَ: إِنَّمَا دَعَوْتُ هَذَا، فَقَالَ النِّسَىُّ: ((سَمُّوا بِاسْمِي وَلَا تَكُونُوا بِكُنْيَتِي)).  
[طرفاء في: 2121, 3537].

2121 - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: دَعَا رَجُلٌ بِاتَّقِيعِ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ، فَاتَّقَتْ إِلَيْهِ النِّسَىُّ، فَقَالَ: لَمْ أَعْنِكَ، قَالَ: ((سَمُّوا بِاسْمِي وَلَا تَكُونُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: 2120]

2122 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُثَيْدٍ أَنَّ ابْنَ أَبِي يَزِيدَ عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ الدَّوْسِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي طَائِفَةِ النَّهَارِ لَا يَكَلُمُنِي وَلَا أَكَلُمُهُ، حَتَّى أَتَى سُوقَ بَنِي قَيْنِقَاعَ، فَجَلَسَ بِفَيْءِ بَيْتِ فَاطِمَةَ فَقَالَ: ((أَنْتُمْ لَكُمْ، أَنْتُمْ لَكُمْ)) فَجَبَسَتْ شَيْئًا، فَظَنَنْتُ أَنَّهَا تَلْبَسُهُ سِخَانًا أَوْ تُعَسِّلُهُ، فَجَاءَ يَشْتَدُّ حَتَّى عَانَقَهُ وَقَبَّلَهُ وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ أَجِبْهُ وَأَجِبْ مَنْ يُجِبُهُ)) قَالَ سُفْيَانُ: قَالَ عُثَيْدٌ أَنَّ ابْنَ أَخْبَرَنِي أَنَّهُ رَأَى

अबैदुल्लाह ने मुझे खबर दी, उन्होंने नाफे अबिन जुबैर को देखा कि उन्होंने वित्र की नमाज़ सिर्फ़ एक ही रकअत पढ़ी थी। (दीगर मक़ाम : 5884)

2123. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू जम्हूर अनस बिन अथाज़ ने बयान किया, कहा कि हमसे मूसा बिन उत्रबा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि सहाबा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में ग़ल्ला क़ाफ़िलों से ख़रीदते तो आप उनके पास कोई आदमी भेजकर वहीं पर जहाँ उन्होंने ग़ल्ला ख़रीदा होता, उस ग़ल्ले को बेचने से मना कर देते और उसे वहाँ से लाकर बेचने का हुक्म होता, जहाँ आम तौर से ग़ल्ला (अनाज) बिकता था।

(दीगर मक़ाम : 2131, 2137, 2166)

2124. कहा कि हमसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने ये भी बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ल्ले को पूरी तरह अपने क़ब्ज़े में करने से पहले उसे बेचने से मना फ़र्माया।

(दीगर मक़ाम : 2126, 2133, 2136)

**तशरीह :** इन तमाम रिवायत की गई अहदीष में किसी न किसी पहलू से औहज़रत (ﷺ) या सहाबा किराम (रज़ि.) का बाज़ारों में आना-जाना मज़कूर हुआ है। नम्बर 2119 में बाज़ारों में और मस्जिद में नमाज़ बाजमाअत के प्रवाब के फ़र्क का ज़िक्र है हदीष, नम्बर 2122 में औहज़रत (ﷺ) का बाज़ारे केनकाअ में आना और वहाँ से वापसी पर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के घर पर जाना मज़कूर है जहाँ आप (ﷺ) ने अपने प्यारे नवासे हज़रत हुसैन (रज़ि.) को प्यार किया, और उनके लिये दुआए ख़ैर फ़र्माई। अल्लार्ज बाज़ारों में आना-जाना, मुआमलात करना ये कोई मज़मूम अम्र (बुरा काम) नहीं है। ज़रूरियात ज़िन्दगी के लिये बहरहाल हर किसी को बाज़ार जाए बग़ैर गुज़ारा नहीं, हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद इसी अम्र का बयान करना है क्योंकि बुयूअ का ता'ल्लुक ज़्यादातर बाज़ारों ही से है। इसी सिलसिले के मज़ीद बयानात आगे आ रहे हैं।

**बाब 50 : बाज़ार में शोरगुल मचाना मक़रूह है**

2125. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे फुलैह ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन यसार ने कि मैं अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) से मिला और अर्ज किया कि सूलुल्लाह (ﷺ) की जो सिफ़त तौरत में आई हैं, उनके बारे में मुझे कुछ बताइये। उन्होंने कहा हाँ! क़सम अल्लाह की! आप (ﷺ) की तौरात में बिलकुल कुछ वही सिफ़ात आई हैं जो कुआन शरीफ़ में मज़कूर है। जैसे कि

نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ أَوْ تَرَى بَرَكَةً.

[طرفه في : 5884.]

٢١٢٣ - حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى عَنْ نَافِعٍ قَالَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُمَرَ: أَنَّهُمْ كَانُوا يَشْتَرُونَ الطَّعَامَ مِنَ الرُّكْبَانِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَيَبِعَتْ عَلَيْهِمْ مَنْ يَمْنَعُهُمْ أَنْ يَبِيعُوهُ حَيْثُ اشْتَرَوْهُ حَتَّى يَنْقَلِبُوا حَيْثُ يَبِيعُ الطَّعَامُ.

[أطراف في : ٢١٣١, ٢١٣٧, ٢١٦٦.]

٢١٢٤ - قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ نَهَى النَّبِيُّ أَنْ يَبِيعَ الطَّعَامُ إِذَا اشْتَرَاهُ حَتَّى يَسْتَوِفِيَهُ.

[أطرافه في : ٢١٢٦, ٢١٣٣, ٢١٣٦.]

٥٠ - بَابُ كِرَاهِيَةِ السَّخَبِ فِي السُّوقِ

٢١٢٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِلَالٌ عَنْ غَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: لَقِيتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ بْنَ الْعَاصِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قُلْتُ: خُبَرْنِي عَنْ صِفَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نُورًا، قَالَ: أَجَلٌ، وَهُوَ أَنَّهُ لَمْ يَوْصَفْ

ऐनबी! मैंने तुम्हें गवाह, खुशखबरी देने वाला, डराने वाला, और अनपढ़ कौम की हिफाजत करने वाला बनाकर भेजा है। तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो। मैंने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा है। तुम न बदखू हो, न सख्त दिल और न बाजारों में शोरो—गुल मचाने वाले, (और तौरात में ये भी लिखा हुआ है कि) वो (मेरा बन्दा और रसूल) बुराई का बदला बुराई से नहीं लेगा, बल्कि मुआफ़ और दसगुजर करेगा। अल्लाह तआला उस वक़्त तक उसकी रूह क़ब्ज़ नहीं करेगा जब तक टेढ़ी शरीअत को उससे सीधी न करा ले, या'नी (लोग) ला इलाहा इल्लल्लाह न कहने लगे। और उसके जरिये वो अँधी आँखों को बीना, बहरे कानों को शुन्वा और पर्दा पड़े हुए दिलों के पर्दे खोल देगा। इस हदीस की मुताबअत अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमाने हिलाल से की है। और सईद ने बयान किया, उनसे हिलाल ने, उनसे अत्ता ने कि गुल्फ़ हर उस चीज़ को कहते हैं जो पर्दे में हो। सैफ़ अलफ़ व क़ौस ग़लफ़ाठ, उसी से है और रज़ुल अलफ़ उस शख्स को कहते हैं जिसका ख़ताना हुआ हो।

(दीगर मक़ाम : 4838)

فِي التَّوْرَةِ يَفْضِي صَفِيهِ فِي الْقُرْآنِ : يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرَسْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا وَحِزْرًا لِلْأُمِّيِّينَ، أَنْتَ عَبْدِي وَرَسُولِي، سَمِعْتُكَ الْمُتَوَكِّلَ، لَيْسَ بِفَقْرٍ وَلَا غَلِيظٍ وَلَا سَخَابٍ فِي الْأَسْوَاقِ، وَلَا يَذْفَعُ بِالسَّيِّئَةِ السَّيِّئَةَ، وَلَكِنْ يَغْفِرُ وَيَغْفِرُ، وَلَنْ يَقْبِضَهُ اللَّهُ حَتَّى يُقِيمَ بِهِ الْحِلَّةَ الْمُوَجَّهَةَ بِأَنْ يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَيَقْبَحَ بِهَا أَهْلُ عَمِّي وَأَذَانُ صَمٍّ وَقُلُوبٌ غُلْفٌ)). تَابَعَهُ عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ هِلَالٍ وَقَالَ سَعِيدٌ عَنْ هِلَالٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي سَلَامٍ. غُلْفٌ: كُلُّ شَيْءٍ فِي غِلَافٍ، سَيْفٌ أَغْلَفَ، وَقَوْمٌ غُلْفَاءُ، وَرَجُلٌ أَغْلَفَ إِذَا لَمْ يَكُنْ مَعْتَبَرًا. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ.

[طرنه في: 4838].

**तशरीह :** इस हदीस में नबी करीम (ﷺ) के औसाफ़े जमीला (अच्छे गुणों) में से ये भी बताया गया है कि वो बाजारों में गुल मचाने वाला न होगा। मक़सदे बाब इसी से प्राबित हुआ कि बाजारों में जाकर शोरो—गुल मचाना अख़लाके फ़ाज़िला की रू से मुनासिब नहीं है। दूसरी हदीस में बाज़ार को बदतरीन जगह कहा गया है। उसके बावजूद बाज़ारों में आना जाना शाने पैग़म्बरी या इमामत के ख़िलाफ़ नहीं है, काफ़िर आँहज़रत (ﷺ) पर ए'तिराज़ किया करते थे, मा लिहाज़र रसूल या कुलुत्त आम व यमि़श फ़िल् इस्वाक़ अल्बता वहाँ शोरो—गुल मचाना ख़िलाफ़े शान है। हदीस में मज़कूर मिल्लते इवजा से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शरीअत मुराद है। पहले वो सीधी थी फिर अरब के मुश्रिकों ने उसको टेढ़ा कर दिया। हज़ारों कुफ़ और गुमराही की बातें उसमें दाख़िल कर दी थीं। अल्लाह पाक ने आँहज़रत (ﷺ) के हाथों इस शरीअत को सीधा कराया। इसमें जिस क़दर भी तवहहुमात और मुहदप्रात शामिल कर लिये गये थे आप (ﷺ) ने उनसे मिल्लते इब्राहीमी को पाक साफ़ करके उसकी असली सूरत में पेश फ़र्मा दिया। ग़िलाफ़ में बन्द तलवार को सैफ़े अलफ़ और पोशीदा छुपाए हुए तीर को कहते हैं।

**बाब 51 : नाप-तौल करने वाले की मज़दूरी बेचने वाले पर और देने वाले पर है (खरीददार पर नहीं)**

क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि जब वो उन्हें नापकर या

٥١- بَابُ الْكَفْلِ عَلَى الْبَائِعِ

وَالْمُعْطِي

لِقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: هُوَ إِذَا كَانُوا مِنْ أَوْ

तौलकर देते हैं तो कम कर देते हैं, मतलब ये है कि वो बेचने वाले ख़रीदने वालों के लिये नापते और वज़न करते हैं। जैसे दूसरी आयत में कलिमा यस्मऊ नकुम से मुराद यस्मऊना लकुम है। वैसे ही इस आयत में कालू हुम से मुराद कालु लहुम है। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि खज़ूर नाप लो और अपने कूँट की कीमत पूरी भर लो। और हज़रत इम्रान (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, जब तू कोई चीज़ बेचा करे तो नाप के दिया कर और जब कोई चीज़ ख़रीदे तो उसे भी नाप कर लिया कर।

وَزَنُّوهُمْ **مُحْسَرُونَ** يَغْضَى كَالْوَا لَهُمْ  
وَزَنُّوا لَهُمْ كَقَوْلِهِ: ﴿يَسْمَعُونَكُمْ﴾  
يَسْمَعُونَ لَكُمْ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اَكْتَالُوا  
حَتَّى تَسْتَوُوا)), وَيَذْكُرُ عَنْ عُثْمَانَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا  
بَغْتُ فِكْلًا، وَإِذَا ابْتَغْتُ فَأَكْتَلُ)).

**तशरीह :** आँझजरत (ع) ने तारिक अब्दुल्लाह महारिबी और उनके साथियों से खजूर के बदल एक कैंट खरीदा था। एक शख्स के हाथ उसके पास खजूर भेजी और ये कहला भेजा कि अपना हक अच्छी तरह नाप लो। इस रिवायत से ये निकला कि नापना उसी का काम है जो जिन्स दे। इस हदीष को निसाई और इब्ने हब्बान ने वस्ल किया है। (वहीदी)

मैंने सब अदा कर दिया। फिर भी तमाम खजूर ज्यों की त्यों थी। उसमें से एक दाने के बराबर की भी कमी नहीं हुई थी। फ़रास ने बयान किया, उनसे शअबी ने, और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि बराबर उनके लिये तौलते रहे, यहाँ तक कि उनका पूरा क़र्ज़ अदा हो गया। और हिशाम ने कहा, उनसे वहब ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, खजूर तोड़ और अपना क़र्ज़ अदा कर दे।

(दीगर मक़ाम : 2395, 2396, 2405, 2601, 2709, 2781, 3580)

لِقَوْمٍ، فَكَيْلَهُمْ حَتَّى أَوْفَيْتَهُمُ الَّذِي لَهُمْ، وَتَقِي تَمْرِي كَأَنَّهُ لَمْ يَنْقُصْ مِنْهُ شَيْءٌ. وَقَالَ لِرَاسٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَمَّا زَالَ يَكِيلُ لَهُمْ حَتَّى أَدَى)). وَقَالَ هِشَامٌ عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((جُدُّ لَهُ فَأَوْفَى لَهُ)).

[اطرافه في : ٢٣٩٥، ٢٣٩٦، ٢٤٠٥]

٢٦٠١، ٢٧٠٩، ٢٧٨١، ٣٥٨٠

**तशरीह:** इस हदीष से जहाँ एक अज़ीम मुअज़ज़-ए-नबवी श्रावित हुआ वहाँ ये मसला भी निकला कि अपने क़र्ज़ ख़्वाहों को हज़रत जाबिर (रज़ि.) उनके क़र्ज़ के बदले में ख़जूर दे रहे थे और नाप तौल का काम भी खुद ही कर रहे थे। उसी से निकला कि अदा करने वाला ही खुद अपने हाथ से वज़न करे। यही बाब का मक़सद है।

## बाब 52 : अनाज का नाप-तौल करना मुस्तहब है

2128. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद ने बयान किया, उनसे प्रौर ने, उनसे ख़ालिद बिन मअदान ने और उनसे मित्रदाम बिन मअदी करिब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने ग़ल्ले को नाप लिया करो,

٥٢- بَابُ مَا يَسْتَحَبُّ مِنَ الْكَيْلِ  
٢١٢٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ عَنْ ثَوْرٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَقْدَانَ عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَيْلُوا طَعَامَكُمْ يَبَارَكْ لَكُمْ)).

## बाब 53 : नबी करीम (ﷺ) के साअ और मुह की बरकत का बयान. इस बाब में एक हदीष हज़रत आइशा (रज़ि.) की भी नबी करीम (ﷺ) से मरवी है

2129. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे अमर बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अब्बाद बिन तमीम अंसारी ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का को ह़राम क़रार दिया। और उसके लिये दुआ फ़र्माई। मैं भी मदीना को उसी तरह ह़राम क़रार देता हूँ जिस

٥٣- بَابُ بَرَكَتِ صَاعِ النَّبِيِّ ﷺ  
وَمُدَّةٍ فِيهِ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

٢١٢٩- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عُبَادِ بْنِ تَمِيمٍ الْأَنْصَارِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَدَعَا لَهَا، وَحَرَّمْتُ

तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का को हराम करार दिया था। और उसके लिये उसके मुद् और स़ाअ (गल्ला नापने के दो पैमाने) की बरकत के लिये उसी तरह दुआ करता हूँ जिस तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का के लिये दुआ की थी।

الْمَدِينَةُ كَمَا حَرَّمَ إِبْرَاهِيمُ مَكَّةَ، وَذَعَوْتُ لَهَا فِي مَذْهَبِهَا وَصَاعِيهَا بِقَوْلِ مَا دَعَا إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ لِمَكَّةَ)).

मा'लूम हुआ कि नाप तौल के लिये स़ाअ और मुद् का दस्तूर अहदे रिसालत में भी था। जिनमे बरकत के लिये आप (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई, और मदीना के लिये आप (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई जो उसी तरह कुबूल हुई, जिस तरह मक्का शरीफ़ के लिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल हुई थी, बल्कि कुछ खुसूसियाते बरकत में मदीना मुम्ताज़ (श्रेष्ठ) है। वहाँ पानी शहर में बक़रत मौजूद है, आसपास जंगल हरियाली से लहलहा रहा है। फिर आजकल हुक्मते सरुदिया खल्लदल्लाह बकाहा की मसाई (कोशिशों) से मदीना हर लिहाज़ से एक तरक्कीयाफ़ता शहर बनता जा रहा है, जो सब आँहज़रत (ﷺ) की पाकीज़ा दुआओं का अफ़र है।

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था, अल्लाहुम्म हब्बिब इलैन्ल्मदीनत कहुब्बिना मक्कत औ अशदु या अल्लाह! मक्कतुल मुकर्रमा ही की तरह बल्कि उससे भी ज़्यादा हमारे दिलों में मदीना की मुहब्बत डाल दे।

2130. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा कअम्बी ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! मदीना वालों के पैमानों में बरकत दे, ऐ अल्लाह! उन्हें उनके स़ाअ और मुद् में बरकत दे। आप (ﷺ) की मुराद अहले मदीना थे।

٢١٣٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي مِكْيَالِهِمْ، وَبَارِكْ لَهُمْ فِي صَاعِهِمْ وَمُدِّهِمْ. يَغْنِي أَهْلَ الْمَدِينَةِ)).

(दीगर मक़ाम : 6714, 7331)

[طرفاء: ٦٧١٤, ٧٣٣١].

## बाब 54 : अनाज का बेचना और एहतिकार (जमाखोरी) करना कैसा है?

٥٤- بَابُ مَا يُذَكَّرُ فِي بَيْعِ الطَّعَامِ وَالْحُكْمَةِ

**तशरीह :** एहतिकार कहते हैं, गिरानी (महंगाई) के वक़्त गल्ला (अनाज) खरीद करके उसको रख छोड़ना, कि जब बहुत महंगा होगा तो बेचेंगे। अगर अरज़ानी के वक़्त खरीद करके रख छोड़े तो ये एहतिकार मना नहीं है। इसी तरह अगर गिरानी के वक़्त अपनी ज़रूरियात के लिये गल्ला खरीदकर रख छोड़े तो ये मना नहीं है। बाब की हदीषों में एहतिकार का ज़िक्र नहीं है। हाफ़िज़ ने कहा, इमाम बुखारी (रह.) ने एहतिकार का जवाज़ प्राबित किया, इस हदीष से कि गल्ला कब्ज़े से पहले न बेचने या 'नी अपने घर या दुकान में लाने से पहले तो अगर एहतिकार हराम होता तो आप ये हुक्म न देते बल्कि खरीदते ही बेचने का हुक्म दे देते। और शायद उनके नज़दीक ये हदीष प्राबित नहीं है जिसे इमाम मुस्लिम (रह.) ने निकाला कि एहतिकार वही करता है जो गुनाहगार है और इब्ने माजा और हाकिम ने निकाला कि जो कोई मुसलमानों पर उनका खाना एहतिकार करेगा (जमाखोरी करके छीनेगा), अल्लाह उस पर जुज़ाम (कोढ़) की बीमारी डालेगा। (वहीदी)

एहतिकार की बहष में हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, व कुल्लु ज़ालिक मुशइरून बिअन्नल इहतिकार इन्नमा यम्नउ फ़ी हालतिन मख़सूमतिन बिशुरूतिन मख़सूमतिन व क़द वरद फ़ी ज़म्मिल इहतिकारि अहादीषुमिन्हा हदीषु मज़मर अल्मज़कूर अव्वलन व हदीषु उमर मफ़ूअन मनिहतकर अलल मुस्लिमीन तआमुहुम ज़रबल्लाहु बिल्जुज़ामि वल्इफ़लासि रवाहु इब्नु माजा व इस्नादुहु हसनन अन्हु मफ़ूअन क़ाल्लजालिब मज़क़ वल्मुहतकिर मल्कनुन अख़रजहु इब्नु माजा वल्हाकिम व इस्नादुहु ज़ईफ़न व अन इब्नि उमर मफ़ूअन मनिहतकर अबईन लैलतन फ़क़द बरीउन मिनल्लाहि व बरीउन मिन्हु अख़रजहु अहमद वल्हाकिम व फ़ी इस्नादिही मक़ालुन व अन अबी

हुरैरत मर्फूअन मनिहतकर हुकरतन युरीदु अय्युगालिय बिहा अलल मुस्लिमीन फ़हुव ख़ाती व अख़रजहुल्हाकिम या'नी यहाँ मज्कूरा मबाहिष से जाहिर है कि एहतिकार ख़ास हालात में ख़ास शर्तों के साथ मना है और एहतिकार की मज़म्मत (निन्दा) में कई अह्दादीष भी वारिद हुई हैं। जैसा कि मअमर की हदीष मज्कूर है। निज़ हज़रत उमर (रज़ि.) से मर्फूअन रिवायत है कि जिसने मुसलमानों पर ग़ल्ले को रोक लिया, उसको अल्लाह तआला जुज़ाम के मर्ज़ और इफ़लास (ग़रीबी) में मुब्तला करेगा। और ये भी है कि ग़ल्ला का बाज़ार में लाकर बेचने वाले को रोज़ी दी जाती है और ग़ल्ले को रोकने वाला मलज़ून है और ये भी है कि जिसने चालीस रात तक ग़ल्ले को रोक कर रखा वो अल्लाह से बरी हो गया और अल्लाह उससे बरी है, और ये भी है कि जो गिरानी (महंगाई) के इतिज़ार में ग़ल्ले को रोके वो गुनाहगार है। हालात मौजूदा में एहतिकार तक्रीबन बेशतर ममालिक में एक संगीन क़ानूनी जुर्म करार दिया गया है। जबकि बहुत जगह कहतसाली (अकाल) में लोग मुब्तला हैं। इस्लाम आज से चौदह सौ साल पहले लोगों की भलाई के इस क़ानून का इज़रा कर चुका है।

सनद में मज्कूरा सालिम नामी बुजुर्ग ताबेओन में से हैं। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के फ़रज़न्द अर्जुमन्द हैं। अबू इमरान उनकी कुत्रियत है। कुरैशी अदवी मदनी हैं। फ़ुक़हा-ए-मदीना के सरखील हैं, 106 हिजरी में मदीना ही में वफ़ात पाई। रहमहुल्लाह।

2131. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमको वलीद बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्हें औज़ाई ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, और उनसे उनके बाप ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में उन लोगों को देखा जो अनाज के ढेर (बग़ैर तौले हुए महज़ अंदाज़ा करके) ख़रीद लेते उनको मार पड़ती थी। इसलिये कि जब तक अपने घर न ले जाएँ न बेचें।

2132. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे इब्ने त़ाऊस ने, और उनसे उनके बाप ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ल्ले पर पूरी तरह क़ब्ज़ा से पहले उसे बेचने से मना किया। त़ाऊस ने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा कि ऐसा क्यों है? तो उन्होंने फ़र्माया कि ये तो रूपये का रूपयों के बदले बेचना हुआ जबकि अभी ग़ल्ला तो मीआद ही पर दिया जाएगा। (दीगर मक़ाम : 2135)

इसकी सूरत ये है कि मज़लन ज़ैद ने दो मन गेहूँ अमर से दो रूपये के बदले ख़रीदे और अमर से ये ठहरा कि दो महीने बाद गेहूँ दे। अब ज़ैद ने वही गेहूँ बक्र के साथ चार रुपया को बेच डाले तो दरहक़ीक़त ज़ैद ने गोया दो रूपये को चार रूपये के बदले बेचा। जो सरीह्न सूद (ब्याज) है क्योंकि गेहूँ का अभी तक वजूद ही नहीं वो तो दो माह बाद मिलेंगे और रूपये के बदले रुपया बिक रहा है।

2133. मुझसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को ये

٢١٣١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ الْأَوْزَاعِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ الطَّعَامَ مَجَازِفَةً يُضْرَبُونَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَبْغَوْهُ حَتَّى يُؤْوُوا إِلَى رِحَالِهِمْ)).

٢١٣٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى أَنْ يَبْغِيَ الرَّجُلُ طَعَامًا حَتَّى يَسْتَوْفِيَهُ. قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ: كَيْفَ ذَٰلِكَ؟ قَالَ: ذَرَاهِمُ بِذَرَاهِمٍ وَالطَّعَامُ مُرْجَأٌ)).

[طرمه في : ٢١٣٥].

٢١٣٣- حَدَّثَنِي أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ :

कहते हुए सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स भी कोई ग़ल्ला खरीदे तो उस पर क़ब्ज़ा से पहले उसे न बेचे।

(राजेअ: 2124)

2134. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि अम्र बिन दीनार उनसे बयान करते थे, और उनसे जुहरी ने, उनसे मलिक बिन औस ने, कि उन्होंने पूछा, आप लोगों में से कोई बेअे सरिफ़ (या'नी दीनार, दिरहम, अशरफ़ी वगैरह बदलने का काम) करता है। तलहा ने कहा कि मैं करता हूँ, लेकिन उस वक़्त कर सकूँगा जबकि हमारा ख़ज़ान्ची गा़बा से आ जाएगा। सुफ़यान ने बयान किया कि जुहरी से हमने इसी तरह हदीष याद की थी इसमें कोई ज़्यादाती नहीं थी। फिर उन्होने कहा कि मुझे मलिक बिन औस ने ख़बर दी कि उन्होंने इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना। वो रसूलुल्लाह (ﷺ) से नक़ल करते थे कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सोना, सोने के बदले में (ख़रीदना) सूद में दाख़िल है मगर ये कि नक़दा-नक़द हो। गेहूँ, गेहूँ के बदले में (ख़रीदना बेचना) सूद में दाख़िल है मगर ये कि नक़दा-नक़द हो। ख़जूर, ख़जूर के बदले में सूद है मगर ये कि नक़दा-नक़द हो। और जौ, जौ के बदले में सूद है मगर ये कि नक़दा-नक़द हो। (दीगर मक़ाम: 2170, 2174)

इस हदीष से ये निकला कि जौ और गेहूँ अलग अलग किस्में हैं। इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम अहमद (रह.) और तमाम अहले हदीष का यही क़ौल है।

**बाब 55 : ग़ल्ले को अपने क़ब्ज़े में लेने से पहले बेचना और ऐसी चीज़ को बेचना जो तेरे पास मौजूद नहीं**

**तशरीह:** बाब की हदीषों में उस चीज़ की बेअ की मुमानअत नहीं है जो बायेअ के पास न हो और शायद इमाम बुखारी (रह.) ने उसको इस तरह निकाल लिया कि जब क़ब्ज़े से पहले बेचना दुस्त न हुआ तो जो चीज़ अपने पास न हो उसका भी बेचना दुस्त न होगा और इस बाब में एक सरीह हदीष मरवी है जिसको अह्मद बे सुनन ने हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) से निकाला, कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उस चीज़ को मत बेचो जो तेरे पास न हो। और शायद ये हदीष हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की शर्त पर न होगी, इस वजह से उसको न ला सके। (वहीदी)

2135. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा जो कुछ हमने अम्र बिन दीनार से (सुनकर) याद रखा है (वो ये है कि) उन्होंने तारुस से सुना, वो कहते थे कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) को ये फ़र्माते हुए

سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ اشْتَرَعَ طَعَامًا فَلَا يَبِعُهُ حَتَّى يَقْبِضَهُ)). [راجع: ٢١٢٤]

٢١٣٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَزَنَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ كَانَ عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ يُحَدِّثُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ أَنَّهُ قَالَ: ((مَنْ عَيْدَهُ صَرَفَ؟ فَقَالَ طَلَحَةُ: أَنَا، حَتَّى يَجِيءَ خَازِنُنَا مِنَ الْغَابَةِ. قَالَ سُفْيَانُ هُوَ الَّذِي حَفِظْنَاهُ مِنَ الزُّهْرِيِّ لَيْسَ فِيهِ زِيَادَةٌ، فَقَالَ: أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَوْسٍ أَنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُخْبِرُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الَّتِيبُ بِالْوَرَقِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالَّتِيبُ بِالْمَرْبِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالْتَمَرُ بِالْتَمَرِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالشَّجِيرُ بِالشَّجِيرِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ)). [طرفاه في: ٢١٧٠، ٢١٧٤].

٥٥- بَابُ بَيْعِ الطَّعَامِ قَبْلَ أَنْ يَقْبِضَ ، وَيَبِعَ مَا لَيْسَ عِنْدَكَ ،

٢١٣٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: الَّذِي حَفِظْنَاهُ مِنْ عَمْرُو بْنِ دِينَارٍ سَمِعَ طَارُوسًا يَقُولُ:



सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने जिस चीज़ से मना किया था, वो उस गल्ले की बेअ थी जिस पर अभी क़ब्ज़ा न किया गया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं तो तमाम चीज़ों को उसी के हुक्म में समझता हूँ।

(राजेअ : 2132)

या'नी कि कोई भी चीज़ जब खरीदी जाए तो क़ब्ज़ा करने से पहले उसे न बेचा जाए।

2136. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख्स भी जब गल्ला खरीदे तो जब तक उसे पूरी तरह अपने क़ब्ज़े में न ले ले, न बेचे। इस्माईल ने ये ज़्यादती की है कि जो शख्स कोई गल्ला खरीदे तो उस पर क़ब्ज़ा करने से पहले न बेचे।

(राजेअ : 2124)

बाब 56 : जो शख्स गल्ले का ढेर बिन मापे तौले खरीदे वो जब तक उसको अपने ठिकाने न लाए, किसी के हाथ न बेचे और इसके खिलाफ़ करने वाले की सज़ा का बयान

2137. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के अहदे मुबारक में देखा। कि लोगों को उस पर तम्बीह की जाती जब वो गल्ले का ढेर खरीद करके अपने ठिकाने पर लाने से पहले ही उसको बेच डालते। (दीगर मक़ाम : 2256, 3843)

**तशरीह :** हदीष से ये निकला कि हाकिमे इस्लाम बेअे फ़ासिद (अवैध सौदों) पर सज़ा दे सकता है। इमाम मालिक का मज़हब ये है कि जो चीज़ अंदाज़े से बिन माप-तौल खरीदी जाए उसको क़ब्ज़े में लेने से पहले बेच सकता है। इस हदीष से उनका रद्द होता है।

बाब 57 : अगर किसी शख्स ने कुछ अस्बाब या एक जानवर खरीदा और उसको बायेअ ही के

سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((أَمَّا الَّذِي نَهَى عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ فَهُوَ الطَّعَامُ أَنْ يَبَاعَ حَتَّى يَقْبُضَ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَلَا أَحْسِبُ كُلَّ شَيْءٍ إِلَّا مِثْلَهُ)).

[راجع: ٢١٣٢]

٢١٣٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ ابْتَاعَ طَعَامًا فَلَا يَبِيعُهُ حَتَّى يَسْتَوْفِيَهُ)). زَادَ إِسْمَاعِيلُ: ((مَنْ ابْتَاعَ طَعَامًا فَلَا يَبِيعُهُ حَتَّى يَقْبُضَهُ)). [راجع: ٢١٢٤]

٥٦- بَابُ مَنْ رَأَى إِذَا اشْتَرَى طَعَامًا جَزَافًا أَنْ لَا يَبِيعَهُ حَتَّى يُؤْوِيَهُ إِلَى رَحْلِهِ ، وَالْأَذْبُ فِي ذَلِكَ

٢١٣٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَقَدْ رَأَيْتُ النَّاسَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَتَاْعُونَ طَرَفَاهُ فِي : ٢٢٥٦، ٣٨٤٣)).

٥٧- بَابُ إِذَا اشْتَرَى مَتَاعًا أَوْ ذَابَةً

पास रखवा दिया और वो अस्बाब तल्फ़ हो गया या जानवर मर गया और अभी मुशतरी ने उस पर क़ब्ज़ा नहीं किया था

और इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा, बेअ के वक़्त जो माल ज़िन्दा था और बेअ में शरीक था। वो अगर तल्फ़ हो गया तो ख़रीददार पर पड़ेगा। (बायेअ उसका तावान न देगा)

2138. हमसे फ़र्वा बिन अबी मगराअ ने बयान किया, कहा कि हमको अली बिन मुस्हिर ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके बाप ने, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ऐसे दिन (मक्की ज़िन्दगी में) बहुत ही कम आए जिनमें नबी करीम (ﷺ) सुबह व शाम में किसी न किसी वक़्त अबूबक्र (रज़ि.) के घर तशरीफ़ न लाए हों। फिर जब आप (ﷺ) को मदीना की तरफ़ हिज्रत की इजाज़त दी गई। तो हमारी घबराहट का सबब ये हुआ कि आप (मअमूल के खिलाफ अघानक) जुहर के वक़्त हमारे घर तशरीफ़ लाए। जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को आप (ﷺ) की आमद की ख़बर मिली तो उन्होंने भी यही कहा कि नबी करीम (ﷺ) इस वक़्त हमारे यहाँ कोई नई बात पेश आने ही की वजह से तशरीफ़ लाए हैं। जब आप (ﷺ) अबूबक्र (रज़ि.) के पास पहुँचे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि इस वक़्त जो लोग तुम्हारे पास हों उन्हें हटा दो। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यहाँ तो झिफ़ मेरी यही दो बेटीयों हैं या'नी आइशा और अस्मा (रज़ि.)। अब आपने फ़र्माया, कि तुम्हें मा'लूम भी है मुझे तो यहाँ से निकलने की इजाज़त मिल गई है। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, मेरे पास दो ऊँटनियाँ हैं जिन्हें मैंने निकलने ही के लिये तैयार कर रखा था। आप उनमें से एक ले लीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा, कीमत के बदले में, मैंने एक ऊँटनी ले ली। (राजेअ : 476)

فَوَضَعَهُ عِنْدَ النَّائِعِ، أَوْ مَاتَ قَبْلَ أَنْ يُقْبِضَ

وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: مَا أَذْرَكْتَ الصَّفْقَةَ حَتَّىٰ مَجْمُوعًا فَهُوَ مِنَ الْمُبْتَاعِ.

2138- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ قَالَ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَقُلْ يَوْمَ كَانَ يَأْتِي عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، إِلَّا يَأْتِي فِيهِ تَبَتُّ أَبِي بَكْرٍ أَخَذَ طَرَفِي النَّهَارَ، فَلَمَّا أُذِنَ لَهُ فِي الْخُرُوجِ إِلَى الْمَدِينَةِ لَمْ يَرُغْنَا إِلَّا وَقَدْ أَنَا ظَهَرْنَا، فَخَبَّرَ بِهِ أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: مَا جَاءَنَا النَّبِيُّ ﷺ فِي هَذِهِ السَّاعَةِ إِلَّا لِأَمْرٍ حَدَّثَ فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ قَالَ لِأَبِي بَكْرٍ: أَخْرِجْ مَنْ عِنْدَكَ. قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّمَا هُمَا ابْنَتَايَ، يَغْنِي عَائِشَةُ وَأَسْمَاءُ. قَالَ: أَشْعُرْتُ أَنَّهُ قَدْ أُذِنَ لِي فِي الْخُرُوجِ؟ قَالَ: الصُّحْبَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: الصُّحْبَةُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ عِنْدِي نَاقَتَيْنِ أَغْدَدْتُهُمَا لِلْخُرُوجِ، فَخُذْ إِحْدَاهُمَا. قَالَ: قَدْ أَخَذْتُهَا بِالنَّعْمِ)).

[راجع: 476]

हदीष से निकला कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) से ऊँटनी मोल लेकर उन ही के पास रखवा दी, तो बाब का ये मतलब कि कोई चीज़ ख़रीद करके बायेअ (बेचने वाले) के पास रखवा देना इससे प्राबित हुआ।

बाब 58 : कोई मुसलमान अपने किसी मुसलमान भाई की बेअ में दख़लअंदाज़ी न करे और अपने

٥٨- بَابُ لَا يَبِيعُ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ، وَلَا يَسُومُ عَلَى سَوْمِ أَخِيهِ، حَتَّىٰ

भाई के भाव लगाते वक़्त उसके भाव को न  
बिगाड़े जब तक वो इजाज़त न दे या छोड़ न दे

يَاذَن لَّهُ أَوْ يَتْرُكْ

**तशरीह:** या'नी पहला बायेअ (बेचने वाला) अगर इजाज़त दे दे कि तुम भी अपना माल इस ख़रीददार को बतलाओ, बेचो तो बेचना दुरुस्त है। इसी तरह अगर पहला ख़रीददार उस चीज़ को छोड़कर चला जाए न ख़रीदे तो दूसरे को उसका ख़रीदना दुरुस्त है वरना हराम है। इमाम औज़ाई ने कहा ये अमर मुसलमान भाई के लिये खास है और जुम्हूर ने इसको आम रखा है क्योंकि ये अमर अख़लाक से दूर है कि एक शख्स अपना सामान बेच रहा है या कोई शख्स कुछ ख़रीद रहा है, हम बीच में जा कूदें और उसका फ़ायदा न होने दें।

2139. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शख्स अपने भाई की ख़रीद व फ़रोख्त में दख़ल अंदाज़ी न करे।

(दीगर मक़ाम : 3165, 5142)

2140. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया कि कोई शहरी किसी देहाती का माल व अस्बाब बेचे और ये कि कोई (सामान ख़रीदने की निय्यत के बग़ैर दूसरे असल ख़रीददारों से) बढ़कर बोली न दे। कोई शख्स (किसी औरत को) दूसरे के पैग़ामे निकाह होते हुए अपना पैग़ाम न भेजे। और कोई औरत अपनी किसी दीनी बहन को इस निय्यत से तलाक़ न दिलवाए कि उसके हिस्से को खुद हासिल कर ले।

(दीगर मक़ाम : 2148, 2150, 2151, 2160, 2162, 2723, 2728, 5152, 6601)

٢١٣٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يَبِيعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ)).

[طرفاه في : ٣١٦٥, ٥١٤٢]

٢١٤٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَبِيعَ حَاضِرٌ لِبَادٍ وَلَا تَنَاجَشُوا. وَلَا يَبِيعَ الرَّجُلُ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ. وَلَا يَخْطُبُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ. وَلَا تَسْأَلُ الْمَرْأَةُ طَلَاقَ أَخِيهَا لِنِكَاحٍ مَا فِي إِبَائِهَا)).

[أطرافه في : ٢١٤٨, ٢١٥٠, ٢١٥١]

٢١٦٠, ٢١٦٢, ٢٧٢٣, ٢٧٢٨

[٥١٤٤, ٥١٥٢, ٦٦٠١]

**तशरीह:** या'नी बाहर वाले जो ग़ल्ला या अश्याअ बाहर से लाते हैं, वो अक़र बस्ती वालों के हाथ सस्ता बेचकर घरों को चले जाते हैं। अब कोई शहर वाला उनको बहकाए, और कहे अभी न बेचो, ये माल मेरे सुपुर्द कर दो, मैं इसको महंगा बेच दूँगा। तो इससे मना किया, क्योंकि ये बस्ती वालों को नुक़सान पहुँचाना है। उसी तरह कुछ लोग महज़ भाव बिगाड़ने के लिये बोली चढ़ा देते हैं और उनकी निय्यत ख़रीदने की नहीं होती। यह सख़्त गुनाह है अपने दूसरे भाई को नुक़सान पहुँचाना है। इसी तरह एक औरत के लिये किसी मर्द ने पैग़ामे निकाह दिया है तो कोई दूसरा उसको पैग़ाम न दे कि ये भी अपने भाई की हक़ तल्फ़ी है। इसी तरह कोई औरत किसी शादी शुदा मर्द से निकाह करना चाहती है, तो उसको ये जाइज़ नहीं कि उसकी पहली मौजूदा बीवी को तलाक़ दिलवाने की शर्त लगाए कि ये उस बहन की सख़्त हक़तल्फ़ी होगी। इस सू़त में वो औरत और मर्द

दोनों गुनहगार होंगे।

### बाब 59 : नीलाम करने का बयान

और अता ने कहा कि मैंने देखा लोग माले गनीमत के नीलाम करने में कोई हर्ज नहीं समझते थे।

2141. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें हुसैन मुकातिब ने खबर दी, उन्हें अता बिन अबी रखाह ने, और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि एक शाख्स ने अपना एक गुलाम अपने मरने के बाद की शर्त के साथ आज़ाद किया। लेकिन इत्तिफ़ाक़ से वो शाख्स मुफ़्लिस हो गया, तो नबी करीम (ﷺ) ने उसके गुलाम को लेकर फ़र्माया, कि उसे मुझसे कौन खरीदेगा। उस पर नुऐम बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उसे इतनी इतनी क़ीमत पर खरीद लिया। और आपने गुलाम उनके हवाले कर दिया।

(दीगर मक़ाम : 2230, 2321, 2403, 2415, 2534, 2716, 6947, 7186)

### 59- باب بیع المرایدة

وَقَالَ عَطَاءٌ: أَذْرَكْتُ النَّاسَ لَا يَزُونَ بَأْسًا بَيْعَ الْمَمَائِمِ لَمَنْ يَزِيدُ.

2141- حَدَّثَنَا بِشَرُّ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا الْحُسَيْنُ الْمَكْبِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَاحٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَجُلًا اغْتَنَى غُلَامًا لَهُ عَنْ ذُبُرٍ فَاحْتَاجَ فَآخَذَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ يَشْتَرِينِي مِنِّي؟)) فَاشْتَرَاهُ نَعْمٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بِكَذَا وَكَذَا، فَدَفَعَهُ إِلَيْهِ)).

[أطرافه في : 2230, 2321, 2403, 2415,

2534, 2716, 6947, 7186]

[7186]

**तशरीह :** नुऐम बिन अब्दुल्लाह ने आठ सौ दिरहम का लिया, जब आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, इसको कौन खरीदता है, तो ये नीलाम ही हुआ। और इस्माइली का ए' तिराज़ दफ़ा हो गया कि हदीष से नीलाम प्राबित नहीं होता, क्योंकि उसमें ये नहीं है कि लोगों ने मौल बढ़ाना शुरू किया, और मुदब्बर की बेअ का जवाज़ निकला, इमाम शाफ़िई (रह.) और हमारे इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) का भी यही क़ौल है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक मुदब्बर की बेअ दुरुस्त नहीं है। तफ़्सील आ रही है,

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, लम्मा अन तक़द्म फ़िल्बाबि क़बलहू अन्नह्यु अनिस्सूमि अराद अंघ्युबय्यिन मौजअत्तहरीमति मिन्हु व क़द औजहतुहू फ़िल्बाबिल्लज़ी क़बलहू व वरद फ़िल्बैइ फ़ीमन यजीदु हदीषु अनसिन अन्नहू (ﷺ) बाअ हिल्सन व क़दहन व क़ाल मंय्यशतरी हाज़लिल्हस बल्क़दह फ़क़ाल रज़ुलुन अख़ज्तुहुमा बिदिर्हिमिन फ़क़ाल मंय्युजीदु अला दिर्हिमिन फ़आताहू रज़ुलुन दिर्हिमैनि फ़बाअहुमा मिन्हु अख़रजहु अहमद व अस्हाबुस्सुननि मुतव्वलन व मुख़्तसरन वल्लफ़्तु लित्तिर्मिज़ी व क़ाल हसन व कानलमुसन्नफ़ि अशार बित्तर्जुमति इला तर्ज़िफ़िम्मा अख़रजहुल बज़ार मिन हदीषि सुपयान बिन वहब समिअतुन्नबिय्य (ﷺ) यन्हा अन बैइल्मुज़ायदति फ़इन्न फ़ी इस्नादिही इब्नि लहीआ व हुव ज़ईफ़ुन (फ़्तुल बारी)

चूँकि पिछले बाब में भाव पर भाव बढ़ाने से नहय गुजर चुकी है लिहाज़ा मुसन्नफ़ि (रह.) ने चाहा कि हर्मत की वज़ाहत की जाए और मैं उससे पहले बाब में इसकी वज़ाहत कर चुका हूँ। यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने नीलाम का बयान शुरू किया और उसका जवाज़ प्राबित किया। और उस बेअ के बारे में अनस (रज़ि.) से एक और हदीष भी मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक पुराना टाट और एक प्याला नीलाम किया और एक आदमी ने उनकी बोली एक दिरहम लगाई। आप (ﷺ) के दोबारा ऐलान पर दूसरे आदमी ने दो दिरहमों की बोली लगा दी और आप (ﷺ) ने दोनों चीज़ें उसको दे दीं। हज़रत इमाम बुखारी

(रह.) ने यहाँ इशारा किया कि मुस्नद बज़ार में सुफयान बिन वहब की रिवायत से जो हदीष मौजूद है जिसमें नीलाम की बेअ से मुमानअत वारिद है वो हदीष जईफ है। उसकी सनद में इब्ने लहीआ है जो जईफ हैं।

हज़रत अत्ता बिन अबी रिबाह मशहूर तरीन ताबेओ हैं। कुन्नियत अबू मुहम्मद है जलिलुल कद्र फकीह हैं। आखिर उमर में नाबीना हो गए थे। इमाम औज़ाई का कौल है कि उनकी वफ़ात के वक़्त हर शख़्स की जुबान पर उनका ज़िक्र खैर था और सब ही लोग उनसे खुश थे। इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने इल्म के ख़जानों का मालिक हज़रत अत्ता बिन अबी रिबाह को बनाया जो हब्शी थे। इल्म अल्लाह की दीन है जिसे चाहे वो दे दे। सलमा बिन कुहैल ने कहा, अत्ता बिन अबी रिबाह, तारुस, मुजाहिद रहिमहुमुल्लाह वो बुजुर्ग हैं जिनके इल्म की गर्ज़ व ग़ायत सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात थी। 88 साल की उम्र में 115 हिजरी में वफ़ात पाई। रहिमहुल्लाह!

## बाब 60 : नज्श या'नी धोखा देने के लिये क्रीमत बढ़ाना कैसा है? और कुछ ने कहा ये बेअ ही जाइज़ नहीं

और इब्ने अबी औफ़ा ने कहा कि नज्श सूदाख़ोर और ख़ाइन है। और नज्श फ़रेब है, ख़िलाफ़े शरअ बिलकुल दुरुस्त नहीं। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़रेब दोज़ख़ में ले जाएगा और जो शख़्स ऐसा काम करेगा जिसका हुक्म हमने नहीं दिया तो वो मरदूद है।

**तशरीह:** धोखा की बेअ ये है कि मषलन परिन्दा हवा में उड़ रहा है या मछली दरिया में जा रही है या हिरण जंगल में भाग रहा है। इसको पकड़ने से पहले बेच डाले, उसी तरह उस गुलाम या लौण्डी को जो भाग गया हो। और उसी में दाख़िल है बेअ मअदूम और मज्हूल की और जिसकी तस्लीम पर कुदरत नहीं। और हब्बुल हब्ला की बेअ जाहिलियत में मुरव्वज (प्रचलित) थी, उसकी तप्सीर आगे खुद हदीष में आ रही है। बाब की हदीष में धोखा की बेअ का ज़िक्र नहीं है। मगर इमाम बुखारी (रज़ि.) ने उसको हब्बुल हिबा की मुमानअत से निकाल लिया। इसलिये कि वो भी धोखे की एक किस्म है। मुम्किन है कि ऊँटनी न जने या उसका जो बच्चा पैदा हो वो न जने। और शायद इमाम बुखारी (रह.) ने उस हदीष की तरफ़ इशारा किया जिसको इमाम अहमद ने इब्ने मसऊद (रज़ि.) और इब्ने उमर (रज़ि.) से और मुस्लिम ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और इब्ने माजा ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से और तिबरानी ने सहल (रज़ि.) से रिवायत किया है। उसमें साफ़ ये है कि औहज़रत (ﷺ) ने धोखे की बेअ से मना फ़र्माया। कुछ ने हब्बुल हब्ला की तप्सीर ये की है कि किसी ऊँटनी के हमल के हमल को फ़िलहाल बेच डाले मषलन यूँ कहे कि इस ऊँटनी के पेट में जो बच्चा है। उसके पेट के बच्चे को मैंने तेरे हाथ बेचा। ये भी मना है। इसलिये कि वो मअदूम और मज्हूल की बेअ है और बेअ ग़रर या'नी धोखे की बेअ में दाख़िल है। (वहीदी)

2142. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अम्बी ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने, नज्श से मना फ़र्माया था।

(दीगर मक्राम : 6963)

**तशरीह:** नज्श ख़ास तौर पर शिकार को भड़काने के मा'नी में आता है। यहाँ एक ख़ास मफ़हूमे शरई के तहत मुस्तअमल है। वो मफ़हूम ये कि कुछ ताजिर अपने ग़लत बयानी करने वाले एजेन्ट मुकर्रर कर देते हैं जिनका काम यही होता

٦٠- بَابُ النَّجْشِ. وَمَنْ قَالَ : لَا

يَجُوزُ ذَلِكَ النَّجْشُ

وَقَالَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى : ((النَّجْشُ أَكْلٌ وَبَا حَالَيْنِ)). وَهُوَ جِدَاعٌ بَاطِلٌ لَا يَجُوزُ.

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((الْعَدِيَّةُ فِي النَّارِ، وَمَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ زَوْرٌ)).

٢١٤٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ قَالَ

حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ

اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ، عَنْ

النَّجْشِ)). [طَرَفُهُ فِي : ٦٩٦٣].

है कि हर मुम्किन सूरत में खरीदने वालों को धोखा देकर ज्यादा कीमत वसूल कराएँ। ऐसे ऐजेन्ट कुछ दफा ग्राहक की मौजूदगी में उस चीज़ का दाम बढ़ाकर खरीददार बनते हैं। हालाँकि वो खरीददार नहीं हैं। ग्राहक धोखा में आकर बड़े हुए दामों पर वो चीज़ खरीद लेता है। अल्लार्ज बेअ में धोखा फ़रेब की जुम्ला सूरतें सख़्ततरीन गुनाह कबीरा का दर्जा रखती हैं। शरीअत ने सख़्ती से उनको रोका है।

### बाब 61 : धोखे की बेअ और हमल की बेअ का बयान

### ٦١- بَابُ بَيْعِ الْفَرَرِ ، وَحَبْلِ الْحَبَلَةِ

2143. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमल के हमल की बेअ से मना फ़र्माया। इस बेअ का तरीका जाहिलियत में राइज था। एक शख्स एक ऊँट या ऊँटनी खरीदता और कीमत देने की मीआद ये मुक़र्रर करता कि एक ऊँटनी जने फिर उसके पेट की ऊँटनी बड़ी होकर जने।

٢١٤٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ بَيْعِ حَبْلِ الْحَبَلَةِ ، وَكَانَ بَيْعًا يَبَايَعُهُ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ : كَانَ الرَّجُلُ يَتَّعُ الْجُرُوزَ إِلَى أَنْ تَتَجَّ النَّاقَةُ، ثُمَّ تَتَجَّ الْيَمَى فِي بَطْنِهَا)).

**तशरीह:** इस्लाम से पहले अरब में ये दस्तूर भी था कि हामिला ऊँटनी के हमल को बेच दिया जाता था। उस बेअ को धोखे की बेअ क़रार देकर मना किया गया। हदीषे बाला का ये मतलब भी बयान किया गया है कि किसी क़र्ज वग़ैरह की मुदत हामिला ऊँटनी के हमल के पैदा होने फिर उस पर पैदा होने वाली ऊँटनी के बच्चे जनने की मुदत मुक़र्रर की जाती थी, ये भी एक धोखे की बेअ थी, इसलिये इससे भी मना किया गया।

### बाब 62 : बेअे मुलामसः का बयान और अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया है

### ٦٢- بَابُ بَيْعِ الْمَلَامَسَةِ. قَالَ

أَنَسٌ : نَهَى عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ

2144. हमसे सईद बिन इफ़ेर ने बयान किया, कहा कि मुइज़से अक़ील ने बयान किया, कहा कि मुइज़से अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कि मुइज़े आमिर बिन सईद ने ख़बर दी और उन्हें अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुनाबज़ा की बेअ से मना फ़र्माया था। उसका तरीका ये था कि एक आदमी बेचने के लिये अपना कपड़ा दूसरे शख्स की तरफ़ (जो खरीददार होता) फेंकता और उससे पहले कि वो उसे उलटे पलटे या उसकी तरफ़ देखे (सिर्फ़ फेंकने की वजह से वो बेअ लाज़िम समझी जाती थी) इसी तरह आँहज़रत (ﷺ) ने बेअे मुलामसा से भी मना किया। उसका ये

٢١٤٤- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْمُنَابَذَةِ، وَهِيَ طَرَحُ الرَّجُلِ ثَوْبَهُ بِالتَّبَعِ إِلَى رَجُلٍ قَبْلَ أَنْ يَقْلِبَهُ أَوْ يَنْظُرَ إِلَيْهِ. وَنَهَى عَنِ الْمَلَامَسَةِ لِمَسُ الثَّوْبِ لَا يَنْظُرُ إِلَيْهِ)). (راجع: ٣١٧)

तरीक़ा था कि (खरीदने वाला) कपड़े को बग़ैर देखे सिर्फ़ उसे छू देता (और उसी से बेअ लाज़िम हो जाती थी उसे भी धोखा की बेअ क़रार दिया गया।)

2145. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वहहाब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि दो तरह के लिबास पहनने मना हैं। कि कोई आदमी एक ही कपड़े में गोटा मारकर बैठे, फिर उसे मूँह पर उठाकर डाल ले (और शर्मगाह खुली रहे) और दो तरह की बेअ से मना किया। एक बेअ मुलामसा से और दूसरी बेअ मुनाबज़ा से।

(राजेअ: 367)

**तशरीह:** इस रिवायत में दूसरे लिबास का ज़िक्र नहीं किया। वो इस्तिमाले स़म्मा है जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है। या'नी एक ही कपड़ा सारे बदन पर इस तरह लपेटना कि हाथ वगैरह कुछ बाहर न निकल सकें। निसाई की रिवायत में बेअ मुलामसा की तफ़सीर यँ मज़कूर है कि एक आदमी दूसरे से कहे मैं अपना कपड़ा तेरे कपड़े के बदले बेचता हूँ और कोई दूसरे का कपड़ा न देखे सिर्फ़ छुए। और बेअ मुनाबज़ा ये है कि मुशतरी और बायेअ में ये ठहरे कि जो मेरे पास है वो मैं तेरी तरफ़ फेंक दूँगा और जो तेरे पास वो मेरी तरफ़ फेंक दे। बस उसी शर्त पर बेअ हो जाए और किसी को मा'लूम न हो कि दूसरे के पास कितना और क्या माल है। (वहीदी)

**बाब 63 : बेअ मुनाबज़ा का बयान और अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने उससे मना किया है**

2146. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन यह्या बिन हब्बान और अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बेअ मुलामसा और बेअ मुनाबज़ा से मना फ़र्माया।

(राजेअ: 367)

2147. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, उनसे अब्दुल आलाने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे अत्ता बिन यज़ीद ने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने दो तरह के लिबास से मना फ़र्माया, और दो तरह की बेअ, मुलामसा और मुनाबज़ा से मना फ़र्माया।

٢١٤٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى عَنْ لَيْسَتَيْنِ: أَنْ يَخْتَبِيَ الرَّجُلُ فِي الثَّوبِ الْوَاحِدِ، ثُمَّ يَرْفَعَهُ عَلَى مَنْكِبِهِ. وَعَنْ بَيْعَتَيْنِ: اللَّمَّاسِ، وَالنَّابَذِ)).

[راجع: ٣٦٨]

٦٣- بَابُ بَيْعِ الْمُنَابَذَةِ

وَقَالَ أَنَسٌ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْهُ.

٢١٤٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانٍ، وَعَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْمُلَامَسَةِ وَالْمُنَابَذَةِ)).

[راجع: ٣٦٧]

٢١٤٧- حَدَّثَنَا عِيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ لَيْسَتَيْنِ وَعَنْ بَيْعَتَيْنِ: الْمُلَامَسَةِ

(राजेअ 367)

وَالْمَنَابِدُ)). [راجع: 317]

**तशरीह:** गुजिस्ता से पेवस्ता हदीष के ज़ेल में गुजर चुकी है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस हदीष को यहाँ इसलिये लाए हैं कि उसमें बेअे मुलामसः और बेअे मुनाबिज़ा की मुमानअत मज़कूर है।

## बाब 64 : ऊँट या बकरी या गाय के थन में दूध जमा कर रखना बायेअ को मना है

इसी तरह हर जानदार के थन में (ताकि देखने वाला ज़्यादा दूध देने वाला जानवर समझकर उसे ज़्यादा क्रीमत पर खरीदे) और मिम्रात वो जानवर है कि जिसका दूध थन में रोक लिया गया हो, उसमें जमा करने के लिये और कई दिनों तक उसे निकाला न गया हो, लफ़ज़ तस्रिया असल में पानी रोकने के मा'नी में बोला जाता है। उसी से ये इस्ते'माल है, सरयतुल माआ (या'नी मैंने पानी को रोक रखा)

2148. हमसे यह्या बिन बुकेर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने, उनसे अब्दुलहमान बिन हुर्मुज़ अअरज ने, उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (बेचने के लिये) ऊँटनी और बकरी के थनों में दूध को रोककर न रखो। अगर किसी ने (धोखा में आकर) कोई ऐसा जानवर खरीद लिया तो उसे दूध दुहने के बाद दोनों इखितयारात हैं। चाहे तो जानवर को रख ले, और चाहे तो वापस कर दे और एक साअ खजूर उसके साथ दूध के बदल दे दो। अबू सालेह, मुजाहिद, वलीद बिन रिबाह और मूसा बिन यसार से बवास्ता अबू हुदैरह (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) से रिवायत एक साअ खजूर ही की है। कुछ रावियों ने इब्ने सीरीन से एक साअ गल्ला की रिवायत की है। और ये कि खरीददार को (सूरते मज़कूरा में) तीन दिन का इखितयार होगा। अगरचे कुछ दूसरे रावियों ने इब्ने सीरीन ही से एक साअ खजूर की भी रिवायत की है लेकिन तीन दिन के इखितयार का ज़िक्र नहीं किया। और (तावान में) खजूर देने की रिवायत ही ज़्यादा है।

(राजेअ : 2140)

## ٦٤- بَابُ النَّهْيِ لِلْبَّائِعِ أَنْ لَا يُخْفَلَ الْإِبِلَ وَالْبَقَرُ وَالنَّمَمُ

وَكُلُّ مُحَفَّلَةٍ وَالْمَصْرَاةِ الَّتِي صُرِّيَ كَيْفُهَا وَخَفِنَ فِيهِ وَجُمِعَ فَلَمْ يُخْلَبْ أَبَاقًا وَأَحْمَلُ التَّصْرِيفِ حَتَّى الْمَاءِ ، يُقَالُ مِنْهُ: صُرِّتِ الْمَاءِ.

٢١٤٨- حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ عَنِ الْأَعْرَجِ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : (( لَا تُصَرُّوا الْإِبِلَ وَالنَّمَمَ ، فَمَنْ اتَّاعَهَا بَعْدَ فَإِنَّهُ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ بَعْدَ أَنْ يُحْلَبَهَا : إِنْ شَاءَ أَمْسَكَ وَإِنْ شَاءَ رَدَّهَا وَصَاعَ تَمْرٍ)). وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي صَالِحٍ وَمُجَاهِدٍ وَالْوَلِيدِ بْنِ رَبَاحٍ وَمُوسَى بْنُ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : ((صَاعَ تَمْرٍ)). وَقَالَ بَعْضُهُمْ عَنْ ابْنِ سِيرِينَ ، صَاعًا مِنْ طَعَامٍ وَمَوْ بِالْخِيَارِ فَلَا تَأْ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ عَنْ ابْنِ سِيرِينَ : ((صَاعًا مِنْ تَمْرٍ)) وَلَمْ يَذْكُرْ ((فَلَاتًا)) وَالْقَوْمُ أَكْثَرُ.

[راجع: 2140]

**तशरीह:** लौण्डी हो या गधी उनके दूध के बदल एक साअ न दिया जाएगा और हुनाबिला ने गधी के दूध के बदले साअ देना लाज़िम नहीं किया लेकिन लौण्डी में उन्होंने इखितलाफ़ किया है। और जुम्हूर अहले इल्म, सहाबा और ताबेअीन



और मुज्तहिदीन ने बाब की हदीष पर अमल किया है कि ऐसी सूरत में मुशतरी चाहे तो वो जानवर फेर दे और एक साअ खजूर दूध के बदल दे दे। ख्वाह दूध बहुत हो या कम। और हन्फिया ने कयास पर अमल करके इस सहीह का खिलाफ किया है और कहते क्या हैं कि अबू हुरैरह (रज़ि.) फ़कीह न थे। इसलिये उनकी रिवायत कयास के खिलाफ़ कुबूल नहीं हो सकती और ये खुली धींगा मश्ती है। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने औहज़रत (ﷺ) से हुक्म नकल किया है और लुत्फ़ ये है कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से जिनको हन्फ़ी फ़ुक्हा और इज्तिहाद में इमाम जानते हैं, उनसे भी ऐसा ही मन्कूल है। और शायद हन्फ़िया को इल्ज़ाम देने के लिये इमाम बुखारी (रह.) ने उसके बाद अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की रिवायत नकल की है। और खुद हन्फ़िया ने बहुत से मुकामों में हदीष से कयासे जली को तर्क किया है। जैसे वुज़ूबिन नबीज़ और क़हक़हे में फिर यहाँ क्यूँ तर्क नहीं करते और इमाम इब्ने क़य्यिम ने इस मसले के मा लहू व मा अलैहि पर पूरी-पूरी रोशनी डालते हुए हन्फ़िया पर काफ़ी रद्द किया है।

2149. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने बाप से सुना। वो कहते थे कि हमसे अबू इम्रान ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि जो शाख़्स मुसर्रात, बकरी ख़रीदे और उसे वापस करना चाहे तो (असल मालिक को) उसके साथ एक साअ भी दे। और नबी करीम (ﷺ) ने क़ाफ़िला वालों से (जो माल बेचने को लाएँ) आगे बढ़कर ख़रीदने से मना फ़र्माया है। (दीगर मक़ाम: 2124)

2150. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज्जिनाद ने, उन्हें अअरज ने, और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, (तिजारती) क़ाफ़िलों की पेशवाई (उनका सामान शहर पहुँचने से पहले ही ख़रीद लेने की गर्ज़ से) न करो। एक शाख़्स किसी दूसरे की बेअ पर बेअ न करे और कोई नज्श न करे और कोई शहरी बदवी का माल न बेचे और बकरी के थन में दूध न रोके। लेकिन अगर कोई इस (आख़िरी) सूरत में जानवर ख़रीद ले तो उसे दुहने के बाद दोनों तरफ़ के इख़ितयारात हैं। अगर वो उस बेअ पर राज़ी है तो जानवर को रोक सकता है। और अगर वो राज़ी नहीं तो एक साअ खजूर उसके साथ देकर उसे वापस कर दे।

(राजेअ: 2140)

बाब 65 : ख़रीददार अगर चाहे तो मुसर्रात को वापस कर सकता है लेकिन उसके दूध के बदले में (जो ख़रीददार ने इस्ते'माल किया है) एक साअ खजूर दे दे

2151. हमसे मुहम्मद बिन अमर ने बयान किया, कहा कि हमसे

٢١٤٩ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَنْ اشْتَرَى شَاةً مُحَقَّلَةً لَرَدِّهَا فَلْيَرُدَّ مَعَهَا صَاعًا. وَنَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُلْقَى الْبُيُوتُ)). [طرفه ب: ٢١٦٤].

٢١٥٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تَلْقُوا الرُّكْبَانَ، وَلَا يَبِيعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، وَلَا تَنَاجَشُوا، وَلَا يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ، وَلَا تُصَرُّوا الْقَنَمَ، وَمَنْ ابْتَاعَهَا فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ بَعْدَ أَنْ يَخْتَلِبَهَا: إِنْ رَضِيَهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ سَخِطَهَا رَدَّهَا وَصَاعًا مِنْ تَمْرٍ)). [راجع: ٢١٤٠]

٦٥ - بَابُ إِنْ شَاءَ رَدُّ الْمُصْرَاةِ، وَلَوْ خَلَّتْهَا صَاعٌ مِنْ تَمْرٍ

٢١٥١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ

मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने खबर दी, कहा कि मुझे ज़ियाद ने खबर दी कि अब्दुर्रहमान बिन जैद के गुलाम प्राबित ने उन्हें खबर दी, कि उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये कहते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख्स ने मुसरीत बकरी खरीदी और उसे दूहा। तो अगर वो इस मामले पर राज़ी है तो उसे अपने लिये रोक ले और अगर राज़ी नहीं है तो (वापस कर दे और) उसके दूध के बदले में एक साअ खजूर दे दो (राजेअ : 2140)

### बाब 66 : ज़ानी गुलाम की बेअ का बयान

और शुरैह (रह.) ने कहा कि अगर खरीददार चाहे तो ज़िना के ऐब की वजह से ऐसे लौण्डी गुलाम को वापस कर सकता है। क्योंकि ये भी एक ऐब है। शुरैह की रिवायत को सईद बिन मंसूर ने वस्ल किया। बाब की हदीष में गुलाम का ज़िक्र नहीं, मगर इमाम बुखारी (रह.) ने गुलाम को लौण्डी पर क़यास किया और हन्फिया के नज़दीक लौण्डी ज़िना से फेरी जा सकती है लेकिन गुलाम नहीं फेरा जा सकता।

2152. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुझे सईद मक्बरी ने खबर दी, उनसे उनके बाप ने, और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये कहते सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब कोई बांदी ज़िना करे और उसके ज़िना का पुबूत (शरई) मिल जाए तो उसे कोड़े लगवाए, फिर उसको लअनत मलामत न करे। उसके बाद अगर फिर वो ज़िना करे तो फिर कोड़े लगाए मगर फिर लअनत मलामत न करे। फिर अगर तीसरी बार भी ज़िना करे तो उसे बेच दे चाहे बाल की एक रस्सी के बदले ही में क्यों न हो।

(दीगर मक्लाम : 2153, 2233, 2234, 2555, 6837, 6839)

2153, 54. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और जैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) से पूछा गया कि अगर कोई ग़ैर शादी शुदा बांदी ज़िना करे (तो उसका क्या हुक्म है) आपने फ़र्माया कि उसे कोड़े लगाओ। अगर फिर ज़िना

خَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدٌ أَنَّ ثَابِتًا مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ اشْتَرَى غَنَمًا مَصْرَاءً لَأَخْلَبَهَا، فَإِنْ رَحِمَهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ سَخِطَهَا فَلْيَحْلِبْهَا صَاعًا مِنْ تَمْرٍ)). [راجع: ٢١٤٠]

### ٦٦- بَابُ بَيْعِ الْعَبْدِ الزَّانِي

وَقَالَ شَرِيحٌ: إِنْ شَاءَ وَدَّ مِنَ الزَّانِي.

٢١٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا زَنَتِ الْأَمَةُ فَتَيْنَ زَيْنًا فَلْيَجْلِدْنَاهَا وَلَا يَتْرَبْ، ثُمَّ إِنْ زَنَتِ فَلْيَجْلِدْنَاهَا وَلَا يَتْرَبْ، ثُمَّ إِنْ زَنَتِ الثَّالِثَةَ فَلْيَبْعَهَا وَلَوْ يَخْلِبُ مِنْ شَعْفٍ)).

[أطرافه في : ٢١٥٣, ٢٢٣٣, ٢٢٣٤]

[٢٥٥٥, ٦٨٣٧, ٦٨٣٩]

٢١٥٤, ٢١٥٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سئلَ عَنِ الْأَمَةِ إِذَا زَنَتِ وَلَمْ تُحْمَلْ



वो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत करते थे कि हज़रत आइशा (रज़ि.), बरीरा (रज़ि.) की (जो बांदी थीं) क़ीमत लगा रही थीं (ताकि उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दें) कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़ के लिये (मस्जिद में) तशरीफ़ ले गए। फिर जब आप तशरीफ़ लाए तो आइशा (रज़ि.) ने कहा कि (बरीरा (रज़ि.) के मालिकों ने तो) अपने लिये विलाअ की शर्त के बग़ैर उन्हें बेचने से इंकार कर दिया है, उस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कि विलाअ तो उसी की होती है जो आज़ाद करे। मैंने नाफ़ेअ से पूछा कि बरीरा (रज़ि.) के शौहर आज़ाद थे या गुलाम, तो उन्होंने फ़र्माया कि मुझे मा'लूम नहीं। (दीगर मक़ाम : 2169, 2562, 6752, 6757, 6759)

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا :  
(أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا سَأَلَتْ  
رَبِّيَّ، فَخَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ، فَلَمَّا جَاءَ  
قَالَتْ: إِنَّهُمْ أَبَوْا أَنْ يَبْعُوهَا إِلَّا أَنْ  
يَشْتَرُوهَا الْوَلَاءُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّمَا  
الْوَلَاءُ يَمْنَنُ أَهْلَهُ)). قُلْتُ لِنَافِعٍ: خَرَأَ  
كَانَ زَوْجُهَا أَوْ عَبْدًا؟ فَقَالَ: مَا يُنْبِئُنِي.  
[أطروحه ن : ٢١٦٩، ٢٥٦٢، ٦٧٥٢، ٦٧٥٩]

यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है जिससे औरतों से ख़रीद व फ़रोख़्त करने का जवाज़ निकला।

**तशरीह:** इन दोनों अह्दादीष में हज़रत बरीरा (रज़ि.) की अपने मालिकों से मुकातबत का ज़िक्र है, या'नी गुलाम या लौण्डी अपनी मालिक से तै कर ले कि उतनी मुद्दत में वो इस क़दर रुपया या कोई ज़िंस बग़ैरह अदा करेगा और इस शर्त के पूरा करने के बाद वो आज़ाद हो जाएगा। तो अगर वो शर्त पूरी करदी गई अब वो आज़ाद हो गया। बरीरा (रज़ि.) ने भी अपने मालिकों से ऐसी ही सूरत में तै की थी। जिसका ज़िक्र उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से किया। जिस पर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एक मुश्त सारा रुपया अदा करने की पेशकश की। इस शर्त पर कि बरीरा (रज़ि.) की विलाअ हज़रत आइशा (रज़ि.) ही से क़ायम हो और मालिकों को उस बारे में कोई मुतालबा न रहे। विलाअ के मा'नी ये कि गुलाम आज़ाद होने के बाद भाई चारा का रिश्ता अपने साबिक़ा मालिक से क़ायम रखे। ख़ानदानी तौर पर उसी की तरफ़ मन्सूब रहे। यहाँ तक कि उसके मरने पर उसके तर्का का हक़दार भी उसका साबिक़ा मालिक ही हो। चुनौचे हज़रत आइशा (रज़ि.) की पेशकश को उन्होंने ने सिलसिले विलाअ के ख़त्म हो जाने के ख़तरे से मंज़ूर नहीं किया। जिस पर आइशा (रज़ि.) ने ये खुत्बा इशार्द फ़र्माकर इस मसले की वज़ाहत फ़र्माई, कि ये भाईचारागी तो उसके साथ क़ायम रहेगी जो उसे ख़रीदकर आज़ाद करेगा न साबिक़ा मालिक के साथ। चुनौचे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हज़रत बरीरा (रज़ि.) को ख़रीदा और आज़ाद कर दिया, और सिलसिले विलाअ साबिक़ा मालिक से तोड़कर हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ क़ायम कर दिया गया।

इस हदीष से बहुत से मसाले प्राबित होते हैं। जिनका इस्तिख़राज इमामुल फ़ुक्कहा वल मुहद्दिषीन हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी जामेअ अस्सहीह में जगह जगह किया है।

इमाम शौकानी (रह.) इस सिलसिले में मज़ीद वज़ाहत यूँ फ़र्माते हैं, अन्न नबिय्य (ﷺ) क़द कान आलमुन्नसि अन इश्तिरातल्वलाइ बातिलुन वशतहर ज़ालिक बिहैशु ला यख़फ़ी अला अहलि बरीरा फ़लम्मा अरादू अय्यशतरितू मा तक्रहम लहुमुल्डलमु बिबुतलानिही अत्लकल्अम्र मुरीदन बिही अत्तहदीद कक्रौलिही तज़ाला (इअमलू माशितुम) फ़कअन्नहू क़ाल इश्तरित लहुमुल्वलाअ फ़सयअलमून अन्न ज़ालिक ला यन्फ़उहुम व युअय्यिदु हाज़ा मा क़ालहू (ﷺ) ज़ालिक मा बाल रिजालुन यशतरितून शुरुतन (नैलुल औतार)

या'नी नबी करीम (ﷺ) ख़ूब जानते थे कि विलाअ की शर्त बातिल है। और ये उसूलन इस क़दर मुश्तहर हो चुका था कि अहले बरीरा से भी ये मख़फ़ी न था। फिर जब उन्होंने इस शर्त के बुल्लान को जानने के बावजूद उसकी इश्रात पर इसरार किया तो आइशा (रज़ि.) ने तहदीद के तौर पर मुल्लक अम्र फ़र्मा दिया कि बरीरा को ख़रीद लिया जाए, जैसा कि कुआनी आयत इअलमू मा शिअतुम (फ़ुस्सिलत : 40) में है कि तुम अमल करो जो चाहो। ये बतौर तहदीद फ़र्माया गया है। गोया

आपने फ़र्माया कि उनके लिये विलाअ की शर्त लगा लो वो अन्करीब जान लेंगे कि इस शर्त से उनको कुछ नफ़ा हासिल न होगा और इस मफ़हूम की ताईद आप (ﷺ) की इस इशार्द से होती है जो आप (ﷺ) ने फ़र्माया। कि लोगों का क्या हाल है वो ऐसी शर्तें लगाते हैं जो किताबुल्लाह से प्राबित नहीं हैं। पस ऐसी जुम्ला शुरुत बातिल हैं, ख्वाह उनको लगा भी लिया जाए मगर इस्लामी क़ानून की रू से उनका कोई मक़ाम नहीं है।

### बाब 67 : क्या कोई शहरी किसी देहाती का सामान किसी उज्रत के बग़ैर बेच सकता है?

और क्या उसकी मदद या उसकी ख़ैरख्वाही कर सकता है? नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब कोई शख्स अपने किसी से ख़ैर-ख्वाही चाहे तो उससे ख़ैर-ख्वाहाना मामला करना चाहिये। अज्ञा (रह.) ने इसकी इजाज़त दी है।

**तशरीह :** इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि हदीष में जो मुमानअत आई है कि बस्ती वाला बाहर वाले का माल न बेचे, इसका मतलब ये है कि उससे उज्रत लेकर न बेचे। अगर बतौर इम्दाद और ख़ैर-ख्वाही के उसका माल बेच दे तो मना नहीं है क्योंकि दूसरी हदीषों में मुसलमान की इम्दाद और ख़ैर-ख्वाही करने का हुक्म है।

2157. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे इस्माईल ने, उनसे कैस ने, उन्होंने जरीर (रज़ि.) से ये सुना, कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस बात की शहादत पर कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने और (अपने मुकर्ररा अमीर की बात) सुनने और उसकी इत्ताअत करने पर और हर मुसलमान के साथ ख़ैर-ख्वाही करने की बेअत की थी।

(राजेअ: 57)

٢١٥٧ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَرِيرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَايَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ، وَالنَّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ)).

[راجع: ٥٧]

ये हदीष किताबुल ईमान में भी गुज़र चुकी है। यहाँ इमाम बुखारी (रह.) ने उससे ये निकाला है कि जब हर मुसलमान की ख़ैर-ख्वाही का इसमें हुक्म है तो अगर बस्ती वाला बाहर वाले का माल बिला उज्रत बेच दे उसकी ख़ैर-ख्वाही करे तो प्रवाब होगा न कि गुनाह। अब इस हदीष की तावील ये होगी कि जिसमें उसकी मुमानअत आई है कि मुमानअत इस सूत्र में है जब उज्रत लेकर ऐसा करे। और बस्ती वालों को नुक़्सान पहुँचाने और अपना फ़ायदा करने की निव्यत हो, ये ज़ाहिर है कि इज़मल आमालु बिन्नियात और अगर महज़ ख़ैर-ख्वाही के लिये ऐसा हर रहा है तो जाइज़ है।

2158. हमसे सुलत बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (तिजारती) क़ाफ़िलों से आगे जाकर न मिला करो

٢١٥٨ - حَدَّثَنَا الصُّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا مَقْرَمٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ

(उनको मण्डी में आने दो) और कोई शहरी, किसी देहाती का सामान न बेचे। उन्होंने बयान किया कि इस पर मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा कि हुजूर अकरम (ﷺ) के इस इशार्द का कि कोई शहरी किसी देहाती का माल न बेचे, मतलब क्या है? तो उन्होंने फ़र्माया कि मतलब ये है कि उसका दलाल न बने। (दीगर मक़ाम : 2163, 2273)

اللَّهُ تَعَالَى: «لَا تَلْقُوا الرُّكَّانَ، وَلَا يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ»۔ قَالَ: فَقُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ: مَا قَوْلُهُ: «لَا يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ»؟ قَالَ: لَا يَكُونُ لَهُ سِمَنَارًا۔ [طرفاء ج ١، ٢١٦٣، ٢٢٧٤]

और इससे दलाली का हक़ ठहराकर बस्ती वालों को नुक़सान न पहुँचाए। अगर ये दलाल न बनता तो शायद ग़रीबों को ग़ल्ला सस्ता मिलता। हन्फ़िया ने कहा कि ये हदीष उस वक़्त की है जब ग़ल्ले का क़ह्र हो। मालिकिया ने कहा आम है। इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) से मन्कूल है कि मुमानअत इस सूत में है जब पाँच बातें हों। जंगल से कोई बेचने को आए, उस दिन के नख़्ख़ पर बेचना चाहे, नख़्ख़ उसको मा'लूम न हो, बस्ती वाला क़सद (इरादा) करके उसके पास जाए, मुसलमानों को उन अस्बाब की हाज़त हो, जब ये पाँच बातें पाई जाएँगी तो बेअ ह्राम और बातिल होगी वरना सहीह होगी। (वहबीदी)

सिम्सार की तशरीह में इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, बिसीनैन मुहमलतैन क़ाल फ़िल्फ़त्हि व हुव फ़िल्अस्लि अल्क़य्यिम बिल्अमि वल्हाफ़िज़ शुम्म उस्तुअमिल फ़ी मुतवल्लिल्लैड वशशराइ लिग़ैरिही या'नी सम्सारा असल में किसी काम के मुहाफ़िज़ और अंजाम देने वाले शख़्स को कहा जाता है और अब ये उसके लिये मुस्तअमल है जो ख़रीद व फ़रोख्त की तौलियत अपने ज़िम्मे लेता है। जिसे आजकल दलाल कहते हैं।

**बाब 69 : जिन्होंने उसे मकरूह रखा कि कोई शहरी आदमी, किसी भी देहाती का माल उज्रत लेकर बेचे**

2159. मुझसे अब्दुल्लाह बिन अब्बाह ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अली हनफ़ी ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इससे मना किया कि कोई शहरी, किसी देहाती का माल बेचे। यही इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने भी कहा है।

٦٩- بَابُ مَنْ كَرِهَ أَنْ يَبِيعَ حَاضِرٌ لِبَادٍ بِأَجْرٍ

٢١٥٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْحُوحٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَلِيٍّ الْحَنْفِيُّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَبِيعَ حَاضِرٌ لِبَادٍ)) وَبِهِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ۔

इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल ऊपर गुज़रा कि बस्ती वाला बाहर वाले का दलाल न बने। या'नी उज्रत लेकर उसका माल न बिकवाए और बाब का भी यही मतलब है। इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, वअलम अन्नहू कमा ला यजूजु अल्ला यबीअल्हाज़िरू लिलबादी कज़ालिक ला यजूजु अय्यशतरिय लहू अलख़ या'नी जैसे कि शहरी के लिये देहाती का माल बेचना मना है उसी तरह ये भी मना है कि कोई शहरी किसी देहाती के लिये कोई माल उसकी इतिला और पसन्द के बग़ैर ख़रीदे; ये तमाम अहकामात दरहक़ीक़त इसीलिये है कि कोई शहरी किसी भी सूत में किसी देहाती से नाजाइज़ फ़ायदा न उठाए।

**बाब 70 : इस बयान में कि कोई बस्ती वाला बाहर वाले के लिये दलाली करके मोल न ले**

٧٠- بَابُ لَا يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ بِالسُّمْنَرَةِ،

और इब्ने सीरीन और इब्राहीम नख्दी (रह.) ने बेचने और खरीदने वाले दोनों के लिये उसे मकरूह करार दिया है। और इब्राहीम नख्दी (रह.) ने कहा कि अरब कहते हैं बअली प्रौबा या'नी कपड़ा खरीद ले।

मतलब ये है कि हदीष में जो ला यबीउ हाजिरुल लिबादिन है, ये बेअ और शराअ दोनों को शामिल है। जैसे शराअ बाअ के मा'नी में आता है। कुर्आन में है व शरौहु बिषमनिम बखिसन दराहिम यानी बाऊ ऐसा ही बाअ भी शरा के मा'नों में आता है और दोनों सूरतें मना हैं।

2160. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने जुरैज ने खबर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कि कोई शख्स अपने किसी भाई के मौल पर मौल न करे। और कोई नज्श न करे, और न कोई शहरी, किसी देहाती के लिये बेचे या मोल ले।

(राजेअ: 2140)

وَكُرِهَهُ ابْنُ سِيرِينَ وَإِبْرَاهِيمُ لِلْبَائِعِ  
وَالْمُشْتَرِي وَ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: إِنَّ الْقَرَبَ  
يَقُولُ بَيْعٌ لِي نَوْبًا، وَهِيَ تَعْنِي الشَّرَاءَ.

٢١٦٠- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ:  
أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ  
مُسَيَّبِ بْنِ الْمُسَبِّبِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ  
: ((لَا يَبْتَاعُ الْمَرْءُ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ، وَلَا  
تَتَاجَرُوا، وَلَا يَبْتَاعُ خَاصِرٌ لِبَاقٍ)).

[راجع: ٢١٤٠]

**तशरीह:** इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व क़द अख़रज अबू अवाना फ़ी सहीहहि अनीब्नि सीरीन क़ाल लकीतु अनसब्नि मालिक फ़क़ुल्लु ला यबीउ हाज़िरुल लिबादिन अ नुहैतुम तबीऊ औ तब्ताऊ लहुम क़ाल नअम अल्ख़ या'नी इब्ने सीरीन ने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा, क्या वाकिई कोई शहरी किसी देहाती के लिये न कुछ माल बेचे न ख़रीदे, उन्होंने इब्बात में जवाब दिया। और उसकी ताईद उस हदीषे नबवी से भी होती है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, दअवुन्ऩास यरज़ुकुल्लाहु बअ जुहुम मिम्बअज़ि या'नी लोगों को उनके हाल पर छोड़ दो, अल्लाह उनके बाज़ को बाज़ के ज़रिये से रोज़ी देता है।

2161. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे मुआज़ बिन मुआज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें उससे रोका गया कि कोई शहरी किसी देहाती का माले तिजारत बेचे।

बाब 71 : पहले से आगे जाकर काफ़िले वालों से मिलने की मुमानअत और ये बेअ रह कर दी जाती है

क्योंकि ऐसा करने वाला जान-बूझकर गुनाहगार व ख़ताकार है और ये एक क्रिस्म का फ़रेब है जो जाइज़ नहीं।

**तशरीह:** जब कहीं बाहर से ग़ल्ला (अनाज) की रसद आती है तो कुछ बस्ती वाले ये करते हैं कि एक दो कोस बस्ती से आगे निकलकर राह में उन व्यापारियों से मिलते हैं और उनको दगा और घोखा देकर बस्ती का नख़्ब उतरा हुआ बयान करके उनका माल ख़रीद लेते हैं। जब वो बस्ती में आते हैं तो वहाँ का नख़्ब ज़्यादा पाते हैं और उनको चकमा दिया गया

٢١٦١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ  
حَدَّثَنَا مُعَاذُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ  
مُحَمَّدِ بْنِ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ:  
(نَهَيْتُنَا أَنْ يَبْتَاعَ خَاصِرٌ لِبَاقٍ)).

٧١- بَابُ النَّهْيِ عَنْ تَلْقَى الرُّكْبَانِ  
وَأَنْ يَبْتَاعَ مَرْدُودٌ

لأن صاحب غاصي آيم إذا كان به عالماً،  
وهو خداع في البَيْعِ وَالْخِدَاعُ لَا يَجُوزُ

है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक ऐसी सूरत में बेअ बातिल और लम्ब है। कुछ ने कहा ऐसा करना हराम है लेकिन बेअ सहीह हो जाएगी। और उनको इख्तियार होगा कि बस्ती में आकर वहाँ का नख़ देखकर उस बेअ को कायम रखें या तोड़ दें। इन्फिया ने कहा है कि अगर क़ाफ़िला वालों से आगे जाकर मिलना बस्ती वालों को नुक़सान का बाअिष हो तब मकरूह है वरना नहीं।

2162. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वट्हाब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह इमरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (तिजारती क़ाफ़िलों से) आगे बढ़कर मिलने से मना फ़र्माया है। और बस्ती वालों को बाहर वालों का माल बेचने से भी मना फ़र्माया है।

(राजेअ: 2140)

2163. मुझसे अय्याश बिन अब्दुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे इब्ने त़ाऊस ने, उनसे उनके बाप ने बयान किया कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा कि औहज़रत (ﷺ) के इस इशार्द का मतलब क्या है कि कोई शहरी किसी देहाती का माल न बेचे? तो उन्होंने कहा कि मतलब ये है कि उसका दलाल न बने। (राजेअ: 2158)

2164. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा कि हमसे तैमी ने बयान किया, उनसे अबू इम्मान ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जो कोई दूध जमा की हुई बकरी ख़रीदे (वो बकरी फेर दे) और उसके साथ एक झाअ दे दे। और औहज़रत (ﷺ) ने क़ाफ़िले से आगे बढ़कर मिलने से मना फ़र्माया। (राजेअ: 2149)

2165. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई शख़्स किसी दूसरे की बेअ पर बेअ न करे। और जो माल बाहर से आ रहा हो उससे आगे जाकर न मिले जब तक वो बाज़ार में न आए।

(राजेअ: 2139)

٢١٦٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا غَيْثٌ عَنْ أَبِي الْقَمَرِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْبَيْعِ حَاضِرٍ لِإِدَادٍ)).

[راجع: ٢١٤٠]

٢١٦٣- حَدَّثَنَا عِيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: مَا مَعْنَى قَوْلِهِ لَا يَبِيعُ حَاضِرٍ لِإِدَادٍ فَقَالَ: لَا يَكُونُ لَهُ مِمْسَاةً)). [راجع: ٢١٥٨]

٢١٦٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ: حَدَّثَنِي الْقُمَيْتِيُّ عَنْ أَبِي غُفَّانٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَنْ اشْتَرَى مُحَفَّلَةً فَلْيُرِدْ مَعَهَا صَاعًا. قَالَ: وَلَهُ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ تَلْقَى السُّوءِ)).

[راجع: ٢١٤٩]

٢١٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يَبِيعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، وَلَا تَلْقُوا السَّلْعَ حَتَّى يَهْتَبَ بِهَا إِلَى السُّوءِ)). [راجع: ٢١٣٩]



**तशरीह :** बेअ पर बेअ का मतलब जाहिर है कि एक शख्स किसी मुसलमान भाई की दुकान से कोई माल खरीद रहा है हमने उसे जाकर बहकाना शुरू कर दिया कि आप यहाँ से माल न लीजिए हम आपको और भी सस्ता दिलाएँगे। इस क्रिस्म की बातें करना भी हराम हैं। ऐसे ही कहीं जाकर भाव चढ़ा देना महज खरीददार को नुकसान पहुँचाने के लिये। हालाँकि खुद खरीदने की नियत भी नहीं है। ये सब मकर व फरेब और दूसरों को नुकसान पहुँचान की सूतें हैं जो सब हराम और नाजाइज़ हैं।

**बाब 72 : काफ़िले से कितनी दूर आगे जाकर मिलना मना है**

٧٢- بَابُ مُتَهَيِّ التَّلْقَى

इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद इस बाब से ये है कि उसकी कोई हद मुकर्रर नहीं। अगर बाज़ार में आने से एक क़दम भी आगे जाकर मिला तो उसने हराम काम किया।

2166. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे जुवेरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम आगे काफ़िलों के पास खुद ही पहुँच जाया करते थे और (शहर में पहुँचने से पहले ही) उनसे ग़ल्ला खरीद लिया करते। लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने हमें इस बात से मना किया कि हम उस माल को उसी जगह बेचें जब तक अनाज के बाज़ार में न लाएँ। इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का धे मिलना बाज़ार के बुलन्द किनारे पर था। (जिधर से सौदागर आया करते) और ये बात अब्दुल्लाह की हदीस से निकलती है। (जो आगे आती है) (राजेअ: 2123)

٢١٦٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَجَاءٍ أَنَّ اللَّهَ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا تَلْقَى الرُّكْبَانَ لَنَشْتَرِيَ مِنْهُمْ الطَّعَامَ، فَهَئَانَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَبْتَغَ حَتَّى يَبْلُغَ بِهِ سَوْقِ الطَّعَامِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: هَذَا فِي أَعْلَى السُّوقِ، وَبَيْنَهُ حَدِيثُ عَبْدِ اللَّهِ.

[راجع: ٢١٢٣]

**तशरीह :** या'नी इस रिवायत में जो मज़कूर है कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) काफ़िला वालों से आगे जाकर मिलते उससे ये मुराद नहीं है कि बस्ती से निकलकर ये तो हराम और मना था। बल्कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) का मतलब ये है कि बाज़ार में आ जाने के बाद उसके किनारे पर हम उनसे मिलते। क्योंकि इस रिवायत में इस अम्म की मुमानअत है कि ग़ल्ला को जहाँ खरीदो वहाँ बेचा और उसकी मुमानअत इस रिवायत में नहीं है कि काफ़िल वालों से आगे बढ़कर मिलना मना है। ऐसी हालत में ये रिवायत उन लोगों के लिये दलील नहीं हो सकती जिन्होंने काफ़िले वालों से आगे बढ़कर मिलना दुरुस्त रखा है।

2167. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया, और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग बाज़ार की बुलन्द जानिब जाकर ग़ल्ला खरीदते और वहीं बेचने लगते। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उससे मना फ़र्माया कि ग़ल्ला वहाँ न बेचें जब तक उसको उठाकर दूसरी जगह न ले जाएँ।

(राजेअ: 2123)

٢١٦٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ وَرَجَاءٍ أَنَّ اللَّهَ عَنْهُ قَالَ: ((كَانُوا يَتَأَخَّضُونَ الطَّعَامَ فِي أَعْلَى السُّوقِ لَيَبْتَغُوهُ فِي مَكَائِهِمْ، فَهَئَانَمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَبْتَغُوهُ فِي مَكَائِهِ حَتَّى يَنْقَلِبُوا)).

[راجع: ٢١٢٣]

**तशरीह :** मा'लूम हुआ कि जब काफ़िले बाज़ार में आ जाए तो उससे आगे बढ़कर मिलना दुरुस्त है। कुछ ने कहा कि बस्ती

की हद तक आगे बढ़ सकते हैं। बस्ती के बाहर जाकर मिलना दुरुस्त नहीं है। मालिकिया ने कहा कि उसमें इखितलाफ है, कोई कहता है एक मील से कम आगे बढ़कर मिलना दुरुस्त है। कोई कहता है छः मील से कम पर, कोई कहता है दो दिन की राह से कम पर।

### बाब 73 : अगर किसी ने बेअ में नाजाइज शर्तें लगाईं (तो उसका क्या हुक्म है)

### ۷۳- بَابُ إِذَا اشْتَرَطَ شَرْطًا فِي التَّيْعِ لَا تَحِلُّ

2168. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके बाप इर्वा ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे पास बरीरा (रज़ि.) (जो उस वक़्त तक बांदी थीं) आई और कहने लगीं कि मैंने अपने मालिकों से नौ औक़िया चाँदी पर मुकातबत कर ली है। शर्त ये हुई है कि हर साल एक औक़िया चाँदी उन्हें दिया करूँ। अब आप भी मेरी कुछ मदद कीजिए। इस पर मैंने उससे कहा कि अगर तुम्हारे मालिक ये पसन्द करें कि एक साथ उनका सब रुपया मैं उनके लिये (अभी) मुहय्या कर दूँ और तुम्हारा तर्का मेरे लिये हो तो मैं ऐसा भी कर सकती हूँ। बरीरा (रज़ि.) अपने मालिकों के पास गई। और आइशा (रज़ि.) की तजवीज़ उनके सामने रखी। लेकिन उन्होंने उससे इन्कार कर दिया, फिर बरीरा (रज़ि.) उनके यहाँ वापस आई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) (आइशा रज़ि. के यहाँ) बैठे हुए थे। उन्होंने कहा कि मैंने तो आपकी सूरत उनके सामने रखी थी मगर वो नहीं मानते बल्कि कहते हैं कि तर्का तो हमारा ही रहेगा। औहज़रत (ﷺ) ने ये बात सुनी और आयशा (रज़ि.) ने भी आपको हक़ीक़ते हाल खबर की। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि बरीरा (रज़ि.) को तुम ले लो और उन्हें तर्का की शर्त लगाने दो। तर्का तो उसी का होता है जो आज़ाद करे। आइशा (रज़ि.) ने ऐसा ही किया। फिर नबी करीम (ﷺ) उठकर लोगों के मजमअ में तशरीफ़ ले गए। और अल्लाह की हम्दोशना के बाद फ़र्माया, कि अम्माबअद! कुछ लोगों को क्या हो गया है। कि वो (खरीद व फ़रोख़त में) ऐसी शर्तें लगाते हैं जिनकी किताबुल्लाह में कोई असल नहीं है। जो कोई शर्त ऐसी लगाई जाए जिसकी असल किताबुल्लाह में न हो वो बातिल होगी। ख़वाह ऐसी सौ शर्तें कोई क्यूँ न लगा लें। अल्लाह तआला का हुक्म सब पर मुक़द्दम है और अल्लाह की शर्त बहुत मज़बूत है और वलाअ तो उसी की होती है

۲۱۶۸- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((جَاءَتْنِي بَرِيرَةُ فَقَالَتْ: كَتَبْتُ أَهْلِي عَلَى بَيْعِ أَوَاقٍ لِي كُلِّ عَامٍ أَوْقِيَةً، فَأَعِينَنِي. فَقُلْتُ: إِنْ أَحَبَّ أَهْلُكَ أَنْ أَعْتَمًا لَهُمْ، وَتَكُونَ وَالْأَوَّلُ لِي فَقُلْتُ. فَذَهَبَتْ بَرِيرَةُ إِلَى أَهْلِهَا فَقَالَتْ لَهُمْ: فَأَبُوا عَلَيْهَا، فَجَاءَتْ مِنْ عِنْدِهِمْ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَالِسٌ فَقَالَتْ: إِنِّي غَرَضْتُ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، فَأَبُوا إِلَّا أَنْ يَكُونَ الْوَلَاءُ لَهُمْ. فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ فَأَخْبَرَتْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((عَلَيْهَا وَاشْتَرَطِي لَهُمُ الْوَلَاءَ، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمِ أَغْنَى)). فَقَعَلَتْ عَائِشَةُ ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَتَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ مَا بَالَ رِجَالٌ يَشْتَرِطُونَ شَرْطًا لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللَّهِ، مَا كَانَ مِنْ شَرْطٍ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَهُوَ بَاطِلٌ وَإِنْ كَانَ مِثْلَ شَرْطٍ، فَضَاءَ اللَّهُ أَحَقُّ، وَشَرْطُ اللَّهِ أَزْهَقُ، وَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْنَى)).

जो आज़ाद करे।

2169. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने चाहा कि एक बांदी को ख़रीदकर आज़ाद कर दें, लेकिन उनके मालिकों ने कहा कि हम उन्हें इस शर्त पर आपको बेच सकते हैं कि उनकी वलाअ हमारे साथ रहे। इसका ज़िक्र जब आइशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने किया तो आपने फ़र्माया, कि इस शर्त की वजह से तुम क़त्अन न रुको वलाअ तो उसी की होती है जो आज़ाद करे। (राजेअ: 2156)

#### बाब 74 : खजूर को खजूर के बदले में बेचना

2170. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे मालिक बिन औस ने, उन्होंने हज़रत उमर (रज़ि.) से सुना, कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गेहूँ को गेहूँ के बदले में बेचना सूद है, लेकिन ये कि सौदा हाथों-हाथ हो। जौ को जौ के बदले में बेचना सूद है, लेकिन ये कि सौदा हाथों-हाथ हो। और खजूर को खजूर के बदले में बेचना सूद है, लेकिन ये कि सौदा हाथों-हाथ, नक़दा नक़दा हो। (राजेअ: 2134)

**तशरीह:** मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है और नमक बेचना, नमक के बदले ब्याज है मगर हाथो हाथ। बहरहाल जब उनमें से कोई चीज़ अपनी ज़िंस के बदल बेची जाए तो ये ज़रूरी है कि दोनों नाप तौल में बराबर हों, नक़दा नक़दा हों।

#### बाब 75 : मुनक्का को मुनक्का के बदल और अनाज को अनाज के बदल बेचना

2171. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुज़ाबना से मना फ़र्माया, मुज़ाबना ये कि दरख्त पर लगी हुई खजूर, खुश्क खजूर के बदल माप करके बेची जाए। इसी तरह बेल पर लगे हुए अंगूर को मुनक्का के बदले बेचना।

٢١٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ عَائِشَةَ أُمَ الْمُؤْمِنِينَ أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ جَارِيَةً لِعَقِّهَا، فَقَالَ أَهْلُهَا: نَبَيْكُهَا عَلَى أَنْ وَلَآءَهَا لَنَا، فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: لَا يَمْنَعُكَ ذَلِكَ، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَغْنَى)). [راجع: ٢١٥٦]

٧٤- بَابُ بَيْعِ التَّمْرِ بِالتَّمْرِ ٢١٧٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا الثَّيْتُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْبُرُّ بِالْبُرِّ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالشَّعِيرُ بِالشَّعِيرِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالتَّمْرُ بِالتَّمْرِ رَبًّا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ)). [راجع: ٢١٣٤]

#### ٧٥- بَابُ بَيْعِ الزُّبَيْبِ بِالزُّبَيْبِ ، وَالطَّعَامِ بِالطَّعَامِ

٢١٧١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْمُرَابَنَةِ وَالْمُرَابَنَةِ بَيْعُ التَّمْرِ بِالتَّمْرِ كَيْلًا، وَبَيْعُ الزُّبَيْبِ بِالْكَوْمِ كَيْلًا)).

(दीगर मक़ाम : 2172, 2175, 2205)

[أطرافه في : ٢١٨٥, ٢١٧٢, ٢٢٠٥]

**तशरीह :** या' नी वो खजूर जो अभी दरख्त से न उतरी हो, उसी तरह वो अंगूर जो अभी बेल से न तोड़े गए हों उसका अंदाज़ा करके खुश्क खजूर या मुनक्का के बदल बेचना दुस्त नहीं क्योंकि उसमें कमी बेशी का एहतिमाल है।

2172. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मुजाबना से मना किया। उन्होंने बयान किया कि मुजाबना ये है कि कोई शख्स दरख्त पर की खजूर सूखी खजूरों के बदल माप तौलकर बेचे। और खरीददार कहे अगर दरख्त का फल उस सूखे फल से ज्यादा निकले तो उसका है। और कम निकले तो वो नुक़सान भर देगा। (राजेअ : 2171)

٢١٧٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْغَمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا خَمَادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا (أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنِ الْمُزَابَنَةِ . قَالَ : وَالْمُزَابَنَةُ أَنْ يَبْعَ الْفَرْ يَكْتَلِي : إِنْ زَادَ قَلِي ، وَإِنْ نَقَصَ قَلِي) . (راجع : ٢١٧١)

2173. अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, कि मुझसे ज़ैद बिन स़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे अराया की इजाज़त दे दी थी जो अंदाज़े ही से बेअ की एक मूरत है। (दीगर मक़ाम : 2184, 2188, 2192)

٢١٧٣- قَالَ : وَحَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ قَابَسٍ : (أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَخَّصَ فِي الْفَرَايَا بِغَرَضِهَا) .

[أطرافه في : ٢١٨٤, ٢١٨٨, ٢١٩٢]

**तशरीह :** अराया भी मुजाबना ही की एक क्रिस्म है। मगर आँहजरत (ﷺ) ने उसकी ख़ास तौर से इजाज़त दी बवजह ज़रूरत के। वो ज़रूरत ये थी कि लोग ख़ैरात के तौर पर एक दरख्त का मेवा किसी मुहताज को दिया करते थे। फिर उसका बाग़ में घड़ी-घड़ी आना मालिक को नागवार होता। तो उस मेवे का अंदाज़ा करके उतनी खुश्क मेवे के बदल वो दरख्त उस फ़कीर से ख़रीद लेते।

## बाब 76 : जौ के बदले जौ की बेअ करना

2174. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, और उन्हें मालिक बिन औस (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्हें सौ अशरफ़ियाँ बदलनी थीं। (उन्होंने बयान किया कि) फिर मुझे तलहा बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बुलाया। और हमने (अपने मामले की) बातचीत की, और उनसे मेरा मामला तै हो गया। वो सोने (अशरफ़ियों) को अपने हाथ में लेकर उलटने-पलटने लगे और कहने लगे कि ज़रा मेरे ख़ज़ान्ची को गाबा से आने दो। उमर (रज़ि.) भी हमारी बातें सुन रहे थे आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! जब तक तुम तलहा से रुपया ले न लो, उनसे जुदा न होना क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि सोना, सोने

٧٦- بَابُ بَيْعِ الشَّوْبِيرِ بِالشَّوْبِيرِ  
٢١٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ أَخْبَرَهُ (أَنَّهُ اتَّصَفَ صَرَفًا بِمِائَةِ دِينَارٍ ، فَذَعَا بِي طَلْحَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللَّهِ فَرَأَوْهُمَا ، حَتَّى اصْطَرَفَ مِنِّي ، فَأَخَذَ اللَّحَبَ بِقَلْبِهَا فِي يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ : حَتَّى يَأْتِيَ خَازِنِي مِنَ الْغَابَةِ ، وَعَمْرُ يَسْمَعُ ذَلِكَ . فَقَالَ : وَاللَّهِ لَا تَفَارِقُهُ حَتَّى تَأْخُذَ مِنْهُ ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((اللَّحَبُ بِاللَّحَبِ رَبًّا

के बदले में अगर नक़द न हो तो सूद हो जाता है। गेहूँ, गेहूँ के बदले में अगर नक़द न हो तो सूद हो जाता है। जौ, जौ के बदले में अगर नक़द न हो तो सूद हो जाता है और खजूर, खजूर के बदले में नक़द न हो तो सूद हो जाती है। (राजेअ : 2134)

إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالْأُكْرُ بِالْأُ رِبَاٌ وَإِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالشَّيْءُ بِالشَّيْءِ رِبَاٌ وَإِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالْتَمَرُ بِالتَّمْرِ رِبَاٌ إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ)).

[راجع: ٢١٣٤]

**तशरीह:** लफ़्ज़ हा व हा की लफ़्ज़ी तहकीक अल्लामा शौकानी (रह.) यूँ फ़र्माते हैं, (हा व हा) बिल्महि फ़ीहिमा व फ़तहुल्हम्ज़ति व क़ील बिल्कस्त्रि व क़ील बिस्सुकूनि वल्मअना ख़ुज़ व हाति व थुक़ालु हा बिकसिल्हम्ज़ति बिमअना हाति व बिफ़त्हिहा बिमअना ख़ुज़ व क़ाल इब्नुल अश़ीर हा व हा हुव अंय्यकूल कुल्लु वाहिदिमिनल बैऐनि हा फ़युअतीहि मा फ़ी यदिही व क़ाललख़लील हा कलिमतुन तुस्तअमलु इन्दल्मुनावलति वल्मअमदु मिन क़ौलिही हा व हा अंय्यकूल कुल्लु वाहिदिमिनल मुतआकिदैनि लिमाहिबिही हा फ़यतकाबिज़ानी फिल्मज़िलसि (नैलुल औतार) खुलासा मतलब ये कि लफ़्ज़ हा मद के साथ और हमज़ा के फ़तह और कसरा दोनों के साथ मुस्तअमल हैं कुछ लोगों ने उसे साकिन भी कहा है। उसके मा'नी ख़ज़ (ले ले) और हाति (या'नी स्त्रा) के हैं। और ऐसा भी कहा गया है कि हाअ हमज़ा के कसरा के साथ हात (ला) के मा'नी में है और फ़तह के साथ ख़ज़ (पकड़) के मा'नी में है। इब्ने अश़ीर ने कहा कि हाअ व हाअ कि ख़रीद व फ़रोख्त करने वाले दोनों एक-दूसरे को देते हैं। ख़रीददार रुपये देता है और ताजिर माल अदा करता है इसलिये उसका तर्जुमा हाथों-हाथ किया गया, गोया एक ही मज्लिस में इन दोनों का क़ब्ज़ा हो जाता है।

### बाब 77 : सोने को सोने के बदले में बेचना

2175. हमसे इमदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इस्माइल बिन अलिया ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यहाा बिन अबी इस्हाक़ ने ख़बर दी, उनसे अब्दुरहमान बिन अबी बकरह ने बयान किया, उनसे अबू बक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सोना, सोने के बदले में उस वक़्त तक न बेचो जब तक (दोनों तरफ़ से) बराबर बराबर (की लेन देन) न हो। इसी तरह चाँदी, चाँदी के बदले में उस वक़्त तक न बेचो जब तक (दोनों तरफ़ से) बराबर बराबर न हो। अल्बत्ता सोना, चाँदी के बदल और चाँदी सोने के बदल जिस तरह चाहो बेचो। (दीगर मक़ाम : 2182)

٧٧- بَابُ بَيْعِ الذَّهَبِ بِالذَّهَبِ  
٢١٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَعْلَبِيِّ قَالَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عُثَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالذَّهَبِ إِلَّا سَوَاءً بِسَوَاءٍ، وَالْفِضَّةَ بِالْفِضَّةِ، إِلَّا سَوَاءً بِسَوَاءٍ، وَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالْفِضَّةِ وَالْفِضَّةَ بِالذَّهَبِ كَيْفَ شِئْتُمْ)). [طرفه ٣: ٢١٨٢].

या'नी उसमें कमी-बेशी दुरुस्त है मगर हाथों-हाथ की शर्त उसमें भी है एक तरफ़ नक़द दूसरी तरफ़ उधार दुरुस्त नहीं। और सोने चाँदी से आम मुराद है मस्कूक हो या ग़ैर-मस्कूक। (मस्कूक उस सिके को कहते हैं जो टकसाल में ढला हुआ हो और उस पर ठप्पा लगा हुआ हो)

### बाब 78 : चाँदी को चाँदी के बदले में बेचना

2176. हमसे अब्दुल्लाह बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे चचा ने बयान किया, कहा हमसे जुहरी के भतीजे ने बयान किया, उनसे उनके चचा ने बयान किया कि मुझसे सालिम

٧٨- بَابُ بَيْعِ الْفِضَّةِ بِالْفِضَّةِ  
٢١٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنِي عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي الْفَرْجِ عَنْ عَمْرِو قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ

बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने उसी तरह एक हदीष रसूलुल्लाह (ﷺ) के हवाले से बयान की (जैसे अबू बक्र रज़ि. या हज़रत उमर रज़ि. से गुज़री) फिर एक बार अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की उनसे मुलाक़ात हुई तो उन्होंने पूछा, ऐ अबू सईद! आप रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये कौनसी हदीष बयान करते हैं? अबू सईद (रज़ि.) से मुताल्लिक है। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान सुना था कि सोना सोने के बदले में बराबर बराबर ही बेचा जा सकता है और चाँदी चाँदी के बदले में बराबर बराबर ही बेची जा सकती है। (दीगर मक़ाम : 2177, 2178)

2177. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सोना, सोने के बदले में उस वक़्त न बेचो जब तक दोनों तरफ़ से बराबर-बराबर न हो, दोनों तरफ़ से किसी कमी या ज़्यादती को रवान रखो, चाँदी को चाँदी के बदले में उस वक़्त तक न बेचो जब तक दोनों तरफ़ से बराबर बराबर न हो। दोनों तरफ़ से किसी कमी या ज़्यादती को रवान रखो। और न उधार को नक़द के बदले में बेचो। (राजेअ : 2176)

**तशरीह :** इस हदीष में हज़रत इमाम शाफ़िई की हुज्जत है कि अगर एक शख्स के दूसरे पर दिरहम क़र्ज़ हो और उसके उस पर दीनार क़र्ज़ हो, तो उनकी बेअ जाइज़ नहीं, क्योंकि ये बेअ अल् कालिई बिल् कालिई है या 'नी उधार को उधार के बदले बेचना। और एक हदीष में सराहतन इसकी मुमानअत वारिद है और अस्हाबे सुन्नन ने इब्ने उमर (रज़ि.) से निकाला कि मैं बक़ीअ में ऊँट बेचा करता था तो दीनारों के बदल बेचता और दिरहम लेता, और दिरहम के बदल बेचता और दीनार ले लेता। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से इस मसले को पूछा, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इसमें कोई क़बाहत नहीं है बशर्त कि उसी दिन के नख़्ख़ से ले और एक-दूसरे से बग़ैर लिये जुदा न हो।

**बाब 79 : अशरफ़ी, अशरफ़ी के बदले उधार बेचना**

2178, 79. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़िहाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझे अमर बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलालेह ज़य्यात ने ख़बर दी, और उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को ये कहते सुना कि दीनार, दीनार के बदले में

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ حَدَّثَهُ بِثَلِّ ذَلِكَ حَدِيثًا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَلَقِيَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، فَقَالَ: يَا أَبَا سَعِيدٍ، مَا هَذَا الَّذِي تَحَدَّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ؟ فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ لِي الصَّرَافُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((الذَّهَبُ بِالذَّهَبِ مِثْلًا بِمِثْلٍ، وَالْوَرِقُ بِالْوَرِقِ مِثْلًا بِمِثْلٍ)).

[طرفاء ب : 2177, 2178]

2177 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالذَّهَبِ إِلَّا مِثْلًا بِمِثْلٍ، وَلَا تُشِفُّوا بَعْضُهَا عَلَى بَعْضٍ، وَلَا تَبِيعُوا الْوَرِقَ بِالْوَرِقِ إِلَّا مِثْلًا بِمِثْلٍ، وَلَا تُشِفُّوا بَعْضُهَا عَلَى بَعْضٍ، وَلَا تَبِيعُوا مِنْهَا غَائِبًا بِمَأْنٍ)). [راجع : 2176]

79 - بَابُ بَيْعِ الدِّينَارِ بِالدِّينَارِ نَسَاءً 2178, 79 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا الصُّحَّاكُ بْنُ مَخْلَبٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو بْنُ دِينَارٍ أَنَّ أَبَا سَالَمَةَ الْجَزَّازِيَّاتِ أَخْبَرَهُ أَنَّ

और दिरहम, दिरहम के बदले में (बेचा जा सकता है) इस पर मैंने उनसे कहा कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) तो उसकी इजाज़त नहीं देते। अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से उसके बारे में पूछा कि आपने ये नबी करीम (ﷺ) से सुना था या किताबुल्लाह में आपने उसे पाया है? उन्होंने कहा कि उनमें से किसी बात का मैं दावेदार नहीं हूँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) (की अहादीष) को आप लोग मुझसे ज्यादा जानते हैं। अल्बत्ता मुझे उसामा (रज़ि.) ने ख़बर दी थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (कि मज़क़ूरा सूरतों में) सूद सिर्फ़ उधार की सूरत में होता है।

(राजेअ: 2176)

سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((الذِّئْبَانُ بِالذِّئْبَانِ وَاللِّزَامُ بِاللِّزَامِ. فَقُلْتُ لَهُ: فَإِنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ لَا يَقُولُهُ. فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ: فَسَأَلْتُهُ فَقُلْتُ سَمِعْتَهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ أَوْ وَجَدْتَهُ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟ قَالَ: كُلُّ ذَلِكَ لَا الْوَلَدُ، وَاتَّقُوا أَهْلَ بَرَسُولِ اللَّهِ ﷺ مِنِّي، وَلَكِنِّي أَخْبَرَنِي أَسَافَةُ ابْنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا رِبَا إِلَّا فِي السَّيْفَةِ)). (راجع: ٢١٧٦)

**तशरीह:** हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का मज़हब ये है कि ब्याज इस सूरत में होता है जब एक तरफ़ उधार हो। अगर नक़द एक दिरहम दो दिरहम के बदले में बेचे तो ये दुरुस्त है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) की दलील वो हदीष है ला रिबा फ़िन्नसीअति हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के उस फ़त्वे पर जब ए'तिराज़ात हुए तो उन्होंने कहा कि मैं ये नहीं कहता कि अल्लाह की किताब में मैंने ये मसला पाया है, न ये कहता हूँ कि आँहज़रत (ﷺ) से सुना है क्योंकि मैं उस ज़माने में बच्चा था और तुम जवान थे। रात दिन आपकी सुहबते बाबरकत में रहा करते थे।

कस्तलानी (रह.) ने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के फ़त्वे के खिलाफ़ अब इम्माअ हो गया है। कुछ ने कहा कि ये महमूल है इस पर जब जिंस मुख्तलिफ़ हों। जैसे एक तरफ़ चाँदी दूसरी तरफ़ सोना, या एक तरफ़ गेहूँ और दूसरी तरफ़ जौ हो ऐसी हालत में कमी बेशी दुरुस्त है। कुछ ने कहा हदीष ला रिबा इल्ला फ़िन्नसीअति मन्सूख़ है मगर सिर्फ़ एहतिमाल से नसख़ श्राबित नहीं हो सकता। सहीह मुस्लिम में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि नहीं है ब्याज उस बेअ में जो हाथों-हाथ हो। कुछ ने ये भी कहा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने इस क़ौल से रुजूअ कर लिया था।

इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व क़द रवल्हाज़मी रजुअ इब्नि अब्बासिन व इस्तिफ़ारूहू इन्द अन्न समिअ इमरबनलख़त्ताबि व इब्नुहू अब्दुल्लाह युहदिषुनी अन रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिमा यदुल्लु अला तहरीमिन व बिल्फ़ज़िल व क़ाल हफ़िज्जुम मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) मा लम अहफ़ज़ रवा अन्हल्हाज़मी अयज़न अन्नहू क़ाल कान ज़ालिक बिराई व हाज़ा अबू सईद अल्ख़ुदरी युहदिषुनी अन रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़तरक्तु अय इला हदीषि रसूलिल्लाहि (ﷺ) अल्ख़

या'नी हाज़िमी ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का उससे रुजूअ और इस्तिफ़ार नक़ल किया है जब उन्होंने हज़रत इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) और उनके बेटे से इस बेअ की हुर्मत में फ़र्माने रिसालत सुना तो अफ़सोस के तौर पर कहा कि आप लोगों ने फ़र्माने रिसालत याद रखा, लेकिन अफ़सोस कि मैं याद न रख सका। और बरिवायत हाज़िमी उन्होंने ये भी कहा कि मैंने जो कहा था वो सिर्फ़ मेरी राय थी, और मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से हदीषे नबवी सुनकर अपनी राय को छोड़ दिया।

दयानतदारी का तक्राज़ा भी यही है कि जब कुआन या हदीष के नुसूसे सरीहा सामने आ जाएँ तो किसी भी राय और क़यास को हज़त न समझा जाए। और किताब व सुन्नत को मुक़दम रखा जाए यहाँ तक कि जलीलुल क़द्र अइम्म-ए-दीन की आराअ भी नसूसे सरीहा के खिलाफ़ नज़र आएँ तो निहायत ही अदब व एहतियाम के साथ आराअ के मुकाबले पर किताब व सुन्नत को जगह दी जाए।

अइम्प-ए इस्लाम हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा व इमाम शाफ़िई व इमाम मालिक व इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) सबका यही इर्शाद है कि हमारे फ़तावा को किताब व सुन्नत पर पेश करो, जब मुवाफ़िक़ हों कुबूल करो, अगर ख़िलाफ़े नज़र आएँ तो किताब व सुन्नत को मुक़द्दम रखो।

इमामुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहम्मिद देहलवी (रह.) ने अपनी ज़लीलुल क़द्र किताब हुज्जतिल्लाहिल बालिगा में ऐसे इर्शादाते अइम्मा को कई जगह नक़ल फ़र्माया है मगर स़द अफ़सोस कि उम्मत का क़बीर तज़क़ा वो है जो अपने अपने हल्क़-ए-इरादत में ज़मूद (जड़त्व, ठहराव) की सख़्ती से शिकार है और वो अपने अपने मज़हब मसलक के ख़िलाफ़ कुअर्न मजीद की किसी आयत या किसी भी सरीह हदीषे नबवी को मानने के लिये तैयार नहीं। हज़रत हाली मरहूम ने ऐसे ही लोगों के हक़ में फ़र्माया है:-

सदा अहले तहकीक़ से दिल में बल है  
हदीषों पे चलने में दौं का ख़लल है  
फ़तावों पे बिलकुल मदारे अमल है  
हर इक़राय कुअर्न का नेअमुल बदल है  
न ईमान बाक़ी न इस्लाम बाक़ी  
फ़क़त रह गया नामे इस्लाम बाक़ी।

### बाब 80 : चाँदी को सोने के बदले उधार बेचना

### ۸۰- بَابُ بَيْعِ الْوَرِقِ بِالذَّهَبِ نَسِيئَةً

2180, 81. हमसे हफ़्स बिन इमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे हबीब बिन अबी प्राबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अबुल मिन्हाल से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने बरा बिन आज़िब और ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से बेअ्रे सरिफ़ के बारे में पूछा, तो उन दोनों हज़रात ने एक-दूसरे के बारे में फ़र्माया कि ये मुझसे बेहतर हैं। आख़िर दोनों हज़रात ने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सोने को चाँदी के बदले में उधार की सूरत में बेचने से मना किया है।

(राजेअ: 2060, 2061)

۲۱۸۰، ۲۱۸۱- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْمُنْهَالِ قَالَ: سَأَلْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ وَزَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ الصَّرَفِ، فَكُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا يَقُولُ: هَذَا خَيْرٌ مِنِّي، فَكِلَاهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ بَيْعِ الذَّهَبِ بِالْوَرِقِ ذِمًّا)).

[راجع: ۲۰۶۰، ۲۰۶۱]

**तशरीह:** अगर अस्बाब की बेअ़ अस्बाब के साथ हो तो उसको मुकायज़ा कहते हैं। अगर अस्बाब की नक़द के साथ हो तो नक़द को प्रमन और अस्बाब को अर्ज़ कहेंगे। अगर नक़द की नक़द के साथ हो मगर हम जिस हो या'नी सोने को सोने के साथ बदले या चाँदी को चाँदी के साथ तो उसको मुरातला कहते हैं। अगर जिस का इख़्तिलाफ़ हो जैसे चाँदी सोने के बदल या बिल अक्स तो उसको स़र्फ़ कहते हैं। स़र्फ़ में कमी बेशी दुस्त है मगर हुलूल या'नी हाथों हाथ लेन-देन ज़रूरी और लाज़िम है और क़ब्ज़ में देर करनी दुस्त नहीं। और मुरातला में तो बराबर बराबर और हाथों हाथ दोनों बातें ज़रूरी हैं। अगर प्रमन और अर्ज़ की बेअ़ हो तो प्रमन या अर्ज़ के लिये मीआद करना दुस्त है। अगर प्रमन में मीआद हो तो वो क़र्ज़ है



अगर अर्ज में मीआद हो तो वो सलम है ये दोनों दुरुस्त हैं। अगर दोनों में मीआद हो तो वो बेअुल कालई है जो दुरुस्त नहीं (वहीदी)

### बाब 81 : सोना, चाँदी के बदले नक़द हाथों- हाथ बेचना दुरुस्त है

2182. हमसे इमरान बिन मैसरा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्बाद बिन अवाम ने, कहा कि हमको यहाा बिन अबी इस्हाक़ ने ख़बर दी, उनसे अब्दुरहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया, और उनसे उनके बाप हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने चाँदी, चाँदी के बदले में और सोना, सोने के बदले में बेचने से मना किया है। मगर ये कि बराबर बराबर हो। अल्बत्ता हम सोना, चाँदी के बदले में जिस तरह चाहें ख़रीदें। इसी तरह चाँदी सोने के बदले में जिस तरह चाहें ख़रीदें। (राजेअ : 2175)

### 81- بَابُ بَيْعِ الذَّهَبِ بِالنَّوْزِقِ يَدًا بِيَدٍ

2182- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبَادُ بْنُ الْوَرَاءِ قَالَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْفَيْضَةِ بِالْفَيْضَةِ وَالذَّهَبِ بِالذَّهَبِ إِلَّا مِوَاءَ بِمِوَاءٍ، وَأَمَرَنَا أَنْ نَتَبَاغَ الذَّهَبَ بِالْفَيْضَةِ كَيْفَ شِئْنَا، وَالْفَيْضَةَ بِالذَّهَبِ كَيْفَ شِئْنَا)).

[راجع: 2175]

इस हदीष में हाथों हाथ की कैद नहीं है मगर मुस्लिम की दूसरी रिवायत से प्राबित होता है कि हाथों-हाथ या'नी नक़दा नक़द होना उसमें भी शर्त है। और बेअे सरिफ़ में क़ब्ज़ा शर्त होने पर इलमा का इतिफ़ाक़ है। इख़्तिलाफ़ इसमें है कि जब ज़िंस एक हो तो कमी-बेशी दुरुस्त है या नहीं, जुम्हूर का क़ौल यही है कि दुरुस्त नहीं है। वल्लाहु आलम।

### बाब 82 :

### बेअे मुजाबना के बयान में

और ये ख़ुशक खज़ूर की बेअे दरख़्त पर लगी हुई खज़ूर के बदले और ख़ुशक अंगूर की बेअे ताज़ा अंगूर के बदले में होती है और बेअे अराया का बयान। अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने मुजाबना और मुहाक़ला से मना फ़र्माया है।

### 82- بَابُ بَيْعِ الْمُرَابَّةِ ، وَبَيْعِ التَّمْرِ بِالتَّمْرِ

وَبَيْعِ الزَّيْتِ بِالزَّيْتِ ، وَبَيْعِ الْفَرَاخِ  
قَالَ أَنَسٌ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْمُرَابَّةِ  
وَالْمُحَاكَلَةِ.

**तशरीह :** इसको खुद इमाम बुखारी (रह.) ने आगे चलकर वसूल किया है, मुजाबना के मा'नी तो मा'लूम हो चुके। मुहाक़ला ये है कि अभी गेहूँ खेत में हो, बालियों में उसका अंदाज़ा करके उसको उतरे हुए गेहूँ के बदले में बेचे। ये भी मना है। मुहाक़ला की तफ़सीर में इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, क़द उख़्तुलिफ़ फ़ी तफ़सीरिहा फ़मिन्हुम मन फ़स्सरहा फ़िल्हदीषि फ़क़ाल हिय बैउल्हज़िल बैकैलिमिनत्तामि व क़ाल अबू उबैद हिय बैउत्तामि फ़ी सुम्बुलिही वल्हक़लु अल्हर्षु व मौज़उज़रइ या'नी मुहाक़ला की तफ़सीर में इख़्तिलाफ़ किया गया है। कुछ लोगों ने उसकी तफ़सीर उस खेत से की है जिसकी खड़ी खेती को अंदाज़न मुकर्रर मिक्दार के ग़ल्ले से बेच दिया जाए। अबू उबैद ने कहा वो ग़ल्ला को उसकी बालियों में बेचना है। और हक़ल का मा'नी खेती और मक़ामे ज़राअत के हैं। ये बेअे मुहाक़ला है जिसे शरअे मुहम्मदी में मना क़रार दिया गया है क्योंकि इसमें जानिबीन (पक्षकारों) को नफ़ा व नुक़सान का एहतिमाल क़बी है।

मुजाबना की तफ्सीर में हज़रत इमाम मज्कूर फ़रमते हैं, वल्मुजाबनतु बिज्जाइ वल्मूहदति वन्नून क़ाल फ़िल्फ़त्हि हिय मुफ़ाअलतुम्निनज़बनि बिफ़त्हिज्जाइ व सुकूनि मुहदति व हुवहफ़उशशदीदु व मिन्हु सुम्मियतिल्हर्बु अज़्ज़बून लिशिहतिदफ़इ फ़ीहा व क़ील लिल्बैइल्मख़सूसि मुजाबनतुन कान कुल्लु वाहिदिम्निनल मुताबायएनि यदफ़उ झाहिबहू अन हक्किही औ लिअन्न अहदहुमा इज़ा वक़फ़ मा फ़ीहि मिनल्ग़ाबनि अराद दफ़अल्बैइ लिफ़सिख़ही व अरादल्आख़रु दफ़अहू अन हाज़िहिल्इरादति बिइम्ज़ाइल्बैइ व क़द फ़स्सर्तु बिमा फ़िल्हदीषि आनी बैअन्नख़िल बिऔसाकिम्निनत्तपरि व फ़स्सर्तु बिहाज़ा व बिबैइल्ऐनबि बिज़्ज़बीबि कमा फ़िम्महीहैनि (नैलुल औतार) मुजाबना, ज़बन से बाब मफ़ाइला का मसदर है। जिसके मा'नी रफ़अ शदीद के हैं। इसीलिये लड़ाई का नाम भी ज़बून रखा गया क्योंकि उसमें शिद्दत से मुदाफ़िअत की जाती है और ये भी कहा गया है कि बेअ मख़सूस का नाम मुजाबना है। गोया देने वाला और लेने वाला दोनों में से हर शख़्स एक-दूसरे को उसके हक़ से महसूस रखने की शिद्दत से कोशिश करते हैं या ये मा'नी कि उन दोनों में से जब एक उस सौदे में ग़बन से वाकिफ़ होता है तो वो उस बेअ को फ़स्ख़ करने की कोशिश करता है। और दूसरा बेअ का निफ़ाज़ करके उसे इस इरादे से बाज़ रखने की कोशिश करता है और हदीष की तफ़्सीर कर चुका हूँ। या'नी तर खजूरों को खुश्क खजूरों से बेचना और अंगूरों को मुनक्का से बेचना जैसा कि सहीहेन में है।

अहदे जाहिलियत में बुयूअ के ये सारे बुरे तरीक़े ज़ारी थे और उनमें नफ़ा व नुक़सान दोनों का क़बी एहतिमाल होता था। कुछ दफ़ा लेने वाले के वारे न्यारे हो जाते और कुछ दफ़ा वो असल पूँजी को भी गंवा बैठता। इस्लाम ने इन जुम्ला तरीक़ा हाए बुयूअ को सख़्ती से मना फ़र्माया। आजकल ऐसे धोखे के तरीक़ों की जगह लॉटरी, सट्टा, रस वग़ैरह ने ले ली है। जो इस्लाम में ना फ़िर्न बल्कि सूद व ब्याज के दायरे में दाख़िल हैं। ख़रीद व फ़रोख़त में धोखा करने वाले के हक़ में सख़्त तरीन वईदें आई हैं। मसलन एक मौक़ा पर अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था। मन ग़फ़्फ़ा फ़लैस मिन्ना जो धोखाबाज़ी करने वाला है वो हमारी उम्मत से ख़ारिज है वग़ैरह वग़ैरह।

सच्चे मुसलमान ताज़िर का फ़र्ज़ है कि अमानत, दयानत, सदाक़त के साथ कारोबार करे, उससे उसको हर किस्म की बरकतें हासिल होंगी और आख़िरत में अंबिया व सिद्दीकीन व शुहदा व सालेहीन का साथ नज़ीब होगा। ज़अलनल्लाहु मिन्हुम आमीन या रब्बल आलमीन

2183. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, फल (दरख़त पर का) उसधैवत तक न बेचो जब तक उसका पका हुआ होना न खुल जाए। दरख़त पर लगी हुई खजूर को खुश्क खजूर के बदले में न बेचो। (राजेअ: 1486)

٢١٨٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا تَبِعُوا الثَّمَرَ حَتَّى يَتَلَوَّ صَلَاحَهُ، وَلَا تَبِعُوا الثَّمَرَ بِالْعَمْرِ».

[راجع: ١٤٨٦]

2184. सालिम ने बयान किया कि मुझे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी, और उन्हें ज़ैद बिन श़ाबित (रज़ि.) ने कि बाद में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बेअ्रे अराया की तरफ़ा खुश्क खजूर के बदले में इजाज़त दे दी थी। लेकिन उसके सिवा किसी मूरत की इजाज़त नहीं दी थी।

(राजेअ: 2173)

٢١٨٤- قَالَ سَالِمٌ: وَأَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَخَّصَ بَعْدَ ذَلِكَ فِي بَيْعِ الثَّمَرَةِ بِالرُّطْبِ أَوْ بِالثَّمَرِ. وَلَمْ يُرَخَّصْ فِي

عَمْرِهِ. [راجع: ٢١٧٣]

**तशरीह:** इसी तरह तर खजूर खुश्क खजूर के बदल बराबर बराबर बेचना भी नाजाइज है क्योंकि तर खजूर सूखे से वजन में कम हो जाती है, जुम्हूर उलमा का यही कौल है। इमाम अबू हनीफा (रह.) ने उसे जाइज रखा है। अराया, अरिया की जमा है। हन्फिया ने बरखिलाफ जुम्हूर उलमा के अराया को भी जाइज नहीं रखा क्योंकि वो भी मुजाबना में दाखिल है और हम कहते हैं जहाँ मुजाबना की मुमानअत आई है वहीं ये मज़कूर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अराया की इजाज़त दे दी।

2185. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने खबर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुजाबना से मना किया, मुजाबना दरख़त पर लगी हुई खजूर को टूटी हुई खजूर के बदले में नापकर और दरख़त के अंगूर को खुश्क अंगूर के बदले में नापकर बेचने को कहते हैं।

(राजेअ: 2171)

2186. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें दाऊद बिन हुसैन ने, उन्हें इब्ने अबी अहमद के गुलाम अबू सुफ़यान ने, और उन्हें अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुजाबना और मुहाक़ला से मना किया, मुजाबना दरख़त पर की खजूर तोड़ी हुई खजूर के बदले में खरीदने को कहते हैं।

2187. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे मुआविया ने बयान किया, उनसे शैबानी ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने मुहाक़ला और मुजाबना से मना फ़र्माया।

2188. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने साहिबे अराया को उसकी इजाज़त दी कि अपना अराया उसके अंदाज़े बराबर मेवे के बदल बेच डाले। (राजेअ: 2173)

٢١٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْمُزَابَنَةِ وَالْمُزَابَنَةِ اشْتِرَاءَ التَّمْرِ بِالتَّمْرِ كَيْلًا، وَبَيْعَ الْكَرْمِ بِالزُّيْنِبِ كَيْلًا)). [راجع: ٢١٧١]

٢١٨٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ دَاوُدَ بْنِ الْخُصَيْنِ عَنْ أَبِي سَفْيَانَ مَوْلَى أَبِي إِسْحَقَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْمُزَابَنَةِ وَالْمُحَاكَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ اشْتِرَاءَ التَّمْرِ بِالتَّمْرِ لِي (رُؤُوسِ النَّخْلِ)).

٢١٨٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْمُحَاكَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ)).

٢١٨٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَرَحَصَ لِصَاحِبِ الْغَرَبَةِ أَنْ يَبْعَهَا بِغَرَضِهَا)). [راجع: ٢١٧٣]

या'नी बाग़ वाले के हाथ। ये सहीह है कि अराया भी मुजाबना है मगर आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी इजाज़त दी। इस वजह से कि

अराया, खैर-खैरात का काम करती है। अगर अराया में ये इजाजत न दी जाती तो लोग खजूर या मेवे के दरख्त मिस्कीनों को लिलाह देना छोड़ देते। इसलिये कि अक़षर लोग ये ख्याल करते कि हमारे बाग़ में रात बे-रात मिस्कीन घुसते रहेंगे और उनके घुसने और बेमौक़ा आने से हमको तकलीफ़ होगी।

### बाब 73 : दरख्त पर फल, सोने और चाँदी के बदले बेचना

### ۸۳- بَابُ بَيْعِ الشَّمْرِ عَلَى رُؤُوسِ النَّخْلِ بِالنَّعَبِ وَالْفَيْضَةِ

2189. हमसे यह्या बिन सुलैमानने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें अत्ता और अबू जुबैर ने और उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खजूर के पकने से पहले बेचने से मना किया है और ये कि उसमें से ज़रा बराबर भी दिरहम व दीनार के सिवा किसी और चीज़ (सूखे फल) के बदले न बेची जाए। अल्बत्ता अराया की इजाजत दी।

(राजेअ : 1477)

2190. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वहहाब ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि मैंने इमाम मालिक से सुना, उनसे अब्दुल्लाह बिन रबीआ ने पूछा कि क्या आपसे दाऊद ने सुफ़यान से और उन्होंने ने अबू हुदैरह (रज़ि.) से ये हदीष बयान की थी कि नबी करीम (ﷺ) ने पाँच वसक़ या उससे कम में बेअे अराया की इजाजत दी है? तो उन्होंने कहा कि हाँ!

(दीगर मक़ाम : 2382)

۲۱۸۹- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ وَأَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ، عَنْ بَيْعِ الشَّمْرِ حَتَّى يَطْبُقَ، وَلَا يَبَاغَ شَيْءٌ مِنْهُ إِلَّا بِالْذِّئْبَارِ وَالذَّرْهَمِ، إِلَّا الْفَرَايَا)).

[راجع: ۱۴۷۷]

۲۱۹۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ مَالِكَاً وَسَالَةَ عَتِيدَ اللَّهِ بْنِ الرَّبِيعِ: أَخْبَدْتُكَ دَاوُدُ عَنْ أَبِي سَلْمَانَ عَنْ أَبِي مُرَّةٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَخِمَ فِي بَيْعِ الْفَرَايَا فِي عَمْسَةِ أَوْسِيٍّ أَوْ دُونَ عَمْسَةِ أَوْسِيٍّ قَالَ: (نَعَمْ)).

[طرفه ۲ : ۲۳۸۲]

**तशरीह :** एक वस्क़ साठ साअ का होता है। एक साअ पौने छः रतल का। जैसा कि ऊपर गुजरा है अक़षर खैरात इसके अंदर की जाती तो आपने ये हद मुकरर फ़र्मा दी, अब हन्फ़िया का ये कहना कि अराया की हदीष मंसूख है या मुआरिज़ है मुजाबना की हदीष के, सहीह नहीं क्योंकि नस्ख के लिये तक़दुम ताख़ीर श्राबित करना ज़रूरी है। और मुआरिज़ा जब होता कि मुजाबना की नहीं के साथ अराया का इस्तिफ़्नाअन किया जाता। जब आँहज़रत (ﷺ) ने मुजाबना से मना करते वक़्त अराया को मुस्तफ़्ना कर दिया तो अब तआरूज़ कहाँ रहा?

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़मति हैं, क़ाल इब्नुल्मुज़िर इहअल्कूफीयून अन्न बैअल्अराया मन्सूखून बिनहयिही (ﷺ) अन बैइत्तमरि बित्तमरि हाज़ा मर्दूदुन लिअन्न रवन्नह्य अन बैइत्तमरि बित्तमरि हुवल्लज़ी स्वरुख़सत फिलअराया फ़अब्वतन्नह्य वर्ख़सत मअन कुल्लु व रिवायतु सालिम अल्माज़ियतु फ़िलबाबिल्लज़ी क़ब्लहू तदुल्लु अला अन्नरूख़सत फ़ी बैइल्अराया वक़अ बअदन्नह्य अन बैइत्तमरि बित्तमरि व लफ़ज़हू अन इब्नि इमर मफ़ूअन व ला तबीउत्तमरि बित्तमरि क़ाल व अन ज़ैद बिन श्राबित अन्नहू (ﷺ) रख़ख़स बअद ज़ालिक फ़ी बैइल्अरिय्यति व हाज़ा हुवल्लज़ी यन्नतज़ीहिल फ़ज़रुख़सति फ़इन्नहा तकूनु बअद मनइन व क़ज़ालिक बकियतुल अहादीषिल्लती वक़अ फ़ीहा इस्तिफ़्नाउल अराया बअद ज़िकिर बैइत्तमरि बित्तमरि व क़द क़दम्पतु इज़ाह ज़ालिक (फ़तहल बारी)

या'नी बकौल मुज़िर अहले कूफ़ा का ये दा'वा कि बे'अे अराया की इजाज़त मंसूख है इसलिये कि औहज़रत (ﷺ) ने दरख़्त पर की खजूरों को सूखी खजूरों के बदले में बेचने से मना किया है। और अहले कूफ़ा का ये दा'वा मरदूद है इसलिये कि नही की रिवायत करने वाले रावी ही ने बे'अे अराया की रुख़सत भी रिवायत की है। पस उन्होंने नही और रुख़सत दोनों को अपनी अपनी जगह प्राबित रखा है। और मैं कहता हूँ कि सालिम की रिवायत जो बे'अे अराया की रुख़सत में मज़कूर हो चुकी है वो बे'अुषमर बित्तमर की नही के बाद की है और उनके लफ़्ज़ इब्ने इमर (रज़ि.) से मफ़ूअन ये हैं कि न बे'चो (दरख़्त पर की) खजूर को खुश्क खजूर से। कहा कि ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) से मरवी है कि औहज़रत (ﷺ) ने उसके बाद बे'अे अराया की रुख़सत दे दी, और ये रुख़सत मुमानअत के बाद की है। और इसी तरह बक़ाया अहादीष हैं जिनमें बे'अुषमर बित्तमर के बाद बे'अे अराया की रुख़सत का मुस्तफ़्ना होना मज़कूर है और मैं (इब्ने हज़र) बाज़ेह तौर पर पहले भी इसे बयान कर चुका हूँ।

2191. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा कि यह्या बिन सईद ने बयान किया कि मैंने बशीर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सहल बिन अबी हृष्मा (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरख़्त पर लगी हुई खजूर को तोड़ी हुई खजूर के बदले में बेचने से मना फ़र्माया, अल्बत्ता अराया की आप (ﷺ) ने इजाज़त दी कि अंदाज़ा करके ये बे'अ की जा सकती है कि अराया वाले उसके बदल ताज़ा खजूर खाएँ। सुफ़यान ने दूसरी बार ये रिवायत बयान की, लेकिन औहज़रत (ﷺ) ने अराया की इजाज़त दे दी थी कि अंदाज़ा करके ये बे'अ की जा सकती है, खजूर ही के बदले में। दोनों का मफ़हूम एक ही है। सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने यह्या से पूछा, उस वक़्त मैं अभी कम उम्र था, कि मक्का के लोग कहते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने अराया की इजाज़त दी है। तो उन्होंने पूछा कि अहले मक्का को ये किस तरह मा'लूम हुआ? मैंने कहा कि वो लोग जाबिर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। इस पर वो ख़ामोश हो गए। सुफ़यान ने कहा कि मेरी मुराद उससे ये थी कि जाबिर (रज़ि.) मदीना वाले हैं। सुफ़यान से पूछा गया कि क्या उनकी हदीष में मुमानअत नहीं है कि फ़लों को बेचने से आप (ﷺ) ने मना किया जब तक कि उनकी पुख़्तगी न खुल जाए। उन्होंने कहा कि नहीं। (दीगर मक़ाम : 2384)

٢١٩١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: قَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ سَمِعْتُ بُشَيْرًا قَالَ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ أَبِي حَنِيْفَةَ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ بَيْعِ النَّخْلِ بِالنَّخْلِ، وَرَخَصَ فِي الْقَرِيَةِ أَنْ تَبَاعَ بِخَوْصِهَا بِأَكْلِهَا أَهْلُهَا رُطْبًا - وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً أُخْرَى: إِلَّا أَنَّهُ رَخَصَ فِي الْقَرِيَةِ بَيْعَهَا أَهْلُهَا بِخَوْصِهَا بِأَكْلِهَا رُطْبًا - قَالَ: هُوَ سَوَاءٌ. قَالَ سُفْيَانُ فَقُلْتُ يَحْيَى وَأَنَا غُلَامٌ: إِنْ أَهْلُ مَكَّةَ يَقُولُونَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَخَصَ فِي بَيْعِ الْقَرِيَةِ. فَقَالَ: وَمَا يَذَرِعُ أَهْلُ مَكَّةَ؟ قُلْتُ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ عَنْ جَابِرٍ. فَسَكَتَ. قَالَ سُفْيَانُ: إِنَّمَا أَرَدْتُ أَنْ جَابِرًا مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ). قِيلَ لِسُفْيَانَ: أَلَيْسَ لَهُ (نَهَى عَنْ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى يَنْدُوا صَلَاحَهُ؟) قَالَ: لَا. [طَرَفُهُ ي: ٢٣٨٤].

तो हदीष आखिर मदीना वालों ही पर आकर ठहरी, हासिल ये है कि यह्या बिन सईद और मक्का वालों की रिवायत में किसी क़दर इख़्तिलाफ़ है। यह्या बिन सईद ने अराया की रुख़सत में अंदाज़ करने की और अराया वालों की ताज़ा खजूर खाने की क़ैद लगाई है। और मक्का वालों ने अपनी रिवायत में ये क़ैद बयान नहीं की बल्कि मुत्लक़ अराया को जाइज़ रखा। ख़ैर अंदाज़ा करने की क़ैद तो एक हाफ़िज़ ने बयान की है इसका कुबूल करना वाजिब है लेकिन खाने की क़ैद महज़ वाकिई है न एहतिराज़ी

(क्रस्तलानी) सुफयान बिन इययना से मिलने वाला कौन था हाफिज़ कहते हैं कि मुझे उसका नाम मा'लूम नहीं हुआ।

#### बाब 84 : अराया की तफ़सीर का बयान

इमाम मालिक (रह.) ने कहा कि अराया ये है कि कोई शख्स (किसी बाग़ का मालिक अपने बाग़ में) दूसरे शख्स को खजूर का दरख्त (हिबा के तौर पर) दे दे, फिर उस शख्स का बाग़ में आना अच्छा न मा'लूम हो, तो उस मूरत में वो शख्स टूटी हुई खजूर के बदले में अपना दरख्त (जिसे वो हिबा कर चुका है) खरीद ले उसकी उसके लिये रुख़सत दी गई है। और इब्ने इदरीस (इमाम शाफ़िई रह.) ने कहा कि अराया जाइज़ नहीं होता मगर (पाँच वस्क्र से कम में) सूखी खजूर नापकर हाथों-हाथ दे दे ये नहीं कि दोनों तरफ़ अंदाज़ा हो। और इसकी ताईद सहल बिन अबी हश्मा (रज़ि.) के क़ौल से भी होती है कि वस्क्र से नापकर खजूर दी जाए। इब्ने इस्हाक़ (रह.) ने अपनी हदीस में नाफ़ेअ से बयान किया और उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान किया कि अराया ये है कि कोई शख्स अपने बाग़ में खजूर के एक दो दरख्त किसी को आरियतन दे दे। और यज़ीद ने सुफ़यान बिन हुसैन से बयान किया कि अराया खजूर के उस दरख्त को कहते हैं जो मिस्कीनों को लिल्लाह दे दिया जाए। लेकिन वो खजूर के पकने का इतिज़ार नहीं कर सकते तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें उसकी इजाज़त दी कि जिस क़दर सूखी खजूरों के बदले और जिसके हाथ चाहें बेच सकते हैं।

2192. हमसे मुहम्मद बिन मुक्कातिल ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें मूसा बिन इब्बना ने, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने, उन्हें ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अराया कि इजाज़त दी कि वो अंदाज़े से बेची जा सकती है। मूसा बिन इब्बना ने कहा कि अराया कुछ मुअय्यन दरख्त जिनका मेवा तो उतरे हुए मेवे के बदल खरीदे।

(राजेअ: 2173)

#### ٨٤- باب تفسير الأرايا

وَقَالَ مَالِكٌ : الْأَرِيَّةُ أَنْ يُعْرِيَ الرَّجُلُ الرَّجُلَ نَخْلَةً ثُمَّ يَأْذَى بِدُخُولِهِ عَلَيْهِ لَوْحَصَ لَهُ أَنْ يَشْتَرِيَهَا مِنْهُ بِنَمْرٍ. وَقَالَ ابْنُ إِدْرِيسَ : الْأَرِيَّةُ لَا يَكُونُ إِلَّا بِالْكَمَلِ مِنَ النَّمْرِ يَدًا بِيَدٍ، لَا يَكُونُ بِالْجِزَافِ. وَمِمَّا يَقُولُهُ قَوْلُ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَتْمَةَ: بِالْأَوْسُقِ الْمَوْسِقَةِ.

وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ فِي حَدِيثِهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: كَانَتْ الْأَرَايَا أَنْ يُعْرِيَ الرَّجُلُ فِي مَالِهِ النَخْلَةَ وَالنَّخْلَتَيْنِ. وَقَالَ يَزِيدُ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ حُسَيْنٍ: الْأَرَايَا نَخْلٌ كَانَتْ تَوْهَبُ لِلْمَسَاكِينِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ أَنْ يَنْتَبِهُوا بِهَا رَحَصَ لَهُمْ أَنْ يَبِيعُوهَا بِمَا شَاءُوا مِنَ الْفَنَرِ.

٢١٩٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عَقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ (يَزِيدِ بْنِ) لَابِتٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَحَصَ فِي الْأَرَايَا أَنْ تُبَاعَ بِمَخْرُصِهَا كَيْلًا. قَالَ مُوسَى بْنُ عَقْبَةَ: وَالْأَرَايَا نَخْلَاتٌ مَعْلُومَاتٌ تَأْتِيهَا قَشَرَتُهَا.

[راجع: ٢١٧٣]

**तशीह:** अल्लामा शौकानी (रह.) अराया की तप्सील इन लफ्जों में पेश फर्माते हैं, जम्ह अरिय्यतिन काल फिलफति हि व हिय फिलअस्लि अतियतु षमरिन्नखिल दूनरक्बति कानतिलअरबु फिलजदबि तततव्वड बिजालिक अला मन ला षमर लहू कमा यततव्वड साहिबुशशति अविल्डबिलि बिल्मनीहति व हिय अतियतुल्लबनि दूनरक्बति (नैल) या'नी अराया अर्या की जमा है और दरअसल ये खजूर को सिर्फ किसी मोहताज मिस्कीन को आरियतन बखिशश के तौर पर दे देना है। अरबों का तरीका था कि वो फुकरा मसाकीन को फसल में किसी दरखत का फल बतौर बखिशश दे दिया करते थे जैसा कि बकरी ऊँट वालों का भी तरीका रहा है कि किसी गरीब मिस्कीन के हवाले सिर्फ दूध पीने के लिये बकरी या ऊँट कर दिया करते थे।

आगे हज़रत अल्लामा फर्माते हैं, व अखरजल्दमामु अहमद अन सुफ्यानुब्नि हुसैन अन्नलअराया नखलुन तूहबु लिलमसाकीन फला यस्ततीऊन अय्यन्तज़िरू बिहा फरख़ख़स लहुम अय्यबीऊहा बिमा शाऊ मिनत्तमरि या'नी अराया उन खजूरों को कहा जाता है जो मसाकीन को आरियतन बखिशश के तौर पर दे दी जाती हैं। फिर उन मसाकीन को तंगदस्ती की वजह से उन खजूरों का फल पुख्ता होने का इतिज़ार करने की ताब नहीं होती। पस उनको रुख़सत दी गई कि वो जैसे मुनासिब जानें सूखी खजूरों से उनका तबादला कर सकते हैं। व क़ालल्जौहरी हियम्रख़लतुल्लती युअरीहा साहिबुहा रजुलन मुहताजन बिअय्यजअल लहू षमरह आमन या'नी जौहरी ने कहा कि ये वो खजूर हैं जिनके फलों को उनके मालिक किसी मुहताज को आरियतन महज़ बतौर बखिशश साल भर के लिये दे दिया करते हैं। अराया की और भी बहुत सी सूरतें बयान की गई हैं तप्सील के लिये फ़तहूल बारी का मुतालआ ज़रूरी है।

अल्लामा शौकानी (रह.) आखिर में फर्माते हैं, वल्हासिल अन्न कुल्ल सूरतिन मिन सुवरिल्अराया व रह बिहा हदीषुन सहीहुन औ षबत अन अहलिश्शरइ व अहल्लिगति फ़हिय आइजतुन लिदुख़ूलिहा तहत मुत्लक्किल्इज्जि वत्तख़सीमि फ़ी अज़िल्अहादीषि अला बअजिस्सुवरि व ला युनाफ़ी मा षबत फ़ी ग़ैरिही या'नी बेअ अराया की जितनी भी सूरतें सहीह हदीष में वारिद हैं या अहले शरअ या अहले लुगत से वो प्राबित हैं वो सब जाइज़ हैं। इसलिये कि वो मुत्लक्क इज्ज के तहत दाख़िल हैं और कुछ अहादीष कुछ सूरतों में जो बतौर नज़ वारिद हैं वो उनके मनाफ़ी नहीं हैं जो कुछ उनके ग़ैर से प्राबित हैं।

बेअ अराया के जवाज़ में अहम पहलू गुरबा व मसाकीन का मफ़ाद है जो अपनी तंगदस्ती की वजह से फलों के पुख्ता होने का इतिज़ार करने से मा'ज़ूर (असमर्थ) होते हैं। उनको फ़िलहाल शिकमपरी (पेट भरने) की ज़रूरत है। इसलिये उनको इस बेअ के लिये इजाज़त दी गई। प्राबित हुआ कि अक्ले सहीह भी उसके जवाज़ ही की ताईद करती है।

सनद में मण्कूरा बुजुर्ग हज़रत नाफ़ेअ सरजिस के बेटे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के आज़ादकर्दा हैं। देलमी थे और अकाबिर ताबेअीन से हैं। इब्ने उमर (रज़ि.) और अबू सईद (रज़ि.) से हदीष की समाअत की है। उनसे बहुत से लोगों ने जिनमें जुहरी और इमाम मालिक भी हैं। रिवायत की है। हदीष के बारे में शुत्तर याफ़ता लोगों में से हैं। नेज़ उन षिक्काह रायियों में से जिनकी रिवायत पर मुकम्मल ए'तिमाद होता है और जिनकी रिवायत कर्दा अहादीष पर अमल किया जाता है हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की हदीषों का बड़ा हिस्सा उन ही पर मौकूफ़ है। इमाम मालिक (रह.) फर्माते हैं कि जब मैं नाफ़ेअ के वास्ते से हदीष सुन लेता हूँ तो फिर किसी और रावी से सुनने के लिये बेफ़िक्र हो जाता हूँ। 117 हिजरी में वफ़ात पाई। रहिमहुमुल्लाह।

**बाब 85 : फलों की पुख्तगी मा'लूम होने से पहले उनको बेचना मना है**

٨٥- بَابُ بَيْعِ الثَّمَارِ قَبْلَ أَنْ يَتَدَوَّ حَلَاخُهَا

मेवे की बेअ पुख्तगी से पहले इब्ने अबी लैला और शौरी के नज़दीक मुत्लक्कन बातिल है। कुछ ने कहा जब काट लेने की शर्त की जाए बातिल है वरना बातिल नहीं। इमाम शाफ़िई और अहमद और जुम्हूर इलमा का यही क़ौल है।

2193. लैष बिन सअद ने अबुज्जिनाद अब्दुल्लाह बिन ज़ववान से नक़ल किया कि इर्वा बिन ज़ुबैर, बन्ू हारिषा के सहल बिन अबी हज़्मा अंसारी (रह.) से नक़ल करते थे। और वो ज़ैद बिन

٢١٩٣- وَقَالَ الثَّوْبِيُّ عَنْ أَبِي الزُّنَابِ: كَانَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ يُحَدِّثُ عَنْ سَهْلِ بْنِ

प्राबित (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में लोग फलों की खरीद व फरोख्त (दरख्तों पर पकने से पहले) करते थे। फिर जब फल तोड़ने का वक़्त आता, और मालिक (क़ीमत का) तक्काज़ा करने आते तो खरीददार ये बहाना करने लगता कि पहले ही उसका गाभा खराब और काला हो गया, उसको बीमारी हो गई, ये तो टिठुर गया फल बहुत ही कम आए। उसी तरह अलग अलग आफ़तों को बयान करके मालिकों से झगड़ते (ताकि क़ीमत में कमी करा लें) जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास इस तरह के मुक़द्दमात बढ़ी ता'दाद में आने लगे तो आपने फ़र्माया कि जब इस तरह के झगड़े ख़त्म नहीं हो सकते तो तुम लोग भी मेवे के पकने से पहले उनको न बेचा करो। गोया मुक़द्दमात की क़सरत की वजह से आपने ये बतौर मश्विरा फ़र्माया था। खारिजा बिन ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) ने मुझे ख़बर दी कि ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) अपने बाग़ के फल उस वक़्त तक नहीं बेचते जब तक पुरैया न तुलूअ हो जाता और ज़र्दी और सुखी जाहिर न हो जाता। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा कि इसकी रिवायत अली बिन बहर ने भी की है कि हमसे हुक्काम बिन सलम ने बयान किया, उनसे अन्बसह ने बयान किया, उनसे ज़करिया ने, उनसे अबुज्जिनाद ने, उनसे इर्वा ने और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने और उनसे ज़ैद बिन प्राबित ने।

أَبِي حَتْمَةَ الْأَنْصَارِيِّ مِنْ نَبِيِّ حَارِثَةَ أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ زَيْدِ بْنِ قَابِثٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّاسُ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَتَاْعُونَ الثَّمَارَ فَإِذَا جَدَّ النَّاسُ وَخَضَرَ تَفَاضِيهِمْ قَالَ الْمُتَاعُ: إِنَّهُ أَصَابَ الثَّمَرَ الدَّمَاءُ، أَصَابَهُ مَرَأْسٌ، أَصَابَهُ فُسَامٌ - غَامَاتٌ يَخْتَجُونَ بِهَا - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَمَّا كَثُرَتْ عِنْدَهُ الْخُصُومَةُ فِي ذَلِكَ: فِيمَا فَلَا تَتَّبِعُوا حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحُ الثَّمَرِ، كَالْمَشْوَرَةِ يُشِيرُ بِهَا لِكَثْرَةِ خُصُومَتِهِمْ، وَأَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ قَابِثٍ أَنَّ زَيْدَ بْنَ قَابِثٍ لَمْ يَكُنْ يَبِيعُ ثَمَارَ أَرْضِهِ حَتَّى يَطْلُعَ الثَّرِيَاءُ، فَيَتَيْنِ الْأَصْفَرُ مِنَ الْأَحْمَرِ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ: رَوَاهُ عَلِيُّ بْنُ بَحْرٍ. قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدَةُ عَنْ زَكْرِيَاءَ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ سَهْلٍ عَنْ زَيْدٍ.

क़स्तलानी (रह.) ने कहा शायद आपने पहले ये हुक्म बतरीके मुलाह और मश्विरा दिया हो जैसा कि कल् मश्विरति युशीरु बिहा के लफ़्ज़ बतला रहे हैं। फिर उसके बाद क़त्लअन मना फ़र्मा दिया जैसे इब्ने इमर (रज़ि.) की हदीष में है। और उसका क़रीना ये है कि ख़ुद ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) जो इस हदीष के रावी हैं अपना मेवा पुख्तगी से पहले नहीं बेचते थे। पुरैया एक तारा है जो शुरू गर्मी में सुबह के वक़्त निकलता है। हिजाज़ के मुल्क (अरब देश) में उस वक़्त सख़्त गर्मी होती है और फल मेवे पक जाते हैं।

2194. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पुख़्ता होने से पहले फलों को बेचने से मना किया था। आपकी मुमानअत बेचने वाले और खरीदने वाले दोनों के लिये थी।

(राजेअ: 1486)

٢١٩٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا. ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَارِ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحُهَا، نَهَى الْبَائِعَ وَالْمَتَاعَ)).

[راجع: ١٤٨٦]



2195. हमसे इब्ने मुक्रातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें हुमैद तवील ने और उन्हें अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पकने से पहले दरख्त पर खजूर को बेचने से मना फ़र्माया है, अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा कि (हत्ता तज़हुव से) मुराद ये है कि जब तक वो पककर सुख न हो जाएँ। (राजेअ: 1488)

**तशरीह:** ज़हू की तफ़सीर में अल्लामा शौकानी फ़र्माते हैं, युकालु जहन्नख़लु यज़ूह इज़ा ज़हरत प्रमत्तुहू व अज़हा युज़ही इज़ा अहमर औ अस्फ़र या'नी जब खजूर का फल ज़ाहिर होकर पुख्तगी पर आने के लिये सुख या ज़र्द हो जाए तो उस पर ज़हन्नख़लु का लफ़्ज़ बोला जाता है और उसका मौसम आसाद का महीना है। उसमें अरब में घुरैया सितारा सुबह के वक़्त निकलने लगता है। अबू दाऊद में इज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मर्फूअन मरवी है इज़ा तलअन्नजुम सबाहा रफ़अतिल आहित अन कुल्लि बलद नजम से मुराद घुरैया है या'नी जिस मौसम में ये सितारा सुबह के वक़्त निकलना शुरू हो जाता है तो वो मौसम अब फलों के पकने का आ गया, और अब फलों के लिये ख़तरों का ज़माना ख़त्म हो गया। वन्नज्मु हुवप्पुरय्या व तलूउहा यक्रउ फ़ी अब्वलि फ़स्लिस्सैफ़ि व ज़ालिक इन्द इश्तिदादिल्हरि फ़ी बिलादिल्हिजाज़ि व इब्तिदाउ नज़िष्मिमारि व अख़ज अहमद मिन तरीकि उष्मानबि अब्दिल्लाहिबि मुराका सअलतुबन उमर अन बैइष्मिमारि फ़क्राल नहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन बैइष्मिमारि हत्ता तज़हबलआहतु कुलतु व मता ज़ालिक क़ाल हत्ता तल्लुअप्पुरय्या (नैलुल औतार) इस इबारात का उर्दू मफ़हूम वही है जो पहले लिखा गया है।

2196. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे सुलैम बिन हय्यान ने, उनसे सईद बिन मीना ने बयान किया, कहा कि मैं ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) से सुना, उन्होंने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने फलों का तुश्क़िह से पहले पहले बेचने से मना किया था। पूछा गया कि तुश्क़िह किसे कहते हैं तो आपने फ़र्माया कि माईल बज़दी या ब सुखी होने को कहते हैं कि उसे खाया जा सके (फल का पुख़ता होना मुराद है) (राजेअ: 1487)

**बाब 86 : जब तक खजूर पुख़ता न हो उसका बेचना मना है**

2197. मुझसे अली बिन हैशम ने बयान किया, कहा कि हमसे मुअल्ला बिन मंसूर ने बयान किया, उनसे हैशम ने बयान किया, उन्हें हुमैद ने ख़बर दी और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पुख़ता होने से पहले फलों को बेचने से मना किया है। और खजूर के बाग़ को ज़हू से पहले बेचने से मना फ़र्माया, आपसे पूछा गया कि ज़हू किसे कहते हैं?

٢١٩٥- حَدَّثَنَا ابْنُ مَقْبَلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ الطَّوِيلُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى أَنْ تُبَاعَ ثَمَرَةُ النَّخْلِ حَتَّى تَزْهَوْ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: يَعْنِي حَتَّى تَخْمَرَ. [راجع: ١٤٨٨]

٢١٩٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ سُلَيْمِ بْنِ حَيَّانٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاء قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُبَاعَ الثَّمَرَةُ حَتَّى تُتَشَقَّقَ. فَقِيلَ: وَمَا تُتَشَقَّقُ؟ قَالَ: تَخْمَرُ وَتَصْفَرُ وَيُؤْكَلُ مِنْهَا)). [راجع: ١٤٨٧]

٨٦- بَابُ بَيْعِ النَّخْلِ قَبْلَ أَنْ يَتَذَوَّ صَلَاحُهَا

٢١٩٧- حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ الْهَيْثَمِ قَالَ حَدَّثَنَا مُعَلَّى قَالَ حَدَّثَنَا هُثَيْمٌ قَالَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ أَنَّهُ ((نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَرَةِ حَتَّى يَتَذَوَّ صَلَاحُهَا، وَعَنِ النَّخْلِ

तो आपने जवाब दिया माईल ब सुखी या माइल ब जर्दी होने को कहते हैं। (राजेअ: 1488)

حَتَّى يَزْهُوَ. قِيلَ: وَمَا يَزْهُو؟ قَالَ: يَحْمَرُّ  
أَوْ يَصْفَرُّ. (راجع: ١٤٨٨)

गोया लफ्जे-ज़हू खजूर के फल के पीले या लाल पड़ने पर बोला जाता है।

**बाब 87 : अगर किसी ने पुख्ता होने से पहले ही फल बेचे फिर उन पर कोई आफत आई तो वो नुक़सान बेचने वाले को भरना पड़ेगा**

٨٧- بَابُ إِذَا بَاعَ الثَّمَارَ قَبْلَ أَنْ  
يَبْدُوَ صِلَاحَهَا، ثُمَّ أَصَابَتْهُ عَاقَةٌ فَهُوَ  
مِنَ الْبَائِعِ

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मज़हब ये मा'लूम होता है कि मेवों की बेअ पुख्तगी से पहले सहीह तो हो जाती है, मगर उसका ज़िमान बायेअ पर रहेगा (ज़िम्मेदारी बेचने वाले पर रहेगी)। मुश्तरी की कुल रक़म उसको भरनी पड़ेगी। हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं। जनहलबुखारी फ़ी हाज़िहि तर्जुमति इला सिहह तिल्बैड व इल्लम यब्दु सलाहू लाकिन्नहू ज़अलहू कब्ल मसलाहि मिन ज़मानिल्बाइए व मुक्तज़ाहू अन्नहू इज़ा लम युम्सिद फ़ल्बैड सहीहुन व हुव फ़ी ज़ालिक मुताबिउन लिज़्ज़ुहरी कमा औरदहू अन्हू फ़ी आख़िरिल्बाबि (फ़तुल बारी) या'नी इस बाब से इमाम बुखारी का रुज़्हान ज़ाहिर होता है कि वो फलों की पुख्तगी से पहले भी बेअ की सिहत के काइल हैं। मगर उन्होंने इस बारे में ये शर्त कायम की है कि उसके नुक़सान का ज़िम्मेदार बेचनेवाला होगा अगर कोई नुक़सान न हुआ, और फ़सल सहीह सलामत तैयार हो गई तो बेअ सहीह होगी, और फ़सल ख़राब होने की सूत में नुक़सान बेचने वाले को भुगतना होगा। इस बारे में आपने इमाम जुहरी से मुताबअत की है जैसा कि आख़िर बाब में उनसे नक़ल भी फ़र्माया है। इस तफ़्सील के बावजूद बेहतर यही है कि फलों की पुख्तगी से पहले सौदा न किया जाए क्योंकि इस सूत में बहुत सारे मफ़ासिद पैदा हो सकते हैं। जिन अह्दादीष में मुमानअत आई है उनको इसी एहतियात पर महमूल करना है। और यहाँ इमाम बुखारी (रह.) का रुज़्हान जिस जवाज़ पर है वो मशरूत है। इसलिये दोनों क्रिस्म की रिवायतों में तत्बीक़ ज़ाहिर है। ज़हू की तफ़्सीर खुद हदीष में मौजूद है। पहले उसका बयान हो भी चुका है।

2198. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फलों को ज़हू से पहले बेचने से मना किया है। उनसे पूछा गया कि ज़हू किसे कहते हैं तो जवाब दिया कि सुखी होने को। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम ही बताओ, अल्लाह तआला के हुक्म से फलों पर कोई आफ़त आ जाए तो तुम अपने भाई का माल आख़िर किस चीज़ के बदले लोगे? (राजेअ: 1488)

٢١٩٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ بَيْعِ الثَّمَارِ حَتَّى تَزْهُيَ. فَقِيلَ وَمَا تَزْهُي؟ قَالَ: حَتَّى تَحْمَرَّ. فَقَالَ: أَرَأَيْتَ إِذَا مَنَعَ اللَّهُ الثَّمَرَةَ بِمَ يَأْخُذُ أَخَذَكُمْ مَالٌ  
أَخْبَرْتُمْ؟ (راجع: ١٤٨٨)

2199. लैष ने कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि एक शख्स ने अगर पुख्ता होने से पहले ही (दरख़्त पर) फल खरीदे, फिर उन पर कोई आफ़त आ गई तो जितना नुक़सान हुआ, वो सब अमल मालिक को भरना पड़ेगा। मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि

٢١٩٩- قَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: (رَأَى أَنَّ رَجُلًا اشْتَاَعَ ثَمَرًا قَبْلَ أَنْ يَبْدُوَ صِلَاحَهُ، ثُمَّ أَصَابَتْهُ عَاقَةٌ كَانَ مَا أَصَابَهُ عَلَى رَبِّهِ. أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, पुख्ता होने से पहले फलों को न बेचो, और न दरख्त पर लगी हुई खजूर को टूटी हुई खजूर के बदले में बेचो। (राजेअ: 1486)

### बाब 88 : अनाज उधार (एक मुदत मुकर्रर करके) खरीदना

2200. हमसे इमर बिन हफ्स बिन गयास ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, कहा कि हमने इब्राहीम के सामने क़र्ज़ में गिरवी रखने का ज़िक्र किया तो उन्होंने ने कहा कि उसमें कोई हर्ज नहीं है। फिर हमसे अस्वद के वास्ते से बयान किया कि उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुकर्रर मुदत के क़र्ज़ पर एक यहूदी से ग़ल्ला खरीदा, और अपनी ज़िरह उसके यहाँ गिरवी रखी थी। (राजेअ: 2068)

**तशरीह:** मुक़सदे बाब ये है कि ग़ल्ला बचक़ते ज़रूरत उधार भी खरीदा जा सकता है। और ज़रूरत लाहिक हो तो उस क़र्ज़ के सिलसिले में अपनी किसी भी चीज़ को गिरवी रखना भी जाइज़ है। और ये भी प्राबित हुआ कि इस किस्म के दुनियावी मुआमलात ग़ैर-मुस्लिमों से भी किये जा सकते हैं। खुद नबी करीम (ﷺ) ने एक यहूदी से ग़ल्ला (अनाज) उधार हासिल किया था और आप पर ख़ूब वाज़ेह था कि यहूदियों के यहाँ हर किस्म के मुआमलात होते हैं। उन हालात में भी आपने उनसे ग़ल्ला उधार लिया और उनके इत्मीनाने मज़ीद के लिये अपनी ज़िरहे मुबारक को उस यहूदी के यहाँ गिरवी रख दिया।

सनद में मज़क़ूर रावी हज़रत अअमश (रह.) सुलैमान बिन मेह्रान काहेली असदी हैं। बनू काहिल के आज़ाद कर्दा हैं। बनू काहिल एक शाख़ बनू असद ख़ुज़ैमा की है। ये 60 हिजरी में रै में पैदा हुए और किसी ने उनको उठाकर कूफ़ा में लाकर बेच दिया तो बनी काहिल के किसी बुजुर्ग ने ख़रीदकर उनको आज़ाद कर दिया। इल्मे हदीष व क़िरात के मशहूर अइम्मा में से हैं कूफ़ा की रिवायात का ज़्यादा मदार उन पर ही है। 148 हिजरी में वफ़ात पाई (रह.)। नीज़ हज़रत अस्वद भी मशहूर ताबेओ हैं जो इब्ने हिलाल महारिबी से मशहूर हैं। अमर बिन मुआज़ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। और उनसे जुहरी ने रिवायत की है। 84 हिजरी में वफ़ात पाई (रह.)। आमीन।

### बाब 89 : अगर कोई शख़्स ख़राब खजूर के बदले में अच्छी खजूर लेना चाहे

2201, 02. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उन्होंने ने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुल मजीद बिन सहल बिन अब्दुरहमान ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ैबर में एक शख़्स को

عَنْهُمْ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ( لَا تَبَايَعُوا الْفَتَوَخَى يَتَذَوُّوا صِلَاحَهَا ، وَلَا تَبَايَعُوا الثَّمَرَ بِالثَّمَرِ ) . ( راجع : ١٤٨٦ )

٨٨ - بَابُ شِرَاءِ الطَّعَامِ إِلَى أَجَلٍ  
٢٢٠٠ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ عِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ : ( ذَكَرْنَا عِنْدَ إِبْرَاهِيمَ الرُّمَيْنِ فِي السَّلَفِ لِقَاءَ : لَا بَأْسَ بِهِ . ثُمَّ حَدَّثَنَا عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اشْتَرَى طَعَامًا مِنْ يَهُودِيٍّ إِلَى أَجَلٍ فَرَهَنَهُ وَرَعَهُ ) . ( راجع : ٢٠٦٨ )

٨٩ - بَابُ إِذَا أَرَادَ بَيْعَ تَمْرٍ بِتَمْرٍ خَيْرٌ مِنْهُ

٢٢٠٢, ٢٢٠١ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيْبِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ

तहसीलदार बनाया। वो साहब एक इम्दा क्रिस्म की खजूर लाए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कि क्या खैबर की तमाम खजूर, इसी तरह की होती हैं। उन्होंने जवाब दिया कि नहीं, अल्लाह की क्रिस्म या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम तो इसी तरह एक साअ खजूर, (उससे घटिया खजूरों के) दो साअ देकर खरीदते हैं। और दो साअ तीन साअ के बदले में लेते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा न करो। अल्बत्ता घटिया खजूर को पहले बेचकर इन पैसों से अच्छी क्रिस्म की खजूर खरीद सकते हो।

(दीगर मक़ाम: 2302, 4244, 4246, 7350)

اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اسْتَعْمَلَ رَجُلًا عَلَى خَيْرٍ، فَجَاءَهُ بِتَمْرِ خَيْرٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: أَكُلْتُ تَمْرَ خَيْرٍ هَكَذَا؟ قَالَ: لَا وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا لَنَأْخُذُ الصَّاعَ مِنْ هَذَا بِالصَّاعَيْنِ وَالصَّاعَيْنِ بِالثَّلَاثَةِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: لَا تَفْعَلْ، بَعِ الْجَمْعَ بِالذَّرَاهِمِ ثُمَّ انْبَعِ بِالذَّرَاهِمِ خَيْرًا)).

[أطرافه في: ٢٣٠٢، ٤٢٤٤، ٤٢٤٦]

[٧٣٥٠]

**तशरीह:** इस सूरत में ब्याज से महफूज रहेगा। ऐसा ही सोने के बदले में दूसरा सोना कमोबेश लेने की जरूरत है, तो पहले सोने को रुपयों या अस्बाब के बदल बेच डाले। फिर रुपयों या अस्बाब के बदले दूसरा सोना ले ले। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, व फ़िल्हदीषि जवाज़ुन इख़ितयारुत्तअमि व जवाज़ुल वकालति फ़िल बैअ व ग़ैरिही व फ़ीहि अन्नल बुयूअल फ़ासिदत तुरुहु या नी इस हदीष से प्राबित हुआ कि अच्छे ग़ल्ले को पसन्द करना जाइज़ है। और बैअ व ग़ैरह में वकालत दुस्त है और ये भी कि बैअ फ़ासिद को रद्द किया जा सकता है।

इस हदीष में खैबर का ज़िक्र आया है जो यहूदियों की एक बस्ती मदीना शरीफ़ से शिमाल मशरिफ़ (उत्तर-पूर्व) में तीन चार मंज़िल के फ़ासले पर वक़्अ थी। उस मक़ाम पर मदीना के यहूदी क़बाइल को उनकी मुसलसल ग़दरियों और फ़ित्ना अंगेज़ियों की वजह से जलावतन कर दिया गया था और यहाँ आने के बाद वो दूसरे यहूदियों को साथ लेकर हर वक़्त इस्लाम के इस्तिज़ाल (जड़ से उखाड़ने) के लिये तदबीरें करते रहते थे। इस तरह खैबर आम इश्तिज़ाल और फ़सादात का मरकज़ (केन्द्र) बना हुआ था। उनकी उन ग़लत कोशिशों को पामाल करने और वहाँ क़यामे अमन के लिये आँहज़रत (ﷺ) ने मुहर्रम 7 हिज़री में चौदह सौ जौनिसार सहाबा किराम के साथ सफ़र फ़र्माया। खैबर के यहूदियों ने ये इत्तिला पाकर अरब की तमाम क़ौमों की तरफ़ इमदाद (सहायता) के लिये अपने क़ासिद व सुफ़राअ (संदेशवाहक) दौड़ाए। मगर सिर्फ़ बनी फ़ुज़ारा उनकी मदद के लिये आए। वो भी मौक़ा पाकर मुसलमानों के क़ैदों के ग़ल्ले लूटकर वापस भाग गए और यहूद अकेले रह गये। बड़ी ख़ूबज जंग हुई, आखिर अल्लाह पाक ने अपने सच्चे रसूल (ﷺ) को फ़तहे मुबीन अन्ना फ़र्माई और यहूदियों की ज़बरदस्त हार हुई। आसपास भी यहूदियों के अलग-अलग मवाज़िआत थे। वतीह, सलालम, फ़िदक व ग़ैरह व ग़ैरह, उनके बाशिन्दों ने खुद ब खुद अपने आपको रसूल करीम (ﷺ) के हवाले कर दिया और मुआफ़ी के तलबगार हुए। आँहज़रत (ﷺ) ने निहायत फ़य्याज़ी से सबको मुआफ़ी दे दी उनकी जायदाद मन्कूला और ग़ैर-मन्कूला (चल व अचल सम्पत्ति) में कोई दस्तअंदाज़ी नहीं की गई। उनको पूरी मज़हबी आज़ादी भी दे दी गई। और ज़मीन की निस्फ़ पैदावार पर उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा उठाया गया, और वहाँ से ग़ल्ले की वसूली के लिये एक शख़्स को तहसीलदार मुकर्रर किया गया। उसी का ज़िक्र इस हदीष में मज़कूर है और ये बैअ का मामला भी इस तहसीलदार साहब के बारे में है। मज़ीद तफ़्सील अपने मुक़ाम पर आएगी।

**बाब 90 : जिसने पेवन्द लगाई हुई खजूरें या खेती खड़ी हुई ज़मीन बेची या ठेका पर दी तो मेवा और अनाज बायेअ का होगा**

٩٠- بَابُ مَنْ بَاعَ نَخْلًا قَدْ أُبْرِتَ،  
أَوْ أَرْضًا مَرْزُوعَةً، أَوْ بِإِجَارَةٍ

2203. अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि मुझसे इब्राहीम ने कहा, उन्हें हिशाम ने खबर दी, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अबी मुलैका से सुना, वो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के गुलाम नाफ़ेअ से खबर देते थे कि जो भी खजूर का दरख्त पेवन्द लगाने के बाद बेचा जाए और बेचते वक़्त फलों का कोई ज़िक्र न हो तो फल उसी के होंगे जिसने पेवन्द लगाया है। गुलाम और खेत का भी यही हाल है। नाफ़ेअ ने इन तीनों चीज़ों का नाम लिया था।

(दीगर मक़ाम : 2204, 2206, 2379, 2716)

۲۲۰۳- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ : وَقَالَ لِي إِبْرَاهِيمُ أَخْبَرَنِي هِشَامُ قَالَ أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ يُخْبِرُ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى ابْنِ عُمَرَ : «أَنْ أَيَّمَا نَخْلٍ يَبُتُّ قَدْ أَبْرَتْ لَمْ يَذْكُرِ الثَّمَرُ فَالْفَمَرُ لِلَّذِي أَبْرَهَا، وَكَذَلِكَ الْعِنْدُ وَالْحَرْثُ، سَمِيَ لَهُ نَافِعٌ مَوْلَاهُ الْفَلَاحَةُ».

[أطرافه في: ۲۲۰۴، ۲۲۰۶، ۲۳۷۹]

[۲۷۱۶]

या'नी अगर एक गुलाम बेचा जाए और उसके पास माल हो तो वो माल बायेअ (बेचने वाले) ही का होगा। इसी तरह लौण्डी अगर बिके तो उसका बच्चा जो पैदा हो चुका हो वो बायेअ ही का होगा। पेट का बच्चा मुशतरी का होगा लेकिन अगर खरीददार पहले ही उन फलों या लौण्डी गुलाम के मुता'ल्लिक चीज़ों के लेने की शर्त पर सौदा करे और वो मालिक उस पर राज़ी भी हो जाए तो फिर वो फल या लौण्डी गुलामों की वो सारी चीज़ें उसी खरीददार की होंगी। शरीअत का मंशा ये है कि लेन-देन के मामलात में फ़रीक़ेन का बाहमी तौर पर जुम्ला तफ़सीलात तै कर लेना और दोनों तरफ़ से उनका मंज़ूर कर लेना ज़रूरी है ताकि आगे चलकर कोई झगड़ा फ़साद पैदा न हो।

2204. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर किसी ने खजूर के ऐसे दरख्त बेचे हों जिनको पेवन्द किया जा चुका था तो उसका फल बेचने वाले ही का रहता है। अल्बत्ता अगर खरीदने वाले ने शर्त लगा दी हो। (कि फल समेत सौदा हो रहा है तो फल भी खरीददार की मिल्कियत में आ जाएंगे)

(राजेअ : 2203)

۲۲۰۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : «مَنْ بَاعَ نَخْلًا قَدْ أَبْرَتْ قَمَرَهَا لِلْبَائِعِ، إِلَّا أَنْ يَشْطُرَ الْمُبْتَاعُ».

[راجع: ۲۲۰۳]

**तशीह :** हदीष में लफ़्ज़ गुलाम भी आया है, जिसका मतलब ये कि अगर कोई शख्स अपना गुलाम बेचे तो उस वक़्त जितना माल गुलाम के पास है वो असल मालिक ही का समझा जाएगा और वो खरीदने वाले को सिर्फ़ खाली गुलाम मिलेगा। हाँ अगर खरीददार ये शर्त कर ले कि मैं गुलाम को उसके तमाम मिल्कियत समेत खरीदता हूँ, तो फिर सारे माल-अस्बाब खरीददार के होंगे। यही हाल पेवन्दी बाग़ का है। ये आपस की मामलादारी पर मौकूफ़ (आधारित) है। अज़े मज़रूआ की बेअ के लिये भी यही उसूल है। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, व हाज़ा कुल्लहू इन्द इत्लाकि बैइल्बुख़िल मिन ग़ैर तअरूज़िन लिल्मअर्ति फ़इन शरतहल्मुशतरी बिअन्न क़ाल इशतैतुन्नख़ल बिषमरतिहा कानत लिल्मुशतरी व इन शरतहल्बाइउ लिनप्सिही क़बलत्ताबीर कानत लहू या'नी ये मामला खरीददार पर मौकूफ़ है अगर उसने फलों समेत की शर्त पर सौदा किया है तो फल उसे मिलेंगे और अगर बायेअ ने अपने लिये उन फलों की शर्त लगा दी है तो बायेअ का हक़ होगा।

इस हदीष से फलों का पेवन्दी बनाना भी जाईज़ षाबित हुआ। जिसमें माहिरीने फ़न नर दरख़्तों की शाख़ काटकर मादा दरख़्त की शाख़ के साथ बाँध देते हैं और कुदरते खुदावन्दी से वो दोनों शाख़ें मिल जाती हैं। फिर वो पैवन्दी दरख़्त बक़़रत

फल देने लग जाता है। आजकल इस फ़न ने बहुत तरक्की की है और अब तो तजुर्बत जदीदा ने न सिर्फ़ पेड़ों बल्कि ग़ल्लाजात (अनाजों) तक के पौधों में इस अमल से कामयाबी हासिल की है यहाँ तक कि जानवरों पर भी ये तजुर्बत किये जा रहे हैं।

### बाब 91 : खेती का अनाज जो अभी दरख्तों पर हो माप की रू से ग़ल्ला के बदले बेचना

### 91- بَابُ بَيْعِ الزَّرْعِ بِالطَّعَامِ كَيْلًا

2205. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने मुजाबना से मना फ़र्माया या'नी बाग़ के फलों को, अगर वो खजूर हैं तो टूटी हुई खजूर के बदले नापकर बेचा जाए। और अगर अंगूर हैं तो उसे खुश्क अंगूर के बदले नापकर बेचा जाए। और अगर वो खेती है तो नापकर ग़ल्ला के बदले बेचा जाए। आपने इन तमाम क्रिस्मों के लेन-देन से मना किया। (राजेअ: 2171)

2205- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ سَمِعْتُ لَيْشًا عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْمُرَابَنَةِ: أَنْ يَبِيعَ ثَمَرُ خَاطِلٍ إِنْ كَانَ نَخْلًا بِثَمَرِ كَيْلًا، وَإِنْ كَانَ كَرْمًا أَنْ يَبِيعَهُ بِزَيْبٍ كَيْلًا، أَوْ كَانَ زَرْعًا أَنْ يَبِيعَهُ بِكَيْلِ طَعَامٍ. وَنَهَى عَنْ ذَلِكَ كُلِّهِ)) (رَاجِع: 2171)

**तशरीह:** हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, अज्मअल्ललमाउ अला अन्नहू ला यजुजु बैउज्जरइ क़बल अंय्यक्स्तअ बित्तआमि लिअन्नहू बैउन मजहूलुन व अम्मा बैउरुतबि ज़ालिक बियाबिसिही बअदलकत्इ व इम्कानुल मुमाप्रलति फ़ल्जुम्हूरू ला यजुजुन बैअ लिशैइन मिन ज़ालिक या'नी इस पर इलमा का इज्माअ है कि खेती को उसके काटने से पहले ग़ल्ले के साथ बेचना दुस्त नहीं। इसलिये कि वो एक मा'लूम ग़ल्ले के साथ मजहूल चीज़ की बेअ है। उसमें दोनों के लिये नुक़सान का अंदेशा है। ऐसे ही तर काटने के बाद खुश्क के साथ बेचना जुम्हूर इस क्रिस्म की तमाम बुयूअ को नाजाइज़ कहते हैं। उन सब में नफ़ा-नुक़सान दोनों अंदेशे हैं और शरीअते मुहम्मदिया ऐसे तमाम मुम्किन (यथासम्भव) नुक़सानात की बुयूअ को नाजाइज़ करार देती है।

### बाब 92 : खजूर के दरख्त को जड़ समेत बेचना

### 92- بَابُ بَيْعِ النَّخْلِ بِأَصْلِهِ

2206. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख्स ने भी किसी खजूर के दरख्त को पेवन्दी बनाया। फिर उस दरख्त ही को बेच दिया तो (उस मौसम का फल) उसी का होगा जिसने पेवन्दी किया है लेकिन अगर खरीददार ने भी शर्त लगा दी है। (तो ये अम दीगर है) (राजेअ: 2203)

2206- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ سَمِعْتُ لَيْشًا عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((أَيُّمَا امْرِئٍ أَرَى نَخْلًا ثُمَّ بَاعَ أَصْلَهَا فَلِلَّذِي أَرَى ثَمَرُ النَّخْلِ، إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ)) (رَاجِع: 2203)

मा'लूम हुआ कि यहाँ भी मामला खरीददार पर मौकूफ़ है। अगर उसने कोई शर्त लगाकर वो बेअ की है तो वो शर्त नाफ़िज़ होगी और अगर बग़ैर शर्त सौदा हुआ है तो उस मौसम का फल पहले मालिक ही का होगा। जिसने उन दरख्तों को पेवन्दी किया है हदीष से दरख्त का असल जड़ समेत बेचना प्राबित हुआ।

### बाब 93 : बेअे मुखाज़रा का बयान

### 93- بَابُ بَيْعِ الْمُخَاصَرَةِ

मेवा या अनाज पकने से पहले बेचना, कच्चेपन की हालत में जब वो सब्ज़ हो उसी को बेअे मुख़ाज़रा कहते हैं।

2207. हमसे इस्हाक़ बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उमर बिन युनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इस्हाक़ बिन अबी तलहा अंज़ारी ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुहाक़ला, मुख़ाज़रा, मुलामसा, मुनाबज़ा और मुजाबना से मना फ़र्माया है।

٢٢٠٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ وَهَبٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ : حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ أَبِي طَلْحَةَ الْأَنْصَارِيُّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ : ((نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ، عَنْ الْمُحَاكَلَةِ وَالْمُعَاذَرَةِ وَالْمُلَامَسَةِ وَالْمُنَابَذَةِ وَالْمُزَابَنَةِ)).

हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, बल्मुरादु बैउज़्ज़िमारी बल्हुबूबि क़ब्ल अय्यब्दु मलाहुआ या'नी मुख़ाज़रा के मा'नी पकने से पहले ही फ़सल को खेत में बेचना है और ये नाजाइज़ है मुहाक़ला का मफ़हूम भी यही है। दीगर वारिदा इस्तिलाहात (परिभाषाओं) के मा'नी उनके मुकामात पर मुफ़सल बयान हो चुके हैं।

2208. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने दरख़्त की ख़जूर को ज़हू से पहले टूटी हुई ख़जूर के बदले में बेचने से मना फ़र्माया। हमने पूछा कि ज़हू क्या है? उन्होंने फ़र्माया कि वो पक के सुख़ हो जाए या ज़र्द हो जाए। तुम ही बताओ कि अगर अल्लाह के हुक्म से फल न आ सका तो तुम किस चीज़ के बदले अपने भाई (ख़रीददार) का माल अपने लिये हलाल करोगे। (राजेअ: 1488)

٢٢٠٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ بَيْعِ زَهْرٍ بِالْقَمَرِ حَتَّى يَزْهَوْا. فَقُلْنَا لَأَنَسٍ : مَا زَهْرُهَا؟ قَالَ : تَحْمَرُ وَتَصْفَرُ. أَرَأَيْتَ إِنْ مَنَعَ اللَّهُ الْقَمَرَةَ يَمْ تَسْتَعِجِلُ مَا أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْكَ)). [راجع: ١٤٨٨]

**तशरीह:** हदीष अपने मआनी में मज़ीद तशरीह की मुहताज नहीं है। कोई भी ऐसा पहलू जिसमें ख़रीदने वाले या बेचने वाले के लिये नुक़सान होने का अंदेशा हो, शरीअत की निगाहों में नापसन्दीदा है। हाँ जाइज़ तौर पर सौदा होने के बाद नफ़ा-नुक़सान ये किस्मत का मामला है। तिजारत नफ़ा ही के लिये की जाती है, लेकिन कुछ दफ़ा घाटा भी हो जाता है लिहाज़ा ये कोई चीज़ नहीं। आजकल रेस बग़ैरह की शक्लों में जो धंधे चल रहे हैं, शरअन ये सब हराम और नाजाइज़ बल्कि सूदखोरी में दाख़िल हैं। हदीष के आख़िरी जुम्ला का मज़लब ज़ाहिर है कि तुमने अपना कच्चा बाग़ किसी भाई को बेच दिया और उससे तयशुदा रुपया भी वसूल कर लिया। बाद में बाग़ फल न ला सका, आफ़तज़दा हो गया या कम फल लाया तो अपने ख़रीददार भाई से जो रक़म तुमने वसूल की है वो तुम्हारे लिये किस ज़िंस के बदले हलाल होगी। पस ऐसा सौदा ही न करो।

**बाब 94 : ख़जूर का गाभा बेचना या खाना**

(जो सफ़ेद सफ़ेद अंदर से निकलता है)

2209. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने बयान किया। कहा कि हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे मुजाहिद ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर

٩٤- بَابُ بَيْعِ الْجُمَارِ وَأَخْبَرَهُ

٢٢٠٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ

(रज़ि.) ने कि मैं रसूले करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर था। आप (ﷺ) खजूर का गाभा खा रहे थे। उसी वक़्त मैं आपने फ़र्माया कि दरख़्तों में एक दरख़्त मर्दे मोमिन की मिशाल है मेरे दिल में आया कि कहूँ कि खजूर का दरख़्त है। लेकिन हाज़िरीन में, मैं ही सबसे छोटी उम्र का था (इसलिये बतौर अदब में चुप रहा) फिर आपने खुद ही फ़र्माया कि खजूर का दरख़्त है। (राजेअ : 61)

ये हदीस पहले पारे किताबुल इल्म में भी गुज़र चुकी है। और जब खाना दुरुस्त हुआ तो उसका बेचना भी दुरुस्त होगा। पस तर्जुमा बाब निकल आया। कुछ ने कहा कि खजूर के दरख़्त पर गूँद निकल आता था जो चर्बी की तरह सफ़ेद होता था। वो खाया जाता था। मगर उस गूँद के निकलने के बाद वो दरख़्त फल नहीं देता था।

### बाब 95 : खरीद व फ़रोख्त और इजारे में हर मुल्क के दस्तूर के मुवाफ़िक़

हुक्म दिया जाएगा उसी तरह माप और तौल और दूसरे कामों में उनकी निय्यत और रस्मों-रिवाज के मुवाफ़िक़ और क़ाज़ी शरैह ने सूत बेचने वालों से कहा जैसे तुम लोगों का रिवाज है उसी के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया जाएगा। और अब्दुल वहाब ने अघ्यूब से रिवायत की, उन्होंने मुहम्मद बिन सीरीन से कि दस का माल ग्यारह में बेचने में कोई क़बाहत नहीं। और जो ख़र्चा पड़ा है उस पर भी यही नफ़ा ले और आँहज़रत (ﷺ) ने हिन्दा (अबू सुफ़यान की बीवी) से फ़र्माया, तू अपना और अपने बच्चों का ख़र्च दस्तूर के मुवाफ़िक़ निकाल ले। और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि जो कोई मुहताज हो वो (यतीम के माल में से) नेक निय्यती के साथ ख़ाले। और इमाम हसन बसरी (रह.) ने अब्दुल्लाह बिन मिरदास से ग़धा किराये पर लिया तो उनसे उसका किराया पूछा, तो उन्होंने कहा कि दो दानिक़ है (एक दानिक़ दिरहम का छठा हिस्सा होता है) उसके बाद वो गधे पर सवार हुए। फिर दूसरी बार एक ज़रूरत पर आप आए और कहा कि मुझे ग़धा चाहिये। इस बार आप उस पर किराया मुक़रर किये बग़ैर सवार हुए और उनके पास आधा दिरहम भेज दिया।

मसलन किसी मुल्क में सौ रुपया भर का सेर मुरव्वज है तो जिसने सेर भर ग़ल्ला बेचा, उसको उसी सेर से देना होगा। इसी तरह मुल्क में जिस रुपये पैसे का रिवाज है अगर अक़्द में दूसरे सिक्के की शर्त न हो तो वही राइज सिक्का मुराद होगा। अल्लार्ज़ जहाँ जैसा दस्तूर है उसी दस्तूर के मुवाफ़िक़ बेअ व शरअ की जाएगी। दानिक़ दिरहम का छठा हिस्सा होता है। हज़रत हसन बसरी

عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يَأْكُلُ حِمَارًا، فَقَالَ: ((مِنَ الشَّجَرِ شَجَرَةٌ كَالرَّجُلِ الْمُؤْمِنِ)), فَارَدْتُ أَنْ أَقُولَ هِيَ النَّخْلَةُ، فَإِذَا أَنَا أَخَذْتُهُمْ، قَالَ : ((هِيَ النَّخْلَةُ)). (راجع: ٦١)

### ٩٥- بَابُ مَنْ أَجْرَى أَمْرَ الْأَمْصَارِ عَلَى مَا يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ فِي السُّوْعِ

وَالْإِجَارَةُ وَالْمِكَتَالُ وَالْوَزْنُ وَسُنْبُهُمْ عَلَى يَدَيْهِمْ وَمَذَاهِبُهُمُ الْمَشْهُورَةُ وَقَالَ شَرِيعٌ لِلْفَزَائِلِ: سَتَكُنُّمُ بَيْنَكُمْ رِبْحًا. وَقَالَ عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ: لَا بَأْسَ بِالْمَشْرُوعِ بِأَخَذٍ وَيَأْخُذُ لِلْفَقْرِ رِبْحًا. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَيْكُمْ مَا يَكْفِيكُمْ وَلَوْلَاكَ بِالْمَعْرُوفِ)). وَقَالَ تَعَالَى: ((وَمَنْ كَانَ قَبِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ)). وَاتَّقَى الْحَسَنُ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْثَدٍ حِمَارًا فَقَالَ: بِكُمْ؟ قَالَ: بِدَانَقِينَ، فَرَكَبَهُ ثُمَّ جَاءَ مَرَّةً أُخْرَى فَقَالَ الْحِمَارُ الْجِمَارُ، فَرَكَبَهُ وَلَمْ يَشَارِطْهُ فَبَعَثَ إِلَيْهِ بِصَفِ دَرَاهِمٍ.



(रह.) ने दस्तूरे मुर्व्वजा (प्रचलित नियम) पर अमल किया कि एक गधे का किराया दो दानिक होता है। एक दानिक उसे ज्यादा दे दिया, ताकि एहसान का एंतिराफ़ हो। हल जज़ाउल् इहसानि इल्लल एहसान (अरहमान : 60)

2210. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हुषैद तवील ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) को अबू तैबा ने पछना लगाया। तो आपने उन्हें एक साअ ख़जूर (मज़दूरी में) देने का हुक्म फ़र्माया। और उसके मालिकों से फ़र्माया कि वो उसके ख़िराज में कुछ कमी कर दें।

(राजेअ : 2102)

٢٢١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ حُمَيْدِ الطُّوَيْلِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((حَجَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَبُو طَيْبَةَ فَأَمَرَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِصَاعٍ مِنْ تَمْرٍ، وَأَمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يُخَفِّقُوا عَنْهُ مِنْ خِرَاجِهِ)).

[راجع: ٢١٠٢]

**तशरीह:** इस हदीष से बहुत से उमूर पर रोशनी पड़ती है। मसलन ये कि पछना लगवाना जाइज़ है और वो हदीष जिसमें उसकी मुमानअत वारिद है मन्सूख़ है। और ये भी साबित हुआ कि नौकरो, ख़ादियों, गुलामों से उनकी ताक़त के मुवाफ़िक़ ख़िदमत लेनी चाहिये। और उनकी मज़दूरी में कंजूसी न करनी चाहिये। और ये भी कि उप्परत में नक़दी के अलावा जिनसे भी (चीज़ें) देनी दुरुस्त हैं बशर्त कि मज़दूर पसन्द करे। ख़िराज से यहाँ वो टेक्स मुराद है जो उसके आका उससे रोज़ाना वसूल किया करते थे। आपने फ़र्माया कि उसमें कमी कर दें।

2211. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे इब्ना ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि मुआविया (रज़ि.) की वालिदा हज़रत हिन्दह (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) से कहा कि अबू सुफ़यान बख़ील आदमी है। तो क्या अगर मैं उनके माल में से छुपाकर कुछ ले लिया करूँ तो कोई हर्ज़ है? आपने फ़र्माया कि तुम अपने लिये और अपने बेटों के लिये नेक निय्यती के साथ इतना ले सकती हो जो तुम सबके लिये काफ़ी हो जाया करे।

(दीगर मक्लाम : 2460, 3825, 5359, 5364, 5370, 6641, 7161)

٢٢١١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((قَالَتْ هِنْدُ أُمُّ مُعَاوِيَةَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ: إِنَّ أَبَا سُلَيْمَانَ وَجَلَّ شَجِيحٌ، لَهْلَ عَلَى جَنَاحٍ أَنْ أَخَذَ مِنْ مَالِهِ سِرًّا؟ قَالَ: ((غُلِبِي أَنْتِ وَتَوَلَّي مَا يَكْفِيكِ بِالْمَعْرُوفِ)).

[أطرافه ن: ٢٤٦٠, ٣٨٢٥, ٥٣٥٩]

٥٣٦٤, ٦٦٤١, ٥٣٧٠, ٧١٦١

**तशरीह:** हज़रत हिन्दा बित्ते इत्बा ज़ोजा अबू सुफ़यान, हज़रत मुआविया (रज़ि.) की वालिदा हैं। इस हदीष से बीवियों के हुक्क पर भी रोशनी पड़ती है कि अगर शौहर नान-नफ़का न दें या बुख़ल (कंजूसी) से काम लें तो उनसे वसूल करने के लिये हर जाइज़ रास्ता इख़्तियार कर सकती हैं। मगर नेक निय्यती का लिहाज़ रखना ज़रूरी है और अगर महज़ फ़साद और ख़ाना ख़राबी महेनज़र है, तो फिर ये रुख़्सत (छूट) ख़त्म हो जाती है।

2212. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने नुमैर ने बयान किया, कहा कि हमें हिशाम ने ख़बर दी, (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्मान बिन

٢٢١٢- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ. ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ قَالَ: سَمِعْتُ عُثْمَانَ بْنَ مَرْثَدٍ قَالَ:

फ़र्क़द से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने हिशाम बिन उरवा से सुना, वो अपने बाप से बयान करते थे कि उन्होंने आइशा (रज़ि.) से सुना, वो फ़र्माती थीं कि (कुआन की आयत) जो शख़्स मालदार हो वो (अपने ज़ेरे परवरिश यतीम का माल हज़म करने से) अपने को बचाए। और जो फ़क़ीर हो वो नेक निव्यती के साथ उसमें से खा ले। ये आयत यतीमों के उन सरपरस्तों के बारे में नाज़िल हुई थी जो उनकी और उनके माल की निगरानी और देखभाल करते हों कि अगर वो फ़क़ीर हैं तो (उस ख़िदमत के बदले) नेक निव्यती के साथ उसमें से खा सकते हैं। (दीगर मक़ाम : 2765, 4575)

### बाब 96 : एक साड़ी अपना हिस्सा दूसरे साड़ी के हाथ बेच सकता है

2213. हमसे महमूद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुरज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने शुफ़आ का हक़ हर उस माल में करार दिया था जो तबसीमन हुआ हो। लेकिन जब उसकी हदबन्दी हो जाए और रास्ते भी फेर दिये जाएँ तो अब शुफ़आ का हक़ बाक़ी नहीं रहा।

(दीगर मक़ाम : 2214, 2257, 2495, 2496, 6976)

سَيَفْتُ هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ ((سَمِعَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: «وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَقِفِّفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ» أَنْزَلَتْ فِي وَالِي التَّيْمِ الَّذِي يُقِيمُ عَلَيْهِ وَيُصْلِحُ فِي مَالِهِ : إِنْ كَانَ فَقِيرًا أَكَلَ مِنْهُ بِالْمَعْرُوفِ»)).

[طرفاه : 2765, 4575]

### 96- بَابُ بَيْعِ الشَّرِيكَ مِنْ شَرِيكِهِ

2213- حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الشُّفْعَةَ فِي كُلِّ مَالٍ لَمْ يُقَسِّمْ، فَإِذَا وَقَعَتِ الْخُلُودُ وَصُرِفَتِ الطُّرُقُ فَلَا شُفْعَةَ)).

[أطرفاه : 2214, 2257, 2495, 2496]

[6976, 2496]

**तशरीह :** माल से मुराद ग़ैर-मन्कूला (अचल सम्पत्ति) है, जैसे मकान, ज़मीन, बाग़ वगैरह क्योंकि जायदाद मन्कूला में बिल इज्मा शुफ़आ नहीं है और अज़ा का क़ौल शाज़ है जो कहते हैं हर चीज़ में शुफ़आ है। यहाँ तक कि कपड़े में भी। ये हदीष शाफ़िइया के मज़हब की ताईद करती है कि हमसाया (पड़ोसी) को शुफ़आ का हक़ नहीं है सिर्फ़ शरीक को है। यहाँ इमाम बुखारी ने ये हदीष लाकर बाब का मतलब इस तरह से निकाला कि जब शरीक को शुफ़आ का हक़ हुआ तो वो दूसरे शरीक का हिस्सा ख़रीद लेगा। पस एक शरीक का अपना हिस्सा दूसरे शरीक के हाथ बेअ करना भी जाइज़ हुआ और यही बाब का तर्जुमा है।

शुफ़आ उस हक़ को कहा जाता है जो किसी पड़ोसी या किसी साड़ी को अपने दूसरे पड़ोसी या साड़ी की जायदाद में उस वक़्त तक बाक़ी रहता है जब तक वो साड़ी या पड़ोसी अपनी उस जायदाद को फ़रोख़्त न करे दे। शरीअत का हुक्म ये है कि ऐसी जायदाद की ख़रीद व फ़रोख़्त में हक़े शुफ़आ रखने वाला उसका मजाज़ है कि जायदाद अगर किसी ग़ैर ने ख़रीद ली हो तो वो उस पर दा'वा करे और वो बेअ अव्वल को फ़सख़ कराकर खुद उसे ख़रीद ले। ऐसे मामलात में अव्वलियत हक़े शुफ़आ रखने वाले ही को हासिल है। बाक़ी इस सिलसिले की बहुत सी तफ़सीलात हैं। जिनमें से कुछ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ अहादीष की रोशनी में बयान की हैं। प्रचलित मोहम्मडन लॉ (भारत) में भी इसकी बहुत सी सूत्रें हैं।

**बाब 97 : जमीन, मकान, अस्बाब का हिस्सा**  
अगर तक्सीम न हुआ हो तो उसका बेचना दुरुस्त है

2214. हमसे मुहम्मद बिन महबूब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हर ऐसे माल में शुफ़आ का हक़ क़ायम रखा जो तक्सीम न हुआ हो। लेकिन जब उसकी हुदूद क़ायम हो गई हों और रास्ता भी फेर दिया गया हो तो अब शुफ़आ का हक़ बाक़ी नहीं रहा।

हमसे मुसहद ने और उनसे अब्दुल वाहिद ने उसी तरह बयान किया, और कहा कि हर उस चीज़ में (शुफ़आ है) जो तक्सीम न हुई हो। उसकी मुताबअत हिशाम ने मअमर के वास्ते से की है और अब्दुर्रज़ाक़ ने ये लफ़ज़ कहे कि हर माल में उसकी रिवायत अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ ने जुहरी से की है। (राजेअ: 2213)

**बाब 98 : किसी ने कोई चीज़ दूसरे के लिये**  
उसकी इजाज़त के बग़ैर खरीद ली फिर वो भी

राज़ी हो गया तो ये मामला जाइज़ है

2215. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा कि हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मूसा बिन इब्रबा ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (स) से कि आप (ﷺ) ने फ़र्माय, तीन शख़्स कहीं बाहर जा रहे थे कि अचानक बारिश होने लगी। उन्होंने एक पहाड़ के ग़ार में जाकर पनाह ली। इत्तिफ़ाक़ से पहाड़ की एक चट्टान ऊपर से लुढ़की (और उस ग़ार के मुँह को बन्द कर दिया जिसमें ये तीनों पनाह लिये हुए थे) अब एक ने दूसरे से कहा कि अपने सबसे अच्छे अमल का जो तुमने कभी किया हो, नाम लेकर अल्लाह तआला से दुआ करो। इस पर उनमें से एक ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे मौँ-

٩٧- بَابُ بَيْعِ الْأَرْضِ وَالنَّوْرِ  
وَالْعُرُوضِ مُشَاعًا غَيْرَ مَقْسُومٍ

٢٢١٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُعْتَبَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا مُعْتَمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْشُّفْعَةِ فِي كُلِّ مَالٍ يُقَسَّمُ. فَإِذَا وَقَعَتِ الْخُدُودُ وَصُرِفَتِ الطَّرِيقُ فَلَا شُفْعَةَ)).

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بِهَذَا وَقَالَ: ((فِي كُلِّ مَا لَمْ يُقَسَّمْ)). ثَابِتُ هِشَامٍ عَنْ مُعْتَمَرٍ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: ((فِي كُلِّ مَالٍ)) وَرَوَاهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِسْحَاقَ عَنْ الزُّهْرِيِّ. [راجع: ٢٢١٣]

٩٨- بَابُ إِذَا اشْتَرَى شَيْئًا لِغَيْرِهِ  
بِغَيْرِ إِذْنِهِ فَرَضِي

٢٢١٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَرَجَ ثَلَاثَةٌ يَمْشُونَ فَأَمَّا بَهُمُ الْمَطَرُ، فَدَخَلُوا فِي غَارٍ فِي جَبَلٍ، فَانْحَطَّتْ عَلَيْهِمْ صَخْرَةٌ. قَالَ: فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ادْعُوا اللَّهَ بِالْأَمَلِ عَمَلٍ عَمِلْتُمُوهُ. فَقَالَ أَحَدُهُمْ: اللَّهُمَّ إِنِّي كَانَتْ لِي أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ، فَكُتِبَتْ أَخْرُجْ

बाप बहुत ही बूढ़े थे। मैं बाहर ले जाकर अपने मवेशी चराता था। फिर जब शाम को वापस आता तो उनका दूध निकालता और बर्तन में पहले अपने वालिदैन को पेश करता। जब मेरे वालिदैन पी चुकते तो फिर बच्चों को और अपनी बीवी को पिलाता। इत्तिफ़ाक़ से एक रात वापसी में देर हो गई। और जब मैं घर लौटा तो वालिदैन सो चुके थे। उसने कहा कि फिर मैंने पसन्द नहीं कि कि उन्हें जगाऊँ बच्चे मेरे क़दमों में भूखे पड़े रहे थे। मैं बराबर दूध का प्याला लिये हुए वालिदैन के सामने उसी तरह खड़ा रहा यहाँ तक कि सुबह हो गई। ऐ अल्लाह! अगर तेरे नज़दीक भी मैंने ये काम सिर्फ़ तेरी रज़ा हासिल करने के लिये किया था, तो हमारे लिये इस चट्टान को हटाकर इतना रास्ता तो बना दे कि हम आसमान को तो देख सकें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया। चुनौचे वो पत्थर कुछ हट गया। दूसरे शख्स ने दुआ की, ऐ अल्लाह! तू ख़ूब जानता है कि मुझे अपने चचा की एक लड़की से इतनी ज़्यादा मुहब्बत थी जितनी एक मर्द को किसी औरत से हो सकती है। उस लड़की ने कहा तुम मुझसे अपनी ख्वाहिश उस वक़्त तक पूरी नहीं कर सकते जब तक मुझे सौ अशरफ़ी न दे दो। मैंने उनके हासिल करने की कोशिश की, और आख़िर इतनी अशरफ़ी जमा कर ली। फिर जब मैं उसके पास (ज़िना के इरादे से) बैठा तो वो बोली, अल्लाह से डर, और मुहर को नाज़ाइज़ तरीक़े पर न तोड़ इस पर मैं खड़ा हो गया और मैंने उसे छोड़ दिया। अब अगर तेरे नज़दीक भी मैंने ये अमल तेरी रज़ा के लिये किया था। तू हमारे लिये (निकलने का) रास्ता बना दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया चुनौचे वो पत्थर दो तिहाई हट गया। तीसरे शख्स ने दुआ की, ऐ अल्लाह! तू जानता है कि मैंने एक मज़दूर से एक फ़रक़ जवार पर काम कराया था। जब मैंने उसकी मज़दूरी उसे दे दी तो उसने लेने से इंकार कर दिया। मैंने उस जवार को लेकर बो दिया (खेती जब कटी तो उसमें इतनी जवार पैदा हुई कि) उससे मैंने एक बैल और एक चरवाहा ख़रीद लिया। कुछ अर्से बाद फिर उसने आकर मज़दूरी माँगी, कि अल्लाह के बन्दे मुझे मेरा हक़ दे दे। मैंने कहा कि इस बैल और उसके चरवाहे के पास जाओ कि ये तुम्हारे ही मिल्क हैं। उसने कहा कि मुझसे मज़ाक़ करते हो। मैंने कहा, मैं मज़ाक़ नहीं करता, वाक़ई

فَارْعَى، ثُمَّ أَجِئُهُ فَأَخْلُبُ، فَأَجِئُهُ بِالْجَلَابِ فَأَتِي بِهِ أَبَوَيَّ فَشَرَبَانِ، ثُمَّ أَتْنِي الْمَتْنَةَ وَأَهْلِي وَأَمْرَأَتِي. اخْتَبَسْتُ لَيْلَةً فَجِئْتُ، فَإِذَا هُمَا نَائِمَانِ، قَالَ فَكَرِهْتُ أَنْ أَوْقِظَهُمَا، وَالْمَتْنَةُ يَصْغَاوْنَ عِنْدَ رَجُلِي، فَلَمْ يَزَلْ ذَلِكَ ذَائِبًا وَذَائِبُهُمَا حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ. اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ تَعْلَمُ أَنِّي لَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ عَنَّا فُرْجَةً نَرَى مِنْهَا السَّمَاءَ. قَالَ: فَفَرَجَ عَنْهُمْ. وَقَالَ الْآخَرُ: اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ تَعْلَمُ أَنِّي كُنْتُ أَحِبُّ امْرَأَةً مِنْ بَنَاتِ عَمِّي كَأَشَدَّ مَا يُحِبُّ الرَّجُلُ النِّسَاءَ، فَقَالَتْ لَا تَنَالْ ذَلِكَ مِنْهَا حَتَّى تُعْطِيَهَا مِائَةَ دِينَارٍ، فَسَمِعْتُ فِيهَا حَتَّى جَمَعْتُهَا، فَلَمَّا لَعَدْتُ بَيْنَ رَجُلَيْهَا قَالَتْ: اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تَفْضُ الْخَنَاءَ إِلَّا بِحَقِّهِ، فَقُمْتُ وَتَرَكْتُهَا، فَإِنْ كُنْتُ تَعْلَمُ أَنِّي لَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ لَأَفْرُجَ عَنَّا فُرْجَةً. قَالَ فَفَرَجَ عَنْهُمْ الْفُلَيْنِ. وَقَالَ الْآخَرُ: اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ تَعْلَمُ أَنِّي اسْتَأْجَرْتُ أَحَبَّاءَ بِفَرْقٍ مِنْ ذُرَّةٍ، فَأَعْطَيْتُهُ وَأَبَى أَنْ يَأْخُذَ، فَسَمِعْتُ إِلَى ذَلِكَ الْفَرْقِ فَرَزَعْتُهُ حَتَّى اشْتَرَيْتُ بِهِ بَقَرًا وَرَاعِيَهَا، ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللَّهِ أَعْطَيْتَ حَقِّي، فَقُلْتُ: انْطَلِقْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ وَرَاعِيَهَا لِإِنِّهَا لَكَ. فَقَالَ: اسْتَهْزِئْ بِي؟ قَالَ: فَقُلْتُ: مَا اسْتَهْزِئُ بِكَ، وَلَكِنَّهَا لَكَ. اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ تَعْلَمُ

ये तुम्हारे ही हैं। तो ऐ अल्लाह! अगर तेरे नज़दीक ये काम मैंने सिर्फ तेरी ही रज़ा के लिये किया था तू यहाँ हमारे लिये (इस चट्टान को हटाकर) रास्ता बना दे। चुनाँचे वो ग़ार पूरा खुल गया और वो तीनों शख्स बाहर आ गये। (दीगर मक़ाम : 2272, 2333, 4365, 5974)

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस बाब में जो ये हदीष लाए, इससे मक़सूद अखीर शख्स का बयान है क्योंकि बग़ैर मालिक से पूछे उस ज़वार को दूसरे काम में सर्फ़ (खर्च) किया और उससे नफ़ा कमाया, और बेअ को भी उस पर क़यास किया तो बेअ फ़िज़ूली, निकाहे फ़िज़ूली की तरह सहीह है और मालिक की इज़ाज़त पर नाफ़िज़ हो जाती है।

इस हदीषे तवील से आमाले झालेहा को बतौर वसीला अल्लाह के सामने पेश करना भी प्राबित हुआ कि असल वसीला ऐसे ही आमाले झालेहा का है और आयते करीमा वब्तगू इलैहिल वसीलत का यही मफ़हूम है। जो लोग क़ब्रों, मज़ारों और मुर्दा बुजुगों का वसीला ढूँढते हैं, वो ग़लती पर हैं और ऐसे वसाइल कुछ दफ़ा शिक़ियात की हद में दाख़िल हो जाते हैं।

हदीष में चरवाहे का वाक़िया है जिससे बच्चों पर जुल्म का शुब्हा होता है कि वो रात भर भूखे बिलखते रहे मगर ये जुल्म नहीं है। ये उनकी नेक निय्यती थी कि वो पहले वालिदैन को पिलाना चाहते थे। और आयते करीमा वयूअप्रिख़ना अला अन्फुसिहिम व लौ कान बिहिम ख़स्राप्तुन (अल हशर : 9) का एक मफ़हूम ये भी हो सकता है जो यहाँ मज़कूर है। व हुना तरीकुन आख़र फ़िल्जवाज़ि व हुव अन्नहू (ﷺ) ज़कर हाज़िहिल्लिकस्सत फ़ी मअरज़िल्मदहि वप्ननाइ अला फ़ाइलिहा व अक़रहू अला ज़ालिक व लौ कान ला यज़ूज़ु लबय्यनहू या'नी बाब के मज़मून मज़कूर का जवाज़ यँ भी प्राबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने इस क़िस्से को और उसमें उस मज़दूर के बारे में अम् वाक़िया को बतौर मदह व पना ज़िक्र फ़र्माया। इसी से बाब का मज़मून प्राबित हुआ, अगर ये फ़ेअल नाजाइज़ होता तो आप उसे बयान फ़र्मा देते।

**बाब 99 : हर्बी काफ़िर, गुलाम, लौण्डी ख़रीदना और उसका आज़ाद करना और हिबा करना**

हर्बी काफ़िर वो जो इस्लामी हुकूमत से जंग बरपा हुए हों और हर्ब (दुश्मन) सिलसिले के बीच मुताबिक़ क़वाइद शरई जारी हो।

2216. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद थे कि एक मुस्टण्डा लम्बे क़द वाला मुश्रिक बकरियाँ हाँकता हुआ आया। आप (ﷺ) ने उससे फ़र्माया कि ये बेचने के लिये हैं या अतिया हैं? या आपने ये फ़र्माया कि (ये बेचने के लिये हैं) या हिबा करने के लिये? उसने कहा कि नहीं बल्कि बेचने के लिये हैं। चुनाँचे आपने उससे एक बकरी ख़रीद ली।

٩٩- بَابُ الشَّرَاءِ وَالْبَيْعِ مَعَ الْمُشْرِكِينَ وَأَهْلِ الْحَرْبِ

٢٢١٦- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ مُشْرِكٌ مُشْعَانٌ طَوِيلٌ بَعَثَ يَسْأَلُهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَيْعًا أَمْ عَطِيَّةً - أَوْ قَالَ : أَمْ هِبَةً)) - قَالَ : لَا، بَلْ بَيْعٌ، فَاشْتَرَى مِنْهُ شَاةً)).

(दीगर मक़ाम : 2618, 5382)

[طرفاء في : ٢٦١٨ ، ٥٣٨٢]

**तशरीह :** हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, मुआमलतुल्लकुफ़फ़ारि जाइज़तुन इल्ला बैउम्मा यस्तईनु बिही अहलुलहबि अल्लमुस्लिमीन वख़तलफ़लज़लमाउ फ़ी मुबायअति मन ग़ालब मालुहुल्हराम व हुज्जतुन मन रख़ख़स फ़ीहि क़ौलुहु (ﷺ) लिलमुश्रिकि अबैअन अम हिवतन व फ़ीहि जवाज़ु बैइल्काफ़िरि व इब्बातु मिल्लिकिही अला मा फ़ी यदिही व जवाज़ु कुबूलिल्हदयति मिन्हु (फ़तुल बारी) या' नी कुफ़फ़ार से मामलादारी करना जाइज़ है मगर ऐसा मामला दुरुस्त नहीं जिससे वो अहले इस्लाम के साथ जंग करने में मदद पा सके। और इस हदीष की रू से काफ़िर की बेअ को नाफ़िज़ मानना भी प्राबित हुआ। और ये भी कि अपने माल में वो इस्लामी क़ानून में मालिक ही माना जाएगा। और इस हदीष से काफ़िर का हदिया कुबूल करना भी जाइज़ प्राबित हुआ। ये जुम्ला क़ानूनी उमूर हैं जिनके लिये इस्लाम में हर मुम्किन गुंजाइश रखी गई है। मुसलमान जबकि सारी दुनिया में आबाद हैं, उनके बहुत से लेन-देन के मामलात ग़ैर-मुस्लिमों के साथ होते रहते हैं। लिहाज़ा उन सबको क़ानूनी सूरीयों में बतलाया गया और इस सिलसिले में बहुत फ़राख़दिली से काम लिया गया है। जो इस्लाम के दीने फ़ितरत और आलमगीर मज़हब होने की वाज़ेह दलील है।

**बाब 100 : मुश्रिकों और हर्बी काफ़िरों के साथ**

**ख़रीद व फ़रोख़त करना**

١٠٠- بَابُ شِرَاءِ الْمَمْلُوكِ مِنَ

الْحَرَبِيِّ وَهَيْبَتِهِ وَعَتَقِهِ

और नबी करीम (ﷺ) ने सलमान फ़ारसी (रज़ि.) से फ़र्माया था कि अपने (यहूदी) मालिक से, मुकातबत कर ले। हालाँकि सलमान (रज़ि.) अज़ल में पहले ही से आज़ाद थे। लेकिन काफ़िरों ने उन पर जुल्म किया कि बेच दिया। और इस तरह वो गुलाम बना दिये गये। इसी तरह अम्मार, सुहैब और बिलाल (रज़ि.) भी क़ैद करके (गुलाम बना लिये गये थे और उनके मालिक मुश्रिक थे) अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ही ने तुममें एक को एक पर फ़ज़ीलत दी है रिज़्क में। फिर जिनकी रोज़ी ज़्यादा है। वो अपनी लौण्डी गुलामों को देकर अपने बराबर नहीं कर देते। क्या ये लोग अल्लाह का एहसान नहीं मानते।

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِسَلْمَانَ: كَاتِبٌ، وَكَانَ حُرًّا فَظَلَمُوهُ وَبَاغَوْهُ. وَسَيِّئَ عَمَلًا وَصَهَّبَ وَبَلَّانَ. وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: هُوَ اللَّهُ فَضَّلَ بِنَفْسِكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ، فَمَا الَّذِينَ فَضَّلُوا بَرَادِي رِزْقِهِمْ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ، أَفَبِعَمَلِهِ اللَّهُ يَجْحَدُونَ؟

**तशरीह :** कि उसने मुख़्तलिफ़ हालात के लोग पैदा किये। कोई गुलाम है कोई बादशाह, कोई मालदार है कोई मुहताज, अगर सब बराबर और यक्साँ होते तो कोई किसी का काम काहे को करता, ज़िंदगी दूभर हो जाती। पस ये इख़्तिलाफ़े हालात और तफ़ावुते दरजात इक़ तआला की एक बड़ी नेअमत है। इस आयत से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि काफ़िर, अपनी लौण्डी गुलामों के मालिक हैं और उनकी मिलक सहीह है क्योंकि उनकी लौण्डी गुलामों को मा मलकत अयमानिहिम फ़र्माया। जब उनकी मिलक सहीह हुई तो उनसे मोल लेना दुरुस्त होगा। (वहीदी)

किताबत उसको कहते हैं कि गुलाम मालिक को कुछ रुपया कई किस्तों में देना कुबूल करे। कुल रुपया अदा करने के बाद गुलाम आज़ाद हो जाता है।

हज़रत सलमान (रज़ि.) को काफ़िरों ने गुलाम बना रखा था। मुसलमानों ने उनको ख़रीदकर आज़ाद कर दिया। हदीषे सलमान (रज़ि.) में मज़ीद तफ़सीलात यूँ आई है। शुम्भ मर्र बी नफ़रुम्मिन क़ल्बि तुज्जारिन फ़हमलूनी मअहुम हत्ता इज़ा क़दमू बी वादियल्कुरा ज़लमूनी फ़बाऊनी मिन रजुलिन यहुदिथ्यिन (अल हदीष) या' नी मैं फ़ारसी नस्ल से मुता'ल्लिक हूँ। हुआ ये कि एक बार बनू कल्ब के कुछ सौदागर मेरे पास से गुजरे और उन्होंने मुझे उठाकर अपने साथ लगा लिया और आगे चलकर मज़ीद जुल्म मुझ पर उन्होंने ये किया कि मुझको एक यहूदी के हाथ बेचकर उसका गुलाम बना दिया।

हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) अरबी अन्सी हैं। मगर उनको इसलिये गुलामों में शुमार किया गया कि उनकी वालिदा सुमय्या (रज़ि.) नामी कुरैश की लौण्डियों में से थीं, उनकी कोख से ये पैदा हुए। उनके वालिद का नाम यासिर (रज़ि.) है। कुरैश ने उन सबके साथ गुलामों जैसा मामला किया। यासिर (रज़ि.) बनी मख़ज़ूम के हलीफ़ थे। मज़ीद तप्सीली हालात ये है कि हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) अन्सी हैं। बनी मख़ज़ूम के आज़ादकर्दा और हलीफ़ हैं। उसकी सूरत ये हुई कि हज़रत अम्मार (रज़ि.) के वालिद यासिर (रज़ि.) मक्का में अपने दो भाइयों के साथ जिनका नाम हारिष और मालिक था, अपने चौथे गुमशुदा भाई की तलाश में आए। फिर हारिष और मालिक तो अपने मुल्क यमन को वापस चले गए। मगर यासिर मक्का में मुक़ीम हो गए और अबू हुज़ैफ़ा बिन मुगीरह के हलीफ़ बन गये। अबू हुज़ैफ़ा ने उनका निकाह अपनी बांदी सुमय्या (रज़ि.) नामी से कर दिया। जिनके बतन से हज़रत अम्मार (रज़ि.) पैदा हुए। अबू हुज़ैफ़ा ने हज़रत अम्मार (रज़ि.) को आज़ाद कर दिया। ये इब्तिदा ही में इस्लाम ले आए थे और उन कमज़ोर मुसलमानों में से हैं जिनको इस्लाम से हटाने के लिये बहुत सताया गया। यहाँ तक कि उनको आग में भी डाल दिया जिससे उन्हें अल्लाह ने मरने से बचा लिया। आँहज़रत (ﷺ) जब उनकी तरफ़ से गुज़रते हुए उनकी तकलीफ़ों को देखते तो आपका दिल भर आता। आप उनके जिस्म पर अपना दस्ते शफ़क़त फेरते और दुआ करते कि ऐ आग तू अम्मार पर उसी तरह ठण्डी और सलामती वाली हो जा जिस तरह तू हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर हो गई थी। ये मुहाजिरीने अव्वलीन में से हैं। ग़च्च-ए-बद्र और जुम्ला ग़च्चात में शरीक हुए। जंगे सिफ़फ़ीन में हज़रत अली (रज़ि.) के साथ थे। 93 साल की उम्र में 37 हिजरी में जंगे सफ़ीन ही में शहीद हुए।

हज़रत सुहैब बिन सिनान अब्दुल्लाह बिन जुदआन तैमी के आज़ादकर्दा हैं। कुत्रियत अबू यह्या, शहर मूसल के बाशिन्दे थे। रोमियों ने उनको बचपन ही में कैद कर लिया था। लिहाज़ा परवरिश रोम में हुई। रोमियों से उनको एक शख्स कल्ब नामी खरीदकर मक्का ले आया। जहाँ उनको अब्दुल्लाह बिन जुदआन ने खरीदकर आज़ाद कर दिया। फिर ये अब्दुल्लाह बिन जुदआन ही के हलीफ़ (साथी) बन गए थे। आँहज़रत (ﷺ) जब दारे अरक़म में थे तो अम्मार (रज़ि.) ने और उन्होंने एक ही दिन इस्लाम कुबूल किया। मक्का शरीफ़ में उनको बहुत तकलीफ़ दी गई, लिहाज़ा ये मदीना को हिज्रत कर गए। 80 हिजरी में बउम्र 90 साल मदीना ही में इतिक़ाल फ़र्माया और जन्नतुल बक़ी अ में दफ़न किये गए।

हज़रत बिलाल (रज़ि.) के वालिद का नाम रबाह है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के आज़ादकर्दा मशहूर मुअज़्जिज़ सहाबी बल्कि मुअज़्जिने रसूल (ﷺ) हैं। ये भी मोमिनीने अव्वलीन में से हैं। मक्का में सख़्त तकालीफ़ बर्दाश्त कीं मगर इस्लाम का नशा न उतरा, बल्कि और ज़्यादा इस्लाम का इज़हार किया। तमाम ग़च्चाते नबवी (ﷺ) में शरीक रहे। उनको ईज़ा-रसानी पहुँचाने वाला उमय्या बिन ख़लफ़ था जो बेहद संगदिली से उनको क्रिस्म-क्रिस्म के अज़ाबों में मुब्तला किया करता था। अल्लाह की मशिय्यत देखिए कि जंगे बद्र में उमय्या बिन ख़लफ़ मलूक़न, हज़रत बिलाल (रज़ि.) ही के हाथों से क़त्ल हुआ। उमर का आखिरी हिस्सा शाम (सीरिया) में गुज़रा। 63 साल की उम्र में 20 हिजरी में दमिश्क़ में इतिक़ाल हुआ और बाबुस्सगीर में दफ़न हुए। कुछ हल्ब में इतिक़ाल बतलाते और बाबुल अरबईन में मदफ़न होना लिखते हैं। उनके मनाक़िब बहुत ज़्यादा हैं। उनके कोई औलाद नहीं हुई। ताबेअीन की एक क़षीर जमाअत इनसे रिवायत करती है।

2217. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐ ब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अउरज ने और उनसे अबू हुज़ैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सारा (रज़ि.) के साथ (नमरूद के मुल्क से) हिज्रत की तो एक ऐसे शहर में पहुँचे जहाँ एक बादशाह रहता था या (ये फ़र्माया कि) एक ज़ालिम बादशाह रहता था। उससे इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में किसी ने कह

۲۲۱۷- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَاجَرَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ بِسَارَةَ، فَدَخَلَ بِهَا قَرْيَةً فِيهَا مَلِكٌ مِنَ الْمَمْلُوكِ - أَوْ جَبَّارٌ مِنَ الْعَبَّادَةِ. فَقِيلَ:

दिया कि वो एक निहायत ही खूबसूरत औरत लेकर यहाँ आए हैं। बादशाह ने आपसे पुछवा भेजा कि इब्राहीम! ये औरत जो तुम्हारे साथ है तुम्हारी क्या होती है? उन्होंने फर्माया कि ये मेरी बहन है। फिर जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम सारा (रज़ि.) के यहाँ आए तो उनसे कहा कि मेरी बात न झुठलाना, मैं तुम्हें अपनी बहन कह आया हूँ। अल्लाह की क़सम! आज रूएज़मीन पर मेरे और तुम्हारे सिवा कोई मोमिन नहीं है। चुनाँचे आपने सारा (रज़ि.) को बादशाह के यहाँ भेजा, या बादशाह हज़रत सारा (रज़ि.) के पास गया। उस वक़्त हज़रत सारा (रज़ि.) वुजू करके नमाज़ पढ़ने खड़ी हो गई थीं। उन्होंने अल्लाह के हुज़ूर में ये दुआ की कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तुझ पर और तेरे रसूल इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर ईमान रखती हूँ, और अगर मैंने अपने शौहर के सिवा अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की है, तो तू मुझ पर एक काफ़िर को मुसल्लत न कर। इतने में वो बादशाह थर्राया और उसका पाँव ज़मीन में धंस गया। अज़रज ने कहा कि अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, कि हज़रत सारा (रज़ि.) ने अल्लाह के हुज़ूर में दुआ की कि ऐ अल्लाह! अगर ये मर गया तो लोग कहेंगे कि उसी ने मारा है। चुनाँचे वे फिर छूट गया और हज़रत सारा (रज़ि.) की तरफ़ बढ़ने लगा। हज़रत सारा (रज़ि.) वुजू करके फिर नमाज़ पढ़ने लगी थीं और ये दुआ करती जाती थीं, ऐ अल्लाह! अगर मैं तुझ पर और तेरे रसूल इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर ईमान रखती हूँ और अपने शौहर (हज़रत इब्राहीम) के सिवा और हर मौक़े पर मैंने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की है तो तू मुझ पर इस काफ़िर को मुसल्लत न कर। चुनाँचे वो फिर थर्राया, कांपा और उसके पाँव ज़मीन में धंस गए। अब्दुरहमान ने बयान किया कि अबू सलमा ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि हज़रत सारा (रज़ि.) ने फिर वही दुआ की कि ऐ अल्लाह! अगर ये मर गया तो लोग कहेंगे कि इसी ने मारा है। अब दूसरी बार या तीसरी बार भी वो बादशाह छोड़ दिया गया। आख़िर वो कहने लगा कि तुम लोगों ने मेरे यहाँ एक शैतान भेज दिया। उसे इब्राहीम के पास ले जाओ और उन्हें आजर (हज़रत हाजरा) को भी दे दो। फिर हज़रत सारा (रज़ि.) इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आई और उनसे कहा कि देखते नहीं अल्लाह ने काफ़िर को किस तरह ज़लील किया और साथ में एक लड़की भी दिलवा दी। (दीगर

ذَعَلَ إِبْرَاهِيمُ بِامْرَأَةٍ هِيَ مِنْ أَحْسَنِ النِّسَاءِ. فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ أَنْ يَأْتِيَ إِبْرَاهِيمَ مِنْ هَذِهِ الْمَتَى مَعَكَ قَالَ : أَخْتِي. ثُمَّ رَجَعَ إِلَيْهَا فَقَالَ : لَا تُكَذِّبِي حَدِيثِي، فَإِنِّي أَخْبَرْتُهُمْ أَنَّكَ أَخْتِي، وَاللَّهِ إِنْ عَلَى الْأَرْضِ مَوْمِنٌ غَيْرِي وَغَيْرِكَ. فَأَرْسَلَ بِهَا إِلَيْهِ فَقَامَ إِلَيْهَا، فَقَامَتْ تَوَضُّاً وَتَصَلَّى فَقَالَتْ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ آمَنْتُ بِكَ وَبِرَسُولِكَ وَأَخْصَنْتُ فَرْجِي إِلَّا عَلَى زَوْجِي فَلَا تَسْلُطْ عَلَيَّ الْكَافِرَ. فَعُطِيَ حَتَّى رَكَضَ بِرَجُلِهِ - قَالَ الْأَعْرَجُ : قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَتْ : اللَّهُمَّ إِنْ يَمُتُ يُقَالُ هِيَ قُتِلَتْ. فَأَرْسَلَ ثُمَّ قَامَ إِلَيْهَا فَقَامَتْ تَوَضُّاً وَتَصَلَّى وَتَقُولُ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ آمَنْتُ بِكَ وَبِرَسُولِكَ وَأَخْصَنْتُ فَرْجِي إِلَّا عَلَى زَوْجِي فَلَا تَسْلُطْ عَلَيَّ هَذَا الْكَافِرَ، فَعُطِيَ حَتَّى رَكَضَ بِرَجُلِهِ - قَالَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ - فَقَالَتْ : اللَّهُمَّ إِنْ يَمُتُ يُقَالُ هِيَ قُتِلَتْ. فَأَرْسَلَ فِي الثَّانِيَةِ أَوْ فِي الثَّالِثَةِ فَقَالَ : وَاللَّهِ مَا أَرْسَلْتُمْ إِلَيَّ إِلَّا شَيْطَانًا، ارْجِعُوهَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ، وَأَعْطُوهَا أَجْرًا، فَرَجَعَتْ إِلَى إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ، فَقَالَتْ : أَخْبَرْتُ أَنَّ اللَّهَ كَتَبَ الْكَافِرَ وَأَخَذَهُم وَلِيدَةً)).



मक़ाम : 7635, 3357, 3358, 5084, 6950)

[7900, 10084]

**तशरीह :** ज़मीने किन्‌आन से मिस्र का ये सफ़र इसलिये हुआ कि किन्‌आन उन दिनों सख़्त क़हतसाली (अकाल) की ज़द भतीजे लूत अलैहिस्सलाम और भेड़-बकरियों समेत मिस्र में पहुँच गए। उन दिनों मिस्र में फ़िरऔन रक्यून नामी हुक्मरानी कर रहा था। इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीवी हज़रत सारा (रज़ि.) बेहद हसीन थीं और वो बादशाह ऐसी हसीन औरतों की जुस्तजू में रहा करता था। इसलिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत सारा (रज़ि.) को हिदायत फ़र्माई कि वो अपने आपको इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बहन ज़ाहिर करें। जब फ़िरऔन ने मिस्र में हज़रत सारा (रज़ि.) के हुस्न का चर्चा सुना तब उन्होंने उनको बुलवा भेजा और फ़ेअले बद का इरादा किया मगर हज़रत सारा (रज़ि.) की बददुआ से वो बुराई पर क़ादिर न हो सका बल्कि ज़मीन में ग़र्क़ होने लगा। आख़िर उसके दिल पर उनकी अज़मत नक्श हो गई और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुआफ़ी मांगी और हज़रत सारा (रज़ि.) को वापस कर दिया और अपने खुलूस और अक़ीदत के इज़हार में अपनी बेटी हाजरा (रज़ि.) को उनकी नज़र कर दिया ताकि वो सारा (रज़ि.) जैसी खुदारसीदा खातून की ख़िदमत में रहकर ता'लीम और तर्बियत हासिल करे और किसी वक़्त उसको हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जैसे नबी की बीवी बनने का शर्फ़ हासिल हो। यहूदियों की किताब बरषीषलिया में ज़िक्र है कि हाजरा शाहे मिस्र की बेटी थी। ऐसा ही तब्री, ख़मीस और क़स्तलानी ने ज़िक्र किया है मगर ये अमर निहायत ही क़ाबिले अफ़सोस है कि कुछ बदबान्तिन यहूद की ह्रासिदाना तहरीरात में उनको लौण्डी कहा गया है और कुछ लोगों ने उन तहरीरों से मुताख़िर होकर इस हदीष में वारिद लफ़्ज़ वलीदा का तर्जुमा लौण्डी कर दिया है हालाँकि कुआन व हदीष की इस्तिलाहे आम (सामान्य परिभाषा) में गुलाम और लौण्डी के लिये मिल्के यमीन का लफ़्ज़ है जैसा कि आयते कुआनी वमा मलकत अयमानिहिम से ज़ाहिर है लुगते अरब में ज़ारिया और वलीदा के अल्फ़ाज़ आम लड़की के मा'नों में आते हैं। अरबी की बाइबिल में सब जगह हज़रत हाजरा के वास्ते ज़ारिया का लफ़्ज़ इस्ते'माल हुआ है। अंग्रेज़ी बाइबिल में सब मुकामात पर मेढ़ का लफ़्ज़ है जिसके मा'नी वही हैं जो ज़ारिया और वलीदा के हैं या'नी लड़की।

अबी सलूमर इस्हाक़ जो एक यहूदी आलिम हैं वो पैदाइश 1-16 में लिखते हैं कि जब फ़िरऔन मिस्री ने नबी की करामतों को जो सारा की वजह से ज़ाहिर हुई, देखा तो उसने कहा कि बेहतर है मेरी बेटी उसके घर में ख़ादिमा होकर रहे वो इससे बेहतर होगी कि किसी दूसरे घर में वो मलिका बनकर रहे। चुनाँचे हज़रत हाजरा ने इब्राहीमी घराने में पूरी तर्बियत हासिल की और पचासी (85) साल की उम्र में जबकि आप औलाद से मायूस हो रहे थे। हज़रत सारा ने उनसे ख़ुद कहा कि हाजरा से शादी कर लो शायद अल्लाह पाक उन ही के ज़रिये तुमको औलाद अज़्ता करे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि शादी के बाद हज़रत हाजरा हामला हो गई और उनको ख़्वाब में फ़रिश्ते ने बशारत दी कि तू एक बेटा जनेगी उसका नाम इस्माईल रखना कि अल्लाह तआला ने तेरा दुख सुन लिया। वो अरबी होगा उसका हाथ सब के ख़िलाफ़ होगा और सबके हाथ उसके बरख़िलाफ़ होंगे और वो अपने सब भाइयों के सामने बूढ़ो-बाश करेगा। (तौरात पैदाइश 16 : 11-12)

अल्लाह तआला ने ये भी फ़र्माया कि देख हाजरा के बतन से पैदा होने वाले बच्चे इस्माईल के हक़ में मैंने तेरी दुआ सुन ली देखो मैं उसको बरकत दूँगा और उसे आबरूमन्द करूँगा और उसे बहुत बढ़ाऊँगा और उससे बारह सरदार पैदा होंगे और मैं उसे बड़ी क़ौम बनाऊँगा। (तौरात पैदाइश 17 : 15-20)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की छियासी साल की उम्र थी कि उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के हक़ में ये बशारत तौरात सफ़र तक्वीन बाब 17 दरस 20 में मौजूद है।

यहूदियों ने हज़रत हाजरा (रज़ि.) के लौण्डी होने पर हज़रत सारा (रज़ि.) के उस क़ौल से दलील ली है कि जो तौरात में मज़कूर है कि जब हज़रत सारा (रज़ि.) हज़रत हाजरा (रज़ि.) से नाराज़ हो गई तो उन्होंने इस डर से कि कहीं हज़रत हाजरा का फ़रज़न्द इस्माईल अलैहिस्सलाम उनके फ़रज़न्द इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के साथ इब्राहीमी तर्का का वारिष न बन जाए ये कहा कि उस लौण्डी को और उसके बच्चे को यहाँ से निकाल दे। ये लफ़्ज़ हज़रत सारा (रज़ि.) ने ख़फ़ी (नाराज़गी) के तौर

पर इस्ते' माल किया था वरना उनको मा'लूम था कि शरीअते इब्राहीमी में लौण्डी गुलाम मालिक के तर्क में वारिष नहीं होते हैं। अगर हज़रत हाजरा (रज़ि.) वाकई लौण्डी होती तो हज़रत सारा (रज़ि.) ऐसी ग़लतबयानी क्यों करती जबकि वो इब्राहीमी शरीअत के अहकामात से पूरे तौर पर वाकिफ़ थीं।

पस खुद तौरात के इस बयान से वाजेह है कि हज़रत हाजरा (रज़ि.) लौण्डी न थी बल्कि आज़ाद थी। इसीलिये हज़रत सारा (रज़ि.) को उनके लड़के के वारिष होने का ख़तरा हुआ और उनको दूर करने का मुतालबा किया। खुलासा यही है कि हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम शाहे मिस्र की बेटी थी जिसे बतौर ख़ादिमा ता'लीम व तर्बियत हासिल करके हरम-नुबुव्वत में बीबी बनाने के लिये हज़रत सारा अलैहिस्सलाम के हवाले किया गया था।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के मुनअक़दा बाब में जिसके तहत ये हदीष आई है कई बातें मल्हूज़ की गई हैं जिसकी तशरीह अल्लामा क़स्तलानी (रह.) यूँ फ़र्माते हैं, आजिर बिहम्ज़तिन मम्दूदतिन बदलुल्हाइ जीम मफ़्तूहतुन फ़राअ व कान अबू आजिर मिम्मूलूकिल्किब्बि या'नी आजर हम्ज़ा मम्दूदा के साथ ही के बदले में है और जीम मफ़्तूहा के बाद रा है। और आजर का बाप फिरऔने मिस्र किब्बी बादशाहों में से था, यहाँ अल्लामा क़स्तलानी ने साफ़ लफ़्ज़ों में बतलाया है कि हज़रत हाजरा फिरऔने मिस्र की बेटी थी। वलीदा की तहकीक़ में आप फ़र्माते हैं, वल्वलीदतुल्ज़ारियतु लिलिब्रदमति सबाअन कानत कबीरतन औ स़गीरतन व फ़िल्अस्लि अल्वलीदु लिक्तिफ़्लिन वल्उन्ना वलीदतुन वल्ज़म्ज़ व लाइदु वल्मुरादु बिहा आजिरुल्मज्कूरति व मौज़उत्तर्जुमति आतूहा आजिर व कुबूल सारत मिन्हु व इम्ज़ाउ इब्राहीम ज़ालिक फ़फ़ीहि सिह्तुन हिबतुल्काफ़िरि व कुबूल हदयतिस्मुल्तानिज्जालिमि व इब्तिलाइस्साहि्लीन लिर्फ़इ दरजातिहिम व फ़ीहि इबाहतुल्मआरीज़ि व अन्नहा मन्दूहतुन अनिल्किब्बि व हाज़ल्हदीषु अख़रजहु अयज़न फ़िल्हिबति वल्ह्वराहि व अहादीषिल अंबियाइ (क़स्तलानी) या'नी लफ़्ज़ वलीदा लड़की पर बोला जाता है जो बतौर ख़ादिमा हो इम्र में वो स़गीरा (छोटी) हो या कबीरा (बड़ी) और दरअसल वलीदा लड़की को कहते हैं। उसकी जमा वलाइद आती है और यहाँ उस लड़की से मुराद आजर मज्कूरा हैं जो हाजरा (अलैहिससलाम) से मशहूर हैं।

आगे अल्लामा फ़र्माते हैं, या'नी यहाँ बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ अन्नूहा आजर से निकलता है कि उस काफ़िर बादशाह ने अपनी शहज़ादी हाजरा अलैहिस्सलाम को बतौर अतिया पेश करने का हुक्म दिया और सारा अलैहिस्सलाम ने उसे कुबूल कर लिया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी इस मामले को मंज़ूर कर लिया। लिहाज़ा प्राबित हुआ कि काफ़िर किसी चीज़ को बतौर हिबा किसी को दे तो उसका ये हिबा करना स़हीह माना जाएगा और ज़ालिम बादशाह का हदिया कुबूल करना भी प्राबित हुआ। और नेक लोगों का ज़ालिम बादशाहों की तरफ़ से इब्तिला में डाला जाना भी प्राबित हुआ। उससे उनके दर्जात बुलन्द होते हैं। और ये भी प्राबित हुआ कि ऐसे आजमाईशों मौकों पर ग़ैर-मुबाह्र किनायात व तअरीज़ात का इस्ते' माल मुबाह्र हो जाता है और उनको झूठ में शुमार नहीं किया जा सकता। सय्यिदुल मुहद्दिषीन हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष को अपनी जामेउस्सहीह में और भी कई मुक़ामात पर नक़ल फ़र्माया है और इससे बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात किया है।

खुलासतुल मराम ये कि हदीषे हाज़ा में वारिद वलीदा लौण्डी के मा'नी में नहीं, बल्कि लड़की के मा'नी में है। हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम शाहे मिस्र की बेटी थी। जिसे उसने हज़रत सारा अलैहिस्सलाम को बरकत के लिये दे दिया था। लिहाज़ा यहूद का हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम को लौण्डी का बच्चा कहना महज़ झूठ और इल्ज़ाम है।

यहाँ सर सय्यद ने खुत्बाते अहमदिया में कलकत्ता के एक मुनाज़रा का ज़िक्र किया है जो उसी मौज़ूअ पर हुआ जिसमें इलम-ए-यहूद ने बिल इत्तिफ़ाक़ तस्लीम किया था कि हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) लौण्डी न थीं बल्कि शाहे मिस्र की बेटी थीं। हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने यहाँ लफ़्ज़ वलीदा का तर्जुमा लौण्डी किया है जो लड़की ही के मा'नों में है, हिन्दुस्तान के कुछ मक़ामात पर लड़की को लौण्डिया और लड़के को लौण्डा बोलते हैं।

बाब के तर्जुमे में चूँकि लफ़्ज़ हिबा भीआया है लिहाज़ा मा'लूम हुआ कि हिबा लम्बी तौर पर मुत्लक़ बख़िश को कहते हैं। अल्लाह पाक का एक सिफ़ाती नाम वहाब भी है या'नी बेहिसाब बख़िश करने वाला। शरअ मुहम्मदी में हिबा की ता'रीफ़ ये है कि किसी जायदादे मन्कूला (चल) या ग़ैर-मन्कूला (अचल) को ब-रज़ा व सबत और बिला मुआवज़ा मुत्तक़िल कर देना। मुत्तक़िल करने वाले को वाहिब और जिसके नाम मुत्तक़िल किया जाए उसे मौहूब लहू कहते हैं। ज़रूरी है कि उस

इंतकाल को खुद मौहूब लहू या उसकी तरफ से कोई उसका ज़िम्मेदार आदमी वाहिब की ज़िंदगी ही में कुबूल कर ले। नीज़ जरूरी है कि हिबा करने वाला आफ़िल बालिग हो। और ये भी जरूरी है कि हिबा की हुई चीज़ उस शख्स के कब्ज़े में दी जाए जिसके नाम पर हिबा किया जा रहा है। हिबा के बारे में बहुत सी शरअी तफ़सीलात हैं जो कुतुबे फ़िकह में तफ़सील से मौजूद हैं। उर्दू जुबान में ऑनरेबल मौलवी सय्यद अमीर अली साहब एम. ए. बेरिस्ट्राइट लॉ ने जामेउल अहकाम फ़ी फ़िक्हुल इस्लाम के नाम से एक मुफ़स्सल किताब मुसलमानों के क़वानीने मज़हबी पर लिखी है उसमें हिबा के बारे में पूरी तफ़सीलात दर्ज की गई हैं और भारतीय अदालत में जो पर्सनल लॉ ऑफ़ दी मुहम्मडंस, मुसलमानों के लिये मंज़ूरशुदा है। हर जुर्इ में पूरी वज़ाहत से अहकामे हिबा को बतलाया गया है।

2218. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे लैज़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ना ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि, सअद बिन अबी वक्क्रास (रज़ि.) अब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) का एक बच्चे के बारे में झगड़ा हुआ। सअद (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरे भाई उतैबा बिन अबी वक्क्रास का बेटा है। उसने वसीयत की थी कि ये अब उसका बेटा है। आप खुद मेरे भाई से इसकी मुशाबिहत देख लें। लेकिन अब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो मेरा भाई है, मेरे बाप के बिस्तर पर पैदा हुआ है और उसकी बाँदी के पेट का है। आँहज़रत (ﷺ) ने बच्चे की सूत देखी तो साफ़ उतैबा से मिलती थी। लेकिन आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया कि ऐ अब्द! ये बच्चा तेरे ही साथ रहेगा, क्योंकि बच्चा फ़ेराश के ताबेअ होता है और ज़ानी के हिस्से में सिर्फ पत्थर है और ऐ सौदा बिनते ज़म्आ (रज़ि.) इस लड़के से तू पर्दा किया कर। चुनौचे सौदा (रज़ि.) ने उसे फिर कभी नहीं देखा।

۲۲۱۸- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((اِخْتَصَمَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ وَعَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فِي غَلَامٍ، فَقَالَ سَعْدٌ: هَذَا يَا رَسُولَ اللَّهِ ابْنُ أَبِي عُثْبَةَ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَهْدَ إِلَيَّ أَنَّهُ ابْنُهُ، انْظُرْ إِلَيَّ شَبَّهِهُ. وَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: هَذَا أَبِي يَا رَسُولَ اللَّهِ وَلَدَ عَلَى فِرَاشِ أَبِي مِنْ وَثْدَتِهِ: فَنَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِلَيْ شَبَّهِهُ فَرَأَى شَبَّاهُ بَيِّنًا بَعْثَةً، فَقَالَ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ، الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ، وَخَتْمِي مِنْهُ يَا سَوْدَةُ بِنْتُ زَمْعَةَ. فَلَمْ تَرَهُ سَوْدَةُ قَطُّ)).

**तशरीह:** हालाँकि शरई कायदे की रू से आपने उस बच्चे को ज़म्आ का बेटा करार दिया, तो उम्मुल मोमिनीन सौदा (रज़ि.) उसकी बहन हो गई। मगर एहतियातन उनको उस बच्चे से पर्दा करने का हुक्म दिया। इसलिये कि उसकी सूत उतबा से मिलती थी और गुमाने गालिब होता था कि वो उतबा का बेटा है। हदीष से ये निकला कि शरई और बाक़ायदा धुबूत के मुकाबिल मुखालिफ़ गुमान पर कुछ नहीं हो सकता। बाब की मुताबक़त इस तरह पर है कि आप (ﷺ) ने ज़म्आ की मिल्क मुसल्लम रखी, हालाँकि ज़म्आ काफ़िर था, और उसको अपनी लौण्डी पर वही हक़ मिला जो मुसलमानों को मिलता है तो काफ़िर का तसरफ़ भी अपनी लौण्डी गुलामों में जैसे बेअ हिबा वग़ैरह नाफ़िज़ होगा। (वहीदी)

2219. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने सुहैब (रज़ि.) से कहा, अल्लाह से डर और अपने बाप के सिवा किसी और का बेटा न बन। सुहैब ने कहा कि

۲۲۱۹- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِيهِ قَالَ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لِمُهَنْبِرٍ: اتَّقِ اللَّهَ وَلَا

अगर मुझे इतनी इतनी दौलत भी मिल जाए तो भी मैं ये कहना पसन्द नहीं करता। मगर वाकिया ये है कि मैं तो बचपन में ही चुरा लिया गया था।

تَدْعُ إِلَى غَيْرِ أَبِيكَ. فَقَالَ صَهْتُ: مَا يَسْرُرُنِي أَنْ لِي كَذَا وَكَذَا وَأَنِّي قُلْتُ ذَلِكَ. وَلَكِنِّي سَرَفْتُ وَأَنَا صَبِيٌّ.

**तशरीह:** हुआ ये था कि सुहैब (रज़ि.) की जुबान रूमी थी, मगर वो अपना बाप एक अरब सिनान बिन मालिक को बताते थे। इस पर अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने उनसे कहा, अल्लाह से डर और दूसरों को अपना बाप न बना। सुहैब (रज़ि.) ने जवाब दिया कि मेरी जुबान रूमी इस वजह से है कि बचपन में रूमी लोग हमला करके मुझको कैद करके ले गए थे। मैंने उन ही में परवरिश पाई, इसलिये मेरी जुबान रूमी हो गई वरना मैं दरअसल अरबी हूँ। मैं झूठ बोलकर किसी और का बेटा नहीं बनता अगर मुझको ऐसी ऐसी दौलत मिले तब भी मैं ये काम न करूँ। इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि काफ़िरों की मिल्क सहीह और मुसल्लम है क्योंकि इब्ने जिदआन ने सुहैब (रज़ि.) को खरीद लिया और आज़ाद कर दिया। हज़रत सुहैब (रज़ि.) के मनाकिब बहुत कुछ हैं। जिन पर मुस्तक़िल बयान किसी जगह मिलेगा। ये बहुत ही खाना खिलाने वाले थे और कहा करते थे कि मैंने हज़रत (ﷺ) की ये हदीष सुनी है कि तुममें बेहतर वो है जो हक़दारों को बक़रत खाना खिलाए।

2220. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, कहा कि मुझे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने पूछा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उन नेक कामों के बारे में क्या हु क़म है, जिन्हें मैं जाहिलियत के ज़माने में सिलसिले में किया करता था। क्या उन अज़माल का भी मुझे ख़ाब मिलेगा? हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जितनी नेकियाँ तुम पहले कर चुके हो उन सबके साथ इस्लाम लाए हो। (राजेअ: 1436)

٢٢٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي غُرُورَةُ بِنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ حَكِيمَ بْنَ جَزَاءٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ: ((بَا رَسُولَ اللَّهِ، أَرَأَيْتَ أُمُورًا كُنْتُ أَلْحُظُّ - أَوْ أَتَحُظُّ - بِهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ مِنْ صِلَةٍ وَغَفَاةٍ وَصَدَقَةٍ، فَلَمْ يَلِنْ فِيهَا أَجْرًا؟ قَالَ حَكِيمٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَسَلَّمْتُ عَلَى مَا سَلَفَ لَكَ مِنْ خَيْرٍ)). (راجع: ١٤٣٦)

या'नी वो तमाम नेकियाँ कायम रहेंगी और ज़रूर उनका ख़ाब मिलेगा। आख़िर में ये हदीष लाकर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ग़ालिबन ये इशारा किया है कि जाइज़ हूद में इस्लाम लाने से पहले के मुआमलात लेन-देन इस्लाम कुबूल करने के बाद भी कायम रहेंगे और उनमें कोई ख़दोबदल न होगा। या फ़रीक़ैन में से एक फ़रीक़ मुसलमान हो गया है और जाइज़ हूद में उसका लेन-देन का कोई सिलसिला है जिसका रिश्ता दौरे जाहिलियत से है तो वो अपने दस्तूर पर उसे चालू रख सकेगा।

**बाब 101: दबागत से पहले मुरदार की खाल (का बेचना जाइज़ है या नहीं?)**

2221. हमसे जुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़कूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे सलैह ने बयान किया, कि मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें इब्ने दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, और

١٠١- بَابُ جُلُودِ الْمَيِّتَةِ قَبْلَ أَنْ تَدْفَنَ

٢٢٢١- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ أَنَّ

उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का गुजर एक मुर्दा बकरी पर हुआ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इसके चमड़े से तुम लोगों ने क्यूँ नहीं फ़ायदा उठाया? सहाबा किराम (रज़ि.) ने अर्ज किया, कि वो तो मुरदार है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुरदार का सिर्फ़ खाना मना है। (राजेअ: 1492)

عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ: ((رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، مَرْبُوعًا مَيْتَةً فَقَالَ: هَلَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا بَهَا؟ قَالُوا: إِنَّهَا مَيْتَةٌ. قَالَ: إِنَّمَا حَرَّمَ أَكْلَهَا)). (راجع: 1492)

**तशरीह:** हालाँकि कुआन शरीफ़ में हुरीमत अलेयकुमुल मयतत (अल माइदा: 3) मुत्तलक़ है। उसके सब हिस्सों को शामिल है, मगर हदीष से उसकी तख़सीस हो गई कि मुरदार का सिर्फ़ खाना मना है। जुहरी ने इस हदीष से दलील ली और कहा कि मुरदार को खाल से मुत्तलक़न नफ़ा उठाना दुरुस्त है, दबागत हुई हो या न हुई हो। लेकिन दबागत की कैद दूसरी हदीष से निकाली गई है और जुम्हूर उलमा को वही दलील है। और इमाम शाफ़िई (रह.) ने मुरदारों में कुत्ते और सूअर को अलग किया है। उसकी खाल दबागत से भी पाक न होगी और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने सिर्फ़ सूअर और आदमी की खाल को मुस्तज़ा (अलग) किया है।

**बाब 102 : सूअर का मार डालना और जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने सूअर की खरीद व फ़रोख्त को हुराम करार दी है**

2222. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मुसव्विब ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये फ़र्माते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वो ज़माना आने वाला है जब इब्ने मरयम (ईसा अलैहिस्सलाम) तुममें एक आदिल और मुंसिफ़ हाकिम की हैशियत से उतरेंगे। वो सलीब को तोड़ डालेंगे, सूअरों को मार डालेंगे और जिज़्या को ख़त्म कर देंगे। उस वक़्त माल की इतनी ज़्यादाती होगी कि कोई लेने वाला न रहेगा। (दीगर मक़ाम: 2476, 3448, 3449)

١٠٢ - بَابُ قَتْلِ الْخِنْزِيرِ  
وَقَالَ جَابِرٌ: حَرَّمَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْعَ الْخِنْزِيرِ  
٢٢٢٢ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ ابْنِ  
الْمُسَيَّبِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((وَالَّذِي  
نَفْسِي بِيَدِهِ لَيُوشِكُنَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيكُمْ ابْنُ  
مَرْيَمَ حَكَمًا مُقْطِعًا، فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ،  
وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ، وَيَضَعَ الْحِجْرَةَ، وَيَغِيضَ  
الْمَالَ حَتَّى لَا يَقْبَلَهُ أَحَدٌ)).  
[أطرافه ١: ٢٤٧٦، ٣٤٤٨، ٣٤٤٩].

**तशरीह:** इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि सूअर नजिसुल ऐन (पूरी तरह नापाक) है इसकी बेअ जाइज़ नहीं बरना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उसे क़त्ल क्यूँ करेंगे और नेस्तो-नाबूद क्यूँ करेंगे? जिज़्या मौकूफ़ करने से ये गर्ज़ है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़र्माएँगे या तो मुसलमान हो या क़त्ल हो, जिज़्या कुबूल न करेंगे।

इस हदीष से स़ाफ़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का क़यामत के करीब उतरना और हुकूमत करना और सलीब तोड़ना, जिज़्या मौकूफ़ करना ये सब बातें प्राबित होती हैं। और ता'जुब होता है उस शख्स की अक़्तल पर जो क़ादयानी मिर्ज़ा को मसीहे मौऊद समझता है। अल्लाहुम्मा षब्बिल्ना अलल हक़ व जन्निब्ना मिनल फ़ितनि मा ज़ह्र मिन्हा वमा बतन (वहीदी)

क़त्ले खिज़ीर से मुराद ये है कि यामुरू बिइदामिही मुबालग़न फ़ी तहरीमि अक्लिही व फ़ीहि तौबीखुन अज़ीमुन लिन्नसारा अल्लज़ीन युइऊन अन्नहुम अला तरीक़ति ईसा शुम्म यस्तहिल्लून अक्ललिख़िज़ीरि व युबालिगून फ़ी मुहब्बतिही या'नी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने दौरे हुकूमत में खिज़ीर को नस्ल को ख़त्म करने का

हुक्म जारी कर देंगे। उसमें उसके खाने की हुर्मत में मुबालागा का बयान है और इसमें उन ईसाइयों के लिये बड़ी डांट है जो हज़रत ईसा के पैरोकार होने के दावेदार हैं, फिर भी ख्रिज़ीर खाना इलाल जानते हैं, और उसकी मुहब्बत में मुबालागा करते हैं।

आयाते कुआनिया और अहादीषे सहीहा के आधार पर तमाम अहले इस्लाम का सलफ़ से खलफ़ तक ये ए'तिकाद (यक़ीन) रहा है कि हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम आसमान पर ज़िन्दा हैं और वो क़यामत के करीब दुनिया में नाज़िल होकर शरीअते मुहम्मदिया के पैरोकार होंगे। चूँकि आजकल क़ादयानी फ़िर्का ने इस बारे में बहुत कुछ झूठ फैलाकर कुछ नौजवानों के दिमाग़ों को मस्मूम (जहरीला) कर दिया है। लिहाज़ा चंद दलाइल, किताब व सुन्नत की रोशनी में पेश किये जाते हैं जो अहले ईमान को तसल्ली के लिये काफ़ी होंगे।

कुआन मजौद की आयत शरीफ़ा नस्से क़त़्ती है जिससे हयाते मसीह अलैहिस्सलाम रोज़े रोशन की तरह प्रभावित है वइम्मिन् अहलिल किताबि इल्ला लयुअमिनन्ना बिही क़ब्ल मौतिही व यौमल क़ियामति यकूनु अलैहिम शहीदा (अन निसा : 159) या'नी जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से नाज़िल होंगे तो कोई अहले किताब यहूदी और ईसाई ऐसा बाक़ी न रहेगा जो आप पर ईमान न ले आए और क़यामत के दिन वो उन पर गवाह होंगे। हयाते मसीह के लिये ये आयत ठोस दलील है कि वो कुर्बे क़यामत नाज़िल होंगे और तमाम अहले किताब उन पर ईमान लाएँगे।

दूसरी आयत ये है, वमा क़तलूहु वमा मलबूहु वलाकिन् शुब्बिह लहुम (अन निसा : 157) वमा क़तलूहु यक़ीनन् बरफ़अहुल्लाहु इलैहि व कानल्लाहु अज़ीज़न हकीमा (अन निसा : 157, 58) या'नी यहूदियों ने न हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल किया न उनको फांसी दी, यक़ीनन ऐसा नहीं हुआ बल्कि अल्लाह ने उनको अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है। रफ़अ से मुराद रफ़अ मअल जसद है या'नी जिस्म मअरूह (सशरीर), अल्लाह ने उनको आसमान पर उठा लिया और अब वो वहाँ ज़िन्दा मौजूद हैं। ये आयत भी हयाते मसीह पर ठोस दलील है।

तीसरी आयत ये है, इज़ क़ालल्लाहु या ईसा इन्नी मुतवफ़फ़ीक वराफ़िउक इलय्य वमुतहहिरूका मिनल्लज़ीन कफ़रू वजाईलुल्लज़ीन तबअऊक फ़ौक़ल्लज़ीन कफ़रू इला यौमिल् क़ियामति (आले इमरान : 55) या'नी जिस वक़्त कहा अल्लाह ने, ऐ ईसा! तहक़ीक़ लेने वाला हूँ, मैं तुझको और उठाने वाला हूँ, तुझको अपनी तरफ़ और पाक करने वाला हूँ तुझको उन लोगों से कि काफ़िर हुए। और करने वाला हूँ उन लोगों को कि पैरवी करेंगे तेरी ऊपर उन लोगों के कि काफ़िर हुए क़यामत के दिन तक।

ये तर्जुमा शाह अब्दुल क़ादिर (रह.) का है। आगे फ़ायदा में लिखते हैं कि यहूद के आलिमों ने उस वक़्त के बादशाह को बहकाया कि ये शख्स मुल्हिद है तौरात के हुक्म से ख़िलाफ़ बतलाता है उसने लोग भेजे कि उनको पकड़ लावें, जब वो पहुँचे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दोस्त भाग गए। उस समय में हक़ तअाला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया और एक सूरत उनकी रह गई। उसको पकड़कर लाए फिर सूली पर चढ़ाया। तवफ़फ़ा के असल व हक़ीक़ी मा'नी अख़ज़ल् शिना वाफ़ियन के हैं जैसा कि बेजावी व क़स्तलानी और राज़ी वग़ैरह ने लिखा है। और मौते तवफ़फ़ा के मा'नी मजाज़ी हैं न हक़ीक़ी, इसी वास्ते बग़ैर क़यामे करीना के मौत के मा'नी में इस्ते'माल नहीं होता। और यहाँ कोई करीना मौत का कायम नहीं है इसलिये असल व हक़ीक़ी मा'नी या'नी अख़ज़ुश़ैइ वाफ़ियन मुराद लिये जाएँगे। और इंसान का वाफ़िया लेना यही है कि रूह के साथ जिस्म के लिये जाए। बहुवल मत्लूब। लिहाज़ा ये आयत भी हयाते मसीह पर क़तई दलील है।

चौथी आयत, वइन्नहू लइल्मुन लिस्साअति फ़ला तम्तरर्रा बिहा वतबिअनि हाज़ा सिरातुमुस्तक़ीम (अज़्ज़ुख़रूफ़ : 61) और तहक़ीक़ वो ईसा क़यामत की निशानी है। पस मत शक़ करो साथ उसके और पैरवी करो मेरी, ये है राह सीधी। इस आयत के ज़ेल में तफ़सीर इब्ने क़षीर में है, अल्मुरादु बिज़ालिक नुज़ूलुहू क़ब्ल यौमिल्क़ियामति क़ाल मुजाहिद व अन्नहू लइल्मुन लिस्साअति अय आयतुन लिस्साअति ख़ुरूजु ईसा बिन मर्यम क़ब्ल यौमिल्क़ियामति व हाक़ज़ा रविय अबी हुरैरत व इब्नि अब्बासिन व अबिलआलिया व अबी मालिक व अक्रमा वल्हसन व क़तादा व ज़िहाक़ व ग़ैरुहम व क़द तवातरतिल् अहादीषु अन रसूलिल्लाहि (ﷺ) अन्नहू अख़बर बिनुज़ूलि ईसा इब्नि मर्यम अलैहिस्सलाम क़ब्ल यौमिल्क़ियामति इमामन आदिलन व हक़मन मुक्सितन (इब्नि क़षीर) या'नी यहाँ मुराद ईसा अलैहिस्सलाम हैं। वो क़यामत के करीब नाज़िल होंगे। मुजाहिद ने कहा कि वो क़यामत की निशानी होंगे। या'नी क़यामत

की अलामत। कयामत से पहले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से नाज़िल होना है और अबू हुरैरह (रज़ि.) और इब्ने अब्बास (रज़ि.) और अबुल आलिया और अबू मालिक और इकिमा और हसन और क़तादा और जिहाक वगैरह ने बयान फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस बारे में मुतवातिर अहदादीषे सहीहा मौजूद है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कयामत के करीब इमामे आदिल और हाकिमे मुन्सिफ़ बनकर नाज़िल होंगे। आयाते कुआनी के अलावा इन तमाम अहदादीषे सहीहा के लिये दफ़तर की ज़रूरत है। उन ही में से एक ये हदीषे बुखारी (रह.) भी है जो यहाँ मज़कूर हुई है। पस हयाते मसीह का अक़ीदा तमाम अहले इस्लाम का अक़ीदा है। और ये किताबुल्लाह व अहदादीषे रसूलुल्लाह (ﷺ) से प्राबित है जो उसका इंकार करे वो कुआन व हदीष का इंकारी है। ऐसे मुंकिरों के हफ़्वात पर हर्गिज़ तवज्जह न देनी चाहिये। तफ़्सील के लिये बहुत सी किताबें इस मौजूअ पर मौजूद हैं। मज़ीद त्वालत की गुंजाइश नहीं। अहले ईमान के लिये इस क़दर भी काफ़ी है।

### बाब 103 : मुरदार की चर्बी गलाना और उसका बेचना जाइज़ नहीं

जुम्हूर इलमा का ये क़ौल है कि जिस चीज़ का खाना हुराम है उसका बेचना भी हुराम है। इसको जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

2223. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उनसे सुफयान ने, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मुझे ताऊस ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, आप फ़र्माते थे कि उमर (रज़ि.) को मा'लूम हुआ कि फ़लों शख़्स ने शराब बेची है, तो आपने फ़र्माया कि उसे अल्लाह तआला तबाह व बर्बाद कर दे। क्या उसे मा'लूम नहीं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था, अल्लाह तआला यहूद को बर्बाद करे कि चर्बी उन पर हुराम की गई थी लेकिन उन लोगों ने उसे पिघलाकर बेच दिया। (दीगर मक़ाम : 3460)

#### तशरीह :

वाक़िया ये है कि अहदे फ़ारूकी में एक आमिल ने एक ज़िम्मी से जो शराबफ़रोश था और शराब ले जा रहा था, उस शराब पर टैक्स वसूल कर लिया। हज़रत उमर (रज़ि.) इस वाक़िये की ख़बर पाकर ख़फ़ा हो गए और उसे डराने और नसीहत के लिये आपने उसे ये हदीष सुनाई। मा'लूम हुआ कि शराब से मुताल्लिक हर किस्म का कारोबार एक मुसलमान के लिये क़तअन हुराम है और ये भी मा'लूम हुआ कि मुहरमाते मंसूसा को हलाल बनाने के लिये कोई हीला बहाना तराशना, ये फ़ेअले यहूद है, अल्लाह हर मुसलमान को इससे महफूज़ रखे। आमीन। अल्लाह करे कि किताबुल हियल का मुतालअ करने वाले मुअज़्ज़ हज़रात भी इस पर फ़ौरन ग़ौर फ़र्मा सकें।

2224. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह यहूदियों को तबाह

### ۱۰۳ - بَابُ لَا يُذَابُ شَحْمُ الْمَيْتَةِ، وَلَا يَبَاعُ وَذَكَهُ

رَوَاهُ جَابِرٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

۲۲۲۳ - حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ:

أَخْبَرَنِي طَاوُسٌ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: بَلَغَ عُمَرُ أَنَّ فُلَانًا بَاعَ

عَمْرًا فَقَالَ: قَاتِلِ اللَّهَ فُلَانًا، أَلَمْ يَقْلَمْ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَتَأْتِلَ اللَّهُ الْيَهُودَ،

خَرَمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فَجَعَلُوهَا

لَبَاقُوهَا)). [طَرَفُهُ ن: ۳۴۶۰].

۲۲۲۴ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ

سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

करे, ज़ालिमों पर चर्बी हराम कर दी गई थी, लेकिन उन्होंने उसे बेचकर उसकी क़ीमत खाई।

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَاتَلَ اللَّهُ يَهُودَ، حُرِّمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ قَبَاغُومًا وَآكَلُوا أَسْمَانَهَا)).

उन्होंने हीला करके उसे अपने लिये हलाल बना लिया, इस हरकत की वजह से उन पर ये बहुआ की गई। मा'लूम हुआ कि हीला बहाना करके किसी शरई हुक्म में रद्दोबदल करना इतिहाई जुर्म है और किसी हलाल को हराम करा लेना और हराम को हलाल करा लेना ये लज़मत का हक़दार है। मगर सद् अफ़सोस कि फ़ुक़हा-ए-किराम ने मुस्तफ़िल किताबुल हियल लिख डाली हैं। जिनमें कितने ही नावाजिब हीले बहाने तराशने की तदाबीर बतलाई गई हैं, अल्लाह रहम करे।

### बाब 104 : ग़ैर जानदार चीज़ों की तस्वीर बेचना और उसमें कौनसी तस्वीर हराम है

2225. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वट्टहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उन्हें अफ़्र बिन अबी हुमैद ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबी हसन ने, कहा कि मैं इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स उनके पास आया, और कहा कि ऐ अबू अब्बास! मैं उन लोगों में से हूँ, जिनकी रोज़ी अपने हाथ की सन्नत पर मौक़ूफ़ है और मैं ये मूरतें बनाता हूँ। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उस पर फ़र्माया कि मैं तुम्हें सिर्फ़ वही बात बतलाऊँगा जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है। उन्होंने कहा कि मैंने आपको ये फ़र्माते सुना था कि जिसने भी कोई मूरत बनाई तो अल्लाह तआला उसे उस वक़्त तक अज़ाब देता रहेगा जब तक कि वो शख़्स अपनी मूरत में जान न डाल दे और वो कभी उसमें जान नहीं डाल सकता (ये सुनकर) उस शख़्स का सांस चढ़ गया और चेहरा ज़र्द (पीला) पड़ गया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अफ़सोस! अगर तुम मूरतें बनानी ही चाहते हो इन दरख़्तों की और हर उस चीज़ की जिसमें जान नहीं है मूरतें बना सकते हो। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि सईद बिन अबी अरूबा ने नज़र बिन अनस से सिर्फ़ यही एक हदीष सुनी है।

(दीगर मक़ाम : 5963, 7042)

### ١٠٤- بَابُ بَيْعِ التَّصَاوِيرِ الَّتِي لَيْسَ فِيهَا رُوحٌ، وَمَا يُكْرَهُ مِنْ ذَلِكَ

٢٢٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَوْفٌ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْحَسَنِ قَالَ: ((كُنْتُ جُنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِذْ أَنَا رَجُلٌ فَقَالَ: يَا أَبَا عَبَّاسٍ إِنِّي إِنْسَانٌ إِنَّمَا مَعْشَيْتَنِي مِنْ صَنْعَةِ يَدَيَّ، وَإِنِّي أَصْنَعُ هَذِهِ التَّصَاوِيرَ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَا أَخَذُكَ إِلَّا مَا صَوِّفْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، صَوِّفْهُ يَقُولُ: ((مَنْ صَوَّرَ صُورَةً فَإِنَّ اللَّهَ مُعَذِّبُهُ حَتَّى يَنْفُخَ فِيهَا الرُّوحَ، وَلَيْسَ بِبَالِغٍ فِيهَا أَبَدًا)). فَرَبَا الرَّجُلُ رُبُوعًا شَدِيدَةً وَاصْفَرَّ وَجْهُهُ. فَقَالَ: ((وَيَسْخُكُ إِنْ أَتَيْتَ إِلَّا أَنْ تَصْنَعَ لَعَلَّكَ بِهَذَا الشَّجَرِ: كُلُّ شَيْءٍ لَيْسَ فِيهِ رُوحٌ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ أَبِي عَرُوبَةَ مِنَ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ هَذَا الْوَاحِدَ. [طرفاء في : ٥٩٦٣، ٧٠٤٢].

इमाम बुखारी (रह.) ने इसको किताबुल लिबास में अब्दुल आला से, उन्होंने सईद बिन अबी अरूबा से, उन्होंने नज़र से, उन्होंने



इन्ने अब्बास (रज़ि.) से निकाला। इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने मूर्तियों की कराहत और हुर्मत निकाली।

### बाब 105 : शराब की तिजारत करना हाराम है

और जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने शराब का बेचना हाराम फर्मा दिया है।

2226. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, उनसे अबू जुह्ना ने, उनसे मसरूक ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब सूरह बकरः की तमाम आयतें नाज़िल हो चुकीं तो नबी करीम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और फर्माया कि शराब की सौदागरी हाराम करार दी गई है।

### बाब 106 : आज़ाद शख्स को बेचना कैसा है?

2227. मुझसे बिश्र बिन मरहूम ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सुलैम ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन उमय्या ने, उनसे सईद बिन अबी सईद ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, अल्लाह तआला का इर्शाद है कि तीन तरह के लोग ऐसे होंगे जिनका क़यामत के दिन मैं मुद्दई बनूंगा, एक वो शख्स जिसने मेरे नाम पर अहद किया और वो तोड़ दिया, वो शख्स जिसने किसी आज़ाद इंसान को बेचकर उसकी क़ीमत खाई और वो शख्स जिसने कोई मज़दूर उज्रत पर रखा, उससे पूरी तरह काम लिया, उनकी मज़दूरी नहीं दी।

(दीगर मक़ाम : 2270)

बाब 107 : यहूदियों को जलावतन करते वक़्त नबी करीम (ﷺ) का उन्हें अपनी ज़मीन बेच देने का हुक्म. इस सिलसिले में मक्बरी की रिवायत अबू हुरैरह (रज़ि.) से है

### ١٠٥- بَابُ تَحْرِيمِ التِّجَارَةِ فِي الْخَمْرِ

وَقَالَ جَابِرٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : حَرَّمَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْعَ الْخَمْرِ.

٢٢٢٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الصُّحَيْ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((لَمَّا نَزَلَتْ آيَاتُ سُورَةِ الْبَقَرَةِ عَنْ آخِرِهَا خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((حُرِّمَتْ التِّجَارَةُ فِي الْخَمْرِ)).

### ١٠٦- بَابُ إِنْ مَنِ بَاعَ حُرًّا

٢٢٢٧- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مَرْحُومٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللَّهُ: ثَلَاثَةٌ أَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ أَطْعَمَ بِي ثُمَّ غَدَرَ، وَرَجُلٌ بَاعَ حُرًّا فَأَكَلَ ثَمَنَهُ، وَرَجُلٌ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَاسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ أَجْرَهُ)).

[طرمه ن: ٢٢٧٠].

### ١٠٧- بَابُ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ

الْيَهُودَ بِبَيْعِ أَرْضِهِمْ حِينَ أَجْلَاهُمْ، فِيهِ الْمُقْبِرِيُّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

**तशरीह:** बाबुल जिहाद में ये हदीष आ रही है जिसमें मज़कूर है कि आपने बनू नज़ीर के यहूदियों से फर्माया था कि मैं तुमको (तुम्हारी मुसलसल ग़द्दारियों की वजह से) मदीना से जलावतन करना (निकालना) चाहता हूँ और तुमको इख्तियार देता हूँ कि तुम जायदाद बेच सकते हो। अपनी ज़मीनें बेचकर यहाँ से निकलने के लिये तैयार हो जाओ। गोया हज़रत इमाम बुखारी

(रह.) ने ज़मीन की बेअ को भी आम अम्वाल की बेअ की मिसल करार दिया। यहाँ कुछ नुस्खों में ये इबारत नहीं है।

### बाब 108 : गुलाम को गुलाम के बदले और किसी जानवर को जानवर के बदले में उधार बेचना

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने एक ऊँट चार ऊँटों के बदले में खरीदा था। जिनके बारे में ये तैय्युआ था कि मुकामे रब्जा में वो उन्हें उसे दे देंगे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि कभी एक ऊँट, दो ऊँटों के मुकाबले में भी बेहतर होता है। राफ़ेअ बिन खदीज (रज़ि.) ने एक ऊँट दो ऊँटों के बदले में खरीदा था। एक तो उसे दे दिया था और दूसरे के बारे में फ़र्माया था कि वो कल इशाअल्लाह किसी ताख़ीर के बग़ैर तुम्हारे हवाले कर दूँगा। सईद बिन मुसय्यिब ने कहा कि जानवरों में सूद नहीं चलता। एक ऊँट दो ऊँटों के बदले, और एक बकरी दो बकरियों के बदले उधार बेची जा सकती है इब्ने सीरीन ने कहा कि एक ऊँट दो ऊँटों के बदले उधार बेचने में कोई हर्ज नहीं।

### ١٠٨- بَابُ بَيْعِ الْعَبْدِ وَالْحَيَّوانِ بِالْحَيَّوانِ نَسِيئَةً

وَأَشْرَى ابْنُ عُمَرَ رَاحِلَةً بِأَرْبَعَةِ أَنْعَامٍ مَضْمُونَةٍ عَلَيْهِ يُؤْتِيهَا صَاحِبُهَا بِالرَّحْمَةِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَدْ يَكُونُ الْبَيْعُ خَيْرًا مِنَ الْبَيْعَيْنِ. وَأَشْرَى رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ بَيْعَرَيْنِ قَاطِعَاتِهِ. أَخَذْنَاهُ. وَقَالَ: أَيْتُكَ بِالْأَخَرِ غَنَّا زَهْوًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ. وَقَالَ ابْنُ الْمُسْتَبِيرِ لَا رِبَا لِي الْحَيَّوانِ الْبَيْعُ بِالْبَيْعَتَيْنِ وَالشَّاةُ بِالشَّاتَيْنِ إِلَى أَجَلٍ. وَقَالَ ابْنُ مَيْمُونٍ: لَا يَأْسَى بِبَيْعِ بَيْعَتَيْنِ وَدِرْهَمٍ بِدِرْهَمٍ نَسِيئَةً.

**तशरीह:** रब्जा एक मुकाम मक्का और मदीना के बीच है। बेअ के वक़्त ये शर्त हुई कि वो ऊँटनी बायेअ (बेचने वाले) के ज़िम्मे और उसकी हिफ़ाज़त में रहेगी और बायेअ रब्जा पहुँचकर उसे मुशतरी (खरीदार) के हवाले कर देगा। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के अप्र को इमाम शाफ़िई ने वस्ल किया है। ताऊस के तरीक़ से ये मा'लूम हुआ कि जानवर को जानवर के बदलने में कमी और बेशी और इसी तरह उधार भी जाइज़ है और ये सूद नहीं है गो एक ही जिस का दोनों तरफ़ हो और शाफ़िइया बल्कि जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है। लेकिन इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने इससे मना किया है। उनकी दलील समुरा (रज़ि.) की हदीष है जिसे अइहाबे सुनन ने निकाला है। और इमाम मालिक (रह.) ने कहा है कि अगर जिस मुख्तलिफ़ हो तो जाइज़ है।

2228. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे प्राबित ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि कैदियों में हज़रत अफ़िया (रज़ि.) भी थीं। पहले तो वो दहिया कल्बी (रज़ि.) को मिली फिर नबी करीम (ﷺ) के निकाह में आई।

(राजेअ : 371)

٢٢٢٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: (كَانَتْ فِي السَّيْرِ صَفِيَّةٌ فَصَارَتْ إِلَى وَجْهِ الْكَلْبِيِّ، ثُمَّ صَارَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ). (راجع: ٣٧١)

**तशरीह:** इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि जानवर से जानवर का तबादला दुरुस्त है उसी तरह गुलाम का गुलाम के बदले, लौण्डी का लौण्डी से क्योंकि ये सब हैवान ही तो हैं और हर हैवान का यही हुक्म होगा। कुछ ने ये ए'तिराज़ किया है कि इस हदीष में कमी और ज़्यादती का ज़िक्र नहीं है और न उधार का। इसका जवाब ये है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है जिसको इमाम मुस्लिम ने निकाला। उसमें ये है कि

आपने सफ़िया (रज़ि.) को सात लौण्डियाँ देकर खरीदा। इब्ने बत्ताल ने कहा जब आपने दहिया कल्बी (रज़ि.) से फ़र्माया, कि तू सफ़िया (रज़ि.) के बदल और कोई लौण्डी कैदियों में से ले तो ये बेअ हुई लौण्डियों की बदले लौण्डी के उधार और इसका यही मतलब है। (वहीदी)

हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.), खलीफ़ा कल्बी के बेटे हैं, बलन्द मर्तबे वाले सहाबी हैं। ग़ज़्व ए उहुद और बाद के तमाम ग़ज़्वात में शरीक हुए। सन् 6 हिजरी में आँहज़रत (ﷺ) ने उनको नाम-ए-मुबारक (खत) देकर रोम के बादशाह कैसर के पास भेजा था। कैसर ने मुसलमान होना चाहा लेकिन अपनी ईसाई जनता के डर से इस्लाम कुबूल नहीं किया। ये दहिया कल्बी वही सहाबी हैं जिनकी शक्ल में हज़रत जिब्रैल (अलैहिस्सलाम) आँहज़रत (ﷺ) के पास तशरीफ़ लाया करते थे। आख़िर दहिया कल्बी मुल्के शाम (वर्तमान सीरिया) में चले गये और अहदे-मुआविया तक वहीं रहे। बहुत से ताबेईन ने उनसे रिवायतें की हैं। हदीषे-सफ़िया (रज़ि.) में उन्हीं का ज़िक्र है।

### बाब 109 : लौण्डी गुलाम बेचना

2229. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझे इब्ने मुहरीज़ ने ख़बर दी, और उन्हें अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने ख़बर दी, कि वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे। (एक अंसारी सहाबी ने) नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! लड़ाई में हम लौण्डियों के पास जिमाअ के लिये जाते हैं, हमारा इरादा उन्हें बेचने का भी होता है। तो आप अज़ल कर लेने के बारे में क्या फ़र्माते हैं? उस पर आपने फ़र्माया, अच्छा तुम लोग ऐसा करते हो? अगर तुम ऐसा न करो फिर भी कोई हर्ज नहीं। इसलिये कि जिस रूह की भी पैदाइश अल्लाह तआला ने किस्मत में लिख दी है वो पैदा होकर रहेगी।

(दीगर मक़ाम : 2542, 4138, 5210, 6603, 7409)

### ١٠٩ - بَابُ بَيْعِ الرِّقَقِ

٢٢٢٩ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي ابْنُ مُحَرَّرٍ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ : ((بَيْنَمَا جَالِسٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نُصِيبُ سَيِّئًا فَحُبُّ الْإِيمَانِ فَكَيْفَ نَرَى فِي الْقَوْلِ؟ فَقَالَ : ((أَوْ إِنَّكُمْ تَفْعَلُونَ ذَلِكَ؟ لَا عَلَيْكُمْ أَنْ لَا تَفْعَلُوا ذَلِكَ، فَإِنَّهَا لَيْسَتْ نَسَمَةً كَتَبَ اللَّهُ أَنْ تَخْرُجَ إِلَّا هِيَ خَارِجَةً)).

[أطرافه في: ٢٥٤٢, ٤١٣٨, ٥٢١٠]

[٧٤٠٩, ٦٦٠٣]

**तशरीह :** अज़ल कहते हैं जिमाअ के दौरान इज़ाल के करीब ज़कर को फ़र्ज से बाहर निकाल लेना, ताकि औरत को हमल न रह सके। आँहज़रत (ﷺ) ने गोया एक तरह से उसे नापसन्दीदा फ़र्माया और इशारा दिया कि तुम्हारा अमल बातिल है। जो जान पैदा होने वाली मुक़द्दर है वो तो उस सूत में भी ज़रूर पैदा होकर रहेगी। इस हदीष से लौण्डी गुलाम की बेअ प्राबित हुई।

### बाब 110 : मुदब्बर का बेचना कैसा है?

### ١١٠ - بَابُ بَيْعِ الْمُدَبَّرِ

मुदब्बर वो गुलाम है जिसको मालिक कह दे कि तू मेरे मरने के बाद आज़ाद है। शाफ़िई और अहले हदीष के यहाँ उसकी बेअ जाइज़ है जैसा कि हदीष ज़ेल में ज़िक्र है। एक शख्स मर गया था, उसकी कुछ जायदाद न थी। सिर्फ़ यही गुलाम मुदब्बर था और वो कर्ज़दार था। आपने वही मुदब्बर गुलाम आठ सौ दिरहम को बेचकर उसका कर्ज़ अदा कर दिया। अक़्बर रिवायात में यही है कि उस शख्स की ज़िन्दगी ही में आँहज़रत (ﷺ) ने उनका कर्ज़ अदा करने के लिये उनके इस मुदब्बर गुलाम को नीलाम फ़र्माया था और उनके कर्ज़ख़ाहों को फ़ारिग़ किया था। इससे अंदाज़ा किया जा सकता है कि कर्ज़ का मामला कितना ख़तरनाक है कि इसके लिये गुलामे मुदब्बर को नीलाम किया जा सकता है। हालाँकि वो गुलामे मुदब्बर अपने मालिक के मरने के बाद

आजाद हो जाता है।

2230. हमसे इब्ने नुमैर ने बयान किया, कहा कि हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे सलमा बिन कुहैल ने, उनसे अत्ता ने और उनसे जाबिर (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुदब्बर गुलाम बेचा था।

(राजेअ: 2141)

2231. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उनसे सुफयान ने बयान किया, उनसे अय्य ने, उन्होंने ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रजि.) को ये कहते हुए सुना था, कि मुदब्बर गुलाम को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बेचा था। (तफ्सील पीछे गुजर चुकी है) (राजेअ: 2141)

2232, 33. मुझसे जुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यअकूब ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे झालेह ने बयान किया कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें इब्ने दुल्लाह ने खबर दी, उन्हें ज़ैद बिन खालिद और अबू हुरैरह (रजि.) ने खबर दी कि उन दोनों ने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपसे गैर शादी-शुदा बाँदी के बारे में जो ज़िना कर ले, सवाल किया गया, आपने फ़र्माया कि उसे कोड़े लगाओ, फिर अगर वो ज़िना कर ले तो उसे कोड़े लगाओ। और फिर उसे बेच दो। (आखिरी जुम्ला आपने) तीसरी या चौथी बार के बाद (फ़र्माया था)। (राजेअ: 2152)

۲۲۳۰- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كَهْلٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَاعَ النَّبِيُّ ﷺ الْمُدَبَّرَ))

(راجع: ۲۱۴۱)

۲۲۳۱- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ صُرَيْحٍ عَنْ سَمِيعٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((بَاعَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ))

(راجع: ۲۱۴۱)

۲۲۳۲، ۲۲۳۳- حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ وَأَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَاهُ أَنَّهُمَا سَمِعَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُسْأَلُ عَنِ الْأَمَةِ تَزَوَّجَ وَلَمْ يُخْصِنْ، قَالَ: ((أَجْلِدُوهَا، ثُمَّ إِنْ زَانَتْ فَاجْلِدُوهَا، ثُمَّ يَبْغُوهَا بَعْدَ الثَّلَاثَةِ أَوْ الرَّبَاعَةِ))

(راجع: ۲۱۵۲)

**तशरीह:** इस हदीष की मुताबकत बाब के तर्जुमे से मुस्किल है। हाफिज़ ने कहा इस हदीष से ये निकला कि लौण्डी जब ज़िना करे तो उसको बेच डालें और ये आम है उस लौण्डी को भी शामिल है जो मुदब्बरा है। तो मुदब्बरा की बेअ का जवाज़ निकला, ऐनी ने उस पर ये ए'तिराज़ किया कि हदीष में जवाज़ बेअ ज़िना करने पर मौकूफ़ रखा गया है और उन लोगों के नज़दीक तो मुदब्बर की बेअ हर हाल में दुरुस्त है ख्वाह वो ज़िना कराए या न कराए, तो उससे इस्तिदलाल सहीह नहीं हो सकता। मैं कहता हूँ ऐनी का ए'तिराज़ फ़ासिद है। इसलिये कि मुदब्बरा लौण्डी अगर बार-बार ज़िना कराए तो उसके बेचने का जवाज़ इस हदीष से निकला और जो लोग मुदब्बर की बेअ को जाइज़ नहीं समझते वो ज़िना करने की सूरत में भी उसके जवाज़ के क़ाइल नहीं हैं। पस ये हदीष उनके क़ौल के ख़िलाफ़ हुई और मुवाफ़िक़ हुई उनके जो मुदब्बर की बेअ के जवाज़ के क़ाइल हैं। और गो बेअ का हुक्म इस हदीष में ज़िना के बार-बार होने पर दिया गया है, मगर करीना दलालत करता है कि बेअ उस पर मौकूफ़ नहीं है इसलिये कि जो लौण्डी मुत्तलक़ ज़िना न करा ले या एक ही बार कराए उसका भी बेचना दुरुस्त है अब ऐनी का ये कहना कि ये दलालत इबारतुन्नस है या इशातुन्नस या दलालतुन्नस उसके जवाब में ये कहेंगे कि ये दलालतुन्नस है क्योंकि हदीष में मुत्तलक़ लौण्डी का ज़िक्र है और वो मुदब्बरा को शामिल है। (वहीदी)

2234. हमसे अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझे लैष ने खबर दी, उन्हें सईद ने, उन्हें उनके वालिद ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने खुद सुना है कि जब कोई बाँदी जिना कराए और वो प्राबित हो जाए तो उस पर हद्दे जिना जारी की जाए, अल्बत्ता उसे लअनत मलामत न की जाए। फिर अगर वो जिना कराए तो उस पर इस बार भी हद्द जारी की जाए लेकिन किसी किसम की लअनत मलामत न की जाए। तीसरी बार भी अगर वो जिना करे और जिना प्राबित हो जाए तो उसे बेघ डालें खवाह बाल की एक रस्सी के बदले ही क्यों न हो।

(राजेअ : 2152)

٢٢٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَرِيرِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((إِذَا زَنَتْ أَمَةٌ أَحَدَكُمْ فَتَيْنَ زَنَاهَا فَلْيَجْلِدْهَا الْحَدَّ وَلَا يُثْرَبْ عَلَيْهَا، ثُمَّ إِنْ زَنَتْ فَلْيَجْلِدْهَا الْحَدَّ وَلَا يُثْرَبْ، ثُمَّ إِنْ زَنَتْ الثَّلَاثَةَ فَتَيْنَ زَنَاهَا فَلْيَغْفِهَا وَلَا يَحْتَلِ مِنْ شَيْءٍ)).

[راجع: ٢١٥٢]

इसलिये कि ऐसी फ़ाहिशा औरत एक मुसलमान के घर में नहीं रह सकती। कुआन पाक में अल्लाह तआला ने फ़र्माया, अल् खबीषातु लिल् खबीषीना वल् खबीषूना लिल् खबीषाति (अन् नूर : 26) या'नी खबीष ज़ानी औरतें बदकार ज़ानी मर्दों के लिये और खबीष ज़ानी मर्द खबीष ज़ानी औरतों के लिये हैं।

बाब 111 : अगर कोई लौण्डी खरीदे तो इस्तिब्राअ रहम से पहले उसको सफ़र में ले जा सकता है या नहीं?

١١١- بَابُ هَلْ يُسَافَرُ بِالْخَارِجَةِ قَبْلَ أَنْ يَسْتَبْرَأَ؟

इस्तिब्राअ कहते हैं लौण्डी का रहम पाक करने को, या'नी कोई नई लौण्डी खरीदे, तो जब तक हैज न आए उससे सुहबत न करे और सफ़र में ले जाने का ज़िक्र इसलिये आया कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत सफ़िया (रज़ि.) को जो शुरू में बहैषियत लौण्डी के आई थीं, सफ़र में अपने साथ रखा।

आगे रिवायत में सहुर्हि का ज़िक्र है जो मदीना के करीब एक मुकाम था। हैस का ज़िक्र आया है, जो वलीमा में तैयार किया गया था। ये घी, खजूर और पनीर से मिलकर बनाया जाता था। बाब के आखिर में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने सूरह मोमिनीन की एक आयत का हिस्सा नक़ल किया। और उसके इत्लाक़ से ये निकला कि बीवियों और लौण्डियों से मुत्लक़न खवाहिशे नफ़्स पूरी करना दुरुस्त है। सिर्फ़ जिमाअ इस्तिब्राअ से पहले एक हदीष की रू से मना हुआ तो दूसरे ऐश बदस्तूर दुरुस्त रहेंगे।

और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा कि उसमें कोई हर्ज नहीं कि ऐसी बाँदी का (उसका मालिक) बोसा ले ले या अपने जिस्म से लगाए। और इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि जब ऐसी बाँदी जिससे वती की जा चुकी है, हिबा की जाए या बेची जाए या आज़ाद की जाए तो एक हैज तक उसका इस्तिब्राअ रहम करना चाहिये। और कुंवारी के लिये इस्तिब्राअ रहम की ज़रूरत नहीं है। अत्ता ने कहा कि अपनी हामला बाँदी से शर्मगाह के सिवा बाक़ी जिस्म से फ़ायदा उठाया जा सकता है। अल्लाह तआला ने सूरह मोमिनून

وَلَمْ يَزِ الْخَسَنُ بَأْسًا أَنْ يَقْبَلَهَا أَوْ يُسَافِرَهَا. وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: إِذَا وَهَبَتِ الْوَلِيدَةُ أَلْفِي تَوَطًّا أَوْ بَيْتًا أَوْ غَيْفَةً فَلْيَسْتَبْرَأْ رَحِمَهَا بِحَيْضَةٍ وَلَا تَسْتَبْرَأْ الْعَذْرَاءُ. وَقَالَ غَطَاءٌ: لَا بَأْسَ أَنْ يُصِيبَ مِنْ جَارِيَتِهِ الْخَامِلِ مَا دُونَ الْفَرْجِ. وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى :

में फर्माया, मगर अपनी बीवियों से या बान्दियों से।

2235. हमसे अब्दुल ग़फ़ार बिन दाऊद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यअकूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अमर बिन अबी अमर ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ख़ैबर तशरीफ़ लाए और अल्लाह तआला ने क़िला फ़तह करा दिया तो आपके सामने सफ़िया बन्ते हुय्यि बिन अख़्तब (रज़ि.) के हुस्न की ता'रीफ़ की गई। उनका शौहर क़त्ल हो गया था। वो खुद अभी दुलहन थीं। पस रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें अपने लिये पसन्द कर लिया, फिर ख़ानगी हुई। जब आप सहुरों हा पहुँचे तो पड़ाव हुआ। और आपने वहीं उनके साथ ख़ल्चत की। फिर एक छोटे दस्तख़वान पर हैस तैयार करके रखवाया। और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने महाबा से फ़र्माया था कि अपने करीब के लोगों को वलीमा की ख़बर कर दो। सफ़िया (रज़ि.) के साथ निकाह का यही वलीमा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था। फिर जब हम मदीना की तरफ़ चले तो मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उबाआ से सफ़िया (रज़ि.) के लिये पर्दा कराया। और अपने ऊँट को पास बिठाकर अपना टख़ना बिछा दिया। सफ़िया (रज़ि.) अपना पाँव आप (ﷺ) के टख़ने पर रखकर सवार हो गई।

(राजेअ : 371)

﴿لَا عَلَىٰ أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ﴾.

۲۲۳۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَقَارِبِ بْنُ دَاوُدَ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ، فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْحِصْنَ دُكِرَ لَهُ جَمَالُ صَفِيَّةَ بِنْتِ حِشْرِ بْنِ أَخْطَبٍ - وَقَدْ قُتِلَ زَوْجُهَا وَكَانَتْ غُرُوسًا - فَأَصْطَفَاهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِنَفْسِهِ فَخَرَجَ بِهَا، حَتَّى بَلَغْنَا مَدَنَ الرُّوحَاءِ حَلَّتْ قَبْنَى بِهَا، ثُمَّ صَنَعَ حَتَّى لِي يَطْعَ صَفِيرٌ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَذِنَ مَنْ حَوْلَكَ))، فَكَانَتْ بِلَكَ وَتِلْمَةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلَى صَفِيَّةَ. ثُمَّ خَرَجْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ، قَالَ: لَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَحْوَئِي لَهَا وَرَأَاهُ بَعَاءَةٌ، ثُمَّ يَجْلِسُ عِنْدَ بَعِيرِهِ فَيَضَعُ رُكْبَتَهُ، فَتَضَعُ صَفِيَّةُ رِجْلَهَا عَلَى رُكْبَتِهِ حَتَّى تَرْكَبَ)). [راجع: ۳۷۱]

**तशरीह:** हज़रत सफ़िया (रज़ि.) हुय्यि बिन अख़्तब की बेटी हैं। ये रईसे ख़ैबर किनाना की बीवी थी और ये किनाना वही यहूदी है जिसने बहुत से ख़ज़ाने ज़ेरे ज़मीन दफ़न कर रखे थे और फ़तहे ख़ैबर के मौक़े पर उन सबको पोशीदा रखना चाहा था। मगर आँहज़रत (ﷺ) वद्वे इलाही से ख़बर मिल गई और किनाना को खुद उसी के क़ौम के इस़रार पर क़त्ल करा दिया गया क्योंकि अक़़बर ग़रीब यहूदी इस सरमायादार की हरकतों से तंग आ चुके थे और आज बमुश्किल उनको ये मौक़ा मिला था। सफ़िया (रज़ि.) ने पहले एक ख़्वाब देखा था कि चाँद मेरी गोद में है। जब उन्होंने ये ख़्वाब अपने शौहर किनाना से बयान किया तो उसकी ता'बीर किनाना ने समझकर कि ये नबी—ए—मौऊद अलैहिस्सलाम की बीवी बनेगी उनके मुँह पर एक ज़ोरदार तमाचा मारा था। ख़ैबर फ़तह हुआ तो ये भी कैदियों में थी और हज़रत दहिया (रज़ि.) बिन ख़लीफ़ा कल्बी के हिस्से ग़नीमत में लगा दी गई थी।

बाद में आँहज़रत (ﷺ) को उनकी नस्बी शराफ़त मा'लूम हुई कि ये हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के ख़ानदान से हैं तो आपने हज़रत दहिया (रज़ि.) को उनके बदले सात गुलाम देकर उनसे वापस लेकर आज़ाद कर दिया। और खुद उन्होंने अपने पुराने ख़्वाब की बिना पर आपसे शर्फ़े ज़ोजियत का सवाल किया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपने हरमे मुहतरम में उनको

दाखिल फर्मा लिया और उनका मेहर उनकी आज्ञादी को करार दे दिया। हज़रत सफ़िया (रज़ि.) बहुत ही वफ़ादार और इल्म दोस्त (विदूषी) प्रामाणिक हुई। आँहज़रत (ﷺ) ने भी उनकी शराफ़त के पेशेनज़र उनको इज़्जत बख़शी। उस सफ़र ही में आप (ﷺ) ने अपनी उबाअ मुबारक से उनको पर्दा कराया और अपने ऊँट के पास बैठकर अपना टख़ना बिछा दिया। जिस पर आप (रज़ि.) ने अपना पाँव रखा और ऊँट पर सवार हो गई। 50 हिजरी में उन्होंने वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ में सुपुर्दे खाक की गई।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस से बहुत से मसाइल का इस्तिस्नाज फ़रमाते हुए कई जगह उसे मुख़्तसर और मुतव्वल नक़ल फ़र्माया है। यहाँ आपके पेशे-नज़र वो सारे मसाइल है जिनका ज़िक्र आपने बाब के तर्जुमे में फ़र्माया है और वो सब इस हदीस से बख़ूबी प्रामाणिक होते हैं कि हज़रत सफ़िया (रज़ि.) लौण्डी की हैशियत में आई थीं। आपने उनको आज्ञाद कर दिया और सफ़र में अपने साथ रखा। उसी से बाब का मक़सद प्रामाणिक होता है।

## बाब 112 : मुरदार और बुतों को बेचना

हुरमत मुराद है, या'नी मुरदार और बुतों की त्जिारत हराम है।

2236. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन अबी रिबाह ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, फ़तहे मक्का के साल आप (ﷺ) ने फ़र्माया, आपका क़ायाम अभी मक्का ही में था कि अल्लाह और उसके रसूल ने शराब, मुरदार, सूअर और बुतों का बेचना हराम करार दे दिया है। इस पर पूछा गया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मुरदार की चर्बी के बारे में क्या हुक्म है उसे हम क़श्तियों पर मलते हैं। खानों पर उससे तैल का काम लेते हैं। और लोग उससे अपने चिराग़ भी जलाते हैं। आपने फ़र्माया कि नहीं वो हराम है। उसी मौक़े पर आपने फ़र्माया कि अल्लाह यहूदियों को बर्बाद करे। अल्लाह तआला ने जब चर्बी उन पर हराम की तो उन लोगों ने उसे पिघलाकर बेचा और उसकी क़ीमत खाई। अबू आसिम ने कहा कि हमसे अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने बयान किया, उन्हें अत्ता ने लिखा कि मैंने जाबिर (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

(दीगर मक़ाम : 4296, 4633)

## ۱۱۲- بَابُ بَيْعِ الْمَيْتَةِ وَالْأَصْنَامِ

۲۲۳۶- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَنِبَةَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَاحٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ بِمَكَّةَ عَامَ الْفَتْحِ: ((إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ حَرَّمَ بَيْعَ الْخَمْرِ وَالْمَيْتَةِ وَالْغَنَائِرِ وَالْأَصْنَامِ. لَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ شُحُومَ الْمَيْتَةِ لِأَنَّهُا يُطْلَى بِهَا السُّنَنُ وَيَنْفَعُ بِهَا الْجُلُودُ وَيَسْتَصْبَحُ بِهَا النَّاسُ، فَقَالَ: لَا، هُوَ حَرَامٌ. ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عِنْدَ ذَلِكَ: ((قَاتِلِ اللَّهَ الْيَهُودَ، إِنَّ اللَّهَ لَمَّا حَرَّمَ شُحُومَهَا جَمَلُوهَا ثُمَّ بَاغَوْهَا فَآكَلُوهَا لَعْنَهُ)). قَالَ أَبُو عَاصِمٍ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ: كَتَبَ إِلَيَّ عَطَاءٌ مَسِيعَتُ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفاه ۱ : ۴۲۹۶، ۴۶۳۳]

**तशरीह:** मक्का 8 हिजरी में फ़तह हुआ है। मुरदार की चर्बी, अक़षर उलमा ने इसके बारे में ये बतलाया है कि इसका बेचना हुराम है और इससे नफ़ा उठाना दुरुस्त है। मषलन कश्तियों पर लगाना और चिराग़ जलाना। कुछ ने कहा कि कोई नफ़ा उठाना जाइज़ नहीं सिवा उसके जिसकी सराहत हदीष में आ गई हो। या'नी चमड़ा जब उसकी दबागत कर ली जाए, अगर कोई पाक चीज़ नापाक हो जाए जैसे लकड़ी या कपड़ा तो उसकी बेअज़ुम्हूर उलमा के नज़दीक जाइज़ है।

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहदिष देहलवी (रज़ि.) मरहूम फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इन्नल्लाह व रसूलहू हरम बैअल्खमि वल्मैतति वल्खिन्नज़ीरि वल्अस्नामि या'नी अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ने शराब, मुरदार, सूअर और बुतों की तिजारत को हुराम करार दिया है और नीज़ आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इन्नल्लाह व इज़ा हरम शैअब हरम मुमुनहू बेशक अल्लाह तआला ने जिस चीज़ को हुराम करार दे दिया, तो उसकी क़ीमत को भी हुराम किया है। या'नी जब एक चीज़ से नफ़ा उठाने का तरीक़ा मुकर्रर है मषलन शराब पीने के लिये है और बुत सिर्फ़ परस्तिश के लिये। पस अल्लाह ने इनको हुराम कर दिया। इसलिये उसकी द्विक़मत का तक्राज़ा हुआ कि उनकी बेअ भी हुराम की जाए। और नीज़ आपने फ़र्माया, महरुस्त बराये ख़बीषुन या'नी ज़ानिया की उज़रत ख़बीष है। और आँहज़रत (ﷺ) ने काहिन को उज़रत देने से मना फ़र्माया और आँहज़रत (ﷺ) ने मुनिया के कस्ब से नहीं फ़र्माई है।

मैं कहता हूँ कि जिस माल के हासिल करने में गुनाह की आमेज़िश (मिलावट) होती है, उस माल से नफ़ा हासिल नहीं किया जा सकता वो हुराम है। एक तो ये कि उस माल के हुराम करने और उससे इतिफ़ाअ न हासिल करने में मअसियत से बाज़ रहना है। और इस क़िस्म के मामले के दस्तूर जारी करने में फ़साद का जारी करना और लोगों को उस गुनाह पर आमादा करना है। दूसरे वजह ये है कि लोगों की दानिस्त में और उनकी समझ में प्रमने मुबीअ से हीला पैदा होता है और इस अमल की ख़बाघ़त उनके इलूम में इस प्रमन और उस उज़रत के अंदर सरायत कर जाती (घुस जाती) है और लोगों के नुफ़ूस में भी उसका अषर होता है इसीलिये आप (ﷺ) ने शराब के बाब में उसके निचोड़ने वाले और निचुड़वाने वाले और पीने वाले और पिलाने वाले और ले जाने वाले और जिसके पास ले जा रहा है उन सब पर लअनत की है क्योंकि मअसियत (नाफ़रमानी) की इआनत (मदद) और उसका फैलाना और लोगों को उसकी तरफ़ तवज्जह दिलाना भी मअसियत और ज़मीन में फ़साद बरपा करना है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) जो इस हदीष के रावी हैं, उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है, अंसार में से हैं। क़बील-ए-सलम के रहने वाले हैं। इनका शुमार उन मशहूर सहाबा में होता है जिन्होंने हदीष की रिवायत क़प्रत से की है। बद्र और जुन्ला ग़ज़ात में जिनकी ता'दाद अठारह है, ये शरीक हुए। शाम और मिस्र में तब्बलीगी व ता'लीमी सफ़र किये। आख़िर उम्र में बीनाई जाती रही थी। उनसे एक बड़ी जमाअत ने अहादीष को नक़ल किया है। 94 साल की उम्र में मदीनतुल मुनव्वरा में वफ़ात पाई। जबकि अब्दुल मलिक बिन मरवान की हुकूमत का ज़माना था। कहा जाता है कि सहाबा किराम (रज़ि.) में सबसे आख़िर में वफ़ात पाने वाले बुजुर्ग यही हैं। रज़ियल्लाह अन्हु व अज़ाहू। आमीन।

माहे रमज़ानुल मुबारक 8 हिजरी मुताबिक़ 630 ईस्वी में मक्का शरीफ़ फ़तह हुआ। उस वक़्त नबी करीम (ﷺ) के साथ दस हज़ार सहाबा किराम (रज़ि.) थे। इस तरह कुतुबे मुक़द्दसा की वो पेशगोई पूरी हुई, जिसका तर्जुमा ये है।

ख़ुदावन्द सीना से आया और शुअर से तुलूअ हुआ और फ़ारान के पहाड़ से उन पर चमका। दस हज़ार कुहूसियों के साथ आया। और उसके दाईं हाथ में एक आतिशी शरीअत उनके लिये थी। वो क़ौम के साथ क़माले इख़लास से मुहब्बत रखता है। उसके सारे मुक़द्दस तेरे हाथ में हैं और वे तेरे क़दमों के नज़दीक हैं और तेरी ता'लीम को मानेंगे। (तौरात इस्तिफ़ना 2 ता 4/33) ~

इस तारीख़ी अज़ीम फ़तह के मौक़े पर आपने एक ख़िताबे आम फ़र्माया। जिसमें शराब, मुरदार, सूअर और बुतों की तिजारत के बारे में भी ये अहक़ामात सादिर फ़र्माए जो यहाँ बयान हुए हैं।

(नोट) तौरात मत्बूआ कलकत्ता 1842 ईस्वी सामने रखी हुई है, उसी से ये पेशगोई नक़ल कर रहा हूँ। (राज़)



## बाब 113 : कुत्ते की क्रीमत के बारे में

## ١١٣ - بَابُ ثَمَنِ الْكَلْبِ

इमाम शाफ़िई (रह.) और जुम्हूर उलमा का ये कौल है कि मुलकन किसी कुत्ते की बेअ जाइज़ नहीं, सिखाया हुआ हो या बिन सिखाया हुआ और अगर कोई उसको मार डाले तो उस पर ज़िमान लाज़िम नहीं आता और इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक ज़िमान लाज़िम होगा। और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक शिकारी और फ़ायदेमन्द कुत्ते की बेअ दुरुस्त है।

2237. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबीबक्र बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्हें अबू मसऊद अम्सारी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुत्ते की क्रीमत, ज़ानिया की उज्रत और काहिन की उज्रत से मना फ़र्माया था।

(दीगर मक़ाम : 2282, 5346, 5761)

٢٢٣٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : ( أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَثَمَنِ الْبُهَيْمِ، وَخُلُوانِ الْكَاهِنِ ) .

[أطرافه في: ٢٢٨٢، ٥٣٤٦، ٥٧٦١]

अरब में काफ़ी लोग बहुत थे जो आइन्दा की बातें लोगों को बताया करते थे। आजकल भी ऐसे दावेदार बहुत हैं। उनको उज्रत देना या शरीनी पेश करना जाइज़ नहीं है न उनका पैसा खाना जाइज़ है।

2238. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अौन बिन अबी शुहेफ़ा ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अपने वालिद को देखा कि एक पछना लगाने वाले (गुलाम) को खरीद रहे हैं। उस पर मैंने उसके बारे में पूछा उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ून की क्रीमत, कुत्ते की क्रीमत, बांदी की (नाजाइज़) कमाई से मना फ़र्माया था और गोदने वालियों और गुदवाने वालियों सूद लेने वालों और देने वालों पर लअनत की थी, और तस्वीर बनाने वाले पर भी लअनत की थी।

(राजेअ : 2086)

٢٢٣٨ - حَدَّثَنَا خُجَّاجُ بْنُ مِثَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَوْثُ بْنُ أَبِي جَحْظَةَ قَالَ: (رَأَيْتُ أَبِي اشْتَرَى حَمَانًا، فَأَتَى بِمَخَاجِمَةٍ فَكَسَرَتْ فَسَالَتْ عَنْ ذَلِكَ، فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الدِّمِّ وَثَمَنِ الْكَلْبِ، وَكَسْبِ الْأَمَةِ، وَلَقْنِ الْوَاهِمَةِ وَالسُّوْجِمَةِ، وَآكِلِ الرِّبَا وَمُؤَكِّلِهِ، وَلَقْنِ الْمُصَوِّرِ) .

[راجع: ٢٠٨٦]

**तशरीह :** ख़ून की क्रीमत से पछना लगाने वाले की उज्रत मुराद है। इस हदीष से अदम जवाज़ ज़ाहिर हुआ मगर दूसरी हदीष जो मज़कूर हुई उससे ये हदीष मन्सूख हो गई है। इस हदीष में साफ़ मज़कूर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद पछना लगवैया और उस पछना लगाने वाले को उज्रत अदा फ़र्माई। जिससे जवाज़ प्राबित हुआ। कुत्ते की क्रीमत के बारे में अबू दाऊद में मर्फूअन मौजूद है कि जो कोई तुमसे कुत्ते की क्रीमत तलब करे उसके हाथ में मिट्टी डाल दो, मगर निसाई में जाबिर (रज़ि.) की रिवायत है कि आपने शिकारी कुत्ते को मुस्तफ़ा फ़र्माया कि उसकी खरीद व फ़रोख्त जाइज़ है। ज़ानिया की उज्रत जो वो ज़िना कराने पर हासिल करती है, उसका खाना भी मुसलमान के लिये क़द्रअन हुराम है, मिजाज़न यहाँ उस उज्रत को लफ़्ज़े महर से ता'बीर किया गया। काहिन से मुराद फ़ाल खोलने वाले, हाथ देखने वाले, गैब की ख़बरें बतलाने वाले और इस किस्म के

सब लोग शामिल हैं जो ऐसे पाखण्डों से पैसा वसूल करते हैं। वहुव हुरामुन बिल्इज्माअ लिमा फ़ीहि मिन अख़िजल्इवज़ि अला अम्मिन बात्तिलिन ये झूठ पर उज़रत लेना है जो सर्वसम्पत्ति से हराम है। गोदने वालियाँ और गुदवाने वालियाँ जो इंसानी जिस्म पर सूई से गोदकर उसमें रंग भर देती हैं। ये पेशा भी हराम है और इसकी आमदनी भी हराम है। इसलिये कि किसी मुसलमान मर्द, औरत को ज़ेबा नहीं कि वो उसका मुर्तकिब हो। सूद लेने वालों पर, उसी तरह देने वालों पर, दोनों पर लअनत की गई है बल्कि गवाह और कातिब और ज़ामिन तक पर लअनत वारिद हुई है कि सूद का धंधा उतना ही बुरा है। तस्वीर बनाने वालों से जानदारों की तस्वीर बनाने वाले लोग मुराद हैं। उन सब पर लअनत की गई, और इनका पेशा नाजाइज़ करार दिया गया।

## 35. किताबुस्सलम

# किताब बैअे-सलम के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बैअे सलम उसको कहते हैं कि एक शख्स दूसरे शख्स को नक़द रुपया दे और कहे कि उतनी मुद्दत के बाद मुझको तुम इन रुपयों के बदले में इतना ग़ल्ला या चावल फ़लाँ किस्म वाले देना। ये सर्वसम्पत्ति से मशरूअ है। आम बोलचाल में इसे बंधनी कहते हैं। जो रुपया दे उसको रब्बुस्सलम और जिसको रुपया दिया जा रहा है उसे मुस्लम अलैह और जो माल देना ठहराए उसे मुस्लम फ़ीह कहते हैं। बैअे सलम पर लफ़्ज़े सल्फ़ का भी इत्लाफ़ हुआ है। कुछ लोगों ने कहा कि लफ़्ज़ सल्फ़ अहले इराक़ की लुगात है और लफ़्ज़े सलम अहले हिजाज़ की लुगात है ऐसी बैअे को आम मुहावरे में बंधनी (साई, बयाना, एडवाँस) से ता'बीर किया गया है।

### बाब 1 : माप मुकर्रर करके सलम करना

2239. हमसे अम्म बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि हमको इस्माईल बिन अलिया ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी नुजैह ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन क़बीर ने, उन्हें मिन्हाल ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो (मदीना के) लोग फलों में एक साल या दो साल के लिये बैअे सलम करते थे। या उन्होंने ये कहा कि दो साल और तीन साल (के लिये करते थे) शक़ इस्माईल को हुआ था। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स भी ख़जूर की बैअे

١ - بَابُ السَّلَمِ فِي كَيْلٍ مَعْلُومٍ  
٢٢٣٩ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَّارَةَ قَالَ  
أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ  
أَبِي نَجِيحٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَثِيرٍ عَنْ أَبِي  
الْمِنْهَالِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا  
قَالَ: ((لَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْمَدِينَةَ  
وَالنَّاسُ يُسَلِّفُونَ فِي النَّخْرِ الْقَامِ وَالْعَامِينَ  
- أَوْ قَالَ عَامِينَ أَوْ ثَلَاثَةَ، ذَلِكَ إِسْمَاعِيلُ

सलम करे, उसे मुकर्ररा पैमाने या मुकर्ररा वज़न के साथ करनी चाहिये।

हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमको इस्माईल ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने बयान किया कि बेअ सलम मुकर्ररा पैमाने और मुकर्ररा वज़न में होनी चाहिये।

(दीगर मक़ाम : 2240, 2241, 2253)

**तशरीह :** जो चीज़ें माप-तौलकर बेची जाती हैं उनमें माप-तौल ठहराकर सलम करना चाहिये। अगर माप-तौल मुकर्रर न किये जाएँ तो ये बेअ सलम जाइज़ नहीं होगी अल्ग़ाज़ इस बेअ के लिये ज़रूरी है कि वज़न मुकर्रर हो और मुद्दत मुकर्रर हो वरना बहुत से मफ़ासिद का ख़तरा है। इसीलिये हदीसे हाज़ा में उसके लिये ये ताकीद की गई।

**बाब 2 : बेअ सलम मुकर्ररा वज़न के साथ जाइज़ है**

2240. हमसे सद्क़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान बिन इययना ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी नुजैह ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन क़रीर ने, उन्हें अबू मिन्हाल ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो लोग ख़ज़ूर में दो और तीन साल तक के लिये बेअ सलम करते थे। आप (ﷺ) ने उन्हें हिदायत फ़र्माई कि जिसे किसी चीज़ की बेअ सलम करनी है, उसे मुकर्ररा वज़न और मुकर्ररा मुद्दत के लिये ठहराकर करे।

मबलन सौ रुपये का इतने वज़न का ग़ल्ला आज से पूरे तीन माह बाद तुमसे वसूल करूँगा। ये तै करके ख़रीददार ने सौ रुपये उसी वक़्त अदा कर दिया। ये बेअ सलम है, जो जाइज़ है। अब मुद्दत पूरी होने पर तयशुदा वज़न का ग़ल्ला उसे ख़रीददार को अदा करना होगा।

हमसे अली ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने अबी नुजैह ने बयान किया। (इस रिवायत में है कि) आपने फ़र्माया बेअ सलम मुकर्ररा वज़न में मुकर्ररा मुद्दत तक के लिये करनी चाहिये। यहाँ बेअ सलम पर लफ़ज़ बेअ सलम बोला गया है।

2241. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबी नुजैह ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन क़रीर ने, और उनसे अबू मिन्हाल ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन

- فَقَالَ : ((مَنْ سَلَّمَ فِي تَمَرٍ فَلَيْسَ لِي فِي كَيْلٍ مَقْلُومٍ وَوَزْنٍ مَقْلُومٍ)).

حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ بِهَذَا . . . ((فِي كَيْلٍ مَقْلُومٍ وَوَزْنٍ مَقْلُومٍ)).

[أطرافه في : ٢٢٤٠، ٢٢٤١، ٢٢٥٣].

٢- بَابُ السَّلَامِ فِي وَزْنٍ مَقْلُومٍ  
٢٢٤٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَثِيرٍ عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ، الْمَدِينَةَ وَهُمْ يُسَلِّفُونَ بِالتَّمْرِ السَّتِينَ وَالْفَلَاحِ، فَقَالَ : ((مَنْ سَلَّمَ فِي شَيْءٍ فَلِي كَيْلٍ مَقْلُومٍ وَوَزْنٍ مَقْلُومٍ إِلَى أَجَلٍ مَقْلُومٍ)).

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ وَقَالَ : ((فَلَيْسَ لِي كَيْلٍ مَقْلُومٍ إِلَى أَجَلٍ مَقْلُومٍ)). [راجع : ٢٢٣٩]

٢٢٤١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَثِيرٍ عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ

अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) (मदीना) तशरीफ़ लाए और आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुकर्ररा वज़न और मुकर्ररा मुद्दत तक के लिये (बेअे सलम) होनी चाहिये। (राजेअ: 2239)

केल और वज़न से माप और तौल मुराद हैं। उसमें जिस चीज़ से वज़न करना है, किलो या क़दीम सेर या मन। ये भी जुम्ला बातें तै हुई होना ज़रूरी हैं।

2242, 43. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुजालिद ने (तीसरी सनद) और हमसे यहाा ने बयान किया, उनसे वकीअ ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी मुजालिद ने। (दूसरी सनद) हमसे हफ़स बिन इमर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे मुहम्मद और अब्दुल्लाह बिन अबी मुजालिद ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन शहाद बिन अल्हाद और अबूबुर्दा में बेअे सलम के बारे में बाहम इख़ितलाफ़ हुआ। तो उन हज़रात ने मुझे इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) की ख़िदमत में भेजा। चुनौचे मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ), अबूबक्र और इमर (रज़ि.) के ज़मानों में गैहूँ, जौ, मुनक्का और खज़ूर की बेअे सलम किया करते थे। फिर मैंने इब्ने अब्ज़ा (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने भी यही जवाब दिया।

(दीगर मक़ाम: 2244, 2245, 2255, 2256)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ... وَقَالَ: ((لِي كَيْلٌ مَقْلُومٌ وَوَزْنٌ مَقْلُومٌ إِلَى أَجَلٍ مَقْلُومٍ)). [راجع: ٢٢٣٩]

٢٢٤٢، ٢٢٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ ابْنِ أَبِي الْمَجَالِيدِ ح. وَحَدَّثَنَا وَكَيْعٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي الْمَجَالِيدِ. قَالَ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدٌ أَوْ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي الْمَجَالِيدِ قَالَ: ((اختلف عبد الله بن شداد بن الهاد وأبو بردة في السلف، ففتوني إلى ابن أبي أوفى رضي الله عنه، فسأله فقال: إنا كنا نسلف على عهد رسول الله ﷺ وأبي بكر وعمر في الحنطة والشعير والزبيب والتمر)) وسألت ابن أوزي فقال مثل ذلك.

[طرافه في: ٢٢٤٤، ٢٢٥٥]

[طرافه في: ٢٢٤٥، ٢٢٥٤]

**तशरीह:** हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, अज्मऊ अला अन्नहू इन कान फ़िस्सलमि मा युकालु औ यूज़नु फ़ला बुद फ़ीहि मिन ज़िक्विलकैलिल मअलूमि वल्चज्जुल मअलूम फ़इन कान फ़ीमा ला युकालु व ला यूज़नु फ़ला बुद मिन अददिन मअलूमिन या'नी इस अमर पर इज्माअ है कि बेअे सलम में जो चीज़ें माप या वज़न के क़ाबिल हैं उनका वज़न मुकर्रर होना ज़रूरी है और जो चीज़ें महज़ अदद से ता'ल्लुक रखती हैं उनकी ता'दाद का मुकर्रर होना ज़रूरी है। हदीषे मजकूरा से मा'लूम हुआ कि मदीना में इस क़िस्म के लेन-देन का आम रिवाज था। फ़िल्हकीक़त कास्तकारों (किसानों) और सन्नाओं को पेशगी की ज़रूरत होती है जो अगर न हो तो वो कुछ भी नहीं कर सकते।

सनद में हज़रत वकीअ बिन जिराह का नाम आया और उनसे बहुत सी अहदीष मरवी हैं। वे कूफ़ा के बाशिन्दे थे। बक़ौल कुछ उनकी असल नीशापूर के क़र्या से है। उन्होंने हिशाम बिन इर्वा और औजाई और घौरी वगैरह असातिज़-ए-हदीष से हदीष की समाअत की है। उनके तलामिज़ा में अकाबिर हज़रात मणलन हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक, इमाम अहमद बिन हंबल, यहाा बिन मुईन और अली बिन मदीनी भी नज़र आते हैं। बग़दाद में रौनक अफ़रोज़ होकर दसैं हदीष का हल्का काथम फ़र्माया। फ़त्रे हदीष में उनका क़ौल क़ाबिले ए'तिमाद (विश्वसनीय) तस्लीम किया गया है।

हजरत अब्दुल्लाह बिन औफा सहाबी हैं, हुदैबिया और खैबर में और उसके बाद तमाम गज़्वात में शरीक हुए। और हमेशा मदीना में क़याम फ़र्माया। यहाँ तक कि आँहजरत (ﷺ) की वफ़ात का हृदय सामने आ गया। उसके बाद आप कूफ़ा तशरीफ़ ले गए। 87 हिजरी में कूफ़ा में ही इतिक़ाल फ़र्माया। कूफ़ा में इतिक़ाल करने वाले ये सबसे आखिरी सहाबी—ए-रसूल (ﷺ) हैं। उनसे इमाम शअबी वग़ैरह ने रिवायत की है।

इमाम शअबी आमिर बिन शुरहबील कूफ़ी मशहूर ज़ी इल्म अकाबिर में से हैं। हजरत उमर (रज़ि.) के दौरे ख़िलाफ़त में पैदा हुए। बहुत से सहाबा से रिवायत करते हैं। उन्होंने पाँच सौ सहाबा किराम (रज़ि.) को देखा। हिफ़्ज़े हदीस का ये मल्का खुदादाद था कि कभी कोई हर्फ़ काग़ज़ पर नोट नहीं किया। जो भी हदीस सुनी उसको अपने हाफ़्ज़ में महफूज़ कर लिया। इमाम जुहरी कहा करते थे कि दौरे हाज़िर में हकीकी उलमा तो चार ही देखे गए हैं। या'नी इब्ने मुसय्यिब मदीना में, शअबी कूफ़ा में, हसन बसरा में, और मकहूल शाम में। 82 साल की उम्र में सन् 104 हिजरी में इतिक़ाल फ़र्माया। रहिमहुल्लाह रहमतन वासिआ आमीन।

### बाब 3 : उस शख़्स से सलम करना जिसके पास असल माल ही मौजूद न हो

### ۳- بَابُ السَّلَامِ إِلَى مَنْ لَيْسَ عِنْدَهُ أَصْلٌ

मज़लन एक शख़्स के पास खज़ूर नहीं है और किसी ने उससे खज़ूर लेने के लिये सलम कर लिया। कुछ ने कहा कि असल से मुराद उसकी बिना है, मज़लन गल्ले की असल खेती है और मेवे की असल पेड़ है। इस बाब से ये ग़र्ज़ है कि सलम के जवाज़ के लिये उस माल का मुसल्लम इलैहि के पास होना ज़रूरी नहीं।

2244, 45. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे शौबानी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी मुजालिद ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन शहाद और अबूबुर्दा ने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) के यहाँ भेजा और हिदायत की कि उनसे पूछो कि क्या नबी करीम (ﷺ) के अस्हाब आप (ﷺ) के ज़माने में गेहूँ की बेअे-सलम किया करते थे? अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हम शाम के इम्बात (एक काश्तकार क़ौम) के साथ गेहूँ, ज्वार, जैतून की मुक़र्रा वज़न और मुक़र्रा मुहत के लिये सौदा किया करते थे। मैंने पूछा क्या सिर्फ़ उसी शख़्स से आप लोग ये बेअ किया करते थे जिसके पास असल माल मौजूद होता था? उन्होंने फ़र्माया कि हम उसके बारे में पूछते नहीं थे। उसके बाद उन दोनों हजरत ने मुझे अब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ा (रज़ि.) की ख़िदमत में भेजा। मैंने उनसे भी पूछा। उन्होंने भी यही कहा कि नबी करीम (ﷺ) के अस्हाब आपके अहदे मुबारक में बेअे-सलम किया करते थे और हम ये भी नहीं पूछते थे कि उनके खेती भी है या नहीं।

۲۲۴۴، ۲۲۴۵- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي الْمَجَالِدِ قَالَ: ((بَعَثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ شَدَّادٍ وَأَبُو بَرْدَةَ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَا: سَلُهُ هَلْ كَانَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ فِي عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْلِفُونَ فِي الْحِنْطَةِ؟ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: كُنَّا نَسْلِفُ بِبَيْطِ أَهْلِ الشَّامِ فِي الْحِنْطَةِ وَالشُّعِيرِ وَالزَّيْتِ فِي كَيْلٍ مَقْلُومٍ إِلَى أَجَلٍ مَقْلُومٍ. قُلْتُ: إِلَى مَنْ كَانَ أَصْلُهُ عِنْدَهُ؟ قَالَ: مَا كُنَّا نَسْأَلُهُمْ عَنْ ذَلِكَ. ثُمَّ بَعَثَانِي إِلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِيزَى فَسَأَلْتُهُ، فَقَالَ: كَانَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ يَسْلِفُونَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، وَلَمْ نَسْأَلْهُمْ أَهْلَهُمْ حَرْثَ

हमसे इस्हाक बिन शाहीन ने बयान किया, कहा कि हमसे खालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे शैबानी ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी मुजालिद ने यही हदीस बयान की। इस रिवायत में ये बयान किया कि हम उनसे गेहूँ और जौ में बैअे-सलम किया करते थे। और अब्दुल्लाह बिन वलीद ने बयान किया, उनसे सुफयान ने, उनसे शैबानी ने बयान किया, उसमें उन्होंने जैतून का भी नाम लिया है। हमसे कुतैबा ने बयान किया, उनसे जरिर ने बयान किया, उनसे शैबानी ने और उसमें बयान किया कि (हम) गेहूँ, ज्वार और मुनक्का में (बैअे-सलम किया करते थे)

(राजेअ : 2242, 2243)

أَمْ لَا)). حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي مُجَالِدٍ بِهِذَا وَقَالَ: ((تَسْلِفُهُمْ لِي الْحِنْطَةِ وَالشُّعْبَةِ)). وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْوَلِيدِ عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ وَقَالَ: ((وَالزَّيْتِ)). حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ الشَّيْبَانِيِّ وَقَالَ: ((لِي الْحِنْطَةُ وَالشُّعْبَةُ وَالزَّيْتُ)).

[راجع: ٢٢٤٣، ٢٢٤٢]

**तशरीह :** यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है या'नी इस बात को हम पूछा नहीं करते थे कि उसके पास माल है या नहीं। मा'लूम हुआ सलम हर शख्स से करना दुस्त है। मुसल्लम फोह या उसकी असल उसके पास मौजूद हो या न हो तो इतना जरूर मा'लूम होना चाहिये कि मामला करने वाला अदा करने और वक्त पर बाज़ार से खरीदकर या अपनी खेती या मजदूरी वगैरह से हासिल करके उसके अदा करने की कुदरत रखता है या नहीं। अगर कोई शख्स महज़ कल्लाश हो और वो बैअे-सलम कर रहा हो तो मा'लूम होता है कि वो उस धोखे से अपने भाई मुसलमान का पैसा हड़प करना चाहता है और आजकल आमतौर पर ऐसा होता रहता है। हदीस में वारिद हुआ है कि अदायगी की निव्यत खालिस रखने वालों की अल्लाह भी मदद करता है कि वो वक्त पर अदा कर देता है और जिसकी हज़म करने की निव्यत हो तो कुदरती इम्दाद उसको जवाब दे देती है।

लफ्जे इम्बात की तहकीक में अल्लामा शौकानी (रह.) फ़रमाते हैं, जम्द नबीतिन व हुम क्रौमुन मअरूफ़न कानू यन्ज़िलून बिल्बताइहि मिनल्इराक़ियिन क़ालहुल जौहरी व अस्लुहुम क्रौमुम्मिनल अरबि दख़लू फ़िल्अजमि वख़तलत अन्साबुहुम व फ़सुदत अलसिनतहुम व युक्कालु लहुम अन्नबतु बिफ़ल्हतेन वन्नबीतु बिफ़ल्हिन अव्वलुहु व कस्ून भ्रानिही व ज्यादतुन तहतानिय्या व इन्नमा सम्मू बिज़ालिक लि मअरिफ़तिहिम बिअम्बातिल्माइ अथ इस्तिख़ाजुहु लिक्फ़रति मअलिजिहुमल फ़लाहा व क़ील हुम नसारा अशशामि व हुम अरबुन दाख़लू फ़िल्मि व नज़लू बिवादिशशामि व युदुल्लु अला हाज़ा क़ौलुहू मिन अम्बातिशशामि व क़ील हुम ताइफ़तानि ताइफ़तुन इख़तलत बिल्अजमि व नज़लुल्बताइह व ताइफ़तुन इख़तलत बिर्ूमि व नज़लुशशाम. (नैलुल औतार) या'नी लफ्जे इम्बात नबीत की जमा है। ये लोग अहले इराक़ के पथरीले मैदानों में रहा करते थे, असल में ये लोग अरबी थे। मगर अजम (ग़ैर अरब) में जाने से उनके अन्साब (नस्लें) और उनकी जुबानें (भाषाएं) सब मख़लूत (मिक्स) हो गईं। नब्त भी उन ही को कहा गया है और नबीत भी। ये इसलिये कि ये क्रौम खेती-क्यारी के फ़न में बड़ा तजुर्बा रखती थी और पानी निकालने का उनको ख़ास महारथ थी। इम्बात पानी निकालने ही को कहते हैं। इसी निस्बत से उनको इम्बात की क्रौम कहा गया। ये भी कहा गया है कि ये शाम के नसारा थे जो नस्लन अरब थे। मगर रूम में जाकर वादी-ए-शाम में रहने लगे। रिवायत में भी लफ्जे इम्बातुशशाम इस पर दलालत कर रहा है। ये भी कहा गया है कि उनके दो गिरोह थे। एक गिरोह अज्मियों के साथ इख़ितलात करके इराक़ी मैदानों में निवास करता था और दूसरा गिरोह रोमियों से मख़लूत होकर शाम (सीरिया) का निवासी हो गया था। बहरहाल ये लोग काश्तकार (किसान) थे और गेहूँ के ज़ख़ीरे लेकर मुल्के अरब में बेचने के लिये आया करते थे। ख़ास तौर पर मदीना के मुसलमानों से उनका तिजारी रिश्ता इस दर्जे बढ़ गया था कि उनके यहाँ हर जाइज़ नक़द - उधार सौदा करना उनका मा'मूल बन गया था जैसा कि हदीसे हाज़ा से ज़ाहिर है।

2246. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्हें अम्प ने ख़बर दी, उन्होंने कहा

٢٢٤٦ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَمْرُو قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا

कि मैंने अबुल बख्तरी त्राई से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से खजूर के पेड़ में बेअे—सलम के बारे में पूछा, तो आपने फ़र्माया कि पेड़ पर फल को बेचने से औहज़रत (ﷺ) ने उस वक़्त तक के लिये मना फ़र्माया था जब तक कि वो खाने के क़ाबिल न हो जाए या उसका वज़न न किया जा सके। एक शख्स ने पूछा कि क्या चीज़ वज़न की जाएगी। उस पर इब्ने अब्बास (रज़ि.) के क़रीब ही बैठे हुए एक शख्स ने कहा कि मतलब ये है कि अंदाज़े करने के क़ाबिल हो जाए, और मुआज़ ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर ने कि अबुल बख्तरी ने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने मना किया था। फिर यही हदीस बयान की। (दीगर मक़ाम: 2248, 2250)

الْبَحْتَرِيُّ الطَّائِيُّ قَالَ: ((سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ السَّلَامِ فِي النَّخْلِ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى يُؤْكَلَ مِنْهُ وَحَتَّى يُوزَنَ. فَقَالَ الرَّجُلُ: وَإِنِّي شِئْتُ أَنْ يُوزَنَ؟ قَالَ رَجُلٌ إِلَى جَانِبِهِ: حَتَّى يُغْرَقَ)). وَقَالَ مُعَاذٌ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو قَالَ أَبُو الْبَحْتَرِيِّ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ)). وَمِثْلُهُ.

[طرفاه ن: ٢٢٤٨، ٢٢٥٠].

**तशरीह:** इसका मतलब ये है कि जब तक उसकी पुख्तगी न खुल जाए उस वक़्त तक सलम जाइज़ नहीं क्योंकि ये सलम खास पेड़ों पर लगे हुए फलों पर हुई। अगर मुत्लक खजूर में कोई सलम करे तो वो जाइज़ है चाहे पेड़ पर फल निकले भी न हों, या मुसल्लम इलैह (सौदा करने वाले) के पास पेड़ भी न हों। अब कुछ ने कहा कि ये हदीस दरहकीक़त बाद वाले बाब से मुताल्लिक है। कुछ ने कहा इसी बाब से मुताल्लिक है और मुताबक़त यूँ होती है कि जब मुअय्यन पेड़ों में बावजूद पेड़ों के सलम जाइज़ न हुई तो मा'लूम हुआ कि पेड़ों के वजूद से सलम पर कोई अपर नहीं पड़ता और अगर पेड़ न हो जो माल की असल हैं जब भी सलम जाइज़ होगी, बाब का यही मतलब है।

#### बाब 4 : पेड़ पर जो खजूर लगी हुई हो उसमें बेअे सलम करना।

#### ٤- بَابُ السَّلَامِ فِي النَّخْلِ

या'नी जिस सूरत में कि हमको भरोसा हो जाए कि ये पेड़ यकीनन फल देंगे बल्कि फल अब पुख्ता होने के क़रीब ही आ गया है तो उन हालात में पेड़ पर लटकी हुई खजूरों में बेअे—सलम जाइज़ है।

2247, 48. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे अबुल बख्तरी ने बयान किया कि मैंने इब्ने इमर (रज़ि.) से खजूर में जबकि वो पेड़ पर लगी हुई हो बेअे—सलम के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि जब तक वो किसी क़ाबिल न हो जाए उसकी बेअे से औहज़रत (ﷺ) ने मना फ़र्माया है। इसी तरह चाँदी को उधार, नक़द के बदले बेचने से मना फ़र्माया। फिर मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से खजूर की पेड़ पर बेअे—सलम के बारे में पूछा, तो आपने भी यही कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस वक़्त तक खजूर की बेअे से मना किया था जब तक कि वो खाई न जा सके या (ये फ़र्माया कि) जब तक वो इस क़ाबिल न हो जाए कि उसे कोई खा सके और जब तक वो

٢٢٤٧، ٢٢٤٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو عَنْ أَبِي الْبَحْتَرِيِّ قَالَ: ((سَأَلْتُ ابْنَ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ السَّلَامِ فِي النَّخْلِ فَقَالَ: نَهَى عَنِ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى يَصْلَحَ، وَعَنْ بَيْعِ الْوَرِقِ نِسَاءً بِنَاجِزٍ. وَسَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنِ السَّلَامِ فِي النَّخْلِ فَقَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى يُؤْكَلَ مِنْهُ أَوْ يَأْكُلَ مِنْهُ وَحَتَّى يُوزَنَ)). [راجع: ٢٢٤٦، ٢٢٤٨]

तौलने के क़ाबिल न हो जाए।

(राजेअ : 1486, 2246)

2249, 50. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अमर ने, उनसे अबुल बख्तरी ने कि मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से खजूरों की पेड़ पर बेअ-सलम के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फल को उस वक़्त तक बेचने से मना फ़र्माया था जब तक वो नफ़ा उठाने के क़ाबिल न हो जाए, उसी तरह चाँदी को सोने के बदले बेचने से जबकि एक उधार और दूसरा नक़द हो मना किया है। फिर मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने खजूर को पेड़ पर बेचने से जब तक कि वो खाने के क़ाबिल न हो जाए। इसी तरह जब तक वो वज़न करने के क़ाबिल न हो जाए मना फ़र्माया है। मैंने पूछा कि वज़न किये जाने का क्या मतलब है? तो एक साहब ने जो उनके पास बैठे हुए थे कहा कि मतलब ये है कि जब तक वो इस क़ाबिल न हो जाए कि वो अंदाज़ा की जा सके। (राजेअ : 1486, 2246)

### बाब 5 : सलम या क़र्ज़ में ज़मानत देना

2251. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमसे यअला बिन उबैदुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अअमश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने बयान किया उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक यहूदी से उधार अनाज ख़रीदा और अपनी एक लोहे की ज़िरह उसके पास गिरवी रखी।

(राजेअ : 2028)

तो वो ज़िरह बतौर ज़मानत यहूदी के पास रही, मा'लूम हुआ सलम या क़र्ज़ में अगर दूसरा कोई शख्स सलम वाले या क़र्ज़द्वारा का ज़ामिन हो तो ये दुरुस्त है।

### बाब 6 : बेअ-सलम में गिरवी रखना

2252. हमसे मुहम्मद बिन महबूब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अअमश ने

۲۲۴۹، ۲۲۵۰ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عُمَرُو عَنْ أَبِي الْبَخْتَرِيِّ: ((سَأَلْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ السَّلْمِ فِي النَّخْلِ فَقَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَيْعِ النَّخْرِ حَتَّى يَصْلَحَ، وَنَهَى عَنِ الْوَرَقِ بِالذَّهَبِ نَسَاءً بِنَاجِزٍ. وَسَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى يَأْكُلَ أَوْ يُوَكَّلَ وَحَتَّى يُوزَنَ. قُلْتُ: وَمَا يُوزَنُ؟ قَالَ رَجُلٌ عِنْدَهُ: حَتَّى يُخْرَزَ)). (راجع: ۱۴۸۶، ۲۲۴۹)

### ۵- بَابُ الْكَفِيلِ فِي السَّلْمِ

۲۲۵۱ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اشْتَرَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ طَعَامًا مِنْ يَهُودِيٍّ بِسَبِيئَةٍ، وَزَهْنَةً دِرْعًا لَهُ مِنْ حَدِيدٍ)). (راجع: ۲۰۲۸)

### ۶- بَابُ الرِّهْنِ فِي السَّلْمِ

۲۲۵۲ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مَحْبُوبٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ



बयान किया, उन्होंने कहा कि हमने इब्राहीम नखई के सामने बेअे सलम में गिरवी रखने का जिक्र किया, तो उन्होंने कहा कि हमसे अस्वद ने बयान किया, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक यहूदी से एक मुकर्ररा मुद्दत के लिये अनाज खरीदा और उसके पास अपनी लोहे की ज़िरह गिरवी रख दी थी। (राजेअ : 2068)

قَالَ: ((ثَلَاكُنَا عِنْدَ إِبْرَاهِيمَ النَّخَعِيِّ السَّلْمِ فَقَالَ: ((خَدَّثَنِي الْأَسْوَدُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اشْتَرَى مِنْ يَهُودِيٍّ طَعَامًا إِلَى أَجَلٍ مَعْلُومٍ، وَارْتَهَنَ مِنْهُ دِرْعًا مِنْ حَدِيدٍ)).

[راجع: ٢٠٦٨]

**तशरीह:** ये मसला तो कुआन शरीफ से प्राबित है, इज़ा तदायन्तुम बिदैनिन इला अजलिम्मुसम्मा फक्तुबूहु (अल बकर: : 282) आखिर तक। फिर फर्माया, फ़रिहानु मन्नबूज़ा (अल बकर: : 283) या'नी जब किसी मुकर्ररा वक्न के लिये कर्ज़ लो तो कोई चीज़ बतौर ज़मानत गिरवी रख लो।

**बाब 7 : सलम में मियाद मुअय्यन होनी चाहिये**

इब्ने अब्बास (रज़ि.) और अबू सईद खुदरी (रज़ि.) और अस्वद और इमाम हसन बसरी ने यही कहा है। और इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा अगर अनाज का नख और उसकी सिफ़त बयान कर दी जाए तो मियाद मुअय्यन (निर्धारित) करके उसमें बेअे—सलम करने में क़बाहत नहीं। अगर ये अनाज किसी ख़ास खेत का न हो, जो अभी पका न हो।

**तशरीह:** या'नी अगर किसी ख़ास खेत के अनाज में या किसी ख़ास पेड़ के मेवे में सलम करे और अभी वो अनाज या मेवा तैयार न हुआ हो तो सलम दुरुस्त नहीं होगी। लेकिन तैयार होने के बाद किसी ख़ास खेत और ख़ास पैदावार में भी सलम करना दुरुस्त है। उसकी वजह ये है कि जब तक ग़ल्ले (अनाज) या मेवे पुख्तगी पर न आए हों, उसका कोई भरोसा नहीं हो सकता कि अनाज या मेवा उतरेगा या नहीं। अन्देशा है कि किसी ज़मीनी आफ़त या आसमान से उतरने वाली आफ़त से ये अनाज और मेवा तबाह हो जाए फिर दोनों में झगड़ा हो। (वहीदी)

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर शाफ़िइया का रद्द किया जो सलम को बिन मि'याद या'नी नक़द भी जाइज़ रखते हैं। हन्फ़िया और मालिकिया इमाम बुखारी (रह.) के मुवाफ़िक़ हैं। अब इसमें इख़िलाफ़ है कि कम से कम मुद्दत क्या होनी चाहिये? पन्द्रह दिन से लेकर आधे दिन तक की मुद्दत के मुख्तलिफ़ अक़वाल हैं। तहावी ने तीन दिन को कम से कम मुद्दत क़रार दिया है। इमाम मुहम्मद (रह.) ने एक महीने मुद्दत ठहराई है।

हज़रत इमाम हसन बसरी (रह.) जिनका यहाँ ज़िक्र है अबुल हसन के बेटे हैं। उनकी कुत्रियत अबू सईद है, वे ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) के आज़ादकर्दा गुलाम हैं। उनके वालिद अबुल हसन का नाम यसार है, ये क़बीला बनी सब्इ यलसान से हैं। यसार को रबीआ बन्ते नज़्र ने आज़ाद किया था। इमाम हसन बसरी (रह.) जबकि ख़िलाफ़ते उमरी के दो साल बाक़ी थे, आलमे वजूद में आए। मदीना मुनव्वरा उनकी मुक़ामे विलादत (जन्मस्थली) है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने हाथ से खज़ूर मुँह में चबाकर उनके तालू से लगाई। उनकी वालिदा उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत करती थी। बसाओक़ात उनकी वालिदा कहीं चली जाती तो हसन बसरी को बहलाने के लिये हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) अपनी छाती उनके मुँह में दे दिया करती थीं यहाँ तक कि उनकी वालिदा लौटकर आतीं तो उम्मुल मोमिनीन के दूध भर आता और ये हज़रत उसे पी लिया करते थे। इस लिहाज़ से ये उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के रज़ाई फ़रज़न्द (दूधशरीक बेटे) प्राबित हुए। लोग कहते हैं जिस इल्म व हिक़मत पर इमाम हसन बसरी (रह.) पहुँचे ये उसी का तूफ़ैल है। हज़रत उम्मान

٧- بَابُ السَّلْمِ إِلَى أَجَلٍ مَعْلُومٍ  
وَبِهِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَأَبُو سَعِيدٍ وَالْأَسْوَدُ  
وَالْحَسَنُ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: لَا بَأْسَ فِي  
الطَّعَامِ الْمَوْصُوفِ بِسَعْرِ مَعْلُومٍ إِلَى أَجَلٍ  
مَعْلُومٍ مَا لَمْ يَكْ ذَلِكْ فِي زَرْعٍ لَمْ يَتَّ  
صَلَاخَةً.

गनी (रज़ि.) की शहादत के बाद ये बसरा चले आए। उन्होंने हज़रत इब्मान (रज़ि.) को देखा और कहा गया है कि मदीना में ये हज़रत अली (रज़ि.) से भी मिले। लेकिन बसरा में उनका हज़रत अली (रज़ि.) से मिलना सहीह नहीं है। इसलिये कि हज़रत हसन बसरी (रह.) जिस वक़्त बसरा को जा रहे थे तो वो वादी-ए-कुरा ही में थे और हज़रत अली (रज़ि.) उस वक़्त बसरा में तशरीफ़ ला चुके थे। उन्होंने हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.), हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) और दूसरे अकाबिरे सहाबा से रिवायत की है और उनसे भी एक बड़ी जमाअत ताबेईन और तबअ ताबेईन ने रिवायत की है। वो अपने ज़माने में इल्मो-फ़न, जुहद व तक्वा व इबादत और वरअ के इप्मा थे। रजब 110 हिजरी में वफ़ात पाई। हशरनल्लाहु मअहुम व जमअल्लाहु बैनना व बैनहुम फ़ी आला इल्लिय्यीन, आमीन!

2253. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन डययना ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन क़सीर ने, उनसे अबुल मिन्हाल ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो लोग फलों में दो और तीन साल तक के लिये बेअे सलम किया करते थे। आपने उन्हें हिदायत की कि फलों में बेअे-सलम मुकरर पैमाने और मुकररह मुद्त के लिये किया करो और अब्दुल्लाह बिन वलीद ने कहा, हमसे सुफ़यान बिन डययना ने कहा, उनसे इब्ने नुजैह ने बयान किया, इस रिवायत में यूँ है कि पैमाने और वज़न की तअय्युन के साथ (बेअे-सलम होनी चाहिये)

(राजेअ: 2239)

2254, 55. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें सुलैमान शैबानी ने, उन्हें मुहम्मद बिन अबी मुजालिह ने, कहा कि मुझे अबू बुर्दा और अब्दुल्लाह बिन शदाद ने अब्दुर्रहमान बिन अब्जआ और अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) की ख़िदमत में भेजा। मैंने उन दोनों हज़रात से बेअे-सलम के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में ग़नीमत का माल पाते, फिर शाम के इम्बात (एक काश्तकार क्रौम) हमारे यहाँ आते तो हम उनसे गेहूँ, जौ और मुनक्का की बेअे सलम एक मुद्त मुकरर करके किया करते थे। उन्होंने कहा कि फिर मैंने पूछा कि उनके पास उस वक़्त ये चीज़ें मौजूद भी होती थीं या नहीं? इस पर उन्होंने कहा कि हम

٢٢٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَثِيرٍ عَنْ أَبِي الْمُنْهَالِ عَنْ ابْنِ عَثَمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ وَهُمْ يُسَلِّفُونَ فِي الثَّمَارِ السَّتِينَ وَالثَّلَاثَ. فَقَالَ: ((اسْلِفُوا فِي الثَّمَارِ فِي كَيْلٍ مَقْلُومٍ إِلَى أَجَلٍ مَقْلُومٍ)). وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ وَقَالَ: ((لِي كَيْلٍ مَقْلُومٍ وَوَزْنٍ مَقْلُومٍ)).

[راجع: ٢٢٣٩]

٢٢٥٤, ٢٢٥٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا سَفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي مُجَالِدٍ قَالَ: ((أَرْسَلَنِي أَبُو بُرْدَةَ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ شَدَّادٍ إِلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي أُوَيْسٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ فَسَأَلَهُمَا عَنْ السَّلَفِ فَقَالَ: كَمَا نَصِيبُ الْمَقَاتِمِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، لَكَانَ يَأْتِينَا أَنْبَاطٌ مِنْ أَنْبَاطِ الشَّامِ، فَنَسْلِفُهُمْ فِي الْحِطَّةِ وَالشَّعِيرِ وَالزَّيْبِ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى. قَالَ: قُلْتُ: أَكَانَ لَهُمْ زَرْعٌ، أَوْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ

उसके बारे में उनसे कुछ नहीं पूछते थे। (राजेअ: 2242, 2243)

زَعُ؟ قَالَ تَتَّحِ مَا كُنَّا نَسْأَلُهُمْ عَنْ

[ذلك]، [راجع: ٢٢٤٢، ٢٢٤٣]

### बाब 8 : बेअे सलम में ये मि'याद लगाना कि जब ऊँटनी बच्चा जने

### ٨- بَابُ السَّلْمِ إِلَى أَنْ تَتَّحِ النَّاقَةُ

ये जाहिलियत का रिवाज था। महीने और दिन तो मुतअय्यन (निर्धारित) न करते, जिहालत इस दर्जे की थी कि ऊँटनी के जन्मे को वादा ठहराते। गो ऊँटनी अक़र करीब करीब एक साल की मुदत में जनती है। मगर फिर भी आगे-पीछे कई दिन का फ़र्क हो जाता है और नीज़ निज़ाअ का बाअिष होगा, इसलिये ऐसी मुदत लगाने से मना फ़र्माया।

2256. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्हें जुवैरिया ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग ऊँट वग़ैरह हमल होने की मुदत तक के लिये बेचते थे। नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया। नाफ़ेअ ने हब्बलुल हब्बला की तफ़्सीर ये की, यहाँ तक कि ऊँटनी के पेट में जो कुछ है वो उसे जन ले। (राजेअ: 2133)

٢٢٥٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ أَخْبَرَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانُوا يَبْتَاعُونَ الْجَزُورَ إِلَى حَبْلِ الْحَبَلَةِ فَهِيَ النِّمَى عَنْ)) فَسَرَهُ نَافِعٌ: إِلَى أَنْ تَتَّحِ النَّاقَةُ مَا فِي بَطْنِهَا. [راجع: ٢١٣٣]

फिर उसका बच्चा बड़ा होकर वो बच्चा जने जैसे दूसरी रिवायत में उसकी तसरीह है। इस मि'याद में जिहालत थी। दूसरे धोखा था कि मा'लूम नहीं वो कब बच्चा जनती है। फिर उसका बच्चा जिन्दा भी रह जाता है या मर जाता है। अगर जिन्दा रहे तो कब हमल रहता है, कब वज़अे हमल होता है। ऐसी मि'याद अगर सलम में लगाए तो सलम जाइज़ न होगी। चाहे आदतन उसका वक़्त मा'लूम भी हो सके।

## 36. किताबुशुफ़आ

## किताब शुफ़आ के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : शुफ़आ का हक़ उस जायदाद में होता है जो तक्सीम न हुई हो जब हदबन्दी हो जाए तो शुफ़आ का हक़ बाक़ी नहीं रहता

١- بَابُ الشُّفْعَةِ فِيمَا لَمْ يُقَسَمْ، فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ فَلَا شُفْعَةَ

**तशरीह:** शुफ़आ कहते हैं शरीक या पड़ोसी का हिस्सा सौदे के वक़्त उसके शरीक या पड़ोसी को जबरन मुतक़िल (ट्रांसफ़र) होना। इमाम बुखारी (रह.) कहते हैं कि हर चीज़ में शुफ़आ है और इमाम अहमद (रह.) से रिवायत है कि जानवर में है और किसी मन्कूला (अचल) जायदाद में नहीं और शाफ़िइया और हन्फ़िया कहते हैं कि शुफ़आ सिर्फ़ जायदाद वग़ैरह मन्कूला (अचल) में होगा। और शाफ़िइया के नज़दीक शुफ़आ सिर्फ़ शरीक को मिलेगा न कि पड़ोसी को और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक पड़ोसी को भी हक़के शुफ़आ है और अहले हदीष ने इसको इख़्तियार किया है, व हिय

माखूजतुमिनशशप्रइ व हुवज्जोज व क्रील मिनजियादति व क्रील मिनल्इआनति व फ़िशशरइ इन्तिकालु हिस्सति शरीकिन इला शरीकिन कानत इन्तक़लत इला अज्जबिद्यिन बिमिधिल्लइवज़िलमुसम्मा व लम यख़तलफ़िल उलमाउ फ़ी मशरूइयतिहा (फ़तह) और वो शुफ़आ से माखूज है जिसके मा'नी जोड़ा के हैं। कहा गया कि ज़्यादाती के मा'नी में है। कुछ ने कहा इआनत के मा'नी में है। शरअ में एक के हिस्से को उसके दूसरे शरीक के हवाले करना, जबकि वो कुछ क़ीमत पर किसी अजनबी की तरफ़ मुतक़िल हो रहा हो। उसकी मशरूइयत पर उलमा का इतिफ़ाक़ है।

2257. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हर उस चीज़ में शुफ़आ का हक़ दिया था जो अभी तक़सीम न हुई हो। लेकिन जब हदूद मुक़रर हो गईं और रास्ते बदल दिये गए तो फिर हक़के शुफ़आ बाक़ी नहीं रहता।

٢٢٥٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَضَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالشُّفْعَةِ فِي كُلِّ مَا لَمْ يُقْسَمْ، فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ وَصَرِفَتِ الطُّرُقُ فَلَا شُفْعَةَ)). [راجع: ٢٢١٣]

**तशरीह:** कस्तलानी (रह.) ने कहा कि इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम मालिक (रह.) का मज़हब ये है कि अगर शरीक ने शफ़ीअ को बेअ की ख़बर दी और उसने बेअ की इजाज़त दी फिर शरीक ने बेअ की तो शफ़ीअ को हक़के शुफ़आ न पहुँचेगा और उसमें इख़ितलाफ़ है कि बायेअ (बेचने वाले) को शफ़ीअ का ख़बर देना वाजिब है या मुस्तहब।

## बाब 2 : शुफ़आ का हक़ रखने वाले के सामने बेचने से पहले शुफ़आ पेश करना

हक़म ने कहा कि अगर बेचने से पहले शुफ़आ का हक़ रखने वाले ने बेचने की इजाज़त दे दी तो फिर उसका हक़के शुफ़आ ख़त्म हो जाता है। शअबी ने कहा कि हक़के शुफ़आ रखने वाले के सामने जब माल बेचा गया और उसने उस बेअ पर कोई ए'तिराज़ न किया तो उसका हक़ बाक़ी नहीं रहता।

2258. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको इब्राहीम बिन मैसरा ने ख़बर दी, उन्हें अमर बिन शरीद ने, कहा कि मैं सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) के पास खड़ा था कि मुस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) तशरीफ़ लाए और अपना हाथ मेरे शाने (काँधे) पर रखा। इतने में नबी करीम (ﷺ) के गुलाम अबू राफ़ेअ (रज़ि.) भी आ गए और फ़र्माया कि ऐ सअद! तुम्हारे क़बीले में जो मेरे दो घर हैं, उन्हें तुम ख़रीद लो। सअद (रज़ि.) बोले कि अल्लाह की क़सम

## ٢- بَابُ غَرْضِ الشُّفْعَةِ عَلَى صَاحِبِهَا قَبْلَ الْبَيْعِ

وَقَالَ الْحَكَمُ: إِذَا أُذِنَ لَهُ قَبْلَ الْبَيْعِ فَلَا شُفْعَةَ لَهُ. وَقَالَ الشَّافِعِيُّ: مَنْ بَيْعَتْ شُفْعَتُهُ وَهُوَ شَاهِدٌ لَا يُغَيِّرُهَا فَلَا شُفْعَةَ لَهُ.

٢٢٥٨- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ أَخْبَرَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَيْسَرَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ قَالَ: ((وَقَعْتُ عَلَى سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ فَجَاءَ الْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى مَكْنِي، إِذْ جَاءَ أَبُو رَافِعٍ مَوْلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا سَعْدُ ابْتَغِ مِنِّي بَيْتِي فِي

मैं तो उन्हें नहीं खरीदूँगा। उस पर मिस्वर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नहीं जी! तुम्हें खरीदना होगा। सअद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फिर मैं चार हजार (दिरहम) से ज़्यादा नहीं दे सकता और वो भी किस्तवार। अबू राफ़ेअ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुझे पाँच सौ दीनार उनके मिल रहे हैं। अगर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की जुबान से ये न सुना होता कि पड़ौसी अपने पड़ौस का ज़्यादा हक़दार है तो मैं उन घरों को चार हजार पर तुम्हें हर्गिज़ न देता। जबकि मुझे पाँच सौ दीनार उनके मिल रहे हैं। चूनाँचे वो दोनों घर अबू राफ़ेअ (रज़ि.) ने सअद (रज़ि.) को दे दिये।

(दीगर मक़ाम : 6977, 2978, 6980, 6981)

ذَارِك. فَقَالَ سَعْدٌ وَاللّٰهِ مَا أَتَانَهُمَا. قَالَ  
الْمُسَوِّرُ وَاللّٰهُ لَتَبْتَاعَهُمَا. فَقَالَ سَعْدٌ:  
وَاللّٰهُ لَا أَزِيدُكَ عَلَى أَرْبَعَةِ آلَافٍ مِّنْجَمَةٍ  
أَوْ مَقْطَعَةٍ. قَالَ أَبُو رَافِعٍ : لَقَدْ أُعْطِيتُ  
بِهَا خَمْسِمِائَةَ دِينَارٍ، وَلَوْ لَا أَتَى سَعْدٌ  
النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْجَارُ أَحَقُّ بِسَقْبِ مَا  
أُعْطِيَتْكُمَا بِأَرْبَعَةِ آلَافٍ وَأَنَا أُعْطِيَ بِهَا  
خَمْسِمِائَةَ دِينَارٍ، فَأَعْطَاهَا إِنِّيَّاهُ)).

[أطرافه في : ٦٩٧٧، ٢٩٧٨، ٦٩٨٠]

[٦٩٨١]

ये हदीष बज़ाहिर हन्फ़िया की दलील है कि पड़ौसी को शुफ़आ का हक़ है। शाफ़िइया उसकी ये तावील करते हैं कि मुराद वही पड़ौसी है जो जायदाद मुबीआ में भी शरीक हो ताकि हदीषों में इख़िलाफ़ बाक़ी न रहे।

### बाब 3 : कौन पड़ौसी ज़्यादा हक़दार है?

### ٣- بَابُ أَيِّ الْجَوَارِ أَقْرَبُ؟

मा'लूम हुआ कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) भी हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के साथ मुत्तफ़िक़ हैं कि पड़ौसी को हक़े शुफ़आ प्राबित है।

2259. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे शबाबा ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इमरान ने बयान किया, कहा कि मैंने तलहा बिन अब्दुल्लाह से सुना, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे दो पड़ौसी हैं, मैं उन दोनों में से किसके पास हदिया भेजूँ? आपने फ़र्माया कि जिसका दरवाज़ा तुझसे ज़्यादा करीब हो।

(दीगर मक़ाम : 2595, 6020)

٢٢٥٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ  
ح. وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا  
شَبَّابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ  
قَالَ: سَمِعْتُ طَلْحَةَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ  
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((قُلْتُ يَا رَسُولَ  
اللَّهِ إِنَّ لِي جَارَيْنِ فَلِإَيِّ آيِهِمَا أَهْدِي؟  
قَالَ: ((إِلَى أَقْرَبِهِمَا مِنْكَ يَابْنَ)).

[طرفاه في : ٢٥٩٥، ٦٠٢٠]

**तशरीह :** कस्तलानी ने कहा इससे शुफ़आ का जवाज़ प्राबित नहीं होता। हाफ़िज़ ने कहा कि अबू राफ़ेअ की हदीष पड़ौसी के लिये हक़के शुफ़आ प्राबित करती है। अब इस हदीष से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि अगर कई पड़ौसी हों तो वो पड़ौसी हक़के शुफ़आ में मुक़द्दम समझा जाएगा जिसका दरवाज़ा जायदादे मुबीआ से ज़्यादा करीब होगा।



## 37. किताबुल इजार:

# किताब उज्जरत के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : किसी भी नेक मर्द को मज़दूरी पर  
लगाना और अल्लाह का ये फ़र्माना

١ - بَابُ امْتِنَاجِ الرَّجُلِ الصَّالِحِ،  
وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

कि अच्छा मज़दूर जिसको तू रखे वो है जो ज़ोरदार, अमानतदार  
हो, और अमानतदार ख़ज़ान्ची का प़वाब और उसका बयान कि  
जो शख्स हुक्मत की दरख़वास्त करे उसको हाकिम न बनाओ।

﴿إِنْ خَيْرٌ مِّنْ امْتَنَاجِ الْقَوِيِّ الْأَمِينِ﴾  
وَالْخَازِنِ الْأَمِينِ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَعْمِلْ مَنْ  
أَرَادَهُ.

इजारा के मा'नी मज़दूरी के हैं इस्तिलाह (परिभाषा) में ये कि कोई शख्स किसी मुक़र्रर मज़दूरी पर मुक़र्रर मुदत के लिये अपनी  
जात का किसी को मालिक बना दे।

2260. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे  
सुफयान घौरी ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा यज़ीद बिन  
अब्दुल्लाह ने कहा कि मेरे दादा, अबू बुर्दा आमिर ने मुझे ख़बर दी,  
और उन्हें उनके बाप अबू मूसा अश़अरी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह  
(ﷺ) ने फ़र्माया, अमानतदार ख़ज़ान्ची जो उसको हुक्म दिया  
जाए, उसके मुत्ताबिक़ दिल की फ़राखी के साथ (सदका अदा कर  
दे) वो भी एक सदका करने वालों ही में से है। (सजेअ : 1438)

٢٢٦٠ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ  
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي  
جَدِّي أَبُو بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ أَبِي مُوسَى  
الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ  
النَّبِيُّ ﷺ: ((الْخَازِنُ الْأَمِينُ الَّذِي يُؤَدِّي  
مَا أَمَرَ بِهِ طِيَّةً نَفْسَهُ أَحَدَ الْمُتَصَدِّقِينَ)).

[راجع: ١٤٣٨]

2261. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन  
सईद कज़ान ने बयान किया, उनसे कुरत बिन ख़ालिद ने कहा कि  
मुज़से हुमैद बिन हिलाल ने बयान किया, उनसे अबूबर्दा ने बयान  
किया और उनसे अबू मूसा अश़अरी (रज़ि.) ने कि मैं रसूले करीम  
(ﷺ) की ख़िदमत में आया। मेरे साथ (मेरे क़बीला) अश़अर के

٢٢٦١ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى  
عَنْ قُرَّةَ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ  
هِلَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَقْبَلْتُ إِلَى النَّبِيِّ

दो मर्द और भी थे। मैंने कहा कि मुझे नहीं मा'लूम कि ये दोनों साहिबान हाकिम बनने के तलबगार हैं। इस पर आप (ﷺ) ने फर्माया कि जो शख्स हाकिम बनने का खुद ख्वाहिशमन्द हो, उसे हम हर्गिज हाकिम नहीं बनाएंगे। (यहाँ रावी को शक है कि औहज़रत (ﷺ) ने लफ़्ज़ लन् या लफ़्ज़ ला इस्ते'माल फर्माया) (दीगर मकाम : 3038, 4341, 4343, 4344, 6124, 6923, 7149, 7156, 7157, 7172)

فَلَمْ يَمَيِّزْ رَجُلَانِ مِنَ الْأَشْعَرِيِّينَ، فَقُلْتُ مَا عَلِمْتُ أَنَّهُمَا يَطْلُبَانِ الْعَمَلَ. فَقَالَ: لَنْ - أَوْ لَا - نَسْتَعْمِلَ عَلَى عَمَلِنَا مِنْ أَرَادَهُ. [أطرافه في : 3038, 4341, 4343, 4344, 6124, 6923, 7149, 7156, 7157, 7172]

लफ़्ज़ इजारात, इजारेह की जमा है। इजारा लुगत में उज्जरत या'नी उस मज़दूरी को कहते हैं जो किसी मुकर्रर खिदमत पर जो मुकर्रर मुहत तक अंजाम दी गई हो, उस काम के करने वाले को देना, वो नक़द या जिस जिस मुकर्रर सूरत में हो। मज़दूरी पर अगर किसी नेक अच्छे अमानतदार आदमी को रखा जाए, तो काम कराने वाले की ये ऐन खुशकिस्मती है कि मज़दूर अल्लाह से डरकर पूरा हक़ अदा करेगा और किसी कोताही से काम न लेगा। बाबु इस्तिजारीरिजुलिस्सालिहि मुनअकिद करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की एक गर्ज़ ये भी है कि नेक लोगों के लिये मज़दूरी करना कोई शर्म और आर की बात नहीं है और नेक सालेह लोगों से मज़दूरी पर काम कराना भी कोई बुरी बात नहीं है बल्कि दोनों के लिये बाज़िअे बरकत और अज़्र व प्रवाह है।

इस सिलसिले में इमाम बुखारी (रह.) ने आयत, इन्न खैरम्मनिस्ताजर्त नक़ल फर्माकर अपने मक़सद के लिये मज़ीद वज़ाहत फर्माई है और बतलाया है कि मज़दूरी के लिये कोई ताक़तवर आदमी जो अमानतदार भी हो मिल जाए तो ये बहुत बेहतर है। बारी तआला ने आयते मज़कूरा में हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) की साहबज़ादी की जुबान पर फर्माया है कि उन्होंने अपने वालिद से घर पहुँचकर ये कहा कि बाबाजान! ऐसा ज़बरदस्त और अमानतदार नौकर और कोई नहीं मिलेगा। हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने पूछा कि तुझे कैसे मा'लूम हुआ। उन्होंने कहा वो पत्थर जिसको दस आदमी मुश्किल से उठाते थे, उस जवान या'नी हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अकेले उठाकर फेंक दिया और मैं उसके आगे चल रही थी। हयादार इतना है कि जब मेरा कपड़ा हवा से उड़ने लगा तो मुझसे कहने लगा कि पीछे होकर चलो और अगर मैं ग़लत रास्ते पर चलने लगूँ तो पीछे से एक कंकरी सीधे रास्ते की तरफ़ फेंक देना। उससे समझकर सीधा रास्ता जान लूँगा और उसी पर चलूँगा।

हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का ये ऐन आलमे शबाब (जवानी के दिन) थे और हया और शर्म का ये आलम और खुदातर्सी का ये हाल कि दुखतरे शुऐब (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ नज़र उठाकर देखना भी मुनासिब न जाना। इसी आधार पर उस लड़की ने हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) से हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का इन शानदार लफ़्ज़ों में तआरुफ़ (परिचय) कराया। बहरहाल अमीरुल मुहिदिप्पीन इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल बुयूअ इजारात के सिलसिले में या'नी मज़दूरी करने से मुता'ल्लिक़ तमाम मसाइल तफ़्सील (विस्तार) से बयान फर्माए हैं।

बाब के आखिर में एक क़ायदा कुल्लिया बयान किया गया है कि जो शख्स अज़बुद नौकर या हाकिम बनने की दरख्वास्त करे और उसके हासिल करने के लिये वसीले ढूँढ़े, तो बादशाह और हाकिमे वक़्त का फ़र्ज है कि ऐसे हरीस (लालची) आदमी को हर्गिज हाकिम न बनाया जाए और जो नौकरी से भागे उसको उस नौकरी पर मुकर्रर करना चाहिये बशर्ते कि वो उसका अहल भी हो। वो ज़रूर ईमानदारी और खैर-ख्वाही से काम करेगा। लेकिन ये उसूल सिर्फ़ इस्लामी पाकीज़ा हिदायात से मुता'ल्लिक़ है जिसको अहदे ख़िलाफ़ते राशिदा ही में शायद बरता गया हो। वरना अब तो कोई अहल हो या न हो महज़ सिफ़ारिशों का लिहाज़ रखा जाता है। और इस ज़माने में तो नौकरी का हासिल करना और उसके लिये दफ़तरों की खाक छानना एक आम फ़ैशन हो गया है।

मुस्लिम शरीफ़ किताबुल इमारत में यही हदीष मज़ीद तफ़्सील के साथ मौजूद है। अल्लामा नववी (रह.) उसके ज़ेल में फ़र्माते हैं, क़ालल इलमाउ वल्लिहवमतु फ़ी अन्नहू ला यूला मन सअलल्विलायत अन्नहू यूकलु इलैहा व ला तकूनु मअहू इआनतुन कमा सरह बिही फ़ी हदीषि अब्दिर्हमान बिन समुरा अस्साबिक़ व इज़ा लमू तकून मअहू

इआनतुन लम यकुन कुफ़अन व ला यूला गैरल्कफ़िफ़ व लिअन्न फ़ीहि तुहम्मुहू लितालिबि वल्हरीस. (नववी) या'नी तलबगार को इमारत (सरदारी) न दी जाए, इसमें हिवमत ये है कि वो सरदारी पर मुक़रर किया जाएगा मगर उसको इआनत (अल्लाह की मदद) हासिल न होगी जैसा कि हदीषे अब्दुर्हमान बिन समुरा में स़राहत है। और जब उसको इआनत न मिलेगी तो उसका मतलब ये कि वो उसका अहल बाबित नहीं होगा और ऐसे आदमी को अमीर न बनाया जाए और उसमें तलबगार के लिये खुद तोहमत भी है और इज़हारे हिंस (लालच) भी; इलमा ने उसको स़राहत की है।

इस हदीष के आख़िर में ख़ज़ान्ची का ज़िक्र आया है। जिससे हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये इशारा फ़र्माया है कि ख़ज़ान्ची भी एक किस्म का नौकर ही है। वो अमानतदारी से काम करेगा तो उसको भी अज़ो-श़वाब उतना ही मिलेगा जितना कि मालिक को मिलेगा। ख़ज़ान्ची का अमीन होना बहुत ही अहम है वरना बहुत से नुक़सानात का अन्देशा हो सकता है। इसकी तफ़सील किसी दूसरे मुक़ाम पर आएगी।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, वक़्दरवा इब्नु ज़रीर तरीक़ि शुऐबिल जबई अन्नहू क़ाल इस्मुल मअतिल्लती तज़व्वजहा मूसा सफ़ूरा व इस्मु उख़्तिहा लिया व क़ज़ा खा मिन तरीक़ि इब्नि इस्हाक़ इल्ला अन्नहू क़ाल इस्मु उख़्तिहा शरक़ा व क़ौल लिया व क़ाल गैरूहू अन्न इस्मुहमा सफ़ूरा व अब्बा व अन्नहमा कानता तवामन व रवा मिन तरीक़ि अलिय्यिब्नि अबी तल्हत् अनिब्नि अब्बासिन फ़ी क़ौलिही इन्न ख़ैर मनिस्ताजर्तल क़विय्यल अमीन क़ाल क़विय्य फ़ीमा बलिय्युन अमीन फ़ी मस्तौदअ व रुविय मिन तरीक़ि इब्नि अब्बासिन व मुजाहिद फ़ी आख़रीन अन्न अब्बाहा सालहा अम्मारअत मिन कुव्वतिही व अमानतिही फ़ज़करत कुव्वतहू फ़ी हालिस्सुक्रा व अमानतिही फ़ी ग़ज़ि तफ़िही अन्नहमा व क़ौलहू लहम्शी ख़ल्फ़ी व दलीनी अलतरीक़ि व हाज़ा अख़रजहुल बैहकी बिइस्नादिन महीहिन अन उमरब्निल ख़त्ताबि व ज़ाद फ़ीहि फ़ज़ौजुहू अक़राम मूसा व मअहू यक्फ़ीहि औ यअमलु लहू फ़ी रिआयति गनमिही (फ़तहुल बारी)

दुखतरे हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) की तफ़सीलात के ज़ेल हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं कि जिस औरत से हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने शादी की थी उसका नाम सफ़ूरा था और उसकी दूसरी बहन का नाम लिया था, कुछ ने दूसरी बहन का नाम शुरक़ा बतलाया है और कुछ ने लिचा और कुछ ने कोई और नाम बताया है। और कुछ की तहकीक़ ये कि पहली का नाम सफ़ूरा और दूसरी बहन का नाम अबरा था। और ये दोनों जुड़वां पैदा हुई थीं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने आयते शरीफ़ा, इन्न ख़ैरम मनिस्ताजरत की तफ़सीर में यूँ फ़र्माया है कि क़वी (ताक़तवर) उन उमूर के लिये जिनका उनको ज़िम्मेदार या वाली बनाया जाए और अमीन (अमानतदार) उन चीज़ों के लिये जो उसको सौंपी जाए। और इब्ने अब्बास (रज़ि.) और मुजाहिद से ये भी मन्कूल है कि उसके वालिद ने अपने लड़की से पूछा कि तुमने उसकी कुव्वत और अमानत के बारे में क्या देखा तो उन्होंने बकरियों को पानी पिलाने के सिलसिले में उनकी कुव्वत का बयान किया। और अमानत का उनकी आँखों के नीचा करने के सिलसिले में जबकि वो आगे चल रही थीं और क़दम का कुछ हिस्सा हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को नज़र आ गया था तो आपने फ़र्माया कि मेरे पीछे-पीछे चलो और रास्ता से मुज़को आगाह करती चलो। पस हज़रत शुऐब ने उस लड़की का हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से निकाह कर दिया और हज़रत मूसा को अपने साथ अपनी ख़िदमात के लिये नीज़ बकरियों चराने के लिये ठहरा लिया, जैसा कि आठ साल के लिये तै किया गया था। मूसा ने दो साल और अपनी तरफ़ से बढ़ा दिये, इस तरह पूरे दस साल हज़रत मूसा (अलैहि.) को शुऐब (अलैहि.) की ख़िदमत में मुक़ीम रहने का शरफ़ हासिल हुआ।

हदीष इल्बा बिन मुज़िर में मरवी है, क़ाल कुत्रा इन्द रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़क़ाल इन्न मूसा अजर नफ़्सहू शमान सिनीन औ अशरन अला इफ़फ़ति फ़ज़िही व तआमि बतनिही अख़रजहु इब्नु माजा वो कहते हैं कि हम रसूलिल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में थे आपने फ़र्माया कि हज़रत मूसा (अलैहि.) ने आठ साल या दस साल के लिये अपने नफ़्स को हज़रत शुऐब (अलैहि.) की मुलाज़िमत के सुपर्द कर दिया ताकि आप पेट भरने के साथ अज़्दवाजी ज़िन्दगी में शराफ़त की ज़िन्दगी गुज़ार सकें।

अल मज्मूउ शर्हुल्मुहज्जब लिलउस्ताज़ अल मुहक्किक्क मुहम्मद नजीब अल मुतीई में किताबुल इज़ारह के ज़ेल में लिखा है, यज़ूज अन्नदुल इज़ारति अलल मनाफ़िइल मुबाहति वदलीलु अलैहि क़ौलुहू तआला फ़इन अर्ज़अन लकुम फ़ातुहुन्न उज़ूरहुन्न (जिल्द 14 स. 255) या'नी मुबाह मुनाफ़े के ऊपर मज़दूरी करना जाइज़ है जैसा कि इशादे बारी तआला है, अगर वो मुत्लक्कन औरतें तुम्हारे बच्चों को दूध पिलाएँ तो उनको उनकी मज़दूरी अदा कर



दो। मा'लूम हुआ कि मजदूरी करने-कराने का धुबूत किताबुल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) से है और ये कोई ऐसा काम नहीं है कि उसे शराफत के खिलाफ समझा जाए जैसा कि कुछ गलत किस्म के लोगों का तसव्वुर होता है और आज तो मजदूरों की दुनिया है, हर तरफ मजदूरों की तन्जीम हैं। मजदूर आज के दौर में दुनिया पर हुकूमत कर रहे हैं जैसा कि मुशाहिदा है।

## बाब 2 : चंद क़ीरात की मजदूरी पर बकरियाँ चराना

2262. हमसे अहमद बिन मुहम्मद मक्की ने बयान किया, कहा कि हमसे अम्र बिन यह्या ने बयान किया, उनसे उनके दादा सईद बिन अम्र ने, और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने कोई ऐसा नबी नहीं भेजा जिसने बकरियाँ न चराई हों। इस पर आप (ﷺ) के महाबा रिजवानुल्लाह अलैहिम ने पूछा, क्या आपने भी बकरियाँ चराई हैं? फ़र्माया कि हाँ! कभी मैं भी बकरियाँ चन्द क़ीरात की तन्जवाह पर चराया करता था।

۲- بَابُ رَغْوِ الْغَنَمِ عَلَى قَرَارِيطٍ  
۲۲۶۲- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَكِّيُّ  
قَالَ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ جَدِّهِ  
عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ  
ﷺ قَالَ ((مَا بَعَثَ اللَّهُ نَبِيًّا إِلَّا رَغْوِ  
الْغَنَمِ)). فَقَالَ أَصْحَابُهُ : وَأَنْتَ؟ فَقَالَ:  
((نَعَمْ، كُنْتُ أَرْعَاهَا عَلَى قَرَارِيطٍ لِأَهْلِ  
مَكَّةَ)).

**तशीह :** अमीरुल मुहदिप्पीन हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सदे बाब ये है कि मजदूरी के तौर पर बकरियाँ चराना भी एक हलाल पेशा है बल्कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है। बकरियों पर गाय, भैंस, भेड़ों और ऊँटों को भी क़यास किया जा सकता है कि उनको मजदूरी पर चराना-चुगाना जाइज़ और दुस्त है। हर पैगम्बर ने बकरियाँ चराई हैं उसमें हिक्मत ये है कि बकरियों पर रहम और शफ़क़त करने की उनको शुरूआती उम्र ही से आदत हो और धीरे धीरे बनी नोअ्रे इंसान की क़यादत करने से भी वो मुतआरफ़ (परिचित) हो जाएँ और जब अल्लाह उनको ये मन्सूबे ज़लीलिया (नुबुव्वत जैसा ऊँचा पद) बख़्शे तो रहमत और शफ़क़त से वो इन्ने आदम को राहे-रास्त (सीधी राह) पर ला सकें। इस उसूल के तहत तमाम अंबिया-ए-किराम की ज़िन्दगियों में आपको रहमत और शफ़क़त की झलक नज़र आएगी।

हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को फ़िरऔन की हिदायत के लिये भेजा जा रहा है; साथ ही ताकीद की जा रही है फ़क़ूला लहु क़वल लल्लय्यिना लअल्लहु यतज़क़रू अब्य़ख़शा (ताहा : 44) या'नी दोनों भाई फ़िरऔन के यहाँ जाकर उसको निहायत ही नरमी से समझाना, शायद वो नसीहत पकड़ सके या वो अल्लाह से डर सके। उसी नरमी का नतीजा था कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने जादूगरों पर फ़तह अज़ीम हासिल फ़र्माई। हमारे रसूले करीम (ﷺ) ने भी अपने बचपन में मक्का वालों की बकरियाँ उज्जरत पर चराई हैं। इसलिये बकरी चराना एक तरह से हमारे रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नत भी है। आप अहले मक्का की बकरियाँ चन्द क़ीरात उज्जरत पर चराया करते थे। क़ीरात आधे दानिक को कहते हैं जिसका वज़न 5 जौ के बराबर होता है।

अल्हम्दुलिल्लाह! आज मक्का शरीफ़ के पास वादी-ए-मिना में बैठकर ये सतरें (लाइन) लिख रहा हूँ और आस-पास की पहाड़ियों पर नज़र डाल रहा हूँ और याद कर रहा हूँ कि एक ज़माना ये भी था जिसमें रसूले करीम रहमतुल लिल आलमीन (ﷺ) इन पहाड़ियों में मक्का वालों की बकरियाँ चराया करते थे। काशा! मैं उतनी ताक़त रखता कि इन पहाड़ियों के चप्पे चप्पे पर पैदल चलकर आँहज़रत (ﷺ) के नुक़ूशे इक्दाम (चलने के निशानों) की याद ताज़ा कर सकता। सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस्सलाम व सल्लिम।

कुछ लोगों ने कहा कि अत्राफ़े मक्का में क़रारीत नाम से एक मौज़अ था। जहाँ आँहज़रत (ﷺ) मक्का वालों की बकरियाँ चराया करते थे। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, लाकिन रजहल अव्वल लिअन्न मक़त ला यअरिफ़ून बिहा मकानन युक्कालु लहु क़रारीत या'नी क़ौले अव्वल कि क़रारीत से दिरहम और दीनार के कुछ हिस्से मुराद हैं उसी को तरजीह हासिल है इसलिये कि मक्का वाले किसी ऐसे मकान से नावाक़िफ़ थे जिसे क़रारीत के नाम से जाना जाता हो।

व क़ालल इलमाउ अल हिक्मतु फ़ी इल्हामिल अंबियाइ मिन रअल्गनमि क़बलन्नबुव्वति अय्यहसिल लहुमुत्तमरून बिरअयिहा अला मा यक्फ़लूनहू मिनल्किर्यामि बिअमि उम्मतहिम या'नी उलमा ने कहा है कि अंबिया को बकरी चराने के इल्हाम के बारे में हिक्मत ये है कि उनको नुबुव्वत से पहले ही उनको चराकर उम्मत की क़यादत के लिये मशक़ (प्रेक्टिस) हो जाए

बकरी खुद एक ऐसा बाबरकत जानवर है कि अल्लाह पाक का फ़ज़ल हो तो बकरी पालने में चन्द ही दिनों में वारे न्यारे हो जाएँ। इसीलिये फ़ित्नों के दौर में एक ऐसे शाहस की ता'रीफ़ की गई है जो सब फ़ित्नों से दूर रहकर जंगलों में बकरियाँ पाले और उनसे गुज़ारा करके जंगलों ही में अल्लाह की इबादत करे। ऐसे वक़््त में ये बेहतरीन किस्म का मुसलमान है। उस वक़््त मस्जिदे नबवी रौजतुम मिन रियाजिल जन्नति मदीना मुनव्वरा में ब-सिलसिला नज़रे पानी उस मुक़ाम पर पहुँचता हुआ हरमैन शरीफ़ेन के माहौल पर नज़र डालकर हदीषे हाज़ा पर गौर कर रहा हूँ और देख रहा हूँ कि अल्लाह तआला ने इस अज़ीम मुल्क में बकरियों के मिज़ाज के मुवाफ़िक़ कितने मौक़े पैदा कर रखे हैं। मक़ा शरीफ़ में एक मुख़िलस दोस्त के यहाँ एक बकरी देखी जो दो किलो वज़न से ज़्यादा दूध देती थी। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ) मा मिन नबिथ्यिन इल्ला रआ अल्गनम क़बलन्नबुव्वति अय्यहसिल लहुमुत्तमरून बिरअयिहा अला मा यक्फ़लूनहू मिनल्किर्यामि बिअमि उम्मतहिम आज 2 सफ़र 1390 हिजरी मुक़ामे मुबारक मज़क़ूरा में ये चन्द अल्फ़ाज़ लिखे गए।

**बाब 3 : जब कोई मुसलमान मज़दूर न मिले तो ज़रूरत के वक़््त मुश्रिकों से मज़दूरी कराना जाइज़ है क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों से काम लिया था (उनसे बटाई पर मामला किया था)**

۳- بَابُ اسْتِئْجَارِ الْمُشْرِكِينَ عِنْدَ الضَّرُورَةِ، أَوْ إِذَا لَمْ يَوْجَدْ أَهْلَ الْإِسْلَامِ وَعَامِلَ النَّبِيِّ ﷺ يَهُودَ خَيْبَرَ

**तशरीह:** इस बाब के मज़मून से मा'लूम हुआ कि बिला ज़रूरत मुसलमान को छोड़कर काफ़िर को नौकर रखना, उससे मज़दूरी लेना मना है। काफ़िर हर्बी हो या ज़िम्मी इमाम बुखारी (रह.) का मज़हब यही है और ओहज़रत (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों को काश्तकारी के काम पर इस वजह से क़ायम रखा कि उस वक़््त मुसलमान किसान ऐसे मौजूद न थे, जो ख़ैबर को आबाद रखते। अगर आप यहूदियों को फ़ौरन निकाल देते तो ख़ैबर उजाड़ हो जाता और खुद मुसलमानों की आमदनी में बड़ा नुक़सान होता। अफ़सोस कि ख़ैबर के यहूदियों ने जो बज़ाहिर वफ़ादारी का दम भरकर इस्लामी ज़मीन पर खेती कर रहे थे अपनी अंदरूनी साज़िशों और मुसलमानों के ख़िलाफ़ ख़ुफ़िया कोशिशों से ख़िलाफ़ते इस्लामी को परेशान कर रखा था। चुनाँचे उन हालात से मजबूर होकर हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में उन यहूदियों की अंदरूनी साज़िशों को ख़त्म करने और उनकी नापाक कोशिशों को ख़ाक में वस्ल (मिलान) के लिये उनको ख़ैबर से जलावतन कर दिया और वहाँ मुसलमानों को आबाद कर दिया। इससे ये भी प्राबित हुआ कि अगर ग़ैर मुस्लिम मुप्सिद, साज़िशि न हों तो मुसलमान उनसे हस्बे ज़रूरत अपनी नौकरी करा सकते हैं। इसी तरह मुसलमान के लिये अगर ग़ैर-मुस्लिम के यहाँ अपने मज़हब की ज़िल्लत और ख़वारी का अन्देशा हो तो मुनासिब नहीं कि वो ऐसी जगह नौकरी करे।

क़ाल इब्नु बत्ताल आम्मतुल फ़ुक़हाइ युजीज़ून इस्तिजारहुम इन्दज़रूरति (फ़हूल बारी) या'नी आम फ़ुक़हा ने ग़ैर मुस्लिमों से मज़दूरी कराने को बवक़्ते ज़रूरी जाइज़ करार दिया है।

साहिबुल मुहज़ज़ब लिखते हैं, वख़्तलफू फ़िल्काफ़िरि इज़ा मुस्लिमन इजारतन मुअय्यनतन फ़मिन्हुम मन क़ाल फ़ीहि क़ौलानि लिअन्नहू अक़दुन यतजम्मुन हब्बुल मुस्लिमि फ़स़ार कबैइल अब्दिल मुस्लिमि मिनहु व मिन्हुम मन क़ाल यमिहहू क़ौलन वाहिदन लिअन्न कर्मल्लाहु वजहहू कान यस्तरूकी अल्माअ लिइम्मातिन यहूदियतिन (अल मुहज़ज़ब जिल्द 14/259)

अशशहू ख़बरु अलिथ्यिन रवाहु अहमद व जव्वदल हाफ़िज़ इब्नि हज़र इस्नादुहू व लफ़ज़ुहू जुअतु मरतिन जूअन शदीदन फ़ख़रज्तु लितबिल अमलि फ़ी अवालिल मदीनति फ़इज़ा अना राइतु बिइम्मातिन क़द जमअत

मदारन फ़ज़नन्तुहा तुरीदु बल्ह फ़कातअतुहा कल्ल ज़नूबिन अला फ़मदतु सित्त अशर ज़नूबन हत्ता मज्जलत यदाय धुम्म अतैतुहा फ़दत ली सित्त अशर तम्पतन फ़अतैतुन्नबिद्यि (ﷺ) अख़बर्तुहू फ़अकल मई मिन्हा व हाज़लख़ब्ब यदुल्लु दलालतन यअजिज़ुल कलमु मिन इस्तिस्काइ मा तूही बिही मिम्बयानिन मा कानतिस्सहाबतु अलैहि मिनल्हाजति व शिद्तिल फ़ाक़ति वस्सब्क अलल्ज़ूड व बज्जुल्बस्ड व इतआबिन्नफ़िसि फ़ी तहसीलि क़वामि मिनल्ऐशि लिन्नअफ़फ़ि अनिस्सवाजि व तुहम्मलुल्मतनु व इन्न ताजीरन्नफ़िसि युअहु दनाअतुन व इन कानतल्मुस्ताजिरु ग़ैर शरीफ़िन औ काफ़िरिन अविल्अजीरु मिन अश्राफ़िन्नफ़िसि व उज्ज माइहिम व क्रद औरहू स़ाहिबुल मुन्तक़ा लियस्तदिल्ल बिही अला जवाज़िल इजारति मुआवदतन यअनी अन्ध्यफ़अलल्अजीर अददन मअलूमन मिनल्अमलि बिअददिन मअलूमिन मिनल उज्जति (किताबे मज्कूर ११) या'नी उलमा ने इसमें इख़िलाफ़ किया है कि कोई काफ़िर किसी मुसलमान को बतौर मज़दूर रखे तो क्या फ़त्वा है। इस बारे में दो क़ौल हैं, एक तो ये कि ये मुसलमान को एक तरह से क़ैद करना, गोया उस मुसलमान बन्दे को बतौर गुलाम बेचना है। और दूसरा क़ौल ये है कि ये जाइज़ है इसलिये कि हज़रत अली (रज़ि.) ने एक यहूदी औरत के यहाँ मज़दूरी पर पानी खींचा था। खुद उनके अल्फ़ाज़ ये हैं कि एक बार मुझको सख़्त भूख ने सताया तो मैं मदीना के पास मज़दूरी करने निकला मैंने एक औरत को देखा वो कुछ मिट्टी को गीला कराना चाहती थी। मैंने उससे हर एक डोल के बदले एक खजूर पर मामला तै कर लिया और मैंने एकदम सोलह डोल खींच डाले यहाँ तक कि मेरे हाथों में छाले हो गए। फिर मैं उस औरत के पास आया और उसने मुझे सोलह अदद खजूर दे दीं जिनको लेकर मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने आपको सारी तफ़्सीलात से आगाह किया चुनाँचे उन खजूरों में से मेरे साथ आपने भी चन्द खजूरों को तनावुल फ़र्माया। स़हाब-ए-किराम इब्तिदाए इस्लाम में किस क़दर तकलीफ़ों में मुब्तला थे और वो भूख पर किस क़दर स़ब्र करते थे और वो सवाल से बचकर अपना पेट भरने के लिये कैसी-कैसी सख़्त मज़दूरी के लिये तैयार हो जाते थे, ये इस ख़बर से वाजेह है।

इस वाक़िया से ये भी प्राबित हुआ कि शरीफ़ नफ़्स को किसी की मज़दूरी में डाल देना कोई ज़लील मेशा नहीं है। अगरचे मज़दूरी कराने वाला खुद ज़लील भी क्यूँ न हो या काफ़िर भी क्यूँ न हो और अगरचे मज़दूरी करने वाला बड़ा शरीफ़ आदमी ही क्यूँ न हो। स़ाहिबे मुन्तक़ा ने इससे ये प्राबित किया है कि मज़दूरी मुकर्ररा काम के साथ मुकर्ररा उज्जरत पर करना जाइज़ है।

आज यकुम मुहर्रम १३९० हिजरी को का'बा शरीफ़ में बवक्ते तहज्जुद ये नोट लिखा गया और २ सफ़र ९० हिजरी यौमे जुम्'आ में मस्जिदे नबवी में बैठकर इस पर नज़रे-प्राणी की गई।

२२६३. हमसे इब्राहीम बिन मूसाने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन इर्वा ने ख़बर दी, उन्हें मज़मर ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें इर्वा बिन जुबैर ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ने (हिज्जत करते वक़्त) बनू दैल के एक मर्द को नौकर रखा जो बनू अब्द बिन अदी के ख़ानदान से था और वो बतौर माहिर रहबर (क्राबिल गाइड के) मज़दूरी पर रखा था (हदीष में लफ़्ज़) ख़िरयति के मा'नी रहबरी में माहिर के हैं। उसने अपना हाथ पानी वग़ैरह में डुबोकर आस्र बिन वाईल के ख़ानदान से अहद किया था और वो कुफ़्फ़ारे कुरैश ही के दीन पर था। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) को उस पर भरोसा था। इसलिये अपनी सवारियाँ उन्होंने उसे दे दीं। और ग़ारे ग़ौर पर तीन रात के बाद उससे मिलने की ताकीद की थी। वो शख़्स

۲۲۶۳ - حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرُورَةَ بِنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا : وَاسْتَأْجَرَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ رَجُلًا مِنْ بَنِي الدَّيْلِ ثُمَّ مِنْ بَنِي عَبْدِ بْنِ عَبْدِ هَادِيَا حَرَبَنَا - أَخْبَرْتِ: الْمَاهِرُ بِالْهَدَايَةِ - قَدْ غَمَسَ يَمِينُ حَلْفِي فِي آلِ الْقَاصِي بْنِ وَايِلَ، وَهُوَ عَلَى دِينِ كُفَّارٍ قُرَيْشِيٍّ قَائِمًا، فَلَدَعْنَا إِلَيْهِ رَاحِلَتَيْهِمَا، وَوَاعَدَاهُ غَارَ ثَوْرٍ بَعْدَ ثَلَاثِ لَيَالٍ، فَأَتَاهُمَا

तीन रातों के गुजरते ही सुबह को दोनों हजरात की सवारियों लेकर वहाँ हाज़िर हो गया। उसके बाद ये हजरात वहाँ से आमिर बिन फुहैरा और उस दैली रहबर को साथ लेकर चले। ये शख्स साहिल के किनारे से आपको लेकर चला था। (राजेअ : 476)

#### बाब 4 : कोई शख्स किसी मज़दूर को इस शर्त पर रखे

कि काम तीन दिन या एक महीने या एक साल के बाद करना होगा तो जाइज है और जब वो मुकर्रर वक़्त आ जाए तो दोनों अपनी शर्त पर कायम रहेंगे।

**तशरीह :** इस बाब के लाने से हजरत इमाम बुखारी (रह.) की ग़ज़ ये है कि इजारे में ये अमर ज़रूरी नहीं है कि जिस वक़्त से इजारा शुरू हो उसी वक़्त से काम करे। जैसा कि नबी करीम (ﷺ) ने बनी दैल के मुकर्रर कर्दा नौकर से तीन रात बाद ग़ारे घ़ौर पर आने का वादा लिया था।

2264. हमसे यह्या बिन बुकेर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैय़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अक्लील ने कि इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे इब्ना बिन जुबैर ने ख़बर दी, और उनसे नबी करीम (ﷺ) की बीवी हजरात आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ने बनू दैल के एक माहिर रहबर से मज़दूरी तै कर ली थी। वो शख्स कुफ़फ़ारे कुरैश के दीन पर था। उन दोनों हजरात ने अपनी दोनों कूँटनियाँ उसके हवाले कर दी थीं और कह दिया था कि वो तीन रातों के बाद सुबह सवेरे ही सवारियों के साथ ग़ारे घ़ौर पर आ जाए। (राजेअ : 476)

**तशरीह :** इस हदीष में रसूले करीम (ﷺ) की हिज्रत से मुता'ल्लिक एक जुच्ची ज़िक्र है कि आप और हजरात अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) ने शबे हिज्रत में सफ़र शुरू करने से पहले एक ऐसे शख्स को बतौर रहबर मज़दूर मुकर्रर किया था जो कुफ़फ़ारे कुरैश के दीन पर था और ये बनू दैल में से था। आँहजरात (ﷺ) और हजरात सिदीक के अक़बर (रज़ि.) को उस पर ए'तिमाद था। इसलिये अपनी दोनों सवारियों को उसके हवाले करते हुए उससे वादा ले लिया कि तीन रातें गुजर जाने के बाद दोनों सवारियों को लेकर ग़ारे घ़ौर पर चला आए। चुनाँचे उसने ऐसा ही किया। और आप दोनों ने सफ़र शुरू किया ये शख्स बतौर एक माहिर रहबर के था और आमिर बिन फुहैरा को दोनों सवारियों के लिये निगराँ के तौर पर मुकर्रर किया था। अगले बाब में मज़कूर है कि आँहजरात (ﷺ) ने उस शख्स को इस शर्त पर मज़दूर मुकर्रर किया कि वो अपना मुकर्ररा काम तीन रातें गुजरने के बाद अंजाम दे। उसी तरह अगर एक माह बाद या एक साल बाद की शर्त पर किसी को मज़दूर रखा जाए और दोनों फ़रीक़ राज़ी हूँ तो ऐसा मामला करना दुस्त है।

بِرَاحِلَتَيْهِمَا صَبِيحَةَ لَيْالٍ ثَلَاثٍ فَلَا تَحِلُّ  
وَأَنْتَلِقَ مَعَهُمَا غَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ وَالذَّيْلِيُّ  
الذَّيْلِيُّ فَأَخَذَ بِهِمْ أَنْفَلُ مَكَّةَ وَهُوَ  
(طَرِيقُ السَّاحِلِ)). [راجع: ٤٧٦]

٤- بَابُ إِذَا اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا لِيَعْمَلَ  
لَهُ بَعْدَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ

- أَوْ بَعْدَ شَهْرٍ أَوْ بَعْدَ سَنَةٍ - جَازَوْهُمَا  
عَلَى شَرْطِهِمَا الَّذِي اشْتَرَطَاهُ إِذَا جَاءَ الْأَجَلُ

٢٢٦٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ  
فَأَخْبَرَنِي غُرُورَةُ بْنُ الزَّوَيْرِ أَنَّ عَابِثَةَ رَضِيَ  
اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ ((وَاسْتَأْجَرَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَبُو بَكْرٍ رَجُلًا مِنْ بَنِي  
الذَّيْلِ هَادِيًا غَيْرِيًّا وَهُوَ عَدُوٌّ كُفَّارٍ  
فُرَيْشٍ، فَذَفَعَا إِلَيْهِ رَاحِلَتَيْهِمَا، وَوَاغَدَاهُ  
غَارَ فُورٍ بَعْدَ ثَلَاثِ لَيَالٍ، فَأَتَاهُمَا  
بِرَاحِلَتَيْهِمَا صَبِيحَةَ ثَلَاثٍ)). [راجع: ٤٧٦]

इस हदीष से भी ज़रूरत के वक़्त किसी भरोसेमंद ग़ैर मुस्लिम को बतौर मज़दूर रख लेना जाइज़ प्राबित हुआ। व हाज़ा हुवल मुराद। अलहम्दुलिल्लाह कि का'बा शरीफ़ में ग़ारे और की तरफ़ बैठे हुए ये हदीष और उसकी ये तशरीह कलम के हवाले कर रहा हूँ चौदह सौ साल गुजर रहे हैं मगर ह्याते तय्यिबा का एक-एक वरक़ (पत्रा) हर तरह से इतना महफूज़ है कि उससे ज़्यादा मुम्किन नहीं। यही वो ग़ार है जिसको आज जबले और के नाम से पुकारा जाता है। उसी में आँहज़रत (ﷺ) ने अपने यारे-ग़ार हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के साथ तीन रातों तक क़याम फ़र्माया था।

इस बाब के ज़ेल हज़रत मौलाना वहीदुज्जमौ मरहूम का तशरीही नोट ये है कि इस बाब के लाने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि इजारे में ये अमर ज़रूरी नहीं कि जिस वक़्त से इजारा शुरू हो उसी वक़्त से काम शुरू करे। इस्माईली ने ये ए'तिराज़ किया है कि बाब की हदीष से ये नहीं निकलता कि अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) और आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख्स से ये शर्त लगाई थी कि वो तीन दिन के बाद अपना काम शुरू करे। मगर ये ए'तिराज़ सहीह नहीं क्योंकि हदीषे मज़कूरा में बाब की मुताबक़त वाज़ेह तौर पर मौजूद है।

बषुबूत इजारा साहिबुल मुहज़ज़ब लिखते हैं, फ़क़द प्रबत अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) व अब्बा बकिरिन इस्ताजर अब्दुल्लाहिब्नि अल उरक़त अहली व कान ख़रीतिन व हुब अख़बरु बिमसालिकिस्सहरा इ वल वहादुल आलिमु बिजुगराफ़िथ्यति बिलादिल अरबि अलत्तबीअति लियकून हादियन व मुशिदन लहुमा फ़ी हिज्रतिना मिम्मक़त इलल्मदीनति तहकीक़ प्राबित हो गया कि रसूले करीम (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन अरीक़त दैली को मज़दूर बनाया। वो सहराई (रेगिस्तानी) रास्ते का बहुत बड़ा माहिर था। वो बिलादे अरब के तब्ज़ी जुराफ़िया (भूगोल) से पूरे तौर पर वाकिफ़ था, उसको इसलिये मज़दूर रखा था ताकि वो बवक़ते हिज़रत मक्का से मदीना तक आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के लिये रहनुमाई का फ़र्ज़ अंजाम दे। जिससे ग़ैर-मुस्लिम को जिस पर ए'तिमाद हो मज़दूर बनाकर रखना प्राबित हुआ।

आज 29 ज़िल्हिज्ज 1389 हिजरी को बवक़ते मरिब मुक़ामे इब्राहीम के पास बैठकर ये नोट लिखा गया। वल्हम्दु लिह्ल्लाह अल्ला ज़ालिक और 2 सफ़र यौमे जुम्आ को मस्जिदे नबवी जन्नत की क्यारी में बैठकर उस पर नज़रे शानी की गई, वल हम्दु लिह्ल्लाह अल्ला ज़ालिक।

**ग़ारे और पर हाज़िरी :** इस हदीष को लिखते हुए दिल में खयाल था कि मक़तुल मुक़रमा में मौजूद होने पर मुनासिब होगा कि हिज़रते नबवी की अव्वलीन मंज़िल या'नी ग़ारे और को खुद अपनी आँखों से देखकर इब्रत हासिल की जाए; अगरचे यहाँ जाना न कोई रुकने हज्ज है न उसके लिये कोई शर्ह हुक्म है। मगर सीरु फ़िल् अर्ज़ि के तहत बतारीख़ 16 मुहर्रम 1390 हिजरी हज्ज के दीगर साथियों के साथ ग़ारे और पर जाने का अज़म (निश्चय) कर लिया। ये हरम शरीफ़ से कई मील दूर है और वहाँ जाने पर चारों तरफ़ पहाड़ों के खौफ़नाक नज़ारे सामने आते हैं। चुनौचे हिन्दुस्तानी टाइम के मुताबिक़ अंदाज़न दिन के ग्यारह बजे हमारा क़ाफ़िला कोहे और के दामन में पहुँच गया। पहाड़ की चोटी पर नज़र डाली गई तो हिम्मत ने जवाब दे दिया। मगर साथियों के अज़म को देखकर चढ़ाई शुरू की गई। हाल ये था कि जिस क़दर ऊपर चढ़ते जाते वो मुक़ाम दूर ही नज़र आता जा रहा था। आख़िर बैठ बैठकर बसद मुश्किल तक्रीबन घण्टा भर की मेहनत के बाद ग़ारे और तक रसाई (पहुँच) हो सकी। यहाँ इस किस्म के कई ग़ार हैं जिनके ऊपर अज़ीम पत्थरों की छत कुदरती तौर पर बनी हुई हैं। एक ग़ार पर ग़ारे और लिखा हुआ था, यही वो ग़ारे और है जिसके अंदर बैठकर रसूले करीम (ﷺ) ने अपने यारे ग़ार हज़रत सिद्दीक़ अकबर (रज़ि.) से फ़र्माया था, मा ज़न्नुक बिज़्ज़ैनि अल्लाहु श़ालिषुहुमा जब सिद्दीके अकबर (रज़ि.) को दुश्मनों का डर महसूस हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने आपको ऊपर लिखे लफ़्ज़ों में तसल्ली दिलाई थी कि ऐ अबूबक्र! तुम्हारा उन दो के बारे में क्या गुमान है जिनके साथ तीसरा खुद अल्लाह तआला है (अल्लाह पाक के खुद साथ होने से उसकी मदद व नुसरत मुराद है। जबकि वो खुद अपनी ज़ात से अर्शे अज़ीम पर है)। मतलब ये था कि खुद अल्लाह हमारा मुहाफ़िज़ (रक्षक) व नासिर (मददगार) है। फिर हमको दुश्मनों की तरफ़ से क्या ग़म हो सकता है। यही हुआ कि दुश्मन उस ग़ार के आसपास फिरते रहे और उनको आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) का इल्म न हो सका और अल्लाह पाक ने दोनों महबूब बन्दों को बचा लिया।

ग़ार में अंदर दो आदमियों के बैठने-लेटने की जगह है। एक तरफ़ से बैठकर दाख़िल हुआ जा सकता है। मैं और

हमारे दोस्त अंदर दाखिल हुए और सारा मंजर देखा और बारबार कुदरते इलाही याद आती रही और तारीखे इस्लाम के अजीम वाकिये की याद ताज़ा होती रही। चन्द अल्फाज़े याददास्त, ग़ार के अंदर ही बैठकर क़लम के हवाले किये गए। जी चाहता था कि यहाँ काफ़ी देर ठहरा जाए क्योंकि मंजर बहुत ही रूढ़ अफ़ज़ा (आध्यात्मिक) था, मगर नीचे गाड़ी वाला इन्तज़ार में था। इसलिये दोस्तों के साथ वापसी का मरहला तै किया गया। ग़ार ऊँचाई और रास्ते पर ख़तरा होने के लिहाज़ से इस काबिल नहीं है कि हर शख़्स वहाँ तक जा सके। चढ़ना भी ख़तरनाक और उतरना उससे ज़्यादा ख़तरनाक है। चुनाँचे उतरने में दोगुना वक़्त खर्च हुआ और नमाज़े जुहर का वक़्त भी उतरते-उतरते ही हो गया। बसद मुश्किल नीचे उतरकर गाड़ी पकड़ी और हरम शरीफ़ में ऐसे वक़्त हाज़िरी हुई कि जुहर की नमाज़ हो चुकी थी मगर अल्हम्दुलिल्लाह कि ज़िंदगी की एक हसरत थी रसूले करीम (ﷺ) की हिज़रत की अव्वलीन मंज़िल को देखा जाए सो अल्लाह पाक ने ये मौक़ा नसीब फ़र्माया वल्हम्दुलिल्लाहि अव्वलन व आख़िरन वस्सलामु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि व अला साहिबिस्सिदीकि रज़ियल्लाहु अन्हु

(मुहतरम हाजी अल्लाह बख़्श साहब बीजापुरी और मुहतरम हाजी मुंशी हकीकुल्लाह साहब नाजिम मदरसा दारुल हुदा यूसुफपुर, यूपी साथ थे जिनकी हिम्मत से मुझ जैसे ज़ईफ़ कमज़ोर ने इस मंज़िल तक रसाई हासिल की। जज़ाहुमुल्लाह।

### बाब 5 : जिहाद में किसी को मज़दूर करके ले जाना

2265. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन अलिया ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अत्ता बिन अबी रबाह ने ख़बर दी, उन्हें सप्तवान बिन यअला ने, उनको यअला बिन उमय्या (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ जैशे इसरह (ग़ज़व-ए-तबूक) में गया था ये मेरे नज़दीक मेरा सबसे ज़्यादा काबिले ए'तिमाद नेक अमल था। मेरे साथ एक मज़दूर भी था। वो एक शख़्स से झगड़ा और उनमें से एक ने दूसरे मुक्राबिल वाले की डँगली चबा डाली। दूसरे ने जो अपना हाथ ज़ोर से खींचा तो उसके आगे के दांत भी साथ ही खिंचे चले आए और गिर गए। इस पर वो शख़्स अपना मुक्रहमा लेकर नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में पहुँचा। औहज़रत (ﷺ) ने उसके दांत (टूटने का) कोई फ़िसास नहीं दिलवाया बल्कि फ़र्माया कि क्या वो अपनी डँगली तुम्हारे मुँह में चबाने के लिये छोड़ देता। रावी ने कहा कि मैं ख़याल करता हूँ कि आपने यूँ भी फ़र्माया, जिस तरह कैंट चबा लिया करता है। (राजेअ : 1847)

2266. इब्ने जुरैज ने कहा और मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने बयान किया, और उनसे उनके दादा ने बिल्कुल उसी तरह का वाक़िया बयान किया कि एक शख़्स ने एक दूसरे शख़्स का हाथ काट खाया। (दूसरे ने अपना हाथ खींचा तो) उस काटने वाले के दांत टूट गया और अबूबक्र (रज़ि.) ने उसका कोई

### 5- بَابُ الْأَجِيرِ فِي الْغَزْوِ

٢٢٦٥- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عُثَيْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَغْلَى عَنْ يَغْلَى بْنِ أُمَيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ جَيْشَ الْقُسْرَةِ، فَكَانَ مِنْ أَوْلَى أَعْمَالِي فِي نَفْسِي، لَكَانَ لِي أَجِيرٌ، فَقَاتَلَ إِنْسَانًا، فَفَضَّ أَحَدَهُمَا إصْبَعَ صَاحِبِهِ، فَانْتَزَعَ إصْبَعَهُ فَأَنْتَزَرَ نَيْبَتَهُ فَسَقَطَتْ، فَانْطَلَقَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَأَهْدَرَ نَيْبَتَهُ وَقَالَ: ((أَهْدَعُ إصْبَعَهُ لِي فِيكَ تَقْصِمُهَا)) قَالَ: أَحْسِبُهُ قَالَ: - ((كَمَا يَقْصِمُ الْفَحْلُ)).

[راجع: ١٨٤٧]

٢٢٦٦- قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ جَدِّهِ بِمِثْلِ هَذِهِ الصَّفَةِ: ((أَنَّ رَجُلًا عَضَّ رَجُلًا فَأَنْتَزَرَ نَيْبَتَهُ، فَأَهْدَرَهَا أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ)).

क्रिसास नहीं दिलवाया।

**तशरीह:** बाब का मज़मून इससे ज़ाहिर है कि हज़रत यज़ला बिन उमय्या (रज़ि.) ने जंगे तबूक के सफ़र में अपने साथ एक और आदमी को बतौर मज़दूर साथ लगा लिया था। हदीष में जंगे तबूक का ज़िक्र है जिसको जैशुल इसरह भी कहा गया है। अलहम्दुलिल्लाह मदीनतुल मुन्व्वरा में बैठकर ये नोट लिख रहा हूँ। यहाँ से तबूक कई सौ मील की दूरी पर उरदुन (जॉर्डन) के रास्ते पर बाक़ेअ है और हुकूमत सज़दिया ही का ये एक ज़िला है। शाम (सीरिया) के ईसाइयों ने यहाँ सरहद पर इस्लाम के खिलाफ़ एक जंगी मंसूबा बनाया था जिसकी बरवक़त इतिला (समय रहते सूचना) आँहज़रत (ﷺ) को हो गई और आप (ﷺ) ने मुराफ़अत के लिये पेशक़दमी फ़र्माई जिसकी ख़बर पाकर ईसाइयों के हौसले पस्त हो गए।

ये सफ़र ऐन गर्मी के मौसम की तेज़ी के दौर में किया गया, जिसकी वजह से मुसलमान मुजाहिदीन को बहुत सी तकलीफ़ों का सामना करना पड़ा। सूरह तौबा की कई आयतों में इसका ज़िक्र है। साथ ही उन मुनाफ़िक़ीन का भी जो इस इम्तिहान में हीले बहाने करके पीछे रह गए थे। जिनके मुता'ल्लिक़ आयत, यज़तज़िरूना इलैकुम इज़ा रजअतुम इलैहिम (अत तौबा : 94) नाज़िल हुई। मगर चन्द मुडिलस मोमिन भी थे जो पीछे रहने वालों में रह गए थे, बाद में उनको तौबा कुबूल हुई। अलहम्दुलिल्लाह आज 2 सफ़र को मस्जिदे नबवी में बैठकर ये नोट लिखा गया।

## बाब 6 : एक शख़्स को एक मि'याद के लिये नौकर रख लेना और काम बयान न करना

सूरह क्रसस में अल्लाह तआलाने (हज़रत शुऐब (अ) का क़ौल यूँ) बयान फ़र्माया है कि मैं चाहता हूँ कि अपनी उन दो लड़कियों में से किसी का तुमसे निकाह कर दूँ, आख़िर आयत (वल्लाहु अला मानक़लु वकील) तक। अरबों के यहाँ याजुरु फ़ुलाना बोलकर मुराद होता है, या'नी फ़लों को वो मज़दूरी देता है। उसी लफ़ज़ से मुश्तक़ तअज़ियत के मौक़े पर ये लफ़ज़ कहते हैं अजरक़ल्लाह।

(अल्लाह तुझको अज़्र अता करे)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) यहाँ बाब का मक़सद बयान करने के लिये सिर्फ़ आयते कुआनी लाए जिसमें हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) की जुबान से मज़कूर है कि उन्होंने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से यूँ फ़र्माया कि मैं अपनी दोनों लड़कियों में से एक का आपसे निकाह करना चाहता हूँ। इस शर्त पर कि आप आठ साल मेरे यहाँ काम करें। यहाँ हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने नौकरी के काम मुकर्रर नहीं किये। उसी से मक़सद बाब प्राबित होता है। आयते मज़कूरा में लफ़ज़ ताजुस्नी मज़कूर है; उसकी लख़वी वज़ाहत हज़रत इमाम ने यूँ फ़र्माई कि अरबों में याजुरु फ़ुलाना का मुहावरा मज़दूर को मज़दूरी देने पर मुस्तअम्मल (आधारित) है आयत में लफ़ज़ ताजुस्नी उसी से मुश्तक़ (बना) है।

## बाब 7 : अगर कोई शख़्स किसी को इस काम पर मुकर्रर करे कि वो गिरती हुई दीवार को दुरुस्त कर दे तो जाइज़ है

इसी से मेअमारी या'नी मकान ता'मीर करने का पेशा भी प्राबित हुआ और ये कि मेअमारी का पेशा हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) की सुन्नत है।

2267. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी, कहा

٦- بَابُ إِذَا اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَبَيْنَ لَهُ الْأَجَلَ، وَلَمْ يُبَيِّنِ الْعَمَلَ

لِقَوْلِهِ : ﴿إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ - إِلَى قَوْلِهِ - وَاللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ﴾ بِأَجْرٍ فَلَا تَأْتِي : يُعْطِيهِ أَجْرًا. وَمِنَ فِي التَّغْرِيبَةِ : أَجْرًا اللَّهُ.

٧- بَابُ إِذَا اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا عَلَى أَنْ يُقِيمَ حَاطَةً يُرِيدُ أَنْ يَنْقُضَ جَارَ

٢٢٦٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ مُوسَى أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ

कि मुझे यअला बिन मुस्लिम और अमर बिन दीनार ने सईद से खबर दी। ये दोनों हज़रत (सईद बिन जुबैर से अपनी रिवायतों में) एक दूसरे से कुछ ज्यादा रिवायत करते हैं। इब्ने जुरैज ने कहा मैंने ये हदीष औरों से भी सुनी है। वो भी सईद बिन जुबैर से नकल करते थे कि मुझसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, और उनसे उबय बिन कअब (रज़ि.) ने कहा। उन्होंने कहा कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशारा फ़र्माया। कि फिर वो दोनों (मूसा और ख़िज़्र अलैहि.) चले। तो उन्हें एक गाँव में एक दीवार मिली, जो गिरने ही वाली थी। सईद ने कहा ख़िज़्र (अलैहि.) ने अपने हाथ से इस तरह इशारा किया और हाथ उठाया, वो दीवार सीधी हो गई। यअला ने कहा मेरा ख़याल है कि सईद ने कहा, ख़िज़्र (अलैहि.) ने दीवार को अपने हाथ से छुआ और वो सीधी हो गई। तब मूसा (अलैहि.) बोले कि अगर आप चाहते तो इस काम की मज़दूरी ले सकते थे। सईद ने कहा कि (हज़रत मूसा अलैहि. की मुराद ये थी कि) कोई ऐसी चीज़ मज़दूरी में (आपको लेनी चाहिये थी) जिसे हम खा सकते (क्योंकि बस्ती वालों ने उनको खाना नहीं खिलाया था) (राजेअ: 74)

أَخْبَرْنَاهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَعْلَى بْنُ مُسْلِمٍ وَعَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ - يُرِيدُ أَحَدَهُمَا عَلَى صَاحِبِهِ - وَغَيْرُهُمَا قَالَ: قَدْ سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُهُ عَنْ سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ لِي ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا حَدَّثَنِي أَبِي بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((فَانْطَلَقَا فَوَجَدَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ)) قَالَ سَعِيدٌ بِيَدِهِ هَكَذَا، وَرَفَعَ يَدَهُ فَاسْتَقَامَ. قَالَ يَعْلَى حَسِبْتُ أَنَّ سَعِيدًا قَالَ: لَمْ سَحَهُ بِيَدِهِ فَاسْتَقَامَ ﴿قَالَ لَوْ شِئْتُ لَاتَّخَذْتُ عَلَيْهِ أَجْرًا﴾ قَالَ سَعِيدٌ: أَجْرًا نَأْكُلُهُ. [راجع: ٧٤]

**तशरीह:** हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) का ये वाक़िया कुआन मजीद में तफ़्सील (विस्तार) के साथ मज़कूर हुआ है, उसी जगह ये दीवार का वाक़िया भी है जो गिरने ही वाली थी कि हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) ने उसको दुरुस्त कर दिया। इसी से इस किस्म की मज़दूरी करने का जवाज़ षाबित हुआ क्योंकि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का ख़याल था कि हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) को इस ख़िदमत पर गाँव वालों से मज़दूरी लेनी चाहिये थी क्योंकि गाँव वालों ने बेमुरव्वती का षुबूत देते हुए उनको खाना नहीं खिलाया था हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) ने उसकी परवाह न करते हुए इल्हामे इलाही से मा'लूम कर लिया था कि ये दीवार यतीम बच्चों की है और उसके नीचे उनका ख़जाना दफ़न है, इसलिये उसका सीधा करना ज़रूरी हुआ ताकि यतीमों की इम्दाद (सहायता) पूरे तौर पर हो सके और उनका ख़जाना ज़ाहिर न हो कि लोग लूटकर ले जाएँ।

आज तीन सफ़र को मुहतरम हाजी अब्दुर्रहमान सनदी के मकान वाक़ेअ बाबे मजीदी, मदीना मुनव्वरा में ये नोट लिख रहा हूँ। अल्लाह पाक मुहतरम हाजी को दोनों जहाँ की बरकतें अता करे। बहुत ही नेक मुख़िलस और किताबो-सुन्नत के दिलदादा जी इल्म बुजुर्ग हैं। जज़ाहुमुल्लाह खैरा फ़िद्दारेन। उम्मीद है कि कारेईन भी उनके लिये दुआए खैर करेंगे।

## बाब 8 : आधे दिन के लिये मज़दूर लगाना (जाइज़ है) - 8 - بَابُ الْإِجَارَةِ إِلَى يَوْمِ الْبَحْرِ

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ इन बाबों को लाने से ये है कि इजारे के लिये ये ज़रूरी नहीं कि कम से कम एक दिन की मुद्दत हो बल्कि उससे कम मुद्दत भी दुरुस्त है। जैसा कि हदीष के बाब में दोपहर तक फिर अस्त्र तक फिर अस्त्र से मरिब तक मज़दूरी कराने का ज़िक्र है। मज़दूरी का मामला मज़दूर और मालिक पर मौकूफ़ (आधारित) है वो जिस तौर पर जिन शर्तों के तहत मामला तै कर लेंगे दुरुस्त होगा।



2268. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे नाफ़ेअने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हारी और यहूद व नज़ारा की मिशाल ऐसी है कि किसी शख्स ने कई मज़दूर काम पर लगाए और कहा कि मेरा काम एक क़ीरात पर सुबह से दोपहर तक कौन करेगा? उस पर यहूदियों ने (सुबह से दोपहर तक) उसका काम किया। फिर उसने कहा कि आधे दिन से अस्त्र तक एक क़ीरात पर मेरा काम कौन करेगा? चुनौचे ये काम फिर नज़ारा ने किया, फिर उस शख्स ने कहा कि अस्त्र के बख़्त से सूरज डूबने तक मेरा काम दो क़ीरात पर कौन करेगा? और तुम (उम्मत मुहम्मदिया ये) ही वो लोग हो (जिनको ये दर्जा हासिल हुआ) इस पर यहूद व नज़ारा ने बुरा माना, और वो कहने लगे कि काम तो हम ज़्यादा करें और मज़दूरी हमें कम मिले। फिर उस शख्स ने कहा कि अच्छा ये बताओ क्या तुम्हारा हक़ तुम्हें पूरा नहीं मिला? सबने कहा कि हमें तो हमारा हक़ पूरा मिल गया। उस शख्स ने कहा कि फिर ये मेरा फ़ज़ल है, मैं जिसे चाहूँ हूँ ज़्यादा दूँ।

۲۲۶۸- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُكُمْ وَمَثَلُ أَهْلِ الْكِتَابَيْنِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَأْجَرَ أَجْرَاءَ فَقَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنْ غَدَوَةٍ إِلَى يَصْفُو النَّهَارَ عَلَى قِرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ الْيَهُودُ. ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنْ يَصْفُو النَّهَارَ إِلَى صَلَاةِ الْغَصْرِ عَلَى قِرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ النَّصَارَى. ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنَ الْغَصْرِ إِلَى أَنْ تَغِيبَ الشَّمْسُ عَلَى قِرَاطَيْنِ؟ فَأَنْتُمْ هُمْ. فَغَضِبَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى فَقَالُوا: مَا لَنَا أَكْثَرُ عَمَلًا وَأَقْلَلُ عَطَاءً؟ قَالَ: هَلْ نَقَصْتُكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ؟ قَالُوا: لَا. قَالَ: فَذَلِكَ لِعَمَلِي أَوْتِيَهُ مِنْ أَشَاءَ)).

तुमको ए' तिराज़ करने का क्या हक़ है। इससे अहले सुन्नत का मज़हब प्रभावित हुआ कि अल्लाह की तरफ़ से प्रवाब मिलना बत्तरीके एहसान के है। उम्मत मुहम्मदिया पर ये अल्लाह का करम है कि वो जो भी नेकी करे उसको दस गुना बल्कि कुछ दफ़ा और भी ज़्यादा प्रवाब मिलता है। वो पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ते हैं, मगर प्रवाब पचास वक़्त का दिया जाता है। ये इस उम्मत मरहूमा (रहमत वाली उम्मत) की खुसूसियत में से है।

## बाब 9 : अस्त्र की नमाज़ तक मज़दूर लगाना

## ۹- بَابُ الْإِجَارَةِ إِلَى صَلَاةِ الْغَصْرِ

**तशरीह:** था'नी अस्त्र की नमाज़ शुरू होने या ख़त्म होने तक। अब ये इस्तिदलाल सहीह न होगा कि अस्त्र का वक़्त दो मिसल तक रहता है। हाफ़िज़ ने कहा दूसरी रिवायत में जो इमाम बुखारी (रह.) ने तौहीद में निकाली है यूनै है कि ऐसा कहने वाले सिर्फ़ यहूदी थे और उनका वक़्त मुसलमानों के वक़्त से ज़्यादा होने में कोई शुब्हा नहीं। इस्माईली ने कहा कि अगर दोनों फिरकों ने ये कहा हो तब भी हन्फिया का इस्तिदलाल चल नहीं सकता, इसलिये कि नज़ारा ने अपना अमल जो ज़्यादा करार दिया वो यहूद का ज़माना मिलाकर है क्योंकि नज़ारा हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) दोनों पर ईमान लाए थे। हाफ़िज़ ने कहा उन तावीलात की ज़रूरत नहीं, इसलिये कि जुहर से लेकर अस्त्र तक का ज़माना इससे ज़्यादा होता है जितना अस्त्र और मसिब के बीच में होता है। (वहीदी)

वारिद हुई अह्लादीषे सहीहा के आधार पर अस्त्र का वक़्त साये (परछाई) एक मिसल के बराबर हो जाने पर शुरू हो जाता है। अल्हम्दुलिल्लाह आज भी मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ में यही मा'मूल है। दोनों जगह अस्त्र की नमाज़ एक मिसल पर हो रही है और पूरी दुनिया-ए-इस्लाम जो हज़ब के लिये लाखों की ता'दाद में हरमेन शरीफ़ेन आती है उन अय्याम (दिनों) में यहाँ अव्वल वक़्त ही अस्त्र की नमाज़ पढ़ती है। फिर कुछ मुता'स्सिब अहनाफ़ का सख़्ती के साथ उसका इंकार करना और

एक मिस्ल पर अस्त्र की नमाज़ का पढ़ना ना-रवा (अनुचित) जानना इतिहाई जमूद का धुबूत देना है। इसी को अँधी तक्लीद कहा गया है जिसमें हमारे ये मुहतरम व मुअज़्ज़ मुता'स्सिब भाई गिरफ्तार हैं। फिर अजीब बात ये है कि मज़ाहिबे अरबआ (चारों मजहबों) को बरहक भी कहते हैं और अमली तौर पर इस शिद्दत के साथ इस कौल का उलट भी करते हैं। जबकि इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद बिन हम्बल वगैरह रहिमहुमुल्लाह एक मिस्ल पर अस्त्र की नमाज़ के क़ाइल हैं और ज़ाहिर है कि चारों इमाम में उन इमामों का भी अहम मुक़ाम है। खुलासा ये कि अस्त्र की नमाज़ का अव्वले वक़्त एक मिस्ल से शुरू हो जाता है। उसमें शक व शुब्हा की मुत्लक गुँजाइश नहीं है। तफ़्सील अपने मक़ाम पर गुजर चुकी है। अल्हम्दुलिल्लाह मदीना तय्यिबा हरमे नबवी में ये नोट लिखने की सआदत हासिल कर रहा हूँ। फ़लहुल्हम्द व लहुश्शुक्र।

ये हदीष हज़रत मुज्ताहिदे मुत्लक़ इमामुल अइम्मा इमाम बुखारी (रह.) ने कई जगह नक़ल फ़र्माकर उससे मुख्तलिफ़ मसाइल का इश्बात फ़र्माया है। इसमें यहूद व नज़ारा और अहले इस्लाम की तुलना मिश्राल के तौर पर दिखलाई गई है। दीने आसमानी की अमानत पहले यहूद को सौंपी गई, मगर उन्होंने अपने दीन को बदलकर मस्ख़ कर दिया और आपसी हसद व बुर्ज़ में गिरफ़्तार होकर दीन की बर्बादी के मौजिब हुए। इस तरह गोया उन्होंने हिफ़ाज़ते दीन का काम बिलकुल बीच ही में छोड़ दिया और वो नाकाम हो गए। फिर नज़ारा का नम्बर आया और उनको इस दीन का मुहाफ़िज़ बनाया गया। मगर उन्होंने दीने ईसविया को इस क़दर मस्ख़ किया (बिगाड़ा) कि आसमानी ता'लीमात की अज़लियत को जड़ और बुनियाद से बदल दिया और तप़लीष और सलीबपरस्ती में ऐसे गिरफ़्तार हुए कि यहूद को भी मात करके रख दिया। उनके बाद मुसलमानों का नम्बर आया और अल्लाह पाक ने इस उम्मत को ख़ैरे उम्मत करार दिया और कुआन मजीद और सुन्नते नबवी को इनके हवाले किया मया। अल्हम्दुलिल्लाह कुआन मजीद आज तक महफूज़ है और सुन्नत का ज़ख़ीरा मुहहिषीने किराम रहिमुल्लाह के हाथों अल्लाह ने क़यामत तक के लिये महफूज़ करा दिया। यही काम का पूरा करना है, जिस पर उम्मत को दोगुना अज़्र मिलेगा।

मुसलमानों में भी अहले बिदअत ने जो गुलू (अति) और इफ़रात व तफ़रीत से काम लिया है वो अगरचे यहूद व नज़ारा से भी बढ़कर शर्मनाक हरकत है कि अल्लाह के सच्चे महबूब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ाते सतूदा सिफ़ात के बारे में बेहद बाति़ल और गुमराहकुन अक्लाइद ईजाद कर लिये। अपने ख़ुदसाख़्ता (ख़ुद के बनाए हुए) अइम्मा को मुताअे मुत्लक़ का दर्जा दे दिया, और पीरों, शहीदों, बुजुर्गों के मज़ारात को का'बा व किब्ला बना लिया, ये हरकतें यहूदो-नज़ारा से कम नहीं हैं। मगर अल्लाह का शुक्र है कि ऐसे ग़ाली अहले बिदअत के हाथों से कुआन मजीद महफूज़ है और ज़ख़ीर-ए-सुन्नते अहदीषे सहीहा की शक्ल में महफूज़ है। यही वो अज़ीम कारनामा है जिस पर इस उम्मत को अल्लाह ने अपनी नेअमतों से नवाज़ा और यहूदो-नज़ारा पर फ़ौक़ियत (बरतरी, श्रेष्ठता) अता फ़र्माई। अल्लाह पाक हमको इस फ़ज़ीलत का मिस्दाक़ बनाए, आमीन। सफ़रे हज्ज से वापसी पर नज़रेघ़ानी करते हुए 23 अप्रैल को ये नोट क़लम के हवाले किया गया। वल्हम्दुलिल्लाह अला कुल्लि हाल।

2269. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के गुलाम अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारी और यहूदो-नज़ारा की मिश्राल ऐसी है कि एक शख्स ने चन्द मज़दूर काम पर लगाए और कहा कि एक एक क़ीरात पर आधे दिन तक मेरी मज़दूरी कौन करेगा? पस यहूद ने एक क़ीरात पर ये मज़दूरी की। फिर नज़ारा ने भी एक एक क़ीरात पर काम किया। फिर तुम लोगों ने अस्त्र से

٢٢٦٩ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا مِثْلُكُمْ وَالْيَهُودُ وَالنَّصَارَى كَرَجُلٍ اسْتَعْمَلَ عُمَالًا فَقَالَ: مَنْ يَعْمَلُ لِي إِلَى يَصْفُو النَّهَارَ عَلَى قِيرَاطٍ قِيرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ الْيَهُودُ عَلَى

मरिब तक दो दो क़ीरात पर काम किया। इस पर यहूद व नसारा नाराज़ हो गए कि हमने काम तो ज़्यादा किया और मज़दूरी हमको कम मिली। इस पर उस शख्स ने कहा कि क्या मैंने तुम्हारा हज़क ज़र्रा बराबर भी मारा है? तो उन्होंने कहा कि नहीं। फिर उस शख्स ने कहा कि मेरा फ़ज़ल है जिसे चाहूँ ज़्यादा देता हूँ।

(राजेअ: 557)

قِرَاطٍ قِرَاطٍ ثُمَّ عَمِلْتَ النَّصَارَى عَلَى قِرَاطٍ قِرَاطٍ، ثُمَّ أَنْتُمْ الَّذِينَ تَعْمَلُونَ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى مَغَارِبِ الشَّمْسِ عَلَى قِرَاطَيْنِ قِرَاطَيْنِ، فَفَضَيْتَ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى وَقَالُوا: نَحْنُ أَكْثَرُ عَمَلًا وَأَقْلُ عَطَاءً، قَالَ: هَلْ ظَلَمْتُكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ شَيْئًا؟ قَالُوا: لَا. قَالَ: فَذَلِكَ فَضْلِي أَوْثَرُهُ مِنْ أَشَاءِ)). [راجع: ٥٥٧]

इस रिवायत में भले ही ये साराहत (स्पष्टीकरण) नहीं कि नसारा ने अस्सर तक काम किया, मगर ये मज़मून इससे निकलता है कि तुम मुसलमानों ने अस्सर की नमाज़ से सूरज ग़रूब होने तक काम किया क्योंकि मुसलमानों का अमल नसारा के अमल के बाद शुरू हुआ होगा। इसमें उम्मत मुहम्मदिया के खातिमुल उमम होने का भी इशार्द है। और ये भी कि प़वाब के लिहाज़ से ये उम्मत पिछली तमाम उम्मतों पर फ़ौक़ियत (श्रेष्ठता) रखती है।

### बाब 10 : उस अमर का बयान कि मज़दूर की मज़दूरी मार लेने का गुनाह कितना है

### ١٠- بَابُ إِمَّا مِنْ مَنَعَ أَجْرَ الْأَجِيرِ

2270. हमसे यूसुफ़ बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन सुलैम ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन उमय्या ने, उनसे सईद बिन अबी सईद ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बतलाया कि अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि तीन क्रिस्म के लोग ऐसे हैं कि जिनका क़यामत में मैं खुद मुहई बनूँगा। एक तो वो शख्स जिसने मेरे नाम पर अहद किया और फिर वादाख़िलाफ़ी की। दूसरा वो जिसने किसी आज़ाद आदमी को बेचकर उसकी क़ीमत खाई। और तीसरा वो शख्स जिसने किसी से मज़दूरी कराई, फिर काम तो उससे पूरा लिया, लेकिन उसकी मज़दूरी न दी।

(राजेअ: 2227)

٢٢٧٠- حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سُلَيْمٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: ((قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ثَلَاثَةٌ أَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ أَعْطَى بِي ثُمَّ غَدَرَ، وَرَجُلٌ بَاعَ حُرًّا فَأَكَلَ ثَمَنَهُ، وَرَجُلٌ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَاسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ أَجْرَهُ)).

[راجع: ٢٢٢٧]

**तशरीह:** कुआन मजीद में बारी तआला ने अक़्बर मक़ामात पर अहले ईमान के गुण बयान करते हुए वा' दा निभाने का गुण नुमायाँ बयान किया है। फिर जो वा' दा और क़सम अल्लाह तआला का पाक नाम बीच में डालकर किया जाए, उसका तोड़ना और पूरा न करना बहुत बड़ा अख़लाकी जुर्म (नैतिक अपराध) है, जिसके लिये क़यामत के दिन खुद अल्लाह पाक मुहई बनेगा और वो ग़द्दार बन्दा मुद्दाअलैह (प्रतिवादी) होगा, जिसके पास कोई जवाब न होगा और वो महज़ उस अज़ीम जुर्म की वजह से दोज़ख़ में धकेला जाएगा। इसलिये एक हदीष में वा' दाख़िलाफ़ी को निफ़ाक़ की एक अलामत (निशानी)

बतलाया गया है। जिसके साथ अगर आदमी खयानत का भी आदी हो और झूठ भी उसकी घुड़्री में दाखिल हो तो फिर वो शरअ ए-मुहम्मदी की रू से पक्का मुनाफ़िक़ शुमार किया जाता है और ईमान के नूर से उसका दिल क़त्अन ख़ाली हो जाता है।

दूसरा जुर्म किसी आज़ाद आदमी को गुलाम बनाकर उसे बेचकर उसकी क़ीमत ख़ाना है। इस गुनाह में नम्बरवार तीन जुर्म शामिल हैं; (1) किसी आज़ाद को गुलाम बनाना ही जुर्म है, (2) उसे नाहक बेचना जुर्म है, (3) फिर उसकी क़ीमत ख़ाना ये और भी डबल जुर्म है। ऐसा ज़ालिम इंसान भी वो है जिसके खिलाफ़ क़यामत के दिन अल्लाह पाक खुद मुद्दई बनकर खड़ा होगा। तीसरा मुजरिम जिसने किसी मज़दूर से पूरा-पूरा काम कराया, मगर मज़दूरी अदा करते वक़्त उसको धुत्कार दिया और वो ग़रीब कलेजा मसोस कर रह गया। ये भी बहुत बड़ा जुर्म है। हुक्म ये है कि मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले पहले अदा कर देनी चाहिये। सरमायादारों के ऐसे ही लगातार जुल्मों ने मज़दूरों की तन्ज़ीम (यूनियन) को जन्म दिया है जो आज हर मुल्क में मज़बूत बुनियादों पर क़ायम हैं और मज़दूरों के हुक्क की हिफ़ाज़त करती हैं। इस्लाम ने एक ज़माना पहले ही इस क़िस्म के मफ़ासिद के खिलाफ़ आवाज़ बुलन्द की थी, जो इस्लाम के मज़दूर और ग़रीबपरवर होने की अटल दलील है। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

### बाब 11 : अस्त्र से लेकर रात

#### तक मज़दूरी कराना

2271. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशज़री (रज़ि.) ने, कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमानों की और यहूद व नज़ारा की मिश्राल ऐसी है कि एक शख्स ने चन्द आदमियों को मज़दूर किया कि ये सब उसका एक काम सुबह से रात तक मुक़र्रा उज्जत पर करें। चुनाँचे कुछ लोगों ने ये काम दोपहर तक किया। फिर कहने लगे कि हमें तुम्हारी इस मज़दूरी की ज़रूरत नहीं है जो तुमने हमसे तै की है बल्कि जो काम हमने कर दिया वो भी ग़लत रहा। उस पर उस शख्स ने कहा कि ऐसा न करो, अपना काम पूरा कर लो और अपनी पूरी मज़दूरी ले जाओ। लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया और काम छोड़कर चले गए। आख़िर उसने दूसरे मज़दूर लगाए और उनसे कहा कि बाक़ी दिन पूरा कर लो तो मैं तुम्हें वही मज़दूरी दूँगा जो पहले मज़दूरों से तै की थी। चुनाँचे उन्होंने काम शुरू किया, लेकिन अस्त्र की नमाज़ का वक़्त आया तो उन्होंने भी यही कहा कि हमने जो तुम्हारा काम कर दिया है वो बिलकुल बेकार रहा। वो मज़दूरी भी तुम अपने पास ही रखो जो तुमने हमसे तै की थी। उस शख्स ने उनको समझाया कि अपना बाक़ी काम पूरा कर लो। दिन भी अब थोड़ा ही बाक़ी रहा है। लेकिन वो नहीं माने आख़िर उस शख्स ने दूसरे मज़दूर लगाए कि ये दिन का जो

### ۱۱- بَابُ الْإِجَارَةِ مِنَ النَّصْرِ إِلَى

#### اللَّيْلِ

۲۲۷۱- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَلَاءِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ أَبِي بَرْزَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ ((مَثَلُ الْمُسْلِمِينَ وَالْيَهُودِ وَالنَّصَارَى كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَأْجَرَ قَوْمًا يَفْعَلُونَ لَهُ عَمَلًا يَوْمًا إِلَى اللَّيْلِ عَلَى أَجْرٍ مَعْلُومٍ فَعَمِلُوا لَهُ يَصْنَفُ النَّهَارَ، فَقَالُوا: لَا حَاجَةَ لَنَا إِلَى أَجْرِكَ الَّذِي شَرَطْتَ لَنَا وَمَا عَمِلْنَا بَاطِلَ. فَقَالَ لَهُمْ: لَا تَفْعَلُوا، أَكْمَلُوا بَقِيَّةَ عَمَلِكُمْ وَخُذُوا أَجْرَكُمْ كَامِلًا، فَأَبَوْا وَتَرَكُوا. وَاسْتَأْجَرَ أُخَيْرَيْنِ بَعْدَهُمَا فَقَالَ: أَكْمَلُوا بَقِيَّةَ يَوْمِكُمْ هَذَا وَلَكُمْ الَّذِي شَرَطْتُ لَهُمْ مِنَ الْأَجْرِ فَعَمِلُوا، حَتَّى إِذَا كَانَ جِزْنٌ صَلَاقَ النَّصْرِ قَالُوا: لَكَ مَا عَمِلْنَا بَاطِلَ، وَلَكَ الْأَجْرُ الَّذِي بَعَثْتَ لَنَا فِيهِ. فَقَالَ لَهُمْ أَكْمَلُوا بَقِيَّةَ عَمَلِكُمْ لِأَنَّ مَا بَقِيَ مِنَ النَّهَارِ شَيْءٌ يَسِيرٌ، فَأَبَوْا.

हिस्सा बाकी रह गया है उसमें ये काम कर दें। चुनौचे उन लोगों ने सूरज गुरुब होने तक दिन के बकिया हिस्से में काम को पूरा किया और पहले और दूसरे मजदूरों की मजदूरी भी सब उन ही को मिली तो मुसलमानों की और उस नूर की जिसको उन्होंने कुबूल किया, यही मिषाल है।

(राजेअ: 558)

فَاسْتَأْجَرَ قَوْمًا أَنْ يَعْمَلُوا لَهُ بَقِيَّةَ يَوْمِهِمْ، فَعَمِلُوا بَقِيَّةَ يَوْمِهِمْ حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ، وَاسْتَكْمَلُوا أَجْرَ الْفَرِيقَيْنِ كِلَاهُمَا، فَذَلِكَ مَثَلُهُمْ وَمَثَلُ مَا قَبِلُوا مِنْ هَذَا النُّورِ.

[راجع: 558]

**तशरीह:** ये बज़ाहिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की हदीष के खिलाफ़ है। जिसमें ये ज़िक्र है कि उसने सुबह से लेकर दोपहर तक के लिये मजदूर लगाए थे और ये दरहक्रीकत दो अलग-अलग किस्से हैं। लिहाज़ा आपसी तौर पर दोनों हदीषों में कोई तस्बालुफ़ (विरोधाभास) नहीं है। इन अह्लादीष में यहूद व नज़ारा और अहले इस्लाम की एक तम्बील (तुलनात्मक मिषाल) ज़िक्र की गई है कि यहूद व नज़ारा ने अपनी शरई ज़िम्मेदारियों को पूरे तौर पर अदा नहीं किया। बल्कि वो वक़्त से पहले ही अपना काम छोड़कर भाग निकले मगर मुसलमानों ने अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा किया और उसका नतीजा है कि कुआन मजीद आज तक लफ़ज़-ब-लफ़ज़ मौजूद है और जब तक अल्लाह चाहेगा मौजूद रहेगा। जिसमें एक शोशे की भी रद्दोबदल नहीं हुई और कुआन मजीद के साथ उस्व-ए-रिसालत भी पूरे तौर पर महफूज़ है। इस तौर पर कि पिछले तमाम अंबिया में ऐसी मिषाल मिलनी नामुम्किन है कि उनकी ज़िंदगी और उनकी हिदायात को पूरे तौर पर महफूज़ रखा गया हो।

हदीषे मज़कूरा के आखिरी अल्फ़ाज़ से कुछ ने ये निकाला कि इस उम्मत की बका हज़ार बरस से ज़्यादा रहेगी और अल्हम्दुलिल्लाह ये काम अब पूरा हो रहा है कि उम्मत मुहम्मदिया पर सवा चौदह सदी पूरी हो चुकी है, शरीअते इस्लामिया ने इन बातों को इल्मे इलाही पर मौकूफ़ रखा है। इतना ज़रूर बतलाया गया है कि उम्मत मुस्लिमा से पहले जो भी इंसानी दौर गुज़र चुका है वो मुदत के लिहाज़ से ऐसा है जैसा कि फ़ज़ से अज़्र तक का वक़्त है और उम्मत मुस्लिमा का दौर ऐसे वक़्त से शुरू हो रहा है कि गोया अब अज़्र से दिन का बाकी हिस्सा शुरू हो रहा है। इसलिये इस उम्मत को आखिरी उम्मत और इस दीन को अख़ीर दीन और कुआन मजीद को आखिरी किताब और सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को आखिरी नबी व ख़ातिमुन्नबिय्यीन कहा गया है। अब इल्मे इलाही में दुनिया की उम्र का जितना भी हिस्सा बाकी रह गया है आखिर वक़्त तक यही दीने आसमानी रहेगा; यही आसमानी शरीअत रहेगी और इसके खिलाफ़ जो भी मुद्दई हो वो ख़्वाह इस्लाम ही का दावेदार क्यों न हो वो कज़ाब (झूठा), मक्कार और दज़ाल समझा जाएगा। जैसा कि ऐसे दज़ालों की बक़रत मिषालें मौजूद हैं। नज़रेभानी में ये नोट हर मे नबवी के नज़दीक मदीनतुल मुनव्वरा में क़लम के हवाले किया गया।

**बाब 12 : अगर किसी ने कोई मजदूर किया और वो मजदूर अपनी उज्जत लिये बग़ैर चला गया**

फिर (मजदूर की उस छोड़ी हुए रक़म या ज़िंस से) मजदूरी लेनेवाले ने कोई तिजारती काम किया। इस तरह वो अज़ल माल बढ़ गया और वो शख्स जिसने किसी दूसरे के माल से कोई काम किया और उसमें नफ़ा हुआ (उन सबके बारे में क्या हुक्म है)

2272. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने ख़बर दी, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.)

١٢- بَابُ مَنْ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَتَرَكَ أَجْرَهُ، فَعَمِلَ فِيهِ الْمُسْتَأْجَرُ قَرَادًا أَوْ مِنْ عَمَلٍ فِي مَالٍ غَيْرِهِ فَاسْتَفْضَلَ

٢٢٧٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو رَضِيَ اللَّهُ

ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि पहली उम्मत के तीन आदमी कहीं सफ़र में जा रहे थे। रात होने पर रात गुज़ारने के लिये उन्होंने एक पहाड़ के ग़ार (गुफ़ा) में पनाह ली, और उसमें अंदर दाख़िल हो गए। इतने में पहाड़ से एक चट्टान लुढ़की और उसने ग़ार का मुँह बन्द कर दिया। सबने कहा कि अब इस ग़ार से तुम्हें कोई चीज़ निकालने वाली नहीं, सिवा उसके कि तुम सब, अपने सबसे ज़्यादा अच्छे अमल को याद करके अल्लाह तआला से दुआ करो। इस पर उनमें से एक शख्स ने अपनी दुआ शुरू की कि ऐ अल्लाह! मेरे माँ-बाप बहुत बूढ़े थे और मैं रोज़ाना उनसे पहले घर में किसी को भी दूध नहीं पिलाता था। न अपने बाल-बच्चों को, और न अपने गुलाम वगैरह को, एक दिन मुझे एक चीज़ की तलाश में रात हो गई। और जब मैं घर वापस हुआ तो वो (मेरे माँ-बाप) सो चुके थे। फिर मैंने उनके लिये शाम का दूध निकाला। जब उनके पास लाया तो वो सोए हुए थे। मुझे ये बात हर्गिज़ अच्छी मा'लूम नहीं हुई कि उनसे पहले अपने बाल-बच्चों या अपने गुलाम को दूध पिलाऊँ, इसलिये मैं उनके सिरहाने खड़ा रहा। दूध का प्याला मेरे हाथ में था और मैं उनके जागने का इंतज़ार कर रहा था। यहाँ तक कि सुबह हो गई। अब मेरे माँ-बाप जागे और उन्होंने अपना शाम का दूध उस वस्त्र पिया। ऐ अल्लाह! अगर मैंने ये काम महज़ तेरी रज़ा हासिल करने के लिये किया था तो इस चट्टान की आफ़त को हमसे हटा दे। इस दुआ के नतीजे में वो ग़ार थोड़ा सा खुल गया, मगर निकलना अब भी मुम्किन न था।

रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर दूसरे ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे चचा की लड़की थी, जो सबसे ज़्यादा मुझे महबूब थी। मैंने उसके साथ बुरा काम करना चाहा, लेकिन वो नहीं मानी। उसी ज़माने में एक साल क़ह्न (अकाल) पड़ा तो वो मेरे पास आई। मैंने उसे एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दिये कि वो ख़ल्वत (एकांत) में मुझसे बुरा काम कराये, चुनाँचे वो राज़ी हो गई। अब मैं उस पर क़ाबू पा चुका था लेकिन उसने कहा कि तुम्हारे लिये मैं जाइज़ नहीं करती कि उस मुहर को तुम हक़ के बग़ैर तोड़ दो। य

عَنْهَا قَالَتْ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ ((انْطَلَقَ ثَلَاثَةٌ زَمَطٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَتَّى أَوْزَا الْمَيِّتَ إِلَى غَارٍ فَدَخَلُوهُ، فَانْحَدَرَتْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ فَسَدَّتْ عَلَيْهِمُ الْغَارَ، فَقَالُوا: إِنَّهُ لَا يُنَجِّبُكُم مِّنْ هَذِهِ الصَّخْرَةِ إِلَّا أَنْ تَدْعُوا اللَّهَ بِصَالِحِ أَعْمَالِكُمْ. فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: اللَّهُمَّ كَانَ لِي أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ، وَكُنْتُ لَا أَغْبِقُ قَبْلَهُمَا أَهْلًا وَلَا مَالًا، فَكُنِيَ بِي فِي طَلَبِ شَيْءٍ يَوْمًا فَلَمْ أَوْجِدْ عَلَيْهِمَا حَتَّى نَامَا، فَحَلَيْتُ لَهُمَا غَبُوقَهُمَا فَوَجَدْتُهُمَا نَائِمَيْنِ، وَكَرِهْتُ أَنْ أَغْبِقَ قَبْلَهُمَا أَهْلًا أَوْ مَالًا، فَلَبِثْتُ وَالْقَدْخُ عَلَى يَدَيَّ أَنْظُرُ اسْتَيْقَظَهُمَا حَتَّى بَرَقَ الْفَجْرُ، فَاسْتَيْقَظَا، فَشَرِبَا غَبُوقَهُمَا. اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ لَعَلْتُ ذَلِكَ ائْتَاءً وَجْهَكَ فَفَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ مِنْ هَذِهِ الصَّخْرَةِ، فَلَانْفَرَجَتْ شَيْئًا لَا يَسْتَطِيعُونَ الْخُرُوجَ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: وَقَالَ الْآخَرُ: اللَّهُمَّ كَانَتْ لِي بِنْتُ عَمٍّ كَانَتْ أَحَبَّ النَّاسِ إِلَيَّ، فَأَرَدْتُهَا عَنْ نَفْسِهَا فَامْتَنَعَتْ مِنِّي، حَتَّى أَلَمْتُ بِهَا سَنَةً مِنَ السَّنَيْنِ فَجَاءَتْنِي فَأَغَطَيْتُهَا عِشْرِينَ وَهَامَةً دِينَارٍ عَلَى أَنْ تُخَلِّيَ بَيْنِي وَبَيْنَ نَفْسِهَا، فَقَعَلَتْ، حَتَّى إِذَا قَدَرْتُ عَلَيْهَا قَالَتْ: لَا أَجِلُّ لَكَ أَنْ تَقْضِيَ الْخَاتَمَ إِلَّا بِحَقِّهِ، فَخَرَجْتُ مِنَ الْوُقُوعِ عَلَيْهَا، فَانْصَرَفْتُ عَنْهَا وَهِيَ

सुनकर मैं अपने बुरे इरादे से बाज़ आ गया और वहाँ से चला आया हालाँकि वो मुझे सबसे बढ़कर महबूब थी और मैंने अपना दिया हुआ सोना भी वापस नहीं लिया। ऐ अल्लाह! अगर ये काम मैंने सिर्फ तेरी रज़ा हासिल करने के लिये किया था, तो हमारी इस मुसीबत को दूर कर दे। चुनाँचे चट्टान ज़रा सी और खिसकी। लेकिन अब भी उससे बाहर नहीं निकला जा सकता था।

नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, और तीसरे शख्स ने दुआ की। ऐ अल्लाह! मैंने चन्द मज़दूर किये थे। फिर सबको उनकी मज़दूरी पूरी दे दी। मगर एक मज़दूर ऐसा निकला कि वो अपनी मज़दूरी ही छोड़कर चला गया। मैंने उसकी मज़दूरी को कारोबार में लगा दिया और बहुत कुछ नफ़ा हासिल हो गया। फिर कुछ दिनों के बाद वही मज़दूर मेरे पास आया और कहने लगा अल्लाह के बन्दे! मुझे मेरी मज़दूरी दे दे। मैं ने कहा, ये जो कुछ तू देख रहा है, ऊँट, गाय, बकरी और गुलाम, ये सब तुम्हारी मज़दूरी ही है। वो कहने लगा। अल्लाह के बन्दे! मुझे से मज़ाक़ मत कर। मैंने कहा मैं तुझसे मज़ाक़ नहीं करता। चुनाँचे उस शख्स ने सब कुछ लिया और अपने साथ ले गया। एक धीज़ भी उसमें से बाक़ी न छोड़ी। तो ऐ अल्लाह! अगर मैंने ये सब कुछ तेरी रज़ामन्दी हासिल करने के लिये किया था तो हमारी इस मुसीबत को दूर कर दे। चुनाँचे वो चट्टान हट गई, और वो सब बाहर निकलकर चले गए।

(राजेज़ : 2215)

أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَتَرَكْتُ الذَّهَبَ الَّذِي  
أَعْطَيْتُهَا، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذَلِكَ  
إِنْصَاءً وَجْهِكَ فَأَفْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ،  
فَانْفَرَجَتْ الصَّخْرَةُ، غَيْرَ أَنَّهُمْ لَا  
يَسْتَطِيعُونَ الْخُرُوجَ مِنْهَا. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ  
وَقَالَ الثَّالِثُ: اللَّهُمَّ إِنِّي اسْتَأْجَرْتُ أَجْرَاءَ  
فَأَعْطَيْتُهُمْ أَجْرَهُمْ، غَيْرَ رَجُلٍ وَاحِدٍ تَرَكَ  
الَّذِي لَهُ وَذَهَبَ فَكُمْتُ أَجْرَهُ حَتَّى  
كَثُرَتْ مِنْهُ الْأَمْوَالُ، فَجَاءَنِي بَعْدَ حِينٍ  
فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللَّهِ أَذْ إِلَيَّ أَجْرِي، فَقُلْتُ  
لَهُ: كُلُّ مَا تَرَى مِنْ أَجْرِكَ مِنَ الْإِبِلِ  
وَالْبَقَرِ وَالنَّعَمِ وَالرَّقِيقِ. فَقَالَ: يَا عَبْدَ  
اللَّهِ لَا تَسْتَهْزِئْ بِي. فَقُلْتُ: إِنِّي لَا  
اسْتَهْزِئُ بِكَ، فَأَخَذَهُ كُلَّهُ فَاسْتَأْذَنَهُ فَلَمْ  
يَرْكَأْ مِنْهُ شَيْئًا. اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ  
ذَلِكَ إِنْصَاءً وَجْهِكَ فَأَفْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ  
فِيهِ. فَانْفَرَجَتْ الصَّخْرَةُ، فَخَرَجُوا  
يَمْشُونَ)). [راجع: ٢٢١٥]

**तशरीह:** इस हदीस से बहुत से मसाइल प्राबित होते हैं और बाब का मसला भी प्राबित होता है जो हदीसे मज़क़ूर में तीसरे शख्स के बारे में है। इससे ये भी प्राबित होता है कि आमाले सालेहा (नेक कामों) को बतौर वसीला पेश करना जाइज़ है। आयत करीमा, वक्तगू इलैहिल् वझीलत का यही मतलब है कि उस अल्लाह की तरफ़ नेक आमाल का वसीला तलाश करो। जो लोग बुजुर्गों, वलियों का वसीला ढूँढते हैं या महज़ ज़ाते नबवी को बादे वफ़ात बतौर वसीला पेश करते हैं, वो ऐसा अमल करते हैं जिस पर किताब व सुन्नत से कोई वाज़ेह दलील मौजूद नहीं है। अगर वफ़ात के बाद आहज़रत (ﷺ) की ज़ाते अक़दस को बतौर वसीला पेश करना जाइज़ होता तो हज़रत उमर (रज़ि.) एक इस्तिस्का की दुआ के मौके पर ऐसा न कहते कि या अल्लाह! हम रसूले करीम (ﷺ) की ज़िन्दगी में दुआ कराने के लिये आपको पेश किया करते थे। अब अल्लाह के नबी दुनिया से चले गए और आपके मुहतरम चचा हज़रत अब्बास (रज़ि.) की ज़ाते गिरामी मौजूद है लिहाज़ा दुआ कराने के लिये हम इनको पेश करते हैं। तू इनकी दुआएँ हमारे हक़ में कुबूल फ़र्माकर हमको रहमत की बारिश से शादाब (हरा-भरा) कर दे।

बाब 13 : जिसने अपनी पीठ पर बोझ उठाने की ۱۳- بَابُ مَنْ آجَرَ نَفْسَهُ لِيَحْمِلَ

मजदूरी की या'नी हम्माली की और फिर उसे  
सदका कर दिया और हम्माल की उज्रत का बयान

عَلَى ظَهْرِهِ، ثُمَّ تَصَدَّقَ بِهِ، وَأَجْرَهُ  
الْحَمَالِ

273. हमसे सईद बिन यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप (यह्या बिन सईद कुरैशी) ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, उनसे शक्रीक ने और उनसे अबू मसरूद अंसारी (रज़ि.) ने कि रसूल करीम ने जब हमें सदका करने का हुक्म दिया, तो कुछ लोग बाजारों में जाकर बोझ उठाते जिनसे एक मुह मजदूरी मिलती (वो उसमें से भी सदका करते) आज उनमें से किसी के पास लाख-लाख (दिरहम या दीनार) मौजूद हैं। शक्रीक ने कहा, हमारा खयाल है कि अबू मसरूद (रज़ि.) ने किसी से अपने ही को मुराद लिया था।

٢٧٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقُرَشِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ أَبِي مَسْرُودٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أَمَرَ بِالصَّدَقَةِ أَنْتَلِقَ أَحَدَنَا إِلَى السُّوقِ لِيُحَامِلَ، فَيَمِيبُ الْمُدَّ، وَإِنْ لِبَعْضِهِمْ لِمِائَةِ أَلْفٍ. قَالَ: مَا نَرَاهُ إِلَّا نَفْسَهُ)).

इससे ये भी साबित हुआ कि अहदे नबवी (ﷺ) में सहाबा किराम (रज़ि.) मेहनत मजदूरी खुशी के साथ किया करते थे। यहाँ तक कि वो हम्माली भी करते फिर जो मजदूरी मिलती उसमें से सदका भी करते। अल्लाह पाक उनको उम्मत की तरफ से बेशुमार जज़ाएँ अता करे कि उस मेहनत से उन्होंने शजरे इस्लाम (इस्लाम के पेड़) को सींचा, आज अलहम्दुलिल्लाह वही मदीना है जिनके बाशिन्दे फ़राखी और कुशादगी में बहुत बढ़े हुए हैं। आज मदीना में कितने ही अज़ीम महल्ले मौजूद हैं।

#### बाब 14 : दलाली की उज्रत लेना

और इब्ने सीरीन और अत्ता और इब्राहीम और हसन बसरी (रह.) दलाली पर उज्रत लेने में कोई बुराई नहीं खयाल करते थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, अगर किसी से कहा जाए कि ये कपड़ा इतनी क़ीमत में बेच ला। जितना ज़्यादा हो वो तुम्हारा है, तो उसमें कोई हर्ज नहीं।

इब्ने सीरीन (रह.) ने फ़र्माया कि अगर किसी ने कहा कि इतने में बेच ला, जितना नफ़ा होगा वो तुम्हारा है या (ये कहा कि) मेरे और तुम्हारे बीच तक्सीम हो जाएगा। तो उसमें कोई हर्ज नहीं। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुसलमान अपनी तै कर्दा शराइत पर क़ायम रहेंगे।

#### ١٤- بَابُ أَجْرِ السَّمْسَرَةِ

وَلَمْ يَرَ ابْنُ سَبْرِينَ وَغَطَاءُ وَإِبْرَاهِيمُ وَالْحَسَنُ بِأَجْرِ السَّمْسَارِ بَأْسًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَا بَأْسَ أَنْ يَقُولَ بَعْضُ هَذَا الثَّوْبِ، فَمَا زَادَ عَلَى كَذَا وَكَذَا فَهُوَ لَكَ.

وَقَالَ ابْنُ سَبْرِينَ: إِذَا قَالَ بَعْضُ يَكْذَا، فَمَا كَانَ مِنْ رِبْحٍ فَهُوَ لَكَ أَوْ تَبَيَّنَتْ وَتَبَيَّنَتْ، فَلَا بَأْسَ بِهِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْمُسْلِمُونَ عِنْدَ شُرُوطِهِمْ)).

**तशरीह:** इब्ने सीरीन और इब्राहीम के क़ौल को इब्ने अबी शैबा ने और अत्ता के क़ौल को भी इब्ने अबी शैबा ने वस्ल (मिलान) किया और हसन के क़ौल को न हाफ़िज़ ने बयान किया न क़स्तलानी ने कि किसने वस्ल (मिलान) किया। और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के क़ौल को भी इब्ने अबी शैबा ने वस्ल (मिलान) किया अत्ता से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से, जुम्हूर इलमा ने इसको जाइज़ नहीं रखा क्योंकि उसमें दलाली की उज्रत मजहूल है। और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उसको इस वजह से जाइज़ रखा है कि ये एक मुज़ारबत की सूत है। इब्ने सीरीन के इस दूसरे क़ौल को भी इब्ने अबी



शेबा ने वस्ल (मिलान) किया है। फ़रमाने रिसालत अल मुस्लिमून इन्द शुरुतिहिम को इस्हाक़ ने अपनी मुस्नद में अमर बिन औरफ़ मज़नी से मर्फूअन् रिवायत किया है। अबू दाऊद और अहमद और हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से। (वहीदी)

सय्यिदना हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का नाम आया तो एक तारीख़ सामने आ गई। इसलिये कि हरमे नबवी मदीना तय्यिबा में अस्हाबे सुफ़्फ़ा के चबूतरे पर बैठकर ये चन्द हुरूफ़ लिख रहा हूँ। यही वो चबूतरा है जहाँ अस्हाबे सुफ़्फ़ा भूखे-प्यासे उलूमे रिसालत हासिल करने के लिये परवानों की तरह क़याम फ़र्माया करते थे। उसी चबूतरे की ता'लीम व तर्बियत से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.), हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.), हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) जैसे फ़ाज़िले इस्लाम पैदा हुए। अल्लाह पाक उन सबको बेशुमार जज़ाएँ अता करे, उनकी क़ब्रों को नूर से भर दे।

वही अस्हाबे सुफ़्फ़ा का चबूतरा है जहाँ आज शाहाना ठाट बाट हैं। ग़लीचों पर ग़लीचे बिछे हुए हैं, हर वक़्त इतरे से फ़िज़ा मुअत्तर रहती है। कितने ही अल्लाह के बन्दे इस चबूतरे पर तिलावते कुआन मजीद में मशगूल रहते हैं। अल्हम्दुलिल्लाह मैं नाचीज़ आज़िज़ गुनहगार इस चबूतरे पर बैठकर बुखारी शरीफ़ का मतन पढ़ रहा हूँ और तर्जुमा व तशरीहात लिख रहा हूँ। इस उम्मीद पर कि क़यामत के दिन अल्लाह पाक मेरा हशर भी अपने उन नेक बन्दों के साथ करे और उनके पड़ोस में फ़िरदौसे बरीं में जगह दे। मुझको, मेरी आल औलाद को, बुखारी शरीफ़ की इशाअत (प्रकाशन) में तआवुन करने वाले तमाम लोगों को अल्लाह पाक ये दरजात नसीब फ़र्माए और लिवाउल् हम्द के नीचे हशर फ़र्माए। आज 2 सफ़र 1390 हिजरी को हरमे नबवी में अस्हाबे सुफ़्फ़ा के चबूतरे पर ये चन्द लफ़ज़ लिखे गए।

2274. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे मअमर ने बयान किया, उनसे इब्ने त्राऊस ने, उनसे उनके बाप ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (तिजारती) क़ाफ़िलों से (मैंडी से आगे जाकर) मुलाक़ात करने से मना फ़र्माया था। और ये कि शहरी देहाती का माल न बेचें, मैंने पूछा, ऐ इब्ने अब्बास (रज़ि.)! शहरी देहाती का माल न बेचें, का क्या मतलब है? उन्होंने फ़र्माया कि मुराद ये है कि उनके दलाल न बनें।

(राजेअ: 22158)

٢٢٧٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُطْلَقَ الرِّمَّانُ، وَلَا يَبِيعَ خَاضِرٌ لِبَادٍ. قُلْتُ يَا ابْنَ عَبَّاسٍ: مَا قَوْلُهُ لَا يَبِيعُ خَاضِرٌ لِبَادٍ؟ قَالَ: لَا يَكُونُ لَهُ مِيسَرًا)).

[راجع: ٢٢١٥٨]

बाब 15 : क्या कोई मुसलमान दारुल हरब में किसी मुशरिक की मज़दूरी कर सकता है?

١٥- بَابُ هَلْ يُؤَاجِرُ الرَّجُلُ نَفْسَهُ مِنْ مُشْرِكٍ فِي أَرْضِ الْحَرْبِ؟

2275. हमसे इमर बिन हफ़्ज़ बिन गयाज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, उनसे मुस्लिम बिन सबाह ने, उनसे मसरूक ने, उनसे ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं लोहार था, मैंने आस बिन वाईल (मुशरिक) का काम किया। जब मेरी बहुत सी मज़दूरी उसके सर चढ़ गई, तो मैं उसके पास तक्राज़ा करने आया, वो कहने लगा कि अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारी मज़दूरी उस वक़्त

٢٢٧٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ حَدَّثَنَا خَبَّابٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنْتُ رَجُلًا قَيْنًا، فَعَمِلْتُ لِلْعَاصِي بْنِ وَائِلٍ، فَاجْتَمَعَ لِي عِنْدَهُ، فَأَتَيْتُهُ أَنْقَاضَهُ فَقَالَ: لَا وَاللَّهِ لَا أَقْضِيكَ حَتَّى

तक नहीं दूँगा जब तक तुम मुहम्मद (ﷺ) से न फिर जाओ। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! ये तो उस वक़्त तक भी न होगा जब तू मर के दोबारा ज़िन्दा होगा। उसने कहा, क्या मैं मरने के बाद फिर दोबारा ज़िन्दा किया जाऊँगा? मैंने कहा कि हाँ! उस पर वो बोला फिर क्या है। वहीं मेरे पास माल और औलाद होगी, और वहीं मैं तुम्हारा क़र्ज़ अदा कर दूँगा। उस पर कुर्आन मजीद की ये आयत नाज़िल हुई, ऐ पैग़म्बर! क्या तुमने उस शख्स को देखा, जिसने मेरी आयतों का इंकार किया और कहा कि मुझे ज़रूर वहाँ माल व औलाद दी जाएगी। (राजेअ: 2091)

हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) ने आस्र बिन वाईल की मज़दूरी की, हालाँकि वो काफ़िर और दासल ह़रब (दुश्मन देश) का बाशिन्दा था। इसी से बाब का तर्जुमा णाबित हुआ। आस्र बिन वाईल ने हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) की बात सुनकर बतौर मज़ाक़ ऐसा कहा, अल्लाह पाक ने उसी की मज़म्मत में आयते मज़क़ूरा नाज़िल की कि ऐ नबी! तुमने उस काफ़िर को भी देखा जो मेरी आयतों के साथ कुफ़्र करता है और कहता है कि उसे मरने के बाद ज़रूर माल और औलाद दिया जाएगा। गोया उसने अल्लाह के यहाँ से कोई अहद (वादा) हासिल कर लिया हो।

## बाब 16 : सूरह फ़ातिहा पढ़कर अरबों पर फूंकना और उस पर उज्जत ले लेना

इसको खुद इमाम बुखारी (रह.) ने तिब्ब में वस्ल (मिलान) किया है। जुम्हूर इलमा ने इससे ये दलील ली है कि ता'लीमे कुर्आन की उज्जत लेना दुरुस्त है; मगर हन्फ़िया ने इसको नाजाइज़ करार दिया है। अल्बत्ता अगर दम के तौर पर इसको पढ़े तो उनके नज़दीक भी उज्जत ले सकता है लेकिन ता'लीम की नहीं ले सकता क्योंकि वो इबादत है। (फ़तह)

और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया, कि किताबुल्लाह सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उस पर उज्जत हासिल करो। और शअबी (रह.) ने कहा कि कुर्आन पढ़ाने वाला पहले से तै न करे। अल्बत्ता जो कुछ उसे बिन माँगे दिया जाए ले लेना चाहिये। और हक़म (रह.) ने कहा कि मैंने किसी शख्स से ये नहीं सुना कि मुअल्लिम की उज्जत को उसने नापसन्द किया हो और हसन (रह.) ने (अपने मुअल्लिम को) दस दिरहम उज्जत के दिये। और इब्ने सीरीन (रह.) ने क़स्साम (बैतुलमाल का मुलाज़िम जो तक्सीम पर मुक़र्रर हो) की उज्जत को बुरा नहीं समझा और वो कहते थे कि (कुर्आन की आयत में) सुहत फ़ैसला में रिश्त लेने के मा'नी में है और लोग (अंदाज़ा लगाने वालों को) अंदाज़ा लगाने की उज्जत देते थे।

تَكْفُرُ بِمُحَمَّدٍ. فَقُلْتُ: أَمَا وَاللَّهِ حَتَّى تَمُوتَ ثُمَّ تُبْعَثَ فَلَا. قَالَ: وَإِنِّي لَمَيِّتٌ ثُمَّ مَبْعُوثٌ. فَقُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: فَإِنَّهُ سَيَكُونُ لِي ثُمَّ مَالٌ وَوَلَدٌ، فَأَقْضِيكَ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ((أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ: لَأُؤْتِينَ مَالًا وَلَوْلَا الَّذِي رَجَعْتُ إِلَى اللَّهِ لَأَخَذْتُ الْكَافِرِينَ أَكْبْرًا مِنْ هَذَا مَا لَمْ يَكُنْ يَدْرِكُهُمْ إِيَّاهُ وَلَا يَمْلِكُهُمْ)). [راجع: ٢٠٩١]

## ١٦ - بَابُ مَا يُعْطَى فِي الرُّقْيَةِ عَلَى أَحْيَاءِ الْعَرَبِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَحَقُّ مَا أَخَذْتُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا كِتَابُ اللَّهِ)).  
وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: لَا يَشْتَرِطُ الْمُعَلِّمُ، إِلَّا أَنْ يُعْطَى شَيْئًا فَلْيَقْبَلْهُ. وَقَالَ الْحَكَمُ: لَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا كَرِهَ أَجْرَ الْمُعَلِّمِ وَأَعْطَى الْحَسَنُ ذَرَاهِمَ عَشْرَةَ. وَلَمْ يَرِ ابْنُ سِيرِينَ بِأَجْرِ الْقَسَامِ بَأْسًا.  
وَقَالَ: كَانَ يُقَالُ السُّحْتُ: الرُّشْوَةُ فِي الْحُكْمِ، وَكَانُوا يُعْطُونَ عَلَى الْخَرَصِ.

**तशरीह:** हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वाली रिवायत को इब्ने अबी शैबा ने वस्ल (मिलान) किया है। हकम के कौल को बग्वी ने जअदियात में वस्ल (मिलान) किया है और हसन के कौल को इब्ने सअद ने तब्कात में वस्ल (मिलान) किया, और इब्ने अबी शैबा ने हसन से निकाला कि किताबत (लिखने, छापने) की उज्जरत लेने में क़बाहत नहीं है और इब्ने सीरीन के कौल को इब्ने अबी शैबा ने निकाला लेकिन अब्द बिन हुमैद वगैरह ने इब्ने सीरीन से उसकी कराहियत नक़ल की और इब्ने सअद ने इब्ने सीरीन से यून निकाला कि उज्जरत की अगर शर्त करे तो मकरूह है वरना नहीं, और इस रिवायत से दोनों में जमा हो जाता है। कुआन में जिस सुह्त का ज़िक्र है, वो हुराम है उससे रिश्तत ही मुराद है और इब्ने मसरूद (रज़ि.) और ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) से भी सुह्त की यही तफ़सीर मन्कूल है। (वहीदी)

2276. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिशर ने बयान किया, उनसे अबुल मुतवक्किल ने बयान किया, और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) के कुछ सहाबा (रज़ि.) सफ़र में थे। दौराने सफ़र में वो अरब के एक क़बीले पर उतरे। सहाबा ने चाहा कि क़बीले वाले उन्हें अपना मेहमान बना लें। लेकिन उन्होंने मेहमानी नहीं की, बल्कि सफ़ा इन्कार कर दिया। इत्तिफ़ाक़ से उसी क़बीले के सरदार को सांप ने डस लिया, क़बीले वालों ने हर तरह की कोशिश कर ली, लेकिन उनका सरदार अच्छा न हुआ। उनके किसी आदमी ने कहा कि चलो उन लोगों से भी पूछें जो यहाँ आकर उतरे हैं। मुम्किन है कोई दम-झाड़ की चीज़ उनके पास हो। चुनौचे क़बीला वाले उनके पास आए और कहा कि, भाइयों! हमारे सरदार को सांप ने डस लिया है। उसके लिये हमने हर क्रिस्म की कोशिश कर डाली लेकिन कुछ फ़ायदा न हुआ क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ दम करने की है? एक सहाबी ने कहा, कि क़सम अल्लाह की मैं उसे झाड़ दूँगा। लेकिन हमने तुमसे मेज़बानी के लिये कहा था और तुमने इन्कार कर दिया। इसलिये अब मैं भी उज्जरत के बग़ैर नहीं झाड़ूँगा, आख़िर बकरियों के एक रेवड़ पर उनका मामला तै हुआ। वो सहाबी वहाँ गये और अलहम्दु लिल्लाहिरब्बिल आलमीन पढ़-पढ़कर दम किया। ऐसा मा'लूम हुआ जैसे किसी की रस्मी खोल दी गई हो। वो सरदार उठकर चलने लगा, तकलीफ़ व दर्द का नामो-निशान भी बाक़ी न रहा था। बयान किया कि फिर उन्होंने तयशुदा उज्जरत सहाब-ए-किराम को अदा कर दी। किसी ने कहा कि उसे तज़सीम कर लो।

٢٢٧٦- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ أَبِي الْمُثَنَّى عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((انْطَلَقَ نَفَرٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرَةٍ سَافَرُوها، حَتَّى نَزَلُوا عَلَى خِيٍّ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ فَاسْتَضَافُوهُمْ فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّقُوهُمْ، فَلَدَغَ سَيْدٌ ذَلِكَ الْخِيَّ، فَسَعَوْا لَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ، لَا يَنْفَعُهُ شَيْءٌ. فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَوْ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ الرُّهْطُ الَّذِينَ نَزَلُوا، لَعَلَّهُ أَنْ يَكُونَ عِنْدَ بَعْضِهِمْ شَيْءٌ. فَأَتَوْهُمْ فَقَالُوا: يَا أَيُّهَا الرُّهْطُ إِنَّ سَيِّدَنَا لَدَغَ، وَسَعَيْنَا لَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ لَا يَنْفَعُهُ، فَهَلْ عِنْدَ أَحَدٍ مِنْكُمْ مِنْ شَيْءٍ؟ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: نَعَمْ وَاللَّهِ، إِنِّي لَأَرْقِي، وَلَكِنْ وَاللَّهِ لَقَدْ اسْتَضَفْنَاكُمْ فَلَمْ تُضَيِّقُوا، فَمَا أَنَا بِرَاقٍ لَكُمْ حَتَّى تَجْعَلُوا لَنَا جُعَلًا. فَصَالَحُوهُمْ عَلَى قَطِيعٍ مِنَ الْقَمَمِ. فَانْطَلَقَ يَنْفِلُ عَلَيْهِ وَيَقْرَأُ: ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ فَكَأَنَّمَا نَشِطَ مِنْ عِقَالٍ، فَانْطَلَقَ يَمْشِي وَمَا بِهِ قَلْبَةٌ. قَالَ: فَأَوْفُوهُمْ جُعْلَهُمُ الَّذِي صَالَحُوهُمْ

लेकिन जिन्होंने झाड़ा था, वो बोले कि नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर होकर पहले हम आपसे उसका ज़िक्र कर लें। उसके बाद देखेंगे कि आप (ﷺ) क्या हुक्म देते हैं। चुनाँचे सब हज़रत रसूले करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए और आपसे इसका ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया तुम कैसे जानते हो कि सूरह फ़ातिहा भी एक रुक़्या (मंत्र) है? उसके बाद आपने फ़र्माया कि तुमने ठीक किया। इसे तक्सीम कर लो और एक मेरा हिस्सा भी लगाओ ये फ़र्माकर रसूले करीम (ﷺ) हंस पड़े। शुअबा ने कहा कि अबू बिशर ने हमसे बयान किया, उन्होंने अबुल मुतवक्किल से ऐसा ही सुना।

(दीगर मक़ाम : 5007, 5736, 5749)

عَلَيْهِ. فَقَالَ بَعْضُهُمْ: أَفَسَمُوا. فَقَالَ الَّذِي رَفَى: لَا تَفْعَلُوا حَتَّى تَأْتِيَ النَّبِيَّ ﷺ. فَذَكَرَ لَهُ الَّذِي كَانَ فَتَنَظَرُ مَا يَأْمُرُنَا. فَقَدِمُوا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. فَذَكَرُوا لَهُ فَقَالَ: ((وَمَا يُذَرِّبُكَ أَنَّهَا رُقْيَةٌ؟)) ثُمَّ قَالَ: ((قَدْ أَصَبْتُمْ، أَفَسَمُوا وَاضْرِبُوا لِي مَعَكُمْ سَهْمًا)). فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ وَقَالَ شُعْبَةُ: حَدَّثَنَا أَبُو بَشِيرٍ سَمِعْتُ أَبَا الْمُتَوَكِّلِ بِهَذَا.

[أطرافه ي : ٥٠٠٧، ٥٧٣٦، ٥٧٤٩].

**तशरीह :** मुज्ताहिदे मुत्लक, इमामुल मुहद्दिषीन हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब और रिवायत कर्दा हदीष के तहत बहुत से मसाइल जमा फ़र्मा दिए हैं। अज़हाबे नबवी चौंकि सफ़र में थे और उस ज़माने में होटलों का कोई दस्तूर न था। अरबों में मेहमाननवाज़ी ही सबसे बड़ी खूबी थी। इसीलिये सहाबा किराम (रज़ि.) ने एक रात की मेहमानी के लिये क़बीले वालों से दरख्वास्त की मगर उन्होंने इंकार कर दिया। और ये इतिफ़ाक़ की बात है कि उसी दौरान उन क़बीले वालों का सरदार सांप या बिच्छू काट गया। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने एक क़ौल नक़ल किया है जिससे मा'लूम होता है कि उस सरदार की अक़ल में फ़ितूर आ गया था। बहरहाल जो भी सूत हो वो क़बीले वाले सहाबा किराम (रज़ि.) के पास आकर दम झाड़ के लिये मुतमन्नी (इच्छुक) हुए और इस हदीष के रावी हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने आमादगी ज़ाहिर फ़र्माई और उज्जरत में तीस बकरियों पर मामला तै हुआ। चुनाँचे उन्होंने उस सरदार पर सात बार या तीन बार सूरह फ़ातिहा पढ़कर दम किया और वो सरदार अज़हाब के हुक्म से तंदरुस्त हो गया। और क़बीला वालों ने बकरियाँ पेश कर दीं जिनकी इतिला सहाब-ए-किराम (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) को पेश की। और आप (ﷺ) ने उनकी ताईद फ़र्माई और साथ ही उनकी दिलजूर्ई के लिये बकरियों की तक्सीम में अपना हिस्सा मुकर्रर करने का भी इशार्द फ़र्माया। शुअबा की रिवायत को तिर्मिज़ी ने वस्ल (मिलान) किया है इस लफ़्ज़ के साथ। और हज़रत इमाम बुखारी (रज़ि.) ने भी तिब्ब में अन्ज़नह के साथ ज़िक्र किया है।

इस हदीष से प्राबित हुआ कुआन मजीद की आयतों और इसी तरह दीगर अज़्कार वा अदईया माफ़ूरा के साथ दम करना दुरुस्त है। दीगर रिवायत में साफ़ मज़कूर है ला बास बिरूका मा लम यकुन फ़ीहि शिकुन शिकिया अल्फ़ाज़ न हों तो दम-झाड़ करने में कोई हर्ज नहीं। मगर जो लोग शिकिया अल्फ़ाज़ और पीरों फ़कीरों के नामो से मंतर जंतर करते हैं, वो अज़हाब के नज़दीक मुश्रिक हैं। एक मुवह्हिद मुसलमान को हर्गिज़ ऐसे ढकोसलों में न आना चाहिये और ऐसे मुश्रिक व मक्कार ता'वीज़ व मंतर वालों से दूर रहना चाहिये कि आजकल ऐसे लोगों के हथकण्डे बहुत क़सरत के साथ चल रहे हैं।

इस हदीष से कुछ इलमा ने ता'लीमे कुआन पर उज्जरत लेने का जवाज़ प्राबित किया है। साहिबुल मिहज़ब लिखते हैं, व मिन अदिल्लतिल जवाज़ि हदीषु इमर अल मुतक़द्दम फ़ी किताबिज्जक़ाति अन्न नबिय्यु (ﷺ) क़ाल लहु मा अताक मिन हाज़ल्मालि मिन ग़ैरि मस्अलतिन व ला अश्राफ़ि नफ़िसन फ़ख़्रुज्हु व मिन अदिल्लतिल जवाज़ि हदीषु रुक़्या अल मशहूरुल्लज़ी अख़रजहुल बुखारी अनिब्नि अब्बास व फ़ीहि अन्न मा अख़ज़्तुम अलैहि अज़न किताबुल्लाहि (पेज नं. 268)

और जवाज़ के दलाइल में से हदीषे इमर (रज़ि.) है जो किताबुज्जकात में गुजर चुकी है। नबी करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया था कि उस माल में से जो तुम्हारे पास बग़ैर सवाल किये और बग़ैर तौक़ि—झाँके खुद आए, उसको कुबूल कर लो और जवाज़ की दलील वो हदीष भी है जिसमें दम करने का वाक़िया मज़कूर है जिसको इमाम बुख़ारी (रह.) ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से निकाला है और उसमें ये भी है कि बिला शक़ जिस पर तुम बतौर उज्जरत लेने का हक़ रखते हो वो अल्लाह की किताब है।

साहिबे लमआत लिखते हैं, वफ़ीहि दलीलुन अन्नरुन्नयत बिल कुआनि व अर्रजुल उज्जति अलैहा जाएजुन बिला शुब्हतिन या'नी उसमें इस पर दलील है कि कुआन मजीद के साथ दम करना और उस पर उज्जरत लेना बिना शुब्हा जाइज़ है।

ऐसा ही वाक़िया मुसन्द अहमद और अबू दाऊद में ख़ारिजा बिन सुलत अन अम्मिही की रिवायत से मज़कूर है रावी कहते हैं, अन्नबल्ला मिन इन्दि रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़अतैना अला हय्यिमिनल अरबि फ़क़ाल अम्बाना इन्नकुम क़द जितुम मिन इन्द हाज़रजुलि बिख़ैरिन फ़हल इन्दकुम मिन दवाइन औ रुक़यतिन फ़इन्न इन्दना मअतूहा फ़िल्कुयूदि फ़कुल्ना नअम फ़जाऊ बिमअतूहु फ़िल्कुयूदि फ़क़रअतु अलैहि बिफ़ातिहतिल किताबि फ़लाफ़त अय्यामिन गुदुव्वतन व अशिय्यतन अज्यड बज़ाक़ी शुम्म अत्फ़लु क़ाल फ़क़ानमा अन्शत मिन इक़ालिन फ़अतूनी जअलन फ़कुल्लु ला हत्ता अस्अलन्नबिय्य (ﷺ) फ़क़ाल कुल फ़लिउम्पी लिमन अकल बिर्क़यतिन बातिलिन लक़द अकल्ल बिर्क़यतिन हक्किन (स्वाह अहमद व अबू दाऊद)

मुख़तसर मतलब ये है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत से जुदा होकर एक अरब क़बीले पर से गुजरे। उन लोगों ने हमसे कहा कि हमको मा'लूम हुआ है कि तुम उस आदमी के पास से कुछ न कुछ ख़ैर लेकर आए हो। या'नी रसूले करीम (ﷺ) से कुआन मजीद और ज़िक़रुल्लाह सीखकर आए हो। हमारे यहाँ एक दीवाना बेडियों में मुक़य्यिद (जकड़ा हुआ) है। तुम्हारे पास कोई दवा या दम झाड़ हो तो मेहरबानी करो। हमने कहा कि हाँ! हम मौजूद हैं। पस वो ज़ंजीरों में जकड़े हुए एक आदमी को लाए। और मैंने उस पर सुबह व शाम तीन रोज़ तक बराबर सूरह फ़ातिहा पढ़कर दम किया। मैं ये सूरह पढ़-पढ़कर अपने मुँह में थूक जमा करके उस पर दम करता रहा। यहाँ तक कि वो मरीज़ इतना आज़ाद हो गया कि जितना ऊँट उसकी रस्सी खोलने से आज़ाद हो जाता है या'नी वो तंदरुस्त हो गया। पस जब उन क़बीला वालों ने मुझको उज्जरत देनी चाही तो मैंने आँहज़रत (ﷺ) से इज़ाज़त तलब की। आपने फ़र्माया कि लोग तो झूठ-मूठ फ़रेब देकर दम—झाड़ से लोगों का माल खाते हैं, तुमने तो हक़ और सच्चा दम किया है जिस पर खाना हक़ के ऊपर खाना है जो हलाल है। उससे ये भी मा'लूम हुआ कि झाड़-फूँक के बहाने से ग़लत़ किस्म के लोगों की क़प्परत भी पहले ही से चली आ रही है और बहुत से नादान लोग अपनी तबई कमज़ोरी की वजह से ऐसे लोगों का शिकार बनते चले आ रहे हैं। तारीख़ में अक्वाये क़दीम (पुरानी क़ौमों) कुल्दानियों, मिस्त्रियों, सामियों वग़ैरह वग़ैरह के हालात पढ़ने से मा'लूम होगा कि वो लोग बड़ी ता'दाद में दम, झाड़, फूँक फाँक, मंतर जंतर करने वालों के ज़बरदस्त मुअतकिद (श्रद्धालु) होते थे। अक़सर तो मौत व हयात तक को ऐसे ही मक्कार दम झाड़ करने वालों के हाथों में जानते थे। स़द अफ़सोस! कि उम्मत मुस्लिमा भी इन बीमारियों से बच न सकी और उनमें भी मंतर जंतर के नामों पर कितने ही शिक़िया तौर त़रीके जारी हो गए और अब भी बक़सरत अवा़म ऐसे ही मक्कार लोगों का शिकार हैं। कितने ही नक्श व ता'वीज़ लिखने वाले सिर्फ़ हिन्दसों (अटकलों) से काम चलाते हैं। जिनको खुद उन हिन्दसों की हकीक़त का भी कोई इल्म नहीं होता। कितने ही सिर्फ़ पीरों, दरवेशों, फ़ौतशुदा बुजुर्गों के नाम लिखकर देते हैं कितने या जिब्रईल या मीकाईल या इज़्राईल लिखकर इस्ते'माल करते हैं। कितने मनगढ़ंत शिक़िया दुआएँ लिखकर खुद मुश्रिक बनते हैं और दूसरों को मुश्रिक बनाते हैं। कितने हज़रत पीर बग़दादी (रह.) के नाम की दुहाई लिखकर लोगों को बहकाते रहते हैं। अल्लार्ज मुसलमानों की एक क़पीर ता'दाद ऐसे हथकण्डों की शिकार है। फिर इन ता'वीज़ों की कीमत चार आना, रुपया, सवा रुपया से आगे बढ़ती ही चली जाती है। इस तरह खूब दुकानें चल रही हैं। ऐसे ता'वीज़ गण्डा करने वाले और लोगों का माल उस घोखा फ़रेब से खाने वाले ग़ौर करें कि वो अल्लाह और उसके हबीब (ﷺ) को क़यामत के दिन क्या मुँह दिखाएँगे।

आज 29 जिल् हिज्ज 1389 हिजरी को मुक़ामे इब्राहीम के पास बवक़ते मस्जिद ये नोट लिखा गया और अल्लाह तआला की मदद से 2 स़फ़र 1390 हिजरी को मदीना मुनव्वरा मस्जिदे नबवी में अस्हाबे सुफ़फ़ा के चबूतरे पर बैठकर नज़रे

प्राणी की गई।

## बाब 17 : गुलाम लौण्डी पर रोज़ाना एक रक़म मुक़रर कर देना

۲۷- بَابُ ضَرِيَّةِ الْعَبْدِ، وَتَعَاهُدِ

ضَرَايِبِ الْإِمَاءِ

गुलामी के दौर में आका अपने गुलामों—लौण्डियों पर रोज़ाना या हफ़्तावार या माहाना एक टेक्स मुक़रर कर दिया करते थे। उसके लिये हदीष में ख़िराजे अनाज, अज़्रे ज़रीबा वगैरह के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं। बाब की हदीष में सिर्फ़ अबू तैबा (रज़ि.) का ज़िक्र है जो गुलाम था। लेकिन लौण्डी को गुलाम पर क़यास किया। अब ये अन्देशा कि शायद लौण्डी ज़िना करके कमाए गुलाम में भी चल सकता है कि शायद वो चोरी करके कमाए और इमाम बुखारी (रह.) और सईद बिन मंसूर ने हुजैफ़ा (रज़ि.) से निकाला। उन्होंने कहा अपनी लौण्डियों की कमाई पर निगाह रखो। और अबू दाऊद ने राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) से मर्फ़अन् निकाला कि आप (ﷺ) ने लौण्डी की कमाई से मना फ़र्माया जब तक ये मा'लूम न हो कि उसने किस ज़रिये से कमाया है।

2277. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि तैबा हज़ाम ने नबी करीम (ﷺ) के पछना लगाया, तो आप (ﷺ) ने उन्हें उज्जरत में एक साअ या दो साअ अनाज देने का हुक्म दिया और उनके मालिकों से सिफ़ारिश की कि जो महसूल इस पर मुक़रर है, उसमें कुछ कमी कर दो। (राजेअ: 2012)

۲۲۷۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَمِيدِ الطَّوِيلِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((حَجَمَ أَبُو طَيْبَةَ النَّبِيُّ ﷺ فَأَمَرَ لَهُ بِصَاعٍ أَوْ صَاعَيْنِ مِنْ طَعَامٍ، وَكَلَّمَ نَوَالِيَهُ فَعَقَفَ عَنْ عَلَيْهِ أَوْ ضَرِيَّتِهِ)). [راجع: ۲۱۰۲]

## बाब 18 : पछना लगाने वाले की उज्जरत का बयान

۱۸- بَابُ عَرَاكِ الْحَجَامِ

2278. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने ताऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पछना लगवाया और पछना लगाने वाले को उज्जरत भी दी। अगर पछना लगवाना नाजाइज़ होता तो आप (ﷺ) न पछना लगवाते न उज्जरत देते। (राजेअ: 1835)

۲۲۷۸- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اِخْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَعْطَى الْحَجَامَ أَجْرَهُ)). [راجع: ۱۸۳۵]

2279. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पछना लगवाया और पछना लगाने वाले को उज्जरत भी दी, अगर उसमें कोई कराहत होती तो आप किस लिये देते। (राजेअ: 1835)

۲۲۷۹- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اِخْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَعْطَى الْحَجَامَ أَجْرَهُ، وَلَوْ عَلِمَ كِرَامِيَةً لَمْ يُعْطِ)). [راجع: ۱۸۳۵]

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने गोया उस शख्स का रद्द किया, जो हज़ाम की उज्जरत को हराम कहता था। जुम्हूर का यही मज़हब है कि वो हलाल है। खून में ख़राबी हो तो पछना लगाना बहुत मुफ़ीद है। अरबों में ये इलाज इस मर्ज़ के लिये आम था।

2280. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मिस्रर ने बयान किया, उनसे अमर बिन आमिर ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने पछना लगवाया, और आप किसी की मज़दूरी के मामले में किसी पर जुल्म न करते थे। (राजेअ: 2102)

۲۲۸۰- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا  
مِسْرَرٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ غَامِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ  
أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ النَّبِيُّ  
ﷺ يَخْتَجِمُ، وَلَمْ يَكُنْ يَظْلِمُ أَحَدًا

أَجْرُهُ)). [راجع: ۲۱۰۲]

बाब की अह्दादीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये प्राबित किया कि हज्जाम या'नी पछना लगाने वाले की उज्जरत हलाल है और ये पेशा भी जाइज़ है। अगर ये पेशा नाजाइज़ होता तो न आप पछना लगवाते और न उसको उज्जरत देते। ये मा'लूम हुआ कि ऐसे कामों को हिक्मत की नज़र से देखने वाले ग़लती पर हैं।

**बाब 19 : उसके मुता'ल्लिक जिसने किसी गुलाम के मालिकों से गुलाम के ऊपर मुकर्ररा टैक्स में कमी के लिये सिफ़ारिश की**

۱۹- بَابُ مَنْ كَلَّمَ مَوْلَى الْعَبْدِ أَنْ  
يُخَفِّفُوا عَنْهُ مِنْ خَرَاجِهِ

या'नी तफ़ज़ुल और एहसान के तौर पर, न ये कि बतौर वजुब के हुक्म देना। कुछ ने कहा कि अगर गुलाम को उसकी अदायगी की त्राक़त न हो तो हाकिम तख़फ़ीफ़ (कमी) का हुक्म भी दे सकता है।

2281. हमसे आदम बिन अबी अय्यास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक पछना लगाने वाले गुलाम (अबू तैबा) को बुलाया, उन्होंने आप (ﷺ) के पछना लगाया। और आपने उन्हें एक या दो साअ, या एक या दो मुह (हदीष के रावी शुअबा को शक था) उज्जरत देने के लिये हुक्म फ़र्माया। आप (ﷺ) ने उनके मालिकों से भी उनके बारे में सिफ़ारिश फ़र्माई तो उनका ख़िराज कम कर दिया गया। (राजेअ: 2102)

۲۲۸۱- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ  
عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَعَا النَّبِيُّ ﷺ  
غُلَامًا خِجَامًا فَخَجَمَهُ وَأَمَرَ لَهُ بِصَاعٍ أَوْ  
صَاعَيْنِ، أَوْ مُدٍّ أَوْ مُدَّتَيْنِ، وَكَلَّمَ فِيهِ  
لُغْلُفَ مِنْ صَرِيحِهِ)). [راجع: ۲۱۰۲]

पिछली हदीष में पछना लगाने वाले गुलाम की कुत्रियत अबू तैबा (रज़ि.) को मज़कूर है। उनका नाम नाफ़ेअ बतलाया गया है। हाफ़िज़ ने उसी को सहीह कहा है। इब्ने हज़्ज़ा ने कहा कि अबू तैबा ने 134 साल की उम्र पाई थी। हदीष से साफ़ ज़ाहिर है कि गुलाम या लौण्डी के ऊपर मुकर्ररा टैक्स में कमी कराने की सिफ़ारिश करना दुरुस्त है। अल्लाह का शुक्र है कि अब इस्लाम की बरकत से गुलामी का ये बदतरीन दौर तज़रीबन दुनिया से ख़त्म हो चुका है मगर अब गुलामी के दूसरे तरीक़े ईजाद हो गए हैं जो और भी बदतरीन हैं। अब क़ौमों को गुलाम बनाया जाता है जिनके लिये अक़ल्लियत (अल्पसंख्यक) और अक़प्रियत (बुसंख्यक) की इस्तिलाहात मुर्व्वज (परिभाषाएं प्रचलित) हो गई हैं।

**बाब 20 : ज़ानिया और फ़ाहिशा लौण्डी की ख़र्ची का बयान और इब्राहीम नख़्ज़ी ने नौहा करने वालियों और गाने वालियों की उज्जरत को मकरूह क़रार दिया है। और अल्लाह तआला का (सूरह नूर**

۲۰- بَابُ كَسْبِ النِّعَى وَالْإِمَاءِ  
وَكَرِهَةِ إِبْرَاهِيمَ أَجْرَ النَّائِحَةِ وَالْمَغَنِيَةِ  
وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: هُوَ لَا تُكْرِهُوا قَبَائِكُمْ

में) ये फ़र्मान कि, अपनी बाँदियों को जबकि वो पाकदामनी चाहती हों, ज़िना के लिये मजबूर न करो ताकि तुम इस तरह दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हूँडो। लेकिन अगर कोई शरअ उन्हें मजबूर करता है, तो अल्लाह उन पर जबर किये जाने के बाद (उन्हें) मुआफ़ करने वाला, उन पर रहम करने वाला है। (कुर्आन की आयत में लफ़्ज़) फ़तयातिकुम, इमाअकुम के मा'नी में है। (या'नी तुम्हारी बान्दियाँ)

2282. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू बक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम ने बयान किया, उनसे अबू मसऊद अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने कुत्ते की क्रीमत, ज़ानिधा (के ज़िना) की ख़र्ची और काहिन की मज़दूरी से मना फ़र्माया।

(राजेअ : 2237)

2283. हमसे मुस्लिम बिन अब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन जुहादा ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बान्दियों की ज़िना की कमाई से मना किया था। (दीगर मक़ाम : 5348)

आयते कुर्आनी और दोनों अह्लादीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने प्राबित फ़र्माया कि रण्डी की कमाई और लौण्डी की कमाई ह़राम है। अहदे जाहिलियत में लोग अपनी लौण्डियों से ह़राम कमाई हासिल करते थे और उनसे बिल जबर पेशा कराते। इस्लाम ने निहायत सख़्ती के साथ उसे रोका और ऐसी कमाई को ह़राम का लुक्मा करार दिया। उसी तरह कहानत का पेशा भी ह़राम करार पाया। नीज़ कुत्ते की क्रीमत से भी मना किया गया।

## बाब 21 : नर की जुफ़्ती (पर उज्जरत) लेना

2284. हमसे मुसहद बिन मुखहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल् वारिष और इस्माईल बिन अब्राहीम ने बयान किया, उनसे अली बिन हक़म ने, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने नर कुदाने की उज्जरत लेने से मना फ़र्माया। (हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है)

## बाब 22 : अगर कोई ज़मीन को ठेके पर ले फिर

عَلَى الْبَيْتِ إِنْ أَرَادَ تَحْصِيًا لِيَتَّعُوا عَرْضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا، وَمَنْ يُكْرِهْنُ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِمْ غَفُورٌ رَحِيمٌ. فَتَيَاكُمْ : إِمَاءُكُمْ.

۲۲۸۲- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: «أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ تَمَنِ الْكَلْبِ، وَمَقَرِّ الْبَيْتِ، وَخُلُوفِ الْكَاهِنِ».

[راجع: ۲۲۳۷]

۲۲۸۳- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ بْنُ أَبِإِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي حَزِيمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ تَمَنِ الْإِمَاءِ».

[طرفه في: ۵۳۴۸]

## ۲۱- بَابُ عَسْبِ الْفَخْلِ

۲۲۸۴- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ وَاسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحَكَمِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ عَسْبِ الْفَخْلِ».

## ۲۲- بَابُ إِذَا اسْتَأْجَرَ أَرْضًا فَمَاتَ



## ठेका देने वाला या लेने वाला मर जाए

और इब्ने सीरीन ने कहा कि ज़मीन वाले बग़ैर मुहत पूरी हुए ठेकेदार को (या उसके वारिषों को) बेदखल नहीं कर सकते। और हक़म, हसन और अयास बिन मुआविया ने कहा इज़ार-ए-मुहत ख़त्म होने तक बाक़ी रहेगा। और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ैबर का इज़ारा आधो-आध बटाई पर यहूदियों को दिया था। फिर यही ठेका आँहज़रत (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) के ज़माने तक रहा। और हज़रत उमर (रज़ि.) के भी शुरू ख़िलाफ़त में और कहीं ये ज़िक्र नहीं है कि अबूबक्र (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद नया ठेका किया हो।

2285. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने (यहूदियों को) ख़ैबर की ज़मीन दे दी थी कि उसमें मेहनत के साथ काशत करें। और पैदावार का आधा हिस्सा खुद ले लिया करें। इब्ने उमर (रज़ि.) ने नाफ़ेअ से ये बयान किया, कि ज़मीन कुछ किराये पर दी जाती थी। नाफ़ेअ ने उस किराये की तअय्युन (निर्धारित) भी कर दी थीं लेकिन मुझे याद नहीं रहा।

(दीगर मक़ाम : 2328, 2329, 2339, 2331, 2338, 2499, 2720, 3152, 4248)

2285. और नाफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़मीनों को किराये पर देने से मना किया था। और अब्दुल्लाह ने नाफ़ेअ से बयान किया, और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि (ख़ैबर के यहूदियों के साथ वहाँ की ज़मीन का मामला बराबर चलता रहा) यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उन्हें जलावतन कर दिया। (दीगर मक़ाम : 228, 2332, 2344, 2722)

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मंशाए बाब ये है कि रसूले करीम (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों से ज़मीन की बटाई का ठेका तय फ़र्माया, जो हयाते नबवी तक जारी रहा। बाद में आप (ﷺ) का इतिक़ाल हो गया तब उसी मामले को हज़रत सिदीके अकबर (रज़ि.) ने ख़लीफ़-ए-इस्लाम होने की हैषियत में जारी रखा, यहाँ तक कि उनका भी विसाल हो

أَحَدُهُمَا

وَقَالَ ابْنُ سِيرِينَ: لَيْسَ لِأَحَدٍ أَنْ يُخْرِجُوهُ إِلَى تَمَامِ الْأَجَلِ. وَقَالَ الْحَكَمُ وَالْحَسَنُ وَابْنُ مُعَاوِيَةَ: تَمَضَى الْإِجَارَةُ إِلَى أَجْلِهَا. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: أَغْطَى النَّبِيُّ ﷺ خَيْرَ الشَّطْرِ لَكَ أَنْ ذَلِكَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَصَدْرًا مِنْ خِلَافَةِ عُمَرَ، وَلَمْ يَذْكُرْ أَنْ أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرُ جَدُّا الْإِجَارَةَ بَعْدَ مَا قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ.

٢٢٨٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَغْطَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خَيْرَ الْيَهُودِ أَنْ يَعْمَلُوا مَا يَشَاءُونَ وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا. وَأَنَّ ابْنَ عُمَرَ حَدَّثَهُ أَنَّ الْمَزَارِعَ كَانَتْ تُكْرَى عَلَى شَيْءٍ سَمَاءُ نَافِعٍ لَا أَحْفَظُهَا. [أَطْرَافُهُ فِي : ٢٣٢٨، ٢٣٢٩، ٢٣٣١، ٢٤٩٩، ٢٧٢٠، ٣١٥٢، ٤٢٤٨].

٢٢٨٦- وَأَنَّ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ حَدَّثَ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ كِرَاءِ الْمَزَارِعِ)). وَقَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ ((حَتَّى أَجْلَاهُمْ عُمَرَ)).

[أَطْرَافُهُ فِي : ٢٢٧، ٢٣٣٢، ٢٣٤٤، ٢٧٢٢].

गया तो हज़रत इमर (रज़ि.) ने भी अपने शुरू खिलाफ़त में इस मामले को जारी रखा। बाद में यहूदियों की मुसलसल शरारतें देखकर उनको ख़ैबर से ज़लावतन कर दिया। पस प्राबित हुआ कि दो मामला करने वालों में से किसी एक की मौत हो जाने से वो मामला ख़त्म नहीं हो जाता, बल्कि उनके वारिष उसे जारी रखेंगे। हाँ! अगर किसी मामले को फ़रीकेन में से किसी एक की मौत के साथ मशरूत किया है तो फिर ये अमर दीगर है।

रिवायत में ज़मीनों को किराया पर देने का भी ज़िक्र है और ये भी कि फ़ालतू ज़मीन पड़ी हो जैसा कि इस्लाम के इब्तिदाई दौर में हालात थे, तो ऐसे हालात में मालिकाने ज़मीन या तो फ़ालतू ज़मीनों की खुद काशत करें या फिर बजाय किराया पर देने के अपने किसी हाज़तमन्द भाई को मुफ़्त दें।

## 38. किताबुल हवालात

# किताब हवाला के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### बाब 1 : हवाला या'नी क़र्ज़ को किसी दूसरे पर उतारने का बयान

और इसका बयान कि हवाले में रुजूअ करना दुरुस्त है या नहीं। और हसन और क़तादा ने कहा कि जब किसी की तरफ़ क़र्ज़ मुंतक़िल किया जा रहा था तो अगर उस वक़्त मालदार था तो रुजूअ जाइज़ नहीं हवाला पूरा हो गया। और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अगर साज़ियों और वारिषों ने यूँ तक्सीम की किसी ने नक़द माल लिया किसी ने क़र्ज़ा, फिर किसी का हिस्सा डूब गया तो अब वो दूसरे साज़ी या वारिष से कुछ नहीं ले सकता।

### ١ - بَابُ الْحَوَالَةِ وَهَلْ يَرْجَعُ فِي الْحَوَالَةِ

وَقَالَ الْحَسَنُ وَقَتَادَةُ: إِذَا كَانَ يَوْمَ أَخَالَ عَلَيْهِ نَبِيًّا جَارًا وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يَخْرُجُ الشَّرِيكَانِ وَأَخْلَى الْمِيرَاثُ فَيَأْخُذُ هَذَا عَيْنًا وَهَذَا دَيْنًا، فَإِنْ تَوَيَّ لِأَحَدِهِمَا لَمْ يَرْجِعْ عَلَى صَاحِبِهِ.

**तशरीह:** या'नी जब मुहताल लहने हवाला कुबूल कर लिया, तो अब फिर उसको मुहील से मुआख़ज़ा (पकड़) करना और उससे अपने क़र्ज़ का तकाज़ा करना दुरुस्त है या नहीं। हवाला कहते हैं क़र्ज़ का मुकाबला दूसरे पर कर देने को, जो क़र्ज़दार हवाला करे उसको मुहील कहते हैं और जिसके क़र्ज़ का हवाला किया जाए उसको मुहताल लहू कहते हैं और जिस पर हवाला किया जाए उसको मुहताल अलैह कहते हैं। दरहक़ीक़त हवाला, दीन की बेअ है दीन के एवज़ के, मगर ज़रूरत से जाइज़ रखा गया है।

**तशरीह :**

कतादा और हसन के अशरों को इब्ने अंबी शैबा और अष्टम ने वस्ल (मिलान) किया, उससे ये निकलता है कि अगर मुहताल अलैह हवाला ही के वक्त मुफ्लिस था तो मुहताल लहू फिर मुहील पर रजुअ कर सकता है। और इमाम शाफेई (रह.) का ये कौल है कि मुहताल किसी हालत में हवाला के बाद फिर मुहील पर रजुअ नहीं कर सकता। हन्फिया का ये मज़हब है कि तवी की सूरत में मुहताल लहू मुहील पर रजुअ कर सकता है। तवी ये है कि मुहताल अलैह हवाला ही से मुकिर हो जाए और हल्फ खा ले और गवाह न हों या इफ्लास (ग़रीबी) की हालत में मर जाए। इमाम अहमद (रह.) ने कहा मुहताल मुहील पर जब रजुअ कर सकता है कि मुहताल अलैह के मालदारी की शर्त हुई हो फिर वो मुफ्लिस निकले। मालिकिया ने कहा अगर मुहील ने धोखा दिया हो मफलन वो जानता हो कि मुहताल अलैह दीवालिया है लेकिन मुहताल को खबर न की इस सूरत में रजुअ जाइज़ होगा करना नहीं। (वहीदी)।

2287. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने खबर दी, उन्हें अबुज्जिनाद ने, उन्हें अअरज ने, और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, (क़र्ज़ अदा करने में) मालदार की तरफ़ से टाल मटोल करना जुल्म है और अगर तुममें से किसी का क़र्ज़ किसी मालदार पर हवाला दिया जाए तो उसे कुबूल करे।

इससे यही निकलता है कि हवाला के लिये मुहील और मुहताल की रज़ामन्दी काफ़ी है। मुहताल अलैह की रज़ामन्दी ज़रूरी नहीं। जुम्हूर का यही कौल है और हन्फिया ने उसकी रज़ामन्दी भी शर्त रखी है।

**बाब 2 : क़र्ज़ किसी मालदार के हवाले कर दिया जाए तो उसका रद्द करना जाइज़ नहीं**

2288. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ब्रायी ने बयान किया, उनसे इब्ने ज़क्वान ने, उनसे अअरज ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मालदार की तरफ़ से (क़र्ज़ अदा करने में) टाल-मटोल करना जुल्म है और अगर किसी का क़र्ज़ किसी मालदार के हवाले किया जाए तो वो उसे कुबूल करे।

मज़लब ये है कि किसी मालदार ने किसी का क़र्ज़ अगर अपने सर ले लिया तो उसे अदायगी में टाल-मटोल करना जुल्म होगा उसे चाहिये कि उसे फ़ौरन अदा कर दे, नीज़ जिसका क़र्ज़ हवाला किया गया है उसे भी चाहिये कि उसको कुबूल करके उस मालदार से अपना क़र्ज़ वसूल कर ले और ऐसे हवाला से इन्कार न करे। वरना उसमें वो खुद नुक़सान उठाएगा।

**बाब 3 : अगर किसी मय्यत का क़र्ज़ किसी (ज़िन्दा) शख्स के हवाले किया जाए तो जाइज़ है**

2289. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अक्वा

۲۲۸۷ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَطْلُ الْعَبِيِّ ظُلْمٌ، فَإِذَا اتَّبَعَ أَحَدُكُمْ عَلَى مَلِيٍّ فَلْيَتَّبِعْ)).

۲ - بَابُ إِذَا حَالَ عَلَى مَلِيٍّ فَلْيَسِّرْ لَهُ رَدَّ

۲۲۸۸ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ ابْنِ ذَكْوَانَ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَطْلُ الْعَبِيِّ ظُلْمٌ، وَمَنْ اتَّبَعَ عَلَى مَلِيٍّ فَلْيَتَّبِعْ)).

۳ - بَابُ إِذَا حَالَ دِينَ الْمَيِّتِ عَلَى رَجُلٍ جَازٍ

۲۲۸۹ - حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ

(रज़ि.) ने कि हम नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में मौजूद थे कि एक जनाज़ा लाया गया। लोगों ने आप (ﷺ) से अर्ज़ किया कि उसकी नमाज़ पढ़ा दीजिए। इस पर आप (ﷺ) ने पूछा, क्या इस पर कोई क़र्ज़ है? लोगों ने कहा कि नहीं है। आप (ﷺ) ने पूछा कि मय्यत ने कुछ माल भी छोड़ा है? लोगों ने अर्ज़ किया कि कोई माल भी नहीं छोड़ा। आपने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। उसके बाद एक दूसरा जनाज़ा लाया गया। लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप इनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, किसी का क़र्ज़ भी मय्यत पर है? अर्ज़ किया गया कि है। फिर आप (ﷺ) ने पूछा, कुछ माल भी छोड़ा है? लोगों ने कहा कि तीन दीनार छोड़े हैं। आपने उनकी भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। फिर तीसरा जनाज़ा लाया गया। लोगों ने आपकी खिदमत में अर्ज़ किया कि इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके मुता'ल्लिक भी वही दरयाफ्त फ़र्माया, क्या कोई माले तरका छोड़ा है? लोगों ने कहा कि नहीं। आप (ﷺ) ने दरयाफ्त किया, और इस पर किसी का क़र्ज़ भी है? लोगों ने कहा कि हाँ तीन दीनार हैं। आपने इस पर फ़र्माया कि फिर अपने साथी की तुम ही लोग नमाज़ पढ़ लो। अबू क़तादा (रज़ि.) बोले, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) इनकी नमाज़ पढ़ा दीजिए, इनका क़र्ज़ मैं अदा कर दूँगा। तब आपने उस पर नमाज़ पढ़ाई।

**तशरीह:** इन्ने माजा की रिवायत में यूँ है कि मैं उसका ज़ामिन हूँ। हाकिम की रिवायत में यूँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने यूँ फ़र्माया, वो अशरफ़ियाँ तुझ पर हैं और मय्यत बरी हो गई है। जुम्हूर उलमा ने इससे दलील ली है कि ऐसी किफ़ालत सहीह है और कफ़ील को फिर मय्यत के माल में रज़ूअ नहीं पहुँचता। और इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक अगर रज़ूअ की शर्त कर ले तो रज़ूअ कर सकता है और अगर ज़मानती को ये मा'लूम हो कि मय्यत नादार है तो रज़ूअ नहीं कर सकता। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) फ़र्माते हैं अगर मय्यत क़र्ज़ चुकाने लायक़ जायदाद छोड़ गया है। तब तो ज़मानत दुरुस्त होगी वरना ज़मानत दुरुस्त न होगी। इमाम साहब का ये क़ौल सराह्तन हदीष के खिलाफ़ है। (वहीदी)

और खुद हज़रत इमाम (रह.) की वसियत है कि हदीषे नबवी के खिलाफ़ मेरा कोई क़ौल हो उसे छोड़ दो। जो लोग हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के इस फ़र्मान के खिलाफ़ करते हैं वो सोचें कि क़यामत के दिन हज़रत इमाम (रह.) को क्या मुँह दिखलाएंगे।

हर मुसलमान को ये उसूल हमेशा याद रखना चाहिये कि अल्लाह व रसूल के बाद जुम्ला अइम्म-ए-दीन, मुज्ताहिदीन, औलियाए कामिलीन, फ़ुक़हा-ए-किराम, बुजुगनि इस्लाम का मानना यही है कि उनका एहतिरामे कामिल दिल में रखा जाए, उनकी इज़्जत की जाए, उनकी शान में गुस्ताखी का कोई लफ़्ज़ न निकाला जाए। और उनके कलिमात व इश़ादात जो किताबो-सुन्नत से न टकराएँ, वो सर आँखों पर रखे जाएँ। उनको दिलो-जान से तस्लीम किया जाए और अगर खुदा-न-ख्वास्ता उनका कोई फ़र्मान ज़ाहिर आयते कुआनी या हदीषे सहीहा मफ़ूअ के खिलाफ़ मा'लूम हो तो खुद उन ही की वसियत के मुताबिक़ उसे छोड़कर कुआन व हदीष की इतिबाज़ (पैरवी) की जाए। यही राहे नजात और सिराते मुस्तक़ीम (सीधा रास्ता) है। अगर

الْأَخْوَعُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَجَعْنَا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أَتَى بِخَنَازِرٍ فَقَالُوا صَلِّ عَلَيْهَا، فَقَالَ: ((هَلْ عَلَيْهِ ذَيْنٌ؟)) قَالُوا لَا. قَالَ: ((فَهَلْ تَرَكْتُ شَيْئًا؟)) قَالُوا لَا. فَصَلَّى عَلَيْهِ. ثُمَّ أَتَى بِخَنَازِرٍ أُخْرَى فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلِّ عَلَيْهَا. قَالَ: ((هَلْ عَلَيْهِ ذَيْنٌ؟)) قِيلَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَهَلْ تَرَكْتُ شَيْئًا؟)) فَلَاكَةَ ذَنَابِيرٍ فَصَلَّى عَلَيْهَا. ثُمَّ أَتَى بِالنَّازِلَةِ فَقَالُوا: صَلِّ عَلَيْهَا. قَالَ: ((هَلْ تَرَكْتُ شَيْئًا؟)) قَالُوا لَا. قَالَ: ((فَهَلْ عَلَيْهِ ذَيْنٌ؟)) قَالُوا: ثَلَاثَةُ ذَنَابِيرٍ. قَالَ: ((صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ)). قَالَ أَبُو قَتَادَةَ: صَلِّ عَلَيْهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَ عَلَى ذَيْنِهِ، فَصَلَّى عَلَيْهِ)).

ऐसा न किया गया और उनके कलिमात ही को बुनियादी दीन ठहरा लिया गया तो ये इस आयत के तहत होगा, अम्लहुम शुराकाऊ शरऊ लहुम मिनदीनि मालम्य अजम बिहिल्लाह (अशशूरा : 21) क्या उनके ऐसे भी शरीक हैं (जो शरीअत साज़ी में अल्लाह की शर्कत रखते हैं क्योंकि शरीअत साज़ी दरअसल महज़ एक अल्लाह का काम है) जिन्होंने दीन के नाम पर उनके लिये ऐसी ऐसी चीज़ों को शरीअत का नाम दे दिया है जिनका अल्लाह पाक ने कोई इजाज़त नहीं दी।

सद अफ़सोस! कि उम्मत इस मर्ज़ में हज़ार साल से भी ज़ाइद अर्से से गिरफ़्तार है और अभी तक इस वबाअ (महामारी) से कामिल शिफ़ा के आश्रय नज़र नहीं आते। अल्लाहुम्महम अला उम्मति हबीबिक (ﷺ)

ख़ुद हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में देख लीजिए! कोने-कोने में नई-नई बिदाआत, अजीब-अजीब रसूमात आएंगी। कहीं मुहर्रम में ता' ज़ियासाज़ी हो रही है तो कहीं कागज़ी घोड़े दौड़ाए जा रहे हैं। कहीं क़ब्रों पर शिलाफ़ों के जुलूस निकल रहे हैं तो कहीं अलम उठाए जा रहे हैं। और ज़्यादा तअज़ुब की बात ये है कि ये सब कुछ इस्लाम के नाम पर हो रहा है। इस तरह इस्लाम को बदनाम किया जा रहा है। इलमा है कि मुँह में लगाम लगाए बैठे हैं। कुछ जवाज़ तलाश करने की धुन में लगे रहते हैं क्योंकि इस तरह आसानी से उनकी दुकान चल सकती है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़िऊन।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) कहते हैं कि जादल हाकिम फ़ी हदीषि जाबिरिन फ़क़ाल हुमा अलैक व फ़ी मालिक वल्मय्यतु मिन्हुमा बरीउन क़ाल नअम फ़सल्ला अलैहि फ़जअल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा लक्रिय अबा क़तादत यकूलु मा सनअतहीनारानि हत्ता कान आख़रु ज़ालिक क़ाल कद कज़तुहुमा या रसूलुल्लाहि (ﷺ) क़ाल अलआन हीन बरतु अलैहि जिल्दहू व क़द वक्रअत हाज़िहिल्लिन्नसतु मरतन उख़रा फ़रूबिय अहार कुत्नी मिन हदीषि अलिथ्यिन कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा अता बिजनाज़तिन लम यस्अल अन शौइन मिन अमलिर्जुलि व यस्अलु अन दीनिही फ़इन क़ील अलैहि दैनुन कफ़क़ व इन क़ील लैस अलैहि दैनुन सल्ला फ़अता बिजनाज़तिन फ़लम्मा क़ाम लियुकब्बिर सअल हल अलैहि दैनुन फ़क़ालु दीनारानि फ़अदल अन्हु फ़क़ाल अली हुमा अलय्या या रसूलुल्लाहि व हुब बरीउमिन्हुमा फ़सल्ला अलैहि घुम्म क़ाल लिअली जज़ाकल्लाहु ख़ैरन व फ़क़ल्लाहु रिहानक (फ़हल बारी)

या'नी हदीषे जाबिर में हाकिम ने यूँ ज़्यादा किया है कि मय्यत के कर्ज़ वाले वो दो दीनार तरे ऊपर तरे माल में से अदा करने वाजिब हो गए और मय्यत उनसे बरी हो गई। इस सज़ाबी ने कहा, हौ रसूलुल्लाह (ﷺ)! वाक़िया यही है। फिर आप (ﷺ) ने उस मय्यत पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। पस जब भी रसूले करीम (ﷺ) अबू क़तादा से मुलाक़ात करते आप पूछा करते थे कि ऐ अबू क़तादा! तुम्हारे उन दो दीनार के वा'दे का क्या हुआ? यहाँ तक कि अबू क़तादा ने कह दिया कि हज़ूर उनको मैं अदा कर चुका हूँ। आपने फ़र्माया अब तुमने उस मय्यत की खाल को ठण्डा कर दिया। ऐसा ही वाक़िया एक बार और भी हुआ है जिसे दारे कुत्नी ने हज़रत अली (रज़ि.) से रिवायत किया है कि आँहज़रत (ﷺ) के पास जब कोई जनाज़ा लाया जाता आप उसके किसी अमल के बारे में कुछ न पूछते मगर कर्ज़ के बारे में ज़रूर पूछते। अगर उसे मक़रूज़ पाते तो आप उसका जनाज़ा न पढ़ते और अगर उसके ख़िलाफ़ होता तो आप जनाज़ा पढ़ा देते थे। पस एक दिन एक जनाज़ा लाया गया। जब आप नमाज़ की तकबीर कहने लगे तो पूछा कि क्या ये मक़रूज़ है? कहा गया कि हौ दो दीनार का मक़रूज़ है। पस आप जनाज़ा पढ़ाने से रुक गए। यहाँ तक कि हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा कि हज़ूर वो दो दीनार मेरे ज़िम्मे हैं। मैं अदा कर दूँगा और ये मय्यत उनसे बरी है। फिर आप (ﷺ) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और फ़र्माया कि ऐ अली! अल्लाह तुमको जज़ा-ए-ख़ैर दे, अल्लाह तुमको भी तुम्हारे कर्ज़ से आज़ाद करे या'नी तुमको जन्नत अत्ता करे। उससे ये भी मा'लूम हुआ कि कोई मय्यत मक़रूज़ हो और इस वजह से उसके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ाई जा रही हो तो अगर कोई मुसलमान उसकी मदद करे और उसका क़र्ज़ा अपने सर ले ले तो ये बहुत बड़ा ष्वाब का काम है और अल्लाह और उसके रसूल की खुशी का बाअिष है। और इस हदीष के ज़ेल में दाख़िल है कि जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की मदद करेगा अल्लाह उसकी मदद करेगा। ख़ास तौर पर जबकि वो दुनिया से चला गया हो। ऐसे वक़्त ऐसी इम्दाद बड़ी अहमियत रखती है। मगर कुछ नामो-निहाद मुसलमानों की अक्लों का ये हाल है कि वो ऐसी इम्दाद पर एक कौड़ी ख़र्च करने के लिये तैयार नहीं होते। वैसे नामो नमूद के लिये मुर्दा की फ़ातिहा, तीजा, चालीसवाँ मनघड़ंत रस्मों पर कितना ही रुपया पानी की तरह बहा देंगे। हालाँकि ये वो रस्में हैं जिनका कुर्आनो-सुन्नत व सज़ाबा

के अक़वाल (कथन) यहाँ तक कि इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) से भी कोई पुबूत नहीं है। मगर पेट के पुजारी उलमा ने ऐसी रस्मों की हिमायत में एक तूफ़ाने जिदाल खड़ा कर रखा है और इन रस्मों को ऐन अल्लाह व रसूल (ﷺ) की खुशनुदी करार देते हैं और उनके इष्बात के लिये आयाते कुर्आनी व हदीषे नबवी में वो वो तावीलाते फ़ासिदा करते हैं कि देखकर हैरत होती है। सच है,

खुद बदलते नहीं कुर्आन को बदल देते हैं।

रसूले करीम (ﷺ) ने साफ़ लफ़्ज़ों में फ़र्माया था, मन अहदद फ़ी अमिना हाज़ा मा लैस मिन्हु फ़हुव रहुन जो हमारे दीन के काम में ऐसी नई चीज़ निकाले जिसका पुबूत हमारी शरीअत से न हो, वो मरदूद है। ज़ाहिर है कि प्रचलित रस्मों में अहदे रिसालत में थीं, न अहदे सहाबा व ताबेअीन में जबकि उन ज़मानों में भी मुसलमान वफ़ात पाते थे, शहीद होते थे मगर उनमें किसी के भी तीजा-चालीसवाँ किये जाने का पुबूत नहीं यहाँ तक कि खुद हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के लिये भी पुबूत नहीं मिलता कि उनका तीजा, चालीसवाँ किया गया हो। न इमाम शाफ़िई (रह.) का तीजा, चालीसवाँ फ़ातिहा प्राबित है। जब हकीक़त ये है तो अपनी तरफ़ से शरीअत में कमी-बेशी करना खुद लअनते खुदावन्दी में गिरफ़्तार होना है, अज़ाज़नल्लाहु मिन्हा, आमीन।

## 30. किताबुल किफ़ाला

# किफ़ालत के मसाइल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : क़र्ज़ों वग़ैरह की हाज़िर ज़मानत और माली ज़मानत के बयान में

١ - بَابُ الْكَفَالَةِ فِي الْقَرْضِ وَالذُّيُونِ بِالْأَبْدَانِ وَغَيْرِهَا

शरीअत में ये दोनों दुरुस्त हैं। ज़ामिन को मदीना वाले ज़ईम और मिस्र वाले हमील और इराक़ वाले कफ़ील कहते हैं।

2290. और अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन हम्ज़ा बिन अमर अल असलमी ने और उनसे उनके वालिद (हम्ज़ा) ने कि हज़रत इमर (रज़ि.) ने (अपने अहदे ख़िलाफ़त में) उन्हें ज़कात वसूल करने के लिये भेजा। (जहाँ वो ज़कात वसूल कर रहे थे वहाँ के) एक शख्स ने अपनी बीवी की बाँदी से हम बिस्तरी कर ली। हम्ज़ा ने उसकी एक शख्स से पहले ज़मानत ली, यहाँ तक कि वो इमर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। इमर (रज़ि.) ने उस शख्स को सौ कोड़े की सज़ा दी थी। उस आदमी ने जो जुर्म उस पर लगा था, उसको कुबूल किया था लेकिन जिहालत का बहाना किया था। हज़रत इमर (रज़ि.) ने उसको मा'ज़ूर रखा था और जरीर और अशअष ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद

٢٢٩٠ - وَقَالَ أَبُو الزِّنَادِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ حَمْزَةَ بْنِ عُمَرَ الْأَسْلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ (رَأَى) عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَغْتَنِي مُصَدَّقًا، فَوَقَعَ رَجُلٌ عَلَى جَارِيَةِ امْرَأَتِهِ، فَاخَذَ حَمْزَةُ مِنَ الرَّجُلِ كَفْلًا حَتَّى قَدِمَ عَلَى عُمَرَ، وَكَانَ عُمَرُ قَدْ جَلَدَهُ مِائَةَ حَلْدَةٍ، فَصَدَّقَهُمْ، وَغَدَرَهُ بِالْجَهَالَةِ)).

وَقَالَ جَرِيرٌ وَ الْأَشْعَثُ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ فِي الْمُرْتَدِّينَ: اسْتَبَيْهِمْ وَ كَفَلْهُمْ فَتَابُوا وَ كَفَلْهُمْ عَشَائِرُهُمْ

(रज़ि.) से मुर्तदों के बारे में कहा कि उनसे तौबा कराइये और उनकी ज़मानत तलब कीजिए (कि दोबारा मुर्तद न होंगे)। चुनाँचे उन्होंने तौबा कर ली और ज़मानत खुद उन्हीं के क़बीले वालों ने दे दी। हम्माद ने कहा जिसका हाज़िर ज़ामिन हो अगर वो मर जाए तो ज़ामिन पर कुछ तावान न होगा। लेकिन हक़म ने कहा कि ज़िम्मे का माल देना पड़ेगा।

2291. अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा कि लैस ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबी'आ ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुमुज़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी इस्राईल के एक शख़्स का ज़िक्र फ़र्माया कि उन्होंने बनी इस्राईल के एक दूसरे आदमी से एक हज़ार दीनार क़र्ज़ मांगे। उन्होंने कहा कि पहले ऐसे गवाह ला जिनकी गवाही पर मुझे ए'तिबार हो। क़र्ज़ मांगने वाला बोला कि गवाह तो बस अल्लाह ही काफ़ी है फिर उन्होंने कहा कि अच्छा कोई ज़ामिन ला। क़र्ज़ मांगने वाला बोला कि ज़ामिन भी अल्लाह ही काफ़ी है। उन्होंने कहा कि तूने सच्ची बात कही। चुनाँचे उसने एक मुक़र्ररा मुद्दत के लिये उसको क़र्ज़ दे दिया। ये साहब क़र्ज़ लेकर समन्दरी सफ़र पर रवाना हुए। और फिर अपनी ज़रूरत पूरी करके किसी सवारी (कशती बग़ैरह) की तलाश की ताकि उससे दरिया पार करके उस मुक़र्ररा मुद्दत तक क़र्ज़ देने वाले के पास पहुँच सके जो उससे तौ पाई थी। (और उसका क़र्ज़ अदा कर दे) लेकिन कोई सवारी नहीं मिली। आख़िर उसने एक लकड़ी ली और उसमें सूरख़ किया। फिर एक हज़ार दीनार और एक (उस मज़मून का) ख़त कि उसकी तरफ़ से क़र्ज़ देने वाले की तरफ़ (ये दीनार भेजे जा रहे हैं) और उसका मुँह बन्द कर दिया। और उसे दरिया पर ले आए। फिर कहा, ऐ अल्लाह! तू ख़ूब जानता है कि मैंने फ़लाँ से एक हज़ार दीनार क़र्ज़ लिये थे। उसने मुझसे ज़ामिन मांगा, तो मैंने कहा था कि मेरा ज़ामिन अल्लाह तआला काफ़ी है और वो भी तुझ पर राज़ी हुआ। उसने मुझसे गवाह मांगा तो उसका भी जवाब मैंने यही दिया था कि अल्लाह पाक गवाह काफ़ी है तो वो मुझ पर राज़ी हो गया। और (तू जानता है कि) मैंने बहुत कोशिश की कि कोई सवारी मिले जिसके ज़रिये मैं उसका

وَقَالَ حَمَّادٌ: إِذَا تَكْفَّلَ بِنَفْسٍ فَمَاتَ قَالَ شَيْءٌ عَلَيْهِ وَقَالَ الْحَكَمُ: يَضْمِنُ.

٢٢٩١- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، ((عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلًا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ سَأَلَ بَعْضَ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنْ يُسَلِّفَهُ أَلْفَ دِينَارٍ فَقَالَ: آتِيَنِي بِالشَّهَدَاءِ أَشْهَدُهُمْ، فَقَالَ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا. قَالَ: فَأَتَيْنِي بِالْكَافِلِ، قَالَ: كَفَى بِاللَّهِ كَفِيلًا. قَالَ: صَدَقْتَ فَلَدَقَعَهَا إِلَيْهِ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى. فَخَرَجَ فِي الْبَحْرِ فَنَقَضَى حَاجَتَهُ، ثُمَّ اتَّصَمَ مَرَكَبًا يَرْكَبُهَا يَتَدَمُّ عَلَيْهِ بِالْأَجَلِ الَّذِي أَجَلُهُ فَلَمْ يَجِدْ مَرَكَبًا، فَأَخَذَ خَشَبَةً فَنَقَرَهَا فَأَدْخَلَ فِيهَا أَلْفَ دِينَارٍ وَصَحِيفَةً مِنْهُ إِلَى صَاحِبِهِ ثُمَّ رَجَعَ مُوَضِعَهَا، ثُمَّ أَتَى بِهَا إِلَى الْبَحْرِ فَقَالَ: االلَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنِّي كُنْتُ تَسَلَّفْتُ فَلَانًا أَلْفَ دِينَارٍ فَسَأَلَنِي كَفِيلًا فَقُلْتُ كَفَى بِاللَّهِ كَفِيلًا، فَرَضِي بِكَ. وَسَأَلَنِي شَهِيدًا فَقُلْتُ: كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا، فَرَضِي بِذَلِكَ: وَ إِنِّي جَهَدْتُ أَنْ أَجِدَ مَرَكَبًا أَتَيْتُ إِلَيْهِ الَّذِي لَهُ فَلَمْ أَقْبِرْ وَ إِنِّي اسْتَوْدَعْتُهَا. فَرَمَى بِهَا فِي الْبَحْرِ حَتَّى

करज उस तक (मुद्दे मुकर्रर में) पहुँचा सकूँ। लेकिन मुझे उसमें कामयाबी नहीं मिली। इसलिये अब मैं इसको तेरे ही हवाले करता हूँ (ताकि तू उस तक पहुँचा दे) चुनौचे उसने वो लकड़ी जिसमें रकम थी दरिया में बहा दी। अब वो दरिया में थी और वो साहब (करजदार) वापस हो चुके थे। अगरचे फिर अब भी यही था कि किसी तरह कोई जहाज़ मिले। जिसके जरिये वो अपने शहर में जा सकें। दूसरी तरफ वो साहब जिन्होंने करज दिया था उसी तलाश में (बन्दरगाह) आए कि मुम्किन है कोई जहाज़ उनका माल लेकर आया हो। लेकिन वहाँ उन्हें एक लकड़ी मिली, वही जिसमें माल था। उन्होंने वो लकड़ी अपने घर के ईधन के लिये ले ली। लेकिन जब उसे चीरा तो उसमें से दीनार निकले और एक खत भी निकला। (कुछ दिनों के बाद जब वो साहब अपने शहर आए) तो करज देने वाले के घर आए और (ये खयाल कर के कि शायद वो लकड़ी न मिल सकी हो दोबारा) एक हजार दीनार उनकी खिदमत में पेश कर दिये और कहा कि क्रसम अल्लाह की! मैं तो बराबर उसी कोशिश में रहा कि कोई जहाज़ मिले तो तुम्हारे पास तुम्हारा माल लेकर पहुँचूँ। लेकिन उस दिन से पहले जबकि मैं यहाँ पहुँचने के लिये सवार हुआ। मुझे अपनी कोशिशों में कामयाबी नहीं मिली। फिर उन्होंने पूछा अच्छा ये तो बताओ कि कोई चीज़ कभी तुमने मेरे नाम भेजी थी? मक्कूर ने जवाब दिया बता तो रहा हूँ आपको कि कोई जहाज़ मुझे इस जहाज़ से पहले नहीं मिला। जिससे मैं आज पहुँचा हूँ। इस पर करजखवाह ने कहा कि फिर अल्लाह ने भी आपका वो करज अदा कर दिया। जिसे आपने लकड़ी में भेजा था। चुनौचे वो साहब अपना हजार दीनार लेकर खुश खुश वापस लौट गए।

وَلَجَتْ فِيهِ، ثُمَّ انْصَرَفَ وَ هُوَ فِي ذَلِكَ يَلْتَمِسُ مَرْكَبًا يَخْرُجُ إِلَى بَلَدِهِ، فَخَرَجَ الرَّجُلُ الَّذِي كَانَ أَسْلَفَهُ يَنْظُرُ لَعَلَّ مَرْكَبًا قَدْ خَاءَ بِمَالِهِ، فَإِذَا بِالْخَشَبَةِ الَّتِي فِيهَا الْمَالُ، فَأَخَذَهَا لِأَهْلِهِ خَطْبًا، فَلَمَّا نَشَرَهَا وَجَدَ الْمَالَ وَ الصَّحِيفَةَ، ثُمَّ قَدِمَ الَّذِي كَانَ أَسْلَفَهُ فَأَتَى بِالْأَلْفِ دِينَارٍ فَقَالَ: وَاللَّهِ مَا زِلْتُ جَاهِدًا لِيُطَلَّبَ مَرْكَبٌ لَاتِيكَ بِمَالِكَ لَمَّا وَجَدْتُ مَرْكَبًا قَبْلَ الَّذِي أَتَيْتُ فِيهِ. قَالَ: هَلْ كُنْتُ بَعَثْتُ إِلَيْكَ بِشَيْءٍ؟ قَالَ: أَخْبَرْتُكَ أَنِّي لَمْ أَجِدْ مَرْكَبًا قَبْلَ الَّذِي جِئْتُ فِيهِ. قَالَ: فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ أَذَى عَنْكَ الَّذِي بَعَثْتُ فِي الْخَشَبَةِ، فَانْصَرَفَ بِالْأَلْفِ الدِّينَارِ رَاضِيًا)).

**तशरीह:** हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का कौल जो यहाँ मज़कूर हुआ है इसको इमाम बैहकी ने वस्ल (मिलान) किया। और एक किस्सा बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से एक शख्स ने बयान किया कि इब्ने नवाहा का मोअज़िन अज़ान में यूँ कहता है अश्हदु अन्ना मुसैलमा रसूलुल्लाह। उन्होंने इब्ने नवाहा और उसके साथियों को बुला भेजा। इब्ने नवाहा की तो गर्दन मार दी और उसके साथियों के बाब में मश्विरा लिया। अदी बिन हातिम ने कहा कत्ल करो। जरीर और अश्अप्ने ने कहा उनसे तौबा कराओ और ज़मानत लो। वो एक सौ सत्तर आदमी थे। इब्ने अबी शैबा ने ऐसा ही नकल किया है।



इन्ने मुनीर ने कहा कि इमाम बुखारी (रह.) ने हूदू में किफ़ालत से दुयून में भी किफ़ालत का हुक्म श्राबित किया। लेकिन हूदू और कि़सास में कोई कफ़ील हो और असल मुज्रिम या नी मक्फूल अन्हू गायब हो जाए तो कफ़ील पर हद या कि़सास न होगा। इस पर इतिफ़ाक़ है लेकिन क़र्ज़ में जो कफ़ील हो उसको क़र्ज़ अदा करना होगा। (वहीदी)

हदीष में बनी इस्राईल के जिन दो शख्सों का ज़िक्र है उनकी मज़ीद तफ़सीलात जो हदीषे हाज़ा में नहीं हैं तो अल्लाह के हवाले हैं कि वो लोग कौन थे, कहाँ के बाशिन्दे थे? कौनसे ज़माने से उनका ता'ल्लुक था? बहरहाल हदीष में मज़कूर वाक़िया इस काबिल है कि उससे इब्रत हासिल की जाए। अगरचे ये दुनिया दारुल अस्बाब है और यहाँ हर चीज़ एक सबब से वाबस्ता (स्रोत से जुड़ी) है। कुदरत ने इस दुनिया के कारखाने को इसी बुनियाद पर कायम किया है मगर कुछ चीज़ें अलग हटकर भी वजूद में आ जाती हैं।

इन दोनों में से क़र्ज़ लेने वाले ने दिल की पुख्तगी और ईमान की मज़बूती के साथ महज़ एक अल्लाह पाक ही का नाम बतौर ज़ामिन और कफ़ील पेश कर दिया क्योंकि उसके दिल में क़र्ज़ अदा करने का यक्नीनी ज़ब्बा था और वो क़र्ज़ हासिल करने से पहले अज़मे मुस्मम (हद निश्चय) कर चुका था कि उसे किसी न किसी सूरत ये क़र्ज़ ज़रूर अदा करना होगा। उसी अज़मे स़मीम की बिना पर उसने ये क़दम उठाया था। हदीष में इसीलिये फ़र्माया गया कि जो शख्स क़र्ज़ लेते वक़्त अदायगी का अज़मे स़मीम (दिल की गहराई से इरादा, नेकनीयती) रखता है अल्लाह पाक ज़रूर उसकी मदद करता और उसका क़र्ज़ अदा करा देता है। इसीलिये अदायगी के वक़्त वो शख्स क़स्ती की तलाश में साहिले बहर (समुद्र तट) पर आया कि सवार होकर वक़्त मुक़र्रा पर क़र्ज़ अदा करने के लिये क़र्ज़ख़्वाह के घर हाज़िर हो जाऊँ। मगर इतिफ़ाक़ से शिद्दत से तलाश करने के बावजूद उसको सवारी न मिल सकी और मज़बूर उसने क़र्ज़ के दीनार एक लकड़ी के सूरख में बन्द करके और उसके साथ तआरुफ़ी पर्चा रखकर लकड़ी को दरिया में अल्लाह के भरोसे पर डाल दिया, उसने ये अज़म किया हुआ था कि लकड़ी की ये रक़म अगर उस क़र्ज़ख़्वाह भाई को अल्लाह वसूल करा दे तो फ़बिहा वरना वो जब भी वतन लौटेगा उसको दोबारा ये रक़म अदा करेगा। उधर वो क़र्ज़ देने वाला साहिले बहर पर किसी आने वाली क़स्ती का इतिज़ार कर रहा था कि वो भाई वक़्त मुक़र्रा पर उस क़स्ती से आएगा और रक़म अदा करेगा। मगर वो भी नाकाम होकर जा हो रहा था कि अचानक दरिया में उस बहती हुई लकड़ी पर नज़र जा पड़ी और उसने एक उम्दा लकड़ी जानकर ईधन वगैरह के ख़याल से उसे हासिल कर लिया। घर ले जाने के बाद उस लकड़ी को खोला, तो हकीक़ते हाल से इतिलाअ पाकर और अपनी रक़म वसूल करके खुश हुआ चूँकि अदा करने वाले इज़रत को वसूल करने की इतिलाअ न थी वो एहतियातन् वतन आने पर दोबारा ये रक़म लेकर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और तफ़सीलात से दोनों को इल्म हुआ और दोनों बेइतिहा खुश हुए।

ये तवक्कल इलल्लाह की वो मंज़िल है जो हर किसी को नहीं हासिल होती। इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने एक सहाबी से फ़र्माया था कि अपने ऊँट रात को ख़ूब मज़बूत बाँधकर अल्लाह पर भरोसा रखो कि उसे कोई नहीं चुराएगा।

गुफ्त पैग़म्बर बाआवाज़े बुलन्द

बर तवक्कल ज़ानू उशतर बा बन्द

आज भी ज़रूरत है कि क़र्ज़ हासिल करने वाले मुसलमान इस अज़मे स़मीम (नेकनीयती से इरादा) करे व तवक्कल अलल्लाह (अल्लाह की मदद) का मुज़ाहि़रा (प्रदर्शन) करें कि वो अल्लाह की तौफ़ीक़ से ज़रूर ज़रूर क़र्ज़ की रक़म जल्दी ही वापस करेंगे। वो ऐसा करेंगे तो अल्लाह भी उनकी मदद करेगा और उनसे उनका क़र्ज़ अदा करा देगा।

उन दोनों शख्सों का नाम मा'लूम नहीं हुआ। हाफ़िज़ ने कहा मुहम्मद बिन रबीआ ने मुस्नद सहाबा में अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से निकाला कि क़र्ज़ देनेवाला नज़ाशी था। इस सूरत में उसको बनी इस्राईल फ़र्माना इस वजह से होगा कि वो बनी इस्राईल का मुत्तबअ था न ये कि उनकी औलाद में था। अल्लामा ऐनी ने अपनी आदत के मुवाफ़ि़क़ हाफ़िज़ साहब पर ए'तिराज़ किया और हाफ़िज़ साहब की वुस्सत नज़र और क़स्ते इल्म की ता'रीफ़ न की। और कहा कि ये रिवायत ज़ईफ़ है इस पर ए'तिमाद नहीं किया जा सकता हालाँकि हाफ़िज़ साहब ने खुद फ़र्मा दिया है कि इसकी सनद में एक मज़हूल है। (वहीदी)

इस हदीष के ज़ेल हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं,

व फ़िल्हदीभि जवाज़ुल अज़िल फ़िल्क़र्ज़ि वुज़ूबुल्वफ़ाइ बिही व फ़ीहि अत्तहदुष अम्मा कान फ़ी बनी इस्राईल व ग़ैरहुम मिनलअजाइबि लिलइत्तिआज़ि वलइतिसाइ व फ़ीहितिजारतु फ़िल्बहरि व जवाज़ु रकूबिही व फ़ीहि बदातुल्कातिबि बिनफ़िसही व फ़ीहि तलबुशुहूदि फ़िदैनि व तलबुल्कफ़ीलि बिही व फ़ीहि फ़ज़्लुत्तवक्कलि अलल्लाहि व इन्न मन सहह तवक्कलुहू तकफ़ल्लाहु बिनसिही व औनिही (फ़ह)

या'नी इस हदीष में जवाज़ है कि क़र्ज़ में वक्त मुक़र्र किया जाए और तयशुदा वक्त पर अदायगी का वाजिब होना भी प्राबित हुआ और उससे बनी इस्राईल के अजीब वाक़ियात का बयान करना भी प्राबित हुआ ताकि उनसे इब्दत हासिल की जाए और उनकी इक़्तिदा की जाए और उससे दरियाई तिजारत का भी शुबूत हुआ और दरियाई सवारियों पर सवार होना भी और इससे ये भी प्राबित हुआ कि कातिब शुरू में अपना नाम लिखे और उससे क़र्ज़ के बारे में गवाहों का तलब करना और उसके कफ़ील का तलब भी प्राबित हुआ। और इससे तवक्कल अलल्लाह की फ़ज़ीलत भी निकली और ये भी कि जो हकीक़ी सहीह मुतवक्किल होगा अल्लाह पाक उसकी मदद और नुसरत का ज़िम्मेदार होता है।

खुद कुआनि पाक में इश्राद बारी है, वमंय्यतवक्कल अलल्लाहि फ़हुव हस्बुहू (अत् तलाक़ : 3) जो अल्लाह पर तवक्कल (भरोसा) करेगा अल्लाह उसके लिये काफ़ी वाफ़ी है। इस किस्म की बहुत सी आयात कुआन मजीद में वारिद हैं। मगर इस सिलसिले में ये भी याद रखना ज़रूरी है कि हाथ पैर छोड़कर बैठ जाने का नाम तवक्कल नहीं है बल्कि काम को पूरी कुव्वत के साथ अंजाम देना और उसका नतीजा अल्लाह के हवाले कर देना और ख़ैर के लिये अल्लाह से पूरी पूरी उम्मीद रखना ये तवक्कल है; जो एक मुसलमान के लिये ईमान में दाख़िले है। हदीषे कुदसी में फ़र्माया है, अना इन्द ज़न्नि अब्दी बी (मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ, वो मेरे बारे में जो भी गुमान कायम करेगा)। मतलब ये कि बन्दा अल्लाह पर जैसा भी भरोसा करेगा, अल्लाह उसके साथ वही मामला करेगा। इस्राईली मोमिन ने अल्लाह पर पूरा भरोसा करके एक हज़ार अशरफ़ियों की कीमती रक़म को अल्लाह के हवाले कर दिया, अल्लाह ने उसके गुमान को सहीह करके दिखला दिया।

शुरू में अबुज्जिनाद की रिवायत से जो वाक़िया मज़कूर है, उसकी तफ़सील ये है कि उस शख़्स ने अपनी बीवी की लौण्डी को अपना ही माल समझकर उससे बवजह नादानी सुहबत कर ली। ये मुक़द्दमा हज़रत उमर (रज़ि.) की अदालते आलिया में आया तो आपने उसकी नादानी के सबब उस पर रजम की सज़ा मुआफ़ कर दी मगर बतौर तअज़ीर सौ कोड़े लगावाए। फिर जब हज़रत हम्ज़ा असलमी वहाँ ज़कात वसूल करने बतौर तहज़ीलदार गए, तो उनके सामने भी ये मामला आया। उनको हज़रत उमर (रज़ि.) के फ़ैसले का इल्म न था, लोगों ने ज़िक्र किया तब भी उनको यक़ीन न आया। इसलिये क़बीले वालों में से किसी ने अपनी ज़मानत पेश की कि आप हज़रत उमर (रज़ि.) से इसकी तस्दीक़ फ़र्मा लें। चुनाँचे उन्होंने ये ज़मानत कुबूल की और हज़रत उमर (रज़ि.) से इस वाक़िये की तस्दीक़ चाही। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इससे हाज़िर ज़मानत को प्राबित फ़र्माया है।

**बाब 2 : अल्लाह तआला का (सूरह निसा में) ये इश्राद कि, जिन लोगों से तुमने क़सम खाकर अहद किया है, उनका हिस्सा उनको अदा करो**

٢- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى

﴿وَالَّذِينَ عَاقَدْتَ أَيْمَانَكُمْ فَآتُوهُمْ نَفْسَهُمْ﴾

2292. हमसे सुलत बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे इदरीस ने, उनसे तलहा बिन मुसर्रफ़ ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि (कुआन मजीद की आयत) व लिकुल्लि जअलना मवालिया के बारे में इब्ने अब्बास ने फ़र्माया कि (मवालिया के मा'नी) वरषा के हैं और वल्लज़ीन आक्रदत् अयमानुकुम (का

٢٢٩٢- حَدَّثَنَا الصُّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ عَنْ إِدْرِيسَ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ مُصْرَفٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ﴿وَلِكُلِّ جَعَلًا مَوَالِي﴾ قَالَ: وَرَفَّةٌ ﴿وَالَّذِينَ عَاقَدْتَ

किस्सा ये है कि) मुहाजिरीन जब मदीना आए तो मुहाजिर अंसार का तरका पाते थे और अंसार के नातेदारों को कुछ न मिलता। उस भाईपने की वजह से जो नबी करीम (ﷺ) की कायम की हुई थी। फिर जब आयत व लिकुल्लि जअलना मवालिथा नाजिल हुई तो पहली आयत वल्लजीन आक्रदत् अयमानुकुम मन्सूख हो गई। सिवा इम्दाद, तआवुन और खैरखवाही के। अल्बत्ता मीराष का हुक्म (जो अंसार व मुहाजिरीन के बीच भाईचारगी की वजह से था) वो मन्सूख हो गया और वसियत जितनी चाहे की जा सकती है। (जैसी और शख्सों के लिये भी हो सकती है। तिहाई तरके में से वसियत की जा सकती है जिसका निफाज किया जाएगा)

(दीगर मक़ाम : 4580, 6747)

أَيْمَانُكُمْ ۖ قَالَ: كَانَ الْمُهَاجِرُونَ لَمَّا قَدِمُوا الْمَدِينَةَ: يَرِثُ الْمُهَاجِرُ الْأَنْصَارِيَّ دُونَ ذَوِي رَحِمِهِ، لِلْأَخْوَةِ إِلَيَّ أَخِي النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُمْ، فَلَمَّا نَزَلَتْ ﴿وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِيَكُمْ﴾ نَسَخْتُ. ثُمَّ قَالَ: ﴿وَالَّذِينَ عَاقَدْتَ أَيْمَانُكُمْ﴾ إِلَّا الْأَنْصَرُ وَالرَّفَادَةُ وَالنَّصِيحَةُ - وَقَدْ ذَهَبَ الْبَيْرُاثُ - وَيُوصِي لَهٗ)).

[طرفاء في: ٤٥٨٠، ٦٧٤٧]

**तशरीह:** या'नी मौलल मवालात से अरब लोगों में दस्तूर था किसी से बहुत दोस्ती हो जाती तो उससे मुआहिदा करते और कहते कि तेरा खून हमारा खून है और तू जिससे लड़े हम उससे लड़ें, तू जिससे सुलह करे हम उससे सुलह करे। तू हमारा वारिष हम तेरे वारिष, तेरा क़र्ज़ा हमसे लिया जाएगा हमारा क़र्ज़ा तुझसे, तेरी तरफ़ से हम दियत दें तू हमारी तरफ़ से।

इस्लाम के शुरू ज़माने में ऐसे शख्स को तरके का छठा (हिस्सा) मिलने का हुक्म था। फिर ये हुक्म इस आयत से मन्सूख हो गया, व उलुल अरहामि बअज़ुहुम औला बिबअज़िन् फ़ी किताबिल्लाह (अल् अन्फाल : 75) इब्ने मुनीर ने कहा किफ़ालत के बाब में इमाम बुखारी रह) इसको इसलिये लाए कि जब हलफ़ से जो एक अन्नद था, इस्लाम के शुरू ज़माने में तरके का इस्तेहकाक़ (जाइज़ हक़) पैदा हो गया तो किफ़ालत करने से भी माल की ज़िम्मेदारी कफ़ील पर पैदा होगी क्योंकि वो भी एक अन्नद है।

अरबों में जाहिली दस्तूर था कि बिला हक़ व नाहक़ देखे किसी अहम मौक़े पर महज़ क़बाइली अस्थियत (जातिवाद) के तहत क़सम खा बैठते कि हम ऐसा ऐसा करेंगे। ख़्वाह हक़ होता या नाहक़, उसी को हलफ़े जाहिलियत कहा गया और बतलाया कि इस्लाम में ऐसी ग़लत किस्म की क़समों को कोई मुक़ाम नहीं। इस्लाम सरासर अदल की तरगीब दिलाता है। कुआन मजीद में फ़र्माया, वला यज़िमन्नकुम शनआनु क़ौमिन अला अल्ला तअदिलु इअदिलू हुव अन्नबू लिन्नक्वा (अल् माइद : 8) महज़ क़ौमी अस्थियत की बिना पर हर्गिज़ जुल्म पर कमर न बाँधो, इस्ाफ़ करो कि तन्नवा से इस्ाफ़ ही करीब है।

क़ालत्तबरी मा इस्तदल्ल बिही अनस अला इम्नातिल हलिफ़ ला युनाफ़ी हदीषु जुबैरिब्नि मुत्इम फ़ी नफ़ियही फ़इन्नल इख़ाअल मज़कूर कान फ़ी अबवलिल हिज़रति व कानू यतवारपून बिही शुम्म नुसिख मिन ज़ालिकल मीराष व बक्रिय मा लम युब्तिलहुल कुआनु व हुवत्तआवुनु अललहकि वन्नस्ि वल्अख़िज़ अला यदिज़ालिमि कमा क़ाल इब्नु अब्बास इल्लन्नस् वन्नसीहा वर्रिफ़ादा व यूसा लहू व क़द ज़हबलमीराष. (फ़तह)

या'नी तबरी ने कहा कि इब्नाते हलफ़ के लिये हज़रत अनस (रज़ि.) ने जो इस्तिदलाल किया वो जुबैर बिन मुत्इम की नफ़ी के ख़िलाफ़ नहीं है। इख़ाअल मज़कूर या'नी इस किस्म का भाईचारा शुरू हिज़रत में कायम किया गया था। वो आपस में एक-दूसरे के वारिष भी हुआ करते थे। बाद में मीराष को मन्सूख़ कर दिया गया और वो चीज़ अपनी हालत पर बाक़ी रह गई जिसको कुआन मजीद ने बातिल करार नहीं दिया और आपसी हक़ पर तआवुन और इमदाद करना और ज़ालिम के हाथ पकड़ना है। जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मीराष तो चली गई मगर एक-दूसरे की मदद करना और आपस में एक-दूसरे की ख़ैर-ख़्वाही करना ये चीज़ें बाक़ी रह गई हैं बल्कि अपने भाईयों के लिये वसियत भी की जा सकती है।

वाक़िया मुवाख़ाते इस्लामी तारीख़ का एक शानदार बाब है। मुहाजिर जो अपने घर-बार वतन छोड़कर मदीना शरीफ़

चले आए थे उनकी दिलजोई बहुत ज़रूरी थी। इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने मदीना के निवासी अंसारियों में इनको तक्सीम कर दिया। अंसारी भाइयों ने जिस खुलूस और रिफ़ाक़त का धुबूत दिया उसकी मिशाल इतिहास में मिलनी नामुम्किन है। आखिर यही मुहाजिर मदीना की ज़िन्दगी में घुल-मिल गए और अपने पैरों पर खड़े होकर खुद अंसार के लिये बाज़िअे तक्वियत हो गए। रजियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

आज मदीना तय्यिबा ही में बैठकर अंसारे मदीना और मुहाजिरीन किराम (रज़ि.) का ये जिक़रे ख़ैर लिखते हुए दिल पर एक रिक्कतआमेज़ (भीगा-भीगा सा) अष्र महसूस कर रहा हूँ। वाकिया ये है कि अंसार व मुहाजिर क़से इस्लाम के दो अहमतरिन सतून हैं जिन पर इस अज़ीम क़स्र की ता' मीर हुई है। आज भी मदीना की फ़िज़ा उन बुजुर्गों के छोड़े हुए ताज़ीरात से भरपूर नज़र आ रही है। मस्जिदे नबवी हरमे नबवी में मुख्तलिफ़ ममालिक के लाखों मुसलमान जमा होकर इबादते इलाही व सलातो-सलाम पढ़ते हैं और सब में मुवाखात और इस्लामी मुहब्बत की एक अनदेखी सी लहर दौड़ती हुई नज़र आती है। अगर मुसलमान यहाँ से जाने के बाद भी बाहमी मुवाखात को हर जगह कायम रखें तो दुनिया-ए-इंसानियत के लिये वो एक बेहतरीन नमूना बन सकते हैं। 4 सफ़र 1390 हिजरी को मुहतरम भाई हाजी अब्दुर्रहमान सनदी बाबे मजीदी मदीना मुनव्वरा के दौलतकदा पर ये अल्फ़ाज़ नज़रे प़ानी करते हुए लिखे गए। बुखारी शरीफ़ के उर्दू तर्जुमे की इशाअत के सिलसिले में हाजी साहब मौसूफ़ की मुजाहिदाना कोशिशों के लिये उम्मीद है कि हर मुतालअ करने वाला भाई दुआए ख़ैर करेगा।

2293. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) हमारे यहाँ आए थे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनका भाईचारा सअद बिन रबीआ (रज़ि.) से कराया था।

(राजेअ: 2049)

۲۲۹۳- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَيْنَا عِنْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، فَأَخَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَهُ وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ.

[راجع: ۲۰۴۹]

2294. हमसे मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जकरिया ने बयान किया, उनसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा, क्या आपको ये बात मा'लूम है कि नबी करीम (ﷺ) ने इशाद फ़र्माया था, इस्लाम में जाहिलियत वाले (ग़लत क़सम के) अहदो-पैमान नहीं हैं। तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने तो खुद अंसार और कुरैश के बीच मेरे घर में अहदो-पैमान कराया था।

(दीगर मक़ाम: 6083, 7340)

۲۲۹۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ قَالَ حَدَّثَنَا غَاصِمٌ قَالَ: قُلْتُ لِأَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَبْلَغْتَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: لَا جُلْفَ فِي الْإِسْلَامِ؟ فَقَالَ: قَدْ خَالَفَ النَّبِيُّ ﷺ، بَيْنَ قُرَيْشٍ وَالْأَنْصَارِ فِي دَارِيَّ).

[طرمه: ۶۰۸۳، ۷۳۴۰].

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि अहदो-पैमान अगर हक़ और इंसफ़ और अदल की बिना पर हो तो वह मज़मूम नहीं है बल्कि ज़रूरी है मगर उस अहदो-पैमान में सिर्फ़ आपसी मदद व ख़ैरख्वाही मदेनज़र होगी और तरके का ऐसे भाईचारे से कोई ता'ल्लुक न होगा क्योंकि वो वारिषों का हक़ है। ये बात दीगर है कि ऐसे मौक़े पर शरई क़ायदे के मुताबिक़ मरने वाले को वसियत करने का हक़ हासिल है।

बाब 3 : जो शख़्स किसी मय्यत के क़र्ज़ का

۳- بَابُ مَنْ تَكْفَلَ عَنْ مَيِّتٍ دَيْنًا

ज़ामिन बन जाए तो उसके बाद उससे रुजूअ नहीं कर सकता, हज़रत हसन बज़री (रह.) ने भी यही फ़र्माया

2295. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी इब्बैद ने, उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के यहाँ नमाज़ पढ़ने के लिये किसी का जनाज़ा आया। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, क्या इस मय्यत पर किसी का क़र्ज़ है? लोगों ने कहा कि नहीं। आपने उनकी नमाज़ें जनाज़ा पढ़ा दी। फिर एक और जनाज़ा आया। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया, मय्यत पर किसी का क़र्ज़ था? लोगों ने कहा कि हाँ था। ये सुनकर आपने फ़र्माया, कि फिर अपने साथी की तुम ही नमाज़ पढ़ लो, अबू क़तादा (रज़ि.) ने अज़्र किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उनका क़र्ज़ मैं अदा कर दूँगा। तब आपने उनकी नमाज़ें जनाज़ा पढ़ाई।

(राजेअ : 2289)

इस हदीस से इमाम बुखारी (रज़ि.) ने ये निकाला कि ज़ामिन अपनी ज़मानत से रुजूअ (पुनर्विचार) नहीं कर सकता। जब वो मय्यत के क़र्ज़ का ज़ामिन हो क्योंकि औहज़रत (ﷺ) ने सिर्फ़ अबू क़तादा की ज़मानत के सबब उस पर नमाज़ें जनाज़ा पढ़ ली। अगर रुजूअ जाइज़ होता तो जब तक अबू क़तादा (रज़ि.) ये क़र्ज़ अदा न करते आप उस पर नमाज़ें जनाज़ा नहीं पढ़ते।

2296. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने मुहम्मद बिन अली बाक्रि से सुना, और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर बहरीन से (जिज़्या का) माल आया तो मैं तुम्हें इस तरह दोनों लप भर-भरकर दूँगा लेकिन बहरीन से माल नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात तक नहीं आया फिर जब उसके बाद वहाँ से माल आया तो अबूबक्र (रज़ि.) ने ऐलान करा दिया कि जिससे भी नबी करीम (ﷺ) का कोई वा'दा हो या आप पर किसी का क़र्ज़ हो वो हमारे यहाँ आ जाएँ। चुनौचे मैं हाज़िर हुआ और मैंने अज़्र किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे ये दो बातें फ़र्माई थीं। जिसे सुनकर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे एक लप भरकर दिया। मैंने उसे शुमार किया तो वो पाँच सौ की रक़म थी। फिर फ़र्माया कि इसके दोगुना और ले लो।

فَلَيْسَ لَهُ أَنْ يَرْجِعَ وَبِهِ قَالَ الْحَسَنُ

۲۲۹۵- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَتَى بِجَنَازَةٍ لِيُصَلِّيَ عَلَيْهَا فَقَالَ: ((مَلَّ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ؟)) قَالُوا: لَا، فَصَلَّى عَلَيْهِ. ثُمَّ أَتَى بِجَنَازَةٍ أُخْرَى فَقَالَ: ((مَلَّ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ؟)) قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: ((صَلُّوا عَلَيَّ صَاحِبَكُمْ)). قَالَ أَبُو قَتَادَةَ: عَلَيَّ دَيْنُهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَصَلَّى عَلَيْهِ)).

[راجع: ۲۲۸۹]

۲۲۹۶- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُو مَسْعُودٌ عَنْ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ قَدْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَدْ أُعْطِيتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا))، فَلَمْ يَجِبْهُ مَالُ الْبَحْرَيْنِ حَتَّى قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَمَرَ أَبُو بَكْرٍ قَتَادَةَ: مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ عِدَّةٌ أَوْ دَيْنٌ فَلْيَأْتِنَا، فَأَتَيْنَاهُ فَقُلْتُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِي كَذَا وَكَذَا، فَحَتَّى لِي حَيَّةٌ، فَعَذَّبْتَهَا، فَإِذَا هِيَ خَمْسُمِائَةٍ وَقَالَ: خُذْ مِثْلَهَا.

(दीगर मक़ाम : 2598, 2683, 3127, 3164, 4383)

[أصراه في : ٢٠٩٨ ، ٢٦٨٣ ، ٣١٢٧]

[٣١٦٤ ، ٤٣٨٣]

सब मिलाकर तीन लप हो गए। आँहज़रत (ﷺ) ने तीन लप भर देने का वादा फ़र्माया था जैसे दूसरी रिवायत में है जिसको इमाम बुखारी (रह.) ने शहादात में निकाला, उसकी तसरीह है। बाब का मतलब इससे यही निकलता है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) जब आँहज़रत (ﷺ) के खलीफ़ा और जानशीन हुए तो गोया आपके सब मुआमलात और वा'दों के वो कफ़ील ठहरे और उनको उन वा'दों का पूरा करना लाज़िम हुआ। (क़स्तलानी रह)

**बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को (एक मुशरिक का) अमान देना और उसके साथ आपका अहद करना**

٤- بَابُ جَوَارِ أَبِي بَكْرٍ فِي عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَعَقْدِهِ

जो हदीष इस बाब में लाए उसकी मुताबक़त इस तरह है कि पनाह देने वाले ने जिसको पनाह दी, गोया उसकी अदमे ईज़ा का मुतकफ़िल हुआ और उस पर उस किफ़ालत का पूरा करना लाज़िम हुआ। इस हदीष से ये निकला कि अदमे ईज़ा दस्ती और लिसानी (हाथ और ज़बान के ज़रिये मदद) की ज़मानत करना दुरुस्त है जैसे हमारे ज़माने में राइज़ (प्रचलित) है। (वहीदी)

2297. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक्लील ने कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, और उन्हें इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी, कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने जबसे होश सम्भाला तो अपने वालदैन को इसी दिने इस्लाम का पैरूकार पाया। और अबू सलैह सुलैमान ने बयान किया कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया। उनसे यूनस ने, और उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझे इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने जब होश सम्भाला तो अपने वालदैन को दिने इस्लाम का पैरूकार पाया। कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता था जब रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे यहाँ सुबह शाम दोनों वक़्त तशरीफ़ न लाते हों। फिर जब मुसलमानों को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होने लगी तो अबूबक्र (रज़ि.) ने भी हिज्जे हब्शा का इरादा किया। जब आप बरकुल गुमाद पहुँचे तो वहाँ आपकी मुलाक़ात क़ार के सरदार मालिक इब्नु हगिना से हुई। उसने पूछा, अबूबक्र! कहाँ का इरादा है? अबूबक्र (रज़ि.) ने उसका जवाब ये दिया कि मेरी क़ौम ने मुझे निकाल दिया है। और अब तो यही इरादा है कि अल्लाह की ज़मीन में सैर करूँ और अपने रब की इबादत करता रहूँ। इस पर मालिक

٢٢٩٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ غَقِيلٍ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا رَوَى النَّبِيَّ ﷺ قَالَتْ: ((لَمْ أَغْفُلْ أَبَوَيْ إِلَّا وَهُمَا يَدِينَانِ الدِّينَ))

وَقَالَ أَبُو صَالِحٍ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ عَنْ يُونُسَ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمْ أَغْفُلْ أَبَوَيْ قَطُّ إِلَّا وَهُمَا يَدِينَانِ الدِّينَ. وَلَمْ يَمُرَّ عَلَيْنَا يَوْمٌ إِلَّا يَأْتِنَا فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ طَرَفِي النَّهَارِ نَكْرَةً وَعَسِيَةً. فَلَمَّا ابْتَلَى الْمُسْلِمُونَ حَرَجَ أَبُو بَكْرٍ مَهَاجِرًا قَبْلَ الْحَبَشَةِ حَتَّى إِذَا نَلَعَ بَرَكَ الْعِمَادَ لِقِيَةِ ابْنِ الدَّغِنَةِ، وَهُوَ سَبْدُ الْقَارَةِ فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ يَا أَبَا بَكْرٍ؟ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَخْرَجَنِي قَوْمِي، فَأَنَا أُرِيدُ

इब्नुद्गिना ने कहा कि आप जैसा इंसान (अपने वतन से) नहीं निकल सकता और न उसे निकाला जा सकता है कि आप तो मुहताजों के लिये कमाते हैं, सिलारहमी करते हैं। मजबूरों का बोझ उठाते हैं, मेहमान-नवाज़ी करते हैं और हादसों में हक़्क़ बात की मदद करते हैं। आपको मैं अमान देता हूँ आप चलिये और अपने ही शहर में अपने ख़ब की इबादत कीजिए। चुनाँचे इब्नुद्गिना अपने साथ अबूबक्र (रज़ि.) को ले आया और मक्का पहुँचकर कुफ़्फ़ारे कुरैश के तमाम अशराफ़ (सरदारों) के पास गया और उनसे कहा कि अबूबक्र जैसा नेक आदमी (अपने वतन से) नहीं निकल सकता और न उसे निकाला जा सकता है। क्या तुम ऐसे शख्स को भी निकाल दोगे जो मुहताजों के लिये कमाता है और जो सिलारहमी करता है और जो मजबूरों और कमज़ोरों का बोझ अपने सर पर लेता है और जो मेहमान-नवाज़ी करता है और जो हादसों में हक़्क़ बात की मदद करता है। चुनाँचे कुरैश ने इब्नुद्गिना की अमान को मान लिया। और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को अमान दे दी। फिर इब्नुद्गिना से कहा कि अबूबक्र को उसकी ताक़ीद कर देना कि अपने ख़ब की इबादत अपने घर ही में कर लिया करें। वहाँ जिस तरह चाहें नमाज़ पढ़ें, और कुआन की तिलावत करें। लेकिन हमें इन चीज़ों की वजह से कोई ईज़ा न दें और न उसका इज़हार करें। क्योंकि हमें उसका डर है कि कहीं हमारे बच्चे और हमारे औरतें फ़िल्ते में न पड़ जाएँ। इब्नुद्गिना ने ये बातें जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को सुनाई। तो आप अपने ख़ब की इबादत घर के अंदर ही करने लगे। न नमाज़ में किसी क्रिस्म का इज़हार करते और न अपने घर के सिवा किसी दूसरी जगह तिलावत करते। फिर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कुछ दिनों बाद ऐसा किया कि आपने अपने घर के सामने नमाज़ के लिये एक जगह बना ली। अब आप ज़ाहिर होकर वहाँ नमाज़ पढ़ने लगे और उसी पर तिलावत कुआन करने लगे। पस फिर क्या था, मुश्किनी के बच्चों और उनकी औरतों का मज्मा लगने लगा। सब हैसत और तअज़ुब की निगाहों से उन्हें देखते। अबूबक्र (रज़ि.) बड़े ही रोने वाले थे। जब कुआन पढ़ने लगते तो आँसुओं पर क़ाबू न रहता। उस सूरतेहाल से अकाबिरे मुश्किनी कुरैश घबराए और सबने इब्नुद्गिना का बुला

أَنْ أَسِيحَ فِي الْأَرْضِ وَأَعْبُدَ رَبِّي. قَالَ ابْنُ الدُّغْنَةِ: إِنَّ مِثْلَكَ لَا يَخْرُجُ وَلَا يَخْرُجُ. فَإِنَّكَ تَكْسِبُ الْمَغْدُومَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ الْكَلَّ، وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ، وَأَنَا لَكَ جَارٌ. فَارْجِعْ فَأَعْبُدَ رَبَّكَ بِلَادِكَ، فَأَرْتَحِلَ ابْنُ الدُّغْنَةِ فَرَجَعَ مَعَ أَبِي بَكْرٍ فَطَافَ فِي أَشْرَافِ كُفَّارِ قُرَيْشٍ فَقَالَ لَهُمْ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ لَا يَخْرُجُ مِثْلَهُ وَلَا يَخْرُجُ، أَتَخْرَجُونَ رَجُلًا يَكْسِبُ الْمَغْدُومَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ الْكَلَّ، وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ؟ فَأَلْفَذَتْ قُرَيْشٌ جَوَارِ ابْنِ الدُّغْنَةِ، وَأَمَرُوا أَبَا بَكْرٍ، وَقَالُوا لِبْنِ الدُّغْنَةِ: مَرَّ أَبَا بَكْرٍ فَلْيَعْبُدْ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، فَلْيُصَلِّ وَلْيَقْرَأْ مَا شَاءَ وَلَا يُؤْذِنَا بِذَلِكَ، وَلَا يَسْتَعْلِنَ بِهِ، فَإِنَّا قَدْ خَشِينَا أَنْ يَغَيِّرَ أَتْنَاءَنَا وَنِسَاءَنَا. قَالَ: ذَلِكَ ابْنُ الدُّغْنَةِ لِأَبِي بَكْرٍ، فَطَفِقَ أَبُو بَكْرٍ يَعْبُدُ رَبَّهُ فِي دَارِهِ وَلَا يَسْتَعْلِنُ بِالصَّلَاةِ وَلَا الْقِرَاءَةِ فِي غَيْرِ دَارِهِ. ثُمَّ بَدَأَ لِأَبِي بَكْرٍ فَأَتَتْهُ مَسْجِدًا بِنَاءَ دَارِهِ، وَبَرَزَ، فَكَانَ يُصَلِّي فِيهِ وَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ، فَيَقْصِفُ عَلَيْهِ نِسَاءَ الْمُشْرِكِينَ وَأَتْنَاءَهُمْ يَعْجَتُونَ وَيَنْظُرُونَ إِلَيْهِ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَجُلًا بَكَاءً لَا يَمْلِكُ دَمْعُهُ حِينَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ، فَالْزَعُ ذَلِكَ أَشْرَافَ قُرَيْشٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، فَارْتَلَوْا إِلَى ابْنِ الدُّغْنَةِ فَقَدِمَ عَلَيْهِمْ فَقَالُوا لَهُ: إِنَّا

भेजा। इब्नुद्गिना उनके पास आया तो उन सबने कहा कि हमने तो अबूबक्र (रज़ि.) को इसलिये अमान दी थी कि वो अपने रब की इबादत घर के अंदर ही करेंगे। लेकिन वो तो ज्यादाती पर उतर आए और घर के सामने नमाज़ पढ़ने की एक जगह बना ली है। नमाज़ भी सबके सामने ही पढ़ने लगे हैं और तिलावते कुआन भी सबके सामने करने लगे हैं। डर हमे अपनी औलाद और औरतों का है कि कहीं वो फ़ितने में न पड़ जाएँ। इसलिये अब तुम उनके पास जाओ। अगर वो इस पर तैयार हो जाएँ कि अपने रब की इबादत सिर्फ़ अपने घर के अंदर ही करें, फिर तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर उन्हें इससे इंकार है तो तुम उनसे कहो कि वो तुम्हारी अमान तुम्हें वापस कर दें क्योंकि हमें ये पसन्द नहीं कि तुम्हारी अमान को हम तोड़ें। लेकिन इस तरह उन्हें इज़हार और ऐलान भी करने नहीं देंगे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उसके बाद इब्नुद्गिना हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आया और कहा कि आपको मा'लूम है वो शर्त जिस पर मेरा आपसे अहद हुआ था अब या आप इस शर्त की हदूद में रहें या मेरी अमान मुझे वापस कर दें क्योंकि ये मैं पसन्द नहीं करता कि अरब के कानों तक ये बात पहुँचे कि मैंने एक शख्स को अमान दी थी लेकिन वो अमान तोड़ दी गई। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारी अमान तुम्हें वापस करता हूँ। मैं तो बस अपने अल्लाह की अमान से खुश हूँ, रसूले करीम (ﷺ) उन दिनों मक्का ही में मौजूद थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे तुम्हारी हिज्रत का मक़ाम दिखलाया गया है। मैंने एक ख़ारी नमकीन ज़मीन देखी है, जहाँ खजूर के बागात हैं और वो दो पथरीले मैदानों के बीच में है। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसका इज़हार फ़र्मा दिया तो जिन मुसलमानों ने हिज्रत करनी चाही वो पहले ही मदीना हिज्रत कर गए। बल्कि कुछ वो सहाबा भी जो हब्शा हिज्रत करके चले गए थे, वो भी मदीना आ गए। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) भी हिज्रत की तैयारियाँ करने लगे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, जल्दी न करो, उम्मीद है कि मुझे भी जल्दी ही इज़ाज़त मिल जाएगी, हज़रत अबूबक्र

كُنَّا أَجْرًا أَبَا بَكْرٍ عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، وَإِنَّهُ جَاوَزَ ذَلِكَ فَأَتَيْتِي مَسْجِدًا بِنَاءَ دَارِهِ، وَأَعْلَنَ الصَّلَاةَ وَالْقِرَاءَةَ، وَقَدْ خَشِينَا أَنْ يَفْتِنَ أَبْنَاءَنَا وَبِسَاءَعَنَا، فَأَتَيْتِهِ، فَإِنْ أَحَبَّ أَنْ يَقْتَصِرَ عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ فَعَلَّ، وَإِنْ أَيْسَى إِلَّا أَنْ يُعْلَنَ ذَلِكَ فَسَلْتُ أَنْ تَرُدَّ إِلَيْكَ ذِمَّتَكَ، فَإِنَّا كَرِهْنَا أَنْ نُخْلِفَكَ، وَلَكِنَّا مُفْرِقَيْنِ لَأَبِي بَكْرٍ الْإِسْطِغْلَانِ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَأَتَى ابْنُ الدُّغَيْنَةِ أَبَا بَكْرٍ فَقَالَ: قَدْ عَلِمْتُ الَّذِي عَقَدْتَ لَكَ عَلَيْهِ، فَإِنَّا أَنْ يَقْتَصِرَ عَلَى ذَلِكَ، وَإِنَّا أَنْ تَرُدَّ إِلَيْنِي ذِمَّتِي، فَإِنِّي لَا أَحِبُّ أَنْ تَسْمَعَ الْقُرْبُ أَنِّي أَخْفِزْتُ لِي وَجَلَّ عَقْدْتُ لَهُ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَإِنِّي أَرُدُّ إِلَيْكَ جَوَارِكَ وَأَرْضِي بِجَوَارِ اللَّهِ وَرَسُولِ اللَّهِ ﷺ (يَوْمَئِذٍ بِنَكَّةٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ) (لَقَدْ أَرَيْتُ دَارَ هِجْرَتِكُمْ، رَأَيْتُ سَبْعَةَ ذَاتِ نَخْلٍ بَيْنَ بَيْنَ لَابِنَيْنِ، وَهَمَّا الْحَوْرَانِ). فَهَاجَرَ مَنْ هَاجَرَ قَبْلَ الْمَدِينَةِ حِينَ ذَكَرَ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، وَرَجَعَ إِلَى الْمَدِينَةِ بَعْضُ مَنْ كَانَ هَاجَرَ إِلَى أَرْضِ الْحَبَشَةِ. وَتَحَقَّرَ أَبُو بَكْرٍ مُهَاجِرًا، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: عَلَى رِسْلِكَ، فَإِنِّي أَرْجُو أَنْ يُؤْذَنَ لِي. قَالَ أَبُو بَكْرٍ: هَلْ تَرْمُو ذَلِكَ بَابِي أَنْتَ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَحَسَّنَ أَبُو بَكْرٍ نَفْسَهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لِيَصْحَبَهُ، وَغَلَفَ رَاحِلَتَيْنِ كَانَتَا عِنْدَهُ وَزَقَّ السَّمُرَ



(रज़ि.) ने पूछा मेरे माँ-बाप कुर्बान हों आप पर! क्या आपको इसकी उम्मीद है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि हाँ ज़रूर! चुनाँचे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) का इतिज़ार करने लगे, ताकि आपके साथ हिज़रत करें। उनके पास दो ऊँट थे, उन्हें चार महीने तक वो बबूल के पत्ते खिलाते रहे। (राजेअ : 476)

أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ)). [راجع : ٤٧٦]

**तशरीह :** ये हदीष हिज़रत के वाक़िये से मुता'ल्लिक़ बहुत सी मा'लूमात पर मुश्तमिल (आधारित) है, नीज़ इससे हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) का इस्तिक़्लाल (मज़बूती, दृढ़ता) और तवक्क़ल अल्लाहाह (अल्लाह पर भरोसा) भी ज़ाहिर होता है। एक वक़््त था कि इसी शहरे मक्का में (जहाँ बैठकर का'बा मुक़द्दस में ये लाइनें लिख रहा हूँ) आँहज़रत (ﷺ) और आपके जॉनिषारों को इतिहाई ईजाएँ (तकलीफ़ें) दी जा रही थीं। जिनसे मजबूर होकर हज़रत सिद्दीक़े-अक़बर (रज़ि.) ये मुक़द्दस शहर छोड़ने पर मजबूर हो गए थे और हिज़रते हब्शा के इरादे से बरकुल गुमादनामी एक क़रीबी मुकाम मक्का में पहुँचे थे कि आपको क़ारा क़बीले का एक सरदार मालिक बिन दग़िना मिला। क़ारा बनी अह्वन क़बीले की एक शाख़ थी जो तीरंदाज़ी में मशहूर थे। इस क़बीले के सरदार मालिक बिन दग़िना ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को जब हालते सफ़र में कूच करते देखा, तो फ़ौरन उसके मुँह से निकला कि आप जैसा शरीफ़ आदमी जो ग़रीबपरवर हो, सिलारहमी करने वाला हो, जो दूसरों का बोझ अपने सर पर उठा लेता हो और जो मेहमान-नवाज़ी में बेनज़ीर ख़ूबियों का मालिक हो, ऐसा नेकतरीन इंसान हर्गिज़ मक्का से नहीं निकल सकता, न वो निकाला जा सकता है। आप मेरी पनाह में होकर वापस मक्का तशरीफ़ ले चलिये और वहीं अपने रब की इबादत कीजिए। चुनाँचे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उसके साथ मक्का वापस आ गए और इब्ने दग़िना ने मक्का में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के लिये अमन देने का ऐलाने आम कर दिया जिसे क़ुरैश ने भी मंज़ूर कर लिया। मगर ये शर्त ठहराई कि सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) ऐलानिया नमाज़ न पढ़ें, न तिलावते कुर्आन फ़र्माएँ, जिसे सुनकर हमारे नौजवान बिगड़ जाते हैं। कुछ दिनों बाद हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) ने घर के अंदर तंगी महसूस फ़र्माकर बाहर दालान में बैठना और कुर्आन शरीफ़ पढ़ना शुरू फ़र्मा दिया। उसी पर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने शिकवा-शिकायतों का सिलसिला शुरू करके इब्ने दग़िना को बरग़लाया और वो अपनी पनाह वापस लेने पर तैयार हो गया। जिस पर हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) ने साफ़ फ़र्मा दिया कि इज़्नी अरूहुक़ इलैक़ ज़वारिक़ व अरज़ा बिजवारिह्मा हा'यी ऐ इब्ने दग़िना! मैं तुम्हारी पनाह तुमको वापस करता हूँ और अल्लाह पाक की अमान पर राज़ी हूँ। उस वक़््त रसूले करीम (ﷺ) मक्का शरीफ़ ही में मौजूद थे, आपने हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) से मुलाक़ात फ़र्माई तो बतलाया कि जल्दी ही हिज़रत का वाक़िया सामने आने वाला है और अल्लाह ने मुझे तुम्हारी हिज़रत का मुकाम भी दिखला दिया है। जिससे आप (ﷺ) की मुराद मदीना तय्यिबा से थी। इस बशारत को सुनकर सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) ने अपनी ऊँटनियों को सफ़र के लिये तैयार करने-के ख़याल से बबूल के पत्ते बक़़रत खिलाने शुरू कर दिये। ताकि वो तेज़ रफ़्तारी से हिज़रत के वक़््त सफ़र करने के लिये तैयार हो जाएँ। आप चार माह तक लगातार उन सवारियों को सफ़रे हिज़रत के लिये तैयार करते रहे यहाँ तक कि हिज़रत का वक़््त आ गया।

इस हदीष से बाब की मुताबक़त यँ है कि इब्ने दग़िना ने गोया अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ज़मानत की थी, कि उनको माली और बदनी ईजा (आर्थिक व शारीरिक तकलीफ़) न पहुँचे। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, वल्ग़रज़ु मिन हाज़लहदीषि हुना रिज़ा अबी बक़्र बिजवारि इब्निदग़िना व तक्क़रीरुन्नबिय्यि (ﷺ) लहू अला ज़ालिक़ व वजहु दुखूलिही फ़िल्किफ़ालति अन्नहू लाइकुन बिकिफ़ालतिल अब्दानि लिअन्नल्लज़ी अजारहू कअन्नहू तकफ़्फ़ल बिनफ़िसिल्मजारि अल्ला युज़ामु कालहु इब्नुल मुनीर (फ़त्ह) या'नी यहाँ इस हदीष के दर्ज करने से गर्ज़ ये है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) इब्ने दग़िना की पड़ौस और उसकी पनाह देने पर राज़ी हो गए। और आँहज़रत (ﷺ) ने भी इसको प्राबित रखा। और इस हदीष को बाबुल किफ़ाला में दाख़िल करने की वजह ये है कि इससे अब्दान का किफ़ालत में देना जाइज़ प्राबित हुआ। गोया जिसने उनको पनाह दी वो उनकी जान के कफ़ील बन गए कि उनको कोई तकलीफ़ नहीं दी जाएगी।

अल्लाह की शान एक वो वक़्त था और एक वक़्त आज है कि मक्का मुअज़्ज़मा एक अज़ीम इस्लामी मर्कज़ की हैषियत में दुनिया-ए-इस्लाम के सत्तर करोड़ (आज 2011 के दौर में 150 करोड़) ईसानों का किब्ला व का'बा बना हुआ है। जहाँ हर साल बरतक़रीबे हज़्ज 20-25 लाख (आज के दौर में 45-50 लाख) मुसलमान जमा होकर सदाक़ते इस्लाम का ऐलान करते हैं। अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी मदक़ वअदहू व नसर अब्दहू व हज़मल्लअहज़ाब वहदुहू फ़ला शौअ बअदहू

आज 22 ज़िलहिज्ज 1389 हिजरी को बाद मरिब मुताफ़े मुकद्दस में बैठकर ये नोट क़लम के हवाले किया गया। रब्बना तक्बल मित्रा इन्नक अन्तस्समीउल अलीम।

### बाब 5 : क़र्ज़ का बयान

### ०- بَابُ الدِّينِ

2298. हमसे यह्या बिन बुकेर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैब ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) के पास जब किसी ऐसी मय्यत को लाया जाता जिस पर किसी का क़र्ज़ होता तो आप (ﷺ) फ़र्माते कि क्या उसने अपने क़र्ज़ के अदा करने के लिये भी कुछ छोड़ा है? फिर अगर कोई आपको बता देता कि हाँ इतना माल है जिससे क़र्ज़ अदा हो सकता है तो आप (ﷺ) उसकी नमाज़ पढ़ाते, वरना आप (ﷺ) मुसलमानों ही से फ़र्मा देते कि अपने साथी की नमाज़ पढ़ लो। फिर जब अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) पर फ़तह के दरवाज़े खोल दिये तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं मुसलमानों का खुद उनकी ज़ात से भी ज़्यादा मुस्तहिक्क हूँ। इसलिये अब जो भी मुसलमान वफ़ात पा जाए और वो मक्क़रूज़ रहा हो तो उसका क़र्ज़ अदा करना मेरे ज़िम्मे है। और जो मुसलमान माल छोड़कर जाए वो उसके वारिषों का हक्क है।

(दीगर मक्क़ाम : 2398, 2399, 4781, 5371, 6731, 6745, 6763)

۲۲۹۸- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُؤْتِي بِالرَّجُلِ الْمُتَوَلَّى عَلَيْهِ الدِّينَ، فَيَسْأَلُ: هَلْ تَرَكَ لِدِينِهِ فَضْلًا؟ فَإِنْ حَدَّثَ أَنَّهُ تَرَكَ لِدِينِهِ وَلَاءَ صُلَى، وَإِلَّا قَالَ لِلْمُسْلِمِينَ: «صَلُّوا عَلَيَّ صَاحِبَكُمْ». فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْفَتْوحَ قَالَ: «أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ، فَمَنْ تَوَلَّى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَرَكَ دِينًا فَعَلَى قَضَاءِهِ، وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ».

[أطراف: ۱: ۲۳۹۸، ۲۳۹۹، ۴۷۸۱]

[۵۳۷۱، ۶۷۳۱، ۶۷۴۵، ۶۷۶۳]

**तशरीह:** मा'लूम हुआ कि क़र्ज़दार होना बुरी बला है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी वजह से नमाज़ नहीं पढ़ाई, इसीलिये क़र्ज़ से हमेशा बचने की दुआ करना ज़रूरी है। अगर मजबूरन् क़र्ज़ लेना पड़े तो उसकी अदायगी की कामिल निय्यत रखनी चाहिये, इस तरह अल्लाह पाक भी उसकी मदद करेगा और अगर दिल में बेईमानी हो तो फिर अल्लाह भी ऐसे ज़ालिमों की मदद नहीं करता।

## 40. किताबुल वकालत:

# किताब वकालत के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

लुगत में वकालत के मा'नी सुपुर्द करना और शरीअत में वकालत उसको कहते हैं कि आदमी अपना कोई काम किसी के सुपुर्द कर दे बशर्ते कि उस काम में नियाबत और कायम मुकामी हो सकती हो। आज यौमे आशूरा को का'बा शरीफ में बवक्ते तहजुद ये नोट लिखा गया।

### बाब 1 : तक्सीम वगैरह के काम में एक साझी का अपने दूसरे साझी को वकील बना देना

और नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को अपनी कुर्बानी के जानवर में शरीक कर लिया फिर उन्हें हुक्म दिया कि फ़क़ीरों को बांट दें।

2299. हमसे कबीसा बिन ब्रक्बा ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया था कि उन कुर्बानी के जानवरों के झोल और उनके घमड़े को मैं ख़ैरात कर दूँ जिन्हें कुर्बानी किया गया था।

(राजेअ: 1707)

इस रिवायत में अगरचे शिर्कत का ज़िक्र नहीं, मगर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने जाबिर (रज़ि.) की रिवायत की तरफ़ इशारा किया जिसको किताबु शिर्कत में निकाला है। उसमें साफ़ यूँ है कि आप (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को कुर्बानी में शरीक कर लिया था। गोया आँहज़रत ने उन कामों के लिये हज़रत अली (रज़ि.) को दलील बनाया। उसी से वकालत का जवाज़ प्राबित हुआ जो कि बाब का मक़सद है।

2300. हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे लैष ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने, उनसे अबुल ख़ैर ने, और उनसे इब्बबा बिन आमिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कुछ

۱ - بَابُ وَكَالَةِ الشَّرِيكَ الشَّرِيكَ  
فِي الْقِسْمَةِ وَغَيْرِهَا

وَقَدْ أَشْرَكَ النَّبِيُّ ﷺ عَلِيًّا فِي هَذِهِ ثُمَّ  
أَمَرَهُ بِقِسْمَتِهَا

۲۲۹۹ - حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ  
عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ  
الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ  
أَتَصَدَّقَ بِجَلَالِ الْبُذُنِ الَّتِي تُجَرَّتُ  
وَبِجُلُودِهَا)). [رَاجِع: ۱۷۰۷]

۲۳۰۰ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ

बकरियाँ उनके हवाले की थीं ताकि म्हाबा (रज़ि.) में उनको तबस्सीम कर दें। एक बकरी का बच्चा बाक़ी रह गया। जब उसका ज़िक्र उन्होंने औहज़रत (ﷺ) से किया, तो आपने फ़र्माया कि इसकी तू कुबानी कर ले।

(दीगर मक़ाम : 2500, 5547, 5555)

इससे भी वकालत प्राबित हुई और ये भी कि वकील के लिये ज़रूरी है कि कोई बात समझ में न आ सके तो उसकी अपने मुवक़िल से तहक़ीक़ कर ले।

### बाब 1 : अगर कोई मुसलमान दारुल हरब या दारुस्सलाम में किसी हर्बी काफ़िर को अपना वकील बना ले तो जाइज़ है

2301. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे यूसुफ़ बिन माजिशून ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उनसे उनके बाप ने, और स़ालेह के दादा अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने उमय्या बिन ख़लफ़ से ये मुआहिदा अपने और उसके दरम्यान लिखवाया कि वो मेरे बाल-बच्चों या मेरी जायदाद की जो मक्का में है, हिफ़ाज़त करे और मैं उसकी जायदाद की जो मदीना में है, हिफ़ाज़त करूँ। जब मैंने अपना नाम लिखते वक़्त रहमान का ज़िक्र किया तो उसने कहा कि मैं रहमान को क्या जानूँ। तुम अपना वही नाम लिखवाओ जो ज़माना जाहिलियत में था। चुनौचे मैंने अब्दे अम्म लिखवाया। बद्र की लड़ाई के मौक़े पर मैं एक पहाड़ की तरफ़ गया, ताकि लोगों से आँख बचाकर उसकी हिफ़ाज़त कर सकूँ, लेकिन बिलाल (रज़ि.) ने देख लिया और फ़ौरन ही अंसार की एक मज्लिस में आए। उन्होंने मज्लिस वालों से कहा कि ये देखो उमय्या बिन ख़लफ़ (काफ़िर दुश्मने इस्लाम) इधर मौजूद है। अगर उमय्या काफ़िर बच निकला तो मेरी नाकामी होगी। चुनौचे उनके साथ अंसार की एक जमाअत हमारे पीछे हुई। जब मुझे डर हुआ कि अब ये लोग हमें पकड़ लेंगे, तो मैंने उसके एक लड़के को आगे कर दिया, ताकि उसके साथ (आने वाली

غفّة بن عامر رضى الله عنه: أن النبي ﷺ أعطاه غمًا يقسمها على صحابته، فمضى غنود. وذكره النبي ﷺ فقال: ((صحح أنت)).

(أطرافه في : ٢٥٠٠، ٥٥٤٧، ٥٥٥٥).

### ١- بَابُ إِذَا وَكَّلَ الْمُسْلِمُ حَرْبِيًّا

فِي دَارِ الْحَرْبِ

١- أَوْ فِي دَارِ الْإِسْلَامِ - جَارِ

٢٣٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَزِيرِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي يُونُسُ بْنُ الْمَاجِشُونِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَتْ أُمِّيَّةٌ بَنَ خَلْفَ كِتَابًا بَانَ يَحْفَظُنِي فِي صَاعِي بِمَكَّةَ وَأَحْفَظُهُ فِي صَاعِيهِ بِالْمَدِينَةِ، فَلَمَّا ذُكِرْتُ ((الرَّحْمَنُ)) قَالَ: لَا أَعْرِفُ الرَّحْمَنَ، كَاتِبُنِي بِاسْمِكَ الَّذِي كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَكَاتَبْتُهُ (عَبْدُ عَمْرٍو). فَلَمَّا كَانَ فِي يَوْمٍ بَدْرٍ حَرَّخْتُ إِلَى جَبَلٍ لِأَحْزَرَةَ حِينَ نَامَ النَّاسُ، فَأَبْصَرَهُ بِلَالٌ، فَخَرَجَ حَتَّى وَقَفَ عَلَى مَجْلِسٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: أُمِّيَّةٌ بَنَ خَلْفَ، لَا تَجُوزُ إِنْ نَجَا أُمِّيَّةٌ. فَخَرَجَ مَعَهُ فَرِيقٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فِي آثَارِنَا، فَلَمَّا

जमाअत) मशगूल रहे। लेकिन लोगों ने उसे क़त्ल कर दिया और फिर भी वो हमारी ही तरफ़ बढ़ने लगे। उमय्या बहुत भारी जिस्म का था। आखिर जब जमाअते अंसार ने हमें आ लिया तो मैंने उससे कहा कि ज़मीन पर लेट जा। जब वो ज़मीन पर लेट गया तो मैंने अपना जिस्म उसके ऊपर डाल दिया। ताकि लोगों को रोक सकूँ लेकिन लोगों ने मेरे जिस्म के नीचे से उसके जिस्म पर तलवार की ज़रबात लगाई (वार किये) और उसे क़त्ल करके ही छोड़ा। एक सहाबी ने अपनी तलवार से मेरे पाँव को भी ज़ख़मी कर दिया था। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) उसका निशान अपने क़दम के ऊपर हमें दिखाया करते थे। (दीगर मक़ाम : 3971)

عَشِيتُ أَنْ يَنْتَحِقُونَا خَلَفَتْ لَهُمْ ابْنَةُ  
لَأَسْغَلَهُمْ فَقَتَلُوهُ، ثُمَّ أَبَوَا حَتَّى يَبْعُرُونَا -  
وَكَانَ رَجُلًا ثَقِيلًا - فَلَمَّا أَذْرَكُونَا قُلْتُ  
لَهُ : اِبْرُكْ، فَبَرَكَ، فَأَلْقَيْتُ عَلَيْهِ نَفْسِي  
لَأَمْنَعَهُ، فَتَحَلَّلُوهُ بِالسُّوْفِ مِنْ تَحْتِي  
حَتَّى قَتَلُوهُ، وَأَصَابَ أَخَذَهُمْ رَجُلِي  
بِسَيْفِهِ، وَكَانَ غَيْدُ الرُّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ  
يُرِينَا ذَلِكَ الْاَثَرُ فِي ظَهْرِ قَدَمِهِ).

[طرفه في : 3971]

**तशरीह :** उसका नाम अली बिन उमय्या था। उसकी मज़ीद शरह गुज़्व-ए-बद्र के ज़िक्र में आयी। बाब का तर्जुमा इस हदीस से यूँ निकला कि उमय्या काफ़िर हूँ था और दारुल हर्ब या'नी मक्का में मुक़ीम था। अब्दुर्रहमान (रज़ि.) मुसलमान थे लेकिन उन्होंने उसको वकील किया और जब दारुल हर्ब में उसको वकील करना जाइज़ हुआ, तो अगर वो अमान लेकर दारुस्सलाम में आए जब भी उसको वकील करना ऊपर बताए गये तरीके से जाइज़ होगा। इब्ने मुंज़िर ने कहा इस पर उलमा का इत्तिफ़ाक़ है। किसी का उसमें इख़िलाफ़ नहीं कि काफ़िर हूँ मुसलमान को वकील या मुसलमान काफ़िर हूँ को वकील बनाए, दोनों दुरुस्त हैं।

हज़रत बिलाल (रज़ि.) पहले उसी उमय्या के गुलाम थे। उसने आपको बेइतिहा तकलीफ़ें दी थीं, ताकि आप इस्लाम से फिर जाएँ। मगर हज़रत बिलाल (रज़ि.) आखिर तक साबित क़दम रहे यहाँ तक कि बद्र का मअरका (युद्ध) हुआ। जिसमें हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने उस मलज़ून को देखकर अंसार को बुलाया। ताकि उनकी मदद से उसे क़त्ल किया जाए, मगर चूँकि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) की और उस मलज़ून उमय्या की आपसी ख़तो-किताबत थी इसलिये हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने उसे बचाना चाहा और उसके लड़के को अंसार की तरफ़ धकेल दिया। ताकि अंसार उसी के साथ मशगूल रहें। मगर अंसार ने उस लड़के को क़त्ल करके उमय्या पर हमलावर होना चाहा कि हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि.) उसके ऊपर लेट गए। ताकि इस तरह उसे बचा सकें मगर अंसार ने उसे आखिर क़त्ल कर ही दिया और उस झड़प में हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि.) का पाँव भी ज़ख़मी हो गया। जिसके निशानात वो बाद में दिखलाया करते थे।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) इस हदीस पर फ़र्माते हैं, व वज्ह अख़िज़ ज़ुम्पति मिन हाज़ल्हदीसि अन्न अब्दुर्रहमानिब्नि ऑफ़िन व हुव मुस्लिमुन फ़ी दारिल इस्लामि फ़व्वज़ इला उमय्यतब्नि ख़ल्फ़िन व हुव काफ़िरुन फ़ी दारिल हर्बि मा यतअल्लुकु बिउमूरिही वज़ाहिर इत्तिलाउन्नबिय्यि (ﷺ) व लम युकिहु व क़ाल इब्नुल मुन्ज़िर तौकीलुल मुस्लिमि हरबियन मुस्तामिनन व तौकीलुल हरबियिल्मुस्तामिनि मुस्लिमन ला ख़िलाफ़ फ़ी जवाज़िही या'नी इस हदीस से बाब का तर्जुमा इस तरह साबित हुआ कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने जो मुसलमान थे और दारुस्सलाम में थे उन्होंने अपना माल दारुल हर्ब में उमय्या बिन ख़ल्फ़ काफ़िर के हवाले कर दिया और ज़ाहिर है कि ये वाक़िया अहज़रत (ﷺ) के इल्म में था। मगर आप (ﷺ) ने उस पर इन्कार नहीं फ़र्माया। इसलिये इब्ने मुंज़िर ने कहा है कि मुसलमान का किसी अमानतदार हर्बी काफ़िर को वकील बनाना और किसी हर्बी काफ़िर का किसी अमानतदार मुसलमान को अपना वकील बनाना, उनके जवाज़ में कोई इख़िलाफ़ नहीं है।

बाब 3 : सराफ़ी और माप-तौल में वकील करना

3- بَابُ الْوَكَاةِ فِي الصَّرْفِ

और हज़रत इमर (रज़ि.) और अब्दुल्लाह इब्ने इमर (रज़ि.) ने  
सराफ़ी में वकील किया था।

وَالْمِيزَانِ وَقَدْ وَكَّلَ عُمَرُ وَأَبْنُ عُمَرَ  
فِي الصَّرْفِ

सराफ़ी बेअे सरिफ़ को कहते हैं। या'नी रुपयों, अशरफ़ियों को बदलना। हज़रत इमर (रज़ि.) के अशर को सईद बिन मंसूर ने  
और इब्ने इमर (रज़ि.) के अशर को भी उन्होंने वस्ल (मिलान) किया है। हाफ़िज़ ने कहा इसकी इस्नाद सहीह है।

2302, 03. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने  
कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल मजीद  
बिन सहल बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उन्हें सईद बिन  
मुसय्यिब ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और अबू हुरैरह  
(रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख़्स को ख़ैबर का  
तहसीलदार बनाया। वो इम्दा क्रिस्म की ख़जूर लाए तो आपने  
उनसे दरयाफ़्त किया कि क्या ख़ैबर की तमाम ख़जूरें इसी क्रिस्म  
की हैं। उन्होंने कहा कि हम इस तरह की एक साअ ख़जूर (इससे  
घटिया क्रिस्म की) दो साअ ख़जूर के बदल में और दो साअ, तीन  
साअ के बदले में ख़रीदते हैं। आपने उन्हें हिदायत फ़र्माई कि ऐसा  
न किया कर, अल्बत्ता घटिया ख़जूरों को पैसों के बदले बेचकर  
उनसे अच्छी क्रिस्म की ख़जूर ख़रीद सकते हो और तौले जाने की  
चीज़ों में भी आपने यही हुक्म फ़र्माया।

(राजेअ: 2201, 2202)

٢٣٠٢، ٢٣٠٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ  
يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ  
بْنِ سَهْلٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ عَنْ  
سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ  
الْخُدْرِيِّ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا:  
(أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اسْتَفْعَلَ رَجُلًا عَلَى  
خَيْرٍ، فَجَاءَهُمْ بِثَمَرٍ جَنِيْبٍ فَقَالَ: «أَكُلُ  
ثَمَرٍ خَيْرٍ هَكَذَا»)) فَقَالَ: إِنَّا لَنَأْخُذُ  
الصَّاعَ مِنْ هَذَا بِالصَّاعَيْنِ وَالصَّاعَيْنِ  
بِالثَّلَاثَةِ. فَقَالَ: «لَا تَفْعَلْ، بَعِ الْجَمْعَ  
بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ ابْتَغِ بِالدَّرَاهِمِ جَيِّبًا»)). وَقَالَ  
فِي الْمِيزَانِ مِثْلَ ذَلِكَ)).

[راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

हाफ़िज़ ने कहा कि ख़ैबर पर जिसको आमिल मुकरर किया गया था उसका नाम सुवाद बिन राज़िया था। मा'लूम हुआ कि कोई  
जिंस ख़्बाह घटिया ही क्यूँ न हो वज़न में उसे बढ़िया के बराबर ही वज़न करना होगा। वरना वो घटिया चीज़ अलग बेचकर  
उसके पैसों से बढ़िया जिंस ख़रीद ली जाए।

बाब 4 : चराने वाले ने या किसी वकील ने किसी  
बकरी को मरते हुए या किसी चीज़ को ख़राब  
होते देखकर (बकरी को) जिन्ह कर दिया या  
जिस चीज़ के ख़राब हो जाने का डर था उसे ठीक  
कर दिया, इस बारे में क्या हुक्म है?

٤ - بَابُ إِذَا أَبْصَرَ الرَّاعِي أَوْ  
الْوَكِيلُ شَاةً تَمُوتُ أَوْ شَيْئًا يَفْسُدُ  
ذُبِحَ أَصْلَحَ مَا يَخَافُ عَلَيْهِ الْفَسَادُ

**तशरीह:** इब्ने मुनीर ने कहा इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ इस बाब से ये नहीं है कि वो बकरी हलाल होगी या हराम बल्कि  
इसका मतलब ये है कि ऐसी मूरत में चरवाहे पर जिमान न होगा, इसी तरह वकील पर और ये मतलब इस बाब  
की हदीष से निकलता है कि कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने उस लौण्डी से मुवाख़ज़ा नहीं किया बल्कि उसका गोशत खाने में  
तरहुद किया, मगर बाद में रसूले करीम (ﷺ) से पूछकर वो गोशत खाया गया।

2304. हमसे इस्हाक बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने मुअतमिर से सुना, उन्होंने कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने खबर दी, उन्हें नाफेअ ने, उन्होंने इब्ने कअब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो अपने वालिद से बयान करते थे कि उनके पास बकरियों का एक रेवड़ था। जो सलआ पहाड़ी पर चरने जाता था (उन्होंने बयान किया कि) हमारी एक बाँदी ने हमारे ही रेवड़ की एक बकरी को (जबकि वो चर रही थी) देखा कि मरने के करीब है। उसने एक पत्थर तोड़कर उससे उस बकरी को ज़िबह कर दिया। उन्होंने अपने घरवालों से कहा कि जब तक मैं नबी करीम (ﷺ) से इसके बारे में पूछ न लूँ उसका गोश्त न खाना। या (यूँ कहा कि) जब तक मैं किसी को नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में उसके बारे में पूछने के लिये न भेजूँ, चुनाँचे उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से उसके बारे में पूछा, या किसी को (पूछने के लिये) भेजा और नबी करीम (ﷺ) ने उसका गोश्त खाने के लिये हुक्म फ़र्माया। अब्दुल्लाह ने कहा कि मुझे ये बात अजीब मा'लूम हुई कि बाँदी (औरत) होने के बावजूद उसने ज़िबह कर दिया। इस रिवायत की मुताबअत अब्दह ने अब्दुल्लाह के वास्ते से की है। (दीगर मक़ाम : 5501, 5502, 5504)

۲۳۰۴- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ الْمُعْتَمِرَ أَيْبَانًا غَيْدَ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ كَعْبٍ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ كَانَتْ لَهُمْ غَنَمٌ تَرْغَى بَسْلَعٍ فَأَبْصَرَتْ جَارِيَةً لَنَا بِشَاةٍ مِنْ غَنَمِنَا مَوْتًا. فَكَسَرَتْ حَجَرًا فَدَبَحَتْهَا بِهِ، فَقَالَ لَهُمْ: لَا تَأْكُلُوا حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ - أَوْ أَرْسَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مَنْ يَسْأَلُهُ - وَأَنَّهُ سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ ذَلِكَ - أَوْ أَرْسَلَ - فَأَمَرَهُ بِأَكْلِهَا)). قَالَ غَيْدُ اللَّهِ: فَيُعْجِبُنِي أَنَّهَا أَمَةٌ وَأَنَّهَا ذَبَحَتْ. تَأْنَعُ غَيْدَةُ عَنْ غَيْدِ اللَّهِ.

[أطرافه في: ۵۵۰۱، ۵۵۰۲، ۵۵۰۴.]

**तशीह :** सनद में नाफेअ की समाअत इब्ने कअब बिन मालिक (रज़ि.) से मज़कूर है। मज़ी ने अतराफ़ में लिखा है कि इब्ने कअब से मुराद अब्दुल्लाह हैं। लेकिन इब्ने वहब ने इस हदीष को उसामा बिन ज़ैद से रिवायत किया। उन्होंने इब्ने शिहाब से उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन कअब बिन मालिक से। हाफ़िज़ ने कहा कि ज़ाहिर ये है कि वो अब्दुर्रहमान हैं।

इस हदीष से अनेक मसाइल का पुबूत मिलता है कि बवक्ते ज़रूरत मुसलमान औरत का ज़बीहा भी हलाल है और औरत अगर बाँदी हो तब भी उसका ज़बीहा हलाल है और ये भी प्राबित हुआ कि चाकू, छुरी पास न होने की सूरत में तेज़ धार के पत्थर से भी ज़बीहा दुरुस्त है। ये भी प्राबित हुआ कि कोई हलाल जानवर अगर अचानक किसी ह्रादषे का शिकार हो जाए तो मरने से पहले उसका ज़िबह करना ही बेहतर है। ये भी प्राबित हुआ कि किसी मसले की तहक्कीके मज़ीद कर लेना बहरहाल बेहतर है। ये भी ज़ाहिर हुआ कि रेवड़ की बकरियाँ सलआ पहाड़ी पर चराने के लिये एक औरत (बाँदी) भेजी जाया करती थी जिससे बवक्ते ज़रूरत जंगलों में पर्दा और अदब के साथ औरतों का जाना भी प्राबित हुआ। अब्दुल्लाह के क़ौल से मा'लूम हुआ कि उस दौर में भी बाँदी औरत के ज़बीहे पर इन्हारे तअज्जुब किया जाया करता था क्योंकि दस्तूरे आम हर ज़माने में मदौ ही के हाथ से ज़िबह करना है। सलअ पहाड़ी मदीना तय्यिबा के मुत्तसिल दूर तक फैली हुई है। अभी अभी मस्जिद फ़तह व बीरे इम्मान (रज़ि.) वगैरह पर जाना हुआ तो हमारी मोटर सलअ पहाड़ी ही के दामन से गुज़र रही थी। अल्लहुमुलिल्लाह कि उसने महज़ अपने फ़ज़्लो-करम के स़दका में उम्र के इस आखिरी हिस्से में फिर इन मक़ामाते मुक़द्दसा का देखना नज़ीब फ़र्माया, फ़लहुल हम्दु वशशुक़।

## बनाना जाइज है

## جائزة

और अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने अपने वकील को जो उनसे गायब था ये लिखा कि छोटे-बड़े उनके तमाम घरवालों की तरफ से वो सदक-ए-फ़ित्र निकाल दें।

وَكُتِبَ عِنْدَ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ إِلَى قَهْرَمَانِهِ وَهُوَ غَائِبٌ عَنْهُ أَنْ يُزَكِّيَ عَنْ أَهْلِهِ الصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ.

**तशरीह:** इब्ने बत्ताल ने कहा जुम्हूर इलमा का यही कौल है कि जो शख्स शहर में मौजूद हो और उसको कोई बहाना न हो वो भी वकील कर सकता है। लेकिन हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) से मन्कूल है कि बीमारी के उज़र या सफ़र के उज़र से ऐसा करना दुरुस्त है या फ़रीक़े मुकाबिल (की रज़ामन्दी से और इमाम मालिक रह.) ने कहा उस शख्स को वकील करना दुरुस्त नहीं जिसकी फ़रीक़े मुकाबिल से दुश्मनी हो। और तहावी ने जुम्हूर के कौल की ताईद की है और कहा है कि सहाबा (रज़ि.) ने हाज़िर को वकील करना बिला शर्त बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज रखा है और ग़ायब की वकालत वकील के कुबूल पर मौकूफ़ रहेगी बिल इत्तिफ़ाक़ और जब कुबूल पर मौकूफ़ रही तो हाज़िर और ग़ायब दोनों का हुक्म बराबर है। (फ़तहूल बारी)

अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) के अफ़र के बारे में हाफ़िज़ ने ये बयान नहीं किया कि इस अफ़र को किसने निकाला। लेकिन ये कहा कि मुझको वकील का नाम मा'लूम नहीं हुआ।

2305. हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ख़ौरी ने बयान किया, उनसे सलमा बिन कुहैल ने बयान किया, उनसे अबू सलमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) पर एक शख्स का एक ख़ास इम्र का क़ैद क़र्ज़ था। वो शख्स तक्राज़ा करने आया तो आपने (अपने सहाबा (रज़ि.) से) फ़र्माया कि अदा कर दो। सहाबा (रज़ि.) ने उस इम्र का क़ैद तलाश किया लेकिन नहीं मिला। अल्बत्ता उससे ज़्यादा इम्र का (मिल गया) आपने फ़र्माया कि यही उन्हें दे दो। इस पर उस शख्स ने कहा कि आपने मुझे पूरा पूरा हक़ दे दिया। अल्लाह तआला आपको भी पूरा बदला दे। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें सबसे बेहतर वो लोग हैं जो क़र्ज़ ख़ग़ैरह को पूरी तरह अदा कर देते हैं। (दीगर मक़ाम : 2306, 2390, 2392, 2393, 2401, 2606, 2609)

٢٣٠٥ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانٌ عَنْ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ لِرَجُلٍ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ جَمَلٌ سِنَّ مِنَ الْإِبِلِ، فَبِخَاءَهُ يَتَقاضاهُ فَقَالَ: ((أَعْطُوهُ))، فَطَلَبُوا سِنَّهُ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُ إِلَّا سِنَّاً فَوْقَهَا، فَقَالَ: ((أَعْطُوهُ))، فَقَالَ: أَوْفَيْتَنِي أَوْفَى اللَّهُ بِكَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ خِيَارَكُمْ أَحْسَنُكُمْ قَضَاءً)).

[أطرافه في : ٢٣٠٦, ٢٣٩٠, ٢٣٩٢]

[٢٣٩٣, ٢٤٠١, ٢٦٠٦, ٢٦٠٩]

मुस्तहब है कि क़र्ज़ अदा करने वाला क़र्ज़ से बेहतर और ज़्यादा माल क़र्ज़ देने वाले को अदा करे, ताकि उसके एहसान का बदला हो क्योंकि उसने क़र्ज़ हस्ता दिया। और बिला शर्त जो ज़्यादा दिया जा रहा है वो सूद नहीं है बल्कि वो हल जज़ाउल् इहसानि इल्लल इहसान (अर रहमान : 60) के तहत है।

बाब 6 : क़र्ज़ अदा करने के लिये किसी को वकील करना

2306. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सलमा बिन कुहैल ने बयान किया,

٦ - بَابُ الْوَكَاةِ فِي قَضَاءِ الدُّيُونِ

٢٣٠٦ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ قَالَ:



उन्होंने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से सुना और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि एक शख्स नबी करीम (ﷺ) से (अपने कर्ज़ का) तक्राज़ा करने आया और सख्त सुस्त कहने लगा। सहाबा किराम गुस्सा होकर उसकी तरफ बढ़े लेकिन आपने फ़र्माया कि उसे छोड़ दो क्योंकि जिसका किसी पर हक़ हो तो वो कहने-सुनने का भी हक़ रखता है। फिर आपने फ़र्माया, कि उसके कर्ज़ वाले जानवर की इम्र का एक जानवर उसे दे दो। सहाबा किराम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इससे ज़्यादा इम्र का जानवर तो मौजूद है। (लेकिन उस इम्र का नहीं) आपने फ़र्माया कि उसे वही दे दो क्योंकि सबसे अच्छा आदमी वो है जो दूसरों का हक़ पूरी तरह बढ़ा कर दे। (राजेअ: 2305)

سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ يَتَقَاضَاهُ فَأَغْلَطَ، فَهَمَّ بِهِ أَصْحَابُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((دَعُوهُ فَإِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالًا)). ثُمَّ قَالَ: ((أَغْطُوهُ سِتًّا مِثْلَ سِتِّهِ)). قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَا نَجِدُ إِلَّا أَمَثْلَ مِنْ سِتِّهِ، فَقَالَ: ((أَغْطُوهُ، فَإِنَّ مِنْ خَيْرِكُمْ أَحْسَنَكُمْ قَضَاءً)). [راجع: ٢٣٠٥]

**तशरीह:** यहीं से बाब का मतलब निकलता है क्योंकि आपने जो हाज़िर थे दूसरों को ऊँट देने के लिये वकील किया। और जब हाज़िर को वकील करना जाइज़ हुआ हालाँकि वो खुद काम कर सकता है तो गायब को बतरीक़े औला वकील करना जाइज़ होगा। हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने ऐसा ही फ़र्माया है और अल्लामा ऐनी पर तअजुब है कि उन्होंने नाहक़ हाफ़िज़ साहब पर ए' तिराज़ जमाया कि हदीष से गायब की वकीलत नहीं निकलती, अव्वलियत का तो क्या ज़िक्र है। हालाँकि अव्वलियत की वजह खुद हाफ़िज़ साहब के कलाम में मज़कूर है। हाफ़िज़ साहब ने इतिक़ाज़ुल् ए' तिराज़ में कहा जिस शख्स के फ़हम का ये हाल हो उसको ए' तिराज़ करना क्या ज़ेब (शोभा) देता है। नक़ज़ुबिल्लाहि मिनत्तअस्सुबि व सूडल्फ़हमि (वहीदी)

इस हदीष से अख़लाके मुहम्मदी (ﷺ) पर भी रोशनी पड़ती है कि कर्ज़ख़वाह की सख्तगोई का मुत्लक़ अप्रर नहीं लिया, बल्कि वक़्त से पहले ही उसका कर्ज़ अहसन तौर पर अदा करा दिया। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ये अख़लाके हस्ता अत्ता करे। आमीन।

**बाब 7 : अगर कोई चीज़ किसी क़ौम के वकील या सिफ़ारिशी को हिबा की जाए तो दुरुस्त है**

क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने क़बीला हवाज़िन के वफ़द से फ़र्माया, जब उन्होंने ग़नीमत का माल वापस करने के लिये कहा था, तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि, मेरा हिस्सा तुम ले सकते हो।

٧- بَابُ إِذَا وَهَبَ شَيْئًا لَوَكِيلٍ أَوْ شَفِيعٍ قَوْمٍ جَاَزَ

لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لَوْفِدٍ هَوَازِنَ جِئِنَ سَأَلُوهُ السَّغَائِمَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: تَصْنِيبِي لَكُمْ.

**तशरीह:** हाफ़िज़ ने कहा ये हदीष का टुकड़ा है जिसको इब्ने इस्हाक़ ने मगाज़ी में अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि.) से निकाला है। हवाज़िन क़ीर के एक क़बीले का नाम था। इब्ने मुनीर ने कहा बज़ाहिर ये हिबा उन लोगों के लिये था, जो अपनी क़ौम की तरफ़ से वकील व सिफ़ारिशी बनकर आए थे। मगर दरहक़ीक़त सबके लिये हिबा था, जो हाज़िर थे उनके लिये भी और गायब थे उनके लिये भी। ख़त्ताबी ने कहा इससे ये निकलता है कि वकील का इकरार मुवक्क़िल पर नाफ़िज़ होगा और इमाम मालिक (रह.) व शाफ़िई (रह.) ने कहा वकील का इकरार मुवक्क़िल पर नाफ़िज़ होगा। (वहीदी)

इस हदीष से आँहज़रत (ﷺ) के अख़लाके फ़ाज़िला (उच्च चरित्र) और आपकी इंसानपरवरी पर रोशनी पड़ती है कि आपने अज़राहे मेहरबानी जुम्ला सियासी क़ैदियों को मुआफ़ी देकर सबको आज़ाद फ़र्मा दिया। और इस हदीष से सहाबा किराम के इषार और इत्ताअते रसूल (रज़ि.) पर भी रोशनी पड़ती है कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) की मर्जी मा'लूम करके इषार

का बेमिषाल नमूना पेश किया कि उस ज़माने में गुलाम कैदी बड़ी दौलत समझे जाते थे। मगर आँहज़रत (ﷺ) का इशारा पाकर वो सब अपने अपने कैदियों को आज़ाद कर देने के लिये आमादा हो गए और दुनियावी नफ़ा नुक्सान का ज़र्रा बराबर भी खयाल नहीं किया।

हज़रत इमामदुनिया फ़िल हदीष का मंशा—ए—बाब ये है कि जब कोई इज्तिमाई मामला दरपेश हो तो इफ़िरादी बातचीत करने के बजाय इज्तिमाई तौर पर क़ौम के नुमाइन्दे तलब करना और उनसे बातचीत करना मुनासिब है। किसी क़ौम का कोई भी क़बी मसला हो उसे जिम्मेदार नुमाइन्दों के ज़रिये उसे हल करना मुनासिब होगा। वो नुमाइन्दे क़ौमी वकील होंगे और क़ौमी अमानत वग़ैरह हो तो वो ऐसे ही नुमाइन्दों के हवाले की जाएगी।

2307, 08. हमसे सईद बिन इफ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझको लैज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अक्कील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि इर्वा यक्नीन के साथ बयान करते थे, और उन्हें मरवान बिन हुकम और मिस्वर बिन मज़रमा (रज़ि.) ने ख़बर दी थी कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (ग़ज़व—ए—हुनैन के बाद) जब हवाज़िन क़बीले का वफ़द मुसलमान होकर हाज़िर हुआ, तो उन्होंने दरख़्वास्त की कि उनके माल व दौलत और उनके कैदी उन्हें वापस कर दिये जाएँ, उस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि सबसे ज़्यादा सच्ची बात मुझे सबसे ज़्यादा प्यारी है। तुम्हें अपने दो मुतालबों में से सिर्फ़ किसी एक को इख़्तियार करना होगा। या कैदी वापस ले लो, या माल ले लो। मैं इस पर शौर करने की वफ़द को मुहलत देता हूँ। चुनौचे रसूले करीम (ﷺ) ने त्राईफ़ से वापसी के बाद उनका (जिज़राना में) तक्रीबन दस रात तक इंतज़ार किया। फिर जब क़बीला हवाज़िन के वकीलों पर ये बात वाज़ेह हुई कि आप उनके मुतालबे का सिर्फ़ एक ही हिस्सा तस्लीम कर सकते हैं तो उन्होंने कहा कि हम सिर्फ़ अपने उन लोगों को वापस लेना चाहते हैं जो आपकी कैद में हैं। उसके बाद रसूले करीम (ﷺ) ने मुसलमानों से ख़िताब किया। पहले अल्लाह तआला की उसकी शान के मुताबिक़ हम्दो—घ़ना की, फिर फ़र्माया, अम्मा बअद! ये तुम्हारे भाई तौबा करके मुसलमान होकर तुम्हारे पास आए हैं। इसलिये मैंने मुनासिब समझा कि उनके कैदियों को वापस कर दूँ। अब जो शख्स अपने खुशी से ऐसा करना चाहे तो उसे कर गुज़रे। और जो शख्स ये चाहता है कि उसका हिस्सा बाक़ी रहे और हम उसके हिस्से को (क़ीमत की शकल में) उस वक़्त वापस कर दें जब अल्लाह

٢٣٠٧، ٢٣٠٨ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ : حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عَفِيرٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : وَرَعِمَ غُرُوةُ أَنْ مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ وَالْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَامَ حِينَ جَاءَهُ وَقَدْ هَوَازَنَ مُسْلِمِينَ فَسَأَلُوهُ أَنْ يُؤَدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَيِّئُهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((أَحِبُّ الْحَدِيثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ: إِمَّا السَّيِّئَ وَإِمَّا الْمَالَ. وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِهِمْ)) - وَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ انْتَهَرَهُمْ بِضَعِّ عَشْرَةِ لَيْلَةٍ حِينَ قَفَلَ مِنَ الطَّائِفَةِ - فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ غَيْرَ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلَّا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتَارُ سَيِّئًا. فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فِي الْمُسْلِمِينَ فَأَتَانِي عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ : ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ هَؤُلَاءِ قَدْ جَاؤُونَا قَائِلِينَ، وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أُرَدَّ إِلَيْهِمْ سَيِّئُهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطِيبَ بِذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ عَلَى خَطِّهِ حَتَّى نَعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ

तआला (आज के बाद) सबसे पहला माले ग़नीमत कहीं से दिला दे तो उसे भी कर गुजरना चाहिये। ये सुनकर सब लोग बोल पड़े कि हम बख़ूशी रसूले करीम (ﷺ) की खातिर इनके क़ैदियों को छोड़ने के लिये तैयार हैं। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस तरह हम उसकी तमीज़ नहीं कर सकते कि तुममें से किसने इजाज़त दी है और किसने नहीं दी है। इसलिये तुम सब (अपने अपने डेरों में) वापस जाओ और वहाँ से तुम्हारे वकील तुम्हारा फ़ैसला हमारे पास लाएँ। चुनाँचे सब लोग वापस चले गए और उनके सरदारों ने (जो उनके नुमाइन्दे थे) उस मूरतेहाल पर बात की। फिर वो रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको बताया कि सबने बख़ूशी दिल से इजाज़त दे दी है।

(दीगर मक़ाम : 2539, 2540, 2583, 2584, 2607, 2608)

أَوَّلُ مَا يُفِيءُ اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ: قَدْ طَبِينَا ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ. لَهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّا لَا نَذَرِي مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ فِي ذَلِكَ مِنْ لَمْ يَأْذِنْ، فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعُوا إِلَيْنَا عُرْفَاؤَكُمْ أَمْرَكُمْ)). فَرَجَعَ النَّاسُ. فَكَلَّمَهُمْ عُرْفَاؤُهُمْ، ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ قَدْ طَبَّوْا وَادَّوْا)).

[أُطْرَافِهِ فِي : ٢٥٣٩، ٢٥٨٤، ٢٦٠٧]

[٣١٣١، ٤٣١٨، ٧١٧٦]

[أُطْرَافِهِ فِي : ٢٥٤٠، ٢٥٨٣، ٢٦٠٨]

[٣١٣٢، ٤٣١٩، ٧١٧٧]

**तशरीह:** ग़ज़्वए हुनैन फ़तहे मक्का के बाद 8 हिजरी में बाक़ेअ हुआ। कुर्आन मजीद में उसका इन लफ़्ज़ों में ज़िक्र है, वयौम हुनैन इज़ अज़बत्कुम क़त्तुकुम फ़लम् तुग्नि अन्कुम शौअब वज़ाक़त अलैकुमुल् अरज़ु बिमा रहबत धुम्मा वल्लैतुम् मुदबिरीन धुम्मा अन्ज़लल्लाहु सकीनतहु अला रसूलिही (इला आख़िरिल आयत) (अत् तौबा : 25-26)

या'नी हुनैन के दिन भी मैंने तुम्हारी मदद की, जब तुम्हारी क़त्तरत ने तुमको घमण्ड में डाल दिया था। तुम्हारा घमण्ड तुम्हारे कुछ काम न आया और ज़मीन कुशादा होने के बावजूद तुम पर तंग कर दी गई और तुम मुँह फेरकर भागने लगे। मगर अल्लाह पाक ने अपने रसूल (ﷺ) के दिल पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल की और ईमान वालों पर भी, और ऐसा लश्कर नाज़िल किया जिसे तुम नहीं देख रहे थे और काफ़िरों को अल्लाह ने अज़ाब किया और काफ़िरों का यही बदला मुनासिब है।

हुआ ये था कि फ़तहे मक्का के बाद मुसलमानों को ये ख़याल हो गया था कि अरब में हर तरफ़ इस्लामी परचम (झण्डा) लहरा रहा है अब कौन है जो हमारे मुक़ाबले पर आ सके, उनका ये गुरूर अल्लाह को पसन्द नहीं आया। इधर हुनैन के बहादुर लोग जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे इस्लाम के मुक़ाबले पर आ गए और मैदाने जंग में उन्होंने बेतहाशा तीर बरसाने शुरू किये तो मुसलमानों के क्रदम उखड़ गए और वो बड़ी ता'दाद में राहे फ़रार इख़्तियार करने लगे (या'नी भागने लगे)। यहाँ तक कि रसूले करीम (ﷺ) की जुबाने मुबारक से ये इश़ाद हुआ कि अन्नन नबिय्यु ला कज़िब अनब्नु अब्दिल्मुत्तलिब, मैं अल्लाह का सच्चा नबी हूँ जिसमें मुत्तलक़ झूठ नहीं है और मैं अब्दुल मुत्तलिब जैसे नामवर बहादुर कुरैश का बेटा हूँ, पस मैदान छोड़ना मेरा काम नहीं।

इधर भागने वाले सहाबा को जो आवाज़ दी गई तो वो होश में आए और इस तरह जोश व ख़रोश के साथ रसूले करीम (ﷺ) के झण्डे तले जमा होने को वापस लौटे कि मैदाने जंग का नक्शा पलट गया और मुसलमान बड़ी शान के साथ कामयाब हुए और साथ में काफ़ी ता'दाद में लौण्डी, गुलाम और माल हासिल करके लाए। बाद में लड़ने वालों में से हवाज़िन क़बीले ने इस्लाम कुबूल किया और ये लोग रसूले करीम (ﷺ) के पास अपने माल और लौण्डी गुलाम हासिल करने के लिये हाज़िर हुए और त़ाईफ़ में आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमते अक़्दस में शफ़े बारयाबी हासिल किया। आपने फ़र्माया, कि दोनों मुत्तालबात

(माँगों) में से एक पर गौर किया जा सकता है या तो अपने आदमी वापस ले लो या अपने माल हासिल कर लो। आपने उनको जवाब के लिये मुहलत दी। और आप दस रोज तक जिअराना में उनका इतिजारा करते रहे। यही जिअराना नामी मुकाम है। जहाँ से आप उसी अफ़ना में एहराम बाँधकर उमरह के लिये मक्का तशरीफ़ लाए थे। जिअराना इहे हरम से बाहर है।

इस बार के हज्ज 1389 हिजरी में इस हदीष पर पहुँचा तो ख़याल हुआ कि एक बार जिअराना जाकर देखना चाहिये। चुनाँचे जाना हुआ और वहाँ से उमरह का एहराम बाँधकर मक्का शरीफ़ वापसी हुई और उमरह करके एहराम खोल दिया। यहाँ इस मुकाम पर अब अज़ीमुशशान मस्जिद बनी हुई है और पानी वगैरह का मा'कूल इतिजाम है।

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके मुतालबे के सिलसिले में अपने हिस्से के क़ैदी वापस कर दिये और दूसरे तमाम मुसलमानों से भी वापस करा दिये। इस्लाम की यही शान है कि वो हर हाल में इंसानपरवरी को मुकद्दम रखता है, आपने ये मामला क़ौम के वकीलों के ज़रिये तै कराय़ा। उसी से मुज्ताहिदे मुत्तलक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक्क़सदे बाब घाबित हुआ। और ये भी कि इज्तिमाई क़ौमी मुआमलात को हल करने के लिये क़ौम के नुमाइन्दों का होना ज़रूरी है। आजकल की इस्तिलाह (परिभाषा) में उनको चौधरी, पंच या मेम्बर कहते हैं। पुराने ज़माने से दुनिया की हर क़ौम में ऐसे इज्तिमाई निज़ाम चले आ रहे हैं कि उनके चौधरी-पंच जो भी फैसला करेंगे वही क़ौमी फैसला माना जाएगा। इस्लाम ऐसी इज्तिमाई तंज़ीमों का हामी है बशर्त कि मुआमलात हक़ व इंसाफ़ के साथ हल किये जाएँ।

**बाब 8 : एक शख़्स ने किसी दूसरे शख़्स को कुछ देने के लिये वकील किया, लेकिन ये नहीं बताया कि वो कितना दे, और वकील ने लोगों के जाने हुए दस्तूर के मुताबिक़ दे दिया**

2309. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अज़ा बिन अबी रिबाह और कई लोगों ने एक दूसरे की रिवायत में ज़्यादती के साथ। सब रावियों ने इस हदीष को जाबिर (रज़ि.) तक नहीं पहुँचाया बल्कि रावी ने उनमें मुरसलन रिवायत किया। वो हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने बयान किया, मैं रसूले करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में था और मैं एक सुस्त कैंट पर सवार था और वो सबसे आख़िर में रहता था। इतिफ़ाक़ से नबी करीम (ﷺ) का गुज़र मेरी तरफ़ से हुआ तो आपने फ़र्माया, ये कौन साहब हैं? मैंने अर्ज़ किया, जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.)! आपने फ़र्माया, क्या बात हुई, (कि इतने पीछे रह गए हो) मैं बोला कि एक निहायत सुस्त रफ़्तार कैंट पर सवार हूँ। आपने फ़र्माया, तुम्हारे पास कोई छड़ी भी है? मैंने कहा कि जी हाँ है। आपने फ़र्माया कि वो मुझे दे दे। मैंने आपकी ख़िदमत में वो पेश कर दी

۸- بَابُ إِذَا وَكَّلَ رَجُلٌ أَنْ يُعْطِيَ شَيْئًا وَلَمْ يَبَيِّنْ كَمْ يُعْطِي، فَأَعْطَى عَلَى مَا يَتَعَارَفُهُ النَّاسُ

۲۳۰۹- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ حُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رِبَاحٍ وَغَيْرِهِ - يَرْوِدُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ، وَلَمْ يَبْلُغَهُ كُلُّهُمْ، وَجَلَّ وَاحِدٌ مِنْهُمْ - عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي مَقَرٍّ، فَكُنْتُ عَلَى حِمَلٍ ثَقَالٍ إِنَّمَا هُوَ فِي آخِرِ الْقَوْمِ، فَمَرَّ بِي النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ هَذَا؟)) قُلْتُ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ. قَالَ: ((مَا لَكَ؟)) قُلْتُ: إِنِّي عَلَى حِمَلٍ ثَقَالٍ. قَالَ: ((أَمْعَكَ نَصِيبٌ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((أَعْطِيهِ)), فَأَعْطَيْتُهُ فَضَرْبَةً فَوْجَرَةً، فَكَانَ مِنْ ذَلِكَ الْمَكَانِ مِنْ أَوَّلِ الْقَوْمِ.

आपने उस छड़ी से ऊँट को जो मारा और डांटा तो उसके बाद वो सबसे आगे रहने लगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया, किये ऊँट मुझे फ़रोख़्त कर दो। मैंने अर्ज़ किया कियारसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो आप (ﷺ) ही का है, लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ फ़रोख़्त कर दो। ये भी फ़र्माया कि चार दीनार में इसे मैं ख़रीदता हूँ वैसे तुम मदीना तक उसी पर सवार होकर चल सकते हो। फिर जब मदीना के करीब हम पहुँचे तो मैं (दूसरी तरफ़) जाने लगा। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि कहाँ जा रहे हो? मैंने अर्ज़ किया कि मैंने एक बेवा औरत से शादी कर ली है आपने फ़र्माया कि किसी बाकिरा (कुँआरी) से क्यों न की कि तुम भी उससे खेलते और वो भी तुम्हारे साथ खेलती। मैंने अर्ज़ किया कि वालिद शहादत पा चुके हैं और घर में कई बहनें हैं। इसलिये मैंने सोचा कि किसी ऐसी ख़ातून से शादी कर लूँ जो बेवा और तजुबेकार हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तो ठीक है। फिर मदीना पहुँचने के बाद आपने फ़र्माया कि बिलाल! उनकी क़ीमत अदा कर दो और कुछ बढ़ा कर दे दो। चुनाँचे उन्होंने चार दीनार भी दिये, और एक क़ीरात ज़्यादा भी दिया। जाबिर (रज़ि.) कहा करते थे कि नबी करीम (ﷺ) का ये इन्आम मैं अपने से कभी जुदा नहीं करता, चुनाँचे नबी करीम (ﷺ) का वो क़ीरात जाबिर (रज़ि.) हमेशा अपनी थैली में महफूज़ रखा करते थे। (राजेअ: 443)

**तस्रीह:** बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत बिलाल (रज़ि.) को साफ़ ये नहीं फ़र्माया कि इतना ज़्यादा दे दो। मगर हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अपनी राय से ज़माने के रिवाज के मुताबिक़ एक क़ीरात झुकता हुआ सोना ज़्यादा दिया। अल्फ़ाज़ फ़लम यकुनिल्क़ीरातु युफ़ारिकु ज़िराब जाबिरिब्नि अब्दिल्लाहि जाबिर बिन अब्दुल्लाह का तर्जुमा कुछ ने यूँ किया कि उनकी तलवार की न्याम में रहता। इमाम मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि जब हर्रा के दिन यज़ीद की तरफ़ से शाम वालों का बलवा मदीना पर हुआ तो उन्होंने ये सोना हज़रत जाबिर (रज़ि.) से छीन लिया था।

हज़रत जाबिर (रज़ि.) के इस अमल से ये भी प्राबित हुआ कि कोई अपने किसी बुजुर्ग के अतिथे (तोहफ़े) को या उसकी और किसी हकीकी यादगार को तारीख़ी तौर पर अपने पास महफूज़ रखे तो कोई गुनाह नहीं है।

इस हदीष से आयते कुआनी लक़द जाअकुम रसूलुम्पिन अन्फुसिकुम अज़ीज़ुन अलैहि मा अनितुम की तफ़सीर भी समझ में आई कि रसूले करीम (ﷺ) किसी मुसलमान को छोटी से छोटी तकलीफ़ को भी देखना गवारा नहीं फ़र्माते थे। आपने हज़रत जाबिर (रज़ि.) को जब देखा कि वो उस सुस्त ऊँट की वजह से तकलीफ़ महसूस कर रहे हैं तो आपको खुद उसका एहसास हुआ और आपने अल्लाह का नाम लेकर ऊँट पर जो छड़ी मारी उससे वो ऊँट तेज़ रफ़्तार हो गया। और हज़रत जाबिर (रज़ि.) की और ज़्यादा दिलजोई के लिये आपने उसे ख़रीद भी लिया और मदीना तक उस पर सवारी की इजाज़त भी मरहमत फ़र्माई। आपने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से शादी की बाबत भी गुप्तगू फ़र्माई। मा'लूम हुआ कि इस किस्म की गुप्तगू मअयूब (बुरी) नहीं है। हज़रत जाबिर (रज़ि.) के बारे में भी मा'लूम हुआ कि ता'लीम व तर्बियते मुहम्मदी (ﷺ) ने उनके

قَالَ: ((بَعِيْهِ)), فَقُلْتُ: بَلْ هُوَ لَكَ بِأَرْسُولِ اللَّهِ. قَالَ: ((بَلْ بَعِيْهِ قَدْ أَخَذْتُهُ بِأَرْبَعَةِ دَنَانِيْرٍ وَلَكَ ظَهْرُهُ إِلَى الْمَدِيْنَةِ)). فَلَمَّا دَنَوْنَا مِنَ الْمَدِيْنَةِ أَخَذْتُ أَرْجُلَ، قَالَ: ((أَيْنَ تُرِيدُ؟)) قُلْتُ: تَرَوْنِيْ جُنْتُ امْرَأَةٍ قَدْ حَلَا مِنْهَا. قَالَ: ((فَهَلَا جَارِيَةٌ تَلَاعِبُهَا وَتُلَاعِيْكَ؟)) قُلْتُ: إِنَّ أَبِيْ تُوْفِّي وَتَرَكَ نَتَابٍ فَارَدْتُ أَنْ أَنْكِحَ امْرَأَةً قَدْ جَرَّبْتُ حَلَا مِنْهَا، قَالَ: ((فَذَلِكَ)). فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِيْنَةَ قَالَ: ((يَا بِلَالُ اقْضِيْ وَرَدَّةً)). فَأَعْطَاهُ أَرْبَعَةَ دَنَانِيْرٍ وَرَدَّةً قِيْرَاطًا. قَالَ جَابِرٌ: لَا تَعَارَفِيْ زِيَادَةُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَلَمْ يَكُنِ الْقِيْرَاطُ يَقَارِقُ جِرَابَ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ)). [راجع: 443]

अखलाक को किस कदर बुलन्दी बख्श दी थी कि महज बहनों की खिदमत की खातिर उन्होंने बेवा औरत से शादी को तरजीह दी और बाकिरा (कुँआरी) को पसन्द नहीं फर्माया जबकि आम जवानों का प्राकृतिक रुझान ऐसा नहीं होता है। हदीष और बाब में मुताबकत ऊपर बयान की जा चुकी है।

मुस्लिम शरीफ़ किताबुल बुयूअ में ये हदीष मज़ीद तफ़्सीलात के साथ मौजूद है जिस पर अल्लामा नववी (रह.) फ़र्माते हैं, फ़ीहि हदीषु जाबिर व हुव हदीषुन मशहूरून इहतज्ज बिही अहमद व मन वाफ़क़हू फ़ी जवाज़ि बैइहाब्बति व यश्तरितुल बाइउ लिनफ़िसिही रूकूबहा या'नी बयान की गई हदीष के बारे में जाबिर के साथ इमाम अहमद (रह.) कहते हैं कि ये जवाज़ (औचित्य) उस वक़्त है जबकि मसाफ़त (दूरी) करीब हो और ये हदीष इसी मा'नी पर महमूल (इसी अर्थ पर आधारित) है।

इसी हदीष जाबिर के ज़ेल अल्लामा नववी दूसरी जगह फ़र्माते हैं, व इअलम अन्न फ़ी हदीषि जाबिरिन हाज़ा फ़वाइदु क़बीरतुन इहदाहा हाज़िहिल मुअजज़तुजाहिरतु लिरसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़ी इम्बिआषि जमलि जाबिरिन व इस्राइही बअद इअयाइही अफ़्फ़ानियतु जवाज़ु तलबिलबैइ लिमल्लम यअरिज सिलअतन लिलबैइ अफ़्फ़ालिप्रतु जवाज़ुल मुमाकसति फ़िलबैइ अर्राबिअतु इस्तिहबाबु मुवालिरिजुलिल कबीर अस्हाबहू अन अहवालहिम वल इशारतु अलैहिम बिमसालिहिम अल्खामिसतु इस्तिहबाबु निक़ाहिलिबकिर अस्सादिसतु इस्तिहबाबु मुलाअबतिज्जौजैनि अस्साबिअतु फ़ज़ीलतु जाबिरिन फ़ी अन्नहू तरक हज्ज नफ़िसिही मिन निक़ाहिलिबकिर वख़ तार मस्लिहत अख़वातिही बिनिकाहि प्रथिबिन तक्कुम बिमसालिहिन्न अफ़्फ़ामिनतु इस्तिहबाबुल इब्तिदाइ बिल्मस्जिद व सलात रक्अतैनि फ़ीहि इन्दल कुदूमि मिनस्सफ़रि अत्तासिअतु इस्तिहबाबुदलालति अलल्बैरिल मुआशरति इस्तिहबाबु इर्जाहिल्मीजानि फ़ीमा यदफ़उह अल्हादियतु अशरत अन्न उज्रत वजनिप्रुमि अलल्बाइ अफ़्फ़ानितु अशरत अत्तबरूक बिआषारिस्सालिहीन लिक्कौलिही ला तुफ़ारिकुहू अफ़्फ़ालिप्रतु अशरत जवाज़ु तक्कुमि बअज़िल जैशिराजिइन बिज़्जिल अमीरि अर्राबिअतु अशरत जवाज़ुल वक़ालति फ़ी अदाइल हुक्क़ि व नहविहा व फ़ीहि ग़ैर ज़ालिक मिम्मा सबक़ वल्लाहु आलमु. (नववी)

या'नी ये हदीष बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल है। (1) एक तो उसमें ज़ाहिर मुअजज़ा—ए—नववी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अल्लाह के फ़ज़ल से थके हुए ऊँट को चुस्त व चालाक बना दिया और वो ख़ूब चलने लग गया। (2) दूसरा अम्र ये भी प्राबित हुआ कि कोई शख़्स अपना सामान न बेचना चाहे तो भी उससे उसे बेचने के लिये कहा जा सकता है और ये कोई ऐब नहीं है। हज़रत जाबिर (रज़ि.) ऊँट बेचना नहीं चाहते थे, मगर आँहज़रत (ﷺ) ने खुद उनको ये ऊँट बेच देने के लिये फ़र्माया। (3) तीसरे बेअ में शर्त करने का जवाज़ भी प्राबित हुआ। (4) चौथे ये इस्तिहबाब प्राबित हुआ कि बड़ा आदमी अपने साथियों से उनके ख़ानगी अहवाल (पारिवारिक मामलों में) पूछताछ कर सकता है और उनके वक़्त की ज़रूरत के हिसाब से उनके फ़ायदे के लिये मश्विरा भी दे सकता है। (5) पाँचवाँ कुँवारी औरत से शादी करने का इस्तिहबाब प्राबित हुआ। (6) छठे मियाँ बीवी का ख़ुश-तब़्आ (हंसी-मज़ाक़) करने का जवाज़ प्राबित हुआ। (7) सातवाँ हज़रत जाबिर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई कि उन्होंने अपनी बहनों के फ़ायदे के लिये अपनी शादी के लिये एक बेवा औरत को पसन्द किया। (8) आठवाँ ये अम्र भी प्राबित हुआ कि सफ़र से वापसी पर पहले मस्जिद में जाना और दो रक्अत शुक्राना की अदा करना मुस्तहब है। (9) नवाँ अम्र ये प्राबित हुआ कि नेक काम करने के लिये रबत दिलाना भी मुस्तहब है। (10) दसवाँ अम्र ये प्राबित हुआ कि किसी हक़ का हक़ अदा करते वक़्त तराजू को झुकाकर ज़्यादा (या बसूरते नक़द कुछ ज़्यादा) देना मुस्तहब है। (11) ग्यारहवाँ अम्र ये प्राबित हुआ कि तौलने वाले की उज्रत बेचने वाले के सर है। (12) बारहवाँ अम्र ये प्राबित हुआ कि आप़ारे स़ालेहीन को तबरूक के तौर पर महफूज़ रखना जैसा कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) के अम्र के मुताबिक़ ज़्यादा पाया हुआ सोना अपने पास अस्से दराज़ (लम्बी अवधि) तक महफूज़ रखा। (13) तेरहवाँ अम्र ये भी प्राबित हुआ कि कुछ इस्लामी लश्कर को मुक़द्दम रखा जा सकता है जो अमीर की इजाज़त से मुराजअत करने वाले हों। (14) चौदहवाँ अम्र हुक्क़ अदा करने के सिलसिले में वक़ालत करने का जवाज़ प्राबित हुआ। और भी कई उमूर प्राबित हुए जो पीछे गुज़र चुके हैं।

आपारे सालेहीन को तबर्क के तौर पर अपने पास महफूज रखना, ये नाजुक मामला है। पहले तो ये ज़रूरी है कि वो हक़ीक़तन सहीह तौर पर आपारे सालेहीन हों, जैसा कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) को यकीनन मा'लूम था कि ये क़ीरात मुझको आँहज़रत (ﷺ) ने खुद अज़राहे करम ज़्यादा दिलाये हैं। ऐसा पक्का यकीन हासिल होना ज़रूरी है वरना ग़ैर प्राबितशुदा चीज़ों को सालेहीन की तरफ़ मन्सूब करके उनको बतौर तबर्क रखना ये किज़्ब (झूठ) और इफ़्तिरा भी बन सकता है। अक़सर मुक़ामात पर देखा गया है कि लोगों ने कुछ बाल महफूज करके उनको आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ मन्सूब कर दिया है। फिर उनसे तबर्क हासिल करना शिर्क की हदूद में दाख़िल हो गया है। ऐसी मस्कूक (संदिग्ध) चीज़ों को आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ मन्सूब करना बड़ी ज़िम्मेदारी है। अगर वो हक़ीक़त के खिलाफ़ हैं तो ये मन्सूब करने वाले ज़िन्दा दोज़ख़ी बन जाते हैं क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसा इफ़्तिरा करने वालों को ज़िन्दा दोज़ख़ी बतलाया है। इसके विपरीत अगर ऐसी चीज़ तारीख़ (इतिहास) से सहीह प्राबित है तो उसे चूमना-चाटना, उसके सामने सर झुकाना, उस पर नज़्र व नियाज़ चढ़ाना, उसकी तअज़ीम में हद्दे-ए' तिलाक से आगे गुज़र जाना ये सारे काम एक मुसलमान को शिर्क जैसे क़बीह गुनाह में दाख़िल कर देते हैं। हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बिला शुब्हा उसको एक तारीख़ी यादगार के तौर पर अपने पास रखा। मगर ये प्राबित नहीं कि उसको चूमा चाटा हो, उसे नज़्र व नियाज़ का हक़दार समझा हो। उस पर फूल डाले हों या उसको वसीला बनाया हो। उनमें से कोई भी अम्मर् हर्गिज़ हर्गिज़ हज़रत जाबिर (रज़ि.) से प्राबित नहीं है। पस इस बारे में बहुत सोच-समझ की ज़रूरत है। शिर्क एक बदतरीन गुनाह है और बारीक भी इस क़दर कि कितने ही दीनदारी का दा'वा करने वाले उमूरे शिर्किया के मुर्तकिब होकर अल्लाह के नज़दीक दोज़ख़ में दाख़िल होने के मुस्तहक़ बन जाते हैं। अल्लाह पाक हर मुसलमान को हर किस्म के शिर्कें ख़फ़ी व ज़ली (छुपे व ज़ाहिर शिर्क), सग़ीर व कबीर (छोटे व बड़े शिर्क) से महफूज रखे, आमीन बुम्म आमीन।

## बाब 9 : कोई औरत अपना निकाह करने के लिये बादशाह को वकील कर दे

## ٩- بَابُ وَكَالَةِ الْمَرْأَةِ الْإِمَامَ فِي النِّكَاحِ

2310. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम ने, उन्हें सहल बिन सअद (रज़ि.) ने उन्होंने बयान किया कि एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने खुद को आपको बख़श दिया। इस पर एक सहाबी ने कहा कि आप मेरा इनसे निकाह कर दीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हारा निकाह इनसे उस मेहर के साथ किया जो तुम्हें कुर्आन याद है।

(दीगर अतराफ़ : 5029, 5030, 5087, 5121, 5126, 5132, 5133, 5135)

٢٣١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: جَاءَتْ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي قَدْ وَهَبْتُ لَكَ مِنْ نَفْسِي. فَقَالَ رَجُلٌ: زَوَّجْنَاهَا. قَالَ: ((قَدْ زَوَّجْنَاكَهَا بِمَا مَلَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).

(أطرافه في : ٥٠٢٩، ٥٠٣٠، ٥٠٨٧،

٥١٢١، ٥١٢٦، ٥١٣٢، ٥١٣٥)

ये वकालत इमाम बुखारी (रह.) ने औरत के उस क़ौल से निकाली कि मैंने अपनी जान आपको बख़श दी। दाऊदी ने कहा हदीष में वकालत का ज़िक्र नहीं है। और आँहज़रत (ﷺ) हर मोमिन और मोमिना के वली हैं ब-मौजिबे आयत अन्नबिय्यु औला बिल्मूमिनीन अल्लख़ और इसी विलायत की वजह से आपने उस औरत का निकाह कर दिया। इस हदीष से ये भी प्राबित होता है कि महर में ता'लीमे कुर्आन भी दाख़िल हो सकती है और कुछ उसके पास महर पेश करने के लिये न हो। हज़रत मूसा (रज़ि.) ने हज़रत शुऐब (रज़ि.) की बेटी के महर में अपनी जान को दस साल के लिये बतौर ख़ादिम पेश किया था। जैसा कि कुर्आन मजीद में मज़कूर है।

बाब 10 किसी ने एक शख्स को वकील बनाया

फिर वकील ने (मामले में) कोई चीज (खुद अपनी राय से) छोड़ दी, और बाद में खबर होने पर मुवक्किल ने उसकी इजाजत दे दी तो जाइज है। इसी तरह अगर मुकर्रर मुहत तक के लिये कर्ज दे दिया तो ये भी जाइज है।

2311. और इब्मान बिन हैशम अबू अमर ने बयान किया कि हमसे अफ ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे रमजान की जकात की हिफाजत पर मुकर्रर फ़र्माया। (रात में) एक शख्स अथानक मेरे पास आया और अनाज में से लप भर-भरकर उठाने लगा मैंने उसे पकड़ लिया और कहा कि क्रसम अल्लाह की! मैं तुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में ले चलूंगा। उस पर उसने कहा कि अल्लाह की क्रसम! मैं बहुत मुहताज हूँ। मेरे बाल-बच्चे हैं और मैं सख्त ज़रूरतमंद हूँ। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा (उसके इज़हारे मज़रत पर) मैंने उसे छोड़ दिया। सुबह हुई तो रसूले करीम (ﷺ) ने मुझसे पूछा, ऐ अबू हुरैरह (रज़ि.) गुज़िश्ता रात तुम्हारे क़ैदी ने क्या किया था? मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ) उसने सख्त ज़रूरत और बाल-बच्चों का रोना रोया, इसलिये मुझे उस पर रहम आ गया और मैंने उसे छोड़ दिया। आपने फ़र्माया कि वो तुमसे झूठ बोलकर गया है। अभी वो फिर आएगा। रसूले करीम (ﷺ) के इस फ़र्मान की वजह से मुझे यकीन था कि वो फिर ज़रूर आएगा। इसलिये मैं उसकी ताक में लगा रहा और जब वो दूसरी रात आकर फिर गल्ला उठाने लगा तो मैंने उसे फिर पकड़ लिया और कहा कि तुझे रसूले करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर करूँगा। लेकिन अब भी उसकी वही इल्तिजा थी कि मुझे छोड़ दो, मैं मुहताज हूँ। बाल-बच्चों का बोझ मेरे सर पर है। अब मैं कभी नहीं आऊँगा, मुझे रहम आ गया और मैंने उसे फिर छोड़ दिया। सुबह हुई तो रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अबू हुरैरह (रज़ि.)! तुम्हारे क़ैदी ने क्या किया? मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उसने फिर उसी सख्त ज़रूरत और बाल-बच्चों का रोना रोया, जिस पर मुझे रहम आ गया इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया।

١٠- بَابُ إِذَا وَكَّلَ رَجُلًا قَرَرًا الْوَكِيلُ شَيْئًا فَأَجَارَهُ الْمُوَكَّلُ فَهُوَ جَائِزٌ وَإِنْ أَقْرَضَهُ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى جَازَ

٢٣١١- وَقَالَ عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ أَبُو عُمَرُو حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((وَكَّلَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِحِفْظِ زَكَاةِ رَمَضَانَ، فَأَتَانِي آتٌ فَجَعَلَ يَحْتَرُ مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ وَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، إِنِّي مُحْتَاجٌ، وَعَلَيَّ عِيَالٌ، وَلِي حَاجَةٌ شَدِيدَةٌ. قَالَ: فَخَلَيْتُ عَنْهُ. فَاصْبَحْتُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ مَا فَعَلَ أَمِيرُكَ الْبَارِحَةَ؟)) قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ شَكَا حَاجَةً شَدِيدَةً وَعِيَالًا، فَرَحِمْتُهُ فَخَلَيْتُ سَبِيلَهُ. قَالَ: ((أَمَّا إِنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ، وَسَيَعُودُ)). فَقُلْتُ أَنَّهُ سَيَعُودُ لِقَوْلِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِنَّهُ سَيَعُودُ، فَرَضَدْتُهُ، فَجَاءَ يَحْتَرُ مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لَا زِفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. قَالَ: دَعَوْنِي فَإِنِّي مُحْتَاجٌ، وَعَلَيَّ عِيَالٌ، لَا أَعُودُ. فَرَحِمْتُهُ فَخَلَيْتُ سَبِيلَهُ. فَاصْبَحْتُ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ مَا فَعَلَ أَمِيرُكَ؟)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ شَكَا حَاجَةً شَدِيدَةً وَعِيَالًا، فَرَحِمْتُهُ فَخَلَيْتُ سَبِيلَهُ. قَالَ:



आप (ﷺ) ने इस बार भी यही फ़र्माया कि वो तुमसे झूठ बोलकर गया है और वो फिर आएगा। तीसरी बार फिर मैं उसके इतिज़ार में था कि उसने फिर तीसरी रात आकर अनाज उठाना शुरू किया, तो मैंने उसे पकड़ लिया, और कहा कि तुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में पहुँचाना अब ज़रूरी हो गया है। ये तीसरा मौक़ा है, हर बार तुम यक़ीन दिलाते रहे कि फिर नहीं आओगे। लेकिन तुम बाज़ नहीं आए। उसने कहा कि इस बार मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हें ऐसे चन्द कलिमात सिखा दूँगा जिससे अल्लाह तआला तुम्हें फ़ायदा पहुँचाएगा। मैंने पूछा, वो कलिमात क्या हैं? उसने कहा कि, जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने लगे तो आयतल कुर्सी (अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल ह्य्युल क़य्यूम) पूरी पढ़ लिया करो। एक निगरी फ़रिश्ता अल्लाह तआला की तरफ़ से बराबर तुम्हारी हिफ़ाज़त करता रहेगा। और सुबह तक शैतान तुम्हारे पास कभी नहीं आ सकेगा। इस बार भी फिर मैंने उसे छोड़ दिया। सुबह हुई तो रसूले करीम (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, गुज़िश्ता रात तुम्हारे कैदी ने तुमसे क्या मामला किया? मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उसने मुझे चन्द कलिमात सिखाए और यक़ीन दिलाया कि अल्लाह तआला मुझे इससे फ़ायदा पहुँचाएगा। इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि वो कलिमात क्या है? मैंने अर्ज किया कि उसने बताया था कि जब बिस्तर पर लेटो तो आयतल कुर्सी पढ़ लो, शुरू (अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल ह्य्युल क़य्यूम) से आख़िर तक। उसने मुझसे ये भी कहा कि अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम पर (इसके पढ़ने से) एक निगरी फ़रिश्ता मुक़रर रहेगा और सुबह तक शैतान तुम्हारे क़रीब भी नहीं आ सकेगा। सहाबा ख़ैर को सबसे आगे बढ़कर लेने वाले थे। नबी करीम (ﷺ) ने (उनकी ये बात सुनकर) फ़र्माया कि अगरचे वो (खुद तो) झूठा था लेकिन तुमसे ये बात सच कह गया है। ऐ अबू हुदैरह (रज़ि.)! तुमको ये भी मा'लूम है कि तीन रातों से तुम्हारा मामला किससे था? उन्होंने कहा कि नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो शैतान था।

(दीगर मक़ाम : 3275, 5010)

((أَمَّا أَنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ، وَسَيَعُودُ)). فَرَصَدَتْهُ النَّائِةُ، فَبَجَاءَ يَحْتَظِرُ مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذَتْهُ فَقُلْتُ: لَأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهَذَا آخِرُ ثَلَاثِ مَرَاتٍ، إِنَّكَ تَرْغَبُ لَا تَعُودُ ثُمَّ نَعُودُ. قَالَ: دَغِبِي أَعْلَمُكَ كَلِمَاتٍ يَنْفَعُكَ اللَّهُ بِهَا. قُلْتُ: مَا هُنَّ قَالَ: إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَأَقْرَأْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ ﷻ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﷻ حَتَّى تَخْتِمَ الْآيَةَ فَإِنَّكَ لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللَّهِ حَافِظٌ، وَلَا يَفْرِيقُكَ شَيْطَانٌ حَتَّى تُصْبِحَ. فَخَلَيْتُ سَبِيلَهُ. فَأَصْبَحْتُ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَا فَعَلَ أَمِيرُكَ الْبَارِحَةَ؟)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ رَغِمَ أَنَّهُ يُعَلِّمُنِي كَلِمَاتٍ يَنْفَعُنِي اللَّهُ بِهَا فَخَلَيْتُ سَبِيلَهُ. قَالَ: ((مَا هِيَ؟)) قُلْتُ: قَالَ لِي إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَأَقْرَأْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ مِنْ أَوَّلِهَا حَتَّى تَخْتِمَ ﷻ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﷻ وَقَالَ لِي: لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللَّهِ حَافِظٌ وَلَا يَفْرِيقُكَ شَيْطَانٌ حَتَّى تُصْبِحَ، وَكَانُوا آخِرَ مَنْ شِئَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَّا إِنَّهُ قَدْ صَدَّقَكَ وَهُوَ كَذُوبٌ. تَعْلَمُ مَنْ تُخَاطَبُ مِنْهُ ثَلَاثَ لَيَالٍ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟)) قَالَ: لَا. قَالَ: ((ذَلِكَ شَيْطَانٌ)). [طرقاه في : 3275, 5010].

**तशरीह :** एक रिवायत में यूँ है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने सद्के की खजूर में हाथ का निशान देखा था। जैसे उसमें से कोई उठाकर ले गया हो। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से उसकी शिकायत की। आपने फ़र्माया क्या तू उसको पकड़ना चाहता है? तो यूँ कह सुन्हान मन सख़्खरक लिमुहम्मद अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने यही कहा तो क्या देखता हूँ कि वो मेरे सामने खड़ा हुआ है, मैंने उसको पकड़ लिया। (वहीदी)

मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) की रिवायत में इतना ज़्यादा है और आमनरसूल से अख़ीर सूरह तक। उसमें यूँ है कि सद्के की खजूर आँहज़रत (ﷺ) ने मेरी हिफ़ाज़त में दी थी। मैंने देखा कि रोज़ बरोज़ कम हो रही है तो मैंने आँहज़रत (ﷺ) से उसका शिकवा किया, आपने फ़र्माया, ये शैतान का काम है। फिर मैं उसको ताकता रहा, वो हाथी की सूत में नमूदार हुआ। जब दरवाज़े के करीब पहुँचा तो दरारों में से सूत बदलकर अंदर चला आया और खजूरों के पास आकर उसके लुकमे लगाने लगा। मैंने अपने कपड़े मज़बूत बाँधे और उसकी कमर पकड़ी, मैंने कहा कि अल्लाह के दुश्मन तू ने सद्के की खजूर उड़ा दी। दूसरे लोग तुझसे ज़्यादा इसके हक़दार थे। मैं तो तुझे पकड़कर आँहज़रत (ﷺ) के पास ले जाऊँगा वहाँ तेरी ख़ूब फ़ज़ीहत होगी।

एक रिवायत में यूँ है कि मैंने पूछा तू मेरे घर में खजूर खाने के लिये क्या घुसा। कहने लगा मैं बूढ़ा, मुहताज, अयालदार (बीवी-बच्चों वाला) हूँ और दूर से आ रहा हूँ। अगर मुझे कहीं और कुछ मिल जाता तो मैं तेरे पास न आता और हम तुम्हारे ही शहर में रहा करते थे यहाँ तक कि तुम्हारे पैगम्बर साहब हुए। जब उन पर ये दो आयतें उतरतीं तो हम भाग गये। अगर तू मुझको छोड़ दे तो मैं वो दो आयतें तुझको बता दूँगा। मैंने कहा अच्छा! फिर उसने आयतल कुर्सी और आमनरसूल से सूरह बकरः के अख़ीर तक बतलाई। (फ़तह)

निसाई की रिवायत में उबय बिन कअब (रज़ि.) से यूँ रिवायत है। मेरे पास खजूर का एक थैला था उसमें से रोज़ खजूर कम हो रही थी। एक दिन मैंने देखा कि एक जवान ख़ूबसूरत लड़का वहाँ मौजूद है। मैंने पूछा तू आदमी है या जिन्न है। वो कहने लगा मैं जिन्न हूँ। मैंने उससे पूछा, हम तुमसे कैसे बचें? उसने कहा आयतल कुर्सी पढ़कर। फिर आँहज़रत (ﷺ) से उसका ज़िक्र आया। आपने फ़र्माया, उस ख़बीषन ने सच कहा। मा' लूम हुआ जिस खाने पर अल्लाह का नाम न लिया जाए उसमें शैतान शरीक हो जाते हैं और शैतान का देखना मुम्किन है जब वो अपनी ख़ल्की सूत बदल ले। (वहीदी)

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व फिलहदीषि मिनल्फ़वाइदि गैर मा तक्रहम अन्नशशैतान क्रद यअलमु मा यन्तफ़िड बिहिल्मूमिनु व अन्नलहिकमत क्रद यतलक्राहल फ़ाज़िरु फ़ला यन्तफ़िड बिहा व त्रज़ज़ अन्हु फ़यन्तफ़िड बिहा व अन्नशख़स क्रद यअलमुशशै व ला यअमलु बिही व इन्नल काफ़िर क्रद युसहिकु बिबअज़िम्मा युसहिकु बिहिल्मूमिनु व ला यकूनु बिजालिक मूमिनन व बिअन्नल कज़ाब क्रद युसहिकु व बिअन्नशशैतान मिन शानिही अय्युकज़ब व इन्न मन उक्कीम फ़ी हिफ़िज़ शैइन सुम्मिय वकीलन व इन्नल जिन्न याकुलून मिन तआमिल इन्सि लाकिन्न बिशशर्तिल मज़कूरति व इन्नहुम यतकल्लमून बिकलामिल इन्सि व इन्नहुम यस्किून व यख़दऊन व फ़ीहि फ़ज़्लु आयतिल कुर्सी व फ़ज़्लु आख़िर सूरतिल बक्ररति व इन्नल जिन्न यूसीबून मिनत्तआमिल्लज़ी ला यज़कूरुल मल्लाहि अलैहि. (फ़तहल बारी)

या'नी इस हदीष में बहुत से फ़वाइद हैं। (1) शैतान ऐसी बातें भी जानता है जिनसे मोमिन फ़ायदा उठा सकते हैं और कभी-कभी हिकमत की बातें फ़ाज़िर के मुँह से भी निकल सकती है। वो खुद तो उनसे फ़ायदा नहीं उठाता मगर दूसरे उससे सबक़ हासिल कर सकते हैं और नफ़ा हासिल कर सकते हैं। (2) कुछ आदमी कुछ अच्छी बात जानते हैं, मगर खुद उस पर अमल नहीं करते। (3) कुछ काफ़िर ऐसी क़ाबिले तस्दीक़ बात कह देते हैं जैसी अहले इमान कहते हैं, मगर वो काफ़िर उसकी वजह से मोमिन नहीं हो जाते। (4) कभी-कभी झूठों की तस्दीक़ की जा सकती है। (5) शैतान की नियति ही ये है कि उसे झूठा कहा जाए। (6) जिसे किसी चीज़ की हिफ़ाज़त पर मुक़र्र किया जाए उसे वकील कहा जाता है। (7) ये कि जिन्नात इंसानी ग़िज़ाएँ खाते हैं और वो इंसानों के सामने ज़ाहिर भी हो सकते हैं। लेकिन इस शर्त पर कि जो मज़कूर हुई। (8) वो इंसानी जुबानों में कलाम भी कर सकते हैं। (9) वो चोरी भी कर सकते हैं और धोखेबाज़ी भी कर सकते हैं। (10) और इसमें आयतल कुर्सी और आख़िर सूरह बकरः की भी फ़ज़ीलत है। (11) ये भी कि शैतान उस ग़िज़ा को हासिल कर लेते हैं जिस पर अल्लाह

का नाम नहीं लिया जाता।

आज 29 जिल्हज 1389 हिजरी में बवक्ते मरिब मकामे इब्राहीम के पास ये नोट लिखा गया। नीज़ आज 5 सफ़र 1390 हिजरी को मदीना तय्यिबा हरमे नबवी में बवक्ते फ़ज़्र उस पर नज़रेषानी की गई। रब्बना तक्रब्बल मित्रा वफ़िरलना इन नसीना औ अख़्ताना, आमीन!

**बाब 11 : अगर वकील कोई ऐसी बेअ करे जो फ़ासिद हो तो वो बेअ वापस की जाएगी**

۱۱- بَابُ إِذَا بَاعَ الْوَكِيلُ شَيْئًا فَاسِدًا فَبَيْعُهُ مَرْدُودٌ

बाब की इस हदीष में उसकी सराहत नहीं कि वो वापस होगी। मगर इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है। जिसको इमाम मुस्लिम ने निकाला उसमें यूँ है, ये सूद है इसको फेर दे। (वहीदी)

23 12. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सलालेह ने बयान किया, उनसे मुआविया बिन सलाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़भीर ने बयान किया, कि मैंने उक्ब़ा बिन अब्दुल ग़ाफ़िर से सुना और उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि बिलाल (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बरनी ख़जूर (ख़जूर की एक इम्दा किस्म) लेकर आए। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कहाँ से लाए हो? उन्होंने कहा हमारे पास ख़राब ख़जूर थी। उसकी दो स़ाअ, इसकी एक स़ाअ के बदले में देकर हम उसे लाए हैं। ताकि हम ये आपको खिला सकें आपने फ़र्माया। तौबा! तौबा! ये तो सूद है, बिलकुल सूद। ऐसा न करो अल्बत्ता (अच्छी ख़जूर) ख़रीदने का इरादा हो तो (ख़राब) ख़जूर बेचकर (उसकी क़ीमत से) इम्दा ख़रीदा कर।

۲۳۱۲- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ هُوَ ابْنُ سَلَامٍ عَنْ يَحْيَى قَالَ: سَمِعْتُ عُقْبَةَ بْنَ عَبْدِ الْغَافِرِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((جَاءَ بِلَالٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِرَبْنِي، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((مِنْ أَيْنَ هَذَا؟)) قَالَ بِلَالٌ: كَانَ عِنْدَنَا تَمْرٌ رَدِيءٌ، فَبَيْعْتُ مِنْهُ صَاعَيْنِ بِصَاعٍ يُطْعَمُ السَّبِيءُ ﷺ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عِنْدَ ذَلِكَ: ((أَوْهْ أَوْهْ، عَيْنُ الرَّبَا، عَيْنُ الرَّبَا لَا تَفْعَلْ، وَلَكِنْ إِذَا أَرَدْتَ أَنْ تَشْتَرِيَ فَبِعِ التَّمْرَ بِبَيْعِ آخَرَ ثُمَّ اشْتَرِ بِهِ)).

**तशरीह:** मा' लूम हुआ कि एक ही जिस में कमी व बेशी से लेन-देन सूद में दाख़िल है। उसकी सूत ये बतलाई गई कि घटिया जिंस को अलग नक़द बेचकर उसके रुपयों से अच्छी जिंस ख़रीद ली जाए। हज़रत बिलाल (रज़ि.) की ये बेअ फ़ासिद थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे वापस करा दिया जैसा कि मुस्लिम (रह.) की रिवायत में है।

हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने मुस्लिम शरीफ़ की जिस रिवायत की तरफ़ इशारा किया है। वो बाबुरिबा में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ही की रिवायत से मन्कूल है। जिसमें ये अल्फ़ाज़ हैं, फ़क्राल रसूलुल्लाहि (ﷺ) हाज़िहिरिबा फ़रूदूह या' नी ये सूद है लिहज़ा इसको वापस कर दो। इस पर अल्लामा नववी (रह.) लिखते हैं, हाज़ा दलीलुन अला अन्नल मक्बूज़ बैइन फ़ासिदुन यजिबु रदूह अला बाइएही व इज़ा रदूह इस्तरदह़्षमन फ़इन कील फ़लम यज़्कुर फिलहदीषिस्साबिक़ अन्नहू (ﷺ) अमर बिरदिही फ़ल्जवाब अन्नज़ाहिर इन्नहा कज़िय्यतुन वाहिदतुन व अमर फ़ीहा बिरदिही फ़बअज़ुर्ज़ुवाति हफ़िज़ ज़ालिक व बअज़ुहुम लम यहफ़ज़हू फ़कबिल्ना ज़्यादतल्लिकति व लौ प्रबत अन्नहुमा कज़ीयतानि लहमल्लतुल अला अला अन्नहू अयज़न अमर बिही व इल्लम यब्लुगना ज़ालिक व लौ प्रबत अन्नहू लम यामूर बिही मअ अन्नहुमा कज़ीयतानि लहमल्लाहा अला अन्नहू जहल बाइउहू व ला युम्किनु

मअरिफतुहू फसार मालन जाइअन लिमन अलैहि दैनुन बिक्रीमतिही व हुवत्तमरूल्लजी कबज़हू फ़हसल अन्नहू ला इश्काल फ़िल्हदीषि व लिल्लाहिल हम्द.

या'नी ये इस अम्र पर दलील है कि ऐसी क़ब्ज़े में ली हुई बेअ भी फ़ासिद होगी। जिसका बायेअ (बेचने वाले) पर लौटा लेना वाजिब है और जब वो बेअ रद्द हो गई तो उसकी क़ीमत ख़ुद ही रद्द हो गई। अगर कहा जाए कि पिछली हदीष में ये मज़कूर नहीं है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसके रद्द करने का हुक्म फ़र्माया। उसका जवाब ये है कि ज़ाहिर यही है कि क़ज़िया एक ही है और उसमें आप (ﷺ) ने वापसी का हुक्म दिया। कुछ रावियों ने उसको याद रखा और कुछ ने याद नहीं रखा। पस हमने पिका रावियों की ज़्यादाती कुबूल किया। और अगर ये प्राबित हो जाए कि ये दो क़ज़िये हैं, तो पहले को उस पर महमूल किया जाएगा कि आपने यही हुक्म फ़र्माया था अगरचे ये हम तक नहीं पहुँच सका। और अगर ये प्राबित हो कि आपने ये हुक्म नहीं फ़र्माया बावजूद इसके कि ये दो क़ज़िये हैं तो हम इस पर महमूल करेंगे कि उसका बायेअ मजहूल हो गया और वो बाद में पहचाना न जा सका। तो उस सूत में वो माल जाया हो गया उस शख्स के लिये जिसने उसकी क़ीमत का बोझ अपने सर पर रखा और ये वही ख़जूर हैं जो उसने क़ब्ज़े में ली है। पस हासिल हुआ कि हदीष में कोई इश्काल नहीं है।

अल्हम्दुलिल्लाह आज 5 सफ़र 1390 हिजरी का हरमे नबवी मदीना तय्यिबा में बवक्ते फ़ज़ ब-सिलसिला नज़रे प्रानी ये नोट लिखा गया।

## बाब 12 : वक्रफ़ के माल में वकालत और वकील का खर्चा और वकील का अपने दोस्त को खिलाना और ख़ुद भी दस्तूर के मुवाफ़िक़ खाना

2313. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफयान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उन्होंने कहा कि हज़रत इमर (रज़ि.) ने स़दक़ा के बाब में जो किताब लिखवाई थी उसमें यूँ है कि स़दक़े का मुतवल्ली उसमें से खा सकता है और दोस्त को खिला सकता है। लेकिन रुपया न जमा करे। और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) अपने वालिद हज़रत इमर (रज़ि.) के स़दक़े के मुतवल्ली थे। वो मक्कावालों को उसमें से तोहफ़ा भेजते थे जहाँ आप क़याम फ़र्माया करते थे।

(दीगर मक़ाम : 2137, 2764, 2772, 2773, 2777)

## ۱۲- بَابُ الْوَكَالَةِ فِي الْوَقْفِ وَنَفَقَتِهِ، وَأَنْ يُطْعِمَ صَدِيقًا لَهُ وَيَأْكُلَ بِالْمَعْرُوفِ

۲۳۱۳- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَانُ عَنْ غَمْرٍو، قَالَ لِيْ صَدَقَۀُ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : «لَيْسَ عَلَى الْوَلِيِّ جُنَاحٌ أَنْ يَأْكُلَ وَيُؤْكَلَ صَدِيقًا لَهُ غَيْرَ مُتَأَنِّلٍ مَّالًا. فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ هُوَ يَلِي صَدَقَۀَ عُمَرَ. يَهْدِي لِأَسْرِ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ كَانَ يَنْزِلُ عَلَيْهِمْ».

[أُطْرَفَهُ فِي ۲۱۳۷، ۲۷۶۴، ۲۷۷۲]

[۲۷۷۷، ۲۷۷۳]

यहाँ वकील से नाज़िर, मुतवल्ली मुराद है। अगर वाक़िफ़ की इजाज़त है तो वो उसमें से अपने दोस्तों को बवक्ते ज़रूरत खिला भी सकता है और ख़ुद भी खा सकता है।

## बाब 13 : हद लगाने के लिये किसी को वकील करना

2314, 15. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको लैष बिन सअद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें

## ۱۳- بَابُ الْوَكَالَةِ فِي الْحُدُودِ

۲۳۱۴، ۲۳۱۵- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيد قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ

अबूदुल्लाह ने, उन्हें जैद बिन खालिद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने इब्ने जिहाक असलमी (रज़ि.) से फ़र्माया, ऐ उनैस! उस खातून के यहाँ जा, अगर वो ज़िना का इकरार कर ले, तो उसे संगसार कर दे।

(दीगर मक़ामात : 2649, 2696, 2125, 6634, 6828, 6831, 2836)

बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उनैस को हद्द लगाने के लिये वकील मुक़रर किया। उससे क़ानूनी पहलू ये भी निकला कि मुजरिम खुद अगर जुर्म का इकरार कर ले तो उस पर क़ानून लागू हो जाता है। इस सूरत में गवाहों की ज़रूरत नहीं है और ज़िना पर हद्दे शरई संगसारी भी प्राबित हुई।

2316. हमसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल वल्हाब प्रक़्फ़ी ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे इब्ने बिन हारिज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नुअयमान या इब्ने नुअयमान को आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर किया गया। उन्होंने शराब पी ली थी। जो लोग उस वक़्त घर में मौजूद थे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हीं से उन्हें मारने के लिये हुक्म दिया। उन्होंने बयान किया कि मैं भी मारने वालों में था। हमने जूतों और छड़ियों से उन्हें मारा था।

(दीगर मक़ाम : 6774, 6775)

**तशरीह :** नुअयमान या इब्ने नुअयमान के बारे में रावी को शक है। इस्माईली की रिवायत में नुअमान या नुअयमान मज़कूर है। हाफ़िज़ ने कहा उसका नाम नुअयमान बिन अम्र बिन रिफ़ाअ अंसारी था। बद्र की लड़ाई में शरीक था। और बड़ा खुश मिज़ाज़ आदमी था। रसूले करीम (ﷺ) ने घरवालों को हद्द मारने का हुक्म फ़र्माया। उससे बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि आप (ﷺ) ने घर के मौजूद लोगों को हद्द मारने के लिये वकील मुक़रर किया। इसी से हद्द में वकालत प्राबित हुई और यही बाब का तर्जुमा है।

**बाब 14 : कुर्बानी के ऊँटों में वकालत और उनकी निगरानी करने में**

वकालत तो इससे प्राबित होती है कि आप (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के साथ वो कुर्बानियाँ ख़ाना कर दीं और निगरानी उससे कि आपने अपने हाथ से उनके ग़लों में हार डाले।

2317. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र बिन हज़म ने, उन्हें अम्रा बिन्ते अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि

اللّٰهُ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ  
اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((وَأَعْدُ يَا  
أَنَسُ عَلَى امْرَأَةٍ هَذَا، فَإِنْ اعْتَرَفَتْ  
فَارْجُمَهَا)).

[أطرافه في : ٢٦٤٩، ٢٦٩٦، ٢١٢٥]

٦٦٣٤، ٦٨٢٨، ٦٨٣١، ٢٨٣٦

٢٣١٦- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا  
عَبْدُ الْوَهَّابِ الْبَقْفِيُّ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ ابْنِ  
أَبِي مُثَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ:  
((جِئْتُ بِالْعَمِيَّانِ - أَوْ ابْنِ الْعَمِيَّانِ -  
شَارِبًا، فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنْ كَانَ فِي  
الْبَيْتِ أَنْ يَضْرِبُوهُ، فَإِنْ لَكُنْتُ أَنَا فِيمَنْ  
ضَرَبَهُ، فَضَرْبَاهُ بِالْعَصَالِ وَالْحَجَرِ)).

[طرفاه في : ٦٧٧٤، ٦٧٧٥]

**١٤ - باب الوكالة في البذن  
وتعاهدتها**

٢٣١٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ  
قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي

आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने अपने हाथों से नबी करीम (ﷺ) के कुर्बानी के जानवरों के क़लादे बटे थे। फिर नबी करीम (ﷺ) ने उन जानवरों को ये क़लादे अपने हाथ से पहनाए थे। आप (ﷺ) ने वो जानवर मेरे वालिद के साथ (मक्का में कुर्बानी के लिये) भेजे। उनकी कुर्बानी की गई। लेकिन (इस भेजने की वजह से) आप (ﷺ) पर कोई ऐसी चीज़ हुराम नहीं हुई जिसे अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) के लिये हलाल किया था।

(राजेअ: 1696)

بَكَرِ بْنِ خَزْمٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ  
الرَّحْمَنِ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ: ((قَالَتْ عَائِشَةُ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَا قُلْتُ فَلَانِدَ هَذِهِ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِيَدِي، ثُمَّ قُلْنَا رَسُولُ  
اللَّهِ ﷺ بِيَدِي، ثُمَّ بَعَثَ بِهَا مَعَ أَبِي، فَلَمْ  
يَحْزَمْ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ شَيْءَ أَحَلَّهُ  
اللَّهُ لَهُ حَتَّى نُجِزَ الْهَدْيَ)).

[راجع: ١٦٩٦]

**तरीह:** हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के कुर्बानी के कैंटों के लिये हज़रत आइशा (रज़ि.) ने क़लादे बटने में आपकी वकालत फ़र्माई। हज़रत आइशा (रज़ि.) सिदीका उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं। उनकी वालिदा माजिदा का नाम उम्मे स्मान बिनते आभिर बिन उवैमिर है। आँहज़रत (ﷺ) के साथ उनकी शादी 10 नबवी में मक्का शरीफ़ ही में हुई। शव्वाल 2 हिजरी में हिजرات से 18 माह बाद रूख़सती अमल में आई। आँहज़रत (ﷺ) के साथ ये 9 साल रही हैं। क्योंकि विसाले नबवी के वक़्त हज़रत आइशा (रज़ि.) की उम्र अठारह साल की थी। हज़रत आइशा (रज़ि.) बहुत फ़सीहा, फ़कीहा, आलिमा थीं। हुज़ूर (ﷺ) से बक़रत अह्लादीष आपने नक़ल की हैं। वक़ायेअ अरब और मुहावरात व अशआर की ज़बरदस्त जानकार थीं। सहाबा किराम और ताबेअीने इज़ाम के एक बड़े तबक़े ने उनसे रिवायात नक़ल की हैं। मदीना त़य्यिबा में 57 हिजरी 58 हिजरी में बुधवार की रात में आपका इंतिकाल हुआ। वसिय्यत के मुताबिक़ रात ही में बक़ीअे गरक़द में आपको दफ़न किया गया, हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई जो उन दिनों मुआविया (रज़ि.) के दौर हुकूमत में मदीना में मरवान के मातहत थे।

बक़ीअ गरक़द मदीना का पुराना क़ब्रस्तान है, जो मस्जिदे नबवी से थोड़ी ही दूरी पर है। आजकल उसकी जानिब मस्जिदे नबवी से एक वसीअ (चौड़ी) सड़क निकाल दी गई है। क़ब्रिस्तान को चारों तरफ़ एक ऊँची दीवार से घेर दिया गया है। अंदर पुरानी क़ब्रें ज़्यादातर नाबूद (अस्तित्वहीन) हो चुकी हैं, अहले बिदअत ने पहले दौर में यहाँ कुछ सहाबा व दीगर बुजुर्गाने दीन के नामों पर बड़े-बड़े कुम्बे बना रखे थे और उन पर ग़िलाफ़, फूल डाले जाते और वहाँ नज़्र नियाज़ चढ़ाई जाती थीं। सज़्ज़दी हुकूमत ने हदीषे नबवी की रोशनी में उन सब को मिस्मार कर दिया है। पुरख़्ता क़ब्रें बनाना शरीअते इस्लामिया में क़तअन मना है और उन पर चादर फूल मुहदशात व बिदआत हैं। अल्लाह पाक मुसलमानों को ऐसी बिदआत से बचाए, आमीन।

**बाब 15 : अगर किसी ने अपने वकील से कहा कि जहाँ मुनासिब जानो उसे खर्च करो, और वकील ने कहा कि जो कुछ तुमने कहा है मैंने सुन लिया।**

١٥- بَابُ إِذَا قَالَ الرَّجُلُ لَوَكِيلِهِ:  
صَفْعَةً حَيْثُ أَرَاكَ اللَّهُ وَقَالَ الْوَكِيلُ:  
قَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ

या'नी वकील ने अपनी राय से उस माल को किसी काम में खर्च किया तो ये जाइज़ है। आँहज़रत (ﷺ) को अबूतलहा ने वकील किया कि बीरेहाअ को आप जिस कारे ख़ैर में चाहें खर्च करें। आपने उनको ये राय दी कि अपने ही नातेदारों को बांट दें। (वहीदी)

2318. मुझसे यहाँ बिन यहाँ ने बयान किया, कहा कि मैंने इमाम मालिक के सामने क़िरात की बवास्ता इस्हाक़ बिन

٢٣١٨- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَحْيَى قَالَ  
قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ

अब्दुल्लाह के कि उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि अबू तलहा (रज़ि.) मदीना में अंसार के सबसे मालदार लोगों में से थे। बरिहाअ (एक बाग) उनका सबसे ज्यादा महबूब माल था। जो मस्जिदे नबवी के बिल्कुल सामने था। रसूले करीम (ﷺ) भी वहाँ तशरीफ ले जाते और उसका निहायत मीठा उमदा पानी पीते थे। फिर जब कुआन की आयत (लन तनालुल बिर हत्ता तुफिकू मिम्मा तुहिबून) उतरी (तुम नेकी हरिज नहीं हासिल कर सकते जब तक न खर्च करो अल्लाह की राह में वो चीज जो तुम्हें ज्यादा पसन्द हो) तो अबू तलहा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में आए और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फ़र्माया है (लन तनालुल बिर हत्ता तुफिकू मिम्मा तुहिबून) और मुझे अपने माल में सबसे ज्यादा पसन्द मेरा यही बाग बरिहाअ है। ये अल्लाह की राह में सदाका है। उसकी नेकी और ज़खीर—ए—ख़ाब की उम्मीद में सिर्फ अल्लाह तआला से रखता हूँ। पस आप जहाँ मुनासिब समझें उसे खर्च कर दें। आपने फ़र्माया, वाह! वाह! ये तो बड़ा ही नफ़े वाला माल है, बहुत ही मुफ़ीद है। उसके बारे में तुमने जो कुछ कहा वो मैंने सुन लिया। अब मैं तो यही मुनासिब समझता हूँ कि उसे तू अपने रिश्तेदारों ही में तक्सीम कर दे। अबू तलहा (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं ऐसा ही करूँगा। चुनौचे ये कुँआ उन्होंने अपने रिश्तेदारों और बचा की औलाद में तक्सीम कर दिया। इस रिवायत की मुताबअत इस्माईल ने मालिक से की है और रौहान ने मालिक से (लफ़्ज़ रायेह के बजाय) राबेह नक़ल किया है। (राजेअ: 1461)

اللّٰهُ اَنَّهُ سَمِعَ اَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُولُ: «كَانَ اَبُو طَلْحَةَ اَكْثَرُ اَنْصَارِي بِالْمَدِينَةِ مَالًا، وَكَانَ اَحَبُّ اَمْوَالِهِ اِلَيْهِ بَرِّحَاءَ وَكَانَتْ مُسْتَقْبَلَةُ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيْهَا طَيِّبٍ. فَلَمَّا نَزَلَتْ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾ قَامَ اَبُو طَلْحَةَ اِلَى رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ، اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يَقُولُ فِيْ كِتَابِهِ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾ وَاِنْ اَحَبُّ اَمْوَالِيْ اِلَيَّْ بَرِّحَاءَ، وَاِنَّهَا صَدَقَةٌ لّٰهُ اَرْجَوُا بِرَّهَا وَدُخْرَهَا عِنْدَ اللّٰهِ، فَضَعُفًا يَا رَسُولَ اللّٰهِ حَتّٰى شِفَتْ. فَقَالَ: (بَع) ذٰلِكَ مَالٌ رَّائِحٌ، ذٰلِكَ مَالٌ رَّائِحٌ. لَمَّا سَمِعْتُ مَا قُلْتَ فِيْهَا، وَاَرَى اَنْ تَجْعَلَهَا فِي الْاَقْرَبِيْنَ)). قَالَ: اَفْعَلْ يَا رَسُولَ اللّٰهِ. فَكَسَمَهَا اَبُو طَلْحَةَ فِيْ اَقَارِبِهِ وَتَبَنَى عَنْهُمْ)).

ثَابِتٌ عَنْ اِسْمَاعِيْلَ عَنْ مَالِكٍ. وَقَالَ رَوْحٌ عَنْ مَالِكٍ ((رَابِع)). (راجع: 1461)

हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने बरिहाअ के बारे में आँहज़रत (ﷺ) को वकील ठहराया और आपने उसे उन्ही के रिश्तेदारों में तक्सीम करने का हुक्म फ़र्माया। उसी से बाब का तर्जुमा प्राबित हुआ। चूँकि रिश्तेदारों का हक़ मुकदम (श्रेष्ठ) है और वही साहिबे मीरास भी होते हैं। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उन ही को तरजीह दी। जो रसूले करीम (ﷺ) की बहुत ही बड़ी दूर—अदेशी का पुबूत है। ये कुँआ मदीना शरीफ़ में हरमे नबवी के करीब अब भी मौजूद है और मैंने भी वहाँ हाज़िरी का शफ़ हासिल किया है। वल्हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक।

## बाब 16 : खजान्ची का खज़ाने

### में वकील होना

2319. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा

## ١٦- بَابُ وَكَالَةِ الْاَمِينِ فِي

### الْخَزَانَةِ وَنَحْوَهَا

٢٣١٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْاِمْلَاءِ قَالَ

कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे बुईद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्होंने कहा कि हमसे अबू बुर्दा ने बयान किया और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अमानतदार ख़जान्ची जो खर्च करता है, कुछ दफ़ा ये फ़र्माया कि जो देता है हुक्म के मुताबिक़ का मिल और पूरी तरह जिस चीज़ (के देने) का उसे हुक्म हो और उसे देते वक़्त उसका दिल भी खुश हो, तो वो भी सद्का करने वालों में से एक है। (राजेज़: 1438)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْخَزَانُ الْأَمِينُ الَّذِي يُنْفِقُ)) - وَزَيْمًا قَالَ: ((الَّذِي يُعْطِي - مَا أَمَرَ بِهِ كَامِلًا مُؤْتِرًا طِيبَ نَفْسِهِ إِلَى الَّذِي أَمَرَ بِهِ أَحَدُ الْمُتَصَدِّقِينَ)). [راجع: ١٤٣٨]

या'नी इसको मालिक के बराबर प्रवाब मिलेगा कि उसने खुशी के साथ मालिक का हुक्म बजाया और सद्का कर दिया और मालिक की तरफ़ से, मालिक के हुक्म के मुताबिक़ वो माल खर्च करने में वकील हुआ। यही बाब का मंशा है।

## 41. किताबुल हर्ष वल मुज़ारअत

# किताब खेती-बाड़ी और बटाई का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**बाब 1 : खेत बोने और पेड़ लगाने की फ़ज़ीलत जिसमें से लोग खाएँ और (सूरह वाक़िआ में)**

अल्लाह तआला का फ़र्मान कि ये तो बताओ जो तुम बोते हो, क्या उसे तुम उगाते हो, या उसे उगाने वाला मैं हूँ? अगर मैं चाहूँ तो उसे चूरा-चूरा बना दूँ। (अल वाक़िया : 63-65)

١ - بَابُ فَضْلِ الزَّرْعِ وَالْفَرْسِ إِذَا أَكَلَ مِنْهُ. وَقَوْلُهُ تَعَالَى :

﴿ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ، أَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ غَيْرُ النَّارِعُونَ. لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا ﴾ [الواقعة : ٦٣-٦٥]

**तशरीह :** मुज़ारेअ बाबे मुफ़ाअला का मसदर है जिसका माख़ज़ (उद्गम) ज़रअ है, इमामुल मुज्ताहिदीन व सय्यदुल मुहदिदीन हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ भी फ़ज़ाइले ज़राअत के सिलसिले में पहले कुआन पाक की आयत नक़ल फ़र्माई। जिसमें इशादे बारी तआला है, अफ़रयतुम मा तुहरषून अन्तुम तज़रऊनहू अम नहनुज़्ज़ारिऊन (अल वाक़िआ : 63-66) या'नी ऐ काश्तकारों! तुम जो खेती करते हो, क्या तुम खेती करते हो या दरहकीक़त खेती करने (उगाने)



वाला मैं हूँ; मैं चाहूँ तो तैयार खेती को बर्बाद करके रख दूँ। फिर तुम हके-बके होकर रह जाओ।

हाफिज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, व ला शक़ अन्नल आयत तदुल्लु अला इबाहतिज़रइ मिन जिहतिल इम्तिनानि बिही वल हदीषु यदुल्लु अला फ़ज़िलही बिल्क़ैदिल्लज़ी ज़करहुल मुसन्नफ़ि व क़ाल इब्नुल मुनीर अशारल बुख़ारी इला इबाहतिज़रइ व इन्न मन नहा अन्हु कमा वरद अन इमर फ़महल्लुहू मा इजा शग़लल्हर्ष अनिल हरबि व नहवुहू मिनल उमूरिल मल्लूबति व अला ज़ालिक युहमलु हदीषु अबी उमामत अल मज़कूर फ़िल्बाबिल्लज़ी बअदहू या'नी कोई शक व शुब्हा नहीं कि आयते कुआनी खेती के मुबाह होने पर दलालत कर रही है इस तौर पर भी कि ये अल्लाह का बड़ा भारी करम है और हदीष में भी उसकी फ़ज़ीलत मौजूद है, इस कैद के साथ जिसे मुसन्नफ़ि ने ज़िक्र किया है। इब्ने मुनीर कहते हैं कि इमाम बुख़ारी (रह.) ने खेती के मुबाह होने पर इशारा किया है। और उससे जो मुमानअत वारिद हुई है उसका महल जब है कि खेती मुसलमान को जिहाद और उमूरे शरअ से ग़ाफ़िल कर दे। अबू उमामा की हदीष जो बाद में खेती की मज़म्मत में आ रही है वो भी उसी पर महमूल (आधारित) है। मौलाना वहीदुज़्जमाँ (रह.) फ़र्माते हैं, इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस आयत, अफ़रअयतुम मा तहरथून से ये प़ाबित किया है खेती करना मुबाह है और जिस हदीष में उसकी मुमानअत (मनाही) वारिद है उसका महल बय है कि खेती में ऐसा मशगूल होना मना है कि आदमी जिहाद से बाज़ रहे या दीन के दूसरे कामों से रुक जाए। (वहीदी)

2320. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अबाना ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुझसे अब्दुरहमान बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे अबू अबाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई भी मुसलमान जो एक पेड़ का पौधा लगाए या खेत में बीज बोए, फिर उसमें से परिन्दा या इंसान व जानवर जो भी खाते हैं वो उसकी तरफ़ से सद्क़ा है मुस्लिम ने बयान किया कि हमसे अबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से।

(दीगर मक़ाम : 6012)

۲۳۲۰ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ ح. وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : (( مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْماً، أَوْ يَزْرِعُ زَرْعاً لَّيَأْكُلُ مِنْهُ طَيْرٌ أَوْ إِنْسَانٌ أَوْ بَهِيمَةٌ، إِلَّا كَانَ لَهُ بِهِ صَدَقَةٌ )) . وَقَالَ لَنَا مُسْلِمٌ : قَالَ حَدَّثَنَا أَبَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ .

ﷺ [طرفه ب : ۶۰۱۲] .

**तशरीह :** इस हदीष का शाने वरुद इमाम मुस्लिम ने यँ बयान किया कि अन्नन नबिय्य (ﷺ) राअ नख़लन लिउमिह मुबशिर इम्रातिन मिनलअन्सारि फ़क़ाल मन गरस हाज़न्नख़लअ मुस्लिमुन औ काफ़िरुन फ़क़ालू मुस्लिमुन फ़क़ाल ला यगरिसु मुस्लिमुन गरसन फ़याकुलु मिन्हु इन्सानुन औ तैरुन औ दाब्बतुन इल्ला कान लहू सद्क़तुन या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक अंसारी औरत उम्मे मुबशिर नामी का लगाया हुआ खजूर का पेड़ देखा, आप (ﷺ) ने पूछा कि ये दरख़त किसी मुसलमान ने लगाया है या काफ़िर ने। लोगों ने बताया कि ये मुसलमान के हाथ का लगाया हुआ है। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो मुसलमान कोई पेड़ लगाए फिर उससे आदमी या परिन्दे या जानवर खाएँ तो ये सब कुछ उसकी तरफ़ से सद्क़े में लिखा जाता है।

हदीषे अनस (रज़ि.) रिवायतकर्दा इमाम बुख़ारी (रह.) में मज़ीद वुस्अत के साथ लफ़ज़ औ यज़रइ ज़रअन भी मौजूद है या'नी बाग़ लगाए या खेती करे। तो उससे जो भी आदमी, जानवर फ़ायदा उठाएँ उसके मालिक के प़ाबब में बतौर सद्क़ा लिखा जाता है। हाफिज़ फ़र्माते हैं, व फ़िल्हदीषि फ़ज़लुल्गरसि वज़रइ वल्हज़ु अला इमारतिलअर्ज़ि या'नी इस हदीष में बाग़बानी और ज़राअत और ज़मीन को आबाद करने की फ़ज़ीलत मज़कूर (वर्णित) है।

फिल्वाकेअ खेती की बड़ी अहमियत है कि इंसान को पेट-भराई का बड़ा जरिया खेती ही है। अगर खेती न की जाए तो अनाज की पैदावार न हो सके। इसीलिये कुआन व हदीष में इस फ़न का ज़िक्र भी आया है। मगर जो कारोबार अल्लाह की याद से और फ़राइजे इस्लाम की अदायगी में हारिज (रुकावट) हो, वो उलटा वबाल भी बन जाता है। खेती का भी यही हाल है कि बेशतर खेती-बाड़ी करने वाले यादे इलाही से ग़ाफ़िल और फ़राइजे इस्लाम में सुस्त हो जाते हैं। उस हालत में खेती और उसके आलात (यंत्रों) की मज़मूमत (निन्दा) भी आई है। बहरहाल मुसलमान को दुनियावी कारोबार में अल्लाह को याद रखना और फ़राइजे इस्लाम को अदा करना ज़रूरी है। **वलिल्लाहि हुवल मुवफ़िक्क**।

अल्हम्दुलिल्लाह हदीष के पेशेनज़र मैंने भी अपने गाँव रहपुवा में स्थित खेतों में कई पेड़ लगवाए हैं। जो जल्दी ही साया (दाँव) देने के क़ाबिल होने वाले हैं। इम्साल अज़ीज़ी नज़ीर अहमद राज़ी ने एक बड़ का पौधा नसब किया (लगाया) है, जिसे वो देहली से ले गए थे। अल्लाह करे कि वो परवान चढ़कर सैंकड़ों सालों के लिये ज़ख़ीर-ए-हस्नात बन जाए और अज़ीज़ाने ख़लील अहमद व नज़ीर अहमद को तौफ़ीक़ दे कि वो खेती का काम उन ही अह्मदीय की रोशनी में करें जिससे उनको बरकाते दारेन हासिल होंगी।

आज यौमे आशूरा मुहर्रम 1390 हिजरी को का'बा शरीफ़ में ये दरख्वास्त रब्बे का'बा के सामने पेश कर रहा हूँ।  
आमीन या रब्बल आलमीन।

**बाब 2 : खेती के सामान में बहुत ज़्यादा मसरूफ़ रहना या हद से ज़्यादा उसमें लग जाना, उसका अंजाम बुरा है**

۲- بَابُ مَا يُحَذَّرُ مِنْ عَوَاقِبِ  
الاشتغال بِالْأَلَةِ الزَّرْعِ، أَوْ مُجَاوِزَةِ  
الْحَدِّ الَّذِي أَمَرَ بِهِ

2321. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन सालिम हिम्सी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियादुल हानी ने बयान किया, उनसे अबू उमामा बाहिली (रज़ि.) ने बयान किया, आपकी नज़र फाली और खेती के कुछ दूसरे आलात पर पड़ी। आपने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया कि जिस क़ौम के घर में ये चीज़ दाख़िल हो जाती है तो अपने साथ ज़िल्लत भी लाती है।

۲۳۲۱- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ  
حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَالِمٍ الْجُمَيْصِيُّ قَالَ  
حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زَيْدٍ الْأَنْهَارِيُّ عَنْ أَبِي  
أُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ قَالَ - وَرَأَى سَكَّةَ وَشَيْئًا  
مِنْ آلَةِ الْحَوَثِ فَقَالَ - سَيَفُتُ النَّبِيُّ  
ﷺ يَقُولُ: ((لَا يَدْخُلُ هَذَا بَيْتَ قَوْمٍ إِلَّا  
أَدْخَلَهُ اللَّهُ))

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने मुनअकिद बाब में अह्मदीय आमदा दर मदहे ज़राअत व दरज़म्मे ज़राअत में तल्बीक़ पेश फ़र्माई है। जिसका खुलासा ये कि खेती बाड़ी अगर ए'तिदाल की हद में की जाए कि उसकी वजह से फ़राइजे इस्लाम की अदायगी में कोई तसाहुल न हो तो वो खेती क़ाबिले ता'रीफ़ है, जिसकी फ़ज़ीलत ऊपर हदीष में नक़ल हुई है। और अगर खेती बाड़ी में इस क़दर मशगूलियत (व्यस्तता) हो जाए कि एक मुसलमान अपनी दीनी फ़राइज़ से भी ग़ाफ़िल हो जाए तो फिर वो खेती क़ाबिले ता'रीफ़ नहीं रहती। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने उस पर जो तब्सरा किया है वो ये है-

हाज़ा मिन अख़बारिही (ﷺ) बिल्मुगीबाति लिअन्नल मुशाहिद अल्आन अन्न अक्वरज़ुल्मि इन्नमा हुव अला अहलिलहर्षि व क़द अशारल बुखारी बिच्चर्जुमति इललज्मइ बैन हदीषि अबी उमामत वल हदीषुल्माज़ी फ़ी फ़ज़िलज़रइ वल्गरसि व ज़ालिक बिअहदिल अमैनि अम्मा अय्युहमल मा वरद मिनज़म्मि अला आकिबति ज़ालिक व महल्लुहू इज़शतग़ल बिही फ़ज़ीउ बिसबबिही मा अमर बिहिफ़िज़िही व अम्मा अय्युहमल अला मा इज़ा लम यज़अ इल्ला अन्नहू जावज़ल्हद फ़ीहि वल्लज़ी यज़हरु अन्न कलाम अबी उमामत महमूलुन अला मय्यतआत

जालिक बिनअसिही अम्मा मन लहू उम्मा लुन यअ मलून लहू व अदखल दारहू अलआलतल मज्कूरत लितहफ़ज़ लहुम फ़लैस मुरादुन लौ युम्किनुल हम्तु अला उमूमिही फ़इन्नज़िल शामिलुन लिक्कुल्लि मन अदखल नफ़्सहू मा यस्तल्लि मु मुतालबतन आख़र लहू व ला सय्यिमा इज़ा कानल मुतालिबु मिनल्लुलाति व अनिहाऊदी हाज़ा लिमन यक्लबु मिनलअदुव्वि फ़इन्नहू इज़ा इश्तग़ल बिल्हर्षि ला यश्तग़िल्लु बिल्फ़ुरुसिय्यति फ़यतासदु अलैहिल अदुव्वु फ़हक्कुहुम अय्यश्तग़िल्लु बिल्फ़ुरुसिय्यति व अला ग़ैरहिम इम्दादुहुम बिमा यहतज़ून इलैहि. (फ़तुल बारी)

या'नी ये हदीष आँहज़रत (ﷺ) की उन ख़बरों में से है जिनको मुशाहिदे ने बिलकुल सहीह प्रामाणिक कर दिया क्योंकि अक़्बर मज़ालिम (अत्याचारों) का शिकार किसान ही होते चले आ रहे हैं। और हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब से हदीषे अबी उमामा और पिछली हदीष बाबत फ़ज़ीलते ज़राअत व बाग़बानी में तब्दीक़ पर इशारा फ़र्माया है और ये दो उमूर में से एक है। अब्बल तो ये कि जो मज़म्मत वारिद है उसे उसके अंजाम पर महमूल किया जाए, अगर अंजाम में उसमें इस क़दर मशगूलियत हो गई कि इस्लामी फ़राइज़ से भी ग़ाफ़िल होने लगा। दूसरे ये भी कि फ़राइज़ को तो ज़ाया नहीं किया मगर हदे ए'तिदाल से आगे तजावुज़ (उल्लंघन) करके उसमें मशगूल हो गया तो ये पेशा अच्छा नहीं। और ज़ाहिर है कि अबू उमामा वाली हदीष ऐसे ही शख़्स पर वारिद होगी जो खुद अपने तौर पर उसमें मशगूल हो और उसमें हदे ए'तिदाल से तजावुज़ कर जाए। और जिसके नौकर-चाकर काम अंजाम देते हों और हिफ़ाज़त के लिये खेती के यंत्र उसके घर में रखे जाएँ तो ज़म से वो शख़्स मुराद न होगा। हदीषे ज़म इमूम पर भी महमूल की जा सकती है कि काश्तकारों को कई बार टेक्स चुकाने के लिये हुक्म के सामने ज़लील होना पड़ता है। और दाऊदी ने कहा कि ये ज़म उसके लिये है जो दुश्मन से करीब हो, कि वो खेती-बाड़ी में मशगूल रहकर दुश्मन से ख़ैफ़ हो जाएगा और एक दिन दुश्मन उनके ऊपर चढ़ बैठेगा। पस उनके लिये ज़रूरी है कि सिपाहगिरी में मशगूल रहे और हाज़त की चीज़ों से दूसरे लोग उनकी मदद करें।

ज़राअत बाग़बानी एक बेहतरीन फ़न है। बहुत से अंबिया, औलिया, इलमा ज़राअत-पेशा रहे हैं। ज़मीन में कुदरत ने ज़िंनों और फलों से जो नेअमतेँ छुपा रखी हैं उनका निकालना ये ज़राअत पेशा और बाग़बान हज़रात ही का काम है। और जानदार मख़लूक के लिये जिन ज़िंनों और चारों की ज़रूरत है उसका मुहय्या करने वाला बिऔनीही तआला एक ज़राअत पेशा (खेती-बाड़ी करने वाला) किसान ही हो सकता है। कुआन मजीद में मुख़्तलिफ़ पहलुओं से उन फ़नों का ज़िक्र आया है। सूरह बक्रः में हल जोतने वाले बैल का ज़िक्र है।

ख़ुलासा ये कि इस फ़न की शराफ़त में कोई शुब्हा नहीं है मगर देखा गया है कि ज़राअत पेशा कौम ज़्यादातर मिस्कीनी और गुर्बत और ज़िल्लत का शिकार रहती हैं। फिर उनके सरों पर लगान का पहाड़ ऐसा ख़तरनाक होता है कि कई बार उनको ज़लील करके रख देता है। अहदीष में मज़म्मत में यही पहलू है। अगर ये न हो तो ये फ़न बहुत क़ाबिले ता'रीफ़ और बाज़िअे रफ़अे दरजाते दारैन है। आज के दौर में इस फ़न की अहमियत बहुत बढ़ गई है। जबकि आज ग़िज़ाई मसला (खाद्यान्न समस्या) मानवता के लिये एक अहमतरिनी आर्थिक मसला बन गया है। हर हुक्मत ज़्यादा से ज़्यादा इस फ़न पर तवज्जह दे रही है।

ज़िल्लत से मुराद ये है कि हुक्म (सत्ताधारी) उनसे पैसा वसूल करने में उन पर तरह तरह के जुल्म तोड़ेंगे। हाफ़िज़ ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने जैसा फ़र्माया था वो पूरा हुआ। अक़्बर जुल्म का शिकार किसान लोग ही बनते हैं। कुछ ने कहा ज़िल्लत से ये मुराद है कि जब रात दिन खेती-बाड़ी में लग जाएँगे तो सिपाहगिरी और फ़नूने जंग भूल जाएँगे और दुश्मन उन पर ग़ालिब आ जाएँगे।

अल्लामा नववी (रह.) अहदीषे ज़राअत के ज़ेल में फ़र्माते हैं, फ़ी हाज़िहिल अहदीषि फ़ज़ीलतुल्ग़रसि व फ़ज़ीलतुल्ज़रइ व इन्न अज़र फ़अला ज़ालिक मुस्तमरून मादामल्ग़रसु वज़रउ व मा तवल्लद मिन्हु इला यौमिल क्रियामति व क़द इख़तलफल उलमाउ फ़ी अत्यबिल्मकासिब व अफ़ज़लिहा फ़कील अत्तिजारतु व क़ील अस्सन्अतु बिल्यदि व क़ील अज़राअतु व हुस्सहीहु व क़द बसत्तु ईज़ाहू व फ़ी आख़िरि बाबिल्अत्इमति मिन शर्हिल मुहज़बि व फ़ी हाज़िहिल हदीषि अयज़न अन्नफ़्वाब वलअज़र फ़िल्आख़िरति मुख़तस्सुन बिल्मुस्लिमीन व इन्नलइन्सान युषाबु अला मा सरक मिम्मालिही औ अत्लफ़तु दाब्बतुन औ ताइरुन व नहवुहमा. (नववी)

या'नी अहदीष में पेड़ लगाने और खेती करने की फ़ज़ीलत वारिद है और ये कि किसान और बाग़बान का प्रभाव

हमेशा जारी रहता है जब तक भी उसकी वो खेती या पेड़ रहते हैं। प्रवाब का ये सिलसिला क़ायामत तक जारी रह सकता है। उलमा का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि बेहतरीन कसब कौनसा है। कहा गया है कि तिजारात है और ये भी कहा गया कि दस्तकारी बेहतरीन कसब है। और कहा गया कि बेहतरीन कसब खेती-बाड़ी है और यही सहीह है। और मैंने बाबुल अहमति शरहे मुहज़ज़ब में इसको तफ़्सील से लिखा है और इन अह्मदीयों में ये भी है कि आख़िरत का अज़्रो-प्रवाब मुसलमानों ही के लिये ख़ास है और ये भी है कि किसान की खेती में से कुछ चोरी हो जाए या जानवर परिन्दे कुछ उसमें नुक़सान कर दें तो उन सबके बदले किसान को प्रवाब मिलता है।

या अल्लाह! मुझको और मेरे बच्चों को इन अह्मदीयों का मिस्दाक़ बनाइयो। जबकि अपना आबाई पेशा खेती-किसानी ही है, और या अल्लाह! अपनी बरक़तों से हमेशा नवाज़ियो और हर किस्म की ज़िल्लत, मुसीबत, परेशानी, तंगहाली से बचाइयो, आमीन षुम्प आमीन।

### बाब 3 : खेती के लिये कुत्ता पालना

### ۳- بَابُ اقْتِنَاءِ الْكَلْبِ لِلْحَرْثِ

इस बाब से इमाम बुखारी (रह.) ने खेती की इबाहत प्राबित की क्योंकि जब खेत के लिये कुत्ता रखना जाइज़ हुआ तो खेती करना भी दुरुस्त होगा। हदीषे बाब से खेत या शिकार की हिफ़ाज़त के लिये कुत्ता पालने का ज़वाज़ निकला। हाफ़िज़ ने कहा उसी क़यास पर और किसी ज़रूरत से भी कुत्ते का रखना जाइज़ होगा। लेकिन बिला ज़रूरत जाइज़ नहीं।

2322. हमसे मुआज़ बिन फुज़ाला ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़सीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शरज़़ ने कोई कुत्ता रखा, उनसे रोज़ाना अपने अमल से एक क़ीरात की कमी कर ली। अल्बत्ता खेती या मवेशी (की हिफ़ाज़त के लिये) कुत्ते इससे अलग हैं। इब्ने सीरीन और अबू सालेह ने अबू हुरैरह (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया बहवाला नबी करीम (ﷺ) कि बकरी के रेखड़, खेती और शिकार के कुत्ते अलग हैं। अबू हाज़िम ने कहा अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि शिकारी और मवेशी के कुत्ते (अलग हैं)।

(दीगर मक़ाम : 2324)

۲۳۲۲- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ أَمْسَكَ كَلْبًا فَإِنَّهُ يَنْقُصُ كُلَّ يَوْمٍ مِنْ عَمَلِهِ قِيرَاطًا، إِلَّا كَلْبَ حَرْثٍ أَوْ مَاشِيَةٍ)). قَالَ ابْنُ سِيرِينَ وَأَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِلَّا كَلْبَ غَنَمٍ أَوْ حَرْثٍ أَوْ صَيْدٍ)). وَقَالَ أَبُو حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((كَلْبُ صَيْدٍ أَوْ مَاشِيَةٍ)). [طَرَفُهُ فِي : ۲۳۲۴]

**तशरीह:** इस हदीष से मा'लूम हुआ कि खेती की हिफ़ाज़त के लिये भी कुत्ता पाला जा सकता है जिस तरह से शिकार के लिये कुत्ता पालना जाइज़ है। महज़ शौकिया कुत्ता पालना मना है। इसलिये कि उससे बहुत से ख़तरात होते हैं। बड़ा ख़तरा ये कि ऐसे कुत्ते मौक़ा पाते ही बर्तनों में मुँह डालकर उनको गन्दा कर देते हैं। और ये आने जाने वालों को सताते भी हैं। उनके काटने का डर होता है। इसीलिये ऐसे घर में रहमत के फ़रिश्ते नहीं दाख़िल होते जिसमें ये मूजी (हानिकारक) जानवर रखा गया हो। ऐसे मुसलमान नेकियों में से एक क़ीरात नेकियाँ कम होती रहती हैं जो अकारण कुत्ते को पालता हो।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, क़ील सबबु नक़्ज़ानि इम्तिनाइल मलाइकति मिन दुखूलि बैतिही औ मा यल्हकुल्मारीन मिनल्अज़ा औ लिअन्न बअज़ह शयातीन औ उक़ूबतुन लिमुख़ालफ़तिन्नहयि औलु लौ अन्हा फ़िल्अवानी इन्द ग़फ़लति साहिबिहा फ़रुब्बमा यतनजसुत्ताहिरु मिन्हा फ़इज़ाउस्तुअमिल फ़िल्इबादति लम

यक्रअ मौकअत्ताहिरि व फिलहदीषि अल्हषु अला तकबीरिल आमालिस्मालिहति वत्तहज़ीरु मिनलअमलि बिमा यन्कुसुहा वत्तम्बीहु अला अस्बाबिजियादति फ़ीहा वन्नक्सु मिन्हा लितज्जनिब औ तर्तकिब व लुत्फिल्लाहि तआला बिखलिक्ही फ़ी इबाहति मालिहिम बिही नफ़उन व तब्लीगु नबिद्यिम (ﷺ) उमूर मआशिहिम व मआदिहिम व फ़ीहि तर्जीहुल मस्लिहतिराजिहति अलल्मुप्सिदति लिवुकूड इस्तिम्नाइन मा यन्तफ़उ बिही मिम्मा हरम इत्तिखाजहू. (फ़ुहल बारी)

या'नी नेकियों में से एक क़ीरात कम होने का सबब एक तो ये कि रहमत के फ़रिश्ते ऐसे घर में दाख़िल नहीं होते, या ये कि उस कुत्ते की वजह से आने-जाने वालों को तकलीफ़ होती है। या इसलिये भी कि कुछ कुत्ते शौतान होते हैं। या इसलिये कि बिला वजह कुत्ता रखा गया, उससे नेकी कम होती है। या इसलिये कि वो बर्तनों में मुँह डालते रहते हैं। जहाँ घरवाले से ज़रा ग़फ़लत हुई और कुत्ता ने फ़ौरन पाक पानी को नापाक कर डाला। अब अगर इबादत के लिये वो इस्ते'माल किया गया, तो उससे पाकी हासिल नहीं होगी। अल्लाज़ ये सारे कारण हैं जिनकी वजह से महज़ शौक़िया कुत्ता पालने वालों की नेकियाँ रोज़ाना एक-एक क़ीरात कम होती जाती है। मगर तहज़ीबे मस्बि (पश्चिमी संस्कृति) का बुरा हो, आजकल की नई तहज़ीब में कुत्ता पालना भी एक फैशन बन गया है। अमीर घरवालों में महज़ शौक़िया पालने वाले कुत्तों की इस क़दर ख़िदमत की जाती है कि उनके नहलाने धुलाने के लिये ख़ास नौकर रखे जाते हैं। उनकी खुराक का ख़ास एहतिमाम रखा जाता है। अस्तफ़िरुल्लाह! मुसलमानों को ऐसे फ़िज़ूल बेहूदा फ़िज़ूलख़र्ची के कामों से बहरहाल परहेज़ लाज़िम है।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं कि हदीषे हाज़ा बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल है जिनमे से आमाले स़ालेहा की क़य़रत पर रबत दिलाना भी है और ऐसे बुरे आमाल से डराना भी जिनसे नेकी बर्बाद और गुनाह लाज़िम आए। हदीषे हाज़ा में दोनों उमूर के लिये तम्बीह है कि नेकियाँ बक़य़रत की जाएँ और बुराइयों से बक़य़रत परहेज़ किया जाए। और ये भी कि अल्लाह की अपनी मख़लूक़ पर मेहरबानी है कि जो चीज़ उसके लिये नफ़ाबख़श है वो मुबाह करार दी है और इस हदीष में तब्लीगे नबवी बाबत उमूरे मआश व मआद भी मज़कूर है। और इस हदीष से ये भी ज़ाहिर है कि कुछ चीज़ें हाराम होती हैं जैसा कि कुत्ता पालना, मगर उनके नफ़ाबख़श होने की सूरत में उनको मस्लिहत के आधार पर अलग भी कर दिया जाता है।

2323. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें यज़ीद बिन ख़ुसैफ़ा ने, उनसे साइब बिन यज़ीद ने बयान किया, कि सुफ़यान बिन ज़ुहैर ने अज़द शनूआ क़बीले के एक बुजुर्ग से सुना, जो नबी करीम (ﷺ) के सहाबी थे। उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना था कि जिसने कुत्ता पाला, जो न खेती के लिये है और न मवेशी के लिये, तो उसकी नेकियों से रोज़ाना एक क़ीरात कम हो जाता है। मैंने पूछा, क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये सुना है? तो उन्होंने कहा, हाँ हाँ! इस मस्जिद के रब की क़सम! (मैंने ज़रूर आपसे यही सुना है)।

(दीगर मक़ाम : 3325)

۲۳۲۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفٍ أَنَّ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ حَدَّثَنَا أَنَّهُ سَمِعَ سُفْيَانَ بْنَ أَبِي زُهَيْرٍ - رَجُلٌ مِنْ أَزْدِ خُزُوعَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ - قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ أَتَى كَلْبًا لَا يُغْنِي عَنْهُ زُرْعًا وَلَا مَرْعًا تَقَمَّرَ كُلَّ يَوْمٍ مِنْ عَمَلِهِ قِيرَاطًا)). قُلْتُ: أَنْتَ سَمِعْتَ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَ: إِيَّايَ رَبَّ هَذَا الْمَسْجِدِ)).

[طرحه ۳: ۲۳۲۵].

क़ीरात एक पैमाना है जिसकी मिक्दार क्या है यह अल्लाह ही बेहतर जानता है। मुराद ये कि बेहद नेकियाँ कम हो जाती हैं। जिसकी वजूहात बहुत सारी हैं। एक तो ये कि ऐसे घर में रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते, दूसरे ये कि ऐसा कुत्ता गुजरने वालों और

आने-जाने वाले मेहमानों पर हमला करने के लिये दौड़ता है जिसका गुनाह कुत्ता पालने वाले को होता है। तीसरे ये कि वो घर के बर्तनों में मुँह डालकर नापाक करता रहता है। चौथे ये कि वो गन्दगियाँ खा-खाकर घर पर आता है और बदबू और दीगर बीमारियाँ अपने साथ लाता है और भी बहुत से कारण हैं। इसलिये शरीअते इस्लामी में घर में बेकार कुत्ता रखने की सख्ती के साथ मुमानअत की है। शिकारी कुत्ते और तर्बियत दिये हुए दीगर मुहाफिज़ कुत्ते इससे अलग हैं।

#### बाब 4 : खेती के लिये बैल से काम लेना

2324. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उन्होंने अबू सलमा से सुना और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (बनी इस्राईल में से) एक शख्स बैल पर सवार होकर जा रहा था कि उस बैल ने उसकी तरफ़ देखा और उस सवार से कहा कि मैं इसके लिये नहीं पैदा हुआ हूँ, मेरी पैदाइश तो खेत जोतने के लिये हुई है। आपने फ़र्माया कि मैं उस पर ईमान लाया और अबूबक्र व उमर भी ईमान लाए। और एक दफ़ा एक भेड़िये ने एक बकरी पकड़ ली थी तो गडरिये ने उसका पीछा किया। भेड़िया बोला, ३ जतू तो इसे बचाता है। जिस दिन (मदीना उजाड़ होगा) दरिन्दे ही दरिन्दे रह जाएंगे। उस दिन मेरे सिवा बकरियों का चराने वाला कौन होगा? आपने फ़र्माया कि मैं इस पर ईमान लाया और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) भी। अबू सलमा ने कहा कि अबूबक्र व उमर (रज़ि.) इस मज्लिस में मौजूद नहीं थे।

(दीगर मक़ाम : 3471, 3663, 3690)

#### ٤- بَابُ اسْتِعْمَالِ الْبَقَرِ لِلْحَرْثِ

٢٣٢٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي هُرَيْرَةَ، سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَسْمَا رَجُلٌ رَاكِبٌ عَلَى بَقَرَةٍ تَلَفَّتْ إِلَيْهِ فَقَالَتْ: لِمَ أَخْلَقْتُ لِهَذَا، خُلِفْتُ لِلْجَوَارِيَةِ. قَالَ: آمَنْتُ بِهِ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ. وَأَخَذَ اللَّتْبُ شَاةً فَتَبَعَهَا الرَّاعِي، فَقَالَ اللَّتْبُ: مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّيْعِ، يَوْمَ لَا رَاعِيَ لَهَا غَيْرِي؟ قَالَ: آمَنْتُ بِهِ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ)). قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَمَا هُمَا يَوْمَئِذٍ فِي الْقَوْمِ-

[أطرافه ١: ٣٤٧١، ٣٦٦٣، ٣٦٩٠]

**तशरीह:** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब के तहत इस हदीस को दर्ज फ़र्माया। जिसमें एक इस्राईली मर्द का और एक बैल का मुकालमा (वार्तालाप) मज़कूर है। वो इस्राईली बैल को सवारी के काम में इस्तेमाल कर रहा था कि अल्लाह तआला ने बैल को इसानी जुबान में बोलने की ताक़त दी और वो कहने लगा कि मैं खेती के लिये पैदा हुआ हूँ, सवारी के लिये नहीं पैदा हुआ। चूँकि ये बोलने का वाक़िया ख़क़े आदत से तो लल्लुक रखता है और अल्लाह पाक इस पर कादिर है कि वो बैल जैसे जानवर को इसानी जुबान में बात करने की ताक़त बख़्श दे। इसलिये अल्लाह के महबूब रसूल (ﷺ) ने इस पर ईमान का इन्हार फ़र्माया। बल्कि साथ ही हज़रते शौखेन (अबूबक्र व उमर रज़ि.) को भी शामिल कर लिया कि आपको उन पर ए'तिमादे कामिल था हालाँकि वो दोनों वहाँ उस वक़्त मौजूद न थे। व इन्ज़मा क़ाल ज़ालिक रसूलुल्लाहि (ﷺ) त्रिकतुम्बिहिमा अल्इल्मतु बिस्दिदकि ईमानिहिमा व कुव्वति यक्नीनिहिमा व कमालि मअरिफ़तिहिमा बिकुदरतिल्लाहि तआला (ऐनी) या'नी आँहज़रत (ﷺ) ने ये इसलिये फ़र्माया कि आप (ﷺ) को उन दोनों पर ए'तिमाद था। आप (ﷺ) उनके ईमान और यक्नीन की सदाक़त और कुव्वत से वाक़िफ़ थे। और जानते थे कि उनको भी कुदरते इलाही की मअरिफ़त कमाल दर्जे का हासिल है। इसलिये आपने उस ईमान में उनको भी शरीक कर लिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम व अरज़ा हुमा

हदीस का दूसरा हिस्सा भेड़िये के बारे में है जो एक बकरी को पकड़कर ले जा रहा था कि चरवाहे ने उसका पीछा किया और अल्लाह ने भेड़िये को इसानी जुबान में बोलने की ताक़त अता फ़र्माई और उसने चरवाहे से कहा कि आज तो तुमने इस बकरी

को मुझसे छुड़ा लिया। मगर उस दिन इन बकरियों को कौन छुड़ाएगा जिस दिन मदीना उजाड़ हो जाएगी और बकरियों का चरवाहा हमारे सिवा और कोई न होगा। कालकुरुतुबी क़अन्नहु युशीरु इला हदीषि अबी हुरैरत अल्मफूउ यत्कुकुनल मदीनत अला खैरिम्मा कानत ला यगशाहा इल्लल अवाफ़ी युरीदुस्सबाअ वत्तैर या'नी कुरुतुबी ने कहा कि इसमें उस हदीष की तरफ़ इशारा है जो मफूअन हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है कि लोग मदीना को खेरियत के साथ छोड़ जाएँगे। वापसी पर देखेंगे कि वो सारा शहर दरिन्दों, चरिन्दों, और परिन्दों का मस्कन (ठिकाना) बना हुआ है। उस भेड़िये की आवाज़ पर भी आँहज़रत (ﷺ) ने इन्हारे ईमान फ़र्माते हुए हज़रत साहिबैन को भी शरीक किया।

खुलासा ये कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने जो बाब मुन्अकिद फ़र्माया था वो हदीष में बैल के मुकालिमे वाले हिस्से से षाबित हो गया। ये भी मा'लूम हुआ कि इंसान जबसे आलामे शऊर में आकर ज़राअत की तरफ़ मुतवज्जह हुआ तो ज़मीन को खेती के क़ाबिल बनाने के लिये उसने ज़्यादातर बैल ही का इस्ते'माल किया है। अगरचे गधे, घोड़े, ऊँट, भैंसे भी कुछ कुछ मुल्कों में खेती के हलों में जोते जाते हैं। मगर इमूम के लिहाज़ से बैल ही को कुदरत ने इस बड़ी ख़िदमत का अहल (योग्य) बनाया है। आज इस मशीनी दौर में भी बैल बग़ैर चारा नहीं जैसा कि मुशाहिदा है।

**बाब 5 : बाग़ वाला किसी से कहे कि तू सब पेड़ों वग़ैरह की देखभाल कर, तू और मैं फल में शरीक रहेंगे**

٥- بَابُ إِذَا قَالَ أَكْفِي مَرْؤَةً  
النَّعْلِ أَوْ غَيْرِهِ وَتَشْرِكُنِي فِي الثَّمَرِ

**तशरीह:** चूँकि खेती-बाड़ी के मसाइल का ज़िक्र हो रहा है इसलिये एक सूत काश्तकारी की ये भी है जो बाब में बतलाई गई कि खेत या बाग़ वाला (मालिक) किसी को शरीक करे इस शर्त पर कि उसके खेत या बाग़ में सारी मेहनत वो (मज़दूर) शख्स करेगा और पैदावार आधो-आधो तक्सीम हो जाएगी। ये सूत शरअन जाइज़ है जैसा कि हदीष के बाब में मज़कूर है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना शरीफ़ तशरीफ़ लाए तो अंसार ने हमदर्दी व उखुव्वत के नाते अपनी ज़मीनों, बाग़ात को मुहाजिरीन में तक्सीम करना चाहा। मगर आँहज़रत (ﷺ) ने इस सूत को पसन्द नहीं किया बल्कि शिर्कतकार तण्बीज़ (पार्टनरशिप के फ़ार्मूले) पर इतिफ़ाक़ हो गया कि मुहाजिरीन अन्सार के खेतों या खजूर के बाग़ों में काम करें और पैदावार तक्सीम हो जाया करे। इस पर सबने आँहज़रत (ﷺ) की इत्ताअत और फ़र्माबरदारी का इक्कार किया और समिअना व अतअना (हमने सुना और पैरवी की) से इन्हारे रज़ामन्दी फ़र्माया। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

इससे ये भी ज़ाहिर हुआ कि इब्तिदाए इस्लाम ही से आम तौर पर मुसलमानों का ये रुज़्हाने तब्क़ी (प्राकृतिक झुकाव) रहा है कि वो खुद अपने बलबूते पर ज़िन्दगी गुज़ारें और अल्लाह के सिवा और किसी के सामने माँगने के लिये हाथ न फैलाएं और रिज़्के-हलाल की तलाश के लिये उनको जो भी दुश्वार से दुश्वार रास्ता इख़्तियार करना पड़े, वो उसी को इख़्तियार कर लें। मुसलमानों का यही ज़ुब्बा था जो बाद में के ज़मानों में तिज़ारत की शक्ल में इस्लाम के फैलाव और प्रचार-प्रसार के लिये एक बेहतरीन ज़रिया षाबित हुआ और अहले इस्लाम ने तिज़ारत के लिये दुनिया का कोना कोना छान मारा। उसके साथ साथ वो जहाँ गए इस्लाम की जीती-जागती मिशाल बनकर रह गए और दुनिया के लिये पैग़ामे रहमत षाबित हुए। स़द अफ़सोस कि आज ये बातें ख़्वाब व ख़याल बनकर रह गई हैं। इल्ला माशाअल्लाह, रहिमल्लाहु अलैयना; आमीन।

इन हक्काइक़ पर उन मरिब-ज़दा (पश्चिमी रंग में रंगे) नौजवानों को भी शौर करने की ज़रूरत है जो इस्लाम को सिर्फ़ एक खानगी मामला कहकर सियासते मज़ीशत (अर्थव्यवस्था) से अलग समझ बैठे हैं जो बिल्कुल ग़लत है। इस्लाम ने नौअे इंसानी की हर हर शुअबा ज़िन्दगी में पूरी-पूरी रहनुमाई की है, इस्लाम फ़ित्री क़वानीन का एक बेहतरीन मज्मूआ है।

2325. हमसे हक़म बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़िन्नद ने बयान किया, उनसे अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार

٢٣٢٥- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ  
أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنْ  
الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

ने नबी करीम (ﷺ) से कहा, कि हमारे बागात आप हममें और हमारे (मुहाजिर) भाइयों में तक्सीम फ़र्मा दें। आपने इंकार किया तो अंसार ने (मुहाजिरीन से) कहा कि आप लोग पेड़ों में मेहनत करो, हम तुम मेवे में शरीक रहेंगे। उन्होंने कहा अच्छा हमने सुना और कुबूल किया। (दीगर मक़ाम : 2719, 3782)

قَالَ: (قَالَتِ الْأَنْصَارُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: ائْتِمْنَا بِمَا آتَيْنَا وَإِنَّا لَكَاثِرُونَ: قَالَ: لَا: فَقَالُوا: تَكْفُونَا الْمَوْنَةَ وَتُشْرِكُكُمْ فِي الثَّمَرَةِ. قَالُوا: سَبْعًا وَأَعْطَانَا.)  
[طرماء في: ٢٧١٩، ٣٧٨٢]

**तशरीह:** मा'लूम हुआ ये सूत्र जाइज़ है कि बाग़ या ज़मीन एक शख्स की हो और काम और मेहनत दूसरा शख्स करे, दोनों पैदावार में शरीक हों, इसको मुसाक़ात कहते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने जो अंसार को ज़मीन तक्सीम कर देने से मना किया उसकी वजह ये थी कि आपको यकीन था कि मुसलमानों की तरफ़ी बहुत होगी, बहुत सी ज़मीनें मिलेंगी। तो अंसार की ज़मीन उन्हीं के पास रखना आप (ﷺ) ने मुनासिब समझा।

### बाब 6 : मेवेदार पेड़ और खजूर के पेड़ काटना

और हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने खजूर के पेड़ों के बारे में हुक्म दिया और वो काट दिये गए।

٦- بَابُ قَطْعِ الشَّجَرِ وَالنَّخْلِ  
وَقَالَ أَنَسٌ: أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالنَّخْلِ فَقُطِعَ.

ये उस हदीस का टुकड़ा है जो बाबुल मसाजिद में ऊपर मौसूलन गुजर चुकी है। मा'लूम हुआ कि किसी ज़रूरत से या दुश्मन का नुक़सान करने के लिये जब उसकी हज़त हो तो मेवेदार पेड़ काटना या खेती जला देना दुरुस्त है।

2326. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया कि हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनी नज़ीर के खजूरों के बाग़ जला दिये और काट दिये। उन ही बागात का नाम बुवैरा था। और हस्सान (रज़ि.) का ये शेर उसी के बारे में हैं।

बनी लवी (कुरैश) के सरदारों पर (ग़लबा को) बुवैरा की आग ने आसान बना दिया जो हर तरफ़ फैलती ही जा रही थी।

(दीगर मक़ाम : 3021, 4031, 4032, 4884)

٢٣٢٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ حَرَّمَ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ وَقَطَعَ، وَهِيَ الْبُؤَيْرَةُ، وَلَهَا يَقُولُ حَسَّانُ:

وَهَانَ عَلَى سَرَاةِ بَنِي لُؤٍ  
يَخْرِيقُ بِالْبُؤَيْرَةِ مُسْتَطِيرٌ.

[أطرافه في: ٣٠٢١، ٤٠٣٢، ٤٨٨٤]

**तशरीह:** बनी लवी कुरैश को कहते हैं और सिरात का तर्जुमा अमाएद और मुअज़्ज़िज़ीन। बुवैरह एक मुक़ाम का नाम है जहाँ बनी नज़ीर यहूदियों के बागात थे। हुआ ये था कि कुरैश ही के लोग इस तबाही के बाअिष हुए। क्योंकि उन्होंने बनी कुरैज़ा और बनी नज़ीर को भड़काकर आँहज़रत (ﷺ) से अहदशिकनी (वादाखिलाफ़ी) कराई। कुछ ने कहा कि आपने ये पेड़ इसलिये जलवाए कि जंग के लिये साफ़ मैदान की ज़रूरत थी ताकि दुश्मनों को छुपे रहने का और कमीनगाह (घात लगाकर बैठने की जगह) से मुसलमानों पर हमला करने का मौक़ा न मिल सके। जंग की हालत में बहुत से उमूर सामने आते हैं जिनमें क़यादत करने वालों को बहुत सोचना पड़ता है। खेतों और पेड़ों का काटना अगरचे खुद इंसानी नुक़सान है मगर कुछ शदीद ज़रूरतों के तहत ये भी बर्दाश्त करना पड़ता है। आज के नामो-निहाद मुहज़ज़ब (सभ्य) लोगों को देखोगे कि जंग के



दिनों में वो क्या-क्या हरकात कर जाते हैं। भारत के ग़दर 1857 ईस्वी में अंग्रेजों ने जो मज़ालिम (अत्याचार) ढाए वो तारीख़ का एक स्याहतरिन बाब (इतिहास का काला अध्याय) है। जंगे अज़ीम (विश्वयुद्ध) में यूरोपियन क्रौमों ने क्या-क्या हरकतें कीं। जिनके तस्व्वुर (कल्पना) ही से जिस्म पर लरज़ा त्तारी हो जाता है और आज भी दुनिया में अक़षरियत (बहुसंख्यक क्रौमों) अपनी अक़लियतों (अल्पसंख्यकों) पर जो जुल्म के पहाड़ तोड़ रही है, वो दुनिया पर रोशन है। बहरहाल हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

## बाब 7 :

## باب - ٧

इसमें बाब का कोई तर्जुमा मज़कूर नहीं है गोया ये बाब पहले की एक फ़सल है और मुनासबत ये है कि जब बटाई एक मि'याद के लिये जाइज़ हुई तो मुद्दत गुज़रने के बाद ज़मीन का मालिक ये कह सकता है कि अपना पेड़ या खेती उखाड़ ले जाओ। पस पेड़ का काटना प्राबित हुआ। अगले बाब का यही मतलब है।

2327. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको यज़्ज़ा बिन सईद ने ख़बर दी, उन्हें हन्ज़ला बिन क़ैस अंज़ारी ने, उन्होंने राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मदीना में हमारे पास खेत आरों से ज़्यादा थे। हम खेतों को इस शर्त पर दूसरों को जोतने और बोन के लिये दिया करते थे कि खेत के एक मुकररा हिस्से (की पैदावार) मालिक ज़मीन ले लेगा। कुछ दफ़ा ऐसा होता कि ख़ाज़ उसी हिस्से की पैदावार मारी जाती और सारा खेत सलामत रहता। और कुछ दफ़ा सारे खेत की पैदावार मारी जाती और ये ख़ाज़ हिस्से बच जाता। इसलिये हमें इस तरह मामला करने से रोक दिया गया। और सोना और चाँदी के बदल ठेका देने का तो उस वक़्त रिवाज ही न था।

٢٣٢٧ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَنْ  
الْأَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعْدٍ عَنْ  
حَنْظَلَةَ بْنِ قَيْسٍ الْأَنْصَارِيِّ سَمِعَ رَافِعَ بْنَ  
خَدِيجٍ قَالَ: ((كُنَّا أَكْثَرَ أَهْلِ الْمَدِينَةِ  
مُؤَذَّرَعًا، كُنَّا نَكْرِي الْأَرْضَ بِالنَّحْيَةِ مِنْهَا  
مُسْمًى بِسَيِّدِ الْأَرْضِ، قَالَ لِمَا يُصَابُ  
ذَلِكَ وَتُسَلِّمُ الْأَرْضُ وَمِمَّا يُصَابُ الْأَرْضُ  
وَيُسَلِّمُ ذَلِكَ، فَهِيَ: وَأَمَّا اللَّحَبُ  
وَالْوَرِقُ فَلَمْ يَكُنْ يُؤْتَمَلُ)).

नक़दी किराये का मामला उस वक़्त नहीं हुआ करता था। इस ज़िक्र की गई सूरत में मालिक व किसान दोनों के लिये नफ़े के साथ नुक़्सान का भी हर वक़्त अन्देशा था। इसलिये उस सूरत से उस मामला करने से मना कर दिया गया।

## बाब 8 : आधी या कम ज़्यादा पैदावार पर बटाई करना

(ये बिला तरहुद/निर्विवाद जाइज़ है) और क़ैस बिन मुस्लिम ने बयान किया और उनसे अबू जा'फ़र ने बयान किया कि मदीना में मुहाजिरीन का कोई घर ऐसा न था जो तिहाई या चौथाई हिस्से पर खेती न करता हो। हज़रत अली और सअद बिन मालिक और अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.), और इमर बिन अब्दुल अज़ीज और क़ासिम और इर्वा और हज़रत अबूबक्र की औलाद और हज़रत इमर की औलाद और हज़रत अली की औलाद और इब्ने सीरीन (रजियल्लाहु अन्हुम अज्मअीन) सब बटाई पर खेती किया

## ٨ - بَابُ الْمُزَارَعَةِ بِالشُّطْرِ وَنَحْوِهِ

وَقَالَ قَيْسُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ قَالَ:  
مَا لِي فِي الْمَدِينَةِ أَهْلٌ يَتَرَكُونَ هَجْرَةَ إِلَّا  
يَزْرَعُونَ عَلَى الْفُلْبِ وَالْبُوتِ وَزَارِعٌ عَلَيْهِ  
وَسَعْدُ بْنُ مَالِكٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ  
وَعُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ وَالْقَاسِمُ وَغُرُورَةُ  
وَأَبِي بَكْرٍ وَأَبِي عُمَرَ وَأَبِي غُلَيْبٍ وَابْنُ

करते थे। और अब्दुरहमान बिन अस्वद ने कहा कि मैं अब्दुरहमान बिन यजीद के साथ खेती में साझी रहा करता था और हजरत उमर (रज़ि.) ने लोगों से खेती का मामला इस शर्त पर तैयार किया था कि अगर बीज धो खुद (हजरत उमर रज़ि.) मुहय्या कराएंगे तो पैदावार का आधा हिस्सा लें, और अगर तुखम (बीज) उन लोगों का हो जो काम करेंगे तो वे पैदावार के इतने हिस्से के वो मालिक होंगे। हसन बसरी (रह.) ने कहा कि उसमें कोई हर्ज नहीं कि ज़मीन किसी एक शाख़्स की हो और उस पर खर्च दोनों (मालिक और किसान) मिलकर करें। फिर जो पैदावार हो उसे दोनों बांट लें। जुहरी (रह.) ने भी यही फ़तवा दिया था। और हसन ने कहा कि कपास अगर आधी (लेने की शर्त) पर घुनी जाए तो उसमें कोई हर्ज नहीं। इब्राहीम, इब्ने सीरीन, अता, हक़म, जुहरी और क़तादा रहिमहुमुल्लाह ने कहा कि (कपड़ा बुनने वालों को) धागा अगर तिहाई, चौथाई या इसी तरह की शर्कत पर दिया जाए तो उसमें कोई हर्ज नहीं। मअमर ने कहा कि अगर जानवर एक मुअय्यन (निर्धारित) मुहत के लिये उसकी तिहाई या चौथाई कमाई पर दिया जाए, तो उसमें कोई क़बाहत (ख़राबी) नहीं है।

سَمِينٌ. وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْأَسْوَدِ: كُنْتُ أَشَارِكُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ فِي الزَّرْعِ. وَغَاصِلُ عَمْرِ النَّاسِ عَلَى إِنْ جَاءَ عَمْرٌ بِالْبَلَرِ مِنْ عِنْدِهِ فَلِلَّ الشُّطْرُ، وَإِنْ جَاءُوا بِالْبَلَرِ فَلَهُمْ كَذَا. وَقَالَ الْحَسَنُ: لَا بَأْسَ أَنْ تَكُونَ الْأَرْضُ لِأَحَدِهِمَا تَصْنِيفًا جَمِيعًا، فَمَا خَرَجَ فَهُوَ تَبَهُمَا. وَرَأَى ذَلِكَ الزُّهْرِيُّ. وَقَالَ الْحَسَنُ: لَا بَأْسَ أَنْ يُعْطَى الْقَطْنُ عَلَى النِّصْفِ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ وَأَبْنُ سِيرِينَ وَغَطَاءُ وَالْحَكَمُ وَالزُّهْرِيُّ وَقَادَةُ: لَا بَأْسَ أَنْ يُعْطَى الْقَوْلُ بِالْفُلْسِ أَوْ الرَّبْعِ وَنَحْوِهِ: وَقَالَ مَعْمَرٌ: لَا بَأْسَ أَنْ تَكُونَ الْمَتَاعَةُ عَلَى الْفُلْسِ وَالرَّبْعِ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى.

**तशरीह:** बाब के ज़ेल में अनेक अफ़र मज़कूर हुए हैं जिनकी तफ़सील ये कि अबू जा'फ़र इमाम मुहम्मद बाकिर (रह.) की कुत्रियत है (जिनका यहाँ ज़िक्र हुआ है), वे इमाम जा'फ़र सादिक (रह.) के वालिद हैं। हजरत अली और सअद और इब्ने मसऊद और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) के अफ़रों को इब्ने अबी शैबा ने और कासिम के अफ़र को अब्दुरज़ाक़ ने और उवा' के अफ़र को भी इब्ने अबी शैबा ने वस्ल (मिलान) किया है। और इब्ने अबी शैबा ने और अब्दुरज़ाक़ ने इमाम मुहम्मद बाकिर साहब से निकाला। उसमें ये है उनसे बटाई को पूछा तो उन्होंने कहा मैंने अबूबक्र और उमर और अली सबके खानदान वालों को ये करते देखा है। और इब्ने सीरीन के अफ़र को सईद बिन मंसूर ने वस्ल (मिलान) किया और अब्दुरहमान बिन अस्वद के अफ़र को इब्ने अबी शैबा और निसाई ने वस्ल (मिलान) किया और हजरत उमर (रज़ि.) के अफ़र को इब्ने अबी शैबा और बेहक्की और तहावी ने वस्ल (मिलान) किया है।

इमाम बुखारी (रह.) का मतलब इस अफ़र के लाने से ये है कि मुज़ारअत और मुखाबरा दोनों एक हैं। कुछ ने कहा जब बीज ज़मीन का मालिक दे तो वो मुज़ारअत है और जब काम करने वाला बीज अपने पास से डाले तो वो मुखाबरा है। बहरहाल मुज़ारअत और मुखाबरा इमाम अहमद और खुज़ैमा और इब्ने मुज़िर और ख़त्ताबी के नज़दीक दुरुस्त है और बाकी इलमा ने उसको नाजाइज़ करार दिया है। लेकिन सहीह मज़हब इमाम अहमद का है ये जाइज़ है। हसन बसरी के अफ़र को सईद बिन मंसूर ने वस्ल (मिलान) किया और जुहरी के अफ़र को इब्ने अबी शैबा ने और अब्दुरज़ाक़ ने वस्ल (मिलान) किया और इब्राहीम के क़ौल को अबूबक्र अफ़रम ने और इब्ने सीरीन के क़ौल को इब्ने अबी शैबा ने और अता और क़तादा और हक़म और जुहरी के भी अफ़र वाल को उन्होंने ही वस्ल (मिलान) किया। (वहीदी)

मतलब ये है कि मुज़ारअत की मुव्तलिफ़ शकलें हैं। मफलन फ़ी बीघा लगान रुपये की सूरत में मुक़रर कर लिया जाए, ये सूरत बहरहाल जाइज़ है। एक सूरत ये कि मालिक ज़मीन का कोई किज़्ज़ (टुकड़ा) अपने लिये ख़ास कर ले कि उसकी पैदावार ख़ास मेरी होगी या मालिक अनाज तैयार कर ले कि पैदावार कुछ भी हो, मैं इतना अनाज लूँगा। ये सूरतें इसलिये नाजाइज़ हैं कि मामला करते वक़्त दोनों फ़रीक़ नावाकिफ़ हैं। भविष्य में दोनों के लिये नफ़ा-नुक़सान का अन्देशा है। इसलिये शरीअत ने ऐसे

धोखे के मामले से रोक दिया है। एक सूरत ये है कि तिहाई या चौथाई पर मामला किया जाए ये सूरत बहरहाल जाइज है। और यहाँ उसी का बयान मकसूद है।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, वल्हक्क अन्नल बुखारी इन्नमा अराद बिसियाकि हाज़िहिल आपारि अल इशारतु इला अन्नसहाबत लम युक्कल अन्हम ख़िलाफ़ुन फ़िल्जवाज़ि खुसूसन अहलुल मदीनति फ़यल्ज़िमु मंय्युकद्दिमु अमलहुम अलल अख़बारिल मफ़ूअति अंय्यकूलू बिल्जवाज़ि अला क़ाइदतिहिम. (फ़तुहल बारी) या'नी हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उन आपार के यहाँ ज़िक्र करने से ये इशारा फ़र्माया है कि सहाबा किराम से जवाज़ के ख़िलाफ़ कुछ मन्कूल नहीं है ख़ास तौर पर मदीना वालों से।

2328. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (ख़ैबर के यहूदियों से) वहाँ (की ज़मीन में) फल खेती और जो कुछ पैदावार हो उसके आधे हिस्से पर मामला किया था। आप उसमें से अपनी बीवियों को सौ वस्क़ देते थे। जिसमें अस्सी वस्क़ ख़जूर होती थी और बीस वस्क़ जौ। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने (अपने अहदे ख़िलाफ़त में) जब ख़ैबर की ज़मीन तक्सीम की तो अज़्वाजे मुतहहरात को आपने उसका इख़्तियार दे दिया कि (अगर वो चाहें तो) उन्हें भी वहाँ का पानी और क़िल्अे ज़मीन दे दिया जाए। या वही पहली सूरत बाक़ी रखी जाए। चुनौचे कुछ ने ज़मीन लेना पसन्द किया और कुछ ने (पैदावार से) वस्क़ लेना पसन्द किया। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ज़मीन ही लेना पसन्द किया था।

(राजेअ: 2285)

۲۳۲۸- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)) عَامِلٌ خَيْرَ بِشَطْرِ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا مِنْ تَمْرٍ أَوْ زُرْعٍ، فَكَانَ يُغْطِي أَزْوَاجَهُ مِائَةً وَسَقٍ. ثَمَانُونَ وَسَقٍ تَمْرٍ، وَعِشْرُونَ وَسَقٍ شَعِيرٍ. فَقَسَمَ عُمَرُ خَيْرَ فَخَيْرِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنْ يُقْطَعَ لَهُنَ مِنَ الْمَاءِ وَالْأَرْضِ أَوْ يُمَضَى لَهُنَ؟ فَمِنْهُنَّ مَنِ اخْتَارَ الْأَرْضَ وَمِنْهُنَّ مَنِ اخْتَارَ الْوَسْقَ، وَكَانَتْ عَائِشَةُ اخْتَارَتْ

(الأرض). [راجع: ۲۲۸۵]

**तरीह:** बाब का तर्जुमा इससे ये निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ैबर वालों से आधी पैदावार पर मामला किया। रसूल करीम (ﷺ) ने अज़्वाजे मुतहहरात के लिये फ़ी नफ़र (प्रति व्यक्ति) सौ वस्क़ अनाज मुक़रर फ़र्माया था। यही तरीक़ा अहदे सिद्दीकी में रहा। मगर अहदे फ़ारूकी में यहूदियों से मामला ख़त्म कर दिया गया। इसलिये हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने अज़्वाजे मुतहहरात को अनाज या ज़मीन दोनों का इख़्तियार दे दिया था। एक वस्क़ चार मन और बारह सेर वज़न के बराबर होता है।

हदीष अन्न नबिय्य (ﷺ) आमल ख़ैबर बिशर्तिम्मा यख़रुजु मिन्हा के तहत हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, हाज़लहदीषु हुव उम्दतु मन अजाज़लमुज़ारअत वल्मुखाबरत लितकरीरिन्नबिय्य (ﷺ) कज़ालिक व इस्तिम्मारुहू अला अहदि अबी बक्र इला अन्न अज्लाहुम उमरू कमा सयाती बअद अब्बाबिन उस्तुदिल्ल बिही अला जवाज़िल मसाक़ाति फ़िन्नख़िल वल्करमि व जमीइश्शजरिल्लज़ी मिन शानिही अंय्युम्भिर बिजुज्झमअलूमिन यज्ज़लु लिआमिलि मिनअमरति व बिही क़ाललजुम्हूर. (फ़तुहल बारी) या'नी ये हदीष उम्दह दलील है उसकी जो मुज़ारअत और मुखाबरा को जाइज़ करार देता है इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) ने इसी तरीक़े कार को क़ायम रखा। और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ज़माने में भी यही दस्तूर था। यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ि.) का ज़माना आ गया। आपने बाद में उन यहूद को ख़ैबर से जलावतन कर दिया था। खेती के अलावा जुम्ला फलदार पेड़ों में भी ये मामला जाइज़ करार दिया गया कि कारक़ुनान (कार्यकर्ताओं) के लिये मालिक फलों का कुछ हिस्सा मुक़रर कर दें। जुम्हूर का यही फ़त्वा है।

उसमें खेत और बाग के मालिक का भी फ़ायदा है कि बग़ैर मेहनत के पैदावार का एक हिस्सा हासिल कर लेता है और मेहनत करने वाले के लिये भी सहूलत है कि वो अपनी मेहनत के नतीजे में तयशुदा अनुपात में पैदावार ले लेता है। मेहनत कश तब्बके के लिये ये वो ए'तिदाल का रास्ता (मध्यमार्ग) है जो इस्लाम ने पेश करके ऐसे मसाइल को हल कर दिया है। तोड़-फोड़, फ़ित्ना व फ़साद, तहज़ीबकारी का वो रास्ता जो आजकल कुछ जमाअतों की तरफ़ से मेहनतकश लोगों को उभारने के लिये दुनिया में जारी है, ये रास्ता शरअन् बिलकुल ग़लत और क़ड़अन नाजाइज़ है।

## बाब 9 : अगर बटाई में सालों की ता'दाद

### मुक़रर न करे?

## ٩- بَابُ إِذَا لَمْ يَشْطَرِطِ السَّيِّئِينَ فِي الْمَزَارَعَةِ

**तशरीह:** इमाम बुखारी (रह.) ने ये स़राहत नहीं की कि वो जाइज़ है या नाजाइज़; क्योंकि उसमें इख़्तिलाफ़ है कि मुज़ारअत में जब मि'याद न हो तो वो जाइज़ है या नहीं? इब्ने बत्ताल ने कहा कि इमाम मालिक (रह.) और शौरी (रह.) और शाफ़िई (रह.) और अबू शौर (रह.) ने उसको मकरूह कहा है लेकिन स़हीह मज़हब अहले हदीष का है कि ये जाइज़ है। और दलील उनकी यही हदीष है। ऐसी सूरत में ज़मीन के मालिक को इख़्तियार है कि जब चाहे किसान को निकाल दे। (वहीदी)

2329. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे य़ह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर के फल और अनाज की आधी पैदावार पर वहाँ के रहनेवालों से मामला किया था।

(राजेअ : 2285)

٢٣٢٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ غُنَيْدٍ أَنَّ اللَّهَ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((عَامَلَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْرَ بِشْطَرٍ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا مِنْ تَمَرٍ أَوْ زَرْعٍ)).

[راجع : ٢٢٨٥]

## बाब 10 :

## ١٠- بَابُ

2330. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कि अमर बिन दीनार ने कहा कि मैंने ताऊस से अर्ज किया, काश! आप बटाई का मामला छोड़ देते, क्योंकि उन लोगों (राफ़ेअ बिन ख़दीज और जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. वग़ैरह) का कहना है कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया है। इस पर ताऊस ने कहा कि मैं तो लोगों को ज़मीन देता हूँ और उनका फ़ायदा करता हूँ। और स़हाबा में जो बड़े आलिम थे उन्होंने मुझे ख़बर दी है। आपकी मुराद इब्ने अब्बास (रज़ि.) से थी कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे नहीं रोका। बल्कि आपने सिर्फ़ ये फ़र्माया था कि अगर कोई शख़्स अपने भाई को (अपनी ज़मीन) मुफ़्त दे दे तो ये उससे बेहतर है कि उसका महसूल ले।

(दीगर मक़ाम : 2342, 2634)

٢٣٣٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ عَمْرُو: قُلْتُ لِعَطَاوُسٍ: لَوْ تَرَكْتَ الْمَخَابِرَةَ: لَأَتَيْتُهُمْ يَزْعُمُونَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْهُ. قَالَ: أَيْ عَمْرُو، إِنِّي أُعْطِيهِمْ وَأُعْطِيَهُمْ. وَإِنْ أُعْطِيَهُمْ أَخْبَرَنِي - يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَنْهَ عَنْهُ، وَلَكِنْ قَالَ: ((رَأَى يَمْنَحُ أَحَدَكُمْ أَخَاهُ خَيْرَ لَهُ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهِ خَرْجًا مَقْلُومًا)).

[طرمه : ٢٣٤٢, ٢٣٣٤]

**तशीह:** इमाम तहावी ने जैद बिन णाबित (रज़ि.) से निकाला। उन्होंने कहा कि अल्लाह राफ़ेअ बिन खदीज को बख़शे, मैं उनसे ज़्यादा इस हदीष को जानता हूँ। हुआ ये था कि दो अंसारी आदमी आँहज़रत (ﷺ) के पास लड़ते हुए आए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुम्हारा ये हाल है तो खेतों को किराया पर मत दिया करो। राफ़ेअ ने ये लफ़्ज़ सुन लिया कि खेतों को किराये पर मत दिया करो। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने किराये पर देने को मना नहीं किया था बल्कि आपने ये बुरा समझा कि उसके सबब से लोगों में फ़साद और झगड़ा पैदा हो। हाँ ये मफ़हूम भी दुरुस्त है कि अगर किसी के पास फ़ालतू ज़मीन पड़ी हुई है तो बेहतर है कि वो अपने किसी भाई को बतौर बख़्शिश दे दे कि वो उस ज़मीन से फ़ायदा उठाए। वैसे क़ानूनी हैषियत में तो बहरहाल वो उसका मालिक है और बटाई या किराये पर भी दे सकता है।

लफ़्ज़ मुखाबरा बटाई पर किसी के खेत को जोतने और बोने को कहते हैं जबकि बीज भी काम करने वाले ही का हो। आम इस्तिलाह में उसे बटाई कहा जाता है। ख़ुबरह हिस्से को भी कहते हैं, उसी से मुखाबग निकला है। कुछ ने कहा कि ये लफ़्ज़ ख़ैबर से माखूज है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ैबरवालों से यही मामला किया था कि आधी पैदावार वो ले लें आधी आपको दें। कुछ ने कहा कि ये लफ़्ज़ ख़ब्बार से निकला है जिसके मा'नी नरम ज़मीन के हैं। कहा गया है कि फ़द फ़अना फ़ी ख़ब्बारिम मिनल अरज़ि, या'नी हम नरम ज़मीन में फेंक दिये गये। नववी ने कहा कि मुखाबरा और मुज़ारआ में ये फ़र्क है कि मुखाबरा में बीज आमिल का होता है न कि मालिक ज़मीन का और मुज़ारआ में बीज ज़मीन के मालिक का होता है।

## बाब 11 : यहूदियों के साथ बटाई का मामला करना - باب الْمُرَافَعَةِ مَعَ الْيَهُودِ

इस बाब के लाने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज ये है कि मुज़ारआ जैसी मुसलमानों में आपस में दुरुस्त है वैसे ही मुसलमान और काफ़िर में भी दुरुस्त है और चूँकि हदीष में सिर्फ़ यहूद का ज़िक्र था। लिहाज़ा बाब का तर्जुमे में उन ही को बयान किया और जब यहूद के साथ मुज़ारआ करना जाइज़ हुआ तो हर एक ग़ैर-मुस्लिम के साथ जाइज़ होगा। इस किस्म के दुनियावी, तमहुनी (सांस्कृतिक), मुआशरती (सामाजिक), इक़तिसादी (आर्थिक) मामलात में इस्लाम ने मज़हबी तंग नज़री से काम नहीं लिया है। बल्कि ऐसे सारे कामों में सिर्फ़ इंसानी फ़ायदों को सामने रखकर मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम दोनों का आपसी मामला जाइज़ रखा है। हाँ अदल हर जगह हर शख्स के लिये ज़रूरी है। इअदिलू हुव अक्वरू लित्तक्वा (अल् माइदह : 8) का यही मफ़हूम है कि अदल करो यही तक्वा से ज़्यादा करीब है। अदल का मुतालबा मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम सबसे एकसाँ है। आज के ज़माने में अहले इस्लाम ज़मीन के हर हिस्से पर फैले हुए हैं और कई बार ग़ैर-मुस्लिम लोगों से उनके दुनियावी मामलात, लेन-देन वग़ैरह के ता'ल्लुक रहते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने आज से चौदह सौ साल पहले ऐसे हालात का अंदाज़ा था। इसलिये दुनियावी उमूर में मज़हबी तअस्सुब से काम नहीं लिया गया।

2331. हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें अबैदुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ैबर की ज़मीन यहूदियों को इस शर्त पर सौंपी थी कि उसमें मेहनत करें और खेतियाँ बोएँ और उसकी पैदावार का आधा हिस्सा लें। (राजेअ : 2285)

٢٣٣١- حَدَّثَنَا بَنُو مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَعْطَى خَيْبَرَ الْيَهُودَ عَلَى أَنْ يَتَمَلَّوْهَا وَيَرْزُقُوْهَا وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا. (راجع : ٢٢٨٥)

## बाब 12 : बटाई में कौनसी शर्तें लगाना मकरूह है

2332. हमसे सद्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा कि हमको

## ١٢- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ الشُّرُوطِ فِي الْمُرَافَعَةِ

٢٣٣٢- حَدَّثَنَا سَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ

सुफयान बिन इययना ने खबर दी, उन्हें यह्या बिन सईद अंगारी ने, उन्होंने हन्जला जुरक्की से सुना कि राफ़ेअ बिन खदीज (रज़ि.) ने कहा हमारे पास मदीना के दूसरे लोगों के मुकाबले में ज़मीन ज्यादा थी। हमारे यहाँ तरीका ये था कि जब ज़मीन जिस के बदले किराये पर देते तो ये शर्त लगा देते कि उस हिस्से की पैदावार तो मेरी रहेगी और उस हिस्से की तुम्हारी रहेगी। फिर कभी ऐसा होता कि एक हिस्से की पैदावार ख़ूब होती और दूसरे की न होती। इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने लोगों को इस तरह का मामला करने से मना फ़र्मा दिया। (राज़ेअ: 2286)

यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि ये एक फ़ासिद शर्त है कि यहाँ की पैदावार मैं लूँगा वहाँ की तू ले। ये सरासर नज़ाअ (झगड़े) की सूत है। इसीलिये ऐसी शर्तें लगाना मकरूह करार दिया गया।

**बाब 13 : जब किसी के माल से उनकी इजाज़त के बग़ैर ही काश्त की और उसमें उनका ही फ़ायदा रहा हो**

۱۳ - بَابُ إِذَا زَرَعَ بِمَالٍ قَوْمٍ بغيرِ إِذْنِهِمْ، وَكَانَ فِي ذَلِكَ صَلَاحٌ لَهُمْ

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब में वही तीन आदमियों की हदीष बयान की है जो ऊपर ज़िक्र हो चुकी है और बाब का तर्जुमा तीसरे शख्स के बयान से निकला है कि उसने मज़दूर की इजाज़त के बिना उस के माल को काम में लगाया और उससे फ़ायदा कमाया, और अगर ऐसा करना गुनाह होता तो ये शख्स इस काम को बला को दूर करने का वसीला क्यों बनाता। (वहीदी)

2333. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उनसे अबू ज़मह ने बयान किया, उनसे यूसा बिन इब्नबा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तीन आदमी कहीं चले जा रहे थे कि बारिश ने उनको आ लिया। तीनों ने एक पहाड़ की ग़ार में पनाह ले ली, अचानक ऊपर से एक चट्टान ग़ार के सामने आ गिरी, और उन्हें (ग़ार के अंदर) बिलकुल बन्द कर दिया। अब उनमें से कुछ लोगों ने कहा कि तुम लोग अब अपने ऐसे कामों को याद करो। जिन्हें तुमने ख़ालिस अल्लाह तआला के लिये किया हो। और उसी काम का वास्ता देकर अल्लाह तआला से दुआ करो। मुस्विन है इस तरह अल्लाह तआला तुम्हारी इस मुसीबत को टाल दे। चुनौचे एक शख्स ने दुआ शुरू की। ऐ अल्लाह! मेरे वालिदैन् बहुत ही बूढ़े थे। और मेरे छोटे-छोटे बच्चे भी थे। मैं उनके लिये (जानवर) चराया

۲۳۳۳ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو صُمْرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا ثَلَاثَةٌ نَفِرَ يَمْشُونَ أَخْلَفَهُمُ الْمَطَرُ، فَأَوْرَأُوا إِلَى غَارٍ فِي جَبَلٍ، فَانْحَطَّتْ عَلَى فَمِ غَارِهِمْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ فَانْطَبَقَتْ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: انْظُرُوا أَعْمَالًا عَمِلْتُمُوهَا صَالِحَةً لِلَّهِ فَادْعُوا اللَّهَ بِهَا لَعَلَّهُ يَفْرَجَ بِهَا عَنْكُمْ.

قَالَ أَحَدُهُمْ: اللَّهُمَّ إِنَّهُ كَانَ لِي وَالِدَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ، وَلِي صَبِيَّةٌ صِفَارٌ كُنْتُ

करता था। फिर जब वापस घर आता तो दूध दूहता। सबसे पहले, अपनी औलाद से भी पहले, मैं वालिदैन् ही को दूध पिलाता था। एक दिन देर हो गई और रात गए तक घर वापस आया। उस वक़्त मेरे माँ-बाप सो चुके थे। मैंने मा' मूल के मुताबिक़ दूध दूहा और (उसका प्याला लेकर) मैं उनके सिरहाने खड़ा हो गया। मैंने पसन्द नहीं किया कि उन्हें जगाऊँ। लेकिन अपने बच्चों को भी (वालदैन् से पहले) पिलाना मुझे पसन्द नहीं था। बच्चे सुबह तक मेरे कदमों पर पड़े तड़पते रहे, पस अगर तेरे नज़दीक भी मेरा ये अमल सिर्फ़ तेरी रज़ामन्दी के लिये था, तो (ग़ार से इस चट्टान को हटाकर) हमारे लिये इतना रास्ता बना दे कि आसमान नज़र आ सके। चुनौचे अल्लाह तआला ने रास्ता बना दिया और उन्हें आसमान नज़र आने लगा। दूसरे ने कहा ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी। मर्द-औरतों से जिस तरह की इतिहाई मुहब्बत कर सकते हैं, मुझे उससे उतनी मुहब्बत थी। मैंने उसे अपने पास बुलाना चाहा। लेकिन वो सौ दीनार देने की मुरत में राज़ी हुई। मैंने कोशिश की और वो रक़म जमा की। फिर जब मैं ज़िना की निग्रत से उसके पास बैठ गया तो उसने मुझसे कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! अल्लाह से डर और उसकी मुहर को हक़ के बग़ैर न तोड़। मैं ये सुनते ही दूर हो गया। अगर मेरा ये अमल तेरे इल्म में भी तेरी रज़ा ही के लिये था तो (इस ग़ार से) पत्थर को हटा दे। पस ग़ार का मुँह कुछ और खुला। अब तीसरा बोला कि ऐ अल्लाह! मैं ने एक मज़दूर तीन फ़रक़ चावल की मज़दूरी पर मुकर्रर किया था। जब उसने अपना काम पूरा कर लिया। तो मुझसे कहा कि अब मेरी मज़दूरी मुझे दे दे। मैंने पेश कर दी लेकिन उस वक़्त वो इन्कार कर बैठा। फिर मैं बराबर उसकी उज्रत से खेती करता रहा। और उसके नतीजे में बढ़ने से बैल और चरवाहे मेरे पास जमा हो गए। अब वो शरइस आया और कहने लगा कि अल्लाह से डर! मैंने कहा कि बैल और उसके चरवाहे के पास जा और उसे ले ले। उसने कहा, अल्लाह से डर और मुझसे मज़ाक़ न कर, मैंने कहा कि मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ (ये सब तेरा ही है) अब तुम इसे ले जाओ। पस उसने उन सब पर क़ब्ज़ा कर लिया। इलाही! अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये काम तेरी खुशी ही के लिये किया था तो तू इस ग़ार को खोल दे। अब वो ग़ार पूरा खुल चुका था। अब

أَرْغَى عَلَيْهِمْ فَإِذَا رُحْتُ عَلَيْهِمْ خَلَبْتُ قَبْذَاتٍ بِوَالِدَيْهِمَا أَسْتَبِيهُمَا قَبْلَ بَنِي. وَإِنِّي اسْتَأْخَرْتُ ذَاتَ يَوْمٍ فَلَمْ آتِ حَتَّى أَمْسَيْتُ فَوَجَدْتُهُمَا نَامًا، فَخَلَبْتُ كَمَا كُنْتُ أَخْلُبُ، فَقُمْتُ عِنْدَ رُؤُوسِهِمَا وَ أَكْرَهُ أَنْ أَوْقِظَهُمَا، وَأَكْرَهُ أَنْ أَسْقِي الصَّبِيَّةَ وَالصَّبِيَّةَ يَتَضَاغَوْنَ عِنْدَ قَدَمِي حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ، فَإِن كُنْتُ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُهُ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَأَفْرُجْ لَنَا فُرْجَةً تَرَى مِنْهَا السَّمَاءَ، فَفَرَجَ اللَّهُ فَرَأَوْا السَّمَاءَ. وَقَالَ الْآخَرُ: اللَّهُمَّ إِنَّهَا كَانَتْ لِي بِنْتُ عَمٍّ أَحَبَّيْتُهَا كَأَخِي مَا يُحِبُّ الرَّجُلُ النِّسَاءَ، فَطَلَبْتُ مِنْهَا فَأَبَتْ حَتَّى أَتَيْتُهَا بِمِائَةِ دِينَارٍ فَبَيْعْتُ حَتَّى جَمَعْتُهَا، فَلَمَّا وَقَعْتُ بَيْنَ وَجْهِهَا قَالَتْ: يَا عَبْدَ اللَّهِ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تَفْتَحِ الْخَاتَمَ إِلَّا بِحَقِّهِ، فَقُمْتُ، فَإِن كُنْتُ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُهُ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَأَفْرُجْ عَنَّا فُرْجَةً، فَفَرَجَ. وَقَالَ الثَّالِثُ: اللَّهُمَّ إِنِّي اسْتَأْجَرْتُ أَجِيرًا بِفَرْقِ أَرْزٍ، فَلَمَّا قَضَى عَمَلَهُ قَالَ: أَغْطِيْنِي حَقِّي، فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ فَرَعِبَ عَنْهُ، فَلَمْ أَزَلْ أَرْزُهُ حَتَّى جَمَعْتُ مِنْهُ بَقْرًا وَزَعِينًا، فَبَجَاءَنِي فَقَالَ: اتَّقِ اللَّهَ. فَقُلْتُ: أَذْهَبُ إِلَى ذَلِكَ الْبَقَرِ وَزَعِينَتِهَا فَخُذْ. فَقَالَ: اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تَسْتَهْزِئْ بِي. فَقُلْتُ: إِنِّي لَا أَسْتَهْزِئُ بِكَ، فَخُذْ، فَأَخَذَهُ فَإِن كُنْتُ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَأَفْرُجْ مَا مَنَعَنِي.

अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि इब्ने इब्बा ने नाफेअ से (अपनी रिवायत में फ़रगत के बजाय) फ़सऐतु नक़ल किया है।

(राजेअ: 2215)

فَرَجَ اللَّهُ). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَقَالَ ابْنُ غَفَّةٍ عَنْ نَافِعٍ: ((فَسَعَيْتُ)).

[راجع: 2215]

दोनों का मफ़हूम एक ही है। या'नी मैंने मेहनत करके सौ अशरफ़ियाँ जमा कीं। इब्ने इब्बा की रिवायत को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल अदब में वस्ल (मिलान) किया है।

**तशरीह:** इस लम्बी हदीष के ज़ेल में हज़रत हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, औरद फ़ीहि हदीष फ़ल्लाह तिल्लज़ीन इन्नाबक़ अलैहिल्लाह व सयातिलक़ौलु फ़ी शहिही फ़ी अहादीषिल अंबियाइ वल्लमक़सूदु मिन्हु हुना क़ौलु अहदिषल्लाह तिल्लज़ीन फ़अरज़ु अलैहि अललअजीरि हक़हू फ़रगिब अन्हु फ़लम अज़ल उज़िअहू हत्ता जमअतु मिन्हा बकरन व रुआतहा फ़इन्नज़ाहिर अन्नहू अय्यन लहू उज़तहू फ़लम्मा तरक़हा बअद अन तअय्यनत लहू धुम्म तसरफ़ फ़ीहलमुस्ताज़िर बिअयनिहा मारत मिन ज़मानिही क़ाल इब्नुल्मुनीर मुताबक़तु तर्जुमति अन्नहू कद अय्यन लहू हक़हू व मक़नहू मिन्हु फ़बरिअत जिम्मतुहू बिज़ालिक फ़लम्मा तरक़हू वज़अल्मुस्ताज़िरु यदहू अलैहि वज़अन मुस्तानिफ़न धुम्म तसरफ़ फ़ीहि बितरीक़िल इस्लाहि ला बितरीक़ित्तज़इए फ़गतफ़र ज़ालिक व लम यउद तअदिय्यन व लिज़ालिक तवस्सल बिही इलल्लाहि अज़ व जल्ल व ज़अलहू मिन अफ़ज़जि आमालिही व अक़र अला ज़ालिक व वक़अत लहुल्ज़ाबतु (फ़तहूल बारी)

या'नी इस जगह हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उन तीन लोगों वाली हदीष को नक़ल फ़र्माया जिनको ग़ार ने छुपा लिया था। उसकी पूरी शरह किताब अहादीषुल अंबिया में आएगी। यहाँ मक़सूद उन तीनों में से उस एक शख़्स का क़ौल है। जिसने कहा था कि मैंने अपने मज़दूर को उसका पूरा हक़ देना चाहा, लेकिन उसने इंकार कर दिया। पस उसने उसकी खेती शुरू कर दी, यहाँ तक कि उसने उसकी आमद से बैल और उसके लिये हाली ख़रीद लिये। पस ज़ाहिर है कि उसने उस मज़दूर की उज़रत मुक़र्रर कर रखी थी मगर उसने उसे छोड़ दिया। फिर उस मालिक ने अपनी ज़िम्मेदारी पर उसे कारोबार में लगा दिया। इब्ने मुनीर ने कहा कि मुताबक़त यूँ है कि उस बाग़ वाले ने उसकी उज़रत मुक़र्रर कर दी और उसको दी। मगर उस मज़दूर ने उसे छोड़ दिया। फिर उस शख़्स ने इस्लाह और तरक़ी की निय्यत से उसे बढ़ाना शुरू कर दिया। उसी निय्यते ख़ैर की वजह से उसने उसे अपना अफ़ज़ल अमल समझा और बतौर वसीला दरबारे इलाही में पेश और अल्लाह ने उसके उस अमले ख़ैर को कुबूल फ़र्माया। इसी से मक़सूदे बाब प्राबित हुआ।

इससे आमाले ख़ैर को बतौर वसीला बवक़ते दुआ दरबारे इलाही में पेश करना भी प्राबित हुआ। यही वो वसीला है जिसका कुआन मजीद में हुक्म दिया गया है, या अय्यूहल्लज़ीन आमनुत्तकुल्लाह वब्तगू इलैहिल् वसीलत व जाहिदू फ़ी सबीलिही लअल्लकुम तुप्तिहून (अल् माइदह: 35) ऐ ईमानवालों! अल्लाह से डरो और (आमाले ख़ैर से) उसकी तरफ़ वसीला तलाश करो, और अल्लाह के दीन की इशाअत के लिये जद्दोज़हद मेहनत कोशिश बसूरते जिहाद वग़ैरह जारी रखो ताकि तुमको कामयाबी हासिल हो। जो लोग आमाले ख़ैर को छोड़कर बुजुर्गों का वसीला ढूँढते हैं और इसी ख़याले बातिल के तहत उनको उठते-बैठते पुकारते रहते हैं वो लोग शिर्क का इर्तिक़ाब करते हैं और अल्लाह के नज़दीक जुम्-ए-मुश्किन में लिखे जाते हैं। इबलीस अलैहिल्लअना का ये वो फ़रेब है जसमें नामो निहाद अहले इस्लाम की क़पीर ता'दाद गिरफ़्तार है। उसी बातिल ख़याल के तहत बुजुर्गानेदीन की तारीख़े विलादत व तारीख़े वफ़ात पर तक्रीबात की जाती हैं। कुर्बानियाँ दी जाती हैं, उर्स किये जाते हैं, उनके नामों पर नज़्रें नियाज़ें होती हैं। ये सारे काम मुश्किन से सीखे गए हैं और जो मुसलमान इनमें गिरफ़्तार हैं उनको अपने दीन व ईमान की ख़ैर मनानी चाहिये।

**बाब 14 : सहाबा किराम के औकाफ़ और ख़राजी ज़मीन और उसकी बटाई**

का बयान। और नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत इमर (रज़ि.) से

١٤ - بَابُ أَوْقَافِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ



फर्माया था। (जब वो अपना एक खजूर का बाग़ लिल्लाह वक़फ़ कर रहे थे) असल ज़मीन को वक़फ़ कर दे, उसको कोई बेच न सके अल्बत्ता उसका फल खर्च किया जाता रहे। चुनौचे इमर (रज़ि.) ने ऐसा ही किया।

وَأَرْضِ الْخَرَجِ وَمُزَارَعَتِهِمْ وَمُعَامَلَتِهِمْ  
وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَمْرٍو: ((تَصَدَّقْ بِأَصْلِهِ لَا  
بِنَاغٍ، وَلَكِنْ يَنْفَقُ ثَمَرُهُ. فَصَدَّقَ بِهِ)).

इब्ने बत्ताल ने कहा इस बाब का मतलब ये है कि सहाबा किराम (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के बाद भी आप (ﷺ) के औकाफ़ में इसी तरह मुज़ारआ करते रहे जैसे ख़ैबर के यहूदी किया करते थे।

**तशरीह:** ये एक हदीष का टुकड़ा है जिसको इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल वसाया में निकाला कि हज़रत इमर (रज़ि.) ने अपना एक बाग़ जिसको षमग़ कहते थे, सदका कर दिया और आँहज़रत से अर्ज़ किया, मैंने कुछ माल कमाया है, मैं चाहता हूँ उसको सदका करूँ वो माल बहुत उम्दा है। आपने फ़र्माया उसकी असल सदका कर दे न वो बेचा जा सके न हिबा किया जा सके और न उसमें तर्का हो बल्कि उसका मेवा ख़ैरात हुआ करे। फिर हज़रत इमर (रज़ि.) ने उसको उसी तरह अल्लाह की राह या'नी मुजाहिदीन और मसाकीन और गुलामों के आज़ाद करने और मेहमानों और मुसाफ़ि़रों और रिश्तेदारों के लिये सदका कर दिया और ये इज़ाज़त दी कि जो उसका मुतवल्ली हो वो उसमें से दस्तूर के मुवाफ़िक़ खाए, अपने दोस्तों को खिलाए लेकिन उसमें से दौलत जमा न करे। बाब में और हदीष में बंजर ज़मीन की आबादकारी का ज़िक्र है। तहावी ने कहा बंजर वो ज़मीन जो किसी की मिल्कियत न हो, न शहर और न बस्ती के बारे में हो। आज के हालात के तहत उस ता'रीफ़ से कोई ज़मीन ऐसी बंजर नहीं रहती जो इस बाब या हदीष के ज़ेल आ सके। इसलिये कि आज ज़मीन का एक एक चप्पा ख़वाह वो बंजर दर बंजर ही क्यों न हो वो हुकूमत की मिल्कियत में दाख़िल है। या किसी गाँव बस्ती के बारे में है तो उसकी मिल्कियत में शामिल है।

बहरसूरत हदीष का मफ़हूम और बाब अपनी जगह बिलकुल आज भी जारी है कि बंजर ज़मीनें आबाद करनेवालों का हक़ है और मौजूदा हुकूमत या अहले क़र्या का फ़र्ज़ है कि वो ज़मीन उसी आबाद करने वाले के नाम मुंतक़िल (ट्रांसफ़र) कर दें। उसी से ज़मीन की आबादकारी के लिये हिम्मत बढ़ाना मक़सूद है और ये हर ज़माने में इंसानियत का एक अहम मसला रहा है। जिस क़दर ज़मीन ज़्यादा आबाद होगी इंसानी नस्ल को उससे ज़्यादा नफ़ा पहुँचेगा। लफ़ज़ अरज़न मवाता, उस बंजर ज़मीन पर बोला जाता है जिसमें खेती न होती हो। उसके आबाद करने का मतलब ये कि उसमें पानी लाया जाए। फिर उसमें बाग़ लगाए जाएँ या खेती की जाए तो उसका हक़के मिल्कियत उसके आबाद करने वाले के लिये प्राबित हो जाता है। जिसका मतलब ये भी है कि हुकूमत या अहले बस्ती अगर ऐसी ज़मीन को उससे छीनकर किसी और को देंगे तो वो अल्लाह के नज़दीक ज़ालिम ठहरेंगे।

2334. हमसे सदका ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुरहमान बिन महदी ने ख़बर दी, उन्हें इमाम मालिक ने, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, कि अगर मुझे बाद में आने वाले मुसलमानों का ख़याल न होता तो मैं जितने शहर भी फ़तह करता, उन्हें फ़तह करने वालों में ही तक्सीम करता जाता, बिलकुल उसी तरह जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की ज़मीन तक्सीम फ़र्मा दी थी।

٢٣٣٤- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ  
الرَّحْمَنِ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ  
أَبِيهِ قَالَ: ((قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : لَوْ  
لَا آخِرُ الْمُسْلِمِينَ مَا قَسَحْتُ قَرِيَةً إِلَّا  
قَسَمْتُهَا بَيْنَ أَهْلِهَا كَمَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ  
خَيْرٍ)).

(दीगर मक़ाम : 3125, 4235, 4236)

[أطرافه في ٣١٢٥، ٤٢٣٥، ٤٢٣٦.]

**तशरीह:** मतलब ये है कि आने वाले दौर में ऐसे बहुत से मुसलमान लोग पैदा होंगे जो मुहताज होंगे। अगर मैं तमाम जीते हुए इलाक़ों को गाज़ियों में तक्सीम करता चला जाऊँ, तो आइन्दा मुहताज मुसलमान महरूम रह जाएँगे। ये हज़रत

उमर (रज़ि.) ने उस वक़्त फ़र्माया जब सवाद का मुल्क फ़तह हुआ।

### बाब 15 : उस शख्स का बयान जिसने बंजर ज़मीन को आबाद किया

और हज़रत अली (रज़ि.) ने कूफ़ा में वीरान इलाक़ों को आबाद करने के लिये यही हुक्म दिया था। और हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जो कोई बंजर ज़मीन को आबाद करे, वो उसी की हो जाती है। और हज़रत उमर (रज़ि.) और इब्ने औफ़ (रज़ि.) भी यही रिवायत है। अल्बत्ता इब्ने औफ़ (रज़ि.) ने आहज़रत (ﷺ) से (अपनी रिवायत में) ये ज़्यादाती की है कि बशर्ते कि वो (ग़ैर आबाद ज़मीन) किसी मुसलमान की न हो, और ज़ालिम रग वाले का ज़मीन में कोई हक़ नहीं है। और इस सिलसिलें में जाबिर (रज़ि.) की भी नबी करीम (ﷺ) से एक ऐसी ही रिवायत है।

2335. हमसे यह्या बिन बुक़ैर ने बयान किया, उनसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने कोई ऐसी ज़मीन आबाद की, जिस पर किसी का हक़ नहीं था तो उस ज़मीन का वही हक़दार है। उर्वा ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में यही फैसला किया था।

### १०- باب من احيا أرضاً مواتاً

وَرَأَى ذَلِكَ عَلَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فِي أَرْضِ الْخَرَابِ بِالْكُوفَةِ وَقَالَ عُمَرُ: مَنْ أَحْيَا أَرْضًا مَيِّتَةً فَهِيَ لَهُ. وَيُرْوَى عَنْ عُمَرَ بْنِ عَوْفٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ فِي غَيْرِ حَقٍّ مُسْلِمٍ: وَلَيْسَ لِعَرَقٍ ظَالِمٍ فِيهِ حَقٌّ. وَيُرْوَى فِيهِ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

۲۳۳۵- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْثَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُثَيْبٍ أَنَّ اللَّهَ بْنَ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَحْيَا أَرْضًا لَيْسَتْ لِأَحَدٍ فَهِيَ أَحَقُّ)). قَالَ عُرْوَةُ: لَقَضَى بِهِ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فِي خِلَافَتِهِ.

**तशरीह:** हज़रत उमर (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) के इर्शादात से ये अमर ज़ाहिर है कि ऐसी बंजर ज़मीनों की आबादकारी, फिर उनकी मिल्लियत, ये सारे काम हुक्मते वक़्त की इजाज़त से जुड़े हुए हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने जो फैसला किया था आज भी ज़्यादातर मुल्कों में यही क़ानून नाफ़िज़ है जो कि ग़ैर आबाद ज़मीनों की आबादकारी के लिये बेहद ज़रूरी है। उर्वा के अफ़र को इमाम मालिक (रह.) ने मौत़ा में वस्ल (मिलान) किया। और उसकी दूसरी रिवायत में मज़कूर है जिसको अबू उबैद क़ासिम बिन सलाम ने किताबुल अम्वाल में निकाला कि लोग हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में ज़मीनों को रोकने लगे, तब आपने ये क़ानून नाफ़िज़ किया कि जो कोई ग़ैर-आबाद ज़मीन को आबाद करेगा वो उसकी हो जाएगी। मतलब ये था कि महज़ कब्ज़ा करने या रोकने से ऐसी ज़मीन पर हक्के मिल्लियत प्राबित नहीं हो सकता जब तक उसको आबाद न करे। हाफ़िज़ साहब ने तहावी के हवाले से नक़ल फ़र्माया है कि ख़रज रज़ुलुम्मिन अहलिल बसरति युक़ालु लहु अबू अब्दिल्लाहि इला उमर फ़क्राल अन्न बिअर्ज़िल बसरति अर्ज़न ला तज़ुरू बिअहदिम्मिनल मुस्लिमीन व लैसत बिअर्ज़िन ख़राजिन फ़इन शिअत अन तन्नतअनीहा इत्तख़ज़हा कज़बन व जैतून फ़कतब उमरु इला अबी मूसा इन कानत कज़ालिक फ़क्तज़हा इय्याहु (फ़तहुल बारी) या'नी बसरा का बाशिन्दा अबू अब्दुल्लाह नामी हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बतलाया कि बसरा में एक ऐसी ज़मीन पड़ी हुई है कि जिससे किसी मुसलमान को कोई ज़रर नहीं है न वो ख़राज़ी (लगान वाली) है। अगर आप उसे मुझे दे दें तो मैं उसमें जैतून वग़ैरह के पेड़ लगा लूँगा। आपने बसरा के गवर्नर हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) को लिखा कि जाकर उस ज़मीन को देखें। अगर वाक़िया यही है तो उसे

उस शख्स को दे दें। मा'लूम हुआ कि फ़ालतू ज़मीनों को आबाद करने के लिये हुक्मत वक़्त की इजाज़त ज़रूरी है।

### बाब 16 :

### باب - ١٦

इस बाब में कोई तर्जुमा मज़कूर नहीं है। गोया पहले बाब ही की एक फ़सल है। और मुनासबत बाब की हदीस से ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जुल हुलैफ़ा की ज़मीन में ये हुक्म नहीं दिया कि जो कोई उसको आबाद करे तो वो उसकी मिल्क है क्योंकि जुल हुलैफ़ा लोगों के उतरने की जगह है। श्राबित हुआ कि ग़ैर-आबाद ज़मीन अगर पड़ाव क़ौरह के काम आती हो तो वो किसी की मिल्कियत नहीं, वहाँ हर शख्स उतर सकता है। वादी-ए-अक़ीक़ के लिये भी यही हुक्म लगाया गया। हदीसे ज़ेल के यहाँ वारिद करने का यही मक़सद है।

2336. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्रबा ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने और उनसे उनके बाप ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (मक्का के लिये तशरीफ़ ले जाते हुए) जब जुल हुलैफ़ा में नाले के निचले हिस्से में रात के आखिरी हिस्से में पड़ाव किया तो आपसे ख़वाब में कहा गया कि आप इस वक़्त एक मुबारक वादी में हैं। मूसा बिन इब्रबा (रावी हदीस) ने बयान किया कि सालिम (बिन अब्दुल्लाह बिन इमर रज़ि.) ने भी हमारे साथ वहीं ऊँट बिठाया। जहाँ अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) बिठाया करते थे, ताकि उस जगह क़याम कर सकें, जहाँ नबी करीम (ﷺ) ने क़याम फ़र्माया था। ये जगह वादी-ए-अक़ीक़ की मस्जिद से नाले के नशीब में है। वादी-ए-अक़ीक़ और रास्ते के बीच में। (राजेअ: 483)

2337. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब बिन इस्हाक़ ने ख़बर दी, उनसे इमाम औज़ाई ने बयान किया कि मुझसे यह्या ने बयान किया, उनसे इकिरमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने, और उनसे इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया रात मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से एक आने वाला फ़रिश्ता आया। आप उस वक़्त वादी अक़ीक़ में क़याम किये हुए थे (और उसने ये पैग़ाम पहुँचाया कि) इस मुबारक वादी में नमाज़ पढ़ और कहा कि कह दीजिए! उमरह हज़्ज में शरीक हो गया।

(राजेअ: 21534)

**तशरीह:** मुज्ताहिदे मुत्तलक़ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस मसले को मज़ीद वाज़ेह करना चाहते हैं कि बंजर और ग़ैर आबाद ज़मीन पर जो किसी की भी मिल्कियत न हो, तो हल चलाने वाला उसका मालिक बन जाता है क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने वादी-ए-अक़ीक़ में क़याम फ़र्माया जो किसी की मिल्कियत न थी। इसलिये ये वादी रसूले करीम (ﷺ) के क़याम

٢٣٣٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا  
إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ مُوسَى بْنِ عَقْبَةَ  
عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَرَىٰ وَهُوَ  
فِي مَعْرَسَةِ بِلْدِي الْحَلِيفَةِ فِي بَطْنِ الْوَادِي  
فَقِيلَ لَهُ: إِنَّكَ بِطَحَاءَ مُبَارَكَةٍ. فَقَالَ  
مُوسَى: وَقَدْ أَنَاخَ بَنَا سَالِمٍ بِالْمَنَاخِ  
الَّذِي كَانَ عِنْدَ اللَّهِ يُنْخِ بِهٖ يَتَحَرَّى  
مُعَرَّسَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَهُوَ أَمْتَلُ مِنَ  
الْمَسْجِدِ الَّذِي بِبَطْنِ الْوَادِي بَيْنَهُ وَبَيْنَ  
الطَّرِيقِ وَسَطٌ مِنْ ذَلِكَ)). (راجع: ٤٨٣)  
٢٣٣٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ  
أَخْبَرَنَا شُعَيْبُ بْنُ إِسْحَاقَ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ  
قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَىٰ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ  
عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ  
ﷺ قَالَ: ((الْأَيْلَةُ أَتَانِي آتٍ مِنْ رَبِّي وَهُوَ  
بِالْعَقِيقِ أَنْ صَلُّ فِي هَذَا الْوَادِي الْمُبَارَكِ  
وَقُلْ: عُمْرَةٌ لِي حَجَّةً)).

(راجع: ٢١٥٣٤)

करने की जगह बन गई, बिलकुल उसी तरह गैर आबाद और बिना मिल्कियत वाली ज़मीन का आबाद करने वाला उसका मालिक बन जाता है। आजकल चूँकि ज़मीन का चप्पा चप्पा हर मुल्क की हुकूमत की मिल्कियत माना गया है इसलिये ऐसी ज़मीनों के लिये हुकूमत की इजाज़त ज़रूरी है।

**बाब 17 : अगर ज़मीन का मालिक काश्तकार से यूँ कहे मैं तुझको उस वक़्त तक रखूँगा जब तक अल्लाह तुझको रखे और कोई मुद्दत मुकर्रर न करे तो मामला उनकी खुशी पर रहेगा (जब चाहें फ़सख़ कर दें)**

١٧- بَابُ إِذَا قَالَ رَبُّ الْأَرْضِ أَقْرُكَ مَا أَقْرَكَ اللَّهُ وَلَمْ يَذْكُرْ أَجَلًا مَعْلُومًا - فَهُمَا عَلَى تَرْضَائِهِمَا

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ ये साबित फ़र्माया कि फ़तह खैबर के बाद खैबर की ज़मीन इस्लामी मिल्कियत में आ गई थी। आपने उससे ये मसला निकाला है कि अगर फ़रीक़ैन (दोनों पक्ष) रज़ामन्द हों तो बटाई का मामला तअय्युने मुद्दत (समय सीमा के निर्धारण) के बग़ैर भी जाइज़ है। मगर ये फ़रीक़ैन की रज़ामन्दी पर मौकूफ़ (आधारित) है। खैबर की ज़मीन का मामला कुछ ऐसा था कि उसका ज़्यादातर हिस्से तो जंग के बाद फ़तह हो गया था। जो शरअी कायदे के मुताबिक़ अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और मुसलमानों की मिल्कियत में आ गया था। कुछ हिस्से सुलह के बाद फ़तह हुआ। फिर वो भी जंग के कायदे के मुताबिक़ मुसलमानों की मिल्कियत करार दिया गया। तैमा और अरीहा दो मुक़ामों के नाम हैं जो समुन्दर के किनारे बनी तै के मुल्क पर वाक़ेअ हैं। मुल्के शाम (सीरिया) की राह यहीं से शुरू होती है।

2338. हमसे अहमद बिन मित्रदाम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्बा ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी, और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (जब खैबर पर) फ़तह हासिल की थी (दूसरी सनद) और अब्दुर्रज़ाक़ ने कहा कि हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे मूसा बिन इब्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने यहूदियों और ईसाइयों को सरज़मीने हिजाज़ से निकाल दिया था और जब नबी करीम (ﷺ) ने खैबर पर फ़तह पाई तो आपने भी यहूदियों को वहाँ से निकालना चाहा। जब आपको वहाँ फ़तह हासिल हुई तो उसकी ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और मुसलमानों की हो गई थी। आपका इरादा यहूदियों को वहाँ से बाहर निकालने का था। लेकिन यहूदियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से दरख़वास्त की कि आप हमें यहीं रहने दें। हम (खैबर की अराज़ी का) सारा काम खुद करेंगे और उसकी पैदावार में आधा हिस्सा ले लेंगे। इस पर रसूलुल्लाह

٢٣٣٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمُقْدَامِ قَالَ حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ)). وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا بْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ عَفْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ: ((إِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَجْلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَمَّا ظَهَرَ عَلَى خَيْبَرَ أَرَادَ إِخْرَاجَ الْيَهُودِ مِنْهَا، وَكَانَتْ الْأَرْضُ حِينَ ظَهَرَ عَلَيْهَا لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ ﷺ وَلِلْمُسْلِمِينَ، وَأَرَادَ إِخْرَاجَ الْيَهُودِ مِنْهَا فَسَأَلَتِ الْيَهُودُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقْرَأَهُمْ بِهَا أَنْ يَكْفُوا عَمَلَهَا وَلَهُمْ بِصَفِّ التَّمْرِ، فَقَالَ لَهُمْ

(ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा जब तक चाहें तुम्हें इस शर्त पर यहाँ रहने देंगे। चुनौचे वो लोग वहीं रहे। और फिर इमर (रज़ि.) ने उन्हें तैमा और अरीहाअ की तरफ़ जलावतन कर दिया।

(राजेअ : 2285)

क्योंकि वो हर वक़्त मुसलमानों के खिलाफ़ खुफ़िया साजिशें करते रहते थे।

**बाब 18 : नबी करीम (ﷺ) के सहाबा किराम (रज़ि.) खेती-बाड़ी में एक-दूसरे की मदद किस तरह करते थे**

खेती का काम ही ऐसा है कि उसमें आपसी सहयोग व इमदाद की बेहद ज़रूरत है। इस बारे में अंसार व मुहाजिरीन का आपसी सहयोग बहुत ही क़ाबिले तहसीन (सराहनीय) है। अंसार ने अपने खेत और बाग़ मुहाजिरीन के हवाले कर दिये और मुहाजिरीन ने अपनी मेहनत से उनको गुले गुलज़ार (हरा-भरा) बना दिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु

2339. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, उन्हें राफ़ेअ बिन ख़दीज के गुलाम अबू नज़ाशी ने। उन्होंने राफ़ेअ बिन ख़दीज बिन राफ़ेअ (रज़ि.) से सुना, और उन्होंने अपने चचा जुहैर बिन राफ़ेअ (रज़ि.) से, जुहैर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें एक ऐसे काम से मना किया था जिसमें हमारा (बज़ाहिर ज़ाती) फ़ायदा था। इस पर मैंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जो कुछ भी फ़र्माया वो हक़ है। जुहैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बुलाया और दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग अपने खेतों का मामला किस तरह करते हो? मैंने कहा कि हम अपने खेतों को (बोने के लिये) नहर के करीब की ज़मीन की शर्त पर दे देते हैं। इसी तरह खज़ूर और जौ के चन्द वस्त्र पर। ये सुनकर आपने फ़र्माया कि ऐसा न करो। या खुद उसमें खेती किया करो या दूसरों से कराओ, वरना उसे यूँ ख़ाली ही छोड़ दो। राफ़ेअ (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा (आपका ये फ़र्मान) मैंने सुना और मान लिया।

(दीगर मक़ाम : 2346, 4012)

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: نَفَرُكُمْ بِهَا عَلَى ذَلِكَ مَا شِئْتُمْ، فَفَرُّوا بِهَا حَتَّى أَجْلَافُمْ عَمْرُ إِلَى تَيْمَاءَ وَأَرْيَحَاءَ)). [راجع: ٢٢٨٥]

١٨- بَابُ مَا كَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ يُوَاسِي بَعْضُهُمْ بَعْضًا فِي الزَّوَاعِي وَالْقَمَرِ

٢٣٣٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ أَبِي النَّجَّاشِيِّ مَوْلَى رَافِعٍ بْنِ خَلِيفٍ سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَلِيفٍ ابْنَ رَافِعٍ عَنْ عَمِيٍّ طَهْرٍ بْنِ رَافِعٍ قَالَ طَهْرٌ: لَقَدْ نَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ أَمْرِ كَانَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمَا. قُلْتُ: مَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَهُوَ حَقٌّ. قَالَ: دُعَايِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا تَصْنَعُونَ بِمَحَالِلِكُمْ؟)) قُلْتُ: نَزَاجِرُهَا عَلَى الرِّبْعِ وَعَلَى الْأَوْسُقِ مِنَ التَّمْرِ وَالشَّعِيرِ. قَالَ: ((لَا تَقْلُوا، أَرْغَوْهَا، أَوْ أَرْغَوْهَا، أَوْ أَمْسِكُوهَا. قَالَ رَافِعٌ: قُلْتُ سَمِعًا وَطَاعَةً)).

[طرمه ن: ٢٣٤٦، ٤٠١٢.]

**तशरीह:** कुछ रिवायतों में लफ़्ज़ अलरुबअ की जगह अलरबीइ आया है अर्बआ उसी की जमा है। रबीअ नाली को कहते हैं और कुछ रिवायतों में अलरुबअ है। जैसा कि यहाँ मज़कूर है; या'नी चौथाई पैदावार पर। लेकिन हाफ़िज़ ने कहा सहीह अलरबीअ है। मज़लब ये है कि वो ज़मीन का किराया ये ठहराते कि नालियों पर जो पैदावार हो वो तो ज़मीन वाला लेगा

और बाकी पैदावार मेहनत करने वाले की होगी। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा न करो। या तो खुद खेती करो, या कराओ या उसे खाली पड़ा रहने दो, या खेती के लिये अपने किसी मुसलमान भाई को बख़्श दो। ज़मीन का कोई खालिस हिस्से खेत वाला अपने लिये मछूस कर ले ऐसा करने से मना किया क्योंकि उसमें किसान के लिये नुक़्सान का अन्देशा है। बल्कि एक तरह से खेत वाले के लिये भी नुक़्सान ही है क्योंकि मुम्किन है उस ख़ास टुकड़े से दूसरे टुकड़ों में पैदावार बेहतर हो। पस आधा या तिहाई चौथाई बटाई पर इजाज़त दी गई और यही तरीक़ा आज तक हर जगह मुरव्वज (प्रचलित) है। नक़द रुपया वग़ैरह महसूल करके ज़मीन किसान को दे देना, ये तरीक़ा इस्लाम ने जाइज़ रखा है। आगे आने वाली अह्दाय में ये सारी तफ़सीलात मज़कूर हो रही है।

2340. हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम औज़ाई ने ख़बर दी और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि सहाबा तिहाई, चौथाई या आधा पर बटाई का मामला किया करते थे। फिर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसके पास ज़मीन हो तो उसे खुद बोए वरना दूसरों को बख़्श दे, अगर ये भी नहीं कर सकता तो उसे यूँ ही खाली छोड़ दे।

(दीगर मक़ाम : 2632)

2341. और रबीआ बिन नाफ़ेअ अबू तौबा ने कहा कि हमसे मुआविया बिन सलाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क्रबीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसके पास ज़मीन हो तो वो खुद बोए वरना अपने किसी (मुसलमान) भाई को बख़्श दे, और अगर ये नहीं कर सकता तो उसे यूँ ही खाली छोड़ दे।

2342. हमसे क्रबीसा ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने उसका (या'नी राफ़ेअ बिन ख़दीज़ रज़ि. की मज़कूरा हदीस का) ज़िक़्र ताऊस से किया तो उन्होंने कहा कि (बटाई वग़ैरह पर) खेती करा सकता है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि नबी करीम (ﷺ) ने उससे मना नहीं किया था। अल्बत्ता आपने ये फ़र्माया था कि अपने किसी भाई को ज़मीन बख़्शिष के तौर पर दे देना उससे बेहतर है कि उस पर उससे कोई महसूल ले। (इस मूरत में कि ज़मींदार के पास फ़ालतू ज़मीन बेकार पड़ी हो) (राजेअ : 2330)

2343. हमसे सुलैमान बिन हबब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि

۲۳۴۰- حَدَّثَنَا عَمِيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى قَالَ : أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانُوا يَزْرَعُونَهَا بِالْفُلْسِ وَالرُّبْعِ وَالنِّصْفِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((مَنْ كَانَتْ لَهُ أَرْضٌ فَلْيَزْرِعْهَا أَوْ لِيَمْنَحْهَا، فَإِنْ لَمْ يَفْعَلْ فَلْيَمْسِكْ أَرْضَهُ)). [طرفه ب : ۲۶۳۲].

۲۳۴۱- وَقَالَ الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ أَبُو تَوْبَةَ : حَدَّثَنَا مَعَاوِيَةُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((مَنْ كَانَتْ لَهُ أَرْضٌ فَلْيَزْرِعْهَا أَوْ لِيَمْنَحْهَا أَخَاهُ، فَإِنْ أَبَى فَلْيَمْسِكْ أَرْضَهُ)).

۲۳۴۲- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو قَالَ : ذَكَرْتُهُ لَطَاوُسٍ فَقَالَ يَزْرَعُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَنْهَ عَنْهُ، وَلَكِنْ قَالَ : ((أَنْ يَمْنَحَ أَحَدَكُمْ أَخَاهُ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ شَيْئًا مَغْلُومًا)). [راجع : ۲۳۳۰]

۲۳۴۳- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ

हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि इब्ने उमर (रज़ि.) अपने खेतों को नबी करीम (ﷺ), अबूबक्र, उमर, उस्मान (रज़ि.) के दौर में और मुआविया (रज़ि.) के शुरूआती दौर ख़िलाफ़त में (ज़मीन) किराये पर देते थे। (दीगर मक़ाम: 2345)

2344. फिर राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) के वास्ता से बयान किया गया कि नबी करीम (ﷺ) ने खेतों को किराया पर देने से मना किया था। (ये सुनकर) इब्ने उमर (रज़ि.) राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) के पास गए, मैं भी उनके साथ था। इब्ने उमर (रज़ि.) ने उनसे पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने खेतों को किराया पर देने से मना फ़र्माया। इस पर इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि आपको मा'लूम है नबी करीम (ﷺ) के अहद में हम अपने खेतों को उस पैदावार के बदल जो नालियों पर हो और थोड़ी घास के बदल दिया करते थे। (राजेअ: 2286)

क़ानून अलग है और ईषार (त्याग) अलग। हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने क़ानून नहीं बल्कि एहसान और ईषार के तरीक़े को बतलाया है उसके बरख़िलाफ़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) जवाज़ और अदमे जवाज़ की सूरत बयान फ़र्मा रहे हैं। जिसका मक़सद ये कि मदीना में जो ये तरीक़ा राज़ (चलन में) था कि नहर के पास की पैदावार ज़मीन का मालिक ले लेता था उससे आँहज़रत (ﷺ) ने मना फ़र्माया, मुत्लक़ बटाई से मना नहीं फ़र्माया। ये अलग बात है कि कोई शाख़्स अपनी ज़मीन बतौर हमददी खेती के लिये अपने किसी भाई को दे दे। आँहज़रत (ﷺ) ने इस तर्ज़े अमल की बड़े शानदार लफ़्ज़ों में रबत दिलाई है।

2345. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैस्र बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में मुझे मा'लूम था कि ज़मीन को बटाई पर दिया जाता था। फिर उन्हें डर हुआ कि मुम्किन है कि नबी करीम (ﷺ) ने इस सिलसिले में कोई नई हिदायत दी हो जिसका इल्म उन्हें न हुआ हो, चुनाँचे उन्होंने (एहतिyातन) ज़मीन को बटाई पर देना छोड़ दिया। (राजेअ: 2343)

पीछे तफ़सील से गुज़र चुका है कि बेशतर मुहाजिरीन, अंसार की ज़मीनों पर बटाई पर खेती किया करते थे। पस बटाई पर देना बिलाशुब्हा जाइज़ है। यँ एहतिyात का मामला अलग है।

حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ: ((أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يُكْرِي مَزَارِعَهُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ وَصَلَوْنَا مِنْ إِمَارَةِ مُعَاوِيَةَ)). [طرفه ب: ٢٣٤٥].

٢٣٤٤- ثُمَّ حَدَّثَ عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ كِرَاءِ الْمَزَارِعِ، فَلَغَبَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى رَافِعٍ، فَلَدَغَبَتْ مَعَهُ، فَسَأَلَهُ فَقَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ كِرَاءِ الْمَزَارِعِ، فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ كُنَّا نُكْرِي مَزَارِعَنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بَمَا عَلَى الْأَرْبَعَاءِ وَبَشْيٍ مِنَ الثَّنِيِّ)). [راجع: ٢٢٨٦].

٢٣٤٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ عَهْدَ اللَّهِ ﷻ بِنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنْتُ أَغْلُمُ لِي عَهْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّ الْأَرْضَ تُكْرَى. ثُمَّ عَشِيَّ عَهْدَ اللَّهِ ﷻ أَنْ يَكُونَ النَّبِيُّ ﷺ، قَدْ أَخَذْتُ فِي ذَلِكَ شَيْئًا لَمْ يَكُنْ يَعْلَمُهُ، فَوَلَّكَ كِرَاءَ الْأَرْضِ)). [راجع: ٢٣٤٣].

## बाब 19 : नकदी लगान पर सोने-चाँदी के बदल ज़मीन देना

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि बेहतर काम जो तुम करना चाहो ये है कि अपनी ख़ाली ज़मीन को एक साल से दूसरे साल तक किराया पर दो।

2346, 47. हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैय़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे हज़ला बिन क्रैस ने बयान किया, उनसे राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया, कि मेरे दोनों चचा (जुहैर और मुहैर रज़ि.) ने बयान किया कि वो लोग नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में ज़मीन को बटाई पर नहर (के क़रीब की पैदावार) की शर्त पर दिया करते थे। या कोई भी ऐसा ख़िज़ा होता जिसे ज़मीन का मालिक (अपने लिये) छंट लेता था। इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना फ़र्माया। हज़ला ने कहा कि इस पर मैंने राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) से पूछा, अगर दिरहम व दीनार के बदले ये मामला किया जाए तो क्या हुक्म है? उन्होंने फ़र्माया कि अगर दीनार व दिरहम के बदले में हो तो उसमें कोई हर्ज नहीं है। और लैय़ ने कहा नबी करीम (ﷺ) ने जिस तरह की बटाई से मना फ़र्माया था, वो ऐसी सूरत है कि हलाल व हराम की तमीज़ रखने वाला कोई भी शख़्स उसे जाइज़ नहीं कह सकता क्योंकि उसमें खुला धोखा है। (राजेअ : 2339)

(दीगर मक़ाम : 4013)

इससे जुम्हूर के क़ौल की ताईद होती है कि जिस मुज़ारआ में धोखा न हो मज़लन रुपया वौरह के बदल हो या पैदावार के आध या चौथाई पर हो तो वो जाइज़ है। मना वही मुज़ारअत है जिसमें धोखा हो मज़लन किसी ख़ास मुक़ाम की पैदावार पर।

## बाब 20 :

2348. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे फुलैह ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने बयान किया, (दूसरी सनद) और हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू आमिर ने बयान किया, उनसे फुलैह ने

## ١٩- بَابُ كِرَاءِ الْأَرْضِ بِالذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّ أَمَلَّ مَا أَنْتُمْ صَائِعُونَ أَنْ تَسْتَاجِرُوا الْأَرْضَ الْبَيْضَاءَ مِنَ السَّنَةِ إِلَى السَّنَةِ.

٢٣٤٦، ٢٣٤٧- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ الرَّحْمَنِ عَنْ خَنْظَلَةَ بْنِ قَهْسٍ عَنْ رَافِعِ بْنِ خَلِيدٍ قَالَ: ((حَدَّثَنِي عَمَامِي أَنَّهُمْ كَانُوا يُكْرُونَ الْأَرْضَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ بِمَا يَنْبُتُ عَلَى الْأَرْثَاءِ أَوْ هِيَ يَسْتَقْبِلُهَا صَاحِبُ الْأَرْضِ، فَتَهِيَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ذَلِكَ. فَقُلْتُ لِرَافِعٍ: فَكَيْفَ هِيَ بِالذِّهْنِ وَالذَّرْهَمِ؟ فَقَالَ رَافِعٌ: لَيْسَ بِهَا بَأْسٌ بِالذِّهْنِ وَالذَّرْهَمِ)). وَقَالَ اللَّيْثُ: وَكَانَ الَّذِي تَهَى مِنْ ذَلِكَ مَا لَوْ نَظَرَ فِيهِ ذَوْرُ الْفَهْمِ بِالْخِلَالِ وَالْحَرَامِ لَمْ يُجِزْهُ، لِمَا فِيهِ مِنَ الْمُعَاطَرَةِ.

[راجع: ٢٣٣٩] [طرفه في: ٤٠١٣].

## ٢٠- بَابُ

٢٣٤٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِلَالٌ ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ



बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने, उनसे अत्ता बिन यसार ने और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक दिन बयान फ़र्मा रहे थे..... एक देहाती भी मज्लिस में हाज़िर था कि अहले जन्नत में से एक शख्स अपने रब से खेती करने की इजाज़त चाहेगा। अल्लाह तआला उससे फ़र्माएगा क्या अपनी मौजूदा हालत पर तू राजी नहीं है? वो कहेगा, क्यों नहीं! लेकिन मेरा जी खेती करने को चाहता है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उसने बीज डाला। पलक झपकते ही वो उग भी आया। पक भी गया और काट भी लिया गया और उसके दाने पहाड़ों की तरह हुए। अब अल्लाह तआला फ़र्माता है, ऐ इब्ने आदम! इसे रख ले, तुझे कोई चीज़ आसूदा नहीं कर सकती। ये सुनकर देहाती ने कहा कि अल्लाह की क़सम! वो तो कोई कुरैशी या अंसारी ही होगा क्योंकि यही लोग खेती करने वाले हैं। हम तो खेती ही नहीं करते, इस बात पर रसूले करीम (ﷺ) को हंसी आ गई।

(दीगर मक़ाम : 7519)

عَطَاءُ بْنُ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَوْمًا يَخْذُثُ - وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ - أَنْ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ فِي الزَّرْعِ، فَقَالَ لَهُ: أَلَسْتَ لِيْمًا شَيْتًا؟ قَالَ: بَلَى وَلَكِنْ أَحِبُّ أَنْ أَرْزَعَ. قَالَ قَبَلْتُ، فَبَادَرَ الطَّرْفَ نَبَاتُهُ وَاسْتَوَاوُهُ وَاسْتَحْصَاذُهُ، فَكَانَ أَشْأَلُ الْجِبَالِ. يَقُولُ اللَّهُ: ذُوْنَكَ يَا ابْنَ آدَمَ، فَإِنَّهُ لَا يَشْبَعُكَ شَيْءٌ. فَقَالَ الْأَغْرَابِيُّ: وَاللَّهِ لَا تَجِدُهُ إِلَّا قُرْشِيًّا أَوْ أَنْصَارِيًّا، فَإِنَّهُمْ أَصْحَابُ زَرْعٍ. وَأَمَّا نَحْنُ فَلَسْنَا بِأَصْحَابِ زَرْعٍ فَضَحِكَ النَّبِيُّ ﷺ)). [طرفه في: ٧٥١٩].

हकीकत में आदमी ऐसा ही हरीस (लालची) होता है। कितनी भी ज़्यादा दौलत और राहत हो, वो उस पर क़नाअत नहीं करता। ज़्यादा तलब करना उसके ख़मीर में है, इसी तरह तलब्वुन-मिज़ाजी (अस्थिरचितता) भी। हालाँकि जन्नत में सब कुछ मौजूद होगा फिर भी कुछ लोग खेती की ख्वाहिश करेंगे, अल्लाह पाक अपने फ़ज़ल से उनकी ये ख्वाहिश भी पूरी कर देगा जैसा कि रिवायत में मज़कूर है। जो अपने मा'नी और मतलब के लिहाज़ से हक़ाइक़ (वास्तविकता) पर आधारित है।

## बाब 21 : पेड़ बोनो का बयान

2349. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे यअक़ूब बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने, उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि जुम्आ के दिन हमें बहुत खुशी (इस बात की) होती थी कि हमारी एक बूढ़ी औरत थी जो उस चुक्रन्दर को उखाड़ लाती जिसे हम अपने बाग़ की मैदों पर बो दिया करते थे। वो उनको अपनी हॉडी में पकाती और उसमें थोड़े से जौ भी डाल देती। अबू हाज़िम ने कहा मैं नहीं जानता हूँ कि सहल ने यूँ कहा न उसमें चर्बी होती न चिकनाई। फिर जब हम जुम्आ की नमाज़ पढ़ लेते तो उनकी ख़िदमत में हाज़िर होते। वो अपना पकवान हमारे सामने कर देती और इसलिये हमें जुम्आ के दिन की खुशी होती थी। हम दोपहर का

## ٢١- بَابُ مَا جَاءَ فِي الْفَرَسِ

٢٣٤٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ خَدَّثَنَا يَغْقُوبُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: ((إِنْ كُنَّا نَفْرَحُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، كَانَتْ لَنَا عَجُوزٌ تَأْخُذُ مِنْ أَصُولِ مِلْقٍ لَنَا كُنَّا نَقْرُسُهُ فِي أَرْبَعَاتِنَا فَتَجْعَلُهُ فِي قِنَرٍ لَهَا، فَتَجْعَلُ فِيهِ خَبَاتٍ مِنْ شَجِيرٍ - لَا أَعْلَمُ إِلَّا أَنَّهُ قَالَ: لَيْسَ فِيهِ شَحْمٌ وَلَا وَدَكٌ - فَإِذَا صَلَّيْنَا الْجُمُعَةَ زُرْنَا مَا فَتَرَبْتُهُ إِلَيْنَا، فَكُنَّا نَفْرَحُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ، وَمَا كُنَّا

खाना और कैलूला जुम्आ के बाद किया करते थे।

تَغْدِي وَلَا نَقِيلُ إِلَّا بَعْدَ الْجُمُعَةِ..

(राजेअ : 938)

[راجع: ٩٣٨]

सहाबा किराम का अपने बागों की मैदों पर चुकन्दर लगाने का जिन्न है। उसी से बाब का मज्मून साबित हुआ। नीज उस बूढ़ी अम्मा का जज्ब-ए-खिदमत काबिले रस्क साबित हुआ। जो अह्मद रसूल करीम (ﷺ) की जियाफत के लिये इतना एहतिमाम करती और हर जुम्आ को अह्मद रसूल (ﷺ) को अपने यहाँ मदक़ फ़र्माती (आमंत्रित करती) थी। चुकन्दर और जौ, दोनों का मख़लूत (मिक्स) दलिया जो तैयार होता है उसकी लज्जत और लताफ़त का क्या कहना? बहरहाल हदीस से बहुत से मसाइल का पता चलता है। ये भी कि जुम्आ के दिन मसनून है कि दोपहर का खाना और कैलूला जुम्आ की नमाज़ के बाद किया जाए। ख्वातीन का बवक्ते ज़रूरत अपने खेतों पर जाना भी साबित हुआ। मगर शरई पर्दा ज़रूरी है।

2350. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि लोग कहते हैं अबू हुरैरह (रज़ि.) बहुत हदीस बयान करते हैं। हालाँकि मुझे भी अल्लाह से मिलना है। (मै ग़लत बयानी कैसे कर सकता हूँ) ये लोग ये भी कहते हैं कि मुहाजिरीन और अंसार आखिर उसकी तरह क्यूँ नहीं अह्मदीय बयान करते बात ये है कि मेरे भाई मुहाजिरीन बाज़ारों में ख़रीद-फ़रोख़्त में मशगूल रहा करते और मेरे भाई अंसार को उनकी जायदाद (खेत और बागात वगैरह) मशगूल रखा करती थी। सिर्फ़ मैं एक मिसकीन आदमी था, पेट भर लेने के बाद मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में बराबर हाज़िर रहता था। जब ये सब हज़रात ग़ैरहाज़िर रहते तो मैं हाज़िर होता। इसलिये जिन अह्मदीय को ये याद नहीं कर सकते थे, मैं उन्हें याद रखता था। और एक दिन नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुममें से जो शख्स भी अपने कपड़े को मेरी इस तक़रीर के ख़त्म होने तक फैलाए रखे फिर (तक़रीर ख़त्म होने पर) उसे अपने सीने से लगा ले तो वो मेरी अह्मदीय को कभी नहीं भूलेगा। मैंने अपनी कमली को फैला दिया। जिसके सिवा मेरे बदन पर और कोई कपड़ा नहीं था। जब अहज़रत (ﷺ) ने अपनी तक़रीर ख़त्म फ़र्माई तो मैंने वो चादर अपने सीने से लगा ली। उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर मब्रूक़ किया! फिर आज तक मैं आप के उसी इशार्द की वजह से आप की कोई हदीस नहीं भूला। अल्लाह गवाह है कि अगर कुआन की

٢٣٥٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((يَقُولُونَ إِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ يَكْثُرُ الْحَدِيثَ، وَاللَّهُ الْمَوْعِدُ. وَيَقُولُونَ: مَا لِلْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ لَا يُحَدِّثُونَ مِثْلَ أَحَادِيثِهِ؟ وَإِنْ إِيَّاهُ مِنْ الْمُهَاجِرِينَ كَانَ يُشْفَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالسَّوِاقِ، وَإِنْ إِيَّاهُ مِنَ الْأَنْصَارِ كَانَ يُشْفَلُهُمْ عَمَلُ أَمْوَالِهِمْ، وَكَنتُ أَمْرًا مَسْكِينًا أَلْزَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى مِلَّةٍ بَطْنِي، فَأَخْضَرُ حِينَ يَحْيُونَ، وَأَعْي حِينَ يَنْسُونَ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ: لَنْ يَسْطُرَ أَحَدٌ مِنْكُمْ ثَوْبَهُ - حَتَّى أَقْضِيَ مَقَالَتِي هَذِهِ - ثُمَّ يَجْمَعُهُ إِلَى صَدْرِهِ فَيَنْسَى مِنْ مَقَالَتِي شَيْئًا أَبَدًا، فَبَسَطْتُ ثَوْبَهُ لَيْسَ عَلَيَّ ثَوْبٌ غَيْرُهَا حَتَّى قَضَى النَّبِيُّ ﷺ مَقَالَتَهُ ثُمَّ جَمَعْتُهَا إِلَى صَدْرِي، فَوَ الَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ مَا نَسِيتُ مِنْ مَقَالَتِهِ بَلِّغْ إِلَى يَوْمِي هَذَا. وَاللَّهُ لَوْ رَأَيْتَنِي فِي كِتَابِ اللَّهِ مَا خَدَعْتُكُمْ شَيْئًا

दो आयतें न होतीं तो मैं तुमको कोई हदीष कभी बयान नहीं करता। (आयत) इज़ल्लज़ीन यक्तुमून मा अज़लना मिनल् बय्यिनात से अल्लाह तआला के इश्राद अर्रहीम तक। (जिसमें इस दीन को छुपाने वाले पर, जिसे अल्लाह तआला ने नबी करीम (ﷺ) के जरिये दुनिया में भेजा है, सख्त लअनत की गई है।) (राजेअ: 118)

أَبَدًا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ  
الْآيَاتِ وَالْهُدَى - إِلَى قَوْلِهِ -:  
الرَّحِيمِ ﴿١١٨﴾ [راجع: ١١٨]

ये हदीष कई जगह नकल हुई है, और मुज्तहिदे मुत्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इससे बहुत से मसाइल का इस्तिखराज फ़र्माया है, यहाँ इस हदीष के लाने का मक़सद ये दिखलाना है कि अंसारे मदीना आम तौर पर खेती-बाड़ी का काम किया करते थे। इससे प्राबित हुआ कि खेतों और बाग़ों को मआश का जरिया बनाना कोई ऐब वाला काम नहीं है बल्कि बाअिअे अज़ो-प्रवाब है कि जितनी मख़लूक उनसे फ़ायदा उठाएंगी उसके लिये अज़ो-प्रवाब में ज़्यादाती का मौजिब होगा। अल्हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक।

## 42. किताबुल मसाक़ात

# किताब मसाक़ात के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मसाक़ात दर हक्कीक़त मुज़ारआ की क्रिस्म है। फ़र्क़ ये है कि मुज़ारआ ज़मीन में की जाती है और मसाक़ात पेड़ों में, या'नी एक शख्स के पेड़ हों वो दूसरे से यूँ कहे, तुम इनको पानी दिया करो, उनकी ख़िदमत करते रहो, पैदावार हम तुम बांट लेंगे, उसी बारे के मसाइल बयान होंगे, मसाक़ात सक्का से मुश्तक़ है जिसके मा'नी सैराब करना है। इस्तिलाह में यही कि बाग़ या खेत का मालिक अपना बाग़ या खेत इस शर्त पर किसी को दे दे कि उसकी आबपाशी (सिंचाई) और मेहनत उसके ज़िम्मे होगी और पैदावार में दोनों शरीक रहेंगे।

**बाब : खेतों और बाग़ों के लिये पानी में से अपना हिस्सा लेना**

और अल्लाह तआला ने सूरह मोमिनून में फ़र्माया, और हमने पानी से हर चीज़ को ज़िन्दा किया। अब भी तुम ईमान नहीं लाते। और अल्लाह तआला का ये फ़र्मान कि, देखा तुमने उस पानी को जिसको तुम पीते हो, क्या तुमने बादलों से उसे उतारा है, या उसको उतारने वाला मैं हूँ। अगर मैं चाहता तो उसको खारा बना देता। फिर

بَابُ فِي الشَّرْبِ ، وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :  
وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا  
يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿٢﴾ أَفَرَأَيْتُمْ  
الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ  
الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ

भी तुम शुक्र अदा नहीं करते, उजाजा (कुर्आन मजीद की आयत में) खारे पानी के मा'नी में है और मुज्ज बादल को कहते हैं।

أَجَا جَا فَلَوْ لَا تَشْكُرُونَ.  
الأَجَا ج : الْمَزْنُ السَّحَابُ.

### बाब 1 : पानी की तक्सीम

#### ١- بَابُ فِي الشَّرْبِ

और जो कहता है पानी का हिस्सा ख़ैरात करना और हिबा करना और उसकी वसियत करना जाइज़ है वो पानी बटा हुआ हो या बिन बटा हुआ। और हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई है जो बीरे रूमा (मदीना का एक मशहूर कुँआ) को ख़रीद ले और अपना डोल उसमें उसी तरह डाले जिस तरह और मुसलमान डालें (या'नी उसे वक्फ़ कर दे) आख़िर हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने उसे ख़रीदा।

وَمَنْ رَأَى صَدَقَةَ الْمَاءِ وَهَبَتْهُ وَوَصِيَّتَهُ جَائِزَةً ، مَقْسُومًا كَانَ أَوْ غَيْرَ مَقْسُومٍ .  
وَقَالَ عُفْمَانُ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : «مَنْ يَشْتَرِي بِنْرَ رُومَةٍ لِيَكُونَ ذَلُومَةٌ لَهَا كِلَاءٌ الْمُسْلِمِينَ» فَاشْتَرَاهَا عُفْمَانُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ.

**तशरीह :** बीरे रूमा मदीना का मशहूर कुँआ एक यहूदी की मिल्कियत में था। मुसलमान उससे ख़रीद कर पानी इस्ते'माल करते थे। इस पर रसूले करीम (ﷺ) ने उसे ख़रीदने के लिये और आम मुसलमानों के लिये वक्फ़ करने के लिये तरगीब दिलाई जिस पर हज़रत इब्मान ग़नी (रज़ि.) ने उसे ख़रीदकर मुसलमानों के लिये वक्फ़ कर दिया। कुँआ, नहर, तालाब वग़ैरह पानी के ज़ख़ीरे किसी भी फ़र्द की मिल्कियत में आ सकते हैं। इसलिये इस्लाम में उन सबकी ख़रीद व फ़रोख़्त व हिबा और वसियत वग़ैरह जाइज़ रखी है।

हज़रत इब्मान (रज़ि.) का ये कुँआ अल्हम्दुलिल्लाह आज भी मौजूद है। हुकूमते सज़्ज़दिया ने इस पर एक बेहतरीन फ़ार्म कायम किया हुआ है और मशीनों से यहाँ सिंचाई की जाती है। अल्हम्दुलिल्लाह कि 1389 हिजरी में हज्ज व ज़ियारत के मौक़े पर यहाँ भी जाने का मौक़ा मिला। जो जामिआ इस्लामिया की तरफ़ है और हरमे मदीना से हर वक़्त मोटरें इधर आती जाती रहती हैं। यहाँ का माहौल बेहद खुशगवार है। अल्लाह हर मुसलमान को ये माहौल देखना नसीब फ़र्माए। आमीन।

2351. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू गुस्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में दूध और पानी का एक प्याला पेश किया गया। आप (ﷺ) ने उसको पिया। आपकी दाएँ तरफ़ एक कम इम्र लड़का बैठा हुआ था। और कुछ बड़े-बूढ़े लोग बाएँ तरफ़ बैठे हुए थे। आपने फ़र्माया लड़के! क्या तू इजाज़त देगा कि मैं पहले ये प्याला बड़ों को दे दूँ। इस पर उसने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं तो आपके जूठे में से अपने हिस्से को, अपने सिवा किसी को नहीं दे सकता। चुनौचे आपने वो प्याला उस लड़के को दे दिया।

٢٣٥١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو حَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : «رَأَى النَّبِيُّ ﷺ بِقَدَحٍ فُشِّرَبَ مِنْهُ ، وَعَنْ يَمِينِهِ غُلَامٌ أَصْفَرُ الْقَوْمِ وَالْأُصْبَاحُ عَنْ يَسَارِهِ ، فَقَالَ يَا غُلَامُ : «أَتَأْذِنُ لِي أَنْ أَغْطِيَةَ الْأُصْبَاحُ ؟» قَالَ : مَا كُنْتُ لِأَوْزِرَ بِفَضْلِي مِنْكَ أَحَدًا يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَأَغْطَاهُ (١)».

(दीगर मक़ाम : 2366, 2451, 2602, 5620)

أطرافه في : ٢٣٦٦ ، ٢٤٥١ ، ٢٦٠٢ ،

[٥٦٢٠]

**तशीह:**

ये नौ उम्र लड़का हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) थे और इतिफ़ाक़ से ये उस वक़्त मजलिस में दाएँ जानिब बैठे हुए थे। दीगर शुयूख़ और बुजुर्ग़ सहाबा किराम बाई जानिब थे। आँहज़रत (ﷺ) ने जब बाकी बचे पानी को तक्सीम करना चाहा तो ये तक्सीम दाई तरफ़ से शुरू होनी थी और उसका हक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ही को पहुँचता था। आँहज़रत (ﷺ) ने बाई जानिब वाले बुजुर्ग़ों का ख़याल फ़र्माकर अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से इजाज़त चाही लेकिन वो इसलिये तैयार न हुए कि इस तौर पर आँहज़रत (ﷺ) का बचा हुआ पानी कहाँ और कब नज़ीब होना था। इसलिये उन्होंने उस ईषार (त्याग करने) से साफ़ मना कर दिया। इस हदीष की बाब से मुनासबत यूँ है कि पानी की तक्सीम हो सकती है और उसके हिस्से की मिल्कियत जाइज़ है, वरना आप (ﷺ) उस लड़के से इजाज़त तलब क्यों करते? हदीष से ये भी निकला कि तक्सीम में पहले दाहिनी तरफ़ वालों का हिस्सा है, फिर बाई तरफ़ वालों का। पस आँहज़रत (ﷺ) ने अपना बचा हुआ पानी उस लड़के पर हिबा कर दिया। इससे पानी का हिबा कर देना भी षाबित हुआ और ये भी षाबित हुआ कि हक़ और नाहक़ के मुकाबले में किसी बड़े से बड़े आदमी का भी लिहाज़ नहीं रखा जा सकता। हक़ बहरहाल हक़ है, अगर वो किसी छोटे आदमी को पहुँचता है तो बड़ों का फ़र्ज़ है कि बरज़ा वरग़बत (खुशी-खुशी) उसे उसके हक़ में मुंतक़िल होने दें और अपनी बड़ाई का ख़याल छोड़ दें। लेकिन आज के दौर में ऐसे ईषार करने वाले लोग बहुत कम हैं। ईषार और कुर्बानी ईमान का तकाज़ा है। अल्लाह हर मुसलमान को ये तौफ़ीक़ नज़ीब करे, आमीन।

2352. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शूऐब ने ख़बर दी, उनसे जुस्ती ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलल्लाह (ﷺ) के लिये घर में पली हुई बकरी का दूध दूहा गया, जो अनस बिन मालिक (रज़ि.) ही के घर में पली थी। फिर उसके दूध में उस कुँए का पानी मिलाकर जो अनस (रज़ि.) के घर में था, आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में उसका (प्याला) पेश किया गया। आपने उसे पिया। जब अपने मुँह से प्याला आपने अलग किया तो बाई तरफ़ अबूबक्र (रज़ि.) थे और दाई तरफ़ एक देहाती था। हज़रत उमर (रज़ि.) डरे कि आप ये प्याला देहाती को न दे दें। इसलिये उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अबूबक्र (रज़ि.) को दे दीजिये। आपने प्याला उसी देहाती को दे दिया जो आपकी दाई तरफ़ बैठा था और फ़र्माया कि दाई तरफ़ वाला ज़्यादा हक़दार है, फिर वो जो उसकी दाहिनी तरफ़ हो।

(दीगर मक़ाम : 2571, 5612, 5619)

۲۳۵۲- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: ((حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهَا حَلَبَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، شاةً دَاجِنَةً - وَهُوَ فِي دَارِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ - وَشَيْبٌ لَبَنَهَا بِمَاءٍ مِنَ الْبَيْتِ الَّذِي فِي دَارِ أَنَسٍ، فَأَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْقَدَحَ فَشَرِبَ مِنْهُ، حَتَّى إِذَا نَزَعَ الْقَدَحَ عَنْ فَمِهِ، وَعَلَى يَمَانِهِ أَبُو بَكْرٍ وَعَنْ يَمِينِهِ أُغْرَابِيٌّ، فَقَالَ عُمَرُ - وَخَافَ أَنْ يُعْطِيَ الْأُغْرَابِيَّ - أَعْطِ أَبَا بَكْرٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، فَأَعْطَاهُ الْأُغْرَابِيُّ الَّذِي عَلَى يَمِينِهِ ثُمَّ قَالَ: الْيَمَنُ فَالْأَيْمَنُ)).

[أطرافه في : ۲۵۷۱، ۵۶۱۲، ۵۶۱۹].

**तशीह:**

इस हदीष से भी पानी का तक्सीम या हिबा करना षाबित हुआ और ये भी षाबित हुआ कि इस्लाम में हक़ के मुकाबले पर किसी के लिये रियायत नहीं है। कोई कितनी ही बड़ी शख्सियत क्यों न हो। हक़ उससे भी बड़ा है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बुजुर्गी में किसी को शक नहीं हो सकता है मगर आँहज़रत (ﷺ) ने आपको नज़रअंदाज़ फ़र्माकर उस देहाती को वो पानी दिया इसलिये कि क़ानून देहाती ही के हक़ में था। इमामे आदिल की यही शान होनी चाहिये और इअदिलू हुब अवरबू लिच्चव्वा (अल् माइदह : 8) का भी यही मतलब है। यहाँ उस देहाती से इजाज़त भी नहीं ली गई जैसे कि इब्ने

अब्बास (रज़ि.) से ली गई थी। इस डर से कि कहीं देहाती बदगुमान न हो जाए।

**बाब 2 :** उसके बारे में जिसने कहा कि पानी का मालिक पानी का ज़्यादा हक़दार है यहाँ तक कि वो (अपना खेत बागात वगैरह) सैराब न कर ले क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़रूरत से ज़्यादा जो पानी हो उससे किसी को न रोका जाए

2353. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज्ज़िनाद ने, उन्हें अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया बचे हुए पानी से किसी को उसके लिये न रोका जाए कि इस तरह जो ज़रूरत से ज़्यादा घास हो वो भी रुकी रहे।

(दीगर मक़ाम : 2354, 6962)

**तशरीह :** इसका मतलब ये है कि किसी का कुँआ एक मुकाम पर हो, उसके आसपास घास हो जिसमें आम तौर पर सबको चराने का हक़ हो। मगर कुँए वाला किसी के जानवरों को पानी इस वजह से न पीने दे कि जब पानी पीने का न मिलेगा तो लोग अपने जानवर भी वहाँ न चराएँगे और घास महफूज़ रहेगी। जुम्हूर के नज़दीक ये हदीस उस कुँए पर महमूल है जो मिल्कियत वाली ज़मीन में हो या वीरान ज़मीन में बशर्त कि मिल्कियत की निर्यत से खोदा गया हो और जो कुँआ अल्लाह की तमाम खिलक़त (सष्टि) के आराम के लिये वीरान ज़मीन में खोदा जाए उसका पानी स्वामित्व वाला नहीं होता। लेकिन खोदने वाला जब तक वहाँ से कूच न करे उस पानी का ज़्यादा हक़दार वही होता है और ज़रूरत से ये मुराद है कि अपने और बाल बच्चों और ज़राअत (खेती) और मवेशी के लिये जो पानी दरकार हो। उसके बाद जो फ़ाज़िल (अतिरिक्त) पानी हो उसका रोकना जाइज़ नहीं। ख़त्ताबी ने कहा कि ये मुमानअत तन्ज़ीही है मगर उसकी दलील क्या है पस ज़ाहिर है कि नही तहरीमी है और पानी का न रोकना वाजिब है। अब इख़्तिलाफ़ है कि फ़ाज़िल पानी की क़ीमत लेना उसको रोकना है या नहीं, तरज़ीह उसी को हासिल है कि फ़ाज़िल पानी की क़ीमत न ली जाए क्योंकि ये भी एक तरह से उसका रोकना ही है।

2354. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैस ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने मुसय्यिब और अबू सलमा ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़ालतू पानी से किसी को इस गर्ज़ से रोका जाए कि जो घास ज़रूरत से ज़्यादा हो उसे भी रोक लो। (राजेअ : 2353)

**बाब 3 :** जिसने अपनी मिल्क में कोई कुँआ खोदा, उसमें कोई गिरकर मर जाए तो उस पर तावान न होगा

۲- بَابُ مَنْ قَالَ : إِنَّ صَاحِبَ الْمَاءِ أَحَقُّ بِالْمَاءِ حَتَّى يَرَوِيَ ، لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ : (( لَا يَمْنَعُ فَضْلُ الْمَاءِ ))

۲۳۵۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : (( لَا يَمْنَعُ فَضْلُ الْمَاءِ لِمَنْعَ بِهِ الْكَلَالَةَ )) .

[طرفاه في ۲۳۵۴، ۶۹۶۲]

۲۳۵۴- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ ابْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : (( لَا تَمْنَعُوا فَضْلَ الْمَاءِ لِمَنْعُوا بِهِ فَضْلَ الْكَلَالَةِ )) . [راجع: ۲۳۵۳]

۳- بَابُ مَنْ حَفَرَ بَرًا فِي مِلْكِهِ لَمْ يَضْمَنْ

इमाम बुखारी (रह.) के ये क़ैद लगाने से मा'लूम होता है कि वो इस बारे में अहले कूफ़ा के साथ मुतफ़ि़क़ (सहमत) हैं कि अगर ये कुँआ अपनी मिल्क में खोदा हो तब कुँए वाले पर ज़िमान न होगा और जुम्हूर कहते हैं कि किसी हाल में ज़िमान न होगा ख़्वाह अपनी मिल्क में हो या ग़ैर मिल्क में। मज़ीद तफ़्सील किताबुद्दियात में आएगी।

2355. हमसे महमूद बिन ग़ैलान ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मूसा ने ख़बर दी, उन्हें इस्राईल ने, उन्हें अबू हुसैन ने, उन्हें अबू सलालेह ने और उनसे अबू हुसैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कान (में मरने वाले) का तावान नहीं, कुँए (में गिरकर मर जाने वाला) का तावान नहीं। और किसी का जानवर (अगर किसी के आदमी को मार दे तो उसका) तावान नहीं। गढ़े हुए माल में से पाँचवाँ हिस्सा देना होगा। (राजेअ: 1499)

#### बाब 4 : कुँए के बारे में झगड़ना और उसका फ़ैसला करना

2356, 57. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू हम्ज़ा ने बयान किया, उनसे अज़मश ने, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स कोई ऐसी झूठी क़सम खाए जिसके ज़रिये वो किसी मुसलमान के माल पर नाहक़ क़ब्ज़ा कर ले तो वो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआला उस पर बहुत ज़्यादा ग़ज़बनाक होगा। और फिर अल्लाह तआला ने (सूरह आले इमरान में) आयत नाज़िल फ़र्माई, कि जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के ज़रिये दुनिया की थोड़ी सी दौलत ख़रीदते हैं, आख़िर आयत तक। फिर अशअष (रज़ि.) आए और पूछा कि अबू अब्दुर्रहमान (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) ने तुमसे क्या हदीष बयान की है? ये आयत तो मेरे बारे में नाज़िल हुई थी। मेरा एक कुँआ मेरे चचाज़ाद भाई की ज़मीन में था। फिर झगड़ा हुआ तो अहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि तू अपने गवाह ला। मैंने अर्ज़ किया कि गवाह तो मेरे पास नहीं हैं। आपने फ़र्माया कि फिर फ़रीके मुखालिफ़ से क़सम ले ले। इस पर मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये तो क़सम खा बैठेगा। ये सुनकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये फ़र्माया। और अल्लाह तआला ने भी इस बारे में ये आयत नाज़िल फ़र्माकर इसकी तस्दीक़ की।

(दीगर मक़ाम: 2416, 2417, 2515, 2516, 2666, 2627,

۲۳۵۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((الْمَغْدُونُ جَبَّارٌ وَالْبُرُّ جَبَّارٌ، وَالْفُجَاءَةُ جَبَّارٌ وَلَيْسَ الرَّسَّازُ الْخُمْسُ)). (راجع: ۱۴۹۹)

۴- بَابُ الْخُصُومَةِ فِي الْبُيْرِ، وَالْقَضَاءِ فِيهَا

۲۳۵۶، ۲۳۵۷- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ خَلَفَ عَلَى يَمِينٍ يَقْطَعُ بِهَا مَالَ أَرْمِيهِ فَوْعَلَيْهَا فَاجِرٌ لِيَ اللَّهِ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبَانٌ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: هَؤُلَاءِ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا.)) الآية فَجَاءَ الْأَشْعَثُ فَقَالَ: مَا حَدَّثَكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ فِي أَنْزَلْتَ هَؤُلَاءِ الْآيَةَ كَأَنْتَ لِي بَنٌ فِي أَرْضِ ابْنِ عَمٍّ لِي، فَقَالَ لِي: شُهُودُكَ، قُلْتُ مَا لِي شُهُودٌ، قَالَ: ((فَيْبِئْ)). قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذَا يَخْلِفُ. فَذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ هَذَا. فَأَنْزَلَ اللَّهُ ذَلِكَ تَصْدِيقًا لَهُ.))

[اطرافه في: ۲۴۱۶، ۲۵۱۵، ۲۶۶۶،

۲۶۶۹، ۲۶۷۳، ۲۶۷۶، ۴۵۴۹]

2669, 2673, 2676, 4549, 6659, 6676, 7183, 7445)

[٧٤٤٥, ٧١٨٣, ٦٦٧٦, ٦٦٥٩]

[أطرافه في : ٢٥١٦, ٢٤١٧, ٢٦٦٧]

## बाब 5 : उस शख्स का गुनाह जिसने किसी मुसाफिर को पानी से रोक दिया

## ٥ - بَابُ إِمْنٍ مَنْ مَنَعَ ابْنَ السَّبِيلِ مِنَ الْمَاءِ

या'नी जो पानी उसकी ज़रूरत से ज्यादा हो जैसे हदीष में उसकी तसरीह है और ज़रूरत के मुवाफ़िक़ (अनुरूप) जो पानी हो उसका मालिक ज्यादा हक़दार है बनिस्बत मुसाफ़िर के।

2358. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया कि मैंने अबू सलालेह से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तीन तरह के लोग वो होंगे जिनकी तरफ़ क़यामत के दिन अल्लाह तआला नज़र भी नहीं उठाएगा और न उन्हें पाक करेगा बल्कि उनके लिये दर्दनाक अज़ाब होगा। एक वो शख्स जिसके पास रास्ते में ज़रूरत से ज्यादा पानी हो और उसने किसी मुसाफ़िर को उसके इस्ते'माल से रोक दिया। दूसरा वो शख्स जो किसी हाकिम से बेअत सिर्फ़ दुनिया के लिये करे कि अगर वो हाकिम उसे कुछ दे तो वो राज़ी हो जाए वरना ख़फ़ा हो जाए। तीसरे वो शख्स जो अपना (बेचने का) सामान अम्र के बाद लेकर खड़ा हो और कहने लगे कि उस अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई ओर सच्चा मअबूद नहीं, मुझे इस सामान की क़ीमत इतनी-इतनी मिल रही थी। इस पर एक शख्स ने उसे सच समझा (और उसकी बताई हुई क़ीमत पर उस सामान को ख़रीद लिया) फिर आपने उस आयत की तिलावत फ़र्माई, जो लोग अल्लाह को दरम्यान में देकर और झूठी क़समें खाकर दुनिया का थोड़ा सा माल मोल लेते हैं। आख़िर तक।

(दीगर मक़ाम : 2369, 2672, 7212, 7446)

٢٣٥٨ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ عَنِ الْأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((ثَلَاثَةٌ لَا يَنْظُرُ اللَّهُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ: رَجُلٌ كَانَ لَهُ فَضْلٌ مَاءٍ بِالطَّرِيقِ، فَمَنَعَهُ مِنْ ابْنِ السَّبِيلِ. وَرَجُلٌ بَاتَعَ إِمَامَهُ لَا يُبَايِعُهُ إِلَّا لِلدُّنْيَا، فَإِنْ أُعْطَاهُ مِنْهَا رَضِيَ، وَإِنْ لَمْ يَغْطِهِ مِنْهَا سَخِطَ. وَرَجُلٌ أَقَامَ سِلْعَتَهُ بَعْدَ الْعَصْرِ فَقَالَ: وَاللَّهِ الْبَيْ لَا إِلَهَ غَيْرُهُ لَقَدْ أُعْطِيتُ بِهَا كَذَا وَكَذَا، فَصَدَّقَهُ رَجُلٌ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾...)

[أطرافه في : ٢٣٦٩, ٢٦٧٢, ٧٢١٢]

[٧٤٤٦]

**तशरीह:** हदीष में जिन तीन मलज़न (लानतवाले) आदमियों का ज़िक्र किया गया है उनकी जिस क़दर भी मज़म्मत (निन्दा) की जाए कम है। अव्वल फ़ालतू पानी से रोकने वाला, ख़ास तौर पर प्यासे मुसाफ़िर को महरूम (वंचित) रखने वाला, वो इंसानियत का मुज़्रिम है, अख़लाक़ का बागी है, हमदर्दी का दुश्मन है। उसका दिल पत्थर से भी ज्यादा सख़्त है। उसे एक प्यासे मुसाफ़िर को देखकर नरमदिल होना चाहिये, मुसाफ़िर की जान ख़तरे में है उसकी बका के लिये उसे पानी पिलाना चाहिये न कि उसे प्यासा लौटा दे। दूसरा वो इंसान जो इस्लामी तन्ज़ीम में महज़ अपने ज़ाती मफ़ाद के लिये घुस जाए और वो मफ़ाद के ख़िलाफ़ ज़रा सी बात भी बर्दाश्त न करे। यही वो बदतरीन इंसान है जो मिल्ली इतिहाद का दुश्मन क़रार दिया जा



सकता है और ऐसे गद्दार की जिस क़दर भी मज़म्मत की जाए कम है। इस ज़माने में इस्लामी मदरसों व दीगर तन्ज़ीमों में बड़ी तादाद में ऐसे ही लोग बरसरे इक्तिदार (प्रभुत्वशाली) हैं, जो महज़ ज़ाती मफ़ाद (व्यक्तिगत लाभ) के लिये उनसे चिमटे हुए हैं। अगर किसी वक़््त उनके वक़्ार पर ज़रा भी चोट पड़ी तो वो उसी मदरसे के, उसी तन्ज़ीम के इतिहाई दुश्मन बन जाएँगे और अपनी डेढ़ ईट की मस्जिद अलग बनाने के लिये तैयार हो जाते हैं। अगरचे हदीष में हाकिमे इस्लाम से बेअत करने का ज़िक्र है। मगर हर इस्लामी तन्ज़ीम को उसी पर समझा जा सकता है। तारीख़े इस्लामी में कितने ही ऐसे गद्दार मिलते हैं जिन्होंने अपने ज़ाती नुक़सान का ख़याल करके इस्लामी हुकूमत को साज़िशों की आमाजगाह बनाकर आख़िर में उसको तह व बाला करा दिया। तीसरा वो ताजिर है जो माल बेचने के लिये झूठ फ़रेब का हर हथियार इस्तेमाल करता है और झूठ बोल-बोलकर अपना माल ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर निकालता है।

अल्फ़ार्ज़ बग़ौर देखा जाए तो ये तीनों मुज़िम इतिहाई मज़म्मत के काबिल हैं और इस हदीष में जो कुछ उनके बारे में बतलाया गया है वो अपनी जगह बिलकुल सहीह, सच और सवाब (दुरुस्त) है।

## बाब 6 : नहर का पानी रोकना

2359, 60. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे लैज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इब्ना ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक अंसारी मर्द ने जुबैर (रज़ि.) से हरा के नाले में जिसका पानी मदीना के लोग खज़ूर के पेड़ों को दिया करते थे, अपने झगड़े को नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पेश किया। अंसारी जुबैर से कहने लगा पानी को आगे जाने दो लेकिन जुबैर (रज़ि.) को उससे इन्कार था। और यही झगड़ा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पेश था। आँहज़रत (ﷺ) ने जुबैर (रज़ि.) से फ़र्माया कि (पहले अपना बाग़) सींच ले फिर अपने पड़ोसी भाई के लिये जल्दी जाने दे। इस पर अंसारी को गुस्सा आ गया और उन्होंने कहा, हाँ! जुबैर आपकी फूफी के लड़के हैं न, ये सुनकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर नागवारी के आघार नज़र आने लगे। आपने फ़र्माया, ऐ जुबैर! तुम सैराब कर लो। फिर पानी को इतनी देर तक रोके रखो कि वो मुँडेरों तक चढ़ जाए। जुबैर (रज़ि.) ने कहा, क़सम अल्लाह की! मेरा तो ख़याल है कि ये आयत इसी बाब में नाज़िल हुई है, हरिज़ नहीं, तेरे रब की क़सम! ये लोग उस वक़््त तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक अपने झगड़ों में तुझको हाकिम न तस्लीम कर लें। आख़िर तक।

## ٦- بَابُ مَكْرِ الْأَنْهَارِ

٢٣٥٩، ٢٣٦٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ حَدَّثَهُ: ((أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ خَاصَمَ الزُّبَيْرَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فِي شِرَاجِ الْحَوْزَةِ الَّتِي يَسْقُونَ بِهَا النَّخْلَ، فَقَالَ الْأَنْصَارِيُّ: سَرَحَ الْمَاءَ يَمُرُّ - فَأَبَى عَلَيْهِ. فَانْتَصَمَا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِلزُّبَيْرِ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ، ثُمَّ أَرْسَلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)). فَقَضِبَ الْأَنْصَارِيُّ فَقَالَ: إِنْ كَانَ ابْنُ عَمِّكَ قَتَلُونَ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ اخْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ)). فَقَالَ الزُّبَيْرُ: وَاللَّهِ إِنِّي لِأَخْسِبُ هَذِهِ الْآيَةَ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ: ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾.

[أطرافه في : ٢٣٦١، ٢٣٦٢، ٢٧٠٨]

(दीगर मक़ाम : 2361, 2362, 2708, 4585)

.[६०८०

**तस्रीह :** ये हदीष और आयते करीमा इत्ताअते रसूले करीम (ﷺ) की फ़र्जियत पर एक ज़बरदस्त दलील है। और इस अमर पर भी कि जो लोग साफ़ सरीह, वाज़ेह इशादि नबवी सुनकर उसकी तस्लीम में पसोपेश करें वो ईमान से महरूम हैं। कुआन मजीद की और भी बहुत सी आयात में इस उसूल को बयान किया गया है।

एक जगह इशाद है, **مَا كَانَا لِي مُؤْمِنِينَ بَلْ كَانَا مُؤْمِنِينَ بِمَا كَانَا لِي مُؤْمِنِينَ** इज़ा क़ज़ल्लाहु व रसूलुहु अमन् अय्यकून लहुमुल् ख़ियरतु मिन अम्रिहिम व मय्यअ सिल्लाहु व रसूलुहु फ़क़द ज़ल्ला ज़लालम्मुबीना (अल् अहज़ाब : 36) किसी भी मोमिन मर्द और औरत के लिये ये ज़ैबा (शोभा देने लायक) नहीं कि जब वो अल्लाह और रसूल (ﷺ) का फ़ैसला सुन ले तो फिर उसके लिये उस बारे में कुछ इख़्तियार बाक़ी नहीं रहता। और जो भी अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी करेगा वो खुला हुआ गुमराह है।

अब उन लोगों को खुद फ़ैसला करना चाहिये जो आयाते कुआनी व अह्दादीषे नबवी के ख़िलाफ़ अपनी राय व क़यास को तरजीह देते हैं या वो अपने इमामों, पीरों, वलियों, मुशिदों के फ़तवों को मुक़द्दम रखते हैं। और अह्दादीषे सहीहा को मुख़्तलिफ़ हीलों बहानों से टाल देते हैं। उनको खुद सोचना चाहिये कि एक अंसारी मुसलमान सहाबी ने जब आहज़रत (ﷺ) के एक क़तई फ़ैसले के ख़िलाफ़ नाराज़गी का इज़हार किया तो अल्लाह पाक ने किस ग़ज़बनाक लहजे में उसे डांटा और इत्ताअते नबवी का हुक्म दिया। जब एक अंसारी सहाबी के लिये ये क़ानून है, तो और किसी मुसलमान की क्या वक़अत (औकात) है कि वो खुले लफ़्ज़ों में कुआन व हदीष की मुख़ालफ़त करे और फिर भी ईमान का ठेकेदार बना रहे। इस आयते शरीफ़ा में मुंकिरीने हदीष को भी डांटा गया है और उनको बतला दिया गया है कि रसूले करीम (ﷺ) जो भी दीनी उमूर में इशाद फ़र्माएँ आपका वो इशाद भी वह्ये इलाही में दाख़िल है जिसका तस्लीम करना उसी तरह वाजिब है जैसा कि कुआन मजीद का तस्लीम करना वाजिब है। जो लोग हदीषे नबवी का इंकार करते हैं वो कुआन मजीद के भी मुंकिर हैं, कुआन व हदीष में आपसी तौर पर जिस्म और रूह का रिश्ता है। इस हक़ीक़त का इंकारी अपनी अक्ल व फ़हम से दुश्मनी का इज़हार करने वाला है।

## बाब 7 : जिसका खेत बुलन्दी पर हो पहले वो अपने खेतों को पानी पिलाए

## ۷- بَابُ شَرْبِ الْأَعْلَى قَبْلَ الْأَسْفَلِ

जो नहर नाला किसी की मिल्क न हो उससे पानी लेने में पहले बुलन्द खेत वाले का हक़ है। वो इतना पानी अपने खेत में दे सकता है कि अब ज़मीन पानी न पिये और खेत की मुँडेरों तक पानी चढ़ आए। फिर नशीबी (निचले) खेत वाले की तरफ़ पानी को छोड़ दे।

2361. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें जुहरी ने, उनसे इर्वा ने बयान किया, कि जुबैर (रज़ि.) से एक अंसारी (रज़ि.) का झगड़ा हुआ तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जुबैर! पहले तुम (अपना बाग़) सैराब कर लो कि पानी उसकी मुँडेरों तक पहुँच जाए इतने रोक रखो, जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि मेरा गुमान है कि ये आयत, हर्गिज़ नहीं, तेरे रब की क़सम! ये लोग उस वक़्त तक मोमिन नहीं होंगे जब तक आपको अपने तमाम इख़्तिलाफ़ात में

۲۳۶۱ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرَّةٍ قَالَ : ((حَاصِمَ الزُّبَيْرِ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : «يَا زُبَيْرُ اسْقِ ثُمَّ أَرْسِلْ» فَقَالَ الْأَنْصَارِيُّ : إِنَّهُ ابْنُ عَمَّتِكَ. فَقَالَ عَلَيْهِ السَّلَامُ : «اسْقِ يَا زُبَيْرُ يَتَلَعُ الْمَاءُ الْجَدْرَ ثُمَّ أَمْسِكْ»)) فَقَالَ الزُّبَيْرُ فَأَخْبِبَ عَلَيْهِ الْآيَةُ تَوَلَّى لِي

हकम न तस्लीम कर लें। उसी बाब में नाज़िल हुई है।

(राजेअ: 2359)

ذَلِكَ: ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ  
يُحْكُمُونَ لِمَا شَهِرَ بَيْنَهُمْ﴾.

[راجع: ٢٣٥٩]

मा'लूम हुआ कि फ़ैसल—ए-नबवी के सामने बिला चूँ चरा किये हुए सरे तस्लीम खम कर देना (झुका देना) ही ईमान की दलील है अगर इस बारे में ज़रा बराबर भी दिल में तंगी महसूस की तो फिर ईमान का अल्लाह ही हाफ़िज़ है। उन जामिद मुकल्लिदीन को सोचना चाहिये कि जो सहीह हदीष के मुकाबले पर महज़ अपने मसलकी तअस्सुब की बिना पर खम ठोककर खड़े हो जाते हैं और नबवी फ़ैसले को रद्द कर देते हैं, हौज़े कौषर पर आँहज़रत (ﷺ) के सामने ये लोग क्या मुँह लेकर जाएँगे?

### बाब 8 : बुलन्द खेत वाला टख़नों तक पानी भरे

2362. हमसे मुहम्मद बिन सलाय ने बयान किया, कहा कि हमको मुखल्लद ने ख़बर दी, कहा कि मुझे इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक अंज़ारी मर्द ने जुबैर (रज़ि.) से हरा की नदी के बारे में जिससे खजूरों के बाग़ सैराब हुआ करते थे, झगड़ा किया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जुबैर! तुम सैराब कर लो। फिर अपने पड़ोसी भाई के लिये जल्द पानी छोड़ देना। इस पर अंज़ारी ने कहा। जी हाँ! आपकी फूफी का लड़का है न। रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया। आपने फ़र्माया, ऐ जुबैर! तुम सैराब करो, यहाँ तक कि पानी खेत की मुँडेरों तक पहुँच जाए। इस तरह आपने जुबैर (रज़ि.) को उनका पूरा हक़ अदा कर दिया। जुबैर (रज़ि.) कहते थे कि क्रसम अल्लाह की ये आयत इसी बारे में नाज़िल हुई थी, हर्गिज़ नहीं, तेरे रब की क्रसम! उस वक़्त तक ये ईमान वाले नहीं हो सकते। जब तक अपने तमाम इख़ितलाफ़ात में आपको हक़म न तस्लीम करें। इब्ने शिहाब ने कहा कि अंज़ार और तमाम लोगों ने उसके बाद नबी करीम (ﷺ) के इस इश्रा'द की बिना पर कि सैराब करो और फिर उस वक़्त तक रुक जाओ, जब तक पानी मुँडेरों तक न पहुँच जाए, एक अंदाज़ा लगा लिया, या'नी पानी टख़नों तक भर जाए।

(राजेअ: 2359)

٨- بَابُ شَرِبِ الْأَعْلَى إِلَى الْكَمِينِ  
٢٣٦٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ  
قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ  
شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ حَدَّثَهُ:  
(أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ خَاصِمَ الزُّبَيْرِ فِي  
شِرَاجٍ مِنَ التَّحْرَةِ يَسْقِي بِهِ النَّخْلَ، فَقَالَ  
رَسُولُ اللَّهِ: «اسْقِ يَا زُبَيْرُ» - فَأَمَرَهُ  
بِالْمَفْرُوفِ - ثُمَّ أَرْسَلَهُ إِلَى جَارِكٍ)).  
فَقَالَ الْأَنْصَارِيُّ: أَنْ كَانَ ابْنُ عَمَّتِكَ.  
فَقَالُوا رَجُلًا وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ:  
(«اسْقِ ثُمَّ اخْبِرْ حَتَّى يَرْجِعَ الْمَاءُ إِلَى  
النَّجْرِ - وَاسْتَوْعِي لَهُ حَقَّهُ»)). فَقَالَ  
الزُّبَيْرُ وَاللَّهِ إِنْ هَذِهِ الْآيَةُ أَنْزَلْتُ فِي  
ذَلِكَ: ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ  
يُحْكُمُونَ لِمَا شَهِرَ بَيْنَهُمْ﴾. قَالَ ابْنُ  
شِهَابٍ: فَفُتِّرَتِ الْأَنْصَارُ وَالنَّبِيُّ قَوْلُ  
النَّبِيِّ ﷺ: «اسْقِ ثُمَّ اخْبِرْ حَتَّى يَرْجِعَ  
إِلَى النَّجْرِ» وَكَانَ ذَلِكَ إِلَى الْكَمِينِ.

[راجع: ٢٣٥٩]

गोया क़ानूनी तौर पर ये उम्मूल क़रार पाया कि खेत में टख़नों तक पानी का भर जाना उसका सैराब होना है।

## बाब 9 : पानी पिलाने के प्रवाब के बयान में

2363. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें सुमय ने, उन्हें अबू सलहेह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक शख्स जा रहा था कि उसे सख़्त प्यास लगी। उसने एक कुँए में उतरकर पानी पिया। फिर बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता हाँफ़ रहा है और प्यास की वजह से कीचड़ चाट रहा है। उसने (अपने दिल में) कहा, ये भी इस वक़्त ऐसी ही प्यास में मुब्तला है जैसे अभी मुझे लगी हुई थी। (चुनौचे वो फिर कुँए में उतरा और) अपने चमड़े के मोज़े को (पानी से) भरकर उसे अपने मुँह में पकड़कर ऊपर आया और कुत्ते को पानी पिलाया। अल्लाह तआला ने उसके इस काम को कुबूल किया और उसकी मफ़िरत फ़र्माई। सहाबा ने अर्ज़ किया। या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या हमें चौपायों पर भी अज़्र मिलेगा? आपने फ़र्माया हर जानदार में प्रवाब है। इस रिवायत की मुताब़ात हम्माद बिन सलाम और रबीआ बिन मुस्लिम ने मुहम्मद बिन ज़ियाद से की है।

(राजेअ : 173)

٩- بَابُ فَضْلِ سَقْيِ الْمَاءِ  
٢٣٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَمِيِّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : «رَبَّنَا رَجُلٌ يَمْشِي فَاثْتَدَّ عَلَيْهِ الْقَطْشُ، فَتَوَلَّى بَرًّا فَتَرَبَّ مِنْهَا، ثُمَّ خَرَجَ فَإِذَا هُوَ بِكَلْبٍ يَلْهَثُ يَأْكُلُ التُّرَى مِنَ الْقَطْشِ، فَقَالَ: لَقَدْ بَلَغَ هَذَا مِثْلَ الَّذِي بَلَغَ بِي. فَمَلَأَ خُفَّهُ ثُمَّ أَمْسَكَهُ بِيَدِهِ، ثُمَّ زَفَى لِسْتَى الْكَلْبِ، فَشَكَرَ اللَّهُ لَهُ فَفَقَرَ لَهُ». قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَإِنْ لَنَا فِي الْبَهَائِمِ أَجْرًا؟ قَالَ : «فِي كُلِّ كَبِدٍ رَطْبَةٍ أَجْرٌ». فَأَبَقَهُ حَمَادُ بْنُ سَلَمَةَ وَالرَّبِيعُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَيَْادٍ.

[راجع: ١٧٣]

षाबित हुआ कि किसी भी जानदार को पानी पिलाकर उसकी प्यास दूर कर देना ऐसा अमल है कि जो मफ़िरत का सबब बन सकता है। जैसा कि उस शख्स ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया और उस अमल की वजह से उसे बख़्शा गया। मौलाना फ़र्माते हैं ये तो बज़ाहिर आम है, हर जानवर को शामिल है। कुछ ने कहा मुराद उससे हलाल जानवर हैं और कुत्ते और सूअर वगैरह में प्रवाब नहीं क्योंकि उनके मार डालने का हुक़म है। मैं (मौलाना वहीदुज्जमाँ) कहता हूँ हदीष को मुत्लक़ रखना बेहतर है। कुत्ते और सूअर को भी ये क्या ज़रूरी है कि प्यासा रखकर मारा जाए। पहले उसको पानी पिला दें फिर मार डालें। अबू अब्दुल मलिक ने कहा ये हदीष बनी इस्राईल के लोगों के बारे में हैं। उनको कुत्तों के मारने का हुक़म न था। (वहीदी) हदीष में लफ़्ज़ फ़ी कुल्लि कब्दिन रत्बा आम है जिसमें हर जानदार दाख़िल है इस लिहाज़ से मौलाना वहीदुज्जमाँ (रह.) की तशरीह ख़ूब है।

2364. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक बार सूरज ग्रहण की नमाज़ पढ़ी फिर फ़र्माया (अभी अभी) दोज़ख़ मुझसे इतनी करीब आ गई थी कि मैंने चौंककर कहा। ऐरब! क्या मैं भी उन्हीं में से हूँ। इतने में दोज़ख़ में मेरी नज़र एक औरत पर पड़ी। (अस्मा रज़ि. ने बयान किया) मुझे याद है कि (आँहज़रत

٢٣٦٤- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى صَلَاةَ الْكُسُوفِ فَقَالَ: «دَلَّتْ مِنِّي النَّارُ حَتَّى قُلْتُ أَيُّ رَبِّ وَأَنَا مِنْهُمْ؟ فَإِذَا امْرَأَةٌ - حَسِبْتُ أَنَّهُ-

ने फर्माया था कि) उस औरत को एक बिल्ली नोच रही थी। आपने दरयाफ्त किया कि इस पर ये अज़ाब की क्या वजह है? आपके साथ वाले फ़रिश्तों ने कहा कि इस औरत ने इस बिल्ली को इतनी देर तक बाँधे रखा कि वो भूख के मारे मर गई। (राज़ेअ: 745)

تَخَذِثَهَا هِرَّةً. قَالَ: مَا شَأْنُ هَذِهِ؟ قَالُوا: حَبَسَتْهَا حَتَّى مَاتَتْ جُوعًا. (راجع: ٧٤٥)

[راجع: ٧٤٥]

इस हदीष को यहाँ लाने का मतलब ये भी है कि किसी भी जानदार को कुदरत और आसानी रखने के बावजूद अगर कोई शख्स खाना-पीना न दे और वो जानदार भूख प्यास से मर जाए तो उस शख्स के लिये ये जुर्म दोज़ख में जाने का सबब बन जाता है। इन्ना हाज़िहिलम अर्त लम्मा हबिसत हाज़िहिल हिरत इला अन मातत बिल्जूड वल अतशि फ़स्तहक़त हाज़िहिल अज़ाब फ़लौ कानत सकैयतहा लम तुअज़ब व मिन हाहुना युअलम फ़ज्लु सुकल्माइ व हुव मुताबिकुन लिन्नर्जुमति. (ऐनी)

2365. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया। उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, एक औरत को अज़ाब, एक बिल्ली की वजह से हुआ जिसे उसने इतनी देर तक बाँधे रखा था कि वो भूख की वजह से मर गई। और वो औरत उसी वजह से दोज़ख में दाखिल हो गई। नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया कि अल्लाह तआला ने उससे फर्माया था— और अल्लाह तआला ही ज़्यादा जानने वाला है— कि जब तू ने उस बिल्ली को बाँधा था उस वक़्त न तूने उसे कुछ खिलाया न पिलाया और न छोड़ा कि वो ज़मीन के कीड़े-मकोड़े ही खाकर अपना पेट भर लेती। (दीगर मक़ाम: 3318, 3482)

٢٣٦٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((غَذَّبَتْ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ حَبَسَتْهَا حَتَّى مَاتَتْ جُوعًا، فَدَخَلَتْ فِيهَا النَّارُ، قَالَ: لَقَالَ: - وَاللَّهِ أَغْلَمَ - : لَا أَنْتَ أَطْعَمْتَهَا وَلَا سَقَيْتَهَا حِينَ حَبَسْتَهَا، وَلَا أَنْتَ أَرْسَلْتَهَا فَأَكَلَتْ مِنْ خَشَائِشِ الْأَرْضِ)).

[طرفاء في: ٣٣١٨، ٣٤٨٢]

इस हदीष की मुनासबत बाब के तर्जुमे से यँ है कि बिल्ली को पानी न पिलाने से अज़ाब हुआ। तो मा'लूम हुआ कि पानी पिलाना प्रवाब है। इन्ने मुनीर ने कहा इस हदीष से ये भी निकला कि बिल्ली का क़त्ल करना दुरुस्त नहीं।

लत़ीफ़ा:— तफ़हीमुल बुखारी में ख़शाशुल अरज़ि का तर्जुमा घास-फूस करते हुए बिल्ली के लिये लिखा है कि न उसे छोड़ा कि वो ज़मीन से घास-फूस ही खा सके। आम तौर पर बिल्ली गोश्तख़ोर (माँसाहारी) जानवर है न चरिन्दा कि वो घास खाती हो। शायद फ़ाज़िल मुतर्जिम (विद्वान अनुवादक) की नज़र में घास-फूस खाने वाली बिल्लियाँ मौजूद हों वरना उमूमन् बिल्लियाँ गोश्तख़ोर होती हैं। इसीलिये दूसरे मुतर्जिमीने बुखारी (रह.) ख़शाशुल अरज़ि का तर्जुमा ज़मीन में कीड़े-मकोड़े ही करते हैं। ख़शाश बिफ़हिल्लिख़ाइ अशहसुल्लासति व हिय हवामु व क़ील ज़ियाफ़ुतैरि (मज्मउल बिहार लुगातुल हदीष लफ़ज़ 'ख' स. 48)

बाब 10 : जिनके नज़दीक हौजवाला और मश्क का मालिक ही अपने पानी का ज़्यादा हक़दार है

١٠- بَابُ مَنْ رَأَى أَنْ صَاحِبَ

الْحَوْضِ وَالْقَرْيَةِ أَحَقُّ بِمَاءِهِ

2366. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक प्याला

٢٣٦٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

الْعَزِيزِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ

पेश किया गया और आप (ﷺ) ने उसे नोश फ़र्माया। आपकी दाईं तरफ़ एक लड़का था जो हाज़िरीन में सबसे कम उम्र था। बड़ी उम्र वाले सहाबा आपकी बाईं तरफ़ थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐलड़के! क्या तुम्हारी इज़ाज़त है कि मैं इस प्याले का बचा हुआ पानी बूढ़ों को दूँ? उसने जवाब दिया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं तो आपका जूठा अपने हिस्से का किसी को देने वाला नहीं हूँ। आखिर आपने वो प्याला उसी को दे दिया।

(राजेज़: 2351)

बाब के तर्जुमे से मुताबक़त इस तरह है कि हौज़ और मश्क को प्याले पर क़यास (अनुमान) किया। इब्ने मुनीर ने कहा मुनासबत (अनुकूलता) की वजह ये है कि जब दाहिनी तरफ़ बैठने वाला प्याला का ज़्यादा हक़दार हुआ सिर्फ़ दाहिनी तरफ़ बैठने की वजह से; तो जिसने हौज़ बनवाया, मश्क तैयार किया, वो बतरीके औला पहले उसके पानी का हक़दार होगा।

2367. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। मैं (क़यामत के दिन) अपने हौज़ से कुछ लोगों को इस तरह हाँक दूँगा जैसे अज़नबी ऊँट हौज़ से हाँक दिया जाता है।

यहीं से बाब का मतलब निकलता है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उस हौज़ वाले पर इन्कार नहीं किया, उस अमर पर कि वो जानवरों को अपने हौज़ से हाँक दिया करते थे।

2368. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुरज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा कि हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब और क़थीर बिन क़थीर ने, दोनों की ख़ियायतों में एक-दूसरे की बनिस्बत कमी और ज़्यादाती है, और उनसे सईद बिन जुबैर ने कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इस्माईल (अलैहि.) की वालिदा (हज़रत हाजरा अलैहि.) पर रहम फ़र्माए कि अगर उन्होंने ज़मज़म को छोड़ दिया होता, या यूँ फ़र्माया कि अगर वो ज़मज़म से चुल्लू भर-भरकर न लेती तो वो एक बहता हुआ चश्मा होता। फिर जब क़बीला जुरहुम के लोग आए और (हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम से) कहा कि आप हमें अपने पड़ोस में क़याम की इज़ाज़त दें

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَمْرٌ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِقَدْحٍ قَشْرَبَ، وَعَنْ يَمِينِهِ هَلَامٌ هُوَ أَخَذْتُ الْقَوْمَ، وَالْأَحْتَاخُ عَنْ يَسَارِهِ، قَالَ: ((يَا هَلَامُ أَتَأْذِنُ لِي أَنْ أَطْعِمَ الْأَحْتَاخَ؟)) فَقَالَ: مَا كُنْتُ لِأَوْثَرِ بَنِي سَعْدٍ مِنْكَ أَحَدًا يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ)).

[راجع: ٢٣٥١]

٢٣٦٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ زِيَادٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((وَاللَّيْلِ نَفْسِي بَيْنَهُ، لَأَكُوذَنَّ عَنْ حَوْضِي كَمَا تَنَادُّ الْفَرِيتَةُ مِنَ الْإِبِلِ عَنِ الْحَوْضِ)).

٢٣٦٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَقْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ وَكَثِيرٍ بْنِ كَثِيرٍ - يَزِيدُ أَحَدُهُمَا عَلَى الْآخَرِ - عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((بَرَحَمَ اللَّهُ أُمَّ إِسْمَاعِيلَ، لَوْ تَوَكَّتْ زَمْزَمٌ = أَوْ قَالَ: لَوْ تَفَرَّقَ مِنَ الْمَاءِ - لَكَانَتْ عَيْنًا مَعِينًا. وَأَقْبَلَ جُرْهُمُ فَقَالُوا: أَتَأْذِنُ أَنْ نَتْرَلَ عِنْدَكَ؟)) قَالَتْ:

दीजिए, तो उन्होंने कुबूल कर लिया इस शर्त पर कि पानी पर उनका कोई हक़ न होगा। क़बीले वालों ने ये शर्त मान ली थी।

(दीगर मक़ाम : 2362, 3363, 3364)

نَعَمْ، وَلَا حَقٌّ لَكُمْ فِي الْمَاءِ. قَالُوا :  
نَعَمْ.

[أطرافه في : ٢٣٦٢، ٣٣٦٣، ٣٣٦٤]

**तशरीह :** इस हदीष में हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम के उन वाक़ियात का ज़िक्र है जबकि वो इब्तिदाई दौर में मक्का शरीफ़ में सकूनत पज़ीर (निवासी) थीं। जबकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनको अल्लाह के हवाले करके वापस हो चुके थे और वो पानी की तलाश में कोहे सफ़ा और मरवा का चक्कर काट रही थीं कि अचानक उनको ज़मज़म का चश्मा नज़र आया और वो दौड़कर उसके पास आईं और उसके पानी के आसपास मुँडेर बाँधने लगीं। उसी कैफ़ियत को यहाँ बयान किया जा रहा है।

मुज्ताहिदे मुत्लक़ इस हदीष को यहाँ ये मसला बयान फ़र्माने के लिये लाए हैं कि कुँए या तालाब का असल मालिक अगर मौजूद है तो बहरहाल उसकी मिल्कियत का हक़ उसके लिये प्राबित है। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि हज़रत हाजरा (अलैहिस्सलाम) के उस क़ौल पर कि पानी पर तुम्हारा (क़बीला बनू ज़ुरहुम का) कोई हक़ न होगा, उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने इंकार नहीं फ़र्माया। ख़त्ताबी ने कहा इससे ये निकला कि जंगल में जो कोई पानी निकाले वो उसका मालिक बन जाता है और दूसरा कोई उसमें उसकी रज़ामन्दी के बग़ैर शरीक नहीं हो सकता।

हाजरा (अलैहिस्सलाम) मिस्र के एक फ़िरऔन की बेटी थी, जिसे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उनकी बीवी हज़रत सारा (अलैहिस्सलाम) की करामात देखकर उसने उस मुबारक ख़ानदान में शिर्कत का फ़ख़्र हासिल करने की गर्ज से उनके हवाले कर दिया था। इसका तफ़्सीली बयान पीछे गुज़र चुका है।

2369. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे अबू स़ालेह सिमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तीन तरह के आदमी ऐसे हैं जिनसे क़यामत के दिन अल्लाह तआला बात भी न करेगा और न उनकी तरफ़ नज़र उठाकर देखेगा। वो शख़्स जो किसी सामान के बारे में क्रसम खाए कि उसे उसकी क़ीमत उससे ज़्यादा दी जा रही थी जितनी अब दी जा रही है, हालाँकि वो झूठा है। वो शख़्स जिसने झूठी क्रसम अमर के बाद इसलिये खाई कि उसके ज़रिये एक मुसलमान के माल को हज़म कर जाए। वो शख़्स जो अपनी ज़रूरत से बचे हुए पानी से किसी को रोक दे। अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि आज मैं अपना फ़ज़ल इसी तरह तुम्हें नहीं दूँगा जिस तरह तुमने एक ऐसी चीज़ के फ़ालतू हिस्से को नहीं दिया था जिसे खुद तुम्हारे हाथों ने बनाया भी न था। अली ने कहा कि हमसे सुफ़यान ने अमर से कई बार बयान किया कि उन्होंने अबू स़ालेह से सुना और वो नबी करीम (ﷺ) तक इस हदीष की सनद पहुँचाते थे। (राजेज़ : 2358)

٢٣٦٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ أَبِي صَالِحٍ  
السَّمَانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ  
اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ: رَجُلٌ  
خَلَفَ عَلَى سَلَمَةٍ لَقَدْ أَغْطَى بِهَا أَكْثَرَ مِمَّا  
أَغْطَى وَهُوَ كَاذِبٌ، وَرَجُلٌ خَلَفَ عَلَى  
يَمِينٍ كَاذِبَةٍ بَعْدَ الْقَصْرِ لِيَقْطَعَ بِهَا مَالَ  
رَجُلٍ مُسْلِمٍ، وَرَجُلٌ مَنَعَ فَضْلَ مَالِهِ  
فَيَقُولُ اللَّهُ: الْيَوْمَ أَمْنَعُكَ لَفْضِي كَمَا  
مَنَعْتَ فَضْلَ مَا لَمْ تَعْمَلْ بِذَلِكَ)). قَالَ  
غَمْرٌو: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ - غَيْرُ مَرَّةٍ - عَنْ  
غَمْرٍو سَمِعَ أَبَا صَالِحٍ يَتْلُو بِهِ النَّبِيُّ ﷺ.

[راجع: ٢٣٥٨]

**तशीह:** हदीष में बयानकर्दा मज़मून नम्बर 3 से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा पानी रोकने पर ये सज़ा मिली तो मा'लूम हुआ कि जिस क़दर ज़रूरत थी, उतना उसको रोकना जाइज़ था और वो उसका हक़ रखता था। कुछ ने कहा ये जो फ़र्माया जो तेरा बनाया हुआ न था। उससे मा'लूम हुआ कि अगर वो पानी उसने अपनी मेहनत से निकाला होता, जैसे कुँआ खोदा होता या मशक़ में भरकर लाया होता तो वो उसका हक़दार होता। (वहीदी)

## बाब 11 : अल्लाह और उसके रसूल के सिवा कोई और चरागाह महफूज़ नहीं कर सकता

## ۱۱- بَابُ لَا حِمَى إِلَّا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ

2370. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि स़अब बिन ज़ामा लैषी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, चरागाह अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) ही महफूज़ कर सकता है। (इब्ने शिहाब ने) बयान किया कि हम तक ये भी पहुँचा है कि नबी करीम (ﷺ) ने नक्कीअ में चरागाह बनवाई थी। और हज़रत उमर (रज़ि.) ने सरफ़ा और रब्ज़ा को चरागाह बनाया।

(दीगर मक़ाम : 3013)

۲۳۷۰- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ الصُّعْبِ بْنِ جَنَازَةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا حِمَى إِلَّا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ)). وَقَالَ بَلَعْنَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَمَى النَّفِيعِ، وَأَنَّ عُمَرَ حَمَى السَّرَفِ وَالرَّبَذَةِ.

[طرمه ي : ۳۰۱۳]

हदीष का मतलब ये है कि जंगल में चरागाह रोकना, घास और शिकारबन्द करना ये किसी को नहीं पहुँचता, सिवाए अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के। इमाम और खलीफ़ा भी रसूल का कायम मुक़ाम (उत्तराधिकारी) है। उसके सिवा और लोगों को चरागाह रोकना और महफूज़ (आरक्षित) करना दुरुस्त नहीं। शाफ़िइया और अहले हदीष का यही क़ौल है। नक्कीअ मदीना से बीस मील (32 किलोमीटर) पर एक मुक़ाम है और सरफ़ा और रब्ज़ा भी मुक़ामों के नाम हैं।

## बाब 12 : नहरों में से आदमी और जानवर सब पानी पी सकते हैं

## ۱۲- بَابُ شَرْبِ النَّاسِ وَمَتَقِي الدَّوَابِّ مِنَ الْأَنْهَارِ

इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि जो नहरें रास्ते पर वाक़ेअ हों, उनमें आदमी और जानवर सब पानी पी सकते हैं। वो किसी के लिये ख़ास नहीं हो सकती।

2371. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने, उन्हें अबू सलालेह सिमान ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, घोड़ा एक शख्स के लिये बाअि़घे़ घ़वाब है, दूसरे के लिये बचाव है और तीसरे के लिये वबाल है। जिसके लिये घोड़ा अज़्रो-घ़वाब है, ये वो शख्स है जो अल्लाह की राह के लिये उसको पाले, वो उसे किसी हरियाले मैदान

۲۳۷۱- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الْحَيْلُ لِرَجُلٍ آخَرَ، وَلِرَجُلٍ سَبْرًا، وَعَلَى رَجُلٍ وَرَزٍّ وَمَا أَلَدِي لَهُ أَجْرٌ



में बाँधे (रावी ने कहा) या किसी बाग़ में। तो जिस क़दर भी वो उस हरियाले मैदान या बाग़ में चरेगा, उसकी नेकियों में लिखा जाएगा। अगर इत्तिफ़ाक़ से उसकी रस्सी टूट गई और घोड़ा एक या दो बार आगे के पाँव उठाकर कूदा तो उसके क़दमों के निशान और लीद भी मालिक की नेकियों में लिखे जाएँगे और अगर वो घोड़ा किसी नदी से गुज़रे और उसका पानी पिये, ख़्वाह मालिक ने उसे पिलाने का इरादा न किया हो तो भी ये उसकी नेकियों में लिखा जाएगा तो इस निर्य्यत से पाला जाने वाला घोड़ा इन्हीं वजहों से बाअिषे प्रवाब है। दूसरा शख़्स वो है जो लोगों से बेनियाज़ रहने और उनके सामने हाथ फैलाने से बचने के लिये घोड़ा पाले, फिर उसकी गर्दन और उनकी पीठ के सिलसिले में अल्लाह तआला के हुक्म को भी फ़रामोश न करे तो ये घोड़ा अपने मालिक के लिये पर्दा है। तीसरा शख़्स वो है जो घोड़े को फ़ख़, दिखावे और मुसलमानों की दुश्मनी में पाले। तो ये घोड़ा उसके लिये बबाल है। रसूलुल्लाह (ﷺ) से गर्धों के बारे में पूछा गया, तो आपने फ़र्माया कि मुझे उसके बारे में कोई हुक्म वहाँ से मा'लूम नहीं हुआ। सिवा उस जामेअ आयत के, जो शख़्स ज़र्रा बराबर भी नेकी करेगा, उसका बदला पाएगा और ज़र्रा बराबर भी बुराई करेगा, उसका बदला पाएगा।

(दीगर मक़ाम : 2860, 3646, 4962, 4963, 7356)

बाब का मज़मून हदीष के जुम्ला व लौ अज़हा मरत बि नहसिन् अल्ख़ से निकलता है क्योंकि अगर जानवरों को नहर से पानी पी लेना जाइज़ न होता तो उस पर प्रवाब क्यूँ मिलता और जब ग़ैर पिलाने के क़स्द (इरादे) के उनके खुद ब खुद पानी पी लेने से प्रवाब मिला, तो क़स्दन् पिलाना ब़त्तीके औला जाइज़ बल्कि वाजिबतरीन प्रवाब मिलेगा।

2372. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ख़बीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान ने, उनसे मुनबिअिष के गुलाम यज़ीद ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक शख़्स आया और आपने लुक्ता (रास्ते में किसी की गुम हुई चीज़ जो पा गई हो) के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि उसकी थैली और उसके बंधन

لَرَجُلٍ رَتَبَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَأَطَاعَ لَهَا فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْحَةٍ، فَمَا أَصَابَتْ فِي طِيلِهَا ذَلِكَ مِنَ الْمَرْجِ أَوْ الرَّوْحَةِ كَانَتْ لَهُ حَسَنَاتٍ، وَلَوْ أَنَّهُ انْقَطَعَ طِيلُهَا فَاسْتَقَتْ شَرًّا أَوْ شَرَّائِينَ كَانَتْ أَلَارَهَا وَأَرْوَاتُهَا حَسَنَاتٍ لَهُ، وَلَوْ أَنَّهُ مَرَّتْ بِنَهْرٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ وَلَمْ يَرِدْ أَنْ يَسْتَقِيَ كَانَ ذَلِكَ حَسَنَاتٍ لَهُ، فَهِيَ لِذَلِكَ أَجْرٌ. وَرَجُلٌ رَتَبَهَا نَفْسًا وَتَعَفُّا ثُمَّ لَمْ يَنْسَ حَقَّ اللَّهِ فِي رِقَابِهَا وَلَا ظُهُورِهَا فَهِيَ لِذَلِكَ أَجْرٌ. وَرَجُلٌ رَتَبَهَا فُخْرًا وَرِبَاءً وَبَوَاءً لِأَهْلِ الْإِسْلَامِ فَهِيَ عَلَى ذَلِكَ وَرَدٌّ. وَسُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْحُمْرِ فَقَالَ : ((مَا أَنْزَلَ عَلَيَّ فِيهَا شَيْءٌ إِلَّا هَلَوُ الْإِيْمَةُ الْجَائِمَةُ الْفَادَةُ)) وَمَنْ يَفْعَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ، وَمَنْ يَفْعَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ. (بُخَارِي)

[أطرافه في : 2860, 3646, 4962, 4963, 7356]

[7356, 4963]

2372 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ الرَّحْمَنِ عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُتَنَبِّئِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ اللَّفْطَةِ فَقَالَ : ((اعْرِفْ

की खूब जांच कर लो। फिर एक साल तक उसका ऐलान करते रहो उस अर्से में अगर उसका मालिक आ जाए (तो उसे दे दो) वरना फिर वो चीज़ तुम्हारी है। साइल ने पूछा, और गुमशुदा बकरी? आपने फ़र्माया, वो तुम्हारी है या तुम्हारे भाई की है या फिर भेड़िये की है। साइल ने पूछा, और गुमशुदा कैंट? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें उससे क्या मतलब? उसके साथ उसे सैराब रखने वाली चीज़ है और उसका घर है। पानी पर भी वो जा सकता है और पेड़ (के पत्ते) भी खा सकता है यहाँ तक कि उसका मालिक उसको पा जाए। (राजेअ: 91)

### बाब 13 : लकड़ी और घास बेचना

इस बाब की मुनासबत किताबुशुर्ब से ये कि लकड़ी पानी घास वगैरह ये सब मुश्तरक (संयुक्त) चीज़ें हैं। जिनसे हर एक आदमी नफ़ा उठाता है। हदीष में जो लकड़ी और घास का बयान है उससे मुराद यही है कि जो ग़ैर मुल्की ज़मीन में वाक़ेअ हो।

2373. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा कि हमसे बुहैब ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर कोई शख्स रस्सी लेकर लकड़ियों का गड्ढा लाया, फिर उसे बेचे और इस तरह अल्लाह तआला उसकी आबरू महफूज रखे तो ये उससे बेहतर है कि वो लोगों के सामने हाथ फैलाए और (भीख) उसे दी जाए या न दी जाए। उसकी भी कोई उम्मीद न हो। (राजेअ: 1471)

बड़े ही ईमान अफ़रोज़ (ईमान बढ़ाने वाले) अंदाज़ में मुसलमानों को तिजारात की तराबीब दिलाई गई है, चाहे वो कितने ही छोटे पैमाने पर क्यों न हो? बहरहाल सवाल करने से बेहतर है, चाहे उसको पहाड़ से लकड़ियों काटकर अपने सर पर लादकर लानी पड़े और उनकी फ़रोख्त (बेचने) से वो गुज़रान कर सके। बेकारी से ये भी कई गुना बेहतर है। रिवायत में सिर्फ़ लकड़ी का ज़िक्र है। हज़रत इमाम ने घास को भी बाब में शामिल फ़र्मा लिया है। घास जंगल से खोदकर लाना और बाज़ार में फ़रोख्त करना, ये भी इन्दल्लाह बहुत ही महबूब है कि बन्दा किसी मख़्लूक के सामने हाथ न फैलाए आगे हदीष में घास का भी ज़िक्र आ रहा है।

2374. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैय़ ने बयान किया, उनसे अक्कील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के गुलाम अबू इब्बैदा ने, और उन्होंने ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर कोई शख्स लकड़ियों का गड्ढा अपनी पीठ पर

عَفَاصَهَا وَوَكَاةَهَا ثُمَّ عَرَفَهَا سَنَةً، فَإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا وَإِلَّا فَشَأْنُكَ بِهَا))۔ قَالَ: فَصَالَةُ الْقَتَمِ؟ قَالَ: ((مَنْ لَكَ أَوْ لَأَخِيكَ أَوْ لِلذَّئِبِ)). قَالَ فَصَالَةُ الْإِبِلِ؟ قَالَ: ((مَا لَكَ وَلَهَا؟ مَعَهَا مِقْوَاهَا وَحِدَاهَا، تَرُدُّ السَّمَاءَ وَتَأْكُلُ الشَّجَرَ حَتَّى يَلْقَاهَا رُثَاهَا)). (راجع: 91)

### ۱۳- بَابُ بَيْعِ الْحَطَبِ وَالْكَلْبِ

۲۳۷۳- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَهَبٌ عَنْ جِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَنْ يَأْخُذَ أَحَدُكُمْ أَحَبًّا قَبْأَخَذَ حَزْمَةً مِنْ حَطَبٍ لِيَبِيعَ فَيَكْفِيَ اللَّهُ بِهَا وَجْهَهُ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ النَّاسَ أَعْطِيَ أَمْ مَنَعَ)). (راجع: ۱۴۷۱)

۲۳۷۴- حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي عَتِيدٍ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

(बेचने के लिये) लिये फिर तो वो उससे अच्छा है किसी के सामने हाथ फैलाए, फिर ख़्वाह उसे कुछ दे या न दे। (राजेअ: 1470)

इससे भी लकड़ियाँ बेचना साबित हुआ।

2375. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने, उनसे उनके वालिद हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने कि अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बद्र की लड़ाई के मौक़े पर मुझे एक जवान कैंटनी ग़नीमत में मिली थी और एक दूसरी कैंटनी मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इनायत फ़र्माई थी। एक दिन एक अंज़ारी सहाबी के दरवाजे पर मैं उन दोनों को इस ख़याल से बाँधे हुए था। कि उनकी पीठ पर इज़्रार (अरब की एक खुशबूदार घास जिसे सुनार वग़ैरह इस्तेमाल करते थे) रखकर बेचने ले जाऊँ। बनी क्रैनक्राअ का एक सुनार भी मेरे साथ था। इस तरह (ख़याल ये था कि) उसकी आमदनी से फ़ातिमा (रज़ि.) (जिनसे निकाह करने वाला था उन) का बलीमा करूँगा। हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) उसी (अंज़ारी के) घर में शराब पी रहे थे। उनके साथ एक गाने वाली भी थी। उसने जब ये मिस्त्रा पढ़ा, हौं! ऐ हमज़ा! उठो फ़रबा जवान कैंटनियों की तरफ़ (बढ़) हमज़ा (रज़ि.) जोश में तलवार लेकर उठे और दोनों कैंटनियों के कोहान चीर दिये। उनके पेट फाड़ डाले और उनकी कलेजी निकाल ली (इब्ने जुरैज ने बयान किया कि) मैंने इब्ने शिहाब से पूछा, क्या कोहान का गोश्त भी काट लिया गया था। तो उन्होंने बयान किया कि उन दोनों के कोहान काट लिये और उन्हें ले गए। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया। मुझे ये देखकर बड़ी तकलीफ़ हुई। फिर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपकी ख़िदमत में उस वक़्त ज़ैद बिन हारि़ा (रज़ि.) भी मौजूद थे। मैंने आपको उस वाक़िये की इत्तिला दी तो आप तशरीफ़ लाए। ज़ैद (रज़ि.) भी आपके साथ ही थे और मैं भी

يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «لَا يَنْحَطِبُ أَحَدُكُمْ حِمْلَةً عَلَى ظَهْرِهِ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ أَحَدًا لِيُعْطِيَهُ أَوْ يَمْنَعَهُ».

۲۳۷۵- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ أَبِيهِ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّهُ قَالَ: «أَصَبْتُ شَارِبًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فِي مَقْعٍ يَوْمَ بَدْرٍ، قَالَ: وَأَعْطَانِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ شَارِبًا أُخْرَى، فَأَتَيْتُهَا يَوْمًا عِنْدَ بَابِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ وَأَنَا أُرِيدُ أَنْ أُحْمِلَ عَلَيْهِمَا إِذْخِرًا لِأَيِّمَةٍ، وَمَعِيَ صَالِحٌ مِنْ بَنِي قَيْنِقَاغَ فَأَسْتَعِينُ بِهِ عَلَى وَلِيْمَةٍ فَاطِمَةٍ، وَحِمْلَةٍ ابْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ يَشْتَرِبُ فِي ذَلِكَ الْبَيْتِ مَعَهُ قَيْنَةً. فَقَالَتْ: أَلَا يَا حَمْرَ الشُّرَفِ النَّوَاءِ، فَتَارِ إِلَيْهِمَا حِمْلَةٌ بِالسَّيْرِ فَعَجَبَ أَسْمَتُهُمَا، وَتَقَرَّ نَوَاصِرُهُمَا، ثُمَّ أَخَذَ مِنْ أَكْبَادِهِمَا- قُلْتُ لِابْنِ شِهَابٍ: وَمِنْ السَّنَامِ. قَالَ: لَقَدْ جَبَّ أَسْمَتُهُمَا فَلَجَبَ بَيْنَا - قَالَ ابْنُ شِهَابٍ قَالَ عَلِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: فَطَرْتُ إِلَى مَنْظَرٍ أَفْطَمَنِي، فَاتَيْتُ نَبِيَّ اللَّهِ وَعِنْدَهُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ فَأَخْبَرْتُهُ الْخَبْرَ، فَخَرَجَ وَمَعَهُ زَيْدٌ، فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ، فَدَخَلْتُ عَلَى حِمْلَةٍ فَصَرَفْتُ عَلَيْهِ، فَوَقَعَ حِمْلَةً بَصْرَةً وَقَالَ: هَلْ أَنْتُمْ

आपके साथ था। हज़ूर (ﷺ) जब हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के पास पहुँचे और आप (ﷺ) ने ख़प्पी (नाराज़गी) ज़ाहिर फ़र्माई, तो हज़रत हम्ज़ा ने नज़र उठाकर कहा, तुम सब मेरे बाप दादा के गुलाम हो। हज़ूर (ﷺ) उलटे पाँव लौटकर उनके पास से चले आए, ये शराब की हर्मत से पहले का किस्सा है। (राजेअ: 2089)

إِنَّمَا عَيْنُهُ لَأَبَائِهِمْ لَوْ جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُفْتَقِرُ حَتَّى خَرَجَ عَنْهُمْ، وَذَلِكَ قَبْلَ تَغْرِيمِ الْخَمْرِ. (راجع: ٢٠٨٩)

**तशरीह:** इस हदीष में बयानकर्ता वाक़ियात उस वक़्त से मुताल्लिक हैं जबकि इस्लाम में शराब गाना सुनना हुराम न हुआ था। बद्र के अम्वाले ग़नीमत में से एक जवान ऊँटनी हज़रत अली (रज़ि.) को बत्तौर माले ग़नीमत मिली थी। और एक और ऊँटनी आँहज़रत (ﷺ) ने उनको बत्तौर सिलारहमी (हमददी) के अपने खास हिस्से में से मर्हमत (अता) फ़र्माई थीं। चुनाँचे उनका इरादा हुआ कि वयून उन ऊँटनियों से काम लिया जाए और उन पर जंगल से इज़्ज़र घास जमा करके लादकर लाई जाए और उसे बाज़ार में बेचा जाए। ताकि ज़रूरियाते शादी के लिये, जो होने ही वाली थी कुछ सरमाया (माल) जमा हो जाए। इस कारोबार में एक दूसरे अंसारी भाई और एक बनी क़ैनकाअ के सुनार भी शरीक होने वाले थे। हज़रत अली (रज़ि.) इन्हीं इरादों के साथ अपनी दोनों सवारियों को लेकर उन अंसारी मुसलमान के घर पहुँचे और उसके दरवाज़े पर जाकर दोनों ऊँटनियों को बाँध दिया। इतिफ़ाक़ की बात है कि उस अंसारी के उसी घर में उस वक़्त हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) शराबनोशी और गाना सुनने में मगन थे। गाने वाली ने जब उन ऊँटनियों को देखा और उनकी फ़रबही और जवानी पर नज़र डाली और उनका गोश्त बहुत ही लज़ीज़ तज़व्वुर किया (यानी यह सोचा कि उन ऊँटनियों का गोश्त बहुत स्वादिष्ट होगा), तो उसने उस मस्ती के आलम में हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को गाते- गाते ये मिस्त्रा भी बनाकर सुना दिया जो रिवायत में मज़कूर है। (पूरा शे'र यूँ है)

अला या हम्ज़ा लिशरफ़िन् नवाअ बहुज़ा मुअज़्ज़िलालि बिल् ग़नाअ

हम्ज़ा उठो ये उग्र वाली मोटी ऊँटनियाँ जो मकान के बाहर सेहन (आँगन) में बँधी हुई हैं, उनको काटो और उनका गोश्त भूनकर खाओ और हमको भी खिलाओ।

हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) पर मस्ती सवार थी, शे'र सुनते ही फ़ौरन् तलवार लेकर खड़े हुए और मस्ती के आलम में उन दोनों ऊँटनियों पर हमला कर दिया और उनके कलेजे निकालकर, कोहान काटकर गोश्त का बेहतरीन हिस्सा कबाब के लिये ले आए। हज़रत अली (रज़ि.) ने ये दिल दहलाने वाला मंज़र देखा तो अपने मुहतरम चचा का एहतियाम सामने रखते हुए वहाँ एक लफ़्ज़ जुबान पर न लाए बल्कि सीधे आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में पहुँचे। उस वक़्त ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) भी वहाँ मौजूद थे। चुनाँचे आपने सारा वाक़िया आँहज़रत (ﷺ) को सुनाया और अपनी इस परेशानी को तफ़्सील से बयान किया। जिसे सुनकर आँहज़रत (ﷺ) ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) और आपको साथ लेकर फ़ौरन् ही मौँके पर मुआयना करने के लिये चल पड़े और हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के पास पहुँचे जो कि अभी तक शराब और कबाब के नशे में चूर थे। आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) पर नाराज़गी का इज़हार फ़र्माया मगर हम्ज़ा (रज़ि.) के होश व हवास शराब व कबाब में गुम थे। वो सहीह ग़ौर न कर सके बल्कि उलटा उस पर खुद ही नाराज़गी जता डाली और वो अल्फ़ाज़ कहे जो रिवायत में मज़कूर है।

मौलाना फ़र्माते हैं, हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) उस वक़्त नशे में थे। इसलिये ऐसा कहने से वो गुनाहगार न हुए दूसरे उनका मतलब ये था कि मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ और आँहज़रत (ﷺ) के वालिदे माजिद हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत अली (रज़ि.) के वालिद हज़रत अबू तालिब दोनों उनके लड़के थे और लड़का गोया अपने बाप का गुलाम ही होता है। ये हालात देखकर आँहज़रत (ﷺ) ख़ामोशी से वापस लौट आए। उस वक़्त यही मुनासिब था। शायद हम्ज़ा कुछ और कह देते। दूसरी रिवायत में है कि उनका नशा उतरने के बाद आप (ﷺ) ने उनसे उन ऊँटनियों की क़ीमत हज़रत अली (रज़ि.) को दिलवाई। बाब का मतलब इस फ़िरे से ये निकलता है कि उन पर इज़्ज़र लादकर लाऊँ, इज़्ज़र एक खुशबूदार घास है। (वहीदी)

## बाब 14 : क़त्आते अराज़ी बतौर जागीर देने का बयान

## ١٤ - بَابُ الْقَطَائِعِ

असल किताब में क़ताए का लफ़्ज़ है वो मक्ता और जागीर दोनों के तौर पर शामिल है। शाफ़िइया ने कहा, आबाद ज़मीन को जागीर में देना दुरुस्त नहीं; वीरान ज़मीन में से इमाम जिसको लायक समझे जागीर दे सकता है। मगर जागीरदार या मक्तादार उसका मालिक नहीं हो जाता, मुहिब तबरी ने उसी का यक़ीन किया है। लेकिन क़ाज़ी अयाज़ ने कहा कि अगर इमाम उसको मालिक बना दे तो वो मालिक हो जाता है। (वहीदी)

2376. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बहरीन में कुछ क़त्आते अराज़ी बतौर जागीर (अंसार को) देने का इरादा किया तो अंसार ने अर्ज़ किया कि हम जब लेंगे कि आप हमारे मुहाजिर भाइयों को भी उसी तरह के क़त्आत इनायत फ़र्माएं। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे बाद (दूसरे लोगों को) तुम पर तरजीह दी जाया करेगी तो उस वक़्त तुम सन्न करना। यहाँ तक कि हमसे (आख़िरत में आकर) मुलाक़ात करो।

٢٣٧٦ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَقْطَعَ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَقَالَتِ الْأَنْصَارُ: حَتَّى تَقْطَعَ لِإِخْوَانِنَا مِنَ الْمُهَاجِرِينَ مِثْلَ الَّذِي تَقْطَعُ لَنَا. قَالَ: ((سَتَرُونَ بَغْدِي أَثَرَهُ، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي)).

[أطرافه في : ٢٣٧٧، ٣١٦٣، ٣٧٩٤].

आँहज़रत (ﷺ) ने अंसार को बहरीन में कुछ जागीरें देने का इरादा फ़र्माया, उसी से क़त्आते अराज़ी (कुषि भूमि) जागीर के तौर पर देने का जवाज़ प्ऱाबित हुआ। हुकूमत के पास अगर कुछ ज़मीन फ़ालतू हो तो वो पब्लिक में किसी को भी उसकी मिल्ली ख़िदमात (सार्वजनिक सेवाओं) के बदले में दे सकती है। यही बाब का मक़सद है। मुस्तज़िबल के लिये आपने अंसार को हिदायत फ़र्माई कि वो फ़ित्नो के दौर में जब आम हक़ तल्फ़ी देखें तो ख़ास तौर पर अपने बारे में नासाज़गार (अप्रिय) हालात उनके सामने आएँ तो उनको चाहिये कि सन्न व शुक्र से काम लें, यह उनके बलन्द दरजात के लिये बड़ा भारी ज़रिया होगा।

## बाब 15 : क़त्आते अराज़ी बतौर जागीर देकर उनकी सनद लिख देना

## ١٥ - بَابُ كِتَابَةِ الْقَطَائِعِ

2377. और लैब ने यह्या बिन सईद से बयान किया और उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को बुलाकर बहरीन में उन्हें क़त्आते अराज़ी बतौर जागीर देने चाहे तो उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अगर आपको ऐसा करना ही है तो हमारे भाई कुरैश (मुहाजिरीन) को भी इसी तरह के क़त्आत की सनद लिख दीजिए। लेकिन नबी करीम (ﷺ) के पास इतनी ज़मीन नहीं थी। इसलिये आपने उनसे फ़र्माया कि मेरे बाद तुम देखोगे कि दूसरे लोगों को तुम पर मुक़द्दम किया जाएगा। तो उस वक़्त तुम मुझसे मिलने तक सन्न करना। (राजेअ: 2376)

٢٣٧٧ - وَقَالَ اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الْأَنْصَارَ لِيَقْطَعَ لَهُمْ بِالْبَحْرَيْنِ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ فَعَلْتَ فَاتَّخَذَ إِخْوَانُنَا مِنْ قُرَيْشٍ بِمِثْلِهَا، فَلَمْ يَكُنْ ذَلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: ((إِنْ كُنْ سَتَرُونَ بَغْدِي أَثَرَهُ، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي)). [راجع: ٢٣٧٦]

हुकूमत अगर किसी को बतौर इन्आम जागीर अता करे तो उसकी सनद लिख देना ज़रूरी है ताकि आइन्दा उनके काम आए

और कोई उनका हक़ न मार सके। हिन्दुस्तान में मुस्लिम बादशाहों ने ऐसी कितनी ही सनदें ताँबे के पतरों (ताम्रपत्र) पर कुन्दा कर बहुत से मंदिरों के पुजारियों को दी हैं, जिनमें उनके लिये ज़मीनों का ज़िक्र है फिर भी तअस्सुब का बुरा हो कि आज उनकी शानदार तारीख़ को बिगाड़कर मुसलमानों के खिलाफ़ फ़िज़ा तैयार की जा रही है। अल्लाहुम्म उन्मुरिल् इस्लामा वल् मुस्लिमीन, आमीन!

## बाब 16 : ऊँटनी को पानी के पास दुहना

2378. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन फुलैह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने, उनसे अब्दुलहमान बिन अबी अमर ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऊँट का हक़ ये है कि उनका दूध पानी के पास दूहा जाए (राजेअ: 1402)

## बाब 17 : बाग़ में से गुज़रने का हक़ या खजूर के पेड़ों में पानी पिलाने का हिस्सा

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी शख्स ने पैवन्दी करने के बाद खजूर का कोई पेड़ बेचा तो उसका फल बेचने वाले ही का होता है। और उस बाग़ में से गुज़रने और सैराब करने का हक़ भी उसे हासिल रहता है। यहाँ तक कि उसका फल तोड़ लिया जाए साहिबे अराया को भी ये हक़ूक़ हासिल होंगे।

**तशरीह:** इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का यही क़ौल है और एक रिवायत इमाम अहमद (रह.) से भी ऐसे ही है और इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम मालिक (रह.) से मरवी है कि अगर बायेअ (बेचने वाले) ने उस गुलाम को किसी माल का मालिक बना दिया था तो वो माल ख़रीददार का हो गया, मगर ये कि बायेअ शर्त कर ले।

बाब की मुनासबत इस तरह से है कि जब अराया का देना जाइज़ हुआ तो ख़्वाह मख़्वाह अराया वाला बाग़ में जाएगा अपने फलों की हिफ़ाज़त करने को। ये जो फ़र्माया कि अंदाज़ा करके उसके बराबर ख़ुश्क़ खजूर के बदल बेच डालने की इजाज़त दी उसका मतलब ये है कि मफलन एक शख्स दो तीन पेड़ खजूर के बतौर अराया के ले। वो एक अंदाज़ा करने वाले को बुलाए वो अंदाज़ा कर दे कि पेड़ पर जो ताज़ी खजूर है वो सूखने के बाद इतनी रहेगी और ये अराया वाला इतनी सूखी खजूर किसी शख्स से लेकर पेड़ वाला मेवा उसके हाथ बेच दे तो ये दुस्त है हालाँकि यूँ खजूर को खजूर के बदल अंदाज़ा करके बेचना दुस्त नहीं क्योंकि उसमें कमी-बेशी का अन्देशा रहता है मगर अराया वाले अक़्सर मुहताज़ भूखे लोग होते हैं उनको खाने के लिये ज़रूरत होती है, इसलिये उनके लिये ये बेअ जाइज़ फ़र्मा दी है।

2379. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे लैज़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया था

١٦- بَابُ حَلْبِ الْإِبِلِ عَلَى الْمَاءِ  
٢٣٧٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ  
حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي  
عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ  
أَبِي عَمْرٍو عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مِنْ حَقِّ الْإِبِلِ أَنْ  
تُحَلَبَ عَلَى الْمَاءِ)). [راجع: ١٤٠٢]

١٧- بَابُ الرَّجُلِ يَكُونُ لَهُ مَعْرَوْ أَوْ  
شِرْبٌ فِي حَائِطٍ أَوْ تَحْتِ  
قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ بَاعَ تَغْلًا بَعْدَ أَنْ  
تَوَتَّرَ قَصْرُهَا لِلْبَائِعِ، وَلِلْبَائِعِ الْغَرْمُ  
وَالسَّقْيُ حَتَّى يَرْفَعَ، وَكَذَلِكَ رَبُّ  
الْغَرْمِ)).

٢٣٧٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ  
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ  
سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

कि पेवन्दकारी के बाद अगर किसी शख्स ने अपना खजूर का पेड़ बेचा तो (उस साल की फ़सल का) फल बेचने वाले ही का होगा। हाँ अगर ख़रीददार ये शर्त लगा ले (कि फल भी ख़रीददार ही का होगा) तो ये सूरत अलग है। और अगर किसी शख्स ने कोई माल वाला गुलाम बेचा तो वो माल बेचने वाले का होता है। हाँ अगर ख़रीददार ये शर्त लगा दे तो ये सूरत अलग है। ये हदीस इमाम मालिक से, उन्होंने नाफ़ेअ से, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से भी रिवायत की है उसमें सिर्फ़ गुलाम का ज़िक्र है। (राजेअ: 2203)

2380. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने और उनसे ज़ैद बिन प्ऱाबित (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने अरिय्या के सिलसिले में उसकी रुख़सत दी थी कि अंदाज़ा करके खुश्क खजूर के बदले बेचा जा सकता है। (राजेअ: 2173)

2381. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अता ने, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने मुखाबरा, मुहाकला और मुजाबना से मना फ़र्माया था। उसी तरह फल को पुख़्ता होने से पहले बेचने से मना फ़र्माया था, और ये कि मेवा या अनाज जो पेड़ पर लगा हो, दीनार व दिरहम ही के बदले बेचा जाए। अल्बत्ता अराया की इजाज़त दी है।

(राजेअ: 1487)

अल्फ़ाज़ मुखाबरा, मुहाकला और मुजाबना के मा'नी पीछे तफ़सील से लिखे जा चुके हैं।

2382. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें दाऊद बिन हुसैन ने, उन्हें अबू अहमद के गुलाम अबू सुफ़यान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बेअे अराया की अंदाज़ा करके खुश्क खजूर के बदले पाँच वस्क्र से कम, या (ये कहा कि) पाँच वस्क्र के अंदर इजाज़त दी है उसमें शक दाऊद बिन

قَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((مَنْ ابْتَاعَ نَخْلًا بَعْدَ أَنْ تُؤْتَرَ قَمَرُوتُهَا لِلْبَائِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُتَبَاعُ. وَمَنْ ابْتَاعَ عَبْدًا وَلَهُ مَالٌ فَمَالُهُ لِلَّذِي بَاعَهُ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُتَبَاعُ)). وَعَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْعَتَدِ.

[راجع: ٢٢٠٣]

٢٣٨٠ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ زَيْدِ بْنِ قَابَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ: ((رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُبَاعَ الْغَرَايَا بِخَرْصِهَا ثَمَرًا)).

[راجع: ٢١٧٣]

٢٣٨١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْمُخَابَرَةِ وَالْمُحَاقَلَةِ وَعَنِ الْمُرَابَاةِ وَعَنْ بَيْعِ الثَّمَرِ حَتَّى يَنْتَوِ صِلَاحُهُ، وَأَنْ لَا يُبَاعَ إِلَّا بِالْذِّنَارِ وَالْدِّرْهَمِ، إِلَّا الْغَرَايَا)).

[راجع: ١٤٨٧]

٢٣٨٢ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ دَاوُدَ بْنِ حُصَيْنٍ عَنْ أَبِي سُوَيْبٍ عَنْ أَبِي أَحْمَدَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْعِ الْغَرَايَا بِخَرْصِهَا مِنَ الثَّمَرِ

हुसैन को हुआ। (राजेअ : 219)

(बेअ्रे अराया का बयान पीछे मुप्ससल हो चुका है)

فِيمَا ذُوْن حَمْسَةِ أَوْسُقٍ، أَوْ فِي حَمْسَةِ  
أَوْسُقٍ، شَلْكٌ ذَاوُدُ فِي ذَلِكَ. . .

[راجع: ٢١٩]

2383, 84. हमसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा कि हमको अबू उसामा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे वलीद बिन क़रीर ने ख़बर दी, कहा कि मुझे बनी हारिषा के गुलाम बशीर बिन यसार ने ख़बर दी, उनसे राफ़ेअ बिन ख़दीज और सहल बिन अबी हज़्मा (रज़ि.) ने बयान किया, कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बेअ्रे मुजाबना या'नी पेड़ पर लगे हुए ख़जूर, सूखी हुई ख़जूर के बदले बेचने से मना फ़र्माया, अराया करने वालों के अलावा कि उन्हें आपने इजाज़त दे दी थी। अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने कहा कि इब्ने इस्हाक़ ने कहा कि मुझसे बशीर ने इसी तरह ये हदीष बयान की थी। (ये तअलीक़ है क्योंकि इमाम बुख़ारी रह.) ने इब्ने इस्हाक़ को नहीं पाया। हाफ़िज़ ने कहा कि मुझको ये तअलीक़ मौसूलन नहीं मिली। (राजेअ : 2191)

٢٣٨٣، ٢٣٨٤ - حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ  
يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي  
الْوَلِيدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي بُشَيْرُ بْنُ  
يَسَارٍ مَوْلَى بَنِي حَارِثَةَ أَنَّ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ  
وَسَهْلَ بْنَ أَبِي حَفْصَةَ حَدَّثَاهُ (أَنَّ رَسُولَ  
اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْمَزَابِنَةِ، بَيْعِ الثَّمَرِ  
بِالثَّمَرِ، إِلَّا أَصْحَابَ الْغُرَايَا فَإِنَّهُ أِذْنٌ  
لَهُمْ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: وَقَالَ ابْنُ  
إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي بُشَيْرٌ . . . مِثْلَهُ.

[راجع: ٢١٩١]

**तशरीहाते मुफ़ीदा :—** अज़्ख़तीबुल इस्लाम अल्लामा हज़रत मौलाना अब्दुर्रुफ़ स़ाहब रहमानी नाज़िमे ज़ामिअ सिराजुल इलूम झण्डानगर नेपाल अदामल्लाहु फ़ुयूज़हुम।

किताबुल मुज़ारआ और किताबुल मसाक़ात के ख़ात्मे पर अपने नाज़िरीने किराम की मा'लूमात में मज़ीद इज़ाफ़े के लिये हम एक फ़ाज़िलाना तब्सरा दर्ज कर रहे हैं जो फ़ज़ीलतुश़ैख़ मौलाना अब्दुर्रुफ़ रहमानी ज़ीद मज्दहुम की दिमागी काविश (मानसिक परिश्रम) का नतीजा है। फ़ाज़िल अल्लामा ने अपने इस मक़ाले में मसाइले मुज़ारअत (खेती-बाड़ी के मसलों) को और ज़्यादा अहसन तरीक़े पर ज़हननशीन कराने की कामयाब कोशिश फ़र्माई है। जिसके लिये मौलाना मौसूफ़ न सिर्फ़ मेरे बल्कि तमाम बुख़ारी शरीफ़ के क़ारेइने किराम की तरफ़ से शुक्रिया के मुस्तहिक़ हैं। अल्लाह पाक इस अज़ीम ख़िदमते तर्जुमा व सहीह बुख़ारी शरीफ़ की तशरीहात में इस इल्मी तआवुन व इशितराक़ पर मुहतरम मौलाना मौसूफ़ को दोनों जहाँ की बरकतों से नवाज़े और आपकी आला ख़िदमत को कुबूल फ़र्माए।

मौलाना खुद भी एक कामयाब ज़र्मीदार हैं। इसलिये आपकी बयानकर्दा तफ़्सीलात किस क़दर ज़ामेअ होंगी, मुतालआ के शौकीन खुद उनका अंदाज़ा लगा सकेंगे। मुहतरम मौलाना की तशरीहाते मुफ़ीदा का मतन दर्ज ज़ेल है। (मुतर्जम)

**ज़मीन की आबाद कारी का एहतिमाम :** (1) मुल्क की तमाम ख़ाम पैदावार और अश्याए ख़ुर्दनी (खाद्य पदार्थों) का दारोमदार ज़मीन की खेती पर है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी ज़मीन के आबाद व गुलज़ार रखने की तरगीब दिलाई है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) से रिवायत है कि हुज़रे अक़रम (ﷺ) ने फ़र्माया मनिशतरा क़र्यतन यअमुरुह्वा कान हक्कन अलल्ल्लाहि औनहू या'नी जो शख्स किसी गाँव को ख़रीदकर उसको आबाद करेगा तो अल्लाह तआला उसकी हर तरह से मदद करेगा। (मुन्तख़ब कन्जुल इम्माल जिल्द दोम पेज नं. 128)

इसी तरह किताबुल ख़िराज में काज़ी अबू यूसुफ़ (रह.) ने रसूले अक़रम (ﷺ) की एक हदीष नक़ल की है, फ़मन अह्या अर्ज़न मैतन फ़हिय लहू व लैस बिमुहतजिरिन हक्कन बअद प़लाषिन, या'नी जिस शख्स ने किसी बंजर व उफ़तादा ज़मीन की काश्त की तो वो उसी की मिल्कियत है और बिना खेती किये हुए रोक रखने वाले का तीन साल के बाद



हक साकित हो जाता है। (किताबुल खिराज, पेज नं. 72)

(2) इमाम बुखारी (रह.) ने एक हदीष नकल की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया कि अगर क़यामत क़ायम हो जाने की ख़बर मिल जाए और तुममें से किसी के हाथ में कोई शाख़ हो तो उसे ज़ाये (बर्बाद) न करे, बल्कि उसे ज़मीन में गाड़ और रोपकर दम ले। (अल् अदबुल मुफ़रद पेज नं. 69)

एक रिवायत इस तरह वारिद है कि अगर तुम सुन लो कि दज़्जाल काना निकल चुका है और क़यामत के दूसरे सब आधार व अलामात (या'नी तमाम निशानियाँ) नुमायाँ हो चुके हैं और तुम कोई नरम व नाज़ुक पौधा ज़मीन में रोपना और लगाना चाहते हो तो ज़रूर लगा दो और उसकी देखभाल और नशोनुमा के इतिज़ामात में सुस्ती न करो क्योंकि वो बहरहाल ज़िन्दगी के गुज़रान के लिये एक ज़रूरी कोशिश है। (अल् अदबुल मुफ़रद : पेज नं. 69)

**इतिबाह :** इन सारी रिवायत में ग़ौर करने से साफ़ तौर पर पता चलता है कि ज़मीन की पैदावार हासिल करने के लिये और फलदार पेड़ों और अनाज वाले पौधों को लगाने के लिये किस क़दर अमली एहतिमाम करना मकसूद है कि मौत का वक़्त और क़यामत के करीब होते हुए भी इंसान ज़राअती कारोबार (कृषि सम्बन्धी कार्य) और ज़मीनी पैदावार के मामले में ज़रा भी बेफ़िक्री और सुस्ती व लापरवाही न बरते।

**क्या ज़राअत (खेती-बाड़ी) का पेशा ज़लील है?** इन हालात की मौजूदगी में ये नहीं कहा जा सकता कि ज़राअत का पेशा ज़लील है। हज़रत अबू उमामा (रज़ि.) से एक हदीष मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हल और खेती के कुछ आलात (कृषि के यंत्र) देखकर फर्माया कि ला यदख़ुलु हाज़ा बैतु क़ौमिन इल्ला अदख़लहुल्लाहु ज़िल्लत या'नी जिस घर में ये दाख़िल होगा उसमें ज़िल्लत दाख़िल होकर रहेगी।

लेकिन शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी (रह.) और इमाम बुखारी (रह.) की तौजीह की रोशनी में उसका मतलब ये है कि खेती का पेशा इस क़दर हमावक़ती मशगूलियत (हर समय की व्यस्तता) का तालिब है कि जो उसमें पूरी तरह डूब जाएगा वो इस्लामी ज़िन्दगी के सबसे अहम काम जिहाद को छोड़ बैठेगा और उससे बेपरवाह रहेगा और ज़ाहिर है कि जिहाद को तर्क करना, शौक़त व कुव्वत (शौक व ताक़त) से अलग होने के समान है। बहरहाल अगर खेती की मुज़म्मत है तो उसकी हमेशा की मसरूफ़ियत की वजह से है कि वो अपने साथ बेहद मशगूल रखकर दूसरे तमाम अहम मक़ासिद से ग़ाफ़िल व बेनियाज़ कर देती है।

हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) इसी फ़लसफ़े के तहत लिखते हैं, फ़इज़ा तरकुल्लिहाद वतबअ अज्नाबल्बक्रि अहात बिहिमुज़िल्लत व ग़लबत अलैहिम अहलु साइरिल अदयानि (हुज्बतुल्लाहिल बालिगा जिल्द शानी स. 173) या'नी काश्तकार (किसान) बैलों की दुम में लगकर जिहाद वग़ैरह से ग़ाफ़िल हो जाते हैं और उनको ज़िल्लत घेर लेती है और जिहाद से काश्तकारों और ज़मींदार की ग़फ़लत उनकी रही-सही शौक़त व कुव्वत को ख़त्म कर देती है। और उन पर तमाम अदयान और मज़ाहिब (अन्या धर्म व सम्प्रदाय) अपना क़ब्ज़ा जमा लेते हैं। लेकिन अगर जिहाद या दीन के दूसरे अहम मक़ासिद से नज़र न हटे तो ज़मीन को आबाद करना और खेती-बाड़ी खुद अहम मक़ासिद में से है। चुनाँचे रसूले करीम (ﷺ) ने खुद भी लोगों को अनेक ज़मीनें बतौर जागीर दीं कि वे उसे आबाद व गुलज़ार रखें और उससे अल्लाह की मख़्लूक और वो खुद उससे फ़ायदा उठाएं।

**ज़मीन का आबाद रहना और अवामी (सार्वजनिक) होना असल मक़सद है :**

(1) हज़रत उमर (रज़ि.) ने जब ज़राअत (खेती) की तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जह फ़र्माई तो कुछ लोगों ने ऐसी जागीरों के कुछ हिस्सों को आबाद कर लिया तो असल मालिकाने ज़मीन दरबारे फ़रूक़ी में हाज़िर हुए तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया तुम लोगों ने अब तक ग़ैरआबाद (वीरान व बंजर) छोड़े रखा। अब उन लोगों ने जब उसे आबाद कर लिया तो तुम उनको हटाना चाहते हो। मुझे अगर उस अम्र का एहतिराम पेशेनज़र न होता कि तुम सबको हुज़ूर (ﷺ) ने जागीरें इनायत की थीं तो तुम लोगों को कुछ न दिलाता। लेकिन अब मेरा फ़ैसला ये है कि उसकी आबादकारी और परती तोड़ने का मुआवज़ा अगर तुम दे दोगे तो ज़मीन तुम्हारे हवाले हो जाएगी और अगर ऐसा नहीं कर सकते तो ज़मीन के ग़ैर आबाद हालात की कीमत देकर वो लोग इसके मालिक बन जाएँगे। फ़र्मान

के आखिरी अल्फाज़ ये हैं, व इन कुन्तुम शिअतुम रुहु अलैकुम प्रमन अदीमिल्अर्जि (किताबुल अम्वाल)

इसके बाद आम हुक्म दिया कि जिसने किसी ज़मीन को तीन बरस तक ग़ैर आबाद रखा तो जो शख्स भी उसके बाद उसे आबाद करेगा, उसकी मिल्कियत तस्लीम (स्वीकार) कर ली जाएगी। (किताबुल खिराज : पेज नं. 72)

इस हुक्म का ख़ातिरख़वाह (उल्लेखनीय) अप्रर हुआ और बड़ी तादाद में क़ब्ज़ाई हुई ज़मीनें आबाद हो गईं।

(2) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख्स को एक लम्बी ज़मीन जागीर के तौर पर अत्ता की थी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसके आबाद किये हुए हिस्से को छोड़कर बक़िया ग़ैर आबाद ज़मीन उससे वापस ले ली। (किताबुल खिराज : पेज नं. 78)

(3) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने हज़रत तलहा (रज़ि.) को (क़त्तीआ) एक जागीर अत्ता की थी और चन्द लोगों को गवाह बनाकर हुक्मनामा उनके हवाले कर दिया। गवाहों में हज़रत उमर (रज़ि.) भी थे। हज़रत तलहा (रज़ि.) जब दस्तख़त लेने की ग़र्ज़ से फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) के पास पहुँचे, तो फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) ने उस पर दस्तख़त करने से इन्कार कर दिया और फ़र्माया, अ हाज़ा कुल्लहु लक़ दूनन्नसि क्या ये पूरी जायदाद अकेले तुमको मिल जाएगी और दूसरे लोग महरूम रह जाएँ। हज़रत तलहा (रज़ि.) गुस्से में भरे हुए हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास पहुँचे और कहने लगे, वल्लाहि आ अदरी अन्तल्ख़लीफ़तु अम इमरू मैं नहीं जानता कि इस वक़्त आप अमीरुल मोमिनीन हैं या उमर? सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया, उमरू व लाकिन्नत्ताअत ली हौं। इशाअल्लाहुल् अज़ीज़ आइन्दा उमर फ़ारूक़ ही अमीरुल मोमिनीन होंगे, अल्बत्ता इत्ताअत मेरी होगी। अल्ग़ार्ज सय्यदना फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) की मुख़ालफ़त की वजह से वो जागीर न पा सके। (मुन्तख़ब कन्जुल इम्माल जिल्द चार, पेज नं. 390। व किताबुल अम्वाल : पेज नं. 276)

(4) इस तरह हज़रत इय्यना बिन हसन (रज़ि.) को सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने एक जागीर अत्ता की थी। जब दस्तख़त कराने की ग़र्ज़ से हज़रत उमर (रज़ि.) के पास आए तो हज़रत फ़ारूक़े आज़म ने दस्तख़त करने से इन्कार ही पर बस न किया बल्कि तहरीरशुदा सत्रों (लिखी हुई लाइनों) को मिटा दिया। इय्यना (रज़ि.) दोबारा सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के पास आए और ये ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि दूसरा हुक्मनामा लिख दिया जाए तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, वल्लाहि ला उजहिदु शैअन रद्दहु इमरू अल्लाह की क़सम! वो काम दोबारा नहीं करूंगा जिसको उमर (रज़ि.) ने रद्द कर दिया। (मुन्तख़ब कन्जुल इम्माल, जिल्द : चार, पेज नं. 291)

इसी सिलसिले में इब्नुल जोज़ी ने और ज़्यादा ये भी लिखा है कि हज़रत उमर (रज़ि.) बड़ी तेज़ी में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि ये जागीर व अराज़ी जो आप उनको दे रहे हैं, ये आपकी ज़ाती ज़मीन है या सब मुसलमानों की मिल्कियत है? हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, ये सबकी चीज़ हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने पूछा, तो फिर आपने किसी ख़ास शख्स के लिये इतनी बड़ी जागीर को मख़सूस क्यों किया? हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा मैंने उन हज़रात से जो मेरे पास बैठे हैं, मश्विरा लेकर किया है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, ये सबके नुमाइन्दे नहीं हो सकते। (सीरत उमर बिन ख़त्ताब, पेज नं. : 40 व अज़ाबा लाबिन हजर : ब़ालित/ पेज नं. 56)

बहरहाल उनके इस शदीद इन्कार की वजह हज़रत उमर (रज़ि.) के उन अल्फाज़ में तलाश की जा सकती है, अ हाज़ा कुल्लहु लक़ दूनन्नसि क्या दीगर अफ़राद को महरूम करके ये सब कुछ तुम्हीं को मिल जाएगा। (मुन्तख़ब कन्जुल इम्माल, जिल्द : चार पेज नं. 371 व किताबुल अम्वाल पेज नं. 277)

इन रिवायात से मा'लूम हुआ कि मफ़ादे आम्मा (सार्वजनिक लाभ) की चीज़ किसी एक शख्स के लिये क़ानूनन मख़सूस नहीं की जा सकती, कोई जागीर या जायदाद एक शख्स को सिर्फ़ उतनी ही मिलेगी जितना वो सरसब्ज़ व शादाब और आबाद रख सके। दरहक़ीक़त रसूले पाक (ﷺ) और शैख़ेन (रज़ि.) का मंशा ये था कि क़त्आत लोगों को देकर ज़मीन को ज़ेरे-काशत लाया जाए ताकि अल्लाह की ख़िल्क़त के लिये ज़्यादा अनाज मुहय्या हो सके। मगर ये बात हर वक़्त ध्यान में रहनी चाहिये कि ज़मीन सिर्फ़ उमरा (शासकों) के हाथों में पड़कर अय्याशी और इशरतपसन्दी का सबब न बन सके या बेकार न पड़ी रहे। इसलिये एहतियाज़न ज़रूरी थी कि ज़मीन सिर्फ़ उन लोगों को दी जाए जो हक़दार हों और सिर्फ़ इतनी ही दी जाए जितनी की वो देखरेख़ कर सकते हों। बहरहाल पब्लिक के फ़ायदे के लिये बेकार और ज़ाइद (अतिरिक्त) खेती की ज़मीनें हुक्मते इस्लामी अपने संरक्षण में ले लेती है ताकि उसको ज़रूरतमंद व हक़दारों में तक्सीम कर दे।

अंग्रेजी दौर हुकूमत में रिवाज था किलोग ज़मीनों पर अपने नाम से फसल लिखाकर और फ़र्ज़ी नामों से इन्दराज कराके ज़मीनों पर क़ाबिज़ रहते थे और इससे दूसरे लोगों को नफ़ उठाना किसी एक शख्स की नामज़दगी की वजह से नामुम्किन था। मुल्क में खेती की ज़मीनों पर क़ब्ज़तुल महज़ (अतिक्रमण) होने और सारी ज़मीनों के ज़ेरेकास्त न आ सकने के कारण क़ह़त (अकाल) और पैदावार की कमी बराबर चली आती रही। इस्लाम का मंशा ये है कि जितनी खेती तुम खुद कर सको उतनी ही ज़मीन पर क़ाबिज़ रहो। या जितनी आबादी मज़दूरों और हलधरों के ज़रिये ज़ेरेकास्त ला सकते हो बस उसी पर तसर्रुफ़ रखो बाकी हुकूमत के हवाले कर दो। इस्लामी हुकूमत को हक़ है कि मालिक और ज़मीनदार को ये नोटिस दे दे कि इन अजज़त अन इमारतिहा अमर्नाहा व ज़रअनाहा अगर उस ज़मीन को आबाद करने की सलाहियत तुझमें नहीं है तो हम उन ज़मीन को आबाद करेंगे कज़ालिक यफ़अलुल्इमामु इन्दना बिअराज़िलआजिज़ अन इमारतिहा जो अपनी ज़मीन को आबाद करने में मा'ज़ूर (असमर्थ) हों, उनकी ज़मीनों के बारे में इमाम को यही करना चाहिये। (अहकामुल कुर्आन जिल्द : 3 पेज नं. 532)

और इस किस्म के गश्ती पत्र हुकूमत की तरफ़ से जारी भी हुआ करते थे। मषलन इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के फ़र्मान के अल्फ़ाज़ उसी सिलसिले में नक़ल किये गये हैं कि अपने गवर्नरों को लिखा करते थे, ला तदउल अर्ज़ ख़राबा (मुहल्ला इब्ने हज़म, जिल्द : 8 पेज नं. 216) ज़मीन को हर्गिज़ ग़ैरआबाद (बंजर) न छोड़ना। हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) इसीलिये अपने इम्माल को बार बार ताकीद के साथ लिखा करते थे कि आधे मुहल्लिल पर किसान को ज़मीनों का बन्दोबस्त करो। अगर तैयार न हों तो फ़अतूहा बिष्बुलुषि फ़इल्लम यज़अ फ़अतूहा हत्ता यब्लुगलअशरु तिहाई पर बन्दोबस्त कर दो। अगर फिर भी आबाद न हो तो दसवें हिस्से की शर्त पर दे दो और आख़िर में ये भी इजाज़त दे दी जाती, फ़इल्लम यज़अ अहदुन फ़मनहहा फिर भी कोई किसी ज़मीन को आबाद न करे तो लोगों को यूँ ही मुफ़्त आबाद करने को दे दो। और अगर ज़मीन को मुफ़्त लेने पर भी कोई आपादा न हो तो हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) का हुक्म ये था, फ़इल्लम यज़अ फ़त्तफ़िक्क अलैहा मिम्बैतिलमुस्लिमीन या'नी हुकूमत के ख़ज़ाने से खर्च करके ग़ैर आबाद ज़मीन को आबाद करो। बहरहाल ज़मीन की आबादकारी के लिये कोई मुम्किन सूरत ऐसी बाक़ी न रही जो छोड़ दी गई हो।

हज़रत इमर (रज़ि.) ने नज़रान के सूदख़ोर मालदारों को मुआवज़े देकर खेती की ज़मीनों को हासिल करके मक़ामी (स्थानीय) किसानों के लिये बन्दोबस्त कर दिया था। चूनाँचे हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने उसी मौक़े पर हज़रत इमर (रज़ि.) का फ़र्मान नक़ल किया है, इन जाऊ बिल्बक़रि वल्हदीदि मिन इन्दिहिम फ़लहुमषुलुषानि व इमर अषुलुषु व इन जाअ इमरू बिल्बजि मिन इन्दिही फ़लहुशशत्त (फ़तुल बारी जिल्द 5 स. 9) अगर बैल और लोहा (हल-बैल) किसानों की तरफ़ से मुहय्या किया जाए तो उनको पैदावार में हिस्सा दो तिहाई मिलेगा और इमर (रज़ि.) (की हुकूमत) का तिहाई हिस्सा होगा। और बीज का बन्दोबस्त अगर इमर (की हुकूमत) करे तो किसानों को आधा हिस्सा मिलेगा। इस वाक़िये से ज़मीन के आबाद करने और इंसाफ़ व जनता के हक़ में सरकारी रिआयत का हाल ख़ूब वाज़ेह हुआ।

(5) एक ज़मीन मुज़ैना क़बीला के कुछ लोगों को मिली हुई थी। उन लोगों ने उस जागीर को यूँ ही छोड़ रखा था। तो दूसरे लोगों ने उसको आबाद कर दिया। मुज़ैना के लोगों ने हज़रत इमर (रज़ि.) से उसकी शिकायत की। हज़रत इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जो शख्स तीन बरस तक ज़मीन यूँ ही छोड़ रखेगा और दूसरा कोई शख्स उसे आबाद करेगा तो ये दूसरा शख्स ही उस ज़मीन का असली हक़दार हो जाएगा। (अल् अहकामुस्सुल्तानिया लिल् मावदी : पेज नं. 182)

(6) हज़रत बिलाल बिन हारिष मुज़्नी (रज़ि.) से सय्यदना फ़ारूके आज़म (रज़ि.) ने फ़र्माया, फ़ख़ुज मिन्हा मा कदरत अला इमारतिहा या'नी जो ज़मीन तुमको रसूल पाक (ﷺ) ने अज़ा फ़र्माई है उसमें से जिस क़दर तुम आबाद रख सकते हो उसे अपने पास रखो। लेकिन जब वो पूरी अराज़ी को आबाद न कर सके तो बाक़ी बची ज़मीन को फ़ारूके आज़म ने दूसरे मुसलमानों में बांट दी और हज़रत बिलाल (रज़ि.) से फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुमको ज़मीन इस मक़सद से दी थी कि तुम इससे फ़ायदा उठाओ। आँहज़रत (ﷺ) का मक़सद ये तो न था कि ख़्वाहमख़्वाह क़ाबिज़ ही हो जाओ। (तअलीक़ किताबुल अम्वाल पेज नं. 290 बहवाला अबू दाऊद व मुस्तदरक हाकिम व खुलासतुल वफ़ाअ पेज नं. 337)

नोट : इस बिलाल (रज़ि.) से बिलाल (रज़ि.) मुअज़्जिने रसूल मुराद नहीं हैं बल्कि बिलाल बिन अबी रिबाह हैं। (इस्तीआब)

(7) हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के दौर हुकूमत में भी इस किस्म का एक वाक़िया पेश आया था कि

एक शख्स ने ज़मीन को ग़ैर आबाद समझकर उसको आबाद कर लिया। ज़मीन वाले को उसकी ख़बर हुई तो मुकद्दमा लेकर हाज़िर हुआ। आपने फ़र्माया कि उस शख्स ने जो कुछ ज़मीन के सिलसिले में मेहनत मज़दूरी खर्च की है उसका मुआवज़ा तुम अदा करो। गोया उसने ये काम तुम्हारे लिये किया है। उसने कहा उसके खर्चें अदा करने की मुझमें ताक़त नहीं है। तो आपने मुद्दअ अलैह (प्रतिवादी) से फ़र्माया, इदफ़अ इलैहि एमन अज़िंहि या'नी तुम उसकी क़ीमत अदा करके उसके मालिक बन जाओ और अब खेत को सरसब्ज़ व शादाब रखो। (किताबुल अम्वाल पेज नं. 289)

ये फ़ैसले बतलाते हैं कि उन हज़रत का मंशा ये था कि ज़मीन कभी ग़ैर आबाद और बेकार न रहने पाए और हर शख्स के पास इतनी ही रहे जितनी ख़ुद खेती कर सके या करा सके। इन वाक़िआत की रोशनी में अब बातचीत का खुलासा ये है कि ज़मीन के वो बड़े बड़े टुकड़े जो ऐसे ज़मीनदारों के कब्ज़े में हों जिनकी खेती न वो ख़ुद करते हैं, न मज़दूरों के ज़रिये ही कराते हैं। बल्कि फ़ज़ी बुवाई और फ़सल के फ़ज़ी इंदराज कराकर उनके ज़रिये उन जागीरों पर क़ाबिज़ रहना चाहते हों। ऐसे ज़मीनदारों के इस ज़ालिमाना कब्ज़े के लिये शरीअते इस्लामिया में कोई जवाज़ नहीं है। ज़मीनदारों, जागीरदारों के निज़ाम में पहले इमूमन जागीरदार और तअल्लुकदार ऐसी ऐसी ज़मीनों पर क़ाबिज़ रहते थे और पटवारी के खातों में उगाई हुई फ़सल का फ़ज़ी इंदराज कराते थे, हालाँकि दरहक़ीक़त उनकी खेती नहीं होती थी।

**ज़मीन की आबाद कारी के लिये बिला सूदी क़र्ज़ का इंतज़ाम :** आज के दौर में हुकूमत किसानों के लिये बीज वग़ैरह की सोसाइटी खोलकर सूदी क़र्ज़ पर खेती के आलात (कृषि यंत्र), खाद और बीज वग़ैरह तक्सीम करती है। लेकिन ख़िलाफ़ते राशिदा में ये बात न थी बल्कि वो ग़ैर मुस्लिम रिआया को भी खेती की ज़रूरियात व फ़राहमी आलात के लिये बिला सूदी रक़म (ब्याजमुक्त ऋण) देती थी।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने इराक़, कूफ़ा व बसरा के हुक्काम के नाम फ़र्मान भेजा था कि बैतुलमाल की रक़म से उन ग़ैर मुस्लिम जनता की इमदाद (सहायता) करो जो हमें जिज्या (टेक्स) देती हैं। और वे किसी तंगी व परेशानी के कारण अपनी ज़मीनो को आबाद नहीं कर सकते तो उनकी ज़रूरियात के मुताबिक़ क़र्ज़ दो ताकि वो ज़मीन आबाद करने का सामान कर लें, बैल ख़रीद लें और बीज बोने का इंतज़ाम कर लें। और ये भी बता दो कि हम इस क़र्ज़ को इस साल नहीं लेंगे बल्कि दो साल बाद लेंगे। ताकि वो अच्छी तरह अपना काम सम्भाल लें। (किताबुल अम्वाल पेज नं. 251, सीरतुल उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) पेज नं. 67)

**ज़मीन की आबादकारी और पैदावार के इजाफ़े के लिये पानी का एहतिमाम :** ग़ल्ले की पैदावार पानी की फ़राहमी (उपलब्धता) और मुनासिब आबपाशी पर मौकूफ़ (आधारित) है। जब ज़मीन को चश्मों और नहरों के ज़रिये पानी की फ़रावानी हासिल होती है तो अनाज सरसब्ज़ व शादाब होकर पैदा होता है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने काश्तकारी की उस अहम ज़रूरत का हमेशा लिहाज़ रखा। चुनाँचे हज़रत स़अद (रज़ि.) बिन अबी वक्कास की मातहत में इस्लामी फ़ौजों ने सवादे इराक़ को फ़तह किया तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्मान भेजा कि जायदादे मन्कूला (चल सम्पत्ति) घोड़े हथियार वग़ैरह और नक़द को लश्कर में तक्सीम कर दो, और जायदाद ग़ैर मन्कूला (अचल सम्पत्ति) को मुकामी बाशिन्दों के पास ही रहने दो, ताकि उसकी मालगुजारी और ख़िराज (टेक्स) से इस्लामी ज़रूरियात और सरहदी फ़ौजों के खर्चें और आइन्दा अस्करी (सैनिक) तंज़ीमों के ज़रूरी अख़राजात फ़राहम होते रहें। इस मौक़े पर आपने ज़मीनों की शादाबी के ख़याल से फ़र्माया। अल्लअर्ज वल्लअन्हारु लिउम्मा लिहाज़ ज़मीन और उसके मुता'ल्लिक़ा नहरों को मौजूदा काश्तकारों ही के कब्ज़े में रहने दो। (किताबुल अम्वाल पेज नं. 59, सीरत उमर लाबन अल् जौज़ी पेज नं. 80, मशाहीरुल इस्लाम जिल्द अब्वल पेज नं. 317)

अनाज की पैदावार और आबपाशी की अहमियत के सिलसिले में एक और वाक़िया भी क़ाबिले ज़िक़्र है कि एक बार हज़रत उमर (रज़ि.) के सामने एक मामला पेश हुआ। मुहम्मद बिन मुस्लिमा, इब्ने जिहाक़ को अपनी ज़मीन में से नहर ले जाने की इजाज़त नहीं दे रहे थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया कि तुमको इजाज़त दे देनी चाहिये, क्योंकि तुम्हारी ज़मीन से होकर उनकी ज़मीन में जाएगी, तो अव्वल व आख़िर उससे तुम भी फ़ायदा उठाओगे। मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने अपने फ़रीक़ मुद्ई से कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जाने दूँगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, वल्लाहि लयुमरन्न बिही व

लौ अला बतनिक कसम अल्लाह की वो नहर बनाई जाएगी चाहे तुम्हारे पेट पर ही होकर क्यों न गुजरे। यहाँ तक कि नहर जारी करने का हुक्म दे दिया गया और उन्होंने नहर निकाल ली। (मौता इमाम मुहम्मद पेज नं. 382)

इन वाकियात से जाहिर है कि खिलाफते राशिदा के मुबारक दौर में ज़मीन की आबपाशी (सिंचाई) और पैदावार ही के लिये पानी वगैरह पहुँचाने का हर मुम्किन तौर से इतिजाम व एहतिमाम होता रहा।

**बिला मर्जी काश्त (अवैध खेती) :** ज़मीन की आबादकारी के सिलसिले में बिला मर्जी काश्त, बटाई, दखल कारी वगैरह के बारे में चन्द ज़रूरी बातें अर्ज़ की जाती हैं।

अब सबसे पहले सुनिए कि ज़मीन वाले की बिला मर्जी काश्त की हकीकत शरीअत में क्या है। इस सिलसिले में आँहज़रत (ﷺ) का इशारे गिरामी मौजूद है, **मَنْ جَرَأَ اَرْضًا بِغَيْرِ اِذْنٍ اَهْلِيهَا لَيْسَ لَهُ مِنْ جَرِّهَا شَيْءٌ** या 'नी जिसने किसी की ज़मीन को बिना इजाज़त जोत लिया, तो उसको उस खेती से कुछ हासिल नहीं होगा। इससे मा'लूम हुआ कि ज़मीन वाले की हैषियते उफ़्री का एहतिराम शरीअत में मद्देनज़र है। पस अगर कोई शख्स उसके ग़ैर उफ़तादा और आबाद ज़मीन पर यूँ ही क़ब्ज़ा करेगा तो उसका तसर्रुफ़ क़तून बातिल है। लेकिन बंजर ज़मीन वगैरह आबाद परती ज़मीन जो मुसलसल तीन साल से ज़्यादा अगर मालिक अपनी तसर्रुफ़ व काश्त में न ला सके, उसका मामला बिलकुल अलग है।

**दखलकारी (क़ब्ज़ा या अतिक्रमण) :** इसी तरह दखलकारी का मौजूदा सिस्टम भी क़तून बातिल है। इस्लाम कभी किसान को ये इजाज़त न देगा कि वो असल मालिक की ज़मीन पर पटवारी वगैरह की फ़र्ज़ी कारवाइयों के आधार पर क़ब्ज़ा जमा ले। किसान को मेहनत व शिकत ज़मीन की पैदावार और ज़मीन के मुनाफ़े में है न कि असल ज़मीन की मिल्कियत में। अगर अदालत से उसके हक़ में फ़ैसला भी हो जाए और फ़र्ज़ी दलीलों व गवाहों और पटवारियों के इन्दराज़ात व काग़ज़ात के आधार पर कोई हाकिम फ़ैसला भी कर दे तो वो शरअन बातिल है। अह्दादीष में इस सिलसिले में सख़्त वर्ईद वारिद है। इशारे नबवी है, **وإنما ترضون من الأرض ما لا يرضى الله** अल्लह न बिहुज्जति ही मिम्बअज़िन फ़अक़ज़ी लहू अला नहवि मा अस्मउ फ़मन क़ज़ैतु लहू बिहकि अख़ीहि फ़ला याखुजूहू फ़अना अक़तउ लहू क़ितअतमिनन्नारि (मिशकात जिल्द षानी बाबुलअक्ज़िय)

इस रिवायत से मा'लूम हुआ कि हाकिम ऐसे काग़ज़ात पटवारी वगैरह के उपलब्ध कराए गये गवाहों के आधार पर अगर किसी शख्स के लिये ऐसी ज़मीन की मिल्कियत का दखलकारी के नाम पर फ़ैसला हो भी जाए जो दर हकीकत उसकी ख़रीदी हुई मिल्कियत न थी तो उस हाकिम का फ़ैसला हर्गिज़ उस ज़मीन को दखलकार (अतिक्रमी) के लिये हलाल नहीं करार दे सकता। पटवारी से साज़बाज़ करके ऐसी ज़मीनों पर क़ब्ज़ा लिखाना या अपनी मिल्कियत दिखलाना जो दर हकीकत ज़मीनदार की ज़रख़रीद है, अव्वलन हराम है, और उन अकाज़ीब व शहादाते काज़िबा की बुनियाद पर उसे हलाल समझना हराम दर हराम है।

**बटाई :** आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ैबर को फ़तह करके वहाँ की ज़मीन को ख़ैबर के किसानों के सुपुर्द कर दी। बटाई के सिलसिले में तै हुआ कि आधा किसान ले लेंगे और आधा आँहज़रत (ﷺ) लेंगे। जब खजूर पककर तैयार हुई तो आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) को खजूरों का तख़मीना करने भेजा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने फ़राख़दिली के साथ ऐसा तख़मीना किया कि उस मुन्सिफ़ाना तक्सीम (न्यायपूर्ण बंटवारे) पर यहूदी किसान पुकार उठे, बिहाज़ा कामतिस्समावातु वल्अर्ज़ कि आसमान और ज़मीन अब तक उसी किस्म के अदलो-इंसाफ़ की वजह से कायम हैं। उन्होंने पूरी पैदावार को चालीस हज़ार वस्क ठहराया और पूरे बाग़ का दो बराबर हिस्सा बना दिया और उनको इख़्तियार दे दिया कि इसमें से जिस हिस्से को चाहे ले लें। रावी का बयान है कि फल तोड़ने के बाद एक निस्फ़ की पैदावार दूसरे निस्फ़ की पैदावार पर ज़रा बराबर भी ज़्यादा न निकली। (किताबुल अम्वाल पेज नं. 482)

शेख़ुल इस्लाम अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) ने भी बटाई को जाइज़ लिखा है, फ़माते हैं, **والمزارع انما هو ملك للمزارع** फ़ी असहिह क़ौलिलउल्माइ व हिय अमलुल्मुस्लिमीन अला अहदि नबिख़ियहिम व अहदि शेख़ुलफ़ाईरशिदीन व

अलैहा अमलु आलि अबी बक्र व आलि इमर व आलि इब्मान व आलि अली (रज़ि.) व गैरुहुम व हिय कौलु अकाबिरस्सहाबति व हिय मज़हबु फ़ुक्रहाइल्हदीषि व अहमदब्नि हम्बल वब्नि राहवय वल्बुखारी वब्नि खुज़ैमत व गैरुहुम व कानन्नबिय्यु (ﷺ) क़द आमल अहल ख़ैबर बिशतसि मा यख़रुजु मिन्हा मिन फ़मरिन व ज़रइन हत्ता मात (अल्हब्सतु फ़िल्इस्लाम स. 20)

इसका हासिल ये है कि खेती में बटाई जाइज़ है, अहदे नबवी व खुल्फ़-ए-राशिदीन व सहाबा किराम (रज़ि.) के दौर में इस तरह का तज़ामुल मौजूद है। ज़मीन से शरीअत को पैदावार हासिल करना मक्सूद है। ज़मीन कभी मुअत्तल व बेकार हाथों में पड़ी न रहे। इसलिये ये हुक्म भी दिया गया है कि अगर कोई शख्स किसी मजबूरी से अपनी ज़मीन फ़रोख्त करने लगे तो अपने दूसरे पड़ोसी किसान से सबसे पहले पूछे। आँहज़रत (ﷺ) का फ़र्मान है कि जिस शख्स के पास ज़मीन या खजूर के बागात हों और उनको वो बेचना चाहे तो उसको सबसे पहले अपने शरीक पर पेश करे। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज नं. 307)

इसी तरह अगर शर्कत में खेती हो और कोई शख्स अपना हिस्सा बेचना चाहे तो उस पर लाज़िम है कि पहले अपने शरीक (पार्टनर) को पेश करे इसलिये कि वो अव्वल हक्कदार है। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज नं. 381)

यहाँ ये मक़सद है कि दूसरा आदमी आलाते हर्ष व इतिज़ामात और वसाइल फ़राहम करेगा। मुम्किन है जल्द मुहय्या न हो और उसके पड़ोसी के पास जबकि तमाम मशीनरी व अस्बाब (साधन) फ़राहम हो तो ज़मीन के बारआवर व ज़ैरेकाशत हो जाने के लिये यहाँ ज़्यादा इत्मीनानबख़्श (संतोषप्रद) सूरत मौजूद है। इसलिये पहले ये ज़मीन उस पड़ोसी को पेश करना लाज़िम है।

**काशतकारी के लिये तरगीब :** (11) ज़मीनी पैदावार के सिलसिले में हज़रत इमर (रज़ि.) ने मुख्तलिफ़ अंदाज़ में तवज्जह दिलाई है। चुनौचे कुछ लोग यमन से आए हुए थे, हज़रत इमर (रज़ि.) ने उनसे पूछा, तुम कौन लोग हो? जवाब दिया कि हम लोग मुतवक्कल अल्लाह (अल्लाह पर भरोसा रखने वाले) हैं। फ़र्माया, तुम लोग हर्गिज़ मुतवक्कल अल्लाह नहीं हो सकते। इन्नमलमुतवक्किलु कुल्लु रजुलिन अल्कबा फ़िल्अर्ज़ि व तवक्कल अलल्लाहि मुतवक्किल वो शख्स है जो ज़मीन में हल चलाकर उसे मुलायम करके उसमें बीज डाले, फिर उससे उगने वाली खेती के मामले को अल्लाह के सुपुर्द कर दे। (मुत्तख़ब कन्ज़ुल उम्मा, जिल्द 2 पेज नं. 216)

मतलब ये है कि जो लोग अमल करें और नतीजा अमल को अल्लाह के सुपुर्द छोड़ दे वही लोग दर असल मुतवक्किल हैं। किसान की मिशाल उभारने पर दलालत करती है और साथ ही ये हकीकत भी है कि हकीकती तवक्कल की मिशाल किसान की ज़िन्दगी व सुपुर्दगी में मुलाहिज़ा की जाती है। बीज की परवरिश हवा, पानी में आसमान की तरफ़ नज़र, सूरज व चाँद से मुनासिब गर्मी व ठण्डक की मिली-जुली कैफ़ियतों का जिस क़दर एहतियाज किसान (काशतकार) को है और जिस तरह बुआई के बाद किसान अपने तमाम मामलात शुरू से लेकर आख़िर तक अल्लाह के सुपुर्द कर देता है। ये बात किसी और शौअबे (विभाग) में इस हद तक नहीं है।

अल्लामा ग़ज़ाली (रह.) ने लिखा है कि खेती-बाड़ी, तिज़ारत व ज़राअत वगैरह से अलग होना और उससे जुड़े कारोबार के कामों का एहतिमाम छोड़ देना हराम है और उसका तवक्कल नाम रखना ग़लत है। (अह्याउल् उलूम जिल्द चार पेज नं. 265)

(12) ज़मीन की आबादी व काशतकारी का हुक्म हज़रत इमर (रज़ि.) ने भी दिया है। अबू जबयान नामी एक शख्स से आपने पूछा कि तुमको किस क़दर वज़ीफ़ा बैतुलमाल (राजकोष) से मिलता है? उन्होंने जवाब दिया कि ढाई हजार दिरहमा आपने फ़र्माया कि या अब्बा जुब्बान इत्तिख़िज़ मिन्ल्हर्षि या नी ऐ अबू जबयान! खेती का सिलसिला कायम रखो। वज़ीफ़े पर भरोसा करके खेती से ग़फलत न करो। (अल् अदबुल मुफ़रद पेज नं. 84)

(13) एक बार हज़रत इमर (रज़ि.) ने कैदियों के बारे में फ़र्माया कि तहकीकात करके काशतकार व ज़राअतपेशा लोगों को सबसे पहले रिहा करो। हुक्म के अल्फ़ाज़ ये हैं, ख़ल्लौ कुल्ल अक्कारिन व ज़राइन (मुत्तख़ब कन्ज़ुल उम्मा जिल्द 2 स. 313)

ये आम कैदियों में से सिर्फ खेती करने वाले किसानों की फौरी रिहाई का बन्दोबस्त इसलिये फर्माया जा रहा है कि मुल्क के अवामी फ़लाह (जनहित) का दारोमदार अनाज व अन्य खाने की चीज़ों की आम पैदावार पर है। हमारे यहाँ नेपाल में तमाम मुकद्दमात की खेती के ज़माने में लम्बी तारीखें देकर मुल्तवी कर दी जाती हैं ताकि काश्तकार अपने मकान पर वापस जाकर फ़रागत से खेती सम्भाल सकें।

ले उड़ी तर्ज़े फ़र्माँ बुलबुल नालाँ हमसे

गुल ने सीखी रविश चाक गरीबाँ हमसे

(14) एक बार हज़रत उमर (रज़ि.) ने ज़ैद बिन मुस्लिमा (रज़ि.) को देखा कि ज़मीन को आबाद कर रहे हैं तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फर्माया, असब्त इस्तगन अनिज़ासि यकुन अस्वनु लिदीनिक व अवर मुल्क अलैहिम या'नी ये तुम बहुत अच्छा कर रहे हो। इसी तरह रोज़गार का इतिज़ाम हो जाने से दूसरों से तुमको बेपरवाही हासिल हो जाएगा और तुम्हारे दीन की हिफ़ाज़त होगी और इस तरह लोगों में तुम्हारी इज़्जत भी होगी। ये फर्माकर हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये शेर पढ़ा,

फलन अज़ाल अलज़ौरा अज़मरूहा

इज़ल करीम अलल्इख़वानि ज़ू मालिन

(अहयाउल इलूम जिल्द 2 पेज नं. 64)

(15) हज़रत इम्रान (रज़ि.) के ज़माने में जब वज़ीफ़े (राज सहायता) पर भरोसा होने लगा, तो आपने भी हुक्म दिया, व मन कान लहुम मिन्कुम ज़रइन फ़ल्यल्हक बिज़रइही व मन लहु ज़रइन फ़ल्यल्हक बिज़रइही फ़इन्ना ला नुअती मालल्लाहि इल्ला लिमन ग़ज़ा फ़ी सबीलिही (अल्इमामतु वस्सियासतु जिल्द अब्वल स. 33) या'नी जिसके पास दूध वाले जानवर हों वो अपने रेवड़ की परवरिश से अपने रोज़गार का इतिज़ाम करे और जिसके पास खेत हो वो खेती में लगकर अपनी ज़रूरतों का इतिज़ाम कर ले। वज़ीफ़े पर भरोसा करने के सबब से सारा निज़ाम मुअतल हो जाएगा (या'नी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी), इसलिये अब ये माल सिर्फ़ मुजाहिद व ग़ाज़ी सिपाहियों के लिये मख़सूस रहेगा। चुनाँचे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) भी सिनह नामी मुक़ाम में अपनी ज़मींदारी का कारोबार करते थे और हज़रत उमर फ़ारूक (रज़ि.) खुद भी खेती कराते थे। (बुख़ारी किताबुल मुज़ारेअ)

हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) व हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) वगैरह ने भी मुख्तलिफ़ जागीरों को बटाई पर दे रखा था। (किताबुल ख़िराज पेज नं. 73)

## 43. किताबल इस्तिकराज़

किताब करज लेने और करज अदा करने और हज़र करने और मुफ़्तिसी मंज़ूर करने के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हज़र का डिक्शनरी में मा'नी रोकना, मना करना और शरअ में उसको कहते हैं कि हाकिमे इस्लाम किसी शख्स को अपने माल में तसर्रुफ़ (खर्च) करने से रोक दे। ये दो वजह से होता है, या तो वो शख्स बेवकूफ़ हो, अपना माल तबाह करता हो; या दूसरों

के हुक्क की हिफाजत के लिये। मफलन मदयूने मुफ्तिलस (कर्जदार गरीब) पर हजर करना, कर्जखवाहों के हुक्क बचाने के लिये या राहिन (गिरवी रखने वाला) पर या मुरतहन (जिसके पास कोई चीज गिरवी रखी जाए) पर या मरीज पर और वारिष का हुक्क बचाने के लिये। तफलीस, लुगत में किसी आदमी का मुहताजगी के साथ मशहूर हो जाना। ये लफ़्ज़ फ़लूस से माखूज (बना) है और ये पैसे के मा'नी में है। शरअन जिसे हाकिमे वक्त दीवालिआ करार देकर उसको बचे हुए माल में तसर्हफ़ से रोक दे ताकि जो भी मुफ्किन हो उसके कर्जखवाहों वगैरह को देकर उनके मामलात खत्म कराए जाएँ।

**बाब 1 : जो शख्स कोई चीज़ कर्ज खरीदने और उसके पास क़ीमत न हो या उस वक्त मौजूद न हो तो क्या हुक्म है?**

2385. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा कि हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें मुगीरह ने, उन्हें शअबी ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा में शरीक था। आपने फ़र्माया, अपने ऊँट के बारे में तुम्हारी क्या राय है, क्या तुम इसे बेचोगे? मैंने कहा कि हाँ, चुनौचे ऊँट मैंने आप (ﷺ) को बेच दिया और जब आप (ﷺ) मदीना पहुँचे तो मुबह ऊँट को लेकर मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर होगया, आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी क़ीमत अदा कर दी। (राजेअ : 443)

पाबित हुआ कि मामला उधार करना भी दुस्त है मगर शर्त ये कि वा'दे पर रक़म अदा कर दी जाए।

2386. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, उनसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे अअमश ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि इब्राहीम की ख़िदमत में हमने बैअे-सलम में रहन का ज़िक्र किया, तो उन्होंने बयान किया कि मुझसे अस्वद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक यहूदी से अनाज एक ख़ास मुहत (के कर्ज पर) ख़रीदा, और अपनी लोहे की ज़िरह उसके पास रहन रख दी।

(राजेअ : 2086)

मा'लूम हुआ कि ज़रूरत के वक्त अपनी कोई चीज़ रहन (गिरवी) भी रखी जा सकती है। लेकिन आजकल उलटा मामला है कि रहन की चीज़ अज़ किस्म ज़ेवर वगैरह पर भी महाजन लोग सूद लेते हैं। नतीजा ये कि वो ज़ेवर जल्दी वापस न लिया जाए तो एक न एक दिन सारा सूद की नज़र होकर ख़त्म हो जाता है। मुसलमानों के लिये जिस तरह सूद लेना ह़राम है वैसे ही सूद देना भी ह़राम है, लिहाज़ा ऐसा गिरवी मामला हर्गिज़ न करना चाहिये।

**बाब 2 : जो शख्स लोगों का माल अदा करने की नित्यत से ले और जो हज़म करने की नित्यत से ले**

١- باب مَنْ اشْتَرَى بِالذِّينِ وَلَيْسَ عِنْدَهُ ثَمَنُهُ، أَوْ لَيْسَ يَحْضُرُهُ

٢٣٨٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ الْمُفِيرَةِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (كَيْفَ تَرَى بَعِيرَكَ؟ أَتَبِيعُنِيهِ؟)) قُلْتُ نَعَمْ، فَبَعْتُهُ إِيَّاهُ. فَلَمَّا قِيمَ الْمَدِينَةَ غَدَرْتُ إِلَيْهِ بِالْبَعِيرِ، فَأَعْطَانِي ثَمَنَهُ)). (راجع: ٤٤٣)

٢٣٨٦- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: ((لَدَاكَرْنَا عِنْدَ إِبْرَاهِيمَ الرَّقْنِ فِي السَّلَامِ فَقَالَ: حَدَّثَنِي الْأَسْوَدُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اشْتَرَى طَعَامًا مِنْ يَهُودِيٍّ إِلَى أَجْلِ وَرَقْنَهُ دِرْعًا مِنْ حَدِيدٍ)). (راجع: ٢٠٨٦)

٢- بَابُ مَنْ أَخَذَ أَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ إِدَاءَهَا، أَوْ إِنْثِلَاقَهَا



2387. हमसे अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे और बिन जैद ने, उनसे अबू गैष ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो कोई लोगों का माल कर्ज के तौर पर अदा करने की निय्यत से लेता है तो अल्लाह तआला भी उसकी तरफ़ से अदा करेगा और जो कोई न देने के लिये ले, तो अल्लाह तआला भी उसको तबाह कर देगा।

٢٣٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَوْثِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ عَنْ فُورِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَخَذَ أَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ أَدَاءَهَا أَدَّى اللَّهُ عَنْهُ، وَمَنْ أَخَذَ يُرِيدُ إِتْلَافَهَا تَلَافَتْهُ اللَّهُ)).

हदीसे नबवी अपने मतलब में वाज़ेह है। जिसकी निय्यत अदा करने की होती है अल्लाह पाक भी ज़रूर उसके लिये कुछ न कुछ अस्बाब वसाइल बना देता है। जिनसे वो कर्ज अदा करा देता है और जिनकी अदा करने की निय्यत नहीं होती, उसकी अल्लाह भी मदद नहीं करता। इस सूरत में कर्ज लेना गोया लोगों के माल पर डाका डालना है फिर ऐसे लोगों की साख भी ख़त्म हो जाती है और सब लोग उसकी बेईमानी से वाकिफ़ होकर उससे लेन-देन करना छोड़ देते हैं। खुलासा ये कि कर्ज लेते वक़्त अदा करने की निय्यत और फ़िक्र ज़रूरी है।

### बाब 3 : कर्जों का अदा करना, और अल्लाह तआला ने (सूरह निसा में) फ़र्माया,

٣- بَابُ أَدَاءِ الدَّيُونِ ، وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى:

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके मालिकों को अदा करो और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो इंसानों के साथ करो अल्लाह तुम्हें अच्छी ही नज़ीहत करता है। इसमें कुछ शक नहीं कि अल्लाह बहुत सुनने वाला, बहुत देखने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا، وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ، إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

2388. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू शिहाब ने बयान किया, उनसे अमश ने, उनसे जैद बिन वहब ने और उनसे अबू जरर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ था। तो फ़र्माया कि मैं ये भी पसन्द नहीं करूंगा कि उहुद पहाड़ (को देखने) से थी। तो फ़र्माया कि मैं ये भी पसन्द नहीं करूंगा कि उहुद पहाड़ सोने का हो जाए तो उसमें से मेरे पास एक दीनार के बराबर भी तीन दिन से ज़्यादा बाक़ी रहे सिवाय उस दीनार के जो मैं किसी का कर्ज अदा करने के लिये रख लूँ। फिर फ़र्माया, (दुनिया में) देखो जो ज़्यादा (माल) वाले हैं वही मुहताज हैं। सिवाय उनके जो अपने माल व दौलत को यूँ और यूँ खर्च करें। अबू शिहाब रावी ने अपने सामने और दाईं तरफ़ और बाईं तरफ़ इशारा किया। लेकिन ऐसे लोगों की ता'दाद कम होती

٢٣٨٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو شَيْهَابٍ عَنِ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهَبٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا أَتَيْنَا - يَعْنِي أُحُدًا - قَالَ: ((مَا أَحِبُّ إِلَيَّ أَنْ تَعُولَ لِي دَهَبًا يَمْكُتُ عِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ فَوْقَ ثَلَاثٍ إِلَّا دِينَارًا أَرُصُّهُ لِدَيْنٍ)). ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ الْأَكْثَرِينَ هُمُ الْاِقْلُونَ، إِلَّا مَنْ قَالَ بِأَمَالٍ هَكَذَا وَهَكَذَا)) - وَأَشَارَ أَبُو شَيْهَابٍ بَيْنَ يَدَيْهِ وَعَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ - ((وَقَلِيلٌ

है। फिर आपने फ़र्माया यहीं ठहरे रहो। और आप थोड़ी दूर आगे की तरफ बढ़े। मैंने कुछ आवाज़ सुनी। (जैसे आप किसी से बातें कर रहे हों) मैंने चाहा कि आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाऊँ। लेकिन फिर आपका फ़र्मान याद आया कि यहीं उस वक़्त तक ठहरे रहना जब तक मैं न आ जाऊँ। उसके बाद जब आप तशरीफ़ लाए तो मैंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अभी मैंने कुछ सुना था, या (शायी ने ये कहा कि) मैंने कोई आवाज़ सुनी थी। आपने फ़र्माया, तुमने भी सुना! मैंने अर्ज़ किया कि हाँ। आपने फ़र्माया कि मेरे पास जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आए थे और कह गए हैं कि तुम्हारी उम्मत का जो शख्स भी इस हालत में मेरे किबो अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, तो वो जन्नत में दाख़िल होगा। मैंने पूछा कि अगरचे वो इस इस तरह (के गुनाह) करता रहा हो। तो आपने कहा कि हाँ!

(राजेअ: 1237)

2389. हमसे अहमद बिन शबीब ने बयान किया, कहा कि हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना हो तब भी मुझे ये पसन्द नहीं कि तीन दिन गुज़र जाए और उस (सोने) का कोई हिस्सा मेरे पास रह जाए। सिवाय उसके जो मैं किसी कर्ज़ के देने के लिये रख छोड़ूँ। इसकी रिवायत मालेह और अक़ील ने जुहरी से की है।

(दीगर मक़ाम : 6445, 7228)

**तशरीह:** बाब का मतलब इस फ़िक्से से निकलता है, मगर वो दीनार तो रहे जिसको मैंने कर्ज़ा अदा करने के लिये रख लिया हो क्योंकि इससे मा' लूम होता है कि कर्ज़ अदा करने की फ़िक्क हर शख्स को करना चाहिये और उसका अदा करना ख़ैरात करने पर मुकद्दम है। अब इसमें इख़्तिलाफ़ है कि ख़ैरात करने के लिये कोई शख्स बिला ज़रूरत कर्ज़ ले तो जाइज़ है या नहीं। और सहीह ये है कि अदा करने की निम्नत हो तो जाइज़ है, बल्कि प्रवाब है। अब्दुल्लाह बिन जा' फ़र बेज़रूरत कर्ज़ लिया करते थे। लोगों ने पूछा, उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह कर्ज़दारों के साथ है यहाँ तक कि वो अपना कर्ज़ अदा कर दे। मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मेरे साथ रहे और तजुर्बे से मा' लूम हुआ है कि जो शख्स नेक कामों में ख़र्च करने की वजह से कर्ज़दार हो जाए तो परवरदिगार उसका कर्ज़ ग़ैब से अदा करवा देता है। मगर ऐसी कीमिया सिफ़त (चमत्कारी) शख्सियतें आजकल नायाब (दुर्लभ) हैं। मौजूदा हालात में कर्ज़ किसी हाल में भी अच्छा नहीं है। यूँ मजबूरी में सब कुछ करना पड़ता है मगर ख़ैर-ख़ैरात करने के लिये कर्ज़ निकालना आजकल किसी तरह भी ज़ेबा (शोभनीय) नहीं क्योंकि अदायगी का मामला

مَا هُمْ)). وَقَالَ : ((مَكَانَكَ)), وَتَقَدَّمَ غَيْرُ بَعِيدٍ لَسَمِعْتُ صَوْتًا، فَأَرَدْتُ أَنْ آتِيَهُ. ثُمَّ ذَكَرْتُ قَوْلَهُ : مَكَانَكَ حَتَّى آتِيَكَ. فَلَمَّا جَاءَ قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، الَّذِي سَمِعْتُ - أَوْ قَالَ : الصَّوْتُ الَّذِي سَمِعْتُ - قَالَ : ((وَهَلْ سَمِعْتَ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ، قَالَ : ((أَتَانِي جِبْرِيلٌ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالسَّلَامُ لِقَالِ : مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِكَ لَا يَشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ : وَإِنْ فَعَلَ كَذَا وَكَذَا؟ قَالَ : نَعَمْ)). [راجع : 1237]

٢٣٨٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ يُونُسَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: حَدَّثَنِي عُمَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنُ عُثْمَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَوْ كَانَ لِي مِثْلُ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا يَسْرُرُنِي أَنْ يَمُرَّ عَلَيَّ ثَلَاثٌ وَعِشْرُونَ مِنْهُ شَيْئًا، إِلَّا شَيْئًا أَرْصُدُهُ لِذَيْنِ)) رَوَاهُ صَالِحٌ وَغَقِيلٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ

[طرفاء في : ٦٤٤٥، ٧٢٢٨]

बहुत ही परेशानकुन बन जाता है। फिर ऐसा कर्जदार आदमी दीन और दुनिया हर लिहाज से गिर जाता है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को कर्ज से बचाए और मुसलमान कर्जदारों का गैब से कर्ज अदा कराए, आमीन।

#### बाब 4 : ऊँट कर्ज लेना

2390. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्हें सलमा बिन कुहैल ने खबर दी, कहा कि मैंने अबू सलमा से सुना, वो हमारे घर में अबू हुसैह (रज़ि.) से हदीष बयान कर रहे थे कि एक शख्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने कर्ज का तक्काज़ा किया और सख्त सुस्त कहा। सहाबा किराम (रज़ि.) ने उसको सज़ा देनी चाही तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे कहने दो। साहिबे हक़ के लिये कहने का हक़ होता है और उसे एक ऊँट ख़रीद कर दे दो। लोगों ने अर्ज किया कि उसके ऊँट से (जो उसने आपको कर्ज दिया था) अच्छी उम्र ही का ऊँट मिल रहा है। आपने फ़र्माया कि वही ख़रीद के उसे दे दो क्योंकि तुममें अच्छा वही है, जो कर्ज अदा करने में सबसे अच्छा हो। (हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है) (राजेज़ : 2305)

#### बाब 5 : तक्काज़े में नरमी करना

2391. हमसे मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक ने, उनसे रिबई बिन हराश ने और उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक शख्स का इतिहास हो गया (क़ब्र में) उससे सवाल हुआ। तुम्हारे पास कोई नेकी है? उसने कहा कि मैं लोगों से ख़रीद व फ़रोख़्त करता था। (और जब मेरा किसी पे कर्ज होता) तो मैं मालदारों को मुहलत दिया करता था और तंगदस्तों के कर्ज को मुआफ़ कर देता था। उसी पर उसकी बख़्शिश हो गई। अबू मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने यही नबी करीम (ﷺ) से सुना है। (राजेज़ : 2077)

#### 4- باب استقراض الإبل

٢٣٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا سَلَمَةُ بْنُ كَهْمَلٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ يَتَنَبَّأُ بِحَدِيثٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا تَقَاضَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَأَعْلَطَهُ لَهُ، فَهُمْ أَصْحَابُهُ، فَقَالَ: ((ذَقُّوهُ لِأَنَّ لِصَاحِبِهِ الْحَقَّ مَقَالًا))، وَاشْفَرُّوا لَهُ بَعِيرًا فَأَعْطَوْهُ إِيَّاهُ. وَقَالُوا: لَا نَجِدُ إِلَّا أَفْضَلَ مِنْ مِثْلِهِ، قَالَ: ((اشْفَرُّوهُ فَأَعْطَوْهُ إِيَّاهُ، لِأَنَّ عَمْرُكُمُ أَحْسَنُكُمْ قَضَاءً)). [راجع: ٢٣٠٥]

#### 5- باب حسن التقاضي

٢٣٩١- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ رِبْعٍ عَنْ خَلِيفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَاتَ رَجُلٌ أَفْقِلٌ لَهُ: مَا كُنْتُ تَقُولُ؟ قَالَ: كُنْتُ أَبَايَ النَّاسَ فَاتَّخِذُوا مِنَ الْمَوْبَرِ وَأَخَفْتُ عَنِ الْمُغْسِرِ. فَقِيلَ لَهُ:)) قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ: سَمِعْتُهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٠٧٧]

इससे तक्काज़े में नरमी करने की फ़ज़ीलत प्राबित हुई। अल्लाह पाक ने कुआन में फ़र्माया, व इन् कान ज़ू इस्तिन फ़नज़िरतुन् इला मयसरतिन व इन् तसद्कू ख़ैरुल्लकुम (अल बकर : 280) या'नी अगर कर्जदार तंगदस्त हो तो उसको ढील देना बेहतर है और अगर उस पर सद्का ही कर दो तो ये और भी बेहतर है। खुलासा ये कि ये अमल अल्लाह के नज़दीक बहुत ही

पसन्दीदा है।

## क्या 6 : क्या बदले में क़र्ज वाले कूँट से ज़्यादा उम्र वाला कूँट दिया जा सकता है

मुराद ये है कि क़र्ज में मामले की रू से कम उम्र वाला कूँट देना है। मगर वो न मिला और बड़ी उम्र वाला मिल गया तो उसी को दिया जा सकता है अगरचे देने वाले को उसमें नुक़सान भी है।

2392. हमसे मुसहद ने बयान किया, उनसे यह्या कज़ान ने, उनसे सुफ़यान शौरी ने, कि मुझसे सलमा बिन कुहैल ने बयान किया, उनसे अबू सलमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) से अपना क़र्ज का कूँट मांगने आया। तो आप (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया कि उसे उसका कूँट दे दो। सहाबा ने अर्ज किया कि क़र्ज ख़्वाह के कूँट से अच्छी उम्र का कूँट ही मिल रहा है। इस पर उस शख़्स (क़र्ज ख़्वाह) ने कहा मुझे तुमने मेरा पूरा हक़ अदा कर दिया, तुम्हें अल्लाह तुम्हारा हक़ पूरा पूरा दे! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे वही कूँट दे दो क्योंकि बेहतरीन शख़्स वो है जो सबसे ज़्यादा बेहतर तरीक़े पर अपना क़र्ज अदा करता हो। (राजेअ : 2305)

## बाब 7 : क़र्ज अच्छी तरह से अदा करना

2393. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अबू सलमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) पर एक शख़्स का एक ख़ास उम्र का कूँट क़र्ज था। वो शख़्स आप (ﷺ) से तक्राज़ा करने आया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे कूँट दे दो। सहाबा ने तलाश किया लेकिन ऐसा ही कूँट मिल सका जो क़र्ज ख़्वाह के कूँट से अच्छी उम्र का था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वही दे दो। उस पर उस शख़्स ने कहा कि आपने मुझे मेरा पूरा हक़ अदा कर दिया अल्लाह आपको भी इसका बदला पूरा पूरा दे। आपने फ़र्माया कि तुममें बेहतर आदमी वो है जो क़र्ज अदा करने में भी सबसे बेहतर हो। (राजेअ : 2305)

मा'लूम हुआ कि क़र्ज ख़्वाह को उसके हक़ से ज़्यादा दे देना बड़ा कारे प्रवाब है।

2394. हमसे ख़ल्लाद ने बयान किया, उनसे मिस्अर ने बयान किया, उनसे मुहारिब बिन दज़्ज़ार ने बयान किया, और उनसे

## ٦- بَابُ هَلْ يُعْطَى أَكْثَرُ مِنْ مِنبِهِ؟

٢٣٩٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ : حَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ كُهَيْلٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : (أَنَّ رَجُلًا لَقِيَ النَّبِيَّ ﷺ يَتَقَضَّاهُ بَعْرًا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : «(أَعْطُوهُ)» . فَقَالُوا : نَجِدُ إِلَّا مِنَّا أَفْضَلَ مِنْ مِنبِهِ، فَقَالَ الرَّجُلُ : أَوْلَيْتَنِي أَوْفَاقًا اللَّهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : «(أَعْطُوهُ)» ، فَإِنَّ مِنْ خِيَارِ النَّاسِ أَحْسَنَهُمْ قَضَاءً» . [راجع : ٢٣٠٥]

## ٧- بَابُ حُسْنِ الْقَضَاءِ

٢٣٩٣- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ لِرَجُلٍ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ مِنبٌ مِنَ الْإِبِلِ، فَجَاءَهُ يَتَقَضَّاهُ، فَقَالَ ﷺ : «(أَعْطُوهُ)» . فَطَلَبُوا مِنبَهُ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُ إِلَّا مِنَّا فَوْقَهَا، فَقَالَ : «(أَعْطُوهُ)» . فَقَالَ : أَوْلَيْتَنِي وَلِيَّ اللَّهُ بِكَ . قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : «(إِنَّ خِيَارَكُمْ أَحْسَنُكُمْ قَضَاءً)» . [راجع : ٢٣٠٥]

٢٣٩٤- حَدَّثَنَا خَلَّادٌ قَالَ حَدَّثَنَا مِصْرَرٌ وَ قَالَ مُحَارِبُ بْنُ دَلَّالٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ

जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप मस्जिद नबवी में तशरीफ़ रखते थे। मिस्र ने बयान किया, कि मेरा ख्याल है कि उन्होंने चाश्त के वक़्त का ज़िक्र किया। (कि उस वक़्त खिदमत नबवी में हाज़िर हुआ) फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि दो रक़अत नमाज़ पढ़ लो। मेरा आप पर क़र्ज़ था, आपने उसे अदा किया, बल्कि ज़्यादा भी दे दिया। (राजेअ: 443)

ऐसे लोग बहुत ही क़ाबिले ता'रीफ़ हैं जो खुशी-ख़ुशी क़र्ज़ अदा करके सुबुकदोशी (मुक्ति) हासिल कर लें। ये अल्लाह के नज़दीक बड़े प्यारे बन्दे हैं। अच्छी अदायगी का एक मतलब ये भी है कि वाजिब हक़ से कुछ ज़्यादा ही दे दें।

اللّٰهُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ - قَالَ مَسْرُورٌ: أَرَأَيْتَ قَالَ ضُحَى - فَقَالَ: ((صَلِّ رَكَعَتَيْنِ وَكَانَ لِي عَلَيْهِ دَيْنٌ لِّقَضَائِي وَرَأْيِي)).

[راجع: ٤٤٣]

### बाब 8 : अगर मक़रूज़ क़र्ज़ख़्वाह के हक़ से कम अदा करे

### ٨- بَابُ إِذَا قَضَى دُونَ حَقِّهِ أَوْ حَلَّلَهُ فَهُوَ جَائِزٌ

2395. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने बयान किया, उनसे कअब बिन मालिक ने बयान किया और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उनके वालिद (अब्दुल्लाह रज़ि.) उहूद के दिन शहीद कर दिये गये थे। उन पर क़र्ज़ चला आ रहा था। क़र्ज़ख़्वाहों ने अपने हक़ के मुतालबे में सख़्ती इख़्तियार की तो मैं नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ, आपने उनसे दरयाफ़्त किया कि वो मेरे बाग़ की खज़ूर ले लें और मेरे वालिद को मुआफ़ कर दें। लेकिन क़र्ज़ख़्वाहों ने उससे इंकार किया तो नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें मेरे बाग़ का मेवा नहीं दिया। और फ़र्माया कि हम सुबह को तुम्हारे बाग़ में तशरीफ़ लाएंगे। चुनौचे जब सुबह हुई तो आप हमारे बाग़ में तशरीफ़ लाए। आप पेड़ों में फिरते रहे और उसके मेवे में बरक़त की दुआ फ़र्माते रहे। फिर मैंने खज़ूर तोड़ी और उनका तमाम क़र्ज़ अदा करने के बाद भी खज़ूर बाक़ी बच गई। (राजेअ: 2127)

٢٣٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ كَثِيرٍ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَاهُ قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ شَهِيدًا وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَاشْتَدَّ الْغَرَمَاءُ فِي حَقُوقِهِمْ، فَاتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلْتُهُمْ أَنْ يَقْبَلُوا تَمْرَ حَائِطِي وَيَحْلُلُوا أَبِي فَأَبَوْا، فَلَمْ يَعْطِهِمُ النَّبِيُّ ﷺ حَائِطِي وَقَالَ: سَمْعُدُو عَلِيَّكَ، فَقَدْنَا عَلَيْنَا حِينَ أَصْبَحَ، فَطَافَ فِي النَّخْلِ وَدَعَا فِي تَمْرِهِمَا بِالتَّوَكُّلِ، فَجَدَدْنَاهَا فَقَضَيْنَاهُمْ، وَبَقِيَ لَنَا مِنْ تَمْرِهِمَا)). [راجع: ٢١٢٧]

बाब का मज़मून इससे प्रभावित हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने शहीद सहाबी (रज़ि.) के क़र्ज़ख़्वाहों से कुछ क़र्ज़ माफ़ कर देने के लिये फ़र्माया। जब वो लोग तैयार न हुए तो रसूल करीम (ﷺ) ने हज़रत जाबिर (रज़ि.) के बाग़ में बरक़त की दुआ फ़र्माई जिसकी वजह से सारा क़र्ज़ पूरा अदा होने के बाद भी खज़ूर बाक़ी रह गई।

### बाब 9 : अगर क़र्ज़ अदा करते वक़्त खज़ूर के

### ٩- بَابُ إِذَا قَاصَّ، أَوْ جَاوَزَهُ فِي

बदल उतनी ही खजूर या और कोई मेवा या अनाज के बदल बराबर नाप—तौल कर या अंदाज़ा करके दे तो दुरुस्त है

2396. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि हमसे अनस ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे वहब बिन कैसान ने और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब उनके वालिद शहीद हुए तो एक यहूदी का तीस वस्क़ करज अपने ऊपर छोड़ गए। जाबिर (रज़ि.) ने उससे मुहलत मांगी, लेकिन वो नहीं माना। फिर जाबिर (रज़ि.) ओहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए ताकि आप उस यहूदी (अबू शहम) से (मुहलत देने की) सिफ़ारिश कर दें। रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए और यहूदी से ये फ़र्माया कि जाबिर (रज़ि.) के बाग़ के फल (जो भी हों) उस करज के बदले में ले ले, जो उनके वालिद के ऊपर उसका है, उसने उससे भी इंकार कर दिया। अब रसूले करीम (ﷺ) बाग़ में दाख़िल हुए और उसमें चलते रहे। फिर जाबिर (रज़ि.) से कहा कि बाग़ का फल तोड़कर उसका करज अदा करो। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए तो उन्होंने बाग़ की खजूरें तोड़ीं और यहूदी का तीस वस्क़ अदा कर दिया। सत्रह वस्क़ उसमें से बच भी रहा। जाबिर (रज़ि.) आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए ताकि आपको भी ये इत्तिला दें। आप उस वक़्त अम्र की नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप (ﷺ) फ़ारिग हुए तो उन्होंने आप (ﷺ) को ख़बर दी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी ख़बर इब्ने ख़त्ताब को भी करो चुनाँचे जाबिर (रज़ि.) हज़रत इमर (रज़ि.) के यहाँ गए, हज़रत इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं तो उसी वक़्त समझ गया था जब रसूलुल्लाह (ﷺ) बाग़ में चल रहे थे कि उसमें ज़रूर बरकत होगी। (राजेअ: 2127)

الَّذِينَ تَمَرًا يَتَمَرٍ أَوْ غَيْرِهِ

٢٣٩٦ - حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ وَهْبٍ بْنِ كَثَّانٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَخْبَرَهُ : « أَنَّ أَبَاهُ تَوَلَّى وَتَرَكَ عَلَيْهِ ثَلَاثِينَ وَسَقًا لِرَجُلٍ مِنَ الْيَهُودِ، فَاسْتَنْظَرَهُ جَابِرٌ، فَأَبَى أَنْ يُنْظَرَهُ، فَكَتَمَ جَابِرٌ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِيَشْفَعَ لَهُ إِلَيْهِ، فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَكَتَمَ الْيَهُودِيَّ لِيَأْخُذَ تَمَرًا نَعْلِيهِ بِالْيَدِ. لَهُ فَأَبَى، فَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ النَّعْلَ فَمَشَى فِيهَا، ثُمَّ قَالَ لِعَبَّادِ بْنِ جَابِرٍ: « جُدْ لَهُ فَأَوْفِ لَهُ الَّذِي لَهُ », فَجَدَّهُ بَعْدَ مَا رَجَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَوْفَاهُ ثَلَاثِينَ وَسَقًا، وَلَقَعْتُ لَهُ سَبْعَةَ عَشَرَ وَسَقًا، فَجَاءَ جَابِرٌ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِيُخْبِرَهُ بِالَّذِي كَانَ فَوَجَدَهُ يُصَلِّي الْقَصْرَ، فَلَمَّا انْصَرَفَ أَخْبَرَهُ بِالْفَضْلِ، فَقَالَ: « أَخْبِرْ ذَلِكَ ابْنَ الْخَطَّابِ », فَذَهَبَ جَابِرٌ إِلَى عُمَرَ فَأَخْبَرَهُ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: لَقَدْ عَلِمْتُ حِينَ مَشَى فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِيَبَارِكُنْ فِيهَا. [راجع: ٢١٢٧]

**तशरीह:** ये आप (ﷺ) का मुअजिज़ा था। अरब लोगों को खजूर का जो पेड़ों पर हो ऐसा अंदाज़ा होता है कि तोड़कर तौलें नापें तो अंदाज़ा बिलकुल सहीह निकलता है। सेर—दो सेर की कमी—बेशी हो तो ये और बात है। ये नहीं हो सकता कि डेढ़ गुने से ज़्यादा का फ़र्क़ निकले। अगर खजूर पहले ही से ज़्यादा होती तो यहूदी खुशी से बाग़ का सब मेवा अपने करज के बदल कुबूल कर लेता। मगर वो तीस वस्क़ से कम था। आपके वहाँ फिरने से और दुआ करने से वो 47 वस्क़ हो गया। ये अम्र अक़ल के खिलाफ़ नहीं है। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) और हमारे प्यारे नबी (ﷺ) से इस किस्म के मुअजिज़ात ज़ाहिर होते रहे हैं।

## बाब 10 : करज से अल्लाह की पनाह मांगना

2397. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें शुऐब ने खबर दी, वो जुहरी से रिवायत करते हैं (दूसरी सनद) हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी अतीक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इर्वा ने बयान किया, और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ में दुआ करते तो ये भी कहते, ऐ अल्लाह! मैं गुनाह और करज से तेरी पनाह मांगता हूँ। किसी ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप करज से इतनी पनाह क्यों मांगते हैं? आपने जवाब दिया कि जब आदमी मकरूज़ होता है तो झूठ बोलता है और वादा करके उसकी खिलाफ़वर्जी करता है।

(राजेअ : 832)

## बाब 11 : करजदार की नमाज़े जनाज़ा का बयान

2398. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन ब्राबित ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख्स (अपने इतिक़ाल के वक़्त) माल छोड़े तो वो उसके वारिषों का है और जो करज छोड़े तो वो हमारे ज़िम्मे है। (राजेअ : 2298)

2399. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू आमिर ने बयान किया, उनसे फुलैह ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी अमर ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर मोमिन का मैं दुनिया और आख़िरत में सबसे ज़्यादा करीब हूँ। अगर तुम चाहो तो ये आयत पढ़ लो। नबी मोमिनों से उनकी जान से भी ज़्यादा करीब है। इसलिये जो मोमिन भी इतिक़ाल कर जाए और माल छोड़ जाए तो चाहिये कि वरषा उसके मालिक हों। वो जो भी हों, और जो शख्स करज छोड़ जाए

## ١٠- بَابُ مَنْ اسْتَعَاذَ مِنَ الدَّيْنِ

٢٣٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرُورَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَدْعُو فِي الصَّلَاةِ وَيَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ». فَقَالَ قَائِلٌ: مَا أَكْثَرَ مَا تَسْتَعِذُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنَ الْمَغْرَمِ؟ قَالَ: «إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا غَرِمَ حَدَّثَ فَكَذَبَ وَوَعَدَ فَأَخْلَفَ». [راجع: ٨٣٢]

## ١١- بَابُ الصَّلَاةِ عَلَى مَنْ تَرَكَ دِينًا

٢٣٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنْ عَبْدِ بْنِ قَابَسٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَنْ تَرَكَ مَالًا فَلْيُورَثْهُ، وَمَنْ تَرَكَ كَلًّا فَلْيَأْتِ». [راجع: ٢٢٩٨]

٢٣٩٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو غَامِرٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «(مَا مِنْ مُؤْمِنٍ إِلَّا وَأَنَا أَوْلَى بِهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. اقْرَؤُوا إِن شِئْتُمْ: «النَّبِيُّ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ»)، فَإِنَّمَا مُؤْمِنٌ مَاتَ وَتَرَكَ مَالًا

या औलाद छोड़ जाए तो वो मेरे ज़िम्मे आ जाए कि उनका वली मैं हूँ। (राजेअ : 2298)

فَلْيَرَوْهُ غَضَبَتْهُ مَنْ كَانُوا، وَمَنْ تَرَكَ ذِيَّ  
أَوْ ضِيَاعًا فَلْيَأْتِيَنِي، فَأَنَا مَوْلَاهُ).

[راجع : ٢٢٩٨]

**तारीह :** या'नी उसके बाल-बच्चों को परवरिश करना हमारे ज़िम्मे है। या'नी बैतुलमाल में से ये खर्चा दिया जाएगा। मुहान्लाह! इससे ज्यादा शफ़क़त और इनायत क्या होगी। जो हज़रत रसूले करीम (ﷺ) को अपनी उम्मत से थी। कोई बाप भी बेटे पर इतना मेहरबान नहीं होता जितनी आँहज़रत (ﷺ) की मुसलमानों पर मेहरबानी थी। यही वजह थी कि मुसलमान भी सब आप पर जान व दिल से फ़िदा थे। मुसलमानों की हुकूमत क्या थी, एक जम्हूरियत थी। मुल्क के इतिज़ाम और आमदनी में मुसलमान सब बराबर के शरीक थे और बैतुलमाल या'नी मुल्क का ख़ज़ाना सारे मुसलमानों का हिस्सा था। ये नहीं कि वो बादशाह का ज़ाती (व्यक्तिगत) माल समझा जाए कि जिस तरह चाहे, अपनी ख़्वाहिशों में उसको उड़ाए और मुसलमान भूखे मरते रहें। जैसे हमारे ज़माने में उमूमन मुसलमान रईसों और नवाबों का ये हल है। अल्लाह उनको हिदायत दे।

**अन्नबिख्यु औला बिल्मुमिनीन मिन अन्फुसिहिम** (अल अहज़ाब : 6) या'नी जितना हर मोमिन खुद अपनी जान पर आप मेहरबान होता है उससे ज्यादा आँहज़रत (ﷺ) उस पर मेहरबान हैं। उसकी वजह ये है कि आदमी गुनाह और कुफ़्र करके अपने आपको हमेशा-हमेशा की हलाकत में डालना चाहता है और आँहज़रत (ﷺ) उसको बचाना चाहते हैं और फ़लाहे अब्दी की तरफ़ ले जाना। इसलिये आप हर मोमिन पर खुद उसके नफ़्स से भी ज्यादा मेहरबान हैं। उसमें ये भी इशारा है कि जो नादार ग़रीब मुसलमान बहालते क़र्ज इतिक़ाल कर जाएँ, बैतुलमाल से उनके क़र्ज की अदायगी की जाएगी।

बैतुलमाल से वो ख़ज़ाना मुराद है जो इस्लामी ख़िलाफ़त की तहवील में होता है। जिसमें ग़नीमतों के माल, ज़कात से वसूले गये माल और दीगर किस्म की इस्लामी आमदनियाँ जमा होती हैं। इस बैतुलमाल का एक मसरफ़ नादार, ग़रीब, मिस्कीनों के क़र्जों की अदायगी भी है।

## बाब 12 : अदायगी में मालदार की तरफ़ से टाल-मटोल करना जुल्म है

2400. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा, वहब बिन मुनब्बा के भाई ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मालदार की तरफ़ से (क़र्ज की अदायगी में) टाल-मटोल करना जुल्म है। (राजेअ : 2287)

## बाब 13 : जिस शख़्स का हक़ निकलता हो वो तक्राज़ा कर सकता है

और नबी करीम (ﷺ) से रिवायत है कि (क़र्ज के अदा करने पर) कुदरत रखने के बावजूद टाल-मटोल करना, उसकी सज़ा और उसकी इज़ात को हलाल कर देता है। सुफ़यान ने कहा कि इज़ात को हलाल करना ये है कि क़र्जख़्वाह कहे, तुम सिर्फ़ टाल-मटोल कर रहे हो और उसकी सज़ा क़ैद करना है।

2401. हमसे मुसहद ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया,

## ١٢ - بَابُ مَطْلُ الْغَنِيِّ ظُلْمٌ

٢٤٠٠ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

الْأَعْلَمِ عَنْ مَقْمَرٍ عَنْ هَمَامِ بْنِ مُنَبِّهِ أَخْبَرَنَا

وَهَبُ بْنُ مُنَبِّهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ

اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:

((مَطْلُ الْغَنِيِّ ظُلْمٌ)). [راجع : ٢٢٨٧]

## ١٣ - بَابُ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالٌ

وَيَذَكَّرُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ: ((لِيَ الْوَاجِدِ يُجِلُّ

عَقْرَتَهُ وَغَرَضَتَهُ)). قَالَ سَفْيَانُ عَرَضَهُ:

يَقُولُ مَطْلَتَنِي. وَغَعْرَتُهُ: الْخَبْسُ.

٢٤٠١ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ



उनसे शुअबा ने, उनसे सलमाने, उनसे अबू सलमाने और उनसे अबू हुसैरह (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में एक शख्स करज मांगने और सख्त तक्राजा करने लगा। सहाबा (रजि.) ने उसकी गोशमाली करनी चाही तो नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया कि उसे छोड़ दो, हकदार ऐसी बातें कह सकता है। (राजेअ: 2305)

أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ رَجُلٌ يَتَقَاضَاهُ فَأَغْلَطَ لَهُ، فَهَمَّ بِهِ أَصْحَابُهُ فَقَالَ: ((دَعُوهُ فَإِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالًا)). [راجع: ٢٣٠٥]

गोशमाली का मतलब होता है कान उमेठना। इस हदीस से अंदाजा किया जा सकता है कि हुक्कुल इबाद के मामले में इस्लाम ने किस क़दर ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाया है। मज़कूर करज ख्वाह वक्ते मुकररा से पहले ही तक्राजा करने आ गया था। उसके बावजूद आँहज़रत (ﷺ) ने न सिर्फ़ उसकी सख्त कलामी को बर्दाश्त किया बल्कि उसकी सख्त कलामी को रखा रखा।

**बाब 14 : अगर बेअ या करज या अमानत का माल बिजिन्सिही दिवालिया शख्स के पास मिल जाए तो जिसका वो माल है दूसरे करज ख्वाहों से ज्यादा उसका हकदार होगा**

١٤ - بَابُ إِذَا وَجَدَ مَالَهُ عِنْدَ مُفْلِسٍ فِي الْبَيْعِ وَالْقَرْضِ وَالْوَدِيعَةِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ

और हसन (रह.) ने कहा कि जब कोई दीवालिया हो जाए और उसका (दीवालिया होना हाकिम की अदालत में) वाज़ेह हो जाए तो न उसका अपने किसी गुलाम को आज़ाद करना जाइज़ होगा और न उसकी ख़रीद व फ़रोख़्त सहीह मानी जाएगी। सईद बिन मुसय्यिब ने कहा कि इफ़्फ़ान (रजि.) ने फ़ैसला किया था कि जो शख्स अपना हक़ दीवालिया होने से पहले ले ले तो वो उसी का हो जाता है और जो कोई अपना ही सामान उसके यहाँ पहचान ले तो वही उसका मुस्तहिक़ होता है।

وَقَالَ الْحَسَنُ: إِذَا أُلْسِنَ وَتَيَّنَ لَمْ يَحْزَرْ عَيْتُهُ وَلَا بَيْعُهُ وَلَا حِرَاؤُهُ. وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ: قَضَى عُثْمَانُ مَنِ اقْتَضَى مِنْ حَقِّهِ قِيلَ أَنْ يُفْلِسَ فَهُوَ لَهُ، وَمَنْ عَرَفَ مَتَاعَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ.

मसलन ज़ैद ने अमर के पास एक घोड़ा अमानत रखा या उसके हाथ उधार बेचा, या करज दिया, अब अमर नादार हो गया, घोड़ा ज्यों का त्यों अमर के पास मिला तो ज़ैद उसको ले लेगा दूसरे करज ख्वाहों का उसमें हिस्सा न होगा।

2402. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे जुहैर ने बयान किया, उन्होंने उनसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझे अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अमर बिन हज़म ने ख़बर दी, उन्हें इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम ने ख़बर दी, उन्होंने अबू हुसैरह (रजि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया या ये बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना, जो शख्स हबहू अपना माल किसी शख्स के पास पा ले जबकि वो शख्स दीवालिया करार दिया जा चुका हो; तो साहिबे माल ही उसका दूसरों के मुकाबले में ज्यादा मुस्तहिक़ है।

٢٤٠٢ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ عَمْرِو بْنِ حَزَمٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْخَلَّاتِ بْنِ هِشَامٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ - أَوْ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ - : ((مَنْ أَدْرَكَ مَالَهُ بِعَيْنِهِ عِنْدَ رَجُلٍ أَوْ إِنْسَانٍ

قَدْ أَفْلَسَ لَهُوَ أَحَقُّ بِهِ مِنْ غَيْرِهِ)).

**तशरीह:** अगर वो चीज बदल गई, मसलन सोना खरीदा था, उसका ज़ेवर बना डाला तो अब सब कर्ज़ख्वाहों का हक उसमें बराबर होगा। हन्फिया ने इस हदीष के खिलाफ अपना मज़हब करार दिया है और कयास पर अमल किया है। हालाँकि वो दा'वा ये करते हैं कि कयास को हदीष के मुखालिफ़ तर्क कर देना चाहिये।

हदीष अपने मज़मून में वाज़ेह है कि जब किसी शख्स ने किसी शख्स से कोई चीज़ खरीदी और उस पर कब्ज़ा भी कर लिया। लेकिन कीमत नहीं अदा की थी कि वो दीवालिया हो गया। पस अगर वो असल सामान उसके पास मौजूद है तो उसका मुस्तहक़ बेचने वाला ही होगा और दूसरे कर्ज़ख्वाहों का उसमें कोई हक़ न होगा। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का यही मसलक है जो इस हदीष से ज़ाहिर है। हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) का फ़त्वा भी यही है।

**बाब 15 : अगर कोई मालदार होकर कल—  
परसों तक कर्ज़ अदा करने का वादा करे तो ये  
टाल—मटोल करना नहीं समझा जाएगा**

और जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे वालिद के कर्ज़ के सिलसिले में जब कर्ज़ख्वाहों ने अपना हक़ मांगने में शिद्दत इख़्तियार की, तो नबी करीम (ﷺ) ने उनके सामने ये सूरत रखी कि वो मेरे बाग़ का मेवा कुबूल कर लें। उन्होंने इससे इंकार किया, इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने बाग़ नहीं दिया और न फल तुड़वाए बल्कि फ़र्माया कि मैं तुम्हारे पास कल आऊँगा। चुनाँचे दूसरे दिन सुबह ही आप (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए और फलों में बरकत की दुआ फ़र्माई और मैंने (उसी बाग़ से) उन सबका कर्ज़ अदा करा दिया।

**बाब 16 : दीवालिया या मुहताज का माल बेच  
कर कर्ज़ख्वाहों को बांट देना या खुद उसको ही दे  
देना कि अपनी ज़ात पर खर्च करे**

2403. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन जुरैअ ने बयान किया, उनसे हुसैन मुअल्लिम ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन अबी रिबाह ने बयान किया, और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख्स ने अपना एक गुलाम अपनी मौत के साथ आज़ाद करने के लिये कहा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस गुलाम को मुझसे कौन खरीदता है? नुऐम बिन अब्दुल्लाह ने उसे खरीद लिया और आँहज़रत (ﷺ) ने

١٥- بَابُ مَنْ أَخَّرَ الْغَرِيمَ إِلَى الْغَدِ  
أَوْ نَحْوِهِ وَلَمْ يَزِدْ ذَلِكَ مَطْلًا

وَقَالَ جَابِرٌ: (اشْتَدَّ الْغَرَمَاءُ فِي حُقُوقِهِمْ فِي ذَيْنِ أَبِي، فَسَأَلَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَقْبَلُوا تَمْرَ حَائِطِي فَأَبَوْا، فَلَمْ يُعْطِهِمُ الْحَائِطَ وَلَمْ يَكْسِرْهُ لَهُمْ وَقَالَ: ((سَاعِدُوا عِبَادَكُمْ)) غَدًا))، فَعَدْنَا عَلَيْنَا حِينَ أَصْبَحَ لَفَدَا فِي تَمْرِهِمَا بِالتَّرَكَةِ، فَقَضَيْتُهُمْ)).

١٦- بَابُ مَنْ بَاعَ مَالَ الْمُفْلِسِ  
أَوْ الْمُعْلِمِ فَقَسَمَهُ بَيْنَ الْغَرَمَاءِ، أَوْ  
أَعْطَاهُ حَتَّى يُنْفِقَ عَلَى نَفْسِهِ

٢٤٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ الْمُعْلَمِ قَالَ: حَدَّثَنَا غَطَاءُ بْنُ أَبِي رَجَاحٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَعْتَقَ رَجُلٌ غُلَامًا لَهُ عَنْ ذُبُرٍ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ يَشْتَرِيهِ مِنِّي؟)) فَاشْتَرَاهُ نَعْمٌ بْنُ

عَبْدُ اللَّهِ، فَأَخَذَ ثَمَنَهُ قَدَقَعَهُ إِلَيْهِ)).

उसकी क्रीमत (आठ सौ दिरहम) वसूल करके उसके मालिक को दे दी। (राजेअ: 2141)

[راجع: 2141]

इसी से बाब का मज़मून प्राबित हुआ। जिस शख्स का जिक्र किया गया है, वो गरीब था, सिर्फ वही गुलाम उसका सरमाया (सम्पत्ति) था और उसके लिये उसने अपने मरने के बाद आज़ादी का ऐलान कर दिया था, जिससे दीगर हक़दारों की हक़तलफ़ी होती थी। लिहाज़ा आँहज़रत (ﷺ) ने उसे उसकी हयात ही में बिकवा दिया।

## बाब 17 : मुअय्यन मुहत के वादे पर कर्ज देना

### या बेअ करना

और इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि किसी मुअय्यन (निर्धारित) मुहत तक के लिये कर्ज में कोई हर्ज नहीं है अगरचे उसके दिरहमों से ज़्यादा खरे दिरहम उसे मिलें। लेकिन इस मूलत में जबकि उसकी शर्त न लगाई हो। अता और अमर बिन दीनार ने कहा कि कर्ज में, कर्ज लेने वाला अपनी मुकररा मुहत का पाबन्द होगा।

2404. लैस ने बयान किया कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन हुर्मुज़ ने और उनसे अबू हुसैरह (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने किसी इसाईली शख्स का तज़्किरा फ़र्माया जिसने दूसरे इसाईली शख्स से कर्ज मांगा था। और उसने एक मुकररा मुहत के लिये उसे कर्ज दे दिया था। (जिसका जिक्र पहले गुज़र चुका है)

(राजेअ: 1498)

## बाब 18 : कर्ज में कमी करने की सिफ़ारिश करना

2405. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे मुगीरह ने, उनसे ज़ाफ़िर ने, और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि (मेरे वालिद) अब्दुल्लाह (रज़ि.) शहीद हुए तो अपने पीछे बाल-बच्चे और कर्ज छोड़ गए, मैं कर्ज ख़वाहों के पास गया कि अपना कुछ कर्ज मुआफ़ कर दें। लेकिन उन्होंने इंकार किया, फिर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और आप (ﷺ) से उनके पास सिफ़ारिश करवाई, उन्होंने इसके बावजूद भी इंकार किया। आख़िर आप (ﷺ) ने

## ١٧- بَابُ إِذَا أقرَضَهُ إِلَى أَجَلٍ

### مُسَمًّى، أَوْ أَجَلُهُ فِي الْبَيْعِ

قَالَ ابْنُ عُثْمَرَ فِي الْقَرْضِ إِلَى أَجَلٍ : لَا بَأْسَ بِهِ ، وَإِنْ أُعْطِيَ أَفْضَلَ مِنْ ذَرَاهِيمِهِ مَا لَمْ يَشْطَرِطْ. وَقَالَ عَطَاءٌ وَعُمَرُ بْنُ دِينَارٍ : هُوَ إِلَى أَجَلِهِ فِي الْقَرْضِ .

## ٢٤٠٤- وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي جَعْفَرُ

بْنُ رَبِيعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمَزٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلًا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ سَأَلَ بَعْضَ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنْ يُسَلِّفَهُ، فَذَلَعَهَا إِلَيْهِ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى. الْحَدِيثُ.

[راجع: 1498]

## ١٨- بَابُ الشَّفَاعَةِ فِي وَضْعِ الدِّينِ

### ٢٤٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا قَالَ أَبُو

عَوَانَةَ عَنْ مُعِينَةَ عَنْ عَامِرِ بْنِ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَصِيبَ عَبْدُ اللَّهِ وَتَرَكَ عِيَالًا وَدِينًا، فَطَلَبْتُ إِلَى أَصْحَابِ الدِّينِ أَنْ يَهَيَّؤُوا بَعْضًا مِنْ دِينِهِ فَأَبَوْا، فَاتَّيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَاسْتَشْفَعْتُ بِهِ عَلَيْهِمْ فَأَبَوْا.

फ़र्माया कि (अपने बाग़ की) तमाम खजूर की किस्मों अलग अलग कर लो। अज़क़ बिन ज़ैद अलग, लीन अलग और अज्वह अलग (ये सब उम्दा किस्म की खजूरों के नाम हैं) उसके बाद क़र्ज़िख़्वाहों को बुलाओ और मैं भी आऊँगा। चुनाँचे मैंने ऐसा कर दिया। जब नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) उनके ढेर (के पास) बैठ गए और हर क़र्ज़िख़्वाहों के लिये माप शुरू कर दी। यहाँ तक कि सबका क़र्ज़ पूरा हो गया और खजूर उसी तरह बाक़ी बच रही जैसे पहले थी। गोया किसी ने उसे छुआ तक नहीं है। (राजेअ: 2127)

2406. और एक बार मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक जिहाद में एक ऊँट पर सवार होकर गया। ऊँट थक गया, इसलिये मैं लोगों से पीछे रह गया। इतने में नबी करीम (ﷺ) ने उसे पीछे से मारा और फ़र्माया कि ये ऊँट मुझे बेच दो। मदीना तक उस पर सवारी की तुम्हें इजाज़त है। फिर जब हम मदीना से करीब हुए तो मैंने नबी करीम (ﷺ) से इजाज़त चाही, अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने अभी नई शादी की है। आपने दरयाफ़्त किया, कुंवारी से की है या बेवा से? मैंने कहा कि बेवा से, मेरे वालिद अब्दुल्लाह (रज़ि.) शहीद हुए तो अपने पीछे कई छोटी बच्चियाँ छोड़ गए हैं, इसलिये मैंने बेवा से शादी की ताकि उन्हें ता'लीम दे और अदब सिखाती रहे। फिर आपने फ़र्माया, अच्छा अब अपने घर जाओ; चुनाँचे मैं घर गया। मैंने जब अपने मामू से ऊँट बेचने का ज़िक्र किया तो उन्होंने मुझे मलामत की। इसलिये मैंने उनसे ऊँट के थक जाने और नबी अकरम (ﷺ) के वाक़िये का भी ज़िक्र किया और आपके ऊँट को मारने का भी। जब नबी करीम (ﷺ) मदीने पहुँचे तो मैं भी सुबह के वक़्त ऊँट लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझे ऊँट की क़्रीमत भी दे दी और वो ऊँट भी मुझको वापस बख़्श दिया और क़ौम के साथ मेरा (माले ग़नीमत का) हिस्सा भी मुझको बख़्श दिया। (राजेअ: 442)

**तशरीह:** मामू ने इस वजह से मलामत की होगी कि आँहज़रत (ﷺ) के हाथ ऊँट बेचने की क्या ज़रूरत थी यँ ही आपको दे दिया होता। कुछ ने कहा इस बात पर कि एक ही ऊँट हमारे पास था। इससे घर का काम-काज निकलता था,

قَالَ: ((صَفَّ تَمْرًا كُلَّ شَيْءٍ مِنْهُ عَلَى حَدِيثِهِ: عَلِقَ ابْنُ زَيْدٍ عَلَى حِدَةٍ، وَاللَّيْنُ عَلَى حِدَةٍ، وَالْعَجْوَةُ عَلَى حِدَةٍ، ثُمَّ أَحْضَرَهُمْ حَتَّى آتَيْكَ)). فَفَعَلْتُ. ثُمَّ جَاءَ ﷺ فَفَعَدَ عَلَيْهِ، وَكَانَ لِكُلِّ رَجُلٍ حَتَّى اسْتَوَلَى، وَفِيهِ التَّمْرُ كَمَا هُوَ كَأَنَّهُ لَمْ يَمَسَّ)). (راجع: ٢١٢٧)

٢٤٠٦ - ((وَعَزَّوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى نَاصِيحٍ لَنَا، فَأَرْحَفَ الْجَمَلُ فَتَخَلَّفَ عَلَيَّ فَوَكَّرَهُ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ خَلْفِهِ. قَالَ: بَغْنِيهِ وَلَكَ ظَهْرَةٌ إِلَى الْمَدِينَةِ - فَلَمَّا ذَنَوْنَا اسْتَأْذَنْتُ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِنِّي حَدِيثُ عَهْدٍ بِعُرْسٍ قَالَ ﷺ: ((لَمَّا تَزَوَّجْتَ، بِكْرًا أَمْ ثِيَابًا؟)) قُلْتُ: ثِيَابًا، أَصِيبَ عَبْدُ اللَّهِ وَتَرَكَ جَوَارِي صِغَارًا فَتَزَوَّجْتُ ثِيَابًا تَعْلُمُهُنَّ وَتُؤَدِّبُهُنَّ. ثُمَّ قَالَ: ((أَنْتِ أَهْلُكَ)). فَقَدِمْتُ فَأَخْبَرْتُ خَالِيَّ بِنَيْعِ الْجَمَلِ فَلَا مَنِي، فَأَخْبَرْتُهُ بِإِعْتَاءِ الْجَمَلِ، وَيَالِيذِي كَانَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ وَوَكَّرِهِ إِثَاءً. فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ عَدَوْتُ إِلَيْهِ بِالْجَمَلِ، فَأَعْطَانِي لَمَنْ الْجَمَلِ وَالْجَمَلُ وَسَهْمِي مَعَ الْقَوْمِ)).

[راجع: ٤٤٢]

वो भी तूने बेच डाला। अब तकलीफ होगी, कुछ ने कहा मामू से जैद बिन कैस मुराद है वो मुनाफ़िक़ था।

## बाब 19 : माल को तबाह करना या'नी बेजा इस्राफ़ मना है

١٩- بَابُ مَا يُنْهَى عَنْ إِسْوَاعِ  
الْمَالِ

और अल्लाह तआला ने सूरह बकर: में फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़साद को पसन्द नहीं करता (और अल्लाह तआला का इशार्द सूरह यूनस में कि) और अल्लाह फ़सादियों का मन्सूबा चलने नहीं देता। और अल्लाह तआला ने (सूरह हूद में) फ़र्माया है, क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें ये बताती है कि जिसे हमारे बाप दादा पूजते चले आए हैं हम उन बुतों को छोड़ दें या अपने माल में अपनी तबीअत के मुताबिक़ तस्रूफ़ करना छोड़ दें। और अल्लाह तआला ने (सूरह निसा में) इशार्द फ़र्माया अपना रुपया बेवकूफ़ों के हाथ में मत दो और बेवकूफ़ी की हालत में हज़र करना।

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ  
الْفُسَادَ﴾ وَلَا يُصْلِحُ عَمَلُ  
الْمُفْسِدِينَ، وَقَالَ فِي قَوْلِهِ:  
﴿أَصْلَحُوا لَكُمْ تُفْلِحُوا﴾ أَنْ تَفْلَحَ مَا يَفْلَحُ آبَاؤُنَا  
أَوْ أَنْ نَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا بَشَاءُ، وَقَالَ  
تَعَالَى: ﴿وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ  
وَالْحَبْرَ فِي ذَلِكَ، وَمَا يُنْهَى عَنْ  
الْإِسْوَاعِ﴾

**तशरीह:** बेवकूफ़ों से मुराद नादान हैं जो माल को सम्भाल न सकें बल्कि उसको तबाह और बर्बाद कर दें। जैसे औरत, बच्चे, कम अक़ल जवान बूढ़े वगैरह। हज़र का मा'नी लुगत में रोकना, मना करना और शरअ में इसको कहते हैं कि हाकिमे इस्लाम किसी शख्स को उसके अपने माल में तस्रूफ़ करने से रोक दे। और ये दो वजह से होता है या तो वो शख्स बेवकूफ़ हो, अपना माल तबाह करता हो या दूसरों के हुक्क की हिफ़ाज़त के लिये। मसलन ग़रीब कर्ज़दार पर हज़र करना, कर्ज़ख़वाहों के हुक्क बचाने के लिये। या राहिन (गिरवी रखने वाले) पर या मरीज़ पर या मुर्तहिन (जिसके पास कोई चीज़ गिरवी रखी जाए) और वारिष का हक़ बचाने के लिये। इस रोकने को शरई इस्तिलाह (परिभाषा) में हज़र कहा जाता है।

आयाते कुआनी से ये भी ज़ाहिर हुआ कि हलाल तौर पर कमाया हुआ माल बड़ी अहमियत रखता है। उसका ज़ाये करना या ऐसे नादानों को उसे सौंपना जो उसकी हिफ़ाज़त न कर सकें बावजूद ये कि वो उसके हक़दार हैं। फिर भी उनको उनके गुज़ारे से ज़्यादा देना इस माल को गोया ज़ाये करना है जो किसी तरह जाइज़ न होगा।

2407. हमसे अबू नुएम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने इब्ने ठमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से एक शख्स ने अर्ज़ किया कि ख़रीद-फ़रोख़्त में मुझे धोखा दे दिया जाता है। आपने फ़र्माया कि जब ख़रीद-फ़रोख़्त किया करे, तो कह दिया कर कि कोई धोखा न हो। चुनौचे फिर वो शख्स उसी तरह कहा करता था। (राजेअ: 2117)

٢٤٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا  
سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ قَالَ سَمِعْتُ  
ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَالَ  
رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ إِنِّي أَخَذْتُ فِي الشَّرْعِ،  
فَقَالَ: ((إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ: لَا خِلَافَةَ)).  
فَكَانَ الرَّجُلُ يَقُولُ)). [راجع: ٢١١٧]

एक रिवायत में इतना ज़्यादा है और मुझको तीन दिन तक इख़्तियार है। ये हदीष ऊपर गुज़र चुकी है। यहाँ बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने माल को तबाह करना बुरा जाना। इसलिये उसको ये हुक्म दिया कि बेअ के वक़्त यूँ कहा करो, धोखा फ़रेब का काम नहीं है।

2408. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उनसे जरीर

٢٤٠٨- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ

ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे शअबी ने, उनसे मुगीरह बिन शुअबा के गुलाम वर्राद ने और उनसे मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी कर्मी (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने तुम पर माँ (और बाप) की नाफ़रमानी, लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करना (वाजिब हुक्क की) अदायगी न करना और (दूसरों का माल नाजाइज़ तरीक़े पर) दबा लेना ह़राम करार दिया है। और फ़िज़ूल बकवास करने, और क़षरत से सवालात करने और माल ज़ायेअ करने को मकरूह करार दिया है।

عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ وَرَادٍ مَوْلَى الْمُفَيْرِزَةِ بْنِ شُعْبَةَ عَنِ الْمُفَيْرِزَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: قَالَ لِنَبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ غُفُوقَ الْأَمْهَاتِ، وَوَادَ الثِّبَاتِ، وَمَنْعَ زَهَاتٍ، وَكِرَةَ لَكُمْ قَبْلَ وَقَالٍ، وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ، وَإِضَاعَةَ الْمَالِ)). [راجع: ٨٤٤]

लफ़्ज़े मनअ व हात का तर्जुमा कुछ ने यूँ किया है अपने ऊपर जो ह़क़ वाजिब है जैसे ज़कात, बाल-बच्चों-नाते वालों की परवरिश, वो न देना। और जिसका लेना ह़राम है या नौ पराया माल वो ले लेना, क़ील व क़ाल का मतलब ख़्वाह मख़्वाह अपना इल्म जताने के लिये लोगों से सवालात करना। या बे ज़रूरत हालात पूछना, क्यूँ कि ये लोगों को बुरा मा'लूम होता है। कुछ बात वो बयान करना नहीं चाहते, उसके पूछने से नाख़ुश होते हैं।

**तशरीह:** बाब का तर्जुमा लफ़्ज़ इज़ाअतुल माल से निकलता है या नौ माल ज़ाये करना मकरूह है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा माल बर्बाद करना ये है कि खाने-पीने लिबास वगैरह में बेज़रूरत तकल्लुफ़ करना। बर्तन पर सोने चाँदी का मुलम्मा (कोटिंग) कराना। दीवार, छत वगैरह सोने चाँदी से रंगना। सईद बिन जुबैर ने कहा माल बर्बाद करना ये है कि ह़राम कामों में ख़र्च करे और सहीह यही है कि ख़िलाफ़े शरअ जो ख़र्च हो, ख़्वाह दीनी या दुनियावी काम में वो बर्बाद करने में दाख़िल है। बहरहाल जो काम शरअन मना हैं जैसे पतंगबाज़ी, मुर्गबाज़ी, आतिशबाज़ी, नाच-रंग उनमें तो एक पैसा भी ख़र्च करना ह़राम है। और जो काम प्रवाब के हैं मषलन मुहताजों, मुसाफ़िरों, ग़रीबों, बीमारों की ख़िदमत, क़ौमी काम जैसे मदरसे से, पुल, सराय, मस्जिद, मुहताजखाने, शफ़ाखाने बनाना, उनमें जितना ख़र्च करे वो प्रवाब ही प्रवाब है। उसको बर्बाद करना नहीं कह सकते हैं। रह गया अपने नफ़्स की लज़्जत में ख़र्च करना तो अपनी हैषियत और हालत के मुवाफ़िक़ उसमें ख़र्च करना इस्त्राफ़ नहीं है। उसी तरह अपनी इज़्जत या आबरू बचाने के लिये या किसी आफ़त को रोकने के लिये। उसके सिवा बेज़रूरत नफ़्सानी ख़्वाहिशों में माल ख़र्च करना मषलन बेफ़ायदा बहुत से कपड़े बना लेना, या बहुत से घोड़े रखना, या बहुत सा सामान ख़रीदना ये भी इस्त्राफ़ में दाख़िल है।

**बाब 20 : गुलाम अपने आक्रा के माल का निगराँ है उसकी इजाज़त के बग़ैर उसमें कोई तमर्रुफ़न करे**

2409. हमसे अबुल यमान हक़म बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे जुहरी ने बयान किया, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना, तुम में से हर फ़र्द एक तरह का हाकिम है और उसकी रइय्यत के बारे में उससे सवाल होगा। पस बादशहाह हाकिम ही है और उसकी रइय्यत के बारे में उससे सवाल होगा। हर इंसान अपने घर का

٢٠- بَابُ الْعَبْدِ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ ، وَلَا يَعْمَلُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ،

٢٤٠٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي هَمَّالٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ: لِلْإِمَامِ رَاعٍ، وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْ

हाकिम है और उससे उसकी रइय्यत (प्रजा) के बारे में सवाल होगा; औरत अपने शौहर के घर की हाकिम है और उससे उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। खादिम अपने आक्रा के माल का हाकिम है और उससे उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। उन्होंने बयान किया कि ये सब मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। और मैं समझता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया था कि आदमी अपने वालिद के माल का हाकिम है और उससे उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। पस हर शख्स हाकिम है और हर शख्स से उसकी रइय्यत के बारे में सवाल होगा। (राजेअ : 893)

رُعَيْتِهِ، وَالرَّجُلُ فِي أَهْلِهِ رَاعٍ، وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْ رُعَيْتِهِ. وَالْمَرْأَةُ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا رَاعِيَةٌ، وَهِيَ مَسْئُولَةٌ عَنْ رُعَيْتِهَا. وَالْخَادِمُ فِي مَالِ سَيِّدِهِ رَاعٍ، وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْ رُعَيْتِهِ. قَالَ لَمَسِغْتُ هَؤُلَاءِ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَأَخْبَسَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((وَالرَّجُلُ فِي مَالِ أَبِيهِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْ رُعَيْتِهِ. فَكُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رُعَيْتِهِ)). (راجع: ٨٩٣)

**तशरीह :** ये हदीस एक बहुत बड़े तमहुनी असलुल उसूल पर मुश्तमिल (सबसे बड़े सांस्कृतिक नियम पर आधारित) है। दुनिया में कोई शख्स भी ऐसा नहीं है जिसकी कुछ न कुछ ज़िम्मेदारियाँ न हों। उन ज़िम्मेदारियों को महसूस करके सहीह तौर पर अदा करना ऐन शरई मुतालबा है। एक हाकिम या बादशाह अपनी रिआया का ज़िम्मेदार है, घर में मर्द तमाम घरवालों पर हाकिम है। औरत घर की मलिका होने की हौषियत से घर और औलाद की ज़िम्मेदार है। एक गुलाम अपने आक्रा के माल में ज़िम्मेदार है। एक मर्द अपने वालिद के माल का ज़िम्मेदार है अलार्ज इसी सिलसिले में तकरीबन दुनिया का हर इंसान बंधा हुआ है। पस ज़रूरी है कि हर शख्स अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करे। हाकिम का फ़र्ज है अपनी हुकूमत के हर फ़र्द पर नज़रे शफ़क़त रखे। एक मर्द का फ़र्ज है कि अपने तमाम घरवालों पर तवज्जह रखे। एक औरत का फ़र्ज है कि अपने शौहर के घर की हर तरह से पूरी-पूरी हिफ़ाज़त करे। उसकी दौलत और औलाद और इज्जत में कोई ख़यानत न करे। एक गुलाम, नौकर, मज़दूर का फ़र्ज है कि अपने फ़राइजे मुताल्लिका की अदायगी में अल्लाह का डर करके कोताही न करे। यही बाब का मक़सद है।

## 44. किताबुल ख़ुसूमात

# किताब नालिशों और झगड़ों के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### मुसलमान और यहूदी में झगड़ा होने का बयान

2410. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया कि अब्दुल मलिक बिन मैसरा ने मुझे खबर दी, कहा कि मैं नज्जाल बिन समुरा से सुना, और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा, कि मैंने एक शख्स को कुआन की एक आयत इस तरह पढ़ते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने उसके खिलाफ सुना था। इसलिये मैं उनका हाथ थामे आपकी खिदमत में ले गया। आपने (मेरा ए'तिराज़ सुनकर) फ़र्माया कि तुम दोनों दुरुस्त पढ़ते हो। शुअबा ने बयान किया कि मैं समझता हूँ कि आपने ये भी फ़र्माया कि इखितलाफ़ न किया करो क्योंकि तुमसे पहले के लोग इखितलाफ़ ही की वजह से तबाह हो गए।

(दीगर मक़ाम : 3408, 3414, 3476, 4813, 5063, 6517, 6518, 7428, 7477)

وَالْخُصُومَةُ بَيْنَ الْمُسْلِمِ وَالْيَهُودِ  
٢٤١٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا  
شُعْبَةُ قَالَ: عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ أَخْبَرَنِي  
قَالَ: سَمِعْتُ النَّزَّالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ  
يَقُولُ: سَمِعْتُ رَجُلًا قَرَأَ آيَةً سَمِعْتُ مِنَ  
النَّبِيِّ ﷺ خِلَافَهَا، فَأَخَذْتُ يَدَهُ فَاتَيْتُ بِهِ  
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ: ((كَلَامُكُمْ  
مُحْسِنٌ)). قَالَ شُعْبَةُ: أَطْلَعْتُ قَالَ: ((لَا  
تَغْتَلِبُوا، فَإِنْ مَن كَانَ قَبْلَكُمْ اخْتَلَفُوا  
فَهَلَكُوا)).

[أطرافه في : ٣٤٠٨, ٣٤١٤, ٣٤٧٦]

٤٨١٣, ٥٠٦٣, ٦٥١٧, ٦٥١٨

[٧٤٢٨, ٧٤٧٧]

**तशरीह:** बाब का तर्जुमा इससे निकला कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) उस शख्स को पकड़ कर आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में ले गए। जब कुआन ग़लत पढ़ने पर पकड़कर ले जाना दुरुस्त है तो अपने हक़ के बदले भी पकड़कर ले जाना दुरुस्त है। जैसा कि पहला अम्र एक मुकद्दमा है वैसा ही दूसरा भी। आपका मतलब ये था कि ऐसी छोटी बातों में लड़ना झगड़ना, जंग व जदल करना बुरा है। अब्दुल्लाह (रज़ि.) को लाज़िम था कि उससे दूसरी तरह पढ़ने की वजह पूछते। जब वो कहता कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से ऐसा ही सुना है तो आपसे दरयाफ़्त करते।

इस हदीष से उन मुतअस्सिब मुकल्लिदों को नज़ीहत लेना चाहिये, जो आमीन और रफ़ड़लयदेन और उसी तरह की बातों पर लोगों से फ़साद और झगड़ा करते हैं। अगर दीन के किसी काम में शुब्हा हो तो करने वाले से नरमी और अख़लाक़ के साथ उसकी दलील पूछे। जब वो हदीष या कुआन से कोई दलील बतला दे तो चुप्पी धारण करे और उसके साथ ए'तिराज़ न करें। हर मुसलमान को इखितयार है कि जिस हदीष पर चाहे अमल करे बशर्त कि वो हदीष बिल इत्तिफ़ाक़ मन्सूख़ न हो। इस हदीष से ये भी निकला कि इखितलाफ़ ये नहीं है कि एक रफ़ड़लयदेन करे, दूसरा न करे। एक पुकारकर आमीन कहे एक आहिस्ता कहे, बल्कि इखितलाफ़ ये है कि एक-दूसरे से नाहक़ झगड़े, उसको सताए क्योंकि आपने उन दोनों की किराअतों को अच्छा फ़र्माया और लड़ने झगड़ने को बुरा कहा। व क़ाललमज़हरी अलइखितलाफ़ु फ़िल्कुआनि ग़ैर जाइज़िन लिअन्न कुल्ल लफ़िज़मिन्हु इज़ा जाज़ किरअतुहु अला वजहैनि औ अक्मर फ़लौ अन्कर अहदुन व अहदमिन ज़ीनिल्वजहैनि अविल्वजूहु फ़क़द अन्करल्कुआन व ला यज़ूज़ु फ़िल्कुआनि अल्क़ौलु बिराय सुन्नतुन मुत्तबअतुन बल अलैहिमा अन्वयस्अला अन ज़ालिक मिम्मन हुव आलमु मिन्हुमा (कस्तलानी) या'नी मज़हरी ने कहा कि कुआन मज़ीद में इखितलाफ़ करना नाजाइज़ है क्योंकि उसका हर लफ़ज़ जब उसकी किरअत दोनों तरीकों पर जाइज़ हो तो उनमें से एक किरअत का इंकार करना या दोनों का इंकार ये सारे कुआन का इंकार है। पस उन इखितलाफ़ करने वालों को लाज़िम था कि अपने से ज़्यादा जानने वाले से तहक़ीक़ कर लेते।

अल्ज़ाज़ इखितलाफ़ जो बात बनाने, फूट डालने या नफ़रत फैलाने व फ़साद का कारण हो वो इखितलाफ़ सख़्त मज़मूम (निंदनीय) है और तबई इखितलाफ़ मज़मूम नहीं है।



बाब की हदीष से ये भी निकला कि दा'वा और मुकद्दमात में एक मुसलमान किसी भी गैर मुस्लिम पर और कोई भी गैर मुस्लिम किसी भी मुसलमान पर इस्लामी अदालत में दा'वा कर सकता है। इस्लाम चाहने के लिये मुद्दई और मुद्दा अलैह का हम-मजहब (एक ही धर्म का) होना कोई शर्त नहीं है।

2411. हमसे यह्या बिन कज़आ ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा और अब्दुर्रहमान अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि दो शख्सों ने जिनमें एक मुसलमान था और दूसरा यहूदी, एक-दूसरे को बुरा-भला कहा। मुसलमान ने कहा, उस ज्ञात की कसम! जिसने मुहम्मद (ﷺ) को तमाम दुनिया वालों पर बुजुर्गी दी और यहूदी ने कहा, उस ज्ञात की कसम! जिसने मूसा (अलैहिस्सलाम) को तमाम दुनिया वालों पर बुजुर्गी दी। उस पर मुसलमान ने हाथ उठाकर यहूदी के तमाचा मारा। वो यहूदी नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और मुसलमान के साथ अपने वाकिये को बयान किया। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने उस मुसलमान को बुलाया और उनसे वाकिये के बारे में पूछा। उन्होंने आपको उनकी तप्सील बता दी। आपने उसके बाद फ़र्माया। मुझे मूसा (अलैहिस्सलाम) पर तरजीह न दो। लोग क़यामत के दिन बेहोश कर दिये जाएंगे। मैं भी बेहोश हो जाऊँगा, बेहोशी से होश में आने वाला सबसे पहला शख्स में होऊँगा। लेकिन मूसा (अलैहिस्सलाम) को अशैं इलाही का किनारा पकड़े हुए पाऊँगा। अब मुझे मा'लूम नहीं कि मूसा (अलैहिस्सलाम) भी बेहोश होने वालों में होंगे और मुझसे पहले उन्हें होश आ जाएगा, या अल्लाह तआला ने उनको उन लोगों में रखा है जो बेहोशी से मुस्तज़्ना (अलग) हैं।

٢٤١١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَعَنْ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((اسْتَبَ رَجُلَانِ: رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَرَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ، قَالَ الْمُسْلِمُ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُحَمَّدًا عَلَى الْعَالَمِينَ، فَقَالَ الْيَهُودِي: وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْعَالَمِينَ، فَوَفَّعَ الْمُسْلِمُ يَدَهُ عِنْدَ ذَلِكَ فَلَطَمَ وَجْهَ الْيَهُودِي، فَذَهَبَ الْيَهُودِي إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَاخْبَرَهُ بِمَا كَانَ مِنْ أَمْرِهِ وَأَمَرِ الْمُسْلِمِ، فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ الْمُسْلِمَ فَسَأَلَهُ عَنْ ذَلِكَ، فَاخْبَرَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تُخْبِرُونِي عَلَى مُوسَى، فَإِنَّ النَّاسَ يَصْنَعُونَ يَوْمَ الْيَوْمِ قَاصِقَ مَعَهُمْ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفْقَى، فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ جَنْبَ الْغُرْحِ، فَلَا أَذِي أَكَانَ إِيْمَنْ صَبَقَ فَلَاَقَ قَلْبِي، أَوْ كَانَ مِمَّنْ اسْتَنَى اللَّهُ)).

एक रिवायत में यूँ है उस यहूदी ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं जिम्मी हूँ और आपकी अमान में हूँ। उस पर भी उस मुसलमान ने मुझको थप्पड़ मारा। आप गुस्से हुए और मुसलमान से पूछा तूने उसको क्यूँ थप्पड़ मारा। इस पर उस मुसलमान ने ये वाकिया बयान किया। मगर आँहज़रत (ﷺ) ने ये पसन्द नहीं फ़र्माया कि किसी नबी की शान में एक राई बराबर भी तन्कीस (बेइज्जती) का कोई पहलू इख्तियार किया जाए।

2412. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे अम्र बिन यह्या ने बयान किया, उनसे उनके बाप यह्या बिन अम्माराने और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ फ़र्मा

٢٤١٢- حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ

थे कि एक यहूदी आया और कहा ऐ अबुल क़ासिम! आपके अस्थाब में से एक ने मुझे तमाँचा मारा है। आप (ﷺ) ने दरयाफ्त फ़र्माया, किसने? उसने कहा कि एक अंसारी ने। आपने फ़र्माया कि उन्हें बुलाओ। वो आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुमने इसे मारा है? उन्होंने कहा कि मैंने इसे बाज़ार में ये क़सम खाते सुना, उस ज़ात की क़सम! जिसने मूसा (अलैहिस्सलाम) को तमाम इंसानों पर बुजुर्गी दी। मैंने कहा, ओ खबीष! क्या मुहम्मद (ﷺ) पर भी! मुझे गुस्सा आया और मैंने उसक मुँह पर थप्पड़ दे मारा इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, देखो अंबिया में आपस में एक-दूसरे पर इस तरह बुजुर्गी न दिया करो। लोग क़यामत में बेहोश हो जाएँगे। अपनी क़ब्र से सबसे पहले निकलने वाला मैं ही होऊँगा। लेकिन मैं देखूँगा कि मूसा (अलैहिस्सलाम) अर्श इलाही का पाया पकड़े हुए हैं। अब मुझे मा'लूम नहीं कि मूसा (अलैहिस्सलाम) भी बेहोश होंगे और मुझसे पहले होश में आ जाएँगे या उन्हें पहली बेहोशी जो तूर पर हो चुकी है वही काफ़ी होगी।

(दीगर मक़ाम : 3398, 4638, 6916, 6917, 7428)

جَالِسٌ جَاءَ يَهُودِيٌّ فَقَالَ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ ضَرَبَ تَمَاحِيْرًا مَرَّارًا مِنْ أَصْحَابِكَ. فَقَالَ: ((مَنْ؟)) قَالَ: رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ. قَالَ: ((ادْعُوهُ)). فَقَالَ: ((أَضْرَبْتُهُ؟)) قَالَ: سَمِعْتُهُ بِالسُّوقِ يَخْلِفُ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى النَّبِيِّ، قُلْتُ: أَيُّ عَرِيْثٍ، عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَأَعْلَنْتَنِي غَضَبَةً ضَرَبْتُ وَجْهَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تُخَيِّرُوا بَيْنَ الْأَنْبِيَاءِ، فَإِنَّ النَّاسَ يَصْغَفُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْأَرْضُ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى أَخِيذْ بِقَابِلَةٍ مِنْ قَوَائِمِ الْقَرْشِ، فَلَا أَذْرِي أَكُنْ فِيْمَنْ صَبَقَ، أَمْ حَوْسِبَ بِصَعْفَةِ الْأَوَّلِيِّ)).

(أطرافه ٣ : ٣٣٩٨، ٤٦٣٨، ٦٩١٦)

٦٩١٧، ٦٧٤٢٧.

**तशरीह:** इस हदीष के ज़ेल में अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, व मुताबक़तुलहदीषि लिच्छर्जुमति फ़ी क़ौलिही अलैहिस्सलाम उदऊहु फ़इन्नल मुराद बिही अश़ख़ासहु बैन यदेहि (ﷺ) या'नी बाब और हदीष में मुताबक़त ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस शख़्स को यहाँ बुलाओ। गोया आँहज़रत (ﷺ) के सामने हाज़िरी ही उसके हक़ में सज़ा थी। इस हदीष को और भी कई मक़ामात पर इमाम बुखारी (रह.) ने नक़ल फ़र्माकर इससे बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज किया है।

ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) की फ़ज़ीलत तमाम अंबिया व रसूल अलैहिमुस्सलाम पर ऐसी ही है जैसी फ़ज़ीलत चाँद को आसमान के सारे सितारों पर हासिल है। इस हकीक़त के बावजूद आपने पसन्द नहीं फ़र्माया कि लोग आपकी फ़ज़ीलत बयान करने के सिलसिले में किसी दूसरे नबी की तन्कीज़ शुरू कर दें। आपने खुद हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की फ़ज़ीलत का ए'तिराफ़ फ़र्माया बल्कि ज़िक़्र भी फ़र्माया कि क़यामत के दिन मेरे होश में आने से पहले ही हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) अर्श का पाया पकड़े हुए नज़र आएँगे। न मा'लूम आप उनमें से हैं जिनको अल्लाह ने इस्तिफ़ा फ़र्माया है जैसा कि इश्ाद है, फ़सइक़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल्हाजि इल्ला माशा अल्लाहु (अज़ ज़ुमर : 68) या'नी क़यामत के दिन सब लोग बेहोश हो जाएँगे मगर जिनको अल्लाह चाहेगा बेहोश न होंगे। या पहले तूर पर जो बेहोशी उनको लाहक़ हो चुकी है वो यहाँ काम दे देगी या आप उन लोगों में से होंगे जिनको अल्लाह पाक ने मुहासबा से बरी करार दे दिया होगा। बहरहाल आपने उस जुज्वी फ़ज़ीलत के बारे में हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की अफ़ज़लियत का ए'तिराफ़ फ़र्माया। अगरचे ये सब कुछ महज़ बतौर

इन्हारे इंकिसारी ही है। अल्लाह पाक ने अपने हबीब (ﷺ) को खातिमुन्नबियिन का दर्जा बख्शा है तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम पर आपकी अफ़ज़लियत के लिये ये इज्जत कम नहीं है।

2413. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि एक यहूदी ने एक लड़की का सर दो पत्थरों के बीच रखकर कुचल दिया था (उसमें कुछ जान बाक़ी थी) उससे पूछा गया कि तेरे साथ ये किसने किया है? क्या फ़लाने, फ़लाने? जब उस यहूदी का नाम आया तो उसने अपने सर से इशारा किया (कि हाँ) यहूदी पकड़ा गया और उसने भी जुर्म का इक्रार कर लिया। नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया और उसका सर दो पत्थरों के बीच रखकर कुचल दिया गया।

(दीगर मक़ाम : 2746, 5295, 6876, 6777, 6884, 6885)

٢٤١٣- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : (( أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ. قِيلَ: مَنْ فَعَلَ هَذَا بِكَ، أَفَلَانٌ أَوْ فُلَانٌ؟ حَتَّى سَمِيَ الْيَهُودِيُّ فَأَوْمَاتِ بِرَأْسِهَا، فَأَخَذَ الْيَهُودِيُّ فَأَعْرَفَ، فَأَمَرَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ فَرَضَ رَأْسَهُ بَيْنَ حَجَرَيْنِ. ))

[أطرافه في : ٢٧٤٦، ٥٢٩٥، ٦٨٧٦]

[٦٨٨٥، ٦٨٨٤، ٦٧٧٧]

**तरीह :** अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं कि वो मक्तूला लड़की अंसार से थी, व इन्दतहावी अदा यहूदियुन फ़ी अहदि रसूलिल्लाहि (ﷺ) अला जारियतिन फ़अख़ज़ औज़ाहन कानत अलैहा व रजह रासहा वलऔज़ाहु नौउम्मिनल्हुल्यि युअमलु मिनल्फ़िज्जति वलिमुस्लिम फ़रज्जहा रासहा बैन हज़ैनि फ़अख़ज़हा यहूदी फ़रज्जहा रासहा व अख़ज़ मा अलैहा मिनल्हुल्यि क़ाल फ़अदरक्तु व बिहा रमक़ फ़अता बिहन्नबिय्य (ﷺ) (कील अल्हदीष) या'नी ज़मान-ए-रिसालत में एक यहूदी डाकू ने एक लड़की पर हमला किया, जो चाँदी के कड़े पहने हुए थी। यहूदी ने उस बच्ची का सर दो पत्थरों के बीच रखकर कुचल दिया और कड़े उसके बदन से उतार लिये चुनाँचे वो बच्ची उस हाल में कि उसमें कुछ जान बाक़ी थी, औहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में लाई गई, और उसने उस यहूदी का ये डाका ज़ाहिर कर दिया। उसकी सज़ा में यहूदी का भी सर दो पत्थरों के बीच कुचलकर उसको हलाक किया गया।

इहतज्ज बिहिल्मालिकिय्यतु वश़ाफ़िइय्यतु वल्हनाबिलतु वल्जुम्हूरु अला अन्न मन क़तल बिशैइन युक्तलु बिमिज़्लिही (क़स्तलानी) या'नी मालिकिया और शफ़िइया और हनाबिला और जुम्हूर ने इससे दलील पकड़ी है कि जो शख़्स जिस किसी चीज़ से किसी को क़त्ल करेगा उसी के मिश्ल से उसको भी क़त्ल किया जाएगा। क़िसास का तक्काज़ा भी यही है। मगर हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) की राय उसके ख़िलाफ़ है। वो मुमायिलत के काइल नहीं हैं। और यहाँ जो मज़कूर है उसे महज़ सियासी और तअज़ीरी हैषियत देते हैं। क़ानूनी हैषियत में उसे तस्लीम नहीं करते मगर आपका ये ख़याल हदीष के ख़िलाफ़ होने की वजह से क़ाबिले कुबूल नहीं है। हज़रत इमाम (रह.) ने खुद फ़र्मा दिया कि इज़ा सहल हदीष फ़हुव मज़हबी जब सहीह हदीष मिल जाए तो वही मेरा मज़हब है।

**बाब 2 : एक शख़्स नादान या कम अक्ल हो गो हाकिम उस पर पाबन्दी न लगाए मगर उसका किया हुआ मामला रह किया जाएगा**

और हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख़्स का सदक़ा रह कर दिया फिर उसको ऐसी हालत में सदक़ा करने से मना फ़र्मा दिया, और इमाम मालिक (रह.) ने कहा

٢- بَابُ مَنْ رَدَّ أَمْرَ السَّفِيهِ وَالضَّعِيفِ الْعَقْلِ،

وَإِنْ لَمْ يَكُنْ حَجَرَ عَلَيْهِ الْإِمَامُ

وَيَذْكُرُ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَدَّ عَلَى الْمُتَصَدِّقِ قَبْلَ التَّهَيُّ، ثُمَّ

है कि अगर किसी का किसी दूसरे पर कर्ज़ हो और मकरूज़ के पास एक ही गुलाम हो। उसके सिवा उसके पास कुछ भी जायदाद न हो तो अगर मकरूज़ अपने उस गुलाम को आज़ाद कर दे तो उसकी आज़ादी जाइज़ न होगी। और अगर किसी न किसी कम अक़ल की कोई चीज़ बेचकर उसकी क़ीमत उसे दे दी और उससे अपनी इस्लाह करने और अपना ख़याल रखने के लिये कहा। लेकिन उसने उसके बावजूद माल बर्बाद कर दिया तो उसे उसके ख़र्च करने से हाकिम रोक देगा। क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने माल ज़ाया करने से मना किया है। और आपने उस शख्स से जो ख़रीदते वक़्त धोखा खा जाया करता था, फ़र्माया था कि जब तू कुछ ख़रीद व फ़रोख्त करे तो कहा कर कि कोई धोखे का काम नहीं है। रसूले पाक (ﷺ) ने उसका माल अपने क़ब्ज़े में न लिया।

نَهَاهُ. وَلَئِنْ مَالَكَ: إِذَا كَانَ لِرَجُلٍ عَلَى رَجُلٍ مَالٌ وَلَهُ عَبْدٌ وَلَا شَيْءَ لَهُ غَيْرُهُ فَأَغْفَقَهُ لَمْ يَجْزْ عَقْفُهُ. وَتَبَاعَ عَلَى الضَّعِيفِ وَلَحَوْهُ لَفَذَعَ عَنْهُ إِلَيْهِ وَأَمْرُهُ بِالْإِصْلَاحِ وَالْقِيَامِ بِشَأْنِهِ لِإِنْ أَفْسَدَ بَعْدَ مَنَعَةٍ، لِأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ إِضَاعَةِ الْمَالِ، وَقَالَ اللَّذِي يُعَدِّغُ فِي السَّيْعِ: إِذَا بَايَعْتَ قَعْلًا لَا خِلَافَةَ، وَلَمْ يَأْخُذِ النَّبِيُّ ﷺ مَالَهُ.

**तशरीह:** हज़रत जाबिर (रज़ि.) वाली हदीष को अब्द बिन हुमैद ने निकाला है। हुआ ये कि एक शख्स एक मुर्गी के अण्डे के बराबर सोने का एक डला लेकर आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और कहने लगा कि आप बतौर सद्का इसे मेरी तरफ से कुबूल कीजिए। वल्लाह! मेरे पास इसके सिवा और कुछ नहीं है। आपने उसकी तरफ से मुँह फेर लिया। उसने फिर यही कहा। आखिर आपने वो डला उसकी तरफ फेंक दिया और फ़र्माया तुममें कोई नादार होता है और अपना माल जिसके सिवा उसके पास कुछ नहीं होता है ख़ैरात करता है। फिर ख़ाली होकर लोगों के सामने हाथ फैलाता फिरता है। ये ख़ैरात किसी हालत में भी पसन्दीदा नहीं है। ख़ैरात उस वक़्त करनी चाहिये जब आदमी के पास ख़ैरात करने के बाद भी माल बाक़ी रह जाए। इस हदीष को अबू दाऊद और इब्ने खुज़ैमा ने निकाला है।

ये हदीष इस्लाम के एक जामेअ असलुल उसूल (सबसे बड़े उसूल) को ज़ाहिर कर रही है कि इंसान का दुनिया में मुहताज और तंगदस्त बनकर रहना अल्लाह के नज़दीक किसी हाल में भी महबूब नहीं है। और ख़ैरात व सद्कात का ये नज़रिया कभी सहीह नहीं कि एक आदमी अपने सारे अषाषे हयात (ज़िन्दगी की जमा-पूँजी) को ख़ैरात करके फिर खुद ख़ाली हाथ होकर बैठ जाए और फिर लोगों के सामने हाथ फैलाता फिरे। आयते कुर्आनी वला तज्अलु वला तज्अल यदक मगलूला इला उनुकिक व ला तब्मुन्हा कुल्ल बसत अल् अयति इस पर वाज़ेह दलील है। हाँ बिला शक अगर कोई हज़रत सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) जैसा इमान व यक़ीन और तवक़ल का मालिक हो तो उसके लिये सब कुछ जाइज़ है। मगर ये क़तअन मुम्किन नहीं है कि उम्मत में कोई क़यामत तक हज़रत सिद्दीक (रज़ि.) का मषील (समरूप) पैदा हो सके। इस मौक़े पर हज़रत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) के अल्फ़ाज़े मुबारका हमेशा आबेज़र (सोने के अक्षरों में) लिखे जाएंगे। जब आपसे पूछा गया कि आप क्या ख़ैरात लेकर आए और क्या छोड़कर आए हैं? तो आपने फ़र्माया था कि तरबतु अल्लाह व रसूल मैं घर में अल्लाह और रसूल (ﷺ) को छोड़कर आया हूँ और बाक़ी सब कुछ लाकर हाज़िर कर दिया है। जुबाने हाल से गोया आपने फ़र्माया था इन्ना मलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन (अल अन्ज़ाम: 162) रज़ियल्लाहु अन्हुम व अज़ाहु

उम्मत के उन बदतरीन लोगों पर हज़ार नफ़रीन जो ऐसे फ़ख़रे इस्लाम, आशिके रसूले करीम (ﷺ) की शान में तबर्बाज़ी (लानत-मलामत) करते हैं और बेहयाई की हद हो गई कि इस तबर्बाज़ी को शवाब का काम जानते हैं। सच है फ़अज़ल्लहुमुश्रैतानु बिमा कानू यप्सुकून

• इस बाब के ज़ेल हाफ़िज़ साहब फ़मति हैं, व अशारल्बुखारी बिमा ज़कर मिन अहादीथिल्बाबि इलत्तफ़्सीलि बैन मन ज़हरत मिन्हुल इज़ाअतु फ़युरहु तस्रूफ़हु फ़ीमा इज़ा कान फ़िशशैल्क़शीरि अविल्मुस्तग़रकि तुहमलु क्रिस्सतुल मुदब्बिरि व बैन मा इज़ा कान फ़िशशैल्थसीर औ जुइल लहु शर्तन यामनु बिही मिन इप्सादि मालिही

फ़ला युरहु (फ़तुल बारी) या'नी बाब में मन्दर्जा अह्लादीष से मुज्ताहिदे मुतलक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस तफ़्सील की तरफ़ इशारा फ़र्माया है कि जब माल क़रीर हो या कोई और चीज़ जो ख़ास अहमियत रखती हो और साहिबे माल की तरफ़ से उसके ज़ाये कर देने का ख़तरा हो तो उसका ख़र्च करना हुकूमत की तरफ़ से रद्द कर दिया जाएगा। मुदब्बर का वाक़िया इसी पर महमूल है और अगर थोड़ी चीज़ हो या कोई ऐसी शर्त लगा दी गई हो जिससे उस माल के ज़ाये होने का डर न हो तो ऐसी सूत में उसका तसरूफ़ कायम रहेगा और वो रद्द न किया जाएगा। असल मक़सद माल की हिफ़ाज़त और क़र्ज ख़्वाहों वग़ैरह को अहले हुकूक का मिलना है। ये जिस सूत मुम्किन हो। ये सुलताने इस्लाम की सवाबदीद से मुता'ल्लिक चीज़ है।

2414. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि एक सहाबी कोई चीज़ ख़रीदते वक़्त धोखा खा जाया करते थे। नबी करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि जब तू ख़रीदा करे तो कह दिया कर कि कोई धोखा न हो। पस वो उसी तरह कहा करते थे।

(राजेअ: 2117)

٢٤١٤ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ يُخْدَعُ فِي النَّيِّ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا بَايَعْتَ قُلًّا لَا خِلَابَةَ))، فَكَانَ يَقُولُهُ)).

{راجع: ٢١١٧}

आँहज़रत (ﷺ) ने कम तज़ुर्बे होने के बावजूद उस शख्स पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई, हालाँकि ख़रीदना उन्हें नहीं आता था। इसी से मक़सद बाब प्राबित हुआ।

2415. हमसे आसिम बिन अली ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुकदिर ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि एक शख्स ने अपना एक गुलाम आज़ाद किया। लेकिन उसके पास उसके सिवा और कोई माल न था। इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने उसे उसका गुलाम वापस करा दिया और उसे नुऐम बिन निहाम ने ख़रीद लिया। (राजेअ: 2141)

٢٤١٥ - حَدَّثَنَا عَاصِمٌ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَيْبٍ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَجُلًا أَعْتَقَ عَبْدًا لَيْسَ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُ، فَزَدَ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَبْغَاهُ مِنْهُ نَعِيمٌ بِنِ النَّحَامِ)).

{راجع: ٢١٤١}

दूसरी रिवायात में है कि ये शख्स क़र्ज़दार था और क़र्ज़ की अदायगी के लिये उसके पास कुछ न था। सिर्फ़ यही गुलाम था और उसे भी उसने मुदब्बर कर दिया था। आप (ﷺ) ने जब तफ़्सीलात को मा'लूम किया तो उसकी आज़ादी को रद्द करके उस गुलाम को नीलाम करा दिया और हासिलशुदा रक़म से उसका क़र्ज़ अदा करा दिया। वल्लाहु आलम।

#### बाब 4 : मुद्दई या मुद्दा अलैह एक-दूसरे की निस्वत जो कहें

#### ٤ - بَابُ كَلَامِ الْخُصُومِ بَعْضُهُمْ فِي

بَعْضٍ

(गीबत में शामिल नहीं है) बशर्त कि ऐसा कोई कलिमा मुँह से न निकालें जिसमें हद या तअज़ीर वाजिब हो, वरना सज़ा दी जाएगी

बाब के ज़ेल हाफ़िज़ मरहूम फ़र्माते हैं, अय फ़्रीमा ला यूज़िबु हदन व ला तअज़ीसन फ़ला यकूनु ज़ालिक मिनल

गीबतिल मुहर्रमति ज़कर फ़ीहि अर्बअ अहादीष या'नी मुह्रई और मुह्र अलैह आपस में ऐसा कलाम करें जिस पर हद वाजिब न होती हो और न तज़ज़ीर; पस ऐसा कलाम गीबत मुहर्रमा में शुमार नहीं किया जाएगा। इस बाब के ज़ेल हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने चार अहादीष ज़िक्र फ़र्माई है। पहली और दूसरी हदीष इब्ने मसऊद और अशअष (रज़ि.) की है। वल्गारज़ु मिन्हु क़ौलुहु कुल्लु या रसूलल्लाहि (ﷺ) इज़ा यहलिफु व यज़हबु बिमा ली फ़इन्नहु नुसिबुहु इलल हल्फ़िल्काज़िबि व लम युआरिख़िज़ बिज़ालिक लिअन्नहु अख़बर बिमा यअलमुहु मिन्हु फ़ी हालित्तज़ल्लुमि मिन्हु या'नी ग़र्ज़ हदीषे अशअष (रज़ि.) से ये है कि उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) के सामने मुह्रआ अलैह के बारे में ये बयान दिया कि वो झूठी क़सम खाकर मेरा माल ले उड़ेगा। आपने मुह्रआ के इस बयान पर कोई ए'तिराज़ नहीं किया। तीसरी हदीष कअब बिन मालिक (रज़ि.) की है। जिसमें फ़र्तफ़अत अस्वातुहुमा के अल्फ़ाज़ हैं और कुछ तुरुक में फ़ तलाहया का लफ़्ज़ भी आया है कि वो दोनों बाहमी तौर पर झगड़ने लगे। उससे बाब का मक़सद साबित होता है। चौथी हदीष हिशाम बिन हक़ीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) के साथ हज़रत उमर (रज़ि.) का वाक़िया है जिसमें हज़रत उमर (रज़ि.) ने महुज़ अपने इज्तिहाद की बिना पर हज़रत हिशाम (रज़ि.) पर इंकार फ़र्माया था।

बाब का मक़सद ये है कि दौराने मुक़द्दमा में ऐन अदालत में मुह्रआ और मुह्रआ अलैह आपस में कुछ दफ़ा कुछ सख़्त कलामी कर गुज़रते हैं और कई बार अदालत उन पर कोई नोटिस नहीं लेती। हाँ! अगर हद के बाहर कोई शख़्स अदालत का एहतिराम बाला-ए-ताक़ रखकर सख़्तकलामी करेगा तो यक़ीनन वो क़ाबिले सज़ा होगा।

2416, 17. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमको अब मुआविया ने ख़बर दी, उन्हें अज़मश ने, उन्हें शक्कीक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। जिसने कोई झूठी क़सम जान-बूझकर खाई ताकि किसी मुसलमान का नाजाइज़ तौर पर माल हासिल कर ले तो वो अल्लाह तआला के सामने इस हालत में हाज़िर होगा कि अल्लाह पाक उस पर निहायत ही ग़ज़बनाक होगा। रावी ने बयान किया उस पर अशअष (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझसे ही मुता'ल्लिक एक मसले में रसूले करीम (ﷺ) ने ये फ़र्माया था। मेरे और एक यहूदी के बीच एक ज़मीन का झगड़ा था। उसने इंकार किया तो मैंने मुक़द्दमा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पेश किया। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे दरयाफ़्त किया, क्या तुम्हारे पास कोई गवाह है? मैंने कहा कि नहीं। उन्होंने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि नहीं। उन्होंने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने यहूदी से फ़र्माया कि फिर तू क़सम खा। अशअष (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर तो ये झूठी क़सम खा लेगा और मेरा माल उड़ा ले जाएगा। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, बेशक वो लोग जो अल्लाह के अहद और अपनी क़समों से थोड़ी पूँजी ख़रीदते हैं, आख़िर आयत तक। (राज़ेअ: 2356, 2357)

٢٤١٦، ٢٤١٧ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ خَلَفَ عَلَى يَمِينٍ وَهُوَ لَيْسَ بِهَا فَاجِرٌ لَيَقْطَعَ بِهَا مَالَ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَوْ لَيَكْفُرَنَّ بِهِ أَوْ لَيَكْفُرَنَّ اللَّهُ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضَبَانِ)). قَالَ فَقَالَ الْأَشْعَثُ: لِمَ وَاهُو كَانَ ذَلِكَ كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ مِنَ الْيَهُودِ أَرْضٌ، فَجَحَدَنِي، فَقَدَّمْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَلَيْكَ بَيْتَةٌ؟)) قُلْتُ: لَا. قَالَ: فَقَالَ لِلْيَهُودِيِّ: ((أَخْلِفْ)). قَالَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذَا يَخْلِفُ وَيَذْهَبُ بِمَالِي. فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ)).

[راجع: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

मुद्दी या 'नी अशअष' (रज़ि.) ने अदालत आलिया में यहूदी की खामी को साफ़ लफ़्ज़ों में ज़ाहिर कर दिया। बाब का यही मक़सद है कि मुकद्दमा के बारे में मुद्दी और मुद्दा अलह अदालत में अपने अपने दलाइल वाज़ेह कर दें, इसका नाम ग़ीबत नहीं है।

2418. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्मान बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको यूनस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने, उन्होंने कअब (रज़ि.) से रिवायत किया कि उन्होंने इब्ने अबी हदरद (रज़ि.) से मस्जिद में अपने क़र्ज़ का तक्राज़ा किया और दोनों की आवाज़ इतनी बुलन्द हो गई कि रसूल करीम (ﷺ) ने भी घर में सुन ली। आपने अपने हुज़र-ए-मुबारक का पर्दा उठाकर पुकारा ऐ कअब! उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) मैं हाज़िर हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने क़र्ज़ में से इतना कम कर दे और आपने आधा क़र्ज़ कम कर देने का इशारा किया। उन्होंने कहा कि मैंने कम कर दिया। फिर आपने इब्ने अबी हदरद (रज़ि.) से फ़र्माया कि उठ अब क़र्ज़ अदा कर दे।

(राजेअ : 475)

٢٤١٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُثْمَانُ بْنُ غَمَرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ عَنْ كَعْبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : ((أَنَّ تَقَاضَى ابْنَ أَبِي خَذَرٍ دَيْنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ لِلسَّجْدِ، فَارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا حَتَّى سَمِعَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمَا حَتَّى كَشَفَ سِجْفَ خُفْرَيْهِ فَقَادَى : ((يَا كَعْبُ)) قَالَ : لَيْتَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ : ((مَنْ مِنْ دَيْنِكَ هَذَا)) - فَأَوْنَا إِلَيْهِ أَمَى الشُّطْرَ - قَالَ : لَقَدْ فَعَلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ : ((قُمْ فَأَقْضِهِ)).

[راجع : ٤٧٥]

झगड़ा तै कराने का एक बेहतरीन रास्ता आप (ﷺ) ने इख़्तियार फ़र्माया और बेहद खुशकिस्मत हैं वो दोनों फ़रीक़ जिन्होंने दिलो-जान से आपका ये फ़ैसला मंज़ूर कर लिया। मकरूज़ अगर तंगदस्त है तो ऐसी रिआयत देना ज़रूरी हो जाता है और साहिबे माल को ऐसी सूरत में सज़ा और शुक्र के साथ जो मिले वो ले लेना ज़रूरी हो जाता है।

2419. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने, उन्हें अब्दुलहमान बिन अब्दुल क़ारी ने कि उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना कि वो बयान करते थे कि मैंने हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) को सूरह फुरक़ान एक दफा इस क़िरअत से पढ़ते सुना जो उसके ख़िलाफ़ थी जो मैं पढ़ता था। हालाँकि मेरी क़िरअत खुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे सिखाई थी। क़रीब था कि मैं फ़ौरन ही उन पर कुछ कर बैठूँ, लेकिन मैंने उन्हें मुहलत दी कि वो (नमाज़ से) फ़ारिग़ हो लें। उसके बाद मैंने उनके गले में चादर डालकर उनको घसीटा और

٢٤١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ هُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ الْقَارِي أَنَّهُ قَالَ : سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : ((سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمٍ بْنِ حِرَامٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ عَلَى غَيْرِ مَا أَقْرَأَهَا، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَقْرَأَهَا، وَكَدْتُ أَنْ اغْجَلَ عَلَيْهِ، ثُمَّ انْهَلَيْتُهُ حَتَّى انْصَرَفَ، ثُمَّ

रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर किया। मैंने आपसे कहा कि मैंने उन्हें इस क़िरअत के ख़िलाफ़ पढ़ते सुना है जो आपने मुझे सिखाई है। हुजूर अकरम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि पहले इन्हें छोड़ दे। फिर उनसे फ़र्माया कि अच्छा अब तुम क़िरअत सुनाओ उन्होंने वही अपनी क़िरअत सुनाई। आपने फ़र्माया कि उसी तरह नाज़िल हुई थी। उसके बाद मुझसे आपने फ़र्माया कि अब तुम भी पढ़ो। मैंने भी पढ़ के सुनाया। आपने उस पर भी फ़र्माया कि इसी तरह नाज़िल हुई। कुआन सात क़िरअतों में नाज़िल हुआ है, तुमको जिसमें आसानी हो उसी तरह से पढ़ लिया करो।

(दीगर मक़ाम : 4992, 5041, 6936, 7550)

ثَبِّتَهُ بِرِوَايَةِ فَجَنَّتْ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ  
فَقُلْتُ: إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ عَلَيَّ غَيْرَ مَا  
أَقْرَأْتِيهَا. فَقَالَ لِي: ((أَرْمِلْنِي)). ثُمَّ قَالَ  
لَهُ: ((أَقْرَأْ)) فَقَرَأَ. قَالَ: ((هَكَذَا  
أُنزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ لِي: ((أَقْرَأْ)). فَقَرَأْتُ.  
فَقَالَ: ((هَكَذَا أُنزِلَتْ، إِنَّ الْقُرْآنَ أَنْزَلَ  
عَلَى سَبْعَةِ أَحْرَفٍ، فَاقْرَءُوا مَا تَسَرُّوْنَ)).

[أطرافه ن: ٤٩٩٢، ٥٠٤١، ٦٩٣٦]

[٧٥٥٠]

**तशरीह:** या'नी अरब के सातों क़बीलों के मुहावरे और तर्ज पर और कहीं-कहीं इख़्तिलाफ़े हरकात या इख़्तिलाफ़े हुरूफ़ से कोई ज़रूर नहीं बशर्ते कि मज़ानी और मत्तल्लिब में फ़र्क न आए। जैसे सात क़िरअतों के इख़्तिलाफ़ से ज़ाहिर होता है। उलमा ने कहा कि कुआन मजीद मशहूद सात क़िरअतों में से हर क़िरअत के मुवाफ़िक़ पढ़ा जा सकता है। उसमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन शाज़ क़िरअत के साथ पढ़ना अक़बर उलमा ने दुस्त नहीं रखा। जैसे हज़रत आइशा (रज़ि.) की क़िरअत हाफ़िज़ु अल-इस्लाम वाति वस्सलातिल्वस्ता व सलातिलअम्रि या इब्ने मसक़द (रज़ि.) की क़िरअत, फ़मस्तमत्तअतुम मिन्दुन्न इला अजलिम्मुसम्मा

### बाब 5 : जब हाल मा'लूम हो जाए तो मुजरिमों और झगड़ने वालों को घर से निकाल देना

और अबूबक्र (रज़ि.) की बहन उम्मे फ़रवा (रज़ि.) ने जब वफ़ाते अबूबक्र (रज़ि.) पर नोहा किया तो हज़रत ड्रमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने उन्हें (उनके घर से) निकाल दिया।

### ٥- باب إخراج أهل المعاصي

### والخصوم من البيت بعد المعرفة

وقد أخرج عمرُ أختَ أبي بكرٍ حينَ

ناحت

ताकि इस हरकत से रूहे सिद्दीके अक़बर (रज़ि.) को तकलीफ़ न हो और तजहीज़ व तक्फ़ीन (कफ़न-दफ़न) के काम में ख़लल न आए। फिर फ़ारूके आजम का ज़लाल, नोहा (मातम) जैसे नाजाइज़ काम को कैसे बर्दाश्त कर सकता था। उम्मे फ़रवा वाली रिवायत को इब्ने सअद ने तब्क़ात में निकाला है।

2420. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने तो ये इरादा कर लिया था कि नमाज़ की जमाअत कायम करने का हुक्म देकर खुद उन लोगों के घरों पर जाऊँ जो जमाअत में हाज़िर नहीं होते और उनके घरों को जला दूँ।

٢٤٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ  
سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ  
الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ  
ﷺ قَالَ: ((لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آتِيَ أَهْلَ الْبُيُوتِ  
فَأُحْرِقَهُمْ، ثُمَّ أَتَيْتُ إِلَى مَنْزِلِ قَوْمٍ لَا



(राजेअ: 644)

يَشْهَدُونَ الصَّلَاةَ فَأَحْرَقَ عَلَيْهِمُ).

[رجع: ٦٤٤]

इससे भी प्रभावित हुआ कि खताकारों पर किस हद तक तअज़ीर का हुक्म है। खुसूसन नमाज़े बाजमाअत में तसाहुल (सुस्ती) बरतना इतनी बड़ी ग़लती है जिसके इर्तिक़ाब करने वालों पर आप (ﷺ) ने अपने इतिहाई ग़ेज़ो-ग़ज़ब का इन्हार किया। इसी से बाब का मक़सद प्रभावित हुआ।

**तशरीह:** हदीष में लफ़्ज़ फ़उहरि़कु अलैहिम से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि जब घर जलाए जाएँगे तो वो निकल भागेंगे पस घर से निकालना जाइज़ हुआ। हमारे शैख़ इमाम इब्ने क़य्यिम ने इस हदीष से और कई हदीषों से दलील ली है कि शरीअत में तअज़ीर बिलमाल दुरुस्त है या'नी हाकिमे इस्लाम किसी जुर्म की सज़ा में मुजरिम पर आर्थिक जुर्माना कर सकता है।

पिछले बाब में मुद्ई और मुद्आ अलैह के आपसी ना-खा कलाम (अप्रिय बातचीत) के बारे में कुछ नर्मी थी। मुज्ताहिदे मुतलक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब मुनअक्किद फ़र्माकर इशारा किया कि अगर हद से बाहर कोई हरकत हो तो उन पर सख़्त गिरफ़्त भी हो सकती है। उनको अदालत से बाहर निकाला जा सकता है। हज़रत इमाम ने हज़रत इमर (रज़ि.) के उस इक़दाम से इस्तिदलाल फ़र्माया कि उन्होंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की वफ़ात पर खुद उनकी बहन उम्मे फ़रवा (रज़ि.) को जब नोहा करते देखा तो घर से निकलवा दिया। बल्कि कुछ दूसरी नोहा करने वाली औरतों को दूर मार मारकर घर से बाहर निकाला।

फ़रबतत मशरूइय्यतुल इक्तिमरि अला इख़राजि अहलिलम् असियति मिम्बाबिल वलिध्यि व महल्लि इख़राजिल्लुसूमी इज़ा बक्रअ मिन्हुम मिनल्मरइ वल्लुददि मा यक्नतज़ी ज़ालिक (फ़तहुल बारी)

**बाब 6 : मय्यत का वसी उसकी तरफ़ से दा'वा कर सकता है** **باب دَعْوَى الْوَصِيِّ لِلْمَيْتِ**

(इस बाब के ज़ेल हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं अय अनिलमय्यति फ़िलइस्तिल्हाकि व ग़ैरहू मिनल्हुकूकि ज़कर फ़ीहि हदीष आइशत फ़ी क्रिस्सति सअदिन वब्नि ज़मअत क़ाल इब्नुल मुनीर मुलाख़िख़सुहूद अवल्वसिय्यि अनिलमूसी अलैहि ला निजाअ फ़ीहि व कानल्मुसन्निफ़ु अराद बयान मुस्तनदिल इज़माइ व सयाती मबाहिषुल हदीषिल मज़कूर फ़ी किताबिल फ़राइज़ि (फ़तहुल बारी) या'नी मरने वाला जिसको वसिय्यत कर जाए वो अपना हुक़ हासिल करने के लिये दा'वा कर सकता है। इस बारे में कोई इख़ितलाफ़ नहीं है। गोया हज़रत इमाम (रह.) ने यही इशारा फ़र्माया कि इस पर ज़मीअ उलम-ए-उम्मत का इज़माअ है।

2421. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे इर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि ज़मआ की एक बांदी के लड़के के बारे में अब्द बिन ज़मआ (रज़ि.) और सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) अपना झगड़ा रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लेकर गए। हज़रत सअद (रज़ि.) ने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे भाई ने मुझको वसिय्यत की थी कि जब मैं (मक्का) आऊँ और ज़मआ की बांदी के लड़के को देखूँ तो उसे अपनी परवरिश में ले लूँ क्योंकि वो उन्हीं का लड़का है। और अब्द बिन ज़मआ ने कहा, कि वो मेरा भाई है और मेरे बाप की बांदी का लड़का है। मेरे वालिद ही के फ़राश में उसकी पैदाइश हुई है, नबी करीम (ﷺ) ने बच्चे के

٢٤٢١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرُورَةَ عَنْ غَابِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: (رَأَى عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ وَسَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ اخْتَصَمَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فِي ابْنِ أُمِّهِ زَمْعَةَ، فَقَالَ سَعْدُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَوْصَانِي أَخِي إِذَا قَبِضْتُ أَنْ أَنْظُرَ ابْنُ أُمِّهِ زَمْعَةَ فَأَقْبِضْهُ فَإِنَّهُ ابْنِي. وَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي وَابْنُ أُمِّهِ أَبِي، وَلَيْدَ عَلَى فِرَاشِ أَبِي فَرَأَى النَّبِيُّ ﷺ حَبْلَهَا بَيْنًا، فَقَالَ ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ،

अंदर (उत्बा की) वाजेह मुशाबिहत देखी। लेकिन फ़र्माया कि ऐ अब्द बिन जम्आ! लड़का तो तुम्हारी ही परवरिश में रहेगा। क्योंकि लड़का फ़राश के ताबेअ होता है। और सौदा (रज़ि.)! तू इस लड़के से पर्दा किया कर। (राजेअ: 2053)

الْوَلَدُ لِلْفَرَّاشِ. وَاسْتَحْيِي مِنْهُ يَا سَوْدَةُ)).

[راجع: 2053]

हज़रत सअद (रज़ि.) अपने काफ़िर भाई की तरफ़ से वसी थे। इसलिये उन्होंने उसकी तरफ़ से दा'वा किया जिसमें कुछ असलियत थी। मगर क़ानून की रू से वो दा'वा सहीह न था क्योंकि इस्लामी क़ानून के तहत ये है अल्वलदु लिलिफ़राशि व लिलिआहिर अल्हज़र इसलिये आपने उनका दा'वा ख़ारिज कर दिया। मगर इत्तकुशशुबहात के तहत हज़रत सौदा (रज़ि.) को उस लड़के से पर्दा करने का हुक्म दिया। अनेक बार हाकिम के सामने कुछ ऐसे हक़ाइक़ (तथ्य) आ जाते हैं कि उनको सारी दलीलों से ऊँचा उठकर अपनी स़वाबदीद (विवेक) पर फ़ैसला करना नागुज़ीर (अनिवार्य) हो जाता है।

### बाब 7 : अगर शरारत का डर हो तो मुल्जिम को बांधना दुरुस्त है

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने (अपने गुलाम) इब्रिमा को क़ुआन व हदीष और दीन के फ़राइज़ सीखने के लिये क़ैद किया। 2422. हमसे कुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने और उन्होंने अबू हुदैरह (रज़ि.) को ये कहते हुए सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने चन्द सवारों का एक लश्कर नजद की तरफ़ भेजा। ये लोग बनू हनीफ़ा के एक शख्स को जिसका नाम धुमामा बिन उबाल था और अहले धमामा का सरदार था, पकड़ लाए और उसे मस्जिद नबवी के एक सुतून से बांध दिया। फिर रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और आपने पूछा, धुमामा! तू किस ख़याल में हैं? उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! मैं अच्छा हूँ। फिर उन्होंने पूरी हदीष ज़िक्र की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि धुमामा को छोड़ दो।

(राजेअ: 462)

٧- باب التوقي ممن تخشى مفرته

وَقَدْ اَبْنُ عَبَّاسٍ عِكْرَمَةَ عَلَى تَعْلِيمِ الْقُرْآنِ وَالسُّنَنِ وَالْفَرَائِضِ.

٢٤٢٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ

عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((بَعَثَ

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ غِيَلًا قَبْلَ نَجْدٍ، فَجَاءَتْ

بِرَجُلٍ مِنْ بَنِي خَيْفَةَ يُقَالُ لَهُ ثَمَامَةُ بْنُ

أَكْبَالٍ سَيِّدُ أَهْلِ الْيَمَامَةِ، فَوَتَطَّوهُ بِسَارِيَةٍ

مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ. فَخَرَجَ إِلَيْهِ رَسُولُ

اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا عِنْدَكَ يَا ثَمَامَةُ؟))

قَالَ: عِنْدِي يَا مُحَمَّدٌ غَيْرٌ - فَلَذَكَرَ

الْخَبِيرَ. قَالَ: ((أَطْلِقُوا ثَمَامَةَ)).

[راجع: 462]

**तशरीह:** कई दफ़ा की गुफ़्तगू में धुमामा अख़लाके नबवी से हद दर्जा मुताषिर (प्रभावित) हो चुका था। उसने आपसे हर बार कहा था कि आप अगर मेरे साथ अच्छा बर्ताव करेंगे तो मैं इसकी नाक़द्री नहीं करूँगा। चुनाँचे यही हुआ, आपने उसे बख़ुशी ऐजाज़ व इकराम के साथ आज़ाद कर दिया। वो फ़ौरन ही एक कुएँ पर गया और गुस्ल करके आया और दायर-ए-इस्लाम में दाख़िल हो गया। पस बाब का तर्जुमा षाबित हुआ कि कुछ हालात में किसी इंसान का कुछ वक़्त तक क़ैद करना ज़रूरी हो जाता है और ऐसी हालत में ये गुनाह नहीं है बल्कि नतीजे के लिहाज़ से मुफ़ीद षाबित होता है।

अहदे नबवी इंसानी तमदुन का इब्तिदाई दौर था। कोई जेलखाना न था। लिहाज़ा मस्जिद ही से ये काम भी लिया गया। और इसलिये भी कि धुमामा को मुसलमानों को देखने का बहुत ही क़रीब से मौक़ा दिया जाए और वो इस्लाम की ख़ुबियों और मुसलमानों के औसाफ़े हस्ना (अच्छे गुणों) का ग़ौर से मुआयना कर सके। ख़ुसूसन अख़लाके मुहम्मदी (ﷺ) ने उसे

बहुत ही ज्यादा मुताप्पिर किया। सच है,

आँचे खूबों हमा दारंद तु तन्हा दारी।

बाब का तर्जुमा अल्फाज़ फ़रबतुहु बिसारियतिन मिन सवारिधिल मस्जिदि से निकलता है। काज़ी शुरैह जब किसी पर कुछ हुक्म करते और उसके भाग जाने का डर होता तो मस्जिद में उसको हिरासत में रखने का हुक्म देते। जब मज्लिस बर्खास्त करते, अगर वो अपने ज़िम्मे का हक्क अदा कर देता तो उसको छोड़ देते वरना कैदखाने में भिजवा देते।

दूसरी रिवायत में यूँ है आप हर सुबह को प्रमामा के पास तशरीफ़ लाते और उसका मिज़ाज और हालात दर्याफ़्त करते। वो कहता कि अगर आप मुझको क़त्ल करा देंगे तो मेरा बदला लेने वाले लोग बहुत हैं। और अगर आप मुझको छोड़ देंगे तो मैं आपका बहुत बहुत एहसानमन्द रहूँगा। और अगर आप मेरी आज़ादी के बदले रुपया चाहते हैं तो जिस क़दर आप फ़र्माएँगे आपको रुपया दूँगा। कई रोज़ तक मामला ऐसे ही चलता रहा। आखिर एक रोज़ रहमतुल लिल् आलमीन ने प्रमामा को बिला शर्त आज़ाद करा दिया। जब वो चलने लगा तो सहाबा को खयाल आया कि शायद फ़रारो इस्तिथार कर रहा है। मगर प्रमामा एक पेड़ के नीचे गया जहाँ पानी मौजूद था। वहाँ से उसने गुस्ल किया और पाक-साफ़ होकर दरबारे रिसालत में हाज़िर हुआ। और कहा कि हुज़ूर अब मैं इस्लाम कुबूल करता हूँ। फ़ौरन ही उसने कलिमा शहादत अशहदु अल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदरसूलल्लाह पढ़ा और सच्चे दिल से मुसलमान हो गया। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ा।

## बाब 8 : हरम में किसी को बाँधना और कैद करना

और नाफ़ेअ बिन अब्दुल हारिष ने मक्का में सफ़वान बिन उमय्या से एक मकान जेलखाना बनाने के लिये इस शर्त पर लिया कि अगर इमर (रज़ि.) इस ख़रीददारी को मंज़ूर करेंगे तो बेअ पूरी होगी वरना सफ़वान को जवाब आने तक चार सौ दीनार तक किराया दिया जाएगा। इब्ने जुबैर (रज़ि.) ने मक्का में लोगों को कैद किया।

## ۸- بَابُ الرِّبْطِ وَالْحَبْسِ فِي الْحَرَمِ

وَأَشْتَرَى نَافِعُ بْنُ عَبْدِ الْحَارِثِ دَارًا لِلسَّجْنِ بِمَكَّةَ مِنْ صَفْوَانَ بْنِ أُمَيَّةَ، عَلَى أَنْ عُمَرُ بْنُ رَضِيٍّ فَأَتَيْنَعُ بَيْعَهُ، وَإِنْ لَمْ يَرْضَ عُمَرُ فَلِصَفْوَانَ أَرْبَعُمِائَةٍ. وَسَجَنَ ابْنُ الزُّبَيْرِ بِمَكَّةَ.

मक़तुल मुकर्रमा पूरा ही हरम में दाख़िल है। लिहाज़ा हरम में जेलखाना बनाना और मुज्रिमों का कैद करना प्राबित हुआ। इब्ने जुबैर (रज़ि.) के अपर को इब्ने सअद वग़ैरह ने निकाला है कि इब्ने जुबैर (रज़ि.) ने हसन बिन मुहम्मद बिन हनीफ़ा को दारुन नदवा में सिन्ने आरिम में कैद किया। वो वहाँ से निकलकर भाग गए।

2423. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सवारों का एक लश्कर नजद की तरफ़ भेजा। जो बनू हनीफ़ा के एक शख्स प्रमामा बिन उषाल को पकड़कर लाए और मस्जिद के एक सतून से उसको बाँध दिया।

(राजेअ : 462)

۲۴۲۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي

سَعِيدٍ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:

((بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ خِيْلًا قَبْلَ نَجْدٍ، فَجَاءَتْ

بِرَجُلٍ مِنْ بَنِي خَيْفَةَ يُقَالُ لَهُ ثَمَامَةُ بْنُ

أَفَالٍ، فَرَبَطُوهُ بِسَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي

الْمَسْجِدِ)). [راجع: ٤٦٢]

मदीना भी हरम है तो हरम में कैद करने का जवाज़ प्राबित हुआ। ये बाब लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने उस राय का रद्द किया जो इब्ने अबी शैबा ने ताउस से रिवायत किया कि वो मक्का में किसी को कैद करना बुरा जानते थे।

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

## बाब 9 : कर्जदार के साथ रहने का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
- ۹ - بَابُ الْمَلَاَزِمَةِ

इस तरह कि कर्जखवाह इरादा करे कि जब तक मकरूज (ऋणी) मेरा रुपया अदान करे मैं उसके साथ चिमटा रहूँगा और उसका पीछा कभी नहीं छोड़ूँगा।

2424. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे जा'फर बिन रबीआ ने बयान किया और यह्या बिन बुकैर के अलावा ने बयान किया कि मुझसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुझसे जा'फर बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुमुज ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक अंसारी ने, और उनसे कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने कि अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद असलमी (रज़ि.) पर उनका कर्ज था, उनसे मुलाकात हुई तो उन्होंने उनका पीछा किया। फिर दोनों की बातचीत तेज़ होने लगी और आवाज़ बुलन्द हो गई। इतने में रसूल करीम (ﷺ) का उधर से गुज़र हुआ, और आपने फ़र्माया, ऐ कअब! और आपने अपने हाथ से इशारा किया गोया ये फ़र्माया कि आधे कर्ज को माफ़ कर दो। चुनाँचे उन्होंने आधा ले लिया और आधा कर्ज माफ़ कर दिया।

(राजेअ : 457)

۲۴۲۴ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَكْرِجٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رِبْعَةَ - وَقَالَ غَيْرُهُ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رِبْعَةَ - عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُرْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيِّ: ((عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ لَهُ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي خَلَزْدٍ الْأَسْلَمِيِّ دَيْنٌ، فَلَقِيَهُ فَلَزِمَهُ، فَتَكَلَّمَا حَتَّى ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا، فَمَرَّ بِهِمَا النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا كَعْبُ)) - وَأَشَارَ بِيَدِهِ كَأَنَّهُ يَقُولُ: الْيَصْفَ - فَآخَذَ يَصْفَ مَا عَلَيْهِ وَتَرَكَ يَصْفَا.

[راجع: ۴۵۷]

लफ्ज़े हदीष फ़लज़िमहू से बाब का तर्जुमा निकला कि हज़रत कअब (रज़ि.) अपने कर्ज वसूल करने के लिये अब्दुल्लाह (रज़ि.) के पीछे चिमटे और कहा कि जब तक मेरा कर्ज अदान नहीं कर देता मैं तेरा पीछा नहीं छोड़ूँगा, और जब आँहज़रत (ﷺ) ने उनको देखा और इस तरह चिमटने से मना नहीं फ़र्माया तो उससे चिमटने का जवाज़ निकला। आँहज़रत (ﷺ) ने आधा कर्ज माफ़ करने की सिफ़ारिश फ़र्माई, इससे ये भी प्राबित हुआ कि मकरूज (कर्जदार) अगर तंगदस्त है तो कर्जखवाह को चाहिये कि कुछ माफ़ कर दे, नेक काम के लिये सिफ़ारिश करना भी प्राबित हुआ।

## बाब 10 : तक्राज़ा करने का बयान

2425. हमसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा कि हमसे वहब बिन जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उन्हें शुअबाने खबर दी, उन्हें अअमश ने, उन्हें अबुजुहाने, उन्हें मसरूक़ ने, और उनसे खबबाब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं जाहिलियत के ज़माने में लोहे का काम करता था और आस्र बिन वाईल (काफ़िर) पर मेरे कुछ रुपये कर्ज थे। मैं उसके पास तक्राज़ा करने गया तो उसने

## - ۱۰ - بَابُ التَّقَاضِي

۲۴۲۵ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ عَنْ حَارِمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الصُّعْحَى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ خُبَابٍ قَالَ: ((كَتَبْتُ لِي مِنَ الْجَاهِلِيَّةِ وَكَانَ لِي عَلَى الْعَاصِي بْنِ وَائِلٍ

मुझसे कहा कि जब तक तू मुहम्मद (ﷺ) का इंकार नहीं करेगा मैं तेरा क़र्ज़ अदा नहीं करूँगा। मैंने कहा, हर्गिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का इंकार कभी नहीं कर सकता, यहाँ तक कि अल्लाह तआला तुम्हें मारे और फिर तुमको उठाए। वो कहने लगा कि फिर मुझसे भी तक्राज़ा न कर। मैं जब मर के दोबारा ज़िन्दा होऊँगा और मुझे (दूसरी ज़िन्दगी में) माल और औलाद दी जाएगी तो तुम्हारा क़र्ज़ भी अदा कर दूँगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई, तुमने उस शख्स को देखा जिसने मेरी आयतों का इंकार किया और कहा कि मुझे माल औलाद ज़रूर दी जाएगी। आख़िर तक। (राज़ेअ: 2091)

**तशीह:** हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.), आस बिन वाइल ग़ैर मुस्लिम के यहाँ अपनी मज़दूरी वसूल करने का तक्राज़ा करने गए, उसी से बाब का मक़सद प्राप्ति हुआ। आस ने जो ज़वाब दिया वो इतिहाई नामा' कूल (अनुचित) ज़वाब था। जिस पर कुर्आन मजीद में नोटिस लिया गया। इस हदीष से मुज्ताहिदे मुत्लक़ इमाम बुखारी (रह.) ने कई एक मसाइल का इस्तिम्बात किया है। इसलिये अनेक मक़ामात पर ये हदीष नक़ल की गई है जो हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के तफ़्सीर को ह व कुव्वते इज्तिहाद की बय्यिन दलील है। हज़ार अफ़सोस उन अहले जुब्बा व दस्तार पर जो हज़रत इमाम बुखारी (रह.) जैसे फ़कीहे उम्मत की शान में तन्कीज़ करते हैं और आपकी फ़हम व दिरायत से मुंकिर होकर खुद अपनी नासमझी का शुबूत देते हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) इन अब्बाब के ख़ातिमे पर फ़र्माते हैं, इश्तमल किताबुल इस्तिस्नाज़ि व मा मअहू मिन लिहज़र व तत्तफ़लीसि व तत्तसल बिही मिन लअशखासि वल्मुलाज़मति अला ख़म्सीन हदीषन अल्मुअल्लकु मिन्हा सित्तुल मुकरर मिन्हा फ़ीहि व फ़ीमा मज़ा प्रमानियतुव्व पलाषून हदीषन वल्बक्रियतु ख़ालिसतुन वाफ़क़हू मुस्लिम अला जमीइहा सिवा हदीषि अबी हुरैरत. मन अख़ज़ अम्वालभ्रासि युरीदु अत्ताफ़हा व हदीषु अम्मा अहब्बु अत्र ली उहूदन ज़हबन व हदीषु ली अल्वाजिद व हदीषु इब्नि मस्कूदिन फ़िल्किराति व फ़ीहि मिन लआषारि अनिस्सहाबति व मम्बअदहू इब्ना अशर अज़न वल्लाहु आलमु. (फ़तहूल बारी) या'नी ये किताबुल इस्तिस्नास वल्मुलाज़मा पचास अह्दादीष पर मुश्तमिल है जिनमें अह्दादीषे मुअल्लका सिर्फ़ छः हैं। मुकरर अह्दादीष 38 हैं और बाकी ख़ालिस हैं। इमाम मुस्लिम ने बजुज चन्द अह्दादीष के जो यहाँ मज़कूर हैं सबमें हज़रत इमाम बुखारी (रह.) से मुवाफ़क़त की है। और इन अब्बाब में सहाबा व ताबेईन के बारह आषार मज़कूर हुए हैं।

सनद में मज़कूरा बुजुर्ग हज़रत मसरूक़ इब्नुल अज्दअ हैं जो हम्दानी और कूफी हैं। औहज़रत (ﷺ) की वफ़ात से पहले इस्लाम से मुशरफ़ हुए। सहाबा के स़दे अव्वल जैसे अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मअीन का ज़माना पाया। वे सरकर्दा इलमा और फ़क़हा में से थे। मुर्ह बिन शूरहबील ने फ़र्माया कि किसी हमदानी औरत ने मसरूक़ जैसा नेक सपूत नहीं जना।

शअबी ने फ़र्माया, अगर किसी घराने के लोग ज़जत के लिये पैदा किये गए हैं तो वो ये हैं, अस्वद, अल्क़मा और मसरूक़ा

मुहम्मद बिन मुंतशिर ने फ़र्माया कि ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह बसरा के आमिल (गवर्नर) थे। उन्होंने बतौर हदिया तीस हज़ार रुपयों की रक़म हज़रत मसरूक़ (रह.) की ख़िदमत में पेश की। ये उनके फ़कर (गरीबी) का ज़माना था। फिर भी उन्होंने उसे कुबूल करने से इंकार कर दिया।

कहा जाता है कि बचपन में उनको चुरा लिया गया था। फिर मिल गए तो उनका नाम मसरूक़ हो गया। उनसे बहुत से लोगों ने रिवायत की है। 62 हिजरी में मुक़ामे कूफ़ा में वफ़ात पाई। रहिमहुमुल्लाह रहमतु वासिअति

शहरे कूफा की बुनियाद हज्जत सअद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) ने रखी थी। उस वक़्त आपने वहाँ फ़र्माया था, तक्फू फ़ि हाज़लमौज़इ यहाँ पर जमा हो जाओ। उसी रोज़ उस शहर का नाम कूफा रखा गया। कुछ ने उसका पुराना नाम कूफ़ान बताया है। ये शहर इराक़ में बाक़ेअ (स्थित) है। एक लम्बे अर्से तक उलूम व फ़नून का मर्कज़ रहा है।

## 45. किताबुल लुक़ता

### किताब लुक़ता या 'नी गिरी-पड़ी हुई चीज़ों के बारे में अहकाम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : और जब लुक़ता का मालिक उसकी सहीह निशानी बता दे तो उसे उसके हवाले कर दे

١- بَابُ إِذَا أَخْبَرَ أَخْبَرَهُ رَبُّ  
الْلُقْطَةِ بِالْعَلَامَةِ دَفَعَ إِلَيْهِ

**तशरीह :** लफ़्ज़ लुक़ता मसदर लुक़ता है जिसके मा'नी है चुन लेना, ज़मीन पर से उठा लेना, सीना, रफ़ू करना, इतिखाब करना, बोंच से उठाना है। उसी से लफ़्ज़ मुलाक़ता और इलतिक़ात हैं। जिनके मा'नी बराबर होना है। और तलक़ूत और इलतिक़ात के मा'नी इधर-उधर से जमा करना चुनना हैं। आयाते कुआनी और अह्मदीये नबवी में ये लफ़्ज़ कई जगह इस्ते'माल हुआ है। जिनकी तशरीहात अपने-अपने मुकामात पर होंगी।

अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, (फ़िल्लुक़तति) बिज़म्मिल्लाम व फ़त्हिल्काफ़ व यजूज़ इस्कानुहा व लम्शुरू इन्दल मुहदिशीन फ़त्हुहा क़ाललअउहरी व हुल्लज़ी समिअ मिनलअरबि व अज्मअ अलैहि अहलुल्लुग़ति वल्हदीय़ि व युक़ालु लुक़ातुन बिज़म्मिल्लाम व लक़्तुन बिफ़त्हिहा बिला हाइन व हिय फ़िल्लुग़ति अशशैडल्मल्कूतु व शअन मा वुजिद मिन हक्किन जाएइन मुहतरमिन ग़ैर मुहरज़िन व ला मुम्तनिइन बिकुव्वतिही व ला यअरिफ़ुल वाजिदु मुस्तहिक्कहू व फ़िल्इल्लिक़ाति मअनलअमानति वल विलायतु मिन हैषु अन्नल मुल्तक़ित अमीनुन फ़ीमा इल्तक़तहू वशशरउ वुलातु हिफ़िज़ही कल्वली फ़ी मालित्तिफ़िल व फ़ीहि मअनलइक्तिसाबि मिन हैषु अन्नल लहुत्तमल्लुक़ बअदत्तारीफ़ि (क़स्तलानी)

मुख्तसर ये कि लफ़्ज़ लुक़ता लाम के ज़म्मा और काफ़ पर फ़त्हा के साथ है और इसको साकिन पढ़ना भी जाइज़ है मगर मुहदिशीन और लुगत वालों के यहाँ फ़त्हा के साथ ही मशहूर है अरब की जुबानों से ऐसा ही सुना गया है। लुगत में लुक़ता किसी गिरी-पड़ी चीज़ को कहते हैं। और शरीअत में ऐसी चीज़ जो पड़ी हुई पाई जाए और वो किसी भी आदमी के हक़ से मुता'ल्लिक़ हो और पाने वाला उसके मालिक को न पाए। और लफ़्ज़े इलतिक़ात में अमानत और विलायत के मअानी भी मुश्तमिल है इसलिये कि मुल्तक़ित अमीन है जो उसने पाया है और शरअन वो उस माल की हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार है जैसे बच्चे के माल की ज़िम्मेदारी होती है। और उसमें इक्तिसाब के मअानी भी हैं कि पहुँचवाने के बाद अगर उसका मालिक न मिले तो उस चीज़ में उसको हक्के मिलिक़यत प्राबित हो जाता है।

2426. हमसे आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबाने حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ،

बयान किया, (दूसरी सनद) और मुझे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उनसे गुन्दर ने, उनसे शुअबा ने, उनसे सलमा ने कि मैंने सुवैद बिन गुफला से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने उबय बिन कअब (रज़ि.) से मुलाक़ात की तो उन्होंने कहा कि मैंने सौ दीनार की एक थैली (कहीं रास्ते में पड़ी हुई) पाई। मैं उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लाया तो आपने फ़र्माया कि एक साल तक उसका ऐलान करता रह। मैंने एक साल तक उसका ऐलान किया। लेकिन मुझे कोई ऐसा शख्स नहीं मिला जो उसे पहचान सकता। इसलिये मैं फिर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आया। आप (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि एक साल तक उसका ऐलान करता रह। मैंने फिर (साल भर) ऐलान किया। लेकिन उनका मालिक मुझे नहीं मिला। तीसरी बार हाज़िर हुआ, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस थैली की बनावट, दीनार की ता'दाद और थैली के बंधन को ज़हन में महफूज़ रख। अगर उसका मालिक आ जाए (तो अलामत पूछ के) उसे वापस कर देना, वरना अपने खर्च में उसे इस्ते'माल कर ले चुनौचे में उसे अपने खर्च में लाया। (शुअबा ने बयान किया कि) फिर मैंने सलमा से उसके बाद मक्का में मुलाक़ात की तो उन्होंने कहा कि मुझे याद नहीं रसूले करीम (ﷺ) ने (हदीष में) तीन साल तक (ऐलान करने के लिये) फ़र्माया था) या सिर्फ़ एक साल के लिये। (दीगर मक़ाम : 2437)

ح وَخَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ سَمِعْتُ سُوَيْدَ بْنَ غَفْلَةَ قَالَ: لَقِيتُ أَبِي بَنَ كَعْبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: ((أَخَذْتُ صُرَّةَ فِيهَا مِائَةُ دِينَارٍ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((عَرَفْتُهَا حَوْلًا)), فَعَرَفْتُهَا حَوْلًا فَلَمْ أَجِدْ مَنْ يَعْرِفُهَا، ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَقَالَ: ((عَرَفْتُهَا حَوْلًا)), فَعَرَفْتُهَا فَلَمْ أَجِدْ، ثُمَّ أَتَيْتُهُ ثَلَاثًا فَقَالَ: ((أَحْفَظْ وَغَاءَهَا وَعَدَدَهَا وَوِكَاءَهَا، فَإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا وَإِلَّا فَاسْتَمْتِعْ بِهَا)), فَاسْتَمْتَعْتُ. فَلَقِيتُهُ بَعْدَ بِمَكَّةَ فَقَالَ: لَا أَذَرِي ثَلَاثَةَ أَحْوَالٍ أَوْ حَوْلًا وَاحِدًا)). [طرمه في : ٢٤٣٧].

**तशरीह :** रिवायत के आखिरी अल्फ़ाज़ तीन साल या एक साल के बारे में हज़रत अल्लामा कस्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, व लम यकुल अहदुन बिअत्रल्लुक्कतत तुअरफु प्रलाप्रतु अहवालिन वशशकु यूजिबु सुकूतुल मशकूकि फ़ीहि व हुवप्रलाप्रतु फ़वजबलअमलु बिल्जज़िम व हुव रिवायतुलआमिल वाहिदि अलख़ (कस्तलानी) या'नी किसी ने नहीं कहा कि लुक्ता तीन साल तक पहुँचवाया जाए। और शक से मशकूक फ़ीह खुद ही साक़ित हो जाता है जो यहाँ तीन साल है। पस पुख़्ता चीज़ पर अमल वाजिब हुआ और वो एक ही साल के लिये है। कुछ रिवायतों में भी तीन साल का ज़िक्र आया है मगर वो मज़ीद एहतियात और तवरोंअ पर मन्बी (आधारित) है।

अगर पाने वाला ग़रीब और मुहताज है तो मुकर्रर मुद्त तक ऐलान के बाद मालिक को न पाने की सूरत में उसे वो अपनी ज़रूरियात पर खर्च कर सकता है और अगर किसी मुहताज को बतौर सद्का दे दे तो और भी बेहतर होगा। इस पर सबका इतिफ़ाक़ है कि जब मालिक मिल जाए तो बहर सूरत उसे वो चीज़ वापस लौटाई जाएगी, ख़्वाह एक मुद्त तक ऐलान करते रहने के बाद उसे अपनी ज़रूरियात पर खर्च ही क्यों न कर चुका हो। अमानत व दयानत से मुता'ल्लिक इस्लाम की ये वो पाक हिदायत हैं, जिन पर सफ़ा़ तौर पर फ़ख़्र किया जा सकता है। आज भी ज़मीने ह्रम में ऐसी मिषालें देखी जा सकती हैं कि एक चीज़ लुक्ता है मगर देखने वाले हाथ तक नहीं लगाते बल्कि वो चीज़ अपनी जगह पड़ी रहती है। खुद 1389 हिजरी के हज्ज में मैंने अपनी आँखों से ऐसे वाक़ियात देखे क्योंकि ठठाने वाला सोच रहा था कि कहाँ पहुँचवाता फ़िरेगा। बेहतर है कि उसको

हाथ ही न लगाए। अल्लाह पाक आज के नौजवानों को तौफ़ीक़ दे कि वो हकाइके इस्लाम को समझकर इस्लाम जैसी नेअमत से बहरावर होने की कोशिश करें और बनी नोअे इंसान (मानव मात्र) की फ़लाह व बहबूद (कामयाबी और भलाई) के रास्ते को अपनाए।

हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) अंसारी खज़रजी हैं। ये कातिबे वहा (वहा के लिखने वाले) थे और उन छः खुशनसीब अह्दाब में से हैं जिन्होंने अहदे रिसालत ही में पूरा कुआन शरीफ़ हिफ़ज़ कर लिया था, और उन फ़ुकहा-ए-इस्लाम में से हैं, जो आपके अहदे मुबारक में फ़त्वा देने के मजाज़ (अधिकारी) थे। सहाबा में कुआन शरीफ़ के अच्छे क़ारी के तौर पर मशहूर थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको सय्यिदुल अंसार का ख़िताब बख़्शा और हज़रत उमर (रज़ि.) ने सय्यिदुल मुस्लिमीन के ख़िताब से नवाज़ा था। आपकी वफ़ात मदीना तय्यिबा ही में 19 हिजरी में वाक़ेअ हुई। आपसे क़पीर मख़लूक ने रिवायात नक़ल की हैं।

## बाब 2 : भूले-भटके ऊँट का बयान

2427. हमसे अम्र बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुरहमान बिन महदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे रबीआ ने, उनसे मुंबअिष के गुलाम यज़ीद ने, और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक देहाती हाज़िर हुआ। और रास्ते में पड़ी हुई चीज़ के उठाने के बारे में आप (ﷺ) से सवाल किया। आपने उनसे फ़र्माया कि एक साल तक उसका ऐलान करता रह। फिर उसके बर्तन की बनावट और उसके बंधन को ज़हन में रख। अगर कोई ऐसा शख़्स आए जो उसकी निशानियाँ ठीक-ठीक बता दे (तो उसे उसका माल वापस कर दे) वरना अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर। सहाबी ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ऐसी बकरी का क्या किया जाए जिसके मालिक का पता न हो? आपने फ़र्माया कि वो या तो तुम्हारी है या तुम्हारे भाई (मालिक) को मिल जाएगी या फिर भेड़िये का लुक्का बनेगी। सहाबी ने फिर पूछा और उस ऊँट का क्या किया जाए जो रास्ता भूल गया है? इस पर रसूले करीम (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया। आपने फ़र्माया, तुम्हें उससे क्या मतलब? उसके हाथ खुद उसके खुर हैं। (जिनसे वो चलेगा) उसका मशक़ीज़ा है, पानी पर वो खुद पहुँच जाएगा और पेड़ के पत्ते वो खुद खा लेगा। (राजेअ : 91)

## ٢- بَابُ ضَالَّةِ الْإِبِلِ

٢٤٢٧- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ رَبِيعَةَ قَالَ حَدَّثَنِي يَزِيدُ مَوْلَى السُّعَيْبِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((جَاءَ أَغْرَابِيُّ النَّبِيِّ ﷺ، فَسَأَلَهُ عَمَّا يَلْقِظُهُ فَقَالَ: ((عَرَفَهَا سَنَةً، ثُمَّ اخْتَفَظَ عِفَاصَهَا وَرِكَاءَهَا، فَإِنْ جَاءَ أَحَدٌ يُخْبِرُكَ بِهَا وَإِلَّا فَاسْتَنْفِئْهَا))، قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَضَالَّةُ الْقَوْمِ؟ قَالَ: ((لَكَ أَوْ لِأَخِيكَ أَوْ لِلذَّنَبِ)). قَالَ: ضَالَّةُ الْإِبِلِ؟ فَتَمَقَّرُ وَجْهَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا لَكَ وَلَهَا؟ مَعَهَا حِذَاؤُهَا وَسِقَاؤُهَا، تَرُدُّ الْمَاءَ وَتَأْكُلُ الشَّجَرَ)). [راجع: ٩١]

**तशरीह :** अरब में ऊँटों को रेगिस्तान का जहाज़ कहा जाता है। रास्तों के जानने में वो खुद माहिर हुआ करते थे, गुम होने की सूत में आमतौर पर किसी न किसी दिन खुद घर पहुँच जाते। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसा फ़र्माया। या'नी ऊँट को पकड़ने की हाज़त नहीं। उसको भेड़िये वगैरह का डर नहीं, न चारा पानी के लिये उसको चरवाहे की ज़रूरत है। वो आप पानी पर जाकर पानी पी लेता है। बल्कि आठ आठ दिन तक का पानी अपने पेट में एक वक़्त में जमा कर लेता है। कुछ ने कहा कि ये हुक़म जंगल के लिये है। अगर बस्ती में ऊँट मिले तो उसे पकड़ लेना चाहिये ताकि मुसलमान का माल ज़ाये (बर्बाद)



न हो। ऐसा न हो वो किसी चोर डाकू के हाथ लग जाए। ऊँट के हुकम में वो जानवर भी हैं जो अपनी हिफाजत आप कर सकते हैं, जैसे घोड़ा बैल वगैरह।

मुतर्जिम कहता है कि आज के हालात में जंगल और बस्ती कहीं भी अमन नहीं है। हर जगह चोर-डाकू का खतरा है, लिहाजा जहाँ भी किसी भाई का गुमशुदा ऊँट, घोड़ा नज़र आए बेहतर है कि हिफाजत के खयाल से उसे पकड़ लिया जाए और जब उसका मालिक आए तो उसके हवाले कर दे। आज अरब और अजम हर जगह चोरों और डाकूओं, लुटेरों की कपूरत (अधिकता) है। एक ऊँट उनके लिये बड़ी कीमत रखता है जबकि मामूली ऊँट की कीमत आज चार पाँच सा (आज के दौर में कम से कम आठ-दस हजार रुपये) से कम नहीं है।

अहदे रिसालत में अरब का माहौल जो था वो और था। उस माहौल के पेशे-नज़र आप (ﷺ) ने ये हुकम सादिर फ़र्माया, आज का माहौल दूसरा है। पस बेहतर है कि किसी गुमशुदा ऊँट, घोड़े वगैरह को भी पकड़कर हिफाजत के साथ रखा जाए यहाँ तक कि उसका मालिक आए और उसे ले जाए।

अल्हम्दुलिल्लाह 1390 हिजरी को का'बा शरीफ़ में इस पारे का मतन बादे फ़ज़्र यहाँ तक लफ़ज़ ब लफ़ज़ ग़ौरो-तदब्बुर के साथ इन दुआओं से पढ़ा गया कि अल्लाह पाक इस अहम ज़ख़ीरे हदीषे नबवी को समझने के लिये तौफीक बख़शे। और हर मुश्किल मुक़ाम के हल के लिये अपनी रहमत से रहनुमाई करे। और इस ख़िदमत को कुबूले आम अता करे और सारे क़द्रदान हज़रात को शफ़ाअते रसूले पाक (ﷺ) से बहरावर फ़र्माए। आमीन।

### बाब 3 : गुमशुदा बकरी के बारे में

2428. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे मुंबअिष के गुलाम यज़ीद ने, उन्होंने ज़ैद बिन ख़ालिद से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) से लुक्ता के बारे में पूछा गया। वो यक़ीन रखते थे कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उसके बर्तन की बनावट और उसके बंधन को ज़हन में रख, फिर एक साल तक उसका ऐलान करता रह। यज़ीद बयान करते हैं कि अगर उसे पहचानने वाला (इस अर्से में) न मिले तो पाने वाले को अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर लेना चाहिये। और ये उसके पास अमानत के तौर पर होगा। इस आख़िरी टुकड़े (कि उसके पास अमानत के तौर पर होगा) के बारे में मुझे मा'लूम नहीं किये रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीष है या ख़ुद उन्होंने अपनी तरफ़ से ये बात कही है। फिर पूछा, रास्ता भूली बकरी के बारे में आपका क्या इशार्द है? आपने फ़र्माया कि उसे पकड़ लो। वो या तुम्हारी होगी (जबकि असल मालिक न मिले) या तुम्हारे भाई (मालिक के पास पहुँच जाएगी, या फिर उसे भेड़िया उठा ले जाएगा। यज़ीद ने बयान किया कि उसका भी ऐलान किया जाएगा, फिर सहाबी ने पूछा, रास्ता भूले ऊँट के बारे में आपका क्या इशार्द है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि

### ۳- بَابُ ضَالَّةِ الْغَنَمِ

۲۴۲۸- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ : حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُتَمِيمِ أَنَّهُ سَمِعَ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ اللَّقْطَةِ فَرَعَمَ أَنَّهُ قَالَ : اعْرِفْ عِفَاصَهَا وَرِكَاءَهَا ثُمَّ عَرَفْهَا سَنَةً يَقُولُ يَزِيدُ : إِنْ لَمْ تُعْرِفْ اسْتَفَقْ بِهَا صَاحِبَهَا، وَكَانَ وَدِيعَةً عِنْدَهُ. قَالَ يَحْيَى : فَهَذَا الَّذِي لَا أَذْرِي أَلَى حَدِيثِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ هُوَ أَمْ شَيْءٌ مِنْ عِنْدِهِ. ثُمَّ قَالَ : كَيْفَ تَرَى لِي ضَالَّةِ الْغَنَمِ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((خَلَعًا، فَإِنَّمَا هِيَ لَكَ أَوْ لِأَخِيكَ أَوَّلَ الذَّيْبِ)) قَالَ يَزِيدُ : وَهِيَ تُعْرِفُ أَيُّضًا. ثُمَّ قَالَ : كَيْفَ تَرَى لِي ضَالَّةِ الْإِبِلِ؟ فَقَالَ : ((دَعَهَا، فَإِنْ مَنَعَهَا جِدَاءَهَا وَسِقَاءَهَا، تَرُدُّ الْمَاءَ وَتَأْكُلُ الشَّجَرَ حَتَّى يَجِدَهَا رُثَاءًا)). (راجع: ۹۱)

उसे आज़ाद रहने दो, उसके साथ खुर भी हैं और उसका मशकीज़ा भी। खुद पानी पर पहुँच जाएगा और खुद ही पेड़ के पत्ते खा लेगा और इस तरह वो अपने मालिक तक पहुँच जाएगा।

यह्दा की दूसरी रिवायत से प्राबित होता है कि ये फ़िक्र कि उसके पास अमानत के तौर पर होगा। हदीष में दाख़िल है। इसको इमाम मुस्लिम और इस्माईली ने निकाला। अमानत से मतलब ये है कि जब उसका मालिक आ जाएगा तो पाने वाले को ये माल अदा करना लाज़िम होगा। बकरी अगर मिल जाए तो उसके बारे में भी उसके मालिक को तलाश करना ज़रूरी है। जब तक मालिक न मिले पाने वाला अपने पास रखे और उसका दूध पिये क्योंकि उस पर वो खिलाने पर खर्च भी करेगा।

**बाब 4 : पकड़ी हुई चीज़ का मालिक अगर एक साल तक न मिले तो वो पाने वाले की हो जाएगी**

٤- بَابُ إِذَا لَمْ يُوجَدْ صَاحِبُ  
اللَّقْطَةِ بَعْدَ سَنَةٍ فِيهِ لِمَنْ وَجَدَهَا

**तरीह:** जुम्हूर उलमा ये कहते हैं कि मालिक होने से मुराद ये है कि उसको तसर्रुफ़ करना जाइज़ होगा। लेकिन जब मालिक आ जाए तो वो चीज़ या उसका बदल देना लाज़िम हो जाएगा। हन्फ़िया कहते हैं कि अगर पाने वाला मुहताज है, तो उसमें तसर्रुफ़ कर सकता है। अगर मालदार है तो उसको ख़ैरात कर दे। फिर अगर उसका मालिक आ जाए तो उसको इख़्तियार है कि ख़्वाह उस ख़ैरात को जाइज़ रखे ख़्वाह उससे तावान ले।

जहाँ तक ग़ौरी-फ़िक्र का ता'ल्लुक है इस्लाम ने गिरे-पड़े अम्वाल की बड़ी हिफ़ाज़त की है और उनके उठाने वालों को उसी हालत में उठाने की इजाज़त दी है कि वो खुद हज़म कर जाने की निय्यत से हर्गिज़-हर्गिज़ उनको न उठाएँ। बल्कि उनके असल मालिकों तक पहुँचाने की निय्यत से उनको उठा सकते हैं। अगर मालिक फ़ौरी तौर पर न मिल सके तो मौका ब मौका साल भर उस माल का ऐलान करते रहें। आजकल ऐलान के ज़रायेअ (स्रोत, मीडिया) बहुत वसीअ हो चुके हैं, अख़बारात और रेडियो (टीवी और इण्टरनेट) के ज़रिये से ऐलानात हर कस व नाकस तक पहुँच सकते हैं। इस तरह लगातार ऐलानात पर एक साल गुज़र जाए और कोई उसका मालिक न मिल सके तो पाने वाला अपने खर्च में उसे ले सकता है। मगर ये शर्त अब भी ज़रूरी है कि अगर किसी दिन भी उसका असल मालिक आ गया तो वो माल उसे तावान के साथ अदा करना होगा। अगर असल माल वो ख़त्म कर चुका है तो उसकी ज़िंस बिलमिस्ल अदा करनी होगी। या फिर जो भी बाज़ारी क़ीमत हो अदा करनी होगी। इन तफ़्सीलात से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि लुक़्ता के बारे में इस्लाम का क़ानूनी नज़रिया किस क़दर ठोस और कितना नफ़ा बख़्श है। काश इस्लाम के मुआनिदीन (निंदक, बुराई करने वाले) इन इस्लामी क़ानूनों को बतौर मुतालज़ा ग़ौर करें और अपने दिलों को इनाद (कपट) से पाक करके क़ल्बे सलीम (शुद्ध हृदय) के साथ सदाक़त (सच्चाई) को तस्लीम कर सकें।

2429. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान ने, उन्हें मुंबज़िअ के गुलाम यज़ीद ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से लुक़्ता के बारे में सवाल किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसके बर्तन की बनावट और उसके बंधन को ज़हन में याद रखकर एक साल तक उसका ऐलान करता रह। अगर मालिक मिल जाए (तो उसे दे दे) वरना अपनी ज़रूरत में खर्च कर। उन्होंने पूछा और अगर रास्ता भूली

٢٤٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْنَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُتَنَبِّئِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ اللَّقْطَةِ فَقَالَ : ((اعْرِفْ عِفَاقَهَا وَوَكَاةَهَا، ثُمَّ عَرَفْهَا سَنَةً، فَإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا وَإِلَّا

बकरी मिले? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो तुम्हारी होगी या तुम्हारे भाई की होगी, वरना फिर भेड़िया उसे उठा ले जाएगा। सहाबी ने पूछा, और कैंट जो रास्ता भूल जाए? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें उससे क्या मतलब? उसके साथ खुद उसका मशकीज़ा है, उसके खुर हैं। पानी पर वो खुद पहुँच जाएगा और खुद ही पेड़ के पत्ते खा लेगा। और इस तरह किसी न किसी दिन उसका मालिक उसे खुद पाएगा। (राजेअ : 91)

فَسَأَلْتُكَ بِهَا)). قَالَ: ((فَضَالَّةُ الْغَنَمِ)).  
قَالَ: ((مِنْ لَكَ أَوْ لِأَخِيكَ أَوْ لِلذَّنَبِ)).  
قَالَ: ((فَضَالَّةُ الْإِبِلِ)). قَالَ: ((مَا لَكَ وَلَهَا؟ مَعَهَا سِقَاؤُهَا وَحِذَاؤُهَا، تَرِدُ الْمَاءَ وَتَأْكُلُ الشَّجَرَ حَتَّى يَلْقَاهَا رَبُّهَا)).

[راجع: ٩١]

**तशरीह:** फइन् जाआ साहिबुहा या'नी अगर उसका मालिक आ जाए तो उसके हवाले कर दे। जैसे इमाम अहमद और तिर्मिज़ी और निसाई की एक रिवायत में इसकी सराहत है कि अगर कोई ऐसा शख्स आए जो उसकी गिनती और थैली और सर बंधन को ठीक ठीक बतला दे तो उसको दे दे। मा'लूम हुआ कि सहीह तौर पर उसे पहचान लेने वाले को वो माल दे देना चाहिये। गवाह शाहिद की कोई ज़रूरत नहीं है इस रिवायत में दो साल तक बतलाने का ज़िक्र है और आगे वाली अहदीष में सिर्फ़ एक साल तक का बयान हुआ है और तमाम इलमा ने अब उसी को इख्तियार किया है। और दो साल वाली रिवायत के हुक्म को वरअ और एहतियात पर महमूल किया। यूँ मुहताज़ हज़रात अगर सारी उम्र भी उसे अपने इस्ते'माल में न लाएँ और आखिर में चलकर बत्तौर सद्का ख़ैरात करके उसे ख़त्म कर दें तो उसे नूरून अला नूर ही कहना मुनासिब होगा।

**बाब 5 : अगर कोई समुन्दर में लकड़ी या डंडा या और कोई ऐसी ही चीज़ पाए तो क्या हुक्म है?**

٥- بَابُ إِذَا وَجَدَ خَشَبَةً فِي الْبَحْرِ أَوْ سَوَاطٍ أَوْ نَحْوَهُ

2430. और लैज़ बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुमुज़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने बनी इस्राईल के एक मर्द का ज़िक्र किया। फिर पूरी हदीष बयान की (जो उससे पहले गुजर चुकी है) कि (क़र्ज़ देने वाला) बाहर ये देखने के लिये निकला कि मुम्किन है कोई जहाज़ उसका रुपया लेकर आया हो (दरिया के किनारे जब वो पहुँचा) तो उसे एक लकड़ी मिली जिसे उसने अपने घर के ईंधन के लिये उठा लिया। लेकिन जब उसे चीरा तो उसमें से रुपया और ख़त पाया। (राजेअ : 1498)

٢٤٣٠- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ زَيْنَبَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرَيْرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلًا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ - وَمَسَاقِ الْحَدِيثِ - فَخَرَجَ يَنْظُرُ لَعَلَّ مَرَكَبًا قَدْ جَاءَ بِمَالِهِ، فَإِذَا أَحْبَبَهُ فَأَخَذَهَا لِأَهْلِهِ حَطَبًا، فَلَمَّا خَشِعَ رَجَدَ الْمَالُ وَالصَّحِيفَةُ)). [راجع: ١٤٩٨]

**तशरीह:** प्राबित हुआ कि दरिया में से ऐसी चीज़ों को उठाया जा सकता है। बाद में जो कैफ़ियत सामने आए उसके मुताबिक़ अमल किया जाना चाहिये। इस्राईली मर्द की हुस्ने निय्यत का प्रमरह (फल) था कि पाई हुई लकड़ी को चीरा तो उसे उसके अंदर अपनी अमानत की रक़म मिल गई। उसे दोनों नेक दिल इस्राईलियों की करामात ही कहना चाहिये, वरना आम हालात में ये मामला बेहद नाज़ुक है। ये भी प्राबित हुआ कि कुछ बंदगाने अल्लाह अदायगी अमानत और अहद की पासदारी का किस हद तक ख़याल रखते हैं और ये बहुत ही कम हैं।

अल्लामा क़स्तलानी रह. फ़र्माते हैं, व मौज़उत्तर्जुमति क़ौलुहू फ़अख़ज़हा व हुव मब्निव्युन अला अन्न शर्अम्मन क़ब्लुना शर्अुल्लना मालम याति फ़ी शरइना मा युख़ालिफ़ुहू ला सय्यिमा इज़ा वरद बिसूरतिष्वनाइ अला फ़ाइलिही या'नी यहाँ बाब के तर्जुमा में रावी के ये अल्फ़ाज़ हैं, फ़अख़ज़हा या'नी उसको उसने ले लिया। इसी से

बाब का मकसद साबित हुआ क्योंकि हमारे पहले वालों की शरीअत भी हमारे लिये शरीअत है। जब तक वो हमारी शरीअत के खिलाफ न हो। ख़ास तौर पर जबकि उसके फ़ाअिल (आचरण करने वालों) पर हमारी शरीअत में ता'रीफ़ की गई हो। आँहज़रत (ﷺ) ने उन दोनों इस्राईलियों की ता'रीफ़ फ़र्माई। उनका अमल इस वजह से हमारे लिये काबिले इक़तिदा (पैरवी करने योग्य) बन गया।

### बाब 6 : कोई शख़्स रास्ते में खजूर पाए?

2431. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान प्रौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअतमिर ने, उनसे तलहा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की रास्ते में एक खजूर पर नज़र पड़ी। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर इसका डर न होता कि ये सद्का की है तो मैं खुद इसे खा लेता।

(राजेअ: 2055)

2432. और यहा बिन सईद क़त्तान ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान प्रौरी ने बयान किया, कहा मुझसे मंसूर ने बयान किया, और ज़ाईदा बिन कुदामा ने भी मंसूर से बयान किया, और उनसे तलहा ने, कहा कि हमसे अनस (रज़ि.) ने हदीष बयान की (दूसरी सनद) और हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें हम्माय बिन मुनब्बा ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं अपने घर जाता हूँ, वहाँ मुझे मेरे बिस्तर पर खजूर पड़ी मिलती है। मैं उसे खाने के लिये उठा लेता हूँ। लेकिन फिर ये डर होता है कि कहीं ये सद्के की खजूर न हो तो मैं उसे फेंक देता हूँ।

आप (ﷺ) को शायद ये ख़याल आता होगा कि शायद सद्के की खजूर जिसको आप बांट चुके थे, बाहर से कपड़े में लगकर चली आई हो। इन अहदीष से ये निकला कि खाने-पीने की कम कीमत चीज़ भी अगर रास्ते में या घर में मिले तो उसका खा लेना दुरुस्त है। और आप (ﷺ) ने जो उससे परहेज़ किया उसकी वजह ये थी कि सद्का आप पर, तमाम बनी हाशिम पर ह़राम था। ये भी मा'लूम हुआ कि ऐसी हज़ीर छोटी चीज़ों के लिये मालिक का ढूँढना और उसका ऐलान कराना ज़रूरी नहीं है।

### बाब 7 : अहले मक्का के लुक़्ता का क्या हुक़म है?

### ٧- بَابُ كَيْفَ تُعْرَفُ لُقْطَةُ أَهْلِ مَكَّةَ؟

मक्का के लुक़्ता में इख़ितलाफ़ है। कुछ ने कहा मक्का का लुक़्ता ही उठाना मना है। कुछ ने कहा कि उठाना तो जाइज़ है लेकिन एक साल के बाद भी पाने वाले को मिल्क नहीं बनता और जुम्हूर मालिकिया और कुछ शाफ़िइया का क़ौल ये है कि मक्का का

### ٦- بَابُ إِذَا وَجَدَ تَمْرَةً فِي الطَّرِيقِ

٢٤٣١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ طَلْحَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِتَمْرَةٍ فِي الطَّرِيقِ قَالَ: «لَوْ لَا أَنِّي أَخَافُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الصَّدَقَةِ لَأَكَلْتُهَا».

[راجع: ٢٠٥٥]

٢٤٣٢- وَقَالَ يَحْيَى: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ. وَقَالَ زَائِدَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ طَلْحَةَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ. ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «إِنِّي لَأَنْقَلِبُ إِلَى أَهْلِي، فَأَجِدُ التَّمْرَةَ سَاقِطَةً عَلَى لِوَاشِيٍّ فَأَرْفَعُهَا لَأَكَلُهَا، ثُمَّ أَغْتَنِي أَنْ تَكُونَ صَدَقَةً فَأَلْفِيهَا».

लुक्ता भी दूसरे मुल्कों की तरह ही है। हाफिज़ ने कहा, शायद इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद ये है कि मक्का का लुक्ता भी उठाना जाइज़ है और ये बाब लाकर उन्होंने उस रिवायत के जुअफ़ की तरफ़ इशारा किया जिसमें ये है कि हाजियों की पड़ी हुई चीज़ उठाना मना है। (वहीदी)

और त्ताउस ने कहा, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मक्का के लुक्ता को सिर्फ़ वही शख्स उठाए जो ऐलान कर ले, और ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मक्का के लुक्ता को उठाना सिर्फ़ उसके लिये जाइज़ है जो उसका ऐलान भी करे।

2433. और अहमद बिन सअद ने कहा, उनसे रौह ने बयान किया, उनसे ज़करिया ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मक्का के पेड़न काटे जाएँ, वहाँ के शिकार न छेड़े जाएँ, और वहाँ के लुक्ता को सिर्फ़ वही उठाए जो ऐलान करे, और उसकी घास न काटी जाए। हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इज़्रर की इजाज़त दे दीजिए चुनौचे औहज़रत (ﷺ) ने इज़्रर की इजाज़त दे दी।

(राजेअ: 1349)

وَقَالَ طَاوُسٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يُلْغَطُ لُقُطَتُهَا إِلَّا مَنْ عَرَفَهَا)). وَقَالَ خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تَلْغُطُهَا إِلَّا مَعْرُوفٌ)).

٢٤٣٣- وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَاءُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يُمْضَدُ عِصَاهُهَا، وَلَا يُنْفَرُ صَيْدُهَا، وَلَا تَجُلُ لُقُطَتُهَا إِلَّا لِمُسْنَدٍ، وَلَا يُخْتَلَى خِلَافًا. فَقَالَ عَبَّاسٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلَّا الْإِذْخِرَ. فَقَالَ: إِلَّا الْإِذْخِرَ)).

[راجع: ١٣٤٩]

बाब का मक़सद ये है कि लुक्ता के बारे में मक्का शरीफ़ और दूसरे मुकामात में कोई फ़र्क़ नहीं है।

2434. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, उनसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी क़बीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबु हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि जब अल्लाह तआला ने रसूले करीम (ﷺ) को मक्का फ़तह करा दिया, तो आप (ﷺ) लोगों के सामने खड़े हुए और अल्लाह तआला की हम्दो-प्रना के बाद फ़र्माया अल्लाह तआला ने हाथियों के लश्कर को मक्का से रोक दिया था, लेकिन अपने रसूल और मुसलमानों को उसे फ़तह करा दिया। देखो! ये मक्का मुझसे पहले किसी के लिये हलाल नहीं हुआ था (या'नी वहाँ लड़ना) और मेरे लिये भी सिर्फ़ दिन के थोड़े हिस्से में दुरुस्त हुआ। अब मेरे बाद किसी के लिये

٢٤٣٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مَكَّةَ، قَامَ لِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللَّهُ وَأَثَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ حَبَسَ عَنْ مَكَّةَ الْفِيلَ وَاسَلَّمَ عَلَيْهَا رَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ، فَإِنَّهَا لَا تَجُلُ لِأَحَدٍ كَانَ قَبْلِي، وَإِنَّهَا أَحَلَّتْ لِي

हलाल नहीं होगा। पस इसके शिकार न छेड़े जाएँ और न उसके कांटे काटे जाएँ। यहाँ तक कि गिरी-पड़ी चीज़ सिर्फ उसी के लिये हलाल होगी जो उसका ऐलान करे। जिसका कोई आदमी क़त्ल किया गया हो उसे दो बातों का इख़्तियार है। या (क्रातिल से) फ़िदया (माल) ले ले, या जान के बदले जान ले। हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इज़्रर काटने की इजाज़त हो क्योंकि हम उसे अपनी क़ब्रों पर और घरों में इस्ते'माल करते हैं तो आपने फ़र्माया कि अच्छा इज़्रर काटने की इजाज़त है। फिर यमन के एक सहाबी अबू शाह ने खड़े होकर कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे लिये ये खुत्बा लिखवा दीजिए। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा को हुक्म दिया कि अबू शाह के लिये ये खुत्बा लिख दो। मैंने इमाम औज़ाई से पूछा कि उससे क्या मुराद है कि मेरे लिये इसे लिखवा दीजिए, तो उन्होंने कहा कि वही खुत्बा मुराद है जो उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से (मक्का में) सुना था।

سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، وَإِنَّهَا لَا تَحِلُّ لِأَخِي  
بَغْدِي، فَلَا يُقَرُّ صِيْدُهَا، وَلَا يُخْتَلَى  
شَوْكُهَا، وَلَا تَحِلُّ سَاقِطُهَا إِلَّا لِمُسْتَبِدٍّ.  
وَمَنْ قُتِلَ لَهُ قَتِيلٌ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ : إِمَّا  
أَنْ يُفْدَى، وَإِمَّا أَنْ يُقَيَّدَ)). فَقَالَ الْعَبَّاسُ :  
إِلَّا الْإِذْخِرَ، فَإِنَّا نَجْعَلُهُ لِقُبُورِنَا وَبُيُوتِنَا.  
فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِلَّا الْإِذْخِرَ)).  
فَقَامَ أَبُو شَاهٍ - رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ -  
فَقَالَ اكْتُبُوا لِي يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((اَكْتُبُوا لِأَبِي شَاهٍ)).  
قُلْتُ لِلْأَوْزَاعِيِّ: مَا قَوْلُهُ اكْتُبُوا لِي يَا  
رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: هَذِهِ الْخُطْبَةُ الَّتِي  
سَمِعَهَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ)).

रिवायत में हाथी वालों से मुराद अबरहा है जो खान-ए-काबा को ढहाने के लिये हाथियों की फ़ौज लेकर आया था। जिसका सूरह अलम तरा कयफ़ अलख़ में ज़िक्र है। इस हदीष से अहदे नबवी में किताबत का भी पुबूत मिलता है जो मुकिरीने हदीष की हफ़्वाते बातिला (झूठे हथकण्डों) की तर्दीद के लिये काफ़ी वाफ़ी है।

### बाब 8 : किसी जानवर का दूध उसके मालिक की इजाज़त के बग़ैर न दुहा जाए

2435. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी नाफ़ेअ से और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शख़्स किसी दूसरे के दूध के जानवर को मालिक की इजाज़त के बग़ैर न दूहे। क्या कोई शख़्स ये पसन्द करेगा कि एक ग़ैर शख़्स उसके गोदाम में पहुँचकर उसका ज़ख़ीरा खोले और वहाँ से उसका अनाज चुरा जाए? लोगों के मवेशी के थन भी उनके लिये खाना या'नी (दूध के) गोदाम हैं। इसलिये उन्हें भी मालिक की इजाज़त के बग़ैर नहीं दुहा जाए।

### ٨ - بَابُ لَا تُخْتَلَبُ مَاشِيَةٌ أَحَدٍ بِغَيْرِ إِذْنٍ

٢٤٣٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ  
أَحْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ  
عَمْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ  
قَالَ: ((لَا يُخْتَلَبُ أَحَدٌ مَاشِيَةً أُخْرَى بِغَيْرِ  
إِذْنِهِ، أَلَيْحَبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تُوْزِيَ مَشْرَبَتُهُ  
فَتُكْسَرَ حِرْزَانَتُهُ فَيَسْقَلَ طَعَامُهُ؟ فَإِنَّمَا تَخْرُجُ  
لَهُمْ ضُرُوعٌ مَوَاشِيَهُمْ أَطْعَمَائِهِمْ، فَلَا  
يُخْتَلَبُ أَحَدٌ مَاشِيَةً أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِهِ)).

इज्तिरारी (भूख की) हालत में अगर जंगल में कोई रेवड़ मिल जाए और मुज्तर (परेशानहाल) अपनी जान से परेशान हो और भूख और प्यास से क़रीबुल मर्ग (मौत के क़रीब) हो तो वो इस हालत में मालिक की इजाज़त के बग़ैर भी उस रेवड़ में से किसी

जानवर का दूध निकालकर अपनी जान बचा सकता है। ये मजूमन दूसरी जगह बयान हुआ है।

**बाब 9 : पड़ी हुई चीज का मालिक अगर एक साल बाद आए तो उसे उसका माल वापस कर दे क्योंकि पाने वाले के पास वो अमानत है**

٩- بَابُ إِذَا جَاءَ صَاحِبُ اللَّقْطَةِ  
بَعْدَ سَنَةٍ رَدَّهَا عَلَيْهِ، لِأَنَّهَا وَدِيعَةٌ  
عِنْدَهُ

2436. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फर ने बयान किया, उनसे रबी'आ बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे मुंबा'अिष के गुलाम यजीद ने, और उनसे जैद बिन खालिद जुहनी (रजि.) ने कि एक शख्स ने रसूलुलकरीम (ﷺ) से लुब्ना के बारे में पूछा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक साल तक उसका ऐलान करते रहो। फिर उसके बंधन और बर्तन की बनावट को ज़हन में रख और उसे अपनी ज़रूरियात में खर्च कर। उसका मालिक अगर उसके बाद आए तो उसे वापस कर दे। सहाबा (रजि.) ने पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! रास्ता भूली बकरी का क्या किया जाए? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे पकड़ लो, क्योंकि वो तुम्हारी होगी या तुम्हारे भाई की होगी या फिर भेड़िये की होगी। सहाबा ने पूछा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! रास्ता भूले हुए ऊँट का क्या किया जाए? आप इस पर गुस्सा हो गए और चेहरा—मुबारक सुर्ख हो गया (या रावी ने वजन्ताहू के बजाय) अहमर वजुहू कहा, फिर आपने फ़र्माया, तुम्हें उससे क्या मतलब? उसके साथ खुद उसके खुर और उसका मशकीज़ा है। इसी तरह उसे उसका असल मालिक मिल जाएगा। (राजेअ: 91)

٢٤٣٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُتَنَبِّئِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: (رَأَى رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنِ اللَّقْطَةِ قَالَ: «عَرَفْتُهَا سَنَةً ثُمَّ اعْرِفْ وَكَأَمَّا وَعِصَاصُهَا، ثُمَّ اسْتَفِقْ بِهَا، فَإِنْ جَاءَ رَبُّهَا فَأَدِّهَا إِلَيْهِ».) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لِمَ لَهَا الْقَسَمُ؟ قَالَ: «رَدَّهَا، لِأَنَّهَا هِيَ لَكَ أَوْ لِأَخِيكَ أَوْ لِلذَّئِبِ».) قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لِمَ لَهَا قَسَمُ الْإِبِلِ؟ قَالَ: لِقَضَبِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، حَتَّى احْمَرَّتْ وَجَنَتَا - أَوْ احْمَرَّتْ وَجْهُهُ - ثُمَّ قَالَ: «مَا لَكَ وَلَهَا؟ مَعَهَا جِلْدُهَا وَسِقَاؤُهَا حَتَّى يَلْقَاهَا رَبُّهَا».) [راجع: ٩١]

**बाब 10 : पड़ी हुई चीज का उठा लेना बेहतर है ऐसा न हो वो खराब हो जाए या कोई गैर मुस्तहिक उसको ले भागे**

١٠- بَابُ هَلْ يَأْخُذُ اللَّقْطَةُ وَلَا  
يَدْعُهَا تَصِيغٌ حَتَّى لَا يَأْخُذَهَا مَنْ لَا  
يَسْتَحِقُّ؟

माल की हिफाज़त के पेशेनज़र ऐसा करना ज़रूरी है वरना कोई नाअहल (अयोम्य) उठा ले जाएगा और वो उसे हज़म कर बैठेगा। मजूमने हदीष से ये निकला कि थैली के उठा लेने वाले शख्स पर ओहज़रत (ﷺ) ने इन्हारे खप्पी (नाराज़गी का प्रदर्शन) नहीं फ़र्माया बल्कि उसे ये हिदायत हुई कि उसका साल भर ऐलान करते रहो। अगर वो चीज़ कोई ज़्यादा कीमती नहीं है तो उसके बारे में अहमद, अबू दाऊद में हज़रत जाबिर (रजि.) से मरवी है, क़ाल ख़ख़स लना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़िल्असाइ वस्सौति वलहब्लि व अश्बाहिही यलत्कि तुहर्ज़ुलु यन्तफ़िउ बिही (खाहु अहमद व अबू दाऊद) या'नी ओहज़रत

(ﷺ) ने हमको लकड़ी डंडे और रस्सी और इस किस्म की मामूली चीजों के बारे में रखसत अत्रा की है जिनको इंसान पड़ा हुआ पाए, उनसे नफ़ा उठाए। इस पर इमाम शौकानी (रह.) फ़रमाते हैं, फ़ीहि दलीलुन अला जवाज़िल इन्तिफ़ाड़ बिमा यूजदु फ़ितरकाति मिनल्मुहकराति व ला युहताजु इलत्तअरीफ़ि व क़ील अन्नहू यजिबुत्तअरीफ़ बिहा प्रलाप्रत अय्याम लिमा अख़रजहू अहमद वत्तबानी खल्बैहक़ी वल्जूजजानि (नैलुल औतार) या 'नो उसमें दलील है कि हकीर चीज़ें जो रास्ते में पड़ी हुई मिलें उनसे नफ़ा उठाना जाइज़ है। उनके लिये ऐलान की ज़रूरत नहीं, और ये भी कहा गया कि तीन दिन तक ऐलान करना वाजिब है। अहमद और तबरांनी और बैहक़ी और जूजजानी में ऐसा मन्कूल (वर्णित) है।

2437. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सलमा बिन कुहैल ने बयान किया कि मैंने सुवैद बिन ग़फ़ला से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं सलमाना बिन रबीआ और ज़ैद बिन सौहान के साथ एक जिहाद में शरीक था। मैंने एक कोड़ा पाया (और उसको उठा लिया) दोनों में से एक ने मुझसे कहा कि उसे फेंक दे। मैंने कहा कि मुस्क़िन है मुझे उसका मालिक मिल जाए (तो उसको दे दूँ) वरना ख़ुद उससे नफ़ा उठाऊँगा। जिहाद से वापस होने के बाद हमने हज़्ज किया। जब मैं मदीने में गया तो मैंने उबय बिन कअब (रज़ि.) से उसके बारे में पूछा, उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मुझको एक थैली मिल गई थी, जिसमें सौ दीनार थे। मैं उसे लेकर अहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में गया। आपने फ़र्माया कि एक साल तक उसका ऐलान करता रह, मैंने एक साल तक उसका ऐलान किया, और फिर हाज़िर हुआ। (कि मालिक अभी तक नहीं मिला) आपने फ़र्माया कि एक साल तक और ऐलान करता रह, मैंने एक साल तक उसका फिर ऐलान किया, और हाज़िरे ख़िदमत हुआ। इस बार भी आपने फ़र्माया कि एक साल तक उसका फिर ऐलान कर, मैंने फिर एक साल तक ऐलान किया और जब चौथी बार हाज़िर हुआ तो आपने फ़र्माया कि रक़म के अदद, थैली का बंधन, और उसकी साख़्त (बनावट) को ख़याल में रख, अगर उसका मालिक मिल जाए तो उसे दे देना वरना उसे अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर। हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे बाप ने ख़बर दी शुअबा से और उन्हें सलमा ने यही हदीष, शुअबा ने बयान किया कि फिर उसके बाद मैं मक्का में सलमा से मिला, तो उन्होंने कहा कि मुझे ख़याल नहीं, (इस हदीष में सुवैद ने) तीन साल तक बतलाने का ज़िक्र किया या एक साल का। (राजेअ: 2426)

٢٤٣٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كَهْمَلٍ قَالَ : سَمِعْتُ سُوَيْدَ بْنَ غَفْلَةَ قَالَ : (( كُنْتُ مَعَ سَلْمَانَ بْنِ رَبِيعَةَ وَزَيْدِ بْنِ صَوْحَانَ فِي غَزَاةٍ، فَوَجَدْتُ سَوْطًا، فَقَالَ لِي: اَللّٰهُ، قُلْتُ: لَا، وَلَكِنْ اِنْ وَجَدْتُ صَاحِبَهُ وَاِلَّا اسْتَمْتَعْتُ بِهِ. فَلَمَّا رَجَعْنَا حَجَجْنَا، فَمَرَرْتُ بِالْمَدِينَةِ، فَسَأَلْتُ اَبِيَّ بْنَ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: وَجَدْتُ صَوْفَةً عَلٰى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْهَا مِائَةُ دِينَارٍ، فَاتَيْتُ بِهَا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((عَرَفْتُهَا حَوْلًا))، فَعَرَفْتُهَا حَوْلًا. ثُمَّ اَتَيْتُ فَقَالَ: ((عَرَفْتُهَا حَوْلًا))، فَعَرَفْتُهَا حَوْلًا. ثُمَّ اَتَيْتُهُ فَقَالَ: ((عَرَفْتُهَا حَوْلًا))، فَعَرَفْتُهَا حَوْلًا. ثُمَّ اَتَيْتُهُ الرَّابِعَةَ فَقَالَ: ((اعْرِفْ عِدَّتَهَا وَوُكَّاءَهَا وَوِغَاءَهَا، لِإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا، وَإِلَّا اسْتَمْتَعْ بِهَا)). حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَلَمَةَ بِهَذَا، قَالَ: ((فَلَقِيْتُهُ بَعْدَ بَمَكَّةَ فَقَالَ: لَا أَذْرِيْ أَلَاةَ أَسْوَالٍ أَوْ حَوْلًا وَاحِدًا)).



मा'लूम हुआ कि नेक निय्यती के साथ किसी पड़ी हुई चीज़ को उठा लेना ही ज़रूरी है ताकि वो किसी ग़लत आदमी के हवाले न हो जाए। उठा लेने के बाद बयान की गई हदीष की रोशनी में अमल दरआमद करना ज़रूरी है।

## बाब 11 : लुक़्ता को बतलाना लेकिन हाकिम के सुपुर्दन करना

## ۱۱- بَابُ مَنْ عَرَفَ اللَّقْطَةَ وَلَمْ يَذْفَعْهَا إِلَى السُّلْطَانِ

इस बाब से इमाम औज़ाई के कौल का रद्द करना मकसूद (लक्षित) है। उन्होंने कहा कि अगर लुक़्ता बेशक़ीमती हो तो बैतुल माल में दाख़िल कर दे।

2438. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ब्रौरी ने बयान किया रबीआ से, उनसे मुबज़िअ के गुलाम यज़ीद ने, और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कहा कि एक देहाती ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से लुक़्ता के बारे में पूछा, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक साल तक ऐलान करता रह, अगर कोई शख़्स आ जाए जो उसकी बनावट और बंधन के बारे में सहीह बतਾए, (तो उसे दे दे) वरना अपने ज़रूरियात में उसे ख़र्च कर। उन्होंने जब ऐसे ऊँट के बारे में पूछा, जो रास्ता भूल चुका हो तो आपके चेहरे मुबारक का रंग बदल गया। और आपने फ़र्माया कि तुम्हें उससे क्या मतलब? उसके साथ उसका मशकीज़ा और उसके खुर मौजूद हैं। वो ख़ुद पानी तक पहुँच सकता है और पेड़ के पत्ते खा सकता है और इस तरह वो अपने मालिक तक पहुँच सकता है। उन्होंने रास्ते भूली हुई बकरी के बारे में पूछा, तो आपने फ़र्माया कि या वो तुम्हारी होगी, या तुम्हारे भाई की (असल मालिक) को मिल जाएगी, वरना भेड़िया उसे उठा ले जाएगा।

(राजेअ: 91)

۲۴۳۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ رَبِيعَةَ عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُتَمِيمِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ أَعْرَابِيًّا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ اللَّقْطَةِ، قَالَ: عَرَفَهَا سَنَةً، فَإِنْ جَاءَ أَحَدٌ بِعَرْلَةٍ بِعَاصِمِهَا وَوِكَائِهَا وَإِلَّا فَاسْتَيْقِنَ بِهَا. وَسَأَلَهُ عَنْ ضَالَّةِ الْإِبِلِ لَقَمَتْ وَجْهَهُ وَقَالَ: مَا لَكَ وَلَهَا؟ مَعَهَا سِقَاؤُهَا وَحِدَاؤُهَا، تَرُدُّ الْمَاءَ وَتَأْكُلُ الشَّجَرَ، ذَهَبًا حَتَّى يَجِدَهَا رُثْمًا. وَسَأَلَهُ عَنْ ضَالَّةِ الْقَتَمِ فَقَالَ: هِيَ لَكَ، أَوْ لِأَخِيكَ، أَوْ لِلنَّسَبِ. [راجع: ۹۱]

## बाब 12 :

## ۱۲- بَابُ

**तशरीह:** इस बाब में कोई तर्जुमा मज़कूर नहीं है। गोया पहले बाब ही से मुता'ल्लिक है, इस हदीष की मुनासबत बाबुल लुक़्ता से ये है कि जंगल में उस दूध का पीने वाला कोई न था, तो वो भी पड़ी हुई चीज़ के मिज़ल हुआ। और चरवाहा चाहे मौजूद था, मगर ये दूध उसकी ज़रूरत से ज़ाइद (अतिरिक्त) था।

कुछ ने कहा मुनासबत ये है कि अगर लुक़्ता में कोई कम क़ीमत खाने-पीने की चीज़ मिल जाए तो उसका खा पी लेना दुरुस्त है जैसे ऊपर खजूर की हदीष गुज़री, और ये दूध भी। जब उसका मालिक वहाँ मौजूद न था लेकिन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उसको लिया और इस्ते'माल किया। उसे खजूर पर क़यास किया गया है। भले ही चरवाहा मौजूद था, मगर वो दूध

का मालिक न था इस वजह से गोया उसका वजूद और अदम (न होने के) बराबर हुआ और वो दूध लुक्ता के समान के ठहरा, वल्लाहु आलम। (वहीदी)

इन्ने माजा में सहीह सनद के साथ अबू सईद से मरवी है, इज़ा अतैत अला राइन फ़नादहू बलाष मरतिन फ़इन अजाबक व इल्ला फ़शरब मिन गैरि अन तुफ़्मिद व इज़ा अतैत अला हायति बुस्तानिन फ़नादहू बलाष मरतिन फ़इन अजाबक व इल्ला फ़कुल मिन गैरि अन तुफ़्मिद या'नी जब तुम किसी रेवड़ पर आओ तो उसके चरवाहे को तीन दफ़ा पुकारो, वो कुछ भी जवाब न दे तो उसका दूध पी सकते हो। मगर नुक्सान पहुँचाने का ख़याल न हो। इसी तरह बाग़ का हुक्म है। तहावी ने कहा कि इन अह्लादीष का ता'ल्लुक उस अहद से है जबकि मुसाफ़िर् की ज़ियाफ़त का हुक्म बतौर वजूब था। जब वजूब मन्सूख हुआ तो इन अह्लादीष के अहकाम भी मन्सूख हो गए।

2439. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमको नज़र ने ख़बर दी, कहा कि हमको इम्राईल ने ख़बर दी अबू इस्हाक़ से कि मुझे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) से ख़बर दी (दूसरी सनद) हमसे अब्दुल्लाह बिन रज़ाअ ने बयान किया, कहा कि हमसे इम्राईल ने बयान किया अबू इस्हाक़ से, और उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) से कि (हिज्रत करके मदीना जाते वक़्त) मैंने तलाश किया तो मुझे एक चरवाहा मिला जो अपनी बकरियाँ चरा रहा था। मैंने उससे पूछा कि तुम किसके चरवाहे हो? उसने कहा कि कु़रैश के एक शख्स का। उसने कु़रैशी का नाम भी बताया जिसे मैं जानता था। मैंने उससे पूछा, क्या तुम्हारे रेवड़ की बकरियों में कुछ दूध भी है? उसने कहा कि हाँ! मैंने उससे कहा, क्या तुम मेरे लिये दूध दूह लोगे? उसने कहा, हाँ ज़रूर! चुनौचे मैंने उससे दूहने के लिये कहा। वो अपने रेवड़ से एक बकरी पकड़ लाया। फिर मैंने उससे बकरी का थन गर्दोंगुबार से साफ़ करने के लिये कहा। फिर मैंने उससे अपना हाथ साफ़ करने के लिये कहा। उसने वैसा ही किया। एक हाथ को दूसरे पर मारकर साफ़ कर लिया और एक प्याला दूध दूहा। रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये मैंने एक बर्तन साथ लिया था। जिसके मुँह पर कपड़ा बंधा हुआ था। मैंने पानी दूध पर बहाया। जिससे उसका निचला हिस्सा ठण्डा हो गया। फिर दूध लेकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ किया कि दूध हाज़िर है, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! पी लीजिए। आपने उसे पिया, यहाँ तक कि मैं खुश हो गया।

(दीगर मक़ाम : 3615, 3652, 3908, 3917, 5607)

۲۴۳۹ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا النَّضْرُ قَالَ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْبَرَاءُ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ح. حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ الْبَرَاءِ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَنْطَلَقْتُ فَإِذَا أَنَا بِرَاعِي غَنَمٍ يَسُوقُ غَنَمَهُ فَقُلْتُ: لِمَنْ أَنْتَ؟ قَالَ: لِرَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ - فَسَمَّاهُ فَعَرَفْتُهُ - فَقُلْتُ: مَنْ فِي غَنَمِكَ مِنْ نَبِيٍّ؟ فَقَالَ: نَعَمْ. فَقُلْتُ: هَلْ أَنْتَ حَالِبٌ لِي؟ قَالَ نَعَمْ، فَأَمَرْتُهُ أَنْ يَغْتَلَّ شَاةٌ مِنْ غَنَمِهِ، ثُمَّ أَمَرْتُهُ أَنْ يَنْفُضَ ضَرْعَهَا. مِنَ الْغَبَارِ، ثُمَّ أَمَرْتُهُ أَنْ يَنْفُضَ كَفَّيْهِ فَقَالَ هَكَذَا - ضَرْبَ إِحْدَى كَفَّيْهِ بِالْأُخْرَى - فَحَلَبَ كُتْبَةً مِنْ لَبَنٍ، وَلَقَدْ جَعَلْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِذَاوَةً، عَلَى فَمِهَا خِرْقَةٌ، فَصَبَّيْتُ عَلَى اللَّبَنِ حَتَّى يَرَوَ أَمْتَلُهُ، فَانْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيتُ)).

[أطرافه ۳: ۳۶۱۵، ۳۶۵۲، ۳۹-۸]

**तशीह:** इस बाब के लाने से गुर्ज ये है कि इस सिलसिले में लोगों का इख्तिलाफ है। कुछ ने ये कहा कि अगर कोई शख्स किसी बाग पर से गुजरे या जानवरों के गले पर से तो बाग का फल या जानवर का दूध खा पी सकता है, भले ही मालिक से इजाजत न ले, मगर जुम्हूर इलमा उसके खिलाफ हैं। वो कहते हैं कि बिना ज़रूरत ऐसा करना जाइज़ नहीं और ज़रूरत के वक़्त अगर कर गुजरे तो मालिक को तावान दे। इमाम अहमद ने कहा अगर बाग पर हिस्सा न हो तो तर मेवा खा सकता है गो ज़रूरत न हो। एक रिवायत ये है कि जब उसकी ज़रूरत और एहतियाज हो। लेकिन दोनों हालातों में उस पर तावान न होगा और दलील उनकी इमाम बेहकी की हदीष है इब्ने उमर (रज़ि.) से मफूअन जब तुममें से कोई शख्स किसी बाग पर से गुजरे तो खा ले लेकिन जमा करके न ले जाए।

खुलफ़ा ये है कि आजकल के हालात में बग़ैर इजाजत किसी भी बाग का फल खाना दुरुस्त नहीं ख़्वाह हाज़त हो या न हो। इसी तरह किसी जानवर का दूध निकाल कर अज़ख़ुद पी लेना और मालिक से इजाजत न लेना, ये भी इस दौर में ठीक नहीं है। किसी शख्स की इज़्तिरारी हालत हो, वो प्यास और भूख से क़रीबुल मर्ग हो और इस हालत में वो किसी बाग पर से गुजरे या किसी रेवड़ पर से, तो उसके लिये ऐसी मजबूरी में इजाजत दी गई है। ये भी शर्त है कि बाद में मालिक तावान तलब करे तो उसे देना चाहिये।

## 46. किताबुल मज़ालिम वल ग़सब

### किताब लोगों पर जुल्म करने और माल ग़सब करने के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**तशीह:** लफ़्ज़ मज़ालिम, जुल्म की जमा (बहुवचन) है जिसके मा'नी हैं लोगों पर नाहक ज़्यादती करना, और ये भी कि नाहक किसी का माल मार लेना और ग़सब कर लेने के मा'नी किसी का माल नाहक तौर पर हज़म कर लेने के हैं।

हज़रत मुज्ताहिदे मुत्लक इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी उस्लूब के मुताबिक मज़ालिम और ग़सब की बुराई में आयाते कुआनी को नक़ल किया, जिनका मज़मून ज़ाहिर है कि ज़ालिमों का अंजाम दुनिया और आख़िरत में बहुत बुरा होने वाला है। आयाते शरीफ़ा का हिस्सा, व इन कान मकरहुम लितज़ू ला यिन्हुल जिबाल और अल्लाह के पास ज़ालिम काफ़ि़रों का मकर (फ़रेब) लिखा हुआ है, उसके सामने कुछ नहीं चलेगी। भले ही उनकी चालबाज़ी से दुनिया में पहाड़ सरक जाएँ। कुछ ने कहा कि इसका तर्जुमा यूँ किया है। मकर से कहीं पहाड़ भी सरक सकते हैं। या'नी अल्लाह की शरीअत पहाड़ की तरह जमी हुई और

मजबूत है। इनके मकर व फरेब से वो उखड़ नहीं सकती। इस आयत को लाकर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये प्राबित किया है कि पराया माल छीन लेना और डकार लेना जुल्म और ग़सब है जो अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है क्योंकि उसका रिश्ता हुक्कुल इबाद के साथ है।

### बाब

### باب وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

और अल्लाह तआला ने सूरह इब्राहीम में फ़र्माया, और ज़ालिमों के कामों से अल्लाह तआला को ग़ाफ़िल न समझो। और अल्लाह तआला तो उन्हें सिर्फ़ एक ऐसे दिन के लिये मुहलत दे रहा है जिसमें ओंखें पथरा जाएगी। और वो सर ऊपर को उठाए भागे जा रहे होंगे। मुक्निज़ और मुक्मिहू दोनों के मा'नी एक ही हैं। मुजाहिद ने फ़र्माया कि मुहतिईन के मा'नी बराबर नज़र डालने वाले हैं और ये भी कहा गया है कि मुहतिईन के मा'नी जल्दी भागने वाले, उनकी निगाह उनके खुद की तरफ़ न लौटेगी। और दिलों के छके छूट जाएंगे कि अक्ल बिलकुल नहीं रहेगी और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! लोगों को उस दिन से डराओ जिस दिन उन पर अज़ाब आ उतरेगा, जो लोग जुल्म कर चुके हैं वो कहेंगे कि ऐ हमारे रब! (अज़ाब को) कुछ दिनों के लिये हमसे और मुअख़्ख़र (बिलम्ब) कर दे, तो अबकी बार हम तेरा हुक्म सुन लेंगे और तेरे अंबिया की ताबेदारी करेंगे। जवाब मिलेगा क्या तुमने पहले ये क़सम न ली थी कि तुम पर कभी अदबार नहीं आएगा? और तुम उन क़ौमों की बस्तियों में रह चुके हो जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था। और तुम पर ये भी ज़ाहिर हो चुका था कि मैंने उनके साथ क्या मामला किया। हमने तुम्हारे लिये मित्रालें भी बयान कर दी हैं। उन्होंने बुरे मकर इख़्तियार किये और अल्लाह के यहाँ उनके ये बदतरीन मकर लिख लिये गए। अगरचे उनके मकर ऐसे थे कि उनसे पहाड़ भी हिल जाते (मगर वो सब बेकार प्राबित हुए) पस अल्लाह के बारे में हर्गिज़ ये ख़याल न करना कि वो अपने अंबिया से किये हुए वादों के ख़िलाफ़ करेगा, बिला शुब्हा अल्लाह ग़ालिब और बदला लेने वाला है। (सूरह इब्राहीम : 46)

﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا تَعْمَلُ الْظَالِمُونَ، إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ يَوْمَ تَشُحُّ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ، فَهُمْ فِي مَقْبَعٍ مُّقْبِعٍ رَّؤُوسِهِمْ﴾: الْمُنْفِقُ وَالْمُفْطِحُ وَاحِدٌ. [سورة إبراهيم 43: 42, 41: 42]

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿مُهْطِعِينَ﴾ مُدْبِعِي النَّظَرِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: مُسْرِعِينَ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرَفُهُمْ. ﴿وَأَلْبَسْتُهُمْ حُورًا﴾: يَعْنِي حُورًا لَا عَقُولَ لَهُمْ.

﴿وَأَلْبَسَ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ الْقُبُورَ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرَجْنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ نَجِبًا يَخَوُّنَكَ وَتَتَّبِعُ الرُّسُلَ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَتَقَنُّ مِنْ قَبْلِ مَا لَكُم مِّنْ ذُوالِ. وَكَانَتْ لِي مَسَاجِدَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ. وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمْ الْأَمْثَالَ. وَقَدْ مَكَرُوا مَكَرُهُمْ، وَحَسِبَ اللَّهُ مَكَرُهُمْ، وَإِنْ كَانَ مَكَرُهُمْ يُفْزَؤُنَ مِنَّا الْجَبَالَ. فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخَلِّفًا وَعْدِهِ وَرُسُلَهُ، إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ﴾. [إبراهيم : 46]

**तशरीह :** ज़ालिमों के बारे में इन आयत में जो कुछ कहा गया है वो वज़ाहत का मुहताज नहीं है। इंसानी तारीख़ में कितने ही ज़ालिम बादशाहों अमीरों, हाकिमों के नाम आते हैं जिन्होंने अपने अपने वक्तों में अल्लाह की मख़लूक पर मज़ालिम के पहाड़ तोड़े थे। अपनी ख़्वाहिशों नफ़्सानी के लिये उन्होंने ज़ेरेदस्तों (मातहतों) को बुरी तरह सताया। आखिर में अल्लाह ने उनको ऐसा पकड़ा कि वो अपने जाह व हिशम के साथ दुनिया से हफ़े ग़लत की तरह मिट गए और उनकी कहानियाँ

बाकी रह गई। दुनिया में अल्लाह से बगावत करने के बाद सबसे बड़ा गुनाह जुल्म करना है ये वो गुनाह है। जिसके लिये अल्लाह के यहाँ कभी भी मुआफ़ी नहीं, जब तक खुद मज़्लूम ही न मुआफ़ कर दे।

जुल्मों की चक्की आज भी बराबर चल रही है। आज मज़ालिम ढहाने वाले अकप्रियत (बहुसंख्यक होने) के घमण्ड में अकलिय्यतों (अल्पसंख्यकों) पर जुल्म ढा रही हैं। नस्ली गुरुर, मज़हबी तअस्सुब, भौगोलिक नफ़रत, इन बीमारियों ने आज के कितने ही फ़िर्ओं और नमरूदों को जुल्म पर कमरबस्ता रखा है। इलाही क़ानून उनको भी पुकार कर कह रहा है कि ज़ालिमों! वक़्त आ रहा है कि तुमसे जुल्मों का बदला लिया जाएगा, तुम दुनिया से हफ़ें ग़लत की तरह मिटा दिये जाओगे, आने वाली नस्लें तुम्हारे जुल्म की तफ़्सीलात सुन सुनकर तुम्हारे नामों पर थू थू करके तुम्हारे ऊपर लअनत भेजेगी। आयते शरीफ़ा फ़ला तहसबन्नल्लाह मुख़िलफ़ा बअदिही रुसुलहू इन्नल्लाह अज़ीजुन् जुन्तिक्राम (इब्राहीम : 47) का यही मतलब है।

## बाब 1 : जुल्मों का बदला किस-किस तौर पर लिया जाएगा?

## باب القصاص المظالم

इस तरह कि मज़्लूम को ज़ालिम की नेकियाँ मिल जाएँगी, अगर ज़ालिम के पास नेकियाँ न होंगी तो मज़्लूम की बुराइयाँ उस पर डाल दी जाएँगी या मज़्लूम को हुक्म दिया जाएगा कि ज़ालिम को उतनी ही सज़ा दे ले जो उसने मज़्लूम को दुनिया में दी थी और जिस बन्दे को अल्लाह बचाना चाहेगा उसके मज़्लूम को उससे राज़ी कर देगा।

2440. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको मुआज़ बिन हिशाम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल मुतवक्क़िल नाजी ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब मोमिनों को दोज़ख़ से नज़ात मिल जाएगी तो उन्हें एक पुल सिरात पर जो जन्नत और जहन्नम के बीच होगा, रोक लिया जाएगा और वहीं उनके जुल्मों का बदला दे दिया जाएगा, जो वो दुनिया में आपस में करते थे। फिर जब पाक—साफ़ हो जाएँगे तो उन्हें जन्नत में दाख़िले की इज़ाज़त दे दी जाएगी। उस ज़ात की क्रसम! जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, उनमें से हर शख़्स अपने जन्नत के घर को अपने दुनिया के घर से भी ज़्यादा बेहतर तौर पर पहचानेगा। यूनुस बिन मुहम्मद ने बयान किया, कि हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अबुल मुतवक्क़िल ने बयान किया।

(दीगर मक़ाम : 6535)

٢٤٤٠ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْمُثَنَّى النَّاجِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((إِذَا خَلَصَ الْمُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ حَبِسُوا بِقَنْطَرَةٍ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَيَقَاصُّونَ مَظَالِمَ كَانَتْ بَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا، حَتَّى إِذَا نَقَوْا وَهَلَّكَوا أُذِنَ لَهُمْ بِدُخُولِ الْجَنَّةِ، فَوَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ ﷺ بِيَدِهِ، لَا أَخَذْتُمْ بِمَسْكِيهِ فِي الْجَنَّةِ أَدْلُ بِمَنْزِلِهِ كَانَ فِي الدُّنْيَا)). وَقَالَ يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْمُثَنَّى النَّاجِيُّ. [طرفه في : ٦٥٣٥].

इस सनद के बयान करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ ये है कि क़तादा का सिमाअ अबुल मुतवक्क़िल से मा'लूम हो जाए या अल्लाह! अपने रसूले पाक (ﷺ) के उन पाकीज़ा इशादात की क़द्र करने वालों को फ़िरदौस बरी अता फ़र्माईयो, आमीन।

## बाब 2 : अल्लाह तआला का सूरह हूद में ये फ़र्माना कि, सुन लो! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है

## ٢ - بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: هَذَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ

2441. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम ने बयान किया, कहा कि मुझे क़तादा ने ख़बर दी, उनसे सप्रवान बिन मुहरिज़ माज़नी ने बयान किया कि मैं अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के हाथ में हाथ दिये जा रहा था कि एक शख्स सामने आया और पूछा रसूले करीम (ﷺ) से आपने (क़यामत में अल्लाह और बन्दे के बीच होने वाली) सरगोशी के बारे में क्या सुना है? अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आप फ़र्माते थे कि अल्लाह तआला मोमिन को अपने नज़दीक बुला लेगा और उस पर अपना पर्दा डाल देगा और उसे छुपा लेगा। अल्लाह तआला उससे फ़र्माएगा क्या तुझको फ़लाँ गुनाह याद है? क्या फ़लाँ गुनाह तुझको याद है? वो मोमिन कहेगा कि हाँ, ऐ मेरे रब। आखिर जब वो अपने गुनाहों का इक्रार कर लेगा और उसे यक़ीन हो जाएगा कि अब वो हलाक हुआ तो अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि मैंने दुनिया में तेरे गुनाहों पर पर्दा डाला और आज भी मैं तेरी मफ़िरत करता हूँ। चुनौचे उसे उसकी नेकियों की किताब दे दी जाएगी। लेकिन काफ़िर और मुनाफ़िक के बारे में उन पर गवाह (मलाइका, अंबिया और तमाम ज़िन्न व इंसान सब) कहेंगे कि यही वो लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूठ बांधा था। ख़बरदार हो जाओ! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार होगी।

(दीगर मक़ाम : 4685, 6070, 7514)

इस हदीस को किताबुल ग़सब में इमाम बुखारी (रह.) इसलिये लाए कि आयत में जो ये वारिद है कि ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है तो ज़ालिमों से काफ़िर मुराद हैं। और मुसलमान अगर जुल्म करे तो वो इस आयत में दाख़िल नहीं है। उससे जुल्म का बदला तो ज़रूर लिया जाएगा, पर वो मल्ज़ून (लानती) नहीं हो सकता।

**बाब 3 : कोई मुस्लिम किसी मुस्लिम पर जुल्म न करे और न किसी ज़ालिम को उस पर जुल्म करने दे**

2442. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, पस उस पर जुल्म न करे और न जुल्म होने दे। जो शख्स अपने भाई की ज़रूरत पूरी करे, अल्लाह तआला

٢٤٤١ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ : أَخْبَرَنِي قَتَادَةُ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُخَرِّزٍ السَّامِرِيِّ قَالَ : ((بَيْنَمَا أَنَا أُمْسِي مَعَ ابْنِ عَمَرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخِيذَ بِيَدِهِ إِذْ غَرَضَ رَجُلٌ فَقَالَ : كَيْفَ سَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي النَّجْوَى؟ فَقَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((إِنَّ اللَّهَ يُذَيِّبُ الْمُؤْمِنَ فَيَضَعُ عَلَيْهِ كَفَّهُ وَيُسْزِئُهُ فَيَقُولُ : أَعْرِفْ ذَنْبَ كَذَا، أَعْرِفْ ذَنْبَ كَذَا؟ فَيَقُولُ : نَعَمْ أَيُّ رَبِّ. حَتَّى إِذَا فَرَزَهُ بِذُنُوبِهِ وَرَأَى فِي نَفْسِهِ أَنَّهُ هَلَكَ قَالَ : سَتَرْتُهَا عَلَيْكَ فِي الدُّنْيَا، وَأَنَا أَعْفُوهَا لَكَ الْيَوْمَ، فَيُغْطِي كِتَابَ حَسَنَاتِهِ. وَأَمَّا الْكَافِرُ وَالْمُنَافِقُونَ فَيَقُولُونَ الْأَشْهَادُ : هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى رَبِّهِمْ، أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ)).

(أُطْرَافُهُ فِي : ٤٦٨٥ ، ٦٠٧٠ ، ٧٥١٤).

٣- بَابُ لَا يَظْلِمُ الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمَ وَلَا يُسْلِمُهُ

٢٤٤٢ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ : سَأَلْنَا أَخْبَرَهُ أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لَا

उसकी ज़रूरत पूरी करेगा। जो शख्स किसी मुसलमान की एक मुसीबत को दूर करेगा, अल्लाह तआला उसकी क़यामत की मुसीबतों में से एक बड़ी मुसीबत दूर करेगा। और जो शख्स किसी मुसलमान के ऐब को छुपाए अल्लाह तआला क़यामत में उसके ऐब को छुपाएगा।

(दीगर मक़ाम : 6951)

يُظْلِمُهُ وَلَا يُسْلِمُهُ، وَمَنْ كَانَ فِي حَاجَةٍ  
أَخِيهِ كَانَ اللَّهُ فِي حَاجَتِهِ، وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ  
مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللَّهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ  
كُرْبَاتٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا  
سَتَرَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))

[طبره ٦: ٦٩٥١]

#### बाब 4 : हर हाल में मुसलमान भाई की मदद करना वो ज़ालिम हो या मज़लूम

٤ - بَابُ أُعِينْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ  
مَظْلُومًا

इसकी तफ़्सीर खुद आगे की हदीष में आ रही है। अगर मुसलमान भाई किसी पर जुल्म कर रहा है तो उसकी मदद यूँ करे, कि उसको समझाकर बाज़ रखे क्योंकि जुल्म का अंजाम बुरा है ऐसा न हो वो मुसलमान जुल्म की वजह से किसी बड़ी आफ़त में पड़ जाए।

2443. हमसे इम्रान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हुशैम ने बयान किया, उन्हें इब्न अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र बिन अनस और हुमैद तवील ने ख़बर दी, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने भाई की मदद करो वो ज़ालिम हो या मज़लूम।

٢٤٤٣ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ  
حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عُثَيْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي  
بَكْرٍ بْنُ أَنَسٍ وَحُمَيْدُ الطَّوِيلُ أَنَّهُ سَمِعَا  
أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((انصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ  
مَظْلُومًا))

2444. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे मुअतमिर ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने भाई की मदद करो ख़वाह वो ज़ालिम हो या मज़लूम। सहाबा (रज़ि.) ने अज़ा किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम मज़लूम की मदद तो कर सकते हैं, लेकिन ज़ालिम की मदद कैसे करें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जुल्म से उसका हाथ पकड़ लो। (यही उसकी मदद है) (राजेअ : 2443)

٢٤٤٤ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ  
عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:  
قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((انصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا  
أَوْ مَظْلُومًا، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلَا  
نَنْصُرُهُ مَظْلُومًا، فَكَيْفَ نَنْصُرُهُ ظَالِمًا؟  
قَالَ: تَأْخُذْ فَوْقَ يَدَيْهِ)) [راجع: ٢٤٤٣]

#### बाब 5 : मज़लूम की मदद करना वाजिब है

٥ - بَابُ نَصْرِ الْمَظْلُومِ

चाहे वो काफ़िर ज़िम्मी हो। एक हदीष में है जिसको तहावी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से निकाला है कि अल्लाह ने एक बन्दे के लिये हुक्म दिया, उसको क़ब्र में सौ कोड़े लगाए जाएँ। वो दुआ और आजिज़ी करने लगा, आखिर एक कोड़ा रह गया, लेकिन एक ही कोड़े से उसकी सारी क़ब्र आग से भरपूर हो गई। जब वो हालत जाती रही तो उसने पूछा, मुझको ये सज़ा क्यों दी गई? फ़रिश्तों ने कहा तूने एक नमाज़ बिना तहाहत पढ़ ली थी और एक मज़लूम को देखकर उसकी मदद नहीं की थी। (वहीदी)

मा'लूम हुआ कि मज़लूम की हर मुक्तिन इमदाद करना हर भाई का एक अहम इंसानी फ़रीज़ा है। जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर होता है, अन सहलिब्नि हनीफ़िन अनिन्नबिथिय (ﷺ) क़ाल मन उज़िल्ल इन्दहू मूमिनुन फ़लम यन्सुहू व हुव यन्दिह अला अंध्यन्सुहू अज़ल्लहुल्लाहु अज़्ज व जल्ल अला रुऊसिल्बलाइकि यौमल क्रियामति (रवाहु अहमद) या'नी आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख्स के सामने किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वो बावजूद कुदरत के उसकी मदद न करे तो क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उसे सारी मख़लूक के सामने ज़लील करेगा।

इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व ज़हब जुम्हूरुसहाबति वत्ताबिईन इला वुजूबि नस्रिल हक्कि व कितालिब्बाग़ीन (नैलुल औतार) या'नी सहाबा व ताबेअीन और आम इलम-ए-इस्लाम का यही फ़त्वा है कि हक़ की मदद के लिये खड़े होना और बाग़ियों से लड़ना वाजिब है।

2445. हमसे सईद बिन रबीअ ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अज़अज़ बिन सुलैम ने बयान किया, कि मैंने मुआविया बिन सुवैद से सुना, उन्होंने बरा बिन अज़िब (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया था कि हमें नबी करीम (ﷺ) ने सात चीज़ों का हुक्म फ़र्माया था और सात चीज़ों से मना किया था (जिन चीज़ों का हुक्म फ़र्माया था उनमें) उन्होंने मरीज़ की अयादत, जनाज़े के पीछे चलने, छींकने वाले का जवाब देने, सलाम का जवाब देने, मज़लूम की मदद करने, दा'वत करने वाले (की दा'वत) कुबूल करने, और क्रसम पूरी करने का ज़िक्र किया।

٢٤٤٥- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْأَشْعَثِ بْنِ سُلَيْمٍ قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ سُؤَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِسَمْعٍ، وَتَهَانًا عَنْ مَسْمُوعٍ، فَذَكَرَ عِبَادَةَ الْمَرْبُوعِ، وَاتِّبَاعَ الْحَاكِمِ، وَتَشْمِيتَ الْفَاطِسِ، وَرَدَّ السَّلَامِ، وَتَصَرُّ الْمَظْلُومِ، وَإِجَابَةَ الدَّاعِي، وَإِثْرَارَ الْمُقْسِمِ)). [راجع: ١٢٣٩]

सात मज़कूरा कामों की अहमियत पर रोशनी डालना सूरज को चिराग़ दिखलाने के समान है। इसमें मज़लूम की मदद करने का भी ज़िक्र है। उसी मुनासबत से इस हदीष को यहाँ दर्ज किया गया।

2446. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बरीद ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि एक मोमिन दूसरे मोमिन के साथ एक इमारत के हुक्म में है कि एक को दूसरे से कुव्वत पहुँचती है और आपने अपनी एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों के अंदर किया। (राजेअ: 481)

٢٤٤٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بَرِيدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْأَيْمَانِ يَشُدُّ بَقَضَةٍ بَقْضًا)). وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ.

[راجع: ٤٨١]

काश! हर मुसलमान इस हदीषे नबवी को याद रखता और हर मोमिन भाई के साथ भाईयों जैसी मुहब्बत रखता तो मुसलमानों को ये दिन न देखने पड़ते जो आजकल देख रहे हैं। अल्लाह अब भी अहले इस्लाम को समझा दे कि वो अपने प्यारे रसूल (ﷺ) की हिदायत पर अमल करके अपना खोया हुआ वक़ार हासिल कर लें।

बाब 6 : ज़ालिम से बदला लेना क्योंकि अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि,

٦- بَابُ الْإِنْتِصَارِ مِنَ الظَّالِمِ، لِقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ :



अल्लाह तआला बुरी बात के ऐलान को पसन्द नहीं करता। सिवा उसके जिस पर जुल्म किया गया हो, और अल्लाह तआला सुनने वाला और जानने वाला है। (और अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि) और वो लोग कि जब उन पर जुल्म होता है तो वो उसका बदला ले लेते हैं। इब्राहीम ने कहा कि सलफ़ ज़लील होना पसन्द नहीं करते थे। लेकिन जब उन्हें (ज़ालिम पर) काबू हासिल हो जाता तो उसे मुआफ़ कर दिया करते थे।

या'नी ज़ालिम के मुकाबले पर बढ़ियों की तरह आजिज़ ज़लील नहीं हो जाते बल्कि उतना ही इंसान से बदला लेते हैं जितना उन पर जुल्म हुआ वरना खुद ज़ालिम बन जाएँगे। इस आयत से साबित हुआ कि ज़ालिम से जुल्म के बराबर बदला लेना दुरुस्त है। लेकिन मुआफ़ कर देना अफ़ज़ल है जैसा कि सलफ़ का तौर तरीक़ा मज़कूर हुआ है और आगे हदीष में आता है।

### बाब 7 : ज़ालिम को मुआफ़ कर देना

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि अगर तुम खुल्लम खुल्ला तौर पर कोई नेकी करो या पोशिदा तौर पर या किसी के बुरे मामले पर मुआफ़ी से काम लो, तो अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा मुआफ़ करने वाला और बहुत बड़ी क़ुदरत वाला है। (सूरह शूरा में फ़र्माया) और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई से भी हो सकता है। लेकिन जो मुआफ़ कर दे और दुरुस्तगी मामला को बाक़ी रखे तो उसका अज़्र अल्लाह तआला ही पर है। बेशक अल्लाह तआला जुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता। और जिसने अपने पर जुल्म किये जाने के बाद उसका (जाइज़) बदला लिया तो उन पर कोई गुनाह नहीं है। गुनाह तो उन पर है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन पर नाहक़ फ़साद करते हैं, यही हैं वो लोग जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा। लेकिन जिस शख्स ने (जुल्म पर) सब्र किया और (ज़ालिम को) मुआफ़ किया तो ये निहायत ही बहादुरी का काम है। और ऐ पैग़म्बर! तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वो अज़ाब देख लेंगे तो कहेंगे कि अब कोई दुनिया में फिर जाने की भी सूरत है? (सूरह शूरा : 40-44)

### बाब 8 : जुल्म, क़यामत के दिन अंधेरे होंगे

या'नी ज़ालिम को क़यामत के दिन नूर न दिया जाएगा। अंधेरे पर अंधेरा, उन अंधेरों में वो धके खाता मुसीबत उठाता फिरेगा।

2447. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ माजिशून ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ، وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا. وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ. قَالَ إِبْرَاهِيمُ: كَانُوا يَكْفُرُونَ أَنْ يُسْتَدْلُوا، فَلَإِذَا قُتِرُوا عَفَوْا.

٧- بَابُ عَفْرِ الظَّالِمِينَ. بِقَوْلِهِ تَعَالَى: وَإِنْ تَنَادَوْا غَيْرًا أَوْ تُخَفُّوهُ أَوْ تُقْلَبُوا عَنْ سُوِّ قِبَالِكُمْ لَا تَكُنْ عَفْوًا قَلِيلًا وَالنِّسَاءُ: ٩٤. وَوَجْزَاءُ سَتْلَةٍ سِتْلَةٌ بِظُلْمِهَا، فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ. وَلَمَّا تَصَدَّقَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ مَسْئَلٍ. إِنَّا السَّيِّئُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَتَوَفَّوْنَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ، أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ. وَلَكِنْ سَتَرْنَا عَنْهُمْ قُلُوبَهُمْ عَنْ تِلْكَ آيَاتِنَا وَلَكِنَّ الْأَعْمَى يَنْظُرُ أَطْرَافًا وَلَكِنْ لَا يَأْتِيهِ الْبَصَرُ وَلَا يَتَذَكَّرُ أَلَمْ يَأْتِ الْغَيْبَ وَلَا يَحْشُرْ. الشُّرَى: ٤٠-٤٤.

### ٨- بَابُ الظُّلْمِ طَلَمَاتِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

٢٤٤٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ الْمَاجِشُونُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ

दीनार ने खबर दी, और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जुल्म क़यामत के दिन अंधेरे होंगे।

### बाब 9 : मज़लूम की बददुआ से बचना और डरते रहना

2448. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, कहा हमसे ज़कारिया बिन इस्हाक़ मक्की ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अब्दुल्लाह सैफ़ी ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) के गुलाम अबू मअबद ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मुआज़ (रज़ि.) को जब (आमिल बनाकर) यमन भेजा था, तो आपने उन्हें हिदायत फ़र्माई कि मज़लूम की बददुआ से डरते रहना कि उसके और अल्लाह तआला के दरम्यान कोई पर्दा नहीं होता।

(राजेअ: 1395)

بُن دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الظُّلْمُ ظَلَمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

۹- بَابُ الْإِتْقَاءِ وَالْحَذَرِ مِنْ دَعْوَةِ الْمَظْلُومِ

۲۴۴۸- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ إِسْحَاقَ الْمَكِّيُّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَيْفِيٍّ عَنْ أَبِي مَعْبُدٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: ((اتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ، فَإِنَّهَا لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللَّهِ حِجَابٌ)).

[راجع: ۱۳۹۵]

**तशरीह:** या'नी वो फ़ौरन परवरदिगार तक पहुँच जाती है और ज़ालिम की ख़राबी होती है। इसका ये मतलब नहीं कि ज़ालिम को उसी वक़्त सज़ा होती है बल्कि अल्लाह पाक जिस तरह चाहता है वैसे हुक़म देता है। कभी फ़ौरन सज़ा देता है कभी एक मीआद के बाद ताकि ज़ालिम और जुल्म करे और ख़ूब फूल जाए उस वक़्त दफ़अतन् वो पकड़ लिया जाता है। हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने जो फ़िरऔन के जुल्म से तंग आकर बददुआ की, चालीस साल के बाद उसका अघ़र ज़ाहिर हुआ। बहरहाल ज़ालिम को ये ख़याल न करना चाहिये कि हमने जुल्म किया और कुछ सज़ा न मिली, अल्लाह के यहाँ इस्लाम के लिये देर तो मुम्किन है मगर अंधेरे नहीं हैं।

### बाब 10 : अगर किसी शख्स ने दूसरे पर कोई जुल्म किया हो और उससे मुआफ़ कराए तो क्या उस जुल्म को भी बयान करना ज़रूरी है

कि मैंने फ़लाँ कुसूर किया है। कुछ ने कहा कि कुसूर का बयान करना ज़रूरी है और कुछ ने कहा ज़रूरी नहीं मुज्मलन उससे मुआफ़ करा लेना काफी है और यही सहीह है क्योंकि हदीष मुत्लक़ है।

2449. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद मक़बरी ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूल करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी शख्स का जुल्म किसी दूसरे की इज़ात पर हो या किसी तरीक़ा (से जुल्म किया हो) तो उसे आज ही, उस दिन के आने से पहले मुआफ़ करा

۱۰- بَابُ مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ عِنْدَ الرَّجُلِ فَحَلَّلَهَا لَهُ حَلٌّ يَمِينُ مَظْلَمَةٍ؟

۲۴۴۹- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذَوْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا صَعِيدُ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ مِنْ عَرَضِهِ أَوْ شَيْءٍ

ले जिस दिन न दीनार होंगे न दिरहम, बल्कि अगर उसका कोई नेक अमल होगा तो उसके जुल्म के बदले में वही ले लिया जाएगा। और अगर कोई नेक अमल उसके पास नहीं होगा तो उसके साथी (मजलूम) की बुराइयाँ उस पर डाल दी जाएँगी। अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि इस्माईल बिन अबी उवैस ने कहा सईद मक़बरी का नाम मक़बरी इसलिये हुआ कि क़ब्रस्तान के क़रीब उन्होंने क़याम किया था। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि सईद मक़बरी ही बनी लैज़ के गुलाम हैं। पूरा नाम सईद बिन अबी सईद है। और (उनके बालिद) अबू सईद का नाम कैसान है।

(दीगर मक़ाम : 6534)

فَلْيَحْلَلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ قَبْلَ أَنْ لَا يَكُونَ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ، إِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أَخَذَ مِنْهُ بِقَنْدَرٍ مَظْلَمَةٍ، وَإِنْ لَمْ تَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أَخَذَ مِنْ مَسْنَنَاتِ صَاحِبِهِ فَحَمِلَ عَلَيْهِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ قَالَ إِبْنُ أَبِي أَوْسٍ : إِنَّمَا سَمِيَ الْمُقْبَرِيُّ لِأَنَّهُ كَانَ نَزَلَ نَاحِيَةَ الْمُقَابِرِ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ : وَسَيِّدُ الْمُقْبَرِيِّ هُوَ قَوْلِي نَبِي لَيْثٍ، وَهُوَ سَيِّدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ، وَاسْمُ أَبِي سَعِيدٍ كَيْسَانٌ. [طرفه في : ٦٥٣٤].

मज़लमा हर उस जुल्म को कहते हैं जिसे मज़लूम सन्न के साथ बर्दाश्त कर ले। कोई जानी जुल्म हो या माली सब पर लफ़्ज़ मज़लमा का इत्लाक़ होता है। कोई शख्स किसी से उसका माल ज़बरदस्ती छीन ले तो ये भी मज़लमा है। रसूल करीम (ﷺ) ने हिदायत फ़र्माई कि ज़ालिमों को अपने मज़ालिम का फ़िक्र दुनिया ही में कर लेना चाहिये कि वो मज़लूम से मुआफ़ करा लें, उनका हक़ अदा कर दें वरना मौत के बाद उनसे पूरा-पूरा बदला दिलाया जाएगा।

**बाब 11 : जब किसी जुल्म को मुआफ़ कर दिया तो वापसी का मुतालबा भी बाक़ी नहीं रहा**

١١- بَابُ إِذَا حَلَّلَهُ مِنْ ظُلْمِهِ فَلَا رَجُوعَ فِيهِ

2450. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि हमको हिशाम बिन इव्वान ने ख़बर दी, उन्हें उनके बाप ने, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने (कुआन मजीद की आयत) अगर कोई औरत अपने शौहर की तरफ़ से नफ़रत या उसके मुँह फेरने का डर रखती हो; के बारे में फ़र्माया, कि किसी शख्स की बीवी है, लेकिन शौहर उसके पास ज़्यादा आता-जाता नहीं बल्कि उसे जुदा करना चाहता है। इस पर उसकी बीवी कहती है कि मैं अपना हक़ तुमसे मुआफ़ करती हूँ। इसी बारे में ये आयत नाज़िल हुई।

(दीगर मक़ाम : 2694, 4601, 5206)

٢٤٥٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ غُرَافَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا : «وَإِنْ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَطْنِهَا نُشُورًا أَوْ بَعْرَاضًا» قَالَتْ : الرَّجُلُ تَكُونُ جُنْدَهُ الْمَرْأَةُ لَيْسَ بِمُسْتَكْبَرٍ مِنْهَا يُؤَيِّدُ أَنْ يُفَارِقَهَا، فَقُولِي : أَجْعَلُكَ مِنْ شَأْنِي فِي حِلٍّ، فَنَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ فِي ذَلِكَ)).

[أطرافه في : ٢٦٩٤, ٤٦٠١, ٥٢٠٦].

या'नी अगर शौहर मेरे पास नहीं आता तो न आए, लेकिन मुझको तलाक़ न दे, अपनी ज़ोज़ियत में रहने दे तो ये दुरुस्त है। शौहर पर से उसकी सुहबत के हक़ूक़ साक़ित हो जाते हैं। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा ये आयत इस बाब में है कि औरत अपने मर्द से जुदा होना बुरा समझे और शौहर बीवी दोनों ये ठहरा लें कि तीसरे या चौथे दिन मर्द अपनी औरत के पास आया करे तो ये दुरुस्त है। हज़रत सौदा (रज़ि.) ने भी अपनी बारी आहज़रत (ﷺ) को मुआफ़ कर दी थी, आप उनकी बारी में हज़रत आइशा

(रजि.) के पास रहा करते थे। (वहीदी)

**बाब 12 : अगर कोई शख्स दूसरे को इजाज़त दे या उसको मुआफ़ कर दे मगर ये बयान न करे कि कितने की इजाज़त और मुआफ़ी दी है**

۱۲- بَابُ إِذَا أُذِنَ لَهُ أَوْ أَحْلَهُ وَلَمْ يَبَيِّنْ كَمْ هُوَ

2451. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाजिम बिन दीनार ने और उन्हें सहल बिन सअद साएदी (रजि.) ने किरसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में दूध या पानी पीने को पेश किया गया। आप (ﷺ) ने उसे पिया। आप (ﷺ) के दाएँ तरफ़ एक लड़का था और बाएँ तरफ़ बड़ी उम्र वाले थे। लड़के से आप (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम मुझे इसकी इजाज़त दोगे कि उन लोगों को ये (प्याला) दे दूँ? लड़के ने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम! या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपकी तरफ़ से मिलने वाले हिस्से का इश्बार मैं किसी पर नहीं कर सकता। रावी ने बयान किया कि आख़िर रसूले करीम (ﷺ) ने वो प्याला उस लड़के को दे दिया। (राजेअ: 2351)

۲۴۵۱- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي حَازِمٍ بْنِ دِينَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَتَى بِشَرَابٍ فَشَرِبَ مِنْهُ - وَعَنْ يَمِينِهِ غُلَامٌ وَعَنْ يَسَارِهِ الْأَحْبَاحُ - فَقَالَ لِلْغُلَامِ: ((أَتَأْذِنُ لِي أَنْ أُعْطِيَ هَذَا؟)) فَقَالَ الْغُلَامُ: لَا وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَا أَوْزُرُ بِمَصْنُوعِي مِنْكَ أَحَدًا. قَالَ: فَقُلْتُ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِي يَدُوُّ)).

[راجع: ۲۳۵۱]

क्योंकि उसका हुक्क मुक़द्दम (श्रेष्ठ) था वो दाहिनी तरफ़ बैठा था। इस हदीष की बाब से मुनासबत के लिये कुछ ने कहा कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब यूँ निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने पहले वो प्याला बूढ़े लोगों को देने की इन्हे अब्बास (रजि.) से इजाज़त तलब की, अगर वो इजाज़त दे देते तो ये इजाज़त ऐसी ही होती जिसकी मित्रदार बयान नहीं होती। या'नी ये बयान नहीं किया गया कि कितने दूध की इजाज़त है। पस बाब का मतलब निकल आया। (वहीदी)

**बाब 13 : उस शख्स का गुनाह जिसने किसी की ज़मीन जुल्म से छीन ली**

۱۳- بَابُ إِنْ مَن ظَلَمَ شَيْئًا مِنَ الْأَرْضِ

2452. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे तलहा बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हें अब्दुरहमान बिन अमर बिन सहल ने ख़बर दी, और उनसे सईद बिन ज़ैद (रजि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी की ज़मीन जुल्म से ले ली, उसे क़यामत के दिन सात ज़मीनों का तौक़ पहनाया जाएगा।

۲۴۵۲- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي طَلْحَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَمْرٍو بْنَ سَهْلٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ ظَلَمَ مِنَ الْأَرْضِ شَيْئًا طَوَّلَهُ

(दीगर मक़ाम : 3198)

مِنْ سَبْعِ أَرْضِينَ)). [طرف 3 : 3198].

**तशरीह :** ज़मीन के सात तबक़ (परतें) हैं। जिसने बालिशत भर ज़मीन भी छीनी होगी तो सातों तबकों तक गोया उसको छीना इसलिये क़यामत के दिन उन सबका तौक़ उसके गले में होगा। दूसरी रिवायत में है कि वो सब मिट्टी उठाकर लाने का उसको हुक्म दिया जाएगा। कुछ ने कहा कि तौक़ पहनाने का मतलब ये है कि वो सातों तबक़ों तक उसमें धंसा दिया जाएगा। हदीष से कुछ ने ये भी निकाला कि ज़मीन सात है जैसे आसमान सात है। (वहीदी)

2453. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे हुसैन ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कफ़ीर ने कि मुझसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे सलमा ने बयान किया कि उनके और कुछ दूसरे लोगों के दरम्यान (ज़मीन का) झगड़ा था। इसका ज़िक्र उन्होंने आइशा (रज़ि.) से किया, तो उन्होंने बतलाया, अबू सलमा! ज़मीन से परहेज़ कर कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी शख्स ने एक बालिशत भर ज़मीन भी किसी दूसरे की जुलूम से ले ली तो सात ज़मीनों का तौक़ (क़यामत के दिन) उसकी गर्दन में डाला जाएगा।

(दीगर मक़ाम : 3195)

٢٤٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّ أَبَا سَلَمَةَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ كَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَنَّاسٍ خُصُومَةٌ، فَذَكَرَ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَقَالَتْ: يَا أَبَا سَلَمَةَ اجْتَنِبِ الْأَرْضَ، فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ ظَلَمَ قَيْدَ شَيْءٍ مِنَ الْأَرْضِ طَوْفَهُ مِنْ سَبْعِ أَرْضِينَ)). [طرف 3 : 3195].

चूँकि ज़मीनों के सात तबक़ होते हैं। इसलिये वो जुलूम से हासिल की हुई ज़मीन सात तबकों तक तौक़ बनाकर उसके गले में डाली जाएगी। ज़मीन के सात तबक़ किताब व सुन्नत से प्राबित हैं। उनका इंकार करने वाला कुआन व हदीष का इंकारी है। तफ़्सीलात का इल्म अल्लाह को है। वमा यअलमु जुनूद रब्बिका इल्ला हुवा (अलमुदख़िर : 31) इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व फ़ीहि अन्नल अज़ीनस्सब्अ अत्बाकुन कस्समावाति व हुव ज़ाहिर क़ौलिही तआला व मिनल्अज़ि मिश्लुहुन्न ख़िलाफ़न लिमन क़ाल अन्नलमुराद बिक़ौलिही सबअ अज़ीन सबअत अक़ालीम (नैल) या'नी इससे प्राबित हुआ कि आसमानों की तरह ज़मीनों के भी सात तबक़ होते हैं। जैसा कि आधते कुआनी में, वमिनल् अरज़ि मिश्लुहुन्ना में मज़कूर है या'नी ज़मीनें भी उन आसमानों ही के तरह हैं। इसमें उनकी भी तदीद है जो सात ज़मीनों से हफ़त अक़लीम मुराद लेते हैं जो सहीह नहीं है।

2454. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन इक्बा ने बयान किया सालिम से और उनसे उनके वालिद (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख्स ने नाहक़ किसी ज़मीन का थोड़ा सा हिस्सा भी ले लिया, तो क़यामत के दिन उसे सात ज़मीनों तक धंसाया जाएगा। अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि ये हदीष अब्दुल्लाह बिन मुबारक की उस किताब में नहीं है जो ख़ुरासान में थी बल्कि उसमें थी जिसे उन्होंने बसरा में अपने

٢٤٥٤- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ بْنُ أَبِإِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَخَذَ مِنَ الْأَرْضِ شَيْئًا بِغَيْرِ حَقِّهِ خُفِيَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى سَبْعِ أَرْضِينَ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: هَذَا الْحَدِيثُ لَيْسَ بِخُرَاسَانَ فِي كِتَابِ ابْنِ الْمُبَارَكِ، أَتْلَاهُ عَلَيْهِمْ

शागिदों का लिखवाई थी। (दीगर मक़ाम : 3196)

बाब 14 : जब कोई शख्स किसी दूसरे को किसी चीज़ की इजाज़त दे दे तो वो उसे इस्ते'माल कर सकता है

2455. हमसे हफ़्म बिन इमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे जबला ने बयान किया कि हम कुछ अहले इराक़ के साथ मदीना में मुकीम थे। वहाँ हमें कहता में मुब्तला होना पड़ा। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) खाने के लिये हमारे पास खजूर भिजवाया करते थे और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) जब हमारी तरफ़ से गुजरते तो फ़र्माते कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (दूसरे लोगों के साथ मिलकर खाते वक़्त) दो खजूरों को एक साथ मिलाकर खाने से मना फ़र्माया है। मगर ये कि तुममें से कोई शख्स अपने दूसरे भाई से इजाज़त ले ले।

(दीगर मक़ाम : 2489, 2490, 5446)

**तशरीह:** जाहिर ये कि नज़दीक ये नहीं तहरीमी है। दूसरे इलमा के नज़दीक तन्ज़ीही है और मुमानअत की वजह जाहिर है कि दूसरे का हक़ तलफ़ करना है और उससे हिरस और तमअ (लालच और इच्छाएं) मा'लूम होती है। नववी ने कहा अगर खजूर मुश्तरक (संयुक्त) हो तो दूसरे शरीकों से बिन इजाज़त ऐसा करना हुराम है वरना मकरूह है। हाफ़िज़ ने कहा इस हदीष से उस शख्स का मज़हब क़बी होता है जिसने मजहूल का हिबा जाइज़ रखा है।

2456. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अअमश ने, उनसे अबू वाईल ने और उनसे अबू मसरूद (रज़ि.) ने कि अंसार में एक सहाबी जिन्हें अबू शुऐब (रज़ि.) कहा जाता था, का एक क़साई गुलाम था। अबू शुऐब (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मेरे लिये पाँच आदमियों का खाना तैयार कर दे। क्योंकि मैं नबी करीम (ﷺ) के चार दीगर अह्मद के साथ दा'वत दूँगा। उन्होंने आप (ﷺ) के चेहरा मुबारक पर भूख के आश्रय देखे थे। चुनौचे आप (ﷺ) को उन्होंने बुलाया एक और शख्स आपके साथ बिन बुलाए चला गया। नबी करीम (ﷺ) ने साहिबे खाना से फ़र्माया कि ये आदमी भी हमारे साथ आ गया है। क्या इसके लिये तुम्हारी इजाज़त है? उन्होंने कहा जी हाँ इजाज़त है। (राजेअ : 2081)

بَابُ إِذَا أُذِنَ لِنَاسٍ لِّأَخَرٍ

۱۴- بَابُ إِذَا أُذِنَ لِنَاسٍ لِّأَخَرٍ  
شَيْئًا جَاوَزَ

۲۴۵۵- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَبَلَةَ : كُنَّا بِالْمَدِينَةِ فِي بَعْضِ أَهْلِ الْوَرِاقِ فَأَصَابَنَا سَنَةٌ، فَكَانَ الزُّبَيْرُ يَرْزُقُنَا التَّمْرَ، فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ وَرَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَمُرُّ بِنَا فَيَقُولُ : ((إِنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْإِفْرَانِ، إِلَّا أَنْ يَسْتَأْذِنَ الرَّجُلُ مِنْكُمْ أَخَاهُ)).

[أطرافه في : ۲۴۸۹، ۲۴۹۰، ۵۴۴۶]

۲۴۵۶- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مَسْرُودٍ : ((أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ أَبُو شُعَيْبٍ كَانَ لَهُ غُلَامٌ لَحَامٌ، فَقَالَ لَهُ أَبُو شُعَيْبٍ : اصْنَعْ لِي طَعَامَ خَمْسَةِ لَغْلَى أَذْغُو النَّبِيَّ ﷺ خَامِسَ خَمْسَةِ - وَأَنْصَرَفَ فِي وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ الْجَوْعُ! فَدَعَاهُ، فَتَبِعَهُمْ رَجُلٌ لَمْ يَدْعُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِنْ هَذَا قَدِ اتَّبَعَنَا أَتَاذُنَ لَهُ؟))

قَالَ : نَعَمْ)). [راجع : ۲۰۸۱]

ये हदीष ऊपर गुजर चुकी है। इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब का मतलब इस हदीष से साबित किया है कि बिन बुलाए दा'वत में जाना और खाना खाना दुस्त नहीं है। मगर जब साहिबे खाना इजाज़त दे तो दुस्त हो गया। इस हदीष से हज़ूर नबी करीम

(ﷺ) की राफ्त और रहमत पर भी रोशनी पड़ती है कि आप (ﷺ) को किसी का भूखा रहना गवारा न था। एक अल्लाह वाले बुजुर्ग इंसान की यही शान होनी चाहिये।

### बाब 15 : अल्लाह तआला का सूरह बक्रः में ये फ़र्माया, और वो बड़ा सख़्त झगड़ालू है

2457. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला के यहाँ सबसे ज़्यादा नापसन्द वो आदमी है जो सख़्त झगड़ालू हो। (दीगर मक़ाम : 4523, 7188)

कुछ बदबुख्तों की फ़ितरत होती है कि वो ज़रा ज़रा सी बातों में झगड़ा फ़साद करते रहते हैं। ऐसे लोग अल्लाह के नज़दीक बहुत ही बुरे हैं। पूरी आयत का तर्जुमा यूँ है, लोगों में कोई ऐसा है जिसकी बात दुनिया की ज़िन्दगी में तुझको भली लगती है और अपने दिल की हालत पर अल्लाह को गवाह करता है हालाँकि वो सख़्त झगड़ालू है। कहते हैं ये आयत अख़नस बिन शुरैक के हक़ में उतरी। वो आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और इस्लाम का दावा करके मीठी बातें करने लगा। जबकि दिल में निफ़ाक़ रखता था (वहीदी)

### बाब 16 : उस शख़्स का गुनाह, जो जान- बूझकर झूठ के लिये झगड़ा करे

2458. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे सलालेह बिन कैसान ने और उनसे इब्ने शिहाब ने कि मुझे इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनब बन्ति उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत्तहहरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने हुज़े के दरवाज़े के सामने झगड़े की आवाज़ें सुनी और झगड़ा करने वालों के पास तशरीफ़ लाए। आपने उनसे फ़र्माया कि मैं भी एक इंसान हूँ। इसलिये जब मेरे यहाँ कोई झगड़ा लेकर आता है तो हो सकता है कि (फ़रीक़ेन में से) एक फ़रीक़ की बहष दूसरे फ़रीक़ से ज़्यादा बेहतर हो, मैं समझता हूँ कि वो सच्चा है। और इस तरह मैं उसके हक़ में फ़ैसला कर देता हूँ। लेकिन अगर मैं उसको (उसके ज़ाहिरी बयान पर भरोसा करके) किसी मुसलमान का हक़ दिला दूँ तो दोज़ख़ का एक टुकड़ा उसको दिला रहा हूँ, वो ले ले या छोड़ दे।

١٥- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ﴾ [البقرة: ٢٠٤]

٢٤٥٧- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ ابْنِ أَبِي ثَلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللَّهِ الْأَلَدُّ الْخِصَمُ)). [طرفاه في: ٤٥٢٣, ٧١٨٨]

١٦- بَابُ إِمِّمٍ مِّنْ خَاصَمٍ فِي بَاطِلٍ وَهُوَ يَعْلَمُهُ

٢٤٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي غُرُوثُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أُمِّ سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّهَا أُمَّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا رَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ خُصُومَةَ بَيْنَ حُجْرَتَيْهِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّهُ يَأْتِينِي التَّخَصُّمُ، فَلَقُلْ بَعْضُكُمْ أَن يَكُونَ أَبْلَغُ مِنْ بَعْضٍ، فَأُخْصِبُ أَنَّهُ صَدَقَ فَأَقْضِي لَهُ بِذَلِكَ، فَمَنْ قَضَيْتَ لَهُ بِحَقِّ مُسْلِمٍ فَإِنَّمَا هِيَ قِطْعَةٌ مِنَ النَّارِ، فَلْيَأْخُذْهَا أَوْ فَلْيُتْرِكْهَا)).

(दीगर मक्काम : 2680, 6927, 7169, 7181, 7185)

[طرافه ٣ : ٢٦٨٠, ٦٩٦٧, ٧١٦٩]

[٧١٨٠, ٧١٨١]

**तशरीह :** या'नी जब तक अल्लाह की तरफ से मुझ पर वजह न आए मैं भी तुम्हारी तरह ग़ैब की बातों से नावाक़िफ़ रहता हूँ। क्योंकि मैं भी आदमी हूँ और आदमियत के लवाज़िम (मानवीय अनिवार्यताओं) से पाक नहीं हूँ। इस हदीष से उन बेवकूफ़ों का रद्द हुआ जो आँहज़रत (ﷺ) के लिये इल्मे ग़ैब प्राबित करते हैं या आँहज़रत (ﷺ) को बशर नहीं समझते बल्कि अल-वहिय्यत की सिफ़ात से मुतस्मिफ़ जानते हैं। क़ातलहुमुल्लाहु यूफ़कून् (वहीदी)

हदीष का आख़िरी टुकड़ा तहदीद के लिये है। इस हदीष से साफ़ ये निकलता है कि क़ाज़ी के फ़ैसले से वो चीज़ें हलाल नहीं होती और क़ाज़ी का फ़ैसला ज़ाहिर्न नाफ़िज़ है न बातिनन्। या'नी अगर मुद्अी नाहक़ पर हुआ और अदालत उसको कुछ दिला दे तो अल्लाह और उसके बीच उसके लिये हलाल नहीं होगा। जुम्हूर इलमा और अहले हदीष का यही क़ौल है। लेकिन हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने उसके खिलाफ़ किया है।

लफ़ज़ ग़ैब के लफ़्ज़ी मा'नी का तक्काज़ा है कि वो बग़ैर किसी के बतलाए खुद-ब-खुद मा'लूम हो जाने का नाम है और ये सिर्फ़ अल्लाह पाक ही की एक सिफ़ात है कि वो माज़ी व हाल व मुस्तक़बल (भूतकाल, वर्तमान और भविष्य) की सारी ग़ैबी बातों को जानता है। उसके सिवा मख़लूक में से किसी भी इंसान या फ़रिश्ते के लिये ऐसा अक़ीदा रखना सरासर नादानी है, ख़ास तौर पर नबियों-रसूलों की शान आम इंसानों से बहुत बुलन्द व बाला होती है। वो बराहे-रास्त अल्लाह पाक से शफ़े ख़िताब हासिल करते हैं, वजह और इल्हाम के ज़रिये से बहुत सी अगली पिछली बातें उन पर वाज़ेह हो जाती हैं मगर उनको ग़ैब से ता'बीर करना उन लोगों का काम है जिनको अक़ल और फ़हम का कोई ज़र्रा भी नज़ीब नहीं हुआ है। और जो महज़ अंधी तक्लीद के परस्तार बमकर इस्लाम फहमी से क़त्न कोरे हो चुके हैं। रसूले करीम (ﷺ) की ज़िन्दगी में दोनों पहलू रोज़े रोशन (उजले दिन) की तरह नुमायाँ नज़र आते हैं। कितनी ही दफ़ा ऐसा हुआ कि ज़रूरत के तहत एक पोशिदा अम्र वजह के ज़रिये आप पर रोशन हो गया और कितनी ही दफ़ा ये भी हुआ कि ज़रूरत थी बल्कि सख़्त ज़रूरत थी मगर वजह इलाही और इल्हाम न आने के बाअिअ आप (ﷺ) उनके बारे में कुछ न जान सके और बहुत से नुक़सानात से आपको दो-चार होना पड़ा। इसलिये कुआन मजीद में आपकी जुबाने मुबारक से और साफ़ ऐलान कराया गया। लौ कुन्तु आलमुल्लैब लस्तवक़र्तु मिनल्लख़ैर व मा फ़स्सनिस्सूड अगर मैं ग़ैब जानता तो बहुत सी ख़ैर-ही-ख़ैर जमा कर लेता और मुझको कभी भी कोई बुराई न छू सकती। अगर आपको जंगे उहुद का ये बुरा अंजाम मा'लूम होता तो कभी भी उस घाटी पर ऐसे लोगों को मुक़रर न करते जिनके वहाँ से हट जाने की वजह से काफ़िरो को पलटकर वार करने का मौक़ा मिलता।

ख़ुलासा ये कि इल्मे ग़ैब अल्लाह तबारक व तआला का ख़ास्सा (विशिष्टता) है। जो मौलवी, आलिम इस बारे में मुसलमानों को लड़ाते हैं और सर-फुटव्वल कराते रहते हैं वो यकीनन उम्मत के ग़द्दार हैं। इस्लाम के नादान दोस्त हैं। खुद रसूलुल्लाह (ﷺ) के सख़्ततरीन गुस्ताख़ हैं। अल्लाह के नज़दीक वो मज़बूब और ज़ॉल्लीन हैं बल्कि यहूद व नसारा से भी बदतर हैं। अल्लाह उनके शर से उम्मत के सीधे-सादे मुसलमान को जल्द अज़ जल्द नजात बख़्शे और माफ़ला फ़हमी की सबको तौफ़ीक़ अता फ़र्माए, आमीन।

**बाब 17 : उस शख़्स का बयान कि जब उसने झगड़ा किया तो बद जुबानी पर उतर आया**

١٧- بَابُ إِذَا خَاصَمَ فَجَرَ

2459. हमसे बिशर बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद ने ख़बर दी शुअबा से, उन्हें सुलैमान ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुरह ने, उन्हें मसरूक़ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चार ख़सलतें ऐसी हैं

٢٤٥٩- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْثَةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ



कि जिस शख्स में भी वो होंगी, वो मुनाफ़िक़ होगा। या उन चार में से अगर कोई एक ख़सलत भी उसमें में है तो उसमें निफ़ाक़ की एक ख़सलत है यहाँ तक कि वो उसे छोड़ दे। जब बोले तो झूठ बोले, जब वादा करे तो पूरा न करे, जब मुआहिदा करे तो बेवफ़ाई करे, और जब झगड़े तो बद जुबानी पर उतर आए।

(राजेअ : 34)

أَبُو بَنْدٍ عَمْرُو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «أَرْبَعٌ مَنْ كُنْ فِيهِ كَانَتْ خِصْلَةً مِنْ أَرْبَعٍ كَانَتْ فِيهِ خِصْلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَدْغَمَهَا: إِذَا حَدَّثَكَ كَذِبًا، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ، وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ».

[راجع: 34]

झगड़ा बाज़ी करना ही बुरा है। फिर उसमें गाली-गलौच का इस्तेमाल उतना ही बुरा है कि उसे निफ़ाक़ (बेईमानी) की एक अस्लामत (निशानी) बतलाया गया है। किसी अच्छे मुसलमान का काम नहीं कि वो झगड़े तो बेलगाम बन जाए और जो भी मन में आया बकने से ज़रा न शर्माए।

**बाब 18 : मज़लूम को अगर ज़ालिम का माल मिल जाए तो वो अपने माल के मुवाफ़िक़ उसमें से ले सकता है**

١٨ - بَابُ قِصَاصِ الْمَظْلُومِ إِذَا وَجَدَ مَالَ ظَالِمِهِ

और मुहम्मद बिन सीरीन (रह.) ने कहा अपना हक़ बराबर ले सकता है। फिर उन्होंने (सूरह नहल की) ये आयत पढ़ी, अगर तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें सताया गया हो। (अन नहल : 126)

وَقَالَ ابْنُ سِيرِينَ : يَقَاصُهُ، وَقَرَأَ: ﴿وَإِنْ عَاقَبْتُمْ لَفَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ﴾ [النحل: 126].

2360. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उनसे इब्ना ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि इब्ना बिन रबीआ की बेटी हिन्द (रज़ि.) हज़िरे ख़िदमत हुई और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अबू सुफ़यान (रज़ि.) (जो मेरे शौहर हैं वो) बख़ील हैं। तो क्या उसमें कोई हर्ज है अगर मैं उनके माल में से लेकर अपने बाल-बच्चों को खिलाया करूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कि तुम दस्तूर के मुताबिक़ उनके माल में से लेकर खिलाओ तो उसमें कोई हर्ज नहीं है। (राजेअ : 2211)

٢٤٦٠ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: «جَاءَتِ مِنْدُبَةُ بِنْتُ عَقْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبَا سَفْيَانَ رَجُلٌ وَسِيكَ، لَهْلُ عَلَى خَرَجٍ أَنْ أُطِيعَ مِنَ الْبَيْتِ لِي عِيَالًا؟ فَقَالَ: ((لَا خَرَجَ عَلَيْكَ إِنْ تَطِيعْتَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ))» [راجع: 2211]

हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) ने इसी हदीष पर फ़त्वा दिया है कि ज़ालिम का जो माल भी मिल जाए मज़लूम अपने माल की मिक़दार में उसे ले सकता है, मुताख़िरन अहनाफ़ का भी फ़त्वा यही है। (तफ़हीमुल बुखारी, पारा नं. 9 पेज नं. 124)

2461. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, कहा कि मुइसे यज़ीद ने बयान किया, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे इब्ना बिन आमिर (रज़ि.) ने कि हमने नबी करीम

٢٤٦١ - حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي يَزِيدُ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: ((قُلْنَا

(ﷺ) से अर्ज किया, आप हमें मुख्तलिफ़ मुल्क वालों के पास भेजते हैं और (कुछ दफ़ा) हमें ऐसे लोगों में उतरना पड़ता है कि वो हमारी ज़ियाफ़त तक नहीं करते, आपकी ऐसे मौकों पर क्या हिदायत है? आप (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया कि अगर तुम्हारा क़याम किसी क़बीले में हो और तुम से ऐसा बर्ताव किया जाए जो किसी मेहमान के लिये मुनासिब है तो तुम उसे कुबूल कर लो, लेकिन अगर वो न करें तो तुम खुद मेहमानी का हक़ उनसे वसूल कर लो। (दीगर मक़ाम: 6137)

لِّلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّكَ تَبْعُنَا فَتَزُولُ بِقَوْمٍ لَا يَفْرَوْنَنَا؛ فَمَا تَرَىٰ فِيهِ؟ فَقَالَ لَنَا: ((إِنْ نَزَلْتُمْ بِقَوْمٍ فَأَمَرَ لَكُمْ بِمَا يَنْهَى لِلضَّيْفِ فَأَقْبَلُوا، فَإِنْ لَمْ يَفْعَلُوا فَخُذُوا مِنْهُمْ حَقَّ الضَّيْفِ)). [طرفه ن: ٦١٣٧].

मेहमानी का हक़ मेज़बान की मर्जी के खिलाफ़ वसूल करने के लिये जो इस हदीष में हिदायत है उसके बारे में मुहदिषीन ने मुख्तलिफ़ तौजीहात बयान की हैं। कुछ हज़रात ने लिखा है कि ये हुक्म मख़मसा की हालत का है। बादया और गांव के दूर-दराज़ इलाकों में अगर कोई मुसाफ़िर खुसूसन अरब के माहौल में पहुँचता तो उसके लिये खाने पीने का ज़रिया अहले बादिया की मेज़बानी के सिवा और कुछ न था। तो मतलब ये हुआ कि अगर ऐसा मौका हो और क़बीले वाले ज़ियाफ़त से मना कर दें, उधर मुजाहिद मुसाफ़िरों के पास कोई सामान न हो तो वो अपनी जान बचाने के लिये उनसे अपना खाना-पीना उनकी मर्जी के खिलाफ़ भी वसूल कर सकते हैं। इस तरह की सज़्ज़तें इस्लाम में मख़मसा के औकात में हैं। दूसरी तौजीह ये की गई है कि ज़ियाफ़त अहले अरब में एक आम इफ़ व आदत की हैषियत रखती थी। इसलिये उस इफ़ की रोशनी में मुजाहिदीन को आपने हिदायत दी थी। एक तौजीह ये भी की गई है कि नबी करीम (ﷺ) ने अरब के बहुत से क़बीलों से मुआहिदा किया था कि अगर मुसलमानों का लश्कर उनके क़बीले से गुज़रे और एक दो दिन के लिये उनके यहाँ क़याम करे तो वो लश्कर की ज़ियाफ़त करें। ये मुआहिदा हुजूर अकरम (ﷺ) के उन मकातीब (चिट्ठियों) में मौजूद है जो आपने अरब क़बीलों के सरदारों के नाम भेजे थे और जिनकी तख़रीज ज़ैल्ज़ी ने भी की है। बहरहाल मुख्तलिफ़ तौजीहात इसकी की गई है।

हज़रात मौलाना अनवर शाह कश्मीरी (रह.) ने इफ़ व आदत वाले जवाब को पसन्द किया है। या'नी अरब के यहाँ खुद ये बात जानी पहचानी थी कि गुज़रने वाले मुसाफ़िरों की ज़ियाफ़त अहले क़बीला को ज़रूर करनी चाहिये। क्योंकि अगर ऐसा न होता तो अरब के चटियल और बेआब व गियाह (बिना दाना-पानी के) मैदानों में सफ़र अरब जैसी ग़रीब क़ौम के लिये तक्लीबन नामुम्किन हो जाता और उसी के मुताबिक़ हुजूर अकरम (ﷺ) का भी हुक्म था। गोया ये एक इतिज़ामी ज़रूरत भी थी। और जब दो एक मुसाफ़िर उसके बग़ैर दूर-दराज़ के सफ़र नहीं कर सकते थे तो फ़ौजी दस्ते किस तरह उसके बग़ैर सफ़र कर सकते। (तप्पहीमुल बुखारी)

हदीषे बाब से ये मतलब निकलता है कि मेहमानी करना वाजिब है। अगर कुछ लोग मेहमानी न करें तो उनसे ज़बरन मेहमानी का ख़र्च वसूल किया जाए। इमाम लैष बिन सअद (रह.) का यही मज़हब है। इमाम अहमद (रह.) से मन्कूल है कि ये वजूब देहात वालों पर है न बस्ती वालों पर और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और शाफ़िई (रह.) और जुम्हूर इलमा का ये क़ौल है कि मेहमानी करना सुन्नत मुअक़दा है। और बाब की हदीष उन लोगों पर महमूल है जो मुज्तर हों। जिनके पास राहे ख़र्च बिलकुल न हो, ऐसे लोगों की ज़ियाफ़त वाजिब है।

कुछ ने कहा ये हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था जब लोग मुहताज थे और मुसाफ़िरों की ख़ातिरदारी वाजिब थी, बाद उसके मन्सूख़ हो गया क्योंकि दूसरी हदीष में है कि जाइज़ा ज़ियाफ़त का एक दिन रात है, और जाइज़ा तफ़ज़ूल के तौर पर होता है न वजूब के तौर पर। कुछ ने कहा ये हुक्म खास है उन लोगों के वास्ते जिनको हाकिमे इस्लाम भेजे। ऐसे लोगों का खाना और ठिकाना उन लोगों पर वाजिब है जिनकी तरफ़ वो भेजे हैं। और हमारे ज़माने में भी इसका क़ायदा ये है हाकिम की तरफ़ से जो चपरासी भेजे जाते हैं उनकी दस्तक (बेगार) गांव वालों को देनी पड़ती है। (वहीदी)

## बाब 19 : चौपालों के बारे में

और नबी करीम (ﷺ) अपने सहाबा के साथ बनू साअदा की चौपाल में बैठे थे।

2462. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझको युनुस ने खबर दी कि इब्ने शिहाब ने कहा, मुझको खबर दी अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने खबर दी कि इमर (रज़ि.) ने कहा, जब अपने नबी करीम (ﷺ) को अल्लाह तआला ने वफ़ात दे दी तो अंसार बनू साअदा के सक्रीफ़ा (चौपाल) में जमा हुए। मैंने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि आप हमें भी वही ले चलिए। चुनौचे हम अंसार के यहाँ सक्रीफ़ा बनू साअदा में पहुँचे।

(दीगर मक़ाम : 3445, 3928, 4021, 6829, 6830, 7323)

١٩- بَابُ مَا جَاءَ فِي السَّقَائِفِ

وَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ.

٢٤٦٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ ح وَأَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ جِئْنَا تَوْفَى اللَّهَ نَبِيَّهُ ﷺ: ((إِنَّ الْأَنْصَارَ اجْتَمَعُوا فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، فَقُلْتُ لِأَبِي بَكْرٍ: انْطَلِقْ بِنَا، فَجِئْنَاكُمْ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ)).

[أطرافه في : ٣٤٤٥، ٣٩٢٨، ٤٠٢١،

٦٨٢٩، ٦٨٣٠، ٧٣٢٣.]

**तशरीह :** हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सदे बाब ये है कि बस्तियों में अवाम व ख़्वास की बैठक के लिये चौपाल का आम रिवाज है। चुनौचे मदीना मुनव्वरा में भी क़बीला बनी साअदा में अंसार की चौपाल थी। जहाँ बैठकर अवामी उमूर अंजाम दिये जाते थे, हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की इमरत व ख़िलाफ़त की बेअत का मसला भी उसी जगह हल हुआ।

सक्रीफ़ा का तर्जुमा मौलाना वहीदुज़्ज़माँ ने मँडवा से किया है। जो शादी वगैरह तक्रिबात में आरज़ी तौर पर साये के लिये कपड़ों या फूस के छप्परों से बनाया जाता है। मुनासिब तर्जुमा चौपाल है जो मुस्तक़िल अवामी आरामगाह होती है।

आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात पर उम्मत के सामने सबसे अहमतरिन मसला आप (ﷺ) की ज़ौनशीनी का था, अंसार और मुहाजिरीन दोनों ख़िलाफ़त के उम्मीदवार थे। आख़िर अंसार ने कहा कि एक अमीर अंसार में से हो एक मुहाजिरीन में से, वो इसी ख़याल के तहत सक्रीफ़ा बनू साअदा में पंचायत कर रहे थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने हालात का भांप लिया और इस बुनियादी इफ़्तिराक़ को ख़त्म करने के लिये आप सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) को साथ लेकर वहाँ पहुँच गए। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने हदीषे नबवी अल्-अइम्मतु मिन कुरैश पेश की जिस पर अंसार ने सर को तस्लीमे ख़म कर दिया। फ़ौरन हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त का ऐलान कर दिया, और बिला इख़्तिलाफ़ (निर्विरोध) तमाम अंसार व मुहाजिरीन ने आपके हाथ पर बेअत कर ली। सय्यदना हज़रत अली (रज़ि.) ने भी बेअत कर ली और उम्मत का शीराज़ा मुंतशिर होने से बच गया। ये सारा वाक़िया सक्रीफ़ा बनू साअदा में हुआ था।

## बाब 20 : कोई शख़्स अपने पड़ौसी को अपनी दीवार में लकड़ी गाड़ने से न रोके

٢٠- بَابُ لَا يَمْنَعُ جَارَ جَارَةٍ أَنْ

يَغْرِزَ خَشَبَةً فِي جِدَارِهِ

2563. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अअरज ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूल करीम (ﷺ) ने फर्माया, कोई शख्स अपने पड़ोसी को अपनी दीवार में खूटी गाड़ने से न रोके। फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) कहा करते थे, ये क्या बात है कि मैं तुम्हें उससे मुँह फेरने वाला पाता हूँ। कसम अल्लाह! मैं तो इस हदीष का तुम्हारे सामने बराबर ऐलान करता ही रहूँगा।

(दीगर मक़ाम : 5627, 5628)

٢٥٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يَمْنَعُ جَارَ جَارَةٍ أَنْ يَغُورَ عَشْتَهُ فِي جِدَارِهِ)). ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ: مَا لِي أَرَاكُمْ عَنْهَا مُغْرِمِينَ؟ وَاللَّهُ لَأَرْمِيَنَّ بِهَا نَيْنَ أَكْفَالِكُمْ.

[طرفاء ٣: ٥٦٢٧, ٥٦٢٨]

**तशरीह:** या एक कड़ी लगाने से, क्योंकि हदीष में दोनों तरह बसैगा जमअ और बसैगा मुफ़रद मन्कूल है। इमाम शाफ़िई (रह.) ने कहा कि ये हुक्म इस्तिहबाबन् है वरना किसी को ये हक़ नहीं पहुँचता कि पड़ोसी की दीवार पर उसकी इजाज़त के बग़ैर कड़ियाँ रखे। मालकिया और हन्फ़िया का भी यही क़ौल है। इमाम अहमद और इस्हाक़ और अहले हदीष के नज़दीक ये हुक्म वजबून है अगर पड़ोसी उसकी दीवार पर कड़ियाँ लगाना चाहे तो दीवार के मालिक को उसका रोकना जाइज़ नहीं। इसलिये कि उसमें कोई नुक़सान नहीं और दीवार मज़बूत होती है। चाहे दीवार में सूराख़ करना पड़े। इमाम बैहकी ने कहा, शाफ़िई (रह.) का पुराना क़ौल यही है और हदीष के ख़िलाफ़ कोई हुक्म नहीं दे सकता और ये हदीष सहीह है। (वहीदी)

आख़िर हदीष में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का एक ख़ुप्पी आमेज़ (नाराज़गी भरा) क़ौल मन्कूल है जिसका लफ़्ज़ी तर्जुमा यँ है कि कसम अल्लाह की मैं इस हदीष को तुम्हारे मुँदों के बीच फेंकूँगा। या'नी ज़ोर-ज़ोर से तुमको सुनाऊँगा और ख़ूब तुमको शर्मिन्दा करूँगा। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के इस क़ौल से मा'लूम हुआ कि जो लोग हदीष के ख़िलाफ़ किसी पीर या इमाम या मुज्ताहिद के क़ौल पर जमे हुए हैं, उनको छेड़ना और हदीष नबवी ऐलानिया उनको बार-बार सुनाना दुरुस्त है, शायद अल्लाह उनको हिदायत दे।

## बाब 21 : रास्ते में शराब का बहा देना दुरुस्त है

2464. हमसे अबू यह्य़ा मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा हमको अफ़फ़ान बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे प्राबित ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि मैं अबू तलहा (रज़ि.) के मकान में लोगों को शराब पिला रहा था। उन दिनों खज़ूर ही की शराब पिया करते थे (फिर ज्यों ही शराब की हुर्मत पर आयते कुआनी नाज़िल हुई) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मुनादी से निदा कराई कि शराब हाराम हो गई है। उन्होंने कहा, (ये सुनते ही) अबू तलहा (रज़ि.) ने कहा कि बाहर ले जाकर इस शराब को बहा दे। चुनाँचे मैंने बाहर निकलकर सारी शराब बहा दी। शराब मदीना की गलियों में बहन

## ٢١- بَابُ صَبِّ الْخَمْرِ فِي الطَّرِيقِ

٢٤٦٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَبُو يَحْيَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَفَّانُ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((كَتَبْتُ سَائِلِي الْقَوْمَ فِي مَنَزِلِ أَبِي طَلْحَةَ، وَكَانَ خَمْرُهُمْ يَوْمَئِذٍ الْقَضِيخَ، فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، مُنَادِيًا يُنَادِي: ((أَلَا إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ)). فَقَالَ لِي أَبُو طَلْحَةَ: اخْرُجْ فَأَهْرِقْهَا،

लगी, तो कुछ लोगों ने कहा, यूँ मा'लूम होता है कि बहुत से लोग इस हालत में क़त्ल कर दिये गए हैं कि शराब उनके पेट में मौजूद थी। फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, वो लोग जो ईमान लाए और अमल सल्लेह किये, उन पर उन चीज़ों का कोई गुनाह नहीं है, जो पहले खा चुके हैं। (आख़िर आयत तक)

(दीगर मक़ाम : 4617, 4620, 5580, 5582, 5583, 5584, 5600, 5622, 7253)

فَخَرَجْتُ فَهَرَقْتُهَا، فَبَرَزَتْ لِي مِثْلُ الْمَدِينَةِ. فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ : لَقَدْ قِيلَ قَوْمٌ وَهِيَ لِي بِطُورِهِمْ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ : ﴿لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ إِمَّا أَنْ طَعِمُوا﴾ (الآية).

[اطرافه فی : ٤٦١٧، ٤٦٢٠، ٥٥٨٠]

٥٥٨٢، ٥٥٨٣، ٥٥٨٤، ٥٦٠٠

[٥٦٢٢، ٧٢٥٣]

बाब का मतलब हदीष के लफ़्ज़ फ़जरत फ़ी सिककिल मदीनति से निकल रहा है। मा'लूम हुआ कि रास्ते की ज़मीन सब लोगों में मुश्तरक (संयुक्त) है मगर वहाँ शराब वगैरह बहा देना दुस्त है बशर्ते कि चलने वालों को उससे तकलीफ न हो। इलमा ने कहा है कि रास्ते में इतना बहुत पानी बहाना कि चलने वालों को तकलीफ़ हो मना है तो नजासत वगैरह डालना ब़तरीके औला मना होगा। अबू तलहा (रज़ि.) ने शराब को रास्ते में बहा देने का हुक्म इसलिये दिया होगा कि आम लोगों को शराब की हुर्मत मा'लूम हो जाए। (वहीदी)

## बाब 22 : घरों के सेहन का बयान और उनमें बैठना और रास्तों में बैठना

और हजरत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने अपने घर के सेहन में एक मस्जिद बनाई, जिसमें वो नमाज़ पढ़ते और कुर्आन की तिलावत किया करते थे। मुश्किों की औरतों और बच्चों की वहाँ भीड़ लग जाती और सब बहुत मुतअजिब (आश्चर्य चकित) होते। उन दिनों नबी करीम (ﷺ) का क़याम मक्का में था।

2465. हमसे मुआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उमर हफ़्स बिन मैसरा ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन यसार ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, रास्तों पर बैठने से बचो। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम तो वहाँ बैठने पर मजबूर हैं। वही हमारे बैठने की जगह होती है कि जहाँ हम बातें करते हैं। इस पर आपने फ़र्माया कि अगर वहाँ बैठने की मजबूरी ही है तो रास्ते का हक़ भी अदा करो। सहाबा ने पूछा और रास्ते का हक़ क्या है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, निगाह नीची रखना, किसी को ईज़ा देने से बचना, सलाप का

## ٢٢- بَابُ أَفْيَةِ الثُّورِ وَالْجُلُوسِ

فِيهَا، وَالْجُلُوسِ عَلَى الصُّعَدَاتِ

وَقَالَتْ عَائِشَةُ: لَأَنْتَى أَبُو بَكْرٍ مَسْجِدًا بِنَاءَ دَارِهِ يُصَلِّي فِيهِ وَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَيَقْصِفُ عَلَيْهِ بَسَاءَ الْمَشْرُوكِينَ وَأَهْلَاءَهُمْ يَغْجَبُونَ مِنْهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ يَوْمِيْلُو بِمَكَّةَ.

٢٤٦٥- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَصَّالَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عُمَرَ حَفْصُ بْنُ مَسْرُورٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عِظَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْتَكُمْ وَالْجُلُوسَ عَلَى الطُّرُقَاتِ)). فَقَالُوا: مَا لَنَا بِئْسَ إِنَّمَا هِيَ مَجَالِسُنَا تَتَحَدَّثُ فِيهَا. قَالَ: ((لَئِنْ أَتَيْتُمْ إِلَى الْمَجَالِسِ فَأَعْطُوا الطَّرِيقَ حَقَّهَا)). قَالُوا: وَمَا حَقُّ الطَّرِيقِ؟ قَالَ: ((غَضُّ

जवाब देना, अच्छी बातों के लिये लोगों को हुक्म करना, और बुरी बातों से रोकना।

(दीगर मक़ाम : 6229)

النَّصْرُ، وَكَفُّ الْأَذَى، وَرَدُّ السَّلَامِ، وَأَمْرٌ  
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ).

[طرفه في : ٦٢٢٩].

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने बहरे तवील में आदाबुत तरीक़ को यूँ नज़्म फ़र्माया है,

जमअतु आदाब मन रामलजुलूस अलतरीक़ि मिन कौलि ख़ैरिल्ख़लिक् इन्साना  
अफ़िशस्सलाम व अहसिन फिल्कलाम वशमुत आतिसन व सलामन रूद इहसान  
फिल्हम्लि आविन व मज़्लूमन अइन व अगिषलहकफ़ान वहदि सबीलन वहदि हैराना  
बिल्डिफ़ि मुर वन्ह मन अन्कर व कफ़ अज़न व गज़ तफ़न व अक्षिर ज़िक़र मौलाना

या'नी अह्मदीये नबवी से मैंने उस शख़्स के लिये आदाबुत तरीक़ जमा किया है जो रास्तों में बैठने का इरादा करे। सलाम का जवाब दो, अच्छा कलाम करो, छींकने वाले को अल्हम्दुलिल्लाह कहने पर यरहमुक़ल्लाह से दुआ दो। एहसान का बदला एहसान से अदा करो, बोझ वालों को बोझ उठाने में मदद करो, मज़्लूम की इआनत करो, परेशानहाल की फरियाद सुनो, मुसलमानों, भूले-भटके लोगों की रहनुमाई करो, नेक कामों का हुक्म करो, बुरी बातों से रोक दो और किसी को तकलीफ़ देने से रुक जाओ, और आँखें नीची किये रहो और हमारे ख़ब तबारक व तआला की याद बक़रत करते रहा करो। जो इन हुक्क को अदा करे उसके लिये रास्तों में बैठना दुरुस्त है।

### बाब 23 : रास्तों में कुँआ बनाना जबकि उनसे किसी को तकलीफ़ न हो

٢٣- بَابُ الْآبَارِ النَّبِيِّ عَلَى الطَّرِيقِ  
إِذَا لَمْ يَتَأَذَّ بِهَا

2466. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे अबूबक्र के गुलाम सुमय ने, उनसे अबू सल्लेह सिमान ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक शख़्स रास्ते में सफ़र कर रहा था कि उसे प्यास लगी। फिर उसे रास्ते में एक कुँआ मिला और वो उसके अंदर उतर गया और पानी पिया। जब बाहर आया तो उसकी नज़र एक कुत्ते पर पड़ी जो हाँफ़ रहा था और प्यास की सख़ती से कीचड़ चाट रहा था। उस शख़्स ने सोचा कि इस वक़्त ये कुत्ता भी प्यास की उतनी ही शिद्दत में मुब्तला है जिसमें मैं था। चुनौचे वो फिर कुँआ में उतरा और अपने जूते में पानी भरकर उसने कुत्ते को पिलाया। अल्लाह तआला के यहाँ उसका ये अमल मक्बूल हुआ और उसकी मज़िफ़रत कर दी गई। सहाबा ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या जानवरों के सिलसिले में भी हमें अज़्र मिलता है? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, हर जानदार मख़लूक के सिलसिले में अज़्र मिलता है। (राजेअ : 173)

٢٤٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ  
مَالِكٍ عَنْ سَمِيِّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي  
صَالِحِ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ  
عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا رَجُلٌ بِطَرِيقٍ  
اشْتَدَّ عَلَيْهِ الْعَطَشُ، فَوَجَدَ بِئْرًا فَنَزَلَ فِيهَا  
فَشَرِبَ، ثُمَّ خَرَجَ، فَإِذَا كَلْبٌ يَلْهَثُ  
يَأْكُلُ التُّرَى مِنَ الْعَطَشِ، فَقَالَ الرَّجُلُ:  
لَقَدْ بَلَغَ هَذَا الْكَلْبُ مِنَ الْعَطَشِ مِثْلَ  
الَّذِي كَانَ بَلَغَ مِنِّي، فَنَزَلَ الْبِئْرَ فَمَلَأَ خُفَّهُ  
مَاءً فَسَقَى الْكَلْبَ، فَشَكَرَ اللَّهُ لَهُ  
فَفَقَّرَ لَهُ)). قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَإِنْ لَنَا  
فِي الْبَهَائِمِ لِأَجْرًا؟ فَقَالَ: ((فِي كُلِّ ذَاتِ  
كَبٍ رَطْبَةٍ أَجْرٌ)). [راجع : ١٧٣]

**तशरीह:** मुज्जहिदे मुत्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से ये मसला निकाला कि रास्ते में कुँआ खोद सकते हैं ताकि आने-जाने वाले उसमें से पानी पियें और आराम उठाएँ बशर्त कि ज़रूर का डर न हो, वरना खोदने वाला ज़ामिन होगा और ये भी ज़ाहिर हुआ कि हर जानदार को ख्वाह वो इंसान हो या जानवर, काफ़िर हो या मुसलमान, सबको पानी पिलाना बहुत बड़ा कारे प्रवाब है। यहाँ तक कि कुत्ता भी हक़ रखता है कि वो प्यासा हो तो उसे भी पानी पिलाया जाए।

## बाब 24 : रास्ते में से तकलीफ़ देने वाली

### चीज़ को हटा देना

और हम्माम ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से बयान किया कि रास्ते से किसी तकलीफ़देह चीज़ को हटा देना भी सद्क़ा है।

आम गुज़रगाहों (रास्तों) की हिफ़ाज़त और उनकी ता' मीर व सफ़ाई इस क़दर ज़रूरी है कि वहाँ से एक तिनके को दूर कर देना भी एक बड़ा कारे प्रवाब करार दिया गया और किसी पत्थर, काटे, कूड़े को दूर कर देना इमान की अलामत बतलाया गया। इंसानी मफ़ादे आम्मा (सार्वजनिक हित) के लिये ऐसा होना बेहद ज़रूरी था। ये इस्लाम की अहम ख़ूबी है कि उसने हर मुनासिब जगह पर ख़िदमते ख़ल्क (जनता सेवा) को मद्देनज़र रखा है।

## बाब 25 : ऊँचे और पस्त बालाखानों में छत वग़ैरह पर रहना जाइज़ है नीज़ झरोखे और रोशनदान बनाना

2467. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने उययना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे इब्ना ने बयान किया, उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना के एक बुलन्द मकान पर चढ़े। फिर फ़र्माया, क्या तुम लोग भी देख रहे हो जो मैं देख रहा हूँ कि (अन्क़रीब) तुम्हारे घरों में फ़िले इस तरह बरस रहे होंगे जैसे बारिश बरसती है। (राजेज़: 1787)

**तशरीह:** नबी करीम (ﷺ) मदीना के एक बुलन्द मकान पर चढ़े उसी से बाब का तर्जुमा निकला बशर्त कि मुहल्ले वालों की बेपरदगी न हो। इस हदीष में ये इश़ाद है कि मदीना मे बड़े-बड़े फिले और फ़सादात होने वाले हैं। जो बाद के आने वाले ज़मानों में खुसूसन यज़ीद के दौर में रूनुमा (प्रकट) हुए कि मदीना ख़राब और बर्बाद हो गया। मदीना के बहुत लोग मारे गए। कई दिनों तक हरमे नबवी में नमाज़ बन्द रही। फिर अल्लाह का फ़ज़ल हुआ कि वो दौर ख़तम हो गया। ख़ास तौर पर आजकल अहदे सज़्दी में मदीना मुनव्वरा अमन व अमान का गहवारा बना हुआ है। हर क़िस्म की सहूलतें मयस्सर हैं। मदीना तिज़ारत और रोज़गार की मण्डी बनता जा रहा है। अल्लाह पाक इस हुकूमत को कायम दायम रखे और मदीना मुनव्वरा को मज़ीद दर मज़ीद तरक्की और रौनक अता करे, आमीन। राक़िमुल हुरूफ़ (लेखक) ने अपनी उम्रे अज़ीज़ के आख़िरी हिस्से मुहर्रम 1390 हिजरी में मदीना शरीफ़ को जिस तरक्की और रौनक में पाया है वो हमेशा याद रखने के क़ाबिल है। अल्लाह पाक अपने हबीब (ﷺ) का ये शहर एक दफ़ा और दिखला दे, आमीन।

## ۲۴- بَابُ إِمَاطَةِ الْأَذَى

وَقَالَ هَمَّامٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ  
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يُمِيطُ الْأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ  
صَدَقَةٌ)).

## ۲۵- بَابُ الْغُرْفَةِ وَالْعُلْيَةِ الْمَشْرِفَةِ

وَعَبْرِ الْمَشْرِفَةِ فِي السُّطُوعِ  
وَعَبْرِهَا

۲۴۶۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ  
حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرُورَةَ  
عَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ:  
أَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أَطَامٍ مِنَ أَطَامِ  
الْمَدِينَةِ ثُمَّ قَالَ: ((هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى؟  
إِنِّي أَرَى؟ مَوَاقِعَ الْفِتَنِ خِلَالَ بُيُوتِكُمْ  
كَمَوَاقِعِ الْقَطْرِ)). [راجع: ۱۸۷۸]

2468. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक्रील ने और उनसे इब्ने शिहाब ने कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी प्रौर ने खबर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.) ने बयान किया कि मैं हमेशा इस बात का आरजूमन्द रहता था कि हज्रत उमर (रजि.) से औहजस्त (ﷺ) की उन दो बीवियों के नाम पूछूँ जिनके बारे में अल्लाह तआला ने (सूरह तहरीम में) फ़र्माया है, अगर तुम दोनो अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है) कि तुम्हारे दिल बिगड़ गए हैं। फिर मैं उनके साथ हज्ज को गया। उमर (रजि.) रास्ते से क़ज़ाए हाजत के लिये हटे तो मैं भी उनके साथ (पानी का एक) छागल लेकर गया। फिर वो क़ज़ाए हाजत के लिये चले गए और जब वापस आए तो मैंने उनके दोनों हाथों पर छागल से पानी डाला। और उन्होंने वुजू किया, फिर मैंने पूछा, या अमीरुल मोमिनीन! नबी करीम (ﷺ) की बीवियों में वो दो ख़्वातीन कौनसी हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने ये फ़र्माया कि, तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो। उन्होंने फ़र्माया, इब्ने अब्बास! तुम पर हैरत है। वो तो आइशा और हफ़्सा (रजि.) हैं। फिर उमर (रजि.) मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर पूरा ब़ाक्रिया बयान करने लगे। आपने बतलाया कि बन्नु उमय्या बिन ज़ैद के क़बीले में जो मदीना से मिला हुआ था, मैं अपने एक अंसारी पड़ोसी के साथ रहता था। हम दोनों ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाजिरी की बारी मुक़रर कर रखी थी। एक दिन वो हाज़िर होते और एक दिन मैं। जब मैं हाज़िरी देता तो उस दिन की तमाम ख़बरें वग़ैरह लाता (और उनको सुनाता) और जब वो हाज़िर होते तो वो भी इसी तरह ही करते। हम क़ुरैश के लोग (मक्का में) अपनी औरतों पर ग़ालिब रहा करते थे। लेकिन जब हम (हिज्रत करके) अंसार के यहाँ आए तो उन्हें देखा कि उनकी औरतें खुद उन पर ग़ालिब थीं। हमारी औरतों ने भी उनका तरीक़ा इख़्तियार करना शुरू कर दिया। मैंने एक दिन अपनी बीवी को डांटा, तो उन्होंने भी उसका जवाब दिया। उनका ये जवाब मुझे नागवार मा'लूम हुआ। लेकिन उन्होंने कहा कि मैं अगर जवाब देती हूँ तो तुम्हें नागवारी क्यूँ होती है। क़सम अल्लाह की नबी करीम

۲۴۶۸- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قُرَيْبٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمْ أَرَلْ حَرِيصًا عَلَى أَنْ أَسْأَلَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ الْمَرَاتَيْنِ مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ اللَّتَيْنِ قَالَ اللَّهُ لَهُمَا: إِذَا تَوَبَّا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَفَتْ لَكُمَا، لَمْ يَخُفْ مَعَهُ، فَحَدَّثَنِي وَحَدَّثْتُ مَعَهُ بِالْإِذَاوَةِ، فَتَبَرَّرَ، حَتَّى جَاءَ لَسْتُ عَلَى يَدَيْهِ مِنَ الْإِذَاوَةِ قَرَضًا. قُلْتُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، مِنَ الْمَرَاتَيْنِ مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ اللَّتَيْنِ قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لَهُمَا: إِذَا تَوَبَّا إِلَى اللَّهِ فَقَالَ: وَاطْمَئِنَّا لَكَ يَا ابْنَ عَبَّاسٍ، عَدِيَّةٌ وَخَفِصَةٌ. ثُمَّ اسْتَقْبَلَ عُمَرَ الْحَدِيثَ يَسْأَلُهُ فَقَالَ: إِنِّي كُنْتُ وَجَّازًا لِي مِنَ الْأَنْصَارِ لِي بَنِي أُمَيَّةَ بْنِ زَيْدٍ - وَهِيَ مِنْ عَوَالِي الْمَدِينَةِ - وَكُنَّا نَقَارِبُ النَّزُولَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَنَزَلُ هُوَ يَوْمًا وَأَنْزِلُ يَوْمًا، فَإِذَا نَزَلْتُ جِئْتُهُ مِنْ غَيْرِ ذَلِكَ الْيَوْمِ مِنَ الْأَمْرِ وَغَيْرِهِ، وَإِذَا نَزَلَ فَقَلَّ مِثْلُهُ. وَكُنَّا نَفْشَرُ قُرَيْشٍ نَغْلِبُ النِّسَاءَ، فَلَمَّا قَلِمْنَا عَلَى الْأَنْصَارِ فَإِذَا هُمْ قَوْمٌ تَغْلِبُهُمْ نِسَاؤُهُمْ، فَطَفِقَ يَسْأَلُونَا بِأَعْدُنَ مِنْ أَدَبِ نِسَاءِ الْأَنْصَارِ، فَصَبَحْتُ عَلَى امْرَأَتِي، فَرَأَجَعْتَنِي، فَأَنْكَرْتُ أَنْ تَرَأِجِعَنِي. فَقَالَتْ:



(ﷺ) की अज़्वाज तक आपको जवाब दे देती हैं और कुछ बीवियाँ तो आपसे पूरे दिन और पूरी रात ख़फ़ा रहती हैं। इस बात से मैं बहुत घबरा गया और मैंने कहा कि उनमें से जिसने भी ऐसा किया होगा वो तो बड़े नुक़सान और ख़सारे में है। इसके बाद मैंने कपड़े पहने और उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा (रज़ि.) के पास पहुँचा और कहा, ऐ हफ़्सा ! क्या तुममें से कोई नबी करीम (ﷺ) से पूरे दिन-रात तक गुस्सा रहती हैं। उन्होंने कहा कि हाँ! मैं बोल उठा कि फिर तो वो तबाही और नुक़सान में रहीं। क्या तुम्हें इससे अमन है कि अल्लाह तआला अपने रसूल (ﷺ) की ख़फ़गी की वजह से (तुम पर) गुस्सा हो जाए और तुम हलाक हो जाओ। रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा चीज़ों की माँग हर्गिज़ न किया करो, न किसी मामले में आप (ﷺ) की किसी बात का जवाब दो और न आप पर ख़फ़गी का इज़हार होने दो, अलबत्ता जिस चीज़ की तुम्हें ज़रूरत हो, वो मुझसे माँग लिया करो, किसी खुदफ़रेबी में मुब्तला न रहना, तुम्हारी ये पड़ौसन तुमसे ज़्यादा जमील और नज़ीफ़ हैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) को ज़्यादा प्यारी भी हैं। आपकी मुराद आइशा (रज़ि.) से थी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि उन दिनों ये चर्चा हो रहा था कि गुस्सान के फौजी हमसे लड़ने के लिये घोड़ों के नअल बाँध रहे हैं। मेरे पड़ौसी एक दिन अपनी बारी पर मदीना गए हुए थे। फिर इशा के वक़्त वापस लौटे। आकर मेरा दरवाज़ा उन्होंने बड़ी ज़ोर से खटखटाया और कहा, क्या आप सो गए हैं? मैं बहुत घबराया हुआ बाहर आया, उन्होंने कहा कि एक बहुत बड़ा हादसा पेश आ गया है। मैंने पूछा क्या हुआ? क्या गुस्सान का लश्कर आ गया? उन्होंने कहा बल्कि इससे भी बड़ा और संगीन हादसा, वो ये कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी। ये सुनकर उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, हफ़्सा तो तबाह व बर्बाद हो गई मुझे तो पहले ही खटका था कि कहीं ऐसा न हो जाए (उमर रज़ि. ने कहा) फिर मैंने कपड़े पहने। सुबह की नमाज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ पढ़ी (नमाज़ पढ़ते ही) आँहज़रत (ﷺ) अपने बाला ख़ाने में तशरीफ़ ले गए और वहीं तन्हाई इख़ितयार कर ली। मैं हफ़्सा के यहाँ गया, देखा तो वो रो रही थीं। मैंने कहा, रो क्यों रही हो? क्या

وَلَمْ تُكْرِ أَنْ أَرَا جَعَكَ؟ قَوْلَهُ إِنَّ أَرْوَاحَ النَّبِيِّ ﷺ تَرَا جَعَهُ، وَإِنْ إِخْدَاهُنَّ لَتَهْجُرَهُ الْيَوْمَ حَتَّى اللَّيْلِ. فَأَلْفَزْنِي. فَقُلْتُ: خَابَتْ مَنْ قَلَّ مِنْهُنَّ بِعَظِيمٍ. ثُمَّ جَمَعْتُ عَلَى يَأْيِي لَدَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ فَقُلْتُ أَيْ حَفْصَةُ: أَلْفَاضِبُ إِخْدَاكُنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ الْيَوْمَ حَتَّى اللَّيْلِ؟ فَقَالَتْ: نَعَمْ. فَقُلْتُ: خَابَتْ وَخَسِرَتْ. أَفَأَمِنْ أَنْ يَفْضَبَ اللَّهُ لِفَضْبِ رَسُولِهِ ﷺ فَتَهْلِكِينَ؟ لَا تَسْكَبِي عَنِّي عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَلَا تُرَاجِعِي فِي شَيْءٍ، وَلَا تَهْجُرِيهِ، وَأَسْأَلُنِي مَا بَدَكَ. لَا يَفْرُكُ أَنْ كَانَتْ جَارَتُكَ هِيَ أَوْضًا مِنْكَ وَأَحَبُّ إِلَي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ (يُؤَيِّدُ عَائِشَةَ). وَكُنَّا نَحْذَرُ أَنْ غَسَّانَ تَقُولُ الْبَغَالُ لِفَرْزُونَا، فَتَزَلَّ صَاحِبِي يَوْمَ تَوَيَّيْتُ، لَوَجَعَ عِشَاءً فَضَرَبَ يَأْيِي ضَرْبًا شَدِيدًا وَقَالَ: أَلَايَمُّ هُوَ؟ فَفَرَعْتُ فَخَرَجْتُ إِلَيْهِ، وَقَالَ: حَدَّثَ أَمْرٌ عَظِيمٌ، قُلْتُ: مَا هُوَ، أَجَاءَتْ غَسَّانُ؟ قَالَ: لَا، بَلْ أَغْطَمَ مِنْهُ وَأَطْلُو، طَلَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ تَوَسَّاءَ. قَالَ: لَدَخَلْتُ حَفْصَةَ وَخَسِرَتْ. كُنْتُ أَظُنُّ أَنْ هَذَا يُوشِكُ أَنْ يَكُونَ فَجَمَعْتُ عَلَى يَأْيِي، فَصَلَّيْتُ صَلَاةَ الْفَجْرِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لَدَخَلْتُ مَشْرَبَةً لَهُ فَاسْتَرَلْتُ فِيهَا. لَدَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ، فَإِذَا هِيَ تَبْكِي. قُلْتُ مَا يَكِينُكَ، أَوَلَمْ أَكُنْ حَلَوْتُكَ؟ أَطْلَقَكُنَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَتْ: لَا أَتْرِي

पहले ही मैंने तुम्हें नहीं कह दिया था? क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम सबको तलाक़ दे दी है? उन्होंने कहा कि मुझे कुछ मा'लूम नहीं। आप बालाख़ाने में तशरीफ़ रखते हैं। फिर मैं बाहर निकला और मिम्बर के पास आया। वहाँ कुछ लोग मौजूद थे और कुछ रो भी रहे थे। थोड़ी देर तो मैं उनके साथ बैठा रहा। लेकिन मुझ पर रंज का ग़लबा हुआ, और मैं बालाख़ाने के पास पहुँचा। जिसमें आप (ﷺ) तशरीफ़ रखते थे। मैंने आप (ﷺ) के एक स्थाह गुलाम से कहा, (कि ओहज़रत ﷺ से कहो) कि इमर इजाज़त चाहता है। वो गुलाम अंदर गया और आपसे बातचीत करके वापस आया और कहा कि मैंने आपकी बात पहुँचा दी थी, लेकिन ओहज़रत (ﷺ) ख़ामोश हो गए। चुनौचे मैं वापस आकर उन्हीं लोगों के साथ बैठ गया जो मिम्बर के पास मौजूद थे। फिर मुझ पर रंज ग़ालिब आया और मैं दोबारा आया। लेकिन इस बार भी वही हुआ। फिर आकर उन्हीं लोगों में बैठ गया जो मिम्बर के पास थे। लेकिन इस बार फिर मुझसे नहीं रहा गया। और मैंने गुलाम से आकर कहा, कि इमर के लिये इजाज़त चाहो। लेकिन बात ज्यों की त्यों रही। जब मैं वापस हो रहा था कि गुलाम ने मुझको पुकारा और कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आपको इजाज़त दे दी है। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप खज़ूर की चटाई पर लेटे हुए थे, जिस पर कोई बिस्तर भी नहीं था। इसलिये चटाई के उभरे हुए हिस्सों का निशान आपके पहलू में पड़ गया। आप उस वक़्त एक ऐसे तकिये पर टेक लगाए हुए थे जिसके अंदर खज़ूर की छाल भरी गई थी। मैंने आप (ﷺ) को सलाम किया और खड़े ही खड़े अज़ा किया कि क्या आपने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है? आपने निगाह मेरी तरफ़ करके फ़र्माया कि नहीं! मैंने आपके ग़म को हल्का करने की कोशिश की और कहने लगा। अब भी मैं खड़ा ही था। या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप जानते ही हैं कि हम कु़रैश के लोग अपनी बीवियों पर ग़ालिब रहते थे। लेकिन जब हम एक ऐसी क़ौम में आ गये जिनकी औरतें उन पर ग़ालिब थीं। फिर हज़रत इमर (रज़ि.)

هُوَ ذَا فِي الْمَشْرُبَةِ. فَخَرَجْتُ فَجِئْتُ الْمَسِيرَ، فَإِذَا حَوْلَهُ رَهْطٌ يَتَكِي بَعْضُهُمْ فَجَلَسْتُ مَعَهُمْ قَلِيلًا. ثُمَّ عَلَنِي مَا أَجَدُ فَجِئْتُ الْمَشْرُبَةَ الَّتِي هُوَ فِيهَا، فَقُلْتُ لِلْعَلَامِ لَهُ أَسْوَدَ: اسْتَأْذِنْ لِيَمْرَ. فَدَعَلَ لَكُمْ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ: ذَكَرْتُكَ لَهُ فَصَنَتَ. فَانْتَصَرْتُ حَتَّى جَلَسْتُ مَعَ الرَّهْطِ الَّذِينَ عِنْدَ الْمَسِيرِ. ثُمَّ عَلَنِي مَا أَجَدُ فَجِئْتُ فَذَكَرْتُ مِثْلَهُ - فَجَلَسْتُ مَعَ الرَّهْطِ الَّذِينَ عِنْدَ الْمَسِيرِ. ثُمَّ عَلَنِي مَا أَجَدُ فَجِئْتُ الْعَلَامِ فَقُلْتُ: اسْتَأْذِنْ لِيَمْرَ - فَذَكَرْتُ مِثْلَهُ - فَلَمَّا وَثِقْتُ مُنْصَرِفًا فَإِذَا الْعَلَامُ يَذْهَبُ قَال: أَوْذَنَ لَكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَدَعَلْتُ عَلَيْهِ، فَإِذَا هُوَ مُعْطَجٌ عَلَى رِمَالِ حَصْبٍ، لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ فِرَاشٌ، لَمَّا أَتَى الرِّمَالَ بِحَبْنِهِ، فَتَكَبَّرَ عَلَى وَسَادَةٍ مِنْ أَدَمٍ حَفَنُوهَا إِلَيْهِ. فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، ثُمَّ قُلْتُ وَأَنَا قَائِمٌ: طَلَفْتُ هَسَاءً لَمْ تَرْفَعْ بَصَرَهُ إِلَيَّ فَقَالَ: ((لَا)). ثُمَّ قُلْتُ وَأَنَا قَائِمٌ اسْتَأْذِنُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَوْ رَأَيْتَنِي وَكُنَّا مَعَهُ فَرَيْتَنِي تَغْلِبُ النِّسَاءَ، فَلَمَّا قَامْنَا عَلَى قَوْمٍ تَغْلِبُهُمْ بِسَائِرِهِمْ. فَذَكَرْتُ. فَتَبَسَّمَ النَّبِيُّ ﷺ. ثُمَّ قُلْتُ: لَوْ رَأَيْتَنِي وَدَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ فَقُلْتُ لَا يَفْرُتُكَ أَنْ كَانَتْ جَارَتِكَ هِيَ أَوْحَا مِنْكَ وَأَخْبَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، يُرِيدُ عَائِشَةَ فَتَبَسَّمَ أُخْرَى فَجَلَسْتُ حِينَ رَأَيْتُهُ تَبَسَّمَ ثُمَّ

ने तफ्सील बयान की। इस बात पर रसूले करीम (ﷺ) मुस्कुरा दिये। फिर मैंने कहा मैं हफ्सा के यहाँ भी गया था और उससे कह आया था कि कहीं किसी खूदफरेबी में न मुक्तला रहना। ये तुम्हारी पड़ोसन तुमसे ज्यादा खूबसूरत और पाक हैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) को ज्यादा महबूब हैं। आप आइशा (रज़ि.) की तरफ इशारा कर रहे थे। इस बात पर आप दोबारा मुस्कुराए। जब मैंने आपको मुस्कुराते देखा, तो (आपके पास) बैठ गया और आपके घर में चारों तरफ देखने लगा। अल्लाह की कसम! सिवा तीन खालों के और कोई चीज़ वहाँ नज़र न आई। मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप अल्लाह तआला से दुआ फ़र्माइये कि वो आपकी उम्मत को कुशादगी अता कर दे। फ़ारस और रोम के लोग तो पूरी फ़राखी के साथ रहते हैं, दुनिया उन्हें खूब मिली हुई है हालाँकि वो अल्लाह तआला की इबादत भी नहीं करते। आँहज़रत (ﷺ) टेक लगाए हुए बैठे थे। आपने फ़र्माया, ऐ ख़त्ताब के बेटे! क्या तुम्हें अभी कुछ शुब्हा है? (तू दुनिया की दौलत को अच्छी समझता है) ये तो ऐसे लोग हैं कि उनके अच्छे अमल (जो वो मामलात की हद तक करते हैं उनकी जज़ा) इसी दुनिया में उनको दे दी गई है। (ये सुनकर) मैं बोल उठा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे लिये अल्लाह से मफ़िरत की दुआ कीजिए। तो नबी करीम (ﷺ) ने (अपनी अज़्वाज से) इस बात पर अलैहिदगी इख़्तियार कर ली थी कि आइशा (रज़ि.) से हफ़सा (रज़ि.) ने पोशिता बात कह दी थी। हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने इस इतिहाई ख़फ़ी की वजह से जो आपको हुई थी, फ़र्माया था कि मैं अब उनके पास एक महीने तक नहीं जाऊँगा और यही मौक़ा है जिस पर अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को आगाह किया था। फिर जब उन्तीस दिन गुज़र गए तो आप (ﷺ) आयशा (रज़ि.) के घर तशरीफ़ ले गए और उन्हीं के यहाँ से आपने इब्तिदा की। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि आपने तो अहद किया था कि हमारे यहाँ एक महीने तक नहीं तशरीफ़ लाएँगे और आज अभी उन्तीसवीं की सुबह है। मैं तो दिन गिन रही थी। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ये महीना उन्तीस दिन का है और वो महीना उन्तीस ही दिन का था। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया

رَفَعْتُ بَصْرِي فِي يَتِيهِ فَوَاللّٰهِ مَا رَأَيْتُ فِيهِ شَيْئًا يَرُدُّ الْبَصَرَ غَيْرَ أَهْبَةِ ثَلَاثَةٍ، فَقُلْتُ: اذْغِ اللّٰهُ فَلْيُوسِّعْ عَلَيَّ أَمْرَكَ، فَإِنِّ فَارِسَ وَالرُّومَ وَسَّعَ عَلَيْهِمْ وَأَعْطَوْا الدُّنْيَا وَهُمْ لَا يَعْبُدُونَ اللّٰهَ. وَكَانَ مَتَكِبًا فَقَالَ: ((أَوْفَى شَكُّكَ أَنْتَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ؟ أَوْلَيْكَ قَوْمٌ عَجَّلْتَ لَهُمْ طَيِّبَاتِهِمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا)). فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ اسْتَغْفِرْنِي. فَاعْتَرَلَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ الْحَدِيثِ حِينَ أَفْتَشْتُهُ حَفْصَةَ إِلَى عَائِشَةَ، وَكَانَ قَدْ قَالَ: مَا أَنَا بِدَاخِلٍ عَلَيْهِمْ شَهْرًا، مِنْ هَيْدَةٍ مَّوْجِدَةٍ عَلَيْهِمْ حِينَ عَاتَبَهُ اللّٰهُ. فَلَمَّا مَضَتْ سِتْعٌ وَعِشْرُونَ دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ قَبْدًا بِهَا، فَقَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ: إِنَّكَ أَقْسَمْتَ أَنْ لَا تَدْخُلَ عَلَيْنَا شَهْرًا، وَإِنَّا أَصْبَحْنَا لِنَسْعِ وَعِشْرِينَ لَيْلَةً أَغْلَمْنَا عَدَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الشَّهْرُ سِتْعٌ وَعِشْرُونَ)), وَكَانَ ذَلِكَ الشَّهْرُ سِتْعًا وَعِشْرُونَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَأَنْزِلْتَ آيَةَ النَّخِيرِ، قَبْدًا بِي أَوَّلَ امْرَأَةٍ فَقَالَ: ((إِنِّي ذَاكِرٌ لَّكَ أَمْرًا، وَلَا عَلَيْكَ أَنْ لَا تَفْعَلِي حَتَّى تَسْتَأْمِرِي أَبَوَيْكَ)). قَالَتْ: قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ أَبَوَيَّ لَمْ يَكُونَا بِأَمْرَانِي بِفِرَاقِهِ. ثُمَّ قَالَ: إِنَّ اللّٰهَ قَالَ: هِيَ أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ - إِلَى قَوْلِهِ - عَظِيمًا. قُلْتُ: أَفِي هَذَا اسْتَأْمَرُ أَبَوَيَّ، فَإِنِّي أَرِيدُ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَالْدَّارَ الْآخِرَةَ. ثُمَّ

कि फिर वो आयत नाज़िल हुई जिसमें (अज़्वाजुन्नबी को) इख्तियार दिया गया था। उसकी भी इब्तिदा आपने मुझ ही से की और फ़र्माया कि मैं तुमसे एक बात कहता हूँ, और ये ज़रूरी नहीं कि जवाब फ़ौरन दो, बल्कि अपने वालिदैन से भी मश्विरा कर लो। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आपको ये मा'लूम था कि मेरे माँ-बाप कभी आपसे जुदाई का मश्विरा नहीं दे सकते। फिर आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, ऐ नबी! अपनी बीवियों से कह दो। अल्लाह तआला के क़ौल अज़ीमन तका मैंने अर्ज किया, क्या अब इस मामले में भी मैं अपने वालिदैन से मश्विरा करने जाऊँगी! इसमें तो किसी शुब्हा की गुंजाइश ही नहीं है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल और दारे आख़िरत को मसन्द करती हूँ। इसके बाद आपने अपनी दूसरी बीवियों को भी इख्तियार दिया और उन्होंने भी वही जवाब दिया जो आइशा (रज़ि.) ने दिया था। (राजेज़: 89)

**तशरीह:** मा'लूम हुआ अल्लाह के रसूल (ﷺ) को गुस्सा दिलाना और नाराज़ करना अल्लाह को गुज़ब दिलाना और नाराज़ करना है। आँहज़रत (ﷺ) जब दुनिया में तशरीफ़ रखते थे तो एक बार हज़रत इमर (रज़ि.) तौरात शरीफ़ पढ़ने और सुनाने लगे, आप (ﷺ) का मुबारक चेहरा गुस्से से सुख़ हो गया। दूसरे सहाबा ने हज़रत इमर (रज़ि.) को मलामत की कि तुम आँहज़रत (ﷺ) का चेहरा नहीं देखते। उस वक़्त उन्होंने तौरात पढ़ना मौकूफ़ (स्थगित) कर दिया और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर मूसा (अलैहिससलाम) ज़िन्दा होते तो उनको भी मेरी ताबेदारी करनी होती। इस हदीष से उन लोगों को नसीहत लेनी चाहिये जो इस्लाम का दा'वा करते हैं और इस पर हदीष शरीफ़ सुनकर दूसरे मौलवी या इमाम या दरवेश की बात पर अमल करते हैं। और हदीष शरीफ़ पर अमल नहीं करते। ख़याल करना चाहिये कि आँहज़रत (ﷺ) की रूहे मुबारक को ऐसी बातों से कितना सदमा होता होगा और जब आँहज़रत (ﷺ) भी नाराज़ हुए तो कहाँ ठिकाना रहा। अल्लाह जल्ल जलालुहु भी नाराज़ हुआ। ऐसी हालत में न कोई मौलवी काम आएगा न पीर दरवेश न इमाम।

अल्लाह! तू इस बात का गवाह है कि हमको अपने पैग़म्बर से ऐसी मुहब्बत है कि बाप दादा, पीर मुशिद, बुजुर्ग इमाम मुज्ताहिद सारी दुनिया का क़ौल और अमल हदीष के ख़िलाफ़ हम लाय़व समझते हैं और तेरी और तेरे पैग़म्बर (ﷺ) की रज़ामन्दी हमको काफ़ी-वाफ़ी है। अगर ये सब तेरी और तेरे पैग़म्बर (ﷺ) की ताबेदारी में बिल फ़र्ज़ हमसे नाराज़ हो जाएँ तो हमको उनकी नाराज़गी की ज़रा भी फ़िक्र नहीं। या अल्लाह! हमारी जान बदन से निकलते ही हमको हमारे पैग़म्बर के पास पहुँचा दे। हम आलमे बरज़ख़ में आप ही की ख़िदमत करते रहें और आप ही की हदीष सुनते रहें। (वहीदी)

हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम की ईमान अफ़रोज़ तक्ऱीर इन मुहतरम हज़रात को बग़ौर मुतालाआ करनी चाहिये जो आयते कुआनी व हदीषे सहीहा के सामने अपने इमामों, मुशिदों के अक्वाल को तरज़ीह देते हैं बल्कि बहुत से तो साफ़ लफ़्ज़ों में कहते हैं कि हमको आयात व अह्वादीष से गुज़्र नहीं। हमारे लिये हमारे इमाम का फ़त्वा काफ़ी-वाफ़ी है।

ऐसे नादान मुकल्लिदीन ने हज़रात अइम्म-ए-किराम मुज्ताहिदीन इज़ाम (रह.) की अरवाहे तय्यिबा को सख़्त ईज़ा पहुँचाई है। उन बुजुर्गों की हर्गिज़ ये हिदायत न थी कि उनको मुकामे रिसालत का मद्दे मुकाबिल बना दिया जाए। वो बुजुर्गान मा'सूम न थे। इमाम थे, मुज्ताहिद थे, क़ाबिले स़द एहतिराम थे मगर वो रसूल न थे और न नबी थे और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह

غَيْرِ نِسَاءٍ. لَقُلْنَ مِثْلَ مَا قَالَتْ عَائِشَةُ).

[راجع: ٨٩]

(ﷺ) के मद्दे मुक़ाबिल न थे। ग़ाली (अतिवादी) मुक़ल्लिदीन ने उनके साथ जो बर्ताव किया है क़यामत के दिन यक़ीनन उनको उसकी ज़वाब देही करनी होगी। यही वो हरकत है जिसे शिर्क फ़िरिसालत ही का नाम दिया जाना चाहिये। यही वो मर्ज़ है जो यहूद व नज़ारा की तबाही का मौजिब (कारण) बना और कुर्आन मजीद को उनके लिये स़ाफ़ कहना पड़ा, इत्तरख़जू अहबारहुम व रुहबानहुम अरबाबम् मिन् दूनिह्लाह (अत तौबा : 31) यहूद व नज़ारा ने अपने उलमा और मशाइख़ को अल्लाह के सिवा ख़बरार दे लिया था। उनके अवामिर व नवाही को वो वहो आसमानी का दर्जा दे चुके थे। इसीलिये वो अल्लाह के नज़दीक मज़्ज़ूब और ज़ॉल्लतीन करार पाए।

इद अफ़सोस कि उम्मत मुस्लिमा उनसे भी दो क़दम आगे है और उलमा व मशाइख़ को यक़ीनन ऐसे लोगों ने अल्लाह और रसूल का दर्जा दे रखा है। कितने पीर व मशाइख़ हैं जो क़ब्रों की मुजावरी करते-करते अल्लाह बने बैठे हैं। उनके मुअतफ़िदीन (श्रद्धालु) उनके क़दमों में सर रखते हैं। उनकी ख़िदमत व इताअत को अपने लिये दोनों जहाँ में काफ़ी वाफ़ी समझते हैं। उनकी शान में एक भी तन्कीदी लफ़्ज़ ग़वारा नहीं करते हैं, यक़ीनन ऐसे ग़ाली मुसलमान ऊपर वाली आयत के मिस्दाक़ हैं। हाली मरहूम ने ऐसे ही लोगों के लिये ये ख़बाई कही है।

नबी को जो चाहें खुदा कर दिखाएँ

इमामों का रुत्बा नबी से बढ़ाएँ

मज़ारों पे दिन रात नज़रें चढ़ाएँ

शहीदों से जा जा के माँगे दुआएँ

न तौहीद में कुछ ख़लल इससे आए

न ईमान बिगड़े न इस्लाम जाए।

रिवायत में जो वाक़िया मज़कूर है मुख़्तसर लफ़्ज़ों में इसकी तफ़्सील ये है।

तमाम अज़्वाज की बारी मुकरर थी और उसी के मुताबिक़ आँहज़रत (ﷺ) उनके यहाँ जाया करते थे। एक दिन आइशा (रज़ि.) की बारी थी और उन्हीं के घर आपका उस दिन क़याम भी था। लेकिन इत्तिफ़ाक़ से किसी वजह से आप हज़रत मारिया किन्ज़िया (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले गए। हफ़्सा (रज़ि.) ने आपको वहाँ देख लिया और आकर आइशा (रज़ि.) से कह दिया कि बारी तुम्हारी है और आँहज़रत (ﷺ) मारिया (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ फ़र्मा हैं। आइशा (रज़ि.) को इस पर बड़ा गुस्सा आया। इसी वाक़िये की तरफ़ इशारा है। आँहज़रत (ﷺ) ने अहद कर लिया था कि एक महीने तक अज़्वाजे मुतहहरात से अलग रहेंगे और इस अर्से में उनके पास नहीं जाएँगे। इस पर स़हाबा में बहुत तशवीश (चिन्ता, घबराहट) फैली और अज़्वाजे मुतहहरात और उनके अज़ीज़ व अक़रिब तक ही बात नहीं रही बल्कि तमाम स़हाबा (रज़ि.) इस फ़ैसले पर बहुत परेशान हो गए। हुज़ुर अकरम (ﷺ) के इस अहद की ता'बीर अह्दादीष में ईलाअ के लफ़्ज़ से आती है और ये बहुत मशहूर वाक़िया है। इससे पहले भी बुखारी में इसका ज़िक्र आ चुका है।

ईला के अस्बाब अह्दादीष में मुख़्तलिफ़ आए हैं। एक तो वही जो इस हदीष में है। इससे पहले भी बुखारी में इसका ज़िक्र है, कुछ रिवायतों में इसका सबब अज़्वाजे मुतहहरात की वो माँग बताई गई है कि अख़राजात (घर ख़र्च) उन्हें ज़रूरत से कम मिलते थे, तंगी रहती थी। इसलिये तमाम अज़्वाजे मुतहहरात ने हुज़ुर अकरम (ﷺ) से कहा था कि उन्हें अख़राजात ज़्यादा मिलने चाहिये। कुछ रिवायतों में शहद का वाक़िया बयान किया है। इलमा ने लिखा है कि असल में ये तमाम वाक़ियात पे दर पे पेश आए और उन सबसे मुताख़िर होकर आँहज़रत (ﷺ) ने ईला किया था, ताकि अज़्वाजे मुतहहरात को नज़ीहत हो जाए अज़्वाजे मुतहहरात सब कुछ होने के बावजूद फिर भी ईसान थीं। इसलिये कभी सौकन की रक़ाबत में, कभी किसी दूसरे ईसानी ज़ब्बे से मुताख़िर (प्रभावित) होकर इस तरह के इक्दामात कर जाया करती थीं जिनसे आँहज़रत (ﷺ) को तकलीफ़ होती थी। इस बाब में इस हदीष को इसलिये ज़िक्र किया गया है इसमें बालाखाने का ज़िक्र है जिसमें आपने तहाई इख़्तियार की थी।

2469. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे मरवान बिन मुआविया फुज़ारी ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह

۲۴۶۹- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا  
الْفَزَارِيُّ عَنْ حُمَيْدِ الطُّوَيْلِيِّ عَنْ أَنَسِ  
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((أَتَى رَسُولَ اللَّهِ

(ﷺ) ने अपनी बीवियों के पास एक महीने तक न जाने की कसम खाई थी और (ईला के वाकिये से पहले 5 हिजरी में) आप (ﷺ) के कदमे मुबारक में मोच आ गई थी। और आपने अपने बालाखाने में क्रयाम किया था। (ईला के मौके पर) हजरत उमर (रजि.) आए और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या आपने अपनी बीवियों को तलाक दे दी है? आपने फर्माया कि नहीं! अल्बत्ता एक महीने के लिये उनके पास न जाने की कसम खा ली है। चुनौचे आप उन्तीस दिन तक बीवियों के पास नहीं गए (और उन्तीस तारीख को ही चौद हो गया था) इसलिये आप बालाखाने से उतरे और बीवियों के पास गए। (राजेअ: 378)

## बाब 26 : मस्जिद के दरवाजे पर जो पत्थर बिछे होते हैं वहाँ या दरवाजे पर ऊँट बाँध देना

2470. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू अक़ील ने बयान किया, उनसे अबुल मुतवक्किल नाजी ने बयान किया कि मैं जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रजि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे। इसलिये मैं भी मस्जिद के अंदर चला गया। अल्बत्ता ऊँट बलात्त के एक किनारे बाँध दिया। आप (ﷺ) से मैंने अर्ज किया कि हुज़ूर! आप (ﷺ) का ऊँट हाज़िर है। आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और ऊँट के चारों तरफ़ टहलने लगे। फिर फर्माया कि क़ीमत भी ले और ऊँट भी ले जा। (राजेअ: 443)

मस्जिदे नबवी से बाज़ार तक पत्थरों का फ़र्श था। इसी को बलात्त बोलते हैं। इसी जगह ऊँट बाँधना मज़कूर है और दरवाजे को उसी पर क्रयास किया गया है। हाफ़िज़ ने कहा इस हदीष के दूसरे तरीक़ में मस्जिद के दरवाजे का भी ज़िक्र है। इमाम बुखारी (रह.) ने इसी तरफ़ इशारा किया है।

## बाब 27 : किसी कौम की कोड़ी के पास ठहरना और वहाँ पेशाब करना

2471. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबाने, उनसे मन्सूर ने, उनसे अबुल वाईल ने और उनसे हुज़ैफ़ा (रजि.) ने कि मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, या ये कहा कि नबी करीम (ﷺ) एक कौम की कोड़ी पर तशरीफ़ लाए और आपने वहाँ खड़े होकर पेशाब किया।

لَمَّا مَن بَسَائِهِ شَهْرًا، وَكَانَتْ انْفَكَّتْ قَدَمُهُ، فَجَلَسَ فِي غَلِيَّةٍ لَهُ، فَجَاءَ عُمَرُ فَقَالَ: أَطَلَقْتَ بَسَاءَكَ؟ قَالَ: لَا، وَلَكِنِّي أَتَيْتُ مِنْهُمْ شَهْرًا. فَمَكَثْتُ بِسَاءِ عِشْرِينَ، ثُمَّ نَزَلْتُ فَدَخَلْتُ عَلَى بَسَائِهِ.

[راجع: 378]

## ٢٦- بَابُ مَنْ عَقَلَ بَعِيرَهُ عَلَى

الْبَلَّاطِ، أَوْ بَابِ الْمَسْجِدِ

٢٤٧٠- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَقِيلٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْمُتَوَكِّلِ النَّاجِيُّ قَالَ: أَتَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَسْجِدَ فَدَخَلْتُ إِلَيْهِ وَعَقَلْتُ الْجَمَلُ فِي نَاحِيَةِ الْبَلَّاطِ فَقُلْتُ: هَذَا جَمَلُكَ: فَخَرَجَ فَجَمَلَ يُطِيفُ بِالْجَمَلِ قَالَ: ((الْقَمَنُ وَالْجَمَلُ لَكَ)). [راجع: 443]

## ٢٧- بَابُ الْوُقُوفِ وَالْبُولِ عِنْدَ

سَبَاطَةِ قَوْمٍ

٢٤٧١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ خُلَيْفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَوْ قَالَ: لَقَدْ آتَى النَّبِيُّ

(राजेअ: 224)

﴿سَبَاطَةَ قَوْمٍ قَبَالَ قَائِمًا﴾.

[راجع: २२४]

मक़सद ये है कि कोड़ी, जहाँ कूड़ा-करकट डाला जाता है एक अवामी जगह है जहाँ पेशाब वगैरह किया जा सकता है। ऐसी चीज़ों पर झगड़ाबाज़ी नहीं करनी चाहिये बशर्त कि वो अवामी हों, खड़े होकर पेशाब करना भी जाइज़ है बशर्त कि छींटों से कामिल तौर पर बचा जा सके। अगर ऐसा ख़तरा हो तो खड़े होकर पेशाब करना जाइज़ नहीं। जैसा कि आजकल बाज़ लोग करते रहते हैं।

**बाब 28 : इसका प्रवाब जिसने शाख़ या कोई और तकलीफ़ देने वाली चीज़ रास्ते से हटाई**

۲۸- بَابُ مَنْ أَخَذَ الْغَضْنَ وَمَا

يُؤْذِي النَّاسَ فِي الطَّرِيقِ فَرَمَى بِهِ

2472. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें सुमयने, उन्हें अबू मालेह ने, और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक शख्स रास्ते पर चल रहा था कि उसने वहाँ कांटेदार डाली देखी। उसने उसे उठा लिया तो अल्लाह तआला ने उसका ये अमल कुबूल किया और उसकी मरिफ़रत कर दी।

(राजेअ: 652)

۲۴۷۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا

مَالِكٌ عَنْ مَسْمُوعٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ

قَالَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ وَجَدَ

غَضْنَ شَوْكٍ عَلَى الطَّرِيقِ فَأَخَذَهُ، فَشَكَرَ

اللَّهُ لَهُ فَغُفِرَ لَهُ)). [راجع: 652]

क्योंकि उसने अल्लाह की मख़लूक की तकलीफ़ ग़वारा न की और उनके आराम व राहत के लिये उस डाली को उठाकर फेंक दिया, ऐसा न हो किसी के पाँव में चुभ जाए। इंसानी हमदर्दी इसी का नाम है जो इस्लाम की सारी ता'लीमात का खुलासा है।

**बाब 29 : अगर आम रास्ते में इख़ितलाफ़ हो और वहाँ रहने वाले कुछ इमारत बनाना चाहें तो सात हाथ ज़मीन रास्ते के लिये छोड़ दें**

۲۹- بَابُ إِذَا اخْتَلَفُوا فِي الطَّرِيقِ

السَّيِّئَاءِ،

وَهِيَ الرُّحَةُ تَكُونُ بَيْنَ الطَّرِيقِ، ثُمَّ يُرِيدُ

أَهْلُهَا الثَّنَائِ، فَعَرَا مِنْهَا لِلطَّرِيقِ سَبْعَةَ

أَذْرَعٍ.

2473. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे जुबैर बिन ख़रयत ने और उनसे इब्किमा ने कि मैंने अबू हुदैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ैसला किया था जबकि रास्ते (की ज़मीन) के बारे में झगड़ा हुआ तो सात हाथ रास्ता छोड़ देना चाहिये।

۲۴۷۳- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ

حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَازِمٍ عَنْ الزُّبَيْرِ بْنِ

خُوَيْسَةَ عَنْ عِكْرَمَةَ سَمِعَتْ أَبَا هُرَيْرَةَ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَضَى النَّبِيُّ ﷺ إِذَا

تَشَاجَرُوا فِي الطَّرِيقِ بِسَبْعَةِ أَذْرَعٍ)).

**तशरीह:** एक मुतमदिन मुल्क (सभ्य देश) के शहरी क़वानीन में हर किस्म के इतिज़ामात का लिहाज़ बेहद ज़रूरी है। शारेअे आम के लिये जगह मुक़रर करना भी उसी क़बील से है। त़रीके मैताअ जिसका ज़िक्र बाब में है उसका मा'नी चौड़ा या आम रास्ता। कुछ ने कहा मैताअ से ये मुराद है कि ग़ैर आबाद ज़मीन अगर आबाद हो और वहाँ रास्ता क़ायम करने की ज़रूरत

पड़े और रहने वाले लोग वहाँ झगड़ा करें तो कम से कम सात हाथ ज़मीन रास्ते के लिये छोड़ दी जाए जो आदमियों और सवारियों के निकलने के लिये काफी है। कस्तलानी (रह.) ने कहा, जो दुकानदार रास्ते पर बैठा करते हैं, उनके लिये ज़रूरी है कि अगर रास्ता सात हाथ से ज़्यादा हो तो वो फ़ालतू हिस्सों में बैठ सकते हैं वरना सात हाथ के अंदर-अंदर उनको बैठने से मना किया जाए ताकि चलने वालों को तकलीफ न हो।

ये वो इतिजामी क़ानून है जो आज से चौदह सौ बरस पहले इस्लाम ने वज़अ फ़र्माया। जो बाद में बेशतर मुल्कों का शहरी ज़ाबता क़रार पाया। ये पैग़म्बरे इस्लाम (ﷺ) का वो खुदाई फ़हम था जो अल्लाह ने आप (ﷺ) को अता फ़र्माया था। आप (ﷺ) के अहदे मुबारक में गाड़ियों, मोटरों, छकड़ों, बग़ियों का रिवाज था। ऊँट और आदमियों के आने-जाने के लिये तीन हाथ रास्ता भी किफ़ायत करता है। मगर आम ज़रूरियात और मुस्तज़िबल (भविष्य) की तरक्कियों के पेशेनज़र ज़रूरी था कि कम अज़क़म सात हाथ ज़मीन गुज़रगाहे आम के लिये छोड़ी जाए क्योंकि कभी ऐसा भी होता है कि जाने और आने वाली सवारियों की मुठभेड़ हो जाती है। तो दोनों के बराबर-बराबर निकल जाने के लिये कम अज़क़म सात हाथ ज़मीन रास्ता के लिये मुक़र्रर होना ज़रूरी है क्योंकि इतने रास्ते में दोनों तरफ़ की सवारियाँ आसानी के साथ निकल सकती हैं।

**बाब 30 : मालिक की इजाजत के बगैर उसका कोई माल उठा लेना**

और इबादा (रज़ि.) ने कहा, कि हमने नबी करीम (ﷺ) से इस बात की बेअत की थी कि लूटमार नहीं किया करेंगे।

2474. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे अदी बिन प्राबित ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन यजीद अंसारी (रजि.) से सुना, जो अदी बिन प्राबित के नाना थे कि नबी करीम (ﷺ) ने लूटमार करने और मुघ्नला करने से मना फ़र्माया था। (दीगर मक़ाम : 5516)

٣٠- بَابُ النَّهْيِ بِغَيْرِ إِذْنٍ صَاحِبِهِ  
وَقَالَ عِبَادَةُ بَايَعْنَا اللَّهَ أَنْ لَا نَنْتَهَبَ.

٢٤٧٤- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَدِيُّ بْنُ قَابَسٍ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ يَزِيدَ الْأَنْصَارِيَّ - وَهُوَ جَدُّ أَبِي أُمِّهَ قَالَ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ التَّهْنِئَةِ وَالْمُظْلَةِ)). [راجع: ٥٥١٦] [طرفه في: ٥٥١٦].

**तथ्यरहित :** लूटमार करना, डाका डालना, चोरी करना इस्लाम में सख्ती के साथ उनकी मज़हब (निन्दा) की गई है और इसके लिये सख्ततरीन सज़ा तजवीज़ की गई कि चोरी करने वाले के हाथ-पैर काट दिये जाए, डाकुओं, रहज़नों को और भी संगीन सजाएँ तजवीज़ की गई हैं। ताकि इंसानी नस्ल अमन व अमान की ज़िंदगी बसर कर सके। इन्हीं क़वानीन की बरकत है कि आज भी हुकूमते सऊदिया अरबिया का अमन सारी दुनिया की हुकूमत के लिये एक मिशाली है प्रियत रखता है जबकि जुम्ला मज़हब लोगों में डाकाज़नी मुख्तलिफ़ सूरतों में दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। चोरी करना बतौर एक पेशा के राइज (प्रचलित) हो रहा है। अवाम की ज़िन्दगी हृद दर्जा ख़ौफ़नाकी में गुज़र रही है। फौज़ पुलिस सब ऐसे मुज़िर्मों के आगे लाचार हैं। इसलिये कि उनके यहाँ कानूनी लचक हृद दर्जा उनकी हिम्मत अफ़जाई करती है।

मुषला का मतलब है, जंग में मक्कतूल के हाथ-पैर, कान नाक काटकर अलग अलग कर देना ! इस्लाम ने इस हरकत से सख्ती के साथ रोका है।

2475. हमसे सईद बिन उफैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे लैष ने बयान, उनसे अक्रील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया, ज्ञानी मोमिन

٢٤٧٥ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ :  
 قَالَ حَدَّثَنِي قَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنَا عُقَيْلٌ عَنْ  
 ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ  
 عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ



रहते हुए जिना नहीं कर सकता। शराबखोर मोमिन रहते हुए शराब नहीं पी सकता। चोर मोमिन रहते हुए चोरी नहीं कर सकता। और कोई शख्स मोमिन रहते हुए लूट और गारतगिरी नहीं कर सकता कि लोगों की नज़रें उसकी तरफ़ उठी हुई हों और वो लूट रहा हो, सईद और अबू सलमा (रज़ि.) की भी अबू हुरैरह (रज़ि.) से बहवाला नबी करीम (ﷺ) इसी तरह रिवायत है। अल्बत्ता उनकी रिवायत में लूट का तज़्किरा नहीं है।

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا يَزِينُ الزَّانِي حِينَ يَزِينُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلَا يَشْرِبُ الْخَمْرَ حِينَ يَشْرِبُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلَا يَسْرِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلَا يَنْتَهَبُ نَهْبَةً يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ فِيهَا أَنْصَارُهُمْ حِينَ يَنْتَهَبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ)).

وَعَنْ سَعِيدٍ وَأَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: مِثْلَهُ، إِلَّا النَّهْبَةَ.

इस हदीस से मा'लूम हुआ कि गारतगिरी करने वाला, चोरी करने वाला, लूटमार करने वाला अगर ये मुद्दियाने इस्लाम (इस्लाम के दा'वेदार) हैं तो सरासर अपने दावे में झूठे हैं। ऐसे काम करने वाला ईमान के दा'व में झूठा है। यही हाल जिनाकारी का, शराबखोरी का है। ऐसे लोग इस्लाम व ईमान के दा'वे में झूठे, मक्कार व फ़रेबी हैं। मुसलमान साहिबे ईमान से अगर कभी कोई ग़लत काम हो भी जाए तो हद्द दर्जा शर्मिन्दा होकर फिर हमेशा के लिये तौबा करने वाला हो जाता है और अपने गुनाह के लिये इस्तिफ़ार में लग जाता है।

### बाब 31 : सलीब का तोड़ना और खिंज़ीर का मारना

### ٣١- بَابُ كَسْرِ الصَّلِيبِ وَقَتْلِ الْخِنْزِيرِ

ख़िलाफ़ते इस्लामी में जब ग़ैर क़ौमों बरसरे-पैकार (सत्ताधारी) हों और इस्लाम और मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने के लिये कोशाँ (प्रयासरत) हों और अल्लाह पाक मुसलमानों को ग़लबा नसीब करे तो हर्बी (दुश्मन) क़ौमों के साथ ऐसे बर्ताव जाइज़ हैं। अगर वो ईसाई हैं तो उनके साथ ये मामला किया जाएगा। अमनपसन्द ग़ैर मुस्लिमों और ज़िम्मियों की जान माल और उनके मज़हब को इस्लाम ने पूरी पूरी आज़ादी अत्ता फ़र्माई है।

2476. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक इब्ने मरयम का नुज़ूल एक आदिल हुक्मरान की हैशियत से तुममें न हो ले। वो सलीब को तोड़ेंगे, सूअरों को क़त्ल करेंगे और ज़िज़्या कुबूल नहीं करेंगे (उस दौर में) माल व दौलत की इतनी क़सरत होगी कि कोई उसे कुबूल नहीं करेगा।

(राजेअ: 2222)

٢٤٧٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَنْزَلَ فِيكُمْ ابْنُ مَرْثَمَ حَكَمًا مُقْسِطًا، فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ، وَيَضَعَ الْحِزْبَةَ، وَيَقْبِضَ الْمَالَ حَتَّى لَا يَقْبَلَهُ

(أخذ). [راجع: ٢٢٢٢]

**तशरीह:**

ये निहायत सहीह और मुतसिल रिवायत है और इसके रावी सब धिका और इमाम हैं। इसमें साफ़ लफ़्ज़ों में ये मज़कूर है कि क़यामत के करीब हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) दुनिया में नाज़िल होंगे। इससे साफ़ मा'लूम हुआ कि हज़रत

ईसा (अलैहिस्सलाम) आसमान पर ज़िन्दा मौजूद हैं और हक़ तआला ने उनको ज़िन्दा आसमान की तरफ़ उठा लिया है जैसा कि कुर्आन मजीद में मज़कूर है।

सलीब और तपलीष नज़रानियों की मज़हबी अलामत है। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) आख़िर ज़माने में आसमान से दुनिया में आकर दीने मुहम्मदी पर अमल करेंगे और ग़ैर इस्लामी निशानात को मिटा देंगे। इस बाब को मुनअक़िद करने और हदीष के यहाँ लाने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज ये है कि अगर कोई सलीब को तोड़ डाले या सूअर को मार डाले तो उस पर ज़िमान न होगा। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि ये जब है कि वो हर्बियों का माल हो, अगर ज़िम्मी का माल हो जिसने अपनी शराइत से इन्हिराफ़ न किया हो और अहद पर कायम हो तो ऐसा करना दुरुस्त नहीं है क्योंकि ज़िम्मियों के मज़हबी हुक्क़ इस्लाम ने कायम रखे हैं और उनकी माल व जान और मज़हब की हिफ़ाज़त के लिये पूरी गारण्टी दी है।

**बाब 32 : क्या कोई ऐसा मटका तोड़ा जा सकता है या ऐसी मश्कफाड़ी जा सकती है जिसमें शराब मौजूद हो?**

अगर किसी शख्स ने बुत, सलीब या सितार या कोई भी इस तरह की चीज़ जिसकी लकड़ी से कोई फ़ायदा हासिल न हो तोड़ दी? क़ाज़ी शुरैह (रह.) की अदालत में एक सितार का मुक़द्दमा लाया गया, जिसे तोड़ दिया था, तो उन्होंने इसका बदला नहीं दिलवाया।

2477. हमसे अबू आसिम जिहाक बिन मुखलद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अबी डबैद ने, और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर देखा कि आग जलाई जा रही है, आप (ﷺ) ने पूछा ये आग किस लिये जलाई जा रही है? सहाबा (रज़ि.) ने अज़ा किया कि गधे (का गोश्त पकाने) के लिये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बर्तन (जिसमें गधे का गोश्त हो) तोड़ दो और गोश्त फेंक दो। इस पर सहाबा बोले ऐसा क्यों न कर लें कि गोश्त फेंक दें और बर्तन धो लें। आपने फ़र्माया कि बर्तन धो लो।

(दीगर मक़ाम : 4196, 5497, 6148, 6331, 6891)

**तशरीह :** पहले आप (ﷺ) ने सख़्ती के लिये हण्डियों के तोड़ डालने का हुक्म दिया। फिर शायद आप पर वह्य आई और आपने उनका धो डालना भी काफ़ी समझा। इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि हुराम चीज़ों के बर्तनों को तोड़ डालना दुरुस्त है मगर वो बर्तन अगर ज़िम्मी ग़ैर-मुस्लिमों के हैं तो ये उनके लिये नहीं है। इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, फ़इन कानल्औड्य्यतु बिहैषु युराकु मा फ़ीहा फ़इज़ा ग़सलत तहुरत वन्तफ़अ बिहा लम यजुज़ अत्लाफ़ुहा व इल्ला जाज़ (नैल) या'नी अगर वो बर्तन ऐसा है कि उसमें से शराब गिराकर उसे धोया जा सकता है और उसका पाक होना मुम्किन है तो उसे पाक करके उससे नफ़ा उठाया जा सकता है और अगर ऐसा नहीं तो जाइज़ नहीं कि फिर उसे तल्फ़ (नष्ट) करना ही होगा।

۳۲- بَابُ هَلْ تَكْسَرُ الدَّنَانُ الَّتِي فِيهَا الْخَمْرُ، أَوْ تُخَرَّقُ الرَّفَاقُ؟

هَلْ تَكْسَرُ صَنَمًا أَوْ صَلِيبًا أَوْ طَبُورًا أَوْ مَا لَا يُنْتَفَعُ بِخَشَبِهِ. وَأَيُّ شَرِيعَةٍ فِي طَبُورٍ كَسِرَ فَلَمْ يَقْعُ فِيهِ بَشَرٌ؟

۲۴۷۷- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي غَثَبٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى نِيرَانًا تَوَلَّدَ يَوْمَ خَيْبَرَ قَالَ: ((عَلَّامٌ تَوَلَّدَ هَلَاكُ النَّبَرَانِ؟)) قَالُوا عَلَى الْخَمْرِ الْإِنْسِيَّةِ. قَالَ: ((اكَسِرُواَهَا وَأَهْرِقُوهَا)). قَالُوا: أَلَا نَهْرِقُهَا وَنَغْسِلُهَا؟ قَالَ: ((اغْسِلُوهَا)).

[أطرافه في : ٤١٩٦، ٥٤٩٧، ٦١٤٨]

[٦٨٩١، ٦٣٣١]

2478. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफयान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी नुजैह ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, उनसे अबू मअमर ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (फ़तह मक्का के दिन जब) मक्का में दाखिल हुए तो खान-ए-का'बा के चारों तरफ़ तीन सौ साठ बुत थे। आप (ﷺ) के हाथ में एक छड़ी थी जिससे आप उन बुतों पर मारने लगे और फ़र्माने लगे कि हक़ आ गया और बातिल मिट गया। (दीगर मक़ाम : 4287, 4720)

٢٤٧٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي نُجَيْجٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ وَحَوْلَ الْكَعْبَةِ ثَلَاثِمِائَةً وَسِتُّونَ نَصَبًا، فَجَعَلَ يَطْمُنُّهَا بِعُودٍ لِي يَدِهِ وَيَجْعَلَ يَقُولُ: ((حُجَّاءُ الْحَقِّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ))) الآية.

[طوافه في: ٤٢٨٧، ٤٧٢٠].

**तशरीह :** ये बुत कुफ़रारे कुरैश ने मुख्तलिफ़ नबियों और नेक लोगों की तरफ़ मन्सूब करके बनाए थे, यहाँ तक कि कुछ बुत हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिमस्सलाम) की तरफ़ भी मन्सूब थे। फ़तहे मक्का के दिन अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने का'बा शरीफ़ को उन बुतों से पाक किया और उस दिन से का'बा शरीफ़ हमेशा के लिये बुतों से पाक हो गया। अल्लहुमुलिल्लाह चौदहवीं सदी ख़त्म हो चुकी है, इस्लाम बहुत से नशीब व फ़राज़ से गुज़रा है मगर बिफ़ज़िलही तआला तहरीर का'बा अपनी जगह पर कायम दायम है।

2479. हमसे इब्राहीम बिन मुज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह इमरी ने, उनसे अब्दुरहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद क़ासिम ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने अपने हुज़रे के सायबान पर एक पर्दा लटका दिया था जिसमें तस्वीरें बनी हुई थीं। नबी करीम (ﷺ) ने (जब देखा तो) उसे उतार कर फाड़ डाला। (आइशा रज़ि. ने बयान किया कि) फिर मैंने इस पर्दे से दो गद्दे बना डाले। वो दोनों गद्दे घर में रहते थे और नबी करीम (ﷺ) उन पर बैठा करते थे।

(दीगर मक़ाम : 5954, 5955, 6109)

٢٤٧٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عُثَيْبٍ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ الْقَاسِمِ عَنْ عَالِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَهَا كَانَتْ أَخَذَتْ عَلَى سَهْوَةٍ لَهَا مِرًا فِيهِ تَمَاثِيلٌ، فَهَتَكَ النَّبِيُّ ﷺ، فَاتَّخَذَتْ مِنْهُ لَمُرَقَّتَيْنِ، فَكَأَتَا فِي الْبَيْتِ يَجْلِسُ عَلَيْهِمَا)).

[أطرافه في: ٥٩٥٤، ٥٩٥٥، ٦١٠٩].

मुसलमानों पर लाज़िम है कि अपने घरों में जानदार के ऐसे पर्दे, ग़िलाफ़ वगैरह न रखें बल्कि उनको ख़त्म कर डालें। ये शरअन व क़ानूनन बिलकुल नाजाज़ हैं।

**बाब 33 : जो शख़्स अपना माल बचाने के लिये लड़े**

2480. हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे अबुल अस्वद ने बयान किया, उनसे इकिमा ने और उसे अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम

٣٣- بَابُ مَنْ قَاتَلَ دُونَ مَالِهِ

٢٤٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ - هُوَ ابْنُ أَبِي أَيُّوبَ - قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ عَبْدِ

(ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स अपने माल की हिफाज़त करते हुए क़त्ल कर दिया गया, वो शहीद है।

اللَّهُ بْنُ عَمْرِو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «مَنْ قُتِلَ دُونَ مَالِهِ فَهُوَ شَهِيدٌ».

क्योंकि वो मज़लूम है, निसाई की रीवायत में यूँ है उसके लिये जन्नत है। और तिर्मिज़ी की रीवायत में इतना ज़्यादा है और जो अपनी जान बचाने में मारा जाए और जो अपने घर वालों को बचाने में मारा जाए ये सब शहीद हैं। आजकल दुनिया में चारों ओर जो सैकड़ों मुसलमान नाहक क़त्ल किये जा रहे हैं। वो सब इस हदीष की रू से शहीदों में दाख़िल हैं क्योंकि वो महज़ मुसलमान होने के जुर्म में क़त्ल किये जा रहे हैं, इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राज़िज़्ज़ून।

**बाब 34 : जिस किसी शख्स ने किसी दूसरे का प्याला या कोई और चीज़ तोड़ दी हो तो क्या हुक्म है?**

۳۴- بَابُ إِذَا كَسَرَ قَصْعَةً أَوْ شَيْئًا لِفَخْرِهِ

2471. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा हमसे यहा बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हुमैद ने, और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अज़्वाजे मुतहहरात में से किसी एक के यहाँ तशरीफ़ रखते थे। उम्महाते मोमिनीन में से एक ने वहाँ आप (ﷺ) के लिये ख़ादिम के हाथ एक प्याले में कुछ खाने की चीज़ भिजवाई। उन्होंने एक हाथ इस प्याले पर मारा और प्याला (गिरकर) टूट गया। आपने प्याले को जोड़ा और जो खाने की चीज़ थी उसे उसमे दोबारा रखकर सहाबा से फ़र्माया कि खाओ। आप (ﷺ) ने प्याला लाने वाले (ख़ादिम) को रोक लिया और प्याला भी नहीं भेजा बल्कि जब (खाने से) सब फ़ारिग हो गए तो दूसरा अच्छा प्याला भिजवा दिया और जो टूट गया था उसे नहीं भिजवाया। इब्ने अबी मरयम ने बयान किया कि हमें यहा बिन अय्यूब ने ख़बर दी, उनसे हुमैद ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (दीगर मक़ाम : 5225)

۲۴۸۱- حَدَّثَنَا مُسْنَدُ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: «أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ عِنْدَ بَعْضِ بَنَاتِهِ، فَلَا سَلْتَ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ مَعَ عَادِمٍ بِقَصْعَةٍ فِيهَا طَعَامٌ، فَضَرَبَتْ بِهَا فَكَسَرَتْ الْقَصْعَةَ، فَضَبَّهَا وَجَعَلَ فِيهَا الطَّعَامَ وَقَالَ: «كُلُوا» وَخَسَّ الرَّسُولَ وَالْقَصْعَةَ حَتَّى فَرَّغُوا، فَذَفَعَ الْقَصْعَةَ الصَّحِيحَةَ وَخَسَّ الْمَكْسُورَةَ».

وَقَالَ ابْنُ أَبِي مَرْثَمٍ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ قَالَ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. [طَرَفُهُ ١: ٥٢٢٥].

अबू दाऊद और निसाई की रीवायत में हज़रत अफ़्रिया (रज़ि.) का ज़िक्र है और दारे कुत्नी और इब्ने माजा की रीवायत में हफ़्सा (रज़ि.) का ज़िक्र है और तिबरानी की रीवायत में उम्मे सलमा (रज़ि.) का और इब्ने हज़म की रीवायत में ज़ैनब (रज़ि.) का। अन्देशा है कि ये वाक़िया कई बार हुआ हो। हाफ़िज़ ने कहा कि मुझको उस लौण्डी का नाम मा'लूम नहीं हुआ। हदीष और बाब का मज़हूम ये है कि किसी का कोई प्याला तोड़ दे तो उसको उसकी जगह दूसरा सहीह प्याला वापस करना चाहिये।

**बाब 35 : अगर किसी ने किसी की दीवार गिरा दी तो उसे वो वैसी ही बनवानी होगी**

۳۵- بَابُ إِذَا هَدَمَ حَائِطًا فَلْيَبْنِ مِثْلَهُ

इस मसले में मालकिया का इख्तिलाफ़ है वो कहते हैं कि दीवार की क्रीमत देनी चाहिये। मगर इमाम बुखारी (रह.) ने जिस रिवायत से दलील ली वो उस पर मबनी (आधारित) है कि अगली शरीअतें हमारे लिये हुज्जत हैं जब हमारी शरीअत में उनके खिलाफ़ कोई हुक्म न हो और इस मसले में इख्तिलाफ़ है।

2482. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे जरिर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल में एक साहब थे जिनका नाम जुरैज था। वो नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनकी वालिदा आई और उन्हें पुकारा। उन्होंने जवाब नहीं दिया। सोचते रहे कि जवाब दूँ या नमाज़ पढ़ूँ। फिर वो दोबारा आई और (गुस्से में) बद दुआ कर गई, ऐ अल्लाह! उसे मौत न आए जब तक किसी बदकार औरत का मुँह न देख ले। जुरैज अपने इबादतख़ाने में रहते थे। एक औरत ने (जो जुरैज के इबादतख़ाने के पास अपने मवेशी चराया करती थी और फ़ाहिशा थी) कहा कि जुरैज को फ़ित्ने में डाले बग़ैर न रहूँगी। चुनाँचे वो उनके सामने आई और बातचीत करनी चाही। लेकिन उन्होंने मुँह फेर लिया। फिर वो एक चरवाहे के पास गई और अपने जिस्म को उसके क़ाबू में दे दिया। आख़िर लड़का पैदा हुआ और उस औरत ने इल्ज़ाम लगाया कि ये लड़का जुरैज का है। क़ौम के लोग जुरैज के यहाँ आए और उनका इबादतख़ाना तोड़ दिया। उन्हें बाहर निकाला और गालियाँ दीं। लेकिन जुरैज ने वुजू किया और नमाज़ पढ़कर उस लड़के के पास आए। उन्होंने उससे पूछा बच्चे! तुम्हारा बाप कौन है? बच्चा (अल्लाह के हुक्म से) बोल पड़ा कि चरवाहा! (क़ौम खुश हो गई और) कहा कि हम आपके लिये सोने का इबादतख़ाना बनवा दें। जुरैज ने कहा कि मेरा घर तो मिट्टी ही से बनेगा। (राजेअ: 1206)

٢٤٨٢- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ هُوَ ابْنُ حَارِمٍ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((كَانَ رَجُلٌ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ يُقَالُ لَهُ جُرَيْجٌ يُصَلِّي، لِحَاوَةِ أُمِّهِ فَنَدَعَتْهُ، فَأَتَى أَنْ يُجِيبَهَا فَقَالَ: أَجِيبَهَا أَوْ اصْطَلَى؟ ثُمَّ أَتَتْهُ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لَا تُمْنُهُ حَتَّى تُرِيَهُ وَجُوهَ الْمُؤْمِنَاتِ. وَكَانَ جُرَيْجٌ فِي صَوْمَعَةٍ، فَقَالَتْ امْرَأَةٌ: لَا تُفْنِنُ جُرَيْجًا. فَتَعَرَّضَتْ لَهُ فَكَلَمَتْهُ، فَأَتَى. فَأَتَتْ رَاغِبًا فَأَمْكَنَتْهُ مِنْ نَفْسِهَا، فَوَلَدَتْ غُلَامًا فَقَالَتْ: هُوَ مِنْ جُرَيْجٍ. فَأَتَتْهُ وَكَسَرُوا صَوْمَعَتَهُ، فَأَنْزَلُوهُ وَسَبُّوهُ، فَتَعَرَّضًا وَصَلَّى، ثُمَّ أَتَى الْغُلَامَ فَقَالَ: مَنْ أَبِيكَ يَا غُلَامُ؟ قَالَ: الرَّاعِي. فَأَلَوْا: بَنِي صَوْمَعَتِكَ مِنْ ذَهَبٍ؟ قَالَ: لَا، إِلَّا مِنْ طِينٍ)). (راجع: ١٢٠٦)

**तशरीह:** हदीषे जुरैज हज़रत इमाम बुखारी (रह.) कई जगह लाए हैं और उससे मुख्तलिफ़ मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है। यहाँ आप ये श्राबित फ़र्मानि के लिये हदीष लाए हैं कि जब कोई शख्स या अशख़ास किसी की दीवार नाहक़ गिरा दें तो उनको वो दीवार पहली ही दीवार के समान बनानी लाज़िम होगी।

जुरैज का वाक़िया मशहूर है। उनके दीन में माँ की बात का जवाब देना बहालते नमाज़ भी ज़रूरी था, मगर हज़रत जुरैज नमाज़ में मशगूल रहे, यहाँ तक कि उनकी वालिदा ने ख़फ़ा होकर बददुआ कर दी, आख़िर उनकी पाकदामनी श्राबित करने के लिये अल्लाह पाक ने उसी वलदे जिना (बदकारी से पैदा हुए) बच्चे को गोयाई (बोलने की ताक़त) दी। हालाँकि उसके बोलने की उम्र नहीं थी। मगर अल्लाह ने हज़रत जुरैज की दुआ कुबूल कर ली और उस बच्चे को बोलने की ताक़त दे दी। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि अल्लाह ने छः बच्चों को कमसिनी में बोलने की ताक़त बख़शी। उनमें हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की

पाकदामनी की गवाही देने वाला बच्चा और फिरऔन की बेटी की मगलानी का लड़का और हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) और साहिबे जुरैज और साहिबे उख़दूद और बनी इस्राईल की एक औरत का बेटा जिसको दूध पिला रही थी। अचानक एक शख्स जाह व हशम के साथ गुज़रा और औरत ने बच्चे के लिये दुआ की कि अल्लाह मेरे बच्चे को भी ऐसी ही किस्मत वाला बनाइयो। उस शीरखवार (दूध पीते) बच्चे ने फ़ौरन कहा, इलाही! मुझे ऐसा न बनाइयो। कहते हैं कि हज़रत यह्या (अलैहिस्सलाम) ने भी कमसिनी में बातें की हैं तो कुल सात बच्चे होंगे।

बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि हज़रत जुरैज ने अपना घर मिट्टी ही की पहली हालत के मुताबिक़ बनवाने का हुक्म दिया। हदीस से ये भी निकला कि माँ की दुआ अपनी औलाद के लिये ज़रूर कुबूल होती है। माँ का हक़ बाप से तीन हिस्से ज्यादा है। जो लड़के—लड़की माँ को राज़ी रखते हैं वो दुनिया में भी ख़ूब फलते फूलते हैं और आख़िरत में भी नजात पाते हैं और माँ को नाराज़ करने वाले हमेशा दुख उठाते हैं। तजुर्बा और मुशाहिदे से इसका बहुत कुछ शुबूत मौजूद है। जिसमें शक व शुब्हा की कोई गुंजाइश नहीं है।

माँ के बाद बाप का दर्जा भी कुछ कम नहीं है। इसलिये कुआन मजीद में इबादते इलाही के लिये हुक्म सादिर फ़र्माने के बाद व बिल वालिदैनि एहसान (अल बकर: : 83) के लफ़्ज़ इस्ते'माल किये हैं कि अल्लाह को इबादत करो और माँ—बाप के साथ हुस्ने—सुलूक करो। यहाँ तक कि फ़ला तकुल्सलहुमा उम्फ़ि व ला तन्हर्हुमा व कुल लहुमा क़ौलन करीमा व ख़िफ़ज लहुमा जनाह ज़ुल्तिन मिनरहमति व कुर्रब्बिर्हम्हुमा कमा रब्बयानी सगीरा (बनी इस्राईल: 24) या'नी माँ—बाप ज़िन्दा मौजूद हों तो उनके सामने उफ़ भी न करो और न उन्हें डांटों डपटों बल्कि उनसे नरम—नरम मीठी मीठी बातें जो रहम व करम से भरपूर हों, किया करो और उनके लिये रहम व करम वाले बाज़ू बिछा दिया करो वो बाज़ू जो उनके एहतिराम के लिये आजिज़ी इंकिसारी के लिये हुए हों और उनके हक़ में यूँ दुआएँ किया करो कि परवरदिगार! उन पर उसी तरह रहम फ़र्माइयो जैसा कि बचपन में इन्होंने मुझको अपने रहम व करम से परवान चढ़ाया।

माँ—बाप की ख़िदमत, इत्ताअत, फ़र्माबरदारी के बारे में बहुत सी अह्दादीष मरबी हैं जिनका नक़ल करना त्वालत है, ख़ुलासा यही है कि औलाद का फ़र्ज़ है कि वालिदैन की नेक दुआएँ हमेशा हासिल करता रहे।

हज़रत जुरैज के वाक़िये में और भी बहुत सी इब़रतें हैं। समझने के लिये नूरे बसीरत दरकार है, अल्लाह वाले दुनिया के झमेलों से दूर रहकर शब व रोज़ इबादते इलाही में मशगूल रहते हैं और वो दुनिया के झमेलों में रहकर भी यादे इलाही से ग़ाफ़िल नहीं होते। नीज़ जब भी कोई ह्दाय़ा सामने आए सन्न व इस्तिक़्लाल के साथ उसे बर्दाश्त करते हैं और उसका नतीजा अल्लाह के हवाले कर देते हैं। हमारी शरीअत का भी यही हुक्म है कि अगर कोई शख्स नफ़ल नमाज़ की निय्यत बाँधे हुए हो और हज़रत रसूले करीम (ﷺ) उसे पुकारें तो वो नमाज़ तोड़कर ख़िदमत में हाज़िरी दे। आजकल औलाद के लिये यही हुक्म है। नीज़ बीबी के लिये भी कि वो शौहर को नफ़ल नमाज़ों पर मुक़द्दम जाने। (वबिह्याहितीफ़ीक़)।

## 47. किताबुशिरकत:

## किताब शराकत के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : खाने और सफ़र खर्च और अस्बाब में  
शिरकत का बयान١- بَابُ الشَّرَكَةِ فِي الطَّعَامِ وَالنَّهْدِ  
وَالْمَرْوَضِ

और जो कोई चीज़ नापी या तौली जाती है तख़मीने से बांटना या मुट्ठी भर-भरकर तद्वसीम कर लेना, क्योंकि मुसलमानो ने उसमें कोई मुजायज़ा नहीं ख़याल किया कि मुश्तरक ज़ादे सफ़र (की मुख्तलिफ़ चीज़ों में से) कोई शरीक एक चीज़ खा ले और दूसरा दूसरी चीज़, इसी तरह सोने-चाँदी के बदले बिन तौले ढेर लगाकर बांटने में, इसी तरह दो-दो खजूर उठाकर खाने में।

وَكَيْفَ قِسْمَةُ مَا يَكُنُ وَيُوزَنُ؟ مَجَازَلَةٌ أَوْ قَبْضَةً قَبْضَةً، لِمَا لَمْ يَرَ الْمُسْلِمُونَ فِي النَّهْدِ بَأْسًا أَنْ يَأْكُلَ هَذَا بَعْضًا وَهَذَا بَعْضًا. وَكَذَلِكَ مَجَازَلَةُ اللَّحَبِ وَالْقَبْضَةِ وَالْقِرَانِ فِي التَّمْرِ.

2483. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें वहब बिन कैसान ने और उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (रजब 7 हिजरी में) माहिले बहर की तरफ़ एक लश्कर भेजा और उसका अमीर अबू उबैदा बिन जराह (रज़ि.) को मुकरर किया। फौजियों की ता'दाद तीन सौ थी और मैं भी उनमें शरीक था। हम निकले और अभी रास्ते ही में थे कि तौशा (राशन) ख़त्म हो गया। अबू उबैदा (रज़ि.) ने हुक्म दिया कि तमाम फौजी अपने तौशे (जो कुछ बाक़ी रह गये हों) एक जगह जमा कर दें। सब कुछ जमा करने के बाद खजूरों के कुल दो थैले हो सके और रोज़ाना हमें उसी में से थोड़ी-थोड़ी खजूर खाने के लिये मिलने लगी। जब उसका भी अक़्मर हिस्सा ख़त्म हो गया तो हमें सिर्फ़ एक-एक खजूर मिलती रही। मैं (वहब बिन कैसान) ने जाबिर (रज़ि.) से कहा कि भला एक खजूर से क्या होता है? उन्होंने बतलाया कि इसकी क़द्र हमें

٢٤٨٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَعْثًا قَبْلَ السَّاحِلِ، فَأَمَرَ عَلَيْهِمْ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْخِرَاجِ، وَهُمْ ثَلَاثُمِائَةٍ وَأَنَا فِيهِمْ، فَمَرَجْنَا، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ فَبِئِ الرِّاءِ، فَأَمَرَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِأَرْوَاحِ ذَلِكَ الْجَمْعِ فَجُمِعَ ذَلِكَ كُلُّهُ، فَكَانَ مِزْوَدِي تَمْرًا، فَكَانَ يَقْوَتَاهُ كُلَّ يَوْمٍ قَلِيلًا قَلِيلًا حَتَّى فَبِئِ، فَلَمْ يَكُنْ يُصَيِّتُنَا إِلَّا تَمْرَةً تَمْرَةً، - فَقُلْتُ: وَمَا تُغْنِي تَمْرَةً؟ فَقَالَ: لَقَدْ وَجَدْنَا

उस वक़्त मा'लूम हुई जब वो भी ख़त्म हो गई थी। उन्होंने बयान किया कि आख़िर हम समुन्दर तक पहुँच गए। इतिफ़ाक़ से समुन्दर में हमें एक ऐसी मछली मिली जो (अपने जिस्म में) पहाड़ की तरह मा'लूम होती थी। सारा लश्कर उस मछली को अठारह दिन तक खाता रहा। फिर अबू उबैदा (रज़ि.) ने उसकी दोनों पसलियों को खड़ा करने का हुक्म दिया। उसके बाद कैंटों को उनके तले से चलने का हुक्म दिया और वो उन पसलियों के नीचे से होकर गुजरे लेकिन कैंट ने उनको छुआ तक नहीं।

(दीगर मक़ाम : 2983, 4360, 4361, 4362, 5493, 5494)

فَقَدَمَا حِينَ فَيِتْ - قَالَ: ثُمَّ اتَّهَيْتَا إِلَى الْبَحْرِ، فَإِذَا حُوتٌ مِثْلُ الطَّرِبِ، فَأَكَلَ مِنْهُ ذَلِكَ الْجَيْشُ ثَمَانِي عَشْرَةَ لَيْلَةً. ثُمَّ أَمَرَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِضَلْعَيْنِ مِنْ أَضْلَاعِهِ فَصَيَا، ثُمَّ أَمَرَ بِرَاحِلَةٍ فَوُجِلَتْ ثُمَّ مَرَّتَ تَحْتَهُمَا، فَلَمْ تُصَيِّهُمَا)).

[أطرافه في : ٢٩٨٣، ٤٣٦٠، ٤٣٦١]

[٤٣٦٢، ٥٤٩٣، ٥٤٩٤]

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि हज़रत अबू उबैदा (रज़ि.) ने सारी फौज का तौशा (खाने की चीज़ें) एक जगह जमा करा लिया। फिर अंदाज़े से थोड़ा-थोड़ा सबको दिया जाने लगा। सो सफ़र ख़र्च की शिकत और अंदाज़े से उसकी तक्सीम प्राबित हुई।

2484. हमसे बिशर बिन मरहूम ने बयान किया, कहा कि हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैदा ने और उनसे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि (ग़ज़व-ए-हवाज़िन में) लोगों के तोशे ख़त्म हो गए और फ़क्कर व मुहताजी आ गई, तो लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अपने कैंटों को ज़िन्ह करने की इजाज़त लेने (ताकि उन्हीं के गोश्त से पेट भर सकें) आप (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दे दी। रास्ते में हज़रत उमर (रज़ि.) की मुलाक़ात उनसे हो गई तो उन्हें भी उन लोगों ने इत्तिला दी। उमर (रज़ि.) ने कहा कि कैंटों को काट डालोगे फिर तुम कैसे ज़िन्दा रहोगे? चुनाँचे आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अगर उन्होंने कैंट भी ज़िन्ह कर लिये तो फिर ये लोग कैसे ज़िन्दा रहेंगे? रसूल करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा, तमाम लोगों में ऐलान करा दो कि उनके पास जो कुछ तोशे बच रहे हैं वो लेकर यहाँ आ जाएँ। उसके लिये एक चमड़े का दस्तरख़वान बिछा दिया गया। और लोगों ने तौशे उसी दस्तरख़वान पर लाकर रख दिये। उसके बाद रसूल करीम (ﷺ) उठे और उसमें बरकत की दुआ फ़र्माई। अब आप (ﷺ) ने फिर सब लोगों को अपने अपने बर्तनों के साथ बुलाया। और सबने दोनों हाथों से तोशे अपने बर्तनों में भर लिये। जब सब

٢٤٨٤ - حَدَّثَنَا بِشَرُّ بْنُ مَرْحُومٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَفَّتْ أَرْوَاحُ الْقَوْمِ وَأَمْلَقُوا، فَأَتُوا النَّبِيَّ ﷺ فِي نَحْرِ إِبِلِهِمْ فَأَذِنَ لَهُمْ، فَلَقِيَهُمْ عُمَرُ فَأَخْبَرُوهُ فَقَالَ: مَا بَقَاؤُكُمْ بَعْدَ إِبِلِكُمْ؟ فَدَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا بَقَاؤُهُمْ بَعْدَ إِبِلِهِمْ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((نَادِ فِي النَّاسِ يَأْتُونَ بِفَضْلِ أَرْوَاحِهِمْ)). فَسَيَّطَ لِذَلِكَ نَطْعٌ وَجَعَلُوهُ عَلَى النَّطْعِ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَبَرَكَ عَلَيْهِ، ثُمَّ دَعَاهُمْ بِأَوْعِيَّتِهِمْ فَأَخْتَى النَّاسُ حَتَّى فَرَعُوا، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ)). [طرمه في : ٢٩٨٢]



लोग भर चुके तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और ये कि मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ। (दीगर मक़ाम : 2982)

**तशरीह:** इस हदीष में एक अहमतरिन मुअजिज़ा—ए—नबवी का ज़िक्र है कि अल्लाह ने अपनी कुदरत की एक अज़ीमुश़ान निशानी अपने पैग़म्बर (ﷺ) के हाथ पर ज़ाहिर की। या तो वो तौशा इतना कम था कि लोग अपनी सवारियाँ काटने पर आमादा हो गए या वो तौशा इस क़दर बढ़ गया कि फ़राग़त से हर एक ने अपनी ख्वाहिश के मुवाफ़िक़ भर लिया। इस क़िस्म के मुअजिज़ात आँहज़रत (ﷺ) से कई बार सादिर हुए हैं। बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आप (ﷺ) ने सबके तोशे इक़्ठा करने का हुक्म दिया। फिर हर एक ने यूँ ही अंदाज़े से ले लिया, आपने तौल माप कर उसको तक्सीम नहीं किया।

हदीष और बाब में मुताबक़त के सिलसिले में शारेहीने बुख़ारी लिखते हैं, व मुताबक़तुन लिन्नजुमति तूख़ज़ु मिन क़ौलिही फ़यातून बिफ़ज़िल अज़्वादिहिम व मिन क़ौली फ़दआ व बारक़ अलैहि फ़इन्न फ़ी जम्ड अज़्वादिहिम व हुव फ़ी मअनन्नहदि व दुआउन्नबिथि (ﷺ) फ़ीहा बिल्बर्क़ति (ऐनी) या'नी हदीष और बाब में मुताबक़त लफ़ज़ फ़यातून अल्ख़ से है कि ऐसे मवाक़ेअ पर उन सबने अपने अपने फ़ालतू तोशे लाकर जमा कर दिये और इस क़ौल से कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसमें बरक़त की दुआ फ़र्माई। यहाँ उनके तोशे जमा करना मज़कूर है और वो नहद के मा'नी में है, या'नी अपने अपने हिस्से बराबर बराबर लाकर जमा कर देना और उसमें से आँहज़रत (ﷺ) का बरक़त के लिये दुआ फ़र्माना। लफ़ज़ नहदि या नहदि आगे बढ़ना, नमूदार होना, मुकाबिल होना, ज़ाहिर होना, बढ़ा करना के मा'नी में है। इसी से लफ़ज़ तनाहुद है। जिसके मा'नी सफ़र के सब रफ़ीक़ों का एक मुअय्यन रुपया या राशन तौशा जमा करना कि उससे सफ़र की ख़ुरदुनी (खाने की) ज़रूरियात को मसावी तौर पर पूरा किया जाए यहाँ ऐसा ही बाक़िया ज़िक्र किया गया है।

2485. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुन नजाशी ने बयान किया, कहा कि मैंने राफ़ेअ बिन ख़दीज़ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया हम नबी करीम (ﷺ) के साथ अस्त्र की नमाज़ पढ़कर ऊँट ज़िबह करते, उन्हें दस हिस्सों में तक्सीम कर देते और फिर सूरज ग़रूब होने से पहले ही हम उसका पका हुआ गोश्त खा लेते।

٢٤٨٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو النَجَّاشِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا نَصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَصْرَ فَتَنَحَّرَ جُزُورًا فَتَقَسَّمَ عَشْرَ قِسْمٍ، فَتَأْكُلُ لَحْمًا نَضِيجًا قَبْلَ أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ)).

**तशरीह:** इस हदीष से ये निकलता है कि आप (ﷺ) अस्त्र की नमाज़ एक मिस्ल पर पढ़ा करते थे वरना दो मिस्ल साये पर जो कोई अस्त्र की नमाज़ पढ़ेगा तो इतने कम वक़्त में उसके लिये ये काम पूरा करना मुश्किल है। इस हदीष से बाब का मतलब यूँ निकलता है कि ऊँट का गोश्त यूँ ही अंदाज़े से तक्सीम किया जाता था। (वहीदी)

2486. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला अशअर के लोगों का जब जिहाद के मौक़े पर तौशा कम हो जाता या मदीना (के क़याम) में उनके बाल-बच्चों के लिये खाने की कमी हो जाती थी तो जो कुछ भी उनके पास तौशा होता है वो एक कपड़े में जमा कर लेते, फिर आपस में एक बर्तन से

٢٤٨٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ أَسَمَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الْأَشْعَرِيْنَ إِذَا أَمْلَوْا فِي الْغَزْوِ أَوْ قَلَّ طَعَامُ عِيَالِهِمْ بِالْمَدِينَةِ جَمَعُوا مَا كَانَ عِنْدَهُمْ فِي قُوبٍ وَاحِدٍ، ثُمَّ اقْتَسَمُوهُ

बराबर बराबर तक्सीम कर लेते हैं पस वो मेरे हैं और मैं उनका हूँ।

يَتَنَهُمْ فِي إِنَاءٍ وَاحِدٍ بِالسَّوِيَّةِ، فَهُمْ مِنِّي  
وَأَنَا مِنْهُمْ))

या'नी वो खास मेरे तरीक और मेरी सुन्नत पर हैं और मैं उनके तरीक पर हूँ। इस हदीष से ये निकला कि सफर या हजर में तौशों का मिला लेना और बराबर-बराबर बांट लेना मुस्तहब है। बाब की हदीष से मुताबकत जाहिर है। व मुताबकतुहू लित्तर्जुमति तूखजु मिन कौलिही जमऊ मा कान इन्दहुम फ़ी शौबिन वाहिदिन शुम्म इकतसमूह बैनहुम (इम्दतुल कारी)

**बाब 2 : जो माल दो साझियों के साझे का हो वो ज़कात में एक दूसरे से बराबर बराबर मुजरा कर लें**

2487. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे शुमामा बिन अब्दुल्लाह बिन अनस ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने उनके लिये फ़र्ज़ ज़कात का बयान तहरीर किया था जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुकरर की थी। आपने फ़र्माया कि जब किसी माल में दो आदमी साझी हों तो वो ज़कात में एक-दूसरे से बराबर बराबर मुजरा कर लें। (राजेअ: 1448)

٢- بَابُ مَا كَانَ مِنْ خَلِيطَيْنِ لِأَنَّهُمَا  
يَتَرَاَجَعَانِ بَيْنَهُمَا بِالسَّوِيَّةِ فِي الصَّدَقَةِ  
٢٤٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ  
الْمُسْتَيْ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ حَدَّثَنِي  
ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَنَسٍ أَنَّ أَنَسًا  
حَدَّثَهُ: ((أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَتَبَ  
لَهُ فَرِيضَةَ الصَّدَقَةِ الَّتِي فَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ  
ﷺ قَالَ: وَمَا كَانَ مِنْ خَلِيطَيْنِ لِأَنَّهُمَا  
يَتَرَاَجَعَانِ بَيْنَهُمَا بِالسَّوِيَّةِ))

[راجع: ١٤٤٨]

जब ज़कात का माल दो या तीन साथियों में मुश्तरक हो या'नी सबका साझा हो और ज़कात का तहसीलदार एक साझी से कुल ज़कात वसूल कर ले तो वो दूसरे साझीदारों के हिस्से के मुवाफ़िक उनसे मुजरा ले और ज़कात के ऊपर दूसरे खर्चों का भी क्रयास हो सकेगा। पस इस तरह से इस हदीष को शिकत से ता'ल्लुक हुआ।

**बाब 3 : बकरियों का बांटना**

2488. हमसे अली बिन हुकम अंसारी ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे सईद बिन मसरूक ने, उनसे इबाया बिन रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ बिन खदीज (रज़ि.) ने और उनसे उनके दादा (राफ़ेअ बिन खदीज रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मक़ामे जुल हुलैफ़ा में ठहरे हुए थे। लोगों को भूख लगी। इधर (ग़नीमत में) ऊँट और बकरियाँ मिली थीं। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) लश्कर के पीछे लोगों में थे। लोगों ने जल्दी की और (तक्सीम से पहले ही) जिब्ह करके हण्डिया चढ़ा दीं। लेकिन बाद में नबी करीम (ﷺ)

٣- بَابُ قِسْمَةِ الْغَنَمِ  
٢٤٨٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَكَمِ  
الْأَنْصَارِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مَعْنٍ  
بْنِ مَسْرُوقٍ عَنْ غُبَابَةَ بْنِ وَفَاعَةَ بْنِ الْوَلَعِ  
بْنِ خَلِيفٍ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: ((كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ  
ﷺ بِبَدْيِ الْخَلِيفَةِ، فَأَصَابَ النَّاسَ جُوعٌ،  
فَأَصَابُوا إِبِلًا وَغَنَمًا قَالَ وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ  
فِي أُخْرَيَاتِ الْقَوْمِ، فَعَجَلُوا وَذَبَحُوا  
وَتَصَبَّوْا الْقُدُورَ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْقُدُورِ

ने हुक्म दिया और वो हण्डियाँ औंधी कर दी गई। फिर आपने उनको तक्सीम किया और दस बकरियों को एक ऊँट के बराबर रखा। एक ऊँट उसमें से भाग गया तो लोग उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे। लेकिन उसने सबको थका दिया। क्रौम के पास छोड़े कम थे। एक सहाबी तीर लेकर ऊँट की तरफ झपटे। अल्लाह ने उसको ठहरा दिया। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन जानवरों में भी जंगली जानवरों की तरह सरकशी होती है। इसलिये इन जानवरों में से भी अगर कोई तुम्हें आजिज़ कर दे तो उसके साथ तुम ऐसा ही मामला किया करो। फिर मेरे दादा ने अर्ज किया कि कल दुश्मन के हमले का डर है, हमारे पास छुरियाँ नहीं हैं (तलवारों से ज़िन्ह करें तो उनके ख़राब होने का डर है जबकि जंग सामने है) क्या हम बांस की खपची से ज़िन्ह कर सकते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जो चीज़ भी खून बहा दे और ज़बीहा पर अल्लाह तआला का नाम भी लिया गया हो तो उसके खाने में कोई हर्ज नहीं। सिवाय दांत और नाखून के। उसकी वजह मैं तुम्हें बताता हूँ। दांत हड्डी है और नाखून हथियारों की छुरी है।

(दीगर मक्काम : 2507, 3075, 5498, 5503, 5506, 5509, 5543, 5544)

فَاكْفَيْتَ، ثُمَّ قَسَمَ، فَعَدَلَ عَشْرَةَ مِنَ الْغَنَمِ بِبَعِيرٍ، فَنَدَّ مِنْهَا بَعِيرٌ، فَطَلَبُوهُ فَأَعْيَاهُمْ، وَكَانَ فِي الْقَوْمِ خَيْلٌ يَسِيرَةٌ، فَأَهْوَى رَجُلٌ مِنْهُمْ بِسَهْمٍ لِحَسَنَةِ اللَّهِ. ثُمَّ قَالَ: إِنَّ لِهَيْلِهِ الْبَهَائِمَ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَمَا غَلَبَكُمْ مِنْهَا فَاصْنَعُوا بِهِ مَكَدًا. فَقَالَ جَدِّي: إِنَّا نَرْجُوا - أَوْ نَخَافُ - الْعَدُوَّ غَدًا، وَلَيْسَتْ مُدَيٌّ، الْفَذْبُجُ بِالْقَصَبِ؟ قَالَ: مَا أَنَهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ، فَكُلُوهُ، لَيْسَ السِّنُّ وَالظُّفْرُ، وَسَاحَدُكُمْ عَنْ ذَلِكَ: أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ، وَأَمَّا الظُّفْرُ فَمُدَيُّ الْحَبَشَةِ)).

[أطرافه (ي): ٢٥٠٧، ٣٠٧٥، ٥٤٩٨]

٥٥٠٣، ٥٥٠٩، ٥٥٠٦، ٥٥٤٣

[٥٥٤٤]

**तशरीह:** वो नाखून ही से जानवर काटते हैं, तो ऐसा करने में उनकी मुशाबिहत (समरूपता) है। इमाम नववी (रह.) ने कहा कि नाखून ख़्वाह बदल में लगा हुआ हो या जुदा किया हुआ हो, पाक हो या नजिस किसी हाल में उससे ज़िन्ह करना जाइज़ नहीं। बाब के तर्जुमे की मुताबकत ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने दस बकरियों को एक ऊँट के बराबर किया। हाँडियों को इसलिये औंधा करा दिया कि उनमें जो गोश्त पकाया जा रहा था वो नाजाइज़ था, जिसे खाना मुसलमानों के लिये हुराम था। लिहाज़ा आप (ﷺ) ने उनका गोश्त ज़ाया (नष्ट) करा दिया। देवबन्दी हनफ़ी तर्जुम-ए-बुखारी में यहाँ लिखा गया है कि हाँडियों के उलट देने का मतलब ये कि (या) नी तक्सीम करने के लिये उनसे गोश्त निकाल लिया गया। देखें तफ़्हीमुल बुखारी देवबन्दी सफ़ा 142 पारा 9)

ये मफ़हूम कितना ग़लत है। इसका अंदाज़ा हाशिया सहीह बुखारी मत्बूआ कराची जिल्द अव्वल पेज नं. 338 की नीचे लिखी इबारत से लगाया जा सकता है। महशी साहब जो ग़ालिबन हनफ़ी ही हैं, फ़र्माते हैं कि फ़उक्किफ़अत अथ उक्लिबत व रुमियत व उरीक़ मा फ़ीहा व हुब मिनल इक्फ़ाइ क़ील इन्नमा अमर बिल इक्फ़ाइ लिअन्नहुम ज़बहूल ग़नम क़ब्ल अय्युक्स फ़लम यतुब बिज़ालिक (उम्दतुल कारी) या'नी उन हाँडियों को उलटा कर दिया गया, गिरा दिया गया और जो उनमें था वो सब बहा दिया गया। हदीस का लफ़ज़ अक्फ़अतु से है। कहा गया है कि आपने उनके गिराने का हुक्म इसलिये स़ादिर फ़र्माया कि उन्होंने बकरियों को माले ग़नीमत के तक्सीम होने से पहले ही ज़िन्ह कर दिया था। आप (ﷺ) को उनका ये काम पसन्द नहीं आया। इस तशरीह से स़ाफ़ ज़ाहिर है कि देवबन्दी हनफ़ी का मज़कूर मफ़हूम बिलकुल ग़लत है वल्लाहु अज़लम बिस्सवाब।

बाब 4 : दो-दो खजूरें मिलाकर खाना किसी

٤ - بَابُ الْقِرَانِ فِي التَّمْرِ بَيْنَ

शरीक को जाइज नहीं जब तक दूसरे साथ वालों से इजाजत न ले।

2489. हमसे खल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफयान प्रौरी ने बयान किया, कहा हमसे जबला बिन सहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना। उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया था कि कोई शख्स अपने साथियों की इजाजत के बगैर (दस्तरख्वान पर) दो-दो खजूर एक साथ मिलाकर खाए। (राजेअ: 2400)

2490. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे जबला ने बयान किया हमारा क्रयाम मदीना में था और हम पर क्रहत (अकाल) का दौर गुज़रा। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) हमें खजूर खाने के लिये देते थे और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) गुज़रते हुए ये कह जाया करते थे कि दो-दो खजूर एक साथ मिलाकर न खाना क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने अपने दूसरे साथी की इजाजत के बगैर ऐसा करने से मना किया है। (राजेअ: 2455)

الشُّرَكَاءَ حَتَّى يَسْتَأْذِنَ أَصْحَابَهُ

٢٤٨٩- حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا جَبَلَةُ بْنُ سُهَيْمٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَقْرَنَ الرَّجُلُ بَيْنَ الثَّمَرَتَيْنِ جُمُوعًا حَتَّى يَسْتَأْذِنَ أَصْحَابَهُ)). [راجع: ٢٤٥٥]

٢٤٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَبَلَةَ قَالَ: ((كُنَّا بِالْمَدِينَةِ فَأَصَابَنَا سَنَةٌ، فَكَانَ ابْنُ الزُّبَيْرِ يُوْزَنُ الثَّمَرُ، وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَمُرُّ بِنَا فَيَقُولُ: لَا تَقْرَبُوا، فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنِ الْإِقْرَانِ، إِلَّا أَنْ يَسْتَأْذِنَ الرَّجُلُ مِنْكُمْ أَحَدَهُ)). [راجع: ٢٤٥٥]

अल्हम्दु लिल्लाह नवाँ पारा खत्म हुआ।